CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kalgiri Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

-७ नवम्बर १९९६ अंक-११

परामर्श-मण्डल

कृष्णदेव उपाध्याय : श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय
गणेश चौबे : आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र
श्री मोती बी० ए० : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
श्री भोलानाथ गहमरी

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

ब्रजकिशोर : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : जगन्नाथ :
डॉ० शम्भुशरण : नागेन्द्र प्रसाद सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण :
डॉ० ब्रजभूषण मिश्र : भगवती प्रसाद द्विवेदी

इस अंक के प्रायोजक

श्री अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' : श्री प्रकाश उदय

ष : ०६१२-२६११३४ इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

Rajguru Mall, Shimla

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकर सम्भावना टटोले आ दोसरे के अइसन प्रायोजक-संरक्षक बनवा दे। कम-से कम पत्रिका के वार्षिक ग्राहक त जरूर बन जाय, अइसन अपेक्षा हर ओह आदमी से बा जे भोजपुरी का विकास में तनिको रुचि राखत होखे। सम्मेलन के अनेकानेक वार्षिक सदस्य आ आजीवन सदस्य लोग एकर वार्षिक ग्राहक अबहीं ले नइखे भइल। ओह लोग से खास तौर पर निहोरा बा जे ऊ लोग पत्रिका के प्रकाशन में रुचि लेवे आ पत्रिका के अगिला यात्रा के पाथेय जुटावे में अपना सहयोग के हाथ बढ़ावे।

□

लघुकथा अंक

दिसम्बर १९९६ में प्रकाशित होखेवाला, एह वर्ष के आखिरी अंक लघु-कथा अंक होई। अखिल भारतीय प्रगतिशील लघुकथा मंच के नउआँ सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित होखे वाला एह अंक-विशेष खातिर लेखक लोग से लघुकथा प्रकाशनार्थ भेजे के निहोरा कइल जाता।

—पाण्डेय कपिल

शरद कुंडल

—अनिरुद्ध

खंजन रितु दूत नयन, अंजन सुखदाई,
उतरल चढ़ हंस शरद, स्वागत अगुआई ।।
महके झर हर सिंगार, भिनुसहरा प्यारा
लाल तली चाँदी, कनफूल कि सितारा ।।
पथ खुले दसो दुआर पंथी अगर इल,
सोखे संताप शरद, ब्याधि सभ पराइल ।।
बाजे चुलबुल बिहान, प्राती धुन वीणा,
भोर लुटावे बिंदिया, रात के नगीना ।।
खिलल कास पावस नभ धो चले बुढ़ाए,
निरमल नभ नील नयन, माटी मुसुकाए ।।
फुदुक - फुदुक पंछी वन प्रान में समाइल,
रितु-राधा अँखियन, घनश्याम अब लुकाइल ।।
दुधिया चुन्दरी कुंडल कनक किरन झूले,
नीलम नभ छत्र घाम पियरी कटि भूले ।।
हिमकन मोती माला, शीत बरे हीरा,
नाचत घुँघरू टूटल, भोर लगे मीरा ।।
चमकत जल-देश रहे, मीन-मन पिरितिया,
अनगिन अँखिया नेहाय, दूध से धरतिया ।।
नील रतन जल चाँदी, दरपन जड़ जाये,
गगन उतारे नदिया, ताल उतर जाये ।।
बिछुड़ल घनश्याम, लोर-भुँइ जसुदा माई,
बा झरल पसेना-मनि मेहनत गुन गाई ।।
फुर-फुर उड़ जाय बिहग, नयन अँटकि जायें,
टिटिकारत बैलन के, कवन झटकि जायें ।।

□ डीही, सारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Bangalore

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्मल ज्ञान जगावऽ भइया !

—डॉ० ऋता शुक्ल

निर्मल ज्ञान जगावऽ भइया !
साँस-साँस भोजपुरिहा थाती धइलीं ए भइया !
चुटकी भर अहिवात सँगोरलीं
अँचरा सूरुज - चान बटोरलीं
एह अरण्य-नगरी में रहि के
सबके कुशल मनवलीं भइया !
ज्ञान बढ़, अँधियारा बिसरे
कलुष-भेद कनहूँ ना ठहरे
शुद्ध प्रान-मन निश्छल जीवन
इहे कमाई कइलीं भइया…
शत्रु-मित्र के थाह ना पइलीं
कवनो कपट दुराव ना कइलीं
घर आँगन तुलसी - चौबारा
नेह के दियरी बरलीं भइया
जगत-बटोरे हीरा-मोती
एह जिनगी में ज्ञान के जोती
सरस्वती मइया के सेवा
जनम तपस्या कइलीं भइया
पीतल पर सोना के पानी
झूठ, कपट, ईर्ष्या, अभिमानी
जिनगी के चंदन बिरवा में
काल-व्याल लपटवलीं भइया
ऊजर खद्दर प्रान पातकी
सत्य सपथ करुणा निधा की
कला-द्वार पर कपटी रावन
दया-भीख हम दिहलीं भइया !
कलम मजूरी, सबद कमाई
दहकत अगिन-रेख सच्चाई
राहु-केतु के घटाटोप से
सूरुज चान उबरलीं भइया
तिरिया जनम कसूर कहाइल
उन्मद बानासुर उफनाइल
नाग विवर से बाहर आइल
कठिन लड़ाई ठनलीं भइया !

एहीं कारण—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कलम किनारे धइले बानी
'दुर्गा, के गोहरवले बानी
खप्पर लिहले आवऽ मइया
कुल मरजाद बचावऽ मइया !
हिन्दी के शिवपूजन गइले
दिनकर, नलिन विलोचन गइले
बेनीपुरी, रेणु, नागार्जुन
राजाजी अइसन बिहार-धन
सब अतीत के शोभा भइले
अब के गुरु खद्योत कहइले
एक 'आँखि' से दुनिया देखले
'राम' नाम के अरथ उजड़ले
लोभ, लाभ, बदनीयत तिकड़ी
विष-विद्या, चंडाल चौकड़ी
शोक मनावे सूर, कबीरा
तुलसी के मन सोच गंभीरा
जनम चौरासी, शोध पचासी
झूठ पैरवी काबा-कासी
दिन मटमइला, रात उजासी
निहुरल पीठ उमिरिया बासी
हिन्दी में अइसन 'घोटाला'
पाप-गठरिया, कंठी-माला
दुराचार के बहत पनाला
अकथ कथा कहलो ना जाला
नवरूपा, नव दुर्गा जननी,
सर्व शक्ति रूपिणि नारायणी !
पूत कपूत भले हो जाए
माता नाहिं कुमाता कबहीं
कुमति, कुगामी जइसन होखसु
जीयसु जागसु, अमर होखसु
धिया-सिया के पत पहिचानसु
सही राह देखलावऽ मइया, झूठ कपट बिनसाव मइया !
निर्मल ज्ञान जगाव मइया

* टेगोर गिरि शिखर पथ, मोराबादी, राँची

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगद के पाँव

—अरविन्द विद्रोही

मंत्री जी
कइसे का हो गइल आ
हमरा गिरफ्तारी के
वारंट निकल गइल !

लूट, हत्या आ बलात्कार के
दफा हमरा ऊपर ठोंका गइल।
रउरा खातिर
हम बूथ कब्जा कइले रहीं
आ जनतंत्र के मुँह पर करिखा पोत दिहले रहीं
आ जीत के खुशी में दारू फ्री करा दिहले रहीं।
आज हमार
शराब भट्ठी बंद बा
आ दुश्मन के छाती गज भर फूलल बा।
मंत्री जी
तनी न्याय के पलड़ा
नीचे ऊपर त करीं।
धीरज राख पट्ठा
रसे-रसे सब ठीक हो जाई
तनी राजनीति के दिशा त बदले द
आ अंगद के पाँव तनी मर जमे द।

☐ ई०५०बल१३/१८ छोटागोविन्दपुर जमशेदपुर ८३१०१५

फरक

—शारदानन्द प्रसाद

दूध के धोअल
आ
पानी के पखारल
सभे बा
तबे नू
सात मूस खाके
बिलार भगतिन भइली
संगहीं
दूधे नहाये
पूते फरे के
बरदानो मिल गइल।
जबले
आदमी अपना के
तिखारत नइखे
तबले जबर के ठेंगा
अबर के माथा पर
रहबे करी।
बहुते मरउअत करी
त
कान्हा पर रही।
साँच पूछीं त
जोखुआ आ कुतुआ
मोल में
बहुते फरक होला।

☐ C/o डॉ० रंजन विकास H/o बी० एल० चौधरी
पश्चिमी शिवपुरी, पटना-२३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डर बा जे नसले भुअर होइ जाई

—बनवारी राम

सुनऽतानी जोरनो अमेरिके ले आई,
फोरन के फोरल जोरन से जोराई !

ध्यान दीहीं फोरन के कतना असर बा,
फोर-भाङ करे में का कवनो कसर बा !

देस टूटि गइले आ मन फाटि गइले,
गले जे लागत रहे गला काटि गइले ।

भवन रहत रहे, नवन करत रहे,
ऊहो बेटा-बेटी पापा टा-टा करि गइले !

पेट चारि रोटी वाला पाव रोटी पावऽतारे,
दू दूनी का चारि, क का कि, कीयो भुलइले !

सूट-बूट, टाई वाला, थैंक्यू वाई-बाई वाला,
'ए' फॉर ऐप्पल' वाला कहाँ बढ़ि गइले ।

ई पेटजरू जूठ मांजे, खाये गइले,
ऊ 'डववाली' का देखावा में फूंकइले !

देवतो-पितर लोग का सांति से गुजर नाहीं,
हर-हर ! आली-आली ! वलि चढ़ि गइले !

जे गद्दी लखनऊ, दिल्ली, पटना के पवले,
जनता के मंडल-कमंडल थम्हवले ।

ओह लोग के बाल-बच्चा बास ली अमेरिके,
चेला-चेली, गोरा-गोरी ध्यान में समइले !

जो जोरन उदारिए, उधारी के डलाई,
डर बा जे नसले भुअर होइ जाई !

प्रकाश पुरी, आरा-८०२३०१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

लाल कार्ड

—राम लखन विद्यार्थी

चार-पांच साल से लगातार काव नदी में बेहिसाब बाढ़ आवत रहल। पत साल आर-पार के गांछ बिरिछ, गाय गेरू, लेरू-बछरू, भेड़ी-बकरी दहात रहलन। कतुना घर-दुआर ढह बिला गइलन। एक साल गहन शर्मा, दुल्ली महतो डूबलन त दूसर तीसर साल साधु बढ़ई आ महादेव हजाम नदी में डूब-धंस गइलन। जानलेवा बन गइल बिया काव नदी··· डाकिन···हतेयारिन।

नदी उफनल त बाढ़े-बाढ़ आ जब घटल त रोग बेयाध के पाहुर बांट देली हैजा, कलरा मलेरिया, कालाजार···। हैजा में मर गइलन बनवारी के बाप-मतारी, उठ गइलन ओकर मंझिला, संझिला दुनो भाई। जित्तन के मरजी पर ओकर घर के पिछआरी मढ़ई गिरा के रहे लगलन दुन्नो परानी—बनवारी आ ओकर राजपुरवाली। ओही मढ़ई में राजपुरवाली के देह छुटल। लइको जनमल नाम रखाइल चनवा·· चनवा, चान अस दप दप, गोर अंजोर!

गनहूस नदी, उजरल गांव बनवारी के अब काटे दउरे, उदास मन उहां से भागे लागल।

ओह गांव से तीन-चार कोस आउर नीचे सोहरनिया गांव में आ के बनवारी बस गइल मछुआ टोल, बिरादरी के जमात में। ओकर मनसा रहल कि जात के निहोरा करके रोजी पर ऊ घटवाही कर लीही, गाह-बेगाह नदी में माछ-मछरी मार लीही। ओह गांव से काव नदी कोस भर के दूरी पर रहे, बाढ़ के भय अब भाग गइल रहे।

सोहरनिया गांव में बनवारी के सबसे नेही-छोही अदिमी गोविन्दा भेंटाइल। गोविन्दा बहुते उदार, हसमुख दिलेर···। दूध के बेवहर करत रहे। चनवा खातिर बनवारी गोविंदा के घर से गाय के दूध ले आवत रहे।

एक गाड़ी के दू पहिया—बनवारी आ राजपुरवाली। दुनो के कमाये धुन के, आपन जिनिगी संवारे के ललक रहे। जदुनाथ सिंह से कह के गोविन्दा उनकर बीस बिगहवा बगीचा में कोड़े खाने के, पानी पटावे के, हर चलावे के फिर अगहनी, चइती, असाढ़ी-भदई फसल उगावे-उपजावे के बनवारी के दिअवा दीहलस। खेती के उतजोग खातिर बमइचा में बोरिंग लागल रहे, टरेक्टर हाजिर रहे।

RajGuru Mahant Swami Ramanand Shastri Gondhal Digital Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनवारी जदुनाथ सिंह के खेतवाही करे लागल। बीस बिगहवा के सटले सरकार के सैकड़ बिगहा जमीन परती-परान्त परल रहे। ऊ जमीन बनवारी के मन बेर-बेर अपना ओरि खींच-खींच लेत रहे, तब बनवारी के भीतर के ललसा फुलझरी अस फूटे लागत रहे—काश हमरो आपन जमीन होइत, आपन हर, आपन बयल!

कपटी जदुनाथ सिंह आपन मजूरा-बनिहार पर कबो नेह ना बरसवलन, हरमेस जोर—जुलुम रखलन, फुहर-पातर बोललन, लात—जूता बइलन, चोख काम खातिर सिर पर चढ़ल रहलन बाकिर बन्नी-बुता में बराबरे कोताही कइलन। ओह दिन जदुनाथ सिंह चिरई के अहेर करत खेत में पहिलहीं पहुंच आइल रहन। चनवा से तबीयत खराब होखे से बनवारी तनी देर करके खेत पर आइल रहे। बनवारी के देखते जदुनाथ सिंह के आंख लिलार पर चढ़ गइल। बनवारी जसहीं कुदारी उठा के कियारी कोड़े सुरुम कइलस तसहीं जदुनाथ सिंह बनवारी के बेटी के लगा के गारी देलन। गारी सुनते बनवारी के माथा झनझना उठल। ओकर देहि के मय खून अदहन अस खउले लागल। किरोध में कुदारी के बेंट बनवारी के मूठी में कसा गइल आ कुदारी के पास पर चनवा के सूरत बेर-बेर उभरे लागल। ओकर मन कइलस कि इहे कुदारी से ऊ जदुनाथ सिंह के मुड़ी काट दीही... आदरू के आगे डामुल-फांसी का? बाकिर ई सोच के थथम गइल कि कुदारी चलावे के पहिले जदुनाथ सिंह बन्दूक के गोली से ओकर छाती बेध दीही आ किरोध में कुदारी के छेव जमीन में कस के मार देलस!

दोसरका दिन बनवारी के भेंट गोविंदा से भइल। गोविन्दा पूछलस—"आज काम पर ना गइले बनवारी?"

—अब कबो ना जाईब।"

—"काहे रे?

—"सभ त बिला गइल गोविन्दा, बस आपन एगो आदरू बचल बा, ओकरो के गंवा दीहीं रे" आ बनवारी के मन असुआ गइल।

गोविन्दा सभ बुझ गइल कि जदुनाथ सिंह बनवारी के जरूर कवनो अचटाह बोली बोलले बा... आ ऊहो एगो लमहर सांस खींच के छोड़ देलस!

बनवारी अब आपन जात-बेरादरी के साथे मिलजुल के मजूरी करे लागल, मछरी मारे लागल...फिर कबो ओकर हांड़ी उपास ना परल!

भादो के महीना लगातार हफ्ता भर पानी बरसते रहल। बाढ़ से केहू के डर त ना रहे बाकिर बरसा-बुन्नी से सभ तबाह रहे। अन्न अछइत जराद गइ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0: In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विना चुल्हा ना सुनुगल। घर के कोना में रखल हर पर अनयासे ओकर नजर गइल। हर जदुनाथ सिंह के रहे। हर देखते बनवारी के मन लहक उठल। ऊ टांगी उठवलस आ हर पर लागब टांगी मारे—एक छेव दू छेव…बीन छेव। हर फाट के छितरा गइल। राजपुरवाली देखलस त दउर आइल आ बनवारी के कस के डँटलसि—"सगुन के साइत फारल जाला? असुभ करके रख देलऽ…।

—"त ई कवनो आपन ह रे?

—"आपन होखे भा पराया के, खेती-गिरहथी के साइत ह नू!

—सगुन सबद सुनते बनवारी के मन उदास हो गइल।

हर…

लकड़ी के हर, खेती के साइत, जिनिगी के आधार।

…आ ओकर मन बुदबुदाइल—आपन हर होइत, आपन बयल, आपन खेत…तब ओकर सरधा के आँसू आंखि से गिर के फाटल हर के चूम लेलस।

अब नगेसर माझी जदुनाथ सिंह के बीस बिगहवा में खेती करत रहे। जदुनाथ सिंह दिन भर में एक बेर जरूर नगेसरा के घरे जालन। नगेसरा बहू बाबू साहेब के मिसरी आ खाँड से जलखई करावेली। बाबू साहेब खटिया पर आ नगेसर बहू जमीन पर चुकुमुक बइठ के घंटन उनका से बतियावेली। उहन के सभे देखेला, बनवारियो देखेला। मय मल्लाही भले ना समझत होखे बाकिर बनवारी ओह बतकही के मरम के खूब समझेला।

भोरे के निकसल दिन चढ़त बनवारी मछरी मार के आवत रहे। रस्ता में गोविन्दा से भेंट भइल। गोविन्दा कहलस—"अबही आवताड़े बनवारी, लेंवाजीत में सरकारी खेमा गिरल बा। गरीब-गुरबन के, भूमिहीनन के साथ सरकारी जमीन के उहवाँ बन्दोबस्ती होत बा—बीस बिगहवा के बगल के सरकारी जमीन। आजे भर के मोका बा, मोका निकल जाई त फिर हाथ मइसे परी।"

गोविन्दा के बात सुन के बनवारी के छाती धड़क गइल। बनवारी घरे आइल। कान्हि पर के जाल फेंक देलस। अगना में खड़ा हो के सूरज पर तकलस। सूरज डूबे में अबहीं बहुते देर रहे। राजपुर वाली से बिनु कुछ कहले दउर गइल लेवाजीत खेमा!

बनवारी जब खेमा गइल त देख के अवाक हो गइल। खेमा पर सभे आइल बा—मुखिया, चउकीदार, जनसेवक, तसीलदार…अंचल अधिकारी!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से तइयार होखे वाला भोजन सामग्री ह। उड़द क फुलौरा (तक्कड़ में गोतल) मामूली भोजन सामग्री थोड़े ह।

साधुओ-महात्मा लोग दाल पर बड़ा ध्यान देला। सूफी सन्त लोग जब भारत में अइलन त ईहन लोग क आध्यात्मिक प्रभाव जवन पड़ल ऊ त पड़बे कइल भौतिक प्रभाव ई पड़ल कि देसादेसी के खँड़हर आबाद हो गइलन स आ मसूर का दाल के खपत बढ़ गइल। मसूर के दाल के सब्जी कहल जाला। एही से उल्टा-फरा में पूरन नियर ई भरल जाले। सूफी सन्त लोग का आश्रम में अभी अजुओ हरे आगन्तुक के दू गो रोटी आ एक कप मसूर के दाल एलानिया फ्री बाँटल जाला। मसूर क दाल खा के आ खँड़हर में रहि के सूफी संत लोग संगीत आ साहित्य के जवन सेवा कइल ओह ऋण से भारत के सभ्यता आ संस्कृति कबे उरिन ना हो सके। उत्तर भारत कर हरेक भाषा का व्याकरण, छन्द विधान आ सुरलहरी—कुल्हिये पर सूफी सन्त के अमिट प्रभाव बा।

दाल बनावे में देस-देस के अलग-अलग चाल बा। उत्तर भारत में इमली आ मरिचा तामसी भोजन मानल जाला बाकिर दक्षिण भारत में ई दूनो के सात्विक मानल जाला। ओहिना बिना इमली आ मरिचा के भोजनवे ना घोंटाय। अइसहीं बर्मा (अब म्यांमार) में मीठो दाल क नाँव सुन के खखुआ के ना खाये के चाहीं। बर्मा के मीठी दाल मरिचा का मारे लाल रहेले। उड़ीसा आ बंगाल में दाल में चीनी पड़ले। जगन्नाथ पुरी के दाल गाढ़ आ मीठ होले।

पातर दाल स्वास्थ खातिर नीक मानल जाले बाकिर एतना पातरो ना रहे के चाहीं कि पाँचो अंगुरी गोताखोरी करे त कहीं एगो दाल मिले। बाकिर मँहगाई में केहू का दाल क हँसी उड़ावल ठीक नइखे। दाल में दलपिठौरी डाल दिहले दाल गाढ़ हो जाले आ नून क असर कम हो जाला। फौज का दाल में अगर नून देर बुझाला त आटा क लुण्डा डाल के नून खींच लिहल जाला।

बनारस लहुरा वीर पर मूंग का दाल क डोसा बहुत शानदार बनेला। रहिलो क सामान कमसब दगर थोड़े होला। रहिला त एगो अइसन दलहन ह कि अभी जमीन फोड़ के अँखुआइल नाहीं कि नोचाई सुरू! दाल त छोड़ी चना के भूसी बेंच के केतने अदिमी करोड़पति हो गइल बाड़न। एह चना क बड़ा महिमा सुने में आवेला। जब शाहजहाँ बादशाह के औरंगजेब बन्दी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बनवलस त कुछ दिन का बाद ऊ इनकोआइरी कइलस। त ऊ देखलस कि शाहजहां क बादशाही ओंइसही बा। औरंगजेब कहलस कि ई कुल ना चली। रउरा अपना खाये के एगो अन्न लेहीं आ एगो काम उठा लेहीं। शाहजहां अपना खाये खातिर चना मगलन आ काम खातिर लइका पढ़ावल। दूबारा जब औरंगजेब आइल त देख के हँसल। आगरा का किला में कतहीं पकौड़ी बनत रहे कतहीं घुघनी बनत रहे कतहीं बेसन क फ्परा—एगो चना आ हजार गो भोजन।

दाल मानव सभ्यता को रानी हउए। एही सांझ का समय अगर केहु के मेहरारू बार-बर टोकारी मार के कहे कि सुनऽ तानी, हम जातानी अब दाल बइठावे त गुनी जन का एकर अर्थ समझे के चाहीं। हमरा रैनाथ भइया एकर अर्थ समझलन। कहलन कि रुकऽ उठऽ तानी आ बाजार जाके दस गो गोड़ी ले अइलन। ओह दिन रैनाथ वो भउजी खियावत के एतना मगन भइली, एतना मगन भइली कि सामने आवसु त जनाय कि कवनो अंग्रेजी अखबार के 'पल्स' वाला रंगीन पन्ना हई। आँख गड़े त गड़ले रहि जाय।

पल्स माने दाल आ दाल माने भोजन के धड़कन! भोजन में धड़कन पैदा होला जब दाल बघारल जाले। हमनी किहें जीरा - हींग बहुत भइल त एक पोटी वाला एगो लहसुन आ मरिचा जइसन मन रहे घीव चाहे तेल में कलछुल में गरम कइ के छौंकऽ छन से—पूरा मोहल्ला न गमगमा उठल त कलछुल में फरक। बस कलछुल असली मिर्जापुरी देख के खरीदे के चाहीं।

अब बघारल कहाँ जाता! अब तऽ फ्राई होता! होटल में चल जाईं त दाल फ्राई, मटन फ्राई, प्याज फ्राई। ओहिजा फ्राई कल्चर चलेला फ्राई चीज ढेर खइले स्नायु मंडल में उत्तेजना पैदा होले। एहसे क्रोध रक्तचाप के प्रभाव रहेला।

लेकिन दाल मोठ त तरइवे करी। दिल्ली का ओर दाल क गन पाउडर बनेला। दाल के तेल में खूब भूजन जाला। ओकरा बाद ओके सील पर पीस के खटाई नमक मिर्चा मिला के डिब्बा में बन्द कइ के रख दिहल जाला। यात्रा में एह पउडरवा के पानी में घोर के रोटी से बोर के खइला पर नीक लागेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललित निबन्ध

दाल बनावे के विधि

—आनन्द सन्धिदूत

ई तऽ सभे जानत बा कि दाल गलावल जाले आ जेकर जेतने ढेर दाल गलेले ऊ ओतने ढेर सेसर-मीर मानल जाला। दाल गलावे के आ देयाद गलावे के विधि एक तरह के होले। देयाद के माने भइल -- सामाजिक उत्थान का रास्ता में पहिला प्रतिद्वन्द्वी। अब ई अन्तरविचार के विषय बा कि देयाद के हको मारल बुरा ह आ देयाद के बिना गलवले साबुत छोड़ियो दिहल बुरा ह, आ ई दूनो बात एके संगे कइसे सम्भव बा। ओइसे एह विन्दु पर हम ढेर ना सोच सकीं काहें कि नम्बर एक कि चाहे जेतना कमजोर से कमजोर देयाद होखो ऊ हमरा गलवले ना गली आ दूसर ई कि अगर ऊ गलियो जाई त हमरा बटलोही में हमरा खाये लायक भोजन तइयार ना होई ओहू में अपने आत्मा अपना के नरभक्षी आ स्वजातिभक्षी कहि—कहि के थुथकारत रही। एही कुल से हम खाली सीधा-सीधा दाल खाइल पसन्द करी ला।

लेकिन जइसन दाल हमार माई बनावति रहे ओइसन दाल अब नइखे मिलत। संयोग से एक दिन अचानक मिल गइल। भइल ई कि हम कवनो कारन से प्रेसर कूकर के ढक्कन बन्द करे में देरी कइ दिहवीं ज्ञ हमार दाल फफा उठलि। हम अपना माई नियर दाल के फेन काछ के हरदी-नमक डाल के ढक्कन लगा दिहवीं। ओह दिन दाल बहुत सुस्वादु आ सुपाच्य बनल आ पेट का स्वाभाविक स्थितियों में कवनो अवरोध ना आइल। तब हमरा माई के बात इयाद आइलि कि दाल के फेन जहर होला, ओकरा के निकाल देबे के चाहीं। हमरा समझ से आज जेतना आदिमी का पेट में गड़बड़ी बा ओह में से ढेर अदिमी के गड़बड़ी के कारण दाल के फेन बा। ई एतना फालतू चीज होला कि चेखुर-कौआ तक सूंघ के छोड़ देलन स।

दलहन बेसिचाइल खेत में बनबना के उगेले। दलहन के कई गो किस्म सिचाइयो वाला जगहि पर बोवल जा सकेले बाकिर स्वाद आ गुण में कुछ ओनइस होखेली स। अरहर का संगे त ई शर्त बा कि जब पैदा होई ऊ बेसिचुये खेत में पैदा होई। अब बहुत कम कृषि योग्य भूमि बिनसिचाइन बांचल बा एही से अरहरो क उपज हाल में कम हो गइलि रहलि ह। कम आमद भइले एकर दमवो बढ़ि गइल बा। अब गरीब परिवार में चार दिन-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छव दिन पर कलिया-मछरी नियर सोचि-समझि के तीन रुपिया के सइ ग्राम अरहर के दाल किनाता आ ओहू के दू बेरा बनावल जाता।

मूंग-मसूर आ चना (बूट चाहे रहिला) के दाल तनी रूखर होले। एकरा में मसाला डाल दिहला पर तरकारी के मजा आ जाला। बिहार में मूंग का दाल के चोखा बहुत बनेला। मसूर का दाल के कबाब सेंकला पर बड़ा सोन्ह लागेला। बनावलो आसान बा। मूंग के दाल भिगाइ के पीस लेही आ ओकरा में दू-चार गो कांच केला उसिन के मीस देहीं माने मिक्स कइ देहीं। आ ओही में हरियर मरिचा, धनिया के पतई, आदी मन करे त लहसुन-पियाज कचटि के डाल देहीं आ गोल टिकिया बना के सींकी में खोंस के लकड़ी का कोइला पर बोरसी में सेंक लेहीं चाहे गैस का तन्दूर में सेंक लेहीं। एकरा के कोफ्ता नियर तेलवो में तारि दिहला पर खात खानी बहुत सुख देला।

लहसुन-पियाज भोजन के बिगाड़ देला। स्वास्थो खातिर कवनो नीक चीज नाहीं हई। कभी-कभार क मसाला ह! असल में लहसुन शरीरी मेहनत करे वाला खातिर त अमृत ह बाकिर दिमागी मेहनत करे वाला खातिर ई कार चीज ह। लहसुन कायाकल्प क औषधि जरूर ह बाकिर जिन्दगी में क बेर। आज एतना लहसुन के खपत बा बाकिर कवव परिणाम निकलत ा? अइसहीं पियजुइया दाँत खातिर नुकसान देह होले। संस्कृत में अजुइया के मुखदूषक आ लहसुनवां के मलेच्छ कन्द कहल जाला। ओह माना में मलेच्छ खराब शब्द ना रहे। प्राकृत के कवि अद्दहमाण बहुत ं से अपना से मलेच्छ वंश के कवि लिखले बाड़न।

खेसारी (लतरी) के छाल विश्वयुद्ध का बाद पता ना काहें स्वास्थ तर बहुत हानिकारक हो गइल रहलि ह। अदिमी त छोड़ीं गोरू तक खइला पर ठेंहुन के रोगी हो जात रहलन स। एही से यू० पी०, बिहार में ा खेती पर कानूनन रोक लगावल रहल ह। अब ई रोक उठा लिहल कारन कि समय का प्रभाव से चाहे कृषि विज्ञान का कवनो खोज तरी के जहर कम हो गइल बा। अब खइला पर ठेंहुन धरे के डर बइखे।

दाल क भोजन में रहल बहुत जरूरी होला। दाल का सेवन ना कइले तक होखत देखल गइल बा। दाल के कमी दूर करे खातिर पुराना ा से अनेकन गो साधन निकालल गइल बा। ओह में अदउरी, उरी, पापड़ अब सोयाबीन क बरी आ मूंगी-परेह (कढ़ी) ई कुल दालिये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हजार के बाजार लागल बा। सावन-भादो के बरखा अस सलामी बरसत बा, तसीलदार हसोतथ बा। माल लगाव माल पाव। मुफ्त के जमीन, पुरहर सलामी। जेकरा के जमीन बन्दोबस्त भइल, ओकरा हाथ में लालकार्ड..... टेस लालकार्ड !

तसीलदार के कान में बनवारी फुसफुसाइल—"हमरो जमीन चाहीं —मिली..."

—का सलामी लागी ?

—हरिजन खातिर एक हजार पिछड़ल जात के दु हजार।

बनवारी के बुझाड़ल जइसे ओकर माथा पर केहू हथकड़ा मार देले होखे। ऊ कहँर उठल—बाप रे दू हजार !

जमीन बनवारी के सोझा झबकत रहे। माटी के सोन्ह महक जइसे ओकर मगज में समात होखे। ऊ बेयाकुल हो उठल आ दउर आइल घरे। ऊ कइसे दउरल कइसे घरे पहुँचल, ओकरा कुछ ना पता चलल।

अंगना में राजपुरवाली खटिया पर चिताने परल रहे। बनवारी के देखते उड के बइठ गइल। आपन मरद के देख के राजपुरवाली के भकुआ लाग गइल। बिनु कुछ कहले बनवारी आपन मेहरी के हाथ के पहुँची उतार लेलस, फिरु घर के कुछ बासन—बरतन बटोरलस। गमछी में मय सामान बान्ह के घर से बहरी आइल। सामान केकर के बेचो ? जदुनाथ सिंह के छोड़ के गाँव में आउर के बा जे दू हजार रोपेया दे सकेला बाकिर जदुनाथ सिंह छि:। ऊ सीधे दउर भइल गोबिन्दा के पास। गोविन्दा के सामने आपन मय बात ओसइलस आ ओकरा गोड़ पर रख देलस-मेहरी के पहुँची, घर के बासन-बरतन किर आपन मय लाज-सरम ! गरज में पागल हो गइल रहे बनवारी !

गोविन्दा देखलस—बनवारी के दुनो आँख लोर से भर आइल बा। गोविन्दा घर में गइल एक हजार के बेंवत लागल बाकी एक हजार खातिर गरीबा साव से हथकेर लेलस ! पूरे दू हजार के रकम। रकम पा के बनवारी नेहाल ले भइल, मन गदगद ! नोटन पर जब ओकर नजर परल त ओकरा बुझाड़ल जइसे उहन पर ओकर आपन हर, आपन बयल आपन खेत, आपन फसल साफ झलकत होखे। बनवारी गोविन्दा से निहोरा कइलस—"एगो कागज पर अरजी लिख के ओह पर हमार अँगूठा में करिखा लभा के ठेपा लगा दे भइया ! कहू बेर डूबल कि खेला खतम !

गोविन्दा सभ कर देलस। बनवारी सीधे खेमा भागल। अब ओकरा बिलकुल बिसास हो गइल बा कि रेहू मछरी, ललमुझा रेहू छिछली पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चढ़ गइल बा, जाल फेंकी आ हबक के रेहू पकड़ लीहीं। अब ना छुटी ऊ सोना अइसन जमीन……फिर त आपन हर, आपन बयल, आपन पसीना आपन नगीना !

बनवारी जब खेमा पहुंचल त देखलस—जदुनाथ सिंह के बगल में नगेसर खड़ा बा। नगेसरा के हाथ में लाल कार्ड बा। दुनो मुस्कात बाड़न। बनवारी तसीलदार के सामने अरजी आ रोपेया रख देलस—"हई आपन राखीं तसीलदार बाबू आ हमरा के लाल कार्ड दीहीं।

तसीलदार आंख गुरेर के बनवारी के देखलस —अब जमीन नइखे ।

— अइसन मत कहीं तसीलदार बाबू !

—हम कहतानी नू कि अब जमीन नइखे।

—रउवा से कह के हम घरे रोपेया लावे गइल रहीं !

—ऊ जमीन बन्दोबस्त हो गइल।

बनवारी के बुझाइल जइसे ओकरा झांव मार देले होखे, ओकरा आंखि के सामने अन्हरिया छा गइल। मन असथिर करके तसीलदार से निहोरा कइलस एह मउजा के आउर कवनो जमीन होखे त हमरा नामे बन्दोबस्त कर दीहीं।" एह मउजा के मय जमीन बन्दोबस्त हो गइली स।"

बनवारी तसीलदार के गोड पकड़ के रो देलस—दया करीं तसलीदार साहेब, हम बिलकुल भूमिहीन ना।"

तसीलदार बनवारी के झटक देलस। बनवारी के आंखि से आंसू गिरे लागल झर झर !

बनवारी के गरज हवा में उधिया गइल। मारे किरोध में ओकर आंख लाल-लाल हो गइल। ऊ लागल तसीलदार के फुहर—पातर बोले—घुसखोरन के दलालन के कवनो बिसास ना रहे, धर ना रहे, ना मन पसीजे, ना दया लागे हतेयार, लुटेरा, नीच, पापी, जमाखोर !

बेर डूबे लागल, लोग जाये लागल, बही-बस्ता बन्हाय लागल, खेमा उखड़े लागल।

लेवाजीत अब सून पड़ गइल। माथा पकड़ के बनवारी गुमसुम बइठ गइल—" जिनिगी में अब हयरा आपन कबो खेत ना होई, ना हर होई, ना बयल, ना आपन कवनो फसल।" ओकरा बुझात रहे जइसे ऊ काव नदी के बाढ़ में दहात जात होखे !

☐ ग्राम-पो०-घुसिया कला, भाया—विक्रमगंज, रोहतास-८०२२१२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई त दाल के अबे फुला झरल ह। लिखे लागीं त जइसे गिहिथिन मेहरारू चुरावे—डुभकावे का पहिले अन्न के एक-एक दाना देख डालेली सान आ दाल के छाँटि के चमका देली सनि ओइसहीं कथ्य गिहिथांव अप-विस्तृत हो जाई। बाकिर चलत-चलावत मोट-मोट बाति टाँके खातिर ई बा अरहर के दाल पुराना जमाना में बिना धोवले बनत रहे कि गल जाई। अब ऊ रंगल रहऽ तिया एह से धोवल जरूरी बा। बाकिर अगर हाँड़ी सें पकावे के होखे तऽ बिना धोवले डालीं फफइला पर पूरा पानी बदल के पकाईं।

अरहर के दाल मँहग बा त रहो, दाल के पचास गो विकल्प बा। जाड़ा का दिन में गादा का दाल के मोकाबला अरहर के दाल थोड़े करी! गादा का दाल के अवधी भाषा में निमोना कहल जाला। चाहे निमोता बनावे के होखे भा मटर के छोला चाहे राजमा ई कुल तबे नीक बनेला जब इहनी क कुछ अंश त खड़े डालल जाय आ कुछ के सील पर पीस के डालल जाय। एह से गाढ़, लसोर आ देखे में नीक लागेला।

अब भोजन सब नीक करे चाहत बा बाकिर सील-लोढ़ा से बड़ा बेर बा। केहू कबेरा में मिक्सी लेके बइठल बा त कवनो मेहरारू अपना खटिया में ग्राइन्डर कसले मिली। घर के नौकरानी पीठ पीछे बुदबुदात मिली कि जबन चीज इनका दाल-तरकारी में पड़ेले ऊहे हमनियो किहें पड़ेले बाकिर इनका खयेका में कवनों स्वाद ना होखे। कइसे पैदा होई स्वाद! स्वाद पैदा करे के बा त एगो लवँग-लाची आ एक जवा लहसुन-पियाज-अदरक पीस के (सील पर) डाल देहीं गमक ऊहे पुराना जमाना का आजी-ईया का हाथ वाला पैदा हो जाई।

अब तऽ सील लोढ़ा क महत्व एतने बा कि नौकरानी कुछ पीस दे त पीस दे नाहीं त शादी-विवाह का सम्हेरा मँड़वा में पितर नेवते के आ अइघाये का बेरा ऊहे पाँच एहवातिन लोग सिल्क-शेफान क साड़ी पहिन के मन्तर नियर गीत बुदबुदाई—

अब घसर-घसर पीसे दाल
अहो दिल जनिया ना!

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

के पाठक खातिर नया साल १९९७ के उपहार

डॉ० बिवेकी राय के उपन्यास 'अमंगलहारी'

के धारावाहिक प्रकाशन

जनवरी १९९७ अंक से

☐ इलाहाबाद बैंक, मुख्य शाखा, मिर्जापुर, उ० प्र०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धारावाहिक रेखाचित्र/आखिरी किस्त

गियान क गोहरउर—सुखदेव काका

(III)

—डा० विजय बलियाटिक

गाइ-बछरु की चोरी गइला पर सुखदेव काका बहुत दुःखी भइलन। ऊ हमरा से कहलन—बचवा, बछरू की चोरी क ओतना दुःख नइखे, जेतना पछतावा हमरी घरे चोरन की चढ़ आवे क बाटे। टेढ़ू भइया क जेवन दबदबा रहल ह, ऊ धोवा गइल। भइया की जमाना में अरिआत-करिआत में केहूमें एतना हिम्मत ना रहे कि भइया की सोझा खड़ा हो सके। एही गाँव में बड़े बड़े सरहड भइलन, बाकी भइया कुल्हि जाना क नस ढील क दिहलन। हुँड़रही क राजबली क बागे ना अड़ात रहे। ऊ केहू की खेत में से हरियर जजाति उखार लेस। केवनो ओके लेलकार दिहलस कि टेढ़ू सिंह की खेत में हाथ लगा द, त तोहके बीर बखानब। सहक में आके राजबली हमरी खेत में से फरल कराह एक बोझा उखारले गइलन। दोसरा दिने टेढ़ू भइया ढूका लगलन राजबली केराह उखरते में धरा गइलन। भइया ओकरा के धके दुआर पर ले अइलन आ नीबि की फेड़ में बान्हिके भर हीक धोवलन। हर क फार गरम कके ओकरी दूनो चूतर पर दागे नात रहलन। तले तोहार बाबा आ गइलन। राजबली उनका के देखते कलपे लगलन 'दोहाई बाबा, हमार जान बकसवा द। हम कान धरत बानी कि भुलइलो एनी ना ताकब'। तोहार बाबा हमरी भइया के डांट डपट के राजबली के छोड़वा दिहलन। तबसे राजबली फेरु हमरी खेतन की ओर कब्बों ना तकलन। अब ऊ धाक मेटा गइलि।

हम काका के टोकलीं—छोड़ऽ काका, तोहार टेढ़ू भइया बाघ रहलन, ई बखान कइला से तोहार गाइ-बछरू चोर ना लवटइहन स। अब ई सोचऽ कि कइसे तोहार गाइ-बछरू मिलिहन। मुँहे करिखा त पोताई गइल! केहू तरे नाकि बचावे के बा!

काका मछुअइले बोललन—ठीके कहत बाड़ऽ हो बबुआ। आछा, हम ओझा से चोरन क नाँव निकलवावत बानी। बिरनो में एगो बाबू सूबा सिंह बाड़न। ऊ अच्छत धइला पर बई बई बता देलन। हम अजुए उनकी इहाँ जात बानी। राति-बिराति ले हम लवट आइब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काका ओझा कोहाँ से अइलन, त बतवलन कि सूबा सिंह क कहना बा कि गाइ-बछरू अँकटही क अहिर खोलले बाड़न स आ एगो घर में बन्हले बाड़न स। दू-तीन दिन में ऊ उन्हनी के उहवाँ से हटइहन स।

काका की राइ की मोताबिक हम, बिरिछा सिंह आ काका भाला ले-ले अँकटही की निकसार की डहरि से थोरी दूरी पर बइरकंटी की आड़ा ढूका लगाके टाही में बइठ गइलीं जा। आधी राति भइलि त अँकटही की ओर से चदरा ओढ़ले आ कान्हि पर लउरि धइले रहता पर आवत एगो अदिमी लउकल। काका फुसफुसाते कहलन—देखऽ जा जब ई अदिमी हमनी की सोझा आ जाव, त बिरिछा भाला देखा के ओकरा के रोकिहन। अगेही घरी बबुआ आ हम ओकर टाङि धींचिके गिरा देइब जा। फेर का करे के होई, ऊ हम करब। अब सजग हो जा-जा।

ऊ अदिमी जइसहीं हमनी की निगिचा पहुँचल, बिरिछा सिंह भाला तनले कुलाँचि के ओकरी आङ। खड़ा होके ओकरी सीना से भाला सटा दिहलन। हम आ काका ओकर टाङि धींचि के गिरा दिहलीं जा। काका अपनी थइली में से जेंवरि निकालि के ओकर हाथ हुमचि के बान्ह दिहलन। ऊ बिलरी क रेखिआउठान बेटा जनमा रहे। ऊ टुकुर टुकुर हमनी की ओर ताकत रहे। ओके काका की घरे ले अइलीं जा। जनमा रिरिआके पुछलस—हे बाबू साहेब, हम राउर का बिगरले बानी कि हमार ई गती कइल जात बाटे।

काका गरज के कहलन—हमार गइया बछरुआ खोलले, तब कहँ ना सोचले कि का करत बानी? तोर मन तब्बे से बढ़ गइल, जब तूँ धोबिया क गदहा ऊखि में बान्ह के ओकरा से पनहा असुलले। हमार गाइ-बाछा सोझे लवटा दे, ना त तोरा के भुजुरी-भुजुरी काटि के नदी में बहवा देइब। कइसे तोर हिम्मत भइल कि तूँ हमरी दुआर पर से गाइ हाँकि ले गइले! का तूँ हमरा के घासि-भूसा बुझले रहले ह? हुँह, बाप ना दादा, तीन पुस्त हराम-जादा! अधी राति के निकलल रहलन हँ कि सूनसान होखे त गाइ-बाछा के नदी पार करा दीं! बोलु, हमार गाइ-बाछा काहाँ बन्हले बाड़े!

फेंरू काका चारि-पाँच लात ओकरी पीठी पर हनलन। जनमा डेकरल—बाबू साहेब, अनेरिहे हमरा के मारत बाड़ऽ। हम तोहार गाइ नइखीं चोरवले। तूँ जेवन किरिया कहऽ, हम खाए के तइयार बानी। रतियाँ हम डीह पर गोइ हिरवले रहुईं, ओहीजा जात रहुईं। गुरू-गोसइँए किरिए हम रउरी गाइ-बाछा की बारे में कुछऊ नइखीं जानत। गाइ मत बधीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काका जनमा के फेरू हू लात मरलन आ विरिछा सिंह से कहलन—का मुँह ताकत बाड़ऽ ? जा गँड़ासि ले आवऽ। एकर हाथ-गोड़ कटाई, तब्बे ई साँच बकी। का हमार गाइ-बाछा पचावे क एह ससुरा में खेमासा बा ? अब्बो बखत बा, गाइ-बाछा क पाता-ठेकान बता दे, ना त छने भर में जमराज कीहाँ चहुँप जइबे।

विरिछा सिंह गँड़ासि लेके अइलन। काका झपटि के उनकी हाथ से ले लिहलन। जब ऊ जनमा क गोड़ काटे खातिर गँड़ासि तनलन, त ऊ चिचि-आइल—दोहाई बाबू साहेब, हमार मिनती सुनि ली, फेरू हमरा के काटीं। हम अब्बो कहत बानी कि राउर गाइ-बाछा हम नइखीं चोरवले। बाकी हम उन्हनी क दाम देबे के हीछत बानी। अब हमार जान छोड़ दीं।

हमरा जनमा पर दाया आइलि। हम काका से गँड़ासि ले लिहलीं आ कहलीं—काका, एकरी हत्या क पाप काहे के लेबऽ। एकरा से तीन-चारगो सादा कागद पर अङूठा लगवा लिहल जाव। ई सोझे गाइ-बाछा क दाम दे देई त ठीके रही। ना त सरखत बना के सिरिस्ता से असूल हो जाई।

गाइ-बाछा क दाम तीन सौ रुपिया तँ भइल। तीनि गो कागद पर जनमा क अङूठा निसानी लिहल गइल। जनमा क हाथ-गोड़ खोलाइल। कहलस—बाबू साहेब, हम परसों साँझि ले रुपिया दे जाइब। बाकी एगो निहोरा बा कि जेवन कुल्हि भइल ह, ऊ केहू जाने ना पावे। हम तोहरी गाइ-बाछा के खोजे में जीव-जान लगा देइब।

जनमा घरे गइल। ऊ दोसरे दिने राति खाने काका के तीनि सौ रुपिया दे गइल। पाँच-छह दिन बितला पर तिराहीपुर से एगो अदिमी आइल। ऊ बतवलस कि काका ओकरी इहाँ से जेवन गइया ले आइल रहलन, ऊ ओकरी घरे चहुँप गइलि बिया, चलि के हाँकि लिआवसु।

काका तिराहीपुर गइलन आ गाइ-बछरू के हाँकि लिअइलन। जनमा आपन रुपिया माङे आइल, त काका ओके हड़कवलन—जब गाइ-बाछा खपा ना पवले ह, त सिवान में छोड़ दिहले ह। अब रुपिया माङे चलि अइले ह ! थाना में रपट लिखा देईं, त बे हर्रे-फिटिकिरी लगले जेहल काटे चल जइबे। सरकु इहवाँ से।

जनमा मुँह लटकवले घरे चल गइल !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमरे गाँव में एगो ढुक्कू भर रहलन। ऊ चमरैना आ छोटका भरपुरवा क नेता रहलन। सुखदेव काका की सङी नगीना सिंह क ऊ हर जोतस। एक दिन हुड़रही की बाबू लोगन की लइकन से केवनो बाति पर ढुक्कू भिड़ गइलन। हल्ला सुनिके चार-पाँचगो रजपूतन क नवहा अइलन स आ ढुक्कू के भर हीक सोलहरलन स। ढुक्कू क कपार फाट गइल आ ऊ दरिए लोट गइलन। चमरैना आ भरटोली क लोग ढुक्कू क गोहार करे आवत रहे, त ओहू लोग के खेदि के हुड़रही क नवहा भरलन स। नगीना सिंह अइलन। ऊ ढुक्कू के उठवा के थाना पर ले गइलन। रपट लिखवा के ढुक्कू के अस्पताल में भरती करवलन। मारेवालन रजपुत नवहा लोग के पुलिस धइलस आ कचहरी से ओह लोगन क जमानत भइलि। ढुक्कू क पिटाई काका की खेत की निगिचा भइल रहे। एसे नगीना सिंह की कहला पर ऊ मोका क गवाह बनलन।

जहिया गवाही देवे जाए के रहे, काका आपन धराऊँ कुरुता-धोती पहिरलन। तेल पिआवल चमउआ मोड़न में डललन। कपार पर साफा बन्हलन आ हाथ में सगुनिया सोटा लिहलन। बुझाव जे बन-ठन के वराते जात बाड़न! कचहरी में सरकारी वकील की सिखवला की मोताबिक बयान दिहलन। सफाई क वकील उनका से जिरह सुरू कइलन। वकील पुछलन—बाबू सुखदेव सिंह, साँचे-साच बतावऽ कि जब ढुक्कू पिटात रहलन, तब तूँ उहवाँ रहलऽ आ ढुक्कू के पिटात देखलऽ।

काका जबानी हमला कइलन—उहवाँ हम ना रहलीं, त का तूँ रहलऽ?

वकीलवा हड़कवलस—हे सुखदेव सिंह, हम जेवन पूछत बानी ओकर सोझ जबाव द, ना त हई सिपाही की हाथ में क हथकड़िया तोहरा लागि जाई!

काका ताव खा गइलन आ बोललन—ई सुनले बाड़ऽ कि ना? ओरी तर क भूत सात पुस्त क हाल जानेला! तूँ हमरे जब क हवऽ। हम तोहार सीरीनामा बाँचि देइब! जा मरदे, मुसहरन से चोरी-डकइती करावऽ। नाहके करिअइ कोट पहिरि के वकील बनल बाड़ऽ। तूँ थाना क दलाल हमरा के हुरपेटत बाड़ऽ!

वकील साहेब का थथम्ही लागि गइलि। बाकी जज साहेब काका के डँटलन आ कहलन कि वकील साहेब जेवन पूछत बाड़न ओकर जबाब द।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेरु वकील साहेब काका से पुछलन - तूँ हे नवहन की ओर देखिके बतावऽ कि जब ई लोग ढुक्कू के मारत रहे, तब तू उहवाँ रहलऽ आ एह लोगन के लउरि चलवत देखलऽ।

काका ढुक्कू के मारे में फंसल नवहन की ओर तकलन, त ना जाने उनका का हो गइल। ऊ जज साहेब के हाथ जोरिके कहलन—सरकार, साँच त ईहे हवे कि ढुक्कू के मारत एह लोगन के हम ना देखलीं। हम अपना सड़ी नगीना सिंह की कहला में आके गवाही देबे के संकार लिहलीं।

जज साहेब कहलन—अच्छा जा, फेरु केहू की कहला में आके झूठ गवाही देबे मत अइहऽ। काका कचहरी से बहरिआइलन आ सोझे घरे क डहरि धइलन। जब हम पुछलीं कि गवाही कइसन गुजरलि ह, त ऊ कहलन—का पुछले बाड़ऽ ए बचवा, नरक गइला से बाँचि गइलीं हँ! हम सोझे कहि दिहलीं ह कि हम ना देखलीं कि के ढुक्कू के मारल। हमरा ई कहला पर जज साहेब बड़ा खुस होखुवन। हम अब कान धइले बानीं कि चाहे कुछ हो जाई, हम गवाही देबे ना, जाइब! अरे ऊ कचहरी ना, नरक बाटे!

ढुक्कू के पीटेवाला नवहा बेदाग छुट गइलन स। ऊ गाँवे अइलन स, त पहिले काका क गोड़ छुअलन स आ कहलन स—काका, हमनी का बुझा गइल बा कि आपन अपने ह। हँसुआ केतनो सोझ होखी, तब्बो ऊ अपने ओर घींची! तूँ हमनी क जिनिगी बचा दिहले बाड़। जुग-जुग हमनी पर एही तरे छोह कइले रहिह!

जब केहू क मजाक उड़ावे के होला, त लोग कहेला 'धन नाँवे कठवत, हित नाँवे फूआ' काका की बारे में ई कहाउति सौ पइसा साँच रहे। उनकी घरे बाप-दादा की जमाना क एगो बड़हन पीतर क कठवत रहे। सभसे दमगर बीखे ऊहे उनकी लड़ी रहे। काका क ननिआउर बिहार में कतहीं रहे। ऊ गाँव बाढ़ि में बह-दह गइल। बाप-माई आ भाई-बहिन सभ मरि गइल रहे। उनकर फूओ मर गइल रहलीं, बाकी फूआ की लइकन से हितई चलत रहे। ऊहो एतना चगाड़ रहलब स कि गाहे-बेगाहे काका कीहाँ आब स आ झूँसि—झाँसि के जेवने मिले ले जा स। काका क जिनिगी भउरी-चोखा आ खिचड़ी पर कटत रहे। ऊ कब्बो नीक खइलन-पहिरलन ना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काका आ बिरिछा सिंह क साझे में ऊखि पेरे वाला कोल्हू रहे। एक दिन ऊहे गाड़ल जात रहे। सुखदेवो काका कोल्हू उठावे में लागल रहलन। अचके में कोल्हू काका की गोड़ पर गिर गइल। उनकर ठेहुन से नीचे क एगो टाङि भुरकुस हो गइलि। तीन गो अङुरी कटाके फेंकन गइली स। काका बइठक हो गइलन। बस्ती गाँव की बैदजी क दवा होखे लागलि। महीनन बाद काका सोटा की सहारा से चले लगलन। बाकी गते-गते घाव सइनि हो गइल। काका क हालत खराब होखे लागल। उनकी फूआ क लइका अइलन स आ काका की घर क कुल्हि समान समेत मचोलना पर उनका के अपनी गांवे ले गइलन स। जाए की बेरी हम काका के हाथ जोड़लीं। ऊ हमार पीठि ठोकत कहलन—बचवा, जुग-जुग जीअ। अब हमार-तोहार अखिरी भेंट ह!

काका की आँखिन में लोर भर आइल। ऊ अपनी थइली में से कागद क एगो पुलिन्दा निकालि के हमरा के दिहलन आ कहलन—ल, ईहे हमार थाती ह। एके सम्हारिके रखि ह। हमरी केवनो बाति क अमरख मत मनि ह!

बाद में लोगन से सुनलीं कि काका का जब हुटुकी लागल रहे, ओही घरी उनकी फूआ क लइका कचहरी ले जाके उनकर जर-जमीन अपनी नाँवे लिखववलन स। कचहरी से बहरा अवते काका क परान छूट गइल। ओनिए उनके फूँक-ताप दिहल लोग। जनम भूइँ पर उनकर लसियो ना आइलि। काका की बंस क दिआ बुता गइलि!

काका क कागद क पुलिन्दा हम खोललीं, त ओमे ऊ अपनी जिनिगी पर तुकबन्दी कइले रहलन। आखिरी पन्ना पर ऊ लिखले रहलन—

जेवन चहलीं तेवन कइलीं। सभके हम ठेङे पर धइलीं॥
नाहक करीं का दावा—मइया। बूड़त बा ई बस हे भइया॥
कह 'सुखदेव' सुन हो बबुआ। अब सरगे में खेलब फगुआ॥

काका क कागदी थाती हम जोगा के धइले बानी। हे भगवान, काका के सरग में जगह दीहऽ।

□ मुड़ेरा, रसड़ा-२२१७१२ (बलिया)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकरागिनी

भोजपुरी भटियाली

—पी० चन्द्रविनोद

आरे ओ ऽ ऽ ऽ
हो मलहवा मोर भाई !
नोहार कसम, राखब नाहीं, बाकी अब खेवाई
मोर भाई !

बाकी - साकी, लेनी - देनी
भइल भूल — चूक
का कहीं आ का छिपाई
उठे मने हूक

हो मलहवा मोर भाई !
खून पसेना एक करीले, पाई नाहीं पाई
मोर भाई !

भरल आँखी लोर बा
फाँड़ा में झरल फूल
लेलऽ आपन कुल खेवाई
जे बा अनुकूल

हो मलहवा मोर भाई !
चान—सुरुजऽ तोहर बाप-दादा के कमाई
मोर भाई !

सुख जोहतऽ दिन सिराइल
दुख काटतऽ रात
ऊँचा खाला पाँव पड़ेला
के बुझेला बात

हो मलहवा मोर भाई !
हाली - हाली पार करावऽ, पाटऽ एगो खाई
मोर भाई !

☐ न्यू एफ 11, हैदराबाद कालोनी, बी.एच.यू., वाराणसी-221005

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोकरागिनी

कवन चिरई फँसवलऽ ?

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

गउवाँ से जाके ना पाती पठवलऽ,
हमार बलमू, कवन चिरई फँसवलऽ ?

जाँगर ठेठावे तू गइल रहऽ बहरी,
उहवाँ जाते का तू हो गइलऽ, शहरी ?
अपना खोंता के तू सुधि बिसरवलऽ,
हमार बलमू...

शहरी फैशन में बा आँख चौंधियाइल,
केकरा सुनरई में बाड़ऽ भोराइल ?
तेजि के सोना दिल में पीतर बसवलऽ,
हमार बलमू...

छोड़ि द शहरिया के घुटि-घुटि के जीयल,
घोंटे-घोंटे चाह नियर जहर रोज पीयल !
मृगतृष्ना में खुदके काहे भटकवलऽ,
हमार बलमू...

समुन्दर के जल से पियास ना बुताला,
गंगाजल में तन-मन तिरपित हो जाला।
भगवती के सोन्ह-मीठ गीत तू भुलवलऽ,
हमार बलमू, कवन चिरई फँसवलऽ ?

□ पोस्ट बॉक्स 115, पटना-800001 (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी कविता में राष्ट्रीय चेतना*

—चन्द्रशेखर पाठक

बीसवी शताब्दी के प्रांरभ में पहिले जे प्रमुख काव्य प्रवृत्ति उभरल ऊ बा राष्ट्रीय चेतना। देश ओह घरी गुलाम रहे। स्वाधीनता के लड़ाई ठना गइल रहे आ ऊ जोर पर रहे। समूचा देश में अँग्रेजन के हटावे खातिर आन्दोलन चलत रहे आ हर भाषा में राष्ट्रीय चेतना के स्वर बुलंद होत रहे। भोजपुरी कवि लोग एह प्रवृत्ति के अपनावल लोग आ अपना कवितन से भारत माता के चरण में आपन सुमन अर्पित कइल लोग। एह प्रवृत्ति के सबसे महत्वपूर्ण उल्लेखनीय आ स्मरणीय कवि भइले रघुवीर नारायण। उनुकर 'बटोहिया' गीत बहुत दिन तक हिन्दी प्रदेश में राष्ट्रीय गीत के रूप में मान्यता प्राप्त कइले रहे। हिन्दी के राष्ट्रीय धारा के कवि देश के प्राकृत्तिक सौन्दर्य, आ सांस्कृतिक गौरव के गान करत रहे लोग। 'बटोहिया' में भी भारत के सौन्दर्य, आर्थिक सम्पन्नता आ सांस्कृतिक गौरव के आख्यान भइल बा—

सुन्दर सुभूमि भैया भारत के देसवा से,
मोर प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया ॥
एक द्वार घेरे राम हिम-कोतवालवा से
तीन द्वार सिन्धु घहरावे रे बटोहिया ॥ .....

'बटोहिया' एगो राष्ट्रीय गीत ह। राष्ट्रीय गीत में साधारणतः पहिले देश के रूप में महिमा गावल जाला। ओही पैटर्न के अपनावत रघुवीर नारायण एह कविता में भारत भूमि के वाह्य रूप के महिमा प्रस्तुत कइले बाड़े। राम नरेश त्रिपाठी हिन्दी में भारत देश के रूप एह तरी से खड़ा कइले बाड़े—

'जिसका मुकुट हिमालय,
जिसका चरण निरंतर,
रत्नेश धो रहा है
वह देश कौन सा है।'

---

* अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पन्द्रहवाँ अधिवेशन में 'पाण्डेय योगेन्द्र नारायण छात्र निबन्ध पुरस्कार' से पुरस्कृत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रघुवीर नारायण अइसन देश प्रेमी रहले कि आपन जन्म भूमि भारत उनुका बड़ा प्रिय आ सुन्दर लागत रहे। जन्म भूमि के प्रति प्यार एगो स्वाभाविक वृत ह। रामचरित मानस में राम कहले बाड़े—'जन्म भूमि ममपुरी सुहावन'। वेद में कहल बा भूमि हमार माता ह आ हमनी का ओकरा संतान हईं जा—'माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्या।'

एह परम्परा के दोसर महत्त्वपूर्ण कवि बाड़े मनोरंजन प्रसाद सिंह। मनोरंजन बाबू स्वदेश रचना के समर्थक रहले। कला के लिए कला सिद्धांत में उनुकरा विश्वास ना रहे। ऊ मैथिलीशरण गुप्त के सिद्धांत के मानत रहले। मैथिलीशरण गुप्त के 'भारत भारती' राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के गीता मानल जात रहे। ओह में कवि गुप्तजी भारत अतीत गौरव वर्त्तमान पूर्व का भविष्य के सुखल सपना के बड़ा मार्मिक उल्लेख कइले बाड़े। उनुकर काव्य सिद्धांत इहे रहे कि कविता के द्वारा लोकहित, समाजहित आ राष्ट्रहित होखे के चाहीं। 'साकेत' में ऊ कइले बाड़े—

'हो रहा है जो जहाँ सो हो रहा, यदि वही हमने कहा तो क्या कहा।
किन्तु कवि होना चाहिए, कब क्या कहाँ व्यक्त करती है कला ही यहाँ॥

मनोरंजन बाबू 'बटोहिया' के तर्ज पर 'फिरंगिया' लिखले, जे बड़ा लोकप्रिय भइल। 'बटोहिया' से एक डेग आगहीं मनोरंजन प्रसाद सिंह बढ़ि गइले। 'बटोहिया' में जुल्मी अँग्रेजन के अत्याचार के उल्लेख नइखे बाकिर 'फिरंगिया' में मनोरंजन प्रसाद सिंह अँग्रेजन के अत्याचार के दारुण चित्र उरेउहले बाड़े आ साथे-साथ अँग्रेजन के चुनौती भी देले बाड़े।—

'सुन्दर-सुथर भूमि भारत के रहे रामा, आज इहे भइल मसान रे फिरंगिया।
अन्न-धन-जन-बल-बुद्धि सब नास भइल, कवनो के ना रहल निसान रे फिरंगिया'॥

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अँग्रेजन के शोषण चक्र के सबसे पहिले पहचाने वाला भारतीय कवि रहले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र। ऊ कहले—

'रोवहूँ सब मिलि भारत भाई, हा-हा भारत दुर्दशा न देखी जाई।
अँग्रेज राज सुख साज सजे सब भाई, पै धन विदेश चलि जात इहे अति खारी,?

एही राष्ट्रीय चेतना काव्यधारा के बीच राम वचन द्विवेदी 'अरविन्द' भी देशवासी के 'लड़ाई के ओर' शीर्षक में जगत रहि के आलस छोड़ि के अपना राष्ट्र के रक्षा खातिर तइयार होखे के एह कबिता में कहऽताड़े—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'दुसमन देस के दबावे खाती आवत बाटे,
उठ भइया, उठऽ अब देर ना लगाईं जा।"

सरदार हरिहर सिंह देश वासियन के, जे देश के चिंता नइखे करत ओकरो के मिल-जुल के देश के रक्षा करे खातिर तइयार होखे के संदेश देत अपना एह कविता से राष्ट्रीय चेतना जगावे के कहऽ ताड़े---

"चलु भैया चलु आजु सभे जन हिल-मिल।
सुतल जे भारत के भाई के जगाईं जा॥"

प्रसिद्ध नारायण सिंह के नवीन काव्य में ओज-गुण के मात्रा विशेष रूप से पावल जाता। सन् १८५७ ई० के विद्रोह के बड़ा जीवंत वर्णन अपना कविता में कइले बाड़े, जवना में बलिया के मंगल पांडे के बलिदान के जिकिर भइल बा। वीरन के ललकारत कहत बाड़नः

'जब सन्तावनि के रारि भइल,
वीरन के वीर पुकार भइल।
बलिया का मंगल पांडे के,
बलि-वेदी से ललकार भइल"

कविवर 'चंचरीक' गाँव के गीतन में देश सेवा के भावना रस जगावत हमनी के राष्ट्रीय चेतना के जाग्रत कइले बाड़े। गाँधीजी के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेबे खातिर कवनो मेहरारू का अपना मर्द के ई उपदेश दिहल कतना उत्साहवर्धक बा–

"जाहु,जाहु,जाहु, पिया देश के लड़इया हो, तोड़ि देहु अब कदरइया।
हा सियाराम से बनी॥

होके मरद मरदुमी अब देखलाऊ, देसवा में होइहे लड़इया! सियाराम० लागे सरम लाजि घर में बइठि जाहु, मरद से बनी के लुगइया! सियाराम० पहिरि केसरिया सारी हम चलि जइबै हो राखि लेबे तुहरो पगड़िया! सियाराम०

सन् 1962 में चीन के आक्रमण देश के स्वाभिमान के एगो झटका दिहलस भोजपुरी कबि ओह से अछूता ना रहले। उहो देश भक्ति से ओत-प्रोत रचना के माध्यम से देशवासियन में नया प्रेरणा के संचार कइले। कवि किरण के 'बांवनी' वीर रस आ राष्ट्रीय चेतना के एगो अद्भुत समन्वय ह। कवि के वाणी के ओज देखीं --

'हमरा से जान जे बचावै के चाहऽ त,
भाग के लुका जा कहीं झांपी भा दउरी में,
नाही त खीसि जे बरइबऽ अनेरे त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेदि के घुलाटबि हम पेंकिंग के सउरी में।
लइका के ह ना चुलवासि रार के नाधल
खोदऽ मति माटा के झोंझ सहजभउरी में,
अबहीं जवानी बा, जोस बाटे, होस बाटे,
आग का भराइल एह सत फुट्टा लउरी में ।।"

आपन रोष चीनीयन के प्रति प्रकट क के ऊ विष्णु के दर्पमदी परम्परा आ राष्ट्रीय चेतना के ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत कइले बाड़े।

'हिमालय ना झुकी कबहूँ' डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' के चीन विरोधी कवितन के संकलन ह। चीन भारत पर जवन आक्रमण कइले रहे, ओही युद्ध के प्रतिक्रिया स्वरुप 'हिमालय ना झुकी कबहूँ' के रचना कइले। 'ललकार' शीर्षक कविता में एह संघर्ष के समय एह देश के वासियन का हृदय के राष्ट्रीय प्रेम, भक्ति, वीरता के उमंग आ उत्साह के वर्णन करत कवि कहऽताड़े:—

'बीतल आलस, सब जागि गइल, कायरपन सभकर भागि गइल।
सब टूटि परल जूझे खातिर, जब रिपु से लोहा लागि गइल।
अब जागल जोश जवानी में, पौरुष पहुँचल बलदानी में,
देखी दुनिया अब आगि लगत, कइसे बर्फीला पानी में ।।"

श्री भोला नाथ 'गहमरी' के भी देश भक्ति के गीतन में 'मोर सिपाही हो' शीर्षक कविता बड़ा बढ़िया आ सरस बा। युद्ध क्षेत्र में शत्रुअन के सेना से मोर्चा लेवे वाला वीरन कें प्रशंसा करत कवि कहऽताड़े कि ए हमरा देश के जवान लोग, जब-जब भारत माता पर आफत आइल तब-तब तू ही माई के लाज रखलऽ। एह में राष्ट्रीय चेतना के दर्शावल गइल बा—

'जब-जब देसवा पर परली विपत्तिया।
मोर सिपाही होऽ, लजिया के तूँहीं रखवार ।।
बाप महतारी तेजलऽ तेजलऽ तिरियवा।
मोर सिपाही होऽ, तेजल ऽ तूँ घरवा दुआर ।।'

मंगल पांडे सन् १८५७ ई० के प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सेनानी रहले। अपना देश भक्ति के कारण उनुका अपना प्राणन से हाथ धोवे के पड़ल। अँग्रेजी राज्य उनुका के फाँसी पर चढ़ा दिहलस। मंगल पाण्डेय अपना साथी सैनिकन के जे आह्वान कइले ओह आह्वान में जवन राष्ट्रीय वीरता बा ओकर बड़ा ओजस्वी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशन डॉ० राम विचार पाण्डेय कइले। ओह में राष्ट्रीय चेतना कूट-कूट के भरल बा। ऊ देश के नवजवानन के ललकारत बाड़े—

'सामने अँगार बा, बड़ा तेज धार बा,
जीत बा कि हार बा, देश के पुकार बा,
देश के गोहार बा, के कहऽ तइयार बा,
माँ के पुत्र बढ़ चलऽ, के कहऽ तइयार बा।

श्री राधा मोहन 'राधेश' के 'माटी की लाज' शीर्षक कविता बा जवना में अपना भोजपुरी भाषा आ साहित्य के रक्षा खातिर नवजवानन के उद्बोधित कइले बाड़े। एह गीत से निश्चय ही राष्ट्र प्रेम के प्रेरणा मिलता—

'बात बनावे के बारी न बाटे कि माटी के बोली बचावे के बारी।
जागि के देख मसाल जराई के, बा उटकेरल तलफल आगी।
चेतल लो सभ माटी के बेटन, पाँच किरोड़ चुप्राइल काहे।
देस-विदेस ले बा छपले, ओकरे बेटवा मेहराइल काहे।''

श्री चन्द्रशेखर मिश्र के 'कुँवर सिंह' में राष्ट्रीय चेतना के अइसन माहौल उपजावल गइल बा कि पूरा भोजपुरी जनपद देश प्रेमी आ भक्त हो गइल बा। औरतो चूरी पहिरे के तइयार नइखी—

'नेवता बलि वेदी के छोड़ि के औरन कऽ कबहूँ यह आवत नाही।
मारू जुझारू भरी कविता, रस दूसरे में केहू आवत नाही।
छोड़ि के वीर भरी कविता, रस दूसरे में केहू आवत नाही।
छूरी-कटारी बिकै सगरी चुरिहारिन गाँव में आवत नाही।

कविवर ईश के रचना से कुँवर सिंह के सेना के शपथ ग्रहण होत रहे। एह शपथ के कविता में ओजस्वी वीर रस के साथे राष्ट्रीय चेतना के उछाह देखे लायक बा—

'पँतरा पर दउरे लागी, खेदि-खेदि शत्रु काटी,
शत्रु तोप नाल पइठि गोला काढि लाई ज्वाल,
रवि रथ रोकि लीहीं, जमराज डाँटि, हाँकि
डाकिनी के खप्पर में ईश भरी रकत लाल।''

देश प्रेम, भक्ति, बलिदान, गर्व आ ललकार भरल एह कविता में राष्ट्रीय चेतना के मनमोहक उचार भइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू कुँवर सिंह के पवरुख, बल के बखान राष्ट्रीय चेतना के कवि डॉ० कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के 'वीर बाबू कुँवर सिंह' में भइल बा। जन्म भूमि के कुँवर सिंह भुलाइल नइखन।

'का थाकल बा पवरुख हमार,
बल बंधक बा ई धराइल रे,
का जनम भूइँ वा परल भोर,
कि भारत देश भुलाइल रे।'

डॉ० सर्वदेव तिवारी 'राकेश' के 'काल जयी कुँवर सिंह' में बाँसुरिया बाबा रास रंग मैं डूबल कुँवर सिंह के साँचो के प्रेरणा देले। देह प्रेम से देश प्रेम के ओर कुँवर सिंह के मन-भावना के मोड़े में बाँसुरिया बाबा के बड़हन सहयोग बा। 'राकेश' के बाँसुरिया संत बहुत जियतार, प्रेरक आ उद्बोधक के रूप में उभरल बाड़े। बाँसुरिया बाबा रास भावना के रण भावना के ओर मोड़त कहताड़े—

'सोंची तन मन के कड़ेर कई बाबू मोर, जिनगी के मोड़ रवे हाथ,
करसी के आगी लेखा देस सुनगत आजु, कइसे सोहाई कहीं रास।"

अतने ना डॉ० 'राकेश' जी कविता में हिन्दू के महान पर्व होली भी अछूता नइखे। दिन में लोग रंग खेलेला बाकिर एगो अपना राष्ट्र के भी चिंता रहेला। एही से नू गावल जाला—

'बाबू कुँवर सिंह तोहरे राज बिनु, अब ना रंगइबो केसरिया।
इतते अइले घेरि फिरंगी, उतते कुँवर दू भाई,
गोला बारुद के चले फिचकारी, बीचवा मैं होत लड़ाई।

डॉ० 'राकेश' जी के बाँसुरिया बाबा राष्ट्रीय चेतना के प्रतिमान बानी। इहाँ के राष्ट्रीयता मानववाद के प्रतिरूप बा। इहाँ के मान्यता बा कि एक जाति द्वारा दोसरा जाति के शोषण मानवता के विरोध बा। कवनो देश पर दोसरा देश के अधिकार साम्राज्यवादी शोषण के ही प्रतिरूप ह। एह से विदेशी दासता से मुक्ति के चेष्टा हर मनुष्य के धार्मिक कर्त्तव्य बा। एही अर्थ में विदेशी सत्ता के उखाड़ फेंकल इहाँ के आपन धार्मिक अ नैतिक दूनो कर्त्तव्य मानतानी। इहाँ के ई सहन नइखे होत आ कहत बानी :-

'अरे विदेसी छाल्ही घींचत, देसी चाटत माठा,
बा सजाव, बँनू ओ खातिर छिनुई पर बा जाठा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० 'राकेश' जी के बँसुरिया बाबा के बाँसुरी में राष्ट्र गीत के जे तान रहे उहे तान छेड़ दे तानी—

'तोहरा से बिनती बा इहो हो बटोही भइया।
दसो नोह जोरि सिर नाइ।
हमरो मुलुकवा के लइहे, रे सनेसवा
कि कवनो जुगुतिया लगाइ॥"

जिनगी के सार्थकता एही में बा कि आदमी माता तुल्य मातृभूमि के ऋण से उऋण हो जाय—

'ढेर-ढेर बेटवा से पुतगर माई नाहीं, अगुढे अँजोरिया के चाँद।
होइबे उऋण तवे माई पत रखना से, देशवे मैं बसिहें प्राण॥

राष्ट्रीय चेतना के दिव्य शिखा जरा दिहल जीवन के साधना आ सिद्धि दूनों रहे।

जहाँ तक उच्छल प्राण धारा में तरंगित वेग आ हृदय में उत्तर जाये वाला सहज प्रवेशी गुणन के सवाल बा, डॉ० उमाकान्त वर्मा भी सम्बोधिपरक राष्ट्रीय गीतन में मौलिक सृजन शक्ति ले के उतरल बाड़े—

झरत जे सूखेला सपनवा,
देसवा पुकारे।
सिसकत बापू के सनेसवा
छुवेला अकसवा
देसवा पुकारे।

'काश्यप' रेप्लाइजेशन के कारण, 'शैदा' एनिमा के कारण आ मुरलीधर श्रीवास्तव विचारक रूप के कारण अपना गीतन में ओइसन रागात्मक अनुभूति देले बाड़े जइसे उमाकान्त जी के गीतन में सहज सुलभ बा। उमाकान्त जी के गीतन में विषाद का प्राबल्य नइखे, ओकरा में आशावाद के तीव्र भावना व्यंजित भइल बा। राष्ट्र चेतना के जागृत करत कवि कहताड़े—

'फटल परतिया अंग-अंग से
सोनवा बरसे,
देख गुजरिया छम-छम नाचे
जियरा तरसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोले इगुरिया बोले
बोले बिन्दुरिया बोले
जाग हो
जाग ऽहो, भइया जागऽ
जाग हो, बहिना जागऽ ।।"

संघर्ष आ चेतना के कवनो सकेत दायरा ना होला । ऊ धर्म, वर्ण, रीति-रिवाज, लिंग भाषा आ क्षेत्र के आदमी का स्वार्थ में बनावल घरौंदा के तूड़ देला

'सपना देसवो के जागल
मंदिर-मस्जिद साथे जागल
शंख गूँजे लागल, होवे लागल भोर ।
धरती बँहिया पसारे, कहे रुक जा ।'

जब-जब सुजनी जुटल तब राष्ट्रीय चेतना आ वीर रस के उफान भोजपुरी कविता में फूटल । शैदा, संकेत, भानु, धवल, विद्यार्थी, राम वचन द्विवेदी 'अरविन्द', वगैरह कवि पाकिस्तानी आ चीनी युद्ध के समय 'भोजपुरी कविता में राष्ट्रीय चेतना' के गीत गावल लोग आ देश में उत्साह जगावल लोग । एह में गणेशदत्त किरण के 'बावनी' के ओज आ मार्मिकता मन के छुअ्ता—

'बुझ-बुझावल तनी,-छुदुर अस अड़चींजनि
नाभी से लादी आ पोठी सरिक जाई ।
यारी के चानी काटि लिहल तूँ अतना दिन
दुसमनी उठइब्ऽ त छाती दरकि जाई ।

एह तरे भोजपुरी कविता में राष्ट्रीय चेतना के परम्परा लमहर बा । आदि काल में वीर रस आ आधुनिक काल में राष्ट्रीय चेतना से भरल भोजपुरी कविता उत्साह, देश-प्रेम, भक्ति, गर्व, आदर्श, बलिदान, त्याग वगैरह के मजगर आ पुरहर उचार से हरदम गतिवान आ प्राणवान रहल बा ।

☐ द्वारा-आर. के. मिश्रा, इन्दिरानगर रोड-६, पोस्टल पार्क, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यक्तिगत निबन्ध

भोजपुरी स्वभाव के असलियत

—जोतेन्द्र बर्मा

कुछ लोग कहेला कि भोजपुरी बड़ी कर्कश भाषा हवे। एह भाषा के बोले वाला प्रेम से भी बतियावेला त बुझाला कि झगड़ा करता। जबकि बंगला, मैथिली जइसन भाषा में मिठास रहेला। एह भाषा के बोले वाला झगड़ो करेला त बुझाला कि प्रेम से बतियावता। केतना अद्भुत बा प्रकृति के ई नियम! एके बात एके भाव रहेला बाकिर भाषा के कारण अलग बुझाला। कहीं मधुरता ढरकता त कहीं कर्कशता का मारे कान फाटे लागता। बात एहिजा ना ओराव। भोजपुरी जइसन भाषा जवन सुने में कठोर लागेला ओकरा बोले वाला का बारे में ई आम धारणा बा कि ऊ लोग बड़ी लण्ठ स्वभाव के होला। बात-बे-बात में मारा-मारी करे खातिर तैयार रहेला।

बाकिर सचचाई त ई बा कि भोजपुरी भाषी, ओहू में पुरनका सारण जिला सीवान, छपरा, गोपालगंज), के लोग, बड़ी सीधा-साधा आ मस्त स्वभाव के होला। छव-पाँच से कमें मतलब रहेला। रउवा त ई बात जानते होखब काहे कि एजवा के लोग देश विदेश सभत्तर रहेला। कहीं-ना-कहीं त पल्ला पड़ल होई। कहीं कुली का रूप में, कहीं रिक्सावाला, कहीं कवनो फैक्ट्री में मजदूर, कहीं पुलिस, कहीं अफसर त कहीं कवनो आउर का रूप में मिल जइहें कुछ लोग एहू पर हँसेला कि छपरा जिला के लोग अधिक कुलीगिरी करेला आ रिक्सा खीचेला। हँसे वाला बाते बा त हँसो काहे ना। काहे कि एह देश में देह से मेहनत-मजदूरी कइल पाप कइला से भी नीच काम बूझल जाला। भीख माँग के खइला में कवनो शिकायत नइखे! आ होखो कइसे! हमनी के समाज के बड़का लोग आज ले इहे जे कइले। ई त हमनी के देश के प्राचीन आ महान संस्कृति हवे। एही से हमनी के देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री आ दोसर मंत्री हरदम विदेश से पइसा मांगते रहेला आ जवन देश ना देवेला ओकरा के हींक भर गरियावेला आ गरियावे लोग काहे ना। विदेशियन के त ई कर्तव्य हइले हवे कि ऊ लोग अपना मेहनत से कमाइल पइसा हमनी के देत रहो! जहां बड़का लोग के संस्कृतिये होखे भीख मांग के खाइल ओजवा जे मेहनत मजदूरी करी ओकर हँसी त उड़बे करी। भला भीख मांगित लोग भा हवाला, पशुपालन घोटाला जइसन घोटाला करीत लोग तब नू इज्जत मिलित। जेलो जाइत लोग त पलंग पर सूतित लोग, सोफा पर बइठित लोग। एगो नटवरलाल भइबो कइले त हजारे पांच सौ में आपन कलाकारी देखवले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

हमरा गांव जवार के लोग मुख्य रूप कलकत्ता, दिल्ली, पंजाब, कानपुर में रहेला। एक दू घर फिल्म के नगरी मुम्बई (बम्बई में कमाये गइल रहे। ओजवा भोजपुरिया लोग के दूधवाला भइया' कहल जाला। अबकी गांवे गइल रहीं त मालूम भइल कि ओजवा से एक जना आइल बाड़े। भेंट भइल त मन मरले रहस। हमरा आश्चर्य भइल। एकरा पहिले जब भेंट होई अगराइले लउकिहें आ बे पूछले मुम्बई के हाल सुनावे लगिहे—

"जानतानी बाबू! हम सलमान खां के बंगला के बगले में रहिले आ मनीषा कोइराला किहां दूध पहुंचाइले। श्रीदेवी, माधुरी दीक्षित, जैकी श्राफ, अनिल कपूर से हमरा रोजे भेंट होला" आउर कई गो हीरोइन ओतना नाम त हमरो याद ना रहेला) से आपन संबंध बतइहें आ बड़ा अभिमान से कहिहें— "ऊ लोग आउर लोग खातिर बड़का होई, हमरा से त कतना कतना देर बतियावेला लोग आ फिल्म में काम करे के कहेला लोग।

आ अइसने बहुते बात। हमनी के हंसत-हंसत पेट फूल जाई। सुने वाला ना अगुताव त उनकर बतकही ना ओराई। लड़िकन के गांव। फिल्म में हीरो बना देवे के गारांटी देस। उनका के उदास देख के आश्चर्य भइल स्वाभाविक रहे। पूछला पर रोवाइन मूंह बना के कहले—

"का कहीं बाबू! अब बम्बे ना जा पायेब। ओजवा अइसन सरकार आइल बिया जेकरा अनुसार अब ओजवा खाली उहां के मूल बाशिंदा लोग ही रही। जे आन देश से आइल बा ओकर ओजवा गंजन बा।"

लोर से भर गइल रहे आंख; कंठ अवरुद्ध हो गइल रहे। ऊ कुछ आउर कहे के चाहत रहस बाकिर भावावेश में बोली साफ ना निकले। आखिर में फूट-फूट के रोवे लगले।

हमरर माथ नाचे लागल। कबो भारत के संविधान के ई कानून याद आवे कि भारत के नागरिक देश के कवनो हिस्सा में जाके रह सकता, रोजी-रोजगार कर सकता, त कबो भहरात राष्ट्रीय एकता लउके, त कबो हिंदू धर्म के कथित उदारता आ सहिष्णुता मन पड़े। महाराष्ट्र खाली मराठी लोग के हवे, बिहारी मजदूर, जे कबो मुम्बई के निमार्ण में आपन खून-पसेना एक कर देले रहे, अब ओजबा आन देश के हो गइल लोग। धन्य बा हिन्दुत्व!

गांव में एगो अड़भंगी बाबा बाड़े। एकदम सनकाहा लेखा लागेले। का जाने उनकर असली नाम का हवे। हमरो नइखे मालूम। गांव भर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका के बमपिलाट कहेला। वइसे उनका मुँह पर सभे अपना उमर के अनुसार भाई, काका, बेटा भा कवनो दोसर नाता जोड़ के बतियावेला। गाँव के लोग उनकर बमपिलाट नाम उनका स्वभाव के मुताबिक ही रखले बा। जवन बात कहेले तवन ठाँय-ठाँय। केहू के नीमन लागे भा बेजायँ। वइसे उनका बात के केहू खराब ना माने। रउवो मत मानब! ऊ जब ई कुल बात जनले त ठठा के हँसे लगले। कुछ देर का बाद हंसी रुकल त कहे लगले—

"देख बाबू! तहरा जइसन बुद्धिजीवी लोग हती-हती बात पर चिन्ता करे लागेला। हमरा त कबो-कबो बुझाला कि बुद्धिजीवी लोग दिन में कवनो बात के ले के दू-चार बेर चिन्ता ना करो त खायेके ना पची।"

फेर ठहाका। तनी देर बाद कहे के शुरू कइले—

"देखऽ! तू त जानते बाड़ कि महाराष्ट्र में अइसन पार्टी सरकार में आइल बिया जवन एकरा के फेर से हिन्दू राष्ट्र बनावे खातिर कटिबद्ध बिया। तू त पढ़लो-लिखल बाड़ऽ। हिन्दू देश छोट-छोट होख सन। सभन का पाले सम्प्रभुता रहे। एक हिन्दू देश से दोसरका हिन्दू देश का बीचे भारत-पाकिस्तान नीयर प्रेम रहे। हिन्दू राष्ट्र में बिहार के मजदूर महाराष्ट्र में विदेशी होइये जाई……"

ऊ त अइसने आउर कतना बात कहत रहले। अइसन महान हिन्दू धर्म का बारे में अइसन बात। छोड़ीं ओह बमपिलाट के बात के!

बात चलल रहुए भाषा के कठोरता आ मिठास के। भोजपुरिहा लोग के हृदय त मखक्कन लेखा होला बाकिर भाषा काहे कठोर होला? हइनरिख, मेयर वेनफी आ कोलिन्स जइसन भाषा विज्ञानी मनले बा लोग कि जहवाँ के लोग के अपना जीविका खातिर अधिक मेहनत करे के पड़ेला ओह लोग के बोली तनी कड़ा लागेला। एकर भाषा-वैज्ञानिक कारण ई बा कि कठोर मेहनत का बजह से हवा फेफड़ा में अधिक जाले। चूँकि फेफड़ा से निकले; वाली हवा से ही उच्चारण होला। एह से हवा के धक्का से उच्चारण कड़ा हो जाला। पंजाबी, राजस्थानी, अफगानी भाषा एकर उदाहरण बा। ई सब भाषा बोले वाला लोग बड़ी मेहनती होला।

वर्मा ट्रान्सपोर्ट राजेन्द्र पथ, सीवान -८४१२२९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक-समीक्षा

'भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु'

—डा० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय

पुस्तक—'भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु'। संपादक : पाण्डेय कपिल। प्रकाशक—अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी; पटना-२४। प्रकाशन बर्ष १९९५। संस्करण पहिला। मूल्य : पचास रुपया।

'भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु' में डेढ़ सौ रचनाकारन के सात सात गो हाइकु संकलित बा। एह तरे, कुल मिला के एक हजार पाच गो के ई संकलन, एह बात के सबूत बा कि भोजपुरी के रचनाकार लोग में हाइकु रचे के होड़ लाग गइल बा। 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के हाइकु विशेषांक आ बाद में संकलन निकाले के घोषणा भइला आ पत्रिका के संपादक पाण्डेय कपिल के सभे के नेवता भेजला से होड़ लाग गइल। होड़ के दोसर वजह इहो हो सकेला कि हाइकु के कद-काठी आ भाव—भंगिमा देख के रचनाकार लोग के एह बात के पूरा भरोसा हो गइल होई कि हाइकु के रचना कइल कवनो कठिन काम नइखे। वजह चाहे जे होखे, ई बात सराहे लायक बा कि हाइकुकारन के अच्छा संख्या भोजपुरी में हो गइल। ई भोजपुरी साहित्य के विकास खातिर शुभ संकेत बा।

स्वरूपगत अनुशासन के ज्ञान, संवेदना के घनत्व के विस्तार आ संयोजन-क्षमता आ अर्थ विन्यास के कला में निपुणता काव्य-रचना खातिर जरूरी होला एह कसौटी पर एह संकलन के हाइकुकारन के जाँचल-परखल जरूरी बा। जाँचे-परखे के बादे ई कहल संभव बा कि ई संकलन भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु के संकलन बा कि ना। अइसे संपादक ई खुदे कहले बाड़न कि "डेढ़ सौ कवि लोगन में काफी बड़ संख्या ओइसन हाइकुकार लोग के बा, जेकर रचवा कवनो काव्य-रूप में पहिले देखे के ना मिलल रहे।" संपादक के ई कथन एह बात के उजागर करत बा कि अधिका कवि लोग अपना भाव आ विचार के पाँच सात आ पाँच वर्ण के तीन पाती में सजा देले बा। एह से ई कहल कवनो गैरवाजिब नइखे कि हाइकु के स्वरूपगत अनुशासन से अधिका कुछ सोचे के जरूरत ढेर हाइकुकार लोग ना महसूस कइलस। लय कविता के आत्मा ह, ई बात हाइकुकार लोग काहे ना मनलस, हम नइखीं समझ पावत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हर भाषा के आपन स्वभाव होला। काव्यानुशासन के नियम होला, एह से कवनो भाषा में जनमल कवनो काव्य, दोसरा भाषा में जनमे-बढ़ेला त ओह भाषा में ओकरा में कुछ फरक आ जाला। ई फरक भंगिमा भा स्वरूप दूनो में हो सकेला। ई फरक हिन्दी भा अन्य भारतीय भाषा में लिखाइल हाइकुए में ना, बल्कि अंगरेजी सानेटो वगैरह में पावल जाला। संकलन के सम्पादक के ई तर्क कि हाइकु वर्णिक छन्द के कविता ह, सही बा, बाकिर ई मान में कवनो हर्ज नइखे कि मात्रिक छन्द में हाइकु लिखा सकेला। मात्रिक छन्द में हाइकु लिखइलो पर एकरा मूल अनुशासन आ अभिव्यक्ति के लयात्मकता में कवनो फर्क ना पड़ी। ढेर विवाद में पड़ला पर हाइकु के विकास में बाधा पड़ी। छन्द के ई छूट देवे में कवनो हर्ज नइखे। अगर विषय के छूट दिआइल बा त छन्द के छूट में का हर्ज बा। संपादक के लेख में ई बात साफ कहल गइल बा कि व्यग्य जापानी हाइकु के विषय नइखे रहल, जबकि एह संग्रह के बहुसंख्यक हाइकु के विषय व्यग्य बा। एह संग्रह में जिनगी के विविध पहलुअन के छूए के कोशिश भइल बा।

कुछ हाइकुकारन में काव्यगत अनुशासन के संगे संगे कलात्मक अभिव्यक्ति आ भाव-विस्तार के निपुणता आ अर्थ-विस्तार के गुण बा। कुछ हाइकुअन के देखला से ई लागत बा कि हाइकु कतहीं से नइखे आइल, बल्कि भोजपुरी माटी में पलत-बढ़त काव्य ह। अइसे बिनला-बिछला पर सब हाइकुकारन में दू-चार गो स्तरीय हाइकु आसानी से मिल जात बा आ कुछ हाइकुकारन के अधिकांश प्रकाशित हाइकु स्तरीय बा। एह छोट काया के समीक्षा में एक हजार पांच गो हाइकु पर विस्तार से विचार कइल संभव नइखे। बाकिर कुछ स्तरीय हाइकु के बानगी देव जेकरा से भोजपुरी हाइकु के गति आ स्थिति के झलक मिली। साथे-साथे इहो झलक जाई कि लय कविता के आत्मा होला।

(१) खाली अंगारी
दियरी ना नू बारी
फूंके के पड़ी।
पृ०-२७
—अलका पाण्डेय

(२) गंवई जन
के तखला में पाके
सिखरी मन।
पृ०-२८
— अशोक द्विवेदी

(३) बरसात के
सुख मिले ना भीत
ढहे के डरे।
पृ०-३३
—कुमार अरुण

(४) सुगना मन
सेमर के फूल पर
धोखा खइहें।
पृ०-३५
—कृष्णनन्द कृष्ण

(५) मूस कतनो
किताबिया कतरी
शब्द ना मरी।
पृ०-४२
—नीरज कुमार पाठक

(६) कबूतर ना
शान्ति दिवस पर
मुर्गा उड़ाई।
पृ०-३९
—तग इनायतपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(७) फूल के सेज
भाव के अभाव
में कांट लागेला।
पृ०-३६
—गरिमा बन्धु

(८) डेढ़ गो बोझा
दी ार खरिहान
हँसी कि रोई।
पृ०-४३
—पाण्डेय कपिल

(९) परोसल बा
छपनो परकार
आँखें आन्हर।
पृ० ४४
—पी० चन्द्रविनोद

(१०) का मिली न्याय
हाकिमो लागल बा
आवाजाही में।
पृ०-१३
—राजेश्वर प्र०
सिन्हा 'राजेश'

(११) ओठ हिलल
बात कहाँ भइल
आँख-आँख में।
पृ०-४५
—प्रभुनाथ सिंह

(१२) बीया से गाछ-
गाछ त पिता होला
पिता दे, ले ना।
पृ०-६२
—विश्वरंजन

(१३) चुप्पी के गोड़
भारी लागत बा जी
जाने का होई।
पृ०-६४
—शारदा पाण्डेय

(१४) हमार गांव
केंवट कठौता में
राम के पाँव।
पृ०-६९
—सुनील कुमार पाठक

(१५) हाथे ना लागी
ई सोना के मिरगा
खाली दौड़ाई।
पृ०-७२
—हरिनारायण 'हरीश'

(१६) होरी उदास
जेठ झूठ भइल
ई भादो मास।
पृ०-३८
—जगन्नाथ

(१७) उड़ल जाता
दुःख सरिहारे में
सुख-कपूर।
पृ०-२४
—अनिरुद्ध त्रिपाठी
'अशेष'

(१८) कवन धुनिया
उड़ावे धुन-धुन
रूई के फाहा।
पृ०-३१
—उमिला कौल

ऊपर दिहल हाइकुअन के अलावे आउर बहुत हाइकु बाड़न स जवना के देख के ई कहे में हिचकिचाहट नइखे होत कि भोजपुरी हाइकु के विकास के राह में कवनो बाधा नइखे आ एकरो एगो जगह बन जाई। एक बात एजवा साफ कइल जरूरी बा कि हम जेतना उदाहरण देले बानी ओतने स्तरीय हाइकु बाड़न स ई गलतफहमी कोई के ना होखे के चाहीं। उदाहरण के रूप में आइल हाइकु हमरा के पहिले वाचन में बांध लेले रहे। उदाहरण एहू बात के जाहिर करत बा कि भोजपुरी में हाइकु खातिर उपजाऊ धरती तैयार हो गइल बा।

लोकोक्ति, मुहावरा आ कहाउत के उपयोग कइल, भोजपुरी हाइकु के के आपन विशेषता बन गइल बा। एहु कुल्हिन के उपयोग कलात्मक उत्कर्ष आ भाव-विचार के विस्तार देवे खातिर करे के चाहीं, बाकिर कुछ हाइकुकार पाँच-सात-पाँच के वर्ण क्रम से तीन पाँती में लोकोक्ति, मुहावरा आ कहाउत के जस के तस सजा के हाइकु लिख देले बा लोग। एह सजावट के काव्य-रचना कहल ठीक नइखे। अइसन कुछ हाइकु के बानगी रखत, हम ई कहल चाहेब कि खाली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्द विधान के पालन करत कुछ निहल कविता ना ह। चाहे ई कहीं कि काव्य के आवश्यक तत्व खाली छन्दे विधान ना ह। उदाहरण—

(१) घोड़ा घास से
दोस्ती करिहन त
खइहन का।
पृ०-४२
—निरंजन नाथ बन्धु

(२) हार सभा के
मारल मेहरी के
कहीं कइसे।
पृ०-६४
—शारदानन्द प्रसाद

(३) खुदे हारल
मेहर के मारल
केहू ना कहे।
पृ०-२४
—अनिल अलमस्त

(४) पेन्हेला सभे
बाकिर केहू-केहू
झमकावेला। पृ०-३२
—कमलदेव राय

(५) बा ई चाँदनी
चार दिन खातिर
फेर अन्हारा। पृ०-५०
—रंजन विकास

(६) खँसी के माई
बेटा के कहिया ले
खैर मनाई। पृ०-५३
—राधिकारंजन सुशील

(७) धान के खेत
पुआर देखले
परखा जाला।
पृ०-६३
—वीरेन्द्र कु० मिश्र अभय

(८) लभेरीं घीव
कुकुर के पोंछ ह
सोझ ना होई
पृ०-४६
—प्रो० ब्रजकिशोर

एह कुल्ही हाइकुअन के रचनाकार के ह, पाठक बताई। ई कुल्ही कहाउत पीढ़ी दर पीढ़ी चलत आ रहल बा।

कुछ हाइकुकार लोग छन्द पूरा करे खातिर कहाउत के व्याख्या क देले बा। जइसे—मानीं त देव

ना मानी त पथल
ई ह विश्वास। पृ० २३
—अजय कुमार ओझा

एह कहाउत के अर्थ होला विश्वास कइल। फेरू 'ई विश्वास ह' कह देला से कवन काव्यगत विशेषता एकरा में आवत बा ?

दोसर उदाहरण देखीं—आम के आम
गुठलियो के दाम
नफा हराम। पृ०-६६
—सत्येन्द्र नाथ दूरदर्शी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ए कहाउत के अर्थ होला नफा हराम में। एकरा के कहला से काव्यगत आ तथ्यगत दूनो दोष हो जाता।

एगो आउर उदाहरण देखी—रोगी के भावे

से बैदा फरभावे
पूछहीं के का। पृ०-५४
—रामनरेश शर्मा

ए कहाउत के अर्थ होला 'पूछहीं के का'।

एगो आउर उदाहरण देखीं—ओठ पर तेल

गाछ पर कटहर
हवाई किला। पृ०-३८
—जयबहादुर सिंह

एह कहाउत के अर्थ होला हवाई किला बनावल। ई अखिरी पांती देला से कवि में कौनो मौलिकता बा, ई गलतफहमी भरसक केहू के ना होई।

अइसन हाइकुअन के कवनो साहित्या महत्व होई, ई मानल संभव नइखे। साँच पूछीं त अइसन हाइकुअन से भोजपुरी हाइकु के विकास में बाधा पड़ी।

एह संकलन में तीन चार गो अइसनो हाइकु बा जवन में हाइकु के परिभाषा दिआइल बा—

(१) थोरे शब्द में
ढेर बात कहल
हाइकु हवे। पृ०-३६
—गणेशदत्त किरण

(२) ई हाइकु ह
जापान से आइल
नयकी विधा। पृ० २५
—अम्बिकादत्त त्रिपाठी

(३) कमे में लिखीं
आपन भाषा कसीं
ई हाइकु ह। पृ० २६
—अम्बुजा सिन्हा

(४) गांव पिपरा
हरेन्द्र मुहफट
लिखे हाइकु। पृ०-७२
—हरेन्द्रनाथ मुहफट

(५) तीन डेग में
तीन लोक पल में
धांगे हाइकु। पृ०-७१
—सुनील कुमार पाठक

ई हाइकुअन से ना हाइकु के परिभाषे होता आ ना कवनो काव्य रूप निखरत बा। हाइकु जापान से आइल नयकी विधा ह। ई अबहूं कहल केतना सार्थक बा, ई सोचे के पड़ी। ई कुल्ही हाइकु के मजाक बना दी।

एह संकलन में कुछ गँवई भा शहरी, कम पढ़ल-लिखल आ अनपढ़ के जीभ पर चढ़ल 'बोल' (व्यंग्य करे खातिर जोड़ल तुक) के हाइकु बना के, रचना-धर्म के पालन कइल कहां ले उचित बा, रउरे बताईं। एक-दूगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दाहरण देखीं—(१) बाप बेटा से
आ देश ई नेता से
बाटे तबाह। पृ०-२६
—अरुणमोहन भारवि

(२) डूब के पोहो
गरड ना अटकी
पानी साफ बा। पृ०-२३
—अनन्त प्रसाद रामभरोसे

अगर अइसन 'बोल' हाइकु के नाम पर संकलन में छपे लगी त ढ़ेर रचनाकार 'बोल' के हाइकु मान लिहन आ तब अइसने हाइकु भोजपुरी में लखाये लागी, हाइकु के कमियो ना रही। अइसने भोजपुरी हाइकु लेके भारतीय हाइकु कल्ब से जुड़ला पर कइसन मान मिली, ई सभे बूझत बा।

भोजपुरी में 'छिनार' शब्द विशेष अर्थ में रूढ़ हो गइल बा। भोजपुरिया खातिर ई शब्द कह के कबनो व्याख्या के जरूरत ना होई। एह शब्द के कविता में प्रयोग भोंड़ा मानल जाई। एगो हाइकु में 'हगऽतारे शकुनी' (पृ०-७३) के प्रयोग भइल बा। ई प्रयोग गांव के अनपढ़ वर्ग करेला। साहित्य में अइसन प्रयोग सौंदर्यबोध के दिवालियापन मानल जाला।

एह संकलन के संपादक के निर्मम भइल जरूरी रहे। ओही रचनन के संकलन में रखे के चाहत रहे, जवना से भोजपुरी हाइकु के दोसरा भारतीय भाषा के हाइकुअन के सोझा रखे में गर्व होइत। का जरूरी रहे कि हर रचनाकार के सात-साते गो हाइकु छपे। एह संकलन के नाम' भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु' ना रखाइल रहित, त हमरा ई कहे के मुहें ना रहित कि कुछ रचनाकार के सात गो रचना काहे राखल गइल। एह संकलन के कुछ हाइककारन के रचना देख के हमरा लागत बा कि जगन्नाथ के ई हाइकु बड़ा सटीक बा—

कुछऊ लिखीं
केहू ना रोकी-टोकी
भोजपुरी ह। पृ०-३८

कमी के बावजूद ई भोजपुरी हाइकु के पहिला संग्रह ऐतिहासिक महत्व के बा आ जोगा के रखे लायक बा। एह संग्रह से भोजपुरी में हाइकु के रचना करे के सोच बनल, ई बहुत बड़ उपलब्धि मानल जाई।

एह संकलन के महत्वपूर्ण आ उपयोगी बना देले बा विद्वान संपादक के खोजपूर्ण, तथ्यपरक आ निरपेक्ष विश्लेषणात्मक निबंध। एह निबंध से हाइकु के विषय, काव्यगत स्वरूप आ विकास के सांगो-पांग जानकारी मिलत बा। भोजपुरी हाइकु लिखे खातिर कलम उठावे के पहिले, हाइकुकार के ई निबंध एक बेर पढ़ लिहल जरूरी बा। ई निबंध पढ़ लिहला पर, भोजपुरी हाइकु के सही राह धरावे में सफलता मिली।

□ रतनपुरा, छपरा-८४१३१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
R.N.I. Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. PT.—428/90

जनवरी १९९७ से

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

के पृष्ठ संख्या आ दाम/शुल्क में बढ़ोतरी

बेहतर कागज : बेहतर छपाई : हर अंक में आठ पृष्ठ बढ़ी

बढ़ल दाम / शुल्क होई—

एक अंक के दाम	—	—	पाँच रुपया
साल भर के शुल्क	—	—	पचपन रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर साल भर के शुल्क—पैंतालीस रुपया

पत्रिका-सरक्षक-शुल्क (आजीवन ग्राहक शुल्क) सात सौ पचास रुपया

सम्मेलन के सदस्यता-शुल्क आ पत्रिका-शुल्क नीचे लिखा पता पर भेजीं—

महामन्त्री,

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

भोजपुरी के लेखक आ पाठक लोग खातिर नया साल (१९९७) के तोहफा

पुष्कर प्रकाशन बक्सर / पटना से १ जनवरी १९९७ के प्रकाशित होखेवाला

सुप्रसिद्ध गजलगो कविवर जगन्नाथ के भोजपुरी में लिखल किताब

गजल के शिल्प - विधान

जवना में उर्दू काव्य के विविध रूप, गजल के छंद (वहर) के प्रकार आ नियम

कायदा, गुण-दोष आ गजल के ढंग-ढर्रा

भोजपुरी के उदाहरण दे-दे के बतावल-समुझावल बा।

दाम—पचावन रुपया

अग्रिम ग्राहक खातिर दाम—पचीस रुपया

सीमित प्रति छप रहल बा।

जल्दी करीं आ नीचे लिखल पता पर पचीस रुपया भेज के अग्रिम ग्राहक बनीं।

मन्त्री,

भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, मार्ग-३, पटना-८०००२४

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से, पाण्डेय कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४ (दूरभाष : २६११३४) से प्रकाशित, आउर पाण्डेय कपिल द्वारा कर्मा प्रेस, बुद्ध मार्ग, पटना-१ (दूरभाष : २३२७८०) में मुद्रित।

सम्पादक—पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी लोक-संस्कृति के मूर्तिमान स्वरूप

श्री १०८ दण्डिस्वामी पूर्णानन्द सरस्वती
(काशिराज के ज्योतिर्विद्)
पं० पूरणमिश्र के वंशधर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोक-भाषा भोजपुरी की ऐतिहासिक उपादेयता

'साहित्य-आकदमी' के तत्कालीन-अध्यक्ष

प्रसिद्ध भाषा-शास्त्री डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी

के नाम भोजपुरी भाषा की मान्यता के लिये

खुला-पत्र

–दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती

सम्पादक-

प्रमोद कुमार दीक्षित

एम०ए० द्वय (समाजशास्त्र, हिन्दी)

बी.एड.,साहित्याचार्य

व्यवस्थापक-भोजपुरी साहित्य मंदिर

बी-३/१७५, शिवालाघाट, वाराणसी-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राजगुरुमठ के कौटिल्य सत्संग-भवन में प्रतिष्ठित, श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती-शोध-संस्थान के स्थायी निदेशक प्रमोद कुमार दीक्षित का वक्तव्य

प्रकासक कऽ दूइ बाति.

भोजपुरी भासा आ ओकरा व्याकरन का बारे में कुछ कहे समझावे पहिले-भोजपुरी जनपद के इतिहास, भोजपुरी लोगन के आचार-विच (लोक-संस्कृति) आ भोजपुरी भासा का आवे के,-परगट होखे के,-सोत कुछ अँजोर डालत जरूरी बा। भोजपुरी, वैदिक संसकीरत का मानसरो से मिलहुर, खेझरा सउनाइल रूप में निकलि के फरियात-फरियात अइ फरिछा सरूप पवले बा। भोजपुरी भासा आ एह जनपद का लोगन बेदुबा रिसी-मुनी, तपसी आ पंडित लोगन के तेज, वशिष्ठ विश्वामि जागबलिक, भिरगू, अंगिरा, अथरवन नियर ग्यानमानन का ग्यानकि के बिजली, उपनिषद् का बाभन-छतिरिन के खोज आ रघु, दलीप, अ मानधाता, भगीरथ, शिवि, दधीचि, हरिश्चन्द, अरजुन, भीम, भीसमद सुखदेव ओगयरह का लूरि-सहूर, चाल-ढाल के सवतुक असर बा।

ग्यान सनातन तत्तु ह। एकर दूइ भाग होला। एगो त जोति, अँ (प्रकाश), दूसरका ओह तेज से जगमगाये वाला पदारथ (प्रकाश्य)। त जोति क अंश ह आ जगमगाये वाला मेंही दरब ओकरा संगे खिचा आ जाला। एकरा के रस आ बल के रूप में समुझीं। रस, ग्यान, रूप बल ओकर ढाँकन (आवरण) ह। ढाँकन हटि गइला पर अपने आप ज चमकि उठे ले। सुरुज आ बादल का परतोख से देखीं। बदरी हटते जगमगाये लागेलनि। चमक कहीं से ले आवे के ना परे।

जइसे एगो लोटा में हम घीव धइ देईं त घीव निकालिओ लिहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोटा में चिकनाई बहुत देर ले बनल रही। घीव क भाँड़ भा मेंटी फूटि गइल त घूर पर फेंकि दियाइल। संजोग वश घूर में आगि लागि गइल आ फेंकला मेंटी में आँचि पहुँचलि त ओह टुकड़न में ले चिकनाई टेघरि के टपके लागी। पवन, फूलन का पंजरा होइके बहे ला त फूलन के अंश अपना संगे ले जाला। एही कारण से हमनीं के हवा में सुगंध मालूम होला। अइसहीं जीव भी शरीर में बास करेला त पिंजड़ा छोड़ि के उड़े का बेर पंचभूतन के, पाँचों तत्तुन के कुछ अंश संगे ले जाला।

संसकार ओहि अंश के रुप ह। जुग-जुग का एह संसकारन के जोरि-बटोरि के हर देश के आचार-विचार बनल बा।

समान विचार, रीति-रेवाज, परम्परा वाला मानुस लोग का समूह क नावँ-समाज ह। संसार क कवनो देश जब बढंती पर चले ला तब ओइजा के पंडित, विदमान, ग्यानी, साहित्त रचवइया एगो विशेष किसिम का आचार-विचार के जनम देलन। आतमा, परमातमा, लोक-परलोक आ जीवन का बारे मे उनकर कुछ सबतुक विचार होला, समाज में एक अंग क दूसरा से कवन नाता आ लगाव बा-इहे सभ मिलाइ के आचार विचार आ संसकिरती सूझ-समुझ बनि के तइयार होला। समय का धारा का संगे भा जातियन का बढ़ती आ उतार चढ़ाव के पाइ के एहू में अँजोर अन्हार के फेर बदल होत रहेला। जवना समाज के बूझ-विचार जेतने पोढ़, सवतुक खेहल-पोहल, सवाँरल-माँजल होला ओही का मुताबिक दुनियाँ में ओकर जिनिगी कायम रहे ले।

भोजपुरी जनपद के इतिहास एकर, रीति-रेवाज, लोगन के जनम-जुगी बेवहार, चाल-ढाल, बोली-बचन, ओढ़न-पहिरन, परब-तेवहार देवतन के अरचा-पूजा सभके अकिलि का तराजू पर तउलीं, सुमति का फरुहा से खँड़हरन के खोदीं, पुरजे-पुरजे बिलगाई त रउरा के अचरत होई। भोजपुरी-भासा का सागर के डुबकी लगा के खोजला-टकटोरला पर अनमोल रतन भेंटइहँनि। देव-असुर का लड़ाई का बेर समुंदर मँथाइल त चउदहे रतन भेंटाइल। एइजा त जेनिये बुड़की मारीं अनगिनित अनमोल रतनभेंटात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाड़न। भोजपुर के जनपद इतिहास में सरहँग आ सरनामी रहल बा काशी आ मगध राज का बीच में ई दूनों के दिलदिमाग ठहरी। भारत कबहीं एकरा समान आदर भाव केहू के ना मिलल। एह जनपद के कलेव आ गिरदा आचार-विचार का नाता से भारी बा।उत्तर में कपिलवस गोरखपुर-चंपारन के कुछ भाग लिहले पच्छिम आजमगढ़ आ काशिका डँड़ार काशी तक, पुरुब मे सोन का किनार आ बाणभट्ट के जनमधरतीच आसरम के चरन-छूवत दक्खिन में चंदनपीर पहाड़ी के घोरियावत, सहसरा (सहसाराम) धइले आगे बढ़ल बा। सहसाराम, काशी-कवशांबी-तामलु राजमारग पर भोजपुरी जनपद के लहरात पताका रहल बा। बउधदेव पहिले ले एह सड़कि से कवशांबी आ तामलुक (ताम्रीलप्ति-चटगांव) बीच बनजारा चलत रहल ह। हजार बउधसन्यासिन के रहे क एहि आराम या अड़ार रहल ह, एही से एकर सहसरावँ नावँ परल बा सहसराम से आगे पहाड़ के तरियानी धइले राजा शालिबाहन के रजधा आ हरसू बरम्ह का धामले पछिमाहुत एकर सिवान चलि गइल बा।

वैदिक विचार धारा के जहाँ लहरि लहराइल, ग्यान-धरम के पहि चक्का ऊगल, रिसीमुनी मानसरोवर में डुबकी लगाइ; जहाँ हंसरूप हो मोती चुनलन, ओह धरती से एकर तेल-दीया, गुलाब आ सुबास नि नजदिकाह नाता रहल बा। सतजुग का पहिला पहर में अनगुतहाँ का बे त एहिजा समुंदर लहरात रहल ह।

बाद में एकर कुछ भाग मलद-करुष कहाइल। दंतवक्र एही करूष राजा रहे। जमदगिनी रिसी क अड़ार जमनियाँ क जवार-मंथार रह भगवान परशुराम जमनियां से लेइके पुरुब-पच्छिम सबँसे उत्तराखंड त विराजसु। उत्तर-प्रदेश के गाजीपुर-बलिया उनकर असली करतब-धर रहे।

एतने मत जानीं बेद-ग्यान के पहिली सोनहुली किरिन के लाली भोजपु जनपद में फइललि। एइजे वैदिक-गंभीर विग्यान के गूढ़ बाति परगट भइ स।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंगिनि, ओम से ई दुनियाँ बनलि बा। (अग्निसोमात्मकं जगत्) ऋक्, आ साम, यजुः तीनि मूल तत्त बाड़न। 'ऋक्' आ 'साम' के काम हरदम आवागमन ठहरल। 'यजुः'-के दूइ भाग बा, 'यत्' के मतलब चले वाला, जू के अरथ-अहथिर। एह तरह से 'यत्' से वायु आ 'जू' से आकाश। एह सभई क सोकड़ (कोष) सुरुज-आदित में भरल जानीं। आदित का मूल सकती के नावँ गाइत्री ह। गाइत्री वेद के महँतारी मानलि बा। एह सकल मूल, माता क पहिल दरसन करे वाला मंतर-वाह (मंत्रद्रष्टा) विश्वामित्र जी भइलन। वेद के पहिल ग्यानी एह मुनी क तपोभूमि 'सिद्धासरम' एही भोजपुर जनपद का नाभ में रहे। आज का बगसर से जखिनी भवानी तक विश्वामित्र जी का तपोवन क गिरदा रहे। परधान जगहि जखिनी-भवानी के अड़ारे समझल जाई। बालमीकि जी का रामायण से एकर सदरथ होत बा।

विश्वामित्रजी के जच्छ, जच्छिनी जग्य करे में विघिन डालसु। उहाँ का कोशल नरेश दशरथ किहें पहुंचि के राम लछुमन के मंगलीं। राम-लछुमन भोजपुरी गावँन क लहरि लेत बलिया लांघि आगे बढ़लन आ गंगा-सरजू के जहाँ संगम हिलोरत रहे ओही सामने गंगा पार भइलन। कारो महादेव किहें ओह समय में गंगा रहली। विश्वामित्र जी का तपोवन में हजारन रिसी, तपसी, बेदुवा पंडित आ बिदारथी रहसु। गुरुकुल में एहिजा सभ वेद विद्या के ग्यान सिखवल जाय। राम लछुमन के विश्वामित्र महाराज एहिजे गूढ़ ग्यान दिहलन। 'बला', 'अतिबला', 'जया', 'विजया' विद्या बढ़वलन। एहिजे वेदशिरा रिसी क कुटी रहे। एहिजे तप कइके तपोवन का तलाब में नहइला से उनकर पाप-पराछित छूटल। दुरवासा का सराप से उनकर मुँह बाघ क भइल रहे। एह तलाव का नहइला से वेदशिरा जी सुघर सरूप पा गइलन। ओही तालाब का नावँ पर अघसर, आ बाघसर (ब्याघ्रसर) से बगसर बनलबा। भिरगू मुनि एही बलिया में गंगा किनार पर तप कइके विसनो-भगवान का छाती में लात मरला का श्राप से टुटलन। दरदर मुनि के तपभूइँ एही जगह पर रहे। लोगन में ई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथा मशहूर बा कि दुरबासा के कनेठी देइ के उनकर दिमाग ठंढा करेवाला बाभन किसान एही बलियां का पॉजर में कहीं गंगा किनार क रहे।

लोक-गाथा, पर विचार कइला आ इतिहासके पोथी उलटला से पता चलत बा कि भोजपुरी जनपद में परधान रूप से हरदम बाभंन-धरम आ वेद-मति के पताका लहराइलि। बउध-धरम भी अगल-बगल कुछ छाप डललसि, बाकी पुरुबी, दक्खिनी आ पच्छिमी सिवान पाँजरे भर में। एहिजा शिव, दुरगा (शक्ति) के उपासक लोग बहुत पहिले ले जमल रहल। कारण ई बा कि एह इलाका का लोगन क विचार पोढ़ होला। लोग छनमतिया ना होखसु, मिरिग-टिशुना में उनकर अकिलि बहुत मांके ना। पुराण-काल से आगे बढ़ि के इतिहास का नयाजुग में पहुंचीं। इतिहास के पोथी क पन्ना उघारीं त रउरा अचरज क बाति लउकी। चन्द्रगुप्त आ आशोक क नावँ के नइँखे जानत? वउधदेव महराज के, भोजपुरी सिवान का सटले फलगूकिना पर उरुवेला का वन में पीपर का फेंड़ तर बोध भइल आ कल मिलल बउधदेव के जनम-धरती लुंबिनी, उनका उपदेश क पहिला खेमा मृगदाव सारनाथ-रिसि पत्तन, मुकुति-भूइँ (निर्वाण भूमि) कुसीनारा-कसियाँ,, तीनो नामी बउध तीरथ भोजपुरिये जनपद में पड़ेलनि।

भोजपुरी आचार विचार (संस्कृति) के केशरिया झंडा उत्तर में मंगोलदेश का तुनहुबांग पहाड़ी से लेइ के कोरिया, जापान, तिब्बत, पुरुब में चीन बाली, मलय, जावा सुबरनभूमि (बरमा), दक्खिन में सिंहलदेश (लंका) आ पच्छिम में ईराक, इसराइल, वलख-बुखारा, कृचा तक फहराइल।

चन्द्रगुप्त पहिला भोजपुरी राजा भइल जे गिरदा बान्हि के भारत अखंड राज कइलसि। उनका समय में भारत में निचाट दक्खिनी टूक छोड़ सवँसे भारत एक हो गइल रहे। भोजपुरिये वीरन का मदति से काबुल कंधार तक हँकड़त आ सींघि रगरत चन्द्रगुप्त पहुँचल आ ताल ठोंकि दिहलसि। पछिंमहा राजा सिकंदर के सेनापति सेलूकस ओकरा के लड़ाई खातिर ललकरले रहे। भला ई भोजपुरिया वीर बुनेला, पिपलीवन के मोरियन के नगीना, लाल आँखि देखावल सहे? भारतमाई का शान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाव करे खातिर आपन तलवार चमकावत शानियल सिंह मयदान में हुँचि गइल। अफगान देश का कूर खेतन में भोजपुरी वीरन के तेगा बिजली नियर चमकि उठलि। एह हजारन बिजली क चमक आ गरगराहटि जवन सिपाहिन के आँखि मुदा गइलि। हमार जवान सेलूकस के मोंछि बारि के दम लिहलन। उनका पोंछि दबाइ के भागे के परल। एतने से ीव ना बाँचल। सेलूकस भोजपुरी राजा के आपन बेटी तक बियाहि दहलसि। संसार के दूनो नामी धरम बउध, आ जैन एह जनपद में फइलल। उधदेव, महावीर का ग्यांन के गंगा-जुमना पहिले एही भोजपुरी गावँन के ावँ पखरली जा।

मोरियन में अशोक का अवतार से भोजपुर के के कहो, सवँसे देस आ सार निहाल भइल। सिकंदर तलवार लेइ के दुनियाँ जीते चलल रहे, ाकी महा तपसी मुनि दंडायन का देस में आइके ओकर अकिलि मां कल ा अगियाइल भुलाइ ठंढा हो गइलि। अशोक पांचों जवन-राज, पच्छिमी शिया, अफिरका, मिसिर सगरे असपताल बनववलन। धरमसाला कायम इल, फेंड़ रोपाइल, बेमार लोगन के दवाई बँटाइल। जवन लोग जहाँ उवति के मसाला आ सनेस लेइ के कालरूप में आइल रहे। ओइजा ोजपुर उनके जिनिगी के अनमोल सीख आ सवतुक, कल-थेघ दिहलसि। नियां का इतिहास में सुरुज का जगमग जोति नियर तपे वाला अशोक न्द्रगुप्त के पोता रहल।

भारत में पंचायत-परथा के पहिला नमूना भोजपुरी जनपद में बनल। ाकवंश, कोलियराज घराना, मोरियगण, आ मल्लन के साजल-सवाँरल सबीरि ओकर नमूना मानल गइल बा। शुंग-वंश के बाभन सेनापति आ जा पुस्यमीत एही भोजपुरी सिवान में गंगा का दियारा में भोजपुरिया रिन का बल से चढ़बाँक जवनराजा मिनांदर का पीठी घूरि लगा दिहलन। ाजपुरी लोगन से लड़िके ओकरा भरिमुँह माटी लिहले भागे के परल। ने से सबुर मत करीं। बिदेशी शक आ कुसान जब देश के नाँकनदम इलत त, भारशिव नागवंशी राजा लोग भोजपुरी-सिवान में एहिजा का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवानन का बल से आपन छावनी कायम कइके उनके चहेटलन। अप
जीति का खुशी से दस बेर ऊ लोग दसगो असमेध-जग्य कइलन आ
काशी में गंगा-किनार पर बाबा विश्वनाथ का धाम में बुड़की मरल
दशासुमेध घाट ओकरे गवाही देति बा। छठवीं इसवीं में गुप्तराजवंश
अंतिम समय में बगसर का चारो ओर गुप्तवंशी राज रहे। बाभन-धर
शिव आ दुरगा क पूजा होत रहे। एकर सबूत एगो पत्थल पर खो
मजिगर लेख 'ब्राह्मी' लिखावट में मिलल बा। (एकरा पर 'एपीग्राफि
इंडिया' में नामी विदमान डा० अनंत सदा शिव अल्तेकर के लेख निक
बा)। लेख पटना-संग्रह घर (म्यूजियम) में राखल बा।

एह किसिम के आजादी के लड़ाई बहुत बेर एही जनपद का बल
लड़िके जीतल बा। गुप्तराजवंश क तेज, आ उनका जस के लाली एहि
तिरबेनी का डँड़ार से शुरू होइ के गंगा आ सोन का संगम का बीच
चमकलि। परतापी राजा वीर विकरमादित्त एही भोजपुरी वीरन क से
साजि सक लोगन के पिठियाइ के देस का सिवान से बहरा कइलन।
कुश लांघि, बलख-बुखारा धाँगत भोजपुरी-जवान आमूदरिया में आ
तेगा धोवलन आ केशर का कियारिन के सुबास लेत घोड़न पर स
गिरदा घोरियावत दिल्ली पहुँचि अइलन। मेहरवली का लोह-खंड
चन्द्रगुप्त का ओह विजय क जस-कथा टाँकलि बा। 'शकारि' वीर बिक
राजा क छावनी गंगा किनार पर 'सकराडीह' (गहमर का पंजरा)
लोगन में मशहूर बा।

हूण सभके दरेरा देत फिरत रहलन। सवँसे एशिया महादेश हूण
थरथरा गइल रहे। भोजपुरिया वीर ओहू लोग के कान मललन
स्कंदगुप्त के अगुवा बनाइ उनके धकिया दिहलन। हूणन के मुँहे कि
लागल आ ऊ लोग पोंछि सटकवले भागि निकलल। भीतरी सैदपुर में
पर एकर जीतिकथा संछेप में टाँकलि बा। चीनी राहगीर हुवेन संग भोज
सिवान के तसवीरि देखत, एइजा का समाज से सीखत-गुनत राजा हर्ष
दरबार में पहुचंल बा। मोहोशोलो-मसाढ़ में (आरा जिला में) ओ
ठहरला क चरचा इतिहास में लिखल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शेरशाह एही भोजपुरी शाहाबाद का जगल क शेर रहे जेकरा गरजला से दिल्ली के राजसिंघासन दहलि गइल। शेरशाह मामूली किसान के लाल, झोंपड़ी में जनमल; ओकर लाली अइसन चमकलि कि अबहीं ले सवँसे भारत मे केहू ओकर मोकाबिला ना कइ सकल। शेरशाह जब मूँसारोईं वीर बुनेला भोजपुरिया जबानन के दल साजि के पच्छिम मुँहे डेंग बढ़वलसि तब दिल्ली काँपि उठलि। मारल मरद ताके ना। चउसा में गंगा किनार पर जे भोजपुरियन से पटकाइल आ गंगा में कूदि के जीव बँचावल ओकर कहाँ हिमाकति रहे कि ठहरे। फरगाना का लंगड़ सरदार के बंशधर आ बाबर के सपूत बिना तोबि दगले आ गोली बारूद छोड़ले चुपके गद्दी छोड़ि भागल से इरान पहुँचि के लुकाइल। शेरशाह बीर-धरती राजसथान आ पंजाब रउँदत मालवा तक आपन झंडा गाड़ि दिहलन। भोजपुर का जवान क भुजबल आ अकिलि देखीं कि दिल्ली दखल कइके भारत के सिरताज हो गइल। टोडरमल, शेरशाह के खरादल हीरा रहलन जिनका नकशा पर अकबर का राज क तसबीरि बनलि, शासन में सुधार, जमीन क नाप आ मालगुजारी ठीक भइल। शेरशाह परजा पालक राजा रहलन। मड़ई ले निकलि के महल में पहुँचलो पर ऊ जांगर चलावे वाली जनता के ना भुलवलनि। उनका समय में कलकत्ता ले पेशावर तक सड़कि बनलि। सड़कनि का किनारे फेंड़ रोपाइल आ धरमशाला, इनार बनल। घोड़ा से डाँक ढोवे क इंतिजाम कइल गइल।

पिपरा मिसिर गउतम गोत्र, बाभनन के सिरताज भूपसिरोमणि महाराजा बलंवत भोजपुरी जंगल के सेर रहलन। छानवे परगना में बलवंत का तेज क सोनहुला चिराग जरल। बगसर ठोरा नदीआ सरेंजा, मंगराव-अवँती तक उनका राज क पुरबी गिरदा रहे।

सरेंजा क पुरान नावँ सरवँधा ह। कवनो समय में अवधराज क सरहद एहिजा ले आइल रहल। महाराजाधिराज काशी नरेश बलवंत के पिता पं. मनसा राम (जिनके १७१७ में राजा क सनदि मिलल) का साहस आ अकिलि के बलिहारी जानीं कि तूफान-बवँडर का समय में; जब बिपति के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बादल गड़गड़ाइ के करेजा कंपावत रहे, अपना देश आ जनपद के दिन पलटि दिहलन। मुसलमान शासन के जूवा कान्हि ले फेंकि, ओह लोग के धकियाइ राजा हो गइलन। काशी में जहाँ भादों क अन्हरिया छवले रहे बलवंत नियर तेजमान पूत जनमते अँजोरिया उगि गइल। बुताइल चिराग अचके में अपने आप बरि उठल। कइयट, कबीर, रामानंद-तुलसी का काशी में फेर सनातन धरम के झंडा लहराये लागल।

भोजपुरे जनपद में बलिया का कवनों कोना में गाँग किनारे बउधपंडित कुमारजीव क जनम धरती रहे। जापान बउधविदमान कुमारजीव के आजुवो भुलाइल नइँखे। कबीर एही खानि क हीरा रहलन। एह जुग में आजादी के पहिला शहीद, बारिकपुर में शंखफूँकि गदर मचा देबे आ पलटनि के बागी बनावे वाला मंगल पांडे के, के भाई ना जानत होई कि एही बलिया का पास क रहनिहार रहलन। बाबू साहेब वीर कुँवर सिंह अपना अस्सीबरिस का बुढ़ती मे तेगा उठाइ के आजादी के लड़ाई क अगुवा भइलन आ फिरँगियन का छाती पर दालि दरि दिहलन। भोजपुरी बुढ़वा सरदार से लड़े में ओह लोग क दांत-रंगा गइल आ छट्ठी क दूध इयाद कोन के परल। आजादी का आखिरी लड़ाई क कवन तमाशा कहीं? शाहाबाद बलिया आ गाजीपुर का बलिदान का आगा नेहरू जी का मांथ नवावे के परल। हैलेट, नेदरशोल डायर के भी माँत कइले रहलन। भोजपुरी वीरन के केतना नमूना देखावल जाय। गाजीपुर में शेरपुर, बलिया, में नरहीं से रेवती तक हजारन बलिदान भइल। बलिया के शेर चित्तू पांडे गजब कइलन। डुमरांव में भी पांच जवन शहीद भइलन। इहे हाल कमबेश आजमगढ़, गोरखपुर क भी समझीं।

आज का जुग में भी एह खानि से केतने हीरा रतन निकललन जिनका मोल आँकल कठिन बा। विद्या, ग्यान, राजनीति, साधुताई जेनिये नजरि डालीं लालन के लाली चमकि रहलि बा। गणित के पंडित आ विदमान सुधाकर दुवेदी, डा० गणेश, हिंदी के महारथी रामचन्दर शुकुल, विद्या समुंदर पं. रामवतार शरमा, डा० सच्चिदानंद सिनहा, देशरतन डा०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेन्द्र प्रसाद महापंडित राहुल जी, आ (संस्कृत) संसकीरित के विदमान कसान-भगवान जननायक दंडी स्वामी सहजानंद सुरसती, भोजपुरी-नपद के लाल रहलन जा जिनके देश-विदेश जानल। पं० सदल मिसिर, . सकलनरायन शरमा, पं. रामदहिन मिसिर, शिवपूजन सहाय भोजपुरी-ागर के निकलल अनमोल मोती रहलनि हँ जा।

भोजपुरी एही जनपद का वीरन क खेहल-पोहल, साजल-सवाँरल ीर भासा ठहरलि। कुछ लोगन का भरम बा कि मालवा से परमार ाजपूर लोग का आरे-जिला-भोजपुर नगर बसवला का बाद से ओहिजे ोजपुरी चललि, फइललि आ सरनामी भइलि। पुरान इतिहास के छानबीन इला पर भरम क ई कुहेस तनिके में लोप हो जाई। नदी आपन सिवान दलति रहे ले। सवँसे बलिया आ उत्तरी शाहाबाद छपरा क सिवान तना बेर कहाँ से कहाँ भइल बा। शाहाबाद के बहुत भाग सोननदी के ालल जानीं। कुछ लोग क विचार बा कि सोनपा का नियरा होइ के सोन हलि आ गंगा में मिलल। ढकाइच का नियरा बहला क परगट सबूत नाला। कबहीं फतुहा का पँजरा सोन-गंगा क संगम भइल रहे। जवन-ाहगीर पटना के गंगा-सोन का संगम पर बसल लिखले बा। अइसहीं ोजपुर के नवरतन दसवीं-एगरहवीं ईसवी में गंगा का किनार पर रहे। रमनाशा बरुनाटीसन होत कोठिया गांव का सटले गंगा में मिले। बहुत डित करमनाशा के सोन क शाखा मानेलनि।

भोजपुर नगर का नावँ पर भोजपुरी मानल बे ओरिमांथ क बाति मझीं। मालवा से भोजवंशी राजा लोगन का आवे ले बहुत पहिले से ोजपुरी वैदिक संसकीरित का मानसरोवर से निकलि के मंद-मंद चालि ताल-सुर-लय आ धुन में गावत बहति रहे। धुना, लय, सुर, गति से ाबित होत बा कि वैदिक भासा का मिलहुर, खेझरा घँसाइल-रगराइल प से (वैदिक अपभ्रंश) निकललि बा। 'भोज्यपुरम्' से भोजपुर बनल बा। ोजवंशी नरेश लोग का जमाना के पाइ के एकर बढ़ती जरूर भइल ई। उनकर विदमान नवरतन एकरा के खरदले मंजले होखसु इ त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुभाविक बा। भासा झरना के बिमल बहता पानी ह। एकर साज-सवाँ होते रहेला। एह से समझे के चाही कि भोजपुरी वैदिक-परिवार के सरूपवाली गवँई बेटी ह जे आज भोजपुरी-जनपद के रानी बनिल भोजपुरी से हमन का महँतारी का गोदी में दूध पीये का समय से नाता जे झोंपड़ियन में हमनीं के पालल-पोसल, हलरावल-दुलरावल, अ अमिरित का सामान दूध पिया के करेजा पोढ़ कइल। धरती पर डेग आ छाती तानि खड़ा होखे सिखावल, खलक में दुनियां-जहाँन में हमनं माँथ ऊँच कइल, ओकरा के भुलावल कइसे जाय? ओही क लहू रग में दउरि रहल बा। भोजपुरी भाइन के मोंछि अइँठि के चले इहे भोज माई सिखवलसि। भोजपुरियन के करेजा पसेरी भर क होला आ टिकासन ले ऊँच पोरसा भर क। भोजपुरी वीरन के आँखि देखाइ निबुकल ना। जे रगाइल ओकरा के रगरि के भोजपुरिया ठंढा कइल गहुँवन रोरी बिगला आ ठेंगा से ठोंकला पर भागे ना, आपन फट काहि ठाढ़ हो जाला। भोजपुरी गीत, भोजपुरी-लोक कथा, लोक-गाथा, कहा आ मुहावरन में खोजीं टकटोरीं त एकर बहुत उदाहरन भेंटाई। भोज कहाउति सगरे मशहूर बा कि:-

"रहीला रन-बन खाई ला मकोहि,
सात हुँड़ार क चरबन होइ;
बाघ मारि-मारि करी ला इयारी,
सिंह जोहत मोर पाकल दाढ़ी।"

हिंदी भासा भी भोजपुरी कहाउति, शबद आ मुहावरा से आ फुलवारी सजवले बा। शबदन में जुगन के इतिहास छिपल बा। हम एकर नमूना पेश करब। कुछ कहाउति भी दिहल जाई। लोक-सहि जनता का दिल के जोति आ राग ह। एकर लोग पाँच भाग कइले लोक-गीत, लोक-कथा, लोज-गाथा, लोक-नाटक, लोक-सुभासित। भोज लोक-कथा में कुछ खास खूबी बा। ई खूबी आठ भाग में बँटल बा १- प्रे पुट, घोर सिंगार क भाव आदिमि का मूल सुभाव क तसबीरि, मंगल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाव, संजोग में अंत, भूत परेत के भरमार, ललक के भाव, सनातन सुभाव के बरनन। भोजपुरी कहनी में रउरा सबसे बड़ खूबी ई पाइबि कि एकरा में भद्दा-फ्हर सिंगार के बरनन नइँखे।

शबद-मुहावरा-कहावतनि के कुछ तसबीरि देखीं आ सवाद लीं। उजबुक-बाबर बादशाह का आवे ले पहिले उजबेकिसतानी सरदारन का संगे ई शबद आइल।फरगाना में त उजबेक लोग बाबर का वंश क हजामति बनलहीं रहे, ओकरा डर भइल कि दिल्ली से भी खेदाईं। एह से शासन में गोड़ जमि गइला का बाद मोगलिया राज में बीर उजबेक लोग क बोध करावेवाला शब्द मुगल परचार से बुरबकाही, मूढ़ता गवाँरूपन, क निशान बनि गइल। लोदीवंश का गवाँरपना, शासन के नालायकी वोगयरह से बहलोल लोदी का नाँव ले- भोजपुरी बकलोल शबद निकलि चलल।

हुँड़हा- हुड़ँहाई- हूणन आ बिकरम राजा का जमाना के शबद ह।

'बुद्ध'-मतलब-'ग्यानी' बाकी जब बउध-धरम देश से गिरि गइल। महायानी बउध साधुन केचालि-चलन देखि लोग बहुत घिरिना करल। ओकरा बाद अब ई शबद, गवाँर का बोध करावे वाला समझल जाला।

बखीर-रूसी भासा क शबद ह-वश्कीर से बनल बा।

बकसी (बख्सी) संसकीरित के बेटी 'उइगुर' भासा से निकलि के आइल बा। ई बउध 'भिक्षु' ब बिगरल रूपइ। 'ओनामासी ढं' शाकटायन का बेआकरण का पहिला सुत 'ॐ नमः सिद्धम्' क बिगरल रूप ह।

अब तक ले भोजपुरी में बहुत काम हो चुकल बा। सबसे पहिले भोजपुरी के महापंडित डा० उदयनारायण तिवारी जी 'भोजपुरी भासा आ सहित' पर अनमोल काम कइलन। तिवारी जी भोजपुरी दुनियां के 'पाणिनि' ठहरलनि। उनकर 'भोजपुरी भासा आ सहित' पोथी ग्यान के समुंदर ठहरलि। डा० कृष्णदेव उपधिया, दुरगाशंकर सिंह, भी अनमोल काम कइले बाड़न।

कहानी, कविता का ओर त बहुत लोग झुकल बा, बांकी कुछ मजबूत गारा-मशाला क जरुरति बा कि भोजपुरी भासा क नेंव पोढ़ हो जाय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्याकरण भासा क चाभुकि ह। भासा का गाड़ी के साजि के ले च
ओकरे काम ह। आज एगो छोट चुनमुनवां व्याकरण क जरूरति ल
रहलि ह। पं० रासबिहारी शरमा आपन ई पोथी लीखि के ओह कम
दूर कइलन।

व्याकरण- केकरा के कहल जाला, ओकर काम का ह, ओकर
कवन लाभ बा, ई जानल सभले जरुरी जनात बा। 'प्रति शाख्य'
'शिक्षा' में जइसे सिखावल बा कि वेद पढ़े का बेर कइसे बइठे के च
कइसे मुँह खोलल जाई, कइसे बोले के होई कइसे ना बोले के, अ
केतना बाड़ी स, 'स्वर', 'व्यंजन' के का मतलब, -ओइसहीं (व्याक
बेयाकरण वेद का छव अंगनि में एगो परधान ह। एकरा में बतावल
बा कि 'कर्ता', 'करम', 'किरिया', 'समास', 'संधि' ई सभ का हउवे,
बनेला, कवना किसिम के काम में आवेला। थोड़े में बेयाकरण वि
काम ह कि ऊ बोले आ पढ़े वालन के समझा दे कि शबद कवना त
बनेलनि। ऊ कवना ढंग से काम में ले आइल जालन। भासा का गा
ठीक ढंग से हांकि के अपना निसाने पहुँचा दिहल बेयाकरणे क
जानीं। एही से बेयाकरण से भासा का गाड़ी क चाभुकि, पयना म
जाला। एकर नावँ 'शब्दानुशासन' एही से धराइल। जइसे तेल-सन
में लगवला पर आवँनि घूमि के गाड़ी के आगे बढ़ावे ले ओइसहीं भास
गाड़ी में आवँनि रूपी विचार-बाति के बढ़े-सरके में बेयाकरण तेल-स
काम देला। बेयाकरण ओतने पुरान सामतर ठहरल जेतना वेद के पो
बेयाकरण के पहिला पंडित बिरहसपति महराज भइलन। इन्दर म
सीखेपढ़ेवाला उनकर पहिलका चेला। संसकीरत भासा में पाणि
पहिलहूं गहराई ले छान-बीन कइ के बहुत लोग बेयाकरण क पोथी लि
रहलन जवना के अत्रि, आंगिरस, आ पिशालि, कठ, कलापी, ग
शवनक, छागलि, शाकटायन, भिरगू, बसिष्ठ, सकल आदि के नावँ पा
महराज अपना पोथी में गनबले बाड़न। बाकी तीनि मुनी लोग-पाणि
पतंजलि कात्यायन, महंथ गनालन। प्राकृत भाषा में हेमचंद के बेया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मरनामी मानल जाला। बेयाकरण क झमेला केतना पुरान ह के बतावे- 'गोपथ-बाभन' का पोथी में एकर एगोकथा मिलति बा। सवाल भइल बा कि ओंकार के छान-बीन कइल चाहत बानीं। ई कवना धातु से निकलल बा? एकर परातिपदिक, लिंग, वचन, विभक्ति, 'प्रत्यय' का ह? स्वर, व्यंजन, विकार, विकारी क जीरहि ओइजे लउकत बा। निरुक्त भी यास्क मुनि क वनावल वेद क व्याकरणे ह।

आज भोजपुरी भासा जनता के माँजल-सवाँरल भासा ठहरलि। एकर सिंगार बहुत हो रहल बा। कगदही करेवाला गुनी पंडित लोग आपन कलमि चला के एकरा के धनी बना रहल बाड़न। अपना गुन-सहूर का बल से 'भोजपुरी' बोली से भासा क ताज पहिरलसि, रानी भइलि।

पोथिन का भासा आ बोल चाल का भासा में बड़ा अलगाव होला। पोथिन के भासा अझुराइलि होले। बाकी बोल-चाल वाली न सझुरल एकदम सुघर चिक्कन, झरना का बहता पानी का समान।

पोथिन के भासा एगो निसान पर पहुँचि के ठहरि जाले बाकी बोल चाल के चलती, दुलरुवी भासा के चलती कबे ना घटे। समय पाइ के एकदिन ऊ एतना आगे बढ़ि जाले कि पोथिन के भासा के धकिया के अपने गद्दी पर जा बइठे ले।

भोजपुरी भासा क कुछ कहाउतिन के देखि के एकरा रस क सवाद लेई।

दादा मुवलन दोहरवे हाथ लागल।
धन नावें हूँका पोशाक नावें जूता।
भूँड़ गाइ सदा कलोर।
हर ना जुवाठि अँकवारि भर क पयना।
बाभन वेद कोइरिये खेती।
तुरुक ताड़ी बैल खेसारी।
जवन छउँड़ी लगवलसि आगि उ बा कवरवे ठाढ़।
हाथ गोड़ सिरिकी पेट नद कोला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हर हेंगा में जस-तस पगुरी में रंथ
नाती के गांती ना, बिलारी के झूला।
लजाइल लइका ढिढुँकी टोवे।
देखन में बउरहिया आवें पांचों पीर।
देशी घोड़ी मरहठी जीन।
जहां पांचो पीर तहां अमिना सती।
बकसऽबिलारि मुरुगा बाण होके रहिंहन।
न पँड़उस के बरहा बराई, न चलनी में पानी भराई।

प्रमोद कुमार दीक्षित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम सुनीति बाबू के,
आपन विनय सुनाईं कइसे;
जे भासा कऽभारी पंडित,
विदमानन कऽ मुकुट शिरोमनि,
पूत सपूत बंग-धरती कऽ,
जहाँ रतन लालन क खानि!
का ऊ डहरि भुलइलन,
कहल-बतावल,
गौड़ महाप्रभु,
सिरि चैतन्नदेव आ-
रामकिसुन परमहंस सुरेमन,
जती विवेकानंद निपुन कऽ?
कवि-कुल-राजहंस विद्यापति,
सुरसति पूत-सुलायक;
नाथ रवीन्दर ठाकुर,
सुजन सुधरमी समदरसी का;
'गीतांजलि के
पढ़लो पर तऽ,
का जाने काहें ऊ;
बाड़न बनत अबूझ अजान
हमहूँ उनकर भाई हउवीं,
ओही एक बाप-माई कऽ।
एह देस का,
धन-धरती सुख-संपत्ति,
विद्या-बानीं,
बोध ग्यान-गुन-सोकड़;
सभ में हमरो;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हक ओतने बा;
जवना तरे जइसहीं समुझीं।
इहे कहति बा मानवता आ-
सहज सनातन धरम इहे हऽ!
भाई का भाई के,
धकियावल चाही ना!
भाई के धकियवले,
हालि भइलि का;
रिखि पुलस्त का नाती,
सिव-सेवक तपसी बाभन कऽ?
बालि जुलुम कइलसि जब,
अपने सग भाई पर,
मुक्का मरलसि मेहरि छिनलसि;
धरम-बिचार तनिक ना कइलसि,
भइल नतीजा कि ऊ;
जान गवां अखड़ेरे।
गइल छोड़ि धन-धरती-धाम!
हकवे खातिर,
कुरुछेतर में;
कौरव-पाण्डव,
एके कुल कऽभाई;
जुटि लड़लन आपुस में,
रचलन समर महाभारत कऽ;
कठिन भयंकर भारी
मद गुमान इरिखावश!
अउरी अपना,
कुल-प्रलिवार-हीत-नाता आ-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मीत-सुजन-संगी सभका के,
आगि लगाइ खउरलन!
बहल पवन चउवायी,
बढ़लि लवरिया;
फइलि गइलि सवँसे भारत में!
एतने नाहीं,
जावा-कबुज बाली;
श्याम-मलाया बरमा,
सेलीबिज जापान;
चंपा चीन सभे देसन से,
दूनो दल कऽ;
पछ पलाह करवइया,
आपन मदति मसाला लेके;
मोंछिया अइँठत,
समर भूइँमें अइलन;
अउरो-आपन,
बल-पुरुसारथ;
विद्या-ज्ञान-धरम-धन;
कारीगरी-कला-गुन;
सब कुछ एहिजे,
कलह-अगिनि का;
बरत लवरि में,
सहजे चउपट कइके;
जुटल फतिंगा नियर दीप का,
थोरे भर में जुझलन!
पूरुब ले ईरान-अरब-आ
मिसिर-सीरिया,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलख-बुखारा;
कूचा भा तुरुकी से,
राजा लोग फउदि ले आइल!
एहिजो अंधक, मेखल-दंडक,
वीर-विरिसनी कुल कऽ;
नवजवान मनसोख बिगरू,
बली ढीठ इनरिन कऽ दास;
ले हथियार खीसि में मांतल
रणचंडी कऽ,
भोजन सुरस बने खातिर के
आ जुटलन जल्दी से!
भइल नतीजा ई कि,
जतन कइल जुग-जुग कऽ;
विद्या-सुभ-विग्यान-ग्यान-गुन,
कारीगरी-कला-चतुराई;
सुख-संपत्ति धन-धाम धरोहर;
सब कुछ चउपट भइल देश कऽ,
वीर पुरुष कुल मारल गइलन!
भारत माई,
देखि दसा पुतन कऽ;
हाथ मांथ पर धइके,
केतना जुग तक विलखत रहली!

x x

भासा सहज सुघर मूरति हऽ,
भीतर का भावन कऽ!
ई मानुस-हिरदय का,
सहज-मनोरथ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मांग-चाह-इच्छा के,
परगट करे बतावे ले!
बुद्धि-ग्यान-विग्यान-विलच्छन,
बिसय-बासना टिसुना सभकर;
सज तसबीरि उरेहि ओइसने,
जइसन कि ऊ होली सकमक,
लोगन के देखलावे ले!
ईहे मानुस के मानुस से;
जोरि-बान्हि के;
नगद नेह-नाता में,
सुघर समाज बनावे ले!
मानुस सिर-जनहार परानी,
बे समाज कऽ,
रही कहां ऊ कइसे?
एही से बस सहज सुभावन,
गढ़ि समाज रुचि का अनुसार;
चाहेला सुख-सांति-चैन से,
रहल धरतिया ऊपर!
जनम-करम-गति,
रहन-सहन-गुन;
रुचि-आचार-विचारन का बल,
ज्राति बनलि दुनियां में;
देस-दसा-जुग का अनुसार,
साजि सिखा लोगन के;
सवतुक रीति-नेम शुभ,
सील-सनेह-सुमति-सुखवाला;
पुरुसारथ कऽ डहरि देखावत,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीवन-महासमर में;
सुगति-सांति का,
नगद निसाना तक पहुँचावे,
विजय-धजा फहरावे खातिर!
सभ देशन में;
मानुस का समाज में;
हर जातीय दलन कऽ;
किसिम-किसिम कऽ;
बाटे अलगा,
रहन-सहन आ-
कुल-आचार-विचार!
बोली-भासा फरक-फरक बा,
केतने फरका रीति-रेवाज!
संसकोरित ले,
जनम भइल शुभ;
पराकिरित-पाली कऽ!
ईहें नाहीं,
उत्तर भारत वाली;
अउरी केतने भासा,
बंगला-गुजराती-पंजाबी;
उड़िया-असम-मराठी-कन्नड़,
ब्रजभासा-हिन्दी तक,
एकरे घर से;
पाइ कलेवा-खरची-पुरहर,
भइली सिजिल-सुघर-बरियार!
कबे-खोतनी-कबे तुखारी,
मंगोली आ कूची;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जावी भा कदंब तक,
मदति मसाला ले एही से;
आपन घर-दरबार सजवली!
हिंद-एसिया का भासा कऽ,
खोलि सनूखि उहां का;
जब देखबि जांचबि तऽ;
पता चली कि;
ओकरा शबद-खजाना भीतर,
बाड़न अबहूँ साठि सयकड़े,
संसकीरित के शबद सुघर सज,
घुलल-मिलल शुभ गुन झलकावत!
कहीं कहाँ तक कथा पुरनकी,
ओह महापंडित का;
बेवरा कुल्हि मालुम बा!

x x x

भासा-कथा बड़ी लमहरि ई,
भारी एकर कुल-विरादरी;
सज से जेकरा,
रुप-शील-गुन;
सबतुक सेवा आ-मरजादा
सहज-ग्यान-विज्ञान सुरस के,
जानल-समुझल;
लगन-साधना-तप कऽकारज,
बहुते मेंही महिमा वाला!
एह डहरि के धइके चलले;
रउरा देखबि कि दुनियां में,
लोगन का रुचि गरज मोताबिक,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केतने भासा आके सनमुख;
सरधा से कुछ सेवा कइली,
आदर पवली रहली सुख से!
बाकी त जानीं कि,
निकलल समय सरकि के सर सर;
घंटा बाजल पहरा बदलल,
बान्हि बिछवना आखिर;
गइली बिदा होइ ऊ अंते
आपन देन सुघर कुछ देके!
भारत देस महान् निपुन में,
उत्तर ले दक्खिन तक;
केतने भासा बाड़ी!
रहल सराहे लायक;
केतनन कऽ अबहूँ बा!
एहिजा बाड़ी,
केतने जाति सुलच्छन;
अपना लूरि-सहूर-ग्यान-गुन,
कारीगरी कला के,
प्रिय देसी भासा में अपना;
जुग-जुग ले जोगाइ के रखले!
अवसर पाके,
बहुत जुगन में;
जाति बाहरी,
भारत में अइली कुछ;
ओमें केतना,
नोंचि-बकोटि परइली,
केतने रहली कइली राज,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना भासा के जनता पर,
हथियारन का बल से बदली!
जब उखरल शासन कऽ झंडा,
उखरि गइल उनहूँ कऽ गोड़!
बाकी तबहूँ,
असर परल कुछ;
भासा-बोली,
चालि, चलन आ-
शील-सुभाव-विचारन कऽ!
मजिगरि खिचड़ी पाकलि
रुचे-पचे लायक सज छौंकलि!
दूइ जगन का-
मिलन समय में,
चउराहा मोड़न पर,
धरम-करम-गुन भाव-मरम कऽ,
गंगा-जमुना-सुरसति मिलली;
लोग नहाइल तिरबेनी में,
मन-बानीं-काया के धोवल;
फल पावल तीरथ कऽ!
पहुँचि अछयबट का छाया में,
सुहताइल आ मांथ बनावल;
निरमल-चित सरधा से,
परसादी ले;
सुमति-सांति-अमिरित कऽ,
गइल डहरिया धइले
अपना नगद निवास-निशाने!

x x x

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

बाकी त हम,
हालि कहीं का;
अब का मनमोहक कलिजुग आ-
कली-छली नेतन कऽ?
जवन दसा लउकति बा सनमुख,
ओके देखले;
सहज बुझात इहे बाटे कि,
दइबे बेड़ा पार लगावसु;
दुसी देस का,
बेचारी जनता कऽ?
बहुते महँगा मोल चुका के,
देस सुतंतर भइल हमन कऽ!
आसा जागलि,
खुसी भइलि कि;
अब बानीं कऽ बान्हन टूटी,
पाई सभई हक बोले कऽ;
पढ़े-लिखे सोचे कऽ!
अपना भासा-भाव नगद के,
पाले-पोसे पनफावे आ-
साजे सरियावे कऽ,
सभके मिली सुघर मोका शुभ!
बाकी आजो,
रँगरेजी हमनी पर;
बरियाई लादलि बा!
संसकीरित के
जे माई दुनियां का,
ना जाने केतना भासन कऽ;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लउँड़ी-दाई बना, किनारे,
घिरिनावश राखल बा,
झूठ बहाना रचि के!
जे जहँवे बटुरा के,
रचन बखेड़ा-टंटा;
ओकर आदर होता,
आपन हक-पद;
पावत बा ऊ सहजे!
केतनो गुनी सुलच्छन होखे,
बाटुर होखे;
ओकर कुल-परिवार,
तबों दबा के ओके;
जुलुमी शासनवाली,
नेति-नेम के,
अबो चलावल जाता!
राज-हुकूमति,
नेति-नेम कऽ;
बा लगामि जिनका हाथन में,
उनकर नियति साफ बाटे ना;
अपना मतलब में आन्हर हो,
ऊ भासा का रथ के;
दलदल में अँटकवले बाड़न!
सहज आजु ले,
बरिस पचीसन पहिले;
हम सुनले रहलीं कि;
भारी भासा-पडित;
निपुन सुनीति चटरजी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंगदेश कऽ राढ़ी बाभन;
देश सुतंतर भइले,
करिहन उचित नेयाव हमन का;
भोजपुरी भासा का साथ!
बाकी अब देखत बानीं कि,
तेल कान में डालि उहाँ का,
चुप्पी सघले बानीं!
केतने पंडित एहू घर कऽ,
अबो जमींदारी के;
जीयत राखे खातिर,
किसिम-किसिम कऽ;
फंद खड़ा कइ,
हमनीं के भरमावत बाड़न!
सभके बोलें कऽ हक बाटे,
सभई पावे आदर-मान!
एगो हमरे मुँह पर काहें,
ताला पोढ़ अलीगढ़ वाला?
साच कहीं त,
पंडित असल उहे हऽ
जे सभका के,
एक नजरि से देखे,
एक देस का सभ भाइन के,
जाने एक समान!
भारी महिमा वाला,
नगद देस भारत में;
दूर-दूर का भाइन के जब,
बूझि-विचारि उहाँ का;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकर जायज हक पद;
जीवन-गति वानीं बल;
सुख-मरजादा दिहलीं,
तब काहें हमनी के;
अबरू समुझि दबावत बानीं?
तमिल-तेलगू मलयालम आ-
कसमीरी-गुजराती,
कन्नड़-उड़िया;
निपुन मराठी-बंगला,
सिजिल मैथिली,
नेवारी-आसामी,
सभकर आदर कइलीं,
तब कारन का,
दूइ नजरिया!
दूइभाव कइला कऽ?
सभे लइकिया,
प्रिय भारत माई कऽ
उनकर सगी बहिनियां!
केहूके त,
हीरा-मोती देइ उहां का;
महल-अँटारी में बइठवली,
केहू के अब,
दुलम मड़इयो कइले बानीं।
दू बहिनियां,
भोजपुरी लछिमिनियां;
देंवि सती सीता अनुसूया,
वीर सुरेमन;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाल नगीना केतने,
समय-समय से पैदा कइके;
उनका भा अउरिन का,
मरजादा के रखलसि!
भोजपुरी हऽ,
भोजपुरिया वीरन कऽ;
तेज-जोतिमय भासा-बानीं,
जे चढ़ि ठनकलि हरदम
ठेंगा-गोजी;
तीर-धनुस आ-
तलवारन का बीच!
भोजपुरी के,
आरे-बलिया गाजीपुर आ-
चंपारन-सारन-आजमगढ़,
गोरखपुर-बस्ती-देउरिया;
आधा रांची-सवँस पलामू,
मिरजापुर कुछ काशी;
एतना चुनल जिलन कऽ,
आठ करोड़ लोग बोले ला!
भोजपुरिये भाइन का,
त्याग-लगन-सेवा-पुरुसारथ;
शुभ आचार-बिचारन से,
मांथा ऊँच रहल भारत कऽ;
हर जुग में मोंका-मोंका पर!
जबे देश पर संकट आइल,
ताल ठोंकि झट;
भइलन ठाढ़ वीर एहिजा कऽ!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ममता मोह भरम आलस से,
रहि बेलाग दूर ऊ;
माँथ देइ मरजादा रखलन,
सान-सीवं क झंडा;
कवे झुके ना दिहलन।

x x x

एहिजे सहसारजुन कऽ,
सुघर सहसपुर-
सहसरावँ में,
रहे निपुन रजधानी!
एहिजे रहे राज सुखदायी,
निपुन गाधि राजा कऽ!
एही शुभ धरती पर,
परम पवित्तर सुघर-आसरम;
रहे सिद्ध जमदगिनि रिखी क!
एही भोजपुरी माई कऽ,
लाल निराला;
परशुरामजी रहलन!
अपना कोंखी,
वीरन के जनमावे वाली,
एही नगद धीर धरती पर,
सानी राजा सहसारजुन से;
वीर सुरेमन तपसी ग्यानी,
परसुरामजी समर ठानि के;
बापा बैर चुकवलन!
एहिजें भिरगू मुनि कऽ,
पुन्नि-थासरम,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरदरमुनि कऽ अड्डा।
गंगा-सरजू-संगम पार,
एही भोजपुरी तीरथ सुभ;
प्रिय बगसर का,
दक्खिन ओर कुछ दूर आगे,
सघन सोहासुन जखिनो-वन का,
सिद्ध-आसरम.
विद्यागढ़-गुरुकुल में;
तपसी सिद्ध महामुनि ग्यानी,
विसवामीतर जी महराज;
राम-लखन के सिच्छा दिहलन,
बला-अतिबला;
दूनो सुभविद्यन कऽ!
एही भोजपुरी-छेतर में,
महापुरुस मुनि बउधदेव कऽ;
जनम धरतिया,
सुधर लुम्बिनी बाटे!

x x

एहिजे भोजपुरी-छेतर का,
सटले पंजरा;
सबतुक दानी,
राजरिखी प्रिय 'गय' का;
जग्य-भूइँ तप-धाम गया में-
जेकरा पच्छिम;
भोजपुरी भासा परधान,
-ग्यान मिलल उनका के;
पहिल धरम उपदेस सोहासुत,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बउध-धरम कऽ एहिजे;
भोजपुरी-मिरगावनवां में,
पहिले पहिल उहां का;
रिखिपत्तन-कासी में दिहलीं!
सहज सुगति निरवान उहां कऽ,
एही छेतर-भीतर;
धुनी मल्ल-वीरन का,
रोब-सान वाली रजधानी;
कुसीनगर में होखल!
एहि जे पहिले,
रहलन धुनी वीर कारूष;
साहाबद जिला का,
गांग किनारा वाला;
सहन उत्तरी भाग सुधर में!
ऊ दक्खिन वासिन से,
निपुन उत्तरापथ कऽ;
रइछा करसु प्रेमसे सज से!
त्यागी-तपसी,
गुनी जाति बाभन आ-
बाभन-धरम विलम कऽ,
रहलन मदतिगार ऊ;
वीर लड़ाका कट्टर!
एहिजे रहे राज सज,
दंतबकर राजा कऽ!
महापुरुस मुनि ग्यानीं,
संत अराड़ रहसु बनवां में;
कहीं पास आरा का,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहवां जाके;
मुनि गउतम सिद्धारथ,
गूढ़ ग्यान कऽ;
पहिली सिक्षा पवलन!
इहवें सहसरावँ में,
रहे बनल आराम सजीला,
एक हजार भिक्खु लोगन का;
भजन-ध्यान-तप साधन खातिर!
एहिजे दूसर,
सुघर बउध असतूपनमूना;
रहे बनल मनमोहे लायक,
पोखरा भीतर सजगर!
प्रियदरसी राजा असोक कंऽ;
चंदनपीर पहाड़ी वाला;
लेख अबो कायम बा,
जेकर नगद सबूत!
एहिजे कपासिय[1] वन भीतर,
वउधदेव मुनि ठहरल रहलन;
समय पाइ के जहवां,
बनलन बउध-विहार कई गो!
इहवें ऊ आराम नगरिया,
मजिगर बउध-मठन कऽ;
जेके पाछे चलि के,
लोक पुकारे लागल आरा[2]!

टि० १. सहसरावँ-मंडल का कपसियाँ गावँ
२. अबके बक्सर जिले का राजपुर थाना-भीतर सगरावँ गावँ जहाँ कभी बौद्ध सँघा राम था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एहिजे संघाराम गावँ आ-
गावँ निपुन अंगार[1]।
गूपुत-वंश का राजा-
विसुन-गूपुत कऽ,
नगद छावनी खेमा;
जिनका के अब,
लोग पुकरारत बाटे;
प्रिय 'संगरावँ' बउध-धरमी आ
शिव-धरमी 'मँगरावँ'।
एहिजे पोढ़ पुराना,
किला पहाड़ी,
सान-सीवं-मरजादा वाला,
वीर-सुरेमन राजा;
रोहितास कऽ,
रोहितास गढ़;
साहाबाद जिला में,
सोन नदी का पच्छिम;
सहसरावँ ले बारह कोस!
पकड़ि डहरिया,
चउरासी में कवनों;
जब जे पहुंचल एहिजा,
सरन देह ई रइछा कइलसि;
रखलसि धरम-नेम-मरजादा!
सिवधरमी राजा शशांक कऽ,

---

1. वहीं राजपुर थाने का मँगरावँ गावँ जहाँ से चौ० वृजमोहन राय द्वारा दिया गया ६ठीं शदी का द्वितीय विष्णु गुप्तकालीन लेख मिला हैं जिस पर डा० ए० एस० अलेकर का सचिग्राफिया इंडिका १९४० में लेख निकला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिक्का देत गवाही बाड़न
बस अइसन के,
गूढ़ पुरनकी कुछ बातन कऽ!
उड़िया देस निवासी,
निपुन तुंगवशी राजन कऽ
नगद-निकास ठावँ ईहे हऽ!
जनम-सोत वुनियाद पुरन की,
करुष-बंश का खरवारन भा-
चेंरो-ओरावँ जातिन कऽ!
खरवारन का नायक,
प्रिय परताप धवल कऽ;
संबत बारह सइ पचीस कऽ,
लेख पुराना;
परबत ऊपर,
फुलवारी घाटे मिलि;
सदरऽथत बा,
एह गूढ़ इतिहास-कथा के!
एहिजे मोहो-सोलो;
महासाल भा-
अबका गावँ मसाढ़ सुघर का;
बेठदीप[1] वासी राजा कऽ,
बनवावल असतूप विचित्तर;
बउध-मुनीं का धातु भाग पर!
गावँ मसाढ़ सुघर में,
चुल्लवग्ग का लेख मोताविक,

टि० १. भगवान बउधदेव का धातुभाग खातिर कुशीनगर पर चढ़ाई करने सात राजन में एक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कासी-कीटा गिरि में चलि के;
बहुधदेवजी
नगर आलवक[1] अइलन;
अउरी ओहिजा;
ढीठ जच्छ एगो कऽ;
मान हेठ कइ,
चेला नगद बलवलन ओके!
एतने नाहीं,
देखि नगर के;
सुघर सोहासुत,
भजन-साधना लायक;
आपन चतुरमास सोरहवां,
ठहरि बितवलनि सुख से!
खोजी पंडित,
जानकार इतिहास कथा कऽ;
सोधि बतावेलनि कि,
उहे नगरिया हउवे आरा!
ओही, कुल-पीढ़ी-पुरान-पद;
जाने वाला;
विदमानन का मति मोताविक,
आरा-साहाबाद जिला का;
केसपुत्त-केसठ में,
रहे आसरम परम पवित्तर;
संत सुरेमन ग्यानी,
मुनि आराड़-कलाम निपुन कऽ

१. आधुनिक आरा ही आलवक हैं जहाँ वउधदेव ने अपना सोलहवाँ चतुमसि विताया था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एहिजे वीर सुरेमन,
भोजपुरी वीरन कऽ नायक,
सेरशाह क जनम धरतिया!
बगसर ले कुछ पच्छिम,
पास गावँ चउसा का;
भोजपुरी वीरन का बल से,
शानी शेरशाह सहजे में;
हरा हुँमायू का सेना के,
जाइ बइठलन;
राज सिंहासन पर दिल्ली का!
एहिंजे जिला सुखी सारन में,
अल्लकप्प[1] क 'बुली'[2] बहादुर,
छतिरी राजा,
बउध मुनी का धातु खंड में;
भाग जथारथ आपन,
लड़ि के पावे वाला!
एहिजे जैथर[3] गावँ,
जहवाँ मुनी गंगेसर देव;
नीमिसार से आके बसलन,
आपन विजयधजा फहरवलन!
आगे चलि जहवां से,

टि० १. छपरा के क्षत्रिय राज्य

२. एक बहादुर क्षत्रिय जाति।

३. छपरा जैथर (जय-स्थल) जो कश्यप गोत्रीय सरयूपारीय ब्राह्मण मुनि गँगेश्वर देव का पूर्वी देश में आ बसने का स्थान था और जिस मल से उनके वैशज ब्राह्मण पूरब में फैले। वेतीया का दानशील राज्य जैथरिया का ही मुर्धन्य रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैथरिया बाभन लोगन कऽ,
वंश बढ़ल उत्तर में पसरल!
राज बेतिया
ओकर सुघर नमूना;
दान-पुन्नि-परमारथ,
सुजस वीरता वाला!
जवान कुल कऽ,
बागी वीर नरेस;
फते बहादुर साही,
भारत का आज़ादी खातिर;
अंगरेजन से लोहा लिहलन,
दर-दर ठोकर खइलन;
तबहूँ मांथ झुकवलन नाहीं!
भोजपुरी हऽ
शाकिय-मोरिय-कोलिय-गण आ.
वीरमल्ल लोगन कऽ भासा!
शुंगवश के,
रोपे-थापे वाला;
ऊ बाभन सेनापति,
पूस मितर[1] बलवान;
भोजपुरी वीरन कऽ,
मदति पाइके;
भोजपुरिये सिवान में,
गंगा का दीयर में;
सहकल जवन-नरेस,

टिं० १. पुण्यमित्र।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वीर धुनी चढ़बांक;
प्रिय मिलिन्द[1] का,
पीठी धूरि लगवलन!
भोजपुरी वीरन से,
लड़ि के ओकरा;
भरि मुँह मांटी लिहले,
परल तुरत-भागे के!
सबुर करीं मति,
बस एतने से रउरा!
सक-कुसान जब;
एह देस कऽ
नाकन दम कइलन तऽ,
नाग वंश कऽ
वीर भार सिव-राजा;
भोजपुरी-छेतर में,
आपन चौकी कायम कइके;
एहिजा का वीरन का बल से,
उनके दूर चहेटि सहज में,
कइलन जय्य अनेकन,
गंगा का किंनार पर!
जेकर खास गवाह निपुन सच,
दसासुमेध[2] धाटि कासी कऽ!
राजा वीर विकरमादित्त,
एही भोजपुरी जुवकन कऽ

टि० १. यूनानी राजा थिमांडर।

२. 'अयंकार युगीण भारत' डा० का० प्र० जायसंवल के अनुसार दश० भारथियों के जय्य करने का स्थल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चउकस सेना साजि सान से,
सक लोगन के;
पिठियवल आ-
खेदि देस ले बहरी कइलन!
सानी धुनी वीर भोजपुरिया,
हिन्दुकुस के लांघि सहज में;
बलख बोखारा धांगत,
आमू नदिया का धारा में,.
आपन तेगा धोवलन!
अउरी विजय-खुसी में घूमत,
सुघर कियरिया केसरि वाली;
सहज सुगन्ध सोहासुत लेत,
दउरावत घोड़न के;
दिल्ली आइ पहुँचलन!
मेंहरवली का,[१]
लोहा-खंभा में बा;
दूसर चनरगुपुत का,
ओह विजय कऽ;
सुजस कथा टांकलि सज!
एहू ले निकहा दिन पहिले,
भोजपुरी राजा ऊ पहिला;
मोरिय-गण का विमल वंश कऽ
लाल नगीना;
चनर गुपुत मतिहान,
गिरदा बान्हि मजे में,

१. यमुना पट पर मेहरौली में चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) का विजय स्मारक लौहस्तम्भ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

कइलन राज-देस भारत पर!
छोड़ि निचाट दक्खिनी टुकड़ा,
ओह समय में;
सवँसे भारत,
होखल रहे एक जुटि;
उनका सुभ सासन में!
सेनापति सेलूकस,
आके पच्छिवँ का सीवाने;
ललकरलसि जब उनके,
फूलि जोम में,
बल अजमावे खातिर;
जब ऊ एही,
भोजपुरिया वीरन का बल से,
पहुँचि दूर कांबूल-कंधार;
समरभूई में ठोंकलन ताल!
भला कहीं तऽ,
ऊ भोजपुरिया वीर बुनेला;
सुखी पिप्पलीवन का,
मोरियकुल कऽ;
सानी सिंह सपूत,
आंखि देखावल सहसु दबकि के?
ऊ भारत माई कऽ,
सान बचावे खातिर;
राखे खातिर,
सीवॅ-मान-मरजादा;
हॅकड़त जाइ पहुँचलन,
काबुल का मयदान!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह दूर अफगान देस का,
सिजिल कूर खेतन में;
भोजपुरी वीरन कऽ तेगा.
चमकल बिजुली नियर अचक्के!
ओह घरी पर,
देखि हजारन बिजुली,
गड़गड़ाइ के चमकत साथे;
जवन-सिपाहिन कऽ अँखिया झट,
भइली बंद अदंक-आंचि से!
वीर ज़वान सजग भोजपुरिया,
बहुत चोन्हाइल चढ़ल चंग पर-
सेलूकस कऽ,
मोंछि उखरले पर दम लिहलन!
उनका पोंछि दबा के,
तुरत परल भागे के!
एतने नाहीं,
भोजपुरी राजा से;
जान बचावे खातिर आपन
बेटी तक बियाहि दिहलन ऊ!
अब आगे बढ़ि देखीं,
दुनिया का इतिहास-जगत में;
सुरुजदेव का,
जगमग ज्योति समान
चमकेवाला;
ऊ अशोक सुभधरमी,
ओही चनर गुपुत कऽ;
नाती रहे नगीना!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोरिय-कुल में,
प्रिय अशोक का;
लिहला से अवतार,
भोजपुरी-छेतर कऽ;
कहे बाति के,
सवँसे भारत आ संसार;
भइल निहाल जुड़ाइल!
नगद धरम-अमिरित कऽ,
सुरस सोहासुत,
सज झरना बहला से;
बहुतन के सुख सांति भेंटाइलि!
बिगरल हूण धुमंतू
वीर बली मनसोख;
बउराइल गुमान बस,
रहलन देत दरेरा सभके!
सबँसे महादेस बड़-
निपुन एसिया वाला;
थरथराइ के उनसे,
बनल रहे बेचारा,
ओहू घरी वीर भोजपुर कऽ,
ओह ढीठ जुलुमिन कऽ,
कनवां मललन,
अउरी अगुवा आपन;
बना वीर असकंदगुपुत के,
धकियवल उनका के!
परिकल गोइयां ढीठ हूणन का,
मुँह में करिखा लागल-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ ऊ लोग पोंछि सटकवले,
भागि-पराइ के निकललन,
देशंवा से हमनीका।
सैदपूर-भितरी में,
ओह विजय कऽ;
कथालाट पर,
थोरे में टांकलि बा!
एहिजे बलिया;
भिरगू मुनि का पुन्नि-धाम कऽ,
वीर सुरेमन;
मंगल पांडे,
गावँ-जराढ़ी-नगवाँ
संतावन में बारिक पुर में;
तोरि गुलामी का बान्हम के,
आजादी कऽ;
पहिला संख बजवलन,
झंडा कइलन खड़ा गदर कऽ,
एही धरती कऽ ऊ,
सानी-सिंह-सपूत नगीना;
धुनी धुरँधर वीर-बांकुड़ा,
बागिन कऽ सरदार सिरोमनि;
बाबू कुवँर सिंह बलवान!
आजादी का,
पहिला महासमर कऽ;
अगुवा आतमबली-महान!
भरल रहे नस-नस में जिनका,
देश-प्रेम-गौरव-अभिमान!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पराधीन भारत माईं का,
सेवा-दया-त्याग-तपवाला;
बली हाथ-पावँन में,
परल हथकड़ी-बेड़िन के, जे
काटे खातिर,
ओह ढील अस्सी बरिसन का;
गिरत उमरि में,
हंकड़ि उठवलन तेगा;
मांथ देइ मरजादा रखलन,
हँसत-हँसत भइलन बलिदान!
एहिजे सुघर-सांत-मन मोहक,
जिला सुखी सज चपारन में;
जे भोजपुरी भासा कऽ
पुरहर प्रेमी भगत सुजान-
गांधी बाबा,
निलहा कोठी वाला;
कूर फिरंगी-जमींदारन कऽ,
जुलुम मेंटावे खातिर;
सतियागरह लड़ाई छेड़लन!
एहिजे भोजपुरी का,
पोढ़ पुरनका गढ़ छपरा में;
गावँ सोहासुत जीरादेई,
जहवाँ लाल निराला;
राजेन्दर परसाद जनम ले,
सुख-सुराज का,
धरम-समर में लड़लन;
अउरी जीति सान से सज से,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देस सुतंतर कइलन!
मुकुट देस का मरजादा कऽ;
पहिले पहिल मांथ पर उनके;
राखल गइल सजा के!
बाद जुगन का,
रजधानी दिल्ली में;
राज सिंहासज पर जनता का,
बइठावल गइलन ऊ;
सभई का सनमति से!
देखि तिरगा झंडा,
छाप लगावल-
प्रिय-दरसी अशोक का,
अछय-अनंत-धरम चक्का कऽ;
लाल किला पर,
फररावत उनका के,
माई जमुना हँसलि ठठा के;
जेकरा निरमल जल में,
ना जाने कि केतना;
जुलुमी सेनापति सरदार,
धोवलन आपन;
लहू-लुहान भइल तलवार!
ऊ एही दिल्ली में,
बउराइल तैमूरलंग के;
लँगटे नाचल देखलसि!
देखलसि ऊ जुलुमी नादिर कऽ,
भारी जुलुम जोर जनता पर!
चतुर पैंतरावाज खेलाड़ी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कली-छली अकबर का;
सतरंजी चालन के;
ऊ अति सांतधीर बनि;
देखति-समुझति रहलि कले-कल!
दिन ऊ देखले बाटे,
जहांगीर आ नूरजहाँ कऽ;
शाहजहां कऽ बइठल-
भोर-सिंहासन पर अगरा के,
बाद बन्हाके जेहल जात;
कब ऊ भूलि सके ले,
आलमगीरी रोब-दाब आ;
राजहुकुमति का करनी के,
जबकि सभे लोग का सनमुख;
सदर चांदनी चउक-मोर पर,
भाई मतीदास छिब्बर के;
बीच माथ पर आरा धइके,
चीरल गइल दूइटुकड़न में!
सुजन-सुधरमी,
पुरुस धीर ऊ रहलन!
साधुसंत उपकारी जग में,
सासति-जलुम सहेलन;
कबे भाव बदला कऽ,
उनका मन में होखे नाहीं!
अउरी हालि सुनीं आगे कऽ,
भोजपुरी भाइन का,
पुरुसारथ-तप-त्याग-लगन कऽ!
भोजपुरी परदेस निराला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहवां समय-समय से;
लिहलन जनम अनेकन,
सुजन सुधरमी पूत सपूत;
साधुसंत उपकारी केतने,
कवि पंडित विदमान विचारक;
वीर सुरेमन लाल नगीना,
बलिदानी मतिधीर साहसी;
जुग रचवइया नयां नमूना,
गढ़वइया इतिहास देस के!
जिनका कठिन कथा के
बता सके ले;
सबुर धीरता राखेवाली,
सांत धरतिया माईं चाहे,
पहरेदार परीन पुराना,
सुरुज-चरनमा तारा लोग!
दबलगूढ़ इतिहास कथा के,
राखि किनारे;
जब आगे के डेग बढ़ाईं;
तब देखबि कि;
कविवर संत सुधरमी,
सिद्ध सरहपा-शीभू;
निपुन जायसी,
सुरसतिपुत सुलायक;
दास कबीर भगत निरगुनिया,
पलटू धरमदास धरनी आ-
दरिया भीखा बूला साहब,
एही भोजपुरी धरती क;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाल नगीना रहलन!
एहिजे गाधिपुरी का पांजर,
देवा गांव निपुन में;
जुझउतिया-बाभन का कुल में,
जनम भइल सुभ;
त्यागी-संत-महरसी,
सामी सहजानंद सहज चित;
धरमाचारज जन-नेता कऽ,
जे कि रहलन-
संसकीरित भासा कऽ,
सफल महापंडित गुनवान!
आजादी का महासमर कऽ,
करमवीर जन-नायक;
सेनापति सरदार!
अगुवा निपुन जगावे वाला,
सभ किसान-लोगन के!
जिनका देस भगति-आतम-बल,
त्याग-लगन-सेवा आ-
पुरुसारथ-तप-करम-जोग कऽ;
लोहा मनलन;
सभे सुराजी सेना-नायक,
धरमधुरंधर गांधी बाबा
वीर सुभास जवाहिरलाल
भोजपुरी भासा का,
सहज सुगंधित मधुवन;
आजमगढ़ के,
कइसे भूलि सकीला रउरा;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहवां फूल निराला;
परिजात हरिचंदन अइसन,
उगलन राहुल बाबा
गावँ कनइला भीतर!
राहुल जी का,
हिन्दी-भोजपुरी सेवा कऽ;
जानकार के नइखे?
चललि कलमियां उनकर,
बहुमत जनता का हित;
सहज-शांति सुख खातिर?
देस विदेस नगर गावँन में,
सगरे उनका;
पुरुसारथ तप तेज ग्यान कऽ,
चटक जोति जा पहुँचलि;
डहरि देखवलसि,
भूललि भटकलि बेचारी जनता के!
मतलब मोट हमार कहे कऽ,
कि हमनीं का;
भोजपुरी-भासा में
बाटे बहुत ग्यान गुन;
नगद बीरता भारी?
एकरा के दबाइके,
राखल जाइ सके ना?
हमरा पासे
गति-जीवन मरजादा
बाटे पोढ़ कलमियां,
लाठी भाला;

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोली आ तरुवारि?
हिरदय बाटे परशुराम कऽ;
परतिग्या कौशिक कऽ?
शेरशाह कऽ पुरुसारथ शुभ,
शानी तेगा कुवर सिंह कऽ?
बाकी त हम,
बउध देव कऽ चेला;
सेवक गांधी जी कऽ,
लड़बि सांति से सज से;
अपना प्रिय हक खातिर,
जब ले ओके पाइबि नाहीं!
हे पंडित परधान!
विदमानन में सुघर सुमेरू;
प्रिय सुनीति जी,
सवतुक नेति चलायीं?
भोजपुरी-भासा के,
मानीं जानीं आपन;
देई ओकर,
जायज हक-पद;
करीं मान-मरजादा?
दूसर विनय करत बानीं हम,
पंडित राज-मांचवे-
परभाकर-मतिमान गुनी से,
दया नजरिया फेरे खातिर?
अउरी आगे,
बलिया-सांति निकेतन,
चड़ीगढ़-काशी का;
निपुन जोतिसी पंडित,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूइ वेद का पदवी वाला;
सिरि परसाद हजारी जी से;
हथजोरी वा इहे हमार;
देई हमरा,
भासा के मरजादा!
एतने नाहीं,
अपना बुढ़वा पंडित;
खोजी निपुन सुलायक
सिरि बनारसी दास धीर-थिर,
सवतुक नेति धरम-मतिवाला;
हंस मानसर-वासी;
पानी-दूध अलग करवइया,
चूँगि मरम मोती वेदन के;
चतुरवेदि-पदवी जे पवलन,
उनहूँ से हम अरज करिब कि;
भोजपुरी-भासा के,
मानि तुरत मरजादा देसु!
आखिर में हम अपना,
खास दयालू भाई;
पंडित उदयनरायन जी से,
भाई आसन्यासी,
दूनो सग नाता से;
अरज करवि कि,
ऊहो जोर लगावसु;
पंडित लोगन के समझावसु,
भोजपुरी-भासा का,
हक-पद-गुन सेवा के!

-०-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बौद्धायन
भोजपुरी का सांस्कृतिक महाकाव्य

'बौद्धायन'-लोकभाषा भोजपुरी में दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्व अध्यक्ष राजगुरूमठ, शिवालाघाट, वाराणसी द्वारा लिखित एक अ सांस्कृतिक महाकाव्य है, जो शीघ्र प्रकाशित होने जा रहा है।

अश्वघोष के 'बुद्धचरितम' के अतिरिक्त किसी भी भारतीसु भाषा भगवान बुद्ध के जीवन चरित और उनके दिव्य संदेश के संबंध में मौलिक काव्यग्रन्थ नहीं है। लेखक ने ३१ सर्गों एवं १५०० पृष्ठों में महाकाव्य विशुद्ध मौलिक भोजपुरी में लिखा है। महाकाव्य में समग्रबुद्धचा के अतिरिक्त बुद्धात्तरकाल की सोलह शताब्दियों में बौद्धधर्म एवं संस्कृ की प्रगति का मनोहर विवरण है। आप इसमें लंका, वर्मा, जावा, कंब श्याम, चीन-कोरिया, जापान और मध्य एशिया के कुच बलख बुख तोतन काशगर मंगोलिया तिब्बत आदि देशों में बौद्धसंस्कृति के प्रच प्रसार की रोमांचक कथा पढ़ेंगे।

डॉ० विवेकी राय के विचार

'उस दिन वाराणसी के शिवालाघाट स्थित राजगुरुमठ पर एक दु पतले तेजस्वी सन्यासी से भेंट हुई। उन्होंने अपना ३१ सर्गों का एक विश महाकाव्य दिखया- बौद्धायन और लगभग ४० हजार पंक्तियों के इस अ महाकाव्य को देखकर में दंग रह गया। मुझे ऐसा लगा कि महाकाव साथ-साथ यह बौद्धध्दर्शन विभिन्न दार्शनिक विवाद, विदेशों में बौद्ध का प्रचार, विश्वयात्रियों का विवरण और सबके केन्द्र में महात्मा बु जीवन चरित्रांकन! फिर यह सब हुआ है परिनिष्ठित लोकभाषा भोज में सत्रहजिलों के सात करोड़ लोगों की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा, सिद्धों संतों लोक कवियों की भाषा में। स्वामीविमलानन्द सरस्वती ने दसवर्ष लग सब रोज श्रम करके इस महाकाव्य को सवारा है। ('पुस्तक परिचय से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुवाद

कार्यालय
नेशनल लाइब्रेरी कैम्पस
वेल वेदयर, कलकत्ता-२७
फोन न०-४५-५३१९

निवास- "सुधर्मा"
१६, हिन्दुस्तान पार्क, कलकत्ता-२९
फोन०- ४६-१९२१.

सुनीति कुमार चटर्जी
नेशनल प्रोफेसर आफ इण्डिया
इन ह्यूमनिटीज

श्री दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती
अध्यक्ष राजगुरू मठ
शिवालाघाट, वाराणसी (यू०पी०)

पूज्य स्वामीजी,

मुझे आपकी लम्बी भोजपुरी कविता के साथ दिनांक ८-१०-७१ का पत्र मिला जो 'खुला पत्र' के रूप में मुझे सम्बोधित किया गया था। आपने मुझे भोजपुरी को स्वतन्त्र साहित्य के रूप में स्वीकार करने के लिये आग्रह किया है। आपकी कविता में जो बहुत ही सुन्दर है भोजपुरी क्षेत्र की संस्कृति का सर्वेक्षण है। मैं आपको इसके लिए धन्यवाद देता हूँ। किन्तु जैसा कि मैंने आपसे पहले कहा है, मेरा इस सम्बन्ध में कोई हाथ नहीं है, इसका निर्णय तो भोजपुरी के भाषाविदों की विशेष समिति द्वारा होगा और जब इस समिति की बैठक होगी इसमें डाक्टर उदयनारायण तिवारी जैसे भोजपुरी के विख्यात विद्वान रहेंगे। आपको संसद के माध्यम से बाहर से प्रयत्न करना चाहिये। हमारी समिति भोजपुरी की स्वतन्त्र भाषा के रूप में संस्तुति प्रदान कर सकती है किन्तु यह सरकार पर निर्भर करता है कि वह हमलोगों के इस प्रस्ताव को साकार करने के लिये उपाय और साधन दे। मैंने इस सम्बन्ध में समस्त पत्र अपने सचिव डा० पी० माचवे को भेज दिया है जो आपको इसके आगे जो सूचना चाहेंगे देंगे।

अपनी सारी शुभकामनाओं के साथ और अंग्रेजी में लिखने के लिये क्षमा याचना केसाथ क्योंकि मैं अत्यन्त व्यस्त हूँ और अंग्रेजी में पत्र बोलकर लिखवाने और टाइप कराने में मेरे लिये सुविधाजनक है।

आपका विश्वस्त

सुनीति कुमार चटर्जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जवाब

Residence:
Sudharma
16 Hindusthan Park
Calcutta p-28

Office:
National Library Camp
Belvedere, Calcutta-27
Phone: 455319

SUNITI KUMAR CHATTERJI
NATIONAL, PROFESSOR OF INDIA
IN HUMANITIES

Sri Dandiswami Vimalananda Saraswati
Adhyaksha, Rajguru Math
Shiwala Ghat, Varanasi- (UP)

Revered Swamiji,

I have received your letter to me dated 8.10 together with your long poem in Bhojpuri, which was a addressed to me as an 'Open Letter'. In these you have pres for the acceptance of Bhojpuri as an independent liter language, and in your poem, which is very fine, you have gi a survey of the culture of Bhojpuri area. I thank you very m for all this. But as I have already mentioned to you. I have hand in the matter. This will be decided by the Spe Committee of Linguistic scholars on Bhojpuri, and when meeting is held eminent scholars of Bhojpuri like Dr. U Narayan Tiwari will be there. You should try from outsi through the Parliament. Out Committee may recomm Bhojpuri as an independent language, but is lies with Government of India to supply us with the ways as mean make the proposal work. I have sent all the papers in t connection to our Secretary, Dr. P. Machwe, who will g you any further information you want.

With all my good wishes and apologies for writing reply in English, as I am terribly busy and it is convenien dictate my letter and have it typed in English.

Yours Sincer

Sd. Suniti Kumar Chatt

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

जनवरी, १९९२

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राउर चिट्ठी मिलल

प्रो० पुष्कर चंदरवाकर*

चंदरवा, द्वारा—जालीला
जिला अहमदाबाद, गुजरा
२०-९-९१

प्रिय सम्पादक श्री,

मैं आपकी पत्रिका नियमित रूप से पठता हुं। मैं आपकी पत्रिका भोजपुरी भाषा का परिचय में रहेता हुं। ओर आपकी गतिविधियां से प्रसन्न होता हुं।

आपकी पत्रिका में ब्होत अच्छी कहानियां प्रगट होती है। ओर आपका आप बहुत गजल भी छपते है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की काव्य गोष्ठि ब्होत शायरो ने गजल ललकारा था। आजकल गजल लिखने की फैशन हो रही है। क्या भोजपुरी में भी यह हालत है? Shall we not strive for serious as Dr. Tagore or W.B. Yeats did? Give some serious poems in Patrika.

With love & respect,

yours sincerely
पुष्कर चंदरवाकर

* प्रो० पुष्कर चंदरवाकर गुजराती के प्रख्यात साहित्यकार हवे। गुजराती लोक-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् हवे। गुजराती में उनकर अनेक उपन्यास, कहानी आ एकांकी प्रकाशित बा। छोटानागपुर (बिहार) के आदिवासी लोग के जीवन पर आधारित उनकर गुजराती उपन्यास 'शोणित सींची वसुन्धरा' भारतीय साहित्य में उनकर विशिष्ट अवदान का रूप में समादृत बा। प्रो० चन्दरवाकर कुछ महीना पहिले भोजपुरी लोक-साहित्य के विशिष्ट विद्वान आ एह सम्मेलन के भूतपूर्व अध्यक्ष पं० गणेश चौबे से मिले उनका घरे (बेतिया, पूर्वी चम्पारन, बिहार) आइल रहले। चौबे जी अपना चिट्ठी में श्री चन्दरवाकर के ई कथन सूचित कइले बानीं कि 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' में प्रकाशित कहानी सब उच्च स्तर के बा, जवना से हमरा गुजराती में कहानी लिखे प्लाट मिल जाला।

—सम्पादक

□

(शेष पृष्ठ २२ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

[अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका]

जनवरी १९९२

परामर्श-मण्डल

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय : श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय
पं० गणेश चौबे : आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र

मुख्य संरक्षक

श्री सत्यनारायण सिंह

संरक्षक मंडल

पाण्डेय कपिल : श्री नगेन्द्र प्रसाद सिंह : प्रो० ब्रजकिशोर :
डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' : आचार्य विश्वनाथ सिंह :
श्री कृष्णानन्द कृष्ण : डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' :
श्री करुणानिधान केशव : श्रीमती शैल वर्मा : डॉ० बी० एन० सिंह :
डॉ० प्रभुनाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र : श्री जगन्नाथ : रंगश्री
(साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान) बोकारो : श्री विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव :
डा० शत्रुघ्न सिंह : भोजपुरी संस्थान, पटना : अ० भा० भो० सा० स० :
डॉ० वसन्त कुमार : श्री जनार्दन प्रसाद : श्री आनन्द सन्धिदूत :
श्री शत्रुघ्न सिंह : श्री जगदीश सहाय 'असीम' : डॉ० शम्भुशरण

वित्त-सहयोगी

श्री सत्यनारायण सिंह : स्वर्गीय यज्ञानन्द लाल का स्मृति में डॉ. शम्भुशरण

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' : डॉ० शम्भुशरण
नगेन्द्र प्रसाद सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण : विपिन बिहारी चौधरी
भगवती प्रसाद द्विवेदी : पशुपति नाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र

दाम—एक अंक के तीन रुपया/साल-भर के तीस रुपया
सम्मेलन-सदस्य खातिर साल-भर के रियायती दाम बीस रुपया

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

इन्द्रपुरी, पटना-८०००२३

(दूरभाष : २६११३४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथनी सम्पादक के

राधामोहन 'राधेश'

भोजपुरी के साहित्यिक जगत के जुझारू व्यक्तित्व राधामोहन 'राधे के पिछला २ दिसम्बर १९९१ के स्वर्गवास हो गइल। राधेश जी ओह सभी लोगन में रहले, जे भोजपुरी खातिर आपन जिनगी लगा दिहल आ सब लुटा दिहल। उनका निधन के भोजपुरी जगत् बहुत दिन ले महसूस करी रही।

बिहार के सारन जिला में, एकमा का लगे 'नचाप' नाँव के गाँव में सामान्य गृहस्थ परिवार मे राधेश जी के जनम भइल रहे। बचपने से उ साहित्यिक सक्रियता में रुचि रहे लागल। छात्र-जीवन का बाद ऊ शिक्षक भइले; आ अपना गाँव में कइएक संस्था अपना साहित्यिक-सामाजिक-सांस्कृतिक सक्रियता खातिर बनवले। तब उनकर कार्यक्षेत्र भोजपुरी ना, हिन्दी। एगो संस्था ऊ नाटक के बनवले रहले, जवना का तत्वावधान में ऊ आ अपना गाँवे नाटक खेले के आयोजन करस। एगो संस्था युवक लोगन के विवाद आ भाषण के रहे जवना का माध्यम से ऊ गाँव-जवार के छात्रन वाद-विवाद प्रतियोगिता करावस। अपना गाँव के साहित्य-परिषद् के त ऊ अक्सर करस। एगो पुस्तकालयो ऊ खोलले रहले।

अपना गाँव 'नचाप' से ऊ 'ग्राम्य जीवन' नाम के एगो हिन्दी मा प्रकाशित कइले रहले। ई सन् १९५१-५२ के बात ह। शुरू-शुरू में एह पत्रिका के सम्पादक स्वर्गीय पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह रहीं, फेर स्वर्गीय शिव सिंह श्रीमन्त एकर सम्पादक भइले; आ बाद में खुद राधेश जी एकर सम्पादन करे लगले। नियमितता त एह पत्रिका में ना रहे, बाकिर साल में दु अंक निकले, आ ई सिलसिला कई एक बरिस ले चलल। ई सब १९६० के उनकर सक्रियता रहे, जवना का माध्यम से ऊ हिन्दी-सेवा से जुड़ल रहे।

बाद में, जब भोजपुरी के लहर उठल त ऊ राधेशो जी के प्रभावित कइलस; आ ऊ भोजपुरी का काम में धधा के पड़ गइले। शिक्षक पद से त्यागपत्र देके ऊ भोजपुरी के प्रकाशन के काम करेके ठनले। बाकिर एह खातिर त पूँजी के जरूरत रहे। आपन पुश्तैनी खेत-बारी बेच के, खड़ा कइले आ ओकरा से भोजपुरी प्रकाशन के काम करेके योजना बनल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2
एह काम खातिर ऊ आपन कार्यक्षेत्र वाराणसी के बनवले। सन् १९६८ के आसपास ऊ वाराणसी में 'भोजपुरी साहित्य मन्दिर' नामक प्रकाशन—संस्था बनवले। प्रकाशन खातिर आपन प्रेस बइठवले। आ धड़ल्ला से प्रकाशन का काम में जुट गइले। कईएक भोजपुरी लेखकन के किताब उनका प्रकाशन के प्रकाशित भइल। प्रो० सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' के नाटक 'माटी के दिया बीव के बाती' उनके प्रकाशन से प्रकाशित भइल रहे।

पाण्डुलिपियन के अभाव भइला पर ऊ कइएक किताब खुदे सम्पादित कइले, जवना के प्रकाशन उनका संस्था में भइल। फेर, ऊ खुदे लेखक का रूप में भोजपुरी में गद्य-पद्य में रचना कइले—कविता, कहानी, निबन्ध, उपन्यास हर विधा में उनकर कलम चलल आ उनकर कई एक मौलिक किताब प्रकाश में आइल।

राधेश जी के भोजपुरी में उल्लेखनीय अवदान बा 'भोजपुरी जनपद' नामक मासिक पत्र के सम्पादन आ प्रकाशन। एकर प्रकाशन ऊ सन् १९६८ में शुरू कइले, आ कई बरिस ले एकर प्रकाशन, अक्सर नियमित रूप से, करत गइले। 'भोजपुरी जनपद' के प्रेमकथा-विशेषांक अपना ढंग के अनूठा विशेषांक रहे, जवना के राधेश जी के उल्लेखनीय अवदान मानल जाई।

प्रकाशन के खर्चीला काम के चलावत रहल, आगे चलके बाधित हो लागल; त अपना प्रकाशन-योजना के वित्त-पोषण खातिर राधेश जी आपन बाँचल-खोंचल जायदाद भी समय-समय पर बेंचे लगले; आ जब ऊहो सेंध गइल त कर्जा-पइँचा भी एह काम खातिर काफी कइले। नतीजा ई भइल कि उनकर प्रकाशन बइठ गइल, 'भोजपुरी जनपद' बंद हो गइल, प्रेस बिका गइल आ अन्ततः उनका वाराणसी छोड़ के पड़ गइले।

फेर कुछ सम्हर के, ऊ छपरा के आपन कार्यक्षेत्र बनवले आ 'पहरुआ' नाम के साप्ताहिक पत्र सम्पादित-प्रकाशित कइले। बाकिर कुछ अंक का बाद, ओकरा के चलावत रहल संभव ना भइल, आ 'पहरुआ' बन्द हो गइल।

ओकरा बादो, ऊ कई झोंक लगवले सम्हरे खातिर—राँची में, झरिया में, आ जाने कहाँ-कहाँ। अन्त में सगरो से हार-थाक के ऊ एगो छोटहने प्रेस छपरा में लगवले, आ 'पहरुआ' के एक अंक छपल। बाकिर वार्धक्यजनित

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्वस्थता आ साधन के अभाव उनका के सम्हरे ना दिहलस। आ अन्त में, ऊ अपना गावें 'नचाप' लवट गइले जहाँ, उनकर स्वर्गवास २ दिसम्बर १९९१ के हो गइल।

भोजपुरी में लिखल राधेश जी के मौलिक किताबन में उल्लेखनीय बा—'मनबसिया' (कविता), 'भोजपुरी बिगुल' (कविता), 'गुमस' (कविता), 'स्वर के पाँख' (कविता), 'मेनुर के लाज' (उपन्यास), 'जनम भुई' (उपन्यास), 'कचोट' (कहानी), 'धरती के अँचरा' (निबन्ध)। उनका सम्पादित किताबन में प्रमुख बा—'गाँधी गाथा', 'जीरादेई से सदाकत आश्रम तक' आ 'भोजपुरी प्रेमकथा'।

भोजपुरी के उनकर सुदीर्घ आ संघर्षशील सेवा खातिर उनका अपना जवार के भोजपुरी संस्था 'माँझी-एकमा भोजपुरी परिषद्, सन् १९९० में उनकर अभिनन्दन कइले रहे। राधेश जी अपना मृत्यु से कुछ महीना पहिले २१ अक्तूबर १९९१ के सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के उनइसवें अधिवेशन के अध्यक्षता कइले रहले। उनकर स्वास्थ्य दिनोंदिन गिरते जा गइल। अनुमानतः लगभग बहत्तर-तिहत्तर बरिस का उमिर में उनकर देहान्त भइल ह। उनका दिवंगत आत्मा के भोजपुरी जगत के आत्मिक श्रद्धांजलि!

—पाण्डेय कवि

नया साल खातिर हार्दिक शुभकामना

१९९२ के नया साल में 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' अपना सब लेखक आ पाठक लोगन के हार्दिक शुभकामना करत बा। भोजपुरी खातिर ई साल चुनौतियन से भरल बा—संगठन का दिसाई, सांगठनिक एकजुटता का दिसाई, प्रकाशन का दिसाई आ लेखन का दिसाई। एह सब स्तरन पर अनुकूलता भइला बिना, भोजपुरी के आन्दोलन जोर ना पकड़ सकी। 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' उमेद करत बा कि एह नया साल में हमनी के स्तर पर सक्रिय होके कुछ अइसन उपलब्धि जरूर करब, जवना से बुझाय कि हमनी का कुछ रास्ता जरूर तय कइले बानीं।

—पाण्डेय कवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

—रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष'

हवे पत्थर के सँउसे शहर, देख लीं।
इहाँ पाइब ना सीसा के घर, देख लीं॥
सँउसे जिनिगी तबाही के घर हो गइल।
एगो कनखी के कतना असर, देख लीं।
काल्हु महुआ मतिन धूप चुअल रहे।
आज लागत बा कइसन जहर, देख लीं।
खून के एगो कतरा गिरल ना कतो।
कत्ल अइसन ऊ कइलस नजर, देख लीं।
नाइ बूड़ल, जहाँ पर ना पानी रहे।
भोर कइसन ले आइल लहर, देख लीं।
बात 'पीयूष' मँझधार के मत करीं।
रउरा गोड़े तर बड़ए भँवर, देख लीं।

शंकर भवन, सिविल लाइन, बक्सर—८०२१०१, बिहार

सुखार

—प्रो० कुमार विरल

बैला ताकत बाटे एगो मुहँ दोसरा के
डोभी सूखल जाता गते - गते टोपरा के
मैना बोलल बहुत रोके
कुछो पइब ना अब बोके
पानी सूखल जाता गते - गते पोखरा के
सगरो नाचत बा सुखार
सूरुज भाँजेला लुकार
जरत बाटे घास - पात झोंकरा के
पानी - पानी के पुकार
रोए सभे पुका फार
कवन सोखत जात सब रस अँतरा के
सभे मुँह निहारे ऊपरे
मउअत मुँह फारके डकरे
सभे दोष बतावे हाथ उठा के ओकरा के

अध्यक्ष भोजपुरी विभाग, श्यामनंदन सहाय महाविद्यालय मुजफ्फरपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sahayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिहुकी

—डॉ० वसन्त कुमार

नइखे बुझात
हम काहे चिहुक गइलीं हं
जानू अचके
तिरमिरी लाग गइल होखे
ना कौनो बात ना चीत
ना कौनो बदलाव
ऊहे हम
ऊहे हमार नजर
ऊहे हमार मन
त ई काहे लागल
जइसे मन अमन हो गइल
देह देहातीत
आ नजर आसमान ?
हमरा चिहुकला के सचाई
देखते-देखते
भाफ बन के उड़ गइल
अब ऊहे पुरनका हम
ऊहे दुनिया
आ एकर तमाशा—
बाइस्कोप में
नौ मन के धोबिन

आ जानू का-का !
अबले जौन सोचलीं, समुझलीं
गुनलीं आ लिखलीं
ऊहे ह हमार सचाई ?
का ऊहे ह हमार तसवीर ?
अगर ह
त ई चिहुकी का ह
आ ओकरो पार
जेके तनिको ना देख सकलीं
ऊ अपरूप का ह ?
ई ना देखल
देखलो से नीमन काहे हो गइल
चिहुकला के रंग
हमरा दोसर रंगन पर पसर
टहकार भइल जाता
आ हम चुपचाप
बइठल के बइठले बानी
ओजियें, ओही लेखा, ओही
साइत अबकी बार के चिहुक
हमरो के उड़ा के ले जाव
आ हम हम ना रह जाईं !

☐ आचार्य एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत

—पी० चन्द्रविनोद

तोहार किरिए, कबो कुछुओ ना चहनी ।।
बोअनी आ कटनी, कुटनी आ पिसनी,
कोठिला तोहार भरत, एँड़ी ले घिसनी,
पानी जोगावत, जियत रहनी,
हम कुछुओ ना कहनी ।
तोहार किरिए कबो कुछुओ ना चहनी ।।

भूखे तरेंगन जे दिन में देखाइल,
पिंजड़ा में पंछी के प्रान छपिटाइल;
अइसन डाहल बुझत सहनी,
हम कुछुओ ना कहनी ।
तोहार किरिए, कबो कुछुओ ना चहनी ।।

दानी के भेख धरि आवे कबूतर,
सेवा के नाँव करे मेवा के भुक्खड़,
जड़वा देखा के धरावे टहनी,
हम कुछुओ ना कहनी ।
तोहार किरिए, कबो कुछुओ ना चहनी ।।

होई अँजोर एही असरा में कटनी,
कस्तूरी लेके हम घरे - घरे बँटनी,
मृगतृष्णा के हम देवाल ढहनी,
हम कुछुओ ना कहनी ।
तोहार किरिए, कबो कुछुओ ना चहनी ।।

□ रीडर, मूर्तिकला, ललितकला संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी—२२१००५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शीत के बदरी

—डॉ० तेज नारायण कुशवाहा

भाव जियरा में सलोनी रे बदरिया, उगाव ना
बिन समय के रिमझिमी सुर में कजरिया गाव ना
उगति अपने में फसलिया खेत - खेतन लहलका
देवि, सूरज में उगलि मोहक किरिनियाँ दिखाव ना
मधुवा अरुझाइल पिराइल नयनवां पथरा गइल
सुगति, दुखिया ले उधार तुषार शितिया चुवाव ना
दूर परदेशे कहीं जा बसत अपना गाँव से
मान रे सखि. बात उनका के नगरिया बुलाव ना
फूल लाही लगि झरत रहरी बिना फर के भइल
एह नाता में अये मति बन संवरिया विभाव ना
मीत रे तोरा जिया में जौं कि कोई चाव बा
सजनि रे पंछी युगल एके कगरिया मिलाव ना!

☐ कुलसचिव, विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ,
गांधीनगर, ईशीपुर, भागलपुर—८१३२०६

लौटानी

—रामनिहाल गुंजन

हरल भरल मैदान से
लउटल
अन्धड़ आ तूफान में
चलत लोग
सूरज के रोशनी में
नहाइल
नदी

पेड़
जंगल
आ पहाड़ के
पार करत
पहुँच रहल बाड़न
जमीन पर
खाड़ लोगन का बीच

☐ नया शीतलटोला, आरा, बि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

केकरा नाम पर चौक

—डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय

शहर में सन्नाटा पसरल रहे। सड़क पर भाड़ावाला सवारियों ना चलत रहे। दोकान के नाम पर पान-बीड़ी के गुमटी आ चायखाना खुलल त रहे बाकिर गाहके ना रहे। रह-रह के गश्त लगावत पुलिस के जीप सन्नाटा बेधत निकल जात रहे। सड़क पर लउकेवाला लोग के आँखिन में उभरल सवाल आ चेहरा पर जमकल डर, साफ-साफ झलकत रहे। आग के लपट लेखा ई खबर शहर भर में फइल गइल रहे कि होत फजीरे एगो आदमी के गोली मार के हत्या हो गइला पर, पुलिस के निकम्मापन आ जिला प्रशासन के बेचारगी के विरोध में नगर-बंद के ऐलान भइल बा। कुछ लोग के मन में ई सवाल रह-रह के उठत रहे कि आखिर ऊ के ह जेकरा हत्या भइला से नगर बन्द के ऐलान भइल बा आ बन्द एतना सफल बा? जे ई बात जानत रहे कि केकर हत्या भइल बा ऊ अनजान बनल; आगे के हाल जाने खातिर खबर जुटावे में लागल रहे।

दिन भर के बन्द के बाद साँझ के रेक्शा पर बान्हल लाउड-स्पीकर से घूम-घूम के ऐलान होखे लागल—'गरीबन के मसीहा, जुझारू क्रान्तिकारी नेता भाई राजमंगल के लाश 'कमला-चौक' पर जनता के दर्शन खातिर रखल बा। अपने सभन चौक पर पहुँच के अपना नेता के श्रद्धांजलि दीं।' गते-गते कुछ लोग चौक पर बिटोरा गइल आ मंच पर रखल राजमंगल के लाश पर फूल-माला चढ़ावे लागल। कुछ लोग अलगे से श्रद्धांजलि के नजारा देखत रहे। ओजवा तैनात पुलिस अधिकारी आ जवान लोग चारो ओर चउकस नजर रखले रहे। दूर से नजारा देखेवाला कुछ लोग के मन में ई सवाल रह-रह के उठत रहे कि आखिर लाश कब उठी? दाह-संस्कार कब होई? बाकिर केहू ई सवाल करे के साहस ना जुटा पावत रहे। भीड़ में ठाढ़ नौजवान प्रभाकर के ई सवाल एतना झकझोरलस कि ऊ अपना के रोक ना पवलन आ उनकर डेग आगे बढ़ गइल। ऊ मंच के लगे पहुँच के लाश के अगोरिया करेवाला एगो नौजवान से पूछ बइठलन—"दाह-संस्कार कब होई? इनका कवनो सगा-संबन्धी के आवे के इन्तजार होत बा का?" ई सवाल सुनते मुड़ी गड़ले ठाढ़ नौजवान आपन नजर तेजी से ऊपर उठवलस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

आ प्रभाकर के चेहरा पर गौर से देखत कहलस—"काल्ह कवनो बेरा दाह-संस्कार होई। भोर में बड़-बड़ नेता आ मंत्री लोग आई, दाह-संस्कार में शामिल होई।" ई कह के ऊ चिहइला लेखा अलग-बगल देखे लागल। ओकर बात सुन के प्रभाकर तिलमिला गइलन। उनका चेहरा के रंग एक-ब-एक बदल गइल। उनका बुझाइल जइसे केहू अनचितला में उनका करेजा पर घूसा के, एड़ी से उनकर करेजा दरकच देले होखे। ऊ दरद अंगेजत भीड़ के चीरत तेजी से घर के राह धइलन।

रात भर प्रभाकर बिछवना पर से उठ-उठ के अपना कमरा में पायचारी लेखा टहले लागस। उनका कबो-कबो ई बुझाय कि छत उनका देह पर भरर्रा के गिर पड़ी आ ऊ घबड़ा के आंख मूंद लेस। गते-गते आंख खोल के खिड़की से आसमान में टिमटिमात जोन्हिन के एके टके निहारे लागस। जसहीं भोर के पहिलकी किरिन खिड़की से उनका कमरा में झँकलस कि ऊ हड़बड़ा के कमरा से बाहर निकल अइलन। ऊ अपना कड़ुआइल आँखिन पर पानी के छींटा भरलन आ केस पर हाथ फेरत सड़क पर निकल अइलन। शहर में सुगबुगाहट बुझाइल। दोकान-दउरी खोले के तइयारी होत रहे। प्रभाकर अपना भीतर फूटत ज्वालामुखी के ताप अंगेजत, गते-गते नथुनी के चाय के दोकान के ओर बढ़ गइलन। उनका चायखाना के बाहर रखल बेंच पर बइठत लमहर सांस लेलन। ऊ रोज एक फेरा एह बेंच पर आ के बइठलन। चाय पीये लन आ अखबार पढ़ के, अपना जइसन सोच वाला लोग से बहस करेलन आ जब केहू से भेंट ना होला त नथुनिये से देश-दुनिया के हाल खबर बूझ आवेलन। उनका के देखते नथुनी पूछलन—"आज एतना सबेरे कइसे आ गइनीं? लागत बा कि कवनो अझुराहट से भर रात नींन ना आइल ह। कहीं रउरो नेता लोग के अगुआनी त नइखे करे के?" प्रभाकर मुसकात उनका बात के जवाब देलन—"तोहरा चाय के गमक खींच ले आइल ह भाई। रहल बात अझुराहट के, ऊ त हमनी के जिनगी के हिस्सा बन गइल बा....." एतना कह के ऊ सड़क पर आवे जाये वाला लोग के भाव भरल नजर से देखे लगलन। जब उनकर नजर केहूं से मिले त उनका लागे कि ऊ उनका के जानी बिरावत बा। ऊ नजर हटा के नथुनी के ओर देखत कहलन—"हमहूँ नेता लोग के अगुआनी में जायेब जरूर।"

नथुनी मुसकात चूल्हा हांके लगलन आ प्रभाकर गौर से लाल हो कोइला के देखे लगलन। जइसे जइसे ताव बढ़त रहे, उनका भीतर के ताव बढ़त रहे। ऊ चाय पी के उठलन आ कुछ बुदबुदात चौक के ओर बढ़ गइलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अबहीं ऊ चौक से दू सौ गज दूरे रहलन कि लाऊउ-स्पीकर से उनका सुनाइल "भाई सभे जे जहँवाँ बा, शान्ति से अपना जगहा पर खड़ा रहो। अब माननीय नेता लोग मंच पर पधार रहल बा। श्रद्धांजलि के कार्यक्रम तुरन्ते होई आ तब भाई राजमंगल के लाश उठी।" ई सुनते प्रभाकर लमहर-लमहर डेग धरत चौक पर पहुँच गइलन। हजारो लोग उहाँ जमा रहे। सब सड़क जाम रहे। भीड़ एतना रहे कि ओहपर काबू कइले रहे खातिर रह-रह के पुलिस के डंटा भाँजे के पड़त रहे। डंटा भजइला पर भीड़ में भगदड़ मच जाय, कुछ लोग ढेर दूर खेदा जाय बाकिर गते-गते सभे चौक पर पहुँच जाय।

एकाएक भीड शान्त हो गइल। जानल-मानल नेता आ एगो मंत्री मंच पर चल आइल लोग। पुलिस अधिकारी लोग के चौकसी बढ़ गइल। मंच पर बइठल एगो पंडित उठ के खड़ा भइलन आ वैदिक मंत्र आ गीता श्लोक के पाठ क के बइठ गइलन। उनका बइठला के बाद एक-एक क के नेता लोग लाश पर फूल-माला चढ़ावल। आखिरी में मंत्री जी के बारी आइल। मंत्री जी गजरा चढ़ा के माइक पकड़ लेलन आ बोललन—"भाई राजमंगल जुझारू नेता रहलन ह। उनका समाज सेवा आ देश भक्ति के चाहियो के बिसारल ना जा सके। प्रजातंत्र के पहरुआ वीर राजमंगल के हत्या के मतलब बा प्रजातंत्र के हत्या। ई राजनीतिक हत्या ह, पिछला चुनाव में जे उम्मीदवार गुण्डागर्दी के बलबूता पर आ आतंक फइला के वोट लूट के चुनाव जीते के मनसूबा बन्हले रहे, ओकरा के ललकारे आ पानीपत्त करेवाला भाई राजमंगल के हत्या के पीछे ओकरे हाथ बा। अपराधी बच के जाई कहाँ? हत्यारा पकड़ाई आ ओकरा सजा मिली। एतने ना, ढेर नकली नेता लोग के पोल खुली। भगवान उनका आत्मा के शान्ति देस।" ई कहके ऊ जसहीं पलटलन कि एगो नौजवान तेजी से आगे बढ़के उनका कान में कुछ फुसफुसाइल। ऊ फेरू पलट के माइक पर बोललन—"भाई राजमंगल के परिवार के सरकार के ओर से मुआवजा दिआई। उनकर याद अमर करे खातिर एह चौक के नाम अब 'राजमंगल-चौक' रही आ सरकारी खर्चा से एह चौक पर उनकर आदमकद मूर्ति बइठावल जाई।"

ई ऐलान होते भीड़ में कानाफूसी होखे लागल आ कुछ लोग एक दोसरा के मुँह ताके लागल। मंच पर नारा लागे लागल—

'वीर राजमंगल', जिन्दाबाद!'

'पुलिस-प्रशासन', हाय.....हाय!'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'मंत्री महोदय 'जिन्दाबाद !'

नारा लागते रहे कि भीड़ चीरत, पुलिस के घेराबन्दी तूड़त प्रभाकर आंधी लेखा मंच पर पहुँच गइलन। आ माइक पकड़ के गरजलन—"मंत्री जी, इतिहास मत बिगाड़ीं। एह चौक के राजमंगल चौक नाम रखलासे आवे वाली पीढ़ी रउरा सभे के गरिआई, रउरा सभे पर थूकी। लाज-हया छोड़ के राजनीति मत करीं, इतिहास माफ ना करी। ई बात शहर में भला के नइखे जानत कि राजमंगल के हत्या दादागिरी के सिक्का चलावे के लड़ाई में भइल ह। रउरा सभन खातिर वोट लूटे आ रंगदारी टैक्स वसूल के चुनाव खातिर धन देवे के काम राजमंगल करत रहल वाड़न। मुजरिम मवाली के शहीद बना के लोकतंत्र के धज्जी मत उड़ाईं, गुण्डा-राज..... बीचे में उनकर कमीज पीछे से पकड़ के एगो नौजवान उनका के मंच के पर खींच लेलस। चौक पर भगदड़ मच गइल, पुलिस नाकाबंदी करे लागल।

प्रभाकर के घसेटस कुछ लोग एगो गली में घुस गइल बाकिर उनका आवाज दूर ले भागत भीड़ के चहेटत रहल। पुलिस पहरा में लाश उठल मञ्जिल में नेता लोग आगे-आगे रहे आ पाछा-पाछा कुछ आउर लोग।

दोसरा दिन मंत्री आ नेता लोग के राजमंगल के दाह-संस्कार में शामिल भइला के खबर के संगे-संगे प्रभाकर के गायब भइला के खबर छपल रहे।

□ राजनीतिविज्ञान विभाग, गंगा सिंह कालेज, छपरा (बिहार)

□

'भोजपुरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य'

विषय पर

आलेख भेजीं

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के छपरा (बिहार) में होखेवाला बारहवां अधिवेशन में परिचर्चा-सगोष्ठी के विषय बा—'भोजपुरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य'।

जे सुधी साहित्यकार एह परिचर्चा मे भाग लेवे के चाहे ओकरा से निहोरा बा कि एह विषय पर आपन आलेख सम्मेलन-कार्यालय में ३ मार्च १९९२ तक जरूर भेज देवे के कृपा करी।

महामंत्री

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

इन्द्रपुरी, पटना-२३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकांकी

लिखंत

—श्री जगन्नाथ

(लाटरी वाला गाड़ी खड़ा क के लाटरी का टिकटन के परचार कर रहल बा। गाड़ी का चारो ओर लोग चूँटा-माटा अस लूझल बा। रामदहिन आ लखन लोगन का मजमा में एक ओर ठाढ़ बा लोग।)

लाटरी वाला — भाई सभे, बहिन सभे, सुनीं सभे खुसखबरी एगो गौर से।

आ गइलि लखपती बनाने वाली परचार गाड़ी सबोर के। आईं, टिकट लीं लाटरी के। केरल के लीं, यू० पी० के लीं, पंजाब के लीं, सिक्किम भा नागालैंड—जवना राज्य के मन होखे, लीं। यू० पी० के त फाइनल निकासी काल्हुए बा। बस पांचे गो टिकट बांचल बा, भाई सभे। आईं, जल्दी करीं। मोका चुकला पर जिनगी भर अफ़सोसे के परी।

रामदहिन — का हो लखन, का बिचार बा? लिआई लाटरी के टिकट?

लखन — तोहार का बिचार बा?

रामदहिन — आरे, हमरा त लेवहीं के बा हो। तूँ आपन त कह।

लखन — बाकिर ए मरदे, ई त जुए नू खेलल भइल हो। मिलल त मिलल, नाहीं त एगो रुपया सोगहग गइल।

रामदहिन — तोहरा कपारे त दलिद्दर चढ़ल रहेला। भिखार हो जइब का एगो रुपया का गइला से?

लाटरी वाला — मीन-मेख मत निकालीं, भाई सभे। सुभ काम में ढेर सोचे-बिचारे के ना। के जानता काल्ह के लखपती होखे वाला बा? बाकिर केहू होखो होई त ऊहे जे लाटरी के टिकट ली भा लेले बा।

रामदहिन — ए लखन, हम त जातानी हो। टिकट कहीं बेंचा गइल त ममिले गड़बड़ा जाई।

लखन — चल, हमहूँ पाछा ले आवते बानीं।

(दूनों जना लाटरीवाला के पँजरा जाताड़न आ टिकट लेताड़न)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामदहिन — ए लखन, कुल्हि काम त सँपराइये लिहलीं जा। कर-कचहरी के कार-टहल फरिआये गइल। सउदा-सुलुफ होइये गइल। अब का कइल जाई ?

लखन — कइल का जाई। चल कतो बइठ के तनी सुस्ताई। दिनभर त मकवड़ा मारत-मारत बीतल। गोड़ निठाहे गइल बा। आ जो सुस्ताये के मन ना होखे त चल, लगवहिएँ गाँवें लवट चलीं जा।

रामदहिन — मरदे ले के, गाँवे त चलहीं के बा। कवनो छवनी थोरे छावे के बा, बाकिर अतना हड़बड़ा काहें गइलऽ ?

लखन — हड़बड़ाइल नइखीं हो। हड़बड़ाइब काहे ?

रामदहिन — त चल ना एगो काम अउर क लीं जा। तनी हाथो के लोहल जाउ। पंडित जी छाता ओढ़ले बइठल बाड़न।

लखन — हाथ का देखइब हो। हाथ के चिचिरी ईहे नू कही कि जिन्दगी भर जांगर ठंठावे के करम में लिखाइल बा।

रामदहिन — तू मरदवा लेके, हर बात के निकिआवहीं लागेलऽ। उठबऽ कि उठाईं तोहरा के।

लखन — चल, जवन मन में आवे कर। एहीं से नू कहत रहनी कि गाँवे लवट चलीं जा। जबले रहब, कुछ खुर-खार रहब।

(दूनों जना दू-चार डेग चल के जोतिसी जी के पास पहुंचे। जोतिसी जी रानू के कवनो उपन्यास पढ़े में लवलीन बाड़न। धूप से खातिर एगो डंटा गाड़ के ऊ ओह में छाता बान्ह देले बाड़न। एकरा पट्टी से ऊ चउकोर चहरदेवारी बनवले बाड़न जेकरा भीतर जोतिस के खल के औजार जइसे छोट-छोट किताब छपल सगुन कार्ड आ हस्तरेखा फोटो आदि सरिहार के राखल गइल बा। चहरदेवारी का भीतर एगो बा जवना में तोताराम बाड़न।)

रामदहिन — पाव लागीं, पंडित जी।

लखन — हमहूँ गोड़ लागतानी, बाबा।

पंडित जी — (अकचकाइल) खुस रहीं जजमान। जुग-जुग जीहीं आरे, अस्थिराह बइठीं सभे। कहाँ घर ह अपने सभे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामदहिन — घर त पंडित जी, इहाँ से दू कोस के रास्ता बा।

पंडित जी — कवन गाँव जी ?

रामदहिन — बिनिकपुर, ए बाबा।

पंडित जी — आरे लीं तब त रउवा सभे हितइये के भइलीं जी। शंभू मिसिर का लइका के सार का बेटी से हमरा छोह भाई के सादी भइल बा।

रामदहिन — (हँसत) अच्छा तब त हमनीं का नीमने जगे पहुँचल बानीं जा। रउवा त घरे के अदिमी निकललीं, बाबा।

पंडित जी — सोरह आना सही जजमान। कहीं सभे अपने सभे के हाथ देखीं कि माथ देखीं कि सुग्गा से सगुन निकलवाईं ?

रामदहिन — (चिहाइल) रउवा हाथ आ माथ दूनों देखीला ?

पंडित जी — जजमान एही काम में उमिर सिरा रहल बा।

लखन — आरे बाबा जोतिस के कतना किताब घोंखले होइहन ठेकान बा ? देखल ह नू, हमनी का अइलीं हँ जा त कतना मोट किताब के पढ़े में लवलीन रहलन हँ।

रामदहिन — हँ हो ठीके कहताड़। अच्छा ए पंडित जी हितई-नतई अपना जगे बा। कइसे-कइसे रेट रखले बानीं।

पंडित जी — आरे जवन बुझाई तवन दे देत्र सभे, जजमान। रेट कवन महँगा बा। हाथ के एक रुपया माथ दू रुपया, आ सुग्गा से से सगुन निकलववला पर दूनों का बीच के डेढ़ रुपया; बाकिर ई खाली भविष्य के रेट ह। भूत, वर्त्तमान आ भविष्य तीनों के समिलात देखवला पर रेट तिगुना हो जाई।

रामदहिन — वर्त्तमान त सोझे बा पंडित जी आ भूत-दूत पर पइसा खरच गोंइठा में घीव सुखावल बा। अपने का खाली भविष्य के उचारल जाउ।

पंडित जी — अच्छा, बाबू साहेब, जवन राउर मरजी। पूछ लीहल हमार धरम ह।

(पंडित जी रामदहिन के दहिना हाथ के तरहत्थी अपना हाथ में ले ताड़न आ तरहत्थी के एने-ओने फइलार के गौर से निहार ताड़न।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडित जी — वाह ! वाह !! ई त तरहत्थी के चिचिरी चिचिया-चि
के कह रहल बाड़ीसन कि जजमान का घरे लछिमी जी
अपार किरिपा होखे जा रहल बा। जस वाला हाथ वा
जजमान। अरदुआइ त पूरे सइ बरिस के बा।
जीअब—चैन से जीअब, सान से जीअब।

रामदहिन — (मने-मने खुस भइल) ए पंडित जी, ई त भइल हाथ के
तनी माथो के जाँचल जाई ?

पंडित जी — काहें ना जजमान। ई का कहलीं ? इहे कुल्हि कहे
नू हम आसन डिसा के बइठल बानीं आ ऊहो रउवा
जोतिस के परेमी लोगन से भेंटे कहाँ होला ? रउवे
जजमान लोगन से त फुटपाथी जोतिस अबले जी
बा। राउर बात एकदम बाजिब बा। हाथ का सरे
माथो देखावल जरूरी होला। हाथ के चिचिरी जवना
पर चुपा जालीसन माथ के चिचिरी ओही पर चिकरे
लीसन। हँ। त तनी पँजरा आईं। माथ पर के पगरी
दीं। लिलार के लखार होखे दीं।

(लिलार के एक-दू मिनट ठीक से निरेख के) जय जजमान के।
के चिचिरी ऊहे ऊचार रहल बाड़ी सन जवन हाथ के चिचिरी। जजमा
का अचके अनचितले अफरात धन भेंटाये के जोग लिखल बा।

रामदहिन — ए बाबा, एगो बात कहीं।

पंडित जी — एगो का सइगो कहीं जजमान।

रामदहिन — ए बाबा अब रउवा से का छिपाई। अनासे मन में आइ
लाटरी के एगो टिकट कीन लिहलीं ह। तनी देखीं ना
तंग का कहता।

पंडित जी — अच्छा त जजमान, हाथ-माथ के चिचिरी परगट कह
बाड़ीसन कि भकूत धन के आगम बा। आईं तनी
महाराज से कहल जाउ कि रउरा भविष्य के भेद खोल

(पंडित जी पिंजड़ा खोल के सुग्गा के निकालताड़न। सुग्गा एं
डुगुरता आ चीं-चीं करता)

पंडित जी — महटिआईं मत ए सुग्गा महाराज। जजमान राउर ठो
से मढ़वइहन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(पंडित जी कार्ड के एगो पैकेट सुग्गा के सोझा करताड़न। सुग्गा एगो कार्ड निकालता। पंडित जी ओह कार्ड के हाथ में लेके पढ़ताड़न)।

पंडित जी — जजमान काम सिद्ध होई, कवनो अनेसा मत जानब।

रामदहिन — ए लखन हमार त फरिया गइल हो। अब तूँहूँ देखवा ल?

लखन — हँ ए बाबा इची हमरो देख लीं।

पंडित जी — का देखीं जजमान। हाथ कि माथ।

लखन — जवन रामदहिन के देखलीं हँ तवन हमरो देखीं।

पंडित जी — बूझ गइलीं, जजमान। रउरो जोतिस के अगाध प्रेमी बानीं। एकदम निफिकिर रहीं। खूब सज से राउरो हाथ-माथ देखब। (पंडित जी लखन के हाथ आ माथ देखताड़न)

पंडित जी — बाह! आज एक से एक हाथ-माथ से भेंट हो रहल बा! लखन जजमान राउर त जवाबे नइखे। ठीके कहल गइल बा—चाकर आ ऊँच लिलार वाला बड़ भागमान होला। जजमान का मिथार अस लिलार के चिचिरिन के इहे बाटे उचार कि जजमान का घरे बरिसी धन-दउलत अपार। सब गरह कट चुकल बा। दुख के हिन बिला चुकल बा। चानी काटे के दिन आ रहल बा। चानी कटले ना कटाई, जजमान। खरहरा से रुपया बटोरब अपने का।

लखन — (खूब खुस भइल) ए बाबा, हमहूँ लाटरी के दूगो टिकट लेले बानीं। तनी एहनिओ के देखीं ना।

पंडित जी — आरे, लखन जजमान घबड़ा काहें गइलीं। सुग्गा जी रउरा सेवा खातिर हाजिर बाड़न। हँ त ए सुग्गा जी, तनी लखन जी के लिखत बताईं।

(सुग्गा एगो कार्ड निकालता। पंडित जी कार्ड के पढ़े लागताड़न।)

लखन — (अधीर भइल) ए बाबा, चुपा काहें गइलीं। हाली दे कहीं ना का लिखल बा।

पंडित जी — जजमान, आ ले ई पत्ती केहू के भाग में ना निकलल रहल ह। साँच पूछीं त हम चिहा गइल बानीं।

लखन — कइसन पाप ए दादा? ई का कहताड़?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामदहिन — बन मत लखन ना त ठीक ना होई।

लखन — सनक गइल का मरदे तू। काहें खिसिया के बनूक अ
बाड़?

रामदहिन — अच्छा त तू हमरा के सनकी बूझे लगल। जिनिगी
हमरे राइ-सलाह से चलल आ हमरे के सनकी समुझ लीह
आरे गुरु हईं लखन तोहार। जानेल कि ना— गुरु से
साहु से चोरी, कि होई निरधन कि होई कोढ़ी।

लखन — त का कपट कइले बानीं साफ-साफ काहें नइख कहत।
के घुरिचिअवला से कवनो फायदा बा?

रामदहिन — साफ-साफ कहतानी, तोहार नियत खाम हो गइल
तू इहे नू चाहताड़ कि हम गुरु गुरे रहं जाई आ तू
चीनी हो जा। हमरा लाटरी के एगो टिकट लेत देख
त तू दूगो ले लेल ह।

लखन — त एमे कपट का भइल हो राम दहिन।

रामदहिन — देख बुरबक मत बनाव। हमरे दीहल अकिल से हमर
चित करे के जनि सोच। हम खूब बूझतानीं तोहरा मन
का बा। तू इहे नू चाहताड़ कि हमरा से दोगुना धन तो
मिलो। बाकिर ए लखन, एगो बात बूझ ल। कतनो
उठइब रहब हेंठे हमरा से।

लखन — ए भाई, ई त तोहार नया रूप आज देख रहल बानीं।
जरल बानी तोहरा के देख के जे अइसन अछरंग लगावता
आरे हम त ई सोचलीं ह कि जुआ खेले बइठिये गइल
जइसे एगो रुपया जाई ओइसे दू गो जाउ। एगो नन्हका
माइयो का नांवे ले लिहलीं ह।

रामदिहन — बात मत गढ़। जा बटोर खरहरा से रुपया बाकिर
धियान से सुन ल— ई रुपया तोहरा रसे ना पाई। आ तू
बूझत बाड़ हमरा के। काल्हे तोहरा पर चार किता मोक
ना ठोकलीं त हमार नांव दहिन ना। बेसी ना, एकाधे महीना
में टेकुआ अस सोझ हो जइब।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडित जी — आरे जजमान, ई झूठो के हउँजार का नघलीं सभे। सभ केहू आपन-आपन करम लेके आइल बा। हमार दान-दछिना दीहीं सभे, खुसी-खुसीघरे जाईं सभे।

रामदहिन — ए पंडित जी दान-दछिना त मिलवे करी रउवा के, बाकिर अबहीं ना हमहूँ जाके लाटरी के एगो टिकट ले लीं आ सुग्गा से जाँच करा लीं तब।

पंडित जी — दान-दछिना दे दीं जजमान आ फेरू टिकट लेके आईं। सेतिहे देख देब।

रामदहिन — ए बाबा, रउवा त समझकर भाग देखतानी। हमार कुलिह चिचिरी रउवा पढ़ गइली तबो ना रउवा बुझाइल कि हम विसवासी आदमी बानी कि ना। दान-दछिना रउरा कब्भ के होई त जाई कहँवा। जबले हम टिकट लेके आवतानी तबले रउवा जोतिस से हिसाब लगाईं कि दान-दछिना रउरा भाग के बा कि ना।

पंडित जी — (लखन का ओर मुड़ी क के) ए लखन जजमान राउर त सभ काम फिटे बा। रउवा त कम से कम दछिना दे दीं।

लखन — ए बाबा हमरे के नेवर बूझतानी? कवन चीज में ऊ हमरा से सेसर बाड़न? ऊ डाढ़-डाढ़ त हम पात-पात। ऊ दू गो टिकट लीहन त हम चार गो लेब। आ हाथ त पहिले ऊहे देखवले बाड़न। एह से दछिना पहिले उनके देबे के चाही।

(लखनो उठ के चल दे ताड़न। पंडित जी कपारे हाथ ध ले ताड़न। परदा गिरता।)

☐ सहायक महाप्रबन्धक, दूरसंचार (प्रशासन) बिहार, पटना

☐

झोला मिलल बा

श्री हजारी प्रसाद कुशवाहा, द्वारा—श्री महादेव भगत, ग्राम—गेहुँवाँ, पो०—जामोबाजार, जिला—सीवान (बिहार) सूचित कइले बाड़े कि उनका गाँव गेहुँवाँ में, जामो-अफराद रोड पर गिरल एगो झोला मिलल बा, जवना में कुछ अमूल्य कागज-पत्तर, पत्रिका आ संगीत के डायरी बाटे। जेकर होखे, उनका से सम्पर्क करे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(पृष्ठ २ के शेष)

परिपूर्णानन्द वर्म्मा
कार्यकारी उपाध्यक्ष

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भ
महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ—२२६०
अर्द्धशा० पं० सं० १५१/हि०सं०/क०उ०/१९
लखनऊ : दिनांक २० जनवरी, १९

प्रिय भाई,

ई बड़ी खुशी का बात हउये कि पत्रिका का प्रकाशन दुई साल हो गइल। हम त हरेक अंक बड़े चाव से पढ़ी ला। बड़ा अच्छा लगेला भगवान आप क परिश्रम सफल करे और यह पत्रिका द्वारा हमहन के भोजपुरी का घनी और रोचक साहित्य मिलल करे।

नये साल १९९२ का बधाई स्वीकार कइल जाय।

आपे क
परिपूर्णानन्द वर्म्मा
२०-१-९२

□

धरमनाथ जलालपुरी

पाटलिपुत्र डाकखाना
पटना—१३
१३-९-९१

पूजवर पाण्डेय जी !

कर जोर के प्रणाम। राउर पतिरका कोई कोई से पाके पढ़ लीहिल बड़ा अच्छा लागेला। एह पत्रिका में छपे खातीर एकाध बार रचनो भेजे रहीं बाकीर नाँ छपल रचना ना लवटल।

बाबा ! जहाँ तकले हमारा बुझाला कि 'भोजपुरी भाषा' लिखल पढ़ल (V.I.P.) के भाषा ना ह। इ त आम आदमी के भाषा ह। 'अगूठा छाप' भाषा ह। 'थम्स अप' लोग इ भाषा ना बोले।

'भोजपुरी भाषा' के ऊपर उठावे खातिर 'भनुआ' आ गंगुआ के भी सम्परक बढ़ावे के चाहीं। तब जादे फायदा हो सकेला। भोजपुरी में 'देव भाषा' संस्कृत फेंट देला से दुनों भाषा किन-किन हो जाला।

राउर पतिरका बड़ा बढ़िया पढ़े में आवेला। हमार मेहरारुओ के पढ़ लेवेली बाकीर मने मने हमारा से फुस फास करेली कि राउर कविता एको नइखे बुझात। ए में त खाली देवते लोग के कविता छपल बा।

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललित निबन्ध

आधा माघे कम्मर काँधे

—डॉ० विवेकी राय

एह साल खूब जम के जाड़ा पड़ल। देह कड़कड़ा गइलि आ हाड़ हिल गइल। माघ लागल त मन में धीरज बन्हाइल कि 'आधा माघे कम्मर काँधे।' लोकोक्ति का आँचि में मन गरमा गइल। जनाइल जे सचहूँ देहि पर से उतारि के कम्बल कन्हिया लीहल गइल। अइसने मोका पर लोकोक्तिन के शक्ति प्रगट होले। 'माघ मास धन परे तुषारी' वाली उक्ति से डेराइल आदिमी जाड़ा का आगा ताड़ी ठोक के ठाढ़ हो गइल। अब तू का करब? आधा माघे कम्मर काँधे? मन में पुरहर विश्वास बा कि जब माघ आ गइल त जात केतना देरी लागी? आ जब चलि जाई तब जाड़ के मियाद गना जाई। गइल माघ दिन उनतिस बाकी। जा, दुखदायी जाड़ा, तू जा। उनतिस दिन में का धइल बा? बितले बा। कहल जाला कि 'बीसी, तीसी, मकर पचीसी'! मकर संक्रांति का बाद पचीस दिन के दुख!

यथार्थ रूप में जीवन में तकलीफ बा त आदमी एही तरह से दिन गनि के मुहावरा आ लोकोक्ति में जीयेला। जीवन के केतना-केतना दुख कहावतन का सहारा से कटि जाला। जाड़ा के दिन आइल। कपड़ा के जोगाड़ नइखे। बस, एगो मुहावरा के तीर छोड़ल गइल, 'जस कपड़ा तस जाड़, नाहीं कपड़ा नाहीं जाड़!' उड़ि गइल जाड़ा! मन का भीतर से उड़ि गइल त तन के गोहारि हो गइलि। बाकी बचल माघ के आतक त ओकरो खातिर अलगा से लोकोक्ति के हथियार बा। क्रड़ेर माघ से लोहा लेबे खातिर करेड़ हथियार बा। माघ के कड़ेरी सचहूँ मसहूर बा। एह महीना के कुल्हि चीज बहुत पक्का होले। एह महीना के बनल गुड़, तइयार भइल मरिचा आ पक्का भइल विआह बहुत पक्का होला। एही तरह से एह महीना के जाड़ियो बहुत पक्का होले। बाकी, आदमी से पक्का त होई ना, गना गइल दिन, पनरह दिन, बीस दिन आ उनतिस दिन!

अपना पक्ष में फायदा वाली बात से मन के बहुत सुख मिलेला। जाड़ा का कष्ट के लोकोक्ति में उड़ा देबे वाली तरकीब बहुत जोड़-तोड़ कइके बइठावल गइल बाड़ी स। सोगहग माघ के कम्बल कान्ही पर फेंकवा के अधिया दीहल गइल। बाकी बचल आधा त ओकरा पर दूसर लोकोक्ति के जाल फेंकाइल—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'एक मास ऋतु आगे धावे।
आधा जेठ असाढ़ कहावे।।'

अब एह फार्मूला का मोताबिक आधा माघ फागुन का हिस्सा में पड़ि गइल। फागुन में त बहुत फुर्ती होले, कहल गइल कि 'फागुन उठि के प्रात नहाय!' अब कहाँ गइल जाड़ ? कटि गइल। बिना रूई आ ऊन के कटि गइल। अइसे त ई जाड़ बड़ा जुलुमी ह। अगहन-पूस में आके जमेला त एक तह बइसाख तक ना टूटेले। चइत के दुनुई जाड़ मशहूर ह। कवनो किसान कइ बैल बेचि के रजाई बनववले रहे। अब त हाल ई बा कि कतहीं हिमपात भइल कि शीत लहरी चपेटलसि। एह चपेट के अनुभव बम्बई-कलकत्ता के लोग ना कइ सकेला। जाड़ा का विशाल जाल में फँकाइल मैदानी जिनिगी ठिठुरि के रहि जाले। एक महीना पूस त गजब होला। पते ना चले कि कब सुरू भइल कब साँझि! एह पूस के किस्सा सुनीं—

पूस का महीना में जब मोना अइसन दिन जल्दियें झाँवर हो जा त पहाड़ जइसन रात घहरा परे तब मोहन दादा का नाती बलुआ के भारी फजिहति होले। ओकरा ई बुझइबे ना करे कि पढ़ि के आईं त कब भंटा आलू का कियारी में पानी देई ? अउँजा के एक दिन दादा से पुछलसि, ए दादा ई दिनवा कइसे भक से बुता जात बा ? एकरा कइसन रोग लागल बा ? तोहरो जमाना में अइसहीं तनी मुनी के होले ? दादा ई सुनि के बलुआ के बोध दीहलन, देखु बचवा, ई कलिकाल ह। एह में हर बतुम के सत्त घटि गइल बा। पहिले हमन का लरिकाई में दिन होले कि भरि दुपहरिया केंवाड़ बन्द कइ के सूतल जाव। तबो दिन ना ओरा। नदी तीरे घाम में बइठि कई घंटा तेल लगावल जाव, नहाइल जाव। आ अब ई देखु कि पुअरा में आगि नियर भभकि के ई दिनवा चट ठण्डा हो जात बा।

मोहन दादा अपना नाती के समाधान कइ पवलन कि नाहीं, कहल ना जा सकेला बाकी हमरा जवाब देबे के रहित त हम ओकरा के ऊ एक मास ऋतु आगे धावे वाली उक्ति याद दिअइतीं। पूस में माघ ढुकि गइल बा आधा माघ में कम्बल कन्धा पर चोंहपल त बस बचवा धीरज धरु, अगहन बड़ादिन का बाद से दिनमान बढ़े लागी। अब हीं त का आदमी, का पशु पक्षी सब बेहाल बा। दिन के छोटाई के सबके अधिक कष्ट चकवा-चकई के बा। बेचारा रात भर नदी का आर-पार परल बाड़न। सवेरा होत बा मिले खातिर आतुर होके चलत बाड़न बाकी दिन अतना छोट होत बा कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध बीचे में चटपट साँझि हो जाति बा। रीति काल का कवि सेनापति के ऊ कविता मशहूर बा—

'सिसिर तुषार के बुखार से उखारत है,
पूस बीतें होत सून हाथ पाई ठिरि कै।
ओस की छुटाई की बड़ाई बरनि न जाइ।
सेनापति पाई कछू सोचि कै सुमिरि कै।
सीत तें सहम-कर सहस-चरन ह्वै के—
ऐसे जात भाजि तम आवत है घिरि कै।
जोंगी कोक कोकी कै मिलत तौलौं होति राति,
कोक अधबीच ही तें आवत है फिरिकै।'

मनुष्य के ठण्डक से जवन पीड़ा उपजति बा ओकरा के कम करे खातिर, ओकरा के बाँटि के हलका करे खातिर ई कम नइखे। दुखियन के देखि के दुख कटेला। चकवा–चकई नियर चिरइन के ई जाड़ा केतना कलेस देत बा। पशु-पक्षी, जीव-जन्तु सभ एकरा आतंक से काँपत बा। माघ आइल त सभका घंट में परान परल। अब बारी-बारी से उपद्रव घटी। जलचर-नभचर आ बनचर धीरे-धीरे सब एकरा जाल से निछुटी—

'माहे जल गाहे, फागुने पशु पक्षी,
चैते गज बाजि, बैशाखे नर बानरा।।'

का मतलब एह कहावत के? सुनीं एकरा भीतर शीत-विज्ञान के एगो नया ज्ञान भरल बा। कहल गइल बा कि माघ का महीना में जलचर मछली वगैरह के जाड़ा चलि जाला। फागुन में पशु-पक्षी शीत-मुक्त हो जालन। चैत में घोड़ा-हाथी दना के टनटना जाले आ सबका बाद में यानी बैशाख में जाके नर-बानर के ठण्डक से पिंड छूटेला आ ई लोग रोंवा झारि के ठाढ़ होलन। मनुष्य आ बानर का बराबर जाड़ा लागेला। आदमी बचे के इन्तजाम करेला, बानर बेचारा पेड़ पर काँपत रहेलन। आदमी के जेतना कष्ट जाड़ा न देला ओह से अधिक ओकर विचार, ओकर अनुभव, ओकर अहसास आ आतंक देला। इहे कारन बा कि एह तरह का मुहावरन आ लोकोक्तियन से ओके गरमी मिलेले।

बाकी अव्वल गरमी खातिर त आग के नाँव लेवही के परी। रूई की धूई मशहूर ह। रूई पूँजीवाद ह आ धूई समाजवाद। ई धूई के समाजवाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गांवन में दुआर-दुआर पर कऊड का रूप में मिली। उहां मामूली कपड़ा
बइठि जाई आ हुक्का पिअत राति कटि जाई। एक साल माघ में एगो महात्मा
जो गांव में अइलन। उनकर आसन एगो एकान्त बगइचा में परल। सांझि
बेरा किसान भगत लोग चोंहपल। का हुकुम बा बाबा? बस ओढ़ना चाहीं
बच्चा, ओढ़ना, राति भर खातिर। लोग आज्ञा पालन करे खातिर गांव
ढुकल। अब आइल खोजि-खोजि के नया दबीज कम्बल। ना, ई ना चाहीं।
आइल एक से एक नया-नया रजाई, शाल, दुशाला। माघू के मूंडी
पर ना डोललि। अब कवन ओढ़ना खोजल जाव? बात गांव के एगो
भगत का कान में चोंहपलि। ऊ बोलल, एगो छोट बाति बढ़ि के पहाड़
गइलि। ई कहि के बुढ़वा उठल आ दू बोझ सूखल लकड़ी आ आगी साधू
पास ले जा के धइ दीहलसि। लेई ओढ़ना! ऊ एक अदद 'ओढ़ना' सगरे
के दनाउर बना दीहलसि। भगत-भगवान सभ निहाल। याद
में हमार कलमो गरमा गइलि।

★ बड़ी बाग, गाजीपुर, २०

गतिविधि

मध्यप्रदेश में भोजपुर

—पाण्डेय ब्रजेन्द्र नारायण

मध्यप्रदेश के राजधानी भोपाल से २८ किलोमीटर दूर भोजपुर
के एगो जगह बा। एह भोजपुर के शिव-मन्दिर महाराजा भोज परमार के गौ
शाली इयादगार का रूप में खड़ा बा। भोपाल-जबलपुर रोड पर
किलोमीटर दूर रायसेन जिला के गरहगज तहसील में बेतवा नदी के दक्षि
किनारा के एगो छोट पहाड़ी पर 'भोजपुर' मन्दिर बाटे। एकर निर्माण
परमार भोज प्रथम के राज्य-काल (१०००-१०५५) में भइल रहे। मन्दि
में विशाल शिवलिंग २६ फूट ऊंच पर गढ़ल आधार पर स्थापित बा,
एशिया के विशाल शिवलिंगन में से एगो बा। मन्दिर के विशालता
कलात्मक स्वरूप आकर्षण के केन्द्र बा। मन्दिर का लगहीं एगो तालाब बा
जहां बइठला पर कुल्ही थकान मेट जाला। एकरा के 'भोज ताल' कह
जाला—"तालन में ताल भोज ताल, बाकी सब तलैया।"।

एह घड़ी, भोजपुर एगो छोट गांव बा, जे सड़क-मार्ग पर अवस्थित बा
इहां के बाशिन्दा लोग के बोली भोजपुरी से मिलत-जुलत बा। इहां
दउरी-दोकान भी बा, जहां पूजा के सामग्री का अलावें चाय-नाश्ता
मिलेला। साल में दू बेर—मकर संक्रान्ति आ महाशिवरात्रि के— इहां मे
लागेला। पर साल एहिजा मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री पटवा 'पर्यट
कुटीर' के शिलान्यास कइले रहले जवना के बनावे के काम चल रहल बा
विद्वान लोग का शोध करेके चाहीं कि एह मध्यप्रदेश के भोजपुर
बिहार के भोजपुर में कवनो नाता-रिश्ता भा ताल-मेल बइठत बा कि ना।

★ ३ डी/५३३, बोकारो स्टील सिटी-८२७०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भिखारी ठाकुर

—प्रो० वैद्यनाथ विभाकर

नदी कें तीर हरमेसा से सांस्कृतिक सन्नाटा के तुरले बा। भोजपुरी के अंचरा - छपरा के छोह - छाव से छुवत सरयुग के लोल लहर पर भी कई गो सांस्कृतिक साधना के दिआ जरल बा, जवन साहित्यकार के संचेतनिक मानव - मूल्यबोध के रूप में मन के मिती जोड़ले बा। कोकिल-कंठ में बसल जिनगी के गीत नदी - तीर के चकवा-चकई के पीड़ा बोध में वन्हा के साहित्य आउर संस्कृति के धरोहर भइल बा। एही सरयुग के तीर पर अहिल्या-प्रसंग रिविलगंज में रामकथा के छुवले बा आउर छवगो शास्त्र में से एगो शास्त्र—'न्यायशास्त्र' के रचयिता गौतम ऋषि के साधना के रूप में सँवरल बा। एही नदी के तीर से नया गाँव के रघुवीर नारायण के 'बटोहिया' राष्ट्रीय आन्दोलन के गीता बनके अन्तरराष्ट्रीय ख्याति पवले बा। एही नदी के तीर से प्राचार्य मनोरंजन के 'फिरंगिया' आजादी के जंगी इतिहास के आँसू बन के फूटल बा। एही नदी के तीर से भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' एगो शैली के रूप लेके पंजाब के भांगड़ा, गुजरात के भवाई लोक नृत्य से हाँथ मिलवले बा। जनकवि भिखारी ठाकुर के कलाकार मन एही गंगा-सरयुग के दिअराहा बालू का रेती के गोदी में जवान भइल बा।

लोककवि भिखारी ठाकुर के जनम सारन जिला अन्तर्गत डोरी गंज थाना के कुतुबपुर गाँव में पूस महीना सुदी पंचमी के सन् १८८७ में भइल रहे। नाई परिवार में जनमल इहाँ के बाबूजी के नाँव दलसिंगार ठाकुर आउर माई के नाँव शिवकली देवी रहे।

भोजपुरी लोक-लहर के जन्मदाता भिखारी ठाकुर के जिनगी के शुरुआत गरीबी का काँट-कुस से भइल। इहाँ के चमन के ना, वन के फूल रहीं। इहाँ के कवनो राजा के फुलवारी के फुलाइल गुलाब ना रहीं। इहाँ के चाँदनी रात में झरेवाला हुलास कें हर सिंगार रहीं।

भिखारी ठाकुर के शिक्षा-दीक्षा कम रहे बाकिर आन्तरिक ज्ञान बहुत गहिर रहे। उहाँ के अपना कविता में आपन आत्मकहानी रख देले बानी—

मन में विद्या तनिक ना भावत, कुछ दिन फिरलीं गाय चरावत।
जब कुछ लगनी माथ कमावे, तब लागल विद्या मन भावे।
माथ कमाईं नेवतीं चीठी, विद्या में लागल रहे दीठी।
ललसा रहे कि बहरा जाईं, छुरा चला के दाम कमाईं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह से पता चलत बा कि उहाँ के शिक्षा-दीक्षा के स्थिति ठीक ना रहे। भगवान साह बनिया के गुरुआई में अक्षर बोध के प्रेरणा लेके उहाँ के बिनती के सँवारे के कोशिश कइनी। बाकिर आर्थिक मजबूरी उहाँ के खड़गपुर (कलकत्ता) भगा ले गइल। उहईं बंगाल के 'जात्रा' आउर रासलीला रसगर प्रसंग इहाँ के कान्ह पर कला के कांवर चढ़ा दिहलस—

गइलीं मेदनीपुर के जीला, ओहिजा कुछ देखलीं रसलीला।
निजपुर में करके रमलीला, नाच के तब बन्हनी सिलसीला।

बाकिर ओह घरी नचनिया के लोग कलाकार के नजर से ना देखत रहे। ओकरा के लोग बनारस के भांड़े बूझे। एही से ठाकुर जी के माई-बाबू ना चाहत लोग कि इहाँ के नाच में रहीं। साँच त इ रहे—

बरजत रहलन बाप मतारी।
नाच में तूँ मत रहऽ भिखारी।

बाकिर इहाँ के लोक नाटकन से आपन रागात्मक रिश्ता जोड़ लेत रहीं। अपना एही कला के चलते इहाँ के ब्रिटिस सरकार से 'राय बहादुर' के सम्मानित उपाधि पवनीं। ई सम्मान कवनो अंग्रेज पिट्ठू सामन्ती के लेहाज ना मिलल रहे। ई उहाँ के कला के सम्मान रहे। आजाद भारत में इहाँ 'पद्म श्री' से सम्मानित कइल गइनी। राष्ट्रपति भवन इहाँ के सम्मानित करत राजेन्द्र बाबू के आंख अँसुआ गइल रहे। ठाकुर जी अपना सम्मान के जवाब में कहले रहीं—'ई सम्मान भिखारी के ना, भोजपुरी के ह, भोजपुर के माटी के ह, भोजपुरिया कला के ह।' साँचहूँ ऊ सम्मान नचनिया भिखारी के ना रहे बल्कि लोक कलाकार भिखारी के रहे। 'साँचहूँ' भोजपुरी खातिर उहाँ के मन में अपार पीड़ा रहे। सिहोता-बंगरा हाई स्कूल, महाराजगंज के कवि सम्मेलन के मंच पर उहाँ के रोअते कहले रहीं—'जा ऐ सुरसती बसबो कइलू त हमरा नियर अनाड़ी के जीभ पर। जो कवनो विद्वान के जीभ पर बसतू त हमरा माई के बोली भोजपुरी के उद्धार हो जाइत।'

भिखारी ठाकुर जी के नाटकन के संग्रह लोक कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम कुतुबपुर के प्रयास से दू खंड में प्रकाशित भइल बा। पहिलका खंड बिदेसिया, भाई विरोध, बेटी वियोग, कलियुग प्रेम उर्फ पियवा निसइल, राधेश्याम बहार नाटक बाटे। दोसरका खंड मे गंगा-स्नान, बिधवा-बिलाप, पुत्र-वध, गोबर घिंचोर आ ननद-भउजाई नाटक बाटे, तिसरका खंड तइयारी चल रहल बा—जेमें भजन, फुटकर कविता आ कुछ नाटक रहि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन। अइसे फुटकर रूप में बेटी बेंचवा, नाई पुकार, शंका समाधान, पुत्रवधू नाटक आ बुढ़शाला के बयान आदि भी प्रकाशित भइल बा।

लोक नाटकन के परम्परा में भिखारी ठाकुर के लोक नाटक के मौलिक प्रयोग आ रंगमंचीय उतजोग के समझल जरूरी बा। इहाँ के एही लोक नाटकन के चलते राहुल सांकृत्यायन जी 'भोजपुरी के शेक्सपीयर' कहनी। लोक नाटक के दू भाग में बाँटल जा सकत बा—(१) प्रहसनात्मक (२) नृत्य नाट्यात्मक (डांस ड्रामा)। पहिलका तरे के नाटक में अइसन घटना के अभिनय के विषय बनावल जाला, जवना के देख-सुन के लोग हँसे लागे। लखनऊ आ बनारस के भाँड़ लोग के अभिनय एही तरे के लोक नाटक ह। एह में नृत्य के अभाव होला। दूसरका तरे के लोकनाटक में संगीत, नृत्य आ अभिनय तीनो के बिटोर रहेला। भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' एही तरे के नाटक ह।

भारतीय लोक नाटकन के लमहर परम्परा बा। उत्तर भारत में रामलीला आउर रमलीला, मध्य भारत (मालवा) में 'मांच, राजस्थान में 'खयाल', पंजाब में भांगड़ा, उत्तर प्रदेश में नौटंकी, गुजरात में भवाई, बंगाल में जात्रा, महाराष्ट्र में गोंधल, तमिल में यज्ञगान आउर तेलगु लोक नाटकन में बिथि भागवतम्, विथि नाटकम् बहुते प्रसिद्ध बा।

एही तरे से भोजपुरी भाषी क्षेत्र में धोबिया नृत्य; गोंड़उ नृत्य, नट-नटीन नृत्य, डोमकच, हड़पड़ौली, जोगिया प्रसिद्ध लोक नाटक हउअन सन। भिखारी ठाकुर जी लोक नाटकन के समस्त विशेषता के समाहित करके १९१७ में भोजपुरी रंगमंच के एगो नया दिशा दिहनी। भोजपुरियो लोक नाटक आपन स्थान बनवलस। लोक नाटकन के विशेषता के आलोक मे भिखारी ठाकुर जी के लोक नाटक के देखल जा सकेला—

(१) भाषा—लोक नाटक के भाषा सरल आउर सीधा होला। सहज सम्प्रेषणीयता एकर महत्वपूर्ण शर्त्त होला। एह में लोकभाषा के प्रयोग होला। गद्य के बीचे बीचे गीत के प्रयोग जरूरी होला।

भिखारी ठाकुर के नाटक एह कसौटी पर सोरह आना खाँटी उतरत बा। इहाँ के वार्तालाप बहुते छोट बा। वार्तालाप गीतमयता से भी जुड़ल बा।

(२) संवाद—सरल होखे के चाहीं। लम्बा कथोपकथन के अभाव चाहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठाकुर जी के लोक नाटक में संवाद सरल आउर चुस्त दुरुस्त बा। संवाद हास्य के सिरिजना में संयम के बान्ह तुरले बा।

(३) कथानक—लोक नाटक के कथानक ऐतिहासिक/धार्मिक सामाजिक होला।

ठाकुर जी सामन्तीयुग के पीड़ा भोगले रहीं। एह से कला के सामन्ती चित्रण काउर ना ले जाये के चाहत रहीं। एहीं से उहाँ के नाटकन के कथानक ऐतिहासिक भा धार्मिक नइखे। ऊ सामाजिक बा, जवना में नाटककार के उपदेशात्मक स्वरूप खड़ा बा।

(४) पात्र—पुरुष पात्र के प्रधानता होला। एह में औरत के रोल भी पुरुषे करेला।

ठाकुर जी के नाटकन में भी मरदे मेहरारू के भी रोल करत रहे। कौमेडियन खातिर लबार के सिरिजना कइले रहीं।

(५) रूपयोजना—उहाँ के नाटक खातिर विशेष ताम-झाम के जरूरत ना रहे। मेकअप के सामान मदे मुर्दाशंख, कोइला, काजर से काम चला लिआव। नेटुआ आ पंवरिया नृत्य में पुरुष घंघरा आ जम्फर पेन्ह के नाचे बाकिर उहाँ के साड़ी पहिरा के कलाकार के मंच पर उतरनी। पहिले के साज पखाउज आ करताल रहे। उहाँ के मंच पर ढोलक, झाल आ हरमुनिया के प्रयोग शुरू कइनीं।

(६) रंगमंच—भोजपुरिया लोकनृत्य में रंगमंच के कवनो ताम-झाम शुरुए से ना रहे। उहाँ के भी समियाना में चारगो चउकी दु-तीन गो कुर्सी आ एगो पर्दा के बंले नाटक के अभिनीत करत रहीं।

एह तरे लोक नाटकन के समस्त विशेषता उह में समाहित बा।

भिखारी ठाकुर के भोजपुरी मइया के सोहिला-सेनूर बनावे में 'बिदेसिया' के बड़हन हाँथ बा। बिदेसिया के कथानक 'रेलिया न बइरी, जहजिया न बइरी, बइरी पइसवा हो राम' के कारुणिक त्रासदी ह। पइसा के किल्लत भोजपुरिया के गिरमिटिया मजूर बना के मारीशस, फिजी, सुरीनाम भेजवलस। नाटक के नायक दुगो पइसे के लोभ में नवविवाहिता नायिका के छोड़ के विदेश चल देत बाड़न, नवोढ़ा नायिका के रोवाई के बीचे क्रौंचवध के पीड़ा पनपे लागत बा। इहाँ नायिका के रोवाई के पीछे अतृप्त दाम्पत्य जीवन के मोहभंग के मार्मिक कहानी त बड़ले बाटे, एकरा संगही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आर्थिक, सामाजिक आ नैतिक सन्दर्भ भी बाटे, जवन करुणा के भी आउर करुण बना देत बा। 'गवना करा के देश जइब बिरानी, केकरा पर छोडिकर टूटही पलानी' में आर्थिक दशा के भावबोध लउकत बा। उहईं 'चल जायेब परदेश, घर में रहब ना अकेल' से बुझाता कि नायिका अकेले जिनगी जियेवाली नायिका के कारुणिक प्रसंग बुझत बिआ, खास करके ओह समाज में—जहंवां औरत के प्रति सांस्कृतिक प्रदूगण के समस्या मुँह ववले खड़ा बा। एही से नायिका स्पष्ट कर देत बिआ—

केकरा से आग मांगब केकरा से पानी ?
खाला-ऊँचा गोड पडी चढ़ल बा जवानी।

बीच में नायिका के भेंट बटोही से होत बा। उनके से आपन सनेस भेजत बिआ। उहाँ नायक एगो रंडी के प्रेम में वाझल बाडन। बाकिर बटोही के प्रयत्न से नायक घर लवट आवत बा। एह तरे से नाटक के सुखात्मक अंत हो जात बा।

एह गीति-नाटक के सामाजिक सन्दर्भ के भिखारी ठाकुर आध्यात्मिक सन्दर्भ से भी जोड़ले बाड़न। बिदेसी ब्रह्म हउअन, बटोही-धर्म हउअन। रखेलिन माया हई आ प्यारी सुन्दरी जीव हई। बिदेसी के प्यारी से मिलन बटोही के प्रयत्न से रखेलिन के हटले पर होत बा। उहाँ के भाव ई बा कि माया के देवाल टूटले पर जीव धरम के माध्यम से ब्रह्म में मिल जाला। इकबाल कहले बाड़न—

मिटा दे अपनी हस्ती को कि कुछ मर्तबा चाहे,
कि दाना खाक में मिलकर गुलो गुलजार होता है,

कबीर दास भी 'माया महा ठगनि हम जानी' के बात उठवले बानी।

भिखारी ठाकुर के एह नाटक में प्रेम के तीनों भेद—Romantic Love, Love through parriental choice आउर plotonic love शामिल बा। एकरे व्यापक समर्थन आ लोकप्रियता के बल पर ठाकुर जी आपन अलग बिदेसिया शैली के स्थापना कइनी। जवन समाज नचनिया बुझात रहे, ऊ समाज आज उनका एह शैली के तुलना प्रसिद्ध पाश्चात्य शैली ब्रेख्त से करत बा। एह गीति-नाटक में सवैया, चौपाई, चौबोला, दोहा के अलावे पूर्वी, निर्गुन, बिरहा खेमटा, झूमर, जंतसारी के भी प्रयोग कइल बा। शास्त्रीय नाटकन के परम्परा में एकर शुरुआत भी मंगलाचरण से बाटे बिदेशिया के सूत्रधार (विदूषक आ समाजी) हमेशा विश्वास दिलावत बा कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

दर्शक जवन देखत बा उहे साँच ना ह, सच्चाई एकरा से कुछ अलगो
कथा प्रसंग के स्पष्टता खातिर समाजी के प्रयोग कइल बा। एह में हास्य
सिरजना निमन बा। बाकिर गंवई परिवेश के चलते कहीं-कहीं फूहड़ हो
बा। नाटक में जहाँ-तहाँ दुअर्थक संवाद के भी प्रयोग भइल बा—
भाभी। देखिहऽ रिंग ढीला बा, दबा के रखिह।' 'का खाइल जाई? ना
होई ना घुसते होई।' बटोही के संवाद कहीं त मर्यादा के ऊँचाई पर बा,
मर्यादा के तूड़ देले बा। बिदेसी के घर लवटला पर रखेलिन से
मर्यादाहीन बुझात बाटे—'अच्छा ऊ गइलन त हम बानी नू?... ह
के खिआयेब—डबल कि सिंगल?' नायक के संगे रंडी के घरे लवट आ
भारतीय शास्त्रीय पम्परा के अनुकुल नइखे बुझात?

ठाकुर जी के बिदेसिया पर नौटंकी के प्रभाव बाटे। एह में
कथोपकथन नौटंकी के उर्दूनुमा शैली के नकल में बाटे। बाकिर भोज
लोकधुन के आगे ऊ दब गइल बा। नाटकीय अभिनय के उरेहे में
गीतन में जगह-जगह मानवीकरण के सुन्दर छटा बाटे। एगो बानगी

अमवा मोजरि गइले, लगले टिकोरवा से,
दिन पर दिन पियराला रे बिदेसिया।
एक दिन बहि जइहें जुलुमी बेयरिया से;
डार-पात जइहें भहराई रे बिदेसिया।

इहाँ आम के गाछी के तुलना नायिका से कइल बा। टिकोड़ा
जवानी काउर संकेत बा। पिअरइला से जवानी ढहला काउर संकेत क
जवानी के पूर्णता देखाई देत बा। जबन पिअरा के जुल्मी बेयार
कहियो बर्बाद हो जाई। अब आशावादी दृष्टि लेके नायिका कब ले

कागा सब तन खाइयो, चुन-चुन खाइयो मांस,
दो नयना मत खाइयो, पिआ मिलन के आस।

जनता-जनार्दन के जनकंठ जनकवि भिखारी ठाकुर जी समा
साहित्यकार रहीं। उहां के तुलसी के एह पंक्ति पर, पुरहर विश्वास

कीरति भणिति भूति भल सोई,
सुरसरि-सम सब कहँ हित होई,

भारतीय लोक नाटकन के कथानक जहवाँ राजा-रानी के
छूम-छनन के बीचे ऐतिहासिकता के छुवले बा। कहीं धार्मिक आख्या

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेके पलायनवादी मूल्य बोध से जुड़ल नैतिक सन्दर्भ के छुवले बा। उहईं भिखारी ठाकुर के लोक नाटकन के कथानक जिनगी के बहुते नियरा होके गुजरत बा। सामाजिक समस्या के अपना भीतर समेट के सामाजिक दिशाबोध से जुड़ल बा।

'बेटी वियोग' में बेमेल विआह के कारुणिक चित्र बा। दहेज के कुप्रथा के चलते मजबूर बाप फूल खानी बेटी के हाँथ-बाँह बूढ़ के संगे धरा देत बा। समाज के गाल पर एगो बड़हन तमाचा बा, जब बेटी अपना विलाप में कहत बिआ —

वर खोजे चलि गइल, माल लेके घरे धइल,
दादा लेखा खोजल दुलहवा हो बाबूजी,
अइसन देखवल दुख सपना भइल सुख;
सोनवा में डलल सोहागवा हो बाबू जी।

बाल विवाह के ससस्या भी इहाँ के उठवले बानीं— रहरी में बोलेला हुँड़ार बनवारी हो, हमरा के लड़िका मतार' उहईं 'विधवा विलाप' नाटक में मुसमात मेहरारू के कारुणिक दुर्दशा के चित्रण बाटे। 'पुत्र बध' नाटक में गहना के प्रति औरत के स्वाभाविक कमजोरी के दरसावल गइल बा। मेहरारू के चिरौरी -'पिया गहना द बनवाई बोलावे अइहें हमार भाई' से शुरू होके पुरुष के आर्थिक विवशता के चलते 'गहना पेन्हबु झमाझम, कहवाँ चोरी करीं हम' के आखिरी परिणति सोनार के संगे दैहिक सम्बन्ध से होत बा। जवना रागात्मक सम्बन्ध के परिणति पुत्रवध से होत बा। एह समस्या के उठा के ठाकुर जी प्रेमचन्द्र के 'निर्मला' उपन्यास के भाव-भूमि छुवले बानी।

'गोबर घिंचोर, नाटक में आज-काल्ह के पंचाइती के रूप दरसावल गइल बा, जहवाँ—'आज-काल्ह के पच पसेरी बदलत में ना लागत देरी'। पुलिस जुल्म के खिलाफ भी आपन आक्रोश इहाँ के कविता में व्यक्त भइल बा—

'कवने गुनाहे पिअवा बन्हल मोर, बाबू दरोगा जी,
ना मोर पिअवा ठग बटमारवा, ना मारे पिअवा चोर,
ना मोरे पिअवा मधुइया के मातल, कइले सड़कवा पर शोर।'

गंवई माटी के सांस्कृतिक संचेतना इहां के गीतन में फूटल बा। 'भाई विरोध' नाटक, में इहां के दुगो भाई के फरका करावे के दृश्य देखवले बानी। कइसे बुढ़िया कुटनी उपदर बहु के फरका करा देत बानी। साँचहूँ भाई त भाई, ना त कसाई। बुढ़िया कुटनी के चलते कइसे भाई-कसाई हो जात बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंवई संस्कृति के बड़ा सुन्दर चित्रण एह प्रसंग में बाटे। उपदर के भाई प्रति नेह—

कहत भिखारी नाई, हम ना छोड़ब सहोदर भाई,
घर में रहबू चाहे जइबू तीनों पुर से।

मेहरारू के स्वाभविक तर्क-वितर्क गंवई मिजाज के बानगी बा—

हरवा जोतत सइंयां, तोहरी पिराइल पइयां
रुपिआ के मुंह हम ना देखनी हो पिअवा।
बड़की गोतिनिया भइली मलिकिनिया से
छयला चिकनिया भसुरवा हो पिअवा।

'गंगा स्नान' नाटक में माई के दुरगती के चर्चा बा। जवन माई नियति बोध—'नव मास रहल भीतर, तब पुजनी देवता पितर, भइ पिअल दूध के धार' पर आधारित बा। ओकर भविष्य एगो पराया घर आइल बहु के बात में आके बेटा के हाथे करुणा के क्लाइमेक्स पर पहुंच बा। जब गंगा स्नान में जात भाई के माथ पर सब मोटरी लदा जात आउर मेहरारू के कहला पर बेटो कान्ह पर बइठ जात बा। बाकिर माई जीव गाई नियर, पुत्र के जीव कसाई नियर।

नाटक के अंत में माई के ममता के आगे बेटा के झुके के पड़त बा—

मोर कसूर माफ करऽ मात।
कइनी बहुत हतेयारी।

एह तरे से ठाकुर जी अपना नाटकन में सामाजिक समस्या के समाज के एगो नया दिशा बोध देले बानी। उहां के रचना में बिहार सेन्ट के गन्ध नइखे। सोन्ह माटी के सुगन्ध बा। रचना के माध्यम से के रुचि परिष्कार इहां का कइले बानी।

भिखारी ठाकुर के नाटकन में भक्ति के गुलाबी गंध बा। नाटक के शुरुआत आ अंत हरिनाम से बा। ई मोक्ष प्राप्ति के पीड़ा से भावाकुलता कहल जाई।

ठाकुर जी कला के जीवनगत पक्ष के पूर्ण समर्पण के पक्षपाती मैथ्यू आर्नल्ड के एह शब्दन पर उहां के पूर्ण विश्वास रहे—'A poetry revolt against moral ideas is a poetry of revolt ag

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ife, a poetry of indifference towards moral iaeas is poetry of indifference towards life."

साँचहू भिखारी ठाकुर जी भोजपुरी आन्दोलन के नींव के ईंटा रहीं। राज साहित्य के जवन भव्य महल खड़ा बा, ऊ ओकरे नींव के बूते खड़ा ा। जवना घरी लोग भोजपुरी के उपेक्षा के दृष्टि से देखत रहे। ओह घरी इहां के ओकरा महत्ता के दोसरा भाषा लोग तक पहुँचवनीं, लोकचेतना के लोकभाषा में बान्ह के लोककंठ तक पहुँचवनीं। एही से राहुल सांकृत्यायन ी इहां के अनगढ़ हीरा आ 'भोजपुरी के शेक्सपीयर' के उपाधि दिहनीं। हां के १० जुलाई, १९७१ के स्वर्गवासी हो गइनी बाकिर जबले धरती-ाकाश रही, इहां के कीर्त्ति अमर रही। हम इहे कहब—

सदियन तक साहित्य ई ना समझ सकी—
तूँ आदमी रहल कि आदमीयत के महाकाव्य।

☐ भोजपुरी सेवा सदन, ढोंढ़स्थान, पत्रा०—पंडितपुर, सारन, बिहार

(पृष्ठ २२ के शेष)

बाबा! हम फेनु एगो कविता भेजत बानी। निमन जो बुझाए त छापे के किरपा करब ना त लौटाइओ देब। लौटी त मेहरारू जी के खोंइछा में दे देब। देवर जी के बिआह में उ झुमर के साथे साथे गइहें। ऊ कविता ह :—

दुबे द्विवेदी त्रिवेदी जी मिश्र।
चौबे त्रिपाठी उपाध्याजी सिंह॥
पाण्डेय चतुर्वेदी राय जी रीडर।
सिन्हा श्रीवास्तव प्रोफेसर जी लिडर॥
सोलहो सिंगार जुटल, निमन सुह इल।
भोजपुरी के बढ़ावे खातीर भनुआ ना आइल॥
गंगुआ ना भाव जाने, पेट भरला से काम॥
एही से अब तक लागल बा, भोजपुरी में लगाम॥

भाव लागत बानी।

☐ —धरमनाथ जलालपुरी

डॉ० विद्यानिवास मिश्र

डॉ० विश्वरंजन के भोजपुरी आलोचना पर दस्तावेजी ढंग के नाहीं, बल्कि मुकम्मिल नींव के तरह के आलेख* सुने के मिलल। मन वस्तुतः परितृप्त भइल कि भोजपुरी में एतना गहन विचार सहज रूप में समेटल जा सकेला।

—विद्यानिवास मिश्र
२७-५-९०

★ सम्मेलन के रेणुकूट अधिवेशन में पठित आ 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के अगस्त-सितम्बर १९९१ के अंक में प्रकाशित 'भोजपुरी के सैद्धानितक आलोचना : सिद्धान्त आ प्रक्रिया' शीर्षक डॉ० विश्वरजन के निबन्ध।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

कलापूर्ण डिजाइन, ब्लौक आ ऑफसेट निगेटिव के निर्माता

भारती ब्लौक वर्क्स

नयाटोला, पटना—८००००४ (दूरभाष : ५११९७४)

[नि० सं० ०३/१०/०३१००/७७]

नया साल १९९२ खातिर

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के मंगल कामना करत बा

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का व पाण्डेय कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना-८०००२३ (दूरभाष : २६११३४) से प्रकाशित, आखर पाण्डेय द्वारा कर्म प्रेस, लोहीपुर, पटना-८००००१ (दूरभाष : २३२७८०) में

सम्पादक—पाण्डेय कपिल।

सेवा में :—

श्री दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती

राजगुरुमठ

बी-3/175, मिर्जापुर घाट

प्रेषक :—

व्यवस्थापक

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'

अखिल भारतीय

Registered No. PT-428/90 : भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका : जनवरी,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding:IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

जून, १९९१

ल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

Mathe Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राउर चिट्ठी मिलल

श्री महेश्वराचार्य, पो० भरौली, वाया-शाहपुर पट्टी, भोजपुर,

सम्पादक जी,

पटना गइल रहीं। नगेन्द्र जी से भेंट भइल; समाचार मिलल। पत्रिका मिलल। डॉ० वसन्त कुमार के चिट्ठी पढ़लीं। चिट्ठी में स्थानीय रच सवाल उठाके अपना रचना के ढेर दिग्दर्शन करावल गइल बा। ओह एक अउरूओ रचनन के शामिल कइल गइल बा। जवन रउरा पसंद प कविता ना ह। पसन्द रुचि के अनुकूल होला। ढेर आदमी के जवन ऊहे गंगा के धार कविता ह। 'सुरसरि सम सब कहँ हित होई'। Art for art sake वाली कविता त आजु काल्हु वाला के पसन्दे परी। पाठक एही अंक में आग्रह कइले बाड़न पैरोडी के माध्यम से 'जे परभनिति खुनसाहीं' के मनावे ऊ प्रणम्य बा, वरेण्य बा। रुचि-स्वातन्त्र्य के प्रश्न रही। डॉ० पाठक के एगो नई कविता हमरा रुचि गइल। ओकर आत्म त्मक विश्लेषण लिखा गइल। ओकरे साथे आँसू आ आनन्द सन्धिदूत एक गो कविता 'त्रिपुटी' में संग्रहीत हो गइल। मनोरंजन बाबू पर देह के लिखाइल बा। एह अंक में अभी अधूरे बा। का ई स्तरीय रचना न मैटर के कहाँ कमी बा। कमी बा पत्र पत्रिकन के। शेष कुशल बा। राउ हटल हमार पटना छूटल। एह बुढ़ापा में अइसन नजदीक डेरा ना रहल से उतरत-उतरत डेरा में चलि जाईं। आँख कमजोर हो गइल। मोति हो गइल। एह चिट्ठियो में ढेर गलती होई। हमरा लिखे में गलती हो छूट जाता अक्षर, शब्द आ बुझाता कि लिखि देलीं। परिवार के शुभ कह देबि। ज्यादा शुभ।

—महेश्वर

□

आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत, बी. आई पी. नगर, ति

कलकत्ता-७०००३९ १९

प्रिय पाण्डेय कपिल जी,

नमस्कार

मई ९१ के भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के संपादकीय में भवन खातिर जवन निवेदन कइले बानी ओ मद में हम १००० रु० (एक हजा के ड्राफ्ट बना के आप के पास भेज रहल बानी। अपील में ई ना लिख कि कवन नाम से ड्राफ्ट भा चेक भेजल जाई। एसे हम "अखिल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन" के नाँव से ड्राफ्ट बनवा के भेजत बानी। बा कवनो असुविधा ना होई। ड्राफ्ट नम्बर "802394" ता० १५-५-९

आपका

आचार्य श्रद्धानन्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

[अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका]

जून १९९१

परामर्श-मण्डल

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय : श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय
पं० गणेश चौबे : आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र

वित्त-पोषक

भोजपुरी संस्थान
इन्द्रपुरी, पटना-८००० २३

आउर

श्री सत्यनारायण सिंह
एकवेमा कोठी, केसरीनगर, पटना-८००० २३

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' : डॉ० शम्भुशरण
नगेन्द्र प्रसाद सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण : विपिन बिहारी चौधरी
भगवती प्रसाद द्विवेदी : पशुपति नाथ सिंह : ब्रजभूषण मिश्र

	दाम	सम्मेलन-सदस्य खातिर रियायती दाम
एक अंक	३ रुपया	२ रुपया
वार्षिक	३० रुपया	२० रुपया

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
इन्द्रपुरी, पटना-८००० २३
(दूरभाष : २६११३४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथनी सम्पादक के

एगो आउर गाँधी के हत्या

आज जब भारत में चारू ओर अन्हारे-अन्हार लउकत बा; सगरे ओर जुलुम आ भ्रष्टाचार के बोलबाला बा; देश में लोकतंत्र खतरा से गुजर रहल बा—भूतपूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के दर्दनाक हत्या से पूरा देश स्तब्ध रह गइल बा। अराजकता आ अस्थिरता के जे दौर चल रहल बा, स्वार्थवश नेता लोग देश के जात-पांत आ धरम का नांव पर टुका-टुका कके नोच-चोंथ देवे खातिर बेताब हो उठल बा अइसनका माहौल में निस्सन्देह राजीव गांधी एगो आस के किरन जइसन रहलें। आज ई किरन विलीन हो गइल; आतंकवाद, अलगाववाद के बम असमय में ओकरा के छीन लिहलस। ई लोकतंत्र पर अबतक ले भइल सबसे कठोर आ निर्मम आघात बा। राजीव गांधी के हत्या से खाली कांग्रेस शिखर-विहीन नइखे भइल बलुक सउँसे देश के छाती छलनी हो गइल बा। पहिले झूठ के बारम्बार दोहरा के राजीव जी के चरित्र-हनन के सुनियोजित साजिश भइल आ जब ओह धुन्ध के ऊ झेल गइलन त उनका जिनिगिए के अन्त कर दिहल गइल। लोकतंत्र आज भयभीत बा, डेराइल सहमल अपना के बचावे खातिर उन्माद, हिंसा, घृणा आ विद्वेष के ताकत के खिलाफ लगातार जूझ रहल बा। अइसन समय में राष्ट्रीय शक्ति के एगो उत्साही नवजवान सेनापति के हत्या एकता आ अखण्डता का दुश्मनन का हाथ हो गइल। ई वार देश का करेजा पर भइल बा। राजीव गांधी के हत्या भारतीय राजनीति में जवन शून्य पैदा भइल बा ऊ सहजे भरल ना जा सके।

आज का राजनीतिक माहौल में राजीव जी मुट्ठीभर गिनल-गूँथल बड़ नेतन में रहलें जें भारत के आजादी के बचावे खातिर आ एकरा के महान शक्ति का रूप में ठाढ़ करे खातिर सपना देखे आ ओही नीने सुतेवाला रहल ह। श्रीमती इन्दिरा गांधी का हत्या के बाद जब राजीव प्रधान मंत्री बनावल गइलें त ऊ दुनिया के सबसे कम उमिर के प्रधानमंत्री रहस। राजनीति में नया-नया भइला से एकरा दांव-पेंच से परिचित रहस। कुछ लोग एकरो लाभ उठावल आ नियरा सट के उनका के कमजोर करे के कोशिश कइल। उनकर जे सोच रहें, जे सपना रहे, ऊ ढेर लोगन का रास ना आइल आ उनका 'छवि' पर हमला होखे लागल। चुनाव में हार ऊ हरले ना, मैदान छोड़ के भगले ना आ साले भर में छविहन्ता लोग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लड़खड़ा गइल। प्रधान मंत्री के कुर्सी छोड़े का बेरा जे मुस्कान ओठ पर छवलस ऊ राजीव का व्यक्तित्व के एगो हिस्सा बन गइल आ अन्त ले साथ ना छोड़लस। उनका 'स्थायीत्व' का नारा के देश एगो आशा आ आस्था का जवरे निहारे लागल रहल। भारतीय जनता का प्रति उनकर दीवानगी आ भीड़ में समा जाए के नशा अन्त में मउअत के राह बन गइल। भीड़ के सोझा उनका में नेहरू जी जाग जात रहस आ चिन्तन में एने इन्दिरा जी के दृढ़ता लउके लागल रहे। संवाद, सहयोग आ गुटनिरपेक्षता उनका चरित्र के अंग बन गइल रहे।

आज एगो आउर गाँधी हिंसा के बलि चढ़ गइले। चुनावी प्रक्रिया से गुजरत देश का गरम माहौल में हिंसा के बाढ़ लोकतंत्र पर आइल खतरा के उजागर कर रहल बा। राजीव गाँधी के हत्या से ई बात साफ हो गइल बा कि बुद्ध आ गाँधी का एह धरती पर हिंसा आ बर्बरता के प्रवृति बढ़ल जाता आ समय रहते एकरा के ना रोकल गइल त पूरा राष्ट्र मटियामेट हो जाई। एकरा बादो यदि चेत ना भइल त का सरबनास का बादे होई? राजीव गाँधी के ई शहादत उनका के आउरो महान बना देलस। उनका बर्बर आ जघन्य हत्या में चाहे जवना देश के, जवना दल के, जवना सनकल लोग के हाथ होखे—ई भारत का खिलाफ, भारत के शक्ति का खिलाफ लमहर साजिश बा आ एकर दूरगामी प्रभाव पड़ी।

भारत में हिंसा कवनो एके दिन में पैदा नइखे हो गइल। एकरा पीछे एगो लमहर सिलसिला बा आ एमें सत्तालोलुप राजनीति के ढेर हाथ बा। हिंसा आ बर्बरता भरल जीवन शैली के भारतीय समाज जतना तेजी से कबूल करत जात बा ऊ समाज में सड़ाँध का रूप में लगातार फइल रहल बा। ई बीमारी कैंसर खानी देश के खोंखर बना रहल बा आ एकर जड़ अनुमान से कहीं ज्यादा गहराई ले पैठ गइल बा। राजनीति के नस-नस में पइसल हिंसा खातिर अब विदेशी हाथ खोजे के जरूरत नइखे रह गइल। सरहद पार से आतंकवाद के बढ़ावा बेशक मिल रहल बा बाकिर ओकरा खातिर धरती के तइयार कइले बा? हत्या, खून-खराबा आ भयंकर अपराध के आज का जिनगी के रोजमर्रा के अंग बन जाए देवे में केकर दोष बा? के कर रहल बा माहुर के ई खेती कि सउँसे देश टूटन का कगार पर ठाड़ लउकत बा? कम-बेश आज काहे आम आदमी ई बात माने लागल बा कि आपन बात सत्ता तक पहुँचावे के हिंसे एगो कारगर उपाय बाँच गइल बा? जेकरा लगे निर्णय के प्रक्रिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर प्रभाव डाले के क्षमता नइखे, कवनो राजनीतिक सुख नइखे ओह के आदमी का लगे हिंसा का जरिए समाज आ सत्ता के ध्यान खींचे के हिंसा। अलावा दोसर कवन साधन बाँच गइल बा ? सत्ता में बइठल लोग जब आम का दुःख-दर्द का ओर से आँख मूँद के संवेदनहीन हो जाला त अहिंसक विरोध कवनो माने-मतलब ना रखे। एही से अपना खीस के, अपना अपमान के प्रकट करे के भाषा ईंट-पत्थर आ गोली-बारूद के हो गइल बा आ राजनेता लोग अपना स्वार्थ के रोटी सेंके खातिर एह आँच के बढ़ा रहल बा। नैतिक रूप आ सत्ता छूटला का बाद असरदार तबको हिंसा भड़का के बदला चुकावे, सत्ता पर काबिज होखे के कोशिश में लगातार लागल बा। सभ्य लोग का मंजिल तक पहुँचे खातिर जानवर खानी बरताव कर रहल बा। परीक्षा सामूहिक नकल करेवाला युवा जनमानस बथ लूट के गलत कइसे समुझ पावे बा। राजनीति अपराध के संरक्षण आ हवा देवे में लागल बिआ। सड़ल प्रणाली दल-बल से, धन-जन से वोट समेट के कला बन के रह गइल बिआ। कवन अइसन दल बा जे आज बल प्रयोग, धनशक्ति, ग्लैमर, जाति-सम्प्रदाय, मतभेदन के चुनाव में इस्तेमाल करे के गलत मानत होखे ! सउँसे देश भाँग घोराइल बा त केकर-केकर नाँव लिआव। राजीव गांधी का हत्या बाद सभी दल का हिंसा के बढ़त माहौल पर गम्भीर होके विचार करे चाहीं आ समय रहते एकर रोकथाम करे के चाहीं ना त एह आग में केहू ना धनक सकता आ गोली-बम के धमाका में केहू राजनेता सुरक्षित नइखे सकत। देश के एक राख के एकर विकास करे के यदि संचहू इच्छा केहू होखे त एह हिंसा के भाषा के बेअसर करे के सामूहिक प्रयास जरूरी बा।

राजीव गांधी का हत्या से देश मर्माहत बा आ ओकरा सामने भविष्य के सवाल मुँह बा के खड़ा हो गइल बा ? राजीव जी के शहादत बेकार ना जाय, ई उतजोग अविलम्ब शुरू होखे के चाहीं। का स्वार्थ पर आधारित अपराधी राजनीति एह दिशा में डेग बढ़ाई ?

—ब्रजकिशोर

□

१९ जून के कबीर - जयन्ती भोजपुरी दिवस का रूप में मनाईं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

—जगन्नाथ

बात हमरो ई कुछ सुनाइल ह
उनका अँगना बहार आइल ह
आँख झटके से सब उगिल दिहलस
जवान से जे सब कहाइल ह
गाँव के गाँव हो गइल बा दफन
देख एह सहर के जनाइल ह
खोज इन्सानियत के जारी बा
खनतलासी अबे लियाइल ह
गजल लिखे के गर्व कहाँ हमरा
रउरे चलते त सब लिखाइल ह

□ स० महाप्रबंधक, दूरसंचार, पटना

गजल

—राधिका रंजन सुशील

आँख नम हो गइल देखते-देखते
दिन खतम हो गइल देखते-देखते
नाम जेकरे रहे लाजवंती उहे,
बेशरम हो गइल देखते-देखते
फंड आइल रहे लोक कल्याण के
सब हजम हो गइल देखते-देखते
प्यार के दीप के लव बढ़ल एह तरे
घर भसम हो गइल देखते-देखते
लोग इंसान बूझत बा हैवान के
बा भरम हो गइल देखते-देखते
पाप जवना के बूझत रहीं आज ले
ऊ धरम हो गइल देखते-देखते
पाँव छू के कन्हैया के यमुना के जल
फेर कम हो गइल देखते-देखते
हाल आपन 'सुशील' आज का हम कहीं
नाक दम हो गइल देखते-देखते

□ गाँधी नगर, बोरिंग रोड, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत

—अनि

पंछी उड़त गगन छिछिआए।
अइसन उठल बवन्डर अन्धर,
जाना कहाँ, कहाँ चल जाये॥
खोंता टूट बिखर उधिआइल,
ना निशान कुछ जगह चिन्हाये॥
पँखिया थाके ताके चहुँ दिसि,
भरमत भटकत ठउर न पाये॥
बिख से भरल हवा धनकत बन,
कटे बिरिछ जग जाल बिछाए॥
बिमल सोत लउके ना कतहूँ,
का उतरे प्यासा रह जाए॥
भरे नयन दिल दया न तनिको,
ई जगवा से जी भर आए॥

□ डीहीं (

अँखफोड़ भइल गेदा

—डॉ० वीरेन्द्र नारायण पा

आँधी-झकोर से उजड़ गइल खोंता
भुईयागिर के लोटत-छटपटात
चेंव-चेंव करत गेदन के
अँखफोड़ ना भइला आ पाँख ना जमला से
उड़ ना पावे के रहे लाचारी
आँधी के थम्हते
बिलार के घात करे के पहिले
चोंच में दबा के चिड़ई पहुँचावे लागल
गेदन के पतइन के अलोता
घास-पात जुटावे में अझुराइल चिड़ई
भुला गइल आँधी-झकोर के दुःख-दरद
नया बनल खोंता में फुदके-चहके लगलनस गेदा
अँखफोड़ भइला आ पाँख जमला पर
गेदन के मिल गइल खुलल आसमान
छूट गइल ओकनी के बिलार के कौर बने के डर।

□ शास्त्री नगर रमना, मु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत

—अशान्त

भोर के पहर करेज कोर से
एक दर्द बज रहल झँकोर से।

प्यार से भरल नवल दुलार से—
रागिनी छलक रहल पहाड़ से—;
छँट रहल धुँधा-धुवा घिरल घटा
ज्योति झिलमिला रहल अन्हार से।

सज रहल गुलाल लाल गाल पर
प्राण जगमगा रहल अँजोर से।

तान मंद्र बज रहल समीर पर
विश्व के विकल तरंग तीर पर।
प्रीत के पराग अंग राग बन;
आग बुझ रहल अधीर मींड़ पर।

शूल के सुभाव ढल रहल मधुर
फूल बन रहल जहाँ हिलोर से।

आदमी विनाश से डरल कहाँ
पी रहल गरल मगर मरल कहाँ;
त्याग कर दिहल शरीर दान में
किन्तु सत्य पंथ से टरल कहाँ।

बाँसुरी विवेक एक बज रहल
विश्व के अनंत ओर-छोर से।

धार के अलग-अलग बहाव बा
एक धर्म सिंधु के पड़ाव बा;
व्यर्थ बा दुराव द्वेष भाव सब
जब महान प्रेम से लगाव बा।

आज कंठ-कंठ के पुकार पर
बँध रहल मनुष्य नेह डोर से।

□ आर्मो, सारन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शिक्षित बेरोजगार

—मिथिलेश शर्मा 'मधु'

इयाद बा ऊ लड़िकाँई,
जब से,
शुरू भइल हमार पढ़ाई।
बाबूजी,
सिलेट पेन्सिल धरा देलें,
स्कूल में
दाखिल करवा देलें।

तब से,
रोज स्कूल जाय लगनी,
औकात से ज्यादा,
किताब के लादना ढोय लगनी,
पढ़े लगनी
दुनिया में,
आपन पहिचान बनावे खातिर,
लड़े लगनी।
जेठ के गर्मी, सावन के बरखा,
आ पूस के पाला के
गम ना कइनी।
रात-रात भर जग के
पढ़नी।
बाबूजी खून-पसेना के कमाई
से,
फीस जुटवलें।
माई,
अपने भूखे रहके,
हमके खिअवली।

हम,
पाँच बरिस से तीस बरिस
पढ़ाई में गुजार
देली।
रउआ पूछब
हम कोंकरत बानी?
जवाब बा,
एने ओने छिछिआत बानी
आज हम हो गइनी
मजबूर,
सब सपना हो गइल
चकनाचूर।
आज हम बाबू-माई के
बुढ़ापा के बोझ,
उठावे के बदला,
ओह लोगन पर,
अपना बेकारी के
बोझ,
लाद देनी।
बाबूजी के खून पसेना,
माई के दुलार,
हमार साजल सपना,
सब बेकार।
हम,
बन के रह गइनी,
एगो,
शिक्षित बेरोजगार।

मे० उज्जवल ईन्ज० वर्क्स, कंकड़बाग रोड, बहादुरपुर गुमटी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

मोफिला

—कुमार अरुण

ऊ ओकर हाथ ममोर के ओकर पंखमोर तकले ले आइल रही...बाँह के मछरी रस्सी नियन अईंठ गइल रहे। मोफिला चाहित त, एकदम सुभीता से, अइसन ना होए दीहित। ओकर देह के अगाड़ी ऊ अधियो ना रही आ उमिर में त साइत तिहाइयो ना। तेहू पर जुलुम करे खातिर उनकर तरहथी बहुते बउकार रहे। मोफिला भोंकार पार के रोए लागल रहे। अइसन हम कबहूँ ना देखले रहीं—एगो लड़की से एगो आदमी के पिटात ना, बलुक ओकरा एतना अछुघाह होके रोअत··· एह में केतना मार के ओजेह से रोआई रहे आ केतना भूख के ओजेह से, एकर फसिला अपने मोफिलो खातिर आसान बात ना रहे। दरअसल एगो भूखे बा जउन मोफिला से ना अड़ाए। बिना खइले ऊ कहीं टकसहीं के ना चाहे···सरब धधा ऊ कऽ दीही, बलुक हाउए हाउ करी, बाकिर बिना गवत उठवले खेत पर जाए के नाँवे सात घइला पानी पड़ जाला ओकरा देह पर। एने केतना दिन से अइसन हो रहल बा कि हेने ऊ बधार में जाला, होने से साहेब आ के सरब भात खा जाला। आ जब ऊ लवट के फिरता आवेला त साहेब अजबे बेलज्ज लेखा दाँत चियार के हँसे लागऽले, बुद्का बड़ा भूखाइल रहनीं मोफिला—साहेब ढेकारेला। ओकरा से जेतना वेर पूछऽ, ऊ ढेकारी जरूर। अइसन साहेब ऊ कतहीं नइखे देखले। गाँव से कतहीं बाहरे नइखे निकलल, देखी का खाक··· रेलवे के इजिन तकले नइखे देखले। आ गाँव में ले देके इहे एगो साहेब बा—कानूनगो साहेब, जे 'इनरा गान्हीं' के 'मरजेंसी' में 'कंपलसरी टैरमिट' में धरा गइल रहे। अब ऊ साइकिल के केरियर पर सिक्कड़ लदले जमीन के नापी करत फिरऽले, आ 'जे बा से कि, दू घड़ी रात तकले मुल्झर के फेरा में छिछियात फिरऽले। एही से मोफिला के दिनों में खाए के कउनो ठेकाना ना रहे, आ रातो में ना रहे।

साहेब जब ढेकारेला त मोफिला के मगज पर जइसे सनक सवार हो जाला। ऊ एकबेंगे लड़की के झिझोरे लागऽले। ओकरा से आपन बाँह छोड़ा-बऽले। धसोड़ देवऽले। आ सोझे साहेब कोरी माथा कइले धउड़े लागऽले, जइसे साहेब के बीच में से फाड़ के निकल जाई। बाकिर अधबीचे में साइत ओकर मन बहर जाला। ऊ साहेब के बगलिया के धउड़त चलल चल जाला, तनिका दूर तकले···फेनू तनिका दूर से फिर आवेला। अइसनो बिकट हालत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में भूख के चिंता ओकरा से ना बिसराए। ऊ भइँसी के नादी में से रातें के बुत्ता बल टटाइल रोटी निकालऽले, आ फुदगुदी नियन एक-दू पार-नपत्ता हो जाए। फेनू चाहे कोटिनो उपाय करऽ ताड़ के भेंट सियार से ना होला।

घरुआरिन जनीजात सभ रात में बाँचल-खुचल रोटी लिआ के मोफिला के देऽली कि जा के भइँसी के नादी में ना आव, त ऊ जा के नादी में त आवेला, बाकिर एकरा पहिले ऊ भइँसी के खूँटा पर से उतार के राम ओसबरांव में बान्ह आवेला। ओकर खाना उहईं पड़ल रहेला। कबहूँ-कबहूँ एकदम अधरतिया के मोफिला के भूख जाग जाला, तब ओकरा उहे भइँसि आला रोटी खाए के पड़ेला। ई ओकरा बड़ा जबुर बुझाला। बाकिर करो, 'आमदी' के देह घइले बा त खाना आ पैखाना इ दूगो भेवना त लाग रही। आ कबहूँ-कबहूँ त ओकरा खाइते बेरा पैखाना लाग जाला, त के पड़ेला। ऊ एकदम कपस जाला। आपन एतना खाए के ओजेह से बलुक खाहीं के बेरा ई बखेड़ा ठाड़ा हो जाला, एह से। जइसे ई बखेड़ा असली ओजेह ओकर एतना जास्ती खाएल ना, बलुक कउनो दोसर चीज का धोती टूंगत उठेला लमहर पाद मारेला··· सरब जनी जात ओकर निरह पर मुँह तोप के हँसे लागेली···

मोफिला फीर के आवेला त फेनू से आपन उहे ठंढा खाना पर त जाला।

अधरतिया तकले, जबले ओकरा दोहरिअउआ भूख ना लागे, ऊ स के गोड़ टीपत रहेला। ऊ कहेला कि साहेब रोजिन्ना लदनी कऽ के आवे साइकिल के केरियर पर सिक्कड़ लदले फिरेला—"जमीन नपाई? ल नपाई?"—गाँवे गाँव पूछत फिरेला··· मोफिला आपन मन के भड़ास गिरान के ओह सभ लोगिन का आगा निकालेला जेकरा से साहेब के हुं 'कंटेस' चलेला। लोग ई दोख लगावे में इचको कोताही ना करऽ कि साहेबा उल्टा-सुल्टा जमीन नाप के भर गाँवे बेमतलब टंटा ठाड़ा करा बा··· सभे से अमनख चलेला साहेब के। ओने साहेब के कहनाम बा जे ऊ लोग बाड़न जे ओकर नोकरी खइले बाड़न। मोफिला के ई लोग से पटेला। नया-नया खबर लेके ऊ सगरो छिपा तीरथ करत फिरेला।

···साहेब ओकरा मने ना करे। ऊ कछले रहेला। आँख मुँदले रहेला। फेनू सूत जाला। ऊ भर रात ई भरम में रहेला कि मोफिला के गोड़ रात भर जातेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उठ के मोफिला अगर जो सुरती बिसर जाला त खाना ना खाए। ऊ भर रात घर के रखवारी करत रहेला। साहेब के कुकुर जब भउँके लागऽले त मोफिलो से रहाइस ना होए। उहो भउँके लागले कुकुरे संघे भौं-भौं··· कुकुर बनल घउड़त फिरऽले। ऊ कहऽले जे अइसन कइला से ओकर खाना सुबिस्ता से हजम हो जाला··· ऊ कुकुर लेखा हाँकऽले। तू दूनो में कउनो फरक ना कर सकऽ, वलुक उ कुकुरो से निमन बोल लेवऽले—ओकर दावा बा।

बाकिर पछिला केतना रात से मोफिला बेमार रहे। ऊ भर-भर रात कहँरत रहत रहे। कहँरनई से साहेब के बड़ा दिक बुझाए, साहेबे रहे। ऊ मोफिला के, 'जे बा से कि', डाँट देवत रहे बेर बेर। मोफिला तनी देरी चुप हो जाए, बाकिर फेनू ओकर मुँह के टेप चालू हो जाए···ऊ कहत रहे जे हमार जात में अइसन रोग हिरगिसो ना होला, जेह मे कहँरलो-कूँथल मोहाल होखो। ओकरा बड़ा सकेत बुझात रहे। ऊ कहत रहे जे ओकरा जात में 'बेराम' पड़ला पर सेव मिलेला, 'बेरमिया' के···

आज मोफिला भर दिन सूते के चाहत रहे, बाकिर साहेब के ई बेटी मार-मार के ओकर देह के बत्था उतार देले रहे···आ ई त आपन मरदो के ना छोड़ेली। तनिको दनाइए नइखे। साइत एही से ऊ लोग इनका के छोड़ देले बा। कइएक बरिस से ऊ इहई बाड़ी। मरदे कबहूँ-कबहूँ आपन बेकत के सवांचे आ जालन इहवाँ। बाकिर इहऊँ ई उनका के ना छोड़स···अनेरे फजीहत होला। हड़होड़ मच जाला। धरहरिया पर धरहरिया लागेला। समूचा गाँव के जुटान हो जाला···कुटुम का करस, उनका सभ अवघट लीले के पड़ला। साहेब के दमाद जब आवेलन त लोग उनका के घेरले रहेलन। ऊ बात खूब मन जुकुत करेलन। ऊ जहाँ भेंटा जालन, मोफिला उनका गोड़ पर मुड़ी धऽ के पुक्की फाड़ के रोवऽले। ऊ सेध जरूर लिआवेलन।

बाकिर आज जो मोफिला चाहित त ई बात पर सोझे थाना पुलिस कर सकत रहे। केहू आपन नोकर के बिना खदी-बदी के ना मार सकेला"—ऊ कहेला कि ऊ सभ जानेला। उ कानूनगउओ के बाप ह—उ जोर देके कहेला। आ एक बेर त ऊ अइसने बात पर चल गइल रहे थाना। खिपटा के खँखोर के तनि हाथ में के चाम छील लेले रहे आ साहेब के अछरँग लगा देले रहे। इहो कम छहँत्तर नइखे। पुलिस में साहेब के बेटी के बोलहटा भइल रहे। बाकिर उनका जगहा पर साहेबे गइल रहे। ओह दिन ऊ आपन सरभिस आला डरेस पेन्हले रहे—खूब माड़ी देवल टैट जामा, गरदन में बान्हे आला जे बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से कि रामजी के हिच्छा से का कहल जाला —नकटाई, आ नीमन जूता ठेहुआ त कले कोट ··· मोफिलो ओकरा रोब में आ गइल रहे, आ हड़बड़ा साहेब के सैलूट मरले रहे। ओह दिन साहेब ओकरा छाती से लगा रहे··· बाकिर दरोगवा ओकरा दू हटर लगवले रहे—नीमक हराम साला आ अउरी नीमन-नेजाएँ ढेर कथी-कथी दू त कहले रहे··· खैर !

बाकिर अबकी मोफिला थाना ना गइल। ऊ धउड़ते गइल घर गइल···साहेब के खेत पर चल गइल। आन बेर ऊ खेत के डँरेर काट के बहवा देत रहे, बाकिर अबकी उहवाँ पानी-उनी ना रहे। ऊ ठाड़ा हो के ओरी नजर घुमवलस···साहेब के भइँसी दोसरा के जजात जिआन करत ओकरा साहेब के टिक्कर भइँसी दूरे से लउक जाला। ऊ जा के ओकरा लाइल। ऊ बकरी नियन घिचाइल चलि आइल, जइसे उहो मोफिला खड़जंत्र में शामिल होखो। ऊ भइसी के साहेब के खेत में हँका देलस आ निहचिन्ती से बोरिंग पर बइठ के भइँसियन आली टटाइल रोटी खि लागल। भइँसियो खुश आ मोफिलो खुश···फेनू बाँचल पेट के ऊ पान भर लेलस आ जा के बीच बधार में नीन से सूत रहल···चारो ओरी से के पेड़ पहरा देवे लागल···

जब एकदम गदबेर हो गइल त मोफिला उठल। ओकर अँतरी मर रहे। उ कान पर बीड़ी के टुटांग खोंसले आ कजरी गावते घरे आइल। के ठाड़ा हो गइल। साहेब के बेटी भइँसी के धोवत रही। कपड़ा बोथा रहे। मोफिला छोड़ देवऽले त सभ उनके कपारे पड़ेला। कुट्टी-सानी में बोझा गइल रहे। मोफिला के करे आला भारी काम अब ओरिया गइल ऊ लड़की से अइसहीं आपन खीस सधावले। साहेब 'चाह' पीअत रहे। मातर उ पहिले 'चाह' मंगलस। फेनू ऊपर से चीनी ला रिगिर कइल ऊ टुमुकल जे हमार जात में अइसन चाह ना बने। साहेब के मेहरारू तनि खखँरली, बाकिर साहेब हाथ से उनका बरज देलस। साहेब अपने कहल कइलस—"जे है से कि चाय हर जगह एक्के बनता है महफिल···" ऊ टाने लागल रहे। फरिआँता के बेरा साहेब हरमेसा साग नियन मोलाय जाला : ना त खाली पेटे पर अइसन जगँरगर नोकर अब कहवाँ मिलता···

मोफिला आपन मेहराएल भुचकुल्ली टुटांग आपन कान पर से उतारि सुनगावे लागल रहे···

☐ हिम्मतपुर फुलवारी, दिघवारा—८४१२०७, सारन, बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

गाँव के दरद

—रास बिहारी पाण्डेय

झाड़ झुरमुट के पार करत धूप पीपल के पेड़ पर ठहरि गइल थोरिका देर खातिर। पेड़ प बइठल आपस में चुहल करत सारस के जोड़ा चमचमात रहे सोनहुली धूप में। मन पंछी चहचहा उठल—कतना सुखमय जिनिगी बा पंछी के। आजकल त अदिमी के जिनिगी में बहुत तनाव बा। मन ही मन ई बात दोहरावत रमेश आपन निगाह एक बार फिर बशी से क्षितिज के ओरि ले गइलन। विचारन के उहापोह में कुछ पकड़ा ना सकल आ बेबस मन नदी के कछार पर उलझि गइल जहाँ गाँव के किशोरियन के घड़ा भरात रहे कुआँ के पानी से। नदी के पानी लाल हो गइल रहे. आ साथे साथे गाँव से आइल छोकरिन के सारी भी लाल हो गइल रहे। सुनीला अनुराग के रंग लाल होला, इहाँ त सब लाले लाल नजर आवत बा, अनुराग केसे लगावल जा—नदी के छोकरिन से, नदी के पानी से, आ कि फेरु पहाड़ के चोटी से। चूड़ी के खनकि सुनि के केकर मन ना सनकि जाइ। ई मनोहारी दृश्य रमेश के आँखिन में अटात ना रहे, टकटकी बँधा गइल। नदी के किनारे फइलल किशोरियन के सारी प पड़ल गोल रंग बिरंगी सारिन के छिटका-छिटकी रंग के छटा बसंत के आगमन के सूचना देत रहे।

बरबस रमेश के याद आइल कि आज से बीस बरिस पहिले एही बसन्त के पहिलका बयार के झोंका चूमे के पहिले हमार माई हमरा के चूम लेले रहे कि फेरू एक बेर झाँकि गइल मन बचपन जिनिगी के खिड़किन से, आ आपन बचपन के बितावल दिन। ओकरा लगभग चार-पाँच बरिस के बाद गाँव के नाता टूट गइल। बाबू जी कलकत्ता नौकरी करत रहन। रमेश के पालन-पोषण ओहिजे भइल। गाँव अनचिन्हार नियन लागत रहे। अपने गाँव के भिरिये रमेश के बिआह तय भइल रहे। रमेश अपने मेहरारू देखे आइल रहन।

चोरी से गाँव के लइकन संगे ऊ पनिघट पर चलि गइलन जहाँ लोग कुआँ से आपन-आपन घड़ा भरत रहे। हरि जी बतइलन—उहे जोखन के लइकी हउवे। सुनर आग नियन बरत मुखारी देखि के रमेश औंधिया गइलन, ऊ आपन सुधि-बुध खो गइलन। हरि जी के फेरू याद दिलवला पर होश आइल कि ऊ अलमति के देखे आइल बाड़न। गाँव के लइकिन सभे के मालूम हो गइल रहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि सोनमतिया के बिआह रमेश से होत बा। लइकी सभे के देखि के कहली सोनमति तोहार होखे वाला मरद नदिये में आइल बाड़न। सोनमति के सिमटि गइली, अब उनुका से गगरी नाहीं भरात रहे। बहुत देर बाद देखल आधा गगरी खाली रहे! माई बाट देखत होई, ई सोचि के होश सम्हारि पानी से भरल गगरी उठा के चलि देली अपना घरे ओरि। माई घर के खड़ा रहे। पुछलस—सोनमति अतना देर काहे भइल रहल! कपर सादा जिनिगी जिये वाली सोनमति कहली—माई नदी में आज कुछ अइसन आ गइल रहल ह कि देखे में देर हो गइल। माई सोनमति के बात ना सकली आ कहली—जो बिटिया जो, आग जोर।

रमेश के रात के नीन ना परल। एने ओने करवट बदलत भोर चाहत रहे कि थोरिका देर खातिर नीन में खो गइलन। ऊहो नीन एगो रहे जवना में आदमी आधा जागल आ आधा सूतल होला, बल्कि ई एगो नया संसार में होला जवन एह संसार से परे बा, अलगा बा। सपना के टूटला के बड़ा दुख होला, बाकिर सपना सपने ह आ ऊ खातिर ना होला अक्सर बीच मे टूट जाला। एहे भइल। रमेश सपना रहन कि हम नदी के किनारे शेरशाह के किला प दक्षिणी तरफ से बानी। हमरा साथे हमार मीत राजू बधू आ मुन्ना बाड़न जा। तक किला घूमला के बाद हम अंडर ग्राउंड वाला नाच घर में गइल ओहिजा एगो परी आइल जवना के देह सोना नियन रहे, अपना पख के हमके अपना लोक मे ले गइल जहाँ मनमोहक फुलवारी रहे, चार सुगंध बिखरल रहे, जेने मन जा ओहिजे अंटकि जा। केके देखीं केके ओहिजे फूल के परी के साथे सोनमति के देखि के अचकचा गइलन। सोनमति तोहार जिनिगी धनि बा। सोनमति के ना रहाइल त कहली हमरा के अपनाइबि, रउबा शहर के रहे वाला के शहरीन मेहरारू चाहीं।

रमेश कहलन— सोनमति ई कह के हमरा शर्मिंदा मत करा तोहरा खातिर आपन जिनिगी लुटा देब। आव जिनिगी भर साथ खातिर कसम खा। सोनमति कहऽ— गवाह ई गगन बा, गवाह ई धरती, अंजोरिया चाँद बा आ चाँदनी रात बा, हम भगवान से प्रार्थना बानीं हमार जब भी जनम होखे त तुहीं हमार जीवन साथी रहऽ। सपना टूटि गइल।

रमेश तीन-चार महीना गाँव में रह गइलन। ऊ सोनमति के आवे जाए लगलन। एक दिन सोनमति के माई रमेश से कहली— बबुआ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दू बरिस पहिले तोहार बाबू जी सोनमति के बाबू जी से तोहार रिस्ता तय कइले रहन। अब ना तहार बाबू जी बाड़न न सोनमति के। तूहीं हमरा आँखि के अँजोर बाड़। जाने कब ई दिआ बुता जाई। हमार जिनिगी नदी के किनारे के पेड़ नियन बा पता ना कब दह जाई। अगर जे तू सोनमति के मांग में सिंदूर दे देत त हम चैन से मर जइतीं। अब हमरा जिनिगी के इहे आखिरी अरमान बा। ई कहत सोनमति के माई के गला रुद्ध हो गइल। रमेश कहलन— माई तु बिसवास करऽ हम सोनमति के आपन बना लेलीं। ई कहत चिटुकी भरि सेनुर सोनमति के मांग रमेश भरि देलन। लागल ओह दिन के सपना साकार हो गइल। सोनमति के माई के ई दृश्य देखि के प्रेम के आँसू उमड़ आइल आ प्रान पखेरू दू छन में उड़ गइल। आज अइसने नवहन के जरूरत बा जे अनगिनत कुँआर सोनमति बिटियन के अथाह सागर में डूबत उतरात जिनिगी के अलम बने।

☐ कबीर साहित्य मंदिर, ग्राम + पोस्ट-भगवानपुर, रोहतास

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के सदस्य बने खातिर

१५ रु० साल भर खातिर/१५१ रु० जिनगी भर खातिर

शुल्क भेजीं।

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

के सालाना ग्राहक बने खातिर

तीस रु०/अगर सम्मेलन के सदस्य बानीं त बीस रु०

शुल्क भेजीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबन्ध

लाहिड़ी गइलन, आव ए गोविल !

—प्रो० हरिकिशोर

टी० वी० पर रामायण चलत रहे। घर आ पास-पड़ोस के मेहमान लड़िका-सयान से कमरा ठकचल रहे। प्रसंग रहे— मेघनाद आ लक्ष्मण युद्ध। सभे साँस रोंकले देखत रहे। एक-ब-एक ऊ महारथी राक्षस घर गरज के आकाश में उड़ल आ अलोपित हो गइल। ओकरा बाद? अइसन बरखा कइलस जइसे झुण्ड के झुण्ड साँप फुफकारत आवत हो लक्ष्मन जी पैदल, धरती पर। अंत में मेघनाद क्रोध में आखिरी दे देलस शक्ति। मूर्छित होके लक्ष्मण जी जमीन पर गिर गइलन। कवनो कोना से एगो लड़िका बोलल— लाहिड़ी गइलन, आव ए गो दूसरा मनाक से लागल, अचकचा के देखलीं। बगल में ईआ अँचरा से आँख पोंछत रहली। हमरा मन में एगो सवाल के खँइक गड़ गइल।

का वजह कि रामायण के जवन दुख ईआ संभार ना सकली, ओ के एगो कवलेजिया खातिर मजाक हो गइल? ईआ लाहिड़ी में लक्ष्मण देखली, आ ऊ लक्ष्मण जी में लाहिड़ी के देखलस। कवन सही बा— लोराइल आँख कि कवलेजिया के ठट्ठा? हमरा स्वर्गीय कन्हैयालाल लाल मुंशी के कुछ लाइन इयाद पड़ल— Sri Ramchandra and Sita about in a canoe, we move about in giant airlines. They bark clothes and walked on foot, we have nylon to wear giant airlines to travel in ... ... But he would certainly bold man who would say that he has more of culture than Ramchandra or Sita had. (श्री रामचन्द्र आ सीता नाव के सवारी लोग, हमनी बड़का जहाज के करत बानी। ऊ लोग छाल के कपड़ा पहिरत हमनी का पहिने के नाइलन बा आ घूमे के बड़का हवाई जहाज।... ऊ सँचहू बड़ा ढीठ आदमी होई जे कहे कि ओकरा पाले श्री रामचन्द्र आ सीता से अधिका संस्कार बा।)

हमरा समझ से ओह लड़िका के आपन कवनो कसूर नइखे, हमरा चौंटाह होय त होय। हमरा हिसाब से अभिनेता छोट होला आ अभिनय बड़— तत्रँको तायको सुरः। कला चाहे साहित्य के ईहे लक्ष्य ह— देह के उतारन, शब्द में शब्दातीत के पकड़े के जतन। मगर अभिनेय से अभिनय बड़ हो जाय तब? तब ओह लड़िका के कवन दोष? दोष हमार बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजादी पवलीं त उमंग में अतना इत रइलीं कि एगो घातक गलती हो गइल। हम माथे चढ़वलीं धर्मनिरपेक्ष प्रजातन्त्र के। ई खराब बात ना रहे, बाकिर रोग का हिसाब से पथ्य ढेर कड़ा रहे। पच्छिम विज्ञान आ प्रजातन्त्र के विकास अपना माटी से कइले रहे। ओकर धर्मनिरपेक्षता इतिहास पर टाँकल कबंनो प्लास्टिक के फूल ना रहे। ऊ सीजर खातिर आपन देह आ पोप खातिर आपन आत्मा सौंपे के लूर धीरे-धीरे सिखले रहे। आ हम? हमरा सामने सवाल ई ना रहे कि प्रजातन्त्र चाहे धर्मनिरपेक्षता के ताल-मेल अपना इतिहास से कइसे बइठाई। हमरा त हुदबुद्दी लागल रहे, हमरा नजर में हमार इतिहास एगो कैंसर रहे, डेराये-घिनाए के चीज रहे। दुनिया का नजर में हमरा के हीन करेवाला, हमरा पूर्वजन के बुरबकही आ असभ्यता के कथा रहे। गाँधी जी का जिनगी तक ई बात ना रहे, बाकिर ओकरा बाद त होइये गइल।

ओकरे आज नतीजा बा कि लाहिड़ी चाहे गोविल के बम्बई के बंगला, इम्पाला गाड़ी, जीन्स, चले-बोले, खाये-पीए के अंदाज का सामने रामजी आ लक्ष्मण जी ओइसहीं लागत बाड़न जइसे ताजमहल का बगल में पलानी। भगवान के वनवास में देह के दुख देवे के बुरबकही त हमरा लउकत बा, आत्मा के रोमान्स लउकते नइखे। भोग खराब चीज ना ह बाकिर संस्कृतिछिन्न भोग कान कटा के बोका भइल ह। भोगवादी भइल ठीक ना ह, मगर हम मनलीं ना। हम त ओही ओर हो गइलीं जवना का खिलाफ हम देवासुर संग्राम कइले रहीं, रावण के लंका जरवले रहीं आ सूच्यग्र नैव दास्यामि सुन के कहले रहीं कि अच्छा, त अब होई महाभारत। अपना पुरखन के टाँगल सब तस्वीर उतार-उतार के फेंकत गइलीं— रामजी के, कबीर के, रसखान के, विवेकानन्द के, कुँअर सिंह के, गाँधी के, निराला के— सब झूठ, सब नीरस लागल। ओह जगह पर साँच आ मन लायक तस्वीरन के टँगलीं— ओनीडा टी० वी० के; राजदूत मोटरसाइकिल के. हम दो हमारे दो के, अपना बने वाला मकान के नक्शा के।

अइसन मन के असर हमरा शहर आ गाँव दूनू का जीवन पर त पड़हीं के रहे। नतीजा सामने बा आ बुझात नइखे कि आगे का होई। हमार शहरी मन उद्योगवाद के उपज बा। एकर भाव आ शब्द ओह चीजन के उजागर करत बा जवन आज के जीवन के घटक बाड़न स। ई जीवन कइसन बा? ई बा पोस्टर, प्रचार, सिनेमा, टी० वी०, अखबार, कुर्सी, क्लब, टेम्पो-बस, होटल बजार आ काम का नाम पर फाइल के पहाड़न, सरकारी-गैर सरकारी गष्ठि-बन, जयंतियन आ भाषणन के जीवन। एह जीवन में हमनी अपना मने चलतो नइखीं, आ जे चलबो ना करे ऊ बोलबो का करी! अगर ऊ बोलतो बा त का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊहें बोलत बा ? हम जियाजी चाहे विमल के कपड़ा के गुण गावत बानी से ना कि हम ओकरा के छू-परख के देख लेले बानीं कि ऊ अच्छा बा, एह से कि हमरा टी० वी० पर कवनो फिल्मी रूप रोज कहेला— रउए खातिर बा। हम बूझतो बानी की एकर अजगुत अरथ बा— खातिर। हम जानत बानी कि मारुति हमरा बस के नइखे, बाकिर नीम पड़त काहे कि हमरा पड़ोसी का पाले बा लोग का कही ! अइसन बोलियो प्रचारे के होखे त अचरज का बा ? एकर दिमाग चाहे अनुभव के होखे त का अजगुत ? अगर ई फिल्मन के मुहावरा चोरा लेले बा त का बा ? नतीजा बा कि मुख्य हिन्दी के छात्र भइलो पर अगर ऊ लिखत बा त बगइचा में प्रेम नइखे करत, बादी में इश्क करत बा; मदन के बाण नइखे मारत सीना पर खंजर चलावत बा। ई उर्दू के प्रेम बलुक ओकरा बहाने फिल्मी दुनिया से जुटे के सुख ह। एह नकल के नतीजा ई होता कि खजर टेढ़ होके खजड़ हो जाता आ इश्क सूख के निसा अतना चढ़ल बा कि हमनी भाव आ भाषा दूनू मे सेकेंड हैण्ड जीत रहल बानी। सब कुछ फिल्म चाहे अखबार से आ रहल बा आ हम कोश बना रहल बानी। व्यक्तित्व के ओज गाढ़ भोग का ताकत मे से बने सोना बने खातिर अनुभव का आवा मे पाके के होला। आज के शहरी के जवन 'सिडेण्टरी लाइफ' बा ओहमें ई असम्भव बा। ईहे वजह हमार भाषा आज सब कुछ कहियो के कुछ कह नइखे पावत। छुरा पर चले से बचे वाली सभ्यता के अभिव्यक्ति नौटकी से अधिका कुछ ना है।

अत में हमरा गँवई जीवन के हाल। आजादी के बाद गाँव के बिरिछ, चँवर-चाँचर, चिरई-चुरग त ऊहे बा बाकिर आदमी इहवों सहमल रहल बा। शहर ब्लॉक बनके गाँव मे घुसल आ एगो पक्की सड़क आ तार के बिजली के कुछ खभा देके हमार चइता-कजरी, रामायण— सब छीन ले गइल। संस्कृति के छान तूड़ के हमार गाँव मरखाह भइसा बा। भोर में बगइचा मे घूमत आजो एकरा लिलार पर महुआ टपक बाकिर ओह रस में एकरा वृन्दावन इयाद नइखे आइल। ई उख का आजो खरहा उड़त देखे ला, बाकिर एकरा आँख में ब्याधा के भूख चमक ओह उड़त सुन्दरता मे एकरा सोना के मृग के कथा इयाद ना पड़े। एकर अब देहे तक बा। एह से ई ठठा सकत बा, रो सकत बा, डण्टा उठा सकत बाकिर अपना जैविक प्रतिक्रिया के इतिहास से जोड़ नइखे पावत। आज मूल्य-प्रतीक बनावले संस्कृतिबोध ह। इयाद का दूध के जरल जे होला वर्त्तमान के छाँछ फूँक-फूँक के पीयेला। जीवन भा साहित्य के नयापन के बदलल ना ह, बीआ के गाछ-फूल-फल में बदलल-बढ़ल ह।

□ अंग्रेजी विभाग, जगदम महाविद्यालय,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आचार्य मनोरंजन

—डॉ० धीरेन्द्र बहादुर चाँद

(गतांक से आगे)

कवि मनोरंजन के तीसर काव्य संग्रह 'संगिनी' ह जेकर प्रकाशन पुस्तक भंडार लहेरियासराय, से विक्रम सं० १९९९ में भइल रहे। एह संग्रह में चौबीस कविता बा जेकरा में श्रृंगार अपना ऊंचाई पर पहुँच गइल बा। कवि अपना संगिनी के श्रृंगार के दूनू पक्षन के महत्व देले बाड़न। 'फागुन सुदी दूज', 'मधुर-मिलन', 'आत्मसमर्पण' कवितन में 'मानिनी' के मान के मरदन कर के संभोग के आयोजन कइल गइल बा। 'प्रोषितपतिका', 'अनागतपतिका', 'वर्षा वियोगिनी', 'नीरव उपहार', आगतपतिका, प्रवत्स्य-पतिका कवितन द्वारा वियोगिनी के वियोग के परिचय विप्रलंभ श्रृंगार में भइल बा। पूर्वराग विप्रलंभ, मान विप्रलभ आ प्रवास विप्रलंभ के सुन्दर चित्र सभ जगह ई पुस्तक में मिलत बा।

एकरा अलावे मनोरंजन बाबू के अधिकांश कविता जे अप्रकाशित बा उनका डायरी के पन्ना में पड़ल बा। एक बार बारह कवितन के संग्रह 'द्वादशी' मनोरंजन बाबू शिवपूजन सहाय के छापे खातिर देलन, मगर न जाने कउनसे शिवपूजन जी से खो गइल पता ना चल सकल। मनोरंजन बाबू अपना याद से डायरी में 'द्वादशी' के गीतन के संग्रह क देले बाड़न।

मनोरंजन बाबू के भोजपुरी गद्य-साहित्य के मुख्यतः तीन विधा में बाँटल जा सकेला—

(क) निबंध साहित्य जेकरा अन्तर्गत विचारात्मक निबंध, आलोचनात्मक निबंध आ संस्मरणात्मक निबंध बा;

(ख) यात्रा-साहित्य आ

(ग) डायरी-साहित्य।

विचारात्मक निबंध में—'मा माया का खिलौना', 'बाबा और नाना', 'कायस्थ कौन नहीं', 'सभी शूद्र हैं सभी द्विज हैं', 'विधि चतुरानन होय' आदि निबंध आवत बा। एह निबंधन में मनोरंजन बाबू व्यावहारिक शब्दन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दर्शन के रंग के अपना मनोरंजनी व्याख्या द्वारा शब्द-ब्रह्म के परिचय
बाड़न।

आलोचनात्मक निबंध में—बिहारी संबंधी निबध बा। बिहारी के
दोहा के एकसूत्र में ला के मयाकथा क्रम के सृजन करे के क्रिया मनोरं
के बड़ा सराहे ला बा। संस्मरणात्मक-निबंधन में "मैंने लोकमान्य ति
देखा", बापू का बलिदान', 'बाबूजी', 'शिवपूजन जी एक संस्मरण',
शिवजी' आदि निबंध आवत बा जेकरा में साहित्यकार अपना अटल वि
आ आस्था के परिचय देले बाड़न। मनोरंजन के यात्रा-साहित्य 'उत्तरा
पथ पर' ह जेकर प्रकाशन १९३९ ई० में पुस्तक भंडार लहेरियासरा
भइल बा। ई पुस्तक दिनचर्या के रूप में बड़ा ही रोजक ढंग में
गइल बा।

मनोरंजन बाबू के आखिरी गद्य विधा डायरी-साहित्य बा। डॉ०
राय बच्चन के कहनाम बा—"प्रायः डायरियां प्रकाशित करने के ध्येय
लिखी जातीं पर जब वे प्रकाशित होती है तो उनमें स्वाभाविकता,
सरलता और सजीवता का वह गुण पाया जाता है जिसके लिये सचेत
कार झख मारता है।" जहवां तक मनोरंजन के डायरी के सवाल बा
उनकरा डायरी में सहित्य के सभ श्रेष्ठ गुण के समावेश बा। उनकर
सबसे खास विशेषता ई बा कि उनकर लम्बा जिनगी आ व्यक्तित्व के
असुन्दरता के पूरा आ प्रामाणिक दस्तावेज बा। जिनगी के आखिरी
स्व० महेन्द्र शास्त्री से प्रेरणा पा के मनोरंजन बाबू आपन आत्मकथा
भोजपुरी में लिखे के व्रत लेले रहलन। अभी आपन आत्मकथा थोड़के
रहलन कि मउअत उनकरा के धर दबवलस। ई हमार विश्वास
अगर मनोरजन बाबू के डायरी-साहित्य के प्रकाशित क दीहल जा
हिन्दी आ भोजपुरी-साहित्य के एगो अमूल्य निधि होई। हम मनोरंजन
के व्यक्तित्व आ कर्तृत्व के सचमुच मूल्यांकन करे के चाहत बानी त
डायरी के पन्ना के उलटे के पड़वे करी। उनकर डायरी बहिरन्तर
शब्दमय पटकथा ह।

मनोरंजन जी के महतारी-भाषा भोजपुरी रहे। ऊ लिखले बाड़न
भोजपुरी हमार ह भाषा
जइसे हो जीवन के स्वांसा।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनकर विचार रहल—'भोजपुरी हमनी के महतारी भाषा ह। अगर आपन महतारी गरीब होखे तब हम कवनी दोसर के धनी महतारी के आपन महतारी ना मान लेब। एह से भोजपुरी के ठुकरावल ओसही शिकायत वाली बात बा जइसे केहू कहे कि भारत गरीब बा एह से हम एकरा के आपन मातृभूमि ना मानब।

मनोरंजन बाबू के एगो आउर विचार बा कि 'भोजपुरी हमनी के माथा के बिंदी ह।' अगर चोख से चोख मेहरारू अपना के जेवर-गहना से लाद ले, एक से एक चमकेवाला कपड़ा पहिर के अपन सजावट-सिंगार कर ले, मगर अपना (माथा) लिलार में बिन्दी ना लगावे त ओकर रूप आँखि के चौंधियावे आ अझुरावे वाला कबो ना होई, ठीक ओसही सब साज-बाज भाषा में रहो मगर भोजपुरी बिन्दी बिना सभ बेकार बा—

'कबो संस्कृत कबहू हिन्दी
भोजपुरी माथा के बिन्दी

मनोरंजन बाबू भोजपुरी भाषा में बहुत गंभीर आ गूढ़ रचना कइले बाड़न। उनकर सभ भोजपुरी साहित्य के दू भाग में बाँटल जा सकेला—

(क) पद्य-साहित्य आ (ख) गद्य-सहित्य।

मनोरंजन बाबू के सम्पूर्ण भोजपुरी पद्य-साहित्य के पाँच भाग में बाँटल जा सकेला—(क) भक्ति काव्य (ख) दार्शनिक काव्य (ग) राष्ट्र प्रेम संबंधी काव्य (घ) सिंगार काव्य आ (ङ) व्यंग्य काव्य आ फुटकर काव्य।

(क) भक्ति काव्य के अन्तर्गत—'सुख-दुख', 'अहंकार', 'नाम कीर्तन', आत्म-निवेदन, राम-भक्ति, कृष्ण-भक्ति आदि कवितन के राखल जा सकेला।

(ख) दार्शनिक काव्य के अन्तर्गत—'अइसन ना होई', 'हम नाही चाही लो कि' 'हमरा नाचि के बड़ले बा', 'अतने काम हमार बा', 'सवाल-जवाब', 'ए बाबू हम उहे बानी' 'रे मनुआ', 'घोड़ा भागल जाता', 'खेलवाड़ी लाला', 'बाबा हो बाबा', '' 'ई' ह देह अउरि 'ऊ' हम ह'', 'अबका होई हो राम', आदि शीर्षक कवितन के राखल जा सकेला जेकरा में मनोरंजनी-व्याख्या में ब्रह्म, जीव, प्रकृति आ जगत के व्याख्या कइले बाड़न।

(ग) राष्ट्र-प्रेम संबंधी काव्य में 'फिरंगिआ', 'बापू कइले पुकार', 'भारत की निराशा', 'काशी वर्णन' आदि युग-चेतना से भरल कवितन के राखल गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(घ) सिंगार-काव्य के अन्तर्गत 'तब के जवान अब भइले पुरनिया', 'रस मिलेला', 'हड़बड़ कइले गड़बड़ होई' आदि कवितन के बा; आ

(ङ) व्यंग्य काव्य भा फुटकर काव्य में 'एमेले ओमेले', 'एमेले बदनाम एकर नाम' चलाव मोटर लारी, जी० जी० एम पी०, गांधी के खटाई में पड़ गइल, रामे राम, 'हंस चलता काहे बगुला के चाल', उड़ता जहाज हवाई', 'बेआलिस दहाई चार सौ बीस', 'कांग्रेसी बाबू मिनिस्टर जी', कौआ-गीत आदि कवितन के स्थान आवत बा।

भोजपुरी गद्य-साहित्य में मनोरंजन बाबू के विचारात्मक लेख, आ वक्तव्य बहुत पावल जात बा। कितावन में एगो दुनिया बसल बा, जनि करीं, 'मैदनवा के ओर' आदि एकांकिअन में मनोरंजन बाबू आपन पकारिता, वस्तुउपयोगिता, राष्ट्र-प्रेम, रस-भाव-प्रवणता, उपदेशप्रियता, प्रेम आदि साहित्य के सभ धर्म के समावेश समान रूप में कइले बाड़न।

उनकर सस्मरण भी बड़ा रोचक बा—'अंजोर' पत्रिका के १९६३ ई० में 'सरधांजली अंक' में 'तीन के सरधांजली' शीर्षक से राजेन्द्र पंडित राहुल सांकृत्यायन आ शिवपूजन सहाय के सस्मरण भोजपुरी छपल बा। एकरा अलावे मनोरंजन बाबू के भोजपुरी भाषा के पत्र शैली बड़ा अनोखा बा। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद के मरला जे ऊ बच्चन के समान भरल कंठ से 'अब हमरा के मुनमुन के कहीं' उद्गार 'भोजपुरी पत्रिका के सम्पादक रघुवंश नारायण सिंह के लिए भेजले बाड़न, ऊ भोजपुरी पत्र-शैली के अद्भुत उदाहरण बा। दोसर पत्र भोजपुरी में महत्व के बा ऊ सम्पूर्णानन्दजी के पास लिखले बाड़न। मगर पत्र न जाने कहां गुम हो गइल बा? डायरी के पृष्ठ में ऊ पत्र के रूप गइल रहे।

एह तरह मनोरंजन बाबू के व्यक्तित्व आ कृतित्व के कुछ क्षण के लेखाटन हम कर सकल बानी। उनकर ऋतंभर व्यक्तित्व आ राग-विराग के संगम पर लहरात उनकर ऊर्जस्वी आ दिव्यात्मक कर्तृत्व के वंदना करके हम मौन होत बानी इति शिवम्।

☐ श्याम भवन, मोना, छपरा, बि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिवंगत भोजपुरी सेवी

रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' : यथा नाम तथा गुण

—ब्रजभूषण मिश्र

आज के युग में नाम के अनुरूप करनी करेवाला भा करनी के अनुरूप नाम वाला व्यक्ति मिलल, भगवान मिलला के बराबर बा। बाकिर एही युग में यथा नाम तथा गुण चरितार्थ करेवाला एगो विभूति—रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' के हमरा खाली दर्शन ना, सामीप्य भी मिलल रहे; उहाँ से असीसो मिलल रहे। साँच मानीं त रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त' के 'रामदेव' गौण हो गइल रहे आ 'अलमस्त' विख्यात।

'अलमस्त' के अर्थ होला— जे होश में ना होखे, मतवाला, बेफिक्र। साँचहूँ जे अलमस्त जी के नीयरा से देखले-जनले होई, ऊ जानत होई कि ऊ केतना मतवाला रहस। ना उनका अपना भूत के कवनो पश्चाताप रहे, ना वर्तमान के होश रहे, ना भविष्य के चिन्ता। उहाँ के अपना खातिर कबहुँ सोंचत, हम ना पवलीं। उहाँ का त साहित्य प्रेम में मातल सूफी फकीर रहीं आ आपन हर तरह के घर-घेरा जरा के कबीर हो गइल रहीं।

चम्पारन (अब पूर्वी चम्पारन) के गोविन्दगंज थाना का दुबे टोला गाँव में एक जमीन्दार परिवार में ९ अगस्त १९१९ ई० के आसपास जनम लेला से लेके २ फरवरी ८७ में जमशेदपुर के मानगो महल्ला का एक कोठरी में इतवाल तक उहाँ के जिनगी में केतना ना उतार-चढ़ाव आइल। बाकिर, ओह उतार-चढ़ाव के बिना विचलित भइले उतरत-चढ़त उहाँ का ओह पार पहुँच गइनी।

अलमस्त जी के सोहरत अइसे-ओइसे ना रहे। ई त सबके जानल बात बा कि चम्पारन से आजाद भारत के एगो बहुत बड़का अध्याय जुड़ल बा। महात्मा गाँधी अपना आजादी के लड़ाई के शुरूआत चम्पारने के माटी से कइले रहीं। ओह धरती पर जनमल अलमस्त जी भला होश सम्हरला के बाद बिना प्रभावित भइले कइसे रहितीं। उहाँ के जगह-जगह लोग के जगावत चललीं, भइया जागऽ, तहरा घर में अंगरेज रूपी चोर घुस आइल बाटे, जवन सब माल-खजाना लूट के ले जा रहल बा—

तोहरा घरवा में घुसल बाटे चोर
अँजोर कर के देखऽ भइया।
× × ×
चानी लुटलस, सोना लुटलस
लुटलस माल खजाना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन जन-जागरण के बहुत गीत अलमस्त जी जगह-जगह कु चललीं। आजादी मिलल। कमजोर आ शोषित पीड़ित तक एह आजा संदेश पंहुचावे में उहाँ के पाछे ना रहनी—

जाग-जाग देतचिअरा रे
आजादी आइल निअरा रे

अलमस्त जी हिन्दी साहित्य में एम० ए० कइले रहीं। १९५२ ई वीरगंज (नेपाल) में एगो कालेज खुलल, जवना में उहाँ का हिन्दी के अ हो गइनी। उहाँ, उहाँ का कइ गो कवि गोष्ठियन के आयोजन कइनी। के भोजपुरी गीत सुन के लोग बहुत प्रभावित होत रहे।

नेपाल में राजा महेन्द्र वीर विक्रम शाहदेव के राजतंत्र रहे। भा देखा-देखी प्रजातांत्रिक शासन बहाल करे खातिर उहाँ का लोग के सुगबुगाहट त रहे, बाकिर खुलेआम विरोध के हिम्मत ना रहे। अलमस्त जी भला कब चुप रहे वाला रहीं। बिना ओकरा परिणाम के के, बिना आग-पाछ सोंचले राजा महेन्द्र के खिलाफ उहाँ का कविता आ सार्वजनिक रूप से प्रसारित कइनी—

ई कनहा राजा विनास कइलस देश के।
जस-जस आवेला,
हुकुम चलावेला,
डर बा ना मानुस महेश के,
पूजेला गोबर गनेस के।

अलमस्त जी के कविता आग में घीव के काम कइलस। राजा के से सूटिंग-वारन्ट हो गइल। कुछ हितैषी लोग उहाँ के नेपाल छोड़ा के भेज दिहल।

उहाँ का १९५७ ई०. में आम चुनाव में खड़ा भइनी। अकेलहीं दु दुआरी भोटो माँगी, माइक लेके प्रचारो करीं। उहाँ के विचार में चुन धन आ जन के प्रयोग उचित ना रहे। बाकिर उहाँ के जीते के त जीतबो नाहिए कइलीं।

एकरा बाद अलमस्तजी मुजफ्फरपुर जिला के साहेबगंज में एगो स्कूल के शिक्षक हो गइनी। साहेबगंज के साहित्यिक-सांस्कृतिक चेत जगावे में अपने के लमहर हाथ बा। अलमस्ते जी के चलते साहेबगंज तमाम भोजपुरी-हिन्दी कवियन के सुन पावल, आचार्य जानकी वल्लभ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection: Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबा नागार्जुन, आरसी प्रसाद सिंह जइसन साहित्यिक विभूतियन के दर्शन कर पावल। साहेबगंज के एक-एक लोग का मन में श्रद्धा भाव, अलमस्त जी के प्रति रहे। इहाँ के निर्मल सोभाव के चर्चा अपना गाँव-घर में जेठ लोग से सुने के मिलत रहे। बाद में कवि सम्मेलन में सुने के कई बेर मौका लागल।

संयोग अइसन कि आगे चलके हमार नाम ओही हाई-स्कूल में लिखाइल। उहाँ के द्वारा संचालित आ प्रस्तुत कई-एक सांस्कृतिक कार्य-क्रम में भाग लेवे के अवसर मिलल, उहाँ के नियरा से जाने-सुने के मौका भेंटाइल। अलमस्त जी के कविता के जाने-समुझे के मौका नीमन से मिलल। उहाँ के खूबी रहे कि व्यंग-हास्य के कविता गाके सुनाई आ लोग हँसे, मगर उहाँ का हँसी ना।

देश आजाद हो गइल रहे, ओकरा बाद जे देश के नक्शा बने लागल ओकर चित्र अलमस्त जी अपना रचना में बखूबी उतारल करीं। आजादी मिलला के बाद कवि के मन में एगो आशा के संचार भइल रहे। उहाँ का बुझाइल रहे कि दलित-पीड़ित लोग के समय बदल रहल बा—

देख दुनिया बदलल जाता
नया दिन आवता

× × ×

मलहा के छँवड़ा अबके
बोलत नइखे तनको दबके
उड़त चिलगरिआ पर कनखी चलावत बा।

बाकिर आजादी से भारत में समता ना नाइल। गरीबी-अमीरी दुनों वर्ग के भेद बढ़त चल गइल। अलमस्त जी के ई अनुभव भइल कि धोती वाला कमा रहल बा, बाकिर खा रहल बा टोपी वाला। उनकर लेखनी बोल पड़ल—

खेतन में मर-मर के उपजवनी कन-कन
हम रहनी फोकट में तू भरल मन-मन

अलमस्त जी मार्क्स से प्रभावित रहीं आ उहाँ के ई सोंच रहे कि शोषक के खिलाफ शोषित का उठे के होई। उहाँ के आगे लिखनी—

जइसे-जइसे गिरत गइनी मारत गइल हन-हन
जइसे जइसे उठत जइब भागत जइब दन-दन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'बिलाई भइली भगतिन' आ 'बकुला भगत' कवि के बहुते प्रसिद्ध बा, जवना में आज के नेता आ राजनीति पर करारा व्यंग बा, कमजोरी में आशा पैदा करे वाला सूत्र बा—

चलले बकुलउ शिकार खेले भारी।
उंचे तखत पर आसन जमवले पांख लागल मात करे चमकत कर

× × ×

मामा दुलारे से कान्हें चढ़वलें भगिना परेम से चला दिहले

(बकुला

× × ×

उज्जर चदरिया के ओढ़ि रामनामी माथा पर मछरी के भसम लगा
बिलाई भइली भगतिन आसन जमा के।

आखिर में एक दिन फूटल भंडा, बड़वा निचोर लिहलस मुंह खिसि
केहू घइलसि अहुंचा, केहू घइलसि पहुंचा होखे लागल भगतिन के सेवा

अलमस्त जी खाली भोजपुरी के ना हिन्दीयो के कवि रहीं। १९५५ ई० में प्रकाशित उहां के काव्य संग्रह बा, जवना के भूमिका विलास शर्मा जी लिखले बानी। एह में पांचे गो भोजपुरी कविता बा, बाकी सब हिन्दी कविता बाटे।

अलमस्त जी खाली कवि ना गद्यकारो रहीं। उहां के व्यंग्य 'स्वान-सम्मेलन' राजनीति पर करारा व्यंग्य रहे, जवना के मंचन पूर्वक कइ बेर भइल। उहां के भोजपुरियो गद्य प्रकाशित बा।

अलमस्त जी कबीर के आ 'कबीर-साधना' के प्रशंसक रहीं। साहित्य आ दर्शन के एह विद्वान के अनुसार अबतक जेतना काम कबीर भइल बा, ऊ पूरा रूप से सही नइखे। एगो उदाहरण उहां के बेवाकर भोजपुरी गद्य के नमूना खातिर पूरा होई—

"रउआ जब कतहूं कबीर पर कुछ पढ़े के मिली, त ऊपरका पहिलके पांति—'मसि-कागद ...?' मिली, दोसरका पांति ना, जवना के करत समय 'विद्वान जी' अपना ज्ञान के ताला अपना गर में बान्ह के पी० डी० आ डी० लिट० का सटकी से ताबड़तोड़ पीटत होइहें—कबीर जी रहलें। ऊ जोलहा रहलें, आ धुनिया रहलें। ऊ जुंगी जाति में जनमल जौन तुरते मुसलमान भइल रहलें। दोसरका पांति या त विद्वान जी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखहूँ के ना मिलल होई या मिललो होई त ओकर अरथ बूझत में उनका बुद्धि के जै-जै सियाराम हो गइल होई। एह लेखा जतना अन्ट-सन्ट साहेब का बारे में हिन्दी में लिखल गइल बा, ओतना संसार का कवनो दोसर भाखा में ना।"

अलमस्तजी होमियोपैथिक चिकित्सा के जानकार रहीं। एकर उपयोग उहाँ का आपन आमदनी बढ़ावेला ना, आर्थिक रूप से पिछड़ल लोग के मदद के ख्याल से करत रहनी। दवाइयो के दाम ना लेत रहीं, गरीब लोग से।

अबहीं हाई स्कूल से हम निकललो ना रहीं कि पता लागल—अलमस्त जी जमशेदपुर वर्कर्स कालेज में जा रहल बानी। बिछुड़ला के दुख रहे बाकिर ई जान के कि एह अगाध विद्वान के स्थान हाई स्कूल में ना कालेज में बा, एक प्रकार से खुशी भइल। अलमस्त जी १९६८ से अपना मृत्यु तक ओतहीं रहनी आ ओतहीं के माटी में मिल गइनी। जमशेदपुर में उहाँ का अउर जगह से जादा सम्मान मिलल। मरे के दू दिन पहिले जन्म क्षेत्र मोतिहारी के एगो कवि सम्मेलन में अध्यक्षीय कविता पढ़ के, जमशेदपुर पहुँच के परमात्मा में मिल गइनी।

एह मस्तमौला, भोला-भाला से सम्बन्धित ना जाने केतना लोग के आपन-आपन ना भुलाये वाला वाकया इयाद बा। ई सब वाकया उहाँ के फक्कड़पन, निर्भीकता, सरलता-सहजता से जुड़ल बाटे। दू गो वाकया प्रस्तुत कर रहल बानी, जे उनका व्यक्तित्व के सोझई उजागर करेला काफी बाटे—

एक बेर हाई स्कूल में होखेवाला सांस्कृतिक कार्यक्रम के दू गो आइटम में हमहूँ भाग लेले रहीं। एगो आइटम रहे—छाया नाटक के जवन पहिले पेश भइल आ दोसर अलमस्त जी द्वारा निर्देशित एगो गीत के मंचन। हम छाया नाटक में मंच पर रहीं। आपन काम खतम होखते-होखत ग्रीन रुम में पहुँचनी त देखनी कि अलमस्तजी बहुत बेचैनी में बानी। उहाँ का खीसिआइले जोर से एक थप्पर हमरा के मरनी आ पूछनी—"कहाँ गइल रहल ह, आइटम पेश करे के बा, कब दूहू तैयार होखिहेन।" हमरा दुख ना लागल। पहिले, हम तैयार हो गइनी; फेर अपना गैरहाजिरी के कारण बतवनी त उहाँ का खट दे शांत होके माफी मांगे लगनी। हमार मन लजा गइल आ उहाँ के सोझई कहाँ तक घर कर गइल ना कह सकत बानी।

दुसरका इयाद बा—जब बिहार विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पढ़ाई शुरू भइल रहे आ उहां का जमशेदपुर में रहत रहीं। एक दिन अचके साहेब-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गंज बाजार में उहाँ से भेंट हो गइल। उहाँ के हाँक पड़नी—"ऐ पंडि
सुन !" हम लगे गइनी त उहाँ के कहनी कि जाके पानी कल पर से हो
के आव त एगो चीज देखाईं। हम हाथ धो के अइनी त उहाँ का आपन
हाथ पोंछे ला देनी। हाथ पोंछ ला पर एगो भारी लिफाफा उहाँ का
जवना में विहार विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य-संग्रह रहे। एह ग्रन्थ में
तीन कविता संग्रहित बाटे। उहाँ के खुशी के थाह हम ना लगा पावल

अलमस्त जी के खाली एही से महत्व ना रहे कि उहाँ का कवि रहीं
से रहे कि उहाँ का दवल लोग खातिर आवाज उठवनी। जवना घरी
कवि जवना विषय पर लिखे में डेरात रहे, अलमस्त जी ओही विष
आवाज बुलंद कइनी। उहाँ के महत्व एहू से रहे कि जवना घरी हिन्दी
आन्दोलन चलत रहे, उहाँ का भोजपुरियो में लिखे से पाछे ना हटीं
आदमी भारतेन्दु जी जइसन अपना जमीन्दारी के धन गला के लोग आ
के सेवा करे, त का ई कम महत्व के बात बा ?

उहाँ का 'अलमस्त' नाम के सार्थकता साबित करत अपना
बेफिकरी, निडरई आ कबीरी से अपना व्यक्तित्व आ कृतित्व के एगो
छाप छोड़ गइनी।

—आवास सं० एफ १५/१, मुजफ्फरपुर वाष्प शक्ति प्रतिष्ठान, कांटी-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के विकास कइसे ?

—मनोज कुमार मिश्र

[पटना विश्वविद्यालय भोजपुरी विकास समिति का तत्वावधान में कुँअर सिंह जयन्ती के अवसर पर आयोजित 'भोजपुरी के विकास कइसे ?' विषयक संगोष्ठी के विषय-प्रवर्तन आलेख]

बड़ा रकटला के ई एगो पुजनउग साइत बा—वीर कुँवर सिंह जयन्ती। एह जयन्ती के अवसर प आजु के ई गोष्ठी आयोजित विया। भोजपुरी के भावी विकास के बारे में सोच-विचार खातिर ई आयोजन भइल बा। वीर बांकुड़ा कुँवर सिंह के जयन्ती—एह विषय पर विचार खातिर नीक अवसर बा। कारण ई बा कि कुँवर सिंह भोजपुरी के प्रेरणा पुरुष आ जातीय महानायक हवे। ऊ भोजपुर भा भोजपुरिये के ना; सँउसे देश के अमर सपूत हवे। हमनी भोजपुरियन के त ऊ पुरुखे-पीतर हवे एह से उनकर स्मृति में आयोजित ई गोष्ठी भोजपुरी के विकास के बारे में सोंचे खातिर उपयुक्त अवसर देत विया।

भोजपुरी के विकास कइसे—ई विषय पर विचार करे के पहिले हमनी के ई तय कर लेवे के चाहीं कि 'भोजपुरी' से एहिजा मतलब का बा ? भोजपुरी भाषा, भोजपुरी समाज, भोजपुरी साहित्य, भोजपुरी संस्कृति आ भोजपुरी क्षेत्र। भोजपुरी के प्रचार-प्रसार देश के बहरियो बा आ नीक बा। देश में त एकर क्षेत्र कवनो जनभाषा से कम बड़ नइखे। भोजपुरी भाषा-भाषी लोगन के संख्या करोड़न में बा। एह भाषा समाज आ संस्कृति के स्थान आ काल दूनों आयाम में मजगर प्रसार बा। एकता के भीतर अतना विविधता शायदे कवनो भाषा, समाज आ संस्कृति में होखी। एह मामले में भोजपुरी भारतीय राष्ट्रीय आदर्श के जबरदस्त प्रतिरूप विया। —त गरज ई बा कि एकर विकास के बारे में सोचत रवा एकर स्थानिक विविधता के रक्षा के ध्यान रखे के परी। आरे, बलिया, छपरा, गाजीपुर, बनारस, बस्ती, गोरखपुर यानी बिहार, यू० पी०, मध्य प्रदेश अतने ना कलकत्ता, बम्बई जइसन महानगर आ मॉरिशस फीजी, गुयेना जइसन विदेश सबके ध्यान में राखे के परी तब विकास के कवनो समन्वित रूप रेखा बनावे के परी।

दोसर बात ई कि भोजपुरी के विकास में बाधा-व्यवधान ठीक-ठीक का बा एकर चेतना होखे के चाहीं। एह विषय पर सोंचत रवा क्षेत्रीयता आ संकीर्ण मानसिकता से उबरे के परी। भोजपुरी के इतिहासो अइसने रहल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबहूँ हमनी के पुरखा पुरनियाँ संकीर्ण नइखन रहल। उन्माद से भाषाई साम्प्रदायिकता से भाषा-संस्कृति के विकास ना ह्रास होला— उदाहरण से भरल देश में आसानी से बुझा जाई। एह बात के अच्छी समझ गइल जरूरी बा कि भोजपुरी के विकास हिन्दी आ दोसर भारतीय के विकास से गहिर जुड़ल बा। कवनों भारतीय भाषा कबहूँ भोजपुरी के विकास में बाधक चाहियो के ना हो सके। हिन्दी के विकास के भोजपुरी के विकास। हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, मैथिली, मगही आदि भाषा के विकास भोजपुरी के विकास में सहायक बा, साधक बा। नइखे। त बाधक का बा? बाधक बिया अंगरेजी। अंगरेजी एह सब भषन खातिर अकास बँवरि बनल बिया। पनपहीं नइखे देत। अंगरेजी राजनीति समझल जरूरी बा। जबले अंगरेजी रही तबले भोजपुरी कवनो भारतीय भाषा के विकास मुश्किल बा। अंगरेजी आपस में बिया आ कलह खाड़ क के अपने चौधरियाइन बनल बिया। विद्वान से अरज बा कि एह नोकता पर सोचल जाव।

भोजपुरी के विकास खातिर जरूरी बा कि एह भाषा, समाज आ के दोसर पड़ोसी भषन से गहिड़ार संवाद बनो— आपस में नेवता बढ़ो। अइसन आदान-प्रदान खातिर कार्यक्रम बना के अमल सकता। एह दिसाई हमनी के सोंचे के चाहीं।

ई त सभके लउकत बा कि भोजपुरी के विकास तबे होई जब भोजपुरी लोगन में आपन मातृभाषा खातिर अनघा अनुराग आ बाथा होई। हाय कि भाई लोग गाँव छोड़ के शहर-बाजार में आवते भोजपुरी के ओसही देंत बा जइसे नौकरी-व्यापार जमते आपन माई बिसर जात बिया। माई भोजपुरियो गँवार आ जाहिल लागत बिया। अइसन लोग आपने करि लेसु त ढेरि बा। जवन बिरवाई सोर से उखड़ जाला ऊ लरुआत जाला। अइसन लोग सोर से उखड़त बिरवाई ह। आपन भाषा के खातिर ओकरा से गाढ़ प्रेम चाहीं। गाढ़ प्रेम खातिर आपन गाँव-समाज रीति रिवाज, बोली-बानी, माटी आ बधार से परिचय प्रेम के परी। भोजपुरी खातिर जे अगरात-घघात नइखे— ऊ मनहूस विकास करी।

भोजपुरी के विकास खातिर भोजपुरिहा इलाकन में जतना हाट-मेला-नदरी, तीरिथ-घाट आ छोट-बड़ नगर बाड़े स ओकनी के सुधि लेबे के भोजपुरिहा इलाकन में कल-कारखाना, उद्योग-धधा, व्यापार-बानिज के अकाल बा। घनी आबादी बा, जमीन सोना उगिलत बिया, सँउसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बंगाल, आसाम, पंजाब आ दिल्ली जा के ओहिजा आपन रोजी-रोटी के जोगाड़ भिड़ावत बा आ सब संपदा दूहि के बहरा भेज दियात बा। एहिजा के विहियाँ, बगसर, बरहमपुर, बलिया, नुआँव, गाजीपुर के हाट-बजार मेला-ठेला उजड़ रहल बाड़े स। जबले ई शोषन के कारबार चली तबले भोजपुरी के विकास दुलभ रही।

ई बात के गाँठ बाँध लिहीं कि भोजपुरी के विकास भीख में ना मिली। भोजपुरी के प्रकृति में भिखमँगई हइये नइखे। ई भाषा, ई समाज जोर-जाँगर आ पुरुषार्थ वाला ह। भोजपुरिहा आपन हक कर्मठता आ उद्योग से गाटा मजोरि के ले लिहें। समझदारी आ एकता के बल त चाहीं खाली। सरकार चलावत आवतारेस सियार। आपन ढोंढ़ भरला से फुरसत होखी तब नू ऊ भाषा-संस्कृति आ शिक्षा के ख्याल करिहेंस। अइसन सियार-बिलार भोजपुरी के विकास का करिहें? आपन हक के लड़ाई भिखमँगई छोड़ के राजनीतिक रूप से लड़े के होखी। एह बात पर ध्यान दीं कि हमनी के कई गो अइसन नेता असेम्बली भा संसद में भेजनिहाँ जा जेकरा भोजपुरी के चिंता होखो? भोट के के बेरा हमनी के भूआ-बँड़ेरा के झारि के भोटवस देत रहल बानी आ फेर ओकरे आगे शिष्टमंडल बनाके दाँत निपोरत हाथ जोड़ले भोजपुरी खातिर पहुँचि जात बानी जा। जिनिगी भर असहीं ठगात रहि जाइबि जा बाकिर काम ना होई। सरकारी संरक्षण आ प्रोत्साहन के आस में मत बइठीं। जातो जाई, भातो ना मिली। कुछ अइसन करीं कि सरकार के अपने होश होखो। एह देश में पैंतालीस साल के आज़ादी के बादो जब हिन्दी भा कवनो भारतीय भाषा आजु ले आपन वैधानिक हक ना पा सकल त कइसे भोजपुरी पा लिही? अब ले त ई भरम टूटि जाये के चाहीं।

भोजपुरी के विकास खातिर भोजपुरी जनपद में विश्वविद्यालय होखे के चाहीं। गाँवे-गाँव अलख जगावे वाली लेखक-कलाकारन के सांस्कृतिक-मण्डली होखे के चाहीं। भोजपुरी के रंगमंच के नीक विकास होखे के चाहीं। आजु ले भोजपुरी में नियमित अखबार आ पत्र पत्रिका नइखे स। भोजपुरी के विराट मौखिक साहित्य के लिपिबद्ध कइला के बहुते जरूरत बा। लिखित साहित्य बहुत कम बा। ओकर प्रचार प्रसार त अबरू कम बा। सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन पर विशेष ध्यान देबे के परी।

संक्षेप में, हम चाहत बानी कि ई सब मुद्दन पर विद्वान लोग विचार करो आ कुछ करे के तमन्ना लेके आगे बढ़ो तबे विकास के साकार कइल जा सकता।

जय भोजपुरी!

□ संयुक्त सचिव, भोजपुरी विकास समिति, पटना विश्वविद्यालय, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन उनइसवाँ अधिवेशन

—व्यास

प्रसिद्ध भोजपुरी साहित्यकार पद्मश्री रामेश्वर सिंह काश्यप भो लेखकन के आह्वान करत कहले कि आज के मूल्यहीनता का एह युग में के दृष्टि देवे का उद्देश्य से साहित्य के सृजन करेके चाहीं। ऊ एह जोर देके कहले कि केहू भोजपुरी-भाषी ई ना चाहे कि देश कबहूँ हो जाय।

छपरा में नगरपालिका मैदान में, सारन जिला भोजपुरी सम्मेलन के उनइसवाँ अधिवेशन के उद्घाटन करत काश्यप जी भोज सांस्कृतिक सम्पन्नता पर विस्तार से प्रकाश डलले आ कहले कि भोज लोक साहित्य के विशाल भण्डार बा आ एकरा श्रीवृद्धि में सारन जिला के दान अद्वितीय बा। काश्यप जी अपना भाषण मे भोजपुरी में उत्कृष्ट करे पर जोर देत कहले कि भोजपुरी किताबन के खरीद के पढ़े के लगावल भोजपुरिहा लोग के धर्म बा, तबे भोजपुरी के पुरहर विकास हो

सम्मेलन के अध्यक्षता करत वयोवृद्ध भोजपुरी साहित्यकार श्री मोहन 'राघेश' जी अपना अध्यक्षीय भाषण में कहले कि भोजपुरी भा साहित्य के बढ़ोतरी आ एकर मान-सम्मान दिवावे के काम राजनीतिक कदमी से हटिये के कइल जा सकत बा, जेकरा खातिर लेखकीय एकजु मजबूत संगठन कें जरूरत बा। भोजपुरी के साहित्य निर्माण में भूमिका के चर्चा करत ऊ कहले कि एही लोकभाषा में संस्कृति के स्वरूप वर्णित भइल बा। अपना भाषण में ऊ सारन जिला भोजपुरी सम्मेलन के गौरवशाली अतीत के चर्चा कइले।

अधिवेशन सुश्री अभिलाषा आ अनामिका के गावल मंगल गीत भइल। ओकरा बाद भोजपुरी के राष्ट्रगीत 'बटोहिया' के गायन स्वागताध्यक्ष डा० रामउदेश्वर शर्मा 'स्नेही' स्वागत-भाषण कइले आ मंत्री डॉ० धीरेन्द्र बहादुर चाँद अतिथियन के अभिनन्दन कइले। के कार्यक्रम के संचालन सम्मेलन के निवर्तमान महामन्त्री श्री रा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

इन्द्रपुरी, पटना-800023

फोन : 261134

जपुरिया भाई-बहिनी,

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गेयारहवाँ अधिवेशन में भोजपुरी न्दोलन के फैसला लेति बेर अपना आन्दोलन के प्रतीक कबीरदास जी के नल गइल रहे। ओही सिलसिला में फैसला भइल रहे कि हरएक साल 19 जून कबीर जयन्ती भोजपुरी दिवस के रूप में मनावल जाई। पछिला साल एहके यएक जगे मनावल गइल आ एह मोका पर अनेक कार्यक्रम भइल। एहसे जपुरी आन्दोलन का बल मिलल बा। निहोरा बा कि एहू साल कबीर जयन्ती भोजपुरी दिवस के रूप में मनावल जाव। एहके अतना धूमधाम से मनावल ाव कि ई भोजपुरी आन्दोलन के इतिहास के एगो नया सिरिजना दे सके।

कबीरदासजी एगो संत कवि, अक्खड़ चरित्र आ लमहर साहित्यकारे नइखन। भोजपुरिया चरित्र, संस्कार आ मिजाज के प्रतिनिधि बाड़न। उन्हके व्यक्तित्व ा कृतित्व से भोजपुरिया पानी आ माटी बोल रहल बा। उन्हके बेबाकी, निफिकिरई, निडरई आ साफगोई भोजपुरिया मिजाज के अँजोर बा। ऊ परतोख ाड़न कि भोजपुरिया जवना चीझ के सही समझेला, ओहके बेधड़क कहे आ करे अइनी-मइनी ना करे, आगा-पीछा ना देखे। 'भर बाँह चूड़ी, ना त पट दे राँड़' दर्शन पर जीये वाला भोजपुरिया अपना समाज, राष्ट्र आ इनसानियत के हिफा- त खातिर आपन सब कुछ दाव पर लगा देला, 'जो घर जारो आपनो चलो मारे साथ' के झंडा गाड़ देला; आ अपना तेयाग के इतिहास पथलो पर उकेर ला। ऊ केहू के मोहताज ना होखे; बलुक ऊ अपना करम से किस्मत के रचना चेला। भोजपुरिया अपना तेयाग के ताज होखेला, हौसला के बादशाह होखेला। समाज, राष्ट्र, आदमियत आ देयानत खातिर जरेला, मरेला, खपेला। संघर्ष ोकर बान होला, इज्जति ओकर आन होला आ बलिदान ओकर शान होला। प्यार में जान देई देला, त आँखि देखवला पर आँखि काढ़ लेवे के खेमाता खेला। आजु एही पानी के जगावल कबीर जयन्ती के मुख निशाना होखे के ाहीं। कबीरदासजी के हौसला के ईयाद दिलावल जरूरी बा कि हिंदू होखे भा ुसलमान, गलती पर कवनो मरउवत ना, प्यार में कवनो तफरका ना, बदी से कवनो समझौता ना।

आजु देश भोजपुरिया के पुकार रहल बा। चारों ओर फइलल बदअमली, हिंसा, अतेयाचार, जोर-जुल्म, नफरत, फरेब, भ्रष्टाचार के आगि, एहमें भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के घोर उपेक्षा भोजपुरियन से कुरबानी, बलिदान माँग रहल बा। पूछ रहल
कबीर के विरासत, तहार बेफिकिरी कहवाँ चल गइल बा। तहार तेयाग
के तेगा काहे सुतल बा !! आपन घर जार दोसरा के घर बसावे वाला फा
भुलाइल बा !!! त आव, सब बहिनी-भाई मिल-जुल के अपना विरासत
जाव, नया हौसला लेके एगो नया समाज, नया देश बनावे बदे सकल्प लि
भोजपुरी के मान-मर्यादा आ हक के हासिल करे बदे जम के आगे बढ़ल

कबीर जयन्ती, भोजपुरी दिवस के उपलक्ष में 19 जून से 26 जून
समारोह आयोजित होखो। बाकी ई कोशिश जरूर रहे कि जवना जगे
के कार्यक्रम करे के बेंवत ना भेंटाय उहवाँ एक भा दू दिन के कार्यक्रम ज
एकरा खातिर कुछ कार्यक्रम के सुझाव बा—

(1) कबीरदासजी के प्रति श्रद्धा सुमन अरपित कइल।
(2) कबीर-साहित्य पर आलेख पाठ। (3) कबीरदासजी के पदन के
(4) 'कबीरदासजी आ भोजपुरिया संस्कार' पर आलख पाठ आ वि
(5) 'कबीरदासजी आ भोजपुरिया पानी : इतिहास के नजर में' पर
(6) 'भोजपुरी के विकास कइसे होई?'—आलेख पाठ आ विचार।
(7) 'भोजपुरी के समस्या खाली एगो भाषा के समस्या नइखे, बल्कि सांस्कृतिक, मातृभाषाई आ इतिहास के भाषा के समस्या पर विचार।
(8) 'भोजपुरी के हक के लड़ाई आ भोजपुरिया' पर विचार।
(9) कबीर-साहित्य पर शोध के योजना आ पुरान पाण्डुलिपियन के
(10) प्रभात-फेरी, आम सभा आदि। (11) भोजपुरी के माँगन पर
(12) कबीरदास, भोजपुरी भाषा, संस्कृति आ इतिहास पर लेख के पत्र-पत्रिका में प्रकाशन।

अब रउरा सभ से दसो नोंह जोड़ के निहोरा बा कि कबीर जयंती दिवस के धुमधाम से मनाईं आ एह कार्यक्रम के सफल बनाईं। कोशि राउर कार्यक्रम जनता के बीच जरूर पहुँचो।

जय भोजपुरी !

19-5-91

पशुपति प्रच

नोट—अपना कार्यक्रम आ काम के सूचना कार्यालय के जरूर भेजीं। अपना कार्यक्रम के सूचना अखबारन के जरूर दीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माँग-पत्र

1 भोजपुरी के मातृभाषा के मान्यता दिहल जाव।

2. भोजपुरी के भारतीय संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल कइल जाव।

3. भोजपुरिया इलाका के छात्रन के माध्यमिक स्तर तक भोजपुरी में शिक्षा दिहल जाव।

4. भोजपुरिया इलाका के कालेजन आ विश्वविद्यालयन में आई.ए., बी.ए. आ एम.ए. में 'भोजपुरी भाषा आ साहित्य' के एगो स्वतंत्र विषय के रूप में पढ़ावे के इंतजाम होखो। भोजपुरी पढ़ावे खातिर विश्वविद्यालय आ कालेजन में भोजपुरी विभाग खोलल जाव आ पढ़ावे वास्ते पर्याप्त अध्यापकन के पद-सृजन आ बहाली होखो।

5. पटना, मगध, बिहार, जयप्रकाश, राँची आ भोजपुरिया इलाका, जइसे उत्तर प्रदेश आ मध्यप्रदेश के विश्वविद्यालयन में अविलंब भोजपुरी में एम.ए. के पढ़ाई शुरू होखो। बंगाल के विश्वविद्यालयन में भोजपुरी में एम.ए. के पढ़ाई होखो।

6. 'भोजपुरी भाषा आ साहित्य' के बिहार लोकसेवा आयोग आ भोजपुरी इलाका वाला दोसर राज्यन के लोक सेवा आयोग प्रतियोगिता परीक्षा के एगो विषय बनावल जाव।

7. भोजपुरी के साहित्य अकादमी, दिल्ली के मान्यता दिहल जाव।

8. केन्द्रीय विद्यालय आ विश्वविद्यालयन में भोजपुरी भाषा आ साहित्य के पढ़ाई के इंतजाम होखो।

9. दूरदर्शन पर नियमित भोजपुरी फिल्म आ भोजपुरी कार्यक्रम देखावल जाव। भोजपुरी में सिरियल बनावे के सुविधा मिलो।

10. अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कार्यक्रम आ एकरा विभिन्न योजनन के चलावे वास्ते सरकार पटना में एक एकड़ जमीन आ 'भोजपुरी भवन' - निर्माण के इंतजाम करो।

11. भोजपुरी साहित्य, भोजपुरी लोकसाहित्य आ एहमें शोध-पुस्तकन के प्रकाशन वास्ते बिहार सरकार अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के हरएक साल तीन लाख रोपेया के अनुदान देवो आ केन्द्रीय सरकार ओसहीं तीन लाख रोपेया देवो। एही तरे के अनुदान उत्तरप्रदेश आ मध्यप्रदेश सरकार देवो।

12. सरकार बिहार राज्य के विभिन्न भाषा अकादमियन के विलयन के प्रस्ताव वापस लेवो। भोजपुरी अकादमी के पुनर्गठन कके एकरा कार्यसमिति आ पदाधिकारियन के पदन पर भोजपुरी के समर्पित साहित्यकारन के जगह दिहल जाव। अकादमी के खाऊ-पकाऊ लोग से आ भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलावल जाव। भोजपुरी अकादमी के अनुदान रकम माकुल बढ़ावल जाव।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

13. उत्तरप्रदेश आ मध्यप्रदेश में भोजपुरी अकादमी के स्थापना कइल जाव।
14. बिहार, उत्तरप्रदेश आ मध्यप्रदेश में पुस्तकालयन खातिर होखेवाला पु
के सरकारी खरीददारी में भोजपुरी पुस्तकन के शामिल कइल जाव
सरकार खास सुविधा देके भोजपुरी पुस्तकन के खरीदो।
15. भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति पर शोध-कार्य खातिर रघु
नारायण विश्वविद्यालय में 'रघुवीर नारायण भोजपुरी शोधपीठ' के
कइल जाव।
17. भोजपुरी रंगमंच के बढ़न्ती खातिर पटना में 'भिखारी ठाकुर रंगमंच'
निर्माण कइल जाव।
18. भोजपुरी साहित्य के समृद्धि वास्ते पटना आ बनारस में 'अखिल
भोजपुरी विद्यापीठ' के स्थापना होखो। एकरा जरिये भोजपुरी
साहित्य, लोककला आ पुरान पांडुलिपियन के संग्रह आ प्रकाशन आ
निक साहित्य के प्रकाशन करावल जाव।
19. विदेशन के भोजपुरिया लोग से साहित्यिक-सांस्कृतिक रिश्ता बनावे
सरकार अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कूटनीति
आर्थिक सहयोग देवो।
20. जवना देश में भोजपुरी मातृभाषा के रूप में प्रचलित बा, ओह लोग से
संबंध बनावे वास्ते 'अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी परिषद्' के स्थापना का
21. विदेश के भोजपुरी भाषियन के भारत सरकार भोजपुरी पुस्तक
पत्रिका उपलब्ध करावो।
22. आकाशवाणी आ दूरदर्शन से भोजपुरी में समाचार प्रसारित होखो।
वाणी आ दूरदर्शन-कार्यक्रम में भोजपुरीसेवी साहित्यकारन-कलाकार
जगह दिहल जाव।
23. अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन आ एकर
यन के बइठकन में भाग लेवे वाला सदस्यन खातिर 'सिंगल फेयर
के सुविधा उपलब्ध करावल जाव।
24. भोजपुरी क्षेत्र में बन्द पड़ल कल-कारखनन के खोलवावे के इंतजाम
25. भोजपुरी क्षेत्र में केन्द्रीय सरकार आ राज्य सरकार अपना-अपना
नया कल-कारखाना खोले के इंतजाम करो।

पशुपतिनाथ सिंह का जरिये श्रमिक मुद्रणालय, महेन्द्रू, पटना-6 में
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-8
खातिर प्रकाशित।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीवास्तव कइले। श्री रामेश्वर सिंह काश्यप के अंगवस्त्रम् से सम्मानित कइले प्राचार्य सुशील कुमार सिंह आ अभिनन्दन पत्र के पाठ सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष श्री पुण्यदेव नारायण सिंह कइले। अधिवेशन में भोजपुरी का सम्बन्ध में डॉ० विश्वरंजन, श्री नगेन्द्र प्रसाद सिंह आ श्री पशुपतिनाथ सिंह के भाषण भइल। सम्मेलन के नवनिर्वाचित महामन्त्री श्री ब्रजेन्द्र कुमार सिन्हा निवर्तमान महामंत्री श्री रामकिशोर श्रीवास्तव का ओर से सम्मेलन के प्रतिवेदन प्रस्तुत कइले आ आगामी कार्यक्रम के सफलता खातिर सभकर सहयोग के अपील कइले। डॉ० तैयब हुसैन पीड़ित सम्मेलन के स्थायी समिति से पारित छह गो प्रस्ताव पेश कके भोजपुरी के अधिकारन के पूर्ति के मांग उठवले। स्व० आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा आ स्व० डॉ० गणेश प्रसाद सिंह का स्मृति में श्रद्धांजलि प्रस्ताव पास भइल। धन्यवाद-ज्ञापन श्री ध्रुवनारायण सिंह कइले।

खुला अधिवेशन के पूर्व दिन के सत्र में जिला-परिषद सभा-भवन में "राष्ट्रीय एकता में भोजपुरी के योगदान" विषय पर परिसंवाद भइल, जवना में डॉ० तैयब हुसैन पीड़ित आलेख पाठ कइले। एह परिसंवाद में सर्वश्री अर्जुन सिंह अशान्त, पुण्यदेव नारायण सिंह, रामकिशोर श्रीवास्तव, देवनन्दन सिंह, डॉ० रामाशीष प्रसाद आ अमियनाथ चटर्जी भाग लिहले। दिनवाला सत्र में प्रवर समिति आ कार्य समिति के गठन भइल।

अधिवेशन के अंतिम आयोजन रह भोजपुरी कवि सम्मेलन, जवना के संचालन डॉ० जोहर शफियाबादी कइले आ जवना मे लगभग डेढ़ दर्जन कवि भाग लिहले।

□ पो० एकमा, सारन

भोजपुरी भवन

बनावे खातिर

चंदा भेजीं

□

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

इन्द्रपुरी, पटना-२३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Registered No. PT-428/90 : भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका : जु

१९ जून को कबीर-जयन्ती भोजपुरी-दिवस का रूप में मनाई

सेवा में :—
श्री दण्डस्वामी विमलानन्द सरस्वती
राजगृह
श्री-उदासीन, शिवाला घाट

प्रेषक :—
व्यवस्थापक
'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का
पाण्डेय कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन,
पटना-८०००२३ (दूरभाष : २६११३४) से प्रकाशित, आउर पाण्डे
द्वारा कर्म प्रेस, लोदीपुर, पटना-८००००१ (दूरभाष : २३२७८०) में
सम्पादक—पाण्डेय कपिल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

सम्पादक :
प्रो. ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Fou

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी सम्मेलन पत्रि

(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रि

वर्ष-16 अंक-2 पूर्णांक-182 फरवरी, 2005 दाम-

परामर्श मंडल

(डॉ॰) विवेकी राय, (आचार्य) विश्वनाथ सिंह, (श्री) मोती बी॰ ए॰, (
विमलानंद सरस्वती, (श्री) पाण्डेय कपिल, (डॉ॰) विजय
(डॉ॰) अर्जुन दास केसरी, (डॉ॰) प्रभुनाथ सिंह, (डॉ॰) अनिल कुमा

संपादक
प्रो॰ ब्रजकिशोर

सह संपादक
डॉ॰ जीतेन्द्र

पत्रिका परिवार
संरक्षक सदस्य : श्री माधव सिंह
सदस्य : श्री कृष्णानंद 'कृष्ण', डॉ॰ जयकांत सिंह 'जय',
डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, श्री भगवान सिंह 'भास्कर',
श्री व्यास मिश्र

सपंादक मंडल
डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', राजनारायण दीक्षित, डॉ॰ लारी आ
कृष्णानंद कृष्ण, सूर्यदेव पाठक 'पराग', डॉ॰ रामकिशोर श्रीवास्तव,
डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, भगवान सिंह 'भास्कर', व्यास मिश्र,
भगवती प्रसाद द्विवेदी, रवीन्द्र शाहाबादी ।

संपादकीय संपर्क
प्रो॰ ब्रजकिशोर, श्रीभवन, प्रोफेसर कॉलोनी, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू पट
फोन: 0612-2671180, 2669592 एक्सटेशन-8
शाखा कार्यालय : 206, प्लौट 58/6, गौरव अधिकारी एमार्टमेंट, सेक्स
नोएडा-201 301, फोन : 0120-3956695

रचना में दिहल तथ्य, विचार रचनाकार के बा, ओसे संपादक मंडल के सहमति ज

अ॰भा॰ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के
वार्षिक सदस्यता शुल्क 25 रुपया सालाना
आजीवन सदस्यता शुल्क 251 रुपया

विशिष्ट आजीवन सदस्यता शुल्क 1101 रुपया

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रि
वार्षिक ग्राहक शुल्क 100
सम्मेलन के सदस्य खातिर
वार्षिक ग्राहक शुल्क 80 रुप
प्रायोजक (आजीवन ग्राहक)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)
श्रीभवन, महम्मदपुर लेनं, महेन्द्रू, पटना-800 006

16 अंक-2 पूर्णांक-182 फरवरी, 2005

सम्पादकीय

भूमंडलीकरण आ भोजपुरी

आज पूरा दुनिया में भूमंडलीकरण के आँधी बह रहल बा। भोजपुरी क्षेत्र भी से अछूता नइखे। भूमंडलीकरण के मुख्य लक्ष्य बा कि अमेरिका आ कुछ खास ी देश के सामान सँउसे दुनिया में बेरोक-टोक बेचाव।

एह प्रक्रिया में पूरा संसार एक दोसरा से नीचका आ रहल बा। अइसन कि अब पूरा दुनिया के भाषा अंग्रेजी हो जाई। सगरी रोजी-रोजगार में अंग्रेजी त्त्व बढ़ते जाता। अइसन स्थिति में ई विचार कइल जरूरी बा कि एह आँधी में ी के का होई ? दक्षिण अफ्रीका के कई गो भाषा मर गइली सन। अंग्रेजी के संभव नइखे। त का भोजपुरी मर जाई ? हमनी के जीवन में भोजपुरी के कहाँ रही ? एहं सब बातन पर पुरहर विचार करे के चाही।

भाषा खाली अभिव्यक्ति के माध्यम ना हवे। एकरा संगे ओकरा के बोले लोग के अस्मिता जुड़ल रहेला। एकरा के हमनी बंगला के उदाहरण से सीख ी। बंगला सबसे पहिले अंग्रेजी के सम्पर्क में आइल बाकिर ऊ मरल ना। ाषी अपना अस्मिता के प्रति जागरूक रहले। ऊ लोग अंग्रेजी सीखल, ओजवाँ तर के दार्शनिक, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, साहित्यकार, फिल्म निदेशक, राजनेता बाकिर केहू बंगला के छोड़ल ना। राजाराम मोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, नंद, जगदीशचंद बसु, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महाश्वेता देवी, अमर्त्य सेन, सत्यजीत ृणाल सेन, चितरंजन दास, सुभाषचन्द्र बोस, विधानचन्द राय जइसन कई गो व्यक्तित्व भइले जे आपन मातृभाषा ना छोड़ल आ अपना-अपना क्षेत्र में ऊँचाई लस।

आज बहुराष्ट्रीय कंपनी से लेके यूनेस्को तक आपन बात आम लोग तक खातिर भोजपुरी में विज्ञापन दे रहल बा। जरूरत बा भोजपुरीभाषी जनता के आत्मशक्ति के एहसास करावे के। समुद्र तट पर खड़ा हनुमान आपन शक्ति इल रहस। इहे हाल हमनियो के बा। भोजपुरी के बचावल एह क्षेत्र के जनता ना अस्मिता के बचावल बा। राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक खातिर सबके जागरूक बनावल जरूरी बा। आन्दोलन के सही दिशा में ले ातिर खुलल मन से विचार-विमर्श आ त्याग-तप चाहेला।

--ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कविता

चलत चक्र के साथ

फइलल सगरो
असीम-अछोर सोहावन आसमानी रहस्य
अथाह-अबुझ हलचली समुंदर
आ सउसे ब्रह्माण्ड के बुझउवल के
नापी-बुझी
भला आदमी !
कवना पवरूख से ?

छरिआइल नन्हमतुआ जिद
आदमी के
पियरोइया बेंगन के कूद
समय आ धरती के
लमहर अलोपित
दीठ-अदीठ लीक का सोझा
एगो अकड़खन
आउर का ?

देखी खुरचाली अदिमी कतनो
खूब बड़-बड़ सपना
फइलाई बाँह
समेटे के अँकवार में
कही, सभ कुछ हमार
तले अचके गिर जाई परदा

समय का मटकी प
का भइल ?
ना, ना,
मत गिरी सरन में
देखीं सपना बड़हन-
बढ़ाई डेग सजावे
कोना-अँतरा धरती
लहू के बून-बून से
डाली तेल पहिया में
छन के कवनो कत
रही रउवा पाँवन के
बस्स !

कतना युग के
इतिहास, बा कव
केकरा ?
हजार.....लाख.....
सनूख में कबले
राखी प्रकृति
सँजो के गिरह बात
साँसे-साँसे छन-छ
चलत चक्र के साथ
बताई के ?

-काटं, ब्रह्मपुर, बक्

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पगला टहलुआ

-नीरज कुमार पाठक

के साथे चले के कहेला
काश लेखाँ फइले के सपना देखेला
न्दर खानी गहिराये के गोहारेला-
रा गाँव के टहलुआ
ोग ओकरा के पगला कहेला ।
से कुछऊ ना बोले,
अपने में रमल
रे भुनभुनात
रके दूर चल के,
जोर से चिचियात,
धाँग मारेला
के सगरी सड़क आ जिरात ।
वाला से बाजार
जार से कोठी
ठी से मठिया के चक्कर मारत
अचानक चिल्ला उठेला-
ना रे धरती साँचो गोल बिया रे ।''
क पर कबो कछुआ
कबो खरहा बनल
ऊ लउकेला लइकन के,
चिल्ला उठेलन सन-
ना गइल पगला, आ गइल पगला ।''
बाबू लोग के शोख बबुआ लोग
ार में गुमटी तर खाड़ होके
चभुलावत ओकरा से कहेला-
ार ढाही भेंड़ाऽ''-

टहलुआ मुसकियात आगे बढ़ जाला-
ऊ ना रूके, ना ठहरे
बुझाला जइसे कवनो
बहुत बड़की जिम्मेवारी कान्हा पर उठवले
बैचेन धावत होखे टहलुआ ।
ऊ केहू के पीछे आज ले ना पड़ल
बाकिर, ओकरा पीछे-
रोजे लागल रहेला कुछ लोग ।
पगला अपना फेर में जब
कुछ लोग के बेमतलब पगलाइल देखेला
तब ऊ लागेला बकबकाये-
''मार ढाही भेंड़ा हऽ
दाना नइखे खाली लेढ़ा हऽ ।''
मानी ना- फइली
जइसे फइलल आकाश बा
मानी ना- उठ्ठी
जइसे उठल पहाड़ बा
मानी ना- गहिरायी
जेतना गहिरा समुन्दर बा
मानी ना- चली
जेतना तेज आन्ही चलेले ।''
हमरा बुझात बा कि
हमरा गाँव के ई पगला टहलुआ
साँचो ना मानी
एकरा के मनवलो ठीक नइखे ।

-*'हिन्दुस्तान' दैनिक कार्यालय, छपरा, सारण*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कइसन नाटक

-कमलाकांत ठाकुर

केकरा खिलाफ ई नाटक के शोर बा
छिपल केहु, परगट केहु, बाकिर एके चोर बा ।
जदी दाव लागे त गाँव बेच खा जाई
लील गइल लाज-ईज्जत, लीली जवन पा जाई
बनता बा जेकरा से जतना बिगड़ता बा
लूटे के छूट बा, ना कवनो जड़ता बा
रोअला कलपला से पसिजी ना सटी ना
बलजोरी ले लीही पूजा ई हटी ना
दुखड़ा-अरज ले पंचाइत में का जालऽ
कहाँ बाड़े ईश्वर, ई पंचे कठोर बा ।

कइसन जनतंत्र के ई निकलल सियार बा
कतहूँ नरम कतहूँ गरम विचार बा
जात-पात धरम सभ झगड़ा के ओर बा
पइसा के आगे सभके ईज्जत कमजोर बा
गाँव-राजधानी हंगामा खोरे-खोर बा
जहाँ देखीं नाटक में होत तोर-मोर बा
कइसे सुधार होई बड़ा घनघोर बा
भ्रष्टन के हाथन में नाटक के डोर बा ।

सड़क से संसद तक कहँवा अँजोर बा
'भाई के धन' खातिर मचल हड़होर बा
नवही चिन्हात के करिया के गोर बा
कहँवा अजोरिया बा कहँवा दो भोर बा
'हाकिम' के दुख जनि समुझीं कि थोर बा
केकरा खिलाफ ई नाटक के शोर बा
छिपल केहू परगट केहू बाकिर एके चोर बा

--ग्राम पोस्ट--काटं, भा
जिला-- बक्सर, पिन-802

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लघुकथा

एसवेस्टस शीट

-जितेन्द्र कुमार

दिन भर के थाकल-मांदल सूरुज रात्रि-विश्राम खातिर पश्चिम के कंदरा में गवें धँसत रहे । साहेब विभागीय जीप से गाँव जाये वाला रहलन । उनकर परमेंट नजदीके रहल । ऊहाँ का आपन सामानो गते-गते गाँव ढो के ले जात हीं । इका-दूका छोड़ि के ऑफिस के कर्मचारियो कुल्हि जा चुकल रहलन । न्यतावश हम रुकल रहलीं । साहेब के सोभहीं कइसे चलि जइतीं ! ऊहाँ के छोड़ इल बड़ा अशिष्ट लेखा लागत रहल । साहेब कुछ बेचैन लेखा रहलीं । ऊहाँ का खोजत रहलीं । कवनो बात-विचार उहाँ का मन में चुभत रहल । ड्राइवर लगभग रे रहे । बाकी साहेब जीपवा पर बइठीं तब नू । अकस्मात साहेब परिसर में रखल ो एसवेस्टस शीटन के पास जाइके छुये लगलन । कुछ कह न पावत रहलन । ो-कहते रुक जास ।

एकाएक हमरा ओरी देखि के बोललन "हई एसवेस्टस शीट इहवाँ काहे र राखल बा ?"

"शायद रऊवा से पहिले वाला साहेब गाय के शेड बनववले रहीं । जाय का ले ना जा सकलीं ।"

"अब एकनी के एहिजा का उपयोगिता रह गइल बा ?"

हम देखलीं कि साहेब के मन एसवेस्टस शीट पर लोभाइल बा । इहे सोच के व रखलीं "रऊवा गाय होखे गाँव पर त ले जाईं शेड बनवा लेब ।"

रोगिया के जे भावे, उहे बैदा फरमावे । साहेब के चेहरा सूरुजमुखी के फूल खिल गइल । खुश होके बोललीं "रउवा बड़ा व्यावहारिक व्यक्ति बानीं ।"

दू गो ग्रुप डी कर्मचारी लोग खाड़ रहल । आँखि के इशारा पावते एसवेस्टस के लोग गाड़ी पर लाद दिहल ।

साहेब के दिनभर के थकान दूर हो गइल । ड्राइवर से बोललन "चलीं सिंह देरि हो रहल बा ।"

-मदन जी का हाता, आरा-802 301

हिन्दी-भोजपुरी के त्रैमासिक पत्रिका
पूर्वांकुर, संपादक -डॉ॰ रमाशंकर श्रीवास्तव
पता:- सी-301, कालका अपार्टमेंट, सेक्टर-6, प्लॉट नं॰-31
द्वारका, नई दिल्ली-110 075

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

कथा

संचित प्यार

धर्मभीरु भारतीय नारी अंधविश्वास के कारण पुत्र के प्रति
लइकियन से दिहत आइल बाड़ी । पति आ पुत्र के कंधा चढ़ के श्मशान
से का तो आदमी सीधे स्वर्ग जाला ! बाकिर एहिजे एगो अइसनो महिला
जे जिन्दगी भर एगो लड़की वास्ते तरसत रह गइली मगर भइल त बेटे ।

शीला जब सयान भइली त उनकर शादी बक्शी जीतेन्द्र प्रसाद
जे सी.आर.पी.एफ. में डीएसपी के पद से अभी एही साल जनवरी में
गइलन ।

तब बक्शी जीतेन्द्र प्रसाद सिन्हा दिल्ली में पदस्थापित रहलन
नजफगढ़ि में रहला के बाद सरकारी बंगला में चल गइलन । सेवाकाल में
मिजोरम, त्रिपुरा कई जगह पदस्थापित रहलन, बाकिर परिवार हमेशा
रहल ।

शीला बक्शी के चार गो खाली बेटे भइलन स । पहिला राजू,
तीसरका बीटू अउर चउथका बबलू ।

दूसराका बेटा राजेश के बादे से शीला बक्शी के एगो बेटी के
रहल मगर तीसर भी लइके भइल । लइकी खातिर मन लालायिते रह गइ
बेर जब प्रसव पीड़ा से गुजरत रहली तब उनका सोलह आना मन में विश्
अबकी जरूर हमरा मन के मुराद पूरा होई, मगर एहू हाली बेटे भइल । बेटे
तरस के रह गइली । बेटा के भइला पर बाप मतारी के अधिका खुशी
चउथा बेर बेटा भइला से बक्शी जीतेन्द्र प्रसाद सिन्हा अउर शीला बक्शी
पावल गइली ।

खैर, बड़ा बेटा राजू दिल्ली में कवनो कम्पनी में अच्छा व्यापार
वा । तीसरा बेटा-बीटू सीआरपीएफ में इन्सपेक्टर होके फिलहाल लखनऊ
के बोकारो में पदस्थापित बा । चौथा बेटा बबलू भुवनेश्वर उड़ीसा में
कार्यरत हो गइल बा । एही चौथा बेटा बबलू के शादी तय हो गइल बा

आज शीला बक्शी खुश-बहुते खुश बाड़ी कि जाय द बेटी के
नाहि गुजरलीं, ई हमार दुर्भाग्य बहुए हमार बेटी होई जे कहल जाय, बाकि
से बेटी खातिर माँ के संचित प्यार हमरा पास जे बा उ त हम आपन
ही सकत बानी ।

फोनेक्स, नेहरू नगर, अ

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव के देवता

-माधुरी सिन्हा

तपेसर पाड़े किहाँ आउर दिने के जइसने आजो रामएकबाल बइठल बाड़े । साथे-साथे आउर दसहन आदमी बइठल तपेसर पांड़े के चमचागिरि में लागल बा । कबाल घरे जाये खातिर अगुताइल रहले । दस बजे लागल रहे । बाकिर तपेसर पांड़े त त ओराते ना रहे । ऊ त एह गाँव के देवता बन गइल बाड़े । गाँव के लोग, जेकरा काम-धन्धा ना रहे, आके उनका घरे बइठल रहेला । बाकिर कुछ लोग के त उनका ाजिरी देवे आ खुशामद में लागल रहे के मजबूरियो बा । ऊ त बइठल-बइठल पूरा के खबर लेत रहेले ।

राम एकबाल के मेहरारू दुलारी, घर के सब काम-काज क के राम एकबाल के जोहत रहली । अबहीं ले उनका ना अइला से ऊ खीस में आग-भभूका हो के नात गेहूँ फटकत रहली । तबही उनका पड़ोस के रामदेव के मेहरारू कुन्ती अपना घर हर निकलली । दुलारी के देख के ऊ सोचली कि तनी चलीं बहिना के लगे । का काहे उहाँ के खिसियाइल बानी । धीरे-धीरे ऊ दुलारी के लगे अइली आ लगे बइठ ।

दुलारी -"का हो रामदेव ब, सभे खा-पी लेहलस ?"

कुन्ती -"हँ बहिन, सभे खा-पी लेहल । गेहूँ के बोअनी नू होत बा । ओहीं से ी खाइल-पीयल हो गइल ह ।"

दुलारी -"हमरा किहाँ त मालिक के घर से फुर्सते नइखे कि जलखइयो ।"

कुन्ती -"त का बहिन, अभी ले भाईजी जलखइयो नइखीं कइले ?"

दुलारी -"खा-पी के का होई ? मालिक किहाँ बइठले से त पेट भर जाई ।"

कुन्ती त बड़की कुटनी रहे । ओकर त कामे रहे इहाँ के झगड़ा उहाँ लगावे आ ऊ एही में ओकर वाह-वाह रहत रहे । राम एकबाल केतना बार दुलारी के ावले रहले कि रामदेउआ व से कवनो बात मत कहिह । ऊ एगो में दूगो जोड़ के के सब बात मालिक से कहत रहे लन स । दुलारी बेचारी खीस में कुछ उलटा-पुलटा ए देहलस । ऊ बेचारी त भूखे-पियासे बइठल राम एकबाल के रास्ता देखत रहे कि इहन त उनका के खिया-पीया के अपनहूँ खाएब ।

दुलारी के ई बात सुन के कुन्ती मने-मने गाजत रहे कि मालिक से कहे के कुछ त बाकिर कुछ आउर सुने खातिर ऊ अबही उहें बइठल रहे कि डाक-पिउन चिट्ठी आ गइलन । ऊ चिट्ठी दुलारी के बेटा मुन्ना के रहे । चिट्ठी मुन्ना के ह इ सुन लारी के सब खीस उड़न छू हो गइल । ऊ खुश हो गइली आ बोललीं -"ए डाक चिट्ठीया पढ़ के तनी सुना दीं ना ।"

डाक-पिउन हँसते-हँसते कहले -"चिट्ठी के पढ़ाई का देबू ? इ त तहरा बेटा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मुन्ना के चिट्ठी ह ।"

इ बात सुन के कुन्ती के त एड़ी से कपार ले जर गइल, आ उनका फीका हो गइल बाकिर ऊं कुछ कहली ना ।

डाक-पिउन चिट्ठी सुनावे लगले । ऊ बतवले कि "मुन्ना परसों सब समाचार ठीके बा । अब मिठाई खियाव ।"

दुलारी अपना आँचरा के कोना खोलली जवना में एक रुपया के रहे । ऊ सिक्का ले के कहली -"इ एगो रुपया लीं, मिठाई खा लेब ।"

डाक-पिउन खुश हो के मुन्ना के आशीर्वाद देहले आ हँसते 'जय के चल देहलन । तबे कुन्ती के नजर राम एकबाल पर पड़ल । ऊ कहली - गइनी" आ ऊ जल्दी से उठ गइली ।

दुलारी त मुन्ना के आवे के सुन के सब खीस भूला गइल रहली एकबाल के आवते पूछली -"का हो, तहरा तनको ना बुझाला कि तोहरा के कि ना ?"

राम एकबाल कुछ कहे के पहिले आपन सिउटर उतारे लगले कि इ मुन्ना के चिट्ठी आइल ह ।" ऊ एकरे पेड़ा जोहत रहले । ऊ चिट्ठी ले भइले आ चिट्ठी पढ़ के मुन्ना के महतारी के सुनावे लगले । राम एकबाल संतोष आ सविता उहाँ आ गइल रहलन सन । भाई के आवे के सुन के बहुते सन ।

दुलारी -"देख, हमार मुन्ना चार बरिस पर आवता । तू जा के बइठ मत जइह । तहार कवन, पाँड़े जी का बतियाइले कि उहाँ के ओराला ?"

दुलारी त आज खुशी से रामएकबाल के बोलत रहली । ऊ खुशी इहो भूला गइल रहली कि एतना देरी हो गइल बा आ अबही ले जलखई अब त कुछ खाए-पीए के दे दीं ।

रामएकबाल पूछले -"का हो, आज हमार खाना-पानी बन्द रही कुछ पानी पिए के देबु ?"

दुलारी -"आहि दादा, हम त भुलाइए गइल रहनी हँ ।" ऊ जल्दी पाँच-छव गो रोटी आ तनिका सा तरकारी ध के ले अइली ।

दुलारी -"कहाँ बाड़ हो ? हम घामा में पीढ़ा-पानी देनी हँ त करत बाड़ ? जल्दी आव । आज हमरा ढेरे काम बा ।"

रामएकबाल घामा में कूर्त्ता पसारते-पसारते -"आवतानी" कह आके खाए बइठ गइलन । सविता आ संतोष दूनो लइका उहें धान के बोझा करत रहलन सन ।

रामएकबाल -"रे हो, खाए देब सन कि ना ?" कह के जइसे कइले कि तरकारी से उनकर मन खराब हो गइल । ऊ कहलन -"ई बनवले बाड़ू ? एमें ना नून बा ना मसाला ।"

दुलारी झनक के बोललीं -"जा, मालिक किहाँ बइठ । बिना तेल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कारी कइसन बनी ?''

अब रामएकबाल का बोलस । इ त उनका में कमी रहे कि रहलो पर ऊ -मसाला, तेल-नून बेरा पर ना ले आवस । अइसे त एह घरी रामएकबाल के हालत ो खराब हो गइल बा । ऊ आपन बेटी शैली के बियाह कइलन ह त कर्जा-पईचा क । रुपया सूद के संगे देबे के पड़ल ह । पाँच कट्ठा खेतो कर्जा में देवे के पड़ल ह । हीं कुछ बाकिए बा । कतहीं से एको पइसा के आमदनी नइखे । बेटा बाहर कमाए ल बा त इ बुझइबे ना करे कि ऊ कवन काम करेला आ का कमाला ?

रामएकबाल -''तूँ काहे अइसे बोलेलू ? तोहरा जाने के चाहीं कि मालिक किहाँ बइठब त बिहान से गाँव में रहल मुश्किल हो जाई ।''

दुलारी -''हमरा के कवन चीज दे देत बानी आ कवन मदद देत बानी उहाँ ? सूद देत-देत त जान पर आ गइल बा ।''

रामएकबाल -''छोड़ऽ इ सब । तूँ बताव कि का बाटे आ का नइखे ?''

दुलारी -''ना मर-मसाला बा नाही तेल, ना तनिको चीनीए बा ।''

दुलारी के बात सुन के रामएकबाल त सोंच में पड़ गइलन । ऊ सविता के बोला चटाई ले आवे के कहलन ।

सविता दुलारी के लगे जा के पूछलस -''माई, चटाई कहाँ बा ? बाबू माँगत ।''

दुलारी -''देख, कोठीया के लगे लपेट के रखल बा ।''

राम एकबाल चटाई लेके अइसन बिछवले कि सुतला पर आधा देह घामा में रही आधा देह छेहाँ में रही । ऊ छेहाँ में माथा क के चटाई पर सुत गइलन । दुलारी उहें ल चाउर बीने लगली । दुनो प्राणी आपुस में बतियावे लागल लोग कि बबुआ अइहें कुछ आकी-बाकी कर्जा-पइचा जवन बा ऊ त देके बोझा उतारहीं के पड़ी । बाकी अब भइला के बादे बुझाई ।

रामएकबाल के अब नींद पड़ गइल रहे । एने बइठल दुलारी अपना बबुआ तर ना जाने कतना सोचत रहली कि बबुआ अइहें त उनका इ बना के त ऊ बना के ाइब । इहे सोचते-सोचते ऊ उठ के कुन्ती किहाँ चल देहली ।

दुलारी के देखते कुन्ती कहलस -''आईं बहिना ।'' दुलारी कुन्ती के लगे बइठते ली -'' ना हो हम बइठब त ना, हम एगो चीज माँगे आइल रहनी ह ।''

कुन्ती -''कवन चीज बहिना ?''

दुलारी -''ठेकुआ बनावे वाला साँचा होखे त द । हमार त बा लेकिन नीमन । ओपर ठीक से ठोकाई ना ।''

कुन्ती -'' का बात ह बहिना, ठेकुआ बनावे के बा का ?''

दुलारी के त पेट फूलत रहे । ऊ त सोचते रहली कि ऊ कइसे सबके बता देस उनकर बेटा मुन्ना आवत बाड़े । ऊ जल्दी से कहली -''जानतारू, मुन्ना नू आवत बाड़े न आ ओकरा ठेकुआ बड़ी पसन्द ह ।'' दुलारी के इहो होश ना रहे कि उनका इ इयाद कि कुन्ती मुन्ना के चिट्ठी सुन चुकल बाड़ी ।

कुन्ती के त बड़ी जलन भइल । ऊ साँचा दे के कहली -''लीं बहिना, बनाईं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ठेकुआ आ तनी हमरो के देब ।''

दुलारी 'अच्छा' कह के साँचा लेके चल भइली आ ऊ अपना ठेकुआ बनावे के तैयारी में लाग गइली । एने कुन्ती अपना मरद रामदेव से -'' जानऽ तारऽ, भाईजी के बेटा नू आवत बाड़न ।''

रामदेव -''के कहलस ह ?''

कुन्ती -''के कही, बहिना आइल रहली ह ठेकुआ बनावे वाला साँचा कहली ह ।''

रामदेव -''ठीके बा । जाके मालिक से कह देत बानी, आवते जवन बा ऊ वसूल लेस ।''

कुन्ती खुश हो के बोलली -''हँ, जी, जा के बता दीं । उहाँ के त छोड़ देब का ।'' कुन्ती के त बैचैनी रहे कि ई खबर कइसे जल्दी मालिक पहुँचे । ऊ फेर बोलली -''गाँव में रह के अगर ई रउआ ना करब त कब मालिक के कि उहाँ के कब का करब ? ई बतिया रउरा अबहीं जाके कह दीं खुश हो जायेब ।''

रामदेव के कमवो त इहे रहे । केतना दिन से ऊ मालिक से रामएकबाल पाँच कठवा कोलवा, जवन रामएकबाल के घर के बगले में बा माँगत बाड़े । बेटी के शादी में सूद पर रुपया मालिक से लेले रहलन त मालिक, तपेसर जोड़-जोड़ के आ जोर-जबरदस्ती क के ई पाँच कठ्ठा खेत लिखवा लेहले इहे बा कि ऊ खेतवा उहाँ के रामएकबाल के जोते बोए के दे देहले बानी । समझत त सब बाड़न बाकिर मुँह खोले के बुता उनका में थोड़े बा !

रामदेव आ रामदेव ब रामएकबाल के शिकायत तपेसर पाँड़े से कइले एही में बेचैन रहे लोग । कवनो मौका चुके के ना चाहे लोग ।

दुलारी त अपना बेटा के आवे के सुन के खुश रहली आ रामएकबाल के खुश रहले कि एने ढेर दिन भइल रहल ह पइसा कौड़ी आइल । खर्चा हो गइल रहल ह । आउर कुछ ना त बबुआ के अइला से गेहूँ के बोअनी संतोष आ सविता अपना भईया के आवे के सुन के खूब खुश रहल सन कि त कपड़ा आ मिठाई ले अइहें । घर के सब लोग अपना-अपना खुशी में हुलसत रहे । बाकिर पड़ोसी भाई के मुन्ना के अवाइ सुन के सब खुशी ऊ त एही चिन्ता में डूबल रहलन कि कइसे तपसेर पाँड़े के हिरदया में खिलाफ आग लगाईं । आ तपेसरो पाँड़े के त इहे काम रहे । दस गो आदमी आगे-पीछे घुमावेले आ एने के झगड़ा ओने लगावेले । ओह झगड़ा में आ अपना के मददगारो साबित करेले । एतना पढ़ल-लिखल लोग त गाँव में एगो इहे बाड़े, कोर्ट-कचहरी सब जगह इहे देखेले । कहल जाला कि जब बियाह करावेले उहे सराधो करावे ले । ऊ गाँव भर के लोग के खबर लागेला त हर जगहीए कल-बल-छल लगा के आपन टांग घुसेड़ के ऊ जालन । एही से एह गाँव के ऊ देवता कहल जालन ।

रामदेव -''बाकिर जानत बाड़, तपेसर पाँड़े हउवन बड़ी खराब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुश ना राखल जाव त कब का करीहें ई भगवानो ना जानेब । आदमी के जानल त मुश्किल बा । उनकर महतारी बेचारी खटिया पर पड़ल बाड़ी बाकिर ऊ कबहीं उनका देखे-सुने उनका लगे ना जास । ऊ बेचारी बुढ़िया रोयेले सरापेले -"हमार रोअल का पर पड़ी । उनहूँ के बेटा-पतोह बा नू ।"

कुन्ती -"छोड़ऽ सब, हमनी के का करे के बा । अपना मतलब से मतलब ।"

साँझ हो गइल रहे । रामएकबाल अपना घर के सउदा-पानी ले आवे बाजार चल रहलन । ऊ अभी तक लौटल ना रहलन । एने तपेसर पाँड़े के दुआर पर लोगन के वड़ा होखे लागल रहे । तपेसर पाँड़े खटिया पर ओठँगल लोग से बतियावत रहलन । रा होखे लागल रहे । रामदेव आवते पूछलन -"मालिक, के के बा ? आज राम बाल भाई नइखन आइल का ?"

तपेसेर पाँड़े -"ना हो, अबहीं ले, आज नइखन आइल । का बात ह हो ?"

जुगेसर कहले -"ऊ त बाजार में भेंटाइल रहलन ह । कुछ कीनत बेसहत रहलन ह ।"

रामदेव थोड़ीके दूर पर बइठ गइल रहलन । ऊ धीरे से उठ के तपेसर पाँड़े के आके बइठ गइलन आ धीरे-धीरे उनकर पाँव दबावे लगलन । तपेसर पाँड़े के कान बरहा के कान अइसन खड़ा हो गइल रहे । कुछ जाने खातिर उनका भीतर अकुलाहटो गइल । ऊ जल्दी से उठ के बइठ गइलन ।

रामदेव -"मालिक, जानत बानी, रामएकबाल के बेटवा-मुन्नवा काल्ह आवे ा नू बा । ओकरे खातिर-बातिर में लागल बाड़े । सुनतानी कि अबकीर सब कर ि-पईंचा उतार दीहें ।"

तपेसर पाँड़े -"ठीके त बा । उतार देस ।"

रामदेव -"जानतानी मालिक, रामएकबाल ब त बहुत बोलेले । रउरा लगे अइला तर उनका के कमती बोलेले का ? ऊ कहेले कि मालिक किहाँ से तोहार खर्चा चलेला ? काहे उहाँ जाए खातिर अगुताइल रहेल ?"

तपेसर पाँड़े त इ बात सुन के आग-बबूला हो गइलन । बाकिर ऊ धीरे से जन -"काहे घबरा तार, तू चुप रह ना, सब बोलल निकल जाई । ई गरमी कतना दिन ।" रामदेव बड़ी देर ले गते-गते ना जाने का बतियावते रह गइले । आखिर, रामदेव सोचले रहले ऊ पूरा कइए लेहले । साँचो, अब तपेसर पाँड़े के आँख रामएकबाल खे खातिर व्याकुल रहे । ऊ पूछले -"का हो, रामएकबाल कवना भीड़ में बाड़े कि अबही ले ना अइले ह ।"

आजो जुगेसरे जवाब देहले -"ऊ त बाजारे गइल रहलन ह । कुछ चटक-मटक न होई ।" जुगेसरो बइठल-बइठल एगो लकड़ी मार देहलन । सभे त अपना कें क के हमदर्द साबित करे में लागल रहत रहे ।

अँधारी रात में तपेसर पाँड़े के ओसारा में बीसो आदमी बइठल रहे । दूर, ओसारा सरा छोर पर एगो लालटेन जइसे टिमटिमात होखे रखल रहे ।

सब लोग के बीच में बइठल चदर से मुँह तोपले लुटावन भी दूर के चाल । ऊ कहले -"ना मालिक, रामएकबाल जरुर अइहें । ऊ त रात हो जाला तबहूँ ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बतिया त सबकर रामएकबाल के शिकायते वाला इहे । सभे रहे देखावे रहे कि आज का बात बा कि रामएकबाल ना अइले ह ।

अब तपेसर पाँड़े के रामदेव के सब बतिया साँचे लागे लागल । जाड़ा रात के आठ बज गइल रहे । कुछ लोग उठत कहलस -"आच्छा मालिक, एकबाल ना अइहें । रउआ जाईं, खाई-पीहीं ।" तपेसर पाँड़े हँसे लगले -"लागत बा कि हम उनका बिना खाइले ना भूखे रहीले ।" सभे हँसे लागल । त इहे काम रहे ऊपर से पानी पटावे के आ तले-तले जड़ काटे के ।

आज रामदेव तीर मार लेले रहले । उनका आवते उनकर मेहरारू बोरसी लेले उनका लगे अइली आ पूछली -"मालिक का कहनी ह ?"

रामदेव सब बात बता देहले आ कहले -"तू कुछ मत कहिह । ऊ जइहन "

रात त, कुन्ती के कइसहूँ कट गइल । बाकिर बिहान होते उनकर आँख दूनो दुलारी के दुआरी के ओर रहे लागल ।

दुलारी बेचारी राते के मछरी बना के रख देहले रहली कि एह जाड़ा जम जाई । हमार बबुआ अइहें त खइहें । ऊ आपन सब काम-काज क के एकबाल के लगे अइली । रामएकबाल भी गाय के खिया-पीया के घुरा के आग तापत रहले । चार-पाँच आऊर आदमी आ के आग तापे खातिर उहाँ बइठ जाड़ा में त आग बहुते नीक लागेला । सभे बइठल इहाँ-उहाँ के बात बतियाव रामदेव भी आके बइठ गइलन । ऊ बइठते पूछलन -"काहो, रामएकबाल मालिक किहाँ ना गइल रहल ? मालिक तहरा के पूछत रहनी ।"

रामएकबाल -"ना हो, बाजारे में देरी हो गइल । राती के ठंडा में का इ सुनते रामदेव सोचे लगले कि चल, मिलल बा इनकर इ बात, आ ऊ उठ

ठाकूर -"बइठ-बइठ रामदेव, काहाँ जात बाड़ ?"

रामदेव -"ना हो, बइठब ना । मालिक पेंड़ा जोहत होखब ।" ई सुन उठ के रामदेव के साथे चल देहले । ठाकूरो पाँड़ेजी किहाँ बइठत-उठत रहलें त सब्बकर देवता रहले । उनका लगे ना मइला से नाराज होखे के डर रहे ।

नौ बजे जात रहे । दुलारी बेटा खातिर बेचैन रहली । रामएकबाल के पूछली -"का हो, आगे तापत रहब कि जइब चही पर ?"

रामएकबाल -"बेरा हो गइल बा का ?

नन्हक बोलले -"त का समझ तार, बेरा बइठल बा का ? जाव उठ ।"

रामएकबाल जल्दी से उठ गइले आ हाथ-मुँह धो के तइयार भइले लेके चल देहले । अबही ऊ रस्ते में रहले कि उनकर बेटा मुन्ना आवत रामएकबाल के लगे आ के ऊ उनकर गोड़ छू के प्रणाम कइलस आ अपना बैग जमीन पर रख देहुए । रामएकबाल अपना बेटा के देखते रह गइलन । ऊ लगले -"मालिक के लड़ीका से हमार मुन्ना का कम बाटे । ठीके नू लोग शहर ह ।" तसहीं मुन्ना पूछलस -"सभी लोग ठीक-ठाक है न ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामएकबाल सोचलन -"हई ना देख, इ त अब अंग्रेजी बोलत बा ।" ऊ कहले सभे ठीक बा ।" दूनो बाप-पूत आंवे लागल लोग । गाँव के जे लोग मुन्ना के चीन्हत कुछ ना कुछ मुन्ना से पूछ लेत रहे बाकिर एगो बात सभे कहत रहे इ त बड़ा सुन्नर बा ।

रामएकबाल साइकिल पर पेटी आ बैग लदले मुन्ना के साथे अपना घरे ले । अपना बेटा के देख के दुलारी के बुझाइल कि उनकर गोड़े धरती पर नइखे । ल्दी से अपना बेटा के अंकवार लेके आपन आँख पोंछे लगली । सविता आ संजय भाई-बहिन खूब खुश रहलन सन । ऊ दूनो भाई-बहिन मुन्ना के ले आइल पेटी के हूँ उठा के घर में ले गइलन सन । मुन्ना आके आपन बैग खोललन । ऊ दूनो के में एकह गो खिलौना दे देहले । ओकरा बाद मिठाई के डिब्बा निकाल के अपना री के हाथ में दे देहले । अपने आके घामा में खटिया पर बइठ गइले । तबले रामदेव हरारू कुन्ती आ गइली ।

मुन्ना -"प्रणाम काकी ।"

कुन्ती -"खुश रह, बड़ी ढेर दिन पर अइल ह । का ले आइल बाड़ ?"

मुन्ना -"क्रा ले आयेब, आने में तो इतना परेशानी हुआ कि क्या बताएँ ।"

कुन्ती त मुन्ना के बात सुन के तर-उपर होंखे लगली । ऊ बिना कुछ बोलले के चल गइली ।

एने रामदेव तपेसर पाँड़े से, जाके कहले -"देखीं ना मालिक आज हम राम ाल से कहनी ह कि का हो मालिक किहाँ ना गइल ह ? मालिक तहार पेंड़ा जोहत ह । त रामएकवाल कहलन ह कि राती खान ठंठा में का जइतीं ? बताईं ना उनका कहे के चाहीं ?"

तपेसर पाँड़े त सब समझत रहले बाकिर उनका त इहे अच्छा लागत रहे । ऊ हु के उजाड़े आ कंहु के बसावे में रहते रहले । उनका एही काम से लोग उनका के अइसन पूजतो रहे । एक दूसरा से लड़ावे वाला काम में गाँव के लोग उनका के करत रहे ।

ऊ सोचते बोलले -"काहे घबरात बाड़ । अब हमहीं उनका इहाँ जायेब । उनकर त आ गइल नूँ ?"

रामदेव -" हँ मालिक, ऊ त आ गइल । उनका इहाँ जवन होखे ऊ वसूल ना त पीछे ऊ काहाँ से दीहें ? अब ऊ जाई त ना जाने कब आई ?"

तपेसर पाँड़े आपन माथा हिलावते कहले -"तनी उनकर हिसाब देख लीं ।"

आज साँझ होते एक-एक क के लोग तपेसर पाँड़े के ओसारा में आवे लागल । कबाल भी आ गइल रहले । सभे कुछ ना कुछ तपेसर पाँड़े से कहत रहे । बीच-बीच ड़े जी भी गाँव घर के कवनो-कवनो बात पूछ लेत रहले बाकिर ऊ एको हाली राम ाल से कुछ ना पूछले, ना उनका से कवनो बात कइले ।

दु दिन त ठीके से बीत गइल । तपेसर पाँड़े किहाँ रोज लोग आके उनका दुआर. ोभा बढ़ावत रहे आउर लोग के साथे-साथे रामएकबाल भी उनका इहाँ आवत रहले । र कवनो अइसन वइसन बात ना भइल । बाकिर तीसरे दिन सबेरे करीब नौ बजत होई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

। रामएकबाल, गाय के खिआवे के खातिर लेदी काटत रहले कि तपेसर पाँड़े
साथे आ पहुँचले । उनका के देखते रामएकबाल उठ के गमछा से आपन हाथ
बढ़ले । पाँड़े जी के लगे आवते कहले -"पाँव लागी मालिक ।"

तपेसर पाँड़े -" का हो, का हाल बा ? सुननी ह तहार लड़ीकवा
रामएकबाल -"हँ मालिक, आज तीन-चार दिन भइल अइला ।"

तपेसर पाँड़े -"आरे, आइल बा त हमार हिसाब-किताब करे के
दिन हो गइल । सूद बढ़ल जात बा ।"

रामएकबाल -"मालिक, अब रउआ से हम का छिपाईं । अतना
बा । हमहूँ आशा लगवले रहनी कि कुछ ले आई त कर्जा-पईचा जवन लीहल
ऊ त कहत बा कि सब रुपया त मिलबे ना कइल ह । ओकर जवन हिसाब
ह ओकर अधे मिलल ह आ जवन मिलल ओकर ऊ लड़ीकन के कपड़ा
जानतानी सरकारी नौकरी रहित त अइसे ना होखीत । मालिक, ऊ रुपया ले
त हम जरूर दे देतीं ।"

तपेसर पाँड़े -"अब तूँ हमरा के ई पट्ठी मत पढ़ाव । हमरा त
चाहीं । एतना दिन त हम कुछ ना कहनी ह । अब तू चाहे जवन ऊपाय होखे
के दे द । आ सुन, इ पाँच कठवा कोलवा जवन तू जोतत बाड़, ऊ छोड़
रामदेव जोतीहें ।"

रामएकबाल के देह के खून जइसे एक-ब-एक सूख गइल । उ
हाँ-हूँ कुछुओ ना निकलल । ऊ सोचते रह गइले - मालिक के मुँह से
निकलल ह । उहाँ के त कहले रहनी कि देख, सूद बढ़ल जात बा । तू इ
बाड़ त हमार रुपया सध (मिनहा) जाई, आ इ खेत जब तक तहार
जोतत-बोअत रहिह । जवन होई बाँट के हमरा के दे दीह । हमरा के
उल्टा-सीधा समझा के, हमरा के मजबूर क के इ खेत लिखवा लेहनी । मुना
से हमरा झंझटो हो गइल । आज मालिक कहत बानी कि ई खेत रामदे
रामएकबाल के मुँह के बोली त हेरा गइल रहे आ उनका के काठ मार देहले
खड़ा रामदेव के साथे तपेसर पाँड़े के जात देखते रह गइले ।

साँझ के सात बज गइल रहे । करीब-करीब सब लोग आके त
ओसारा में बइठल गाँव-घर के दिन भर के हाल-चाल बतियावत रहे लोग
एकबाल चदर ओढ़ले एक ओर बइठल तपेसर पाँड़े के आवे के पेंड़ा जोहत रह
त सब अकिल हेरा गइल रहे । तपेसर पाँड़े अबही अपना घर में बइठल ना
रहले । रोज त ऊ लोग के आवे के पहिल ही आ जात रहलन ह । बाकि

तपेसर पाँड़े के नजर लालटेन के मद्रिम रोशनी में सबसे पहिले राम
पड़ल । उ पूछले -" का हो रामएकबाल, कुछ इन्तजाम भइल ? हमरा रुपया
बा । तहार हिसाबो बहुत हो गइल बा । कइसे देब, हमरा त कुछ बुझाते नइखे
त नहर के जरी जवन तहार दू कट्ठा खेत बा उ दे द । का करब ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाड़ा के दिन, सूरुज के रोशनी धरती पर बिछ चुकल रहे । अपना दरवाजा पर नो प्राणी घामा में बइठल बतियावत रहे लोग । रामएकबाल के मुँह त लटकल रहे, उनका ा मुन्ना के चेहरा पर चढ़त सुरुज के लाली छवले रहे बाकिर दुलारी के आँख से लोर त रहे त उनका मुँह से केहु खातिर सराप के साथे-साथे गारीयो झरत रहे ।

मुन्ना -" बाबु, तूँ त कहत रहल कि गाँव में जवन मेल-मुहब्बत बा; जवन पनापन बा उ तहरा शहर में काहाँ मिली ? हम त तहरा से कहले रहनी कि तूँ सब गिन चल । हमनी के एक साथे रहल जाई । हमनी के सब आदमी काम करती सन । ड़हूँ-थोड़हूँ मजूरी मिलीत त हमनी के बढ़िया से काम चल जाइत । एको पइसा केहूँ कर्जा लेवे के ना पड़ीत । आज खेतो एह ढंग से देबे के ना पड़ीत । अब तहार इ गाँव राजनीति के अखाड़ा बन गइल बा । सभे अपना-अपना स्वार्थ में डूबल बा । इहाँ सभे एही ताक में रहत बा कि कइसे केकर का हड़प लीं । एक-दोसरा के ाकायत क के आपन मतलब साधे में लोग लागल बा । सभे एही फेर में रहत बा । ा करब ? गरीबो लोग त एक नइखे । इहो त अमीरन के चापलूस बन के आपन मतलब ाध रहल बाड़े । कमा के आपन घर-गृहस्थी चलावे के फेर में नइखे लोग । सभे दूसरा के बिगाड़ही के फेर में रहल बा । एही खातिर अमीर लोग के देवता अइसन जतो बा आ अमीर लोग के त इ चस्का लागल बा कि मुफुत के प्रसादो चाहीं आ ुशामदो चाहीं । ना त रह-रह के तीर चलावत रही लोग । एही से हम फेर कहत बानी क तूँ सब आदमी बाहरे चल । हमनी के उहँही रहल जाई । हमनी तीनो आदमी के काम ाग जाई । नीमन से हमनी के रहबो करेब मन ।"

रामएकबाल -"बबुआ, तूँ इ का कहत बाड़ ? हमनी के इ जनम धरती नू ह । ब दुःख-सुख त इहही उठावे के बा । एह उमर में तूँ हमरा के बाहर चले के कहत ड़ ?"

मुन्ना -" तहरा जाने के चाहीं कि जनम-धरती के सेवा खातिर करम-धरती ाश ही के पड़ी । बिना करम कइले कइसे गुजर-बसर होई ?" राम एकबाल सोचते उ के गाय के सानी देबे चल गइले ।

-द्वारा श्वेता प्रकाशन, ग्राम+पोस्ट- पचुआँ, जिला- छपरा (सारण) बिहार

जरूर पढ़ीं भोजपुरी कहानी के नया मोड़ देवे वाला

कहानी-संग्रह

हादसा

कृष्णानंद 'कृष्ण'

प्रकाशक- पुनः प्रकाशन, पटना

मूल्य- 100 रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के दसवाँ-ग्यारहवाँ सत्र के

भोजपुरी के अप्रतिम साहित्यकार डॉ॰ 'आंजनेय'

-राम सिंह

-रंजन

डा॰ अनिल कुमार 'आंजनेय' बहुभाषाविद् विद्वान, बहुआयामी प्रतिभा-स साहित्यकार, समीक्षक, शोधकर्मी आ एगो कुशल संपादक हईं । उहाँ का भोजपुरी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी-फारसी-पालि-प्राकृत, अपभ्रंश, पुरातत्व, भाषा-भारतीय संस्कृति आदि अनेकानेक भषन आ साहित्यन के मर्मज्ञ विद्वान हईं, हईं । सभ भषन के एक-एक शब्दन के उद्भव, प्रचलन आ वर्तमान तक के बदलत रूप के बारे में उहाँ के खूब गहिर पइठ आ शोधपूर्ण जानकारी बा । साहित्यकार आ शिक्षा विभाग के पदाधिकारी दशरथ तिवारी सन् 1986 ई आंजनेय जी के "शब्द-स्वामी" के गौरवमयी उपाधि देले रहलीं ।

आंजनेय जी उत्तर प्रदेश के 'बलिया जनपद के गंगातटीय उजियार रहनिहार हईं, उहाँ के परिवार शुरुवे से ही सम्पन्न, सभ्य-शिष्ट, सुसंस्कृत आ विद्वा रहल बा । आंजनेय जी विद्या-वारिधि, साहित्य-दिवाकर, भाषा-पारखी आ शिक्षा हईं । सभ विधा आ सभ दिशा में उहाँ के अबाध गति बा । उहाँ के जीवन आ पर विवेकी राय, उमापति पाण्डेय, मार्कण्डेय राय सहित अनेक विद्वान बहुत कुछ बाड़न । देश के सभ हिन्दी आ भोजपुरी के पत्र-पत्रिकन में आंजनेय के शो गम्भीर, ठोस, विचारोत्तेजक रचना छपल बा । उहाँ का हिन्दी आ भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर हईं । उहाँ का हिन्दी आ भोजपुरी के रस-सिद्ध कवि हईं काव्य-सिरजन से जादे उहाँ का गद्य-साहित्य में ही रमीले आ रचीलें ।

आंजनेय जी जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र रहलीं, तबे संग-साथ डॉ॰ राजबली पाण्डेय, आदि से हो गइल । ओइसन महान साहित्य प्रभाव उहाँ पर बहुते परल आ साहित्य के क्षेत्र में आगे बढ़े के प्रेरणा मिलल । प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति आ पुरातत्व अउर हिन्दी में एम.ए. कइलीं । (गोरखपुर) भी कर लीहलीं । उहाँ के आगे चल के 'सगुण-भक्ति धारा में बाल उपासना' विषय पर शोध-ग्रंथ तेयार कइ के पी-एच.डी. के उपाधि पटना वि.वि. कइलीं । एह घरी बाल मनोविज्ञान आ बाल-साहित्य के चर्चा जोर-सोर से होत दिशा में सिरजन के काम भी तेजी से हो रहल बा, बाकिर आंजनेय जी त बरिस ही, अपना शोध-ग्रंथ के जरिये एह दिशा में अतुलनीय कार्य कर के दिशा-बानी ।

डॉ॰ आंजनेय जी शिव प्रसाद विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, बक्सर में प्राध्य पद पर कार्यरत रहीं । एह विद्यालय में शिक्षण, अनुशासन, सांस्कृतिक कार्य, पत्रिका आदि सभ कामन में उहाँ का कीर्तिमान स्थापित कर देले बानी । ओह वि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"ज्ञान तरंगिणी" पत्रिका के उहाँ का बहुते लगन, दक्षता, सूझ, विद्वता आ तन्मयता से सम्पादन करत रहीं । उहाँ का ज्ञानतरंगिणी के **गाँधी शती अंक**, श्रद्धांजलि अंक (दिनकर के प्रति), **लोकमान्य तिलक अंक, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अंक,** जनपदीय अंक आदि विषय के अनुसार भरल पूरल विशेषांक निकाल के अपना विद्वता आ सम्पादन कला के धाक जमा देले बानी । सभ विशेषांक पठनीय, मननीय आ संगरहनीय बा । आंजनेय जी के ही द्वारा सम्पादित 'चतुर्मुख' पत्रिका के पं. पद्म सिंह शर्मा विशेषांक भी बेजोड़ बा ।

डॉ. 'आंजनेय' जनपदीय आन्दोलन के विजयी सेनानी पं. बनारसी दास चतुर्वेदी के सान्निध्य में रह के, उनसे प्रेरणा पाके, जनपदीय आन्दोलन के गति देवे, व्यापक बनावे, ओकर महत्ता के लोकपक्ष के उजागर करे खातिर तन-मन-धन से, समर्पित भाव से लगल बानी, जवना के जीवन-ज्वलन्त रूप आ स्वर उनुका ललित निबन्ध पुस्तक **'विचार बन्ध'** में जगमगा रहल बा । जनपदीय आन्दोलन के महारथी 'आंजनेय जी' के प्रशंसा आ गुन-गान पं. बनारसीदास चतुर्वेदी जी अपना प्रसिद्ध पुस्तक **'महापुरुषों की खोज'** में कइले बानी ।

आंजनेय जी के सामाजिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक साधना आ सेवा के नाप-जोख कइल आसान आ सहज नइखे । उहाँ का अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना (बिहार) के संगठन-मंत्री, प्रचार-मंत्री, प्रकाशन-मंत्री, साहित्य मंत्री, महामंत्री आ अध्यक्ष रह चुकल बानी । अखिल भारतीय अन्तर जनपदीय परिषद आ चतुरी चाचा भोजपुरी संस्थान के भी महामंत्री बानी । भोजपुरी अकादमी, पटना के भी उहाँ का सामान्य सदस्य रह चुकल बानी । 'भोजपुरी साहित्य-मंडल' बक्सर, 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा', वाराणसी आ भारतीय लेखक संघ, दिल्ली से भी उहाँ का जुड़ल बानी । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना के संरक्षक मंडल में भी उहाँ का बानी । उहाँ का हर साल (जबले झड़प जी जिन्दा रहले) कुलदीप नारायण झड़प के जन्मदिन पर लिलकर (बलिया) में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, अन्तर जनपदीय परिषद के त्वावधान में देश के अनेक विद्वानन आ विदुषिन के सम्मानीत करत अइलीं ।

डॉ॰ आंजनेय के नागरिक अभिनन्दन पटना, बक्सर आ गाजीपुर में धूमधाम से हो चुकल बा । अनेक संस्थन से उहाँ के सम्मान भइल बा, उपाधि मिलल बा, जवना के विवरन आगे दिहल बा ।

आंजनेय जी के 'विचार बन्ध' पुस्तक के कई नामी संस्थन से पुरस्कृत कइल गइल बा । उहाँ के ढेर रचना हिन्दी आ भोजपुरी के पत्र-पत्रिकन में छप चुकल बा । छपते रहेले । सत्याग्रही गाँधी जी आ सच्ची शिक्षा, शिक्षा में अनुशासन, आस्था आ श्रद्धा का संकट, ईसार पइसे दलिदर निकसे, बापू, उर्दू कवियों की दृष्टि में, अब ना -एगो हुचर्चित उत्तम भोजपुरी कहानी, गाजीपुर की भोजपुरी (सर्वेक्षण आ शोध-प्रधान) आदि रचनन के छपला के आ सराहना मिलला से सभे परिचित बा । आंजनेय जी अनेक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तकन आ ग्रंथन के सम्पादन कइले बानी जइसे आचार्य पं. रामक
उपाध्याय-स्मृति-ग्रंथ । काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के विशाल हिन्दी
कोश के संपादक मंडल में उहाँ का रह के बहुते सहयोग देले बानी । उहाँ के
में छपल पुस्तक **'नये-नये निबन्ध'** में एक सौ एक सामयिक ललित भावोत्तेजक
निबन्ध बा । इ पुस्तक रूप प्रकाशन, पटना से छपल रहे । राज्य लोक सेवा आय
प्रतियोगी परीक्षन में मदद देबे वाली उहाँ के बहुते उपयोगी पुस्तक के नाँव ह
हिन्दी । इहो रूप प्रकाशन, पटना से ही छपल रहे । कहानी--लेख, कविता
विधा में उहाँ के सफलता आ अधिकार के साथे लिखीले । बाकिर जादे गद्य-
के ही उहाँ का लेखक आ चितेरा हईं ।

डॉ. आंजनेय जी परोपकारी, सात्विक रहन--सहन, आचार- विचार के
मनई हईं । दृढ़ निश्चयवाला हईं । वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि के भाव
उहाँ का ओत-प्रोत बानी । उहाँ का विनम्र हईं आ स्वाभिमानी भी । अ.भा.
साहित्य सम्मेलन, पटना के तेरहवाँ अधिवेशन आरा में अप्रैल 1993 में भइल रहे।
में आंजनेय जी के पुस्तक **विचार बन्ध** पर हरिशंकर वर्मा पुरस्कार मिलल रहे
पुरस्कार में अपना पास से भी रकम मिला के उहाँ का वापस संस्था के ही दे
एही से पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय पुरस्कार के शुरूआत भइल । अइसन उदार हईं
जी । उहाँ का गाँव पर बड़-बड़ साहित्यकार पत्रकार पहुंचत रहेले । सभ के
में उहाँ का जी जान से लागल रहीलें । उहाँ का आपन विशाल खेती के भी
करीलें आ कृषि विशेषज्ञ भी हईं । उहाँ में गुन ही गुन बा ।

2

डॉ. अनिल कुमार 'आंजनेय' जी के जनम गंगा तट पर बसल गाँव
में 1933 में दीपावली का दिने चार बजे साँझ के भइल । पिता श्री सिद्धनाथ
मुहम्मदाबाद में वकालत करीं । उहाँ के मुख्तारखाना हर तरह के अतिथियन
रहत रहे । शील-सुभाव आ भेस-भूषा देखि के इहे लागे कि कवनो ऋषि-सन्त
नेह-छोह से मन के तिरपित कर रहल बा । जब कबो उहाँ का गाँवे
लड़िका-सयान के जमघट लाग जाय । दरअसल आंजनेय जी शील-सुभाव,
विनम्रता, सेवाभाव आ अतिथि-सत्कार विरासत में पवले बानी । सन्त
पिताश्री सोचिए-समुझ के नाँव रखलीं- **अनिल कुमार** यानी **'आंजनेय'** ।
के अधिकांश गुन आंजनेय जी में बा -**'विद्यावान गुनी अति चातुर, रामकाज
को आतुर ।'** रामकाज यानी लोकसेवा, लोक के काज ! सबसे अधिक कठोर
धर्म' मानल गइल बा आ हनुमान जी के आपन आदर्श मानेवाला अनिल कुमार
'आंजनेय' रस-बस गइल होखस । साहित्य-सेवा से बढ़के साहित्यकार-सेवा

पितामह स्व. महादेव राय जी काव्य-रचना में निपुण सद्गृहस्थ आ
एगो प्रभावशाली व्यक्ति रहीं । उहाँ का एगो महाकाव्य **'कांग्रेसायन'** लिख
जवना के लोग **'क्रान्तिकारी रामायण'** भी कहेला । ओकर शुरूआत एगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0: In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँधी उर अति सोच, कृप्स गए निज देश जब
कहहिं ब्रिटिश सब पोच, नहिं समुझहिं खल बात अब ।'

सन बयालीस के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के घटना-चित्र के उरेहत डॉ. देवकी राय जी अपना उपन्यास 'श्वेतपत्र' के तीसवाँ-इक्तीसवाँ अध्याय में आदरणीय महादेव राय जी के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डलले बानी। उहाँ का लिखले बानी "कवि इकसठ बरिस के बूढ़ किसान । गेहुँआ रंग, साधारण कद, घन मोंछ, सिर के बाँद एकदम साफ, धोती-कुरता, पैर में लुधिआना, हाथ में छड़ी, बँकुड़ी आ कुल्ह बला के एगो सुभेख-सज्जन गँवई सरदार ।" एही क्रम में डॉ. राय के लिखल आंजनेय जी के एगो शब्दचित्र देखीं -'नाति लम्बा लमहर, गठल, साफ साँवर, मुँह पर बहुते हलुके-हलुके झलकत चेचक के दाग; खादी के धोती कुरता आ जाकिट वाली गाँधीवादी पोशाक में निखरल एगो सुरूचिपूर्ण प्राध्यापक नवयुवक, जेकरा आँख में पोढ़ पढ़ता के चमक बा आ मुखमंडल पर विनम्र नम्रता, मुँह के बोली मोट-फाटल बाकिर सुरीली, सिर के बाल ऊपर किओर झाड़ल बाकिर अस्त-व्यस्त, तनिक हड़बड़ी वाला लेकिन असथिर आ आश्वस्तकारी बनके छा जायेवाला संस्कारी व्यक्तित्व; अइसन व्यक्तित्व कि जेकर सेवा-भाव से भरल विनम्रता संकोच में डाल देले; अइसन संकोच के अन्वर्थ रूप में ई 'अनिल कुमार आंजनेय' अपना दुआर पर पहुँचेवाला हरेक अतिथि के का आपन स्वामी राम मानिए के सत्कार-सेवा में जुट जाला ?" (संगम का साहित्यिक सिद्ध, पृष्ठ 47) आंजनेय जी के व्यक्तित्व आ रहन-सहन के चित्र आजुओ एही विशेषतन से जुड़ल बा । खाली ऊपर आइल 'नवयुवक' शब्द का जगहा बहत्तर साल के एगो वयोवृद्ध के छवि सोभ्ना आवेले । परिवार के हर व्यक्ति में बिपुल सेवाभाव आ विनम्रता । सब केहू में साहित्यिक रूचि । छोट भाई मुन्ना बाबू (चन्द्र प्रकाश जी) मुहम्मदाबाद में एडवोकेट बानीं । नीमन वक्ता, राजनीतिक सूझ-बूझ वाला, अपन बात प्रभावशाली ढंग से राखे में माहिर । कला आ साहित्य से घर भर का बहुते अनुराग बा ।

'आंजनेय' जी प्रचार-प्रसार से दूर रहीले- एक-से-एक भव्य समारोह बक्सर इहाँ का करवलीं, कइलीं बाकिर बिल्कुल निरपेक्ष रह के । अन्तरजनपदीय परिषद् में भी बहुत काम भइल बा, जनपदीय चेतना के फइलाव भइल बा । धरम-करम के बाहरी पाखण्ड में विश्वास आ दिलचस्पी नइखे । साथ-संगत में तीर्थ-दर्शन से भी परहेज नइखे । आंजनेय जी जे कुछ करीले, पूजा का भाव से निष्ठापूर्वक करीले आ हरमेसे अलमस्त -निर्द्वन्द्व रहीले । साहित्य, समाज, संस्कृति से जुड़ल समारोह होखे भा हित-मित के काम- आंजनेय जी बिना कवनो थकान आ ऊब के लागल रहीले । शिव प्रसाद इण्टर कॉलेज में सुदक्ष अध्यापक का रूप में बहुते लोकप्रियता रहल, त इटाढ़ी उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक का रूप में खूब यशो मिलल । 31 जनवरी 1996 के आंजनेय जी सेवा-निवृत्त भइलीं । एगो भरोसामन्द मित्र,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तम कोटि के सहयोगी आ अथक समारोही का रूप में आंजनेय जी को स्वीकृति-सम्मान मिलत रहल बा । सहयोगी शिक्षक गोपाल प्रसाद जी के कहना

"बाबू भइया ही व्यक्ति-व्यक्ति को, जब देखो तब कहते रहते
हाथ जोड़कर स्वागत सबका, मिलने पर करते रहते ।
भार से तरूवर झुक जाता, जब फल लग जाते पात-पात
व्यवहार आपके ऐसे हैं, चरितार्थ हो रही यही बात ।"

दशरथ तिवारी (अवकाश प्राप्त उपशिक्षा निदेशक, बिहार सरकार) के में -'आंजनेय जी के हृदय अत्यन्त संवेदनशील हवे । परदुःखकातरता उनका के स्थायी भाव ह । दोसरा के तकलीफ सुन के पाँव-पियादे दउड़ पड़ेलन आ औकात भर ओके दूर करे के चेष्टा करेलन ।" इनकरा समाजसेवी सुभाव आ प्रवृत्ति का पत्नी **श्रीमती विद्यावती देवी** से हमेशा सहयोग मिलत आइल रात-बिरात, समय-कुसमय हरदम अतिथि-सेवा के इनकर व्रत पूरा करे में विद्या खुशी-खुशी साथ निबाहत आइल बाड़ी । आजकल ऊ मधुमेह के रोगी बाड़ी तब अनवरत चल रहल बा । बेटी शशि पूसा में बाड़ी काहे कि उहवें दामाद कृषि-वैज्ञानिक का पद पर सेवारत बाड़न । पहिले के संयुक्त परिवार त अब बा बाकिर आंजनेय जी का चिन्ता में सभ के हित आजो समाइल बा- परिजन से लेके मित्रजन-सभकर हित । उमिर के असर आ पत्नी के रोग का आपाधापी तनी घटल जरूर बा बाकिर बक्सर-भरौली के चक्कर आ चीन्हा-पर हित-मीत के चाय-मिठाई से सत्कार पूर्ववत् जारी बा । बक्सर में बटाई राम के त भरौली में रामव्यास जी के बर्फी- चाय के दोकान । निश्चित समय पर आंज के संगति मित्र लोगन का सुलभ बा आ उनका रहते भला आपन जेब टोवे के दोसर के करी ?

आंजनेय जी के एगो आउर विशेषता बा- चिट्ठी लिखल । हर मित्र उहाँ के सैकड़न चिट्ठी होई । कवनो खास बात बतावे खातिर दू-तीन गो चिट्ठी ! हर पत्र में उहाँ का हृदय खोल के रख दीले- अन्तरंग स्नेह से भरल शब्द ! शब्द के पारखी त आंजनेय जी जइसन बहुते कम होइहें । 1988 में अकादमी (पटना) से प्रकाशित **'विचार बंध'** पुस्तक के सभी निबन्ध एह शब्द के सबूत बा । हिन्दी-भोजपुरी के अटूट सम्बन्ध एह में उजागर भइल बा । सभी बहुते साफ-सुथरा, गंभीर, रचनात्मक विचार से भरल बा । भोजपुरी-निबन्ध विकास के रेखांकित करत 'विचार बंध' आस्वाद का स्तर पर ललित-निबन्ध बा । आंजनेय जी एह पुस्तक में एगो शैलीकार आ शब्द के जादूगर का रूप में आइल बाड़न । **नए-नए निबन्ध', सामान्य हिन्दी, सृजन यज्ञ जारी है, सृजन यात्रा** आदि इहाँ के अन्य प्रकाशित पुस्तक बा । भोजपुरी में 'हम-हम बीच' आ **'ईसर पइसे दरिदर निकसे** तुरन्त छपेवाला बा ।

आंजनेय जी का **विद्यावाचस्पति, विद्यासागर, साहित्यश्री, शिरोमणि, भोजपुरी भास्कर, भोजपुरी भूषण** आदि के मानद उपाधि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्थन से मिलल बा । जनपदीय सेवा, हिन्दी आ भोजपुरी सेवा खातिर इहाँ के सम्मान जगह-जगह कइल गइल बा । बक्सर के लायन्स क्लब इहाँ के सम्मान एगो आदर्श शिक्षक का रूप में कइले बा । आंजनेय जी के बहुआयामी व्यक्तित्व हर तरह से सम्मान के हकदार बड़लो बा । एही क्रम में डॉ. विवेकी राय जी के पुस्तक **'संगम का साहित्यिक सिद्ध'** के चर्चा कइल जरूरी बा जवन आंजनेय जी के व्यक्तित्व आ कृतित्व पर लिखल बा । डॉ. राय बिना कवनो लाग-लपेट के सहज रूप से साफ शब्दचित्र खींचे में माहिर बानी । बहुत मनोयोग से एह पुस्तक में डॉ. आंजनेय के परिवेश, परिवार, गाँव का संगे-संगे उहाँ का व्यक्तित्व के ओह सब पक्ष-पहलू के उजागर कइल गइल बा जवन आदमी के मनुष्य का कोटि से ऊँचा उठा के देवत्व का कोटि में पहुँच देला आ पाठक का मन में श्रद्धा-सम्मान के भाव जगा देला । बिहार-उत्तरप्रदेश के साहित्यकार लोगन के एगो समिति डॉ. आंजनेय के अभिनन्दन करे के विशाल योजना बनवले बा आ श्री रामप्रवेश शास्त्री जी का देखरेख में बड़हन **'अभिनन्दन ग्रन्थ'** छप रहल बा ।

आंजनेय जी काशी नगरी प्रचारिणी सभा (वाराणसी) अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, विश्व भोजपुरी सम्मेलन, अखिल भारतीय अन्तर जनपदीय परिषद्, स्वामी सहजानन्द सरस्वती विद्यापीठ, साहित्योद्यान; साहित्य सभा आदि संस्थन से सक्रिय रूप से जुड़ल बानीं । अ.भा. लेखक संघ (नयी दिल्ली), संस्कृत संजीवन समाज, भोजपुरी परिवार, भोजपुरी साहित्य संस्थान (पटना), भोजपुरी साहित्य मण्डल (बक्सर), तुलसी परिषद्, शिक्षा विकास समिति, सर्वजन कल्याण बालिका पीठ, मानव सेवा संघ, अवधी परिषद् (बाराबंकी), साहित्यकार संघ (बाँदा), भोजपुरी अकादमी (पटना) आदि से भी इहाँ का सम्बद्ध रहल बानी । **'ज्ञानतरंगिणी', चतुर्मुख, ऋषिवाणी, आशा, भोजपुरी कथा कहानी** आदि पत्र-पत्रिकन भा **'नयी शिक्षा नीति स्मारिका', भोजपुरी के ललित निबन्ध** का प्रकाशन में संपादक या परामर्शदाता का रूप में सहयोग देत आइल बानीं । आकाशवाणी (पटना) से अनेक वार्त्ता प्रसारित हो चुकल बा । अ.भा. भोजपुरी साहित्य सम्मेलन इहाँ के पुस्तक 'विचार बंध' पर **दिनकरशंकर वर्मा पुरस्कार** देले बा ।

महामंत्री का रूप में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संगठन में इहाँ का मजबूत बनवलीं आ कईएक गो पुरस्कारन के राशि एकत्र करवलीं । जे महामंत्री सम्मेलन के अध्यक्षो बनल बा ओह में अबले गहमरी जी, पाण्डेय कपिल आ आंजनेय जी ही बाड़न । इहाँ में सत्वगुण के उजास भरल बा, एही से अज्ञान आ अहंकार के अन्धकार दूर-दूर ले नजर ना आई । आज का युग में गँवई संस्कृति आ प्रतिभा के अइसन मिसाल बिरले मिली । टूटन, कुंठा, विघटन, उदासीनता आ दुराव-अलगाव के एह युग में आत्मीयता के सदाबहार लहर बनके सबका भीतर लहरात रहेवाला सहृदय सुहृद बड़ा भाग से भेंटेला- अइसन मनई जे सबका खातिर जीयेला, जे सबका हित में समर्पित बा, आ एही से ऊ सरछात **'साहित्य विग्रह'** बा ।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के 18वाँ आ 19वाँ सत्र के

भगवान सिंह 'भास्कर'

-डॉ॰ विद्याभूषण श्री

पेशा से एगो कर्मठ बैंक पदाधिकारी, शिक्षा से विज्ञानवेत्ता गणितज्ञ आ साहित्यकार भगवान सिंह 'भास्कर' बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति बानी। 20 1949 ई. के बिहार राज्य के तत्कालीन सारन जिला (सम्प्रति सिवान जिला) के प्रखण्ड के श्रीस्तापुर गाँव में एगो साधारण किसान परिवार में पैदा भइल भास्कर से विलक्षण प्रतिभा के धनी बालक रहलीं।

भगवान सिंह 'भास्कर' जी साहित्य सृजन आ संगठन दूनू में समान सक्रिय बानीं। एक ओर उहाँ का अनेक अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय आ क्षेत्रीय संगठनन के सक्रिय पदाधिकारी का संगे-संगे अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य पटना के दू बार महामंत्री (18वाँ आ 19वाँ सत्र) होके भोजपुरी संगठन के गतिमयता प्रदान कइले बानीं, वोहीजा हिन्दी-भोजपुरी के 20 गो महत्वपूर्ण पुस्त साहित्य-सृजन के एगो उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित कइले बानीं।

भोजपुरी-प्राण पाण्डेय कपिल उहाँ के हिन्दी-भोजपुरी के धुआँधार संज्ञा दीहले बानीं। हमरा समझ से भास्कर जी के सन्दर्भ में उमेश कुमार पा के कहनाम अक्षरशः सही बा -"असाधारण प्रतिमा के धनी भास्कर जी के क लोक साहित्य, कथा-कहानी, लेख-निबन्ध, यात्रा-संस्मरण, संपादन-संकलन आ क्षेत्र में महारत हासिल बा। त्याग आ सेवा के प्रतिमूर्ति, कर्मठ, उदार अउर लेखक आ लोक साहित्य के मर्मज्ञ अध्येता आ अपरिमेय जीवट से सराबोर महान उपासक भगवान सिंह 'भास्कर' के सामने बड़-बड़ दिग्गज साहित्यका दिखाई पड़तारे।"

शिक्षा : अपना समय के इलाका के सबसे तेज विद्यार्थी, वर्ग में प्रत में सर्वदा सर्वप्रथम स्थान प्राप्त, महाविद्यालय में सदा सरकारी मेधा छात्रवृत्ति, आनर्स तक निःशुल्क शिक्षा के लाभ प्राप्त, 1967 ई. में प्रथम श्रेणी में अच्छ उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण, इंजीनियरिंग के पढ़ाई खातिर 1967 ई. में सिन्दरी में चयन बाकिर परित्याग। बी.एस-सी. आनर्स (भौतिकी) 1970 ई. बैंक हिन्दी परीक्षा, साहित्यालंकार-1989 ई. मानद उपाधि विद्यावाचस्पति (पी एच

साहित्य सर्जना : भगवान सिंह 'भास्कर' में बचपने से साहित्य अंकुरित होखे लागल। 11 वर्ष के अल्पवय में 1961 ई. में अपना विद्यालय में तुलसी जयन्ती में कविता प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता आ भाषण प्रतियोगिता शामिल होके भास्कर जी तीनू में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कइलीं। बाद में हिन्दी विभिन्न पत्र-पत्रिकन के कुशल सम्पादन के संगे-संगे अनेक महत्वपूर्ण पुस्तक आ सम्पादन कइलीं जवना के विवरण अधोलिखित बा-

पत्रिका सम्पादन : 1. प्रधान सम्पादक : साहित्य प्रहरी, 2. प्रधान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक : बयार, 3. उप-सम्पादक : बिगुल, 4. प्रबन्ध सम्पादक: भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका 6. सम्पादक मण्डल के सदस्य : भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका ।

प्रकाशित पुस्तक : 1. इन्द्रधनुष : हिन्दी कविता संग्रह 3 खण्ड में, लोक साहित्य, 2. भास्कर लोक रामायण : लोक महाकाव्य/शोध प्रबंध-8 खण्ड में एम.ए. (हिन्दी) पाठ्यक्रम पर आधारित, 3. लोकधर्म : शोधपूर्ण निबंध संग्रह-2 खण्ड में, एम. ए. (हिन्दी), ज.प्र. विश्वविद्यालय छपरा के पाठ्यक्रम में सहायक ग्रंथ के रूप में संकलित, 4. भोजपुरी के विवाह गीत : 36 नेग के 108 गीत : एम.ए. (हिन्दी) अंतिम वर्ष, ज. प्र. विश्वविद्यालय छपरा (बिहार) के पाठ्यक्रम में सहायक ग्रंथ के रूप में संकलित, 5. मंगल गीत : 102 मांगलिक झूमर आ सहाना, 6. बगिया में बोले कोइलिया : लोक साहित्यपरक संकलन, 7. गूँज लोकगीतन के : लोकगीतपरक शोध 8. सावन के फुहार । 9. हिन्दी साहित्य सुधा, यात्रा-संस्मरण : 10. संग सागर संगम : पश्चिमोत्तर भारत के नौ यात्रा संस्मरण, 11. सोनहुला सफर : छः राज्यन के नौ रोमांचक, आनन्ददायक ज्ञानवर्द्धक यात्रा-संस्मरण 12. लमहर उड़ान : देश-विदेश के सात रोचक यात्रा-संस्मरण ।

कहानी-संग्रह : 1. भाई के सौगात-11 कहानियन का सुन्दर संग्रह, 2. बसंत फेरू बहुरल- 18 कहानियन के अनूठा संग्रह । **भाषण-संग्रह :** 1. भास्कर वाणी : भारत के 5 राज्यन के दस भाषण-संग्रह, 2. भोजपुरी के अस्मिता-चिंतन ।

समीक्षा-संकलन : 1. समीक्षा दर्पण, 2. कसौटी ।

विविध : 1. भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत, 2. भगवान गीता : लोकधुन में श्रीमद्भगवद्गीता ।

संकलनन में रचना : अबतक लिखल-सम्पादित कुल 22 किताबन के अलावा भास्कर जी अधोलिखित संग्रहन के सह-लेखक भी बानीं- 1. विश्वगन्धा, 2. कल्पना, 3. सूरज नहीं डूबेगा अब, 4. शंखनाद, 5. वसुंधरा, 6. बिहार विश्वविद्यालय पद्य-संग्रह, 7. अमराई, 8. एक मुट्ठी लाई, 9. तिरमिरी, 10. डुमरी कतेक दूर, (संयोजक सह प्रकाशन सचिव), 11. डेग पर डेग, 12. भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकू, 13. राष्ट्रीय काव्यांजलि, 14. कथा भारती, 15. आज के राग, 16. क्या कहकर पुकारूँ, 17. श्रीमंत, 18. शब्द-शब्द अनुगूँज 19. रामदयाल पाण्डेय स्मृति ग्रंथ ।

समर्पित पुस्तक : 1. पंचदर्शन : राजीव रंजन सिंह 'हिमांशु' (यात्रा-संस्मरण)

प्रकाश्य पुस्तक : (क) लोक साहित्य, 1. उड़न खटोला, 2. लोकदर्पण, 3. लोकलहरी-भाग-1, 4. लोक लहरी-भाग-2, 5. लोक लहरी-भाग-3, 6. लोक लहरी-भाग-4, (ख) यात्रा-संस्मरण, 7. आस्था के धाम, 8. भारत दर्शन, 9. साहित्य संस्कृति और समाज । (ग) साहित्योतिहास, 10. सिवान जिले का साहित्यिक इतिहास । (घ) लोक रागिनी : 11. भगवान गीत-दूसरा खण्ड, 12. भगवान गीता-तीसरा खण्ड, 13. शकुन्तला । (ङ) विविध : 14. लघुता से प्रभुता मिले, 15. जय हिन्दी- दोनों काव्य संकलन, 16. आइल बसंत बहार (गीत-संग्रह) 17. क्रान्तिकारी कदम (कहानी-संग्रह), 18. पुरइन के पात (निबंध संगह) 19. पद्मावती (उपन्यास) ।

पत्र-पत्रिकन में रचना : देश विदेश के हिन्दी भोजपुरी पत्र-पत्रिकन में भास्कर जी के लगभग दो सौ रचना प्रकाशित बावे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मान-पुरस्कार-अलंकरण-उपाधि : साहित्य सेवा खातिर देश-विदेश दर्जन से बेसी साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आ बैंकिंग संस्था भगवान सिंह 'भा के विभिन्न सम्मानन-अलंकरणन से सम्मानित अलंकृत कर चुकल बाड़ीसन । सम्मान में अनेक पुस्तक प्रकाशित हो चुकल बा, जवना के विवरण अधोलिखित :

(क) सम्मान में प्रकाशित पुस्तक :

1. **पुस्तक : भगवान सिंह 'भास्कर' भास्कर अभिनन्दन ग्रंथ** (प्रथम सम्पादक : सूर्यदेव पाठक 'पराग' आ सुभाष चन्द्र यादव, प्रकाशक : भगवान 'भास्कर' अभिनन्दन समिति द्वारा दारोगा प्रसाद राय महाविद्यालय सीवान (बि प्रकाशन वर्ष : 1999 ई., पृष्ठ सं. : 464, मूल्य : 201 रु० (50वीं वर्षगाँठ के अवसर पर प्रकाशित आ 30-4-2000 ई. के सीवान के समाहर्त्ता सह जिलाधिका रशीद अहमद खान द्वारा साहित्यमनीषी अलंकरण के साथ अभिनन्दन समारोह में स समर्पित) । 2. **भास्कर साहित्य समीक्षा,** सम्पादक : प्रो. पी. चन्द्रविनोद, प्रका शेखर प्रकाशन, बोरिंग रोड (पश्चिमी); 59, गाँधीनगर, पटना-1 (बिहार), प्रकाश : 2000 ई., 3. **साहित्य मनीषी भगवान सिंह 'भास्कर'** सम्पादक : सूर्यदेव 'पराग', 4. **साहित्य मनीषी डॉ. भगवान सिंह 'भास्कर' : एक परिचय,** प्रस्तोता वर्मा, प्र. वर्ष : 2002 ई. । 5. **साहित्य मनीषी डॉ. भगवान सिंह 'भास्कर'** और र्म, सम्पादक : व्यास मिश्र ।

(ख) सम्मान-अलंकरण

1. भारत सरकार के हिन्दी अकादमी, नयी दिल्ली द्वारा 'साहित्यिक कृति 1999-2000 ई. 2. बिहार सरकार के भोजपुरी अकादमी, पटना द्वारा 'भोजपुरी सम्मान, 1999 ई. 3.. भगवान सिंह 'भास्कर' अभिनन्दन समिति द्वारा 'साहित्यम अलंकरण 2000 ई. 4. अमेरिकन बायोग्राफिकल इन्स्टीच्यूट (यू. एस.ए.) द्वारा मैन द इयर 1997 ई. 5. सीवान जिला साहित्य सुरभि द्वारा संत तुलसी सम्मान 1995 अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा द्वारा राष्ट्रीय गीतकार 1997 राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त सम्मान 1998 ई. 8. अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा स द्वारा रानीगंज (पं. बंगाल) में कुंज बिहारी प्र. कुंजन सम्मान 1993 ई. 9. उ साहित्यिक संस्था बज्मे अनवर सीवान द्वारा नजीर अकबराबादी एजाज 1996 साहित्य विभूषण 1997 ई. 11. भारतीय स्टेट बैंक पदाधिकारी संघ जिला इकाई द्वारा 'साहित्य सेवा सम्मान' 1995 ई. 12. लोक जागृति परिषद् मुजफ्फरपुर द्वारा सेवा सम्मान' 2001 ई. 13. अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति (उ.प्र.) द्वारा राष्ट्रभाषा साहित्यालंकार 1997 ई. 14. अखिल भारतीय भाषा सम्मेलन द्वारा केरल के कोट्टयम में समन्वयश्री सम्मान 2001 ई. 15. अखिल भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा इन्दौर (म.प्र.) में साहित्यश्री सम्मान 2003 ई. 16. समाज बिलासपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा 3-12-2002 के साहित्य सेवा सम्मान 17. संगम सीवान द्वारा रामधारी सिंह दिनकर सम्मान 2002 ई. 18. सम्मान में स नामकरण सीवान के अमवारी प्रखंड रघुनाथपुर में सड़क के नामकरण इहाँ के भइल बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

19. विद्यावाचस्पति (पी-एच.डी.) विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ गाँधी नगर, इशीपुर, भागलपुर (बिहार) द्वारा विद्यावाचस्पति के मानद उपाधि ।

20. विद्यावारिधि- साहित्यिक सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, परिआवाँ, प्रतापगढ़ (उ.प्र.) द्वारा 'भास्कर लोक रामायण' पर विद्यावारिधि के मानद उपाधि ।

(ग) पुरस्कार : हिन्दी अकादमी (नई दिल्ली) से 21000 रु० आ भारतीय स्टेट बैंक (गोपालपुर, सिवान) से 1000/- आ बैंक द्वारा आयोजित अनेक प्रतियोगतन में प्रथम पुरस्कार मिलल बा ।

रचनन के प्रसारण अध्यक्षता आदि- भगवान सिंह 'भास्कर' के रचनन के प्रसारण आकाशवाणी (पटना) आ दिल्ली, पं. बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ के अनेक मंचन से हो चुकल बा ।

यात्रा- भास्कर जी के मन यात्रा करे में खूब लागेला । इहाँ का भारत के विभिन्न प्रदेशन यथा केरल, तमिलनाडु, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, गोवा, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पं. बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, बिहार, छत्तीसगढ़ आदि के विभिन्न रमणीक, धार्मिक अउर ऐतिहासिक स्थलन के यात्रा आ यात्रा-साहित्य के प्रणयन मन लगा के कइले बानी ।

पुस्तकन के समीक्षा- भगवान सिंह 'भास्कर' के पुस्तकन आ पत्रिकन के समीक्षा से संदर्भित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के मूर्तिकला के विभागाध्यक्ष प्रो. पी. चन्द्रविनोद के सम्पादन में एगो पुस्तक- 'भास्कर साहित्य समीक्षा' (पृष्ठ सं. 352, प्रकाशन वर्ष : 2000 ई.) प्रकाशित बा जवना में भास्कर जी के लिखल पुस्तकन, व्यक्तित्व-कृतित्व से संबंधित पुस्तकन आ पत्रिकन के आ सम्मान में प्रकाशित पुस्तकन के समीक्षा प्रकाशित भइल बा मुक्त कंठ से प्रशंसित भइल बा पत्र-पत्रिकन आ विद्वान लोग का दृष्टि में लोकधर्म लोकसाहित्य के क्षेत्र में 'मील का पत्थर' के रूप में समादृत बा । इहे ना, 'लोकधर्म' के समीक्षात्मक अध्ययन खातिर व्यास मिश्र के सम्पादन में साहित्य मनीषी डॉ. भगवान सिंह 'भास्कर' और लोकधर्म (पृष्ठ सं. 174, प्रकाशन वर्ष 2000 ई.) पुस्तक प्रकाशित बा ।

अन्तर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय सम्मेलनन/संगोष्ठियन में आतिथ्य भागीदारी- भगवान सिंह 'भास्कर' जी अनेक अन्तर्राष्ट्रीय-राष्ट्रीय सम्मेलन/संगोष्ठियन में भाग लेके महत्वपूर्ण भूमिका निभवले बानीं-

1. विशिष्ट अतिथि : विश्व भोजपुरी सम्मेलन, नयी दिल्ली 26-27 नवम्बर 2000 ई. (एक संगोष्ठी) । 2. प्रमुख वक्ता : भारत सरकार के संस्कृति विभाग, नयी दिल्ली द्वारा 28-10-2001 ई. के राबर्टसगंज (सोनभद्र, उ.प्र.) में आयोजित संगोष्ठी 'भारतीय लोककला : संकट और संरक्षण' में भाषण प्रस्तुत एवं प्रशंसित । 3. विशिष्ट कवि के रूप में चयनित : अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, 15वाँ अधिवेशन, कोट्टयम (कोट्टयम) केरल, 1-2 सितम्बर 2001 ई. (सर्वभाषा कवि सम्मेलन) । 4. विषय प्रवर्त्तक : अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, 17वाँ अधिवेशन, अशोक नगर, बेटियाँ, जलालपुर (सारण) बिहार, 8-9 अप्रैल 2000 ई. (एक संगोष्ठी) 5. व्याख्यान विश्व भोजपुरी सम्मेलन, नयी दिल्ली सम्मेलन स्थल- मेला ग्राउन्ड, द्वारका, पालम, नयी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

R.N.I. Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. Pt-42

दिल्ली 26 अक्टूबर 2002 ई. के 'भोजपुरी संस्कृति बदलत तेवर' विषय पर भाषण। **भाषण :** भोजपुरी समाज बिलासपुर (छत्तीसगढ़) द्वारा 3-12-2002 के व्यापार हि विलासपुर में आयोजित भारत के राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के 118वीं जयन्ती के अ पर भाषण प्रस्तुत आ प्रशंसित 7. कवि सम्मेलन के अध्यक्षता- अखिल भारतीय अ भाषा सम्मेलन के तत्त्वावधान में पटना (बिहार) में 22-12-2002 ई. के आयोजित अ महोत्सव के अवसर पर लोकभाषा कवि सम्मेलन के अध्यक्षता । 8. महामंत्री : अ भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन 18वाँ अधिवेशन, धरनीदास नगर, माँझी (स बिहार 7-8 फरवरी 2003 ई. आ 19वाँ अधिवेशन, मूँजा-मटियारी (गोपालगंज) हि 14-15-16 जनवरी 2004 ई.

पत्र-पत्रिकन द्वारा सम्मान- हिन्दी, अंग्रेजी आ भोजपुरी के अनेक पत्र-प यथा कलीग (मुबंई, महाराष्ट्र), राष्ट्रीय सहारा (नयी दिल्ली), दैनिक जागरण (गोरख उ. प्र.), हिन्दुस्तान (पटना, बिहार), दैनिक आज (पटना), दैनिक जागरण (प टाइम्स ऑफ इंडिया (पटना), हिन्दुस्तान टाइम्स (नयी दिल्ली), भोजपुरी विकास (बलिया, उ.प्र.), दैनिक आर्यावर्त्त (पटना), भाषा-भारती संवाद (पटना), भोजपुरी 'लखनऊ, उ.प्र.), अंग माधुरी (पटना), पाटलिपुत्र न्यूज सेंटर (पटना), भोजपुरी (पटना), सुपपावर (पटना) आदि में शसियत, सम्मान समाचार, उपलब्धि, परिचय प्रकाशित भइल बा जवना में कई पत्र-पत्रिकन में मुझे गर्व है, बधाई आदि शीर्ष फोटो सहित विवरणी प्रस्तुत बा ।

संगठनात्मक : भास्कर जी दो दर्जन से अधिक साहित्यिक सामाजिक, र एवं बैंकिंग संगठन के पूर्व आ वर्तमान पदाधिकारी बानी । इहाँ का कवनो संस अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, त कवनो के महमंत्री का रूप में खूब जम के काम का बानीं । प्रमुख संस्थन में अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन, विश्व भोजपुरी स कबीर विचार मंच, अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन, जिला भोजपुरी स (सीवान) आ भारतीय स्टेट बैंक पदाधिकारी संघ आदि बा ।

देश-विदेश के विद्वान लोग का नजर में भगवान सिंह 'भास्कर' सम्मान अर्जित कइले बाड़न । डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय, डॉ॰ शुकदेव सिंह, डॉ॰ अर्जु केसरी, डॉ॰ विवेकी राय, डॉ॰ राजेश्वरी शांडिल्य, पाण्डेय कपिल, डॉ॰ रमण शा प्रो॰ रामनारायण पटेल, आ गोपाल अश्क आदि मुक्त कंठ से इनकर सराहना कइ

डॉ॰ भास्कर अबहीं खूब सक्रिय बाड़न । हिन्दी-भोजपुरी साहित्य का इ बहुते उमेद बा । डॉ॰ भास्कर अबहीं खूब सक्रिय बाड़न । हिन्दी-भोजपुरी साहि इनका से बहुते उमेद बा ।

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से प्रो॰ ब्रजकि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, महम्मदपुर लेन, पटना-800 006 से प्र आउर प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा जे॰ एम॰ कम्प्यूटर्स, पश्चिमी लोहानीपुर, पटना-80 में अक्षर-संयोजित एवं मुद्रित । सम्पादकः प्रो॰ ब्रज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

वर्ष-८ : अंक-२
फरवरी १९९७

८६

परामर्श-मण्डल

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय : श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय
पं० गणेश चौबे : आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र
श्री मोती बी० ए० : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
श्री भोलानाथ गहमरी

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : जगन्नाथ
डॉ० शम्भुशरण : नागेन्द्र प्रसाद सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण
डॉ० ब्रजभूषण मिश्र : भगवती प्रसाद द्विवेदी

इस अंक के प्रायोजक

श्री भगवान सिंह 'भास्कर' : श्री देवसुन्दर पाण्डेय 'व्याकुल'

दूरभाष : ०६१२-२६११३४

इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह अंक में

कथनी सम्पादक के…कैथी खास भोजपुरी के लिपि ना ह…पाण्डेय कपिल …

कविता … … गजल (गाँव जे सहर भइल)…कृष्णानन्द कृष्ण…

" … … गजल (जिन्दगी बा असर कर रहल) …जगन्नाथ ……

" … … हरियर-हरियर महादेव …भगवती प्रसाद द्विवेदी

" … … मुँह लटकइहें … …बलभद्र … …

" … … गजल (भाव में मत कबो बहल करिहऽ) (श्रीमती) गरिमा बन्धु…

कहानी … … बखरा … … … डॉ० उषा वर्मा …

" … … भारा उतर गइल … विक्रमा प्रसाद …

लघुकथा … … आपन आपने ह … हरिकिशोर पाण्डेय…

" … … टीपन… … … (श्रीमती) अलका पाण्डेय

उपन्यास … … अमंगलहारी… … डॉ० विवेकी राय…

निबन्ध … … लहके चइतवा के रतिया हो रामा, टहके अँजोरिया श्रीराम सिंह 'उदय'…

" … … गाँव के संस्कृतियाउत समस्या·· आनन्द सन्धिदूत…

समालोचना … भोजपुरी कहानी-साहित्य में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद…डॉ० रामाशीष प्रसाद…

पुस्तक-समीक्षा … महतारी ममता क मूरति: मुक्तकीय प्रबंध काव्य ··डॉ० ब्रजभूषण मिश्र…

□

दाम—एक अंक के—पाँच रुपया

दाम—साल-भर के पचपन रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर साल भर के रियायती दाम—पैंतालीस रु

पत्रिका प्रायोजक शुल्क (आजीवन ग्राहक शुल्क)—साढ़े सात सौ रु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

[अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका]

इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

वर्ष-८ फरवरी १९९७ अंक-२

कथनी सम्पादक के

कैथी खास भोजपुरी के लिपि ना ह

भोजपुरी जगत में एगो गलत धारणा घर करत जा रहल बा कि कैथी खास भोजपुरी के लिपि ह। कुछ लोग एह बात के प्रचारो करत रहल आ एकर दुष्प्रभाव भोजपुरी के वर्तनियों पर पड़त रहल बा।

बाकिर तथ्य ई नइखे। तथ्य ई बा कि कैथी लिपि के प्रचलन ना सिर्फ भोजपुरी लिखे खातिर, बल्कि भोजपुरी का अलावे मगही, मैथिली, बज्जिका, अंगिका, अवधी, छत्तीसगढी, हिन्दी आ उर्दुओ लिखे खातिर होत रहल बा। आ ऊहो, सब काम खातिर कैथी लिपि के प्रयोग नइखे होत रहल। जादेतर चिट्ठी-पत्री, हथउटी आ दस्तावेज वगैरह लिखे खातिर कैथी लिपि के प्रयोग होत रहल बा।

असल में, एह लिपि के विकास मुसलमानी शासन काल में भइल, जबकि सरकारी दफ्तर आ कोर्ट-कचहरी के भाषा उर्दू रहे। सरकारी दफ्तर आ कोर्ट-कचहरी के मुलाजिम उर्दू भाषा आ उर्दू (फारसी) लिपि में काम करस। नागरी लिखे के अवसर ओह मोलाजिम लोगन के कमे मिलत रहे। बाकिर आम जनता, जेकरा सरकारी दफ्तर आ सरकारी कोर्ट-कचहरी से काम पड़त रहे, उर्दू लिपि से परिचित ना रहे, जबकि उर्दू लिपि में अभ्यस्त मोलाजिम लोगन के नागरी लिखे में दिक्कत महसूस होत रहे। अइसन ना रहे कि ऊ लोग नागरी लिपि से परिचित ना रहे। ऊ लोग भा आम लोग के नागरी पढ़े में कवनो दिक्कत ना रहे बाकिर नागरी लिखे में शिरोरेखा, ह्रस्व-दीर्घ के फरक आ संयुक्ताक्षरन के प्रयोग ओह मोलाजिम लोगन के विशेष झंझट में बुझाय जे उर्दू लिखे के अभ्यस्त रहे। एक त ओकरा शुद्धता के सवाल ओकरा सामने आवे, दोसरे ओह लोगन के नागरी में लिखल समय-साध्य लागे। एह से मोलाजिम लोग नागरी लिपि के सरलीकरण करे लागल, शिरोरेखा छोड़े लागल, ह्रस्व-दीर्घ के सरलीकरण एगो दीर्घ के अपना के कइल आ संयुक्ताक्षरन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

के प्रयोग छोड दीहल जेकर अभ्यस्त ऊ लोग उर्दू लिपि के चलते हो गइल। अक्षरन के आकृति के भी सरलीकरण ओही ढंग से भइल जेह ढंग से लिपि के सरलीकरण सिकस्ता उर्दू में कइल जाला। ई सरलीकृत रूप पढ़ल-लिखल आम लोग में लोकप्रिय होत चल गइल।

ई सरलीकृत रूप ओह कातिब, ताईद आ किरानी लोग का जादे पड़ल जे अल्पशिक्षित रहे,। उर्दू लिपि के टेढ़ापन आ अस्पष्टता के चले लिपि सीखल मुश्किल रहल आ जेकरा नागरियो लिपि के ध्वन्यात्मक रूप अपनावल कठिन रहे। एह से, देखत-देखत कैथी लिपि के प्रसार पढ़ल लिखल आम आदमी आ सरकारी दफ्तर आ कोर्ट-कचहरी से जुड़ल लोग का बीच दस्तावेज, चिट्ठी-पत्री जइसन कामन में होखे लागल।

कैथी लिपि के विकास कुछ ओही तरह से भइल बा जे तरह साहूकार के अल्पशिक्षित मुंशी लोग का बीचे महाजनी लिपि विकसित बा। कैथी आ महाजनी दुनू लिपि एके जइसन सरलीकरण के प्रक्रिया विकसित भइल बा। ई दोसर बात बा कि कैथी लिपि के प्रसार कुछ भइल कि कैथी में लिखो में कुछ किताबो छपल जइसे कि उर्दू में छपल बाकिर एकर वजह मुख्य रूप से सरकारी रहे आउर सरकारी भा काम-काज, दस्तावेज आ दैनन्दिन व्यवहार के चिट्ठी-पत्री का अलावे के व्यवहार नागरी लिपि के स्थान ना ले सकल। ई दोसर बात बा कि लोगन का पास कैथी में लिखल रामायण के पोथी मिलेला भा कुछ किताबो मिल जाला, बाकिर अइसन मिसाल इक्का-दुक्का मिलेला। कथा के पोथी, धार्मिक किताब, सन्तन के पद, साहित्यिक किताब भा आउर काम-काज में भरदर नागरी लिपि के व्यवहार होत रहल बा, एह में नइखे। ई स्थिति खाली भोजपुरिए क्षेत्र में ना, आउरओ जगह बा, जहां एह लिपि के प्रयोग भइल बा।

'कैथी' शब्द कायस्थ भा कायथ शब्द से बनल बा। मुसलमानी राज भा आगहूं अंग्रेजनों का जमाना में सरकारी दफ्तरन भा कोर्ट-कचहरी में कायस्थे लोग मुलाजिम होत रहल। सरकारी दफ्तर भा कोर्ट-कचहरी नोकरी आ मुंशीगिरी कायस्थ लोग के जातीय पेशा रहे। सही बात ई कि कायस्थ जात लोकधर्म से कम आ राजधर्म से बेसी जुड़ल रहल बा। उर्दू भा फारसी राजभाषा भइल त सबसे पहिले कायस्थे लोग उर्दू भा सीखल आ जब अंग्रेजी-राज आइल त उहे लोग सबसे पहिले अंग्रेजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकर वजह ई रहल कि आम तौर पर कायस्थ लोग के रोजी-रोटी के साधन मुंशीगिरिये आ नोकरिये रहल, जेकरा वजह से ऊ लोग शासक-वर्ग के लिपि-भाषा आ संस्कार से जादे जुड़ल अ जनता के लिपि, भाषा आ संस्कार से कम। घर के भीतरो ओह लोग के भाषा शासक के भाषा से ज्यादा सटल रहल बा आ जनता के भाषा से कम। तत्कालीन राज-भाषा उर्दू-फारसी से जुड़ल कायस्थ लोग अपना सुविधा खातिर कैथी लिपि के विकास कइल। एही से एह लिपि के नाम 'कैथी' पड़ गइल आ खाली भोजपुरिये ना, आउरी-आउर भाषा बोले वाली अल्प शिक्षित आम जनता रोजमर्रा के काम खातिर एकरा के अपनावल। वैदुष्यमूलक भा रचनात्मक लेखन में एह कैथी लिपि के उपयोग वस्तुतः एह से ना भइल कि एह लिपि के संकेत सीमित रहल, जबकि नागरी बइसन वैज्ञानिक लिपि पहिलहीं से सुलभ रहल। एह से एकरा के भोजपुरी भाषा के आपन लिपि बतावल सही नइखे। भोजपुरी भाषा के सामर्थ्य के ढोवे के क्षमता एह लिपि में ओइसहीं नइखे जइसे उर्दू-फारसी भा रोमन लिपि में संस्कृत भाषा के ढोवे के क्षमता नइखे। एह बात के समझ लेवे के जरूरत बा।

— पाण्डेय कपिल

□

गजल

— कृष्णानन्द कृष्ण

गांव जे सहर भइल
आँख से उतर गइल
प्रेम भाव से दिहल
जाम ई जहर भइल
चुप रहल जे आज ले
आग के लहर भइल
बात सुन जहर भरल
चाक ई जिगर भइल
'कृष्ण' का कहस भला
चार जब नजर भइल

□ दक्षिणी अशोक नगर, पटना-२०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

—जगन

जिन्दगी बा असर कर रहल
आँख सपनन से बा भर रहल
यार, चोन्हा ह सब वक्त के
लोग झूठो के बा डर रहल
खुद जरत बानी हम रात-दिन
लोग हमरा से का जर रहल
जी रहल दोसरा पर मगर
दोसरा पर ऊ बा मर रहल
कुछ त आँतर में बाटे भइल
गीत साँसन से बा झर रहल

श्याम भवन, एस० पी० सिन्हा पथ, ललिता होटल के पीछे, प

हरियर-हरियर महादेव

---भगवती प्रसाद सि

हरियर-हरियर महादेव, हरियर-हरियर बोलऽ!
आगा-आगा होरी चले बैलन के संगिया,
पाछा-पाछा बीया गिरावे प्यारी धनिया,
सोन्ह-सोन्ह गमकेला सरेह, हरियर-हरियर बोलऽ!
एक हाथे परिहथ बा, एक हाथे पैना,
होरी के जान बसे धनिया के नैना,
बड़ा गहिर बा पिरितिया के नेंव, हरियर-हरियर बोलऽ
बैलन के गरवा के घंटी मन भावे,
धनिया के पैंयनिया नेहिया जगावे,
भइल लथ-पथ पसेना से देह, हरियर-हरियर बोलऽ
बीच रे हराई में गिरेला बीया,
अचके अन्हरिया में बरि जाला दीया,
हरियरा जाला मन के सनेह, हरियर-हरियर बोलऽ
हारि-थाकि सेजिया पर दूनो परानी,
चउक पूरि देहिया के मेटे हलकानी,
रसे-रसे लागे नेहिया के लेव, हरियर-हरियर बोलऽ
हरियर-हरियर महादेव, हरियर-हरिहर बोलऽ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुँह लटकइहें

—बलभद्र

मुँह में तनी मीठा डाल के
निकलल एक सबेरे के
ना अइलन अबहीं ले
अन्हार हो गइल

अइसन त क हाली भइल
कतने दफे मेहरारू से डँटइलन
मुँह लटकवलन
एही लूर-लच्छन के पाछा
बाकी
रामकिसुन प कवनो असर ना

जइहें खेते त ओहीजे सती
बइठिहें केह के दुआरे-दालाने
लासा होखो जइसे
जगहिये ध ले ला
कवनो काम में भिरिहें
त बेसँपरवले दम ना लीहें

अबहीं त फुरसतिया हे होत रहे लोग
रोप-डोभ के
सोझियावत रहे लोग हाथ-गोड़
तले लीं—आकाश चटक गइल
सुखाये लागल खेत—
पपरिआये लागल

आ बिजुली !
बिजुली त देखाऊ साहु के डाल
तार प घुलटेले भुचेंगा
आ घरी-घंटा रहलो से का ?
केकर-केकर सम्हरी ?

का करसु रामकिसुन
बाप के बोरिंग बा कवनो
कि नथले रहसु अपने में
सोरहो घरी

पानी मिले के उमेद पवलें
दिन भ करहा बनवलें
माटी अबहीं नरमाहे रहे
दस कट्ठा खाती
दस बिगहा ठेठवलें
जी जाइत कसहूँ—सोचत रहलें
बाकी आपन बेंवते कतना
का बा अपना हाथ
मोका प ना बीया-बाल,
ना खाद-पानी

जंगी बाबू के बड़का टोपरा
आरी-आरी बड़ा सँच से सजलें
चीकन-चाकन
छलछल-छलकत करहा
अपना जाने एक-एक धान
बचावत-बरावत
(नमरी परांना आदमी)
बाकी जंगी बाबू
धुँआ अस मुँह बनवले
तरना-तनतनात
का-का दो सुना गइलें
'दस कट्ठा·· कठुली·· झँटुली
दस कट्ठा खातिर
नाम देलस सउँसे टोपरा'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोचे लगलन रामकिसुन
कि कवन चूक भइल
कहवाँ भइल बा नुकसान-जियान
आ करहा !
करहा का केहु के कपार प जाला
जियका त सभकर बरोबर
दम बिगहा चाहे दस धुर
सभकर त दोसरे में जाला
थोर भा ढेर
बाकी
आपन मन बोध ना पवलें
करेजा में सालत रहे ई बात
'दस कट्ठा···कठुली·· झंटुली'
ठाँवहीं ताकत रहे उनकर खेत
पसेनाइल रामकिसुन
तकलें अपना खेत के ओर
भीतरे-भीतर दरद अइंठत रहे देह
छोट टोपरी के दरद
छोटहन आदमी के दरद

कबो कमाये गइल रहलन परदे
बाकी अड़ाइल ना
गाँव बोलाइये के दम लेलस

कतने हाली
फुलाइल तीसी आ तेलहन
गूड़ के गमक से
गमगमाइल कल्हुआड़
आ अड़ल बाड़न रामकिसुन
मुँह प पानी के छोपा मारत

आज
आज खेर नइखे
फेनु डँटइहैं
निकलल एक सवेरे के
मेहराइ के सोझा मुँह लटकवले
बाकी चाल छोड़स तब त
पाछा-पाछा लागल रहेली
रामकिसुन बो

□ ६१, ए० बी० हॉस्टल, कमच्छा, बाराणसी—२२१०१०

गजल

—(श्रीमती) गरिमा बन्धु

भाव में मत कबो बहल करिहऽ
आस केहू के मत रखल करिहऽ

राह मंजिल के बा कठिन बाकिर
ओह प दिन-रात तू बढ़ल करिहऽ

दुख के तूफान कौनो आवे तबो
ओह से हिम्मत से तू भिड़ल करिहऽ

जुल्म होखे त झुकिहऽ मत 'गरिमा'
अपना हक के बदे लड़ल करिहऽ

□ इन्द्रपुरी, रोड न०-३, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

बखरा

—डॉ० उषा वर्मा

अब जा के वकीलाइन के तनी सँवास मिलल ह। पांच बजे भोर से जे भाग-दउड़ शुरू होला त दस बजे दिन ले मुँह धोये के सँवास ना मिले। मुरारी खा-पी के बैंक चल गइलन। पुष्पा उनका साथहीं खा के टी० वी० पर कवनो 'प्रोग्राम' देखे लगली। दूनो लइको खा पी के इस्कूल चल गइलन सन। वकीलाइन लोटा-दतुअन उठा के मुँह धोये चललीं त जूठ बरतन पर नजर पड़ गइल। लोटा-दतुअन एगो कोना में रख दिहली। सब जूठ बरतन बटोर के नल के नीचे रखली आ नल खोल के पानी से लबालब भर दिहली। फूलल रहेला त माँजे में दिक्कत ना होखे। जेठ-बइसाख त हइले ह झुराठी के दिन। खरकटल बरतन माँजे में पसीना छूट जाला। काल्हे पुष्पा टोकले रहली—"देखीं, रउरे चलते हमरा जूठकठार निकल गइल बा।" रोटी बेलत रहली। हाथ थथमाइल। क्षण भर खातिर बेलना ठहर गइल। बाकिर कवनो जवाब ना दिहली। पुष्पा ओर भर नजर देखहूँ के हिम्मत ना पड़ल। ना कवनो सफाइए देवे के मन कइल। कवन ठेकान। बुढ़ारी के आँख आ झुराठी के दिन। हो सकत बा कि कवनो बरतन कवनो कोना कोनी में कहीं तनी जूठ लागल रह गइल होखे। मने-मन सोच लिहली कि अब माँजे से पहिलहीं जूठ बरतन भरपूर पानी में फूला देब। ना जूठ के डर रही आ ना जूठकठार के।

नहा-धो के ऊपर के खुलल कोना में सूरज भगवान के जल ढारे गइली त नीचे बिहारी के ओसारा में ताके लगली। इहे इनकर रोज के नियम हो गइल बा। दिन भर त कामे में अझुराइल रहेली। बस, पूजा के बेरा तनी देख लेली वकील साहब के। जहिया उहाँ के मनगर लउकीले तहिया इनकरो मन हरियरा जाला। जहिया उदास रहीले इनका अनासो रह-रह के रोआई छूटे लागेला।

वकील साहब अपना खटिया पर चुपचाप मन मरले चउका के दुआरी ओर मुँह कइले बइठल रहनी। उनका बूझत देर ना लागल कि अबहीं ले उहाँ के जलपान नइखे मिलल। कहाँ सात बजे सबेरे जलपान के आदत! कहाँ दुपहरिया ले मुँह में कुछुओ ना गइल। करेजा खंखोरे लागल। तीस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बरिस पहिले के एगो पोसुआ कुकुर के इयाद पड़ गइल। तब बिहारी बा मुरारी के जिद्द पर एगो कुकुर पोसाइल रहे। बड़ा नीमन एकदम सुद्धा। कहियां कवनो बरतन में मुंह ना डललस। ना चउका में गइल। जब भूखाए, चउका के दुआरी पर बइठ के टुकुर-टुकुर ताके लागे। वकीलाइन देखे बूझ जास कि भूखाइल बा। ओकरा कटोरा में खायक डाल के सरका देस। बाकिर आज घर में ना ओइसन कवनो कटोरा बा, ना ओइसन खायक जवना पर वकीलाइन के एतना हक होखे कि जेकरा आगे चाहस, सरका देस। वकीलाइन के आंख लोरा गइल।

जब से वकील साहब के कचहरी आइल-गइल छूटल, दूनो बेटा लोग बंटवारा पर तूल गइल। घर-दुआर आ चीज बतुस त बंटाहीं के रहे। बंटाइल साथे-साथे माइयो-बाबूजी बंटा गइलन। बड़का बेटा बिहारी मकान के नीचलका हिस्सा में रहे लगलन। छोटका बेटा मुरारी के ऊपर वाला मकान मिलल। बाबूजी बिहारी के बखरा में पड़नी। माई के मुरारी आपन बखरा में रख लिहलन। कचहरी में बड़हन-बड़हन लोग के बोलती बंद करे वाला वकील साहब के बोलती बंद हो गइल। लइकाइयें से अपना हाथि जबाबी आ सूझ-बूझ खातिर 'अकिला' कहाये वाली वकीलाइन के बाति हेरा गइल। दूनो बेकत एक-दोसरा के मुंह ताकत रह गइल लोग। ठीक कहल गइल बा कि जे केहू से ना हारे से अपना औलाद से हारेला। नीचला खंड के अंसारा में वकील साहब के खटिया डाल दिआइल। सामने इहां पर उनकर सुटकेश रखा गइल। ऊपर रसोई घर के कोना में वकीलाइन चउकी पड़ गइल। बरतन-बासन, अंचार,-मसाला के बीच में जगह बना वकीलाइन आपन एगो पेटिओ अंटा लिहली। बेटा-पतोह के गृहस्थी जोता गइली। झाड़ू-बहाड़ू, बरतन-बासन करस-बनावस, खिआवस-खा बबूजी के बिहारी किहां सवेरे पहर दूध आ सांझिया पहर तरकारी ले आ के जिम्मा मिलल। बिहारी के त अपना ऑफिसे से फुरसत ना मिले लइकन के घरेलू मास्टर के छुट्टी दे दिआइल। वकील साहब पोता-पोती के पढ़ावे लगलन। बाकिर बाबा अब बाबा नीयर ना लागस पोता-पोती ना चाकलेट ले के आवस ना, मिठाई, ना खेलवना। बिना कुछ लिहले लइका परचेला ना सेआन चीन्हेला। बाबा के एक आवाज पर दउड़ आवे वाली पोती अब बगले से बात के अनसुना करके चल जाले। बाबा साथे हमेशा घूमे के तइयार पोता अब बोलवलो पर अनसुना निकल जाला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छत पर सूरुज भगवान के जल के लोटा लिहले वकीलाइन एकटक वकील साहब ओर ताकत रहली। "हमरा में एतना सत रहित, हम अइसन पतिव्रता रहितीं कि लोटा के जल दूध बन जाइव त.....

आगे कुछ सोचल ना गइल उनका से। लोरे से सूरुज भगवान के अरघ दिआ गइल। लोटा के जल लिहले चउका में घुस गइली। सभे त खाइये ले ले रहे। अपना बखरा के खायक थरियम में परोसली। एक हाथ में खायक दोसरका हाथ में पानी ले के जइसे उठत बाड़ी कि का जाने क ँसे, कइसे पुष्पा स मने आं के खाड़ हो गइली। कान में उनकर झनझनात आवाज पड़ल—"फेरु रउरा ई धंधा शुरू कर दिहनी? कहाँ जात बा ई खायक?" वकीलाइन के काटऽ त खून ना। एकदम सन्न। चारे दिन पहिले के बात ह। वकील साहब के मुँह सूझल देख के छते पर से इशारा से पूछले रहलीं—"खइनी कि ना?" वकील साहब मुड़ी हिला के इनकार कइलन। वकीलाइन अपना बखरा के खायक परोस के ले गइली। वकील साहब खात ना रहलन 'तोहरा घट जाई।' कह दिहली—"हम त खा लिहले बानी। एतना बाँचल रहल ह। खा लीं। वकील साहब भूखाइल त रहले रहलन। चुपचाप खा लिहलन। बिहारी के कनिया कहीं पूजा में गइल रहली। बाकिर पुष्पा अपना जगला से ई सब देख लिहली। खिआ-पिआ के अइली त पुष्पा के गभुआइल देख के इनका शंका भइल बाकिर ई ना सोचली कि एके बेर अइसन हो जाई। रात के मुरारी एकदम आग बबूला हो गइलन—"माई! तू कान खोल के सुन ले। हमरा घर में ई ना चली कि तें चोरी करके बाबूजी के खिअइवे। बाबूजी बिहारी भइया के बखरा में बाड़न। उनकर हाल ऊ जानस।" बहुत हिम्मत जुटा के एतने कहे पवली "बाबू! चोरा के कहाँ दिहनी? ऊ त हमार बखरा रहे.....

मुरारी चिल्लइलन—"तोर बखरा रहे त तोरा खाये खातिर, ना कि बाँटे खातिर। पइसा त हमरे नू लागल रहे? पेट में जे खा ले। एक दाना घर से बाहर ना जाये के चाहीं। फेरु अइसन ना होखे। होई तब देख लीहे। हमरा से खराब केहू ना होई।" आज के बात सुन के त मुरारी माता ना का कर दीहन। हाथ के थरिया कब फ्रिज में रख देहली पते ना चलल। पुष्पा झमाक से मुड़ के लवट गइली।

साँझ के छत पर एगो कोना में बइठ के पुष्पा अपना सहेली से बतिआवत रहली—"हमनी दूनो बेकत हरमेसा एके थरिया में संगहीं खाइले। अलगे-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अलगे खाये के बात त हमनी के सोचिए ना सकीं चाहें आपस में बाता-
काहे ना भइल होखे।"

छत के दोसरका कोना में उनकर दूनो लइका आपस में बाजी
रहलन सन। बड़का-कहे—"तू देख लीहऽ। बाजी लगा ल। हम डाक्टर
तब माँ हमरा बखरा में आ पापा तोहरा बखरा में रहीअन।"
छोटका कहे—"तू देख लीहऽ। लगावऽ बाजी। हम इंजिनियर बनब।
हमरा बखरा में आ पापा तोहरा बखरा में रहीअन।

वकीलाइन चउका के दुआरी पर बइठ के तरकारी काटत में
अँगुरी काट लिहली।

□ श्रीधरायण, प्रोफेसर कॉलोनी, मिशन रोड, दहियावाँ,

लघुकथा

आपन आपने ह

—हरिकिशोर पा

"राउर लिखल चिट्ठी लौटावे खातिर माफी चाहब। अइसने
बा"—ऊ कहलन, हँसत-लजात। हमरा छन से लागल। उनका माई के
तब लगल रहे। घिघियात कहले रहस—"हमरा के उबारीं...माई के
ले जातानी..... राउर कवनो सम्बन्धी उहाँ डाक्टर बानी.....
हथउटी दे दिहल जाव।" हम डा० सुरेश के चिट्ठी देले रहीं। आ आज
चिट्ठी लौटिये रहल बा। पुछलीं—"भेंट ना भइल का?"

हाथ जोड़ के कहलन—"भेंट! दरसन भइल महराज, दरसन
चिट्ठी लेके हँकासल हम डाक्टर लोग का कमरा में गइलीं, एक जना तब
'क्या है?' हम बिनती कइलीं—'सुरेश बाबू डाक्टर साहेब के खोजत
एगो चिट्ठी बा।' उ कहलन—'लाइए।' हम त दूनू हाथ जोड़ देलीं।
सयोग! ओकरा बाद का पूछे के रहे! पन्दरहियन उहाँका एक गोड़
माई बाँच गइली। एक दिन उनका के अजीसत कहलीं—'लखिया हं
हमार बाबू .... आपन आपने ह।'

चले का दिने हम परनामा-पाती करे गइलीं। डाक्टर साहेब एगो
बढ़ावत कहलीं—'जिन्होंने यह चिट्ठी लिखी है, उन्हें लौटा देंगे।' हम
काइल चिरउरी करत कहलीं—'अइसन काहे कइल जाता?' ऊ कह
'सुरेश बाबू छः महीने पहले ही बदलकर चले गये। मैं डा० सुरेश नहीं
□ रेलवे गोदाम रोड भगवान बाजार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

भारा उतर गइल

—विक्रमा प्रसाद

चनर चाह के भी चउफठ लांघ के घर का भीतर ना जा सकलें। गोड़ जइसे दुआरे पर गड़ के रह गइल होखे। भीतर सास-पतोह के चलत यतकही के एकहेक टुम कान का परदा से टकरा के टीस मारेलागल रहे करेज में। उनकर जनाना उनका महतारी से गिड़गिड़ा के कहत रही—

"माई जी! रउआ बात काहे नइखीं समुझत? मलतिया के बाबू के कहीं कुछ आउर-बाउर हो गइल त हमनी कवना घाटे लागब?"

"तें त अनेरहूँ फिकिर कइले बाड़े।"—उनकर माई के बोली सुनाई पड़ल—"चनर के कुछो ना होई।"

"कइसे कुछो ना होई?"—जवाब में कुछ खोनसाइल कुछ रोआइन बोली उनकर जनाना के आइल—'रउआ उनकर देह-दवासा नइखीं देखत? आदमी छव महीना खटिया पर पड़ल-पड़ल किरिया-करम कइल, पइसा के बारे में जेकरा दवा-दारू के के कहो कि सुबहित दूगो दनो मुँह में ना परत बा, आ अब अपना बाल-बच्चा के धागे कुछ दिन से खाड़ होके हमनी के पेट भरे खातिर जांघड़ चलावे लागल बा, ओकरा एतना दूर मुँइपड़ी ला के मार देबे पर लागल बानी?"

'हँ-हँ, हम त ओकर दुश्मन आइले बानी आ तेंहीं ओकर बड़का दाही हउ।"—महतारी उनकर चनचनइली…"जे नव महीना अपना पेट में कर बोझा ढोअल, सूअरी अस सेवरी सेवल, होसगर होखे तक मूह-मूत ल, पाल-पोस के सेयान कइल, से दुश्मन आ जेकरा ऊ चुटकी-भर मँगनी सेनूर मांग में डाल के ले आइल ऊ बाड़का दाही हो गइल?…वाह!… भइल रे? आरे, ऊ तोर खसम बा त हमरो त उहे आँखि के पुतरी बा… ती के एकलौता लाठी?"

—आ चनर कें बुझाइल जानु उनका खुदे लाठी के सहारा के जरूरत उनकर गोड़ गँवे-गँवे काँपे लागल रहे। खोनचा गोड़ा पर घ के भारा में डँसावल खटिया पर कले-कले पलड़ गइलें। दिन-भर बाजार के -मोहाला में खोनचा लेले फेरी लगावत गोड़ जइसे घाव जुगुत टभके ल रहे। बेमारी के बाद देहि में जे कुछ तागद बटोराइल रहे ऊ फेर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गँवे-गँवे जवाब देवे लागल रहे। उनका इयाद परल आज से सात-
महीना पहिले ऊ बड़ी जोर से बेमार पड़ल रहनी। बांचे के कवनो चीज
रहे। बोखार जवरे करेज में भयंकर पीड़ा होत रहे आ ऊ सूखल जमीन
पड़ल मछरी अस छटपटात रहन। डॉक्टर साहेब साफ कहलें जे हि
दौरा पड़ल बा। ऊ सुइया दिहलें, दवा लिखलें आ कहलें जे ढेर दि
इलाज करावे के पड़ी। बीस-बीस दिन पर सुइया आ रोजीना दवा
पड़ी।

ओह दिन त डॉक्टर साहेब के फीस अउर दवा के दाम उनकर
कसहूँ जुटा के दे देले रहीं...आ हफता भरके दवो के जोगाड़ क
बाकिर, आगे के इलाज जारी ना रह सकल। जब कवनो उपाय
आवे त अदमी के भगवान आ देवी-देवता इयाद पड़लें। लोग देवी-
गोहरावे आ तरे-तरे के भखौटी भाखे लागे ला। उनकर माइयो
के छट्ठी माई के गोहरावत भारा भखली—

"दोहाई छट्ठी माई के!...हमरा बबुआ के जान बकस दीं!
ओकर रछया करीं माई! नीमन हो जाई त ऊ भुँइपड़ी
के अपने के अरघा दीही...आ हम चूनरी चढ़ाएब! दोहा
छट्ठी माई के!...किरपा करीं माई...किरपा करीं!"

पता ना छट्ठी माई के किरपा से कि हफता भर के दवा-दारू
जान त बाँच गइल बाकिर, छव महीना खटिए पर खिरहिरिया काटे
रहे। माई रोजीना अँचरा उठा के छट्ठी माई के गोहरावल कइली
खरबिरवा दवो चलत रहल। तब जाके ऊ कसहूँ खाड़ भइल रहन
महतारी के कहनाम रहे कि अगरचेत छट्ठी माई के किरपा ना होइत
दारू कवनो काम ना करित। एसे, जवन भारा भारूल बा
उतारहीं के पड़ी।

'भारा—भुँइपड़ी चल के गाँव से पाँच किलोमीटर दूर
छट्ठी-घाटे चहुँपे के आ अरघा देवे के।...माने अइसन कमजोर
किलोमीटर ले ऊबड़-खाबड़ जमीन पर उठत-पटात घसेटत ले
ओह दिन के आपन अवस्था के कल्पना करिए के चनर के सगरी
धउड़ गइल। ऊ फेर खटिया पर उठ के बइठ गइलें। खेपाल
अगरचेत भुँइपड़ी चलते में उनका साँचो कुछो हो गइल तब?...
जोरू-जाँता, बाल-बच्चा के का होई?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आ उनका आँखि का सीझा नाच गइल बचपन के चउकठ लांघत मलतिया आ ओकर चार गो छोट-छोट भाइयन के चेहरा। दू से लेके आठ बरिस के उमिर के भीतर के चार गो नन्हकिरवा। मलतिया त घर में खोनचा के सामान—चिनिया बेदाम, भूंजा-पकौड़ी तइयार करे में अपना महतारी के हाथ बटावेले, बाकिर, चारो नन्हकिरवा? ऊ चारों जूड़ी-बोखार के इस्तहार खानी डोलत टोला-मोहाला में-छिछियाइल किरेलें स।

'मलतिया के माई के चिंता अकारन नइखे।·· आखिर, हमरा कुछो हो गइल त के देखी एकनी के?—मन में एगो विचार उठल आ उनका रोंआ-रोंआ में बेचैनी नाच गइल। ओही बेरा महतारी के बोली सुनाई परल—

"तोर त मन मारल गइल बा मलतिया के माई?···एकदम पत्थर पड़ गइल बा बुद्धि पर।···तनिका सोच! पता ना कवने कारन चनर फेंर लझारियाए लागल बा। कहीं छट्ठी माई के कोप भइल त का होई?···छट्ठी माई त अपने जरती देवी हई· इचिको अनादर बरदास ना करस। भारा उतारे में देरी के कहीं अमनख मान गइली···आ कोप में आ गइली तब?··· तब का होई हमरा बचवा के?"

"ओह! अइसन मत कहीं माई जी! कुभाखा मत बोलीं।—मलतिया के माई के कँपकँपात बोली सुनाई परल। साइत ऊ सिहर गइल रह।—"हंम ई थोड़े कहऽतानी जे छट्ठी माई के भारा ना उतारल जाई। बाकिर, मलतिया के बाबू के तनी देहो-हाथ त ठीक हो जाय। फेर, हमनी खुशी-खुशी भारा उतारब छट्ठी माई के···।"

"अब दिन धइला के काम नइखे·। पंडियो जी कहत रहनी हाँ जे एही छट्ठ में चनर के भखौटी पूरा कर दिहल जाय।"—माई एकदम से आपन फैसला सुनावत कहली।—" रहल रुपिया-पइसा के बात त चनर कहीं से ले अइहें करजा-गुआम क के।·· बाद में थोड़ा करके करजो उतार दियाई।"

चनर का मुँह से एगो लमहर साँस निकल गइल।—'अब होनी के टाल सकता?'—चनर होंठे में बुदबुदइलें 'आ जे हरि इच्छा?'— कह के ठेहुना पर हाथ के जोर देके खाटिया से खाड़ भइलें आ उदुकावल केंवाड़ी ठल के भीतर घुसत चल गइलें।

× × ×

सगरी टोला-मोहाला में एक पराते से छट्ट-बरत के गहमा-गहमी रहे। हवा में लहरात छट्ठी माई के गीत मन में भक्ति भाव जगावत रहे।.लोग-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाग भाग-दउड़ में लागल रहे । कहीं से कोई पंजे-पंजे ऊँख बटोरले आवत रहे त कोई बाँस के नया दउरे खरीदले आवत रहे । घरन में छनात पकवान के छपर से उठत घीवाइन महक सगरी वातावरन में पसरत चल गइल रहे। बेरा ढलते कनिया-पतुरिया सजे-धजे लगली । चौबीस घंटा के उपवास के लहतांगर भइल परबतिन सब भी अपना सोझा बेटी-पतोह सब से दउरा सजवावे लगली । टोला-मोहाला के लइका सब नयका जामा-कुरता झमकावत एक-दोसरा के देखा-देखा के मटकत चलत रहँ स ।

चनर के माई अउर लोग से पहिलहीं घाटे जाए के तइयारी क लेले रही। चनर अपना महाजन के चिरौरी क के तीन सय रुपेया करजा ले आइल रहन। ओही से छट्ठ के सामान आ कपड़ा के इंतजाम भइल रहे । घाट खातिर दउरा उठे लागल त चनर भी उठ के खाड़ भइलें । ए बाजी अपना भीतर के कुल्हि तागद समेट के 'भुँइपड़ी' खातिर अपना के तइयार कइलें । फेर अपना लइकन के, अपना जनाना के अउर महतारी के मुँह निरेखलें । लइकन के नया कपड़ा के जोगाड़ ना भ संकल त पुरनकें के धो-धाके पहिरा दिहल गइल रहे । हँ, उनका जनाना आ महतारी के साड़ी जरूर नया खरीदाइल रहे । काहें कि, ऊ लोग बरत कइले रहे । ऊ खुद अपना कमर में खाली एगो धोती भर लपेटले रहन । मलतिया के माई के लट खुलल रहे— बाकिर मांग भरल लाल-टेस सेनुर अलगे से चमकत रहे । एक पल खाली एक पल खातिर चनर के मन में सवाल उठल-'का आज के बादो ई मांग असहीं चमकत रही ?"—बाकिर, दोसरे पल मूड़ी झटक के ऊ अपना एह मनहूस सवाल के मन से हटा दिहलें ।

"चल बबुआ !...दुअरे से भुँइपड़ी सुरू कर !"

—चनर के माई कहली । ऊ लोटा में जल ले ले रहीं आ मनेमन जइसे छट्ठी माई के गोहरावत रही ।

चनर जमीन पर दण्डवत जइसन लम्बा लेट के आ दूनो हाथ आगु में पसार के चिन्ह कइलें । उनकर माई लोटा के जल उनका गोड़ भीरी तनिका ढरकवली आ आँचर से गोड़ पोंछली । चनर फेर उठलें आ आगु में काटल चिन्ह पर आके लम्बा पेटकुनिए लेट गइले । उनकर महतारी ओसहीं गोड़ पर तनिक पानी ढरली आ अँचरा से पोंछली । फेर, ई सिलसिला बढ़त चल गइल ।

पीछे-पीछे उनकर जनाना गोद में सिन्होरा ले ले चलत रहे । लइका सभ पीछे-पीछे अपना बाबू के कुतुहल से भुँइपड़ी पड़त देखत जात रहन स ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहता भर में जे भी परबतिन भा श्रद्धालु भेंटात रहे ऊ भुँइपड़ी पड़त चनर के गोड़ छू-छू के माथे लगावत रहे। कहल जाला जे एसें गोड़ छूवे वाला के पुन्न होला।

दू किलोमीटर तक भुँइपड़ी जात-जात चनर के देहि के तागद जवाब देवे लागल। बेर-बेर उठे-पटाए में गोड़ में कँपकँपी होखे लागल रहे। अब भुँइपड़ी पड़े आ उठे में देरी होखे लागल रहे। मलतिया के माई आँचर भींगा-भींगा के उनकर मुँह पोंछत जात रहे, साथ-साथ खूब अखेयान से चनर के चेहरो निरेखत जात रहे। चनर के हालत देख के ओकर करेज धक! धक! करे लागल रहे आ ऊ मनेमन छट्ठी माई के गोहरावे लागल रहे—

"दोहाई छट्ठीं माई के!...हमरा सोहाग के रछया करीं...
ई जग पार लगाईं माई!"

अब ई छट्ठी माई के किरपा रहे कि चनर के इच्छा शक्ति ऊ अपना तागदहीन देहि के ढाहत-उठावत कसहूँ चार किलोमीटर ले निकल आइल रहन। बाकिर, नदी-किछार के छट्ठी घाट अबो एक किलोमीटर दूर रहे। चनर के बुझाइल जइसे ई एक किलोमीटर पार कइल एवरेस्ट के चोटी पर चढ़ला के बरोबर बा। उनका लागल कि करेज कहीं से दरक गइल होखे। एगो तेज टीस उठल आ सगरी देहि बिजुरी के करंट अस धउड़त चल गइल। ऊ नीम बेहोसी में पटाइल रह गइलें।

उनकर हालत देख के मलतिया के माई तड़प उठल। ऊ चनर के चेहरा अपना तरहत्थी पर लेके भींजल अँचरा से ताबड़तोड़ पोंछे लागल। चनर के माई के भी करेज काँप गइल। उनका मुँह से अनसोहातो निकसल—

"दोहाई छट्ठी माई।...हमार विश्वास जनि तोड़िहऽ माई!
हमरा लाल के रछया करऽ...रछया करऽ माई!'
—फेर चनर के आगु झुक के कहे लगली—
"उठ बेटा!.. उठ!.. बस थोड़के दूर रह गइल बा घाट।...
माई पर भरोसा राख के हिम्मत कर।...छट्ठी माई तहार बेड़ा पार करिहें!...उनके नाम लेके उठ! उठ चनर!"

माई के अवंज दूर घाटी से आवत अवंज जइसन लागल चनर के। ऊ गोंं से आँखि खोल के सुगबुगइलें। उनकर माई फेर उनकर हौसला बढ़इली। चनर कुल्हि तागद बटोर के डगमगात खाड़ भइलें.. आ फेर गँवे से आगे बढ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइलें। मलतिया के माई के आँखिन में लोर भर आइल रहे। आँचर के छोर से पोंछ के चनर जवरे फेर चले लागल। मलतिया के लिलार पर खिचल टेढ़ मेढ़ लकीरन में ढेर खानी सवाल समेटा आइल रहे। बाबू के सगरी पीड़ा उहिए के ओकरा चेहरा पर चिपक गइल रहे।

× × ×

नदी के किछारे छट्ठ के घाट। रंग-बिरग के बस्तर में सजल-धजल सयकड़न के संख्या में नर-नारी। किनार पर कतार से धइल पीयर-पीयर केला के घवद, सुपलियन में नरियर-पकवान, कन्द-मूल आ फल-फूल से भरल डेला दउरा। अस्ताचल गामी सुरुज भगवान का ओर अंचरा उठा के हाथ जोड़ले पीयरी साड़ी में जल में खाड़ परबतिन सब। बाजा-गाजा अउर लइकन के छोड़ल बम-पटाखा के अवज तनिका दूरे से साफ बुझाए लागल रहे। चनर के माई के मुँह पर सतोख के भाव उभरे लागल रहे जबकि मलतिया के माई अबो निहचिन्त ना देखाई देत रहे।

घाट अबहीं गिन के दस डेग रह गइल रहे। थरथरात गोड़े चनर अबकी भुँइ पर लेटलें त उनका बुझाइल जानु सगरी देह एक व एक हलुआ होके रूई के गाला जुगुत ऊपर उठे लागल होखे। दिमाग में बरफ जइसन ठंढा लहर धउड़त चल गइल। कान में कहीं दूर से मन्दिर में बाजत घंटी टुन्न-टुन्न !! के अवंज अस सुनाई पड़ल। फेर, दिमाग पर कवनो कनिए कुचकुच भारी परदा गँवें-गँवें खिचात चल गइल।

मलतिया के माई झबदे बइठ के खूब अखेयान से चनर के चेहरा आ अइकलसि। चनर के दूनों आँखि खुलल रहे बाकिर, ओमें जिनिगी के चमक ना बलुक दुनिया-जहान के वीरानी भर गइल रहे। ऊ घबड़ा के एगो हाथ उनका देहि पर फेरलसि। कहीं कवनो हरकत ना भइल। देहि ठंढा होत लागल रहे। ओकरा समुझत देर ना लागल कि ओवर सोहाग उजड़ गइल वा। फेर त, ओकरा मुँह से जोर से निकसल चीत्कर सगरी वातावरण के छाती चीरत चल गइल—"ना SSS !"

—आ ओकरा हाथ से फेंकाइल सिन्होरा के ढक्कन खुलल त सिंदूर सेनुर से बालू के रेत दूर ले रंगात चल गइल। मलतिया चनर के देहि पर गिर के बेहोश हो गइल रहे आ पत्थर के मूरत बनल चनर के माई के निगाह खानी सवाल लिहले छट्ठी माई के बेदी पर अँटक के रह गइल रहे।

□ परसौली गगन, पो० महाराजगंज, गोरखपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

धारावाहिक उपन्यास (किस्त—२)

अमंगलहारी

— डॉ० विवेकी राय

द्वितीय अध्याय

मेजर साहेब का बेरामी के सगरे गाँव में हल्ला हो गइल। खबरि सुनि के टोल-परोस में दिआ—दिआरी के तिहवार फीका परि गइल। मेजर साहेब लाद-पाथ के धर्मशाला पर से घरे चौंहपावल गइल रहलन। देटा प्रशान्त के कठुआ मारि गइल रहे। का कइल जाव! केहू कहे, सहर ले चलि के दवा-बीरो करावल जाव। केहू कहे कवनो भूत-परेत धइले बा, ओझाई-देवाई करावल जाव।

दूसरा ओर जगदीश का मुँह से 'ब नौ जद्दं सद्व चहल व हफ्त ईस्वी ग्राम वासिनी.....' वाली रट बराबर लगल रहे। जब-तब झटका से बोले लागसु कि 'तुम लोग कौन हो? हमारे को क्यों घेर रखा है!..... मेरा गन कहाँ है? ह्वेयर इज..... माई बरदी? ह्वेयर इज भारत माता? मुझे उठने दो।.....आईवान्ट टी बिद आमलेट.....!'

आमलेट माँगल सुनि के बिक्रम मास्टर साहेब का भीतर के आशंका पुष्ट हो गइलि। जगदीश अपना सुभाव से पूरा-पूरा निरामिस मनई रहलन। सेना में त ना निबहल बाकी रिटायर भइला का बाद कवो ओह कुल्हि जिनिस के ना छुअलन। कवो भीतर से टिसुनो जागलि होखे, अइसन कवो ना जनाइल। तब काहें-कइसे ऊ एह तरह से आमलेट के नाँव लेत बाड़न? काहें अरबी-फारसी बूकत बाड़न? काहें अपना बेटो-मेहरारू के नइखन चीन्हत? काहें भारत माता के नाँव लेत बाड़न? ई कुल्हि सवाल से बिक्रम मास्टर साहेब का भीतर उठल हाचपाच खतम हो गइल। उनका भीतर एगो विचार पोढ़-पक्का होके बइठि गइल। ऊ प्रशान्त का महतारी से कहलन—

'घबराये के इचिकियो भर जरूरत नइखे। कहीं से लोहवान मिले त ले आके इहाँ रात भर जरावल जाव। एक-दू आदमी इहाँ जागल रहे। माँगसु त भोजन—यानी भा चाय-बिस्कुट दिआत रहे। कपार में तनी गते-गते ठण्डा तेल मेरवल जाव। बिहने कतहीं से कवनो ऊपर-झापर के आ हवा-बतास के जानकर मजिगर गुनी आदमी के खोजिके बोलावे के परी।.....तनिको घबराये के बाति नइखे। हमके कुछ-कुछ मालूम हो गइल बा कि ई का माजरा ह?'

बाकी बिहान कहाँ भइल? भिनसहरे का बेरा जगदीश लोटा में पानी ले के मैदान जाये खातिर जवन निकललन तवन लवटबे ना कइलन। लोग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पलखत परि गइल आ चूक हो गइल। अइसन अजार-बेजार के अकेले ना
देबे के चाहत रहे। देरी भइल त लोग अंदेसा में परलन आ फेरु थोरी
बाद खोजाहट परलि।

एक अठवारा तक जगदीश के कतहीं-कवनों सुनगुन ना मिलल
माझिला गरहुआ गइल। उनकरा घरे बस खुलि के रोवन-पीटन ना
रहे बाकी अइसन उदासी छवले रहे कि अब जाके समाचारो पूछल मुश्कि
हो गइल रहे। सगरी नातादारी आ हीत-मीत लोगन केहें ढूंढ़ा गइल रहे
एही चक्कर में प्रशान्त के हुलिया अइसन बिगरल रहे कि जनासु जइसे
महीना के बेरमिड़ा हवन। खोज-खबर लेबे हीत-मीत लोग चौंहपि अइल
सभे उनकरा के खोजे में जुटल। बाकी केहू का हाथे कुछऊ ना लाग
बिक्रम मास्टरो जी आसपास चक्कर लगाके थाकि गइल रहलन बाकी अइस
में घरहूँ बइठल ना बने।

एक दिन बिक्रम सबेरे-सबेरे मनगुम्मे साइकिल उठवलन आ उत्तर
चललन। घर के परानी समझली की आजु परसवनी चट्टी का अपना 'तपोव
पर जात बाड़न। बाकी उहाँ अब का जाये के रहे? नेता बेठा के
वाला पेट्रोल पम्प मोकदिमाबाजी में बन्द हो गइल। आइल-गइल बहुत
हो गइला से आजु मास्टर साहेब ओकर चक्कर लगावत पूरब बढ़ि गइल
कुछ सोच-समुझि के नाहीं, अइसहीं उड़ता मन से भा सुन्न नियर बेमन
सरवनपुर जाके सायकिल पक्की सड़क छोड़ि के उत्तर मुंहे घूमि गइल
ऊ एगी कच्ची सड़क रहे जवन तिरछे-तिरछे बलिया सहर तक चलि जात
बरसात का बाद बैलगाड़ी आ ट्रैक्टर का आवा-जाही से धूरि उठि
रहे बाकी अबही अतना धूरि ना रहे की साइकिल से चलला में खलल
चाहे अनकुस लागो।

कातिक के सुहावन महीना रहे। खेतन के बेआई चलत रहे। ट्रैक्टर धड़धड़ात रहे। कतहीं बैलन के घंटी टुन-टुन बाजत रहे। मनसायन रहे। अइसना में चिकन छवर पर बिक्रम मास्टर साहेब सायकिल उड़वले चलल जात रहलन। सायकिल का संगे-संगे मनवो कतहीं दूरि उड़ल जात रहे।

.....कहवां होइहें मेजर जगदीश? अतना बड़ मनई भला कतहीं छिपल रहेला? कहवां खोजल जाव उनकरा के! अकिल गुम हो गइल बा। एह तरह से अन्हारा तीर मारला से का हासिल होई? .....अउरी दूसर का कइल जाव? कइसे पता लगावल जाव? .....अखबार में हेरइला-भुलइला के विज्ञापन छपवावल जा सकेला। टी० वी० पर उनकर फोटो देखावल जा सकेला। .....बाकी एह घरी आजु का होई?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहँवा जात बानी ? .....ई सूरुज नारायन ऊपर अइलन त घमओ तीखा लागे लागल ।

बिक्रम छवर का किनारे ठाढ़ एगो बरगद का घन गाँछ का नीचे पसरलि करिया जुड़ाँसी में बेलम गइलन । अब तनी सुस्ता लीं । कातिक का तीखर घाम में छाँह बहुत प्रिय लागेले ! निगिचे एगो नलकूप चालू रहे । हाथमुँह धोके आ पानी पीके भीतर तरावट आइलि । जनाइल जइसे आँखि में रोसनी बढ़ि गइलि ।

अचके में बरगद का छाँह का किनारे एक जगह नजर परलि त बिक्रम चिहुँकि उठलन । अरे, ई का बनल बा ? ई कइसन धूरि में जेंवरि बराइलि बा ? ई त हिन्दुस्तान के ओइसने नकसा बा जइसन दिआ-दिआरी का दीने धर्मसाला पर जगदीश बनवले रहलन ? फरक इहे बा कि ऊ तनी बड़ रहे आ आटा के बनल रहे आ ई छोट साइज में धूरि पर अँगुरी से खींचि के बनावल गइल बा । ओह दिन शहीदन का नाँव पर दीपदान में लकीरन पर बरत दीआ धराइल रहली स आ एह नकसा पर संकेत रूप में ओकर चित्र उरेहि दीहल बा । बरगद का नीचे एक किनारा पर बनला का कारन ई नकसा अभीं बाँचल बा । तबो कवनो मवेसी का चलला से बीच-बीच में कुछ धूरि से खना के खड़बड़ा गइल बा ।

बिक्रम का भीतर बिस्वास जमि गइल कि जगदीश एह जगह पर आइल बा । जरूर इहे छवरि वाली डगर पकड़ि के ऊ आगे बढ़ल बा । हमार अन्हारा तीर मारल अकारथ नइखे ।

मास्टर के साइकिल जब बावनपुर का गोंयड़ा चोंहपलि त जनाइल कि भूखियो-पियासि संगे-संगे पोंछिअवले चलति बा । दुनिया में सगरे दुख-सुख एक ओरि आ ऊ जालिम एक ओर । झठे लोग कहेलन कि अइसन चिन्ता घेरलसि कि भूखि-पिआसि बिसरि गइलि । ई सब एगो अलंकार का रूप में बोलल जाला । अइसन ना रहित त अनासे सायकिल में बावनपुर का छवर पर राहगीरन का स्वागत में तइयार चाय-पकौड़ी का दोकान पर चोंहपि के काहें ब्रेक लागि जाइत ?

खरमेटाव यानी नास्ता कइके देह टनटनाइल त मन में आइल, बावनपुर जइसन छोट निचाट गाँव में कच्ची छवर पर अइसन बड़ दोकान कइसे चलति होई ? नमकीन-मिठाई दूनो बा ! एह सवाल के उत्तरो चटपट ठाँवे पर मिलि गइल । बिक्रम देखलन कवनो अपटूडेट फेमिली के आ कायदे का कपड़ा-लत्ता में छः-सात बरिस के एगो लइकी केटली लेले आइलि आ दोकान-दार से कहलसि—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ए, पाँच कप चाय आ दू रुपया के पकौड़ी दे द। भाई कहलसि कि चाय में बेसी चीनी मति झोंकि दीहनि।'

'अच्छा-अच्छा बचिया! तोहार पापा केतना दिन के छुट्टी आइल बाड़न?' केटली हाथ में थामि के दोकानदार बोलल।

बस, अब का सुने के रहे? बावनपुर में घरे-घरे नोकरिहा हो गइल आ ओह नोकारहे का राहे गाँव में सहर धकिया के ढुकल बा आ चाय-पान करत बा! भीतर से उठल सवाल के जबाव मिलि गइल। बाकी चलत में एगो अउरी सवाल उठल।

'का भइया' बिक्रम मास्टर साहेब दोकानदार से पूछलन, 'कवनो कसरती देह वाला बाकी कुछ पगलेट नियर अधेड़ आदमी आठ-दस दिन पहिले एह राहे जात लउकल रहे?'

'ना, कवनो अइसन आदमी हमरा नजर पर त ना चढ़ल! .....बेर हं, एगो लुंगी-बंडी में उबेने गोड़े, माथ पर गमछा बन्हले आ हाथ में लिहले' नीक मरद एक दिन दुपहरिया में हड़बड़इले उत्तर ओर छवरि पकड़े जात रहे आ जात-जात में सती माई का चउरा का पास नीव का छवरि पर बइठि के अचके में धूरि बहारे लागल!'

'कहाँ बाड़ी सती माई?'

'थोरी दूर आगा एही छवर पर।'

'ओह मतिहरल नियर आदमी से तू कुछ पूछल ना?'

'का पूछीं? दोकान पर लइका के बइठा के घरे भोजन करे गइल रहलीं। सोचलीं, गाँव के केहू कुछ गड़बड़ाइल रिस्तेदार होई। दुपहरिया में डोल-डाल करे गइल रहल ह। कवनो गिरल-परल चीज धूरि में टकरा के खोजत बा!' दोकानदार कहलसि।

जल्दी-जल्दी चाय-पानी कइके मास्टर साहेब सती माई का चउरा पास चोंहपलन बाकी उहाँ कवनो चिह्न ना मीलल। ऊ आगे बढ़लन। दूर आगा जाके फे छवर का बायीं ओर किनारा पर एगो भारत के नक्शा बनल जनाइल। बाकी ओह में बस कच्छ के खाड़ी आ बिलोचिस्तान लाइन सुरक्षित रहे। बाकी बीच में सगरे पैदल आदमी आ सायकिल के हंडमड हो गइल रहे। बिलोचिस्तान वाली लाइन देखि के मास्टर ओठ पर मुस्की आ गइलि। अइसने पुरान नकसा के अभ्यास उनहू के तब ब्रह्मदेश सहित नीचे के सूँढ़ नियर नकसा सीधे-सीधे खिंचा जात रहे। ई कइसन देश पर बेहाली घहराइलि बाकी धीरे-धीरे ओकर सीमा पर दिन धिन-पिट के सिकुरलि जाति बा?

पूर्व सेनाधिकारी शिष्य-मित्र का हाथे खिंचल दीप-देश का 'ऐरो' पर आँखि बिछावत आ पड़ताल करत बिक्रम के सायकिल उड़ल जात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हर दू-तीन किलोमीटर पर सुराग मिलत जा। बाकी अब पूरा सावुत नक्सा आ अखंड भारत कतहीं ना लउकल। हर ठांवे ओसइहीं कटल-पिटल। बाकी एतने से मन के जवन धरान मिले ऊ पुरहर होखे, एकदम सोगहग! एगो स्थान पर सही-सलामत दिओ वरत के प्रतीक चिन्ह लउकल। निरासा के अन्हार काटे खातिर आ आगा बढ़त जाये खातिर एतने काफी रहे।

तिजहरियो ढरे लागलि त बिक्रम तनी चिन्तित भइलन। भीतर से भूख पिआस दूनो जोर कइले रहे। चाह-पानी वाली कोइला-पानी पर कवले गाड़ी चलिति? बाहर से साँझि बेरा के धमक जनाये लागलि रहे। घरे लवटे के नइखे। घर से कुछ कहि के ना चलल रहलन। ना चौंहपला पर लोग अनेसा मे परि जइहन। सुराग का सहारे बिना ठीक-ठेंकाना पर चौंहपल लवटे के नइखे। भूख-पिआस के अँगेजत आगा बढ़ही के रहे। आगा लगभग कबेस-दू कोस पर दुर्गापुर के बड़ा महादेव के मन्दिर, ओकरा पास सभापति जी के बड़की हवेली आ बँसवारि का आड़ा-आड़ा कुछ अउरी दुतल्ला कोठी हलकी धूप में धाहत रहली स। बस किरिनि-अछत तक ईहँवे तक चौंहपल जा सकेला।

अबेही घरी अपना पाछा घूरि के बवण्डर उठावत एगो जवान कपार पर हेलमेट कसले आग से फटफटिया उड़ावत आइल आ पास में आके हच्च से गाडी रोकि के उतरि गइल। ऊ जब आपन लोहपरगड़ उतारि के प्रणाम कइलसि तब चिन्हाइल अरे ई त अपना गाँव के अध्यापक दयाराम के बेटवा मायापतिआ ह! लोग कहेला कि एकरा जब नीक-नीक जिनिस के स्वाद उड़ावे के होला त बलिया चलि जाला! एतना तेल जरावे के आ ओइसना स्वाद में बूड़े खातिर पइसा कहाँ से आवेला? .....आ जाला!

घरे खबरि करे वाली एगो समस्या हल हो गइलि। छन भर ठाढ़ भइला से दूसरियो भूख वाली समस्या अधिया गइलि। निगिचे एगो धान कटाइल खेत गहूँ बोवे खातिर सिंचात रहे। आ बिक्रम चाहसु त तिसरकियो पिआसि वाली समस्या हल हो जाई। मायापति खुद प्रस्ताव कइलसि कि 'गाँवे चलल चाहीं त बइठि जाई पाछा, छन भर में उड़ा के दुआर पर उतारि देइबि। किरिन बुड़ला आगा कहाँ जाइबि!'

बिक्रम मास्टर एगो चौपाई बोललन, 'रामकाज कीन्हें बिना, मोहि कहाँ बिश्राम!' आ मायापति के आसीर्वाद देके घरे अपना दुर्गापुर गइला के संसे देवे खातिर सरेखि के आगा बढ़लन।

बिक्रम मास्टर दुर्गापुर चौंहपि के सोचलनि कि बड़ा महादेव जी का गोड़ लागि के गाँव में ढुके के चाहीं। सायकिल ठाढ़ कइके आ जूता उतारि के सीढ़ी पर चढ़े लगलन। ऊपर चउतरा पर एगो अदमी चद्दर ओढ़ले सूतल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहट सुनि के ऊ मूंड़ी उठा के तनिकी झाँकि के देखलसि आ फेरु ओही के सूति रहल। मास्टर सोचलन, ई पुजारी होई आ एकरा से कुछ पता लग सकेला। बाकी फेरु मन में आइल, अइसन चद्दर तानि के सुतना पुजारी सें भ का मालूम होई? कोरा खब्बू बा, दिआ-बाती का बेरा फाँफियात सूतल बा तनिको भगती भाव नइखे। अब कहाँ भगती भाव बा! बड़ा महादेव के देख झाँय-झाँय करत बा। एकहू अदिमी नइखे। फाटक खुलल बा।

दर्शन का बाद बिक्रम लवटे लगलन त देखलन, पुजारी जी बड़ टीका-फाना कइले दिआ-बाती के सामान आ अगर बत्ती वगैरह लिहले लग चलल आवत बाड़न आ ऊ सूतल आदमी उहाँ से चलि गइल बा। हँसी बुझ कि दूसरा आदमी के ऊ पुजारी जी मानि के कइसे अंड़-बंड़ सोचत रहलन। बाकी सीढ़ी उतरि के ई हँसी उधिया गइलि जब मालूम भइल कि सायकिल-जूता दूनो गायब बा!

साला कवनो हिरोइनबाज रहल ह।...अब ले जा के कतहीं दस-पाँच रुपया में बेंचि के एकदम के जोगाड़ कइ लेई।... ना, पुजारी से कहल बेकार बा।...जल्दी सभापति जी का पास चौंहपे के चाहीं। ..बिना ताला लगल सायकिल धइला के ई दण्ड़ तीसरी बेर मिलल।...अब देवालय जइसन जगह के पाक-साफ मानल बेकार बा।...कइसन चपत लागल!

मने-मन जरत—भुंजात आ भुनभुनात मास्टर साहेब ग्राम प्रधान गायत्री प्रसाद का दुआर पर चौंहपलन त ओह घरी बैठकखाना में सत्य कार्यक्रम टेपरेकार्डर पर बाजत रहे। लोग चुपचाप सुनत रहलन।

अन्हार धीरे-धीरे उतरि गइल रहे बाकी प्रधान जी का बइठकखाना अँजोर रहे। गोबरगैस से जोरि के एगो बिजली के बल्ब जरत रहे। एक दिन बाद भेंट होखे के मौका मिलल रहे एही कारन से गायत्री प्रसाद बाबू चीन्हि ना पवलन। एक जुग बीति गइल कि बिक्रम एह गाँव का स्कूल में कुछ दिन ले सेवा कहले रहलन। रिटायरमेन्ट का बाद मनुष्य के चिन्हारी तनी ढेर बदलि जाले। तब मास्टर साहेब ओह लोगन से हटि के तनी फाँक चुपचाप बइठि गइलन। एक त जगदीश वाली समस्या बेकल कइले रहे दूसरे सायकिल-जूता गायब भइला से मन बहुत बिछिपित भइल रहे। लेकिन कार्यक्रम का बीच में आपन दुखड़ा-धन्धा पसारल उचित ना जनाइल। अच्छा इहे रहे कि जइसे सभ कानपाट लगा के सुनत बा ओइसहीं बाबू साहेब सुनसु। कवनो सुखदायी प्रसंग रहे। गायत्री प्रसाद का लगी सटि के बइठल एगो कोट-चस्मा धारी मुंसी जी सुनत-सुनत बहुत मस्त हो रहलन। मूंड़ी का संगे-संगे उनकर दाढ़ी खूब हीलति रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तनिक दूर बइठला का बजह से टेप के ध्वनि सुरू-सुरू में पकड़ में ना आवति रहे बाकी थोरी देर बाद ध्यान दीहला पर जब बातन के सूत्र पकड़ में आ गइलन स त विक्रम का अचरज के ठेकाना ना रहे, अरे ई त जगदीश बोलत बा आ ऊहे दीय-दान वाली कथा उभरलि बा ! बाकी जगदीश इहाँ कहाँ बा ? ना, भरल बइठका में ऊ कतहीं नइखे लउकत। तब ई का माजरा ह ? कब टेप भइल ? कहाँ सुचिताहा भेंटाइल रहे ऊ पागल पल्टनिया कि एह तरह ओकर बोली मसीन में भरा गइलि ? का बोलत बा ई टेपरेकार्डर ? अब तनिक सुनि लीं —

'.....चिराग जरावे के अरमान बाकी मति रहि जाव। तबीयत से जेतना दिल करे जरा लिहल जाव। ओह बीतलि दिआ-दियारी का मौका पर कहाँ मुकम्मिल भइल चिराग के जलसा ! कुछ अउरी शहीद बाट देखत रहि गइलन। गुजर गइल दिआरी के पाक मौका त का भइल ? पाकीजा रूहन खातिर रोज-रोज दिआरी होले।

'..... जरावल जाव चिराग आ अबे, नामाकूल मेजर जगदीश, अब बोलत चलु तू आपन सँसकिरितिया जुबान। बेशक, चिराग जरावत चलल जाव, तकरीर करत चलल जाव, मुन्तजिर बाड़न केतने शहीद वतनी ! आ याद राखल जाव, 'मन दर जुस्तजुए भारतमाता सरगर्दां श्रम।' आ अब बोलु आपन ओह दिन वाली लांगवेज, इजाजत बा, बोल जा—

'..... अच्छा त सुनी सभे भाईगन, एगो जाज्वल्यमान दीपक ओह अज्ञातनामा असैनिक ट्रक ड्राइवर का नाँव पर जेवन मारे उत्साह के रसद लिहले भारतीय सेना का चौंहपला ले पहिलहीं बर्की चौंहपि गइल, जे दुश्मन का गोली-बरखा आ गोलाबारी के इचिकियो भर परवाह ना कइलसि, जेकरा देस भगती, कुसलता आ साहस के कहनी बर्की थाना का सोझा जरलि ओकर ट्रक सुनावति रहे। वीर मर्द दुश्मन का हाथे अकेले परि गइल आ शहीद हो गइल।

'..... आ अब आगे एगो दहकत दीआ मेजर आशाराम त्यागी का नाँव पर, उनका स्मृति में, जेकर शौर्य-गाथा इछोगिल नहर क्षेत्र का कण-कण में आजुओ गूँजति बा। तब ओह क्षेत्र वाली अभेद्य रक्षा-पंक्ति के तूरि देबे में आ ग्रैंडट्रक रोड का नाकाबन्दी के नष्ट करे में ऊ मेजर आपन जान गँवव-लसि। तब ओकर अबहीं दब्बीस बरिस के उबलति जवानी रहे। ऊ शत्रु का मशीनगन वाला ठिकाना के नष्ट कइलसि आ कंकरीट से बनल एगो खुफिया तहखाना के पूरा-पूरा मरम्मत कइ दीहलसि। गोली लागि गइला का बादो ऊ दुश्मन का तीनि गो टैंक चालक लोगन के आ ओपर सवार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सैनिकन के सफाया कइ दीहलसि आ ओह टैंक के चुस्त-दुरुस्त दशा में हीं लीहलसि। कुल पाँच गो गोली अर्थात, मृत्यु सुन्दरी का हाथे भेजल पाँच प्रेम के फूल वाला उपहार सामने से करेजा में लगावल ऊ अमर हो गइल।

'आ अब आगे तिसरका एगो दीआ ओह कवि का नाँव पर जे आशाराम त्यागी का नाँव पर कविता पढ़त-पढ़त में उठल भावावेश का में शहीद हो गइल ! ओह कवि के नाँव इकबालचन्द, डिफेंस कालोनी के सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (दिल्ली) के प्रिंसिपल ! स्वर्गीय मेजर आशाराम त्यागी का अपूर्व शौर्य गाथा के अद्वितीय गायक कवि तू धन्य बड़ ! तोरा मौत से रणभूमि में दुस्मनन से जूझत बीरन का मौत से कम पवित्र नाहीं हिन्दी का एगो राष्ट्र कवि के लिखलि कविता के तू साकार कइ दीहल—

बढ़ते हुए हमारे सैनिक,
पिछड़ा हमें न पायेंगे।
जो स्वदेश पर बलि जाते हैं,
हम उन पर बलि जायेंगे ॥

'पाँचवाँ दीआ सेकेण्ड राजपूत रेजीमेंट के बहादुर जवान हवलदार राम लखन सिंह का याद में जराई जेकरा एह बात के लेके बहुत गरब बा कि भारतमाता का दुस्मनन के नष्ट करे खातिर उनका के दू-दू बार मौका मिलल। सन ६२ में नेफा का मोर्चा पर आ अबकी बेर काश्मीर का मैदान में। जब सिंह जी सुखदायी मौत का गोद में सूतत रहलन त उनका सन्तोष परगट कइले रहलन कि भारत माता का कामे आ गइलीं !'

खच्च !

टेपरेकार्डर का एगो स्विच पर अचानक सभापति जी के अँगुरी के दबाव परल आ जब ऊ चुप हो गइल त ऊ उठि के तनी दूर बइठल विक्रम मास्टर साहेब का ओर बढ़लन !

'कन्हें वन्द कइ दीहलीं हँ प्रधान जी !' प्रधान जी लगी चोंहकि कुछ बोलल चाहत रहलन तब ले विक्रम मास्टर साहेब पूछि दीहलन।

'देखलीं हँ कि रउआ अतना दिन पर दरसनों दीहलीं हँ त का आके फरका बइठि गइलीं हँ।..... कुछ जल-जलखावा भइल ना !..... पगला के पँवारा त अइसहीं चलत रही।' सभापति जी कहलन।

'पगला ?' मास्टर साहेब चिहुँकि के अइसन बोललन कि सभापति हैरान हो गइलन।

'त का रउआँ ओकरा के जानत बानी ?

'ऊ हमार बेटा ह।' बिक्रम बोललन।

(शेष अंगिला अंकन में)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबन्ध

लहके चइतवा के रतिया, हो रामा, टहके अँजोरिया

—श्रीराम सिंह 'उदय'

भोजपुरी लोकगीतन में 'चैता' भा 'चइता' के बहुते बढ़ि-चढ़ि के महत्व बा। अउरी जतना भोजपुरी के लोकगीत बाड़न, ओह में 'चइता' लोकगीत अपना मिठास, सरसता, भावमयता, कमनीयता, मार्मिकता ओगैरह गुनन में बहुते आगे बा, बाकिर भोजपुरी के नया कविन के रचल चइता-गीतन में शैली आ कल्पना-चित्रन में नवीनीकरन के रूप लउकत बा। ओह में गेयत्व आ कलात्मकता के स्वर बहुते जादे आकर्षक, जीवन्त, सरस आ प्रेरक बा। प्रकृति के उद्दीपन आ आलम्बन दूनू रूप उरेहल बा। ओकर संश्लिष्ट आ बिम्बग्राही तसवीरो के चमक आ गमक बा। प्रतीक आ नई उद्भावना के आभा बा। प्रकृति चइता गीतन में जीयत-जागत, हँसत-बोलत साकार हो गइलि बा। ओकर मानवीकरन कइल गइल बा। आजु के भोजपुरी चइता गीतन में प्रकृति के साथे-साथे मानवीय क्रिया-कलापन भावनापन के रूप-रंग-स्वर दीहल बा। प्रेम, विरह, खुशी, विषाद, देश-भक्ति, बहादुरी, ईश-प्रेम ओगैरह सभ भाव-तत्वन के चइता के स्वर-पंखन पर उड़ावल-लहरावल बा। हम एह लेख में आधुनिक भोजपुरी कवियन के चइते गीत के विवेचना करबि।

होरी के बादे चइता के गावल सुरुम हो जाला। सच पूछीं, त होरिये के दिने चइतो के गावल नीक मानल जाला। चइता गीत पूरे चइत महीना भर गवाला। चइता गीत दू तरह के होला—(१) झलकुटिया (२) साधारन। सामूहिक रूप से झाल आदि बाजन के साथे जेवन चइता गवाला ऊ झलकुटिया कहाला आ जवना के केवल एगो आदमी गावेला, ऊ साधारन कहाला। सामूहिक रूप (कोरस) मे गावे खातिर दू दल हो जाला। पहिला दल एगो लाइन गाई, त दोसर दल गीत के अखिरी टेक पद ऊँचा सुर में गाई। चइता गीत के अन्त कड़ी में हो रामा, हेरामा, रामा आ ओकरा आगे के कुछ शब्दन के कुछ ऊंचे आ खिंचाव के स्वर में गावेले। एह तरह स्वर के आरोह-अवरोह में चइता के रस-धार बहेला। चइता सुने के साथे पढ़ूँ में आनन्द आवेला। बाकिर चइता के गावल सुनिके भा दल में शामिल होके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गावे में जवन आनन्द आ उल्लास बा, ओकर आर-पार नइखे। ढोल, झाल, झांझ, आदि बाजन के धुन के साथे चइता गवनिहारन के सुमधुर स्वर लहरिन से गाँव-गाँव गूँजत रहेला। चइता के दंगलो होला। जेवना में कई-कई रात तक प्रतियोगिता चलेले। अंत में एगो कवनो दल जीतेला, शील्ड, झंडा आ पुरस्कार पावेला।

चइत में बसंत के साम्राज्य अपना चरम सीमा पर रहेला। एही चइत के चइतराज, मधुमास आदि नामन से संबोधित कइल जाला, जवन वसंत के द्योतक होला। अइसन चइत में चइता गीत के निराले रंग होला। आधुनिक चइता गीत लोकगीतन नियर गायकन के कण्ठन में प्रवेश कइले, बाकिर अब नया चइता गीतन के नामी लोकगायक महत्व आंकि अपनावे के ललक देखा रहल बाड़न।

हई देखीं, होरी गइलि आ 'चइतराज' दुलहा बनल डोली में चढ़ल धमकले। एही चइत में त महुआ के फूली सभ चू-चू के रस आ मस्ती लुटा देले, पाकड़ में रतनार कोंपल (टूसा) निकलेले। सनेह, उमंग, जीवन, जवानी के तरंग उठे लागेले। हँ, अब रउरो पुरवइया भा पछुवइया के लहर आंचर में मधु रितु के झाड़ल, बुहारल आंगन में, अपना सनेह के रंग भरि के, अपना के धन्य बना लीं—

'आइल चइत के डोली, हो रामा,
बीतल होली।
कोंच चुवल, पाकड़ टुसिआइल,
मधु रितु के अंगना बहराइल,
भरल सनेहिया से झोली, हो रामा,
बीतल होली।
सहजन के पतई में डोलल,
कवन कलमुँही कोइल बोलल
करत हजार ठिठोली हो रामा
बीतल होली।

(रवीन्द्र)

चइती के बहार सगरे छवले बा। कोइल के कूक, कलियन के घुघुटा के मुसकाइल, भंवरन के गुंजारल, पकल फसलन के सुनहरी आभा से मन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगराइल, खलिहानन में अनाज के मोती के चमकल, महुआ के फुलियन के गगरी से मादक रस के छलकल, सेमर के माथे पर दुल्हा नियर लाल पगरी के बन्हाइल, आमन के बौरन के मउर माथ पर धराइल निरेखि के इहे बुझाता कि चइत दुल्हा सजि-धजि के, सोरहो सिंगार से सज्जित प्रकृति से ललक से मिलत बा। माया लोक के रूप नगरी के जै जैकार हो रहल बा। अइसन मादक वेला में केहू अपना मन के का रोकी-टोकी ?—

छवले बा चइती बहरवा, हो रामा,
ठहरे ठहरवा,
कुहू कुहू कोइलिया बोले,
घूँघट बिहँसत कलिया खोले,
गुन गुन करेला गुँजरवा, हो रामा,
रसिया भँवरवा।
सोना अस सरेहि अब दमके,
मोती खरिहनियाँ में चमके,
सजले बा सोरहो सिंगारवा, हो रामा
रूप नगरवा।

ढुलकि रहल महुआ के गगरी,
झलकि रहल सेमर के पगरी,
आमवाँ बनल आजु बरवा,
हो रामा,
मउरी मोजरवा,
(अविनाश चन्द्र विद्यार्थी)

कवि 'आम दुलहा' के त दरसन करा दीहले। अब 'दुलहिन बगिया' के रूप-रंग निहार लीं। बगिया के बीच में लाल टहकार फूलन से लदल जेवन सेमर बा, ऊ बगिया सोहागिनी के माँग में सेनुर नियर शोभा देता। छबीली तितिली, आ लहुरा भँवरवा के कौतुक मन मोह लेता। चइतराज के ई सभ मोहनी माया देखीं—

'गमकल अमवा के बगिया
हो रामा,
चइत जगावे।
बगिया के बीचे लाल सेमर के फुलवा,
चमके सोहागिन के मंगिया, हो रामा,
चइत जगावे।
तितिली छबीली संगे भँवरा लहुरवा
चिहुँकि चिहुँकि खेले संगिया, हो रामा,
चइत जगावे
(डॉ० शिवदत्त श्रीवास्तव 'सुमित्र')

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह चइतराज के मिलन-समारोह में भला रसिया भंवरा आपन बीन बजावल, आनन्द उभगावल काहें छोड़ो ? 'गुलाब फूल के लाल सेज' पर 'करिया भवरा' ओंठघ्रल जवन सरग-सुख लूट रहल बा, तवनत सम्राटनो के ना मिलत होई। हँ, तनी एह भँवरा के इहे दोस बा कि कोमल फूलन के देहि में आपन चोख टूंड़ गड़ देत बा। ई भाव-भरल तसवीर निहारीं—

बगिया में बीन बजावे हो रामा,
मातल भँवरवा।
करिया भँवरवा के ललकी सेजरिया,
ओंठघल आंखि झपकावे, हो रामा,
मातल भँवरवा।
फुलवा के दरद ना जानेला बेदरदी,
पँखुरी में टुड़वा गड़ावे, हो रामा,
मातल भँवरवा।

(प्रभुनाथ मिश्र)

कवि विरहिनि कोइल के बारे में बहुते कुछ बरनन कइले बाड़ें। कोइलरि के आपन दूतिका बना के पूरुब देश में भेजति बा विरोगिनि नायिका, जहवाँ ओकर निरमोही साजन बा, जेकरा बिना सिंगार-पटार तँवाइल बा। कतना मोहक भाव-चित्र बा ! वियोगिनी के वेदना से के मर्माहत हो जाई—

उड़ि जाहु कोइलरी, पुरुब के देसवा,
कहु निरमोहिया से हमरो सनेसवा
तोरा बिनु सिसुके सिंगरवा रे
बिरहिनि कोइलरिया।

(प्रभुनाथ मिश्र)

कवि सम्मोहक चांद र मोहित बा। काहें कि ताप से जरल-सुलगल धरती पर चाँदे अमरित रस बरसा के जुड़ावेला। सभ ओर आपन हँसी बिखरा देला। नदी के जल में ऊधमी बालक लेखा डुबुकी लगा-लगा तमासो करेला। चइत के चांदी नियर अँजोरिया राति में चइता के गूंजेले, लहराले। सगरे हुलास, आनन्द छा जाला। एह सभ मनोहर प्रसंगन आ कल्पना-चित्रन के अनूठे संसार बा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चइत चनरमा लोभावे, हो रामा
मन हरसावे।
रतिया जुड़ावे चन्दा धरती के छतिया,
सगरे बिजन वन बिहँसे परतिया,
नदिया में बुड़की लगावे, हो रामा,
लहरि उठावे।
मन अगराइल जाला खेत-खरिहनियाँ,
भरि-भरि राति उठे चइता के धुनियाँ,
मोहन बँसुरिया बजावे, हो रामा,
दरद जगावे।

(जगदीश ओझा 'सुन्दर)

नीचे के चइता गीत के भाव-चित्र बहुते मनोरम बा, बाकिर प्रोषित-पतिका विरहिनी के तड़पन-सिसकन, निरासा आ वेदनो के दरदनाक रूप लउकत बा एह में। आधी रात में चइत के चांद के ऊगल, हवा के लहराइल, नदी के बहल, आँखि में पियास के जागल प्रियतम के मोहिनी छवि के उभरल, बेबस मन के भरमल, चांद किरन के काँट अस चुभल ओगैरह बातन में ढेर व्यापक भाव भरल बा। बिम्ब, प्रतीक आ लाक्षणिक रूपो के आपन तेवर बा—

'आधी राति उगेला चनरमा, हो रामा,
पवन खींचे अँचरा।
दूर बहे नदिया, पियासलि अँखिया,
हाँफि-हाँफि उड़े मन, खोलि दूनों पँखिया,
पलक-अंजुरि भरि मोतिया, हो रामा,
सपन देला पहरा।
निमिया के गंछिया प पसरे चननियाँ,
काँट अस चुभे अंग-अंग में किरनियाँ,
लिलरा पर चमके बिजुरिया, हो रामा,
मथवा पर बदरा।
झुर-झुर बहे अन्हुआइल बयरिया,
चिहुँकि-चिहुँकि उठि बोले कोइलरिया,
सून लागे अँगना-दुअरिया, हो रामा,
सून लागे असरा।

(श्रीकृष्ण तिवारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

चइत में दिन के अपेक्षा टह-टह दुधिया अँजोरिया से पगाइल रात मोहकता आ आकर्षन त बेजोड़ होले। ओह पर दूर नदी पार से मुरली मधुर ध्वनि आवत होखे, बन-बाग में विरहिनी कोयल कुहुकति होखे, नीम फूलन से मस्त बना देवेवाली भीनी-भीनी गंध पसरत होखे, दूर खरिहान दर्दीली विरहा के तान उठत होखे, त फिरू ओइसन उत्तेजक वातावरण मदहोशी के आलम आपन असर देखइबे करी। कतना मन-मोहक चित्रन बा—

'लहके चइतवा के रतिया, हो रामा,
टहके अँजोरिया।

नदिया के पार बाजे मधुरी मुरलिया,
बनवा में बोले बिरहिनियाँ कोइलिया,
गवे-गते साले मोरा छतिया, हो रामा,
टहके अँजोरिया।

बिरहा के राग जइसे नाग के केंचुलवा,
गमगम गमकेला निगिया के फुलवा,
कँकरी में लागि गइले भतिया, हो रामा,
टहके अँजोरिया।

—(अशेष मंगलाचरण

साँप केंचुल छोड़े के समय बहुते ही उन्मत्त आ बियाकुल हो ग बिरहा के राग के सुनिके वियोगिनी नायिका ओही तरह बियाकुल बा हो जाले। कवि के ई उपमा बेजोड़ बा। ओकर निरीक्षन के खूबी जोग बा।

हई देखीं, चइत के आवते खरिहानन में फसलन के बोझन के ढे गइल, चहल-पहल मच गइल। परास डहक उठल, आसमान अपना बे चान के पकड़ लीहलसि, प्रान हुलसे-जुड़ाए लागल, कागा भोरे-भोरे बोले चिरई सभ घास-पात-तिनका से आपन घोंसला रचे लगली। सगरे रू रूप आ समय उपरिया गइल। अइसन नसइल उत्तेजक बेला में अपना 'सइयाँ' के पासे ई चीठी भेजति बा मरभ-भरल कि हमरा सीने में हिरना दउर रहल बा (मृग) तिसना के बुझावे खातिर, बाकि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नइखे, सभ मायाजाल बा। एह में बहुते गहरा रहस्य के बाति बा। नायिका के मनो त प्रिय के दरसन के आसा में एने-ओने दउरते बा—असफल-बेबस—

सगेर भरइले खरिहनवाँ, हो रामा
हमरे सिवनवाँ।

फूलि-फूलि डह-डह भइले परसवा,
अँजुरी में चान बान्हि हंसेला अकसवा,
सगरे जुड़इले परनवाँ; हो रामा,
हमरे सिवनवाँ,

कागा बोलि-बोलि भोरहरिया जगावे,
वन के चिरइया खतोनवा लगावे,
जागी गइले सगरे सगुनवाँ, हो रामा,
हमरे सिवनवाँ।

चुनि-चुनि पतिया विदेसवा पठावे,
बेर-बेर धना ई सनेसवा लिखावे,
हाँफि-हाँफि दउरे हिरनवाँ, हो रामा,
हमरे सिवनवाँ।

(—माहेश्वर तिवारी)

धनिया के पाती पाइके परदेसी बालम पछता रहल बा—

सोचि परदेसिया के बिहरेला छतिया,
'धनिया' के हाय रे, पठवलीं ना पतिया,
ताकत होइहें डहरिया, हो रामा,
चइत महीनवां।

कोइलि बोले फुलवरिया हो रामा,
चइत महीनवां।

—(उदय')

चइत के दुधिया मादक रात होखे, सइयाँ सनेह के रस-भरल बात करत होखे, ओह घरी के हास-विलास-हुलास के का कहेके बा? ओह घरीत इहसे मधुमासे मन के मधुवन में माया-जाल पसार देला—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'दुधिया अँजोरिया के गोदी में रतिया
सइयाँ सुनावे सनेह के बतिया,
उतर पड़ल मधुमास, हो रामा,
मन-मधुवन में ।
(रवीन्द्र)

बाकिर समय त एके समान हरदम रहे ना। कबो सुख, कबो दुख, कबो पतझड़, कबो बसंत-बहार, कबो नीमन, कबो बाउर समय आवते रहेला। इहे सृष्टि चक्र ह। उत्थान-पतन होत रहेला। एही तरे बड़ा शोभा, मादकता, मोहकतो के अन्त होला। गरमी बढ़ जाले। बँसवारी, फुलवारी, वन-बाग, खेत, राह सभे जरे लागेला। गरम जरत पछुवा हहकारे लागेले। सभे बेहाल हो जाला। दुपहरिया के ताप से धरती लागेले। पियास त लगले रहेले। सांझि के बेरा जवन पच्छिम में लाल होके डूबे लागेला आ आकास में ललाई छा जाले, ओह पर कवि अनूठी कल्पना बहुते उर-वेधक बा कि प्रकृति रानी के सोहाग के सिंदूर के सेनुर छितरा गइल, सुहाग लुट गइल। प्रकृति जइसे विधवा बनि के दुख में डूबि गइल—

'चइत के बिखरल साँस, रामा,
वन-उपवन में ।
जरे बँसरिया, जरे फुलवरिया,
दरके करेजा, तपे दुपहरिया,
जागल कण्ठ पियास, रामा,
भर छन छन में ।
भरल सिन्होरा लुटावेले सझिया,
हहरि-हहरि चले गंछिया से पछिया,
भइल जिनिगिया उदास, रामा
अँइठल तन में ।
(रवीन्द्र)

आधुनिक भोजपुरी काव्य में ई सभ चइता गीतन के जोरदार आ विशेषता बाटे। नया रंग-रूप, भाव-चित्र बा। आजु के भोजपुरी में अइसन चइता गीतन के भण्डार भरल बा। एह लेख में त थोड़े दरसावल बा।

□ बांसडीह, बलिया (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबन्ध

गाँव के संस्कृतिआउत समस्या

—आनन्द सन्धिदूत

संस्कृत साहित्य बिसेस कइ के आयुर्वेद में गाँव के कुछ वर्णन भइल बा। आयुर्वेद में रिसी-मुनी लोग के ई सलाह दिहल गइल बा कि ऊ लोग गाँव में ना रहि के गाँव का सिवान से कुछ अबेहटे रहसु काहें कि गाँव के लोग अस्वस्थ, फूहड़, असंस्कारी चाहे अनाड़ी होलन। एह तरे प्रकारान्तर से ई चेतावल गइल बा कि गाँव के वातावरण सारस्वत कार्य खातिर नीक नइखे आ अइसना कार-परोजन में लागल मानुख-मनई, गाँव पर निर्भर रहला का बादो गाँव से कुछ फरके रहसु। ई मन-मस्तिष्क का स्वास्थ्य खातिर नीक बा।

गाँव-गिरान के एह से अधिक गहिराह चर्चा संस्कृत साहित्य में नइखे। हो सकेला संस्कृत में ग्रामीण चर्चा अभी सुरुए भइल होखे कि देश के राजनीति नया ढग से हिंढोराये लागल होखे आ देश एगो शासक का हाथ से छटक के दूसरा का हाथ में आ दूसरा का हाथ से छटक के तीसरा का हाथ में गेना-खेलौना नियर गिरे-लोकाये खातिर बेबस हो गइल हो। ई परिवर्तन अभी आजु ले जारी बा आ परिवर्तन अवधि एतना छोट आ लुलुआवन झुझुआवन वाली बा कि एकरा में सर्वोच्च सत्ता के त संस्कृतिआउत परिवर्तन होइये नइखे पावत राजधानी से नीचे उतरि के गाँव तक आइल त बहुत दूर के कौड़ी बा। शायद ईहे कारन बा कि भारत का कवनो भाषा में गँवहीं संस्कृति का विकास के झलक ना मिले। सनातन भाषा से लेके आज तक नायक-नायिका का रोमान के चटक करे खातिर भले विदूषक, पनघट, घांघरा, लहठी आ अटपट बोली के जिकिर आ जाय चाहे आधुनिक जनवादी साहित्य का राजतिलक का सम्हेरा कउड़ा, सिउठा, देंवका, घुरहू-कतवारू आ रेहन-कबाला के धुधुका नाद सुनाई दे नाहीं त गाँव में रहे वालन के साहित्य से कवनो दिशा-निर्देश नइखे मिलत। गाँव का रहनिहार के ई जानल बड़ा मुश्किल बा कि रमायन-महाभारत जुग से लेक आज तक गाँव के प्रवन्ध-स्वामित्व कब-कब आ कइसे-कइसे तेवर बदललसि चाहे गाँव का वार्तालाप में, अर्म में, धर्म दृष्टि में आ आत्मविकास में चाहे सोच आ चिन्तन का मानस बहाव में कहाँ-कहाँ गुण बा आ कहाँ-कहाँ दोष बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव का संस्कृति दरिआव के दाँती-दलहल आ बहाव मार्ग के विष
आ सँकराहट के चर्चा करत ई हो कहि दिहल नीक ल गत वा कि मध्य
का सन्तो-महात्मा लोग का मुँह से, जे ई सिखावल कि इन्सान का सत्य
के चाहीं, सबसे प्रेम करे के चाहीं, जीव पर दया करे के चाहीं आ विलास
आ दुर्भावना के धरकावत रूखा-सूखा खाइ के ठण्ठा पानी पी लेबे के
ई ना बतावल कि कमज़ोर संगठित होके अगर जबर के प्रतिरोध ना
स्वाभाविक विकास बड़ियारा का हाथ में जबद जाई। जे धन के
पानी कहल, मृत्यु के कुर्ता-कमीज कहल आ घर-परिवार नारी-पुत्र से
माया निर्मोही कइल ऊ ई काहें ना सिखावल। अगर समाज के पन्द्रह
जनता अन्याय आ शोषण में दबल बा त मन्दिर शिवाला में बइठावल भगवा
परतंत्र रहिहन। अफसोस ई हे बा कि पुराना साहित्य में भाई भउजाई
पितिआउत शहर-बाजार कुल्हिये का संस्कृति सम्बन्ध पर चर्चा भइल बा
कवनो बेबस परिवार अगर पड़ोसी का देवाल पर गोबर पाथ दिहल
एह से अगर ओकरा लेवरन क पर्चा ओकच गइल, गोरू खुल गइल,
निहरा गइल; चाहे मजबूत का आंगन में कमजोर का हाथ के चोरी, चोरी
ह जइसन ग्रामीण अर्थ सम्बन्ध के चर्चा कहीं नइखे।

कारन ई ना रहे कि गाँव का समस्या से केहू के मुँह चिन्हारी ना
असली कारन ई रहे कि हरेक शासक ईहे चाहत रहे कि ऊ आपन पत्नि
खाली राजधानी तक राखो आ गाँव का समस्या का हाड़ा झोंझ में अझुर
आपन सुख-चैन जिन जियान करो। एही कारन से शासन खातिर गाँव
शहद निकाले के छाता चाहे दूह लेबे भर दुधारू पशु नियर हो गइल
सन। एकरा अलावे अगर कबे गाँव में चलबम होखे त क्रूर जीमदार
उत्पीड़न से भगदड़ होखे चाहें एक क्षेत्र से हारल-भागल काफिला जब
पाके कवनो गाँव का स्वामित्व, परजा, खेत आ गोरू-बखार पर कब्जा
तबे ग्रामस्खलन आ विस्थापन भइल करे। एह समस्या से समाधान
ख तिर प्रबन्ध-स्वामित्व, जमींदारी आ महाजनी व्यवसाय में लागल परि
आ जातियन के संयुक्त परिवार होत रहे जवना मे कबे-कबे पाँच-पाँच
अदिमिन के एक रसोई में भोजन बनत रहे। एह लोग के सहुक्त परि
रखले गाहे ब गाहे कवनो आन गाँव पर हमला कइ के प्रबन्ध तंत्र कब्जि
में आसानी होत रहे। कबे-कबे उच्च वर्ग के परिवार भूमि आ महाजनी
बेदखल होके बन-बन मारल फिरे के बाध्य हो जाय बाविर बनजारा
खानाबदोस कहइला का बादो ईहन लोग के संयुक्त परिवार-व्यवस्था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस रेखे में आइल। ई उहन लोगन का शेष बांच गइल आक्रमणकारी शक्ति के प्रभाव रहे। एकरा विपरीत जेकर संयुक्त परिवार व्यवस्था छितरिया-बितरिया गइल ऊ सेवा टहल करे के बाध्य भइल। श्रमजीवी भइला का बाद चाहें सरकारी नोकरी कइल जाव चाहे गांव शहर में परिवार मजूर बन जाव संयुक्त परिवार राखे के स्वतंत्रता सम्भव नइखे। अगर हरेक वर्ग के संयुक्त परिवार राखे के आजादी मिलल रहित त आज भारत के इतिहास अलग किस्म के होइत भा हो सकेला भारत के हुकूमत पूरी दुनियाँ पर होइत।

संयुक्त परिवार के पहिल। असर गाँव का बोली पर पड़ल। अगर गाँव के बोली आक्रामक आ उजड्ड होले त एकर कारन चिरन्तन संघर्ष रहल ह। ओह घरी परजा-पवनी के दबवले राखल आ नव आक्रमणकारी से गाँव के बचा के आपन अधिकार जमवले राखल संयुक्त परिवार के अर्थ होत रहे। एकर तुलना आज का लोकतांत्रिही सरकार से कइल जा सकत बा जवना में एक ओर जहाँ एम० एल० ए० आ एम० पी० के कवनो ना कवनो तरे दबा के अपना पक्ष में राखल जाला आ दूसरी ओर प्रतिपक्षी दल का गतिविधि पर नजर राखत सरकार बचावल जाला। एह काम में सबसे विश्वासी अपना परिवार के सदस्य सिद्ध होत बाड़न जे प्रधान मंत्री आ मुख्यमंत्री का दहिने-बायें रहि के सरकार के मजबूती देत रहेलन। ईहे भाई-भतीजावाद क्षेत्रवाद जातिवाद चाहें कुल्हि मिला के अपनत्ववाद पुराना जमाना के संयुक्त परिवार रहे!

ई अवसर लउकेला कि जवना शब्द का इस्तेमाल में शहर के मेहरारू जार बेर सोचेलिसनि ओके गाँव के मेहरारू बिना हिचकिचइले दहाड़ के कह देली सनि ई। पुराना जुग का संयुक्त परिवार व्यवस्था में पूरा परिवार निडर आ संकोचहीन बनवले राखे का शक्ति अभियान के परिणाम रहे। सही जातिवाद के अधिकांश वर्तमान स्वरूप श्रमजीवी वर्ग के दिहल ह। संयुक्त परिवार के अभाव के पूर्ति नौकरी में, मजूरी में आ देहाती दस्तकारी जातिवाद चला के चाहे जाति के बिटोर आ सँउजा कइ के कइल। बाद में अस्त्र के रूप में सेवका द्वारा आ बिसेस कइ के राजनीतिक दलन का द्वारा लागल।

एह कुल क बहुत चौंथल-बकोटल आ घिनावन रूप गाँव में लउके ला से उबजिआ के करीब-करीब ऊ तमाम आदमी गाँव छोड़ चुकल बा जे प्रिय रहल चाहे कमजोर महसूस कइल चाहे विद्या-ज्ञान पाके संस्कारी कल रहे। इहो एगो कठोर हो चुकल हृदय के उदाहरण मानल जाई कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गांव में मजूर ना मिलला के सिकाइत त सभे कइल बाकिर एह पर केहू
शब्द ना बोलल कि गांव में हर जोत के जी लिहजा का बजाय एगो
शहर में रेक्शा खींच के खून थूकल काहे पसन्द करत बा। गांव क
गांव से भागत देख के हक्का-बक्का त जरूर रहे बाकिर आपन दोष देखे
बजाय ऊ भागहीं वाला के गरिआगत रहे आ समझत रहे कि एक
अ एक प्लेट कटलेट का चक्कर में ई गांव से भागत बा। गांव से जाये
का चेहरा पर एगो मौन भय आ गांव खातिर प्रेमपूर्ण तिरस्कार होला
से ई अर्थ निकलेला कि गांव में लाख सतवला का बादो ई लोग गांव
व्यवहार के क्षमा कइ चुकल बा। एकरा के संगठनहीन आदमी के विवश
उपेक्षा कइल कहल जाई। एकरा से जहां गांव का मुट्ठी भर स्वार्थी
दबंग बनलन सन ओहिजे पुराना जीवन पद्धति के फालतू जीवनदान
गइल।

गांव का विकास का बारे में पहिली चिन्तन यात्रा बीसवीं
आरम्भ भइल जब प्रेमचन्द अइसन साहित्यकार गांव का गोंइड़े
सोचे सुरुम करुए आ महात्मा गांधी अइसन राष्ट्र निर्देशक गांव का
आश्रम बनावे नित नया प्रयोग कुसुम उगावे चालू कइल। एकरा पहिले
स्वार्थ भर गांव के रहस्य कथा लोक जीवन आ लोककथा का
अंग्रेजियो सरकार छपववले रहे। ई पुस्तक प्रशासनिक सेवा में
का कामे आवत रहे। एह कुल प्रयासन के मिलल-जुलल असर भइल
के चर्चा देश का बिटोर मंच पर असरदार ढंग से होखे लागल।

गांधीवादी ग्राम चिन्तन में खाली आदर्श का संगे यथार्थ के
सामंजस्यवे नइखे बलुक अगर कहीं उत्पादन के चर्चा बा त ऊ एतना
बा कि चारू ओर एक हवा लड़कत बा, जइसे खादी। खादी के उत्पादन
मौलिक रहे कि ओकरा सुरुम भइले न त जोलहन का प्रतियोगिता
आइल न कानपुर अहमदाबाद चाहे मैनचेस्टर का मिल फैक्ट्री का। काहे
रूई का पिउनी से लेके कपड़ा रँगाई तक ऊ कतहीं नकल ना रहे।
जब-जब गांव का ओर से गांधी जी का आश्रम पर समस्या फेंकल गइल
ऊ आदर्श का स्थान पर यथार्थ से ओकर उत्तर दिहलन। चाहे उनका
से रुपिया के चोरी भइल होखे भा उनकर खेत काटल गइल होखे भा
का कवनो देशी-विदेशी लइकिन के देख के आउर-बाउर बोलल गइल
हमेशा संगठन में रहि के एह समस्या के उत्तर दिहलन। जइसे अगर
भइल त ऊ आश्रम में पहरा के इन्तजाम कइलन। उनकर आश्रम यथार्थ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधारित संयुक्त परिवार रहे। ई अभावग्रस्त आ अनेक नियम में बन्हइलो रहला पर बहुत प्रेमपूर्ण रहे। उदाहरण खातिर आश्रम के भोजन बहुत सादा रहे। मसाला का नांव पर हल्दी, धनियां, काली मिर्च आ नमक का अलावे अउर कुछ के अनुमति ना रहे। तबनो पर अगर केहू बेमार पड़ जाय त ओकरा के महंगी दवाई फल आ मेवा मिश्री पर जीव खोल के खर्च होखे।

गांधी जुग में ग्राम विकास का मार्ग में बड़ अवरोध विभिन्न प्रकार का विचार धारा के अन्तरसंघर्ष रहे। अगर ओह जमाना में गांधी जी आ अंग्रेजी राज में क्रिया प्रतिक्रिया के सांप-नेउर खेल चलत रहे त साम्प्रदायिक आ साम्यवादी शक्तियनो के प्रभाव कम ना रहे जवन यथास्थितिवादी सुविधाभोगी वर्ग से कबे मिलके आ कबे झगरि के अनेक तरह के अभियान चलावसन। एह कुल मिलल-जलल प्रयास के मिलले-जुलल असरियो भइल।

उदाहरण खातिर अंग्रेजी राज का प्रभाव से अगर सहकारिता के गठन भइल त यथास्थितिवादी सुविधाभोगी वर्ग का प्रभाव से ऊ राजनीति वरे क गढ़ी आ दुर्ग बन गइल। विश्व अर्थनीति का राजनीति का कारन आज भले सहकारी आन्दोलन सरकार का पानी से जिआवल गइल होखे नाही त बांड का बइकन्टी नियर ऊ खाली जगहिये घेरले बा। ओह जमाना में विभिन्न तरह के गांधी नाम धारी संस्थान गैर-सरकारी क्षेत्र का द्वारा सरकारी क्षेत्र का सहकारिता के एगो जवाब रहे। ई एगो अचरज के चीज बा कि गांव का श्रमजीवी हाथ-गोड़ के बटोर के भारत में अइसन हस्त-उद्योग आंदोलन गांधी जी का द्वारा चालू भइल जवना का उपलब्धि आ कालजयी छवि का आगे विश्व के मशीनी उपलब्धि त ओनइस होइये गइल विश्व का इतिहास में ई बेमिसाल रोजगार खोज (अद्वितीय जीविका अन्वेषण) का रूप में याद कइल जाई।

गांधी के कई गो गलतियो रहली सनि जवना में एगो गलती रहे कि कवनो नया संस्था ना बना के जिनगी भर कांग्रेस खातिर बिसवासी बनल रहल। असल में कांग्रेस में हमेशा अगर राजभक्त रहलन त साम्यवादियो रहलन आ ओह में साम्प्रदायिको ढंग से सोचे वाला कम ना रहलन। एह रे भांति-भांति का विचार धारा में अपना के स्वीकृत करावे क गांधी नीति समय आ श्रम के अपव्यय रहे। एकरा से गांधी का लोक छवि के चाहे जेतना निखार भइल होखे उनका चिन्तन कार्यक्रम के त जियते गंगा लाभ हो गइल। विसेस कइ के कांग्रेजी सरकार आ जवाहर लाल नेहरू जवन घोषित रूप से साम्यवाद से प्रभावमुग्ध रहलन गांधी के उपयोग सत्ता रोहण में सीढ़ी नियर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करत साफ लउकलन। ईहो इतिहासवारे का सोचे के बा कि नेहरू गांधीवाद के गांधी का जीवने काल में खारिज कइ चुकल रहलन तबो गांधी अपना कार्यक्रम से नेहरू के काहें ना निकाल दिहलन। चाहे जवन कारण होखे, गांधी दब गइल होखसु भा पुरान सम्बन्ध से मोहा गइल होखसु भा आदर से सनक गइल होखसु चाहे सच्चा बैराग पा गइल होखसु अथवा राजनियर खेल के आपन कार्यक्रम ओइसहीं फेंक देले होखसु जइसे लइका खेलवार के घेरवना चलदेलन सन। फरिछ लउकत बा कि गांधी युग के समाप्ति गांधी का जीवने काल में हो गइल। नेहरू त गांधी क नांव आदर से लेसु आ गांधी का कार्यक्रम के उपहासो करावसु।

साम्यवाद के कवनो रचनात्मक उपलब्धि भारत में नइखे। जइसे लगला का बादे हराइ के झगड़ा खेत में खड़ा होला ओइसहीं बिना औद्योगिक क्रान्ति भइले साम्यवाद के का भूमिका होई ई खुद साम्यवाद के ना मालूम रहे। नेहरू अगर औद्योगिक क्रान्ति का ओर झुकलन त ओह में नेहरू शासन का स्थायी भइला का अलावे कुछ्हिये हानि रहे। पहिली हानि त आदिम गुलामी के रहे। दूसरी हानि भारत में जवन उद्योग लागल ओह में सरकारी रहे एह से उद्योगपति कम पैदा भइलन आ नौकरिहन में भ्रष्टाचार अइले संउसे देश के लाभ घाटा में बदल गइल। नतीजा में कर्जा के अनवरत सिलसिला चलल जवना के गिने में अंक गणना के शख-महाशख मये छोट पड़ गइल। नेहरू जी के विदेशी लोकप्रियता के कारन ईहे रहे कि ऊ बिना कवनो हिला-हवाली कइले धड़ाधड़ आर्थिक गुलामी सकरले जात रहलन। अब त ई खाली भारते ना पूरी तीसरी दुनिया के जरूरत बन गइल बा। एह कुल का बीच में साम्यवाद के कवनो भूमिका ना रहे सिवाय रूस आ चीन का ओर तकला का। एही तकाई में एगो वार्तालाप शुरू भइल जवन धीरे-धीरे कोलाहल में बदल गइल आ कहल ई ठीक होई कि स्वतन्त्रता का सम्हेरा से लेके आठवां दशक तक भारत के साहित्य, भारत के कला, भारत के चिन्तन मनन आ अध्यात्म के यात्रा कुछ्हिये एगो हल्ला में दबाइल बा। अइसन लागत बा जइसे ई देश न होखे एगो कोलाहल के पिण्डे होखे।

चुनाव जीते वाली सरकार एह कोलाहलो के भरपूर फायदा उठवलसि। हल्ला में जवन सुनाई दिहलस ऊ कुल मानल गइल। बाद में त सरकार एतना निडर हो गइलि कि आपन आलोचना अपने मंच से बरे के छूट दे दिहलसि। कारन ई रहे कि जनवादी हल्ला का संगे कवनो जनाधार ना रहे बल्कि लेखन चाहे आर्ट का संगे एगो कैरियर जरूर रहल। परिणामो ओहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइल जइसे पदक आ अलंकरण बक्सा में धरा गइल आ देवाल पर टँगा गइल ओइसहीं किताबियो रैक में लाग गइली सनि आ पुस्तकालय मे जब्त हो गइली सनि।

विकास का नाँव पर एतना जरूर भइल कि गाँव-बस्ती पानी-बिजली, सड़क-पुल, बैंक-पोस्ट आफिस, स्कूल-कालेज से गहना नियर लद गइलनसन। अब सायदे अइसन कवनो गाँव मिली जवन आधुनिक सुख-सुविधा से साजल-पाथल न होखे। पूंजी, जमीन समाजी प्रभाव आ एह कुल का कारन आइल शरीरी उत्साह का बल पर सँउसे उपलब्धि मुट्ठी भर बड़ियारा का हाथ में खेलौना बन गइल। अबतक एके रोकल सम्भव नइखे भइल काहें कि चुनाव के प्रश्नपत्र इहने लोग हल करेला। गांधी भंडार के महँगा राजसी पोशाक के इहे लोग खरीदार बा आ नेता, पत्रकार, लेखक, कवि, शायर, कलाकार समाजचिन्तक प्रोफेसर, मजदूर-नेता आ छात्र-नेता एही वर्ग के बा। बिना एह वर्ग से नाता जोड़ले अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष कुछऊ मिले वाला नइखे।

साँच पूछीं त गाँव क विकास तब सही मानल जाई जब गँवहा आपन दूनो हाथ उठा के कहे कि अब ओकरा के सरकारी अनुकम्पा ना चाही। ऊ आत्म निर्भर होख चाहत बा।

विकास का नाँव पर अढ़ाई लाख हजार करोड़ डालर से अधिका कर्जा में पटुआइल देश का वर्तमान अवस्था क स्केचिंग करे लागीं त कबे ना खतम होखे वाली सिलसिला नथा जाई। एह उपलब्धि क ईहे असर लउकत बा कि पूरा देश विलास युद्ध (सेक्स वार) में फँसल बा आ विलास का नाड़ी में शराब खून नियर दउरत बा। एह से उबारे खातिर प्रयास का नाँव पर सन्त-महात्मा का वाणी क खूब प्रसारण होता बाकिर जे खुदे चरित्र में नइखे उतरले ओकरा बात के का असर होई।

ललित कला का माध्यम से जवन प्रयास पइसार एह क्षेत्र में भइल ओह में सफदर हाशमी क नाँव लिहल जा सकत बा जिनका जान से हाथ धोवे के पड़ल। अब उनकर साथी लोग करोड़न में खेलत बा आ सरकार अपना टीम का खिलाफ अपने हल्ला बोल रहल बा। सरकार त तबे तक प्रयासरत रहे ले जबतक ऊ डगमग रहे ले। जहाँ अहथिरइला के आभास मिलल कि भ्रष्टाचार, अत्याचार, अपनत्ववाद आ पक्षपात-अन्याय सरकार का नाक-मुँह पर माछी नियर भनकत रहो होश ना रही।

गाँव के तत्काल आवश्यकता बा कि जीविका कमाये का हक का साथे व्यक्तित्व के सोभावी आ सम्यक विकास के वातावरणो मिले। इ काम ऊहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

टीम कइ सकेले जवन खईबो खातिर सरकार पर निर्भर न होखे। ...
लड़ाई त ई बा कि चुनाव का चलते पिछला पचास साल से असली अ...
ढँड़इले नइखन। एह से न्याय क ढंग दिखावटी हो गइल बा। अइसन ...
में पुलिस-अदालत कुल्हिये क बहिष्कार गाँव के सही दिशा दी। ...
तपस्या का रोशनी का उजियार में गाँव के आपन अन्हार लउकी ...
महाभियान में मउअतो से बड़ हजार गो मोकदिमा के सामना आ ...
हाथे टार्चर-उत्पीड़न के सहन करे के पड़ी। ओह लोग के क्रूर उपहास ...
के पड़ी जे पक्ष-विपक्ष, न्याय, विधान आ पत्रकार बनके सत्ता का ...
आठंगल बा। कल्पनातीत कष्ट सहे क क्षमता का संगे अगर गाँव में बड़े ...
हो सकेला ओह रोशनी में गाँव के आपन अन्हार लउक जाय। हमनी का ...
में बन्हाइल एगो अइसन गैर-सरकारी कार्य-योजना चलावे के पड़ी ...
मनबढ़ आ हथबढ़ वर्ग का ई विश्वास हो जाय कि कुल्ह काम ताकते ...
होला त दिमागी आ हस्तकला कुशल वर्गों का ई समझे के पड़ी कि एहवे ...
समाज में विश्वास आ सहजोग पैदा हो सकेला। कुटिल मन से प्रीत ...
जन्म होला समाज का विश्वास के मुखण्डी मार देला।

एह महाभियान में हमनी का एक बेर फेर गाँव का ओर जाये के ...
बाकिर ई काम अकेले ना हो सके। एह में होखे के ई चाहीं कि मनई ...
गाँव में लवटसु त झुण्ड में लवटसु, काफिला बना के गाँव में प्रवेश ...
जइसे पुराना जमाना में होत रहे। लेकिन एह काम में आक्रमण का ...
से ढेर रचनात्मक चिन्तन होखे के चाहीं जे में मारपीट के कवनो स्थान ...
होखे के चाहीं। एह में बेकती-बेकती सत्य-अहिंसा का पढ़ाई से स्नातक ...
प्रेम-अस्त्र चलावे में निष्णात हो। कुल्हि मिला के ई गाँव पर ...
आक्रमण कहल जा सकेला जवना क उद्देश्य प्रेम क सन्देश होई जवन ...
धरी कमजोर बा आ जेकरा चलते समाज में विलासयुद्ध मचल बा। ...
आ जोर-जबरदस्ती में विश्वास बढ़ रहल बा आ झूठ व्यापार का बल ...
सब आपन-आपन काम निकाल लेबे चाहत बा। एह में धर्मवो निष्प्रा...
हो जात बा। ऊ आध्यात्मिक (स्पीरिचुअल) रहे के जगहा पर कर्म...
(सरमोनियल) हो जात बा।

(शेष अगिला अंकन में)

□ इलाहाबाद बैंक, मुख्य शाखा, मिर्जापुर, ...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समालोचना

भोजपुरी कहानी-साहित्य में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद

—डॉ० रामाशीष प्रसाद

पहिले कहानी मनोरंजन के साधन मानल जात रहे। हिन्दी में प्रेमचन्द जी कहानी में चरित्र-चित्रण आ मनोविज्ञान के स्थान दिलइलन। प्रेमचन्द जी कहले बाड़न —"साहित्यकार का लक्ष्य देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलनेवाली सचाई भी नहीं बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलनेवाली सचाई है। साहित्य की आत्मा आदर्श है और उसकी देह यथार्थ चित्रण। आदर्श को सजीव बनाने के लिये ही यथार्थ का उपयोग होना चाहिये ('कुछ विचार' पृ० २०,५०,८४)। साहित्य का सम्बन्ध सत्य और सुन्दर से है यह हमें न भूलना चाहिये। साहित्यकार हमारा पथ प्रदर्शक होता है, वह हमारे मनुष्यत्व को जगाता है। हम में सद्भावों का संचार करता है, हमारी दृष्टि को फैलाता है। ('कुछ विचार' पृष्ठ ५१,६५)। सबसे उत्तम कहानी वह होती है जिसका आधार किसी मनोवैज्ञानिक सत्य पर हो। साधु पिता का अपने कुव्यसनी पुत्र की दशा से दुखी होना मनोवैज्ञानिक सत्य है। इस आवेग में पिता के मनोवेगों को चित्रित करना और तदनुकूल व्यवहारों को प्रदर्शित करना कहानी को आकर्षक बना सकता है। बुरा आदमी बिलकुल बुरा नहीं होता, उसमें कहीं देवता अवश्य छिपा होता है—यह मनोवैज्ञानिक सत्य है। उस देवता को खोलकर दिखा देना सफल आख्यायिका लेखक का काम है।" (कुछ विचार : पृ० ३६)।

कहानी में दोषी के दण्ड, निरपराध के मुक्ति आ पापी के पछतावा दिखवला से चमक आ जाला। भोजपुरी कहानीओ में यथार्थ आ आदर्शोन्मुख यथार्थ के धारा बह रहल बा। कतहीं-कतहीं त एके कहानीकार में दूनो के छाप मिलत बा। एह छोट आलेख में सब कहानी-संग्रह आ हर कहानीकार पर विस्तार से चरचा कइल संभव नइखे। हम अपना पास उपलब्ध कुछ कहानी-संग्रह आ भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, भोजपुरी नारी, भोजपुरी वार्ता, बटोहिया नामक पत्रिका के अंक पर आपन आलेख आधारित कइले बानी।

कुन्दन सिंह केसर बाई (आचार्य शिवपूजन सहाय) में आजादी के बलिवेदी पर कुन्दन सिंह आ केसरबाई जइसन पति-पत्नी के बलिदान के आदर्श भोजपुरी कहानी खातिर आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के प्रेरक स्रोत बन गइल। गुरु दक्षिणा (पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह) में गुरु दक्षिणा के अजगुत आदर्श, हरताल (पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय) में अत्याचारी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पछतावा, पधेया जी के सतुआ (सिपाही सिंह श्रीमन्त) में छुआछूत के खिलाफ नया जमाना के विद्रोह खातिर आह्वान, चकरोड (रामदेव विधुर) में चकबन्दी के ललक चित्रित बा। अन्हरिया छपिटात रहे (रामनाथ पाण्डेय) में आजाद भारत के हाकिम आ बड़ा बाबू के ज्यादती के खिलाफ मनोज के विद्रोह, चान खिलखिलात रहे (रामनाथ पाण्डेय) में कलम के संघर्ष में मजदूर आन्दोलन के जीत, कुंठा के अन्त (रामनाथ पाण्डेय) में अन्तरजातीय बियाह आ आदमीयत के आदर्श, ऊँचरा के छाँह (रामनाथ पाण्डेय) में आतंकवादियन के गुटबन्दी आ प्रतिशोध के बीच पिरितिया उपकार के बदले ओकर बेटा परकाश के रामलाल बो के अँचरा के दियावल चित्रित बा। गुलाब आ कँटइला (डा० स्वर्णकिरण) कँटइला के यथार्थ पर आदर्श गुलाब के विजय, बड़प्पन (चौधरी प्रसाद सिंह) में मरल रोगी के देखला पर फीस लेवे वाला डाक्टर के टमटम के भाड़ा ना लेवे वाला गनिया के बड़प्पन का आँसू के छाप, अबहीं मरल नइखे (कृष्णानन्द कृष्ण) में रावण जइसन ठाकुर के खातिर भाई-बहिन भुनेसर आ परबतिया के निश्चय, वसीयत (कृष्णानन्द कृष्ण) में स्वार्थी बेटन दामाद के यथार्थ के बीच बाप के जायदाद के देखभाल करे खातिर ट्रस्ट बनावल ओकर आमदनी से स्कूल खोल आ ट्रस्ट के मनेजर सेवक नौकर जीतू के बनवला के आदर्श चित्रित बा। ठेस (वीरेन्द्रनारायण पाण्डेय) में ठेस लगला पर दाई कुसुमी के स्वाभिमान चित्रित बा—मरजादा छोड़ के जियला से बेहतर बा मर जाना। एगो अभिमन्यु (प्रो० ब्रजकिशोर) में गरीब खातिर हक के लड़ाई के आदर्श चित्रित बा। रहनिदार पनोह (अक्षयवर दीक्षित) में बिगड़ल घर के आदर्श चित्रित बा। किसान भगवान (विमलानन्द सरस्वती) भ्रष्टाचार के खिलाफ विद्रोह के आदर्श चित्रित बा।

जीये मरे के बेबसी (पाण्डेय सुरेन्द्र) में जातीयता के यथार्थ में अन्तर जातीय बियाह के आदर्श, नाव (पी० चन्द्रविनोद) में नाव के बड़ आ छोटका के जीत, बड़-छोट (पी० चन्द्रविनोद) में बड़का छोटका के अन्तरजातीय के आदर्श, मनसा फुआ (नरेन्द्र शास्त्री) में स्वतंत्रता के मनसा फुआ के आदर्श चरित्र अहिंसा आत्मबल शराबबन्दी के सन्देश दिया बा। एगो आउर ठाकुर के कुँआ (डा० तैयब हुसैन पीड़ित) में टाँग पछतावा आ हृदय-परिवर्तन, हाथी के दाँत (भगवती प्रसाद द्विवेदी) में सुशील बाबू के अपना कठोरता खातिर पछतावा, लोटानी (भगवती प्रसाद द्विवेदी) में देवकली के विश्वासघाती प्रेमी अमरेश के यथार्थ बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रक्षक सिपाही छितेसर के आदर्श, खरवा खात पनिश्रा पीयत (राम लखन विद्यार्थी) में स्वार्थी मुखिया दया शंकर के किसान खातिर हृदय परिवर्तन, अम्मा (नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक') में विभाजन के बाद पाकिस्तान में ले जाइल गइल मुसलमान अम्मा के जन्म भूमि प्रेम, दोसरका अँगुलीमाल (नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक') में डाकू लालू माना के हृदय-परिवर्तन, अहं ब्रह्मास्मि (नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक') आत्म-दान के सहज रूप अहं ब्रह्मास्मि के आदर्श, तलफत आग (शशिभूषण सिंह शशि) में साम्प्रदायिकता के तलफत आग में हिन्दू मुस्लिम एकता के आदर्श, लायची (डा० उषा वर्मा) में भाई के आदर्श, इहे बूंद गंगा जल (रविरंजन सिन्हा) में हिन्दू मुस्लिम एकता के आदर्श सहृदय सुभान चाचा के आँसू में गंगा जल के झलक, अपने गाँव स्वर्ग ह (अमरेन्द्र मिश्र) में गाँव-जवारी धनवन्तिया के बेटा विनय खातिर चौबाइन के बेटा गोधन के भाई जइसन प्रेम, जुलूस (अनीश श्रीवास्तव) में पाण्डे बाबा आ रहमत चाचा के मिल्लत में हिन्दू मुस्लिम एकता के आदर्श, भिरजई (कन्हैया पाण्डेय) में हिन्दू मुस्लिम दंगा में एकता के संदेश चित्रित बा। समुझ (सत्यनारायण सिंह) में कृतघ्न डाक्टर बेटा पतोह के बदले सेवक नौकर रमुआ के नामे जायदाद के वसीयतनामा लिखे के आदर्श चित्रित बा।

इमिरति के लत्ती (पाण्डेय आशुतोष) में मालिक के अत्याचार सहत्त मनबोधना बो के इमिरति के लत्ती-जइसन फरत-फुलात चरित्र के आदर्श उपहार (कन्हैया सिंह सदय) में अनाथ शीला के कर्मठता आ प्रेम-बियाह के आदर्श, छूत के भूत (रामाशीष प्रसाद) में छुआछूत आ जातीयता के यथार्थ में प्रेम के आदर्श, नदी नाव संजोग (रामाशीष प्रसाद) में नारी जीवन के दुर्दशा के बीच विधवा बियाह अन्तरजातीय बियाह आ सामाजिक एकता के संदेश जवान साधू (सूर्यदेव पाठक पराग) में पति के अत्याचार से पीड़ित पत्नी खातिर गलत आदमी के ना छोड़के ओकर गलत सुभाव छोड़ावे के आदर्श, उदार दम्पति (सन्त कुमार वर्मा) में नवाखाली कांड के अनाथ सुषमा के बियाह के समर्थन उदार दम्पति ठाकुर आ ठकुराइन द्वारा होखला में आदर्श के झलक चित्रित बा।

रजमतिया (वैदेहीशरण बनियापुरी) में अन्तरजातीय प्रेम बियाह के आदर्श, अब अबला नइखी (शीला अभय) में अबला पर अत्याचार, मुखिया जी के महिला सुधार समिति के संघर्ष में सफलता, बाबू के आशीर्वाद (सूर्य कुमार शास्त्री) में पाकिस्तान के खिलाफ लड़त घायल वीर जवान प्रदीप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के वीरता के आदर्श, सिगारो (सुभाष चन्द्र यादव) में सास-गोतनी का
के अत्याचार के खिलाफ सिगारो के विद्रोह, भगेसर (आशुतोष कुमार
'आँसू') में आपन बेटन के गैर भइला के यथार्थ चित्र आ गैर भगेसर
अपनइला के आदर्श, मोकदमाबाजी (जीतेन्द्र वर्मा) में सुलह के
चित्रित बा। नरपिशाच (अनिरुद्ध सिन्हा) में नरपिशाच पुलिस के
के बदला लेवे खातिर मजदूर मनवा के निश्चय चित्रित बा। मन बदल
(कमलदेव राय) में ईमानदार मास्टर के समझवला पर नकलची के
परिवर्तन, दिन बहुरी (राम सुमेर सिंह) में हरबाहा पितमहरा के
खातिर मालिक बाबू सत्य नारायण सिंह के अपनाव के आदर्श चित्रित
यथार्थवाद समाज के दर्पण ह त आदर्शोन्मुख यथार्थवाद समाज खातिर

□ ज्ञान मार्ग, दौलतगंज, छपरा-८४१

लघुकथा

टीपन

—(श्रीमती) अलका पा

सुरला चाची के टीपन पर बड़ा भरोसा ह। एह से ऊ अपना
बेटा के बिआह खातिर ना जाने केतना लड़की के टीपन एह से छांट
काहे कि छतिसो गुन-जल्दी मिलवे ना करे। आखिरकार राम-सीता
भृगुनाथ के टीपन एगो लड़की का टीपन से छतिसो गुन मिल गइल
बरिसन का कोशिस के बाद बिआह त भइल, बाकिर पतोह बरिस
नइहर ध लिहली।

दोसरका लड़िका प्रभुनाथ खातिर कनियाँ देखाए लागल। केतना
पहिलकी पतोह के हाल सुनिए के हरक गइल बाकिर जेकरा मालूम ना
सही आवे।

छतिसो गुन का चक्कर में जब तीन बरिस बीत गइल त प्रभुनाथ
लेहले कि अब अइसे बिआह भइल मुश्किल बा। ऊ चुपचाप पंडीजी के
ले के एगो लड़की के टीपन से छतिसो गुन पटवा लेटले आ बिआह हो
बाकिर एह पतोह के साथ के शासन ना सहाइल आ ईहो नइहर ध लेहली

अब बारी रहे रघुनाथ के। ऊ हू गो भउजाई के हाल देख चुकल
से, शुरुए में पंडीजी से कहले— रउरा त हूनू भाईलोग का बिआह में
गुन जरूर मिलवनीं बाकिर फल का भइल ? अब चुपचाप ओह
टीपन हमरा भाई का टीपन से मिलाई आ न त बिआह भइलो पर
कुआँरे रह जाए के परी।

□ न्यू एक/११, हैदराबाद कालोनी, बी० एच० यू० परिसर, वा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक-समीक्षा

महतारी ममता कऽ मूरति : मुक्तकीय प्रबंध काव्य

— डा० ब्रजभूषण मिश्र

[पुस्तक के नाँव — महतारी ममता कऽ मूरति । विधा — प्रबंध काव्य । कवि — प्राध्यापक 'अचल' । प्रकाशक — अखिल भारतीय अन्तर जनपदीय परिषद, उजियार, बलिया (उ० प्र०), । संस्करण-पहिला । मूल्य-एक्यावन रुपया, । पृ० 'क' से 'फ' — २२+१३७=१५९]

लोक-गाथा के सुदृढ़ परम्परा आ 'हंसदूत', 'सुगा-सनेस' आ 'पुहुपावती' जइसन प्रबध-काव्य का जड़ में रहला के बावजूद भोजपुरी में १९५२ में 'बलिदानी बलिया' (भोजपुरी वीर काव्य) से प्रबध काव्य-रचना के धारा फूटल । तब से अब तक पचासहन खंड काव्य-महाकाव्य के रचना से भोजपुरी प्रबध काव्य के धारा पोढ़ भइल बाटे । भोजपुरी प्रबध काव्य के विषय-वस्तु पुराण-इतिहास से त लिहले गइल बाटे, बाकिर विषय-वस्तु के चुनाव में नयापन आ अछूता पात्रन, चरित्रन के ओर ध्यान बेसी रहल बा । स्थूल कथा-वस्तु से अलगा सूक्ष्मता के ओर झुकाव भोजपुरी कवियन के खासियत बाटे । जइसे, आजादी का लड़ाई के सन ४२ का आंदोलन के बलिया जनपद का परिवेश के, विरहिणी का मनोदशा के, सृष्टि का निर्माण आ विध्वंस के, दलित वर्ग का समस्या से संबंधित लोककथा के, प्रबंध काव्य खातिर विषय-वस्तु बना के भोजपुरी कवि अपना रचना-कौशल के परिचय देले बाटे । अइसने कवि में शामिल बानी प्राध्यापक अचल, जे महतारी का ममता के अपना प्रबंध काव्य के विषय-वस्तु बना के महाकाव्यत्व प्रदान कइले बानी ।

कवि एहे काव्य-पुस्तक के भोजपुरी प्रबध काव्य के रूप देले बाड़न । कवनो काव्य रचना के प्रबध काव्य होखे खातिर ओह में कवनो कथाधार, एक चाहे एक से जादा घटना के विधान, कवनो पात्र के सपूर्ण जीवन-वृत्त चाहे जीवन के कवनो चमकदार अंश, एक पात्र का दोसरा से संबध, एक घटना का दोसरा से संबंध आ वर्णन में क्रमबद्धता, छन्दन आ कथन में पूर्वापर के सबध होखे के चाहीं । पुस्तक के भूमिका लिखत डा० जितेन्द्र नाथ पाठक लिखले बाड़न — "इस पुस्तक की विषय-वस्तु कोई कथा न होकर मातृ वियोग के बाद कवि की मातृभक्ति का संस्मरणात्मक भावोद्वेलन-आलेख है ।" इहाँ ई साफ बा कि महतारी वियोग के बाद इयाद का क्रम में कवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जवन महतारी महिमा बखनले बाटे, ओह में अनायासे एगो कथा पूरा
गइल बा। ई कथा, महतारी के महिमा-कथा बा। महतारी के गुण
वाली अनेक घटना के वर्णन स्वाभाविक रूप से आइल बाटे। नारी
के महतारी रूप वाला चमत्कार अंश उद्घाटित भइल बा। एक ही
महतारी के महिमा बखाने वाली घटनन में आपसी संबंध पात्र के
बन जात बा। वर्णन में क्रमबद्धता आ छंदन कवितन में पूर्वापर के
बाटे। ई सब मिल के 'महतारी ममता कऽ मूरति' के प्रबंध-काव्य का
में खड़ा कर देत बा। 'महतारी ममता कऽ मूरति' दस उसांसि (सर्ग)
रचाइल बाटे। दसो उसांसि के मथेला बा—जय शकरा रेवती माई,
छने सुमिरीला हम माई। तुहरा के, नेह-सनलि माई कऽ मूरति, माई
नेह-मसीहा, माई चेत परेली, माई के ना कबहूँ बिसरल, जोहत रहली
जेकरि रहिया, फरलि तपेसा माई जी कऽ, महतारी ममता कऽ मू
अँखिया रखलू कतना पानी। दस सर्ग में रचाइल ई प्रबंध महाकाव्य का
का अनुसार बाटे। महाकाव्य खातिर आचार्य विश्वनाथ का
शृंगार, ... भा शांत रस में से एगो के प्रधान रस का रूप में मान्यता
बाकी रस गौण रहे के चाहीं। एह नियम में शिथिलता आ गइल
भक्ति रस आ करुणा-वात्सल्य आदि प्रधान रस के रूप में मान्यता पा
बाटे। कवि 'महतारी ममता का मूरति' में एह शिथिलता के लाभ
वात्सल्य के प्रधान रस बनवले बाड़न आ पूरा महाकाव्य में करुणा
रस बा। नाट्य संधियन के निर्वाह एह महाकाव्य में नइखे हो
महाकाव्य खातिर मंगल का प्रावधान के पालन एह काव्य पुस्तक में
बाटे। कवि-ग्राम में स्थापित जगदम्बा का महिमा के गुण-गान
लेखनी से भइल बाटे—

इहे इष्टदेवी जन-जन कऽ नित कल्याण करेली,
जब आवेले भीरि कपारें इहे गाढ़ हरेली। पृष्ठ—1

* * *

त्राहिमाम माँ! पाहिमाम माँ! हम सभ रउरी पइयाँ;
माई राउर लमहरि बहियाँ चाहीं ओकरि छहियाँ।—पृ० 1

भारतीय शास्त्रीय मान्यता बा कि महाकाव्य में कई छन्द के
होवे के चाहीं। 'महतारी ममता कऽ मूरति' में जहाँ मात्रिक छन्द के
भइल बाटे, उहाँ लोकधुन के प्रयोग भइल बा। उदाहरण देखा
सकत बा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सार छंद— राजा-परजा बाभन हरिजन
कतनो पोथी बाँची;
कतनो दावा बीरो होई
ना कलवा से बाँची।

लोकधुन—

सूतऽ सूतऽ हो भइया! हम मिठइया देइबि नऽ
सूते गइली थाकल चिरई
नभ ले तिकवत बाड़ी तरई
भोले! मोरे तुहके लयनू-मलइया देइबि नऽ।

महाकाव्य खातिर भारतीय आचार्य लोग का मान्यता आ शर्त्त के पालन कस्त कवि अचल 'महतारी ममता कऽ मूरति' में प्रकृति-वर्णन, गाँव-वर्णन, मेला-ठेला वर्णन, पर्व-त्योहार के वर्णन कइले बाड़न। कुछेक के उदाहरण देखल जा सकत बा—

प्रकृति— कतो कदम्ब बबूर बइरिया कतो बाँस क कोठी
जइसे बन-जीवन खातिर ई प्रकृति बनवलसि कोठी

मेला-ठेला— गउँवा का पच्छिवँ लागेला बारह दिन रमलीला
कवनो सालि परल ना गऊवाँ एमें तनिको ढीला।

× × ×

मेला में असबाव गँजाला दुनियाँ भर कऽ आके,
गहँकी माछि महँग कइ देलन उमराहे बटुरा के।

पर्व-त्योहार— गोल बान्हि के जोर लगा के
जमे कबीर-जुगीड़ा,
हुम्मा-हुम्मी हो हरि होरा
भिड़े गोल कऽ जोड़ा।

पाश्चात्य काव्य शास्त्रीय दृष्टि में कवनो महाकाव्य खातिर प्रांजलता, औचित्य, औदात्य, शक्तिमत्ता मार्मिता आ अलंकरण आवश्यक तत्व बा। साथहीं महाकाव्य का शब्दाडम्बर, अनावश्यक वाग्विस्तार, पुनरावृत्ति, अत्युक्ति, अनुपयुक्त शब्द प्रयोग, दूरारूढ़ रूपक योजना आ शिथिल पदावली से बचे के चाहीं। 'महतारी ममता कऽ मूरति' शुरू से लेके अंक तक प्रांजल बाटे। रेवतीपुर गाँव, जगदम्बा माता, उहाँ पर लागेवाला मेला आदि के वर्णन में संतुलन नइखे रह पावल आ औचित्य निर्वाह ढंग से नइखे भइल। औदात्य के निर्वाह एह महाकाव्य में पूरा-पूरा भइल बा। महतारी का ममता के उदात्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रूपमें प्रस्तुत करे में कवि सफल रहल बाटे। शक्तिशाली भावन के प्रस्तुत में, विशेष प्रसंगन के प्रसंगानुकूल वर्णन में भाषिक शक्ति के भरपूर उपयोग महाकाव्य में भइल बाटे। माई का इतकाल का बाद जे शोक कवि का बाटे, ओकरे मार्मिक वर्णन एह काव्य में भइल बा। अनावश्यक वाग्विस्तार पुनरावृत्ति, अत्युक्ति से कवि बच नइखे पावल। मेला-ठेला के वर्णन, सँवरा पर्व का खिचड़ी आ दही-चिउड़ा के वर्णन आदि में एह दोष सब के हो जात बा।

पूरा महाकाव्य में शब्दालंकार, खास कर के अनुप्रास के छटा बि रहल बा। एक दू गो उदाहरण दिहल जा रहल बा—

फरफरात फगुवासल फागुन
फर्री मारत फउके
चुलबुलात चिरई चउवा-चित्त
चारू ओरा चहके—पृ० ५८

पूरे महाकाव्य में जहाँ तत्सम शब्दावली के प्रयोग भइल बाटे, ठेठ भोजपुरी शब्दन के प्रयोगो भरपूर भइल बा। पूरे महाकाव्य में शब्दन के भरमार बा।

जइसे चेत, ग्राहिमाम तीर्थयात्रा, प्रवाह, बन्धु, देव जइसन तत्सम उफरि, धिकलि, मकुनी, डहरि, ऊरठि, टेमि जइसन ठेठ गँवई आ सुकुवार, नवरातर, भगतन, असतुति जइसन तद्भव शब्दन के उदाहरण खातिर प्रस्तुत कइल जा सकत बा।

भूमिका लेखक डा० जितेन्द्र नाथ पाठक के गिनावल एह महाकाव्य नवता प्रदान करे वाला बिन्दुअन के ओर ध्यान दिहल जरूरी बुझात बा। एह महाकाव्य के विशेषता बा। एकर पहिला नयापन मुक्तकीय विषय प्रबंध काव्य लेखन के सफल प्रयास बाटे। दूसर नयापन आत्मकथात्मक के साहसपूर्ण लेखन बाटे। तीसर नयापन शोकात्मक प्रबंध भइल बाटे। चउवा नयापन अपना पर घटल के सार्वजनिक अभिव्यंजना बाटे। इहो जरूरी बुझाता कि एतना नयापन के समेटे में प्रबंध काव्य आ महाकाव्य खातिर निश्चित कुछ स्थूल तत्वन के छूट भइल स्वाभाविक विकासात्मक प्रक्रिया मानल जाई।

प्रूफरीडिंग, छपाई, सफाई पर अगर थोड़ा अउर ध्यान दिहल रहित त ई महाकाव्य पढ़नउक का सङे, देखनउको हो गइल रहित। [illegible]

□ ई-१८/३, कॉटी थर्मल पावर, मुजफ्फरपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रिका प्रायोजक मंडल

सत्यनारायण सिंह (मुख्य प्रायोजक) : पाण्डेय कपिल : नागेन्द्र प्रसाद सिंह : प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' : आचार्य विश्वनाथ सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : करुणानिधान केशव : शैल वर्मा : डॉ० बी० एन० सिंह : डॉ० प्रभुनाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र : जगन्नाथ : रंगश्री (भोजपुरी साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान) बोकारो : विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव : डॉ० शत्रुघ्न सिंह : भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना : डॉ० बसन्त कुमार : जनार्दन प्रसाद : आनन्द सन्धिदूत : शत्रुघ्न सिंह : जगदीश सहाय 'असीम' : डॉ० शम्भुशरण : पाण्डेय सुरेन्द्र : उर्मिला पाठक : डॉ० धीरज कुमार भट्टाचार्य : शिवनन्दन प्रसाद 'हर्षवर्धन' : पी० चन्द्रविनोद : राजेश कुमार। रूपश्री : माधव सिंह : रामबाबू प्रसाद : आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत : राजनारायण दीक्षित : अतुल कुमार : गीता देवी : बब्बन सिंह : कुसुम सिंह : सुशीला पाण्डेय : कर्मा प्रेस पटना : शांति कुमारी : रामअयोध्या तिवारी : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती : प्रो० रामेश्वर राय : प्रो० उमाकान्त वर्मा : सूर्यदेव पाठक 'पराग' : शालिग्राम माधव : मोती बी०ए० : डॉ० रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव : अम्बुजा सिन्हा : निशान्तकेतु श्याम : भोला प्रसाद 'आग्नेय' : गरिमा बन्धु : दिनेश्वर प्रसाद सिंह : हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' : प्रो० रामेश्वर नाथ तिवारी : फुलेना दीक्षित : डॉ० राजेश्वरी शाण्डिल्य : डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी : डॉ० उषा वर्मा : चन्द्रदेव पाठक 'सुधाकर' : सुरेश कांटक : पी० नीरजनयन : व्यासशंकर मिश्र : सरिता शिवम् : हरिनारायण 'हरीश' : श्रीहरि मिश्र : सत्येन्द्र नारायण चतुर्वेदी : दीप्ति : अजय कुमार ओझा : इनरपरी देवी (वेला शर्मा टोला) : संगीता पाण्डेय : रामाश्रय सिंह 'नीरव' : जगतनारायण प्रसाद : लेजर प्रिंटर, पटना : डॉ० कपिलदेव सिंह : डॉ० चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' : नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक' : चन्द्रशेखर मौर्य : महामाया प्रसाद 'विनोद' : व्यास मिश्र : डॉ० अशोक द्विवेदी : हरिचरण राम : डॉ० प्रभुनारायण विद्यार्थी : श्री दीनानाथ पाण्डेय : डॉ० सविता सौरभ : डॉ० एम० एम० पी० श्रीवास्तव : डॉ० चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा : राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता : डॉ० विवेकी राय : रामाधार ओझा 'तुच्छ' : डॉ० भगवतीशरण मिश्र, : नरेन्द्र प्रसाद 'नवीन' : अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' : प्रकाश उदय : बरमेश्वर सिंह : हरिहर नाथ पाण्डेय : शारदानन्द प्रसा : गुलाब प्रसाद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

R.N.I. Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. PT.—428/

एक मुट्ठी लाई

भोजपुरी के एकसठ लघुकथाकारन के लघुकथा के संग्रह

दाम - पचास रुपया

सम्मेलन के सदस्य के खातिर रियायती दाम - पचीस रुपया

□

भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु

भोजपुरी के डेड़ सौ हाइकुकारन के चुनिन्दा हाइकुअन के संग्रह

दाम -- पचास रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर रियायती दाम—पचीस रुपया

□

मानक भोजपुरी वर्तनी

लेखक—आचार्य विश्वनाथ सिंह

दाम—पुस्तकालय संस्करण - चालीस रुपया

जन-संस्करण—तीस रुपया

□

महापंडित राहुल सांकृत्यायन के लिखल

तीन गो नाटक

महारुन के दुरदसा	जोंक	नइकी दु
दाक - पाँच रुपया	दाक—पाँच रुपया	दाम—पाँच

□

ाम का अलावे, दस रुपया डाक-खर्क खातिर भेजीं। पचास रुप
ादे के किताब मँगवलापर डाक-खर्च सम्मेलन वहन करी। वी०
किताब भेजल सम्भव नइखे।

महामंत्री

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

त्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का
डेय कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन,
ना-८०००२४ (दूरभाष : २६११३४) से प्रकाशित, आउर पाण्डेय
रा कर्मा प्रेस, बुद्ध मार्ग, पटना-१ (दूरभाष : २३२७८०) में
सम्पादक—पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ष-८ : अंक-१
जनवरी १९९७

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

८५

परामर्श-मण्डल

कृष्णदेव उपाध्याय : श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय
गणेश चौबे : आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र
श्री मोती बी० ए० : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
श्री भोलानाथ गहमरी

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

व्रजकिशोर : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : जगन्नाथ :
डॉ० शम्भुशरण : नागेन्द्र प्रसाद सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण :
डॉ० व्रजभूषण मिश्र : भगवती प्रसाद द्विवेदी

एह अंक के प्रायोजक

श्री शारदानन्द प्रसाद : श्री गुलाब प्रसाद

फोन : ०६१२-२६११३४ इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

एह अंक में

कथनी सम्पादक के	लोहा लाल हो गइल बा	पाण्डेय कपिल
कविता	कहवाँ ऊ कहवाँ ई	हरिहरनाथ पाण्डेय
"	धरती के विरह गीत	डॉ० विश्वरंजन
"	गजल	आसिफ रोहतासवी
"	सफर लमहर बा ...	डा० स्वर्णकिरण
"	गीत	पी० चन्द्रविनोद
"	कइले बा ऊ खूब कमाई	डॉ० विजय बलियाव
"	माई के चिट्ठी ...	प्रो० हरिकिशोर पा
"	गीत	पाण्डेय सुरेन्द्र
"	प्यार जियवले बानी	उमेश कुमार पाठक
कहानी	नाक	बरमेश्वर सिंह
उपन्यास	अमंगलहारी	डा० विवेकी राय
संस्मरण	शिव प्रसाद द्विवेदी	डा० शिव प्रसाद द्वि
ललित निबन्ध ...	चोर जोग	राम प्रवेश शास्त्री
साक्षात्कार ...	'भोजपुरी आगे बढ़ी'	डा० बाहरी पाण्डेय आशुतो
दिवंगत भोजपुरी सेवी वेदनन्दन जी के भोजपुरी साहित्य में अवदान ...		राम निहाल गुंजन
आलेख	युवा वर्ग आ भोजपुरी	रवीन्द्र कुमार शाहाब
पुस्तक-समीक्षा	'नेवान' के हाइकु : भोजपुरी के प्रतिमान हाइकु कुमार विरल	
	भोजपुरी के सांस्कृतिक थाती 'विबाह गीत' आ 'मगल गीत'	भगवती प्रसाद द्वि
राउर चिट्ठी मिलल	लघुकथा विशेषांक : एगो प्रतिक्रिया	बरमेश्वर सिंह

दाम - एक अंक के—पाँच रुपया

दाम—साल-भर के पचपन रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर साल भर के रियामती दाम—पैंतालीस

पत्रिका प्रायोजक शुल्क (आजीवन ग्राहक शुल्क)—साढे सात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

[अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका]

इन्द्रपुरी, पटना-८००००२४

वर्ष-८ जनवरी १९९७ अंक-१

कथनी सम्पादक के

लोहा लाल हो गइल बा

१९९७ के नयका साल में 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' अपना सब लेखक, पाठक, ग्राहक आ प्रायोजक लोगन के हार्दिक मंगल-कामना करत बा, आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना हर सदस्य आ हिमायती आउर भोजपुरी-भाषी आ भोजपुरी के नेही हर भाई-बहिन के शुभ कामना देत बा।

पिछला साल, भोजपुरी के प्रगति हर दिशा में भइल बा आ भोजपुरी के समृद्धि आ मान्यता का दिसाई हमनी काफी आगे बढ़ल बानी। साहित्य अकादमी से भोजपुरी खातिर एगो फेलोशिप के व्यवस्था एह बात के सबूत बा कि साहित्य अकादमी के मान्यता तक पहुँचे के आधा दूरी तय हो चुकल बा। बाकी आधा दूरी एह साल तय हो जाई, अइसन उमेद कइल जा सकत बा।

संविधान के अष्टम अनुसूची में भोजपुरी के शामिल करे का बारे में भी भारत सरकार में गंभीर विचार होखे के परिस्थिति बन रहल बा। हालांकि भारत के गृह मंत्री इन्द्रजीत गुप्त दरभंगा के अपना भाषण में मैथिली के संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल करेके बात कइले बाकिर भोजपुरी के कवनो चर्चा ना कइले। बाकिर, बिहार के मुख्य मंत्री लालू प्रसाद का रहते, भोजपुरी छूट जाई, अइसन कल्पना नइखे कइल जा सकत। अगर मैथिली शामिल होई त भोजपुरियो के शामिल होखहीं के बा। मैथिली के शामिल करावे खातिर जेतना राजनीतिक जोर लागल बा, ओकरा से जादे आ कारगर जोर अकेले मुख्य मंत्री लालू प्रसाद लगइहें, एकर पूरा विश्वास 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' का बा।

बाकिर एह काम में अकेले मुख्य मंत्री लालू प्रसाद के ही ना, भोजपुरी-भाषी आ भोजपुरी-प्रेमी हर सांसद आ विधायक का लागे के होई। ओह सब लोग के ई कर्त्तव्य बनत बा कि दलगत राजनीति से ऊपर उठ के ऊ सब लोग आपन जुबान खोलो आ एह देश के सबसे बड़ आबादी के भाषा भोजपुरी के संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल करावे खातिर एड़ी से चोटी के पसेना एक क के, भारत सरकार के एकरा खातिर मजबूर करो। लोहा लाल हो गइल बा। अब एही घरी एकरा पर चोट करेके जरूरत बा।

—प्राण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कहवाँ ऊ..... कहवाँ ई

—हरिहरनाथ पाण्डे

माई !
ऊ त अबहुँओ होई ?
पीपर के झँखाड़ पेड़
बरहम बाबा के चउतरा
जहवाँ ढेला ओंइछत
लोरा जात रहे आजी के आँख .....
अबहुँओ हरियर होई ऊ बँसबाड़ी ?
जहवाँ चुपके से
दूधिया दोलाई ओढ़ाके
लुका जात रहे अँजोरिया रात .....
माई !
ऊ घूरा त ओसहीं होई ?
जहवाँ पसरल रेंगनी
बेर-बेर हमरा गोड़ में
खोभ देत रहे सूई
सोनपापड़ी का पाछा
लोहा-सीसा-टीना बीने के बेरा .....
अँगना के गेन्हारी त उजहल नाहींये होई ?
दुआरी प के धतूर त अउर झमाठ बन्हले होई ?
हमार रोपल तोंत त फर के लदर गइल होई ?
बनबइर त एहू साल हमार राह तकले होई ?
माई !
खाला में के बेहाया त
बिना पटवले चुह-चुह होई ?
ओकर गुलबछहूँ गाल ना होखत होई
कबहुँओ कैंसर के शिकार .....
एहिजा तं सूखाइले रहेला
कारपेट वाला दूभ के मुँह !
एके दिन प हो जाता
हाई अटैक रजनीगन्धा के.....
काल्हे नू..... हमार गार्डेन में
डाइबीटिज से डेथ हो गइल
गुलदाउदी के !
निखवाहिन गारी देत चलत बा
बिखिआइल भवँरा.....
रोज नालिस कर रहल बिया तितली
अब त पेपर पढ़के
अइसन लागऽता कि .....
एक-एक गमला के गुलाब
हो गइल बा एड्स क रोगी ! ! !.....

खनगाँव, भोजपुर—८०२१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरती के बिरह गीत

—डॉ० बिश्वरंजन

धरती के बिरह गीत
सुने असमनवाँ
पीर भरल अँखियन से लोरवा बहाय।
माटी के हाल का
कतहीं बा फाटल, त कतहीं दहार बा
माटी के पूत सभे
बाकिर, आपस में केतना दरार बा
आदमी नदारद बा, आदमी, कहाय।
लोहा सिमेंट के जगल में आदमी
बड़ा बुरा हाल बा
पछुआ-पुरवा ना कबो बहे
ना उगेन लाल बा
बरखा से सड़क गली बाढ़ में दहाय।
अपना में टापू सब केहू
बन गइल बा कटल-कटल
बाकिर, सब के छत छज्जा बा
एक लगे सटल-सटल
उजबुज मन से कइसे चैन से रहाय।

☐ रामनारायण लाल पथ, भगवान बाजार, छपरा-८४१३०१

गजल

—आसिफ रोहतासवी

जार जिनगी के अब ना सहल जात बा
ना जियल जात बा ना मुअल जात बा
कांट जइसन करेजा में करकेला कुछ
ना कहल जात बा ना रहल जात बा
बात मड़ई के रोटी के, बासी भइल
अब नया कुछ कहीं का लिखल जात बा
ना रदीफ़े रहे, ना बहर, काफिया
हाय! कइसन गजल अब लिखल जात बा
नेक खाता हवा अब हवालात के,
लीं, रिहा मुजरिमे के कइल जात बा

☐ सकरी, कुदरा, रोहतास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

सफर लमहर बा

—डॉ० स्वर्णकिरण

थाकल कदम,
सफर लमहर बा,
कदम-कदम पर विघिन,
जखम हरियाइल बा का ?
दहशत से पेड़न के
पात-पात का करिया भइल,
कि जिनिगी के उछाह
गायब भइला से
रूप भइल बदरंग।
शांति-चिरई उड़ गइल,
पेट के अंतड़ी सटल,
कहाँ बा खाये पीये के सुविधा
करवट बदल-बदल के
सोये के अवसर।
दिन रात काम,
बस पेट बाँध के काम,
मजूरी के बेरा
गाली-गलौज,
लप्पड़—झप्पड़,
कहाँ उनकर मुँह तनिको
होखत बाटे बंद ?
कि हक के सपना,
सपना बा !
रोअत बा इंसाफ
ढाँप के मुँह,
फइलत बा अन्हियारा,
रोशनी नहवा
इचिको झिलमिलात बा ?
ढाढस देबे बोला
खुद असमंजस में
का पड़ल ?
कलेजा मुँह के आवत बा।
निर्दयी आसमान
धरती के दुख-के
टुकुट-टुकुर देखत बा !
धरती के भीतर
कइसन बेचैनी,
मनहूसी के दौर,
छिटाइल शाप इहाँ
भा उहाँ।
दया, माया, ममता
जे गुण भीतर के
गायब बा।
आ लोग-बाग
भाला भोंकत बाड़न
बातन के।
लक्ष्यवेध खातिर
तत्परता कहाँ !
समय बीतत जाता।
अफसोस, बचल जे
राहखर्च बा।
घबड़ाहट में
कमी कहाँ
तनिको बड़ुए ?

□ सम्पादक 'नालंदा दर्पण, सोहसराय, नालंदा-८०३११

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत

—पी० चन्द्रविनोद

ईहो दिन बीत गइल
तापते अलाव !

जस के तस सुनगत बा
आपसी लगाव !

पुअरा का घर में ई लुत्ती के खेल
पसरल बा घुंघ-घुआँ आँखिन में तेल

ओद रहल भीतर से
सूखल के भाव !

कुर्त्ता से तोपल बा गंजो के छेंद
मुस्कियात चेंहरा आ आँतर में भेद

चिउँटी के गोड़ भइल
हाथी के पाँव ।

थरिया के रोटी बा होत गइल छोट
नाचें के लूर गइल आँगन के खोट

छूट गइल दउरे में
आपन पहिराव !

बाट रोज जोहे में साँझ से बिहान
लाग गइल पाछा में लरछत मेहमान

भटके में भरम गइल
भेंटल ठहराव !

ईहो दिन बीत गइल
तापते अलाव !

मूर्तिकला विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी—२२१००५

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका/जनवरी, १९९७/५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कइले बा ऊ खूब कमाई !

—विजय बलि

जबसे गद्दी पवलस झबुआ,
बोलत बा ऊ हबुआ-हबुआ,
खूब सहोथले बाटे अन-धन—
अब खाई ऊ नरिआ-थपुआ ।
कुम्हकरन ,जस पेटू बाटे—
ओमे सगरे देस अमाई !

कुरुसी खातिर घूस ऊ देला,
खादि में ओकरी दूना लेला,
टेली फोन आ बैंक-हवाला—
हर जगह ऊ करेला खेला !
ओकरे पुनि-परताप से खालें—
मेहरि, बेटा, सार, जमाई !

लगुओ-भगुओ नइखें खाली,
उन्हनो पर छवले बा लाली,
गिरगिट रहे, भइल बा हाथा—
जेकर धम्धा हवे दलाली !
'ई-ऊ' मिलिके लूटत बाड़न
चोर-चोर मउसेरा भाई !

सुरू भइल बा गोधन कूटल,
दिल्ली क भंडा बा फूटल,
चारा खा, पिअलस अलकतरा—
पटना में भइँसा बा छूटल !
के नेता बा दूध क धोवल-
सभे करत बाटे अधमाई !

गद्दी गईल बवाल बा आइल,
खुल गइलि चोरी क फाइल,
भेख बा बकुला जइसन उज्जर-
सुँह पर करिखा खूब पोताइल !
रोवत बा ऊ राँड की लेखा-
'आहिरे दादा, आहिरे माई !'
कइले बा ऊ खूब कमाई !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माई के चिठ्ठी

—प्रो० हरिकिशोर पाण्डेय

भाड़ा बा बढ़ गइल
एही से ना अइलऽ, मत आवऽ
बाकिर बबुआ एगो बात बतावऽ
हइसन सनेस भेजलऽ
तेहू पर अनका से ।
हम त गँवार हई
तोहरा कब अकिल होई ?
अंगर ऊ आदमी जनमल होई
त जरूर ओकरा माई होई
तोहार सनेस ले के ऊ आइल होई
त कहे में कहऽ केतना लजाइल होई !
चिन्ता मत करिह तूँ नीके तरे रहिह
हमरा के छोड़ऽ हम कउआ उचार लेब
एहू से ना होई, सपना में पुकार लेब ।

□ रेलवे गोदाम रोड, छपरा— ८४१३०१

गीत

—पाण्डेय सुरेन्द

मोरा दुअरिया हो फूले फूलेला कदम कचनार
दुअरा चन्दरमा चमके अगंना अँजोरिया
अँजोरिया झिलमिल अँगना करे चितचोरिया
लागे चकोरिया हो अँखिया झलके नयन रतनार
मोरा दुअरिया... ... ...
अँगना में झलमल झलके ललकी चुनरिया
चुनरिया ओटे झलकेले रस के कजरिया
भींजे अँचरिया हो महुआ टपकेला अंगना दुआर
मोरा दुअरिया ... ...
बिजली के डोरियां में झूलेला झुलनवा
झुलनवा डोरी रसे रसे खींचेला नयनवा
तोरा नजरिया हो झूले झुलना जियरवा के डार
मोरा दुअरिया ... ...

□ बी० २/एम० १२३, स्टेट बैंक कालोनी लखनऊ-२०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

प्यार जियवले बानी

—उमेश कुमार पाठक

प्यार जियवले बानी ।
प्यार बलवले बानी ।

आवसु ना ऊ चाहे,
गावसु ना ऊ चाहे,

सखा के सुनावै के,
गीत बनवले बानी ।

आखिरी इरादा बा,
त्यार बहुत जादा बा,

साथ-साथ बिचरे के,
राग मिलवले बानी ।

महलने का चाम-चुभ
हो गइलन का गुम-सुम, ?

हियरा में रोज रकत—
जोति जरवले बानी ।

कहिया धावल अइहें,
आ कहिया ले गइहें

बेनु तान खातिर हम,
आस लगवले बानी ।

इहाँ चुल्हा उपासल,
केहू हक ले भागल,

ओकर कर तूरे के,
मूड बनवले बानी ।

रोज करजा लिआला,
तबो बढ़े घोंटाला,

रवणन के मारे के,
मीत बलवले बानी ।

☐ कुसुरूपा, सरेंजा, बोसा, बक्सर (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

नाक

—बरमेश्वर सिंह

हालांकि धरमपुर के नाक काल्हे कटि गइल रहे। बाकिर काल्ह गांव में कउनो सनसनी ना उठल रहे। आज त जेकरा के देखीं, उहे तैश में बा। बुझात बा जे आज लंका काण्ड हो के रही।

बाकिर एक बात बा। धरमपुर के नाक सचहूँ शोभनउक रहे। खूब ऊँच, खूब पोरगर। रुतबा-रुआब अइसन कि देखिनिहार दांते अँगुरी काटस। जवार-पथार में धरमपुर के नाक से टक्टर लेंवे के केकरा खेमाता रहे जी?

बाकिर छवे-सात बरिस पहिले ई बात ना रहे। ओह घड़ी त धरमपुरो के नाक रहे टके सेर। सउँसे गाँव हरवाह-चरवाह। माल-मवेशी पोसे-चरावे वाला। दुहला पर जे दूध होखे, ओह में खूब पानी फेंटाय त केहू किहाँ दू किलो ठहरे, केहू किहाँ चार किलो। सेहू दूधवा पटना के मखनियाँ टानि ले जा स। भईंसवाहा के बाल्टी खाली के खाली रहि जाय। लड़िका-फरिका टुकुर-टुकुर। बाकिर कुछ नगदी भेंटा जात रहे। ओही से ऊपर-झापर के काम चले। खाये-पिये वाला काम खातिर त दुखड़ा-मजूरी ज़िन्दाबाद रहले रहे!

खैर, ओह घड़ी के बतिये दिगर रहे। सउँसे धरमपुर में ले-दे के आठे-दस गो घर के छान्हि पर खपड़ा लउकत रहे। असल में ऊ आठ-दस घर सर्वंगगर रहलें। एही से ओह लोग किहाँ के दू-तीन सवांग रेलवई में गिट्टी टारे जात रहले। एह तरी से ओह लोग किहाँ कुछ जादे पइसा आ जात रहे। तबे नू ओह लोग के छन्हि पर खपड़ा चढ़ि गइल रहे! ना त दू सौ घर वाला धरमपुर में खाली फूसे त लउकत रहे!

'अबगे इहे आपन राज आइल ह।'—आज से छव-सात बरिस पहिले धरमपुर के एगो नवही ई बतिया टुभुकल रहे। बाकिर ओह घड़ी ओकरा बात पर केहू कान ना दिहले रहे। बलुक एगो बुढ़ऊ त ओकर के लुलुआवत इहवाँ तकले कहि दिहले रहलें—'जो-जो! अबहीं अबगे जनमि के खाड़ भइले ह। हमनी के अइसन-अइसन कतिना राज के आइल-गइल देखले बानी जा।'

बाकिर ना, दू-तीन महीना बीतते-बीतत धरमपुर में सचहूँ आपन राज आ गइल रहे। फिरू त धरमपुर के ना खाली छाती बलुक ओकर नाको ऊँच हो गइल रहे। माने कि पिअवा भइलें कोतवाल वाली बतिया धरमपुर के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नाक से निकले वाली हर साँस के साथे इलाका में पसरे लागल रहे। होखे त जुगेसरा अइसन।'—ठीक ओही घड़ी धरमपुर में जुगेसरा के चान-सूरुज अस गिनाए लागल रहे। ओह घड़ी जेकरा मुँहें जुगेसरे के बड़ाई। बतियो कुछ ओइसने रहे। सउँसे धरमपुर में जुगेसरे अकिल सबसे पहिले खुलल रहे। सबसे पहिले उहे आपन लगहर भइंसा दारू चुआवे के कारबार शुरू कइले रहे। ऊ बिहटा बाजार से मन महुआ उठा के ले आवे आ ओकर दारू चुआ के बेचे। देखते-देखत कारबार जमि गइल रहे। नतीजा ई भइल रहे कि रोज दू किलो वाला जुगेसरा अब रोज सौ-दू सौ लिटर दारू नापे लागल रहे। ओकर ठाट-बाट में बदलाव आ बढ़ती देखि के सउँसे धरमपुर के जइसे ढकियन लार चूवे लागल रहे।

[२]

कहल गइल बा नू कि बइठले चानी काटे के ना चाहीं! जिनका करम ठेठावत रहे वाला के दुआरी पर जब सहजे सवा पउवा सोना लागी, तब एह सुजनी-सुतार के ऊ कइसे हाथ से निकले दिही? धरम उहे भइल रहे। गरीबन के सरकार बहादुर के जिन्दावाद बोल आपन-आपन गोरू-माल बेचि दिहले रहे।

अब धरमपुर ऊ धरमपुर ना रहि गइल रहे। अब उहवाँ फागुन अस खाली भट्ठीये लउके लागल रहे आ ऊ अब पुरुब में बिहटा, दानापुर से पटना तकले आ पच्छिम में कोइलवर, कुल्हड़िया, आरे तकले रोज हजारन गैलन दारू ठेले लागल रहे। नतीजा ई भइल साल-छव महीना बीतते-बीतत सउँसे धरमपुर में ईंटा गिरे लागल रहे आ छड़ गिरे लागल रहे आ ठोकाय लागल रहे बिल्डिंग पर बिल्डिंग।

पुलिस? भला पुलिस के आँख उठा के ताके के बेंवत कहवाँ 'सामाजिक न्याय' वाली सरकार बहादुर उन्हनी के काथी में त खरकोचि दिहित? तेहू पर उन्हनी के आपन कमीशन त भेंटाते रहे नू?

खैर, संयोग देखीं, ठीक ओही घड़ी पटना से 'भूरा बाल' साफ ऐलान भइल रहे। धरमपुर के एगो बुढ़ऊ के कान में जब ई बतिया पड़ल तब ऊ आगे से आपन दूनो जाँघन का बीच इशारा करत कहले रहलें—हई सफ करिहें। कंस जनि बनस, ना त रोइहें।' बाकिर धरम कुल्हि नवहिन पर काहे के कउनो असर पड़ो? ओन्हनी के त आँख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ादे लागल रहलें स। फिरू त धरमपुर के नाक गेंहुअन अस फन काढ़ि के हइसे फोंफियाय लागल रहे—'फों-फों।'

जवारो-पथार में एह बात के गोचरो होखे लागल रहे। वलुक जवार-पथार के लोग हड़बड़ा के आपन-हित-नाता किहां चिट्ठी लिखे लागल रहलें—'देखिहऽ लोग! धरमपुर से गुजरत खानी तनी होशियारिये से। ना होखे त आपन जनेऊ खोलि के ओनियें राखि हिदऽ लोग आ आपन नाँव-गाँव बरबस छिपा लिहऽ लोग!'

बाकिर तइयो कतिना लोग पकड़ाइये जात रहलें। एक दिन बबुरा के एगो बाबू साहेब पकड़ा गइल रहलें। उनुका से इहे गलती भइल रहे कि कि ऊ आपन नाँव सही-सही बता दिहले रहलें—'राम राज सिंह।'

'सिंह?'—धरमपुर के एगो नवही चिहुँकल रहे। फिरू ऊ तनी टेंठिया के बाबू साहेब से पूछले रहे—'नयका कि पुरनका?'

बाबू साहेब एक त पुरनियाँ रहलें, दोसरे सोझबक। धरमो-ईमान के उनुका बहुते फिकिर रहे। एह से ऊ साँचे-साँच कहि दिहले रहलें—'पुरनका, ए बबुआ!'

'ओ! त तू पुरनका सिंह बाड़ऽ?'—धरमपुर वाला नवही बाबू साहेब पर टोन कसले रहे।' फिरू ऊ गुरना के बाबू साहेब के फफेली टीपे लागल रहे। बाबू साहेब बेचारे अललाए लागल रहलें। तलुक धरमपुर वाला नवही फिरू बोलल रहे—'जो भाग! बूढ़ बाड़े एह से छोड़ि देत बानी, ना त आज तोहरा के छव इंच छोट करि दिहतीं।'

एही तरी एक दिन जमालपुर के एगो लाला जी धरमपुर के नवहिन के फेरा में फँसि गइल रहलें। लाला जी बेचारे अमीन बाडें। ऊ कतहीं से जमीन नापि के आपन साइकिल से लवटत रहलें। तलुक धरमपुर के नवही उनुका के धरि लिहले रहलें स। लाला जी बेचारे गिड़गिड़ाइल रहलें—'हम त सभे के टहल बजावे वाला बानी। हमरा से रउवा सभे काहें रंज बानी।'

बाकिर धरमपुर के नवही काहें के कुछुओ सुने जा स? उन्हनी के लाला जी के साइकिल, घड़ी, जरीब, पइसा त छिनिये लिहलें स, लाला जी के लंगटिया के उनुकर धोतियो-कुर्त्ता ले लिहलें स।

ना परेव वाला पंडित जी त अपना भागे-जोगे बचि गइल रहलें। ऊ आपन बेटी किहाँ से लवटत रहलें। तलुक धरमपुर के एगो नवही उनुका के टोकले रहे—'कहवाँ घर बा?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पंडित जी डरी आपन दाँत निपोड़ि के कहले रहलें—'का
बबुआ जी !'

'कहवाँ जइब ?'

'मोहम्मदपुर, बबुआ जी !'

'का नांव बा ?'

'करीम मियां, बबुआ जी !'

'ना, तू झूठ बोलत बाड़ऽ ?'—ओह नवही के शक भइल रहे।
ऊ आपन एगो संघतिया से कहले रहे—'ए परसा ! तनी इनिका
खोलि के देख त ?'

पंडित जी भक् ! उनुकर प्राण हुकुर-हुकुर। अब का होखी, भ
बाकिर धन्य भगवान ! असल में पंडित जी के कुदरती छोलकट भइ
दिन उनुका कामे आ गइल रहे।

'अरे रे ! ई त सचहूँ 'माई' समीकरण वाला भाई जी बाड़ें ?'—
वाला नवही चिहाइल रहे। फिरू ऊ पंडित जी से माँफी मांगत कहले
'गलती हो गइल ह, मौलबी साहेब ! हमनी के का पता रहे कि
आपने आदमी बानी ? माफ करीं आ रउवा ठाट से जाईं। कउनो
के डर-भय जनि करीं।'

बाकिर धरमपुर वालू लोग के असल छकान छकवले रहे विहटा
भूमिहार भइयवा।

'का हो ! कहवाँ घर बा ?'—धरमपुर के एगो नवही
पूछले रहे।

'कउड़िया।'

'कहवाँ जाये के बा ?'

'मौदहीं।'

ई दूनों गांव में धरमपुर के गोतिये भाई रहत रहलें। एह से
के ऊ नवही आगे पूछले रहे—'केकरा किहाँ ?'

'चनरमा बाबू किहाँ।'

'कउन चनरमा बाबू ? केकर बेटा बाड़ें ?'

'उनुकर बाबू जी के नांव त हम नइखीं जानत। असल में चनर
हमरा साथे मलेटरी में बाड़ें। अभी हमनी का दूनों गोटा कश्मीर में
बानी जा। चनरमो बाबू के घरे से तार गइल रहे, उनुका आवे
बाकिर उनुका अबहीं छुट्टी ना मिलल। ऊ अब एक महीना का बाद
इहे बतिया उनुका घरे हम कहे खातिर जात बानी।'

'अच्छा-अच्छा ! जाईं, खबर दे दीं। अच्छा, चलीं हमरो
के बा।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरमपुर से दूर बधार में निकलि अइला के बाद बिहटा वाला भाई जी मने-मन धरमपुर वाला नवही के तउलले रहलें। ऊ उनुका पसंगो में ना रहे। ओही घड़ी धरमपुर वाला नवही बोलल रहे — 'जानत बानी भाई जी! एको भूमिहरवा त पकड़ाते नइखन स। हालाँकि उन्हनी के फेरा में हमनी का हरदम रहत बानी जा।'

'अइसन?' —बिहटा वाला भाई जी मुसका के कहले रहलें। गिरू ऊ झटके पर धरमपुर के नवही के दबोचि लिहले रहलें।

अब धरमपुर वाला नवही जमीन पर औंधे पड़ल रहे आ ओकरा पीठि पर बिहटा वाला भाई जी सवार रहलें। फिरू बिहटा वाला भाई जी के मन में ना जाने का आइल रहे कि ऊ आपन जेबी से सलाई निकालि के ओही लगले धरमपुर वाला नवही के दूनो चूतर दागि दिहले रहलें।

[३]

कहल गइल बा कि चानों में दाग होला! मोरो के आपन गोड़ देखि के अवान होखे के पड़ेला! धरमपुरो के कोढ़ में एगो अइसन खाज रहे। शनिचरा। हालाँकि अब त ऊ कउनो 'यंग इंडिया' के सदस्य हो गइल बा आ ना खाली नया डिजाइन के दाढ़ी राखि के बलुक नया डिजाइन के खादियो सियवा के ऊ अब शनि बाबू कहाय लागल बा, बाकिर ओकरा के हरामी, कमीना, कसाई आ जे कहीं, सब थोड़ बा। बाप रे बाप! जउना राह से शनिचरा गुजरेला, ओह राह के फेंड़न के पतई तकले ओकरा डर से कांपे लागेली स। आखिर धरमपुर में ऊ केकरा के छोड़ले बा? केकर बेटी-बहिन के इज्जत ऊ नइखे लूटले? बाकिर का मजाल कि ओकरा से केहू खोंखि देवे? करेजा पर ऊ सिक्सर भिड़ा दिही, सिक्सर! अब आपन ज'न केकरा प्यारा नइखे! नगीना के बेटा के देखीं। बड़ा उमगल रहलें। तीन दिन के बाद जब उनुकर बहिन लवटि के शनिचरा के करतूत के बखान कइले रहस त ऊ शनिचरा पर इचकी भर त टेढ़ुआइले रहलें। बदला में शनिचरा उनुका छाती में दिन-दहाड़े तीन गोली ठाँस दिहले रहे। एही तरी रामदयाल के बेटी शनिचरा से कहली कि 'हम अइसन-ओइसन नइखीं।' छवे महीना त हो गइल, आज ले गायब बाड़ी से गायबे बाड़ी। ओह घड़ी रामदयाल तनी भुनभुनाइल रहलें —'थाना में जाइब।' बेचारे ओही राति खा बथानि के मचान पर सुतले रहि गइलें। मुड़ी अलग आ धड़ अलग।

हं, शनिचरा गाँव में लूट-पाट ना करे। ई बात साँच बा। बाकिर जवार-पथार में भा पटना से बक्सर तकले रेल गाड़ी में, होखे वाली कउन डकैती में ऊ सामिल ना रहे? बाकिर ई बतिया के कहो आ केकरा से कहो?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चउथा खम्भा ? हँ भाई ! चउथा खम्भा त शनिचरा के कर
खोज-खबर रखबे करेला । बलुक ऊ त खूब जोर-शोर से शनिचरा के
के खिलाफ हल्ला करेला । बाकिर का पूछले बानी ? ठीक ओकरा कि
भइला ऊ ओतिने जोर-शोर से इहो चिचिआय लागेला—'शनि
अगुआई में सदियन से दबल-कुचलल-शोषित जन अब आपन मुट्ठी
चले लागल बाड़ें । ई देखि के सदियन से शोषक रहल ऊँच जाति के
काथी त फाटे लागल बा । एह से ऊँच जाति के ई हाय-हाय सही
ओही फटनास के भकभकऽहट बा ।'

अब बूझीं ! पढ़ीं आपन चउथ खम्भा के चेहरा ! भाई हो ! क
आपन चउथो खम्भवा त घुनाइये गइल बा नू ?

खैर, काल्हे के बात ह । शनिचरा कउनो काम से ढोंढ़वा के
मुसहरी में गइल रहे । संयोग से ढोंढ़वा ओह घड़ी आपन मड़ई पर
खाली ओकर मउगी मड़ई का भीतर रहे । अब शनिचरा आ ई सुगा
से ऊ दबोचिये त लिहले रहे ढोंढ़वा के मउगी के । बाकिर संयोग के
करो ? ढोंढ़वा ओही घड़ी केनियों से लवटि आइल रहे ।

'हरामजादा ! तोहार ई मजाल ?'—मड़ई के भीतर के
के ढोंढ़वा अगिया बैताल हो गइल रहे । फिरू त ऊ भुखाइल
शनिचरा पर टूटि पड़ल रहे आ ओकरा छाती पर सवार हो के ओ
लाते-मुक्के काँड़ि दिहले रहे ।

[४]

"धन्य ढोंढ़वा ! जुग-जुग जीव पट्ठा !'-- धरमपुर के छाती ज
गइल रहे । जेकरा के देखीं, ओकरे ओठ पर मुसकी । असल में
के पिटइला से धरमपुर में ढेर लोग के मन के मुराद पूरा हो गइ
फिरू त काल्ह साँझ तकले धरमपुर में बड़ा अमन-चैन लेखा लाग
बाकिर, आज त सबेरहीं से धरमपुर अदहन लेखा खउले लागल रहे ।
मुँहें सुनीं, ले आव लाठी, ले आव भाला । ई देखि के कामरेड
सभे से कहले रहलें—'पहिले एक जगहा बइठि के राय करि ल
होखे के चाहीं ? अलवलइला से काम गड़बड़ा जाई ।'

सउँसे धरमपु में कामरेड कपिलदेव के मान-आदर बा । एह
बतिया सभे मानि गइल रहे । फिरू त दस बजत-बजत बढ़म थानी के
पर मय धरमपुर के लड़िका, जवान, बूढ़ जूटि गइल रहलें । समस्या
'का होखे के चाहीं कामरेड !'—शनिचरा कामरेड कपि
पुछले रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामरेड कपिलदेव आपन माथा खजुआवत कहले रहलें—'शनिचर भाई ! आगे का होखे के चाहीं, एह पर हमनी के ठंढ़ा मन से सोचे के पड़ी। अइसन ना होखे के चाहीं कि बाछी का सगे नव हाथ के पगहो चलि जाय।'

'ढठा मने से ?.....आ ई नव हाथ के पगहा ?'—शनिचरा तनी चिहुंकलो रहे आ तनी बघुआइलो रहे—'सउसे गाँव के नाक कटि गइल बा ? सरकारी जाति के एह तरी फजिहतावें भइल बा, आ तू ई सब अनाप-सनाप का बकले बाड़ऽ ?'

'हं, शनिचर भाई !'—कामरेड कपिलदेव ठंढाइले कहले रहलें—'हम एह से अइसन कहत बानी कि हो सकेला नाक बचि जाय, बाकिर कउनो सुरबकई का चलते नाक छिपावे खातिर जगह ना रहे ?'

'माने ?'—शनिचरा तनी अउरि तड़ना गइल रहे।

'माने हमनी का अइसन करे के चाहीं कि नाको बचि जाय आ नाक छिपावे खातिर जगहो बचि जाय।'—कामरेड कपिलदेव भीड़ का ओरी ताकत कहले रहलें।

एह पर धरमपुर के एगो बुढ़ऊ उनुका के टोकले रहलें—'ई कइसे होली ? साफ-साफ कहऽ ना ?'

'सहज उपाय बा।'—कामरेड कपिलदेव ओही लपेट में कहले रहलें—'हम पूछत बानी कि ढोंढ़वा शनिचरे भाई के काहे पिटलस ? ऊ धरमपुर के अउरि केहू के काहे ना पिटलस ? नम्बर एक। नम्बर दू कि जब ढोंढ़वा शनिचर भाई के पिटलस त शनिचर भाई डूब मरस। हमनी के नाक बचि जाई। जवारो-पथार के लोग कहिहें कि अजब सनइल रहे शनिचर भइयवा ! एह में सउसे धरमपुर के उफर पड़ला के कउन काम बा ?'

अतिना सुनते शनिचरा के आँख लाल-लाल हो गइल रहे। फिरू ऊ कामरेड कपिलदेव का ओरी अंगुरी उठा के गेंहुअन—अस फोंफियात कहले रहे—'ठीक कहल गइल बा कि तू लोग जउन थरिया में खा ल ओही थरिया में छेदो करे ल। आज जे तू लोग तिलंगी के पोंछ बनि के पटना से दिल्ली तकले उड़ि रहल बाड़ऽ ऊ केकरा बूता पर ? हमनियें के बूता पर नू ? तोहरा लोग के आपनो कउनो बूता बा का ? हमनी का जदि लतिया दिहीं, त दूध के पानी हो जइब लोग, ए कामरेड कपिलदेव।'

कामरेड कपिलदेव के मुंह ठिसुआ गइल रहे। तइयो ऊ कुछ कहल चाहत रहलें। तलुक शनिचरा धरमपुर के कुल्हि नवहिन के ललकारत कहले रहे—'ई कपिलदेउवा हिजड़ा के बात का सुनले बाड़ऽ स ? ई त दुमुंहा सांप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

बा ? हमनी के खूने अबहीं पानी नइखे भइल। चलऽ स, मुसहरी के दिहल जाव। कुल्हि मुसहरन के ओही में झोंकि देवे के काम बा।'

शनिचरा के अतिना कहते धरमपुर के कुल्हि नवही भेंड़ अस भाग मुसहरी का ओरी दउड़े लागल रहलें स—'महाबीर स्वामी की जय।'

फिरू त थोड़िके देर में सउँसे मुसहरी अगीजा अस धू-धू करि जरे लागल रहे। ओकरे संगे हवा में चीख – पुकार, लड़िका-मेहरारू के आवाज आ चिराइन्ह गन्ध तरे लागल रहे।

[५]

साँझ होखत-होखत लाल बत्ती वाली एगो मोटर गाड़ी धरमपुर के सड़क पर धूर उड़ावत आइल रहे। आगे-आगे साइरन बजावत लाल वाली मोटर गाड़ी आ ओकरा पीछे कई गो मोटर गाड़ियन के झुंड।

मुसहरी के मुहाना पर आके लाल बत्ती वाली मोटर गाड़ी के कुल्हि मोटर गाड़ी रुकि गइल रही स। फिरू लाल बत्ती वाली मोटर का भीतर से बगुला अस उज्जर एगो जीव उतरल रहे। ओह जीव पर पड़ते भीड़ में से केहू बुदबुदाइल रहे—'मुख्य मत्री जी !, मुख्य मंत्री जी।'

फिरू त आगे-आगे मुख्य मंत्री जी आ उनुका पीछे-पीछे धक्कम करत उनुकर चमचा, बेलचा, कलछुल, छोलनी, दू का दू का।

मुख्य मंत्री जी दनदनाइल एगो टीला पर चढ़ि गइल रहलें। फिर एगो पढ़ल-पढ़ावल सुग्गा—अस बोले लागल रहलें—'भाई-बहिन सभे! पहिले हम मुसहरी के शहीद भइल कुल्हि भाई-बहिन के आपन मुट्ठी से प्रणाम करत बानी। हमरा ई पता बा कि एह हादसा में इहवां के सभे भाई-बहिन आ बुतरु-बच्चा शहीद भइल बाड़ें। हम ओह सब लोगिन के लाख रुपिया देहब। एकरा अलावे ओह लोग खातिर अइसन पक्का घर बनवा देहब, जउना में कबहूं आग ना लागी। अतिने ना, मुसहरी नोकरी-चाकरी करे लायक बा, ओकरा के हम नोकरियो देहब। रउवा इचिको चिन्ता जनि करीं। हम रउवा सभे के सेवा में आइल करब।'

अतिना कहि के मुख्य मंत्री जी के लाल बत्ती वाली मोटर गाड़ी तरी धूर उड़ावत आइल रहे, ओही तरी धूर उड़ावत चलि गइल रहे।

मुसहरी के कोन पर खाड़ शनिचरा आपन एगों संघतिया के केहुनी से हुदकावत कहले रहे—'चल बुरबक ! नाक बचि गइल।'

□ ग्राम-पो० धनडीहा, जिला-भोजपुर-८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धारावाहिक उपन्यास (किस्त—१)

अमंगलहारी

---डॉ० विवेकी राय

प्रथम अध्याय

भगवान जवन कुछ करेलन अच्छे खातिर करेलन। बाकी अइसन जनाइल कि कवनों गड़बड़ी हो गइलि। त एकर माने भइल कि कवनो पुरुवही के चूक भा अपराध के ई दण्ड-भोग मिलि गइल आ अच्छे भइल। ईस्वरे के इच्छा पूरा होले। ऊहे पूरा होखो। बिना उनकरा मरजी के एगो पतइयो ना खरके ले। इहे सोचि के मेजर जगदीश कोर्ट का फैसला के अंगीकार कइ लिहलन। उनकरा चेहरा पर इचिकियो भर सिकन ना आइलि। जे ओह फैसला के सुनल ऊ दाँत तरे अंगुरी दबा लीहल। अइसनो होला? खेत खाय गदहा मारल जाय... !

ना, अइसन ना होखे के चाहीं, बाकी हो गइल। दयालपुर गाँव में जगदीश के एकमात्र हित—मीत आ मददकार गुरु बिक्रम इहे सोचले आ तुलसीदास के एगो दोहा बोलि के कपारे हाथ धइके बइठि गइले, 'और करे अपराध कोउ, और पाव फल भोग, अति बिचित्र भगवन्त गति, समुझि परै नहिं जोग।'

नेता रणविजय वाला हत्या काण्ड का केस में सेना से रिटायर मेजर जगदीश आ अध्यापकी से अवकाशप्राप्त बिक्रम मास्टर साहब जी के असली मुलजिम योगेश कुमार का सँगे-सँगे लपेटि के फाँस दिहल गइल रहे। गवाही, बयान, बहस आ मोकदिमा के रंगत देखत सभका उमेद रहे कि जगदीश आ गुरुजी छूटि जइहें बाकी मामला गड़बड़ा गइल।

योगेश कुमार के आजीवन कारावास के सजाइ भइलि रहे आ बिक्रम गुरुजी बेदाग छूटि गइल रहलन। पता नाहीं कइसे कानून का नजर में मेजर जगदीश कुछ गड़ि गइलन। उनकरा सेना वाली देश-सेवा के देखत अदालत का ओरि से सजाइ के घटवतो—घटावत में ऊ जाके दू साल के सादा कैद पर अड़कि गइल रहे।

दू बरिस के सजाइ !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मेजर जगदीश के ई सजाइ काटे के त ना परल बाकी लोग बचो लागल कि जमानतँ आ अपील का बाद हाईकोर्ट से निर्दोष मुक्त होतो-होत दू साल त लागियें जाई। मोकदिमा में समय लगबे करेला। खैर, छूटिये जइहन। आखिरी जीत साँचे के होले। छूटही के बा। बाकी कीमत पर ? सचहूँ जगदीश छूटि गइलन, निर्दोष सिद्ध हो गइलन, बाकी दुरगति हो गइलि !

दू साल तक अपील के फैसला के आतुर— अधीर करेजा इन्तजार आ पिछला कई बरिस के मोकदिमाबाजी के मार आ आंहू से वाला घर के भाई-भाई का बीचे बटवारा-दर-बटवारा, रगड़ा-झगड़ा, दर- बवाल…कुल्हि मिला के मेजर जगदीश अइसन टूटि गइलन कि गइला का बाद जइसे दू साल ले मुँह से बकारे ना कढ़लि ! हरिसंकरी धर्मशाला पर मन मरले ढहल रहसु। भूख लागे त घर भोजन-पानी ले लेसु। ले-दे के गाँव में एकही दिली दोस्त रहि गइल बिक्रम मास्टर साहेब।

मास्टर साहेब छाँह नियर हरदम संगे-सगे रहि के साहस बढ़ावत ढाढ़स दिआवत रहसु आ उनकरा के अपना रूप के याद करा करा के जतन कइल करसु।… धत् मरदवा की नाहीं, लड़वइया सूरमा अइसन जीव छोट करेला ?

…अरे तू सन् १९६२ आ ६५ का सीमा-युद्धन में लड़िके दुश्मन के काढ़ि लेबे वाला बीर, लहाख-नेफा, चुशूल, बालोंग, बोमदिला आ काश्मीर, इछोगिल नहर क्षेत्र, कसूर मोर्चा वगैरह-वगैरह लड़ाइन में वीरता के धाक जमावे वाला सूरमा, मेजर शैतान सिंह, सौदागर सिंह, कामले, दोरजे, गुरुबख्श सिंह, मेजर आशाराम त्यागी, परमवीरचक्र कर्नल खन्ना, परमवीरचक्र विजेता अब्दुल हमीद आदि जइसन देश का बान पर कुरबान हो जाये वाला अमर शहीदन का संगे मउअति के हथोड़ा धइले, कपारे कफन बन्हले मोर्चा लेबे वाला जवान अइसे काहें मुँह आ जान चोरवले बा ?

…गाँव के तोहार जरूरत नइखे त का भइल ? देश के तोहार बा। उठि जा, ठाढ़ होखऽ। चेत करऽ आपन कहनाम, 'मोर्चा पर भिड़ जाव, उत्साह इचिकियो भर कम न होखो !'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करत करत जाके ठीक दिआ—दिआरी का दिने मेजर जगदीश के मन बदलल। पता नाहीं केतना अरसा बाद ऊ ओह दिने सजि-ओजि के अपना फौजी पोसाक में पुरहर मेजर बनल, घर से तरना के निकलल रहलन आ हरिशंकरी महादेव के गोड़ लगला का बाद सीधे विक्रम केहें चौंहपल रहलन। रास्ता में लोग तनिकी चिहा-चिहा के ताके, मेजर साहेब ढेर दिन पर अइसे चुस्त-चउकस लउकल बाड़न, आजु केने के चान कवनी ओर उगल बा? ई कहवाँ लपकल जात बाड़न?

बाकी मेजर साहब एह दयालपुरिया लंका नगरी में अउरी कहवाँ जइहें? मियाँ के दौड़ मसजिद तक। बूट कड़कड़ावत चौंहपि गइलन सबेरे-सबेरे अपना बिक्रम गुरुजी कहें।

'गुरू जी, मन करत बा कि आजु सीमा वाली लड़ाई में देश का आनवान आ शान पर कुरबान होखे वाला शहीदन का नाँव पर दिया जरा दीं। देबी-देवतन के पूजा-अर्चना त सगरे लोग करत बाड़न। का कहत बानी?' जगदीश अवते-आवत कहलन।

'उत्तमोत्तम विचार बा।', गुरूजी जबाब दीहलीं आ पीठ ठोक के कहलीं, 'वाह बेटा, भला एह शुद्ध भ्रष्टाचार का जुग में बिशुद्ध सरधा बस ओह परमपूजनीय वीरन के तू याद त कइलऽ!'

तीन-चार घंटा तक जगदीश अपना विक्रम गुरु जी केहें बइठल रहि गइलन। चाय पर चाय माँग-माँग के सुरुकत गइलन। खूब पहिले नियर बतकही चलल। ढेर दिन से जगदीश के हालत देखिके गुरुजी के मुरझाइल मन ओह घरी हरिण्ड हो गइल। ओह दिन पछिला पारिवारिक कलह, बटवारा आ मोक-दिमा वगैरह दुखदायी प्रसंगन के चर्चे ना उठलि। ठीके बा, बीती ताहि बिसारि दे।

'त ई हुतात्मन का प्रति होखेवाला श्रद्धा-दीप-दानोत्सव कहवाँ सम्पन्न होई? तोहरा दुआर पर कि हमरी इयाँ?' बिक्रम पूछलन।

'कहीं ना, अन्हार होत-होत बस हरिशंकरी धर्मशाला पर। अपना दुआर पर से ऊठि के तनिकी श्रीमान जी पछिम ओर बढ़ि आइबि आ हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अपनीं केहें से तनिकी पूरब ओर मार्च करत चलि आइबि।' जगदीश का से एकदम अहगरल शब्दन के फूल झरि परलन स।

'अरे, इहाँ ई पूरा तइयारी बा!' धर्मशाला पूर चोंहपि के मास्टर साहेब का मुँह से निकलि गइल। रंग-बिरंग का झंडिन का गोबर से लीपि-पोति के एगो लमहर-चाकर पवित्र पूजा-स्थल बनावल आटा से भारतवर्ष के नकसा बना के ओकरा भीतर 'जयहिंद' लिखल ऊपर लाल-पीअर रँगल अच्छत से लिखल बा, 'दीपदान याद में का!'

रोमांचक तइयारी ई लउकलि कि देस का सीमा वाली आ लकीरन पर पूरा नकशा के घेरत, घीव भरल आ बाती सहेजल दीआ रासल गइल रहलन स आ एगो हाथ में दियासलाई आ एगो में फूल थरिया लिहले जगदीश सादा धोती-कुर्त्ता में उघारे गोड़े, कपार पर धइले केहू के प्रतीक्षा करत नियर ठाढ़ रहे। सायद अपना मास्टर साहेब बाट जोहल जात रहे।

'जयहिन्द' का नीचे पाँच गो दीआ जब विक्रम मास्टर साहेब प्रज्वलित कइ के समहुत कइ दीहलन त भारत माता का जय-जयकार का बीचे सलाई जगदीश का हाथ में चोंहपि गइलि। एगो बड़हर मोमबत्ती जरा ठीक काश्मीर का नकसा का पास वाली दीआ पर लक्ष्य कइ के बोललन—

'ई पहिला जाज्वल्यमान दीआ सीमा-युद्ध का सबसे अधिक गौरव त्यागी साहसमूर्ति आ देश-प्रेम में पागल ओह वीर लोगन का नांव पर जेकर नांव तक केहू जनबे ना कइल। हे अज्ञात वीर लोग! तोहन के शत-शत प्रणाम!'

दीआ बरि गइल। जगदीश फेरु बोललें—'एह अज्ञात शहीद एगो त उहे वीर रहे जे सीमा-युद्ध का चलत में सरगोधा के राजार पर अपना के झोंकि देले रहे। एगो परान आ एगो विमान के बलि अनगिनत परानन के रक्षा भइल रहे। मौत का संगे खेलवाड़ कइके ढ के शान के रक्षा कइलसि। तब जनाइल रहे कि बीरताई अपना पूरा पर चोंहपि गइलि रहे। तमाम कायदा-कानून झरि गइल रहे बा बन्धन टूटि टाटि के भुरकुस हो गइल रहे। नतीजा भइल कि आग में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुद झोंकि के ऊ बीर बुता गइल। बाकी ओकर अज्ञात नाँव केतना चमकि इल। ओकरा याद के दीपक का कबो बुता सकेला ? नाहीं, ऊ तब तक बरत रही जब तक आसमान में सूरज-चाँद रही।··· अब अगिला दीआ सूबेदार मेजर सौदागर सिंह का नाँव पर··· !' 'के रहे ऊ मेजर सौदागर सिंह ?' जगदीश हाथ में जरत मोमबत्ती थम्हले चारू ओर बटुराइल लोगन का ओर देखिके सवाल कइलन। सवाल कइ के छन भर चुप हो गइलन। ओने तमासा देखइसन देखे वाला लोगो चुप बा।

के का बोलो ! 'सरकारे बताईं। हमन का आन्हर गाय नियर गँवई भनई का जानत बानी ?' बोललन नूरा मियाँ।

अब सभकर नजर नूरा मियाँ का ओर उठि गइलि। विक्रम मास्टर साहेब देखलन, नूरा मियाँ का बगल में मेजर साहेब के अध्यापक बेटा प्रशान्त कुछ दृष्टि के ठाढ़ बा आ मुस्किया रहल बा। डर लागल, ई भँड़ुआ अध्यापक कुछ अटपट बोलि के बातावरण का गभीरता के हडभंड मति कइ देउ। बाकी ना, पुरनका मुखिया बासुदेव पाण्डेय ओकरा निगिचे रहलन। ऊ उनकरा सोझा अइसन ढिठाई ना करे। फेरु तुलसी के बड़का लइका दिगविजयो उहवें रहे। ओहू से प्रशान्त तनिक सहमेला। उमिर में ओकरा से ऊ दू साल जेठ ह। प्रशान्त हँसोड़ ह त का भइल, अध्यायक वाला शिष्टाचार के ओकरा भीतर कमी नइखे।

'त सुनीं सभे।' जगदीश कहे सुरू कइलन आ अगिला दीआ का ओर तनिक बढ़ि गइलन, 'ई उहे सूरमा ह जे सीमायुद्ध में दुश्मन के छक्का छोड़ा दीहलसि आ काश्मीर का मोर्चा पर जे बीरगति के प्राप्त भइल। छम्ब क्षेत्र का एगो बिस्फोट में ई मेजर सौदागर सिंह शहीद भइलन। घर के लोग तार देले रहे कि महतारी बेराम बाड़ी, हालदे चलि आवऽ। ओने से ऊ जबाब देले रहलन, एह घरी एह शरीर के जनम देबे वाली महतारी के बेरामी में सेवा करे के मोका नइखे। इहाँ हमरा नियर करोड़-करोड़ के जननी भारतमाता खतरा में बेजार-अजार परि गइल बाड़ी। ···अइसन ऊ सूरमा रहे। जरि जा दीआ, जरत रहऽ, वीरता के ज्योति फइलति रहे !··· गुरुजी, अब आगे सरपट दिया जरत चलि जाई, चुपचाप।'

'अरे नाहीं जगदीश', बिक्रम गुरूजी कहलन, 'इचिकी संक्षेप में सभकर परिचयो होत चली। जनता जानो कि के का रहे !'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'हुकुम सिर आँखिन पर गुरूजी ·· त, देखीं ई हम अगिला तेवरी लेसलीं अमर शहीद गुरुबख्श सिंह का नांव पर। ई नांव और मर्द के ह जे अपना विमान का गति के मौत का गति से आगे निकाल के घटना ह कि ऊ शूर उड़ाका दुस्मन का क्षेत्र पर कारवाई करत रहे। बीच ऊ ओह तरफ का गोली से घाही भइल। तब मौत आइलि आ ऊ के रोकि दीहलसि, हाल्ट! हमरा के अपना अड्डा पर विमान उतारि फेरु का भइल? विमान बाँचि गइल। अड्डा पर उतरि गइल। एह से ऊ उतरल आ दूसरा ओरि से ओही घरी सरग से छूत लोग आपन लेले चौंहपले।

जगदीश अपना धुन में दिया वारत आ बोलत चलि गइल.. दिया बुलन्दशहर के लेफ्टीनेन्ट सुखबीर सिंह का नाँवपर जे अकेले एकतीस दुस्मन सैनिकन के मौत का घाटे उतरला के बाद अपने का गोदी में सुति गइल। दुस्मन का मुल्क में ओकरा नांव पर दहसत जइसे छा गइलि रहे। एह शहादत के समाचार जब ओकरा के मिलल त ऊ सीना तानि के कहलसि, देस का जीअत-जागत रहे अइसन लाखन करोड़न बेटवन के मरे के परी।

...ई दीआ महावीर चक्र विजेता लेफ्टीनेन्ट कर्नल खन्ना का बाह रे वीर, बहुत अधिक कड़ेर, दमदार प्रतिरोध आ बाधा का क्षेत्र का मोर्चा पर दुश्मन का राजा चौकी पर आपन झंडा त गाड़ ...कइसन हिम्मत के चाँड़ रहे ऊ सू मा! ओह चौकी पर दुस्मन का पठान सैनिकन के हू-हू गो प्लाटून दृढ़ता पूर्वक मोर्चा सम्हरले रहे, भारी-भारी मसीनगन भिड़ल रहली स, चौगिर्दा बारूदी सुरंग बिछ बाकी भइल का? २ सितम्बर के जोर लगावल अकारथ भइल त कर ना, ८ सितम्बर के ऊ लेलकारत भइले—

...बढ़ि चलू जवान, बढ़ि चलू। तू लोग आग से, अंगार से बढ़ ज़ा। जबर जोखिम में ढुकि-पइठि के मउअति से लोहा ले ल जा। तोप-मोर्टार आग उगिलत बा त उगिले द। आपन सँगवई जूझि रहल बाड़न स, परवाह मति करऽ। बस, आगे बढ़ि चलऽ।...अच्छा, हथगोला लेके हम खुद आगे बढ़ि रहल बानी। हमला...हमला...हथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...बायीं बाँह में गोली आ दहिनी में हथगोला के टुकड़ा लागल। खून धार बहि चललि। कवनो चिन्ता ना, एगो धक्का अउरी...आ चौकी फतह हो गइलि, जै भारत !

'एह फतह खातिर जवानन के चाबस-चाबस करत ऊ अमर बीर शहीद बदिन खातिर सूति गइल !

'अरे का हो मेजर साहब', मुखिया बासुदेव पाण्डेय आगे आके बोललें आ जगदीश के हाथ रुक गइल। सभकर कान ठाढ़ हो गइल। अब का कहीं मुखिया। एही बीच मुखिया कहत गइलन, 'अपना जिला के परमवीर चक्र विजेता शहीद अब्दुल हमीद का नाँव पर का दीआ ना जरी ?'

'काहे ना जरी ? जरूर उनकरा नाँव पर आदर-सनमान का संगे दीआ जराई। बाकी, पाँड़ेबाबा, अब्दुल हमीद के अपना गाजीपुर के काहें कहिं के बोट करत बानी ? पूरा देश के सिर ऊँचा करेवाला आ सभका मुँहे चन्नन लगावे वाला ऊ वीर अब सगरे मुल्क के आपन बा।' जगदीश बोललन आ झुकलन एगो दीआ का ऊपर।

'ठहरि जा जगदीश, मुखिया कहलन 'एह दिया के अब तनी हमरा के जरावे द।'

अकेले जीप लेके दुश्मन के अजेय कहाये वाला मेड इन अमेरिका पैटन टैंक के हथगोला से मारि के धज्जी-धज्जी उड़ा के भुरकुस कइ देवे वाला हमीद का नाँव पर दीआ लहकि उठल त लोग एक बार जोरदार जयजयकार कइलन।

'अरे जगदीश,' बिक्रम मास्टर साहेब जी आगा बढ़ि के कहलन, 'एगो दीआ का अपना ओह खखनुआ मितवा जीप बाबू का नाँव पर ना बारि देब ? जरूर बारि द, सुनलीं जे उहो कतहीं शहीद हो गइल !'

'कवन जीप बाबू ?' जगदीश चिहुँकि गइलन।

'आरे ऊहे जवन एक बेरि तोहरा छावनी में भगोड़ा बनि के आइल रहे आ खूब नौटंकिया खखन कइले रहे आ तोहके सगरी रात छकवले रहे ! कबो कवनो नाटक में जवन जीप बनल रहे आ तू रेक्शा के पाठ कइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रहलऽ ! होस परल ? तबे से तू ओकरा के जीप बाबू कहे लगलऽ आ ओ के रिक्शावाला पुकारे लागल !'

'बात याद आइलि गुरुवर !' जगदीश के उत्साह अचके में टूट परि गइल । चेहरो उतरि गइल । बहुत लेथरइला नियर मन से बोलल, बेवक्त याद अवलीं गुरुजी ! ऊ ससुरा जब याद आवेला जनाला कि काढ़ि ली ।... जिगरी दोस्त रहे । अरबी-फारसी दूनों भाषा के आ कार रहे । बेचारा बंगला देश का लड़ाई में बहादुरी का संगे संगे आ भारत माता के जय-जयकार करत शहीद हो गइल । ओह, मउअति का अंतिम घड़ी में हम चोंहपि गइल रहलीं । ... बोलल रहे मति समुझिहे मितवा कि मरि के कतहीं चलि जात बानी । हम बराबर संगे रहबि !' कहत-कहत जगदीश का आँखि से लोर चुए लागल । रूकि के फेरु बोललन—

'आखिरी समय में ओकरा कपार पर ना जाने कहाँ से एगो हो गइल रहे । ऊ अक्सर कहल करे, दोस्त भारत माता के खो चाहीं ।...भारत माता के खो...ज...भा...र...त मा...!' आहत टूट में बोलत-बोलत जगदीश लड़खड़ा गइलन । जरत मोमबत्ती हाथ से फेंका गइलि । ई का भइल ?

दिआ बारे वाला कार्यक्रम बन्द हो गइल । बिक्रम मास्टर जगदीश के कइसहूँ उठावत-सम्हारत भीड़ से बहरिया के एगो कोना सुतवलन । सगरे देंहि पसेना में बूड़ि गइल रहे । मुखिया पखी मंत्र देवे लगलन । ओही बीच मेजर साहब उठि के बइठि गइलन आ कहे लगलन—

'...बनौजद्ह सद व चहल व हफ्त ईसवी ग्राम वासिनी भारत जवाहर लाल नेहरू ब देहली बबुर्द ।... बनौ जद्ह सद् व शस्त आँजा ग्रिख्ता ब गाँव बेयामद... ।'

अरे, मेजर साहेब के ई का हो गइल ? ई कइसन आवाज भाषा में के बोलत बा ?

(शेष अंगिला अंकन में)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लघु संस्मरण

शिव प्रसाद द्विवेदी

—डॉ० शिव प्रसाद सिंह

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी क मातृभाषा भोजपुरी रहल, जइसे हमरो रहल। बाकिर ऊ बहुत नीमन भोजपुरी बोलत रहलन। उनकरे भाखा में एको सबद उधार ना रहत रहे। एक दिन ऊ हमरा से हिन्दी विभगवे में कहलन—ए शिव प्रसाद तोहरे नाम क एकठे नागरी प्रचारिणी पत्रिका आइल बिया। सँझिया क आइ के ले जइहऽ।"

"जी आ जाइब।"

साँझी क हम उनका बँगला पर पहुँचली त आम क पेड़वा तले ऊ एगो बँसखट पर बइसल रहलेन।

हमरा कं देख के ऊ अपने मकनवाँ के उपरा वाला बरामदा में ठाढ़ अपन जेठरा बेटवा से कहलन—"ए बबुआ! तनी हमरा कमरवा में जाइके ले त आवऽ एगो नागरी प्रचारिणी पत्रिका बा इनके नाम क।"

बबुआ ऊ पत्रिका ले अइलन। ओपर पता लिखल रहे—शिव प्रसाद द्विवेदी, C/O डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी। बबुआ हमरा नाम के आगे लिखल 'द्विवेदी' के लाल सिहाई से काट देले रहलन।

पंडित जी देख लेहलन त कहलन "का हो बबुआ! एकरा पर हरताल तू फेरला हऽऽ?"

"हाँ बाबूजी!"—बबुआ कहलन—'गलत न रहुए!'

"ना, गलत द्विवेदी तोहरा नाम वाला हौ। असल द्विवेदी इहे हवैं। तू देह के बूंद से जनमला, ई मन से। तू एको वेद पढ़ले हउआ?"

बबुआ सन्न खड़े के खड़ा रह गइलन।

पंडित जी से हम हाथ जोरि के कहली—"जाये दीं, हो जाला अइसन।

☐ सुधर्मा, १३ गुरुधाम कॉलोनी, वाराणसी—१०

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
के सदस्यता शुल्क
१५ रुपया सालाना / २५१ रुपया आजीवन
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
के सालाना शुल्क
५५ रुपया / सम्मेलन के सदस्य खातिर ४५ रुपया
आजीवन शुल्क—७५० रु०
सम्मेलन के सदस्य बनीं / पत्रिका के ग्राहक बनीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ललित निबन्ध

चोर जोग

—श्री राम प्रवेश

अपने-अपने चोर को सब कोऊ डारत मार ।
मेरा चोर मुझे मिले तो सब कुछ डारूँ वार ।।

एह बाति के गहराई आ ऊँचाई नपले ना नपाई। चोर त चोरी के बादे न कहल जाई। त कहे के मतलब ई बा कि चोर चोरी कइके गइल बा। अइसन चोर बा कि ओकर पता बतावे वाला के इनाम—दिहल जा सके ला, ऊ अनेरिहे पराइल फिरत बा। जवन ले गइल त लेई गइल बा, जवन छोड़ि गइल बा उहो ओकरा पर निछावर तेआरी बा। अइसन लागत बा कि चोर बड़ा रंगीला बा। चोरवले होखे चाहे ना बाकिर सुख चैन जरूर चोरा ले गइल बा।

हमके ई ना जनाला कि चोर से अदिमी घबराला काहें? चोर भकोऊ ह कि ओकर नाव सुनते परान सूख जाई? अदिमी के जिनिगी ना होखे एकरा खातिर चोर का बड़ा तपसवा करे के पड़ेला। अपरिग्रह क बहुत महिमा गावल बाटे। संग्रह से अपरिग्रह तकके जतना वाला सबसे आसान साधन चोर हउवे। चोर से बड़ पदवी दीहल बा बाकिर जेतना कारीगरी चोर के काम में बा ओतना डाकू के काम में एही से केतने डाकू साधु हो गइलन सन। बाल्मीकी जी एकरा चीज एगो नमूना बाड़न। कारन इहे ह कि डकैती क कला पछ कमजोर होई।

डा० आंजनेय जी एक बेर एगो अइसना चोर क बरनन कइल जवन बड़ मनई आ चोर दूनो एकसगही ह। अइसन बड़की साधु सकेला। स्व० वेधडक बनारसी के एगो कविता ए नमूना के रहल—

"सुन्दर और असुन्दर दोनों साथ साथ।
अप्रैल नवम्बर साथ साथ।
कायर और कमाण्डर दोनों साथ साथ।।"

फिर त कहल जा सकेला कि जब कविता अइसन हो सकेला त हो सकेला। जहाँ तक साहित्य के सवाल बा—साहित्य में डंका लोग चोरी करेलन, जबकि साहित्य के सम्बन्ध हित से ह—एगे ना सकत!

आंजनेय जी वाला चोर चोरी के दुनिया में साधक से आगे हो गइल बा। मतलब चोरी ओकरा खातिर सहज हो गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान गीता में बतवले बाड़न कि करम जोगी ओके कहल जाला जे सब काम कइके भी जइसे कुछु ना करत होय। चोरी कइके भी ना कइला जइसन जेकरा में कला वा ओके चोर जोगी कहल जा सकेला। अइसन सिद्ध के केहू चोरी करत देखि भी लेई त ऊ खुदे आपन मुँह दूसरी ओर कइ लेई। टोकि के हाला करे वाला कवनो जंगली अदिमी हो सकेला। बाकिर लइकन पर ई नियम लागू ना हो सकत। लइका त लइका...सोझ — अबोध। त चोरी के ममिला में जेकर स्थिर बुद्धि हो गइल बा.....मतलब गीता के हिसाब से "स्थितप्रज्ञ" हो गइल वा ऊ लइकन के बिचिलवले ना बिचिली। अपना असफलता पर खीझि के ऊ माल वापिस भले कइ देई। जइसे धियान जोग में काम आ क्रोध के जीते के परेला, ओइसहीं चोर जोग में लाज हया के सरवत बनाइ के पी गइल जरूरी होला। बाकिर ई ऊ चोर ना ह जवना पर सब कुछ निछावर कइ दिहल जाउ।

सफल चोर ऊ ह जे माल ले के चल जाउ। ओकरा बादे माल वाला के पता चले, फिर त अटकल पांचे डेढ़ सौ के हिसाब से चोर के नामजद कइल जाला। सुने में आवे ला कि थाना-पुलिस के कुल्हि पता रखेला। रहत होई, बाकिर आजु के जमाना में थाना-पुलिस भी चोरन के सलामी देवे लागल बा। पता ना ई बात केतना साँच बा। एगो मुहाविरा देहातन में कहल जाला कि 'खेत खाला गदहा, मारल जाला जोलहा'। जोलहा एगो छोट किसिम के पखेरू होला। ऊ खेतवे में रहे ला। सब जाने ला कि ऊ खेत ना खाला, तबो बदनाम ऊहे होला। बाकिर तुलसी बाबा कहत बांड़न कि 'स्वामी सर्वज्ञ सों चले न चोरी चार की।' मतलब ई कि चोरी छिपल ना रहि सकत। कुछ नेता लोग जमाना के कोसे में चोरी आ भ्रष्टाचार के संगले लपेट देहलन। एक समय रहे जब साइकिल के ट्यूब टायर भ्रष्ट होखे। आगे चल के ओकर आचार बन गइल — भ्रष्टाचार। आ जब ओकर जवानी आइल त ऊहे शिष्टाचार हो गइल वा। चोरी के अइसन विकास ना भइल जेकरा पर सब कुछ वारल जाय। अइसन एग ही चोर भइल। ओकर नाव त माखनचोर धरा गइल, बाकिर केहू ओकरा पर चोरी के तोहमत ना लगावल, बलुक बराबर पलक-पंवड़ा बिछा के ओकर राह जोहत रहल कि हमरो घर में आइ के चोरावत।

ओ घरी ऊ चौर गाय-गोरू चरावे के काम करत रहे। गुवाल-बालन के संगे खेले कूदे। बाद में ऊ चकरवर्ती राजा हो गइल। राजा महराजा अमीर-उमरा ओकरा दरबार में बइठे लगलन। त सचहूँ के ओकरा पर मणि चोरावे के तोहमद लागि गइल और सफाई देवे के पड़ गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कबीरदास जी ठगवा से पार ना पवलन त कहि दिहलन—कवनो ठ
नगरिया लूटल रे।' पता ना दिन में लूटलस कि राति में ? ठग खातिर राति
बराबरे हीला। बाकिर चोर के कारबार रतिये में चलेला। अमावस के
ओकर खातिर कामधेनु होले आ चांदनी रात जहर के समान। भीर भ
पर ऊ कतहीं के ना रहि जाला। गमछा-चदरा चोरावे वाला चोरन के क
कई गो चोर हमनी के भीतरे रहेलन स। ऊन्हन खातिर तुलसी जी
बाड़न कि भोर होते भाग जालन सन—'भागे मद मान चोर.....
ना केतना तरह के चोर बाड़न सन।

आशुतोष अस्पताल में भर्ती रहलन स्पेशल वार्ड में। एगो अलगे क
मिलल रहे। तिमारदारों के एगो बेड अलगे रहे। चोरवा जानत रहे कि
कमरा के एगो पल्ला बन्द हीला, एगो ना। ओकर सिटकिनी टूट गइल
ई माजरा हमनी का ना बुझाइल रहे। एक दिन रात में चोरवा आ ग
तिमारदार हमही रहलीं। हमरा बेड के पास खड़ा होइके अन्दाज ल
रहे कि माल कहाँ होई..... जेब में, टेंट में, तकिया के नीचे आदि। ते
टांगल कुर्ता उतार लेले रहे। आपन चप्पल बहरे बरामदा में निकाल के
रहे कि आवाज ना होखे। अचके में आशुतोष के आँख खुल गइल। ओ
हमार केहू जानल-सूनल अइल बा भेंट मुलाकात करे। ओके बइठे के
जात रहलन कि ऊ तेजी से भागल। उनकर आपरेशन भइल रहे, एगो
नासकत रहलन। सुबहा भइल त हमके आवाज दिहलन। अचकचा
कहलन—जनाता चोर आइल रहल ह। हम धीर फूर से बतवलीं कि
इहाँ आइल रहल हा त अभागे रहल ह। तू सूतऽ।

हम आँखि खोल के नजर दउड़वलीं, त कुर्त्ता ना रहे। कवनो बट
कुल्हि २ रुपया ३० पइसा ओहमा रहल ह। बहरा निकललीं त बरमदा
जोड़ी चप्पल रहल। आ बरमदा के बाहर हमार कुर्त्ता फेंकल रहल। ओ
रुपया तीस पइसा महजूद रहल। बुझाइ गइल कि चोर अभागा भले रह
ना समझ ना रहल ह। नुकसान ओकरे भइल बा। जाड़ि में चप्पल
गइल। पुरानों बात एह मंहगी में दस-पनरह रुपया के होई। राउल
डाक्टर शुक्ला जी अइलन। अहगरि के पूछलन.....घाटा में के रहल,
कि चोरवा ? हम कहलीं कि ऊ भेटा जाइत त भेंट करावे वाला
आभार मनतीं। ओकरा ना मिलला से बड़ी बेचैनी बा। ठण्ढ से ओकर
ठिठुरत होई। एसे हम ओकरा के जी—जान लगा के खोजत बानी..
पर सब कुछ निछावर करे खातिर नाहीं, ओकर छोड़ल चप्पल
लौटावे खातिर।

गाँधी भवन, लखनऊ-२२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साक्षात्कार

'भोजपुरी आगे बढ़ी': डॉ० बाहरी

[सुख्यात कोशकार डॉ० हरदेव बाहरी से साक्षात्कार]

—पाण्डेय आशुतोष

भारत के सर्वोच्च कोशकार, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ० हरदेव बाहरी एकमात्र अइसन गैर-भोजपुरी-भाषी विद्वान बाड़े जे अस्सी बरिस के उमिर में भी भोजपुरी के शिखर पर देखे के लालसा लिहले जी रहल बाड़े। उनकर छात्र त हम ना रहलीं, बाकिर परिचय रहल बा।

सन् १९९४ के १४ सितम्बर। हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग का ओर से आयोजित हिन्दी दिवस समारोह में डॉ० हरदेव बाहरी के देखे के, पाण्डेय कपिल जी कहले कि इनकर लिखल 'भोजपुरी शब्द-सम्पदा' कहीं मिलत नइखे; बनी इनका से मालूम त करीं कि कहाँ मिली। हम पुछलीं त ऊ अपना घरे गइला पर अपना निजी पुस्तकालय से ओह किताब के दू प्रति हमनी दूनू आदमी खातिर भेज दिहले।

अगिला साल, हम फेर इलाहाबाद गइलीं त १३ सितम्बर १९९५ के दरभंगा कॉलोनी स्थित उनका आवास पर जाके भोजपुरी भाषा का बारे में उनकर साक्षात्कार (इण्टरव्यू) कइलीं। ओह घड़ी ऊ अपना ८१वाँ शब्दकोश पर काम करत रहलें। उनका भोजपुरी-भक्ति का आगे हम अपना के बौना महसूस करे लगलीं।

साक्षात्कार के माध्यम हिन्दी रहे—सवाल हिन्दी में, जवाब हिन्दी में। भोजपुरी के पाठक लोग खातिर हम इहाँ ओह साक्षात्कार के भोजपुरी में प्रस्तुत करत बानी।

सवाल—भोजपुरी भाषा के सम्पर्क में रउआ कइसे अइलीं ?

जवाब - प्रयाग के रहनिहार हमार मित्र डॉ० उदय नारायण तिवारी भोजपुरी पर आपन पहिला शोध-कार्य कलकत्ता विश्वविद्यालय से कइले। ओह घड़ी अंग्रेजी में ही शोध-ग्रंथ प्रस्तुत करेके परम्परा रहे। बाद में उनकर शोध-ग्रंथ हिन्दी में भी आइल। हमरा पास दूनू शोध-ग्रंथ बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

डॉ० तिवारी हमार अन्तरंग रहले। ऊ बराबर प्रेरित करत रहे हम भोजपुरी भाषा के कोश तैयार करेके काम शुरू करीं, ऊ हमरा के करिहें। हम एह पर सोचलीं आ उनकर भाव समझलीं। फेर, हम काम कर देलीं। 'भोजपुरी शब्द-सम्पदा' के बाद दूगो आउर कोश तैयार कइलीं 'अवधी शब्द-सम्पदा' आ 'छत्तीसगढ़ी शब्द-सम्पदा'।

हमार विचार रहे कि आउर बोलियन के भी कोश तैयार करीं, त समय नइखे मिल पावत। भोजपुरी हमरा सर्वाधिक मीठ भाषा लागेला।

सवाल—भारतीय संविधान में भाषा सभन के जे सूची बा, ओकर भोजपुरी के नाम नइखे। जे भी भोजपुरी माटी के सपूत भइले, जइसे— प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू, ऊ लोग भोजपुरी के भाषा के दर्जा के खातिर कवनो संघर्ष ना कइल; अइसन काहे? जयप्रकाश जी भी चुप रहे।

जवाब—देखीं, राजेन्द्र बाबू त साधु पुरुष रहले। उनकर भोजपुरी प्रेम अद्वितीय रहे। ऊ अपना से मिले वाला लोग से, अगर ऊ भोजपुरी के होत रहे त, भोजपुरिए में बतियावत रहले। ई बात अपना में गौरव के बा। ओकरे अपना मतारी के बोली में बतियावे में गौरव के अनुभव होला जे अल्प बुद्धि के आदमी होला, बाकिर राजेन्द्र बाबू त बहुमुखी भइलो पर सहज पुरुष रहले। आपन विद्वत्ता प्रकट करे खातिर भा कुछ के प्रभावित करे खातिर हम चाहे जवना भाषा में बातचीत करीं, त भाषा त राउर उहे ह जे रउआ अपना परिवार में बोलीले।

राष्ट्रपति के ई काम ना ह कि कवनो भाषा के संविधान में स्थान दियावे खातिर नारेबाजी करे भा हल्ला मचावे। ई काम हमार-राउर ह।

सवाल—कवनो भाषा, आ खास करके भोजपुरी भाषा के दर्जा के खातिर आवश्यक तत्वन के बतलावे के कृपा करीं।

जवाब—जब कवनो बोली के बोले वाला लोगन के संख्या लाख में होखे, आ ओकर व्याकरण होखे, शब्दकोश होखे, आ ओकर साहित्यिक इतिहास होखे, त ओकरा के भाषा के दर्जा ना दिहल जाइ नइखे। भोजपुरी के विकास पिछला बरिसन में एतना भइल बा, कि बीस बरिस पहिलहीं एकरा मान्यता मिल जाये के चाहत रहे। हम एकरा के भाषा के दर्जा देवे में कहीं गतिरोध देखाई नइखे पड़त। फेर के त संसार-भर में लोग बोलेला। मॉरीशस के त ई राष्ट्रभाषा ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवाल—भोजपुरी के ऊँचाई के देखत रउआ एकरा शिखर-सम्मान पावे के सवाल पर कुछ सुझाव देब ?

जवाब हम कहलीं नू कि ई भोजपुरी भाषा संसार-भर में बोलल जाला, आ बोले वाला के सख्या शायद पन्द्रह करोड़ से ऊपरे होई, कम ना। अब देखीं, मॉरीशस, सूरीनाम, वृटिश गुयाना, फिजी, ट्रिनीडाड में त बोलले जाला, बलुक ई कहीं कि ओह देशन के राष्ट्रभाषा भा दोसरकी भाषा ह त गलत ना होई; आ फेर अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, अफ्रीका, जर्मनी आ डेनमार्क में भी भोजपुरी मूल के लोग बा, जे अबहियों घर में आपन भाषा बोलेला, समझेला। जे यायावर भा जिप्सी बाड़न, उनको भाषा में भोजपुरी के झलक मिलेला। अब समय आ गइल बा कि अखबारन आ संस्थन का माध्यम से आपन आवाज बुलन्द कइल जाय।

सवाल—देश के चार गो विश्वविद्यालयन में भोजपुरी के पढ़ाई अब होखे लागल बा, बाकिर काशी विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ, गोरखपुर विश्वविद्यालय आ पूर्वांचल विश्वविद्यालय में एकरा मान्यता ना मिलल। का उपाय बा ?

जवाब—जे एह विश्वविद्यालय में छात्र भा प्राध्यापक बा लोग, ओह लोगन का एह मुद्दा के उठावे के होई। जे कुछ भी भोजपुरी का साथे हो रहल बा ऊ राजनीति से प्रेरित बा। लड़े के होई। संघर्ष के बिना त भोजपुरी पिछड़ गइल।

सवाल—हमनी के सबसे बड़ दुर्भाग्य ई ह कि जे नेता लोग दिल्ली, लखनऊ भा पटना में अबहीं बइठल बा, ऊ लोग जब चुनाव आवेला त रो रो के भोजपुरिए में भीख मांगेला, वादा करेला, बाकिर जब लोग चुन लिहल जाला त सब कुछ भुला जाला। कम-से-कम बीस गो सांसद त अइसन बड़ले बाड़े जे भोजपुरी के कारण केन्द्र में बाड़े। ऊ लोग फेर हमनी का लगे कबन मुंह लेके अइहें ?

जवाब—आज से करीब तीस-पैंतीस बरिस पहिले राहुल जी पटना में भोजपुरी के अधिवेशन करवले, त राजनीति के धुरंधर लोग के कान खड़ा हो गइल। नेता लोग का बुझाइल जे राहुल जी हमार कुर्सी छीन लेबे के योजना के तहत भोजपुरी के झंडा खड़ा कर रहल बाड़े। ऊ लोग अखबारन में उल्टा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सीधा बयान दिह[illegible] बाकिर राहुल जी के का ? ऊ त महापण्डित [illegible] उनका के बदनाम करे के ई चाल रहे। ओह अधिवेशन में हमहूँ [illegible] भइल रहीं। आउर भी विद्वान लोग काशी, प्रयाग आ दूर-दूर से आइल[illegible]

जब भोजपुरिये सांसद भा विधायक लोग चुप्पी लगा जाई, त[illegible] होई ? देखीं, कोंकणी आ डोंगरी भाषा, जेकरा के बोलेवाला एको[illegible] नइखन, राष्ट्रीय भाषा के दर्जा पा गइल, बाकिर भोजपुरी 'बेचारी' [illegible] मारल-मारल फिर रहल बा। डोंगरी वाला हल्ला मचावल। डॉ० कर्ण[illegible] जइसन प्रवक्ता ओकरा मिलल, ऊ स्थान पा गइल।

सवाल -- हमरा मन में सबसे जादे क्षोभ ओह साहित्यकारन पर [illegible] जे भोजपुरिया हवन आ भोजपुरी भाषा के प्रति उदासीन बाड़न। [illegible] विद्यानिवास मिश्र, रामदरस मिश्र, केदारनाथ सिंह, शिव प्रसाद सिंह [illegible] से हमनी निराश हो चुकल बानी। आज ले ई लोग एकरा समर्थन में [illegible] दू शब्द कुछ कहल, ना कहीं लिखल, ना कवनो रचना कइल। जवना [illegible] के दूध पीयल ओकरे मुँह पर थूक दीहल.....

जवाब—(हमरा के आवेश में आइल देख के डॉ० बाहरी बीचे में [illegible] के रोकत कहले) देखीं, हरेक के चाह होला कि ख्याति पाई आ [illegible] दायरा का ओर देखेला। ऊ लोग हिन्दी के बड़ घेरा देखके ओही [illegible] काम करेला। यश के, नाम के स्वार्थ कई लोगन के पहिलहूँ गूंग बनवले [illegible] ई नया बात नइखे। दोसर-दोसर भाषा अपना क्षेत्र में घिरल बा, [illegible] भोजपुरी विश्व-भर में फइलल बा, एह बात के ऊ लोग नइखे सोचत।

भाषा के पहिला गुण ई ह कि ऊ अपना क्षेत्र से बाहर फइल [illegible] आ ई गुण भोजपुरी में विद्यमान बा। साहित्यिक परम्परा बनल [illegible] कविता त आम-फहम बा। सब भाषा के आदि काव्य बा। छिटफुट [illegible] आ नाटक सभन के परम्परा जदि जीवन्त रहे, त बोली भी भाग [illegible] जाला। राजनीतिक मान्यता बहुते अनिवार्य बा। नाटककार-उपन्या[illegible] लोगन का भोजपुरी में लिखे के चाहीं। प्रकाशक त खाली लाभ चाहे[illegible] ऊ ओइसने चीज छापी जेकरा में लाभ होखे। ओह लोगन का चाहे[illegible] आपन लाभ ना देख के हिन्दी के बाद कुछ भोजपुरियो के किताब छापल[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवाल : डाक्टर साहेब, राजध. दिल्ली न बतीस हजार लोग भोजपुरी बोले वाला बा। बीस गो स. सन बाड़े जिनकर मतारी भोजपुरी बाड़ी, बाकिर कृतघ्न लोग से का कहल जाय ? जवना थरिया में खाला लोग ओही में छेद करके उठेला !

जवाब—रघुआ के० के० तिवारी भा शंकर दयाल सिंह से चर्चा काहे नइखीं करत ? एके ध्येय अवहीं राखीं—सरकार से मान्यता। फेर त भोजपुरी के काम होखहीं लागी। बाद में बिदेशियो लोग प्रभावित होई। काम के एकाग्रता भइला से योग हो जाला। योग से सिद्धि जरूरे मिलेला। एक काम कइला से वृत्ति योगमय हो जाला। अर्जुन के एक निशाना रहे—चिरई के आंख।

सवाल—भोजपुरी के भविष्य का बारे में कुछ बताईं। एकरा सिपाहियन के कवनो गाइड लाइन दीं।

जवाब—हमार विश्वास बढ़ल बा। अबहीं भोजपुरी के पन्द्रह-बीस गो पत्रिका छपत बा। एगो या दूगो स्तरीय पत्रिका ही निकले आ ओकर प्रचार-प्रसार होखे। राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू भोजपुरी में बात कइल पसन्द करत रहले। एह बात से, हरेक भोजपुरिया नेता आ विद्वान सभन का सबक लेवे के चाहीं। काम त भोजपुरी में बहुत हो रहल बा, बाकिर कन्सेन्ट्रेटेड नइखे। रउरा सभे 'सरस्वती' के स्तर के पत्रिका त निकालिए सकत बानी, का सामर्थ्य बा। जोर लगाईं सभे। भोजपुरी आगे बढ़ी।

× × ×

अब हम देवप्रकाश 'दिव्य' का ओर इशारा कइलीं कि अब चलल जाय। अस्सी-पचासी बरिस के डॉ० बाहरी का साथे अब आउर बइठल उनका सज्जनता के दण्ड दिहल होखित। हमनी दूनू के सत्कार पहिलहीं हो चुकल रहे। काँफी त नेहायत बढ़िया रहे।

जब हमनी निकलनी त ऊ सड़क तकले छोड़े चल अइले। ओह घड़ी उन के अढ़ाई बजत रहे। फेर उनका के प्रणाम करके जब हम चले लगलीं हमरा मन में ओह पंजाबी-भाषी भोजपुरी-प्रेमी प्रज्ञा—पुरुष के प्रति श्रद्धा के ज्वार उमड़त रहे।

□ मलकौली, पश्चिमी चम्पारण-८४५१०५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दिवंगत भोजपुरी सेवी

वेदनन्दन जी के भोजपुरी साहित्य में

—रामनिहाल

वेदनन्दन जी (१९२५-९६) हिन्दी आ उर्दू के एगो श्रेष्ठ लेखक हाँ। उनकर लिखल हिन्दी में कविता, लेख आउर संस्मरण त ढेर अपना समय में चर्चा भी होखल बा। उहाँ का मानत रहलीं कि जवन लिखल जा रहल बा ओकर महत्व मौजूदा समय में त होखबे करी समय में भी कम ना होई। एही से ऊहाँ का जवन रचना लिखत रहीं के प्रकाशित करा देत रहीं। अइसे त उनकर कविता १९४० के पत्र-पत्रिकन में छपे लागल रहे। उनकर पहिलकी कविता लिखाइल रहे, जवन लहेरियासराय से छपेवाला 'बालक' के एगो प्रकाशित भइल रहे। हालांकि ऊ कविता पर बालकृष्ण शर्मा प्रभाव भी रहे, फिर भी कविता के मिजाज में थोड़ा अन्तर रहे। वेदनन्दन जी के आगे के विकास भी बराबर होत रहल।

अइसे त वेदनन्दन जी भोजपुरी में कबो-कबो लिखत रहीं भोजपुरी में ऊहाँ का छपल कवितन के आधार कहल जा सकेला। कि भोजपुरी में उहाँ का कम लिखले बानी आउर जवन लिखले भोजपुरी पत्रिकन के संपादक लोगन का निहोरा कइला प। बाकिर से इनकार ना कइल जा सके कि वेदनन्दन जी भोजपुरी पत्रिकन के आ लेखक लोगन के बराबर संपर्क में रहीं। स्व० रघुवंश नारा (स०, 'भोजपुरी'), स्व० जितराम पाठक (स०, 'भोजपुरी साहि भुवनेश्वर प्रसाद भानु (स०, 'गाँवघर'), स्व० रामनाथ पाठक प्रण 'हिलोर') स्व० पांडेय नर्मदेश्वर सहाय (स०, 'अंजोर'), पांडेय कवि ('उरेह' आ 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका') के संपर्क ऊहाँ का बराबर जेकरा से भोजपुरी में लिखे के उहाँ का बराबर प्रेरणा रहल। बहुते संभव बा कि वेदनन्दन जी के लिखल अधिकांश भोजपुरी कविता एह पत्रिकन में छितराइल होखे। अकेला के बटोरे के करे के बा। एह में संदेह नइखे कि एह काम में मदद भोजपुरी के संपादक लोगन से ही मिल सकेला। एह प्रसंग में हम भाई विद्यार्थी जी के चर्चा जरूर करे के चाहब, जिनका से हमरा 'अंजोर' दुगो अंकन में प्रकाशित वेदनन्दन जी के दूगो भोजपुरी गीत मिल हमरा ई बात के कहे में भी कवनो संकोच नइखे कि वेदनन्दन जी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेष्ठ कवि-गीतकार रहीं। बाकि ही क पत्रिकन में
ही चर्चा भी देखे में ना आइल। जनवरी ९६ में उहाँ क इन्तकाल हो गइल,
बाकिर भोजपुरी पत्रिकन के लेखक लोग उन स्मृति में ना त कवनो शोक
सभा आयोजित कइलस आउर ना कबनो भोजपुरी पत्रिका में श्रद्धांजलिए
व्यक्त कइल गइल। अइसे में कवनो भाषा के लेखक के सम्मान के कल्पना भी
कइसे कइल जा सकेला। एह बात के लेके जरूर संतोष बा कि पहिले पहिल
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के संपादक पांडेय कपिल जी वेदनन्दन जी
पर एगो लेख मंगलीं। एह लेख के लिखे का पाछे एही बात प्रमुख बा,
हालांकि ई हमार एगो जरूरी फर्ज भी बनत रहे। बहरहाल वेदनन्दन जी
के भोजपुरी कविता पर बातचीत कइल जाव। वेदनन्दन जी के एगो गीत के
शुरू के पंक्ति बा—

ई देखऽ तम के तमासा
अंगना में बइठ पगुराता।

एह कविता भा गीत में तम (अंधेरा) के मानवीकरण भइल बा। एह में जवन बिम्ब बा ऊ एकदम नया आ ताजा बा। एह से समझल जा सकेला कि वेदनन्दन जी भोजपुरी में भी नया-नया प्रयोग कइले बानी। स्व० पांडेय नगेश्वर सहाय के पत्रिका 'अजार' के दुगो अंकन में उहाँ के दूगो गीत—'सिहकल जिनगी' आ 'समय के दिआरा' छपल रहे। ऊ दूनो गीतन में जवन भाव-बोध व्यक्त भइल बा, ओकरा आधार पर त साफे कहल जा सकेला कि वेदनन्दन जी के प्रयोगशील आ प्रगतिशील कविता के तरफ विशेष झुकाव रहे। एह दृष्टि से अगर देखल जाव त वेद जी के समूचा के समूचा साहित्य एगो प्रयोगशील भा प्रगतिशील विचार आ सोच के नतीजा बा। बतौर नमूना उनकर पहिलका 'गीत—'सिहकल जिनगी' के देखल जाव—

नगर बीचवा एगो तलफे अंगार
नगर बीचवा एगो बसे हतेआर
सिहकल बतिया में तितिकी लगावे
राहे बाटे पैंतर में मुसुकी चलावे
जब रे उमिरिया के माटी संगोराइल
मरम बीचवा छछनावे तरुआर
जब रे बिरिध बन चुपुकी भुआला
चानी के लिलार लेखा सुजनी बुझाला
ओही घरी महुरी बेआर सिसकावे
नगर बीचवा पापी हाँफेला अन्हार
निठुर समइया के डाइन बेटी
भरमल टिसुना के सूंघेले नरेटी
खोद छान्ह ठनकेला करिया भुजेंगवा
भंभूर तरवा हो उफने मझधार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एह गीत में तलफे अंगार, हतेआर, तितिकी, पैंतर, छड़
तरुआर, महुरी बेआर, पापी हाँफेला अन्हार, निठुर समइया, डाइन
करिआ भुजेंगवा, उफने मझधार, आदि शब्दन के प्रयोग से जवन भा
प्रकट हो रहल बा ओकर साफ इशारा एह सचाई के तरफ बा कि आ
अधिकांश लोगन के जिनगी सिहकल बीत रहल बा। पूरा गीत प्रतीक
बा। ई गीत 'अजोर' के संयुक्तांक (अक्तूबर १९६८-जनकरी १९६
छपल रहे। दूसरका गीत—'समय के दिआरा' ओही प्रत्रिका के
१९७०—जनवरी १९७१ के अंक में प्रकाशित भइल रहे। एह गीत के
बोध के सौंदर्य के आकलन भी कइल जाव—

बालू के मछरी पकावऽ गोइआँ हो पकावऽ गोइ
कि नगरी में रेत दरिआव पइसल
घरे-घरे लोग अब अजगुत जगावे
खनहन अंधरिया में मटकी चलावे
धरती के फाँड़ा प बाँझिन के पहरा
फतुही से लंका जरावऽ गोइआँ हो जरावऽ गोइ
कि सावन में खेत के हिआव सिहकल
गोर गार पइसा के छुछुमाही बेटी
माटी के बेटा के फोरे नरेटी
फोर पोर बिखइन के तड़के तमाशा
चुरइल के चान चटकावऽ गोइआँ चटकावऽ गोइ
कि आसरा के सुधर बनाव बिखरल
कुरसी तरे घाम अग जग अंधारा
लउकेला आँधर के सउँसे नजारा
अब त जिनिगिये बा मउअत के खेती
जुलुमी के लुगरी बनावऽ गोइआँ हो बनावऽ गोइ
कि भोरहरिये पूरुब के पाँव धधमल।

एह गीत में प्रतीक आ बिम्ब के बहुतायत बा। नगरी में रेत / दरि
पसल / धरती के फाँड़ा प बाँझिन के पहरा/अब त जिनिगिये बा मउअत के
आदि से साफ झलकता कि धरती के उत्पादन प रेत के दरिआव आउर बाँ
के पहरा बा अर्थात् उत्पादन प गैर-श्रमशील वर्ग (पूंजीपति वर्ग) के
भइला से समाज के लोगन के जिनगी मउअत के खेती हो गइल बा। गोर
पइसा के छुछुमाही बेटी / माटी के बेटा के फोरे नरेटी से भी एकर अर्थ
साफ हो जात बा कि पइसा के बेटी (पूंजी) के जरिये माटी के बेटा (
वर्ग) के शोषण हो रहल बा। कहे के मतलब कि एह गीत में कवि के
के मुख्य विषय बा शोषण आउर जुल्म के खात्मा। एही से गीत के
में जुलुमी के लुगरी बनावे के बात कहल गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदनन्दन जी भोजपुरी में कुछ बाल कविता भी लिखले बानी। अइसन दुगो कविता बाड़ी स जवना के उहाँ का १९९३ में नव साक्षरता अभियान के बहत आयोजित एगो कार्यशाला में लिखले रहीं। ऊ दूगो कविता बा– 'बेकहल तारा' आउर 'डर आपन छाया ह'। पहिलकी कविता में तारा नाम के एगो लइकी के कथा बा जवना में ई देखावल गइल बा जे आवारा लइका भा लइकी के मतारी-बाप से बिना पूछले जहाँ-तहाँ गइला प का नतीजा होला। कविता एह प्रकार से बा—

एगो रहे तारा में आवारा
चाँद भिरी पहुचे त जिभिए बिरावे
पास खड़ा साथिन के लगड़ी लगावे
एक दिन रात में बहकल बरसात में
राहे में भींगल त चढ़ गइल जड़इया
खोजलस त कतहूँ ना मिलल मड़इया
कहना ना कइलीं हम सबके भरमइलीं हम
माई त रोकत रहे झूठे परइलीं हम
अब त सुनसान में नीके घेरइलीं हम
काहे के बेकार जाल में धरइलीं हम
कट-कट-कट दाँत बजे भूखे सब आँत बजे
माथा घिरनई भइल रहली ना ठाढ़ा
गिरली बेहोश होके लगला से जाड़ा
भोरे जब ठिगुरी पर सरुज जी अइलीं
इनका के गोदी ले घरे पहुँचवली
दू दिन तक खटिया प पडल पड़ल रोवली
अब ना हम जाइब कहीं माई बिन कहले।

दूसरकी कविता—'डर आपन छाया ह'—में वेदनन्दन जी लोक-जीवन में प्रचलित एगो कथा के आधार बनवले बानी। चूँकि कविता बच्चन खातिर लिखाइल बा एही से ओकरा में खास क के एगो सीख देल गइल बा कि जे अपलियत के ना समझी ओ बराबर भरम में पड़ल रही। कविता देखल जाव—

मोतिया के मालिक जब गइले ससुरार
मोतिया घोंघिआए आउर भूँके
कुकुर त मोटहन ह सिकड़े के तुड़ देला
माटी निठाह होखे तनिके में कोड़ देला
बाकिर डरपोक ई अइसन ह भाई
ऐनक देखावऽ त तुरते पराई
घरे त बाघ बनी बाहर में दुम लटकल
दूर कहीं जाई त भागी छटकल छटकल
सीकड़ के खोल देलीं छोड़ देलस खाइ
छउकल बिलाई अस सरपट पराइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

री हर ।
चलल ससुरार इहो मालिक के आपन
सुंघत-सुंघत जात रहे गोड़ लउके छापन
बीच एक पैंतर में मोती पियास गइले
तनिके में लोर झोर होके उदास भइले
कहवाँ त पानी बा उनका बुझाए ना
चारो ओर तकले त पानी देखाए ना
सुंघत सुंघत अइले नदी के किनारे
पियास से रोअला अस भइले बेचारे
रास्ता में पानी मिलल पानी में कुकुर रहे
मुँह हइस भाकुर अस उनके प ताकत रहे
कइसे ई पानी के भीतर में कुकुर बा
सोचत कि दुसमन ह इचको ना मित्तर बा
पियासे त रहलन पर डरे काँप गइलन
ई बबुआ छोड़ी ना सरपट हो गइलन।

अगर देखल जाव त भोजपुरी में बाल-साहित्य के बहुते कमी बा। लिखा भी रहल बा ओकर स्तर ओतना विकसित नइखे। कुछ स्तरीय साहित्य भी लिखाइल बा, लेकिन ओकर मात्रा बहुते कम बा। वेदनन्दन के टुनो बाल कवितन के एह माने में आदर्श कहल जा सकेला काहे कि ओ में बच्चन खातिर एगो निश्चित संदेश छिपल बा।

अइसे त वेदनन्दन जी हिन्दी आ उर्दू साहित्य के तुलना में भोजपुरी कम लिखले बानी फिर भी ऊहां का भोजपुरी में कम लिखके भी जवन कुछ साहित्य के भंडार के भरे के कोशिश कइलीं, ओकरा के नजरअंदाज ना कइल जा सके। अइसे त कवनो भाषा के साहित्य के अनुवाद कके एक दूसरा भाषा के साहित्य के विकास कइल जा सकेला, बाकिर 'देसिल बयना सब मिट्ठा' के मुताबिक आपन भाषा के साहित्य के सजावे-सँवारे के प्रवृत्ति प्रत्येक रचनाकार में पावल जाला। वेदनन्दन जी के भोजपुरी साहित्य-साधना के झुकाव एही बात के सबूत बा। वेदनन्दन जी के भोजपुरी साहित्य में इहे के विस्तार से चर्चा कइल जाई। अइसे त एह बात के सभावना से भी इंकार ना कइल जा सके कि भोजपुरी में उहां के कुछ एकांकी आ प्रहसन भी लिखल होखब। काहे से कि उहां के भोजपुरी में कबो-कबो नाटक के सवाल उठल रहीं। वेदनन्दन जी भोजपुरी के सुप्रसिद्ध नाटक 'लोहासिंह' के निर्देशन कइले रहीं जवना के मंचन आरा में भइल रहे। कुल मिलाके कहल जा सकेला कि वेदनन्दन के लेखकीय व्यक्तित्व में हिन्दी, उर्दू आउर भोजपुरी भाषा के अद्भुत संगम रहे जेकर गंगा-जमुनी असर उनकर समूचे साहित्य में देखल जा सकेला।

☐ नया शीतल टोला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युवा वर्ग आ भोजपुरी

—रवीन्द्र कुमार शाहाबादी

[अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गाजीपुर अधिवेशन के अवसर पर 'युवा वर्ग आ भोजपुरी' विषयक संगोष्ठी में पढ़ल निबन्ध]

समूचा भारतीय समाज आजु भारी परिवर्तन के स्थिति से गुजर रहल बा। पाँचवाँ दशक में जब भारत आजाद भइल ओह घरी के दृष्टि आ दर्शन दोसर रहे। ओहघरी हमनी के सामने एगो आदर्श रहे आ गाँधी के नेतृत्व में उच्च नैतिक मूल्य के धरोहर हमनी भीरी रहे। आजादी के बाद जतना तेजी से सामाजिक आ नैतिक मूल्यन के अवमूल्यन भइल ऊ देश में मोहभंग के स्थिति पैदा क देलस। जवन सामाजिक आ नैतिक मूल्यन के लेके आजादी के लड़ाई लड़ल गइल रहे ओकर अइसन विघटन आ अवमूल्यन भइल कि व्यक्ति चेतना आ सामाजिक चेतना पर गहरा आघात लागल। एकर प्रभाव बड़ा विध्वंसात्मक भइल। बीसवीं शताब्दी के अतिम चरण में हमनी के पहुँचल बानी जा आ एगे जा तक आवत-आवत ई मोहभंग के स्थिति कई गो रूप आ आकार ले लस। ई परिवर्तन व्यापक भइबे कइल, बड़ा सूक्ष्म भी भइल। एक ओर दुनिया छोट हो गइल आ एकरा चलते समाज में नया चेतना आइल शिक्षा आ तकनीकीकरण के चलते व्यक्ति गाँव छोड़ के महानगर के ओर पलायन करे लगलन। १९३२ में दिनकर जी लिखले रहले "चलो कवि वन फूलों की ओर'। अब उनका लिखे के पड़ित कि चलो कवि उद्योगों की ओर। औद्योगीकरण के चलते परिवार टूट गइल आ इन्हनी के जगहा पर नया अर्थवाद के जन्म भइल। शिक्षा आ नोकरी के संगे नया समस्या खाड़ हो गइल। पुरनका रूमानी भावुकता हवा में उड़िया गइल आ त्याग वाली दृष्टिकोण बदल के यथार्थवादी आ भौतिक हो गइल।

चूँकि सामाजिक दृष्टिकोण के प्रभाव साहित्य आ भाषा पर पड़ेला एह से एही परिवर्तित परिवेश के संदर्भ में हमनी युवा वर्ग आ भोजपुरी के समस्या पर विचार करे के चाहीं।

युवा वर्ग के सामने आज सबसे बड़ सवाल आपन अस्तित्व-रक्षा के आ गइल बा। जब तक युवा लोग स्कूल-कालेज में पढ़ता तब तक उनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सोमने दुनिया के री हर प्रमाटिक दृश्य रहऽता। उनका खातिर संसार सुन्दर लागेला बाकिर स्कूल कॉलेज के पढ़ाई खत्म होते दुनिया के यथार्थ उनका आमना-समाना होता त उनकर स्वाप्नल ससार हवा में उड़ आ दिन में जोन्हीं लउके लागता। अइसे त पहिलहूँ कहल गइल 'अर्थकरीचविद्या' बाकिर पुरनका जमाना के तुलना में आज जीवन-संघर्ष तेज आ कठिन हो गइल बा। आर्थिक सदर्भ में भोजपुरी के भूमिका बड़ ज्वलन्त सवाल बा जवन नवयुवकन के सामने मुँह बवले खाड़ बा।

आज दुनिया बड़ा छोट हो गइल। एह से दुनिया के परिप्रेक्ष्य में ही बात पर विचार करे के चाहीं। ई दुनिया विज्ञान के बा। वैज्ञानिक क्षेत्र नया-नया प्रयोग आ नया-नया चिन्तन हो रहल बा। विज्ञान के छोड़ के समाज आगे बढ़ल चाही ऊ ना बढ़ सकी। प्राचीन मूल्यन के साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपेक्षित बा। कवनो समाज के प्रगति खातिर इहे मूल मंत्र भोजपुरी समाज बड़ा विस्तृत बा। टिकुली आ सेनुर के गीत एक छन खातिर हमनी के भले आत्म मुग्ध हो जाई जा बाकिर वैज्ञानिक युग के साथ कदम से कदम मिला के आगे ना बढ़ सकी। वैज्ञानिक क्षेत्र जवन नवीन चिन्तन हो रहल बा ओकरा से हमरा युवा वर्ग के परिचय अपेक्षित बा।

आज भोजपुरी के के कहो, राष्ट्रभाषा पर संकट आ गइल बा। बहुराष्ट्रीय कंपनी के पदार्पण एह देश में हो रहल बा। आ जब उद्योगन के निजीकरण रहल बा त ई निश्चित बा कि सरकारी उपकरण में नौकरी के समस्या आ निजी क्षेत्र में नौकरी के समस्या बढ़ी। ई जतना निजी क्षेत्र में लगावे वाली कपनी बाड़ी स उन्हनी के काम-काज के भाषा अंग्रेजी बा। एह में भोजपुरी के के कहो, राष्ट्रभाषा हिन्दीओ के कवनो स्थान नइखे। एह संकट सब भारतीय भाषा पर पड़ी, चाहे ऊ भोजपुरी होखे आ बंगला आ एह संकट से उबरे खातिर कवनो समाधान निकालही के पड़ी।

आज युवा वर्ग के सामने सबसे बड़ समस्या अपना कैरियर के बा। के समाज उपभोक्ता समाज बा। भोजपुरी के लेके युवा वर्ग के आकांक्षा पूर्ति कतना दूर तक हो सकेला आ ओह आकांक्षा के पूरा करे में भोजपुरी कतना दूर तक समर्थ होई ई मुख्य समस्या बा। अबहीं त इहे लउकता भोजपुरी हमरा नवयुवकन के कैरियर बनावे में समर्थ नइखे। एह से भोजपुरी के विकास में नवयुवक वर्ग से कवनो उत्साह आ प्रोत्साहन नइखे मिलत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरूरत एह बात के बा कि भोजपुरी भाषा के नवयुवकन के कैरियर के साथ जोड़ल जाय।

भोजपुरी के समक्ष एगो बड़ समस्या बा ओकरा मान्यता के। भोजपुरी भाषा भाषी के संख्या देश में सब भाषा से अधिक बा। लेकिन सरकारी स्तर पर एकर मान्यता कवनो राज्य में नइखे। मैथिली बोले वाला के संख्या भोजपुरी के तुलना में बहुत कम बा। बाकिर मैथिली भाषी लोग सामाजिक आ राजनैतिक दृष्टि से हमनी के तुलना में बेसी जागरूक बाड़े। एकर फल ई भइल बा कि सरकार बिहार लोक सेवा आयोग के एगो विषय के रूप में ओकर मान्यता दे देल रहे। भोजपुरी के ई सम्मान ना मिल सकल। एकर दुष्परिणाम ई भइल रहे कि सरकारी नौकरी में मैथिली भाषी लोग के ज्यादा सहूलियत मिलल। ई भोजपुरी के सामने, सरकारी कामन में भोजपुरी के व्यवहार के समस्या बा। युवा वर्ग के चाहीं कि लोक सेवा आयोग में आ भारतीय संविधान के अष्टम सूची में स्थान देवे खातिर संघर्षरत होखे।

भोजपुरी भाषा अन्तरराष्ट्रीय भाषा ह। सुरीनाम, त्रिनीडाड, मॉरिशस आदि में भोजपुरी के मान्यता बा। एह रूप में भोजपुरी अंतरराष्ट्रीय संपर्क के भाषा हो जात बीया। अवश्यकता बा कि भोजपुरी के भूमंडलीय सहयोग, के दिशा में प्रयास कइल जाय। आ ई काम युवा वर्ग ही कर कर सकेला।

एगो समस्या हिन्दी बनाम भोजपुरी के उठावल जाता। सही बात ई बा कि हिन्दी उन्नयन में भोजपुरी भाषा के योगदान सबसे बेसी बा। प्रसाद, प्रेमचन्द, हजारी प्रसाद जी, रामचन्द्र शुक्ल आदि सभे भोजपुरी भाषी रहे। भोजपुरी भाषी लोग संकीर्णता के रस्सी में अपना के कबहूँ बन्हले ना। इनकर दृष्टि हमेशा उदार आ राष्ट्रीय रहल। भोजपुरी के जब भाषा के मान्यता प्राप्त होई त एह से हिन्दी के कवनो क्षति ना होई, बल्कि हिन्दी समृद्ध होई। एक जमाना रहे कि जब सूर, तुलसी, कबीर, विद्यापति सब केहु के हिन्दी साहित्य में स्थान मिलल। सूर ब्रजभाषा के, तुलसी अवधी के, कबीर भोजपुरी के आ विद्यापति मैथिली में, ई सब कोई हिन्दी के रचनाकार मानल गइल। आज स्थिति भिन्न बा। आजु भोजपुरी, मैथिली, ब्रजभाषा आदि में लिखेवाला के हिन्दी से निकाल दिहल गइल बा। एह से बुझाता कि हिन्दी वाला संकीर्ण हो गइल। आ भोजपुरी भाषी अबहींओं उदार बाड़े। हमरा समझ में हिन्दी बनाम भोजपुरी के समस्या बेमानी बा। भोजपुरी हिन्दी के सहयोगिनी ह, सवत ना ह। हिन्दी वाला लोग के सोचे के चाहीं कि, भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

के तरफकी से ।ेरी हर ।क्की होई । जइसे सूर, तुलसी आ विद्यापति पाके हिन्दी कृतार्थ हो गइल बा ओसहीं भोजपुरी के भिखारी ठाकुर के हिन्दी समृद्ध होई ।

शिक्षा के जेतना नया चिंतन बा ओकरा में मान लिहल गइल बा लइकन के प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में देवे के चाहीं । मातृभाषा में देला पर लइका विषय के जल्दी आत्मज्ञान क लेला । दुर्भाग्य ई बा हमनी लइका के जनमते विदेशी भाषा के छुट्टी पियावे लागतानी जा एकरा में गर्व के अनुभव करऽतानी जा । एहे बारे में हमनी के आपन दृष्टि बदले के चाहीं आ आपन लकइन के प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में देवे के चाहीं । एकरा खातिर जरूरी बा कि पठन-पाठन के सामग्री भोजपुरी भाषा में तैयार होखे । एकरा में युवा वर्ग के उत्तरदायित्व बढ़ जाता ।

प्रारंभिक शिक्षा से लेके स्नातकोतर शिक्षा तक पाठ्य क्रम में भोजपुरी एगो विषय के रूप में राखे के आन्दोलन युवा वर्ग के चलावे के चाहीं । इ के बात बा कि, भोजपुरी क्षेत्र में पड़े वाला विश्वविद्यालय एह दिशा में आगे बाड़े । वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति डा० सुरेन्द्र सिंह जी के हमनी के कृतज्ञ होखे के चाहीं कि, ऊहां के स्नातकोत्तर स्तर पढ़ाई के व्यवस्था कइनी आ ओहिजा भोजपुरी शोध केन्द्र के स्थापना बा युवा वर्ग से आग्रह बा कि, जे भोजपुरी में एम० ए० क लेल ऊ जल्दी से रजिस्ट्रेशन करा ले ।

युवा वर्ग के ऊपर ई उत्तरदायित्व बा कि, स्नातक आ स्नातकोत्तर कक्षा खातिर उपयोगी पुस्तकन के रचना खातिर प्रत्यनशील होखे आ क्रम में नया-से नया विषय समाहित कइल जाय ।

हमनी के प्रतिस्पर्धा के भाव से करे काम के चाहीं । हमरा स्वीकार में संकोच नइखे कि भोजपुरी साहित्य के स्तर अबहीं बहुत ऊंचा नइखे । हमनी के हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, मराठी के साहित्य के स्तर तक खातिर जी-तोड़ परिश्रम करे के बा । हमार साहित्यकार लोग लायक कहे में हमरा संकोच नइखे ।

हर वर्ग के छात्रन खातिर आवश्यक गद्य, पद्य नाटक आदि के लिखावे के चाहीं । अतने नाहीं, वैज्ञानिक विषय के पुस्तक भोजपुरी में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहीं। जब तक विज्ञान से हमनी के आपन संबंध-सूत्र जोड़ब जा तब तक प्रगति के दौड़ में पीछे रह जाइब जा। भोजपुरी के सबसे बड़ समस्या मुद्रक के बा। लेखक त ढेर बाड़े। बाकिर अइसन कवनो संस्था नइखे जवन भोजपुरी किताबन के छपवावे आ प्रचार करे, कवनो भूमिका के निवाह कर सके। लेखक लोग अपना किताब के अपना पइसा से छपावे ला। आ अपने बेचे के कोशिश करे ला। चोर, बवर्ची भिस्तीखर—सइ काम लेखके के करे पड़ेला। युवा वर्ग एह दिशा में यदि अग्रसर होखे, ऊ कवनो भोजपुरी प्रचारक संस्था के स्थापना के दिशा में प्रयत्नशील होखे त ई सार्थक भूमिका होई।

भोजपुरी पाठ्य क्रम के स्तर भी ऊंचा उठे के चाहीं। एह दिशा में भोजपुरी भाषा-भाषी विद्वान लोग युवा के सहयोग लेस त समाज के उत्थान में बड़ा सहयोग मिली।

आज समस्या भावनात्मक स्तर के बा। कवनो भाषा के बढ़ावे में ओह भाषा-भाषी समुदाय के बहुत बड़ हाथ होला। पहिले अँग्रेजी भी टेम्स नदी के आस-पास के बोलेवाला लोग के भाषा रहे। अँग्रेजी, अँग्रेजन के बढ़ावला से बढ़ल आ आज ओकर रूप अंतरराष्ट्रीय हो गइल। अँग्रेज चल गइले बाकिर अँग्रेजी रह गइल। भोजपुरी के जवन भी अन्तराष्ट्रीय रूप बा ऊ भोजपुरी भाषी समुदाय के त्याग, तपस्या, बलिदान के चलते बा। उपनिवेश में जवन भोजपुरी भाषी लोग गइल ऊ अपना संगे रामायण, हनुमान चलीसा, फगुआ, चैता के गीत लेके गइल। ऊ लोग पर ना जाने केतना अत्याचार भइल बाकिर, ऊ लोग आपन भाषा आ संस्कृति ना छोड़ले। युवा वर्ग के उत्तरदायित्व बा कि, ऊ भोजपुरी से भावात्मक लगाव राखे। जहाँ भी जवनो स्थिति में भी दूगो भोजपुरी भाषी मिलस ऊ लोग के चाहीं कि, भोजपुरी में बात-चीत करस। अन्दर से भाव जगे के चाहीं तबहीं कवनो सुफल मिली। एकर शिक्षा हमनी के बगला भाषी से लेवे के चाहीं। बंगला भाषी बंगले में बातचीत करेले। भोजपुरी के समस्या भावनात्मक समस्या बा। आ एही रूप में युवा वर्ग एह समस्या के लिहीं तबहीं भोजपुरी के संबंध ओकरा भाग्य निर्माण से जुटी। आ एही से देश के भी कल्याण होई। अंत में भारतेन्दु के ई पंक्ति दोहरावल चाहत बानी—

निज भाषा उन्नति आहै
सब उन्नति को मूल।

☐ करनौल चांदी, भोजपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

'नेवान' के हाइकु : भोजपुरी के प्रतिमान

—कुमार वि

[पुस्तक—'नेवान' । विधा—काव्य । कवि—सुनील कुमार पा
प्रकाशक—भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना-२४ । संस्क
पहिला, १९९३ । मूल्य-२० रुपये । कुल-पृष्ठ-५२]

आज भोजपुरी का साहित्यिक संसार में हाइकु के हलचल मचल
१९९० के पहिले हाइकु के कवनो चर्चा भोजपुरी जगत में ना रहे। भो
साहित्यकार लोग का अगर हाइकु से चिन्हा-परिची रहबो करे त
हाइकुअन से। अगर १९९० के पहिले केहू भोजपुरी में हाइकु लिखे के
करत होखे त करे, केहू रोकी ना, बाकिर, पहिला हाइकुकार के रूप में 'नेवा
रचइता सुनील कुमार पाठके जानल-मानल जइहें। 'बिगुल' ऊ पत्रिका हु
में पहिले-पहिले हाइकु छपल, आ एह, हाइकुअन के रचइता श्री सुनील
पाठक रहलें। भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका (नवम्बर, १९९०) में पाठक
कुछ कविता, जे तीन तीन पांति के रहे, हाइकु शीर्षक से पहिला बेर
हालांकि वर्ण-दोष ओह में रहे। बाद में अखिल भारतीय भोजपुरी
सम्मेलन के छपरा अधिवेशन के कवि सम्मेलन में पाठकजी हाइकु पढ़
आकाशवाणी, पटना से उनकर हाइकु लगातार प्रसारित भइल। एह से
चरचा में आइल आ दोसर-दोसर कवि लोग एकरा तरफ आकर्षित
अब पाठक जी पूरा सतर्कता के साथ हाइकु रचे लागल रहसु, जवन
में भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना से पुस्तकाकार 'नेवान' नाम से प्र
भइल। एह पुस्तक के भूमिका हिन्दी के प्रसिद्ध हाइकुकार आ हाइकु—
सत्यपाल चुघ लिखले रहीं जे पाठक जी के भोजपुरी हाइकुअन के
सरहलीं। 'नेवान' से पहिले कुमार कौशल के 'पीड़ाके उसाँस' नामक
संग्रह में दस गो हाइकुओ छपल रहे, बाकिर 'नेवान' के हाइकु भोजपुरी में
के पहचान बनवलस- बढ़वलस।

'नेवान' का हाइकुअन के कथ्य में वर्तमान समय के जटिलता, वि
विसंगति अउर समस्या के बयान साफ-साफ आइल बाटे। ५-७-५ का
क्रम में मिथक बिम्ब आ प्रतीक के सहारे, जगह-जगह प्रकृति वर्णन के
कवि सफलता के साथ आपन भाव, आपन संवेदना परोसले बा, जवन
बौद्धिकता के रुचिगर चासनी डलाइल बाटे। बौद्धिकता का दबाव में
अपना भाव के नइखे दबले। एह बात के गवाह कवि के ई हूगो हाइकु

भाव के जब / अभाव होई भाई / कविता मरी।
भाव कला के। नया तान-नेवान। करी हाइकु।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिथकीय प्रयोग से पाठक जी नेवान का हाइकु . काफी भाव-प्रवण नवले बाड़न—

हमार गाँव / केवट कठौता में / राम के पाँव
होरी हुलसे / गोबर में धनियाँ / नीके धँसल
शांति के सीता / दरप के रावन / हरले आज

आजाद हिन्दुस्तान में देश के दुर्दशा तक पहुँचावे वाला कारकन के कवि खूब पहचान कइले बाटे आ छूरी के तेज धार अस हाइकुअन के परोसे में कवनो कसर नइखे छोड़ले—

बखेड़ा खड़ा/मन्दिर- मस्जिद के/धर्म सिमटे
पंडित मुल्ला/आग लगावे, जरे/देश गांधी के
माथे चढ़ऊ / मंडल-कमण्डल/लोग बँटल
सूटकेस में/कसल पूरा देश/कसमसाला

आम आदमी का पेट के भूख कवि अपना हाइकुअन में बखूबी समेटले बाटे—

पेट में आगि / बाटे आँख में पानी/सूते जवानी
छटपटाला । 'भू' से 'ख' के बीच में / भूखे आदमी
राम रमस/भा उफर परम / रोटी फेंकस

जापान में, जे हाइकु के जना भूँई ह हाइकु रचना खातिर प्रकृति के वर्णन जरूरी तत्व मानल गइल बाटे । पाठक जी के ध्यान प्रकृति पर खूब रहल बाटे, बाकिर खाली सौन्दर्य बोध भर ना, एकर भरपूर उपयोग आम आदमी का परिवेश के सोझा राखे खातिर भइल बा। प्रकृति-वर्णन से रचाइल हाइकुअन में से कुछ देखल जा सकत बा—

जूही कपसे/नागफनी बिहँसे / राही दमसे
आकाशी थूक/दूबियन के नोंक/बा टँगाइल
रात के मांग/रोशनी बदा भरे/बादल जरे
माघ बा खाड़/जाड घुसल हाड़/ना कोनो आड़

नेवान के कवि एह जापानी छंद हाइकु पर पूरा अधिकार के साथ कलम चलवले बा आ अपना क्षमता से एह वार्णिक छंद में जे चहले बा, बखूबी कहले बाटे । 'तीन डेग में/तीनों लोक पल में/धांगे हाइकु— एह बात के सबूत बा कि कवि के दृष्टि 'अ' से लेके 'ज्ञ' तक गइल बाटे, जवना से जतना जनजीवन बात बा सब सोझा आ गइल बाटे । जहाँ सांस्कृतिक सन्दर्भन के साथ कवि आसानी से जुड़ाव महसूस कर रहल बाटे, उहें जीवन के आपा-धापी, सामाजिक विसंगति आ विद्रूपता, आम-आदमी के हलकानी, राजनीतिक षड्यंत्र के बखिया उधेड़े में बड़ा जबरजंग ढंग से कलम के उपयोग कइलें बाटे । अवइत बा त अस तत्सम शब्दन के उपयोग जवन बेसी भइल बाटे । उदाहरण पूरा किताब भरल बाटे ।

अंत में ई कहे में कवनो हरज आ संकोच नइखे कि 'नेवान' के हाइकुअन में भोजपुरी कविता के पौढ़ रूप उभर के आइल बा आ भविष्य में हाइकु रचना खातिर इहे प्रतिमान बनी ।

☐ द्वारा श्री शत्रुघ्न प्र० सिंह, स्कूल रोड, माड़ीपुर मुजफ्फरपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पुस्तक समीक्षा

भोजपुरी के सांस्कृतिक थाती : 'विवाह गीत' आ 'मंगल गीत'

—भगवती प्रसाद द्वि

दूगो पुस्तक—'भोजपुरी के विवाह गीत' आ 'मंगल गीत'। के संपादक—भगवान सिंह 'भास्कर'। प्रकाशक—भास्कर भारती, सिवान -८४१२२६। पृष्ठ—१६४ आ १२८। कीमत पचास आ चालीस रुपया। संस्करण—१९९५।

सभ्यता आ आधुनिकता के आन्ही आज भारतीय संस्कृति आ थाती के लीलत जा रहल बिया। विदेशी अपसंस्कृति के पइसार-प्रसार मकड़जाल में अझुराइल सउँसे देश आपन पहिचान भिचिकारत जा रहल आ नकलची बनिके गौरवान्वित हो रहल बा। पढ़ुआ आ शहरी लोग अपना संस्कृति आ संस्कार से कवनो सरोकार नइखे रहि गइल आ एह चकाचौंध आ भेड़ियाधसान में संस्कार से जुड़ल रसम-रेवाज आ गीतन से नवकी पीढ़ी के कवनो मतलबे नइखे। इहे ओजह बा जे लोग के दिसाई प्रदूषण के कूहा छपले बा आ माटी अउर अलग-अलग संस्कार गवाए वाला गीत बिलात जा रहल बाड़न स। एह संक्रमण—काल में फिल्मी प्रभाव हर क्षेत्र में हावी होत जा रहल बा ई जरूरी हो गइल कि अलगा-अलगा संस्कारन से जुड़ल लोकगीतन के सहेजल-संगेरल जाव पुरनकी पीढ़ी से मिलि के शोधपरक ढंग से ओह मौलिक गीतन के लिखल कइल जाउ।

भोजपुरिया समाज में शादी-बियाह से जुड़ल भए रसम आ विधि में गवाए वाला गीतन के सहेजे-संगेरे के कठिन काम भगवान सिंह 'भास्कर' 'भोजपुरी के विवाह गीत' आ 'मंगल गीत' के संपादित आ प्रकाशित कइले बाड़न। एकरा पहिले डॉ० कृष्णदेव जी उपाध्याय के दू भाग में लोकगीतन के निठाह संग्रह, राधावल्लभ शर्मा के 'भोजपुरी के संस्कार गीत', शंकर प्रसाद सिंह के 'भोजपुरी लोकगीत में करुण रस', डब्ल्यू० जी० आर्चर, संकटा प्रसाद के संस्कार-गीतन के संग्रह वगैरह ग्रंथ छपि चुकल बाड़न स। खाली बियाह आ मंगल गीत पर ई दूनो किताब पहिलकी बेरि आइल स। इन्हनीं में 'भास्कर' जी के मेहनत, लगन आ निष्ठा के झलक मिलत स।

'भोजपुरी के विवाह गीत' में कुलिह १०८ गीत संग्रहीत बाड़न स। में तिलक, सगुन, संझा, पराती, माड़ो, मानर, मटकोड़, हरदी, चुमावन, अछरेंगन, पितर नेवतवनी, नहवावना, जोड़ा पहिरावे, इमली घोंटाई, परिछे, द्वारपूजा, गुरहथी, परिछावन, कन्यादान, सेनुरदान, कोहबर, बान्ह खोलाई, धोती पहिरावे, मांग बहुराई, दउरा में डेंग डाले, कगना गारी, गवना वगैरह के गीत शामिल बाड़न स। गीतन के पहिले ओह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

र परिचयात्मक टिप्पणी आ ओकर महात्म क ... गइल बा आ ई एह संग्रह के अतिरिक्त विशेषता बा।

भूमिका में डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय के ई कहनाम गौरतलब बा— "श्री भगवान सिंह 'भास्कर' के प्रस्तुत संकलन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने इन समस्त विवाह-सम्बन्धी विधि-विधानों का सटीक, प्रामाणिक तथा विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया है। ..... आज से पचास या सौ वर्षों के बाद जब लोग इन विधानों की प्रक्रिया को भूल जाएँगे, तब भास्कर जी का यह वर्णन उस अज्ञान तथा अंधकार में प्रकाश (दीप शिखा) का कार्य करेगा।"

'मंगल गीत' मे बियाह में गावल जाए वाला भगवान शिव से संबंधित सहाना, सामान्य सहाना आ झूमर— कुल्हि जमा १०२ गीत संकलित बाड़े स। इन्हनी के उपादेयता पर 'प्रस्तावना' में डॉ० विवेकी राय के कहनाम बा—"जागतिक जीवन में बढ़ती आपाधापी और संघर्ष संकुल तनाव की कठिन स्थितियों को देखत इन लोकगीतों की महत्ता अब आतुरता के साथ स्वीकारी जाने लगी है। ये गीत हमारे आंतरिक जीवन के घावों को सहलाव देने और भरने-सुखाने के संदर्भ में औषधि का कार्य करते हैं।"

हालांकि अलगा-अलगा क्षेत्र में गवाए वाला मंगलगीतन में विभिन्नता पावल जाला, बाकिर उन्हनीं के मुख्य स्वर आ धुन एके होला। छपरा, सिवान, गोपालगंज के विस्तृत भोजपुरिया भूभाग में तारीकठं से फूटेवाला एह गीतन के संकलित करे में कतना मानसिक, शारीरिक आ आर्थिक कष्ट झेले के परल होई, एकर अनुमान सहजे लगावल जा सकेला। भास्कर जी के खोजी वृत्ति आ लोक साहित्य-संस्कृति के सुरक्षित-संरक्षित करेके उतजोग के सराहना होखहीं के चाहीं। बाकिर एह दिसाई कुछ अउर गहिराई में जाके सोचा लगावे के जरूरत रहे, काहे कि कुछ गीतन में मम्मी, पापा आ डैडी के संबोधन ई बतावत बा जे कुछ गीत मौलिकता से हटल बाड़ें स आ उन्हनीं पर नवकी सभ्यता आ फिलिम के छाप पड़ल बा, जवना से बचावे के चाहत रहे। किताब के छपाई-सफाई आ आवरण सराहे जोग बा।

बियाह संस्कार से जुड़ल एह २१० गीतन में शादी के कवनो रसम के गीत छूटल नइखे आ जगह-जगह के टिप्पणी आ विवरणी संपादक के मौलिक सोच, गवेषणात्मक दृष्टि के परिचायक बा। उमेद बा, संपादक के निगाह अउरियो संस्कारन से जुड़ल गीतन का ओर जाई आ भोजपुरी के सांस्कृतिक विरासत के अक्षुण्ण राखे के दिसाई संगेर-जोगावे के काम अइसहीं विस्तार से होई। बिसवास बा, दूनो संकलन के धधा के नेह-छोह भेंटाई, काहे कि ई भोजपुरी के सांस्कृतिक थाती नू ह।

□ पोस्ट बॉक्स ११५ पटना-८००००१ (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

लघुकथा-विशेषकः एगो प्रतिक्रिया

—बरमेश्वर

पत्रिका के लघु-कथा विशेषांक देखलीं। भोजपुरी लघुकथा लेखक में एकसठ गो नांव दर्ज हो गइल, ई छोट बात नइखे। बाकिर चिन्ता के बा कि एकसठ लघुकथा में से बहुत कम लघुकथा कृष्णनन्द कृष्ण के 'लघु के रचना-विधान' के कसौटी पर खाड़ उतरल बाड़ी स। जदि ओ हिसाब से इन्हनी के वर्गीकरण कइल जाय त चार वर्ग बनावे के पड़ी।

पहिला वर्ग—पतोहि, माड़ो खोलाई, जवाब, आपन भरोसा, स्वाति थाती, गाँधी जयन्ती समारोह, असमानता, नदी-रेलगाड़ी प्रगतिशील कवि, मानवाधिकार, इतरा के बेटा आ महाभारत

दूसरा वर्ग— आपन घर, हत्यारा, लायक उत्तराधिकारी, फेल, नेह-नाता के मोल, बेटी के जनम, लोकल खरीदारी, आ मुखौटा।

तीसरा वर्ग—शिकंजा, दिया बुना गइल, सुराज, आपसुप बतकही, गइल, एकला चला, नोकरी, जनेव उतार के, जत लुगा जाड़, सही निर्णय, तरज, गांव के बेटी, रोशनी के डर, अछूत आ नुस्खा।

चउथा वर्ग—हम का कइनी, का जाने काहें, किरकिटिया बोखार, रोटी, कार सेवा, वोट ना देब, पेंसमेकर, अलचार, कौंसिल, धन्य के, सीख, हीरीस, मेल खात चेहरा, दरद, लड्डू, पलायन, बरतुहार, साहब के नोकरी, मेहरारू, अब ऊ युग नइखे, जो रे बुड़बक आ नया प्लॉट।

'मूरत' कउना वर्ग में आई, ई प्रश्न हम अंउरि लोगिन खातिर बानी। दोसर बात ई कि अबकी पारी के संपादकी में एगो ऐतिहासिक हो गइल बा। दरअसल 'टुकी-टुकी जिनगी' के सपादक मंडल में कृष्णा जी नइखीं। एह भूल के सुधार लेवे के चाहीं। *

एह अंक में एगो आजगुतो बात भइल बा। भोजपुरी लघुकथा रूप में एह अंक में तीन गो अइसन नांव सामिल कइल गइल बा, जेकरा केहू नात त भोजपुरी बोले ना लिखे ना ऊ लोग भोजपुरी क्षेत्र से आ भोजपुरी के संघर्ष में भी ओह लोग के कउनो योगदान नइखे जदि एह तीनों जना के नांव एह ख्याल से जोड़ल गइल बा कि ई भविष्य में भोजपुरी बोली, भोजपुरी लिखी आ भोजपुरी के संघर्ष में लिही, तब त स्वागत जोग बा। ई लोग एह शुभ काम के शुरूवात पत्रिका के प्रायोजक बनि के करि सकेला।

---

* एह भूल खातिर हार्दिक खेद बा। भ्रमवश अइसन हो गइल। अपना प्रति में वदनुमार सुधारकर लेस, निवेदन बा। —सं०

धनडीहा, भोजपुर—८०१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रिका प्रायोजक मंडल

नारायण सिंह (मुख्य प्रायोजक) : पाण्डेय कपिल : नागेन्द्र प्रसाद सिंह : प्रो० किशोर : डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' : आचार्य विश्वनाथ सिंह : कृष्णानन्द : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : करुणानिधान केशव : शैल वर्मा : बी० एन० सिंह : डॉ० प्रभुनाथ सिंह : डॉ० व्रजभूषण मिश्र : जगन्नाथ : श्री (भोजपुरी साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान) बोकारो : विन्ध्याचल प्रसाद वास्तव : डॉ० शत्रुघ्न सिंह : भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना : डॉ० बसन्त र : जनार्दन प्रसाद : आनन्द सन्धिदूत : शत्रुघ्न सिंह : जगदीश सहाय ीम' : डॉ० शम्भुशरण : पाण्डेय सुरेन्द्र : उर्मिला पाठक : डॉ० धीरज कुमार चार्य : शिवनन्दन प्रसाद 'हर्षवर्धन' : पी० चन्द्रविनोद : राजेश कुमार। श्री : माधव सिंह : रामबाबू प्रसाद : आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत : राजनारायण क्षित। अतुल कुमार : गीता देवी : बब्बन सिंह : कुसुम सिंह : सुशीला पाण्डेय : र्मा प्रेस पटना : शांति कुमारी : रामअयोध्या तिवारी : दण्डिस्वामी मलानन्द सरस्वती : प्रो० रामेश्वर राय : प्रो० उमाकान्त वर्मा : सूर्यदेव पाठक राग' : शालिग्राम माधव : मोती बी०ए० : डॉ० रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव : बुजा सिन्हा : निशान्तकेतु श्याम : भोला प्रसाद 'आग्नेय' : गरिमा बन्धु : श्वर प्रसाद सिंह : हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' : प्रो० रामेश्वर नाथ तिवारी : लना दीक्षित : डॉ० राजेश्वरी शाण्डिल्य : डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी : डॉ० उषा र्मा : चन्द्रदेव पाठक 'सुधाकर' : सुरेश कांटक : पी० नीरजनयन : व्याशंकर श : सरिता शिवम् : हरिनारायण 'हरीश' : श्रीहरि मिश्र : सत्येन्द्र नारायण तुर्वेदी : दीप्ति : अजय कुमार ओझा : इनरपरी देवी (बेला शर्मा टोला) : गीता पाण्डेय : रामाश्रय सिंह 'नीरव' : जगतनारायण प्रसाद। लेजर प्रिंटर, टना : डॉ० कपिलदेव सिंह : डॉ० चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' : नरेन्द्र रस्तोगी शरक' : चन्द्रशेखर मौर्य : महामाया प्रसाद 'विनोद' : व्यास मिश्र : डॉ० अशोक वेदी : हरिचरण राम : डॉ० प्रभुनारायण विद्यार्थी : श्री दीनानाथ पाण्डेय ॉ० सविता सौरभ : डॉ० एम० एम० पी० श्रीवास्तव : डॉ० चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा : राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता : डॉ० विवेकी राय : रामाधार ओझा 'तुच्छ' ॉ० भगवतीशरण मिश्र, : नरेन्द्र प्रसाद 'नवीन' : अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' : काश उदय : वरमेश्वर सिंह : हरिहर नाथ पाण्डेय।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी नेही आ रंगमंच से जुड़ल भाई-बहिन लोगिन से निहोरा बा
विदेश में हो रहल भोजपुरी रंगमंचीय गतिविधियन के रपव (फोटो

विश्व भोजपुरी रंगमंच के एकमात्र आ पहिलका पत्रिका

विभोर

में छापे खातिर नीचे लिखल पता पर भेजीं। पत्रिका में कला आ
मंच से सम्बन्धित लेख, प्रका त नाट्य कृतियन के विवरण (
रंगमंच के सुदृढ़ करे में राउर सहयोग के

प्रार्थी
महेन्द्र प्रसाद
सम्पादक 'विभो

प्रकाशक—रंगश्री
(भोजपुर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान)

बी-1/1111, वसत कुंज
नई दिल्ली-110070
फोन—6896585, फंक्स—6896151

स्तत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का
पाण्डेय कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन,
पटना-८०००२४ (दूरभाष : २६११३४) से प्रकाशित, आउर पाण्डेय
द्वारा कर्मा प्रेस, बुद्ध मार्ग, पटना-१ (दूरभाष : २३२७८०) में

सम्पादक—पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

खिल

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

पहिला अधिवेशन

प्रयाग

८-९ मार्च १९७५

अध्यक्ष

डॉ० उदयनारायण तिवारी

के

* भाषण *

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Ja

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

देवी लोग आ भाई-बन्धु सभे,

आज हम अपने सभन के बहुत रिनी बानी कि हमराके एह सभा के सभापति होखे के मोका आ सम्मान दिहलीं। 'भोजपुरी साहित्य परिषद्' प्रयाग का ओर से ई 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' अइसना समय में हो रहल बा जब कि देस के बहुत भाग में राजनीति के तूफान आ बवंडर उठि खड़ा भइल बा। आजु चारो ओर खाली राजनीति आ रुपये-पइसा के संकट नइखे खड़ा भइल, बलुक सबसे बड़ संकट त ई बा कि आदमी के चालि-चलन, आचार-बेवहार बहुत नीचे गिर गइल बा। कवनो गाँव-नगर अइसन नइखे जहवाँ महँगाई, मिलावट, कालाबजार आ चोरबजार के बोलबाला ना होखे। जो साच पूछल जाय त हम कहब कि एह तरह के बात सउँसे संसार में फइल गइल बा। भोजपुरियो इलाका, खास करके पूरबी उत्तर प्रदेश आ पच्छिमी बिहारो एकरा हवा-पानी से छूटल नइखे। इतिहास एह बात के गवाह बा कि देस में जब जब एह तरह के संकट आइल बा, ई समूचा भोजपुर इलाका चिन्ता से बेयाकुल होके बहुत कुछ तियाग कइले बा। ई सबूत देबे के जरूरत नइखे कि इहवाँ के लोगन में देस-प्रेम के केतना लगन आ सरधा बा। सन् अठारह सौ संतावन के महाबली बीरबर कुँवर सिंह आ बहादुर सिरोमनि श्री मंगलपांड़े जी से लेके सन् १९२०-२१, १९३०-३२ आ १९४२ के आन्दोलन में भोजपुरी के जेतना लोग बलिदान भइल, ओह सहीदन के एक-एक गाँव आ एक-एक नगर जुग-जुग तक ले याद करी। आजुओ हमरा पूरा-पूरा भरोसा बा कि देस के सामने कवनो तरह के संकट अइला पर ई टप्पा सबसे आगे बढ़ि के एकरा गौरव आ मरजाद के रक्षा करी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भोजपुरी पच्छिमी बिहार, पूर्बी उत्तर प्रदेश आ छोटानागपुर का मोर के आपन मातृभाषा ह ई भोजपुर, रोहतास, पलामू, सारन चम्पारन पच्छि पटना, मुजफ्फरपुर, पूरा गोरखपुर आ बनारस कमिश्नरी के हर जिला बोलल जाले। बिहार का राँची जिला में सदानी का रूप में जवन बोल बोलल जाले, ऊहो भोजपुरी से बहुत मीलत-जूलत होले। मध्य प्रदेश रायगढ़ आ सुरगुजा जिला के पूरुबी भाग भोजपुरिये ह। नेपाली तराई का सात जिलन में भोजपुरी बोलल जाला। भोजपुरी साहसी आ बीर लोगन के बोली ह, जेकर बोले वाला लोग भारत भारत के बाहरी दुनियाँ के हर क्षेत्र में मिलिहन। एही लगले हम ई बता कि 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' नागपुर में जेतना विदेसी लोग भाग लेवे पिछला जनवरी में बाहर से आइल रहस ऊ करीब-करीब भोजपुरी बोलें आ समुझे वाला लोग रहे। अपना देश के बड़े-बड़े शहल जइसे दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, कानपुर वगैरह में भोजपुरी लोगन बहुत बड़ तयदात बा आ ई सभ केहू बड़ा संगठित होके रहेला। ई कुछ नगरन में भोजपुरी समाज, भोजपुरी परिषद, भोजपुरी संसद, साहि परिषद् अइसन नाँव के संगठन कायम हो चुकल बा। अइसने कुल्हि संगठ झंडा के छाया तर खास-खास तिहुआर पर बटुरा के लोग ओइजा आक गले मीलेंला, खुसी मनावेंला। ईहे ना अपना, बहुत से समस्या के में लोग बूझो-विचार करेला।

हम पहिलहीं कहली हाँ कि भारत के बाहरो भोजपुरी वाला बहुत विदेसी लोग बा। हिन्द महासागर में मोरिशस, अउरी गाइना मतिन बहुत छोट-छोट टापुअन में भोजपुरी लोग बसल बा। मोरिशस में बोलें जाये वाली बोली 'क्रियोल' में भोजपुरी के बहुतायत बारे में उहाँ के रहवइया लोग खूब जानता। खास करके फ्रेंच आ से मिलके ई 'क्रियोल' भाषा कहाला। मानुस-तन्तु-विग्यान, भाषा-वि का विचार से आजो एह टापुअन में भोजपुरी जाति का लोगन के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बेवहार करेला। जब प्रिन्स आफ वेल्स दीक्षान्त-समारोह का मोका पर वेल्स यूनिवर्सिटी में जालन त उनका लचार होके पहिले 'केल्टिक' भाषा में कुछ बोलहीं के परेला। संसार के सबसे जियादा वली भाषा अँग्रेजी जब अतना कमजोर भाषा 'केल्टिक' के ना मेटा सकलि, त ई कइसे केहू उमेद करता कि इहाँ के क्षेत्रीय बोलियन के २०-३० बरिस में ओके हिन्दी मेटा दी? एह उदाहरन से भारत सरकार आ राजसरकारन के ई कुल्हि बोलिन के असलियत के समझे के परी। एह बोलिन के साथ प्रेम से विचार करेके परो। साथे-साथ हिन्दी के पढ़े-पढ़ावे में नया तरीका आ नया रास्ता अपनावे के परी। एकरा खातिर हमार दू गो सुझाव बा।

भाषा के जवन चारि गो बर्ग बतवली हाँ, ओह क्षेत्र में हिन्दी पढ़ावे के जवन काम हो रहल बा, ऊ तरीका ठीक नइखे। एकरा पीछे जरूरी बा कि एह क्षेत्रन के बोली आ हिन्दी भाषा के ताल-मेल से पढ़ाई-लिखाई, कुछ खास भाषा-विग्यान के जानल-मानल विद्वान लोगन से करावे के चाहीं। एह क्षेत्र का भाषा-भाषा लोगन के हिन्दी पढ़े-पढ़ावे में जो मुश्किल परत होखे त ओकरा के हल करे खातिर प्राइमरी आ सकेन्डरी स्कूल शा शिक्षकन के भाषा-शिक्षा का विचार से ओह विषय पर शिक्षा दीहल जाय। एकर नतीजा ई होई कि लोग बहुत थोर समय में हिन्दी लीखे आ बोले सीख जाई। हमरा देस में आजुओ अनपढ़ लोगन के तयदात बहुत जेयादा बा आ जबले अइसने हाल रही तबले हमनीं का असल में ना त प्रजातंत्र के माने वाला कहा सकीले आ न त आजादी के कवनों फायदे उठा सकीला आ एहसे ई जरूरी बा कि दुसरका तरीका से सब अनपढ़ लोगन के पढ़ाई करावल जाव।

एह बारे में हमार सुझाव ई बा कि ऊपर बतवला मोताबिक चार बर्गन का क्षेत्रन में नागरी लिखावट के परचार कइल जाय आ अनपढ़ लोगन में ओकर अभ्यास ओही बोली में पढ़े वाली किताब तैयार कराके दीहल जाय। ई भागि के बात बा कि एह सब बोलिन के क्षेत्रन में बहुत विद्वान गद्य आ पद्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

के लिखे वाला मवजूद बाड़न । एह बिद्वानन का किताबन के परचार-प्रसार से निरक्षरता कुछुवे बरिस में हटावल जा सकेले । असल में शिक्षा में ई हो जो साथ-साथ चलसु त एक ओर जहवाँ हिन्दी के चउतरफा परचार आ परसार हो जाई, उहवें लोग हिन्दी के थोरहीं समय में सीख लेंहे आ देस से जल्दिये निरच्छरता दूर भागि जाइत । एह तरे भाषा पढ़ावे के दू गो ढंग हो जाई । एगो लइकन खातिर आ दूसर बड़ लोगन खातिर भोजपुरी एगो वीर आ बहादुर जाति के भाषा भर नइखे, बलुक एकरा में गंभीर आ ऊँच गद्य-पद्य साहित्य के रचना हो रहल बा । पिछिला १९५-७३ में भोजपुरी इलाका से बाहर इहाँ प्रयाग में 'भोजपुरी कवि सम्मेलन' के भोलानाथ गहमरी जी करवले रहनीं ऊ बहुते सफल भइल आ एह नगर में ओकर बड़ी चर्चा रहे । अवधी आ ब्रजभाषो में अइसने सफल कवि सम्मेलन सुने में आवत रहेला । आजु एह लोक-भाषा के कवि सम्मेलन में दिल्ली, कलकत्ता आ बम्बई के लोग बहुत आदर आ प्रेम से सुनि रहल बा ।

•

ए तरे जइसन कि पहिले बतावल गइल ह, भोजपुरी के गद्य-पद्य दूनों में साहित्य बहुत सुन्दर आ धनी हो रहल बा । पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय 'अँजोर' (पटना) के सम्पादक भोजपुरी भाषा के परकासित साहित्य के एगो सूची तैयार करवले बानीं । ओमें भोजपुरी में लीखल केतना काव्य, महाकाव्य, नाटक, उपन्यास, लेख, कहानी आ कई तरह के रचनन क नांव बा । भोजपुरी खातिर ई गौरव के बात बा कि श्री स्वामी विमलानन्द सरस्वती जी भोजपुरी में 'बउधायन' (बौध-लीला) महाकाव्य के रचना कइनी हाँ, जवन छपि छप वाला बा । सभके ई जानि के खुशी होई कि रामायन मतिन ग्रन्थ के रचना भोजपुरी में भइल बा । एह तरे भोजपुरी के गद्यो के बढ़ावे आ सम्मान दिआवे में पं० गणेश चौबे, डा० विवेकीराय, चतुरी चाचा, आचार्य महेन्द्र शास्त्री आ बहुत कहानी उपन्यास लिखे वाला लोग बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दिन रात एहमें लागल रहल । स्व० बाबू दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, पं० राहुल सांकृत्यायन आ कविवर मनोरंजन जी के लगन अउरी महान रचना खातिर हरमेशा याद कइल जाई । एह सिलसिला में हम जमशेदपुर का भोजपुरी भाषा-सेवकन कें आ आरा कें श्री रघुवंशनारायण सिंह के भोजपुरी सेवा खातिर साधुवाद दे तानीं । बनारस के 'भोजपुरी संसद' के सेवा आ मदत देकर थापना में स्व० डाक्टर स्वामीनाथ सिंह जी कें खास हाथ रहे, हमेशा याद कइल जाई । ऊहाँ का सांस रहते दम तक कई किताबन के छपवा-छपवा के भोजपुरी साहित्य के बढ़ावा दिहनीं आ आजु के 'भोजपुरी कहानियाँ के जनम उनही कें देले हईं । ई कुल्हि लोगन कें अलावा जे-जे सेवक लोगन के नाँव हम नइखीं ले पावत, ओहू सबकें तियाग तपसिया खातिर हमनी का रिनी बानी जा ।

हम सब लोगन के भोजपुरी के बढ़ंती खातिर बराबर कोसिस करत रहे के चाहीं । करीब सात-आठ करोड़ लोगन के ई भाषा, जवना के संसार के हर कोना में बोलल जात बा, साहित्य-अकादमी से अब तक मान्यता ना मीलल, एकरा के हम अपने कमजोरी समझतानीं । आजु एह सभा के खुसी बा कि 'अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन' के थापना पटना में हो चुकल बा, जवना का पहिलका अधिवेशन में रउवा सभे इहां इकट्ठा भइल बानीं । अब मीलि-बइठि के एकरा के आगे बढ़ावे में सबके जुटि जाये के चाही । एकरा खातिर सरकार से एक्को पइसा के मदत लीहल एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ठीक ना होई । काहें कि जहां सरकारी पइसा आई, उहाँ सम्मेलन सरकारी हो जाई आ सरकार से मदत मिलला से लोगन में गुटबन्दी हो जाई । हमनी का चाही कि बीसन लाख लोगन के एक-एक रुपया के सदस्य बनाईं आ ओसे मीलल धन से भोजपुरी कथा साहित्य, काव्य, नाटक, एकांकी आ वेयाकरण के सुन्दर किताब-पोथी छापल जाय । धन के कमी से भोजपुरी के बहुत से किताब अच्छा ढंग से छपि नइखी स पावत, ई बड़ा हँसी आ दुख के बात बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अपने सभ हमार बात एतना देर ले मन लगा के सुनलीं, एकरा खातिर हम बहुत रिनी बानीं। आजु इहवाँ सभा करवला, सबके एक जगह जुटा के आ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के एह नगर में मंच दिहला खातिर एकर आयोजक लोगिन के, जे बहुत तकलीफ उठावल, दिन-रात दउड़-धूप कइल, ओह सबके हम अपना ओर से आ रउरी सभ का ओर से बहुत-बहुत धनिवाद देत बानीं।

जय हिन्द

जय हिन्दी—जय भोजपुरी

—उदय नारायण तिवारी

प्रयाग, ८-३-१९७५ ई०

देश सेवा प्रेस, प्रयाग

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दोसरका अधिवेशन

के

अध्यक्ष

आचार्य डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

के

अभिभाषण

पटना

१५ मई १९७६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन्धुगण,

अपने सभ हमरा के बहुत बड़ाई दिहलीं जे एह सम्मेलन के सभापति बनवलीं। एह कृपा खातिर हम बहुत आभारी बानी। हमार मातृभाषा भोजपुरी जरूर बा बाकिर हम भोजपुरी के कवनो खास सेवा नइखीं कइले। हम त इहे समझलीं हां जे अपने सभ में उदारता बहुत बा आ हिन्दी आ भोजपुरी दूनों के समान भाव से प्रेम करीले। अइसन ना होइत त हमरा नियर आदिमी के, जे सही माने में 'ना देव के ना लोक के' बा, ओकरा के काहें बोलइतीं। मान-नीय पांडे जी के हुकुम भइल जे आवे के होई, चुपचाप राजी हो गइलीं। मगर जब उहां का कहलीं जे सभापति के भाषण लिखि के ले आवे के परी त थोरिका चिन्ता भइल। बड़ बना दिहला से केहू बड़ थोरे हो जाला? कुछ भीतरो होखे के चाहीं। कबीर दास जी साइत भोजपुरी के आदि कवि हवीं। उहां का कहि गइल बानी जे, 'जो रहे करवा त निकसै टोंटी'। बधना में पानी रही तबे त टोंटी से निकसी? इहां एको ठोप पानी नइखे। सोचत रहलीं जे भोजपुरी त आपन मातृभाषा ह, ए में लिखल बड़ा सोझ होई। अब देखतानीं जे सोझे डांड़ि खींचल सभसे टेढ़ काम बा, टेढ़ डांड़ि खींचे में कवन मेहनत बा। रोजे जवना भाषा में बोलल जाता ओही में लिखल कठिन काम लागत बा। कवनों भाषा आ बोली में लिखे खातिर कुछ साधना चाहीं, कुछ पहिले से आदत डाले के चाहीं, कुछ मेहनत मसक्कत क लेबे के चाहीं। ऊ सभ अपना में ना देख के मन ऊभ-चूभ हो गइल बा। अब त अपनहीं सभ के आसरा बा, सभापति बनवलीं त ओकर भारो अपनहीं सभ के सम्हारे के परी।

भोजपुरी बहुते शक्तिशाली बोली ह। लोक साहित्य के त अइसन भंडार अउर जगह साइत नइखे। महावरा, लोकोक्ति, व्यंग्य-विनोद के त एकरा पासे खजाना बा। कुछ लोकगीतन के संगेरे के थोर-बहुत जतन भइल बा, एकाध कोसिस महावरा वगैरह के बटोरे के भी कइल गइल बा, बाकिर ई सभ काम समहुते बरोबरि बा। जतना काम भइल बा, ओतने से ई पता चले में कवनो कठिनाई नइखे रहि गइल जे शक्तिशाली भाषा होखे खातिर जइसन गुन गरवर चाहीं, एकरा में पूरा बा। एकर बोलेवालन के तदादो बहुत अधिक बा। चार-पांच करोड़ त होइबे करी। अपना देस में, अउर बाहरो बहुत कम भाषा होइहें जेकर बोले बालन के तदाद एतना बड़ होई। बोले वालन के तदाद एतना बड़ बा जे बहुत बड़का कहाए वाली बहुत भाषा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भा बोलिन से भोजपुरी कहि सकेले जे 'जवन तोहरा घरे भोज तवन घरे रोज'। भोजपुरी लोगनि में अपना बोली के अभिमानो बहुत बा। में रहो तऽ, विदेस में रहो तऽ, भोजपुरी घर में अपने भाषा बोली। साहेब त लिखले बानी जे अइसन भाषा प्रेम उन्हका अउर कहीं ना सभ बा, लेकिन भोजपुरी हमेसा देस के अखण्डता के बात सोचेला। अखण्डता के खतरा होई त ऊ अपना प्रिय से प्रिय चीजो के बाधा दी। हमेसा भोजपुरी के नजर देस का एकता पर रहेला। एह खातिर तियागि सकेला। भोजपुरी के ई गुन जग-जाहिर बा। एमें कतहीं मिली। ई बात नइखे कि ओकरा में अपना घर में बोले जाए वाली मीठी बोली के अभिमान नइखे, ईहो नइखे कि ऊ अपना बोली में कविता गाना लिखल छोड़ देले बा, मगर ऊ कबहीं अलग हो के रहे के बात लस। हमनी के जवन सार्वदेसिक स्वीकृत भाषा हिन्दी बा ओकरा के सँवारे में त भोजपुरी लोगनि के सबसे बेसी जोगदान बा। सदल मिस भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से ले के आजु तरीक बहुत बड़-बड़ साहित्य-निर्माता पुरी लोग रहलन हा। सदल मिसिर जी का बारे में त हमरा नइखे मालूम उहां का भोजपुरी में कुछ लिखले बानी कि ना, बाकी भारतेन्दु जी त रूप से बनारसी बोली में बहुत बढ़िया कविता लिखि गइल बानी। अपना घर का बोली के प्रेम अछइत उहाँ सभे सार्वदेसिक भाषा के संवारे में जीव आ जान लगा दिहलीं। अपना बोली के प्रेम भी बनल सार्वदेसिक भाषा के भी ओतने, बलुक कुछ अधिके, प्रेम उहां सभ के बाकी कबहीं उहां सभ ई ना कहलीं जे अपना बोली के अलग कइ ओ सभका मन में सोगहग प्रेम रहल।

'सोगहग' जानते होइबि। लइकइयाँ में हमार बड़की पितियाइनि— का उहाँ के 'बाबूजीबो' कहत रहलीं जा, उहाँ का खास भोजपुरी बेटी रहलीं आ कथा-कहनी के त उहाँ का पासे भण्डारे रहल—एगो सुनवले रहलीं। कथवा भुला गइल बा, मगर ओकर नायक एगो राजा रहले, कवनो सराप से बेंग हो गइल रहले। उन्हकर हठ रहे कि हम सोगहग बहुत बहुत फितकाल में परले बाकी सोगहग खातिर अरियाइले रहले। साल पहिले डा. शिवप्रसाद सिंह का 'अलग-अलग बैतरनी' में सोगहग शब्द त हम सोचे लगलीं कि ई 'सोगहग' कइसे आइल। खोजत-खोजत संस्कृत शब्द मिलल सयुगभाग—दूनों हिस्सा समेत—पूरा। हमरा ई बुझाइल जे 'सो' एही शब्द के परवर्ती रूप होई। भोजपुरी के सोगहग प्रेम, आपन पुराव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोगहग' होला। घर के बोली के प्रेम आ देस के बोली के प्रेम—प्रेम के दूनों हिस्सा मिलाके सोगहग—सयुगभाग ! भोजपुरी आदिमी पुरानी कथा के राजकुमार हऽ—सोगहग के प्रेमी। भोजपुरी बोले वालनि पर आर्थिक कमजोरी के सरापो साइत लागत बा। एही से ई लोग कुछ वेंगिया गइल बाड़न। एह लोगन में माण्डूक्य वृत्ति जरूर कहीं-ना-कहीं रह गइल बा। मगर लिहें त लिहें सोगहगे।

'सोगहग' प्रेम कवनो बाउर चीज ना हऽ। निमने हऽ। निमन अर्थात् निर्मल, निष्कलुष ! बहुत दिन से स्वच्छ साफ बंतावे खातिर ई शब्द चलल आवता। प्राकृत में 'निम्मल' चलत रहे—निम्मल मरअद-माअण परिट्ठिया संखसुत्तिव्व—निर्मल—मरकत भाजन परिस्थिता शंख शुक्तिरिव। बहुत बोलिनि से ई उठि गइल, बाकिर भोजपुरी में बनल बा। का जाने काहें। अइसन बुझाता कि ए बोली के बोले वाला निर्मलता के भुला ना सकले। मगर इहो कइसे कहीं ? गांव में एगो निमंत्रण-पत्र शुद्ध हिन्दी में मिलल। निमंत्रण देवे वाला लोग कहे के चाहत रहे कि निम्मन निम्मन आदिमी बोलावल गइल वाड़े। शुद्ध हिंदी में लिखल लोग जे 'निम्न निम्न आदमी बुलाए गए हैं'। छोड़ीं ए बात के। एतना त साफे बुझात बा जे शुद्ध हिन्दी ठीक से पचत नइखे। तबो जवनभोजपुरी के सहज गुन ह, ओके छोड़े के ना चाहीं। थोरे नुकसानो होखे तबो ना छोड़े के चाहीं—धरम करत में होखे हानि, तबो न छोड़ीं धरन के बानि'। सोगहग के प्रेम, मगर निर्मल चित्त से, ई सही रास्ता लागत बा।

तनी खुलासा कइके मतलब समुझावतानी। पुराना जमाना से एह देस में दू तरह के भाषा के प्रयोग होत आवत बा। लोकभाषा आउर अभिजात संस्कृत भाषा। कई बार लोकभाषा में बढ़िया साहित्य लिखाइल। थोरहीं बांचल बा, वेसी त नष्ट हो गइल। बौद्ध लोगनि के, जैन लोगनि के विशाल धार्मिक साहित्य ओह जमाना का लोक प्रचलित बोली में लिखाइल। पालि के बहुते समृद्ध साहित्य मिलल बा। ऊ त हमरा बुझाला जे भोजपुरिये के पुरान रूप हऽ। फेरु प्राकृत में लिखाइल, फेरु अपभ्रंश में लिखाइल। मगर जब तक धार्मिक उपदेश, कुछ प्रेम आ नीति के कविता, कहानी, कुछ ज्ञान वगैरह तक के बात रहे तब तक मजे में काम निकलत गइल। जब दर्शन, तर्कशास्त्र, आदि सूक्ष्म चिन्तन के जरूरत पड़ल तबे फटाफट संस्कृत में लिखाये लागल। कई बार दोहा त लिखाइल अपभ्रंश में मगर टीका लिखाइल संस्कृत में, जइसे कृष्णपाद के 'दोहा कोश' पर 'मेखला टीका'। 'संदेश रासक' अपभ्रंश के बढ़िया काव्य रहे। कवि अब्दुल रहमान त कहले जे जे ना मुरूख होखे ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पंडित होखे, उनहीं लोगनि का सामने ई बार-बार पढ़वि—

जिण मुक्खु न पंडिअ मज्झियार
तिण पुरुउ पढ़िव्वइ सव्व बार।

मगर तीन गो टीका के पता चलल बा—दूगो त छपि भी गइल बा सब संस्कृत में। काहें? दू कारन से। पहिले त जइसहीं आवेगतरल सहज भाव का क्षेत्र से उठि के विचार का बारीकी का क्षेत्र में पहुँचल गइल अनुभव कइल गइल कि शुद्ध जनभाषा ई कुल करे के राजी ना होई काटलि-छाँटलि, गढ़ल-छीलल, कसावटवाली भाषा चाहीं। याने संस्कृत भाषा होखे के चाहीं। दूसर कारण ई रहे कि लोक भाषा के क्षेत्र होला। अगर दूर-दूर तक, विभिन्न भाषा बोले समझे वाला लोगनि विचार पहुँचावे के बा त सार्वदेसिक, भले कृत्रिम होइ, भाषा के सहारा के पड़ी। एही से लोकभाषा के साहित्य ढेर दिन जी ना सकल। ओतने, जेतना के कवनो बड़ा धार्मिक आन्दोलन के सहारा मिलल।

आधुनिक हिन्दी पहिले त लोकभाषा का रूप में चललि। बाकिर जइसे ओह में ज्ञान-विज्ञान के उच्चतर सूक्ष्म विचार आवे लागल तइसे-तइसे लोकभाषा के मूल गुण के ह्रास होखे लागल बा। अब धीरे-धीरे ऊ जे पावे लागल बा जवन पहिले संस्कृत के रहल। अबहियों ओकरा में नाइन कसाव नइखे आइल, मगर आ जाई। विद्वाननि आ विशेष जाति हाथ में पड़ि जाए से ऊ अभिजात सार्वदेसिक भाषा के रूप ले ले बाकि जहाँ तक ज्ञान-विज्ञान के सूक्ष्म चिन्तन-मनन-मूलक साहित्य के सवाल हिन्दी निश्चित रूप से सार्वदेसिक भाषा के रूप लिही। बाकिर जहाँ रागात्मक अभिव्यंजना के प्रश्न बा, अइसन शिकायति बहुत सुने में आवेली जे हिन्दी जन-जीवन से दूर होत जाति बा। एक तरह के बौद्धिक बढ़ोतरी पर बाइ। असल में हिन्दी के रागात्मक अभिव्यंजना उहें सफल जहाँ-जहाँ जन-जीवन में घुलल-मिलल भाषा, प्रतीक, बिंब, महावरा जन से लिहल जाई। ईहो प्रवृत्ति हिन्दी में बढ़लि बा। आंचलिक कहे जाए कथा-कहानी में ई प्रवृत्ति कुछ अधिक उजियार लउकति बा। बहुत लोग के प्रवेश भी बढ़ि रहल बा। लेकिन वेसी प्रतिष्ठा पावे वाला साहित्य साहित्यकार लोग धरती का ओरि ओतना नइखनि, जेतना आसमान का बाड़नि। एकर भारी प्रतिक्रिया भी हो रहलि बा। अब हरेक बोली के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ान साहित्यकार लोग, जन-भाषा का ओरि देखे लागल बा। अब एक तरह
क खिचड़ी पकावे के कारबार शुरू भइल बा, नाँव दिहल गइल बा आंचलि-
कता। बड़का-बड़का लोग कवे-ा वे ईहो कहत बाड़े जे ए से भाषा के नास हो
रहल बा। मगर कवनो असर त नइखे देखात। ई जन-भाषा के सच्चा प्रेम का
ओजह से हो रहल बा। एही से काफी मजबूत लागत बा। अब त हर बोली
के लोग कहे लागल बाड़े जे सही ढंग के रागात्मक अभिव्यक्ति ओही भाषा में
हो सकेला जवन जन-साधारण के आपन दुख-सुख के भाषा होखे। भिन्न-भिन्न
बोली में कविता-कहानी लिखाए लागलि बाड़ी स। अइसन बुझात बा जे ई
प्रवृत्ति बढ़ोतरीए पर जाई।

ई सब बिना कवनो कारण के नइखे होत। इतिहास विधाता का अंगुलि-
निर्देश पर होइ रहल बा।

जवना विशाल क्षेत्र के हिन्दी भाषा-भाषी क्षेत्र कहल जाला ओमें बहुत
बोली बोललि जालीं। ओमें केतना त हिन्दी का भाषाई ढांचा से निकट बाड़ी
स, केतना कुछ दूर बाड़ी स आउर कई गो त अति दूर बाड़ी। फिर कई बोली
में दीर्घकाल से साहित्य रचना में आपन निजी परंपरा रहलि हा। ब्रजभाषा
निकट त बाइ बाकिर ओकर साहित्य बहुत समृद्ध रहल। अवधी के त साहित्य
संसार में प्रसिद्ध बा। राजस्थानी के आपन समृद्ध परंपरा बा। मैथिली त
अब स्वतंत्र भाषा माने जाए लागलि। ओकर भाषाई ढांचा दूर के बा।
ओकरा दीर्घकाल से साहित्यिक परंपरा रहलि हा। भोजपुरी ना निकट के
ह, बा ना बहुत दूर के। साहित्यिक परंपरा एकरो कम पुरान नइखे। हिंदी
सबके आपन मानि के चललि। कुछ दिन त कहीं कवनों आवाज ना उठल
बाकिर अब बहुत जगह आवाज उठे लागल बा। जमाना अइसन जरे बुताए
लायक आइ गइल बा जे कवनो कहीं पत्ता खड़कल ना कि उहाँ राजनीति
पहुंचलि ना। भाषावर प्रान्त विभाजन के सिद्धान्त अलगाव के उकसावहीं में
मदद कइ रहल बा। जब केहू अपना भाषा के स्वतंत्र कहेला त पहिली शंका
ईहे होले कि अलग राज्य बनावे के कवनो दुरभिसंधि त ना ह। रउवां कतनो
किरिया खाईं जे हम खाली जन-जीवन के सही अभिव्यक्ति देवे खातिर ई
बात कहतानी, बुद्धिमान लोग ना मनिहें। 'मनवें में चोर बा, केहू के
ना जोर बा'!

ई त कवनो समझदार आदमी ना कही कि एक ठे शक्तिशाली केंद्रीय
भाषा ना होखे के चाहीं जे एतना बड़ा विशाल देश के एकता बनवले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

रहे । ओकरा के राष्ट्रभाषा कहीं, राजभाषा कहीं, संपर्क भाषा कवनो फरक नइखे पड़े के । एगो सामान्य सार्वदेशिक भाषा रहल बा । संविधान बनावे वाला लोग हिन्दी के चुनले बा । लेकिन बहुत बात के मानं क तइयार नइखनि । ऊ लोग हिन्दी नइखन चाहत । लोग जे अंग्रेजिए ऊ काम करो । उहे संपर्क भाषा रहो । थोड़ा सरम रहल हा बाकिर धीरे-धीरे अब सरम वाली बात मद्धिम परल जाति बा लोग खुलि क कहे लागल बाड़े जे हिंदी ना, अंगरेजिए सम्पर्क भाषा आउर रहे के चाहीं । कठिनाई ई बा जे एह देश के जनता अभी विदेशी ओतना गुलाम नइखे भइल । घूम फिरि के नजर जाति बा त हिन्दीए बड़का-बड़का लोग जे चाहो कहो, अंगरेजी देश के आत्मसम्मान के कइ के कबहूं ना चलि सकेले । चली त हिंदीए चली । हम कवनो नया बात नइखीं कहत । कुछ अंगरेजी प्रेमी लोग सोचे लागल बाड़े जे यदि एही परिस्थिति में रही त ओकरा के हटावल कठिन बा, काहे कि प्रान्तीय भाषा ओकरा आगे सार्वदेशिक भाषा का रूप में ना टिक सकी एह कारन से कोशिश ई हो रहल बा कि हिंदी के शक्ति तूरि दिहल जाय प्रकार के विचार के प्रत्यक्ष रूप अब दिखाई देवे लागल बा । हिंदी का गंत आवे वाली बोलिनि में अलगाव के भाव ले आवे के कोसिस हो बा । बाकिर जहां तक हम समुझत बानीं हिंदी भाषी कहे जाए वाला अस्त्र से घायल ना होइहें । अलग-अलग बोलिनि में सर्जनात्मक साहित्य लिखा जाइ आ हिंदी के राष्ट्रभाषा रूप के सम्मान भी दिहल जाई । भोजपुरी आदर्श सोगहग', बराबर स्वीकृत रही । बाकिर गलत ढंग से सोचे लोगनि से सावधान त रहहीं के परी ।

ठीक बात ठीक ढंग से सोचे के चाहीं । भोजपुरी ए कारण से भाषा ना हो सकेले कि कुछु थोड़े आदमी का मन में अइसन हुलास बा। एह कारण से ना मुरझा जाई कि कुछ लोग चाहताड़े कि ऊ कमजोर जाउ । सपूर्ण देश के बहुसंख्यक जनता के जवना से हित होई आ उसके के समर्थन मिली, उहे होई । हम का सोचत बानी आ रउवां का सोचे एकर महत्व तब होई जब एह सोचला मे देश के बहुसंख्यक जनता के होई आ ओकर समर्थन मिली। भोजपुरी के साहित्य के वाहन तबे जा सकेला जब ओहि साहित्य से भोजपुरी बोले वाली जनता के आकांक्षा का अभिव्यक्ति में सहायता मिले, ऊ कुछ अधिक सुख-सुविधा सम्मान पा सके । राष्ट्रभाषा हिन्दी से एकर कवनो विरोध नइखे । ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी का सोचे के चाहीं कि ऊ हिंदी के प्रतिस्पर्द्धी हो के रही। ठेठ भोजपुरी शूरता आउर निर्भीकता के भाषा हऽ, बन्धुता आउर सोहावं के भाषा हऽ। राष्ट्रभाषा हिन्दी भी ओतने आपनि ह जेतना भोजपुरी। दूनों आपन भाषा हऽ। दूनों के, देश का जनता के सेवा खातिर स्वीकार कइल गइल बा।

कबीर, तुलसीदास, कुंवर सिंह, भारतेन्दु के भाषा छोट उद्देश्य के भाषा कभी हो सकेले? ई सब लोग पूरा देश के, भीतर बाहर से एक आ अखंड करे के साधना कइले बा लोग। भोजपुरी कबहीं छोट बात में ना परल आ ना परे के चाहीं। राष्ट्रभाषा हिंदी हमहन के आपने भाषा हऽ। ओकरा के सजावे-संवारे में भोजपुरी के रक्त आ पसीना कम नइखे लागल। दूनों में लिखीं, दूनों में पढ़ीं, दूनों एके ह। दाहिनी आंखि आ बाईं आंखि में कवनो झगड़ा बा? ब्राह्मधर्म और छात्रधर्म में कवनो बैर बा?—इदं ब्राह्मं मिदं क्षात्रम् शापादपि शरादपि।

संविधान में कुछ भारतीय भाषा के मान्यता दिहल बा। बाकिर बहुत अइसन भाषा बाड़ी स जवना के मान्यता त नइखे मिलल बाकिर उनहनि में कुछ-ना-कुछ साहित्य निर्माण हो रहल बा। कुछ दिन तक साहित्य अकादमी संविधान में स्वीकृत भाषनि का साहित्य के पुरस्कार देति रहलि बाकिर एने आ के अइसन भाषा भी पुरस्कार वास्ते स्वीकार कइल गइली हा स जेकर कवनो चर्चा संविधान में नइखे। उद्देश्य रहल साहित्य निर्माण के प्रोत्साहन दिहल। कवनो भाषा राजनीतिक दृष्टि से संविधान के अंग ना होके भी उत्तम साहित्य दे सकेला। राजशेखर कहि गइल बाड़न जे उत्तम उक्ति-विशेष काव्य कहल जाला, ओकर भाषा कोई भी हो सकेला। एह बात के आउरो बढ़ाइ के कहल जा सकेला कि रागात्मक संबंध के उजागर करे वाला साहित्य कवनो बोली में लिखल जा सकेला। एही से अब साहित्य अकादमी अइसन अनेक बोली के साहित्य के पुरस्कार दे रहलि बा जेकर मान्यता संविधान में नइखे। शुरू-शुरू में हमरा ई बात बहुत अच्छा ना मालूम भइल। ई डर बाइ जे आगे चलि के ई बात राजनीतिक उलझन पैदा करी। मगर अब त साहित्य अकादमी धड़ाधड़ बोलिनि के मान्यता देत जाति बा। अब मगर सब बोलिनि में पुरस्कार प्राप्त होखे लागल त भोजपुरी, अवधी वगैरह शक्तिशाली बोलिनि के काहे उपेक्षा होई? हम समझतानी जे जब आउर बोलिनि के साहित्यिक मान्यता मिलि गइल त भोजपुरी के भी अवश्य मिले के चाहीं। एह भाषा के जे प्रतिभाशाली कवि, कथा-लेखक बाड़नि उनहूँ के पुरस्कार जरूर मिले के चाहीं। राष्ट्र के दसवां

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हिस्सा लोग जवना बोली के बोलत बा, आपन दुख सुख आशा आकां
अभिव्यक्ति दे रहल बा, ओकर सम्मान होखहीं के चाहीं। बाकिर ई
साहित्यिक प्रस्ताव हऽ। एकरा साथे राजनीतिक सौदाबाजी ना होखे के
केहू का मन में ओइसन बात होइ त तुरन्ते मन में से ओके हटा देवे के

फेरु हम आप लोगनि के यादि दिलाईं जे हिन्दी आ भोजपुरी के
समझि के काम करे के चाहीं। दूनों के दुइ मनले झंझटि पैदा होई। हि
जी कहले रहलीं जे 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा, तं तैसन जंपों अव
देसिल बयन आपन घर के बोली हऽ। अवहट्ठ सार्वदेशिक भाषा हऽ। आ
युग में ऊहे हिन्दी बा। विद्यापति जी के कहनाम रहे कि जइसन देसिल
तइस अवहट्ठ (परवर्ती अपभ्रंश) हऽ। 'तइसन' ! कवनो भेदभाव ना
चाहीं। विद्यापति जी दूनों में लिखले रहलीं। हमनो का उहे मानि के
चाहीं। मउजि आइल त 'तैसने' हिन्दी। हमन के दूनो भाषा आपने
क्षेत्र के भोजपुरी लिखे वाला साहित्यकार भी नमस्य बाड़े आ हिन्दी
वाला भी प्रणम्य बाड़े। भगवान सबकर कल्याण करसु।

—हजारी प्रसाद

कर्म प्रेस, लोदीपुर, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

तिसरका अधिवेशन
(सीवान)

के

अध्यक्ष

डॉ० भगवतशरण उपाध्याय

के

अभिभाषण

सीवान

२९ अक्तूबर, १९७७ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, सीवान, के अधिवेशन के संयो-
क, कार्य-समिति के सदस्य, प्रतिनिधि अउर इहाँ पधारल सभे जन-गन के हाथ जोरि
परनाम करतानी। रउआँ जवन अध्यक्ष के ई भारी पद हमरा के देके हमार जस
उगत बढ़वली हैं ओकरा खातिर हम रउरा सब के गुनगाही बुद्धि के त नइखीं सराह
कत बाकी आप सबके उदारता के जरूर सराहत बानी। साँच पूछीं त उदारता
भी बढ़ि के एमें सराहे के बात आपके साहस के बा जो अइसन आदमी के ए पद
र पधरवलीं जे एको अच्छरि भोजपुरी में ना लिखलसि, आ बोले के त ओकर ई
हिले मोका ह। बाकी मंदिर में जब पत्थल के मूरति पधरावल जाले त ओकर ग्यान
ा देवताइ ना देखल जाला। अरे ऊ त ओके पधरावे वाला ही ओमें देवता के प्रान-
प्रतिष्ठा कइ देला अउर पत्थल के ऊ मूरति देवता होके पुजाये लागेले। त हम, त
अपना के ऊहे पत्थल के मूरति समझतानी। हँ, ई जरूर देखे के बा कि ए मूरति में
कहाँ तक आप सब देवबुद्धि के स्थापना कइ सकल बानी। देखीं, हमार गेयान थोरे
बा, बाकी हम जानतानी जे आपके धीरता ओ से जबर बा, एह से हम ईहें आप सब
से अरज कर तानी कि किरिपा कइ के हमके थोरी देर सहीं—हमके, हमरा गलत-सही
अटपट भासा के, हमरा 'अधजल गगरी' गेयान के, अउर सबसे ज्यादा हमरा अगराइल
अकचकाइल भाग के। दूर हिमालय से बोलवला पर हमके सहहीं के परी।

हम हिमालय का पच्छिमी छोर से आवतानीं, रिखीकेस-हरिद्वार-कनखल का
रे से, देहरा का दून से, देश का पहरुआ का द्वार से। उमर भी थाकि चलल। शेर
याद आवता—

मंजिल की सख्तियों ने डराया बहुत मगर
आवारागाने शौक न माने किसी तरह!

और चल पड़लीं। उहाँ देहरादून में हमसे भोजपुरी बोले वाला बस एक ही
आदमी बा—पंडित गया प्रसाद शुक्ल। उनसे हमार सदा भोजपुरिये में बतकही होले।
घर का भीतर के बोली अंगरेजी ह, कारन कि केरली पत्नी केवल अंगरेजिये बोले-
बुझेली, हिन्दी बोलेली त ओकर छेछा-लेदर होखे लागेला। ए से जब सुकुल जी आ जा-
लन त जइसे बरत टूटि के पारन होखे लागेला। जीव छछात रहेला जे केहू भोजपुरी
बोले वाला मीलि जाइत। याद आवता एक बेर दखिनी फ्रांस का जात्रा पर रहलीं, इटली
से पेरिस जात रहलीं। आधी रात के, जब घोर निंद्रा में सूतल रहलीं तबे गाड़ी इटली
के सरहद पार कइलसि। एगो बर्थ पर हम रहलीं एगो पर एगो नौजवान गोरा रहे।
पास्पोर्ट देखे वाला अफसर आइल। अंग्रेजी में बोलि के हम ओके आपन पास्पोर्ट
देखावे लगलीं। तबतक दुसरा बर्थवाला नौजवान—जवन पाछे जनलीं कि अमेरिकन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

ह—अकचकाइल ऊठल और कूदि के हमरा गरे लागि गइल, कहलसि कि हमरा कि अंग्रेजी सुने के मीलल। तीन महीना से फ्रांसीसियन का बीच में रहली हमरा कम्बख्त जवन अंग्रेजी जानेले स तवनो ना बोलस। आपन भासा सुनि के मन गइल। ईहे हाल भइल इटली का जेनोआ नगर में। अस्पताल का सामने वाली पर जइसहीं अइलीं कि एगो नर्स दउरल आइल, कहलसि—कुछ इतालवी कुछ में—कि एगो अंग्रेज अपेंडिसाइटिज से मर रहल बा, ओकर साध वा जे मरे का वक्त केहू दू सब्द हमरा भासा के बोलि दे। हम गइलीं। जइसहीं पहुंचली ओ नौजवान में नया जान आ गइल। दम ऊ हमरे गोद में तुड़लसि पर मरत कहलसि कि धनि भाग जे ए विदेस में हमके हमरा बहिन-महतारी के बोलेवाला मीलि गइल, अब हम खुसी से मुअबि, इचिको कलेस ना होई, हम अमेरिका में कई साल आपन भाषा बे बोलले रहि के जब स्विटजरलैंड पहुंचली बर्न नगर में भारतीय दूतावास में डाक्टर सत्यनारायण सिंह का साथे भोजपुरी बतिया-बतिया के अघा गइलीं। त भासा के ई सक्ति ह!

हम आप सबसे साहित्य का बिसय पर कुछ कहे के चाहतानी। एह संबंध में एक से एक पंडित अपने का सम्मेलन में बोलि गइल बाड़े, ओकरा ओ लोगन से सुनलहीं होखबि, आगे भी और लोगनि से सुनवे करबि। हम अटपट 'भणिति' कहे के अनुमति दीं, ओके सुने के आदर देईं, अनुग्रह से निहाल हो जाइबि।

सब्दन से भासा बनेले, पर सब्द भासा ना ह। एही तरे भासा से बनेला पर भासा साहित्य ना ह। अगर भासे साहित्य होइति त ओह अनेक देसन के भासा भी साहित्य कहइती स जहाँ भासा बा पर साहित्य नइखे। कवन चीजु ह भला जवना का पइठि गइला से भासा साहित्य हो जाले? इन्सान, लोग। सभे भासा के साहित्य मनुष्ये बनावेला, पर सब साहित्य साहित्य ना हो जाला, या कवनो घटिया कवनो उत्तम कइसे हो जाला? काहें कि घोड़ा कुत्ता जाति नियर मनुष्य जाति त ओके बनावेला पर मनुष्य ओ में पइठे दरद के साथ, वेदना-संवेदना के साथ मनुष्य ओमें पइठेला तब भासा बनेले। ना त केतना हरियल आ हंस सुरइ ताल में रोज मारल जा रहल बा वाल्मीकि जनम तारे? अरे जे क्रौंच-बध से द्रवे, अइसन जन जनमे तब के संज्ञा मिली, चरितार्थ होई। आदमी त सभे जनम लेला पर सभे आदमी हो जाला। कइसे गालिब कहले—

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना
आदमी को भी मोअस्सर नहीं इन्साँ होना!

और इन्सान बनल भी कवनो आसान बात ना ह—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भत सहेल हमें जानो, फिरेता है फ़लक बरसों
तब खाक के परदे से इन्सान निकलता है !

जे भाव-जातना-संवेदना अइसन संस्कारन से सजल ना ऊ इन्सान कइसन ? रा त करिया कोइला से बनेला पर संस्कार से हीरा होला। संस्कारे से सोना इसन हो जाला जे कसौटी पर कसल जा सके। इन्सान के एही सरूप के महाभारत खे वाला महामना व्यास चिन्हले, जब तैंतीस कोटि छछात देवता का रहत, लान कइले—

गुह्यं तदिदं ब्रह्म ब्रवीमि
न मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किञ्चित्—

गूढ़ बाति कहतानी, भगवान व्यास कहताड़े, छछात ब्रह्म-वेदे कहतानी, नि के कहतानी, गाँठें बान्ह—मनुष्य से बढ़ि के, ओकरा ले ऊँच, एह धरती पर सर केहू नइखे !

एही से न 'हिन्दुस्तान हमारा' वाला इकबाल भगवान से धिक्कारि के हले—ऐ खुदा, देख तो तूने हमें क्या दिया और जो तूने हमें दिया उसे हमने क्या ना लिया ? तू ने हमें पहाड़ दिये, हमने उन्हें काट-तराश कर रहने के लिए अपने र बना लिये; तूने हमें जंगल दिये हमने उन्हें काट-छाँट कर उपवन बना लिये; ने हमें सूखी-पथरीली ऊसर धरती दी हमने उसमें अन्न की बालें उगाकर लहरा दीं; ने हमें मिट्टी दी हमने उससे रकाबियाँ-तश्तरियाँ बना लीं; और खदा, तूने जुल्म या जो हमारे लिये अँधेरी रात बना दी पर इन्सान की औलाद हम कि हमने से भी मंजूर किया पर बदले में हमने चिराग बना कर जला दिया, खल्क को शन कर दिया !

अइसन इन्सान जब दर्द का साथे अपना भणिति में पइठी तब कहीं ऊ भणिति ाव्य कहाये जोग होई, साहित्य कहाई। साहित्य बरना केवल भासा के चमत्कार ा शैली के रंगारंग चूनर ना ह। 'सुगना बसे पहाड़ पर हम जमुना के तीर!' दूर के ासी 'सुगना' आ जमुना तीर के बासी 'सुगनी' के मन जब मीत बनि के, एक होके मी, तब जाके साहित्य बनी। फेड़ पर रहेवाला मुआ का हिया में, लोककथा में हल जाला, जब केहू के हियरा बसेला, अइसन, कि एगो के जान छुअला से दूसरको ड़पे लागे, तब साहित्य बनी।

और जियरा के तड़पला के बात आपसे का कहीं ! गाँव के गवाँरिन के बात नि के एक दिन हम सन्नाटा में आ गइलीं। सरहजि-ननदोई का बीच हँसी के बात नलीं—सरहजि जबाब में कहलसि—बतिया त साँचे कह ताड़ हो, बाकी ई हमके ताव कि लड़ेले त नजरिया आ बथेला करेजवा काहें ? हमरा त लागल कि हजार ाल अवर अमरु, हजार बिहारी आ मतिराम ए पर वारि जइहें !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हिन्दी, अँगरेजी फ्रेंच, रूसी आदि अनेक भासा के कवितन के ऊपर परल, पर, बचपने में जवन असर हमरा पर भोजपुरी का 'बटोही' परल तवन अपरंपार बा। आजो हमरा पर ओकर असर ओतने तगड़ा गहिरा बा जतना बचपन में रहे। हम ओके अपना पढ़ल साहित्य का सबसे शाली कवितन में मानी लाँ। इहाँ तक कि प्रौढ़ बयसि में हम अपना एगो हि नामे सन् पचास में रखि दिहलीं—तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया!

शक्ति, प्रभाव आ प्रेरणा तीनों के खानि ह इ कविता। पर जइसे निकट हो के भी, मर्म होके भी, आँखि अपना के ना देख पावे ओइसहीं निकट के भइला से सायद रउरा सबका ओ पर ओइसन ध्यान ना जात होई जइसन कवितन पर जाला। हम त कहतानी कि जो हम बिदेसी रहितीं और भोजपुरी झत रहितीं त अकेले 'बटोहिया' पढ़ला-सुनला का बाद हम भारत खेंचि आपन घर-दुआर बेंचि के चलि पड़तीं—पढ़ले तो आप सब ओके होखब एकाध लाइनि फेर सुनीं—

सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देसवा, से
मोरे प्रान बसे हिम-खोह रे बटोहिया!
एक द्वार घेरे राम हिम-कोतवलवा, से
तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया!

जवना के अंग्रेजी में 'साउंड एकोइंग सेन्स' कहल जाला, ध्वनि-जेकर अर्थ गूँज उठे ऊ महाप्रान के जगावे वाली लाइन ई ह—

तीन द्वार सिंधु घहराय रे बटोहिया!

कुछ भासनि के एकाध पंक्ति एही बिधान के अनुसार हमरा याद बा जइसे मैथिली शरण गुप्त के—

जाग रहा है कौन धनुधर जब कि भुवन भर सोता है? जैसे अकेले लाइन में एगो समूचा 'एपिक' खड़ा हो गइल बा। आन्हर कवि, जे बिना देखले, होमर केवल ध्वनि मात्र का प्रेरणा से भोजन-युद्ध के वर्णन अपना 'ईलियद' में कइलसि—

Tumult on top of tumult
And gods chasing the heels of mortals!

अर्थ कइला के कौनो जरूरत नइखे। हम करबि, केवल ध्वनि सुनाइबि—दुष्यन्त के, शकुन्तला का चलि गइला का बाद, अपना हिया के—

प्रथमं सारंगाक्ष्या प्रियया प्रतिबोध्यमानमपि सुखम्।
अनुशयदुःखायेदं हतहृदयं सम्प्रति विबुद्धम्॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुःख के वेदना का ध्वनिये से नइखे ब्यापि जात ? एपिक के सरूप देखावे
तिर ई ध्वनिये काफी बा, जैसे गोसाईं जी के भरत का विसय में महाप्राण के
योग—

जो न होत जग जनम भरत को
सकल धरम-धुर धरनि धरत को ?

'सकल धरम-धुर धरनि धरत को ?' ओही 'एपिक' रूप के सरूप ह। हम
नानी जे हमरा देस में 'एपिक'—वीरकाव्य-महाकाव्य एतना तादाद में काहें
खल गइले—ग्रीक में दू गो-तीन गो, लातीनी में एगो, इतालवी में एगो, अँगरेजी
दू गो, फ्रेंच में एगो, जर्मन में एगो—पर भारत के महाकाव्यन के जो गिनावे लागीं
पारना लागी। से काहें ? काहें से कि एकरा तीन ओर गहिर-गंभीर सागर घहराता,
उत्तरी ओर संसार के सबसे ऊँचा सबसे लमहर पर्वतमाला वा हिम के मुकुट पहिनले,
हरा नीला खुला आकाश अइसन दूसर कहाँ बा जेवना के रूप के अनंत बिस्तार से
धरती के पुरुखा विष्णु के सँवरिया रूप सजले ? एक के बाद एक ऋतु और कहाँ एतना
संजम से आवेली स ? भला 'सुबहे-बनारस, 'शामे-अवध,' 'शवे-मालवा' और कहाँ
बा ? एह सब का पृष्ठभूमि में फेर एक बेर पढ़ीं 'बटोहिया' के। हम त संजम का
साथे, अत्यंत मीठ से बचाव करत, केवल कुछ ही पंक्तियन के बोलतानी—

जाहु-जाहु भैया रे बटोही हिन्द देखि आउ
जहवाँ कुहुकि कोइलि बोले रे बटोहिया !
पवन सुगन्ध मन्द अगर चननवाँ से
कामिनी बिरह राग गावे रे बटोहिया !
तोता-तूती बोले रामा बोले भेंगरजवा, से
पपिहा के 'पी-पी' जिया साले रे बटोहिया !

ए कविता में से पंक्ति चुनल कठिन समस्या बनि जाता, कारन कि हर लाइन
जानदार बा, पूरा कविते उल्लेख जोग बा। काहें ? काहें कि कवि के जियरा अपना
प्रतिपाद्य से एकाकार हो गइल बा, ओमें बसि गइल बा—हिमालय में, हिन्द सागर में,
गंगा-जमुना में, देस का पंछिन में, बिरहिन में। एही स्थिति से प्रभावित गुप्तकाल के
कवि वत्स भट्टी अपना मन्द सौर का कविता में भारत माता के वर्णन करतारे—

चतुस्समुद्रान्त विलोल मेखलां
सुमेरु कैलास बृहत्पयोधराम्।
वनान्त वान्त स्फुट पुष्प हासिनीं
कुमार गुप्ते पृथिवीं प्रशासति ॥

माता के पयोधर दुनों सुमेरु आ कैलास, चारों समुन्दर घहरात करधनी, आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

समूचा तन बन-परम्परा से बनल, जवना में भाँति-भाँति के फूल निरंतर बाड़े स, जवना का ब्याज से भारत माता मुस्का रहल बाड़ी। त याद रखी तक कवि अपना भाषा और भाव में, अपना प्रतिपाद्य में जीही ना तब कविता जनगर ना हो सकी।

संसार के प्रसिद्ध दार्शनिक बर्ट्रेन्ड रसेल से एक बार हमार बतकही ऊ संस्कृति और साहित्य का बिसय में अपने लिखल बाति दोहरवले सबके निर्माण तीन चीजु का संमिलन से होला—प्यार का पुकार से का खोज से, और सकल जीवधारियन के प्रति संवेदना से। मतलब कि पुकार से' साहित्य बनेला, 'गेयान का खोज से' दर्शन आ विज्ञान, आ संवेदना का संगम से संस्कृति। तब हमरा पूछे के परल कि पच्छिमी साहित्य में पुकार' त बा, 'गेयान के खोज' त खूबे बा, पर भला साहित्य में सब प्रति संवेदना कहाँ बा ?

हमरा इहाँ त साहित्य के पिता बाल्मीकि के आदि काव्य के जनमे भइल। सौ-सौ उदाहरन हमरा इतिहास में बा जेमे समरथ लोग कहले बा कि राजपाट ना चाहीं, इहलोक-परलोक के सुख-स्वर्ग भी ना चाहीं, मुक्तियो ना चाहीं हमके बस एके चीजु कि संसार के जीव मात्र दुख-दर्द से छूटि जायें, जायें। हम बतवलीं कि का बाल्मीकि, का कालिदास, सभी कवियन का मन कन का दुख में जीव-जन्तु, तरु-पल्लो तक दुखी होखेला। जवन मनुष्य अपना खातिर चाहता ऊहे दुसरो खातिर चाहता—ओकर भौंरा फूल ओके प्याला नियर बना के ओमे मधु यानी शराब भरता, फिर भौंरी के पहिले पिया के आधा बाँचल जूठ अपने पियता। हथिनी से सुगंधित जल पहिले अपना मुँह में ले ले तीया फेरु ऊ अपना मुँह में उँड़ेल देत बिआ, हाथी आपन प्यार परगट करे खातिर हथिनी का पीठ पर रखि देता। चकवा कँवल के डंडी तूरि के पहिले अपने कि कहीं कड़ुआ ना होखे, चकवी के खाये के देता। कामदेव बसन्त के का बाटिका में जाता पर शकुन्तला के निकाल देला से दुखी राजा के देव के सिपाही कौनो वार करे के तैयार नइखे होत—आम बौरा गइल बाड़े के कोठ पराग से भरि गइल बा, इचिकी कोठ खोल दे त चराचर गमकि जाई ऊ कोठ नइखे खोलत, काहें से कि मानव-दुष्यन्त दुखी सामने बा। कुरबक जाति तक कलिया गइल बा, पर एक्को कली खिल के फूल होखे के तैयार नइखे, दुखी मानव सामने बा। सरद् ऋतु के बितते अनायासे कोयलरि के कंठ और इहाँ सरद् कबके बीति गइल बाकी कोइलरि कंठ में आइल बानी देति बा, फूटे नइखे देति, काहे कि दुखी दुष्यन्त सामने बा। अब कायदे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परो, से ऊ घबड़ा के अपना तरकस से आधा खींचल बान तरकसे में उलटा लौटा ! त भाई सभें, इहाँ के साहित्य के परमान त ईहे ह, कि आदमी त दुसरा के चहबे करी, पसु-पछी, पौधा-पल्लो भी आदमी का दुख दर्द से दुखी होखे लागे। मनुष्य प्रकृति से सहचार ना करी त भला ऊ 'अशरफुलमखलूकात'—सृष्टि के महान् जीव कैपे कहाई

अब ए दृष्टि के, ए परमान के, भोजपुरी साहित्य पर घटा के देखल जाय, गंगाजी के गीति लेलीं, बिआह, जनेव के, बिरह के लेलीं, सोहर, बारहमासा सब भाव परधान मिलीं जेके सुनि के आँखि छलछला आयी। पच्छिम खड़ी का इलाकन के गीति सुनले बानी—अरे अँगरेजने इंजन चलाया रे, गाड़ी यी रे, पानी का बंबा चलाया रे—अरे राम गीतो के दुर्गति ! इहाँ भोजपुरी गीति सुनि के सोफियाना से सोफियाना आदमी डहरि में रुकि के सुनि के निहाल जाय। पर एगो बात बा, तनी कान देके सुनीं—

कालिदास कहले जे पुरान सभे ठीक नाहीं ह, और न कूल्हि नया खराबे ह। हम जो भोजपुरी के नई कविता पढ़तानी त लागता कि पुरनके सूधर बा। का लागता कि खड़ी बोली के कवितन के निचोड़ ह, छाड़न नियर। कवि लोग खता कि भासा बदलि गइला से सब बदल गइल। और हाल बा ऊहे खड़ी बोली निर्दिशा, दिग्भ्रान्त स्थिति। कहीं-कहीं पुरान बारहमासा के चासनी। हम कह-ी कि जेकरा पास कबीर और घाघ के धन बा उहाँ ओ लोगन के सुर काहें नइखे बत ? 'जो घर जारै आपना, चले कबीरा साथ' के ललकार या 'पंडित चुप-चुप चा भइल' के बोध कहाँ बिला गइल ? विश्वविद्यालयन वाला कवियन से अच्छा त रा लागता जे प्रकृत देहाती कबि बाड़न। सुनी ले कि बनारस के एगो कजरीकार नों बड़कवा से एक बेर नाराज हो गइल और अइसन कजरी लिखलसि कि उनकर र निकलल कठिन हो गइल। हमरा बस एके-दू डाँड़ी याद बा पर ओतने असा-रल चुटीला व्यंग बा—

खाये के चाहीं सकल पदारथ
बतियावै के गबर गबर।

देखीं कि भोजपुरी में केतना शक्ति बा। बड़कवा के उघारि के धइ दिहलसि। ी 'के बदमाश-दर्पण' त लामिसाल बा जवन कविता का गहराई में त पइठिये गइल भोजपुरी द्वारा ओह घरी के समाज के उघारि के रखि देता।

भासा पर भी, साहित्य का भासा पर, कुछ कहे के चाहतानी। काहें कि हित्य सिरजल भासा में जाला, भासे में सोचल भी जाला। रउरा परतिया के ब लीं; बिना भासा के सोचि ना सकीं। पहिले जबतक भासा ना रहे तब तक विचार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भी ना रहे, जब भासा भइल त बिचार गुनाये लागल। बिचार भासा में चढ़ि के ही मानस में परगट होला। जवना भासा में भोजपुरी कविता लिखल जा रहल बा ऊ बनावटी लागता, बनावल, प्रकृत ना। भोजपुरी में ओकरे हो के नइखे लिखल जात। साहित्य बनावटी बोली ना ह, ऊ पूरा तहजीब ह, लोक-दसा के। सबकाँ ओमें समाये के चाहीं। कई बार बुझाला कि खड़ी बोली का सब्दन के भोजपुरी अवतार सामने बा, आ हिन्दी सरकारी सब्दावली समझे खातिर मूल अंग्रेजी के याद करे के परेला 'अधिशासी अभियन्ता' के माने समझे खातिर कौनो संस्कृत के कोश ना अंग्रेजी मूल 'एग्जिक्यूटिव इंजिनियर' याद करे के परी, आ जैसे रेल में शौचालय का जगह 'प्रसाधन' लिखल देखि के संस्कृत वाला अकचका पर बिजुली गिरि परी, काहें से कि संस्कृत साहित्य में एकर खूब-खूब इस्तेमाल का अर्थ में भइल बा, बाकी ओके बनावे वाला त संस्कृत के छोड़ि के अंग्रेजी का 'ट्वायलेट' के अनुवाद कई दिहले! भोजपुरी में म्परा ना डाले के चाहीं। नया बाहर से आओ, जरूर आओ, आई समृद्ध कइसे होई? पर छाड़न-छोड़न का रूप में भासा आ भाव मति भोजपुरी सब्दन के भी उपयोग से सब्द सक्ति बढ़वला के काम वा जवन

भासा में हमरा कवनो खोट नइखे। वाक्य एह से केवल तत्सम लेके पूरी इबारत बनाके केवल क्रियापद भोजपुरी जोड़ दिहला से भासा हो जाई। बात सही बा जे भासा क्रियापद से ही बनेले, सेस सब्द कवनो भासा भासा होखे के चाहीं सब्दन के जोड़ ना। जब इटली के महाकवि महाकाव्य 'दिवीनो कोमेदिया' लातीनी छोड़ि के इतालयी में रचलनि तत्समवाला झगड़ा खड़ा हो गइल जवन आज हिन्दी में बा और ओकरे भोजपुरियो में घर करि रहल बा। इटली में चार सौ साल तक ईहे समस्या दे ला लिंगुआ' नाम से चलल। आखिर शुद्धतावादी लोगनि के आपन जन बोली 'लोम्वार्द' स्वीकारे के परल। मगर एकर मतलब ईहो बा मतलब के सब्द तत्सम ना लिहल जाय। पर ऊ तत्समें रूप में लिहल जाय से मूल के अर्थ से सिलसिला कायम रही। जइसे 'समस्या' के 'समस्यो' बिगाड़ के इस्तमाल कइला के जरूरत नइखे और न भोजपुरी सब्दन के ना त ऊहे बनारस 'वाराणसी' वाली बात हो जाई, गोया 'बनारस' भारत ना अंग्रेज बनवले ह स। अरे 'रे' और 'ण' के एक साथ उपयोग के इहे वाराणसी स्वभाव से ही 'बनारस' हो गइल।

हमरा पास आजकल किसिम किसिम के भोजपुरी के पत्र-पत्रिका आउर कहानी-संग्रह आ रहल बाड़े स। उन्हनी के पढ़ि के एगो अवर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन में पइठल—अनेक बार स्थानीय सब्दावली के प्रयोग अधिक कइल जा रहल बा। एगो बगसर से कहानी-संग्रह आइल। निकहा-निमन संग्रह। कहानियन के वस्तु-विसय लब मजगर, बाकी ओमें सब्दन के चुनाव-उपयोग अइसन निचाट बगसरिया-दखिनहा रहे कि समनहीं गंगा पार उजियार के रहे वाला हम आउर जहाँ-तहाँ मतलब ना समुझ पाईं, हुमचि के जब सोचीं तब समुझि आवे। हमरा डर बा जे स्थानीयता-आंचलिकता से भासा का अबूझ हो गइला से सायद ओकरा परचार के आघात पहुँची, सायद ओकर बिस्तार संकीर्ण हो जाई।

ना त भोजपुरी के सीमा रउरा चाहे जेतना खींचीं ओकर बिस्तार साधारन नइखे। अउर ओहू से अधिक बिस्तार ओकरा परभाव के बा। रउरा हजार मैथिली कहीं मगर हमरो कहे में कवनो परहेज नइखे जे विद्यापति हमरो हउअनि, हमरा बोली भोजपुरी से परभावित। सोचीं तनी—जनम अवधि हम रूप नेहारल नयन न तिरपित भेला—एमें 'भेला' 'भइले' के न फरक बा? भला—

नव वृन्दावन नव नव तरुगत नव नव विकसित फूल
नवल वसंत नवल मलयानिल मातल नव अलि कूल—

अउर 'झड़प' जी का तत्सम प्रवण 'नटराज' का रूप में का फरक बा? या प्राचीन साधक भुसुकिपाद के ही लेलीं —

आज भुसुकि बंगाली भेली
चंडाली निज घरनी केली

भला भोजपुरी और एमे का अन्तर बा? खैर, ई बात हम परभाव के संबंध में कहतानी। आ परभाव छोड़ भोजपुरी के उपयोग त हो मारिशस, फीजी से पूरबी अमेरिका-सुरिनाम तक फइलल बा। नागपुर का विश्व हिन्दी संमेलन में जहाँ देस-देस के लोग आइल रहे और ओ लोग के हिन्दी का दायरा में लीहल गइल ऊ दायरा वास्तव में भोजपुरी के ह, जदपि हिन्दी से भोजपुरी का कवनो बिरोध नइखे, जवन भोजपुरी के छेत्र ह तवन त हिन्दी के क्षेत्र हइये ह। उहाँ बिदेशी भोजपुरियन से विचित्र सगम भइल। एगो गोरा अमेरिकन—खाँटी अमेरिकन—कबिता भोजपुरी में पढ़लसि कि 'हम त भोजपुरी में कबिता करीले, करबे करबि, करते रहबि!'

जहाँ तक परभाव के बाति बा त ऊ त अइसन बा कि जवन पाली-अर्ध मागधी भोजपुरी के पुरखिन कहल जाले—हालाँ कि हमार बिचार ओह संबंध में दूसर बा, कि ऊ पुरखिन तब के जन बोली ह—आ जवना में बुद्ध महाबीर उपदेस कइलनि ओही के बिरवा आज श्रीलंका में लागि के सिंहली के अश्वत्थ बनि गइल बा, और अगर पटनहिया-भोजपुरिया सिंहली सब्दन पर तनिक बिचार करे त ओके समझे लागी। अरे हम रउरा से का कहीं—रूस का दखिन में जिप्सी-बन्जारन का एगो बूढ़ से पुछलीं—भोजपुरिये में—कि 'रोम?' यानी कि तूँ 'रोम' हउअ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पाणिनि के सूत्र 'रलयोरभेदाः' के सोचि के। ऊ बूढ़ जिप्सी झट से कहलसि कि रोम दराज़।' और रोमानिया की ओर हाथ उठा दिहलसि। फिर हम पूछ तब का 'लोम ?' जवाब दिहलसि कि "नेइ, लोम फिलिस्तीन, हम त 'डोम', 'कुरइया वाला डोम' !' हम दंग कि 'डोम' त ठीक, बाकी 'कुरइया वाला' का ? तेही आजी के एगो पुरान व्यंग याद परल—जे ही के बबुआ, तेही के दाना, तेही के बस सब उँजियार हो गइल। पुछलीं, दउरी-सूप-कुरूई वाला डोम-वँसफोर? मिलल जे 'हँ, हँ, नाट—डोम।' सोचला पर याद परल कि जे के ई 'नाट' रसरी पर चढ़ि के नाचे वाला 'नट' ह। अकारन नइखे जे मनु अपना स्मृति नाटक में भूमिका खेले वालन आदि के भी डोम का साथे अछूत मानले मतलब कि हमार भासा बड़ा जनगर बा, ओके आंचलिक मति बनावल जाउ।

और जहाँ तक तत्सम सब्दन के अनुवाद के सवाल बा ओहू में रहला के जरूरत बा। सब्दे के ना, हम त चाहब जे बिश्व के और सबसे पहिले के साहित्य अनूदित होके भोजपुरी में आ जाय, पर सावधानी से, अर्थ के अनर्थ ना। एगो घटना लखनऊ के याद आवत बा—एगो पछिमहा कवि निराला बार बार कहि के अति कइ दिहले कि हम रामचरितमानस के खड़ी अनुवाद कइ रहल बानी, आदेस पाईं त सुनाईं। निराला जी कहले कि कवि जी सुनवले—

मूल—रघुपति कीरति विमल पताका
दण्ड समान भयऊ जस जाका
अनुवाद—राम सूर्य कुल की हैं झंडी
लक्ष्मण उस झंडी की डंडी

अभी उनका पढ़ला के आवाज गुँजते रहे कि केहू देखल केहू देखबो न बाकि सूनल सभे निराला जी का थप्पड़ के आवाज तड़ाक से कबि जी का गाल

हमरा जब-जब समय मीलेला तब-तब हम, लिखला के थकान मेटावे फिल्म देखे जाईलाँ। संसार के करीब-करीब सभी भासन के फिल्म देखे मौका मीलल बा। बाकी हिन्दी के सगरे फिल्मन में हमार मन जवन तवन ह भोजपुरी के 'बिदेसिया'। हम एतना लिखलीं पर फिल्मन पर लिखलीं। बाकी बिदेसिया देखला पर मन के ना रोकि सकलीं और ओ लिखलीं। और भी भोजपुरी फिल्म अपना सम्प्रेषण शक्ति में बाड़ी स।

एक बात आउर कहबि। मन-कान लगा के सूनि लीं—दार्शनिक कहीं महान होला, काहें से कि दर्शन जहाँ ऊपर की ओर तर्क का जोर से उहाँ सन्त बानी चारू ओर फइलि के ढाई अक्षर वाला प्रेम से छू लेते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निक सहराती रहले, कुल्हि सन्त जनपदी देहाती। दार्शनिक देवभाषा में लनि सन्त मानुस बोली में। एही से जहाँ शंकर ना समझल गइलनि उहाँ बुद्ध-बीर समझल गइलनि। आ जब ओही लोगन के आचार्य दार्शनिक भासा में लगलनि, जनपदी भासा छोड़ि दिहलन त दूनो धरम जइसे देहात से बिला ल। गोसाईं जी, कबीर, रैदास बनल रहिहें।

हमरा देस में कथनी अलग करनी अलग बा। लोगवा कहता कि हम च बरिस में देस से छूआछूत, बाम्हन-डोम के भेद हटा देइबि। आ ऊ कइसे कि ल का आगा से उपधिया, पाँडे, राय, सिंह, सहाय हटा के। भला हम पूछतानी बाल्मीकि, ब्यास, कालिदास, भवभूति, तुलसी का नाम का आगे पाँड़े लागल ा कि शर्मा-वर्मा ? तब का जाति-पाँति ना रहे ? सवाल ई बा कि आपन या अपना बेटा-नाती के बिआह रउराँ दुसरा, बिसेस कर नीच कहाये वाली, जाति में रे के हिम्मत बा ? कइले बानी ? ना, त जाये दीं, झूठ के पेरी मति।

अब अन्त में, हमार मान्य श्रोता लोग, हम बहुत बोललीं, आप बहुत सुनलीं। सुनेवाला बोले वाला से सदा महान होला, काहें कि ऊ बोलेवाला के बरदास्त कइ लेला, सहि लेला। से रउराँ हमरा के बहुत सहलीं। हम अपना सब के धीरज कबी भुलाइबि ना। हम बोललीं, आप सुनलीं, हम निहाल भइलीं, सरग के तरई छुवलीं! धन्यवाद!

—भगवत शरण उपाध्याय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

मुद्रक—दि प्रेस दीप्ति, भिखना पहाड़ी पटना-४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय

भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन

के

चउथका अधिवेशन

के

अध्यक्ष

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

के

अभिभाषण

—✻—

आश्रम बरहज, जिला-देवरिया (उ० प्र०)

ता० १४, १५, १६ दिसम्बर १९७५ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषण

—:०:०:—

आदरणीय स्वागत समिति के सभापति महोदय ! माननीय प्रतिनिधि-गण, सम्मानित श्रोतावृन्द, बहिन अवर भाई लोगन !

रउरा सभे एह भोजपुरी सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर हमरा के प्रतिष्ठित करिके जवन क्रिया कइले बानीं एकरा खातिर हम अत्यन्त कृतज्ञ बानीं। जबना पद के डा० उदयनारायण तिवारी, आचार्य डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी अवरू डा० भगवत् शरण उपाध्याय जइसन अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के विद्वान् लोग सुशोभित कइले बा ओह आसन के अधिकारी हम अपना के बिल्कुल नइखीं समझत। एह महान् सिंहासन पर त् भोजपुरी के कवनो गंभीर विद्वान् के बइठावे के चाहत रहलहु। हम त भोजपुरी लोक साहित्य के एगो साधारण शोधी छात्र अवरू अनुसन्धानकर्त्ता हवीं। भोजपुरी के प्रचार अवरू प्रसार खातिर मिशनरी भावना से काम करे वाला साधारण व्यक्ति हवीं। हमरा अइसन सामान्य सेवक के एह बड़ पद पर बइठावल कहवाँ तक समीचीन बाटे एकर औचित्य रउरे सभ समझ सकीं लँ।

जब सम्मेलन के प्रधान मन्त्री जी के एह पद के स्वीकार करे खातिर सन्देश पहुँचल तब हम बड़ा असमंजस में पड़ि गइनीं। एक ओर त आपन अयोग्यता के ज्ञान, अवरू दोसरा ओर प्रधान मंत्री के आज्ञा के पालन। अन्त में रउरा सभे के निर्देश के आगे सिर झुका देवे के परल अवरू स्वीकृति भेजि देनीं।

एह पद के स्वीकार कइला से भोजपुरी के सेवा करे खातिर हमरा अधिका अवसर मिली, केवल एगो एही भावना से प्रेरित होके हम रउरा सामने उपस्थित बानीं। हमरा आसा ही नाहीं बल्कि दृढ़ विश्वास बाटे कि रउरा सभे के आशीर्वाद अवरू नेह आ छोह से, अवरू सभ भाइन के सहयोग से, हम एह दुर्वह भार के अपना कमजोर कन्धा पर ढोवे में समर्थ हो सकबि।

भाई लोगन ! एह अवसर पर भोजपुरी भाषा अवरू साहित्य के विस्तृत विवेचन प्रस्तुत कइल बड़ा कठिन काम बाटे। उपधिया जी अपना "भोजपुरी साहित्य के इतिहास" में एह विषय के साङ्गोपाङ्ग विवेचन कइले बाड़े। एह से हम ओह बात के पिष्ट-पेषण कइल उचित नइखीं समझत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हम रउरा सभे के सामने, भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के अब तक देस में अथवा विदेस में जवन शोध कार्य हो चुकल बाटे, ओकरे विवरण प्रस्तुत करे के चाहत बानीं। इ बात बिना संदेह के कहल जा सकेला भोजपुरी पर अब तक जेतना शोधकार्य हो चुकल बाटे, ओतना हिन्दी के बोली—अवधी, ब्रज, कौरवी, राजस्थानी आदि में नइखे भइल। एह तरह अनुसन्धान के दृष्टि से, भोजपुरी हिन्दी के उपभासा में प्रथम स्थान के अधिकारी बाटे। भोजपुरी में जतना शोध कार्य भइला बा ओकरा के दुई भाग में बाँटि विचार कइल जात बाटे। — (१) भोजपुरी भाषा अवरु (२) भोजपुरी साहित्य शोध कर्ता विद्वानन में कुछ विदेशी लोग भी बाटे। उन लोगन के शोध के लगाइ के एहिजा प्रस्तुत कइल गइल बा। भोजपुरी भासा खातिर इ कम गौरव बात नइखे कि एकरा विषय में हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेञ्च, अवरू जर्मन भाषा अतिरिक्त सुदूर स्पेनिश भाषा में भी शोध लेख लिखल पावल जाला।

दोसर जवना बात के ओर हम रउरा लोगन के ध्यान आकर्षित के चाहत बानीं उ संसार के विभिन्न देशन में भोजपुरी भासा के प्रचार अवरु पुरी लोक-संस्कृति के रक्षा बा। मारीशस, सूरीनाम ट्रीनीडाड़ अवरू भोजपुरी भासा भासी लोग बहुत बड़ी संख्या में रहेला, उ लोग आपन संस्कृति अभी तक सुरक्षित रखले बा। इ कम आश्चर्य के बात नइखे अवरु त मारिसस में भोजपुरी के ओहे लोकगीत गावल जाला जवन अपना देस में प्रचलित बाटे।

एह विवरण से पता चलि सकेला कि भोजपुरी में कितना अनुसन्धान के कार्य हो चुकल बाटे अवरू हो रहल बा। सचमुच इ बात हिन्दी के कवनो खातिर अथवा भारत के कवनो भासा खातिर गौरव अवरू अभिमान के विषय बा।

(क) भोजपुरी भाषाः—

(१) भोजपुरी भाषा पर शोध कार्य करे वाला सर्वप्रथम विद्वान उदयनारायण तिवारी जी बानीं। इहाँ का आजु से लगभग ४० बरिस पहिले लेख लिखले रहनीं जवना के मथेला रहे "भोजपुरी के एगो बोली (ए डाइलेक्ट आफ भोजपुरी) ई लेख सन् १९३६ ई० में पटना के "बिहार ओरिसा रिसर्च सोसाइटी" के शोध पत्रिका में छपल रहे। तिवारी जी प्रयाग विश्वविद्यालय से अपना डि० लिट० खातिर "भोजपुरी भासा के उत्पत्ति अवरु विकास" विषय पर शोधकार्य कइनीं अवरू सन् १९४५ ई० में एहाँ का डि० लिट के उपाधि पवलीं। एह तरह से इहाँ का भोजपुरी भाषा के सम्बन्ध में शोधकार्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परम्परा के चालू कइलीं। इ ग्रन्थ मौलिक अवरू बड़ा विद्वता पूर्ण बाटे जवना में भोजपुरी भाषा के वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन कइल गइल बा। सन् १९५१ ई० में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् तिवारी जी के भोजपुरी भाषा के सम्बन्ध में भाषण देवे खातिर निमंत्रित कइलसि। एह अवसर पर इहाँ का जवन भाषण दिहलीं उ "भोजपुरी भाषा और साहित्य" के नाम से राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना से सन् १९५४ में प्रकाशित हो चुकल बाटे। एह किताब में भोजपुरी व्याकरण के बड़ा साङ्गोपाङ्ग विवेचन कइल गइल बा।

डा० उदयनारायण तिवारी पहिलका विद्वान् हवीं जे भोजपुरी भाषा के अपना डि० लिट् के विषय बना करके शोधकार्य कइलीं। एह से इहाँ का भोजपुरी के विद्वानन् के प्रेरणा के स्रोत बानीं। इहाँ का अपना निर्देशन में अनेक शोधी छात्रन के 'गाइड' कइके भोजपुरी भाषा अवरू साहित्य के बड़ा सेवा करत बानीं।

(२) डा० विश्वनाथ प्रसाद— इहाँ का कई बरस तक पटना विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष-पद के सुसोभित कइलीं। एकरा बाद आगरा के "के० एम० मुन्शी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान शोध संस्थान" के निदेशक रहलीं। विश्वनाथ प्रसाद जी लन्दन विश्वविद्यालयसे भोजपुरी भाषा पर शोध कार्य कइले बानी। इहाँ के शोध के विषय हवे "छपरा जिले की बोली का ध्वनि शास्त्रीय अध्ययन"। एह शोध प्रबन्ध में भोजपुरी बोली के ध्वनि शास्त्रीय शोध प्रस्तुत कइल गइल बा। जहवां डा० तिवारी के शोध प्रबन्ध में भोजपुरी के व्याकरण के विस्तार के साथ विवेचन प्रस्तुत कइल बाटे, उहवां विश्वनाथ प्रसाद जी के थीसिस में भोजपुरी के केवल ध्वनि पर विद्वतापूर्ण अध्ययन बा। इ कहे के कवनों जरूरत नइखे कि एह दूनो महान् विद्वानन् के शोध प्रबन्ध मूलतः अंग्रेजी भाषा में लिखल गइल बा।

(३) हरिहर प्रसाद गुप्त— गुप्तजी बहुत साल तक सरकारी शिक्षा विभाग में काम कइलो। इहाँ का "आजमगढ़ जिला के फूलपुर तहसील के कृषक शब्दावली" के अध्ययन कइले बानी। एह ग्रन्थ में किसान के जीवन में जवन जवन शब्दावली के प्रयोग कइल जाला ओकर बड़ा सुन्दर बरनन कइल गइल बा। किसान भाई लोगन के रोजमर्रा के व्यवहार में आवे वाली बोली के भी शोध प्रबन्ध के विषय बनावल जा सकेला एह ओर गुप्तजी लोगन के ध्यान आकर्षित कइले बानीं। अगर एही तरह से भोजपुरी जनपद के सब जिलन के अध्ययन होखे त बड़ा उपकार होई।

(४) डा० नन्दकिशोर राय— इहाँ का कई साल तक "गवर्नमेण्ट जुबिली इण्टर कालेज, गोरखपुर" में प्राध्यापक के पद पर काम कइनीं। राय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहब के विषय हवे "गाजीपुर जनपद की कृषक शब्दावली के अध्ययन।" शोध प्रबन्ध इहाँ के भोजपुरी किसान भाई लोगन का जीवन से सम्बन्धित भी शब्दावली हो सकेला ओकर संग्रह अवरू विवेचन बड़ा सुन्दर ढंग से करे वानीं। अवरू त का कहीं, कहार लोग पालकी ढोवत, धोबी लोग कपड़ा धोवत जवना शब्दन के प्रयोग करेला ओकरे एह थीसिस में संग्रह बाटे। जवन ग्रियर्सन साहब अपना "बिहार पीजेण्ट लाइफ" नामक ग्रन्थ में कइले बाड़न कुछ ओही ढंग के एह काम के भी समझे के चाहीं।

(५) डा० सत्यदेव तिवारी— तिवारीजी के शोध प्रबन्ध के विषय हवे "बलिया जिले की कृषक शब्दावली का सांस्कृतिक अध्ययन।" इ शोध कार्य डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में भइल बाटे। एह शोध प्रबन्ध के सबसे बड़ा विशेसता इ बाटे कि तिवारी जी किसान के हल, फाल, पचरवा आदि जवना विसय के बरनन कइले बाड़न ओकर चित्र अथवा डाइग्राम (नकसा) भी दे देले बाड़े जवना से ओह शब्द के ठीक ठीक अरथ समझे में सहायता मिलत बा।

(६) डा० हरदीप तिवारी— तिवारी के शोध प्रबन्ध के विषय हवे "सारन जिले की घरेलू शब्दावली" जवना में, भोजपुरी जनता अपना घरेलू बोली में जवन शब्दावली के प्रयोग करेले ओकर अध्ययन कइल गइल बा। इ शोध कार्य डा० शुकदेव सिंह के निर्देशन में भइल बा अवरू बिहार विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० के उपाधि भी मिल चुकल बाटे।

(७) डा० महेन्द्र नाथ दूबे—दूबेजी कई साल तक हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक रहलीं अवरू आजुकाल्हु "के० एम० मुंशी हिन्दी तथा भाषा विज्ञान शोध संस्थान" आगरा में भाषा शास्त्र के रीडर के पद पर बानीं। इहाँ का "आजमगढ़ जनपद की बोली" के भाषा शास्त्रीय अध्ययन कइले बानीं।

(८) डा० सरित किशोरी श्रीवास्तव— इहाँ के शोध प्रबन्ध के विषय हवे "वाराणसी के स्थान-नामों का भाषा शास्त्रीय अध्ययन,'। इह पुस्तक में इहाँ का काशी नगरी में जवन मुहल्ला, घाट, नदी, नाला, कूप, सरोवर, आदि पावल जाले स, ओकर नाम के निरुक्ति प्रस्तुत कइले बानीं। यूरोप के विभिन्न देसन में "प्लेस-नेम-सोसाइटी" स्थापित बाड़ी स। जवना के एक मात्र उद्देश्य स्थानीय नामन के निरुक्ति अवरू इतिहास के अध्ययन बा। डा० श्री वास्तवजी काशी के स्थान-नामन के भाषाशास्त्रीय अध्ययन कइके हमनी के एगो नया दिशा देखवले बानीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(९) डा० शुकदेव सिंह— डा० सिंह आजु काल्हु काशी हिन्दूविश्व-विद्यालय के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक बानीं। इहाँ के ग्रन्थ के नाम हवे "भोजपुरी और हिन्दी का तुलनात्मक अध्ययन" जवना में भोजपुरी अवरू हिन्दी के व्याकरण के तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कइल गइल बा। इ पुस्तक लेखक के कई साल के परिश्रम के फल हवे।

(१०) पं० गणेश चौबे— चौबे जी भोजपुरी के जानल-मानल गंभीर विद्वान् हवीं। इहाँ का अनेक बरिस से भोजपुरी के एगो वृहत् शब्द कोस तैयार करि रहल बानीं। अभी तक कवनो विद्वान् एह गुरुतर काम में हाथ लगावे के हिम्मत भी नइखे कइले। इ त चौबे जी अइसन तलस्पर्शी विद्वान् के ही काम बाटे कि इहाँ ला करेवे, बिना कवनो सहायता के, अइसन महान् कार्य के सम्पादित करत बानीं। प्रकाशित भइला पर भोजपुरी भासा के ई पहिलका शब्दकोष अपना ढंग के बेजोड़ होई। आसा बाटे कि इ कोष जल्दी प्रकाश में आइ के भोजपुरी के एगो बड़हन अभाव के पूर्ति करी।

एह तरह से इ बात स्पष्ट रूप से प्रकट हो रहल बाटे कि भोजपुरी क्षेत्र के पांच छः जनपद के भासा शास्त्रीय अवरू लोक शब्दावली के अध्ययन शोधी विद्वान् के द्वारा प्रस्तुत हो चुकल बाटे। एह जनपदन में वाराणसी, आजमगढ़, गाजीपुर, बलिया अवरू सारन प्रधान बाटे। देवरिया अवरू गोरखपुर जनपद के क्षेत्रों पर भी अध्ययन हो रहल बा। लेकिन उ अभी देखे में ना आइल बा।

(ख) भोजपुरी लोक साहित्यः—

भोजपुरी भाषा के ऊपर शोध कार्य कइला के साथे ही बहुत से विद्वान् शोध भोजपुरी के लोक साहित्य पर भी अनुसन्धान कइले बाड़े।

(११) डा० कृष्णदेव उपाध्याय— सन् १९५० ई० में लखनऊ विश्व-विद्यालय से लोक साहित्य पर आपन शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत कइले जवना के शीर्षक रहे "भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन"। इ ग्रन्थ सन् १९६१ ई० में वाराणसी से छपल बाटे[1]। उपाध्याय जी के बारे में कुछ अधिक लिखल हमरा खातिर अनुचित होई।

(१२) डा० सत्यव्रत सिनहा— डा० सिनहा के शोध ग्रन्थ के नाम रहे "भोजपुरी लोकगाथा"। इ पुस्तक हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयाग से छप चुकल बाटे[2]। इहाँ का डा० उदयनारायण तिवारी के निर्देशन में प्रयाग विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० के उपाधि प्राप्त कइले बानीं। सिनहा जी भोजपुरी प्रदेश में

१-हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, सन् १९६१।
२-हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग।

P. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रचलित लोक गायन के संग्रह कइके बहुत विद्वत्तापूर्ण अध्ययन प्रस्तुत कइले बानी जवना में लोरकी, विजयमल, नयकवा बनजारा, सोरठी, बिहुला, आल्हा आदि गाथा प्रसिद्ध बाड़ो स। भोजपुरी लोक गाथा के सम्बन्ध में सिनहा जी के इ पहिला शोध प्रबन्ध हवे जवना से बहुत लोगन के प्रेरणा मिलल।

(१३) डा० अर्जुन दास केसरी— एहो सिलसिला में डा० केसरी के शोधकार्य के भी चर्चा कय दिहल बहुत आवश्यक बाटे। केसरी जी बड़ा परिश्रम अवरू धीरज के साथ भोजपुरी के सुप्रसिद्ध गाथा "लोरिकायन" के विभिन्न पाठन (Versions) के संग्रह अनेक लोक-गायकन से गवाइ के लिपि के कारा में बाँध लेले बानीं। अभी तक "लोरिकायन" के लिपि बद्ध ना कइल जा सकल रहल हा। एह से डा० केसरी जी एह कठिन काम के सम्पादित कइके भोजपुरी भाषी लोगन के बड़ा उपकार कइले बानीं। "लोरिकायन" के एह संग्रह पर उत्तर प्रदेश के हिन्दी संस्थान छः हजार रुपया के पुरस्कार देई के इहाँ के सन्मानित कइले बाटे। डा० अर्जुन दास जी केसरी "लोरिकायन" के एगो सांस्कृतिक अध्ययन भी अपना शोध प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत कइले बानीं जवना पर काशी विद्यापीठ से इहाँ के पी० एच० डी० के उपाधि भी मिल चुकल बाटे।

(१४) डा० श्याम मनोहर पाण्डेय—अमेरिका के "अमेरिकन इन्स्टीट्यूट आफ इण्डियन स्टडीज" के अन्तर्गत 'लोरिकायन' पर बड़ा महत्त्वपूर्ण शोध कइले बाड़न। ऊ बिहार अवरू उत्तर प्रदेश में प्रचलित लोरिकायन के विभिन्न दस (१०) पाठन (Versions) के टेपरेकार्डिंग कइले बाड़े। लोरिकायन के एक एक पाठ आठ आठ सौ टाइप कइल पृष्ठन में समाप्त भइल बा। जब इ भोजपुरी लोक-गाथा प्रकाशित होइ जाई तब एकर महत्त्व डा० चाइल्ड के "दि इंगलिश एण्ड स्काटिश पापुलर बैलेड्स" से भी अधिक होई।

(१५) डा० श्रीधर मिश्र — डा० मिश्रजी बम्बई के खालसा कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक बानीं। इहाँ का भोजपुरी के लोक साहित्य के सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत कइले बानीं। इहाँ के शोध प्रबन्ध के शीर्षक हवे "भोजपुरी लोक साहित्य सांस्कृतिक अध्ययन"[१]। एह पुस्तकमें भोजपुरी लोक-गीत, लोकगाथा अवरू लोककथा में जन-जीवन के जवन चित्रण पावल जाला आकर बड़ा गम्भीर विवेचन भइल बाटे। मिश्र जी तलस्पर्शी विद्वान् हईं एह से एह पुस्तक में इहाँ के विद्वत्ता के छाप पावल जात बा।

कई शोधी छात्र भोजपुरी के लोक गीतन के लेई के अनुसन्धान कार्य कइले बाटे लोग जवना में नीचे लिखे लोगन के कार्य प्रशंसनीय बाटे।

(१६) डा० हीरालाल तिवारी— डा० तिवारी के शोध प्रबन्ध के नाम हवे "काशिका जनपद के लोक गीत"। डा० श्रीकृष्णलाल के निर्देशन में शोध कार्य

१–हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयाग सन् १९ ई०।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के तिवारी जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से पी० एच० डी० के उपाधि प्राप्त कइले बानीं। भोजपुरी के पश्चिमी बोली में जवन गीत पावल जाले स के अध्ययन एह शोध प्रबन्ध में कइल गइल बाटे। काशिका जनपद में भोजपुरी के पश्चिमी रूप पावल जाला। एह से काशी जनपद के लोक गीतन के अनुसन्धान में विशेष महत्व रखत बाटे।

(१७) डा० भूदेव पाण्डेय—पाण्डेय जी "भोजपुरी के ऋतु गीतन के अध्ययन" कइले बाड़े। इनकर शोध प्रबन्ध के निर्देशक डा० कृष्णदेव उपाध्याय रहलें। उनुकरे निर्देशन में शोध कार्य कइके आगरा विश्वविद्यालय से पाण्डेय जी पी० एच० डी० के उपाधि प्राप्त कइले बाड़े। यद्यपि इनकरा शोध प्रबन्ध के नाम भोजपुरी ऋतुगीतन के अध्ययन बाटे लेकिन एह में प्रधान रूप से मिर्जापुरी 'कजली' के ही अध्ययन पावल जाला।

(१८) डा० हरगोविन्द तिवारी—तिवारी के थीसिस के शीर्षक हवे "भोजपुरी संस्कार-गीतों का अध्ययन"। डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में ही तिवारी जी भी आपन शोध कार्य कइले बाड़न। जइसहीं पाण्डे जी भोजपुरी के ऋतु-गीत पर अपना शोध कार्य के पूरा कइले ओहिजा तिवारी के काम संस्कार गीत पर बा। एह तरह एह दूनों लोगन के शोध कार्य एक दूसरा के पूरक कहल जा सकेला।

(१९) श्री रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'—ओझा जी 'भोजपुरी शब्दानुशासन" ग्रन्थ के रचइता अवरू भोजपुरी जगत् के चिरपरिचित लेखक हवीं। इनका "भोजपुरी लोक-कथा" के ऊपर डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में शोध कार्य कर रहल बानीं। श्री परमेश्वर दूबे 'शाहाबादी' भी "पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोक कथा के सांस्कृतिक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य में लगल बानीं। आसा बा कि जल्दी ही आप लोग पी०एच०डी० के उपाधि प्राप्त कर लेइबि। कुछ विद्वान् लोग भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन भी प्रस्तुत कइले बाड़े लोग में—

(२०) डा० इन्द्रदेव—के नाम प्रसिद्ध बाटे। डाक्टर साहब के शोध प्रबन्ध के मसेला हवे "भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन"। एह थीसिस पर डा० इन्द्रदेव के लखनऊ विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग से पी० एच० डी० के उपाधि मिल चुकल बाटे। इ शोध कार्य सुप्रसिद्ध मानव विज्ञान शास्त्री डा० डी० एन० मजुमदार के निर्देशन में भइल बाटे। इ बड़ा दुःख के बात बा कि इतना विद्वतापूर्ण ग्रन्थ संभवतः अभी तक प्रकाश में नइखे आइल। इ शोध प्रबन्ध अंग्रेजी में लिखल बाटे अवरू अनेक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण बा।

भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करे वाला

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोसरका विद्वान्—

(२१) डा० हरिशंकर उपाध्याय हवे। उपाध्याय जी अमेरिका के इण्डियन विश्वविद्यालय, ब्लू मिगटन से भोजपुरी लोक गीतन के शास्त्रीय अध्ययन कइले बाड़न जवना पर इनकरा के एह विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० के डिग्री मिल चुकल बाटे। डा० विश्वनाथ प्रसाद के बाद डा० उपाध्याय दोसरका विद्वान् हवे जेकरा के भोजपुरी पर विदेशी (अमेरिकी) विश्वविद्यालय से शोध डिग्री प्राप्त भइल बाटे।

(२२) डा० गंगाचरण त्रिपाठी— डा० उदय नारायण तिवारी के निर्देशन में सन् १९५७ में आपन शोध प्रबन्ध लिखले जवना के शीर्षक बाटे "भोजपुरी, ब्रज तथा अवधी का तुलनात्मक अध्ययन"। एह थीसिस पर त्रिपाठी जी के प्रयाग विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० उपाधि मिल चुकल बा। भोजपुरी तथा अवरू अवधी भाषा में उपलब्ध लोक गीतन के एह शोध में बड़ा ही गम्भीरता पूर्वक विवेचन कइल गइल बा। भोजपुरी लोक गीतन के तुलनात्मक अध्ययन संबंधी इ पहिलका प्रयास हवे।

(२३) डा० किरन मराली — डा० मराली के शोध प्रबन्ध के मसौदा हवे "भोजपुरी तथा अवधी लोकगीतन में रामकथा"। एह थीसिस में मराली जी भोजपुरी अवरु अवधी में रामकथा के जवन स्वरुप मिलेला ओकर तुलनात्मक अध्ययन कइले बाड़ी। डा० पाण्डेय के बाद डा० मराली के इ दूसरका अध्ययन हवे जवना में तुलनात्मक दृष्टि से विचार कइल बाटे। आजु काल्ह मरालीजी मदन मोहन मालवीय महाविद्यालय, भाटपार रानी, जिला देवरिया में हिन्दी विभाग के प्राध्यापक बाड़ी।

(२४) डा० अमर बहादुर सिंह के शोध के विसय हवे "भोजपुरी और अवधी सीमा बोलियों का अध्ययन"। एह शोध प्रबन्ध पर डि० फिल० के उपाधि सन् १९६० ई० में इनकरा मिल चुकल बा।

(२५) डा० वकील सिंह—जी श्री सोमेश्वर महाविद्यालय, अरेराज, चम्पारन जिला में प्राध्यापक हवीं। इहाँ का बिहार विश्वविद्यालय के अन्तर्गत "चम्पारन की बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन" पर डाक्टर कामेश्वर शर्मा के निर्देशन में शोध कइके पी० एच० डी० पवले बानीं।

(२६) डा० महन्त मिश्र के शोध के विषय हवे "भोजपुरी का क्रिया पद"। इ अनुसन्धान पटना विश्वविद्यालय से भइल बाटे। भोजपुरी क्रिया पदन पर संभवतः इ पहिलका शोध प्रबन्ध हवे।

(२७) डा० चन्द्रसेन कुमार जैन—उत्कल विश्वविद्यालय, सम्बलपुर के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष हवन। सन् १९७५ ई० में "ओड़िया और भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...वों का तुलनात्मक अध्ययन" पर उत्कल विश्वविद्यालय से इहाँ के पी० एच० ...० के उपाधि मिल चुकल बाटे।

(२८) विदेशी विद्वानन में भोजपुरी भाषा पर काम करे वालन में ...रब किलवड़ा प्रसिद्ध बाड़े। इन विदेसन में जहवाँ जहवाँ भोजपुरी लोग बसल ...ओहिजा जाइ के उ लोग के बोली के नमूना एकत्रित कइले बाड़न। इ शोध ...में केतना व्ययसाध्य, श्रम साध्य अवरू समय साध्य बा एकर अनुमान सहज में ...ही कहल जा सकेला।

(२९) श्री रामेश्वर ओरी—मारिसस देस के निवासी रहले हा। इ ...देस के भोजपुरी के स्वरूप पर संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी विद्यावारिधि (पी० एच० डी०) के उपाधि पवले बाड़न।

लोकोक्तियाँ:—

भोजपुरी लोकोक्तियन पर तीन चार विद्वान् शोध कार्य कइले बाड़न जवना में-

डा० सत्यदेव ओझा अग्रणी बाड़े। डा० ओझा के शोध के विषय "भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन" हवे। ओझा जी हजारन लोकोक्तियन के संग्रह ...के एकर अध्ययन प्रस्तुत कइले बाड़न। एह विषय में इ सर्वप्रथम प्रयास भइला के बावजूद भी एह प्रबन्ध के आपन महत्व बाटे। अभी तक ओझा जी के इ प्रबन्ध ...प्रकाशन में नइखे आ सकल इहे दुःख बाटे।

(३०) डा० शशिशेखर तिवारी—डा० तिवारी भोजपुरी साहित्य के ...विद्वा भोजपुरी लोकोक्तियन पर अनुसन्धान कइले बाड़न जवन "भोजपुरी लोकोक्तियाँ" के नाम से छप भी चुकल बाटे।(१)एह पुस्तक के नक्कव्यमें डा०कुमार विमल लिखले बाड़े कि "डा० शशिशेखर तिवारी ने प्रस्तुत ग्रन्थ में लगभग पाँच हजार भोजपुरी लोकोक्तियों का अध्ययन कर उनका भाषा वैज्ञानिक, समाज शास्त्रीय एवं ऐतिहासिक विवेचन प्रस्तुत किया है"। एही कथन से एह ग्रन्थ के कुछ महत्व समझल जा सकेला। वास्तव में एह ग्रन्थ में भोजपुरी प्रदेश के सांस्कृतिक ...संक्षेप में प्रस्तुत कइल गइल बाटे। परिशिष्ट में लगभग १५०० लोकोक्तियन के संग्रह भी दिइल गइल बा जवन स्वयं में बड़ा महत्वपूर्ण कहल जा सकेला।

(३१) डा० मुक्तेश्वर तिवारी 'वेसुध' —जे चतुरी चाचा के नाम से अधिक प्रसिद्ध बाड़न' भी भोजपुरी लोकोक्तियन पर अनुसन्धान कइले बाड़न। इनकरा 'एम० ए० के थीसिस के नाम हवे "भोजपुरी लोकोक्तियाँ और मुहावरे"। एह पुस्तक में तिवारी जी लोकोक्तियन के वर्गीकरण कइके सुन्दर विवेचन कइले बाड़न। संभवतः "भोजपुरी मुहावरन" पर तिवारी जी के शोध

१-बिहार राष्ट्र-परिषद, पटना से सन् १९७० ई० में प्रकाशित।

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयास सबसे पहिला हवे। एम० ए० के थीसिस होत भी इ ग्रन्थ कवनो पी० एच० डी० के शोध प्रबन्ध से कम नइखे। भोजपुरी गद्य के क्षेत्र में तिवारी के बड़ा नाम बाटे जवना के वर्णन दोसरा अवसर पर कइल जाई

(३२) श्री शत्रुघ्न पाण्डेय—पाण्डेय जी बलिया में लक्ष्मीराज देवी इण्टर कालेज में उपाचार्य बाड़े। इ "भोजपुरी के सन्त कवियन" पर आपन शोध प्रस्तुत करे में लागल बाड़न। भोजपुरी प्रदेश में अनेक सन्त, महात्मा अवरू साधु पैदा भइलन जेकर 'बानी' अभी तक प्रकाश में नइखे आइल। पाण्डेय जी अइसन सन्तन के कविता के अध्ययन कइके काशी विद्यापीठ, वाराणसी से आपन थीसिस प्रस्तुत करि रहल बाड़न।

भोजपुरी लोक नाट्यः—

एह विषय पर भी शोध कार्य हो चुकल बाटे।

(३३) डा० भरत सिंह—डा० सिंह के शोध के शीर्षक हवे 'भोजपुरी लोक नाट्य'। इ शोध डा० दशरथ ओझा के निर्देशन में भइल बाटे जवने पर आगरा विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० मिल चुकल बाटे। भरत सिंह जी अपना शोध में भोजपुरी के लोक नाट्यन के अतिरिक्त आधुनिक नाटकन के भी सम्मिलित कइ ले ले बाड़े जवन वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नइखे।

(३४) श्री आद्या प्रसाद द्विवेदी—द्विवेदी जी बलिया के सतीशचन्द्र डिग्री कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक बाड़न। इ भोजपुरी के लोक नाट्यन के अपना अनुसन्धान के विषय बनवले बाड़े। इनकरा शोध के विसेसता इ बाटे कि गोड़ऊ, चमरऊ, कहरवा, धोबिया आदि लोक नाटकन के स्वयं देखि के इ ओकर विवेचन कइले बाड़न। भिखारी ठाकुर के बिदेसिया नाटक के बड़ा सुन्दर अवरू विस्तृत वर्णन बाटे।

(३५) डा० प्रियम्बदा गुप्त—प्रियम्बदा जी डा० कृष्णदेव उपाध्याय के निर्देशन में हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से पी०एच०एच०डी० प्राप्त कइले बाड़ी। इनकर शोध के विषय हवे "लोक जीवन में लोक विश्वासों तथा अन्ध परम्पराओं का अध्ययन"। इ अपना विषय के पहिलका शोध प्रबन्ध हवे। भोजपुरी जन जीवन में प्रचलित विश्वासन के एह में गंभीर अध्ययन कइल बाटे।

(ग) विदेशी लोगन के द्वारा भोजपुरी में अनुसन्धान कार्यः—

भारतीय विद्वानन के अतिरिक्त कुछ विदेशी शोधी छात्र भी भोजपुरी लोक साहित्य पर अनुसन्धान कार्य कइले बाड़न जवना के संक्षिप्त विवरण एहिजा प्रस्तुत कइल जात बाटे।

(३६) डा० जितका हरटोंग—डा० जितका एगो चेकी महिला हवी जे बिआह के कारन अब स्विस हो गइल बाड़ी। चेको स्लोवाकिया के प्राग जवना के चेको लोग प्राहा कहेला विश्वविद्यालय में इ हिन्दी अवरू भोजपुरी के अध्ययन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहके भारत में भोजपुरी लोक गीतन पर शोध कार्य करे खातिर आइल रहलीं। ही महीना तक भोजपुरी प्रदेश में भ्रमण कइके इ लोक गीतन के संकलन कइलीं। लोक ओही आधार पर आपन शोध प्रबन्ध लिखलीं। इनका थीसिस के नाम हवे "लोक सांग्स आफ बलिया डिस्ट्रीक्ट" अर्थात बलिया जनपद लोक गीत। एह शोध प्रबन्ध पर स्विटजरलैण्ड के बर्न विश्वविद्यालय से इनकरा के पी० एच० डी० डिग्री मिल चुकल बा। एह प्रकाशित ग्रन्थ में डा० जितका भोजपुरी लोक गीतन के लिप्यन्तरण में लिखि के अंग्रेजी में अनुवाद कइले बाड़ी[1]।

मूल रूप में इ शोध प्रबन्ध जर्मन भासा में लिखल गइल रहे लेकिन अधिकतर सर्वाधिक प्रचार के दृष्टि से डा० जितका अंग्रेजी में अनुवाद कइके छपवले रहीं। जितका के भोजपुरी भाषा के ज्ञान बहुत अच्छा बाटे जवना के पता पुस्तक में विस्तृत टिप्पणी से चलत बाटे। कहाँ स्विटजरलैण्ड अवरू कहाँ भोजपुरी क्षेत्र के बलिया जनपद, लेकिन भोजपुरी के माधुरी एह विदेशी महिला के भी अपना ओर खींच लिहलसि।

(३७) मिसेज कैथोराहन—कैथोराहन फ्रान्सीसी महिला हवीं। पहिले लखनऊ विश्वविद्यालय में फ्रेञ्च भासा के प्राध्यापक रहलीं। डा० कृष्णदेव उपाध्याय द्वारा सम्पादित भोजपुरी लोक गीत भाग १ से २०० गीतन के लेइ के इ फ्रेञ्च भाषा में ओकर अनुवाद कइले बाड़ी। भोजपुरी गीतन के अनुवाद अवरू टिप्पणी (नोट्स) लिखि के इ पेरिस विश्वविद्यालय से आपन थीसिस प्रस्तुत कइले बाड़ी। डा० निदेशक रहलीं हा डा० बादविल जे लोक साहित्य के जानल मानल हस्ती हवीं।

(३८) श्री ओ० हेनरी— इ एगो अमेरिकी शोधी छात्र रहले जे भोजपुरी लोक गीतन के समाज शास्त्रीय अध्ययन कइले बाड़े। बलिया अवरु गोरखपुर के कइगो गाँवन में रहिके इ भोजपुरी समाज के बड़ा नजदीक से अध्ययन कइले। अनेक त्योहारन के अवसर फोटो लेके अवरु लोक गीतन के टेप रिकार्ड कइके इ अमेरिका ले गइल बाड़न।

(३९) मिस सेन्द्रा फेगन — कुमारी फेगन आस्ट्रेलिया देश के मेलबोर्न शहर के निवासी हई। इ अपना देशके मोनाश विश्वविद्यालय से संगीत शास्त्र में डिग्री लेके भारत में भोजपुरी लोक संगीत पर शोध करे खातिर आईल बाड़ी। साथ साथ इ भोजपुरी के कुछ लोक गीतन के अंग्रेजी भाषा में पद्यानुवाद करे में लागल बाड़ी। आसा बाटे कि भोजपुरी गीतन के संगीत पक्ष पर इनकर शोध प्रयास सफल होई।

(४०) एह समय वाराणसी में बहुत से विदेशी छात्र विशेषकर

1—स्विटजरलैण्ड के एगो संस्था से प्रकाशित।

Guru-Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमेरिका से आइल बाटे लोग जवना में कुमारी लिण्डाहेस के नाम प्रसिद्ध बा। रामलीला पर शोध कार्य कर रहल बाड़ी। एह साल कुआर में जवन दसहरा बीतल हा ओह समय इ रोज राति खा रामलीला देखे खातिर रामनगर जात रहली हा। एही घटना से उनुकर रामलीला के प्रति प्रेम के पता चलल बाटे। एगो दोसरा अमेरिकी छात्र भोजपुरी लोक नाट्य पर शोध काम करत रहले हा। उ आपन अनुसन्धान कार्य खतम कइके अमेरिका लवटि गइल।

इ बात जानि के बड़ा खुसी होत बाटे कि भोजपुरी भासा के माधुरी से प्रभावित होके अनेक विदेशी छात्र लोग एह क्षेत्र में शोध कार्य कारि रहत बाड़न लेकिन इ बड़ा दुःख के बात बाटे कि इ विदेशी लोग अतना काम हमनी के भासा पर करि रहल बाड़न लेकिन हमनी का हाथ पर हाथ रखिके बइठल बानी जा।

(घ) विदेसन में भोजपुरी के प्रचार अवरू प्रसारः—

भोजपुरी भासा के प्रचार एह देस के अलवा संसार के अनेक देसन में भी पावल जाला। आजु से सौ डेढ़ सौ बरिस पहिले, जवन भोजपुरी भाई लोग ब्रिटिश सरकार के जाल में फंसि के विदेस गइलन उ लोग अपना साथे आपन 'मतारी भासा' भी ले गइल। इ कुछ कम अचरज के बात नइखे कि आजु सैकड़न साल बीति गइला के बाद भी उ लोग आपन भासा के जोगाइ के रखले बाटे अवरू अपना संस्कृति के अभी भी नइखे छोड़ले लोग।

आजु संसार के अनेक देसन में भोजपुरी के भासा भासी लोग पावल जाला। मारिसस, फीजी, ट्रीनीडाड़, सूरीनाम, ब्रिटिश गाइना, केनिया, युगाण्डा, सिंगापुर, बर्मा, नेपाल आदि अनेक देसनमें भोजपुरी भाई लोग लाखनके सख्यामें बसि गइल बा लोग। अतने नाहीं, ओह देस के राजनीति में इ लोगन के प्रमुख हाथ रहे बाटे। मारिसस के वर्तमान प्रधान मन्त्री डा० सर शिवसागर राम गुलाम हमनी के ही भाई हवन अवरू ब्रिटिश गाइना के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री डा० छेदी जगन एही भोजपुरी धरती के ही रतन हवे आजु काल्हु भी डा० छेदी जगन के अपना देस के राजनीति में एगो प्रधान स्थान बाटे। हम सब भोजपुरी भाई लोगन खातिर इ कतना गौरव अवरू अभिमान के बात बाटे कि आजु से कुछ साल पहिले मारिसस अवरू ब्रिटिश गाइना इ दुई गो देसन के प्रधान मन्त्री के महान पद के भोजपुरी भाई लोग सुसोभित करत रहे अवरू आजु भी मारिसस के प्रधान मन्त्री के पद के सोभा एगो अपने भाई बढ़ा रहल बाड़े।

मारिसस देस में आधा से अधिक जनसंख्या भारतीय लोगन के बाटे। ओहिजा भारत के विभिन्न प्रान्तन के लोग जाइ के बसल बा। लेकिन सभी लोग भोजपुरी भासा ही बोलेला। विश्व हिन्दी सम्मेलन के दोसरका अधिवेसन में जे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओह पूर्वी उत्तर प्रदेश से प्रतिनिधि होई के गइल रहें, ओह लोगन से पता चलल
की ओह देस में भोजपुरी भासा के अखण्ड साम्राज्य बाटे। यद्यपि ओह देस के
राजभासा फ्रेंच हवे, अबरू कुछ लोग स्थानीय भासा क्रियोल भी बोलेला, लेकिन
अधिकांस लोग अपना घरेलू अबरू दैनिक व्यवहार में भोजपुरी के ही प्रयोग करेला
इहे अधिका का कहीं, आजु तक ओहिजा भोजपुरी के लोक गीत प्रचलित बाटे।
अबरू लड़िका के जनम आ बिआह अइसन मांगलिक अवसर पर गीत गावल जाला।

गाँव के लोग मारिसस के 'मरिचि' देस कहेला। इ बात त परसिद्ध
बा कि एहिजा के लोग 'गिरिमिटिया प्रथा' के अन्तर्गत ओह देस में गइल रहे।
खाली अबरू सोना के लालच देई के सरकारी एजेन्ट जवना के गिरिमिटिया कहल
जात रहे—सीधा सादा लोगन के फंसाई के ओहिजा ले जात रहे। एह बात के प्रति
ध्वनि मारिसस के एगो लोक गीत में पावल जाला।

"सोनवा के लालच से हम गइनीं मरिचि देसवां।
कि माटी हो गइल सोना अइसन देहीं।"

एह गीत के पंक्ति में भोजपुरी भाई लोगन के मरिचि देस के यात्रा के इतिहास
छिपल बाटे।

जे भोजपुरी लोग मारिसस गइल, उ लोगन के बड़ा कष्ट उठावे के परल।
दिन रात ऊखी के खेत में काम करे के पड़त रहे। खेत के कोड़ऽ, जोतऽ खाद दऽ-
अबरू गोंडऽ रात दिन इहे काम रहे। अगर कबनो गलती होइ जाइ, त अंग्रेज
जमींदार के कोड़ा सहे के पड़त रहे। अतवार के दिन भी छुट्टी ना रहे। रोज
कोड़ा के पिटाई अबरू बेंत के मार। इहे दिन चर्चा रहे। मारिसस देस में प्रचलित
एगो लोक गीत में भोजपुर भाइन के दुरदसा के बड़ा सजीव अबरू दर्दनाक चित्रण
कइल बाटे। गीत सुनीं।

"अंगाजे [1] रहल भइया, अंगाजे रहल भइया।
एक महीनवा में पाँच गो रुपइया हो ॥१॥
खाये के मोटका चाउर, रहल खूबे लाल।
कोको [2] के तेल आउर खेसारी के दाल ॥२॥
ओढ़े के गोनो [3] अबरू सूते क चटइया हो।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल हो ॥३॥
सेमेनवा [4] भर रहलीं साहेबवा के गुलाम हो।
दिमास [5] के दिनवा मदमवा [6] के गुलाम हो ॥४॥
पूजा पाठ छोड़ि के तूं कोरवे [7] दे दे भइया हो।

१-इन्गेज अर्थात् शर्तबन्दी कुली। २—नारियल। ३—बोरा (गनी बैग) ४-सप्ताह
५ रविवार ६ मैडम (श्रीमती अर्थात मालकिन) ७-ड्यूटी (निश्चित काम)।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्धा पर कुदारी लेके लापेल [८] तुहुँ जइब हो ।३।
दरिया [९] देविदे [१०] करिके फिमिया [११] बिछुइब हो ।
कपार पर बाल्टी लेके लांग्रे [१२] ढोइब भइया हो ।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल भइया हो ।६।
लांग्रे नाहीं ढोइब त, तू मारू [१३] कहइब हो ।
साहेबवा के लठिया से मार तुहुँ खइब हो ।७।
एक दिन के बदले दुई दिन मारू होइब हो ।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल भइया हो ।८।
मजदूर के दुःखवा के जब सुनलन हाल हो ।
मोरिस [१४] में अइसन दोक्तेर [१५] मनी लाल हो ।९।
अउर गुलामी के जंजीर तुरके [१६] गइलन हो ।
अंगाजे रहल भइया, अंगाजे रहल भइया हो ।१०।

एह गीत से दुई बातन के स्पष्ट पता चलत बाटे—(१) प्रारम्भ में मारिशस में गइल भाईन के दुरदसा अवरू (२) भोजपुरी भासा के स्वरूप। मारिशस के भोजपुरी में कितना परिवर्तन हो गइल बाटे। एकर भी पता चलत बा। ऊपर के गीत में अंग्रेजी, फ्रेंच अवरू क्रियोल भासा के शब्दन के भी प्रयोग पावल जात बा। एह से ए गीत के भासा शास्त्रीय दृष्टि से भी बड़ा महत्व बाटे।

सूरीनाम दक्षिणी अमेरिका में स्थित एगो छोट देस हवे। पहिला भोजपुरी बोले वाला लोग अधिक संख्या में पावज जाला। कईगो विद्वान लोग सरनामी अब सूरीनाम के एही नाम से पुकारल जात बाटे। भोजपुरी के अध्ययन करि रहल बाड़न। सूरीनाम के निवासी एगो भोजपुरी भाई जकर नाम श्री गोपी राम माढ़े हवे—हालैण्ड देस के विश्वविद्यालय में "सरनामी भोजपुरी अवरू उर भासा के व्याकरण के तुलनात्मक अध्ययन" विसय पर आपन शोध कार्य करि रहल बाड़न। उ दुई बार भारत भी आइल रहलन। अपना देस में प्रचलित लोक गीतन के भी सुनवलन जवना में से एगो गीत रउरा सभे के मनोरंजन खातिर इहां सुना रहल बानीं। सूरीनाम कें भोजपुरी लोकगीत—

"सुनऽ सुनऽ सरनाम कें वासी, चार जुगन कें एक कहानी।
रास्ता में आरकाटी मिलि गइल, बेचि कें ले दिहलसि दाम।
वादा कें सरकार कहलसि देस खुसी से जावऽ।
काटि के गिरमिट पांच बरिस के, तोहरा कें मिलि इनाम ॥

८–उपस्थिति, हाजिरी ९–गन्ने की जड़ १०–मिट्टी हटा करके ११–गोबर की खाद १२–विष्ठा १३–अनुपस्थित १४–मारिशस १५–डाक्टर १६–तोड़करके, बन्धन काट कर।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाज के अन्दर कई महीना, नया मुसीबत कटली।
सात समुन्दर, काला पानी, बड़ा कष्ट से गइली॥
मक्खी फंसल सहद में आके, हो गइल पूरा गुलाम।
खेत में मेहनति दिन रात कइली, निनिया भइल हराम॥"

एही तरह से फीजी, ट्रीनीडाड़ अवरू ब्रिटिश गाइना आदि देसन में प्रचलित भोजपुरी भासा के स्वरूप के उदाहरण दिहल जा सकेला। "विदेसन में भोजपुरी भासाके स्वरूप" एह बिसय पर बड़ा सुन्दर अनुसन्धान हो सकेला। आसा बाटे कि केहू विद्वान एकरा के आपन शोध के आधार बनाई।

मारिसस अवरू सूरीनाम देसन में व्यवहृत भोजपुरी लोक गीतन के उदाहरन रउरा सभ के सामने प्रस्तुत कइला में हमार केवल एके उद्देश्य बाटे कि सब भोजपुरी भाई लोग एह बात के जाने कि हमार भासा संसार के कतना देसन में बोलल जाले अवरू हमार लोक संस्कृति ओह देसन में कतना अक्षुण्ण रूप से आजु भी सुरक्षित बाटे।

भोजपुरी अकादमी के स्थापना

इ जानि के रउरा सभे के बड़ा प्रसन्नता होई कि बिहार के राज्य सरकार पटना में भोजपुरी अकादमी के स्थापना कइलसि ह। एह काम खातिर बिहार सरकार के जतना प्रशंसा कइल जाव सब थोड़ा बा। एह से भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के अभिवृद्धि आ उन्नति में बहुत सहायता मिली। एह सम्मेलन के ओर से हम बिहार के मुख्य मन्त्री जी के बहुत आभार स्वीकार करत बानी। भोजपुरी केवल बिहार के भासा ना हवे बल्कि उत्तर प्रदेश के नव गो जनपद के निवासी लोगन के भी मात भासा हवे, अवरू इ मध्य प्रदेश में भी बोलल जाले। एह से अकादमी के कार्य समिति में अवरू साधारण सदस्य समिति में सभी जनपद के प्रतिनिधित्व होखे के चाहीं इ बहुत जरूरी बाटे। बिहार सरकार अवरू अकादमी के वर्तमान अधिकारी लोग एह बात पर धेयान दिही लोग अइसय आसा बाटे।

कुछ सुझाव—भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के उन्नति खातिर आप सभ विद्वानन के सामने कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहल बानीं। आसा बा कि रउरा सभे एह पर जरूर धेयान देबि।

१-अखिल विश्व भोजपुरी भासा भासी सम्मेलनः—

रउरा सामने हम निवेदन करि चुकल बानीं कि संसार के अनेक देसन में भोजपुरी बोले वाला लोग बसल बा। एह सभ भाइ लोगन के एक जगह पर एक मंच पर, एकत्रित कइला के जरूरत बाटे। एह से एगो अखिल विश्व भोजपुरी सम्मेलन कइला के आवश्यकता मालूम पड़त बाटे जहवाँ सभ भाई लोग मिलि सकसु। एह सम्मेलन से इ पता चली कि संसार में भोजपुरी भासा के प्रचार

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहवां कहवां बाटे अवरू हमार लोक संस्कृति ओहिजा कवना रूप में सुरक्षित बा। हम जानत बानी कि इ काम बड़ा कठिन बाटे। एकरा खातिर समय, श्रम, शक्ति अवरू धनराशि खर्चा करे के पड़ी। लेकिन संसार में कवनो काम असम्भव नइखे। अइसन सुने में आइल हा कि पटना में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के आयोजन निकट भविष्य में होखे वाला बाटे। उ दिन भोजपुरी भाषा भाषी लोगन खातिर बड़ा मांगलिक अवरू 'सुवर्ण दिवस' होई जवना दिन अनेक देसन के लोग एक मंच पर एकत्रित होकर भोजपुरी में आपन विचार के आदान प्रदान करी लोग। हम ओह मंगलमय दिवस के हृदय से कामना करत बानी।

(२) विश्वविद्यालय में भोजपुरी के मान्यता—भोजपुरी के उन्नति खातिर इ बात बहुत जरूरी बाटे कि भोजपुरी प्रदेश में स्थित विश्वविद्यालयन द्वारा भोजपुरी के मान्यता दिहल जाव। इ बहुत प्रसन्नता के बात बाटे कि बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में भोजपुरी विभाग के स्थापना हो गइल बा अवरू ओहिजा इण्टर आ बी० ए० में भोजपुरी के पढ़ाई भी प्रारम्भ बा। आसा बाटे कि एम० ए० में भी जल्दी ए पढ़ाई शुरु हो जाई। पटना, गया, राँची, प्रयाग, वाराणसी अवरू गोरखपुर विश्वविद्यालय में भी भोजपुरी के विभाग स्थापित होखे के चाहीं जेहसे छात्र लोग विश्वविद्यालय के स्तर तक भोजपुरी के अध्ययन करि सके।

(३) भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्थापना— भोजपुरी भाषा अवरू साहित्य के सर्वाङ्गीण समुन्नति खातिर भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्थापना अत्यन्त आवश्यक बाटे। भोजपुरी प्रदेश में बहुत से धन कुबेर बाड़न जे चाहसु त अकेले ही एह विश्वविद्यालय के स्थापना के साकार कर सकेलन। हमार सुझाव बा कि अइसन विश्वविद्यालय के स्थापना देवरिया अथवा आरा में कइल जा सकेला। देवरिया जनपद में अनेक 'राजा' लोग बाड़न जे अपना उदारता के परिचय देइ के अक्षय कीर्तिकमा सकेला। अइसहीं आरा में इ काम धनी लोगन के किरिया से सम्भावना के परिधि भीतर ले आवल जा सकेला।

(४) भोजपुरी साहित्य के प्रकाशन— भोजपुरी में सन्त साहित्य के अगाध भण्डार भरल बाटे। भोजपुरी के सन्त कवि लोगन के रचना उनुकरा मठ के बेठन में बाँधल पड़ल बा। आजु तक ओह ग्रन्थन के प्रकासन ना हो सकल। जवना से भोजपुरी के अमूल्य साहित्य अभी तक प्रकास में नइखे आ सकल। एह से इ काम बहुत जरूरी बाटे कि एह अनमोल पुस्तकन के छापि के प्रकाशित कइल जाइ। भोजपुरी अकादमी एह काम के आसानी से करि सकेले।

भोजपुरी में अनेक नवयुवक कवि अवरू लेखक लोग बाटे जे अपना रचना के प्रकासन के अभाव में अधखिली कली नियर बिना बिकासे पवले पुरुस जात बा लोग। एह से एह लेखकन के भी रचना के प्रकाशित करे के चाहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकासन के सम्बन्ध में भोजपुरी अकादमी अवरू सम्मेलन की नीति सुस्पष्ट होखे के चाहीं। हमरा कहे के मतलब इ बा जे लोग 'भोजपुरी में' अथवा 'भोजपुरी पर' लिखे उ दूनों प्रकार के रचना छापे के चाहीं। अगर केहुँ विद्वान भोजपुरी के व्याकरण, इतिहास अथवा शब्दकोष हिन्दी में लिखत बाटे तोकरो पुस्तक प्रकाशित करे के चाहीं। इतने नाहीं. अगर अंग्रेजी अथवा जर्मन भाषा में भी भोजपुरी सम्बन्धी रचना मिले त ओकरो स्वागत करे के चाहीं। भोजपुरी भासा, साहित्य अवरू संस्कृति पर कवनो भाषा देसी अथवा विदेसी में लिखल ग्रन्थ स्वागत अवरू प्रकाशन के पात्र बाटे।

(२) रेडियो स्टेशन के स्थापना — भोजपुरी भासा अवरू साहित्य के सम्यक् प्रचार खातिर भोजपुरी प्रदेश में एगो रेडियो स्टेशन के स्थापना वांछित हो नइखे, बल्कि अनिवार्य भी बाटे कवनो भाषा के प्रचार खातिर सिनेमा अवरू रेडियो दुगों आधुनिकतम साधन हवे। भोजपुरी में आजु तक एक दर्जन से भी अधिक फिल्म बनि चुकल बाड़ी स, जवना से भोजपुरी के धुंआ धार प्रचार हो रहल बा। कलकत्ता अवरु बम्बई अइसन महानगरो में भी भोजपुरी फिल्म धूम मचा देलसा। कइगो फिल्म निर्माण के अवस्था में बाटे जवना के 'शूटिंग' वाराणसी, लखनऊ अवरु पटना में हो चुकल बा। एह तरे भोजपुरी के फिल्म पक्ष बहुत सशक्त बाटे।

लेकिन रेडियो के द्वारा भोजपुरी के जइसन प्रचार होखे के चाहीं ओइसन नइखे होत। हम मानत बानीं कि वाराणसी, इलाहाबाद, गोरखपुर अवरु पटना रेडियो स्टेशन से भोजपुरी लोक गीत अवरु वार्ता के प्रसारण होवेला, लेकिन एतना ही पर्याप्त नइखे। भोजपुरी अइसन महान भाषा के प्रचार खातिर एगो पृथक् रेडियो स्टेशन के आवश्यकता बाटे जवना के स्थापना देवरिया, गाजीपुर, बलिया, छपरा या आरा आदि कवना स्थान में कइल जा सकेला। भोजपुरी के एगो फुल टाइम रेडियो स्टेशन के बिना काम ना चलि सकेला।

भोजपुरी प्रदेश के महत्त्व

भारत में प्राचीन काल से ही भोजपुरी प्रदेश के बड़ा महत्व चलि आवत रहल बा। ऋग्वेद में जवन 'भोजाः' शब्द आइल बा उ भोजपुरी लोगन के बारे में ह कि ना एह में विवाद हो सकेला लेकिन षोड़श महाजनपद के काल में कोशल, कौशाम्बी अवरू मगध आदि जनपद एही प्रदेश के सीमा में रहे। एही प्रदेश में भगवान बुद्ध अवरू महावीर जइसन क्रान्तिकारी सुधारक पैदा भइलन जेकर कीर्ति से भारतीय इतिहास भरल पड़ल बाटे। एही देवरिया जनपद के कुशीनगर स्थान में तथागत निर्वाण प्राप्त कइले अवरू गोरखपुर जिला में अवतार लिहलन। भगवान महावीर अवरू जैन धर्म के अनेक तीर्थंकर लोगन के जन्म एही प्रदेश में

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइल बाटे। सच पूछी त भारतीय इतिहास में जैन अवरू बौद्ध धर्म के रूप में क्रांति के आवाज एहिजे से बुलन्द भइल। गाजीपुर जिला के सैदपुर भितरी नामक स्थान में परम प्रतापी गुप्त बंश के राजा स्कन्दगुप्त विदेशी आततायी हूण लोगन के पराजित कइले। इ पराक्रमी बीर जमीन पर सूति के रात्रि बितवलन अवरू पुनः में पृथ्वी के भी कम्पायमान करि देलन। शिला लेख में लिखल बाटे कि—

"हूणैर्यस्य समागतस्य समरे, दोर्भ्यां धरा कम्पिता"।

गोरखपुर में गोरखनाथ जी समाधि बाटे जे नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तन करिके पाखण्ड, ढ़ोग अवरू अनीति के नष्ट कइलन।

वाराणसी में अपना धर्म के मान्यता प्राप्त करे खातिर के ना आइल। शाक्य सिंह अइले, भगवान शंकर अवरू बल्लभा चार्य भी अइले। भोजपुरी के प्रथम कवि महात्मा कबीर के त इ जन्मभूमिए हवे। कवनो जमाना रहे जब भोजपुरिया जवान शेरशाह के नेतृत्व में दिल्ली तक पहुँच के सिंहासन पर आपन प्रभाव जमा लेलन। आधुनिक युग में भी स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति भारत रत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद एही भोजपुरी धरती के रतन रहलन अवरू आजु भी बाबू जगजीवन रामजी भारत के रक्षा मन्त्री के रुप में एह देश के रक्षा के भार समरले बानी। विद्वान, पण्डित, कवि अवरु कलाकारन त इ भूमि जन्मस्थली ह। कहाँ तक गिनाई। एह भोजपुरी भूमि के चप्पा चप्पा में क्रान्ति के बीज बिखरल पड़ल बाटे। 'कश्यप जी' अपना एगो कविता में लिखले बाड़न कि—

"फक्कड़ कबीर के बोली में बोले वाला, इ भोजपुर आग के पूतला ह।
चौदहों जिला सब गरजि उठे जब एक बार, तब एकरा आगे सउसे पृथिमी कुछ नाह।

ठीक। इ बात बिल्कुल ठीक बाटे। जब हमनी का सब भाई मिलि के खड़ा हो जाइबिजा, तब कवनो काम कठिन नइखे। गोसाईंजी कहले बाड़न "का चुप साधि रहे बलवाना" अब बइठला के मौका नइखे। काम करे के चाहीं अवरु एह उपनिषद के मन्त्र के धयान में रखे के चाहीं—

"उत्तिष्ठात, जाग्रत, प्राप्यवरान्निबोधत।"
उठीं, जागीं, अवरु अब काम के लगि जाईं॥

जय भोजपुरी ! जय हिन्दी !!

———

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मुद्रक : पंकज प्रिंटिंग प्रेस, बरहज (देवरिया)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

पाँचवाँ अधिवेशन

मो-ती हा री

अध्यक्ष

आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा

अध्यक्ष, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी

के

भा ष ण

१४-१५-१६ मार्च, १९८० ई०

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरीभाषी बन्धुगण,

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष का आसन पर अपने लोगन हमरा के बइठा देहलीं। हमहूँ बिना संकोच बइठ गइलीं। हम संकोच करीं कि फायदा देखीं? हमरा मुफ्त में मान मिलल; बिना कवनो योग्यता आ भोजपुरी का सेवा के अध्यक्ष के आसन मिलल। मुफ्त के मान आ मान के ना चाहे, खास करके आज का युग में? हम समझ नइखीं पावत कि हम मान खातिर हम अपना भाग के सराहीं कि अपने लोगन का प्रेम के। हमरा भाग में रहेला ऊ घूमफिर के मिल जाला; आदमी ओकर पात्र होय भा ना होय। अपना देश में अब पात्र के विचार आ खोज भी कमे होता; केहू के कहीं बइठा देहल जाता। समाज में समता के माँग बा, एह से पात्र-अपात्र, योग्य-अयोग्य, भला-बुरा, होशियार-गँवार के भेद-भाव छोड़ के सबका के एके नजर से देखे के परिपाटी बढ़ रहल बा। बुझाता कि हमरा भाग से इहे नजर हमरो पर पड़ गइल ह ना त एह मान-सम्मान लायक हम बानी ना। भोजपुरी के बनावे-सँवारे के काम बहुत निष्ठा से कुछ धुनी-गुनी लोग कइले बा, कर रहल बा। एह आसन पर ओह लोग का बइठला से गुण के आदर होखे, आसन के भी शोभा बढ़ित। हमार योग्यता त अतने बा कि भोजपुरी हमार मातृभाषा ह। ई मातृभाषे के महिमा ह कि एक अदना आदमी विद्वान, कवि, कलाकार लोग का बीच में आदर के पात्र बन गइल। हम एहन महिमा-मंडित मातृभाषा के प्रणाम करतानी, साथ ही अपने लोगन के भी, जे "कीटोऽपि सुमनःसंगाद् आरोहति सतां शिरः" के कहावत चरितार्थ कर देलीं हँ।

भोजपुरी के दिनदिन विकास-प्रसार हो रहल बा; उत्तम से उत्तम कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध रचा रहल बा, कइगो पत्रिका निकल रहल बा। ई बड़ा खुशी आ संतोष के बात बा। भोजपुरी साहित्य के प्रगति जतना होखी से आ जतना बढ़िया से हो रहल बा ऊ भोजपुरीभाषी लोग खातिर गर्व आ गौरव के चीज बा। हमरा सामने बहुत रचना आइल जे कवनो भाषा का साहित्य से टक्कर ले सकता। प्रगति का एह गति के कायम रखे के जरूरत बा। लेकिन जब कवनो चीज के दायरा बढ़ेला त ओकर ठीक से देखरेख आ संगिरहो जरूरी होला। भोजपुरी बहुत दूर में फइलल भाषा बा। कहावत ह कि "चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर बानी"। जब आठ कोस पर बानी अर्थात् भाषा में अन्तर हो जाला त जवना भाषा के विस्तार लगभग पचास हजार वर्गमील में बा, ओह में आठ कोस वाला सिद्धांत का अनुसार काफी अंतर भइल अनिवार्य बा। आरा, छपरा, मोतिहारी में

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे भोजपुरी बोलल जाला ओह में भी अंतर बा लेकिन बनारस, चौबे
आजमगढ़ जात-जात ऊ अंतर बड़ा साफ देखाई देवे लागेला। एह अंतर
जतना कम और सीमित राखल जा सके ओतना अच्छा होई। बोले
अंतर त कम ना होई लेकिन लिखे के अंतर कम हो सकता, होखे के चाहीं
भाषा के स्थिरता आ सुबोधता खातिर ओकर एकरूपता बहुत जरूरी है
एह दृष्टि से भोजपुरी का वर्तनी (स्पेलिंग) में एकरूपता ले आवे के प्रयत्न
होखे के चाहीं। अबहीं त हाल ई बा कि जेकरा जइसे भावता ऊ ओइसहीं लिख
रहल बा। ई भाषण लिखे का समय हमरा मन में बहुते शब्दन के रूप को
लेके संदेह पैदा होत रहल; कवनो नियम चाहे आदर्श सामने ना रहला से
हमरा काफी असुविधा भइल आ जे लिखलीं ओकरा के ले के पूरा इतमीनान
अवहियों नइखे। संदेहन के थोड़ा-बहुत समाधान हम अपने कर ले लीं
बाकिर ओकरा से संतोष ना भइल, मन ना मानल। साँच पूछीं त ई काम
एक आदमी का बस के हइयो नइखे; एकरा खातिर सामूहिक प्रयास के जरूरत
बा। भोजपुरी के जतना बोली बा ओकर प्रतिनिधि लेखक, संपादक आ
भाषाविज्ञान के कुछ विद्वान् मिल के एकरा ऊपर विचार-विमर्श करस; आ
जे निर्णय होय ओकर ठीक से पालन कइल जाय, तबहीं ई कठिनाई दूर होई।
हरेक आदमी अगर मनमानी करी त भाषा मेल से अधिक भेद के कारण बन
जाई। भाषा के सवाल बड़ा नाजुक ह। ओह पर गंभीरता से विचार
करे के चाहीं। अँगरेजी के वर्तनी बड़ा गड़बड़ आ दोषपूर्ण बा, ई सब लोग
जानता, मगर ओकरा में एगो बड़ा भारी गुण बा कि ऊ एकरूप बा। चाहे
जहाँ जाईं स्पेलिंग एके मिली। लंडन, एडिनबरा, प्लिमथ आ शेफील्ड का
अँगरेजी के उच्चारण में बहुत अंतर बा। इंगलैंड आ अमेरिका का अँगरेजी
के उच्चारण में जे अंतर बा ओकरा बारे में त कुछ कहले बेकार बा। बोले में
अतना अंतर भइला पर भी लिखे में प्रायः कवनो अंतर नइखे आ जे बड़लो से
से नाममात्र के। कहे के मतलब ई कि अँगरेजी लिखाता एके वर्तनी से
स्थान-भेद से ओकरा उच्चारण में अंतर चाहे जतना हो जाय। लिपि आ
भाषा में अंतर रहबे करेला; कवनो भाषा जइसे बोलल जाला ओइसहीं
लिखाय ना। बोले के सब बारीकी लिखे में आइए नइखे सकत। बोले
बात ई कि लिपि स्थायी होला; भाषा कुछ ना कुछ लगातार बदलत रहेला।
अँगरेजी के हजारन शब्दन के जे उच्चारण आज से कुछ सौ साल पहिले रहे
ऊ आज ना रह गइल बा तबहूँ लिखाता ओही रूप में जवना रूप में ओ
लिखात रहे। एही से तब के साहित्य पढ़े में आज के पाठक का भी कठिनाई
नइखे। अगर हर सौ साल या सौ कोस पर वर्तनी बदल जाय त लिखित
साहित्य समझल असंभव हो जाई।

लिपि का सवाल पर हम जे अतना जोर दे रहल बानी ओकर एक आधार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...रूप बा। भोजपुरी के शिक्षा के माध्यम बनावे के माँग चल रहल बा। ...क्षेत्र पूरा होखहीं के बा। तब जरूरत होई किताब के। किताबन में ...तरह के वर्तनी चलावल ना उचित बा, ना संभव। अगर मनमानी वर्तनी ...चला रहल त समूचा भोजपुरी क्षेत्र में मान्यता प्राप्त करे वाली किताब ...कैसे तैयार होई? आज कहीं-कहीं भोजपुरी के जे वर्तनी देखे में आवता ...सुंदर मारल लड़िका जिन्दगी में कबहूँ हिंदी शुद्ध ना लिख सकिहें। शब्दन ...ममोर-चमोर देहल जाता कि ऊ पहचाने में नइखे आवत। अगर हर ...पाणिनि बने लागी त भाषा छिन्न-भिन्न हो जाई। तत्सम से जे तद्भव ...बनेता ओकर कुछ नियम बा, आ नियम के इतिहास बा जवन सैकड़न ...से काम कर रहल बा। ओकरा पर ध्यान ना देला से भाषा में ...अराजकता आई आ अराजकता कवनो क्षेत्र में अच्छा ना ह।

एह प्रसंग में अपने सभन का विचार खातिर हम एगो सुझाव राखे के ...। हिंदी में तत्सम, तद्भव, देशज आ विदेशी, चार तरह के शब्द ...बा। तत्सम के रूप उहे चलेला जे संस्कृत में रहल बा। का ...खातिर भी एही नीति के अपनावल अच्छा ना होई? एकरा से लाभ ...कि ऊ रूप हिंदी आ संस्कृत दुनू भाषा खातिर एके रही। शब्द के ...रूप के बचपन में अभ्यास हो जाला ऊ जल्दी बदले ना, बल्कि हमेशा ...रह जाला। तत्सम रूप अपनवला से शब्द के वर्तनी बार-बार बदले के ...के जरूरत ना पड़ी। दोसर ई कि लिखित भोजपुरी हिंदी आ ...का अधिक से अधिक नियरा रही। एह से हिंदी चाहे संस्कृत सीखल ...आसान होई। भोजपुरी में शब्दन के अधिक ऐंठ देला से हिंदी-संस्कृत ...में लड़िकन के कठिनाई बढ़ जाई आ आगे चल के उलझन होखे लागी। ...का अपना के केन्द्र में ना राख के आगे आवेवाला पीढ़ी के केन्द्र में राख ...भाषा-संबंधी नीति पर विचार करीं त मुनासिब होई। एकर बहुत अच्छा ...तुलसीदासजी बना गइल बानीं। उहाँ का संस्कृत छोड़ के लोकभाषा ...'रामचरितमानस' लिखलीं लेकिन तत्सम शब्द के प्रयोग में कोताही ना ...बा ओकरा के समझे में अपढ़ जनता का भी दिक्कत ना भइल। ई ...बड़ा साफ आ सुन्दर बा; साँच पूछीं त राजमार्ग बा। ओह राजमार्ग ...चलला से कबहूँ आ कतहूँ लड़खड़ाए के मौका ना आई। ई सुझाव ...उच्चारण का दृष्टि से भी महत्त्व के बा। प्रायः बिहार के हिंदी उच्चारण के ...का बाहर आलोचना होला। पुस्तकन में तत्सम रूप छपला पर अगर ...उच्चारण में त्रुटि रह जाता तब ममोराइल-चमोराइल शब्दन के जे संस्कार ...में बइठ जाई ओकर उच्चारण कइसन होई, एकर अनुमान बहुत कठिन ...। अगर क्रिया आ कर्म के किरिया आ करम लिखाए लागल त सचमुच ...किरिया-करम हो जाई। भाषा के प्रकृति बहुत नाजुक चीज ह।

...Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकरा में हरसट्ठे हेरफेर ना होखे के चाहीं।

दोसर समस्या वा शिक्षा के। धीरे-धीरे आवाज उठ रहल वा कि शि के माध्यम भी भोजपुरी होखे के चाहीं। सवाल वा कि कहाँ तक, क रूप में? हिंदी साहित्य के निर्माण में भोजपुरी क्षेत्र के बहुत बड़ा योग वा। जे विद्वान् आ मनीषी लोग हिंदी में लिखल ओह लोग के बुद्धि-कि कम ना रहे, अपना मातृभाषा के प्रेमो अबर-दुबर ना रहे। ऊ लोग राष्ट्र आउर आत्महित दूनू के जोड़ के चलल। हमनी का भी कुछ करे का पहि अच्छी तरह से सोच-विचार लेवे के चाहीं। अपने लोगन का सोचतानी, हमरा मालूम नइखे लेकिन हम जे सोचतानी ओकरा के अपने सभन का आग राखे के चाहतानी। शिक्षा का माध्यम का रूप में भोजपुरी प्राथमिक क तक चल सकता; ओकरा आगे चलावे का बारे में ठीक से सोच लेहल बड़ा होई। देखल जाय त आज भी प्राथमिक कक्षा के पढ़ाई भोजपुरीए में होता किताब सिर्फ हिंदी में रहेला बाकिर मास्टर लोग बोलेला, पढ़ावेला भोजपुरी में। हमरा याद वा कि अगर कभी स्कूल में मुँह से हिंदी निकल जात रहे डाँट का साथे इहो सुने के पड़त रहे कि "आरबी छाँट तार" लड़िकन के हि में बोलल बहुत शिक्षक लोग अशिष्टता मानत रहे। कहे के मतलब ई कि किताबे भर हिंदी में होत रहे; पढ़ाई के माध्यम भोजपुरीए रहे। ओकरा से बेशी अतने करे के बा कि प्राथमिक कक्षा के किताब भी भोजपुरी में हो जाय। प्राथमिक कक्षा का बाद से आजे लेखा हिंदी माध्यम रहे चाहीं। ऊपर का क्लासन में बी० ए०, एम० ए० तक भोजपुरी साहित्य विषय का रूप में राखल जा सकता जइसे आज भी कई भाषन के साहि रहता। ई सिर्फ हमार सुझाव वा, निर्णय त भोजपुरी के विद्वान् लोग करे के बा।

एक तीसर समस्या, जवना पर हम कुछ कहे के चाहतानी, वा साहि निर्माण के। साहित्य-निर्माण के रूप का होखे के चाहीं, दिशा का होखे चाहीं, एह विषय में भी पूर्वज लोग रास्ता देखा गइल बा। आजे अइसन ओह घरी बहुत क्षेत्रीय भाषा रहे। भारत अइसन विशाल देश में बहुत हो भाषा भइल कवनो अचरज के बात नइखे। क्षेत्रीय भाषा एक से विद्वानन के मातृभाषा रहे आ ओह लोग का भी अपना मातृभाषा से प्रेम रहे होई। दार्शनिकन में शंकराचार्य के मातृभाषा मलयालम रहे, रामानुजाचार्य के तमिल, मध्वाचार्य के कन्नड़, वल्लभाचार्य के तेलुगु। एही तरह से धर्म आयुर्वेद, अलंकारशास्त्र आदि के भी विद्वान् भारत के भिन्न-भिन्न क्षेत्र में लोग जेकर मातृभाषा उहाँ-उहाँ के भाषा रहे। एह लोग का सामने ज्ञान-विज्ञान के पुस्तक लिखे के अवसर आइल त ई लोग अपना-अपना भाषा में ना लिख के संस्कृत में लिखल जे ओह घरी के राष्ट्रभाषा रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शंकराचार्यजी आपन वेदांतभाष्य मलयालम में लिखले रहितीं त ओह से कतना
लोगन का लाभ होइत ? मगर संस्कृत में लिखला से ओह ज्ञान-गंगा में
पूरा देश डुबकी लगा के निहाल हो गइल। मतलब कि ज्ञान-विज्ञान के भाषा
संस्कृत रहल जेह से पूरा देश खातिर ऊ सुलभ भइल। एकरा साथे कविता,
नाटक, कहानी वगैरह में लोग अपना-अपना क्षेत्रीय भाषा के भी प्रयोग कइल।
कविशिरोमणि कालिदास तक ले अपना नाटकन में संस्कृत का साथे प्राकृत के
प्रयोग कइले जे ओहघरी के लोकभाषा रहे। नाम गिनावे में बहुते नाम
लेवे के पड़ी। कहे के अभिप्राय बा कि जहाँ गंभीर विषय के विवेचन
होइत रहल संस्कृत में होत रहे, उहाँ ललित साहित्य के रचना संस्कृत का साथे-
साथे लोकभाषा में भी होत रहे। ई हिसाब बड़ा साफ, व्यावहारिक आ
समयानुकूल बा। एकर अनुसरण आज भी उचित होई। डाक्टरी, इंजिनियरी,
कानून, विज्ञान वगैरह के उच्च कक्षा में पढ़ावे लायक किताब अबहीं हिंदी में
तैयार ना हो सकल ह जब कि करोड़न रुपया खर्च हो चुकल आ पिछला
पचास-साठ साल से लगातार काम हो रहल बा। तब अइसन हालत में
जरूरी में एह विषयन के ले आवे में कतना समय लागी ? आ लगला पर
ओकरा से फायदा का होई ? एह से हमार ख्याल ई बा कि ज्ञान-विज्ञान
खातिर हिंदी के राखे के चाहीं आ ललित साहित्य—कविता, कहानी,
उपन्यास, निबंध—खातिर भोजपुरी के प्रयोग करे के चाहीं। जब हम कहतानी
कि ज्ञान-विज्ञान हिंदीए में राखल अच्छा होई त हमार मतलब बा उच्च ज्ञान-
विज्ञान से। गाँव-देहात का काम में आवे वाला साहित्य—जइसे खेतीपाती,
बनवानी, सिंचाई, स्वास्थ्य, सफाई वगैरह के सूचना—भोजपुरीए में रहे के
चाहीं जेह से कम पढ़ल लोग भी ओकरा से पूरा फायदा उठा सके।

साहित्य-निर्माण के चर्चा उठला पर एक बात अउरो कहे के चाहतानी।
स्वतंत्रता-प्राप्ति का बाद सरकारी सहायता पर निर्भर करेके प्रवृत्ति बहुत बढ़
रहल। सरकार के पल्ला बिना पकड़ले कवनो काम करे के कोई चाहते
नइखे। ई लक्षण प्रगति के बाधक ह। सरकारी सहायता से, सरकारी
दबाव में, सरकारी संकेत पर जवना साहित्य के निर्माण होई ऊ कभी स्वस्थ,
उन्नत आ प्रेरक ना हो सकता। शासन-तंत्र का चक्की में पड़ला पर जानदार
से जानदार चीज बेजान हो जाला। शासन-तंत्र से बढ़ के प्रतिभा के रस
पीवेवाला कवनो दोसर चीज ना ह। गोस्वामी तुलसीदास आ महाकवि
केशवदास के उदाहरण एकर बहुत अच्छा प्रमाण बा। स्वतंत्र रहला से
तुलसीदासजी के प्रतिभा आकाश चूमे लागल, भारत के एक छोर से दोसरा
छोर तक छा गइल, अइसन ओज आ तेज जगवलस कि लड़खड़ात समाज तन
के खड़ा हो गइल। दोसरा ओर राजदरबार का छाया में केशवदास के
प्रतिभा के विकास रुक गइल; ओकरा से ना केहू के लोक बनल, ना परलोक।

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथवा त एके बा बाकिर 'रामचरितमानस' में राम भगवान् वन गइले 'रामचंद्रिका' में प्रभावहीन नायक भर रह गइले। भाषा आ साहित्य विकास सरकारी छाया में दब जाला। एह से जरूरत बा कि स्वतंत्र रूप उत्साह से, भोजपुरी साहित्य के विकास के संगठित प्रयास होय। भोजपुरी समाज में आउर कुछ के कमी भले होखे, बल या उत्साह के त कमी कभी रहल। जरूरत बा थोड़ा संगठन के। सरकारी तंत्र में हिंदी के जे वा ओकरा से शिक्षा लेवे के चाहीं। संचिका बड़ा सार्थक शब्द संचिका के कामे ह सँच के राखल। ओह में से कुछ निकल जाए त संचिका नावें गलत हो जाई। हिंदी का तैंतीस बरिस संचिका में कसमसात हो लेकिन अभी तक निकल ना सकल। विहार में त कुछ निकलवो मगर दिल्ली के हाल मत पूछीं। उहाँ हिंदी लिखल त दूर, लोग का में भी लाज लागेला।

भाषा आ साहित्य के प्राण-शक्ति लोकजीवन से मिलेला। लोकजीवन से कट गइला पर ऊ निर्जीव हो जाला। भोजपुरी में लोकसाहित्य एही जादे बा कि ऊ लोकजीवन में हमेशा रमल रहल, ओकरा से कवहुओं बलग ना भइल। भोजपुरी भाषा आ भोजपुरीभाषी के पौरुष के भी कारण इहे बा। हमरा विचार से एकरा के पुष्ट करे खातिर हर जिला में सांस्कृतिक केन्द्र के स्थापना अच्छा होई जवना में लोकगीत, लोकसंगीत, लोकनाट्य, लोकनृत्य के आयोजन समय-समय पर होत रहे। एह से संस्कृति में सहायता मिली, अपना संस्कृति के प्रेम बढ़ी, साथे-साथे ऊ शहर आ गाँव के बढ़त खाई पाटे के भी काम करी। अब त देहात के लड़िका भी भैंस चरावत, घास गरहत 'रामचरितमानस' के चौपाई का बदला में प्रेम के स्वर गुनगुनात बाड़े सँ। सिनेमा के गीत वातावरण में गूँज रहल बा। ओकरा बुरा प्रभाव से नयका बिरवन के बचावे खातिर भी सांस्कृतिक केन्द्र के स्थापना जरूरी बा, ना त भोजपुरी के तेज मद्धिम पड़ जाई। तेजस्वी के तेजे रहल त रहल का ?

एगो बात कई बेर सुने के मिलेला। एह से ओकरा बारे में भी दू शब्द कहे के चाहतानी। कुछ लोग कहेला कि भोजपुरी में साहित्य नइखे। एह पहलू के ठीक से समझे के जरूरत बा काहे कि एकरा के ले के नीमन-नीमन लोग का भी भरम हो जाला। पहिला बात त ई कि भोजपुरी में साहित्य के कमी बा, ई कहल गलत बा। भोजपुरी के लोक-साहित्य कवनो भाषा का लोक-साहित्य से उनइस नइखे; बीस भी कहल जा सकता। लोकसाहित्य छोड़ के अगर शिष्टसाहित्य पर ध्यान दीं त उहो दब नइखे। हिंदी साहित्य में कबीरदास, दरियादास वगैरह निर्गुणिया संत कवि जवना भक्ति के प्रचार कइले ऊ अधिकतर भोजपुरीए में बा। ई साहित्य कुछ त संगृहीत भइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा, सागल बा, आ कुछ अभी बिखरले बा। निर्गुणिया संत लोग के रमता
जोगिया आ घुमक्कड़ प्रकृति का वजह से ओह लोग का बानी में कई बोली
के छंट-फाट हो गइल बा मगर जइसे कतनो पानी मिलावला पर दूध दूधे
रहेला, पानी ना कहाय, ओइसहीं कबीर आदि संत-कवि लोग का रचना में
पूरबी-दोसर बोली के पुट पड़ गइला से ओकर नाम भोजपुरी छोड़ के दोसर
कइल हो जाई। कहे के अर्थ कि भोजपुरी साहित्य के इतिहास पाँच-छव सौ
साल पुरान बा। ई त प्राचीन युग के बात भइल। वर्तमान युग में त बहुत
कुछ लिखा रहल बा जवन गुण आ मात्रा, दूनू दृष्टि से बड़ा सुंदर आ
महत्वपूर्ण बा। एह प्रसंग में एगो तीसर बात ध्यान में रखे लायक ई भी
बा कि प्राचीन युग से ले के आधुनिक युग तक जब-जब देश के स्वाधीनता आ
संस्कृति पर संकट आइल त भोजपुरीभाषी लोग कलम आ तलवार में तलवारे
के महत्व जरूरी समझलस। कलम ओह लोग का हाथ के शोभा बढ़ावे लागल
बाकी तलवार पकड़े के ताकत चाहे इच्छा ना रहे। संकट का समय में कलम
से कइसे जाव कि तलवार का वार से संकट भगावल जाव ? आज भी पुलिस
विभाग में जेतना भोजपुरी लोग बा ओतना दोसर लोग नइखे। एगो चउथ
बात भी याद राखल जरूरी बा। भोजपुरी क्षेत्र के ई सहज विशेषता ह कि
ओ संकीर्णता का संकीर्णता में कभी ना पड़ल; ऊ देश के, राष्ट्र के पहले देखलस,
फेरो सब कुछ के बाद में। हिंदी साहित्य के विकास में भोजपुरीभाषी
लेखक लोग के अद्भुत देन बा। ओह लोग के आधुनिक हिंदी साहित्य के
निर्माता भी कहल जाय त गलत ना होई। सबसे पहिले भारतेंदु हरिश्चंद्र
आ उनका मंडल के लेखक लोग के लेहल जाय जेह में अधिकतर लोग
भोजपुरीभाषीए रहे। 'चंद्रकांता संतति' के यशस्वी लेखक देवकीनंदन खत्री
भोजपुरीभाषी रहस। पुरनिया लोग जानता कि बहुत लोग चंद्रकांते पढ़े
खातिर देवनागरी लिपि सिखलस। छायावाद के स्तंभ, हिंदी के सबसे बड़
कथाकार जयशंकर प्रसाद, महान् उपन्यासकार प्रेमचंद, आलोचक-शिरोमणि
रामचंद्र शुक्ल, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, काशी नागरी प्रचारिणी सभा के
संस्थापक श्यामसुंदर दास, संपादक-मूर्धन्य शिवपूजन सहाय, बहुमुखी प्रतिभा के
धनी हजारीप्रसाद द्विवेदी, ई सब लोग भोजपुरीए बोले वाला रहे। अगर ई
लोग चाहित त भोजपुरी में लिख सकत रहे, हिंदी का तुलना में भोजपुरी एह
लोग खातिर आसान भी होइत लेकिन एह लोग का सामने सिर्फ आपन क्षेत्र
ना बल्कि देश रहे, राष्ट्र रहे आ ई लोग आपन शक्ति राष्ट्रभाषा आ राष्ट्रीयता
का विकास में लगवलस। भोजपुरी साहित्य पर कमी के जे आरोप बा ऊ दू
कारण से : एक त ई कि आरोप लगावेवाला लोग का सही जानकारी नइखे;
दोसर ई कि भोजपुरीभाषी लोग का आपन ढोल पीटे के ढंग भी नइखे।
आजकल त लोग ओकरे बात सुनता जे ढोल पीटता। चुपचाप कइल काम के

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमे लोग देखे, सुने आ जाने के कोशिश करता ।

ललित साहित्य का अलावे भोजपुरी में कोश-निर्माण वगैरह के काम हो रहल बा लेकिन छिटपुट रूप से । कोश-निर्माण समय लेवे वाला काम है खर्चीला भी । ऊ रोज-रोज बनेवाला चीज भी ना ह । कोश बने में समय लागे त ओकर आयु भी बहुत लंबा होला । एह से ई काम व्यवस्थित आ सुनियोजित ढंग से होखे के चाहीं, ना त बेकार के आवृत्ति होई, काम भी खूब गंभीर न होई । कोश कई तरह के होला । सामान्य कोश त जरूरी हइले ह बाकी ओकरा साथे कहावत-कोश, मुहावरा-कोश, कथा-कोश वगैरह भी बहुत जरूरी ह । एही तरह भोजपुरी के व्याकरण भी आवश्यक बा । व्याकरण कई तरह के होखे के चाहीं; प्रारंभिक स्तर खातिर संक्षिप्त आ उच्चतर स्तर खातिर विस्तृत । व्याकरण आ संदर्भ-ग्रंथ भाषा के रीढ़ ह । एकरा से भाषा के सामर्थ्य के पता लागेला । कवनो गंभीर काम हलका-फुलका ढंग से ना होय । काम बनेला साधना से, परिश्रम से, लगन से । भोजपुरीभाषी लोग जतना साधना, परिश्रम आ लगन से काम करी, भाषा ओतने निखरी, चमकी । अगर अलग-अलग संस्था काम बाँट ले त जे चीज तैयार होई ऊ नीमन आ स्थायी महत्त्व के होई ।

अबतक भोजपुरी के निर्माण का बारे में हम कुछ निवेदन कइलीं । अंत में प्रचार का बारे में भी कुछ कहे के चाहतानी । जमाना प्रचार के । काम त लगन से होखहीं के चाहीं मगर ओकर जानकारी करावल भी जरूरी ओतने जरूरी बा ना त एक-से-एक सुन्दर चीज कोना में पड़ल रह जाता आ ओकरा ऊपर केहू के ध्यान ना जाय । भोजपुरी के जे पत्रिका निकलत बा सँ ओकनिन में जहाँ-जहाँ भोजपुरी के जे काम होता ओकर विवरण देबे के चाहीं जेह से मालूम होत रहे कि कहाँ का हो रहल बा । ओकरा से संगठन आ समन्वय में सहायता मिली । दोसर ई कि भोजपुरी लेखक लोग के प्रोत्साहन खातिर साहित्य अकादमी अइसन संस्था में भोजपुरी के मान्यता प्राप्त कराये के भी प्रयास होखे के चाहीं । कवनो चीज के महत्त्व आ मर्यादा के मूल्यांकन आर्थिक दृष्टि से होला । भोजपुरी के ई पक्ष भी उपेक्षित ना रहे के चाहीं । भोजपुरी सही मानी में अंतरराष्ट्रीय भाषा ह । भारत का बाहर फीजी, मॉरिशस, ट्रीनीडाड, गायना, सूरिनाम आदि देशन में भोजपुरीभाषी लोग लाखन का संख्या में बा । अइसन भाषा के मान्यता अपने देश में ना होय ई चिंता के बात बा ।

अपने सभन हमार अतना सम्मान कइलीं आ अतना प्रेम से बात सुनलीं एकरा खातिर का कहीं ? 'धन्यवाद' त विलायती सभ्यता के छाया ह । ओकरा से भोजपुरी हृदय के भाव ठीक से प्रगट ना होई । साँच कहीं त अपने सभन का छोह से हमार रोआँ-रोआँ पुलकित बा । वेद का एक मंत्र से हम आपन बात समाप्त करे के चाहतानी—संगच्छध्वं, संवदध्वं, संवो मनांसि जानताम्—सँगे चलीं सँ, सँगे बोलीं सँ, सँगे सोचीं सँ ।

जय हिंदी : जय भोजपुरी ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

छठवाँ अधिवेशन

(६ आ ७ जून, १९८१)

के

अध्यक्ष

डा० रामविचार पाण्डेय

के

अध्यक्षीय भाषण

BhiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यक्षीय भाषण

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के छठवाँ अधिवेशन के संयोजक, स्वागत समिति आ कार्य समिति के सदस्यगण, दूर-दूर से आइल प्रतिनिधिगण, स्वागत समिति के अध्यक्ष जी, मंत्री जी, सदस्यगण आ विहार एसोसिएशन जमशेदपुर के अध्यक्ष जी, मंत्री जी, आ सदस्यगण आउर इहाँ भोजपुरी मातृभाषा के सेवा में लगल बहिना लोगन आ भाई ब,

रउरा सब ई जे आज हमरा के सनमान दिहलीं, आदर दिहलीं, आ ई जे अभिनन दिहलीं, ओकरा खातिर हम बहुत आभारी बानीं। भोजपुरी भाषा का आर्यभाषा परिवार के भाषा ह, कवना प्राकृत परिवार से निकलल बा, ई कइसन भूभाग, कर्मठ देश प्रेमी आ मात्र प्रेमी लोगन के मातृभाषा ह, ई त रउरा सब जानतीं। ए के केतना लोग बोले लन, भारत का अलावें संसार का आउर कवन में कहाँ-कहाँ बोलल जाले, अपना मातृभाषा में संस्कृति खातिर त्याग आ प्रेम के कइसन भावना बा आ एकरा में केतना साहित्य लिखा गइल बा आ कइसन बा, ई बात रउरा सबके मालूमे बा।

ए बासन पर महान महान विद्वान जइसे डा० उदय नारायण तिवारी, स्व० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा० भगवत शरण उपाध्याय, डा० कृष्ण देव उपाध्याय, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा निअर आगात आगात विद्वानो के रउआ बइठा चुकल बानी। उ लोग रउरा सब के भोजपुरी भाषा के बारे में जवन गियान दे चुकल बा ओकरा के दोहरवला के जरूरत हम नइखीं समझत। हम आज रउरा सब का सेवा भोजपुरी भाषा पर एगो दोसरा दृष्टि से नजर राखब। आज ले रउरा सभे ए बारे पर विद्वान लोगन के वैज्ञानिक विवेचन सुनले बानीं। आज हम रउरा सबका सामने भोजपुरी पर व्यावहारिक नजर से विचार रखि रहल बानी।

वैज्ञानिक दृष्टि से जे विचार भइल बा ऊ रउरा सभे जानते बानी कि संसार में हजार से मुख्य भाषा, दू हजार ले उप-भाषा आ दसन हजार ले डाइलेक्ट भाषा पाइल जाली स। ई कुल्हि वैज्ञानिक विवेचन ह। आजु हम भाषा के व्यावहारिक पक्ष पर कुछ कहे आइल बानी। व्यवहार का दृष्टि से भाषा दू तरह के होले। एगो कुर्सी के भाषा आ एगो मातृ के भाषा। दोसरा शब्दन में एगो राजा के भाषा आ एगो परजा के भाषा। आजु का शब्दन में एगो शासक के भाषा आ एगो शासित के भाषा। हमनी के भोजपुरी भाषा मातृ के भाषा ह, परजा के भाषा ह, शासित के भाषा ह। ई कवे

RaiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

कुर्सी के भाषा ना भइल। जवन भी भाषा कुर्सी पर रहेले आ नीचे की भाषा पर कुछ त रोब से कुछ अपना सहूलियत खातिर आ कुछ आदर बहुत दिन रहे खातिर माटी के भाषा पर आपन परभाव जमा देले। भी कुछ डर, कुछ जी-हजूरी में आ कुछ आपन जान बचावे खातिर के बड़प्पन सँकार लेले। अपना जनम का स्वभाव का कारण अपना बदल ना देंले बल्कि कुर्सी वाली भाषा का कुछ सबदन के अपना में ले लेले। अपना के अइसन बना देले कि कुछ समय के बाद ऊ शब्द मटिये के बन जाले स।

भोजपुरी माटी के भाषा पर अपना प्राकृत भाषा के प्रभाव रहे। एकरा कुर्सी पर संस्कृत भाषा आइल। इहाँ के जेतना प्राकृत भाषा रहलीं का शब्दन के लेके संस्कृत भाषा एगो बहुत-बहुत सुन्दर रूप में संस्कृत भाषा हो गइल। ओकरा खिलाफ एही बिहार में जैन धर्म आ बौद्ध धर्म भइली स। एह दूनो क्रान्तियन के करते पाली भाषा, जे ओह घरी के माटी रहे, सोझा आइल। इहाँ तक भइल कि बौद्धधर्म का साथे-साथे पाली के भइल आ बहुत-सा ग्रंथ पाली में लिखल गइले स। डा० हजारी प्रसाद नियर विद्वान के कहनाम इहाँ तक ह कि पुरान वाली भाषा भोजपुरी रूप बुझाता। संस्कृत भाषा के लेके झगरा झंझट चलते रहे। एने मगध लोगन के, अलग-अलग भाषा बोले वाला लोगन के, भारत पर चढ़ाई ओकरा वजह से संस्कृत पर तुर्की, फारसी, अरबी, यूनानी, आ बलूची चढ़ाई हो गइल। ओह लोगन में सबसे मशहूर अकबर बादशाह भइले। समय में संस्कृत राजभाषा के रूप में चलत रहे। उनकर फौज भी बहुत बड़ ओतना बड़ा उनकरा लश्कर में अफगान, पठान, बलूची, ईरानी, तुर्की पंजाबी, सिन्धी काश्मीरी अउर बहुत बड़ संख्या में राजपूत लोग रहे। लोगन के एगो भाषा पढ़ावे के भी विचार रहे, जेसे ई लोग आपुस में बोल सके। एह काम खातिर ऊ अमीर खुसरो नाम के एगो बहुत बड़ विद्वान अमीर खुसरो एह बात के कोरसिस कइले कि कुल भाषा मिला के एगो बनावल जाव आ ओह भाषा के नाम ऊ उर्दू रखले। संस्कृत का मिलाके ऊ बहुत-सा छन्द लिखले। नमूना का तौर पर एगो छन्द देखीं—

एकस्मिन दिवसेऽवसान समये
भैया खड़ा बाग में।
काचित लोल कुरंग साव नयना
गुल तोड़ती थी खड़ी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Co In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीला लोल कटाक्ष पात निकरैः
घायल किया था मुझे ।
शोचामि निशि वासरः सुविकलः
तू यार कैसे मिले ।

अमीर खुसरो एगो अइसन कोश तैयार करे के कोरसिस कइले जेसे ओह
के प्रचलित भाषा सभन का शब्दन के मिलावल जा सके । जइसे—

खालिक बारी सिरिजन हार
वाहिद एक विदा कर तार ।

अकबर का जमाना तक ले ई सिलसिला चलल । वाकिर उनकरा बाद,
के राज-काल में, फारसी जोर पकड़लस । ओहघरी छापाखाना त रहे ना ।
के भी अभाव रहे । बाँसी कागज आ भोजपत्र पर कुछ लिखाय । जहाँगीर
छपवले आ बतवले कि

शुद्धो सहीति, विख्यात ? अशुद्धो गलती स्मिथ : ?

लेकिन सस्कृत उर्दू फारसी भाषा सभन के मिलाके एगो भाषा तैयार
काम बढ़ ना सकल । जहाँगीर के झुकाव फारसी के ओर रहे । भोजपुरी
में भगवान बुद्ध का प्रचार का कारन संस्कृत के बहुत-कुछ धक्का लाग
रहे। भोजपुरी लोगन में आ फारसी लोगन के प्रचार खातिर शाहाबाद
जिला भोजपुर जिला का भोजपुर गाँव में आ आजमगढ़ में मिरदासपुर गाँव
एक-एक गो कालेज खोलल गइले स, जवन आज ले मौजूद बाड़े स ।
आ अरबी का दुतरफा हमला से संस्कृत शब्दन के ढेर नोकसान भइल ।
के समय में उनका बीमार लइकी के एगो अंग्रेज डाक्टर अंग्रेजी दवा से
कर देलस । ओही का इनाम में अंग्रेज लोग जहाँगीर से भारत में रोजगार
फरमान सनद पा गइल । तब से कइसे अंग्रेजी कुर्सी के भाषा हो गइल आ
के लड़ाई आ बक्सर के लड़ाई भइल, बनारस के राजा चेत सिंह के लूटल
अवध के बेगम के लूटल गइल, लक्ष्मी बाई, तात्या टोपे आ बहादुर शाह के
कइल गइल । पंजाब के राजा रणजीत सिंह के हरा के पंजाब पर कब्जा
कइल । ऊ कुल्हि रउरा सबका मालूम बा आ ऊ एकर विषय नइखे । फारसी
के धकिया के अंग्रेजी कुर्सी के भाषा हो गइल । ओही समय में फ्रान्सीसी,
आ जर्मन लोग भी एह देश में आइल । ओह लोग के भाषा के कुछ-कुछ
भारत का अउरी-अउरी भाषा के संगे-संगे भोजपुरीयो में आ गइल । ई थोड़की
विशेष रउरा सबका सोझा दे तानी, जे रउरा सबको ई बुझा जाय कि भोजपुरी

Ra Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

भाषा के खटिया के बिनावट छगो भाषा सबन का बाध से बिनाइल बा। कुल्हि मिलि के नींचे-ऊपर, अगल-बगल, दाहिने-बायें, अइसन बिना गड़ कवनो के सुतारी काट के निकलला से खटिया भसि जाई आ चरमरा के टूटे। उदाहरण का तौर पर नीचे कुछ शब्द नमूना के तौर पर दिहल जाई। भोजपुरियो के शब्द हवे स। काहे कि संसार के नामी भाषा दोसरा-तेसरा लेके बाड़ी सऽ। शब्द ब्रह्म हऽ, ऊ सर्व व्यापक हऽ। ब्रहम के केहू नाहीं राखि सके। अब नीचे कुछ शब्द दिहल जाता।

भाषा	शब्द
(अ) वैदिक संस्कृत	गड़ूआ
मूल वैदिक शब्द कदूक (सोमपान) कूडडअ	गड़ू, गाड़ू, गड़ूआ
(ब) संस्कृतः जल पूजा आरती वगैरह।	
(२) पाली : गोविग से गोइठा।	
(३) तुर्की : सन्दूक से सनूख। बन्दूक से बनूक।	
(४) अरबी : किताब, मिला।	
(५) फारसी : तोसक, तकिया नाजायज, जायज वगैरह।	
(६) अंग्रेजी : कोटा, टिकट, स्टाम्प, मीटर, लीटर वगैरह।	

ऊपर जवना भाषा समन के नाम दिहल गइल बा ओही सब भाव के शब्द ढेर बाड़े स, जवन रउरा सब का मालूम बा। मागधी के पार पाटी के भोजपुरी के खटिया ऊपर गिनावल हवे। ऊ भाषा सभन का छवधिया से गझिन बिनाइल बा कि ऊ अपने में दृढ़ आ बहुत बरिआर बा।

लिपि आ भाषा के आन्दोलन :—

मोटा मोटी सइ बरिस से उपरे होता कि एह देश का राष्ट्रीय भाषा के सवाल पैदा हो गइल। कुछ लोग चाहत रहे कि एह देश का राष्ट्रीय भाषा हिन्दुस्तानी रखाव आउर देवनागरी आ फारसी दूनो लिपियन में लिखल जाई। अरबी, फारसी, संस्कृत देशी सब आ विदेशी शब्दन से मिलि के चलत रहे। कचहरी आ सरकारी कागजात में फारसी लिपि चलत रहे। फारसी लिपि के में नागरी लिपि चलावे खातिर काशी से हरिश्चन्द्र जी आ उनकर दूसरा लोगन बहुत प्रयास कइल। ओकरा बाद काशी नागरी प्रचारिणी सभा के भइल। ओह लोगन का बहुत परिश्रम आ आन्दोलन से कचहरी में देवनागरी के प्रचलन भइल, जवन आज तक चलत बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आन्दोलन :—

कई सौ बरिस के बाद जब ई देश विदेशी लोगन का गुलामी से छुटकारा भइल, त देश भक्त लोगन का मन में एगो आन्दोलन उठल कि अपना देश में आ देश में भी एगो भाषा होखे के चाहीं, जवन सर्वमान्य होखे। एह देश के संकट के समय भी देश के एकता के बनवले राखे खातिर चवरासी सिद्ध लोग आउर अनेकन लोग जइसे बंगाल से चैतन्य महाप्रभु, मिथिला के कवि कोकिल विद्यापति, भोजपुरी के आदि कवि कबीर दास, तुलसी दास, मीराबाई, सन्त तुकाराम, महाराष्ट्र स्वामी रामदास देश में एकता के एगो अलख जगवले रहले। ओह घरी पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी बोली, राजस्थानी, मराठी वगैरह नाम से जानल जात रहली स, आ पंजाब भाषा के सूफी सन्त कवियन के बानी कहल जात रहे। ओ कुल्हिन के भाषा के एगो भाषा बनावल गइल जवना के नाव धइल गइल 'हिन्दी'। भारत का संविधान में देवनागरी लिपि में लिखल हिन्दी भारत के राष्ट्रभाषा स्वीकार कइल गइल, बा ऊ अंगरेजी के स्थान लेवे खातिर आगा बढ़ल। देश खातिर ई एगो बहुत बड़ गौरव के बात भइल कि हिन्दी भारत के राष्ट्रभाषा स्वीकार कइल गइल। लेकिन लोग ई कहता कि हिन्दी के गति बड़ सुस्त बा। हमरा जाने में हिन्दी के ठीक आकलन नइखे क सकल। ऊ दिन दूर नइखे जब हिन्दी भारत के एगो बहुत बड़ समृद्धिशालनी राष्ट्रभाषा होई। बल्कि संसार के धनी देश सभन में एकर नाँव गिनाई। हमनी का भोजपुरी भाषा भाषी लोग हिन्दी का हर प्रकार का उन्नति के कामना राखीले जा, आ हमनी के बहुत विद्वान लोग बाड़े जे हिन्दी के सेवा कइल लोग आ सेवा करिहें।

भोजपुरी के दुर्भाग्य :—

अउरी-अउरी प्रदेश के भाषा जे अपना-अपना प्रदेश में राजभाषा के रूप में स्वीकार कइ लिहल गइली सऽ। उनहीं का सँगे एगो सहूलियत रहे। बंगाली, उड़िया, आसामी, गुजराती, मराठी, तेलुगु वगरैह भाषा के सँगे एगो खास सहूलियत रहे कि ओह भाषा के बोले वाला लोग एक एरिया में रहे आ बाटे। भोजपुरी का सँगे पहिले से ई दुर्भाग्य रहे आ बाटे कि भोजपुरी बोले वाला लोग एक एरिया में नइखन एह से एह देश में भोजपुरी प्रान्त ना बन सकल आ भोजपुरी के मान्यता ना मिल सकल। भोजपुरिया लोग उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार आ नेपाल में बँट गइल बा। एगो बहुत बड़ संख्या में भोजपुरी बोले वाला लोगन का विदेश रहला से एके मान्यता ना मिलि सकल आ संविधान के आठवीं अनुसूची में एकर मान्यता अबहीं ले ना मिलल। तबो संत साहित्य आ सखी सम्प्रदाय में भोजपुरी के बहुत अधिक साहित्य लिखाइल बा। ओकरा बाद, स्वतंत्रता के

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

लड़ाई के समय में भी भोजपुरी कविता लिखाये लगल रहली स। मनोरंज
के 'फिरंगिया' त अइसन जोम बन्हलस कि अइसन कवनो सभा ना होवे
'फिरंगिया' पहिले ना गवाव। ओही स्वतंत्रता के लड़ाई के समय में भोजपु
चितू पाण्डे के भोजपुरी के व्याख्यान जनता में लहर दउड़ा दे। आ ई मालूम
कि भोजपुरी लोगन में अपना मातृभाषा के प्रति केतना श्रद्धा वा। इ देखि के
पुट कविता लिखाये लगली स। धीरे-धीरे भोजपुरी रेडियो पर भी गइल।
एह प्रकार से भोजपुरी के प्रचार बढ़ल। आ आजु केतना बढ़ि गइल वा, ई
से कहे के जरूरत नइखे। हिन्दी आ भोजपुरी के प्रकाण्ड विद्वान डा
विदेशन में लोक-संस्कृति का वास्ते प्रसिद्ध विद्वान डा० कृष्णदेव उपाध्या
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का चउथका अधिवेशन में अपना
क्षीय भासन में कहले कि 'भोजपुरी भाषा खातिर ई कम गौरव के बात नइखे
एकरा विषय में हिन्दी, अंग्रेजी फ्रेन्च आ जर्मन भाषा का अतिरिक्त सुदूर
भाषा में भी शोध लेख लिखल पावल जाला।'

एह से ई पता चल सकेला कि भोजपुरी में केतना अनुसंधान के
चुकल वा अवरू हो रहल बा। सचमुच ई बात हिन्दी के कवनो बोली
भारत के कवनो भाषा खातिर गौरव अवरू अभिमान के विषय वा।

मानक भोजपुरी :—

आजु काल्हि एगो इहो सवाल पैदा भइल वा कि भोजपुरी के एगो
रूप लिखाव जवन सबका मान्य होखे। ई बात कवनो भाषा में कमेटी
कबहीं भइल नइखे। भोजपुरियो में ई हो ना सकेला। शुरू-शुरू में जब
में गद्य लिखाये लागल आ लेखक लोग शब्द के तूरि तार के लिखे लागल
ई नीक ना लागल। एकर सिकाइत हम महापंडित राहुल जी से कइलीं,
के हमरा से कहलीं कि पाँड़े जी एमे घबड़इला के बात नइखे। कोई बोली
के रूप धारन करे लागेले त पहिले अइसहीं होला जइसे भोजपुरी में हो रहल
लिखात-लिखात अपनहीं ओकर एगो सुन्नर नीमन आ सुघर रूप तैयार हो
अबहियें लेखक लोगन पर अंगुरी उठइला के जरूरत नइखे, नाहीं त कोहंड़ा
बतियवा के हाल हो जाई। एह बारे में मनोरंजन बाबू से भी बतियवले
हाँ। उँहों के कहलीं कि एकरा बारे में छेड़-छाड़ कइला के नाम नइखे।
ठीक, सरक भी ठीक। केहू-केहू इहो सिकायत करेला कि अइसन शब्द लिखल
जा ताड़े स जवन लेखक लोग अपना-अपना इलाका के शब्दन के टूके
दे तो दोसरा इलाका के लोगन के समझ में आवते नइखे। एह बारे में
लोगन के कवनो दोष नइखे। जब कवनो जग नधाला त जेकरा घरे जवन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से आके हाजिर करेला। ई ओही यज्ञ नियर बा। एक ही चीज खातिर भोजपुरी का अलग-अलग जिलन में अलग-अलग शब्द बाड़े। ओह के संग्रह कइ के सोझा ले आवे के चाहीं। आ ओनही के ठीक प्रयोग करत-करत भाषा में एकरूपता आ जाई जवन कि डा० उदय नारायण तिवारी लिखले बानी भाषा शब्द से ना बनेले, भाषा के रूप क्रिया से जाहिर होला- जइसे—

बंगला :—आमार घरे नाना कमेर जिनिस आछे।

भोजपुरी :—हमरा घरे नाना रकम के जिनिस बा।

हिन्दी :—पश्चिम दिशेर बुडिल रवि। आटा कि सुन्दर लोहित छवि।

भोजपुरी।—पश्चिम दिसे में बुड़ले रवि एकइसन सुन्दर लोहिस छवि।

जइसन भोजपुरी एह समय लिखा रहल बा ऊ ठीक हो रहल बा। जे लोग मातृभाषा के सेवा करे खातिर आगा आ रहल बा ओह लोगन में संस्कृत के लोग भी बा आ ई बात स्वाभाविक बा कि ऊ लोग संस्कृत शब्दन के बहुलता भोजपुरी लिखबे करी। ओह में का हरज बा। जइसन कि हम देखला चुकल कि कबीर खुसरो संस्कृत आ उर्दू के मिला के श्लोक लिखले त केहू भोजपुरी :—

ललित लवंगलते परिशीलन, कोमल महल समीरे
धेनु चरावत कान्हा घूमस नित जमुना का तीरे।
अति सौन्दर्य युता वृजवाला तत्रागत्य सुकंठाः
गावस, गीत, मीर नाचस वंसीधुनि बेधत हीरे।

एक दिन हम अपना डिस्पेंसरी में बइठल रहलीं। भगवान हमरा रोटी का जुगाड़ खातिर ३, ४ गो मरीज लोगन के भेजले रहले, आ दू जाना साहित्य प्रेमी आइल रहले लोग। ओही घरी एक जाना भाँट चहुँपले। ऊ कहले—

बड़ी भूखी लागल बा बाबा।
भोजन कुछ करवाईं।
रामविचार के नाम के सार्थक
रउरा आज बनाईं॥

हम कहनी कि भाँट जी कुछ नया सुझाव, तुकबंदी से काम ना चली। अच्छा भोजपुरी। हम रउरा के भोजपुरी में श्लोक सुनाव तानी—

हरफार कुदारंच
लेके परती के कोरनम

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

करिया अक्छा भइंस बराबर
ई ववुआ के लच्छन्म
बटबसोटि अस सोटा लेले
खमर खमर ख जुआवन्म
नाके पोटा दात चिउइले
ई ववुआ के लच्छन्म।

हम कविजी के पाँच गो रुपया दिहनीं आ कहनीं कि हई लीं तीन रु
होटल में खाना खा लेहब आ दू रुपया इनाम। ऊ ठठा के हँसले आ
महाराज जी तीन गो रुपया के भोजन होटल में कइला से हमार काम
एक रुपया के चटक सोहारी तनी रामरस आ एगो जहर। दिन-राति कटि
भूखि के पहरा। जे जे बइठल रहे सभे एक स्वर में कहल डाक्टर साहेब
गजवे बा, भोजपुरी में अब श्लोक लिखाये लागल। आ हमार मन पाई
मनोरंजन बाबू के कविता के लाइन—

अब दिन बीति गइल हुजुरन के।
मजदूरन के दिनि आइल।

मनोरंजन बाबू के प्रसंग आ गइला पर उनका जीवन में भोजपुरी के
कला लउकलि ऊ अपना ढंग के एगो अजब चीज भइल। मनोरंजन
राजेन्द्र कालेज, छपरा के प्रिन्सिपल रहले। कालेज में जयशंकर प्रसाद के
मनावे के विचार भइल। आ सब केहू सोचल कि ओकरा मुख्य अतिथि के
कवनो बड़ नेता के बोलावल जाय। छपरे के एगो बड़ आदमी बिहार
कांग्रेस में एम० एल० ए० लोगन के हित रहले। उनहीं के प्रधान
रूप में बोलावे के निर्णय भइल। ठीक समय पर जलसा शुरू भइल। मुख्य
के आसन दिआइल। जयशंकर प्रसाद जी का बारे में बहुत वक्ता लोग
कहल। अन्त में मुख्य अतिथि से निवेदन भइल कि उहों के जयशंकर प्रसाद
का बारे में कुछ कहीं। उहाँ के उठलीं आ कहलीं—राजेन्द्र कालेज के
महोदय, प्रोफेसर गण तथा छात्रवृन्द! आपलोगों ने मुझको जो यह सम्मान
है, उसके लिए मैं आपका बहुत आभार मानता हूँ। जयशंकर प्रसाद जी
एक बहुत बड़े सेवक थे। उनकी लिखी हुई सभी पुस्तकों में 'प्रिय प्रवास'
अच्छी लगी। मैं आपको राय दूंगा कि आप उसे पढ़िये। मेरे पास
कम है। एक विशेष काम से जाना है। अतः आपलोग मुझे जाने दें।

मनोरंजन बाबू धन्यवाद देवे उठलें आ कहलें कि विद्वान वक्ता जी
पर बड़ी कृपा कइलीं हैं। हम इहाँ के एगो छोड़के कविता में इहाँ के
तानी। ऊ कहले—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी० जी० एम० पी०

एल० एल० पी० पी०

ई हम खूबे जानत बानी ।

कि जयशंकर के 'प्रिय प्रवास' के रउरा खूबे पढ़ले बानी ।

सभा विसर्जित हो गइल । मुख्य अतिथि जी विदा हो गइलें त लोग मनोरंजन बाबू से पूछल कि जी० जी० एम० पी० आ एल० एम० पी० पी० के माने का मनोरंजन बाबू जवाब दिहले जी० जी० एम० पी० के अर्थ ह घींच-घाँच के मिडिल आ एल० एल० पी० पी० के अर्थ हवे कि लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर । अगर कोनो भोजपुरिया में अइसन कला होखे त ऊ मनोरंजन बाबू नियर कविता लिख सकेला ।

हम बतला चुकल बानी जे भोजपुरी में फारसी आ उर्दू के बहुत-सा शब्द आइल बाड़े ल केहू चाहे त ओइसनो भोजपुरी लिखि सकेला ।

राम :—

राम—देखिह त सामा, दीनानाथ का घरे हल्ला भइल बा का ?

रामा :—

अरे ऊ मरद मेहरारू के झगड़ा ह । ओसे हामा सूमा का का मतलब ।

एह मे झगरा मरद मेहरारू, .हामा (हम) सूमा (तुम) मतलब—ई शब्द अरबी के हउअनि स । बाकिर अब कुल्हि भोजपुरिये के हो गइल बाड़े स ।

केहु लेखक पूरा-के-पूरा अपना मागधी कला से चुनि के सब्दन के सजा के भोजपुरी लिखि सकेला, जइसे—

हीरा :—का हो करीमन तोहरा टेल्हा राम के कते सिटकट बइठल ।

करीमन :—अरे भाई उनकर कहा टेघ लागी ।

एक ठगरी किछि आइल गइले ओमे से उघि आइल अइले । उन्हुका के पास एक छोपा जेवनार चाही एमे ओमे लक इ हल फिर त तोड़ा आ मेवकिया आ मारे के मुड़ुकि अबले फीर ताड़ें ।

जो केहु लेखक चाहे त अंगरेजी भोजपुरी लिख सकेले । जइसे बाजारे जा जाइ त एगो साइकिल के स्पेशल सीट, दूगो डनलप के टायर, दूगो डनलप के ट्यूब आ दूगो हौंवे लेले अइह (मानक भोजपुरी ऊहे होई जे भोजपुरी में आ गइल छवो भाषा का सब्दन के लेके अपना क्रियापद में बान्हि के लिखल जाय ।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

भोजपुरी आन्दोलन

आज से पचास-साठ साल पहिले जे भोजपुरी प्रेमी लोग भोजपुरी में लिखे ऊ एह भाषा का मिठास से प्रभावित होके। तेग अली के 'वदमाश दर्पण', लिखे के बिरहा, देहाती जी के 'देहाती दुलकी', दूधनाथ उपाध्याय के 'गो लिखे छंदावली' भिखारी ठाकुर के 'बिदेसिया' ओगैरह लिखइली स, भोजपुरी के मिठास के आनन्द लेवे खातिर आ दोसरा लोगन के देवे खातिर।

गाँधी जी कहल करस—"मैं चाहता हूँ कि अंग्रेज भारत से न भी जाय मगर अंग्रेजियत तो चली जावे।" आजादी मिलला के वाद ठीक ओकरा उल्टा भइल। अंग्रेज त चलि गइले, वाकी अंग्रेजियत के हवा एह देश में आन्हीं लिखे बहे लागल आ आज त ई दशा वा कि जहाँ अंग्रेजियत के गंध नइखे ऊ अन्चल असभ्य कहाता।

पं० जंवाहर लाल जी एक हाला कहले रहनीं—'फिर विदेशी आक्रमण हमारी कमर तो झुक गयी, मगर हमारी गर्दन नहीं झुकी।'

आज भोजपुरी वोलेवाला लोग के इहे हाल हो गइल वा। हमनीं के पहिरावा, रहन-सहन, भोजन करे के नियम, ओगैरह वहुत-कुछ वदल गइल वा। बाकिर अवहीं हमनी के गर्दन नइखे झुकल। हमनी भोजपुरी संस्कृति के रक्षक हो रहल वा, भोजपुरी भाषा का रइछा का कारन। जहिए भोजपुरी भाषा के लोप हो जाई तहिए भोजपुरी संस्कृति के विनास। ई वात रउरा सव के समुझावे के नइखे। इतिहास एकर गवाह वा कि जवन जवन संस्कृति नष्ट भइली स, ओकरा के पालन करेवाली भाषा का नष्ट भइला के कारन। स्व० महेन्द्र शास्त्री, स्व० मनोरंजन वाबू, स्व० दुर्गाशंकर सिंह 'नाथ', स्व० रघुवंश नारायण सिंह एवं स्व० नाथ सिंह नियर लोग भोजपुरी संस्कृति के प्रान बचावे खातिर भोजपुरी के रूप में स्थापना वदे आन्दोलन शुरू कहल लोग। एह काम में पं० गणेश चौबे दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती के वहुत वड़ योगवा।

एह आन्दोलन के पहिला क्रम खड़ा भइल महर्षि विश्वामित्र का स्थान बक्सर से। स्वर्गीय खाकी बाबा के आशिर्वाद लेके डा० कमला प्र० मिश्र ने भोजपुरी साहित्य मण्डल के स्थापना कइलें। देखा-देखी एक नीमना काम के रूप भोजपुरी इलाका में कई जगह भोजपुरी साहित्य मण्डल के स्थापना भइल। बाहर में पश्चिमी अंग भोजपुरी परिषद्, बम्बई भोजपुरी समाज, लखनऊ भोजपुरी समाज, भोपाल भोजपुरी समाज आदि के स्थापना भइल। सैकड़न कवन कइली स भोजपुरी के साहित्य मण्डल के भरे खातिर। आ आजु भोजपुरी साहित्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी संगठन के जवन उज्ज्वल रूप खड़ा बा ऊ सबका सामने जाहिर बा। भोजपुरी भाइन का उत्साह से मातृभाषा के प्रति श्रद्धा अउर प्रेम का रूप में भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के संगठन भइल बा। ई केहु का खिलाफ नइखे, बलुक अपना अस्तित्व का रक्षा में कइल गइल बा। ए बात खातिर हम अपने समन से कहे के चाहत बानीं कि मागधी परिवार के आउर-आउर भाषा जइसे बंगला, असमिया, उड़िया, मैथिली सबसे सम्बन्ध बढ़ा के एगो पारिवारिक बढ़ाव के मामिला, प्रेम आ मिलन के वातावरण, तैयार करे के बा। बंगाल-बंगाल में जे जनजाति के लोग बा ओह भाई सबके पास हमनी के पड़ोसी हईं स। उन्हनी सब से भी मित्रता बढ़ावे के चाहीं आ एह काम के वास्ते 'भोजपुरी-उड़िया-शिक्षा, भोजपुरी-बंगला-शिक्षा, भोजपुरी-मैथिली-शिक्षा आ भोजपुरी-असमिया-शिक्षा' नियर पुस्तक लिखाये के चाहीं। अंगिका, वज्जिका, आदि के बढ़ावे के चाहीं। जे लोग सोच ता कि भोजपुरी के आन्दोलन कवनो भाषा का खिलाफ बा, ओह लोगन से हम निहोरा करबि कि हमन के सिद्धान्त बा कि—

तोता तोती बोले रामा बोले भँगराजवा से
पपिहा के पी पी हिया साले रे बटोहिया।

सब भोजपुरिया लोगन के करेज के किकोर लेले रहे देश के चिरइन तक के बोली, ऊ लोग एह देश का कवनो भाई का बोली चाहे भाषा का खिलाफ त नाहिए बोली। संसार का कवनो भाषा के भी, हमनी का शारदा के रूप में मानीले, आ भाषा शारदा से द्वेष आ घृणा कइसन।

भोजपुरी के मान्यता

अब सबले जरूरी हो गइल बा भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में मान्यता मिलल। जब तक एकर मान्यता ना मिली, तब तक आगा के उन्नति रुकि जाई। लेखक लोगन के उत्साह कम होखे लागी। भोजपुरी के मान्यता दिलवावल हमनी के एह घरी परम कर्त्तव्य बा आ ऊ हमनी के अधिकार हऽ। भोजपुरी अकादमी के दोसरका अधिवेशन के समय भोजपुरी के मान्यता के सवाल पूज्य अतिथि माननीय श्री जगजीवन बाबू का सोझा उठावल गइल त उहाँ के पूज्य अतिथि पद से कहले रहलीं कि अधिकार मँगला से ना मिलेला, ऊ त अपना ताकतवे से लेवे के होला।

एह घरी केन्द्र सरकार के ध्यान लोक भाषा के उन्नति का ओर गइल बा। ई निर्विवाद बात बाटे। गाँव के उन्नति खातिर लोकभाषा सभन के उन्नति

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

करही के परी आ ओकनी के मान्यता देबे के होई। हमरा बुझाता कि घरी के हवा-पानी ठीक बा आ मान्यता आसानी से मिलि जाई। एह काम के एगो कमेटी बनावे के चाहीं, जे एही अधिवेशन में बना लिहल जाय आ ऊ काम के उपाय करी। जो दुर्भाग्य से अइसने हालत आ जाई कि कुछ त्याग आ बलिदान के जरूरत परे त ओह खातिर हमनी के तैयार रहे के परी। हृदय में प्रबल इच्छा जगवाए के तइयार के बा तू ऐ अन्वर दिल नगर तू चाहे हर चीज मुकाबिल आ जाई। हर चीज मुकाबिल आ ज ाए। दो कदम चले तेरे आगे। दोहूँ मंजिल आ जाए। आता है तूफाँ तो आने दो कश्ती का खुदा खुदाए। जो मुकाबिल में उन्हीं लहरों में कोई बहता हुआ साहिल आ जाये। मंजिल दुअरा पर बोलावे खातिर त पहिले अपने डेग आगा धरे के परी। आ रउरा सभ हथजोरी आ चिरउरी बा कि अपने सभ एकरा वदे एकजुट होके तैयार हो जाईं।

जय भोजपुरिया ! जय भोजपुरी !!

—रामविचार पाण्डे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

सातवाँ अधिवेशन
(अमनौर)

के

अध्यक्ष

श्री ईश्वर चन्द्र सिनहा

के

अभिभाषण

लक्ष्मीसखी नगर
उ. मा. विद्यालय, अमनौर, सारन (बिहार)
२९-३०-३१ अक्तूबर, १९८२ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभ्यर्थनीय स्वागत समिति के अध्यक्ष महोदय, सम्मानित प्रतिनिधिगण, भोजपुरी प्रेमी श्रोता लोग आ बटुरल सभ बहिन भाई लोग !

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन का एह सातवां अधिवेशन का अध्यक्ष पद पर हमरा के बइठा के रउआं सभ जवन आदर दिहलीं ओकरा खातिर हम केतना आभार प्रगट करीं, नइखे बुझात। बहुत कठिन होला अइसना आदर का चकाचौंध से अपना के उबारल। बाकी हम सजग बानी, हम जानत बानी कि रउआं आदर देके हमार बोझ बढ़ावत जात बानीं। हम साहित्यकार त हईं बा, अलबत्ते भोजपुरी साहित्य के विनम्र सेवक आ स्नेही जरूर हईं। अपना पत्रकार-जीवन में जब, जइसे आ जेतना मोका मिलल भोजपुरी खातिर लड़लीं आ नया-नया लोगन के मैदान में ले आवे खातिर कवनो कसर उठा ना रखलीं। एगो वहर में डाक्टर स्वामीनाथ सिंह अइसन लेलकरलन कि एक झोंक में कुछ भोजपुरी साहित्यो के कामो हो गइल आ चारू ओरि चर्चा होखे लागलि तब जनलीं कि हम आखिर कुछ काम लायक हो गइल। बाकी एतने पर हम ई कइसे मानि लीं कि हम साहित्यकार हईं ? या हम भोजपुरी के विद्वान हईं ? अब अइसना स्थिति में हमरा सोझा ई सवाल ठाढ़ होत बा कि अइसना महत्वपूर्ण पद पर, जवना पर सुरुए से भाषा-वैज्ञानिक, भाषाशास्त्री, ख्यातिप्राप्त विद्वान, आलोचक, कवि आ रचनाकार के प्रतिष्ठित करे के महान गौरवशाली परम्परा बा, सात बरिस से हमरा नियर समर्पित पत्रकार के काहें बइठावल गइल ह ? ई निर्णय स्वतनक-अनायास त भइल ना होई ? एक से एक सूझ बूझ वाला लोग एह भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन में भरल बाड़न। तब का कउनो खास बाति एह पद पर उपतीन भइलि बा ? कुछ हमहूं सोचत बानी। आखिर रउएं सभेका बीच के त हईं ! भोजपुरी-साहित्य का बढंती में एह सम्मेलन के जवन भूमिका रहलि आ ओकर हम सोझा साखी बानी ! बहुत कुछ बाहर भीतर के उपलब्धि बा जवना के सर्वेक्षण के जरूरत बा। समय-समय पर सर्वेक्षण आ मूल्यांकन होत रहला से नीक परेला आ भुलाये-भटके के डर ना रहेला। जवना मनसा से ई भोजपुरी आन्दोलन आजादी मिलला का बाद ठाढ़ भइल ओकरा पूरन होखे में कहीं चमहरि डहरि तय करे के बा। जेतना मंजिल तय हो चुकलि बा ओके संतोषजनक मानि के ना त अगराये के बा आ ना त कवनों वजह से निराश होखे के बा। अइसनो बहुत कुछ हालत जरूर बा कि एह आन्दोलन में जुड़ल लोग निराश हो सकेला या ओकरा भीतर घनघोर उदासीनता आ सकेले। एह

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

स्थितियन पर ध्यान जाये के चाहीं। अइसन लागत बा कि चुपेचुपे, बेकहवे भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सर्वेक्षण-मूल्यांकन वर्ष मनावही खातिर एगो पुरी का पायक पत्रकार के एह ऊंच कुर्सी पर रउआं सभ बइठवले बानी। तनी एकरो चर्चा हो जाये के चाहीं।

देखीं सभे, सगरे महत्वपूर्ण संस्थन का जिनिगी में अइसन एगो आवेला कि ओकरा प्रेमिन के उत्साह आ जोश जनाला कि घटि गइल जनाला कि पहिले नियर भारी-भारी समारोह काहे नइखे होत, हुल्लड़पन शोरगुल काहे नइखे होत आ प्रचार-प्रसार खातिर भारी-भारी भीड़ के नइखे आकर्षित करेवाला जतन होत? भीतर से क्षोभ नियर उठे ला कि संस्था-नेहिन का आछत काहे आन्दोलन ठण्ढा पड़ल जात बा? काहे छितिराये लागल बा? काहे तेज कदम बढ़ाके मंजिल के छू नइखे लिहल जात बुझात बा न कि ई अफसोस लायक स्थिति बा? बाकी तनी गहिरे जा के एह प्रकार के क्षोभ आ चिन्ता के लहरि भीतर से उठति बा त का ई एह के सबूत नइखे कि ओह संस्था के सोरि व्यापक रूप से व्यक्ति का भीतर गहि पइठि गइलि बा? शुरू-शुरू में समारोह, प्रचार आ भीड़-भाड़ भरल हुल्ला एही खातिर त होला कि लोगन का भीतर नया विचार जागो आ के भाव पनपो? जब ऊ विचार-भाव जागि के सोरिया गइल तब जरूरत हुल्ला के ओतना ना होले जेतना सधल ढंग से दिशा देवे के। भोजपुरी का बान्हे के इहे हालि बा। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के शुरुआत अइसन भइलि कि जवना के एगो भोजपुरी मुहावरा में कहि सकल जाला जइसे आकाश मांड़ो पाताल खंभा। बाकी धीरे-धीरे ऊ बाहरी समारोही रूप पछाल आ गहमा गहमी भरल प्रचार-चक्र-प्रवर्त्तन हलुकात गइल। मोटा ई सोचि लेवे के ई जबरदस्त कारण बा कि भोजपुरी आन्दोलन में गिरावट गइलि बा आ ऊ बिखराव का दलदल में फंसि गइल बा। बाकी का अइसने स्थिति बा?

बाहर से लागत अइसने बा कि अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मे के धारि मन्द परि गइलि बा आ भोजपुरी का आन्दोलन में गतिरोध बा बा। बाकी भीतर से जेतना काम हो रहल बा ओके देखत कुछ अउरे निकली। साच पूछीं त कुल्हि आन्दोलन आ प्रचार का पीछे भावना त काम के होले आ ऊ रचनात्मक काम जब तेजी से होखे लागल त माने के कि बाहर के धारि भीतर मुड़ि गइलि बा। प्रचार जब ठोस काम में जाला तब एकरा के शुभ लक्षण माने के चाहीं। भोजपुरी में ठोस काम के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रक आ पत्र-पत्रिका के प्रकाशन बा। एही स्थायी सम्पदा के लेके ई भाषा
भाषी का सोझा खड़ा हो सकेले। जब एकर आन्दोलन शुरू भइल त लगभग ई
मांग खाली हाथ रहे बाकी महत्वाकांक्षा अतना बढ़ल रहे कि मांग विश्वविद्या-
लय तक का पाठ्यक्रम में चोंहपे के भइलि। फेरु जल्दिये साहित्य अकादमी का
मान्यता खातिर आवाज उठे लागलि। आंशिक रूपे में सही विश्वविद्यालय तक
के पाठ्यक्रम वाली मंजिल के त भोजपुरी भेंटि लीहलसि। बाकी मान्यता
का सवाल अबहीं लटकल बा। एह बीच ओकरा खातिर अपना शक्ति सम्बर्धन
के आगल-लागल बिहार में एगो भोजपुरी अकादमी वाला लक्ष्य पूरा भइल।
उत्तरी प्रदेश में एकर स्थापना नजदीके जनात बा। भोजपुरी अकादमी पटना
के चिरका वार्षिकोत्सव पर जवन सालाना बिवरन छपल बा ओकरा के देखत
लउकत बा कि भोजपुरी में ठोस आ मानक साहित्य के बढ़ंती तेजी से हो रहलि
बा। भोजपुरी में व्याकरण आ कोष पर काम हो रहल बा। मौलिक प्रकाशन
के साथे-साथे अनुवाद आ अनुसंधान खातिर लोग प्रयत्नशील बाड़े। विविध
विषय के ढेर-ढेर किताबि छपि रहलि बाड़ी स। महाकाव्य, प्रबन्धकाव्य,
उपन्यास, कहानी आ समीक्षा वगैरह के भारी भारी योजना चलि रहलि बाड़ी
स। साहित्यकारन के पुरस्कार दिया रहल बा। व्यापक स्तर पर विद्वान्
आ साहित्यप्रेमिन के आकर्षित कइल जा रहल बा। भोजपुरी अकादमी आ
पटना का दूसरा-दूसरा भोजपुरी-संस्थान का उपलब्धियन के व्यापक रूप से
भोजपुरी का आन्दोलन से काटि के ना आंकल जा सकेला। एक चिराग से
बहुत-बहुत चिराग जरि जालन स। सन् १९७५ में पवित्र त्रिवेणी तट पर अखिल
भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का रूप में जवन संगठित चिराग जरल
ओकर टहक अंजोर आजु नाना प्रकार का आन्ही बतास से लड़िके नाना प्रकार
से खूब फइलि गइल बा। एगो शक्तिशाली विचार, एगो शक्तिशाली संस्था के
रूपे कलाप आ एगो महापुरुष के प्रभाव कहां-कहां, केतना-केतना ज्ञात-अज्ञात
रूप में फइलि के कवनो देश-जाति का कवनो भाषा-साहित्य के भाग्य-निर्माण
करेला, के पूरा-पूरा लेखा-जोखा बता सकेला? इहे हालि भोजपुरी साहित्य-
सम्मेलन के बा। एकरा अन्तर्मुख गति, प्रेरक दिशा आ अलक्षित लक्ष्य-भेदन
का प्रक्रिया पर ध्यान जाये के चाहीं। एकर मतलब ई ना हो सकेला कि एकरा
गतिविधि पर पूर्ण सन्तुष्ट हो के खुश हो लिहल जाव। मतलब सिर्फ एतने
कि पूर्ण असन्तुष्ट होके निराश होखे के आवश्यकता नइखे। नयी-नयी
परिवर्तन का मोताबिक एह संस्था में नया-नया प्रगतिशील मोड़ आवे के चाहीं।

एह सम्मेलन के पहिला अधिवेशन जवन ८-९ मार्च, सन् १९७५ के प्रयाग

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

में भइल ओमे अध्यक्ष डा० उदयनारायण तिवारी भोजपुरी क्षेत्र आ भाषा
महत्ता बतवला का बाद जोर देके कहलीं कि "अब मीलि-बइठि के एकरा के
बढ़ावे में सबके जुटि जाये के चाहीं।" एह आह्वान का साथे साथ भाषा
चारूवर्ग-क्षेत्रन में नागरी लिखावट के प्रचार आ जनभाषा में पोथी तैयार
के व्यावहारिक सुझाव देले रहलीं। भोजपुरी का प्रगति खातिर सरकारी
के मदद के उहां का उपेक्षाजोग घोषित कइले रहलीं। ओहघरी का जरूरत का
बिक अपना पैर पर ठाढ़ होके व्यावहारिक ढंग से ठोस प्रचार में जुटे के
बहुत कीमती रहे बाकी भोजपुरी का पुरहर विकास में जवन असली रोड़ा
ओकरा ओर ध्यान गइल जरूरी रहे। ई रोड़ा बा साहित्य अकादमी का ओर
भोजपुरी के मान्यता ना मिलल। बहुत पीड़ा का साथे 'सोगहग' भाषा भोजपु
का संदर्भ के उठावत दूसरका अधिवेशन (पटना, १५ मार्च, ७६) में अध्यक्ष
हजारी प्रसाद द्विवेदी कहलीं कि "रागात्मक सम्बन्ध के उजागर करे वाला साहि
कवनो बोली में लिखल जा सकेला। एही से अब साहित्य अकादमी
अनेक बोली के साहित्य के पुरस्कार दे रहलि बा जेकर मान्यता संविधान
नइखें। शुरू-शुरू में हमरा ई बाति अच्छा ना मालूम भइल। ई डर बा
आगे चलिके ई बात राजनीतिक उलझन पैदा करी। मगर अब त साहि
अकादमी धड़ाधड़ बोलियन के मान्यता देत जाति बा। अब सब बोलिन
पुरस्कार प्राप्त होखे लागल त भोजपुरी' अवधी वगैरह शक्तिशाली बो
के काहे उपेक्षा होई? हम समझत बानी जे अब आउर बोलिन के साहि
मान्यता मिलि गइल त भोजपुरी के अवश्य मिले के चाहीं। एह भाषा के
प्रतिभाशाली कवि, लेखक बाड़न उनहूँ के पुरस्कार जरूर मिले के चाहीं
राष्ट्र के दसवां हिस्सा लोग जवना बोली के बोलत बा, आपन दुख-सुख,
आकांक्षाके अभिव्यक्ति दे रहल बा, ओकर सम्मान होखहीं के चाहीं।"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का शब्दन में बहुत पीड़ा रहे। उम्मीद
कि अइसन विद्वान के अइसन मार्मिक अपील के सरकार
ना करी, बाकी हम देखत बानी कि १९८१ तक हमनी का इहे रटना रटे
गइल। पिछला छठवां अधिवेशन के अध्यक्ष डा० रामविचार पाण्डेय
भाषण में इहां तक कहि गइलन कि "अब सबले जरूरी हो गइल बा भोजपु
संविधान के आठवीं अनुसूची में मान्यता मिलल। जब तक एकर मान्यता
मिली तब तक आगा के उन्नति रुकि जाई। लेखक लोगन के उत्साह
लागी। भोजपुरी के मान्यता दियवावल हमनी के एह घरी परम
आ ऊ हमनी के अधिकार ह।" रामविचार पाण्डेय एह प्रसंग में श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के कहताम के चर्चा कइलन कि अधिकार मंगला से ना मिले ला, ऊ
बनावा ताकत लेबे के होला । अब हम रउआं समे के ध्यान एह ओर आक-
कइल चाहत बानी कि कवनो भाषा के असली ताकत का होले ? जाहिर
कि उच्च कोटि के ठोस, गंभीर, स्तरीय आ जीवन का विविध कोनन
उपयोग करत प्रचुर मात्रा में प्रस्तुत ऊ जनजीवन के प्रेरित अनुरंजित
मौलिक साहित्ये होला जवन कवनो भाषा के असली ताकत होला ।
साहित्य अकेले बाहर आ भीतर दूनों तरह के शक्ति होला । इहे कवनो
के, जवन बोली का रूप में कोना अंतरा में परलि बा, मानक भाषा
के उछालि देला । मैथिली, ब्रज आ अवधी भाषा एकर उदाहरण बा ।
ई बा कि भोजपुरी का मोकाबिला में ब्रज आ अवधी रुद्ध आ अधूरी
बाड़ी स । काहे कि ओह में गद्य साहित्य नइखे । गद्य रचना बिना
भाषा जीवन्त ना हो सकेले । एही कारण से गद्य के कवियन के कसौटी
गइल । सौभाग्य बा कि भोजपुरी एह कसौटी पर अबले खरा उतरति
बा आ पूर्ण शक्तिशाली जीवन्त भाषा के लक्षण ओकरा में धीरे-धीरे
बात बा । अइसना 'कड़ेर' भाषा के मान्यता के रोकि सकेला ?
हमन के कुल्हिये ध्यान एह मान्यता का ओरि ना जा के एकरा
साहित्यिक श्रीवृद्धि का ओर जाये के चाहीं । 'बौद्धायन' 'कौशिकायन' आ
'विजयी कुंअर सिंह' जइसन महाकाव्य के परम्परा आगे बढ़ति गइलि
साथे-साथ 'फुलसुंघी' 'भोर मुसुकाइल', आ 'रावन उवाच' जइसन
रचना के परम्परा तेजी से आगे बढ़ति गइलि त एह रचनाधारा से
ताकत पैदा होई ओकरा आगे मान्यता दानीं अपनहीं झुकि के चरन
लीहनि ।

स्वातंत्र्योत्तर कालावधि में अर्थात् सन् ५० का बाद जबसे भोजपुरी
साहित्य का इतिहास के आधुनिक प्रगतिवाला इतिहास शुरू होत बा, अइसन
लगत बा कि एकरा उत्कर्ष का पेट में तीनि गो छटपटाहटि शुरूए से बेमारी
सिर लापि जाति बाड़ी स—

१. भोजपुरी भाषा के सरकारी मान्यता
२. भोजपुरी भाषा के एकरूप प्रयोग
३. संस्कृतनिष्ठ बनाम ठेठ प्रयोग

एह तीनो में सरकारी मान्यतावाली चर्चा ऊपर हो चुकलि बा आ
निष्कर्ष ई निकलल बा कि एकरा विषय में चिन्तित आ जागरूक रहल त ठीके
बा बाकी बहुत अधिक चिन्तित आ निराश भइला के जरूरत नइखे । जरूरत बा

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

अपना कुल्हिये शक्ति के संचित कइके एकरा ठोस साहित्य का निर्माण में
के। भोजपुरी का जन्मकुण्डली में कादो इहे लिखल वा कि केहू मानो भा
मानो, जानो भा मति जानों, ई अपना भागि का बरिआई से, अपना
का आंचि से, आ रागि का आकर्षण से जुग-जुग ले जइसे दहचंद बनल
आइलि बा ओइसहीं भविष्य में आपन रास्ता बनावत चलि जाई। भा
रूप में एकर प्रयोग कबसे शुरू भइल, एकर चर्चा डा० भोलानाथ
भोजपुरी अकादमी पटना का तिसरका वार्षिकोत्सव समारोह (२ मई,
अध्यक्षीय भाषण में कइले बाड़न। उनकर खोज वा कि "एकर नांव
शासन का अंतिमकाल से 'भोजपुरिया' मिलेला। सन् १९८९ में लिखल
मुताखरीन' में ई शब्द आइल वा। ओह वाक्य के भोजपुरी अनुवाद
'एगो सिपाही भोजपुरिया में कहलसि कि एतना शोर मत मचाव।"
तिवारी का कहनाम का मोताबिक सन् १८६८ में प्रसिद्ध भाषाशास्त्री
बीम्स पहिले-पहिले एह बोली खातिर 'भोजपुरी' शब्द के प्रयोग कइले।
अर्थ ई भइल कि प्राचीनकाल का सरहपा से लेके गुरु गोरखनाथ तक का
साहित्य में, कबीरदास से लेके भीखा गुलाल तक का सन्त साहित्य में
साहित्य में सोहर, फगुआ आ संस्कारगीतन आदि से लेके सोहनी-रोपनी
गीतन में जवन बेनाम भोजपुरी भाषा चुपचाप आपन झंडा बुलंद कइले
आवति रहे ओकर उन्नीसवीं शताब्दी का अन्तिक चरण में विधिवत्
धरा गइल आ अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर बीम्स साहेब का पोथी 'रायल
याटिक सोसाइटी' का जर्नल भाग तीन में उद्घाटन हो गइल। सिर्फ
साहब ना, जार्ज ग्रियर्सन, विलियम क्रुक, ह्यूज फ्रेजर, आ ए० जी०
वगैरह विदेश के अंग्रेजी विद्वान लोग एह भाषा के खूब उठवले बाड़
ग्रियर्सन साहब त एकरा पर एकदम लट्टू हो गइल रहलन। आल्हा,
मल आ गोपीचन्द का गीतन के भोजपुरी का अमर साहित्य का रूप में
कपार पर बइठा लेले बाड़न। बाकी अंग्रेजी राज का एह विद्वानन
मान्यता के ई अर्थ ना रहे कि अंग्रेजी सरकार एकरा के कवनों तरह के
देले रहलि। जइसे अंग्रेजी सरकार ओइसहीं सुराज का बाद कांग्रेसी
एकरा के लम्मे-लम्मा से देखि के भड़कति रहे। मान्यता के त बाति
वा। बाकी भोजपुरी के एगो कहाउति हवे कि अथरा तर चनरमा
छिपिहें ? परगट होइये जइहें। अइसहीं भोजपुरी में जब अइसन
वा, ऊ सीधे वैदिक भाषा का विकास-रूप में, पूर्ण वैज्ञानिक भाषा
में निखरलि भाषा बा, त ओके मान्यता ना मिलला के सवाल नइखे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब रहल दूसरका सवाल भोजपुरी भाषा का मानक रूप वाला। एह
राय ना हो सकेले कि भोजपुरी भाषा के अनेक क्षेत्रीय रूप बा। पटना,
गाजीपुर, बलिया आ छपरा वगैरह में कहां के भोजपुरी मानक मानल
जवना में साहित्य लिखाव? आ कवना क्षेत्र का बोलचाल का व्यवहार
आवे वाली भोजपुरी के लिखे वाली साहित्यिक भाषा बनावल जाव?
ही त हालत ई बा कि भोजपुरी का केवनो पत्रिका के उठावल जाव,
में छपल लेखन में भाषा के विविध रूप साफ-साफ लउके लागी आ
सवाल मन में उठी कि केतना तरह के भोजपुरी बा? अतना बिलगाव
काहे कइसे कवनों भाषा साहित्यिक माध्यम बनी? कइसे ओकर
बनी? कइसे ओकर वैज्ञानिक रूप निखारी? फेरु अइसनों जनाई कि
सवालन के जवाब बहुत कठिन बा बाकि तनिक गहराई से
पर बहुत सहजे में एकर समाधान मिलि जाई।
बात ई कि तमाम दुनिया का भाषा का इतिहास बतावेला कि
व्यवहार में आवे वाला क्षेत्रीय भाषारूप अलग ढंग के होला आ
रूप अलग ढंग के होला। ई साहित्यिक रूप तनिक देर से भाषा
विसत-विसत जाके निखरेला। मेरठ का आसपास खड़ी बोली जवना
में बोलि जाले का ठीक-ठीक ऊहे रूप बा जवन साहित्य का रूप में
होखे वाली खड़ी बोली के बा? उच्चारण आ ध्वनि में कतना-कतना
हो जाई। ब्रजभाषा-अवधी के इहे हालि बा। एह कारण से भोजपुरी के
अनेकरूपता कवनो चिन्ता के विषय नइखे। ओकर रूप जइसे-जइसे
लिखात जाई ओइसे-ओइसे कवनो रंग-ढंग निखरत जाई।

कुछ दिन पहिले ई विवाद होखे कि सम्बन्ध कारक के विभक्ति में 'क'
जाई कि 'के' वाला रूप? दूनो गोल तगड़ा रहे बाकि धीरे-धीरे प्रयोग में
'के' वाला रूप बढ़ल जात बा। आ इहां तक कि 'क' के पक्षधर लोग अब 'के'
तरफ आइल बा। इहे हालि लेकिन का अर्थ में प्रयोग होखेवाला शब्द रूप
के बा। 'बाकी' आ 'बाकि' में भउरा रहे। फेरु धीरे-धीरे 'बाकि' के प्रयोग
बढ़ जात बा। अइसहीं प्रवाह से मानक प्रयोग अपनहीं निखरत जाई। अकेले
क्षेत्र के भोजपुरी बा जवना का क्रिया में लिंगभेद ना होखे ला। बाकि
साहित्य का प्रयोग-प्रवाह में अइसन जानत बा कि उहां का भोजपुरी
में धीरे-धीरे लिंगभेद उभरे के प्रक्रिया शुरू बा। असल में समर्थ
साहित्यकार आ साहित्य का पाछा-पाछा भाषा के प्रयोग चलेला। भाषा
चाहे गढ़ल ना जा सकेले। अइसन प्रयास होइबो करी त ऊ हास्या-
होई। एह से फिलहाल एकरा बारे में चिन्ता कइला के कवनो जरूरत

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

नईखे। अनेकता में एकता जइसे एह भारत देश के विशेषता ह, ओकरा विशाल-विशाल क्षेत्रन में बोले जायेवाली भाषन के ई गुण होला। बारे में सबसे सुविधाजनक ई स्थिति बा कि क्षेत्रीय विविधा जवन का दोष का रूप में समझलि जाति बा काहे ना ओके ओकरा गुण का ग्रहण कइल जाव ? अइसन मानसिकता बना के जब मानक साहित्य ओर भोजपुरी सेवक लोग आगे बढ़ी तवे ऊ स्थिति आई कि अनायास भोजपुरी के एगो मानक रूप निखरि के ऊपर आ जाई। विषय में खीच-तान जवले होत रही तबले सहजता ना आई आ ना स्तरीय भा वैज्ञानिक साहित्यिक भाषारूप के विकास होई। कवनो परिनिष्ठित रूप निखरे में शताब्दी के शताब्दी खपि जाली स। भोजपुरी भाषा में गद्य साहित्य के रचना होत आधियो शताब्दी ना बीतलि।

अब बचल तिसरका संस्कृत शब्दावली के ग्रहण आ एकरा प्रयोगवाला सवाल। हमके एगो भोजपुरी-प्रेमी का मुंह से ई सुनि के हैरानी भइलि कि संस्कृत का तत्सम शब्दन के प्रयोग चलत रही तब तक भोजपुरी कइसे होई ? का तब ऊ हिन्दी ना हो जाई ? अब हमके जनाइल जइसे ई सज्जन भोजपुरी के एकदम ठेठ गँवारू भाषा बूझि बाड़न। अइसने टिप्पणी एक जगह डा० हजारी प्रसाद द्विवेदियो कइले बा। एहमें कवनो सुवहा नइखे कि भोजपुरी भाषा के आपन एगो मौलिक भंडार बा जवन ओकर निजी बा आ ओकरा के ऊ ना छोड़ि सकेले। में ओकर ऊहे मूल थाती होले। बाकि अइसने मूल थाती त ब्रज, आ मैथिली वगैरह का पासे बा, आ ओकरा के सहेजि-बटोरि के रखला बाद का ई भाषा संस्कृत का तत्सम शब्दन के धकिया देले बाड़ी अइसन त सोचले उलटा सोच हो जाई कि संस्कृत का शब्दावली बा दूसरा भाषा का शब्दावली मे विरोध बा। कवनो बोली के निजी देशज अगर ओकर मूल थाती बा त संस्कृत शब्दावली त तमाम-तमाम सहित सगरी आर्यभाषा के महाथाती बा जवना का सम्पर्क से सीमित प्रयोग माध्यम वाली कवनो बोली धीरे-धीरे भाषा का सिंहासन पर बइठि संस्कृत का तत्सम शब्दन के बहिष्कार कइके का हम भोजपुरी के बोलिये रहि जाये दीहल चाहत बानी ? एह बारे में हिन्दी साहित्य इतिहास से कुछ सीख लेवे के चाहीं। अवधी भाषा के प्रयोग दू तरह भइल बा। एगो तुलसी जइसन आ एगो जायसी जइसन। पद्मावत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के प्रयोग बा आ रामचरितमानस में मिलल जुलल प्रयोग बा। प्रसंग का मोताबिक भाषा रंग बदलति बा। कहीं लिखात बा कि 'हंसबि हुलाइबि गालू' जइसन त कतहीं उचरत बा 'सोहमस्मि इति वृत्ति अखंड' । कोंपड़ी, राजमहल आ विद्वत् सभा सभ कर शब्दचित्र एकेनियर कइसे ही समन्वय के लेके त तुलसी आ उनकरा मानस के अतना प्रचार भइल? विचारू त आचार्य शुक्ल का समय में जाके उपरइलन हवन। भारतीय का चित्तवृत्ति का बनावट में संस्कृत शब्दावली आधारभूत तत्व हवे। के छोड़ले चीज बहुत हलुका जाई। सूरदास न छोड़लन आ विद्यापतियो छोड़लन त भोजपुरिया लोग काहें छोड़ी। किस्सा कहानी आ कविता में रचियो जाई त निबन्ध, समीक्षा आ शोध आदि में कइसे निस्तार ? जइसन आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के विचार बा, भोजपुरी के भाषा ना बना के 'सहज' रूप में विकसित होखे दीहल जाव ओकर इहे बा कि प्रसंग, प्रयोग, अवसर आ प्रभाव का दृष्टि से ओकर आपन प्रवाह बा ओके तोड़ल-मरोड़ल ना जाव। सहज प्रवाह में निखरलि जीवन्त होले। फेरु गंभीर साहित्यिक माध्यम होखे खातिर ओकर रोब-चास वाला ठेठ रूप से कहाँ तक काम चली?

अन्त में वस्तु आ स्थिति का साथे का कुछ सवालन के संक्षिप्त बाद ई निवेदन बा कि कवनों देश-जाति का नियति नियर कवनो के भी नियति होले। ओकरा कुछ करे के होला, कुछु उपराजे के होला। नियति का बारे में कुछऊ पूर्व अनुमान ना हो सकेला। भोजपुरी के जवन अतना तेजी से हो रहल बा, जवना के विवेकीराय विकास ना के उछाल कहत बाड़न ओकर कुछ गम्भीर अर्थ बा। का दो ई क्रांति-क्षेत्र अपना भीतर कवनो भारी क्रांति के सम्भावना बीज छिपवले आगे बढ़ली बा। अब हमनी के ई पुनीत कर्तव्य बा कि एकरा के विवादहीन में बढ़े दीहल जाव। एकरा के आपन रास्ता बनावे दीहल जाव। भाषा का हिन्दी-संस्कृत केहू से विरोध भला कइसे हो सकेला? आत्मा विरोध परमात्मा से कइसे हो सकेला? बस चाहे आदमी के जीवन होखे भाषा आ साहित्य के, समत्तर समरसता के जरूरत बा। एही समरस में उत्कृष्ट रचना होले। आजु नाना प्रकार का राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय से एह समरस स्थिति में बेहद तनाव आ बाधा आ गइलि बा। संत्रास अनिश्चितता छा गइल बा। बाकि भाषा के असली समरस स्थिति उहे

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

ह कि एहू कुल्हि के पचा के समकालीन जीवन के सही-सही अभिव्यक्ति
भोजपुरी तनी गांव घर से, गली-पनघट से आ क्षेत्रीय घेरा से निकल
सांसि लेउ। ओकर सांसि में राष्ट्रीय आ अन्तरराष्ट्रीय युगीन जीवन के
मिलि जाव आ बहुत व्यापक स्तर पर एकर गंभीर रचनात्मक उठान
विदेश का बुद्धिजीविन के प्रभावित आ आकर्षित करो। बस
का कहीं ?

जय भोजपुरी !

लक्ष्मीसखी नगर
अमनौर, सारन

—ईश्वर चन्द्र
२९-१०-५२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

आठवाँ अधिवेशन

(बिलासपुर)

के

अध्यक्ष

डॉ. विवेकी राय

के

अभिभाषण

बिलासपुर (मध्यप्रदेश) : संत कबीरनगर
३०-३१ दिसम्बर १९८३ आ १ जनवरी १९८४

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदरणीय स्वागत समिति के अध्यक्ष महोदय, सम्मानित प्रतिनिधि गण, भोजपुरी प्रेमी श्रोता लोग आ बहुरल सभ बहिन भाई लोग

सबसे पहिले आभार। सच हूँ हम बहुत-बहुत आभारी बानी। एह अखिल भार-तीय भोजपुरी साहित्य-सम्मेलन का आठवां अधिवेशन का अध्यक्ष पद पर आप सभ हमके बइठा दीहलीं। भीतर भारी सँकोच बा। सवाल बार-बार मन के कोंचि रहल बा, एह पद का अनुरूप का कवनो सार्थक सेवा हमरा से हो पाई? पद का गरिमा के निरबाह हम कइसे? बहुत कठिन बा जवाब। हमरा खातिर आसान ई बा कि निरबाह के भार रउआँ सभ के संउपि दीं। अब उबारि लीं भा बुड़ा दीं। भोजपुरी के नइया सचहूँ मजधार में बा किनारा निगिचे लउकत बा। बाकी भेंटात नइखे। कइसे कहीं कि जोर कम लागत बा। ई बिलासपुर अधिवेशन एगो ऐतिहासिक जोर-बल हो गइल। भोजपुरी प्रदेश का इहां ई जवन सात्विक सनेह आ भावभरल लगाव लउकत बा ऊ बहुत बड़ा रहल बा। साच त ई बा कि ई उत्साहे भोजपुरी भाषा का पास पूँजी बा जवन ओकरा के अतना तेजी से बड़ा रहल बा। पिछला चारि-पाँचि बरिस का भीतर भोजपुरी में जेतना मूल्यवान रचनात्मक साहित्य तइयार हो गइल बा उ कवनो भाषा के समृद्ध आ प्रतिष्ठित भाषा बनावे खातिर पर्याप्त बा।

आप सभ का सोझा हम पहिले ऐही विषय के चर्चा कइल चाहत बानी। भोजपुरी के भाषा के नीति आ मान्यता ना मिलला के रोवल त पुरान बाति हो गईल। जवन सर्व सत्य तथ्य होला ओकरा खातिर का सबूत जुटावे के बा? भोजपुरी के साहित्यकार लोग सरकारी मान्यता मिलले-ओकरा बर्तमान के खून-पसेना एक कइ के संवारि रहल बाड़न। भविष्य खुद आपन चिन्ता कइ लेई। कवनो भाषा के सबसे पहिली मान्यता ओकरा साहित्यकारन से मिले ले। भोजपुरी के सेवक, कवि, कथाकार, निबन्ध लेखक, समीक्षक आ पत्रकार तमाम-तमाम तरह का बाधा के अंगेजि के ओकरा भंडार के भरि रहल बाड़न। बोली का घेरा के तूरि के भाषा का, साहित्यिक भाषा का आसन पर आसीन भइल आसान काम ना रहे। अपना आन्तरिक शक्ति का बल पर ई भाषा एह गौरव के पवले बा। कवनो भाषा के केहू बनावेला ना, ऊ अपने से बनिजाली ले। भोजपुरीयो अपना भागि के अपनही बनवले बा। कवनो अइसन छोट मोट कमी लउकता से अब तलक ले तनिक सकोच होत रहल ह, ऊ हो एह साल दूर हो रहल बा।

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ऊ कभी बस इहे रहलि ह कि देखे लायक कवनो गौरव के एगो कवनो बहुत बड़ा शिखर ना रहल ह। अइसन शिखर जवन 'रामचरित मानस', 'सूरसागर' भा 'प्रेम नियर दूरे से धाहे लागे।

आप सभके जानकारी होखे के चाहीं कि बिहार सरकार के भोजपुरी के दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती, जेकरा के भोजपुरी साहित्य के प्रथम कहानी होखे के गौरव मिलल बा, के महाकाव्य 'बउधायन' के प्रकाशित कइ दीहलसि। प्रकाशन भोजपुरी साहित्य का इतिहास में एगो घटना बा आ ई एगो मानक के निर्णायक पत्थर बा। भोजपुरी त का, सम्पूर्ण भारतीय महान महाकाव्यन का में ई रचना एगो ध्यानाकर्षक कड़ी हो गइलि बा। एह विशाल ग्रन्थ में कुल सर्ग बा जवना में चालीस हजार से अधिक रसगर-दमगर पंक्ति खपलि बाड़ी स। का लपेट में तथागत के जवन करुणा-मैत्री के विचारोत्तेजक सन्देश मिलि रहल एह उखड़ टूटन आ विध्वंस का युग में केतना मूल्यवान बा? ओह प्रज्ञा पुरुष का का संगे- संगे भारत, चीन, जापान, तिब्बत आ वृहत्तर भारत के तत्कालीन दार्शनिक संघर्ष, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, ऊ सब अइसन जोरदार शिल्प में भइल बा कि एकदम आकर्षित कइ लेत बा। अब एह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा भोजपुरी गौरवशिखर के देखि के केहू निर्णय करो कि भोजपुरी बोली ह कि भाषा ह? साहित्य में इहो गौरव भोजपुरिये के मिलल कि बुद्ध भगवान का जीवन पर महाकाव्य एतना व्यापक पृष्ठभूमि पर लिखाइल। विचित्रता ई कि ई काम सन्यासी का हाथे। जेकरा कलम के कमाल देखिके डॉ० उदयनारायण तिवारी 'के इलियड' के उपाधि दे दीहलन।

आप सभे का सोझा हम चाहत बानी कि भोजपुरी का गौरव-शिखरन के कुछ और क्षण तक चली। एगो किस्सा ह कि कहला बिना हक-पद रोवेला। के हक मारल जा रहल बा। हो सकेला कि अनजाने में ई अन्याय होत होवे। निवेदन बा कि अब त आंखि खुले। भारत का कुल आबादी का दसवाँ भाग के जवना भाषा के बोलत बाड़न, जवना भाषा के जीअत बाड़न ओकर उपेक्षा ओकरा में का नइखे जवन कवनो स्थापित भा समृद्ध भाषा में होखे के चाहीं। बरिस भइल एह भाषा के शब्दकोश भोजपुरी-संसद वाराणसी से छपल। कई-कई गो शब्दकोश प्रकाशित हो गइले स। सबसे ताजा बा 'भोजपुरी शास्त्री सर्वेन्द्र त्रिपाठी का एह छह सौ से ऊपर पृष्ठन वाला कोष में बीस हजार अधिक भोजपुरी शब्दन के अत्यन्त वैज्ञानिक ढंग से सम्मिलित कइल गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरी शब्द सागर' का संगे संगे 'भोजपुरी शब्दानुशासन' के चर्चा कइल जरूरी बा। तिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' एह मानक व्याकरण के तइयार करे में बहुत श्रम बाड़न। ओइसे एह बारे में एगो बहुत मजिगर जानकारी आप सभ के हम दे रहल हीं। भोजपुरी का शक्ति आ महत्ता के कुछ अनुमान एह बाति से लागि सकेला।

हिन्दी में अबहीं तलक ले कामता प्रसाद गुरु के व्याकरण ना निकलल रहे कि एगो पुरी के व्याकरण सन् १९१५ ई० में तैयार हो गइल रहे। पं० शिवदास ओझा का ऐतिहासिक व्याकरण के भोजपुरी अकादमी अब बहुत भव्य रूप में छापि देले बा। व्याकरण का साहित्य का संगे-संगे अइसन जनात बा कि भोजपुरी संस्कृति चेतना का समग्र रुप के पचाके, ओकरा जबदस्त आन्दोलन नियर ई भोजपुरी साहित्य आगे बढ़ि रहल बा। 'भोजपुरी व्रत कथा', 'भोजपुरी संस्कार गीत', 'भोजपुरी कथा', आ 'भोजपुरी होरी गीत' आदि नाँव के ग्रन्थ त एह बात के प्रमाण बटले बा, भोजपुरी लघु उपन्यास आ भोजपुरी लघु कथा के लहरि साल भर से आइलि बा। साहित्य का संगे-संगे अपना संस्कृति के सहेज-बटोर के चलत भोजपुरी साहित्य का संगे में बहुत गंभीरता बा। एह गंभीरता के अनुमान एह बाति से हो जाई कि भोजपुरी शौर्य के प्रतिमान बाबू कुंअरसिंह पर पांचि गो महाकाव्य एह भाषा में लिखल हो गइल बाड़न स। सबसे ताजा बा डॉ० सर्वदेव तिवारी राकेश के ग्रन्थ 'कालजयी कुंवर सिंह'। एह महाकाव्य का साढ़े तीन सौ पृष्ठन में पनरह गो सर्ग बा।

एह महाकाव्य के चर्चा करत एगो भोजपुरी के खण्ड काव्य 'निरधन के धन राम' याद आ जात बा। अपना 'किरनमयी महाकाव्य' का बाद एह खण्ड काव्य में कवि रामवचन शास्त्री अंजोर एगो बहुत ध्यानाकर्षक प्रयोग कइले बाड़न। वस्तु रुप में कृष्ण का आधुनिक लोकवादी रुप के त निखरलहीं बाड़न, ऊ भोजपुरी भाषा में दोहा, चौपाई, कवित्त, चौबोला, सवैया, वीर छन्द, आल्हा छन्द आ मुक्त छन्द वगैरह के प्रयोग कइके एगो सहज शिल्प-चमत्कार उपस्थित कइ दे ले बाड़न। ध्यानाकर्षक आ सहज शक्तिमान शिल्प का दृष्टि से भोजपुरी में कवि अविनाश चन्द्र विद्यार्थी का प्रबन्ध काव्यन के स्मरण हइल चाला। बाकी हमरा पास कहाँ मोका बा पूरी तरह से एह विशाल होत जात भोजपुरी-साहित्य का ससार में आपके घुमावे के? हम त बस नया-नया उठल कुछ शिखरन का ओर जल्दी-जल्दी इशारा भर करत चलत बानी। फेरु इशारो कतना करीं? जवनी घरी बइठि के ई भाषण तइयार क इ रहस्य बानी हमरा टेबुल पर नन्दकिशोर मतवाला, अरुण भोजपुरी, सीताराम पाण्डेय प्रशान्त, रघुनाथ प्रसाद गुस्ताख, विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव, रामेन्द्र गोस्वामी, मोती बी० ए०, केदार पाण्डेय प्रशान्त, योगेन्द्र प्रसाद सिंह,

eGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रिंसिपल श्रीधर दूबे, कुबेरनाथ विचित्र, मैनावती जी, जुगानी भाई, अवध बिहा
रामनारायण उपाध्याय, श्री निवास मिश्र, विश्वरंजन, कैलाश कमरपुरी, बि
प्रसाद शैदा, ब्रजभूषण मिश्र, विपिन बिहारी चौधरी, राजवल्लभ प्रसाद
रामबिहारी रमेश जइसन भोजपुरी के समर्पित रचना कारन से पचास से ऊपर
टटका साहित्य, कविता, कहानी, उपन्यास, व्यंग्य, लघुकथा, नाटक आ निबन्ध
का रूप में आदर का साथे समीक्षार्थ रखल बा ।

मन हैरान हो जात बा भोजपुरी का रचना कारन के अइसन उत्साह
बिक्री का साधन आ संभावना का कपार पर लात धइके, व्यवसायिक दृष्टि का
के आँखि पर से हटा के ई जवन शुद्ध साहित्य सेवा-यात्रा हो रहलि बा ऊ निष्कप
वाली नइखे । एह यात्रा-मार्ग पर राहुल सांस्कृत्यायन, आचार्य शिवपूजन सहाय,
मनोरंजनसिंह, महेन्द्रशास्त्री, रघुवंशनारायणसिंह, चतुरीचाचा, दुर्गाशंकर प्रसाद
आ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी वगैरह वगैरह के अमिट चरणचिह्न अंकित बा।
रामविचार पाण्डेय, सुन्दरजी, भोलानाथ गहमरी, स्वर्णकिरण , आंजनेय जी, डॉ०
शंकर त्रिवेदी, झड़पजी, अक्षयवर दीक्षित, विप्रजी, सहृदयजी, विजय
ईश्वरचन्द्र सिन्हा आ डॉ० उदयनारायण तिवारी जइसन सिद्ध लोग कबीरदास से
भिखारी ठाकुर तक का बनावल एह साहित्यिक-यात्रा का मार्ग के प्रशस्त करे में
बाड़न, मंजिल के बिना कवनो चिन्ता कइले ।

आप लोग कहीं अइसन भाँति सोचीं कि सरकारी मान्यता जइसन चाँदे
साहित्य के मंजिल बा । अइसन सोचल एगो भारी भ्रम होई । साहित्यिक
के मंजिल अतना सस्ता आ सामयिक ना होले । जातीय, राष्ट्रीय आ मानवीय
अभ्युत्थानमूलक सपनन का संगे ऊ मंजिल जुड़ल होले । सरकारी मान्यता के ओह
का भीतर एगो उपयोगी पड़ाव कइल जा सकेला । बाकी एकर अर्थ इहो नइखे कि
पड़ाव के चिन्ता हटि गइलि बा । चिन्ता बनलि बा । हर साल एह मोका पर
के दरवाजा खटखटावल जात बा । पिछला साल अमनौर वाला सम्मेलन में त
जोर से दस्तक दीहल रहे । डॉ० प्रभुनाथ सिंह आ स्व० श्री केदार पाण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिष्ठित सरकार के मंत्री लोग त रहबे कइलन, डॉ० नामवर सिंह आपन बहुत
र दीहलन।

मान्यता का सवाल पर डॉ० नामवर सिंह अपना उद्घाटन भाषण में बतवलन कि
क भोजपुरी के अष्टम सूची में जगह दे के मान्यता प्रदान करे का सवाल पर
हार राजनीतिक कारनन से आगा पीछा करति बा। दूसर डरई बा कि एकरा से हिन्दी
का चाँहपी। आगे डॉ० नामवर सिंह साफ शब्दन में कहलन कि राजनीतिक कारन
र एगो भ्रम बा। एकरा बढ़ंती में तमाम सरकारी आदमिन के मदद बा। खुद बिहार
हार भोजपुरी अकादमी बना देले बा। विश्वविद्यालयन का पाठ्यक्रम में एम० ए०
भोजपुरी स्वीकृत बा। तमाम रूप त साहित्यिक आ सास्कृतिक बा, कहाँ बा रंच-
कवनो राजनीतिक रंग? रहल सवाल हिन्दी का क्षति के त ई ओहू से भारी
ग। हिन्दी से ओकर कवनो विरोध होइये ना सकेला। मैथिली, अवधी आ व्रजभाषा
हिन्दी मानलि जाति बाड़ी स, ओइसहीं भोजपुरियो हिन्दी के अंग बा। जइसे
ी का नीचे ओह भषवन के साहित्य शोभा बढ़ावत बा ओइसहीं एकर साहित्य
ी ओकरे बढ़ंती कहाई। भोजपुरी में कहीं हिन्दी का विरोध के स्वर हइयो नइखे
जपुरी के कवि सीताराम पाण्डेय प्रशान्त त हिन्दी का उपेक्षा पर जइसे तड़ाप के रहि
ल बाड़न। उनकर तीन पंक्ति देखीं—

'हिन्दी के हुरपेटल छोड़ ऽ!
ऊ चउदहो में दुल रु ई हिन्दी,
मां भारत के ह ई बिन्दी।'

बर के नालायक भोजपुरी भाषा प्रेमी होई जे भारत माता का एह बिन्दी के
डिस करे के सोची? एह लोकतंत्र में केन्द्र आ प्रान्तन का भीतर जइसे सह अस्तित्व
ओइसहीं ओइसहीं केन्द्रीय भाषा हिन्दी आ ओकरा छाया में विकसित होत बोलियन
स्थिति बा। विघटन के प्रवृत्ति ना, भोजपुरी आ भोजपुरिहा लोगन में संघठन के
होले। इतिहास एकर गवाह बा। ऊ लोग देश का एकता के इतिहास
बनवले ह आ ऊहे लोग हिन्दी के जन्मदाता से लेके ओकरा साहित्य के बढ़ावे आ
र्ष पर पहुँचावे वाला का रूप में खपि के ओकरा राष्ट्रीय रूप के निखारे में मूल्यवान

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

योगदान कइले ह । हिन्दी राष्ट्रभाषा का छत्रछाया में महज ऊ लोग अपना
का साहित्यिक रूप के संवारे खातिर छटपटा रहल बा । दूनों के ई
साफ बा कि तनिको कवनो आशंका के गुंजायश नइख । दूसर आशंका
जात बा कि जनगणना में यदि मातृभाषा भोजपुरी अंकित करावल जाई
कमजोर होई । बाकी अइसन काहे होई ? भोजपुरी हिन्दी आ खड़ी बोली
आखिर दूनो त हिन्दीये ह । एह तरह से भोजपुरियो वाला लोगन के मातृभाषा
ह । आशंका जवन बा तवन महज मनोवैज्ञानिक बा । ढेर लोगन का मन में
का गंवारू बोली वाला हीनता के रूप अबही तलक ले जड़ जमवले बा । अइसन
से निहोरा बा कि अब तनी एकरा लिखित साहित्य के देखो । अब त हिन्दी
निष्ठ ऋषि गणेश चौबे का हाथे एकरा सम्पूर्ण प्रकाशित साहित्य के एगो विवरणी
काकार प्रकाशित हो गइलि बा पुस्तक एकरा रचनात्मक साहित्य का संदर्भ में
चौंका के आँखि खोलि देवे वाली बा ।

हम अपना भाषण में घूमि फिरि के भोजपुरी का रचनात्मक साहित्ये पर
बानी। का करीं ? मजबूरी बा । हमरा दृष्टि में इहे ओकरा तमाम-तमाम तरह
के हल बा । जइसे अंधकार का समस्यन के एकमात्र समाधान प्रकाशे होला
कवनोभाषा आ ओकरा साहित्य से सम्बन्धित समस्यन के हल ओकरा प्रकाशित
सृजन धर्मी साहित्ये का भीतर से निकले ला । भोजपुरी का मान्यता के सवाल,
एक रूपता के सवाल भा ओकरा मानक प्रयोग के सवाल आ ओकरा प्रचार
के सवाल, कुल्हि सवालन के लड़ाई त एही साहित्यिक समृद्धि का केन्द्र में लड़
ई केतना अच्छा बा कि हासिया के लड़ाई छोड़ि के भोजपुरी के साहित्यकार
असली केन्द्र में जूझि रहल बाड़न । उनके भारी सफलतो मिलल बा । भोजपुरी
का समृद्धि के एगो संक्षिप्त झाँकी आप के हम देई चूकल बानी ।

आप शंका कइ सकीलाँ कि एह प्रतिस्पर्धा का युग में खाली काव्य-
के कइसे भोजपुरी जीवन्त बनी ? ब्रज-अवधी नियर कहीं ऊ हो न गति-शून्य
हम आपके विश्वास दिलावत बानी । भोजपुरी के गद्य साहित्य ओकरा काव्य
से समृद्ध बा । हम गद्य-साहित्य में सिर्फ भोजपुरी का कथा-साहित्य का बारे में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के आप से इजाजत चाहवि । कवनो जमाना रहे कि काव्य सम्पूर्ण साहित्य क केन्द्रीय रहा रहे। अब ओकर स्थान कथा-साहित्य छोरि ले ले बा। भोजपुरी के कथाकार एह तथ्य के भरपूर मौलिकता आ मानक रचनात्मक प्रतिभा का साथे प्रदर्शित कइले बाड़न। अपना पुस्तक 'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास' में हम हिन्दी आ भोजपुरी कथा साहित्य के तुलनात्मक विश्लेषण करत एह नतीजा पर चोंहपल बानी कि भोजपुरी के कथा-साहित्य हिन्दी कहानी का विकास के कुल्हिये मँजिल एके संगे पार करे बा। परपट्ट समानान्तर चालि बढ़ा रहलि बा आ ओकर लक्ष्य बा आधुनिकतम शिल्प-विधान का मेल में आ गइल। एह बाति के एह तरह कहि सकीलां कि भोजपुरी के कहानी-साहित्य के क्रमिक विकास नइखे भइल। ई एक बारगी उछाल ले लेले बा। शिवनरसिंह काश्यप, उमाकान्त वर्मा, वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, ईश्वरचन्द्र सिन्हा, डॉ० मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' (चतुरीचाचा), रामवृक्षराय विधुर, रामकिशोर,पी० चन्द्रविनोद, रामनाथ पाण्डेय और जितराम पाठक आदि के कहानी रचनात्मक उत्कर्ष और युगीन जीवन का संश्लिष्ट अंकन का दृष्टि से एक वेरि पढ़ला का बाद केहू भोर ना परि सकेलीस।

उपन्यास-साहित्य में सर्वश्रेष्ठ उपन्यास का रूप में 'फुलसुंघी' (पाण्डेय कपिल) निःसंकोच हम आपका सामने राखि सकी लाँ। ऐहिकता, प्रेमादर्श, लोक कथात्मकता त्याग-भोग, भाग्यवाद, संयोगवाद, संगीताकुलता, आंचलिकता, आदर्श चरित्र सृष्टि, भोजपुरी संस्कृति के निखार के चित्र, मिथकीय प्रभाव आ कुल्हिमिला के रोमैन्टिक सुख के जइसन कलात्मक शिखर 'फुलसुंघी' में उभरल बा। ओइसन खड़ी बोली हिन्दी में दुर्लभ बा। अइसही चार उपन्यास के और नांव हमसे धरवा ले ईं। राही मासूम रजा का 'आधागांव' जइसन सघन आँचलिक प्रयोग का दृष्टि से 'घर टोला गांव' (पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह), रेणु का 'मैला आँचल' जइसन आजु के बदलत जात गाँव के तस्वीर वाला भोजपुरी के सग्र मे विशालकाय उपन्यास 'भोर मुसुकाइल' (विक्रमाप्रसाद) मैथिली का खटूर काका जइसन प्राध्यापक आंचल के उपन्यास 'सुन्नरकाका' आ चतुरसेन शास्त्री के 'वयं रक्षामः' का स्वर आ स्तर के छुअत 'रावन उवाच' (गणेशदत्त किरण)। ओकरो उपन्यासन के चर्चा का करीं ? चर्चा कइल उद्देश्य नइखे । उद्देश्य बा ई बतावल

SriGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कि अपना लक्ष्य सिद्धि का दिशा में भोजपुरी-साहित्य तेजी से बढ़ि रहल बा। में नाटक, ललित निबन्ध, रेखाचित्र आ रिपोर्ताज जइसन साहित्यिक विधन के बढ़ि रहल बा। 'भोजपुरी माटी', 'झकोर', 'अकादमी पत्रिका' आ 'दिवरी' ढेर-ढेर पत्रिका ओह के बढ़ावे में मदद कइ रहलि बाड़ीस ओकर सोरि भोजपुरी भाषी उत्तरप्रदेश बिहार का जिलन का जमीन में बहुत गहराइ से त गड़ली रही ओकर डाढ़ि-पात देखीं, हई फइलि के एह मध्यप्रदेश तक चौहपलि। आप लोगन स्नेह-सद्भाव का प्रति अन्त में केतना आभार प्रकट कइल जाव ? मारीशस, त्रिनिदाड आ गायना वगैरह में एह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के प्रसार के सुख त निर्मुं का स्वाद नियर बा बाकी बिलासपुर के ई प्रकट स्नेह-सुख त एकदम सगुण साकार रोमांच से भरि देत बा। आप सभ लोग प्रणम्य बानी कि भोजपुरी के अतना के हाथन से उठवले बानी।

जय हिन्दी !

जय भोजपु

संत कबीर नगर
बिलासपुर (म० प्र०)
३०-१२-८३

डा० विवेकीराम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मुद्रित– श्री विष्णु प्रिंटिंग प्रेस, तेलीपारा, बिलासपुर [म० प्र०]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

नउआँ अधिवेशन, राँची

अध्यक्ष

श्री गणेश चौबे

के

अभिभाषण

श्री केदार पाण्डेय नगर, माड़वाड़ी विद्यालय

रांची (बिहार)

२६-२७ अक्टूबर, १९८५

BajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...गवत विद्वान, भोजपुरी के प्रेमी भाई-बहिन !

सबसे पहिले हम अपने सभनि के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन ...एह अधिवेशन के हमरा के अध्यक्ष बनवला लागि बहुत-बहुत धन्यवाद देत बानी।

एह पद के भोजपुरी क्षेत्र के अइसन-अइसन विद्वान शोभा बढ़वलेबाड़े, ...योग्यता के चर्चा देश-विदेश में बाटे। ओह आसन पर हमरा अइसन एगो ...किसान के कवना गुन पर रीझ के बइठवलीं ह, ई हमरा समझ में नइखे ...। आज का युग में निचला स्तर का आदमी का तरफ लोग के खयाल बढ़ ...बाटे। शायद एही से भोजपुरी के झंडा ढोएवाला एगो सिपाही के अपने सभनि ...बनवलीं ह। अब त अपनही सभनि का निबाहे के बाटे।

जवना क्षेत्र के आज भोजपुरी मातृभाषा बाटे, उ प्रचीन काल में मल्ल, काशी, ...वज्जि आदि अनेक जनपद में बँटल रहे। समय का फेर से काशी के छोड़ के ...सब जनपद इतिहास का चर्चा के वस्तु रह गइल बाटे। लेकिन काशी राज-...इकाई का रूप में त ना, सांस्कृतिक इकाई का रूप में अपना गरिमा के कायम ...बाटे। ई भोजपुरी बोलेवाला जनता का सांस्कृतिक चेतना के जगा रहल बाटे, ...के संजीवनी बूटी पिआ रहल बाटे। अब काशी जनपद के विस्तार उहाँ ...जा सकेला जहाँ तक भोजपुरी बोलल जाला। भारतवर्ष के प्रथम सम्राट ...एही जनपद के एगो सपूत रहले। काशी में गंगा का किनारा दस बेर ...यज्ञ भइल रहे। एही से ओह स्थान के नाम दशाश्वमेंध घाट परल। इहाँ के ...शिव अपना पीठ पर शिवलिंग के बान्ह के अपना इष्ट देवशिव के भार ढोअत लड़ाई ...आ उहाँ से भाग के अपन पीठ ना देखावस। हुमायूँ से राज सिंहासन छीन ...शेरशाह आ सन संतावन का स्वाधीनता संग्राम में अंग्रेजन के छक्का छोड़ावे-...बाबू कुँअर सिंह एही क्षेत्र के निवासी रहस। भारत के प्रथम सम्राट चन्द्र-...एही जनपद के एगो वीर सपूत रहले। आजो का युग में चंपारन के नमक ...आ बलिया के सन बेयालिस के आन्दोलन बेजोड़ रहल बाटे। ई बाटे ...सूरता के, एकरा वीरता के कुछ झांकी।

भोजपुरी भाषा के क्षेत्र लगभग पचास हजार वर्गमील में फइलल बाटे। ...देश में एह भाषा के बोलनिहार के संख्या आठ करोड़ से उपर बाटे। एतना

...iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बड़हन क्षेत्र भइलो पर इहाँ चीनी उद्योग छोड़ के दोसर कवनो उद्योग नइखे कवनो खनिज ना पावल जाला। गंगा, सरयू, गंडक, गोमती आदि इहाँ के में भयंकर बाढ़ आ जाला जवन इहाँका खेती के बर्बाद कर देवेला। इहाँ का निवासियन का आपन जनम धरती छोड़ के रोजी-रोटी का तलाश औद्योगिक क्षेत्रन में, चाय बगान आदि में जाये के परेला। एही सब आज से लगभग डेढ़ सौ बरिस पहिले इहाँ के निवासी बृटिश गायना, फीजी, मौरिशस, बर्मा, दक्षिण अफ्रिका आदि अनेक देश में गइले आ अपना का बल पर उहाँ का माटी से सोना उपजवले। ऊ लोग कवनो तरह आपन भाषा आ संस्कृति के बँचावत आइल बाटे। लेकिन ओह देशन में भोजपुरी के कवनो व्यवस्था नइखे। एह से नयकी पीढ़ी के लोग अपना भाषा के भूल बाटे। ई एगो खटकेवाला बात बाटे।

आर्य जाति का ओह शाखा के व्रात्य कहल जाय, जे वैदिक संस्कृति माने। ऊ व्रात्य लोग एही क्षेत्र में रहत रहे। ई जनपद सदा से प्रगतिशील के समर्थक रहल बाटे। जैनधर्म के तीर्थंकर पार्श्वनाथ एही क्षेत्र के एगो रहस। महात्मा बुद्ध एही क्षेत्र का सारनाथ से अपना धर्म के प्रचार शुरू निर्गुण आ सगुण पंथ का अनेक संप्रदाय का इहाँ फूले-फरे के अवसर काशी संस्कृत का पढ़ाई के केन्द्र चलल आवत बाटे, एह से इहाँ के पंडित में रचना कइलें। इहाँ के कृष्ण के भक्त कवि ब्रजी में आ राम के भक्त में रचना कइलें। अइसन उदार आ व्यापक दृष्टिकोण के फल ई भइल इहाँ लिखल लोग के ध्यान भोजपुरी में रचना करेका ओर गंइवे ना कइल। बाटे भोजपुरी में मध्य युग का संत आ भाट के रचना त ढेर मिलत बाटे लोग के कम।

सन १८५७ ई० का स्वतंत्रता संग्राम के सरकार बहुत सख्ती से अब सरकारी अधिकारी आ ईसाई पादरी इहाँ का भाषा,साहित्य, लोक जाति प्रथा, रस्म-रिवाज आदि के जानकारी इहाँ का जनता पर शासन करे लागि जरूरी समझलें अ। जेकरा जवना विषय में रूचि रहे ओह सामग्री के संग्रह आ विश्लेषात्मक अध्ययन करे में लगन का साथ जुट विषय पर पत्रिकन में लेख निकलल, ग्रंथ तइयार भइल आ छपल। एह लोग के काम बहुत महत्व के बाटे। हमरा त अइसन बुझाला भारतीय तक ओह लोग का काम का चारो ओर चक्करे काट रहल बाड़े, उहाँ सकले ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के भाषा का अर्थ में पहिला उल्लेख सन १७८९ ई० के मिलेला
बनारसी का राजा चेत सिंह का सिपाहियन के बोली 'भोजपुरिया' लागि आइल
है। भोजपुरी के पहिला व्याकरण सरकार सारन के कलक्टर जे० बीम्स लिखलें
सन १८६८ ई० में बंगाल एसियाटिक सोसायटी का पत्रिका में छपल। अपना
व्याकरण में बीम्स भोजपुरी के प्रयोग ओह समूचा क्षेत्र का भाषा लागि कइले जहाँ-
ई बोलल जाला। तब से शोध विद्वान एही व्यापक अर्थ में भोजपुरी शब्द के
प्रयोग करत आवत बाड़ें।

भोजपुरी व्याकरण आ एकरा लोक गाथा पर शोध कार्य करेवाला विद्वानन
डा० ग्रियर्सन के काम सबसे बेशी महत्व राखत बाटे। आज से लगभग असी
साल पहिले उनकर 'भारतीय भाषा सर्वेक्षण प्रकाशित भइल। ओह में उ समूचे
भोजपुरी क्षेत्र का भाषा के बहुत बारीकी से छानबीन कइलें बाडे। डा० ग्रियर्सन
भोजपुरी जनता आ ओकरा भाषा लागि अपार श्रद्धा रहे। उ अपना भारतीय
भाषा सर्वेक्षण का भाग ५ जिल्द २ का पृष्ठ ४ आ ५ पर मैथिली आ मगही बोली
चर्चा कइला का बाद लिखत बाड़ें—" भोजपुरी एगो कर्मठ जाति के व्यावहारिक
भाषा ह, जे अपना के परिस्थितिका अनुकूल बना लेवेला आ जे अपन प्रभाव समूचा
भारत पर जमा चूकल बाटे। हिन्दुस्तान के सभ्य बनावेवाला बड़हन जातियन में
पहली आ भोजपुरी ई दूनू बाटे। ई काम पहिलका अपना कलम से आ दोसरका
अपना लाठी से कइले बाड़े।" भोजपुरी के बखान करत आगे चलके ग्रियर्सन
आगह कहत बाड़—"भोजपुरी बोलेवाला लोग अइसने होखेला आ अइसन समुझल
जा सकेला कि ओह लोग के भाषा बराबर व्यवहार में आवेवाला हस्तगत वस्तु
बनल बाटे आ ओह में व्याकरण के जटिलता बेशी नइखे।" डा० ग्रियर्सन मैथिली
आ मगही के बोली का रूप में आ भोजपुरी के भाषा का रूप में चर्चा कइले बाड़ें।
उ मैथिली आ मगही लागि डायलेक्ट' आ भोजपुरी लागि "लैंग्वेज" के व्यवहार
कइले बाड़ें।

भोजपुरी साहित्य का आदि रूप के झांकी सरहपा, शबरपा, भुसुकपा,
कंकिलपा आदि सिद्ध आ गोरखनाथ आदि नाथपंथी योगियन का रचना में देखल
जा सकेला। चौरंगीपा के 'प्राण संकली' भोजपुरी गद्य में बाटे। सिद्ध आ नाथ-
पंथी योगियन के समय आठवीं से चौदहवीं सदी तक मानल जा सकेला। लेकिन
ओह समय तक पूर्वांचल के भाषा बंगला, असमिया, मैथिली, मगही, भोजपुरी

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आदि के रूप निखरल ना रहे। राजा गोविन्द देव के दरवारी पंडि
शर्मा का 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' में बनारसी बोली के रूप मिलेला।

भोजपुरी के पहिलका कवि पन्द्रहवीं सदी के कबीर रहलें। ठ
रहलें। उनका बानी आ सबद के उनकर चेला लोग पुस्तक में समेटलस।
कबीर का भाषा पर खड़ी बोली, ब्रजी, राजस्थानी पंजाबी आ अवधी
प्रभाव नजर आवेला लेकिन खुद कबीर अपना बोली के पूरबी कहले
"बोली हमरी पूरब की हमें लखै ना कोय। हमको तो वाही लखै, पूर
होय।" एह दोहा से ई मालूम हो रहल बाटे कि पूरबी क्षेत्र का बाहर के
चेला उनका बोली के ठीक-ठीक ना समुझस। एह से जे उनकर पूरबी
कलम से लिखाइल बाटे, ओकरे के प्रमाणिक मानल जा सकेला। उनका
चेलन के लिखल उनका पोथियन में भोजपुरी के स्पष्ट प्रभाव नजर आवे
ओकरा के भोजपुरी मानलेवे में कवनो दिक्कत नइखे। तब से कबीर पंथी,
दासी, शिवनारायणी, धरनीश्वरी, बावरी, सर भग आ सखी संप्रदाय के
वादी संतन के ढेर के ढेर पद भोजपुरी में रचाइल। अठारहवीं सदी के
में सगुनपंथी संतन आ कथावाचक पंडितन के पद आ कीर्त्तन आवे लागल।
भोजपुरी में संत-साहित्य के रचना अबाध गति से चल रहल बाटे।

जहाँतक भोजपुरी में प्रेमाख्यान आ रीति-काव्य के सवाल बाटे
अइसन बहुत कम सामग्री प्रकाश में आइल बाटे। तबहुँओ 'सुग्गा सनेश,
हरकिसुन चौतीसा आ कुँअर सिंह का दरबारी कवियन के रचना
अइसन आशा होत बाटे कि ठीक से खोज होय त आउर-आउर सामग्री
भोजपुरी के आधुनिक साहित्य के आरंभ विरोधात्मक रचना
बाटे। ओनइसवीं सदी का अंत में उत्तर प्रदेश का सरकारी कचहरियन
भाषा के चलन रहे। ओकरा विरोध में हिन्दी मिलल भोजपुरी मे नाटक
मंचन भइल ओह समय अंग्रेजी फौज का मांस के जरूरत पूरा करे
कसाई खाना खोलल गइल जवना में गोहत्या होय। ओकरा विरोध
दूधनाथ उपाध्याय 'गोविलापछंदावली' के रचना कइलें, जवना के
कर लेलस। राष्ट्रीय कौंग्रेस का स्थापना से जनता में राष्ट्रीय चेतना
एकर प्रभाव भोजपुरी क्षेत्र पर परल। फेर भोजपुरी में राष्ट्रीय गीत
शुरू भइल। ई सब गीत जन सभा में गावल जाय। एह गीतन में
नारायण के बटोहिया बहुत प्रसिद्ध भइल। सन १९१२ ई० में उ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरी का बिहार छात्र सम्मेलन का सार्वजनिक मंच से गावल गइल। उ गीत
री क्षेत्र में राष्ट्रगीत का रूप में गावल जाला। भोजपुरी में राष्ट्रीय गीत का
के सिलसिला तब तक चलत रहल जब तक देश स्वतंत्र ना भइल।

राष्ट्रीय चेतना का जागृति का साथे-साथ देश में क्षेत्रीय चेतना का बल
आ क्षेत्रीयता के भावना जागल। एकर असर भोजपुरी क्षेत्रो पर परल।
दशक का अंत से आ पाँचवा दशक तक जे जनपदीय आन्दोलन चलत रहल
असर भोजपुरी साहित्य का विकास पर परल। आचार्य कनासी दास
के सवाल उठल कि काशी, प्रयाग आदि केन्द्रीय संस्थन पर निभर ना रहके
जनपद में साहित्यिक काम में प्रगति लावे लागि जनपदीय साहित्य सम्मेलन
आवना होखे के चाहीं। डा० वाशुदेव शरण अग्रवाल के प्रस्ताव रहे कि प्राचीन
में आइल जनपदन के इकाई मान के ओकरा भूमि, नदी, वन, पर्वत, जन,
लोक गीत, कथा, कहावत, इतिहास, पुरातत्व, जाति, प्रथा, नाच, पूजा-पर्व
द, रहन-सहन खेल आदि के हिन्दी का माध्यम से सांगो पांग अध्ययन होखे
चाहीं। ओही समय महा पंडित राहुल सांकृत्यायन के एगो लेख 'मातृ भाषाओं
प्रश्न' का शीर्षक से हंस का सितम्बर १९४३ ई० का अंक में निकलल।
सुझाव रहे कि प्राचीन जनपद का आधार पर देश का प्रान्तन के फेर से
होखे के चाहीं, ओह प्रान्त के शासन के भाषा आ शिक्षा के माध्यम उहाँ
जनपदीय भाषा के बनावे के चाहीं एह लागि जनपदीय भाषा में साहित्य रचना
के चाहीं। इनका सुझाव का अनुसार हिन्दी बोलेवाला तीनू प्रान्त ३० प्रान्त
बाँट रहे। उनकर इहो सुझाव रहे कि भोजपुरी भाषी क्षेत्र के काशी आ
प्रान्त में बाँट देवे के चाहीं। जवना के भाषा काशिका आ मल्लिका रही।
संवत में सन १९४७ ई० का दिसम्बर में दोसरका भोजपुरी प्रान्तीय साहित्य
के ऊ अध्यक्षता कइले, जवना में घुमा फिरा के उपर वाला ओही बात के
सुनवले। उनका नजर में भोजपुरी नाम के कवनो भाषा ना रहे। ऊ भाषा
भाषा, सरस्वती के सुरसती, हिन्दी के हिनुई, हिन्दुस्तान के हिनुतान, मास्टर
मुहर लिखस। एही भाषा में ऊ आठ गो एकांकी लिखले रहस। राहुल जी
सुझाव रूस का ढंग पर राजनीतिक प्रस्ताव रहे। हिन्दी जगत से जनपदीय
आन्दोलन के कड़ा विरोध भइल। भोजपुरी जनता एह प्रस्ताव के त मान लेलस
भोजपुरी में साहित्य रचना होखे के चाहीं। लेकिन प्रान्त का फेर से बँटवारा
सवाल आ भोजपुरी का शब्दन के तूर-मरोर के गंवारू भोजपुरी बनावे का

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रस्ताव पर ऊ सहमत ना हो संकल । अग्रवाल जी आ चतुर्वेदी जी के
शुद्ध साहित्यिक प्रस्ताव रहे । एकरा के मान लेवे में कवनो कठिनाई
फेर स्थानीय साहित्यक संस्थन के गठन नया साहित्य के सर्जन आ
पर शोध कार्य आरंभ भइल ।

राष्ट्रीय आन्दोलन क्षेत्रीय चेतना के जागृति आ जनपदीय
फल ई भइल बाटे कि गत चालीस बरिस का अवधि में भोजपुरी में
गीति काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास, ललित निबंध, व्यक्तिगत निबंध,
निबंध, समीक्षा कोश, व्याकरण, छंद शास्त्र, यात्रा साहित्य, पत्र-साहित्य
विधा पर हजारों सुन्दर ग्रंथ आइल बाटे । भोजपुरी के साहित्यकार
गतिविधि सतर्क दृष्टि से देखत रहत बाड़े आ जवना ढंग के पुस्तक
निकलत बाटे, ओइसन उ भोजपुरी में ले आवे के प्रयास करत बाड़े ।
साहित्य के जवना तेजी से विकास हो रहल बाटे आ इ से विश्वास कइल
कि भोजपुरी के रागात्मक आ ललित साहित्य जल्दिये आउर-आउर
भाषा का पांति में बइठे लायक हो जाई ।

इहाँ एगो बात इहो कहे के बाटे कि दूधनाथ उपाध्याय अपना
रचना के 'दोआबा का बोली' में रघुवीर नारायण अपना भोजपुरी के
भाषा के, चंचरीक अपना गीत के 'उत्तर प्रदेश का ग्रामीण बोली' के
अपना भोजपुरी सवैया सखरिया हिन्दी के रचना कहले बाड़ें । भोजपुरी
सदी का पाँचवाँ दशक तक शोधी विद्वान तक सीमित रहल । बेतिया
श्याम विहारी तिवारी 'देहाती' पहिलका कवि रहस जे सन १९४७ ई०
पुस्तक 'देहाती दुलकी पर लिखलें-'भोजपुरी की कविताएँ ।

भोजपुरी का लोक-साहित्य के भंडार अपार बाटे । परमपरागत
विआह के संस्कार गीत, पूजा-व्रत-त्यौहार के गीत, लोक गाथा, तीर्थ
वान, भिखमंगा, मलाह, धोबी, नेटुइन आ देहाती गवैयन के गीत, झूमर,
आदि स्त्रियन के गीत, रोपनी आ सोहनी के गीत, मिसिया (मर्शिया)
गीतिकथा, नाच आ लोकनाट्य आदि के गीत अनगनित संख्या में
एकरा अलावा लोक कथा कहावत, बुझौवल, बालोक्ति, खेल गीत
मिलेला । भोजपुरी लोक साहित्य के अनेक संग्रह प्रकाशित बाटे लेकिन
विद्यार्थी का नाते हम अपना अनुभव का आधार पर ई कहे में तनिको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि लोक साहित्य के अपार भंडार के देखत अब तक जेतना संग्रह भइल बाटे
का बराबर बाटे। बदलल स्थिति में लोक साहित्य तेजी का साथ काल का
में समाइल जात बाटे। एकर तुरत संग्रह हो जाये के चाहीं। एह संबंध
एतने कहे के चाहत बानी। अभी ना, त कभी ना।

भोजपुरी का व्याकरण, लोकगीत, लोक गाथा, लोक कथा, कहावत,
कोश पर युरोपियन विद्वानन का काम के बहुत महत्व बा। व्याकरण पर
का सिलसिला में ऊ लोग जगह-जगह से भाषा के नमूना एकट्ठा कइले बाटे।
गाथा में आइल शब्दन पर भाषा शास्त्रीय टिप्पणी बाटे, कोश में शब्दन के
देवे के प्रयास बाटे। डा० ग्रियर्सन अपना 'बिहार कृषक जीवन' में खेती
ग्राम्य उद्योग संबंधी शब्दावली देले बाड़ें। भोजपुरी क्षेत्र का शोधी विद्वानन
डा० उदय नारायण तिवारी के भोजपुरी व्याकरण पर, डा० कृष्णदेव उपाध्याय
भोजपुरी लोक गीत पर, डा० श्याम मनोहर पाण्डेय आ डा० अर्जुनदास केसरी
लोकगाथन पर काम बहुत सुन्दर आ महत्व के बाटे। अमेरिका का पेनसिल-
विश्व विद्यालय के डा० सुरेन्द्र गंभीर विश्व का ओहसब देशन में जहाँ
भोजपुरी भाषा बोलल जाला, घूम-घूम के भाषा के नमूना एकट्ठा कइले बारे।
भोजपुरी क्षेत्र का अनेक जिला का कृषि आ भोजपुरी कहावत पर बहुत शब्दावली
शोध कार्य हो चुकल बाटे। डा० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' के भोजपुरी
कथा पर शोध प्रबंध बाटे। भोजपुरी लोक साहित्य, शब्दावली आ कहावत
शोध प्रबंध देवेवाला विद्वानन के संख्या तीन दर्जन से बेशी बाटे। भोजपुरी
आधुनिक साहित्य पर अब तक बहुत कम शोध कार्य भइल बाटे। डा० अरुण
भारवि भोजपुरी उपन्यास पर शोध प्रबंध दे के उपाधि लिहले बाड़े। श्री
भूषण मिश्र भोजपुरी का प्रबंध काव्य पर अनुसंधान कार्य कर रहल बाड़े।
समय लगभग एक दर्जन शोधकर्त्ता भोजपुरी का भिन्न-भिन्न अंग पर शोध
शुरू कइले बाड़े। भोजपुरी पर जेतना शोध कार्य भइल बाटे ओतना हिन्दी का
लोकभाषा पर अब तक ना भइल बाटे। तबहुओं भोजपुरी के संत साहित्य
आख्यान, रीति काव्य आ राष्ट्रीय गीत अछूता बाटे। भोजपुरी अपना अइसन
के बाट जोहत बाटे जे मठ, पंडित आ मुंशी घराना का बस्ता के धूरा झारे
आ राज दरबारन का पुस्तकालयन का पुस्तकन के पन्ना उलटे में लगन का साथ
जुट जाय। साधु-संत भाट आ राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता का कंठ पर जे गीत बाटे, एह
सिलसिला में ओकरो संग्रह जरूरी बाटे। एही तरह एहू बात के अध्ययन होखे

eGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

के चाहीं कि मध्य कालीन हिन्दी साहित्य पर आ ओकरा संत साहित्य पर
के केतना प्रभाव बाटे। चाहे कवनो भाषा होय, ओकरा बोली में एक
रहे इहे हालत भोजपुरियो के आज बाटे आ आगे रही। ई कवनो चिन्ता के
नइखे। लेकिन भोजपुरी गद्य का लिखावट में एक रूपता नइखे, ई ओकरा
एगो बड़हन समस्या बाटे। जब कहीं भोजपुरी के चर्चा चलेला, लोग
देवेला कि भोजपुरी के कवनो मानक रूप नइखे। जवना समय भोजपुरी में
रचना शुरू भइल लेखक अपना क्षेत्र का बोली में लिखस। ऊ लोग के
रहे कि साहित्यकारन का अपना-अपना बोली में लिखला से भोजपुरी के
सामने आ जाई आ धीरे-धीरे भोजपुरी अपन एगो मानक रूप बना ली।
जब भोजपुरी जनता का ओर से सरकार, साहित्य अकादमी आ विश्वविद्
से एकरा के एगो भाषा का रूप में मान्यता देवे के मांग हो रहल बाटे, एक
मानक रूप जरूरी हो जात बाटे। छंदाग्रह से भोजपुरी कविता का भाषा में
बहुत एक रूपता आ गइल बाटे, लेकिन गद्य में अराजक स्थिति बाटे काम
कठिन मालूम हो रहल बाटे, ओतना कठिन नइखे। भोजपुरी का अइसन
के संख्या तीन सौ से बेशी ना बाटे, जेकर पुस्तक प्रकाशित होत बाटे
पत्रिकन में लेख छपत बाटे। अगर भोजपुरी के लेखक वर्ग भाषा का एक
उपयोगिता मानलेस त ई काम आसान हो जाई। इहाँ एकरूपता से हमर
बेशी से बेशी समानता से बाटे। कवनो भाषा में सोरहो आना एकरूपता
ना रही।

भोजपुरी का लिखावट का एकरूपता में दूगो मुख्य बाधक बाटे
शब्दन का स्थानीय उच्चारण ले के वर्तनी के अलग-अलग रूप आ दोसर
प्रयोग का कारण ओकरा व्याकरण में आइल भेद। एह दूनू बात पर विचार
में मोटा-मोटी कुछ सबाल उठत बाटे, जवना पर सहमति जरूरी बाटे।
सवाल बाटे :—

१. कवना क्षेत्र का भाषा के आदर्श मानल जाय ?

२. जवन शब्द हिन्दी आ भोजपुरी दूनू में पावल जात बाटे, ओकर
आइल तत्सम रूप अपनावल जाय कि भोजपुरी के तद्भव रूप ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राणी वाचक शब्दन के भोजपुरी का परंपरा का अनुसार नपुंसक आ आलिंग शब्द मानके ओकरा साथ आइल क्रिया पद के पुलिंग रूप दिहल जाय कि हिन्दी शब्दन का लिंग परंपरा का आधार पर क्रिया पद के लिंग लिखाय ?

बोली में मुख सुख का आधार पर शब्द के रूप छोट हो जाला। लिखावट में छोटा रूप रहे कि ओह शब्द के पूरा रूप लिखल जाय ?

जवन प्रयोग व्यापक क्षेत्र में प्रचलित बाटे, ओकरा के अपनावल जाय कि जवन क्षेत्र आदर्श मानल जात बाटे ओकर उहाँ के स्थानीय प्रयोग ?

जवन शब्द अनेक रूप में लिखात बाटे, ऊ ओइसहीं लिखल जाय कि ओकर कवनो वर्तनी निश्चित कइल जाय ?

शब्दन के तूर-मरोर के आ ओकरा के गँवारू रूप दे के लिखल जाय कि ओकर शिष्ट रूप लिखल जाय ?

सिद्धान्त रूप में अगर एतना सवाल पर सहमति हो जाय आ ओकरा के रूप दिआय त लिखावट का भाषा में बहुत कुछ समानता आ जाई। एह गंभीर समस्या के समाधान भोजपुरी लेखकन का उदारता पर निर्भर करत बाटे। एह लोगे अपना निवास स्थान के कुछ प्रयोग के मोह छोड़े के परी आ कुछ दोसरा-दोसरा क्षेत्र के प्रयोग अपनावे के परी। भोजपुरी का बड़हन आ व्यापक हित में एह त्याग जरूरी बाटे। आज हमनी अपना बाल-बच्चा के मेरठ कमिश्नरी का कोनी के मातृ भाषा का रूप में पढ़ा रहल बानी त अपना भाषा के कुछ वैकल्पिक प्रयोग अपना लेवे में हमनी का उजुर ना होई, हमर अइसन विश्वास बाटे।

खुशी के बात बाटे कि भोजपुरी अकादमी के अध्यक्ष आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा एह सवाल में दिलचस्पी राखत बाड़ें आ हम आशा करत बानी कि एह दिशा में अब काफी प्रगति होई।

दोसर सवाल जे आगे चलके भोजपुरी का विकास में बाधक हो सकेला, ऊ पाठ्य पुस्तक के अभाव के प्रश्न बाटे। भोजपुरी में अबतक जे पुस्तक आइल बाटे ऊ साहित्य का दृष्टि से। लेकिन कवनो विद्यार्थी के जरूरत एह से अलग होखेला। बिहार विश्वविद्यालय आ भोजपुरी अकादमी कुछ पाठ्य पुस्तक के प्रकाशित कइले

eGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

बाटे, लेकिन ऊ काफी नइखे। उपयुक्त पुस्तक का अभाव में पढ़ै औ पढ़ावे
का दिक्कत उठावे के परेला। अब जरूरत एह बात के बाटे कि सिलेबस के
में रख के कुछ पुस्तक आवे, जे कोर्स में रहे आ विद्यार्थियन के पढ़ावल जाव

भोजपुरी का लेखकन का सामने सबसे बड़हन समस्या उनका पुस्त
प्रकाशन आ खपत के बाटे। अइसन लेखक संख्या में बहुत बेशी बाटे जिनका
पुस्तक अपना खर्च से छपवावे के परत बाटे। एह घड़ी प्रकाशन का खर्च
कीमत बहुत बढ़ गइल बाटे। जब उनकर पुस्तक छप के आवत बाटे त
खरीदनिहार नइखे मिलत। एकरा उलटा भोजपुरी पुस्तकन का दूकान का
में जे कवनो पुस्तक खरीदे के चाहिला उनका पुस्तके ना मिले। अगर लेखक
पुस्तक का दूकानदार के अपन पुस्तक बेंचे लागि देत बाड़ें त ऊ दूकानदार
के ओकर हिसाब देवेला ना उनकर पुस्तक वापस करेला। एह विषय में
लेखक यश का लोभ से आ सेवा भाव से अपना मेहनत के कमाई खर्च कर
पुस्तक छपवावत बाड़े, ऊ बहुत-बहुत धन्यवाद के अधिकारी बाड़े। प्रका
दिशा में पटना के भोजपुरी अकादमी भोजपुरी संस्थान, भोजपुरी साहित्य
आ सर्वेन्द्र प्रकाशन, वाराणसी के भोजपुरी संसद, आ जमशेदपुर के भोजपुरी
परिषद पुस्तकन के प्रकाशित करके बहुत बड़हन काम कइले बाटे। भो
अकादमी जे लेखक के ग्रंथ प्रकाशित करेला, ओह पर आ अपना
प्रकाशित लेख पर पारिश्रमिक देवेला। तबहुँओं ढ़ेर लेखकन का पास
पांडुलिपि परल बाटे, जेकरा के केहू पुछनिहार नइखे। पुस्तक का प्रका
सहकारिता को आधार पर कइल जा सकेला। देश का आउर-आउर
लेखक अइसन व्यवस्था कइले बाड़े।

भोजपुरी के पत्र-पत्रिका जवना स्थिति में बाटे, ओहसे बिल्कुल
नइखे होत। भोजपुरी में अबतक लगभग नब्बे दैनिक साप्ताहिक, पाक्षिक,
आ त्रैमासिक पत्र-पत्रिका के प्रकाशित हो चुकल बाटे। ओह में पांच छह
के सब बंद हो गइल। एह घड़ी भोजपुरी अकादमी पत्रिका, भोजपुरी
पत्रिका पटना से आ लड़िकन के पत्रिका नव निहाल छपरा से त्रैमासिक
निकल रहल बाटे। पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद के मुखपत्र मासिक
माही' नियमित निकल रहल बाटे। एकरा अलावा जमशेदपुर के 'जनता
आ 'लुकार' समय-समय पर सामने आवत रहेला। कवनो भाषा का
विकास में पत्र-पत्रिका के केतना जादा योगदान बाटे, ई केहू से छीपल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्र-पत्रिका भोजपुरी में निकलियो रहल बाटे, ओकर हालत महंगी का
से अच्छा नइखे। जनता का सहयोगे आ सहायता पर कवनो पत्र-पत्रिका
सकेला।

शोधी विद्वानन का समीक्षक का आ इतिहास का लेखकन का एगो भोजपुरी
का आ समृद्ध पुस्तकालय के अभाव बहुत खटक रहल बाटे। एह वास्ते
का एगो अइसन पुस्तकालय के व्यवस्था कइल जरूरी बाटे, जवना में अब-
के प्रकाशित भोजपुरी के सब पुस्तक, पत्र-पत्रिका, देशी आ विदेशी विद्वानन
लिखल भोजपुरी के आ भोजपुरी पर ग्रंथ आ लेख के प्रतिलिपि, प्रकाशित
भोजपुरी पुस्तकन के पाण्डुलिपि आ प्राचीन पोथी के संग्रह रहे। ई काम बहुत
कठिन बाटे। हम आशा करत बानी कि प्रकाशक आ लेखक लोग का सहयोग से
काम बहुत कुछ आसान हो जाई।

आज का युग में प्रचार के प्रमुख साधन बाटे आकाशवाणी आ दूर दर्शन।
पटना छोड़ के आकाशवाणी का आउर कवनो केन्द्र से भोजपुरी में स्वतंत्र
प्रसारण के व्यवस्था नइखे। पटना केन्द्र में भोजपुरी लोग ना कोई कार्यक्रम
निवासी के स्थायी व्यवस्था बाटे ना कम्पेयरर के। एह से उहाँ का प्रसारण के
गुणवत्ता घटिया चल रहल बाटे। केन्द्र निदेशक महोदय का एह तरफ ध्यान देवे के
चाहीं आ भारत सरकार का भोजपुरी क्षेत्र का हरेक केन्द्र से भोजपुरी में स्वतंत्र
प्रसारण के व्यवस्था करे के चाहीं।

भोजपुरी में काफी साहित्य बाटे। एकरा के बिहार विश्वविद्यालय एगो
भाषा का रूप में मान्यता दे चुकल बाटे। इहाँ का आउर-आउर विश्वविद्यालय
में एकरा के मान्यता देवे के चर्चा चल रहल बाटे। अब देश के विद्वानन का
भोजपुरी के एगो भाषा मान लेवे में कवनो हर्ज नइखे, विश्व का अनेक देश में जहाँ
भोजपुरी लोग बसल बाटे, उहाँ ई बोलल जाला आ एकर स्थिति एगो अन्तर्राष्ट्रीय
भाषा के बाटे। बिहार सरकार भोजपुरी में विज्ञापनो देवेला। भोजपुरी क्षेत्र का
राज्य साहित्य अकादमी से एकरा के मान्यता देवे लागि, भारत सरकार से एकरा
के संविधान का आठवीं सूची में जगह देवे लागि आ बिहार सरकार से बिहार लोक
सेवा आयोग में परीक्षा के एगो विषय का रूप में मान्यता देवे लागि बराबर माँग
कइल जात बाटे, लेकिन एकर आजतक कवनो सुनवाई ना भइल। खैर एकर
इंतजार करेके जरूरत नइखे। भोजपुरी अपना बल-बूता पर आज तक आगे बढ़त

eGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

आइल बाटे। जरूरी ई बाटे कि भोजपुरी क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक संगठन सब के ठोस बनावल जाय, ओह में प्रगति ले आवल जाय, में वसल भोजपुरी जनता से सम्पर्क बढावल जाय। फेर एगो अइसन कि सरकार का हमनी के सब मांग पूरा कर देवे के परीं आ ऊ समय दूर

कुछ लोग के खयाल बाटे कि भोजपुरी का विकास से हिन्दी होई। हिन्दी के जेतना प्रसिद्ध लेखक बाड़े, ओह में आधा से वेशी भोजपुरी बाड़े। भोजपुरी जनता का दिल में हिन्दी लागि अपार प्रेम बाटे। जे लेखक आ कवि बाड़े, ऊ हिन्दियो के बाड़े। भोजपुरी के ढेर पुस्तक हिन्दी में बाटे आ अनेक में भोजपुरी के ठेंठ शब्दन के अर्थ हिन्दी में बाटे। ई सब बात भोजपुरी का साहित्यकारन के हिन्दी से अटूट संबंध के दे रहल बाटे। भोजपुरी का शब्द संपदा से हिन्दी के भंडार भरी। भोजपुरी कवनो अइसन काम करे के सपनो में ना सोच सकत बाटे, जवना से राष्ट्र भाषा के हानि होय। एह से अइसन भय के कवनो गुंजाइश ना बाटे।

हम अपने सभनि के फेर एक बेर धन्यवाद देत बानी आ मंगल करत बानी।

जय भोजपुरी, जय हिन्दी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

क्वालिटी प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, तारकेश्वर पथ, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दसवाँ अधिवेशन

बोकारो स्टील सिटी

अध्यक्ष

आचार्य विश्वनाथ सिंह

प्रधानाचार्य, अनुग्रह मेमोरियल कालेज, गया

अधिष्ठाता, मानविकी संकाय, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया

के

अभिभाषण

बोकारो स्टील सिटी

8–9 अक्टूबर, 1988 ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामहिम उपराष्ट्रपति जी, माननीय अतिथिगण, स्वागत समिति
आ संचालन-समिति के अधिकारी लोग, प्रतिनिधिगण,
आ भाई-बहिन सभे,

जब हमराके बतावल गइल कि हम अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का एह दसवाँ अधिवेशन के अध्यक्ष बनावल गइल बानी त पहिले त हमरा बिसवासे ना भइल। बाद में अफसोस भइल कि भोजपुरी के दिन अइसन पतरा गइल बा कि अब इहाँ रेंड़ो परधान होखे लागल। बाकी, सोचत-सोचत बात कुछ समझ में आइल—समुझ परी बुद्धि अनुसारा। साहित्यरसिक लोगन के परिहास-बोध (sense of humour) बड़ा बारीक होला। भरल सभा में केहूके बनावे के आ ओहसे आनन्द लेवे के जइसन परम्परा साहित्यकारन में बा ओइसन अउर कहीं नइखे। जब ई बुझाइल त हमरा बड़ा खुसी भइल। सोचलीं कि चलऽ, विद्वानन का मनोविनोद के साधन बनके हमहूँ सार्थक हो जाईं। साहित्यशास्त्री लोग बतावेला कि हास्य के प्रधान तत्त्व ह असंगति (incongruity)—जइसे गरदन में गोड़ावँ भा जूता के टोपी। कुछ ऊटपटाँग ना होय त हास्य के देवता निर्गुणे रह जइहें, सगुण ना हो पइहें। ऊटपटाँग के मतलबे ह—ऊँट पर टाँग। ई व्यायाम तनी कठिन त बा, बाकी अभ्यास से का ना होखे! अगर कवनो आदमी सहन कर गुजरी त हास्य-देवता के अवतरण होइबे करी। अब विचार कइल जाव कि आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, डा० उदयनारायण तिवारी, डा० भगवतशरण उपाध्याय, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा लेखा सनामधन्य विद्वानन का पाँत में हमरा नियन अल्पज्ञ के बइठा देला से कइसे ऊटपटाँग आ ऐतिहासिक असंगति अउर का हो सकेला! हमरा अपना प पूरा भरोसा बा आ एकरामें तनिको सन्देह नइखे कि एह इति-हास से अपने सभ के भरपूर मनोरंजन होई। भोजपुरी में अज्ञ लोगन के कमी नइखे। देखीं, एगो रहस्य के बात बतावऽतानी। अज्ञ के असली माने होला अ से ज्ञ तक (अर्थात् a से z तक) जानेवाला। एहसे, अपना के ऊहो कहे में हमरा संकोच बुझाता। बाकी, एह उपयोगी सुझाव प हम अपने सभ के बधाई देतानी आ अपना किस्मत के धन्यवाद देतानी। रउआ लोग जानते बानी कि आजकाल कुरसी आ किस्मत के

jGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

सम्बन्ध तनी जादे घनिष्ठ हो गइल बा। किस्मत के देवी प्रसन्न करेली त कुरसी मिलेला आ पक्ष-निपात क देली त छिना जाला। ऐसे होय, एह सब का मूल में अपने लोगन के जवन स्नेह-सद्भावना बा ओकराके हम हाथ जोड़के स्वीकार करऽतानी।

भोजपुरी जवना विशाल जनपद के भाषा ह ओकरा महिमा के एगो पुरान परम्परा बा। वैदिक काल से ई परम्परा अविच्छिन्न रूप से आवऽता। बुझात नइखे, कहाँ से आरम्भ कइल जाव। गायत्री मन्त्र के दिव्य द्रष्टा, सृष्टि-रचना में ब्रम्हा का अद्वितीयता के चुनौती देवेवाला, प्रतापी भोज लोगन के महातेजस्वी पुरोहित, महाविद्यानिधि भगवान राम के विद्यागुरु महर्षि विश्वामित्र, राजा गाधि के पुत्र रहन, जिनका नाम के गाधिपुर नगर का गाजीपुर का रूप में बा जहाँ उनका कौशिक गोत्र के लोग आजो बहुत संख्या में विद्यमान बा। रामचरित के सूत्र-संचालन के वक्सर से—ठेठ भोजपुर से—कइलन। एकरो पहिले चलीं, एह पहिले, त देवासुर-संग्राम-काल में देवत्व-प्राप्त, अष्टांग आयुर्वेद के अमृत कलश इन्द्र से आयत्त कके ओकराके लोककल्याण खातिर वसुधा पर प्रतिष्ठापित करेवाला भगवान धन्वन्तरि काशी के सम्राट रहन। उनका वंशज राजर्षि दिवोदास के धन्वन्तरि के अवतार का रूप में मान्यता बा। शल्यचिकित्सा के महान् प्रवर्त्तक स्वनामधन्य सुश्रुत आ उनके टक्कर के दर्जनो देशी-विदेशी प्राणाचार्य एह दिवोदास धन्वन्तरि के शिष्य लोग। आचार्य सुश्रुत महर्षि विश्वामित्र के सुपुत्र रहन। एही विश्वामित्र के नाती आ आर्यावर्त का राजा दुष्यन्त के पुत्र भरत चक्रवर्ती सम्राट भइलन जिनका नाँव प एह देश के भारतवर्ष कहल जाला। कौषीतकि ब्राह्मण उपनिषद् में इन्द्र से ब्रह्मविद्या-सम्बन्धी वार्ता करेवाला, प्राण अउर आत्मा के सम्पूर्ण वेत्ता, प्रतर्दन, काशी-नरेश दिवोदास के पुत्र रहन। एह परम्परा में काशी में ब्रह्मदत्त अइसन विद्वान अउर धार्मिक राजा भइलन जिनकर उल्लेख भगवान बुद्ध अपना उपदेश में कइले बाड़न। एह सिलसिला में बृहदारण्यक उपनिषद् के अग्रणी ब्रह्मवेत्ता काशी-नरेश अजातशत्रु के भी नाम महत्त्वपूर्ण बा जे गर्गगोत्रीय ऋषि बालाकि के शिष्य

---

1. काशिराजं दिवोदासं धन्वन्तरिम् : सुश्रुत सूत्र, 1/3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विद्या के मर्म बतवलन। बालाकि मत्स्य, कुरु, पांचाल आ विदेह में रह कुरुक रहन आ ज्ञानगर्व से चूर रहन, बाकी उनका तत्त्वज्ञान काशिए में खिलल।

भगवान बुद्ध के जनम कपिलवस्तु में भइल आ देहान्त कुशीनगर में। ई दुनों स्थान भोजपुरिए क्षेत्र में वा। उनकर पहिला उपदेशो वाराणसी का निकट सारनाथ में भइल रहे जहाँ से आगे चलके ऊ दुनिया-भर में फइलल आ संसार का एक-चउथाई जनसंख्या के प्रभावित कइलस। विशृंखल भारत के एक समग्र राष्ट्र के रूप देवे खातिर इतिहास जवना मगध-सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का महान कृतित्व के गुन गावऽता आ दुखी विश्व-मानवता के बुद्ध-वचन द्वारा शान्ति-सन्देश पहुँचावे खातिर जवना विश्वदर्शी सम्राट अशोक का प्रति नतमस्तक वा ऊ लोग एही जनपद के सन्तान रहे। इतिहास आ संस्कृति के सुप्रसिद्ध विद्वान डा० भगवतशरण उपाध्याय का शब्दन में—

चन्द्रगुप्त मौर्य ने भारत की भौगोलिक सीमाओं पर हमारे देश के इतिहास में पहली बार राजनीतिक व्यवस्था स्थापित की और सुदूर के दक्खिन को छोड़ समूचा भारत एक राष्ट्र बन गया। अपने भोजपुरिया वीरों की हरावल लिये वह भारत के बाहर हिन्दूकुश पर्वत के आरपार अफगानिस्तान जा पहुँचा। ...ग्रीकों को अभिभूत कर उसने काबुल और आसपास के चारों ग्रीक प्रांत उस भोजपुर के साम्राज्य में मिला लिये जिसकी राजधानी तत्कालीन मगध की राजधानी पाटलिपुत्र थी। चन्द्रगुप्त भोजपुरी-जनपद में ही जनमा था, मल्लों के पड़ोसी पिप्पलिवन के मोरियों की सन्तान था, जिसने मगध पर अधिकार कर लिया था।

अशोक—गोरखपुर और कसिया के बीच मोरियों में जनमा अशोक—तो संसार के राज्याचरण का कीर्तिमान ही बन गया।..... तपस्वी अशोक भोजपुरी-अंचल से उठा बौद्ध-धर्माकाश का अप्रतिम नक्षत्र था—गोरखपुर और देवरिया के पड़ोस के मोरियों की संतान चंद्रगुप्त का पोता। उसी अशोक ने भारतीय राष्ट्र को उसकी मुहर दी, चतुर्दिक् सिंहों का मुद्रांकन दिया, उसकी ध्वजा को वह चक्र दिया जिसका धर्मनय

Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Funding by IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

प्रवर्तन काशी के मृगदाव में बुद्ध ने किया था, जो गति का, मानव-कर्म का, प्रतीक था, जो आज भी शांति के चक्रवर्ती तथ्य का स्मारक है।

मध्ययुग में भोजपुर–जनपद का सासाराम नगर में एगो साधारण घराना में पैदा भइल शेरशाह अपना प्रचंड भुजबल से मुगल-बादशाह हुमायूँ के एही भोजपुर का जमीन प.....बक्सर का पासे चउसा में–हराके भारत से बाहर खदेर देलस आ अपना महज पाँच बरिस का शासन-काल में आज का ग्रैंड ट्रंक रोड के निर्माण कइलस, देश में डाक-व्यवस्था कायम कइलस, आ जमीन का पैमाइश के जवन सिद्धांत बनवलस ओकर मान्यता अकबर का समय से लेके आज ले बा। मुगल-राज के चुनौती देवेवाला भोजपुरी–वीर हेमू अकबर से खाली बदकिस्मती से हारल। अकबरे का समय में भोजपुर के राजा दलपत मुगल-शासन के विद्रोह कइलन जवन शाहजहाँ के समय तक उनकर वंशज लोग चलावल। एह भोजपुरी वीरन के सिरमौर भइलन जगदीशपुर (आरा) के राजा कुँअर सिंह जे सन् १८५७ का पहिला स्वतन्त्रता-संग्राम में, अस्सी बरिस का पाकल बुढ़ापा में, बिना कवनो प्रशिक्षित सेना के, अँगरेजन का पूरा सुसज्जित सेना से लोहा लिहलन। ओह अवस्था में, घोड़ा का पीठ पर अविराम, हजारन कोस के यात्रा कके बिहार आ उत्तर प्रदेश में युद्ध-संचालन कइल आ शक्तिशाली अँगरेजी सेना के कई बेर हरावल हुँकार सिंह का अप्रतिम वीरता, अदम्य साहस, अडिग संकल्प, कुशल सेना-संचालन आ अपूर्व देशभक्ति के उदाहरण ह। तलवार आ संबल के धनी कुँअर सिंह अपना स्वतन्त्र जगदीशपुर में अन्तिम साँस लिहलन।

साहित्य आ संस्कृति का क्षेत्र में भोजपुर–जनपद का ज्ञात इतिहास से पहिला नाम बाणभट्ट के उभरऽता जे संस्कृत-गद्य के अलंकारपुरुष भइल। बाणभट्ट के विलक्षण प्रतिभा अलहीं सरस्वती के प्रसाद होई, बाकी ओकर अक्खड़ स्वाभिमान एकदम भोजपुर का माटी के देन रहे। हमरा कहला का बाद केहू का कुछ कहे के ना रह जाय, अइसन अभिमान कहे के ओकरा सारस्वत दर्प के लोक-स्वीकृति भी मिलल—वाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्। नाथ-सम्प्रदाय के संस्थापक आ हठयोग के महान् आचार्य, गोरखनाथ, का जन्मभूमि के त पता नइखे, लेकिन उनकर कर्म-भूमि एही जनपद में रहे जेकर गवाही गोरखपुर से मिलऽता। त्रिपुर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्त के सुमेरु कबीरदास काशी में प्रगट भइलन आ भोजपुरी के प्रथम महाकवि भइलन। एकरा अलावे प्रसिद्ध निर्गुण-भक्तकवियन में धरमदास, धरनीदास, दरिया साहेब (रोहतास के), दुल्ला साहेब, गुलाल साहेब, शिवनारायण, संरभंग-सम्प्रदाय के किनाराम, भिनकराम, बेचनराम, आ सगुण भक्तकवियन में रसिक-सम्प्रदाय के रूपकला जी, रामा जी, आ सखी-सम्प्रदाय के लछिमी सखी, कामता सखी आदि के महत्त्वपूर्ण नाम एह जनपद के आ भोजपुरी भाषा के गौरव बाड़न स। हिन्दी-साहित्य के अधिकांश धुरन्धर महारथी भोजपुरीभाषी रहल। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचन्द, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, आचार्य शिवपूजन सहाय, राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह—ई सब लोग जे हिन्दी के बनावल, संवारल आ आगे बढ़ावल, भोजपुरीभाषी रहे। एकरा अलावे परमार्थ-दर्शन के रचयिता आ दर्शन अउर साहित्य के प्रकांड विद्वान महामहोपाध्याय पं० रामावतार शर्मा, सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता श्री काशीप्रसाद जायसवाल, प्रख्यात विधिवेत्ता आ भारतीय-संविधान-सभा के अध्यक्ष डा० सच्चिदानन्द सिनहा, भारतीय गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद, आ लोकनायक जयप्रकाश नारायण भोजपुर-जनपद के निवासिए ना, भोजपुरी भाषा के अनन्य प्रेमी रहे लोग। ओसहीं, कंठ-संगीत में ठुमरी आ पुरुबी शैली के आ वाद्य-संगीत में तबला-सम्राट कंठे महाराज, शामता प्रसाद, किशन महाराज, आ शहनाई के जादूगर बिस्मिल्ला खाँ आदि के भोजपुर के महत्त्वपूर्ण देन कहल जाई।

भोजपुर-जनपद का महिमा के तनी विस्तार से जे चरचा हो गइल ओकर प्रयोजन गौरव-बोध के मातुर कइल ना रहे, बलुक ई देखावल रहे कि प्रागैतिहासिक काल से इहाँ के जीवन-दर्शन में कवनो तरह के संकीर्णता या संकीर्ण भावना नइखे रहल। समग्र भारतीय राष्ट्र आ राष्ट्रीयता का निर्माण में आ ओकरा सुरक्षा आ विकास में अउर, ओहसे आगे बढ़के, विश्वकल्याण में एह जनपद के अतुलनीय योगदान बा। भोजपुर के आपन संस्कृति बा—जइसे बंगाल, पंजाब, आ महाराष्ट्र के आपन-आपन संस्कृति बा। लेकिन इन्हनीके सार्थकता अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व का साथे-साथे भारतीय संस्कृति के समग्र स्वरूप का निर्माण में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

भी रहल बा। भोजपुरी के साहित्यकार अपना एह उत्तराधिकार के दायित्व से अपरिचित नइखन। एहसे भोजपुरी भाषा आ साहित्य के विकास से राष्ट्रभाषा हिन्दी का कठिनाई होखे के जे आशंका कबो-कबो व्यक्त कइल जाला ऊ हमरा निराधार आ अनुचित बुझाला। एह प्रसंग में भोजपुरी आ हिन्दी के सम्बन्ध एगो विचारणीय प्रश्न हो जाता।

भोजपुरी आ हिन्दी का सम्बन्ध पर विचार करे के पहिले प्रश्न उठऽता—जइसन कि बराबर उठावल जाला—कि भोजपुरी भाषा ह कि बोली। देखल जाय त भाषा आ बोली, दूनों शब्दन में व्युत्पत्ति का विचार से कवनो अन्तर नइखे। भाषा संस्कृत का भाष् धातु से बनल तत्सम शब्द ह जे बोले के अर्थ देला। बोली प्राकृत का बोल्लइ से बनल बा जेकरो ऊहे अर्थ ह। एकर संस्कृत-रूप नइखे मिलत। प्राकृत बोल्लइ ठेठ लोक-व्यवहार के शब्द ह जेकर पहिले के संभावित रूप बोल्लति बोलचाल में कबो रहल हो सकेला। संस्कृत का वदति से प्राकृत बोल्लइ के भाषा-वैज्ञानिक यात्रा तनी कठिन बुझाता। बाकी अइसन मानिबो लिहल जाय कि वदति से बोल्लइ आ ओकरासे बोली बनल तबो अतना त जरूर बा कि भाषा तत्सम ह आ बोली तद्भव। अर्थ दूनों के भलहीं एक होय बाकी मूल भिन्न-भिन्न भइला से तद्भव बोली से जहाँ बोले के सामान्य अर्थ निकलऽता उहाँ तत्सम भाषा में संस्कृत का स्वाभाविक अभिचार के पुट बा। बोली में वाचिक क्रिया के शारीरिक प्रयत्न के भाव बा, भाषा में मानसिकता के विशेष योग हो जाता। सत्यं वद अइसन वाक्यन में वद का प्रयोग से सामान्य वाचिकता प्रगट होता। न वदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि में वदेत् आ भाषां, दूनों का एकत्र प्रयोग से बोली आ भाषा के व्यावहारिक अर्थभेद समझल जा सकेला। गीता में आइल बा—अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे आ स्थितप्रज्ञस्य का भाषा। एह दूनों वाक्यन में पंडितन का आ स्थितप्रज्ञ पुरुष का बोलला खातिर भाष् धातु के प्रयोग भइल बा। कहल जाला—प्रेमचन्द के भाषा बहुत सरल ह। इहाँ भाषा के बोली कह दिआय त उपन्यास-कहानी का लिखित भाषा के अर्थे ना निकली। ओसहीं, जा में तोसे नाहिं बोलूँ का जगह पर केहू कहे—जा मैं तोसे नाहिं भाषण करूँ, त रुसला-चोन्हइला के मजेदार पैरोडी हो जाई। सभा में विद्वान लोगन के भाषण होला, सभे ओहिजा ना बोले; आ घर-परिवार में सभे बोलेला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभन केहू ना करे। एह विवेचन से ई स्पष्ट बा कि बोली वाचिक
आर सामान्य व्यवहार खातिर आ भाषा प्रायः लिखित अउर औपचारिक
व्यवहार खातिर प्रयोग में आवेला। दोसर बात ई कि एह दूनों में
अन्तर कवनो विरोध नइखे। कवनो जीवित भाषा का बारे में ई ना
कहल जा सके कि ई खाली भाषा ह, बोली ना ह। हिन्दी, बँगला,
मराठी, पंजाबी भाषा हई स, आ बोलिओ, काहे कि इन्हनीके लिखित
व्यवहार होला आ बोललो जाला। अँगरेजी अँगरेजन के भाषा
(language) भी ह आ बोली (mother tongue) भी। भोज-
पुरी भाषा आ बोली, दूनों ह। एकरा विपरीत संस्कृत आ पाली
भाषा हई स; बोली ना, काहे कि इन्हनीके व्यवहार केवल लिखित
रूप में होता, बोलचाल में नइखे रह गइल। भोजपुरी एगो समर्थ आ
जीवंत बोली आ विशाल सम्भावनावाली भाषा ह।

भोजपुरी आ हिन्दी के सम्बन्ध ठीक से समझे खातिर हिन्दी का
स्वरूप के समझ लिहल जरूरी बा। हिन्दी शब्द के का तात्पर्य ह?
हिन्दी केकराके कहल जाला? भाषाविज्ञान का पुस्तकन में ब्रजभाषा,
अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली (कौरवी), भोजपुरी, मगही आदि के हिन्दी
के विभाषा, अर्थात् बोली, बतावल गइल बा। बाकी हिन्दी भाषा के
इतिहास लिखेवाला लोग खाली खड़ी बोली के इतिहास लिखले बा, ब्रज-
भाषा, अवधी, भोजपुरी वगैरह के ना। कामताप्रसाद गुरु के हिन्दी-
व्याकरण खड़ी बोली के व्याकरण ह; रामचन्द्र वर्मा के प्रामाणिक-
हिन्दी-कोश खड़ी बोली के शब्दकोश ह। एहमें भोजपुरी-शब्दन के
नाहीं स्थान नइखे। ई ओइसने भइल जइसे खाली दिल्ली के भूगोल
लिखके ओकराके सउँसे भारतवर्ष के भूगोल कहल जाय। दोसरा ओर,
हिन्दी-साहित्य का इतिहासन में डिंगल के चन्दबरदाई, मैथिली के विद्या-
पति, भोजपुरी के कबीरदास, ब्रजभाषा के सूरदास आ अवधी के तुलसी-
दास खड़ी बोली के प्रसाद-निराला-पन्त का साथे-साथे हिन्दी के कवि
बतावल गइल बाड़न। अगर ई सब भाषा हिन्दी के बोली हई स त
इन्हनीका आधुनिक कवियन के भी हिन्दी-साहित्य का इतिहास में स्थान
मिले के चाहत रहे। वीरगाथाकाल का बाद के डिंगल-कवि, भक्तिकाल
का बाद के अवधी-कवि आ भारतेन्दु का बाद के ब्रजभाषा-कवि कहाँ
चल गइलन! द्विवेदी-युग में खड़ी बोली के हिन्दी के काव्यभाषा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Me

बनावल गइल। ओकरा पहिले, भारतेन्दु-युग तक, गद्य खड़ी बोली में लिखात रहे आ कविता ब्रजभाषा में। गद्य आ पद्य में एके भाषा अतना भिन्न रूप अउर कहीं ना मिली। अब, अगर कवनो हिन्दी भाषाभाषी, चाहे कवनो पंजाबीभाषी, या बँगलाभाषी, हिन्दी पढ़ल चाही त ऊ हिन्दी-व्याकरण के कुछ दिन अध्ययन करी आ हिन्दी के पढ़ी; बाकी आगे चलके जब ओकरा तुलसीदास से भेंट होई त किसी पत्रिका के ब्रजभाषा समझे में कामताप्रसाद गुरु के व्याकरण ओकरा का सहायता करी! ओकरा बुझाई कि हिन्दी में गद्य के व्याकरण अलगा होला आ पद्य के अलगा। ऊ हिन्दी के अध्ययन कुछ एह रूप से बन्द कर दी—अब लौं नसानी अब ना नसैहौं। एह अवधारणा के ठीक करे खातिर कहल जाला कि खड़ी बोली का कविता के हिन्दी कविता मानल जाय आ पहिले के अवधी-ब्रजभाषा-भोजपुरी-डिंगल कविता का कवितन के पुरानी हिन्दी का रूप में विशेष अध्ययन खातिर दीहल जाय, जइसे अँगरेजी में प्राचीन साहित्य का साथे कइल जाला। बाकी ई उचित ना होई; काहे कि अँगरेजी भाषा के वर्तमान आ ओकरा पुरान रूप के विकास ह, जबकि खड़ी बोली हिन्दी आदि ब्रजभाषा वगैरह के विकास ना ह। ई उन्हनीके समानान्तर उत्पन्न आ विकसित भइल बा।

असल बात ई ह कि हिन्दी शब्द के प्रयोग दू अर्थ में होत आइल बा—एक त भाषावैज्ञानिक अर्थ में आ दोसर, सामान्य अर्थ में। शास्त्रीय अर्थ में हिन्दी खड़ी बोली के कहल जाला जे भारत के राष्ट्रभाषा ह। एह अर्थ में हिन्दी शब्द के प्रयोग खड़ी बोली के प्रायः आरम्भिक काल से चलल आवऽता। भाषावैज्ञानिक अर्थ में हिन्दी नाम एगो भाषा वर्ग के ह जेकरा विभाषा का रूप में खड़ी बोली (कौरवी), ब्रजभाषा, अवधी, बुन्देलखंडी, छत्तीसगढ़ी, भोजपुरी आदि के गिनल जाला। बाकी जब भोजपुरी में हर विधा में साहित्य-रचना हो रहल बा, ओकरा स्वतन्त्र भाषा ना मानल उचित ना होई। एह में भोजपुरी अउर हिन्दी का सम्बन्ध-विच्छेद के कवनो बात नइखे। ई सर्वमान्य सिद्धान्त ह कि आदमी स्वाभाविक भावप्रकाशन जतना अपना मातृभाषा में कर सकेला ओतना दोसरा कवनो भाषा में ना। आ एहमें सन्देह ना कि भोजपुरी जनपद के मातृभाषा भोजपुरी ह; हिन्दी हमनीके सीखे के पड़ेला, ऊहो आवते-आवत आवेला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी से भोजपुरी का कवनो विरोध नइखे। आचार्य हजारी-प्रसाद द्विवेदी जी कहले बानी कि दहिनी आँख आ बाईं आँख में कवन विरोध हो सकेला! बात सही बा। अब खाली अतने समझ लेवे के बा कि दूनो आँख सही रहे तबे देखे के काम पूर्ण रूप से हो सकेला। अगर एगो में कुछ कमजोरी होय त ओकरा लेन्स में पावर देवे के पड़ी। हिन्दी का तुलना में भोजपुरी अबहीं ओही स्थिति में बाटे। एकरा विकास से हिन्दी के लाभे होई, हानि के कवनो सम्भावना नइखे।

जवना भाषा आ बोली का व्यवहार के क्षेत्र जतने व्यापक रहेला, जीवन का विविधता से ओकर ओतने जादे सम्पर्क होला, आ ओही अनुपात में ओकर अभिव्यंजना-शक्ति विकसित होखेला। ई व्यापकता भूगोल आ इतिहास, दूनों क्षेत्रन में होला। भोजपुरीभाषी जनसमुदाय का एह दूनों क्षेत्रन का विविधता के लाभ मिलल बा जेहसे एह भाषा में व्यावहारिक-जीवन-सम्बन्धी शब्दन के बड़ा समृद्ध भंडार हो गइल बा; आ मुहावरा, लोकोक्ति, कहावत, लोकगीत, लोककथा आदि के त अइसन खजाना बा जेकरासे ग्रहण करके हिन्दिओ का अभिव्यंजना-शक्ति के विकास कइल जा सकेला। लाठी भोजपुरिहा लोगन के पुरान ट्रेड मार्क ह आ ओकरा पर लोग पूरा भरोसो राखेला। कहल बा—सय पुराचरन ना एक हूराचरन। अब देखल जाय त लाठी-वर्ग के अतना शब्द भोजपुरी में बा जतना अउर कहीं ना मिली—, लाठी, लउर, डंटा, गोजी, छड़ी, छकुनी, सोंटा, पैना, बोंग। ओसहीं, गगरी शब्द लिहल जाय जे संस्कृत का गर्गरिका से बनल बा। भोजपुरी में गगरा भी होला जे गगरी से भिन्न होला—आकार में ना, प्रकार में। गगरी माटी के होई आ गगरा लोहा, पीतर, तांबा, सोना भा अउर कवनो धातु के। अब, एह गगरी-जाति के छोट-बड़, ना जाने कतना सदस्य बाड़न—माटी के बनल पात्र, गगरी, घइला, घइली, घड़ा, नाद, नादी, नदिया, मेटा, मटका, मटुकी, पतुका, पतुकी, चरुआ, चरुई, हांड़ी, हंड़िया, कूंड़ि, छोंड़ि, भांड़ा, सोराही, ठिलिया, कुल्हड़, भरुका, पुरवा, दुइयां, रमलोटा।

भोजपुरी के शब्द-सम्पदा का निर्देश खातिर अनेक शब्दन में से इहां दुइएगो शब्द प्रतिनिधि-रूप में चुनल गइल—लाठी आ गगरी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लाठी त एहसे कि ई भोजपुरी संस्कृति के पुरान प्रतीक ह; आ गगरी एहसे कि ईहो जीवन के पुरान प्रतीक ह—कबीरदास का शब्दन में जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है। जीवन के गगरी भरत-भरत जब आदमी थाक जाला त दूनों हाथ ऊपर कके मालिक के गोहरावेला—कते दिन राह भरब हम गगरी !

भोजपुरी का उत्कृष्ट अभिव्यंजना-शक्ति के दूगो प्रधान साधन बाड़न स—नामधातु के सहज रचना आ अनुरणनमूलक शब्दन के निर्माण। नामधातु का रचना में भोजपुरी संस्कृतो से आगा बढ़ल बा, हिन्दी के त कवनो बाते नइखे। तनी एकर नख-सिख वर्णन देखत जाव—

लतियावल, लतहरल, ठेहुनियाइल, अँगुरियावल, मुठियावल, हथवसल, हथियावल, केहुनाठल, केहुनियावल, पिठियावल, छतियाइल, गरदनियावल, जिभियावल, नकियाइल, नकियावल, नजरियावल, नकनकाइल, नकनकावल, नज़रियाइल, नजरियावल, मुड़ियाइल, मयवसल।

शरीर के अंगन का नाम से बनल अइसन अभिव्यंजक शब्द हिन्दी में कहाँ मिलिहन स ! अँगरेजी भाषा नामधातु बनावे में बड़ा फरहर कहाले बाकी ऊहो एह टक्कर में ना आ सके। अब अग-प्रत्यंग के नाम से बनल संज्ञा आ विशेषण शब्दन के कुछ उदाहरण देखीं—

कपरवाह, लिलारी, अँखफोर, जिभगर, जीभी, दँतनिपोर, दाँतल, दाँतुल, ओठर, गलचउर, मुँहगर, मुँहमराई, मुखरी, मुखागर, चेहरगर, छतिगर, भुजगर, हथउठाई, हथफेर, पेटपोंछन, पेटभऽरू, पेटा, पेटपोछन, लदगर, लदाह, पिठियाठोक, ढोंढ़ा, गोड़ाइत, गोड़ावँ, हड़गर, गुदगर, मँसगर, रकतावन।

अनुरणनमूलक शब्दन के, आवश्यकतानुसार बना लेवे के जवन शक्ति भोजपुरी में बा ऊ अउर कहाँ मिली।

खट-खट, चक-चक, छर-छर, झक-झक, झन-झन, टन-टन, टप-टप, टर-टर, ठक-ठक, ठन-ठन, ढन-ढन, पट-पट, भक-भक, भन-भन, सन-सन, सर सर, हर-हर अइसन शब्दन के त इहाँ खजाना बा। ईहे ना, अइसना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शब्दन का बीच में स्वरागम करके ओहसे अर्थचमत्कार बढ़ा देवे के भी अपूर्व कला एह भाषा में मिली; जइसे—खटाखट, चकाचक, झकाझक, रनाबन। अतने ना, ओकरो से नामधातु बनाके अभिव्यंजक क्रियापदन के रचना कर लेवे के गुण भोजपुरी में बा, जवन हिन्दी में दुर्लभ बा; जइसे—चकचकावल, झकझकावल, बनबनावल। अनुरणमूलक शब्दन का सहयोग से विशेषण के चटकार बना देवे के अद्भुत विशेषता एह भाषा में मिलऽता—जइसन बहुत कम जगह मिल सकेला; जइसे—करिया कुच-कुच, ऊजर धप-धप या झक-झक, लाल टह-टह, पीयर चह-चह, हरियर चह-चह, गोर भक-भक।

शब्द-निर्माण का एह विलक्षण सामर्थ्य का अलावे भोजपुरी भाषा में लोकोक्तियन के अक्षम भंडार बा। हिन्दी में लोकोक्तियन के ओइसन समृद्धि नइखे। बहुत त भोजपुरी से अथवा हिन्दी क्षेत्र का दोसरा कवनो भाषा से उधार लिहल लोकोक्ति मिलिहन स जे फरके से चिन्हा जइसन स। एगो मामूली उदाहरण लिहल जाय—

अधजल गगरी छलकत जाय

नाचे ना जाने अगनवें टेढ़

एह में पहिलका त हिन्दी में ज्यों-के-त्यों चलेला, जबकि छलकत जाय का जगह पर हिन्दी के क्रियापद होइत—छलकती जाती है। दोसरहीं, नाचे ना जाने अँगनवें टेढ़ के हिन्दी में बना दिहल बा—नाचे न जाने आँगन टेढ़ा। कहे के ना पड़ी कि एह लोकोक्ति का भोजपुरी रूप में हिन्दी से जादे स्वारस्य आ स्वाभाविकता बा जे ओकरा मौलिकता का ओर संकेत करऽता। कुछ अउर लोकोक्तियन के देखल जाय जेकर लोकोक्ति का रूप में हिन्दीकरण कसहूँ सम्भव नइखे :—

अधाइल बकुला पोठिया तीत। अनका धन प बिकरम राजा। बाउर जनावर के लीद ना हाथी के चिरिकल। आन्हर गवरइया भरसाई में खोंता। एक नाद दुइ भइँसा, ता घर कसल कइसा। बाघ-काछु के अइले मोरवा, गोड़वा देखि झँवान। भार बाँह चूरी ना त फट दे राँड़। मेहरारू के झूला ना, बिलाई के गाँती। रोवे के मन रहे, अँखिये खोदाऽ गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लोकोक्ति लोक जीवन में अनुभव का गहराई में भइल सत्य का साक्षात्कार से प्रेरित विदग्ध उक्ति ह। ओकरा में अनुभूति आ अभि- व्यक्ति के परस्पर कुछ अइसन सम्बंध रहेला जेकर भाषान्तरण ना होवे। लोकोक्ति के निर्माण महाकवि लोग ना करें। एकर प्रत्यक्ष ऊ लोग करेला जे चिट्ठी में लिखवावेला—थोड़ा लिखना, बहुत समझना। लोकोक्ति 'नावक के तीर' होला। कवनो भाषा के लोकोक्तियन से परिचित भइला बिना ओकरा शक्ति के पूरा ज्ञान सम्भव नइखे।

भोजपुरी के शब्द सम्पदा अउर अभिव्यंजना शक्ति का चरचा में अक्सर पूछल जाला कि भोजपुरी में संस्कृत शब्दन के प्रयोग तत्सम रूप में होखे के चाहीं कि तद्भव रूप में। एकरा प्रसंग में मौलिक प्रश्न ई उठेला कि भोजपुरी के स्वरूप का ह? मानक भोजपुरी केकरा के माने के चाहीं—कवनो निरक्षर ग्रामवासी जवन बोलेला ओकरा के कि तत्सम शब्दनवाली जवना भाषा में हम बोल रहल बानी ओकरा के?

कवनो बोली जब भाषा बनेले, याने जब ओकर लिखित व्यवहार होखेला तब ओकर कार्य क्षेत्र बढ़े लागेला। बोलचाल का तात्कालिक व्यवहार से जादे स्थायी महत्त्व के विषय ओह लिखित भाषा के उद्देश्य हो जालन स। अइसन विषयन के उपयुक्त अभिव्यक्ति देवे में ओह बोली के आरम्भिक भावप्रधान रूप आ ओकर सीमित शब्दावली—चाहे ऊ कतनो व्यंजक होय—पाछा छूटे लागेलन स आ ओकर विचारात्मक, विवेचनात्मक रूप अपना अनुरूप शब्दावली का साथे प्रकट होखे लागेला। एह दूनों रूपन के एक-दोसरा के विरोधी ना समझे के चाहीं। दूनों एक-दोसरा के पूरक हवन स। इंशाअल्ला खाँ का रानी केतकी की कहानी में जवन हिन्दवी छुट, ओर किसी बोली का न मेल न पुट रहे ऊ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का चिन्तामणि के भाषा ना। हो सकत रहे। भोजपुरी के भी आगे बढ़े खातिर हिन्दी निअन अपना मूल से शक्तिसंचय करे के पड़ी—संस्कृत-शब्दन के अपनावे के पड़ी। संस्कृत में प्रकृति-प्रत्यय का योग से गम्भीर-से-गम्भीर भाव या बारीक-से-बारीक विचार का अभिव्यक्ति खातिर शब्द बनावे के जवन अनन्त क्षमता बा, ओकरा के छोड़के संस्कृत-मूल के शब्दन के भाषा कपमंडूक रह जाई। अइसहूँ—विषयगत प्रासंगिता का अलावे भी स्वाभाविक रूप से, पढ़ल-लिखल भोजपुरी भाषी लोगन के ओर झुकाव बढ़ रहल बा। तत्सम शब्द से प्रायः

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिनिष्ठित अर्थ के बोध होला जवन तद्भव से ना हो पावे। उदाहरण लिहल जाय—

एग तत्सम शब्द ह—मन्त्र, लेकर अर्धतत्सम या तद्भव रूप हो भइल—मन्तर। दूनों का प्रयोग में आसमान-जमीन के अन्तर बा। साँप-बिच्छी के मंतर हो सकेला, बाकी गायत्री के मंत्र होई। राम-नाम कवनो मन्तर ना, ह—महामन्त्र सोइ जपत महेसू। ओसहीं यन्त्र शब्द बा। वैज्ञानिक प्रयोगशाला में यन्त्र होई आ गला में पहिने खातिर जन्तर। गाय गाभिन होई आ औरत गर्भिणी, बलुक गर्भवती। तत्सम आ तद्भव में नारी अउर मादा के अन्तर हो जाता।

बाकी, एकर मतलब ई ना भइल कि तद्भव शब्दन के खराब समझ के छोड़ दियाय। मोका पड़ला पर ई तत्समो के कान काटेलन स। कवो अइसनो होला कि तत्सम निम्न रह जाला आ तद्भव नीमन हो जाला त ऊ तत्सम के नाको काट लेवेला। दवाई सही आ बढ़िया होय त रोग छू-मन्तर हो जाई, छू-मन्त्र ना। कम पइसा में जीवन-निर्वाह करेवाला गरीब आदमी बेटी के बियाह ना करे, निबाह करेला। बेटी के निर्वाह त अच्छा-अच्छा लोग ना कर सके। एगो कवि कहलन—

गुलशन परस्त हूँ मुझे गुल ही नहीं अजीज।
काँटों से भी निबाह किये जा रहा हूँ मैं॥

त, ई ह अपना जगह पर तद्भव के खूबसूरती। अफसोस के बात बा कि भोजपुरी के बहुत-सा ठेठ शब्द गते-गते प्रयोग से बाहर हो रहल बाड़न स; जइसे—खोंढ़ा, गाँती, चुड़ानी, जबून, जाउर, डमकउआ, दसावल, डांड़, डूमा, ढ़ूकल, ढोंढ़ी, तियना, तोरी, निकसारी, नून, पनहो, पेरु, पितिया, पिसान, पेड़ा (रास्ता), पेहम, बरिया, बाँड़ी (झूला या झालाउ), भउई (भइँस), रहिला, लाद (पेट), सिकहर। भोजपुरी-लेखक का तत्सम, तद्भव, विदेशीय अउर अज्ञात चारो मूल का शब्दन के अपना जरूरत आ रुचि का मोताबिक प्रयोग करे के चाही। तबे भोजपुरी साहित्य के चतुर्मुखी विकास होई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भोजपुरी में साहित्य-रचना अइसे त आज से पांच सौ वर्ष पहिले शुरू हो गइल रहे बाकी ओकर विकास आधुनिक काल में आके भइल। देश से आजादी मिलला का बाद पद्य आ गद्य, दुनों का विभिन्न विधन में उच्च कोटि के साहित्य आवे लागल। कविता का क्षेत्र में भोजपुरी कै प्रगति अउर क्षेत्रन से जादे भइल बा। मौलिक उद्भावना आ मार्मिक भाव-व्यंजना का दृष्टि से कहीं-कहीं भोजपुरी कवि ओह ऊँचाई के छू लेता जहाँ कवनो भाषा का सर्वश्रेष्ठ महाकवि के आसन हो सकेला। कुछ उदाहरण लिहल ठीक होई।

प्रसग ह सन् 1857 के भारत का प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम के। एने पगरी वन्हले, भाला उठवले भोजपुरिहा वीर आ ओने टोप डटवले बन्दूक सम्हरले अंगरेज। ओह दृश्य के कल्पना करीं जब भोजपुरी जवान अपना भाला का नोंक पर दुसमन के मूड़ी टोप-समेत टाँग लेता आ नीचे से ओकरा धड़ से लोहू के फाँफ ओह टोप सहित मूड़ी का ओर छूट रहल बा। कवि कहऽता—

जीत के हारइँ हारि के जीतइँ ठोकि के ताल कबउँ ललकारइँ।
छातिन में चुभि जाइ सँगीन जवान तबउँ भग पाछ न टारइँ॥
भोजपुरी सरदार लपालप भालन ऊपर टोप उछारइँ।
अइसन लागल दीपक बारिके चंडी खड़ी रन काजर पारइँ॥

नीचे से ऊपर का ओर जात लाल रक्त के फाँफ, जइसे दीया के लौ ऊपर उठ रहल होय, आ ऊपर से टोप-समेत मस्तक जइसे ढक्कन होखे। एह सवइया के अउर सब कुछ अबहीं छोड़ दियाव, खाली एगो उत्प्रेक्षा देखल जाव, तबो अपना मौलिक उद्भावना आ सफल बिम्ब-विधान के बल प ई बहुते उत्कृष्ट कविता कहल जाई। एगो बात बा। उत्प्रेक्षा के विधान भइला के इहो व्यंजना बा कि उपमा से काम ना चलत। उपमा का बिम्बविधान में अप्रस्तुत प्रायः वास्तविक अथवा सम्भाव्य होला। जब ओकरा से आगे बढ़के काल्पनिक जगत से अप्रस्तुत लिहल जाला। तब ओकर सम्भाव्यता माने के पड़ेला। अइसन अप्रस्तुत असम्भव भले होखे, कवि का कल्पना-जगत में ऊ सम्भाव्य होला—चाहे

1. चन्द्रशेखर मिश्र : कुँअर सिंह (महाकाव्य) : चउथा सर्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़ी रन काजर पारइँ। एही से उपमा में नियन, सयान, सदृश, लेखा आदि वाचक शब्द होलन स। उत्प्रेक्षा के वाचक शब्द ह—मानो, अइसन लागल। ई स्थिति प्रकृत रूप में उपमा का असमर्थ हो गइला का बाद के ह (अब, ई बात दोसर बा कि कवि एही अप्रस्तुत के विधान उपमा का भाषा में कर देवे)। अइसन अद्भुत दृश्य के उतारे में उपमा के थाकिए गइला से उत्प्रेक्षा द्वारा स्वयं रणचंडी के आगमन युद्ध भूमि में भइल बा जेकरा से ई दृश्य अद्भुत का साथे-साथे दिव्य हो उठल बा।

एगो अउर सवइया देखीं जवना में एगो नववधू के पति भारतमाता का गोहार पर रन में खेले जा रहल बा। ओकरा जूझे के तरास का सामने तरुआरि के पानी थोर पड़ गइल। नव वधू झरोखा से झाँकके देखऽतिआ कि ओकर पति (पति ना कहके जेकराके कहऽतिया मँगिया के निसानी; बीड़ा, शील अउर आभिजात्य के मिलल-जुलल कइसन मनोहर व्यंजना बा) सबसे आगे जा रहल बा। एह वर्णन में देखल जाय कि अन्तिम पंक्ति में शृंगार के वीररस में कइसन मनोहर व्यूहन भइल बा—

कइलसि भूइँ गोहारि जवइ, रन खेलइ चला तब मोर परानी।
जूझ क लागलि अइसन तास कि थोर परा तरुआरि क पानी॥
झाँकि झरोखनि मइँ देखलिउँ, सबसे अगवाँ मँगिया क निसानी।
फूलि के छाती भई गज ऊपर, साटन की अँगिया मसकानी॥

एही कवि के तीन गो सवइया द्रौपदी-चीरहरण का बीच से प्रस्तुत करऽतानी जे भोजपुरी काव्य के उत्कृष्ट उदाहरण बा—

एक से एक खड़े छतिरी, अँखिया सबकी झुकि सोवन लागीं।
द्रौपदी चारिउ ओर निहारिके, हारिके धीरज खोवन लागीं॥
'द्वारिका नाथ, हे द्वारिका नाथ' जुहारि अनाथिनि रोवन लागीं।
नैन बड़े-बड़े, गाल बड़े-बड़े, मोती बड़े-बड़े चोवन लागीं॥

१. ऊहे
२. चन्द्रशेखर मिश्र : द्रौपदी (प्रबन्धकाव्य)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

लागत कोइ गोहारि न बा, खड़े ठाकुर एक-से-एक सगोती।
आँखि तरेरत बाटइ दुसासन, बाज लखइ जस सूधी कपोती॥
तोरे बिना कोइ सूझत ना, तनी टोकिके छाती सँकारु चुनोती।
द्वारिका ओर किहे मुँह द्रौपदी ढारत मोती, निहारत धोती॥[1]

बारि पती मुड़ियइलन, पचम पारथ भी बनि बइठे बेचारु।
आनक हाथ से आपनि नारि उघारि लखइँ, चटके नहिं तारु॥
अइसे में ना बिसरइहऽ तुहूँ, पति देवे पर पांडव भइलें उतारु।
कीमत का जनिहैं एन्हने मछरी मरलें, मिलि गइ मेहरारु॥[2]

अब एगो दोसर कवि के रचना—भोरी का, भोरावेवाला रूप के वर्णन, भोर का पृष्ठभूमि में :—

भोरी का भेस के, भोरी के भोरल, भोरे के भाउ, सबेरे-सबेरे।
रे मन रूप का देवी के रूपक गाउ-सुनाउ सबेरे-सबेरे॥
मेघिल सारी में चम्पक नारी के रूप बसाउ सबेरे-सबेरे।
कोंवल कौंल के फूल खिले जस थीर तलाउ सबेरे-सबेरे॥[3]

अब एगो नमूना उक्ति का विदग्धता के देखल जाव। पुस्तक के नाँव ह—बदमाश-दर्पण।

हम उनसे पुछलीं, आँखि में सुरमा काहे बदे लगाईल।
ऊ हँसके कहलन, हम त छूरी पत्थर से चटाइला॥[4]

ओही कवि के दू गो शेर, जवना में प्रेम के गजलियत सजीव हो उठल बा—

हम खरमेटावें कइलीं ह रहिला चवाय के।
भँवल धयल बा दूध में खांजा तोरे बदे॥

---

१. उहे
२. ऊहे
३. आनंद सन्धिदूत : भोजपुरी अकादमी पत्रिका, जनवरी-मार्च 1982
४. लेखक—तेग अली 'तेग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अत्तर तूँ मलके रोज नहायल करऽ रजा।
बीसन भरल धयल बा कराबा तोरे वदे ॥

भोजपुरी-काव्य में मुक्तक आ गीत के रचना खूब हो रहल बा। प्रबन्ध काव्यन के सख्या अबहीं कम बा। समर्थ कवियन के कमी नइखे। खाली एने ध्यान देला के जरूरत बा।

कविता का बाद जवना विधन में भोजपुरी के उत्कर्ष देखल जाता ऊ ह कहानी आ उपन्यास। कहानी में त कथ्य आ शिल्प के विविध प्रयोगन का चलते उच्च कोटि के साहित्य प्राप्त हो रहल बा लेकिन उपन्यास में ओकर प्रायः अभाव बा। फुलसुंघी, आ घर टोला गाँव जइसन कुछ श्रेष्ठ अपवादन के छोड़ दियाव त उपन्यास में भोजपुरी अबहीं नया जमीन के तलाश करऽतिआ, अइसन लागऽता। नाटक में कुछ काम भइल बा बाकी अइसन ना कि ओकरा के विकसित भवन के साहित्य के सामने गर्व से प्रस्तुत कइल जा सके। निबन्ध में अबहीं डेगाडेगी हो रहल बा। आलोचना-साहित्य के, खास करके सैद्धान्तिक आलोचना के, अभाव खटकेवाला बा।

भाषा का क्षेत्र में सबसे जरूरी काम बाड़न स — शब्द-संकलन, वर्तनी-निर्धारण, सामान्य आ व्युत्पत्तिमूलक कोषग्रन्थन के सम्पादन, प्रामाणिक व्याकरण के निर्माण, आउर भाषाविज्ञान आ काव्य-शास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थन के रचना, जिन्हनी के एही क्रम में लेबे के चाहीं। आ जल्दी। जे जतना देरी से जात्रा सुरू करे ओकरा ओतने डेगार चले के पड़ी, दउड़ह के पड़ सकेला। अउर लोग बहुत आगे निकल गइल बा।

भोजपुरी भाषा आ साहित्य के अब पढ़ाई हो रहल बा। बिहार में माध्यमिक आ इंटर परीक्षा के विषय त ई रहले रहे, एने कुछ बरिस से बिहार विश्वविद्यालय आ मगध विश्वविद्यालय में बी० ए० तक एकर पढ़ाई होय लागल बा। आनर्स के पाठ्यक्रम बनऽता आ जल्दिए

१. ऊहे
२. लेखक—पांडेय कपिल
३. लेखक—पांडेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

एम० ए० के भी पढ़ाई होखे लागी। बाकी अबहीं तक राज्य सरकार से लोक-सेवा-आयोग का परीक्षा खातिर भोजपुरी के मान्यता नइखे मिलल। कई साल पहिले बिहार सरकार विधान परिषद् मे ई आश्वासन देले रहे कि मैथिली का साथे-साथे भोजपुरी खातिर भी केन्द्रीय सरकार से मान्यता प्राप्त करे के प्रयत्न कइल जाई। भारत सरकार से मान्यता मिल गइला पर साहित्य अकादमी का माध्यम से भोजपुरी का साहित्यकारन के बहुत प्रोत्साहन मिली जेकरा से एकरा विकास में गति आई। अइसे त कवनो साहित्य अपना साधकन का शक्ति से महान बनेला, राजकीय पोषण से ना; बाकी राजकीय सहायता से आत्मा के उन्नति भलहीं ना होय, लोकयात्रा में कुछ सुविधा जरूर होला, एकरा से इनकार ना कइल जा सके। आ आधुनिक प्रजातन्त्र में राजकीय के ऊ रूप अउर अर्थ नइखे जे मध्ययुगीन राजतन्त्र में रहे। एइसे राजकीय सहयोग आ सहायता भोजपुरी आ याचना के ना, ओकरा अधिकार के विषय ह। बिहार सरकार भोजपुरी खातिर कुछ कइले बा।

ओकरा से आशा बा कि एइ सम्मेलन के भवन खातिर पटना में जमीन उपलब्ध कराई आ आवश्यक अनुदान दी। भोजपुरी अकादमी के उचित व्यवस्था आ ओकरा माध्यम से भोजपुरी का विकास में सहायता कइल बिहार सरकार के दायित्व बा। हम आशा करऽतानी कि सरकार एइ दिसाई जागरूक होई। उत्तरप्रदेश सरकार से भी हमनी के कम अपेक्षा नइखे।

बाकी, असल काम बा साहित्य-सृजन। भोजपुरी के कलम जेकरे पास होखे ओकरे से निहोरा बा कि अपना शक्ति के प्रयोग आ उपयोग कइल जाव। भगवान के दिहल विभूति एही खातिर बा कि ओह से लोक मंगल के विधान होखो। तबे भारत आगे बढ़ी, आ अइसन बुझाता कि जब ले भारत आगे ना बढ़ी, तबले मानवता मुक्त ना होई। धन्यवाद !

—विश्वनाथ सिंह

मुद्रक : जयदुर्गा प्रेस, नयाटोला, पटना-४ : : फोन : ५६९१३

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

एगारहवाँ अधिवेशन

रेणुकूट, उत्तर प्रदेश

के

अध्यक्ष

डॉ० विद्यानिवास मिश्र

(कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी)

के

भाषण

रेणुकूट, उत्तर प्रदेश

२६ मई, १९९०ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रणीय स्वागताध्यक्ष जी,
लन के माननीय सदस्यगण,
वेशन में जुटल भोजपुरी के नेही-सनेहीं बहिन आ भाई लोग !

हमरे खातिर ई एगो अजगुते ह। सम्मेलन के लोग कौने गुन पर रीझल
कौने अवगुन पर रीझल, ई त उहे लोग जानेला। हम अपनी ओर से
कहीलीं कि भोजपुरी में हम लगभग नाहिंए का बराबर लिखले बानीं।
पुरी के पसारा में जनम भइल, लालन-पालन भइल, भोजपुरी के आँचर
सुख दुलार मिलल, प्यार मिलल, ई सब बात त ह, लेकिन आजु ले हम
अपने निदन्धन में ओह धरती के कहीं-कहीं चोरा के चन्दन जइसे छिड़काव
लेहईं। कुछ अउर कहीं त भोजपुरी साहित्य के छपववले में आ एह भाषा
प्रचार-प्रसार में कवनो उद्यम ना कइलीं। ब्रज में रहलीं, ब्रजभाषा खातिर
प्रयोग कइलीं। भोजपुरी खातिर त एतने कइले होब कि सज्जी लोकभाषन
वह तइयार करवलीं त भोजपुरी क श्रेय त मिलहीं के रहे,
लहीं मिहलीं। एतनो पर अइसन ढूँढ़ली उ सम्मेलन के ई कहबे
कि सम्मेलन के लोग रामजी के नीयर बा कि 'बिनु सेवा जु द्रवै दीन
। भोजपुरी सम्मेलन के जब हम पहिलका अध्यक्ष लोगन के अभिभाषण
त मन में बड़ा भयो लागल, डरो लागल, मन में बड़ा संकोच लागल कि
पंक्ति में हम कइसे खड़ा होईं ? स्वर्गीय पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी,
पं० उदयनारायण तिवारी, डॉ भगवतशरण उपाध्याय जइसन लोगन
साथे भाई देवेन्द्रनाथ शर्मा, गणेश चौबेजी, विवेकी राय जी, कृष्णदेव
उपाध्याय, रामविचार पाण्डेय जइसन लोगन के साथे हमरो नाँव गनती में
आवे, एगे हम अप ा के धन्य जरूर मानब, लेकिन ओ लायक अपना के समझब
। काहे कि ई सब बड़ा तपस्या कइले बाड़न आ बड़े लगन से भोजपुरी
के सेवा कइले बाड़न। एह लोगन के हमरे ऊपर बहुत परेम रहल बा, बहुत
किरपा रहल बा, आ जे एह समय बा ओकर आजुओ किरपा बा। हम समझतः
हईं कि ओह किरपे का बदौलत हम इहाँ खड़ा बाटीं त कुछ कहहीं के परी।
चाहे के नूर चाहे हो, चाहे ना।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

राहुलजी के साथ हम काम कइलीं हिन्दी भाषा के कोश के लगा। जब केहू तीसर आदमी ना रहे त राहुलजी भोजपुरी में बतियावें। जानदार आदमी हमके मिलल, बड़गर आदमी मिलल ते भोजपुरिये में करे, चाहे स्वर्गीय राजेन्द्र बाबू होखें, चाहे पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० उदयनारायण तिवारी होखें, डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा, जस्टिस [illegible] पति त्रिपाठी होखें, जस्टिस शंकरशरण होखें। ई सब आपस के [illegible] भोजपुरिये में करें आ करे में गर्व क अनुभव करें। हमरे मुकाबिले कबो-कबो अनखाय जायँ आ कबो-कबो मजाक करें कि ई दुई [illegible] मिल गइलन त ई भुला जइहें दूसरो के बाति। अपने बोली खातिर मोह-छोह कवनो दूसरी जगह मिलल नाहीं, एकर कारन का ह? हिन्दी साहित्य भोजपुरी बोलेवाला लोग लिखले बा हिन्दी भाषा का भाषा के रूप जतना रचले बा ओतना दूसरे भाषा आ बोली के नइखे कइले। तबो भोजपुरी बोलेवाला लोग भोजपुरी के छोड़ेले बा, ना छोड़ी। एह समय सउँसे संसार में गनल जाय त बारह [illegible] के ऊपर लोग भोजपुरी बोलत होई। एतना में त जाने केतना देस के समा जइहें। भोजपुरी बोलेवाला आदमी देस-परदेस कहीं भी जाय सांस्कृतिक धरोहर के साथ जाला, अपने क्षेत्र के वाचिक साहित्य के, के, चाल-ढाल के धरोहर अपने साथे रखेला, आ कवनो कीमत पर चमक-दमक में हेराला नाहीं। वेश-भूषा कवनो अपनावे, ओकर मन बिहरत रहेला जइसे आजाँ में रखल बरतन। लोग एके समझेला बितले क बिसूरल भइल। अइसन आदमी आगे कइसे जाई? ई समझेला कि जवन चीज आगे ले जाले ऊ ऊर्जा होले, भीतर के तेज आ ऊ तेज एक मनई में ना होला। ऊ तेज सगरो जाति के होला, कहीं कि सगरो महाजाति के होला। तेज ना रही त आदमी ना [illegible] चलवले चली, ना अपने चली। भोजपुरी क्षेत्र के आदमी केतना [illegible] सकेला एकर सबूत चाहीं त इहे देखीं कि मारीशस, फिजी, ट्रिनीडाड, [illegible] बर्मा, थाइलैण्ड, सिंगापुर के दलदल आ जंगल के नन्दन बनावल भोजपुरिये न? किसानन,-मजदूरन के आगे बढ़वले में के झंडा उठावल, [illegible] जयप्रकाश बाबू, सहजानन्द सरस्वती, राहुल जी न?

जे ई समझेला कि भोजपुरी त गँवईपन क इजहार ह ओके ई [illegible] चाहत बाटीं कि एक त जेके ऊ लोग गँवईपन कहेला उहे एह देस के [illegible] ह आ दूसरे जेके लोग बड़ा सोखियाना कहेला ऊ ओकर पहिचान ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जतना भोजपुरी भाषा में मिली ओतना कहीं ना मिली । हम हिन्दी
-सरपहा लिखत रहलीं त हर परिवेश के जतना शब्द जीवन्त रूप
भोजपुरी में प्रयुक्त मिललें ओतना दूसरे जगह ना मिलल । दूसरे
लोग नवगढ़ल शब्द के इस्तेमाल करेला । आ जवन शब्द बोलचाल में
के सँकड़न बरसन में ढलल बा ओके ना इस्तेमाल करेलन । नवका
लोग त सोझ-टेढ़ अंगरेजिये जानेला । अंगरेजिये बुके ला । ऊ त
में नाँव राखी, भलहीं बढ़िया सटीक नाम अपने भाषा में होखे। 'सुगा
के जगहे अंगरेजी क कवन शब्द बा ? जेके चित्रात्मक भाषा कहल जाला
छटा भोजपुरी में केतना बा ई जाने के हो त दुइ घंटा आदमी
नाँव के पास बइठ जाव । कहीं से पुरान फाइल मिले त चतुरी चाचा
पढ़ी पढ़ो, विवेकी राय क निबन्ध पढ़ो, भोजपुरी लोकगीत पढ़ो, भोजपुरी
क कहनी सुनो आ कुछ ना करे त दुइ मेहरारुन में जब बाजि जाव
एक दूसरे के कोसले-सरपले के भाषा सुने, त अन्दाज मिलि
कि भाषा कइसे आगे नाचे लागेले । जब दुलहिन घरे आवे लागेले तब
नीयर बतावल जाला । पाने मतिन सहेज के रखे के सिखावल जाला ।
नीयर ओके ठुरहुर कहल जाला । सोपारी लम्मा होले लेकिन तनिको
रहेले त लचकत रहेले । गाछि लचकत रहेले, टूटेले ना । ओकरे
भीतर अपने आप शक्ति होला लेकिन ओकरा साथ लचेवाला भाव भी होला ।
के पानी चाहीं लेकिन देर तक नाहीं । धूप चाहीं लेकिन सामने से नाहीं ।
के पत्ता नीयर फेरे के चाहीं । एक के ऊपर दूसर गाँछ के रख द त
जाई । भोजपुरी भाषा भी कुछ-कुछ ओह बहुअर मतिन ह । जो भीतर
बड़ा ओज होले, बाहर से बड़ा नवल होले । बड़ा सम्हार माँगेले । सब कुछ
बिलकुल नपल-तुलल ह । आ सबसे बड़ बात ई ह कि समूह में रहेले जरूर
पर एक-एक बेकति के अलग-अलग पहिचान बनाके रहेले । सबके ऊपर एके
रंग चढ़ाके नाहीं । एही से भोजपुरी में एके रंग नाहीं बा, कई ठो रंग बा ।
गली क 'बदमास दरपन' क अइसन भाषा मिली कि 'हम त
कपेटाव करीले रहिला चबाई के । भेंवल घरल बा दूध में खाजा तोरे बदे ।'
दूसरी ओर अइसन असीसे वाली भाषा मिली कि 'अमवाँ क नाईं बाबू मऊर त
मधुवा कि महुववा कुच लागे ।' 'पुरइन पात अस पसरल कमल दल बिसरल!'

एक ओर भोजपुरी में गुड़ के कड़ाही नीयर ताव होला, दूसरी ओर लएना
नीयर कोमलता । भोजपुरी के ई बिचित्र सुभाव एह देस के साधारण मनई के ह ।
बिपरीत लिखलें कि भोजपुरी मनई कवनो लड़ाई-झगड़ा देखे जायं त कवनो ना

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-GI

कवनो पच्छ लीहैं, खाली तमासबीन ना रहिहैं । भरसक उहें पच्छ लीहैं कमजोर पड़त होखे । ई एके आजु बहुत समझदारी के बात ना कहल जाहे कि किनाराकसिये के आज के समझदार समझदारी कहेलन । अइसन भोजपुरी 'मोहि काह परा रे भाई' के कायरता समझले । अइसन भाव के लड़ाई अपने ऊपर लिहले के भाव तवेले अइबो करेला जब मनई में अपने के देखेला । दूसरे के अपनिये से जाँचेला । अपने सुख-दुख से

भोजपुरी इलाका के लोग दूसरे प्रदेश में गइल, दूसरे देश में गइल, धरती से निर्मोही बनिके । एह देश के लाखन मजूर इधर बाहर जा ताटन, आ जहाँ जा ताटन खून-पसीना एक कर ताटन। धरती से सोना उपजावताटन, ओह धरती के जेतना सम्भावना सम्भावना के उजागिर करत बाटन । पर उनके जवन मिलत बा ओहि धरती में लगावे खातिर बराबर सोचत रहत बाटन । कवो आपन जड़ छोड़ल नइखन चाहत । जेवन रस मिलत बा अपने जरी के फेर से चाह ताटन, लौटावल चाह ताटन । ई मोह-छोह उनके खाली कजरी-विरहा जोड़ले बा बल्कि ओह भावना से जोड़ले बा जेवन भाव समझ सकेला । खाली भोजपुरिये के ना । ऊ भाव खाली मनई के ना ह । जीवन के ह । सगरो जीवन के ह । जहाँ के गीत में परदेसिया के लौटावे ई ओरहन दीहल जाव कि 'ओहि देसवा में अमवा ना बउरेला कि ओहि कोइलिया ना बोलेले ।' उहाँ अपनवले के नेवता गाछि, चिरई, चुरुंग दैले बा । पेड़-गाछ, चिरई-चुरुंग इहो सभे देला, खाली मनई ना । साहित्य में दुखवा क गठरी गंगा माई सम्हारेली मंगई माई सम्हारेली । केतनो अपनइत ना होखे, ओह साहित्य से जे अपना के जेतना जोड़ले ऊ भीतर से पोढ़ होई । ओतने मोहमाया भी होई ओकरा । उहे मोह के पसार ह कि छोटानागपुर के आदिवासी भाई नागपुरिया भोजपुरी लिहलन, सरमुजिया भोजपुरी अपनाइ लिहलन । नेपाल के थारू आ मूलभाषा जाने का होई, भोजपुरी भाषा अपनाइ लिहलन । मारीशस में तमिल जरी के लोग रहलन त तेऊ लोग बोलचाल में भोजपुरी अपनाइ लिहलन । अपने देश में सिनेमा में, जहाँ अपनवले क नाटक जगाता उहाँ भोजपुरी गीतन के टुकड़ा, भोजपुरी बड़ी, भोजपुरी शब्द जाता । भोजपुरी कोमल जरूर ह लेकिन पोसुआ नाहीं । बहू ओके ना बना सकल । ना विदेशी, ना अपने देश में । विदेशी संस्कृति के फइलल कचराखाऊ अपसंस्कृति । एह खाऊ अपसंस्कृति के मार्ग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरो लोकभाषा विदा होत चलि जा ताटे। एक अजीब चटक रंग में रंगल चलि जा ताटे। आँखि के चोभेवाला चटकार रंग में रँगल चलि जा ताटे। कहीं-कहीं ओकर असर जरूर नवकी भोजपुरी कविता पर दिखाई पड़ रहल बा, जहाँ सपने के संसार रचल जाता। लेकिन अबहीं ले भोजपुरी के अगरि बाँचल बा। अबहीं ले, एक्के,दुक्का सही,भोजपुर के असली रंग देखवले बा। साँवर सलोन आ पनिगर।

भोजपुरी के प्रशंसा कवनो एह भाव से नाहीं कर ताटीं कि दूसरे के महत्व कम कर ताटीं। दूसरो भाषावाला लोग अपने जरी-सोरी क मान करे, ओमे पानी दे, अपने मेहनत आ पसीना के पानी दे, आ ओकर पानी पहिचाने, रंग पहिचाने, एकरे खातिर हम उकसाव ताटीं। जब हम देखी ले कि अवधी ब्रजी बोले वाला लोग अवधी-ब्रजी घरे बोलत खाने लजाला त ओह लोगन पर हमरा दया आवेले कि अइसन लोग हवन कि अपने जर-सोर के अलग रहिके आपन पहिचान बनावल चाह ताटन। आ दूसरो कारण एक ठो ह कि हम ई जान ताटीं कि भोजपुरी इलाका उहे ना बा जेवन बीस बरिस पहिले रहे; आ उहे ना रही जेवन बीस बरिस बाद होई। का खाई का खाई का लेके परदेस जाई' बोलेवाली चिरई भोजपुरियो इलाका में मुँड़ेरी-मुँड़ेरी उचरतिया। इहो जान ताटीं कि गाँव,गाँव ना रहि गइल बाट, सहरो से बदतर, बेगाना आ अनचीन्ह हो गइल बा। अब गाँव परिवार ना रहि गइल बा। आ गाँव के लोग काका-भतीजा नाइ रहि गइल बाड़न। अब सभे चयहिन्द छाप नेताजी हो गइल बा। 'को बड़ छोट कहत अपराधू।'

इहो जान ताटीं कि कवनों कवनों घर होइहें जहाँ कहनी कहल जात होखी आ पुरान गीत गावल जात होखी। कम्मे गाँव होइहें जहाँ कदमे के गाँछी तर बइठा पड़त होखी। विरले लोग होइहें जेके दस-पाँच कोस में बूढ़ी-बूढ़ा मिल जइहें जेके पुरान गीत, कहनी, रीति-रिवाज मालूम होखी। ओहूसे कम लोग होइहें जे ओके सीखल चाहत होखे। बटोरे वाला लोग बाटे आ बटोरि के बिगरी लेवे वाला बाड़न, बाकिर ओके सीखे वाला आ सीख के ओकरा ओर देखेवाला लोग अँगुरियो भर गनती पर नाहीं होइहें। ई सब त सही, इहे जानिके चुपचाप बइठल ई कवनो कम पाप नाहीं ह। आ ई पाप हमसे नाहीं सहात ह। इहे एक ठो कारन ह कि हम अपने के अयोग्य जानिके भी ए काम, एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष पद स्वीकार कइलीं। एह सम्मेलन के जरिए खाली भोजपुरी भाषा के आंदोलन चलो आ

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-GI

भोजपुरी साहित्य के पहिचान बनी, एतने हम नाहीं चाहत बानीं। ई
होत आइल बा, आगे इहो बढ़ी, लेकिन एकरे साथ-साथ ई सम्मेलन
भारतीय ह त एगो बड़हर पैमाने पर भाव जगवले के काम करो
क चस्पा हम कइलीं ह। ऊ भाव हमन से कुछ माँगता काहे से कि
के ऊ भाव कब से पूजत आइल बाटीं। आ अब जो नाहियो पूजताटीं त
कहीं-कहीं हूक मन में बा। ऊ हूक खाली मनई के मनई खातिर ना ह
ढाँव-गाँव, गाय-गोरू, पशु-पंछी गाछि खातिर नाइ ह। ऊ सगरो जीवन
ह। अउर दिना कोइली दिन-दुपहरिये बोलेले, आजु अधरतिये काहे बोलेले
सवाल क कवनो मतलब दूसर ह ना। एह के जवन साहित्य उठावेला
ध्यान खाली कोयली पर नाहीं बा आ ना ओकर बोली पर बा। जब
कोइली के आ कोइली के बोली के कवनो सुधि ना रखले बा, जब
एक दूसरे से अनचीन्ह हो गइल बा, एक दूसरे के बीच में एक ठो
हो गइल बा कि केहू आमना-सामना ना होत बा। सब आड़े देके
बा। कि केहू आपन कहीं लउकते ना बा। कवनो जोन्हीं ना लउकत
कवनो जुगनू कहीं एह अन्हार के चुनौती देबे खातिर कहीं
आँखी में पानी ना रहि गइल बा कि ओहू जा कवनो चमक आवे। एह
में अगर कहीं कोइली बोलल, पुकार उठल कि हम जहाँ बाटीं उहाँ से
अउर चलीं त बड़ा ओइसन लागेला। कइसन त ई अन्हार एकदम से
दीहले ह। मनई के सज्जी फिकिर के ऊपर एक ठो नसा के परदा
देले रहल ह। आ कहाँ ई बेध कि कहीं अउर चली। देगानोपन के
नसा होला आ ओ नसा में आजु के आदमी डूबि गइल बा। ओके
अनस लागता कि आपन कहे। केतनो अनस लागो, आदमी केतनो एपर
कि काहे हमके सुख-सेजिया से उठवल! जिन्दगी सेजिया पर त कटे के
ह। जिन्दगी त जगले के आ खटले के नाँव ह। आ जे जागी आ खटी
कहीं केहू अपनइन नाहीं लउकी। कहीं केहू आठ-नौ घटा क पसीना
ना लउकी त खटल बोझ हो जाई आ केहू होई चाहे एके छन खातिर
त खटल-जागल, उमंग आ उछाह बनि जाई। एसे ई सवाल आजु
वेधेवाला बा ओइसन शायद मनई के इतिहास में ना रहे। काहे से कि
के एतना कबो भाग ना होई अपनवले से? एह जोखिम से कि अपनवले
मतलब होला अपने के दूसरे के हाथ सौंप देल, आपन बहुत कुछ लुटा
बिना लुटवले ई मिलेला ना। अब जब सज्जी रिश्ता-नाता, नेह-छोह
नाच, कविता कहानी सब जिनिस हो गइल होखे त आदमी भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवता आ ऊ फेर तब सोची नाई सकेला कि जिनिस त कुछ नाहीं ह । सब
अपने कवनो-ना-कवनो परछाईं ह आ सभकर परछाईं आदमी
के जिनिस बनावे वाला मन राच्छस नीयर खाली
पुरान कहनी। खाये-खाये करेला आ ओकर भूखि बढ़ते जाला, लेकिन जे बाँटि के खाइल
रहेला, अपने में सभकर हिस्सा समझेला, ते खइले से ज्यादा खियवले में
आकुल रहेला। एक जगह हम गइलीं। जनेव रहे। उहाँ के कर्त्ता एके गोड़े
पूरे राति ले खड़ा रहे। पंगत पर पंगत चलि गइल, उनुका मुँह में पानी
आ ना गइल, लेकिन उनुकर चेहरा अइसन खिलल रहे आ जे खइलस तेकरे
आखिर एतना गदगद रहलन कि आजु सगरो लोग हमार घर कृतारथ कइलन,
हमार जग पूरा भइल। ई पूरा भइले के भाव छोट-छोट घरौंदा बनाके जे
खेला ओकरा ना बुझाई। काहे से कि ऊ त ना कबे आन्हीं-पानी सहले होई
आ ना कबे टहकार अँजोरिया में ना बाँसुरी के पीछे दउरल होई न चइत
के भोर में महुआ बीने महुआरी में भागल होई। ऊ का जानी कि सम्पूरन का
होला। लेकिन हम कह ताटीं कि ओ सम्पूरन क जरूरत आजु आ गइल बा।
खाली जब हो जाला तबे सम्पूरन के चाह जागेले। जवने ओर नजर डालीं,
सगरी छूँछे लउकत बिया। केहूँ ओ छूँछ गगरिया के बहरवा से रँगि दिहले
बा। आ ओपर केहू सयान बा त फूलो-पत्ती बना देलें बा। लेकिन बा ऊ
गगरिया छूँछे। थोड़े देर ले छूँछ का सहल जा सकेला। लेकिन जब केहू भरले
के कोशिश ना करी, सभे छूँछे राखी, त छूँछ सहाई ना। आ छूँछे लगल
बा। केहू का केहू के ऊपर बिसवास नाहीं ह। ई जाति ऊ जाति पर बिसवास
नाहीं करत बा। अपने पार्टी के आदमी अपने पर बिसवास ना करत बा।
अपने घरही में आदमी अपने सगे महतारी-बापे पर ना बिसवास करत बा आ
एह अबिसवास के खाई के ऊ भरल चाहत बा तरह-तरह के बिजली के
बल्ब से, गाना से, सिनेमा से, वीडियो से, पंखा से, ठढा करेवाला मसीन
से, गरमावे वाला मसीन से। जाने कइसे-कइसे कचरा से खाईं पटात बा।
खाईं चौड़े होत जाले आ ओही के ई परिणाम देखे में आवता कि एक-से-एक
कोमल, सुन्दर, पढ़ल-लिखल, सुशील धियरिया ससुरे जा ताटीं त ओकरा
पर माटी के तेल छिड़का जाता। काहे नाहीं अपने रूप-गुण के साथे-साथ ऊ
दहेज ले अइली। जइसे बिना अपने कमइले अन-धन सोना घरे चलि आवे।
अजगन लगता जइसे लइका आ लइकी अलग-अलग किसिम के कवनो सृष्टि
होखे। आ जे लइकावाला के लइकी ना होखे आ जेकर भइलो बा उनुके ई
नाहीं मन में रहि गइल बा कि दूसरो के लइकी भी लइकी ह। एके बाँस के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Funding by IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

दू करेली फूटेली—एक बँसुरी बनेले आ दूसर बाँस। जवन बाँस बनेला
मारे खातिर नाहीं घाव रोके खातिर बनेला, लेकिन ऊ बँसवा के पोर-पो
अब खाली एक ठो भूख समा गइल बा। केतना भरीं, केतना
केतना चबाईं। हम ई बात बढ़ा-चढ़ा के नाहीं कह ताटीं। जेवन साहि
बा आ सब जेकर चर्चो कर ता आ ओह चरचा के बड़ा चटखारा लोग ले
अखबार में अगर खबर न छपे कि नई बहुरिया के केहू जरा दिहलस,
दिहलस, त अखबरवा पढ़ले के कवनो सुखे ना मिली। एक सीता के
परीक्षा भइल त सगरो देवता लोग आ गइलें। निर्वासन भइल तब
जेवन रामायण लिखलें खुदे आ गइलें आ कहलें कि हम अपने तप के
कहताटीं कि सीता पवित्र ह। आ आजु एतना जगह-जगह कांड
एतना जगह-जगह बहुरियन के होम होता आ केहू के मन में देवता ना
बाटें। एकर कारण बिचारीं त कारन ईहे ह कि जवने साहित्य के एके
मोह जानि के सभ खाली मनोरंजन के वस्तु मानता आ जेवन संस्कार
तमासा मान ता आ अजायबघर के चीज मान ता। कवनो जमाना में ई
मटकोर के धुनि पर गावल जात रहे। गाँव में गीत माटी गोड़ले के
कवनो जमाना में हल्दी चढ़ावल जात रहे। वर-कन्या के हल्दी लगत
केवनो जमाना में एगो कार होखे चुमावन। "साठी के चउरा लहालहि
रे चूमे ही चलेली कवने राम धीय रे। जस-जस चूमेली तस-तस देली
रे। जीयहु दुलहे राम लाख बरीस रे"। आ कवनो जमाना में जनेव के गीत
जात रहे—'ऊसर खेत जोताइब त मोतिया बोवाइब, कंचन थार भराइ
मोतिया लुट इब।" कइसन-कइसन उजबकपना होत रहे, खाली सपना
संपती। हम ओह लोगन से एतना ना घबड़ाई लें जे एकदम सहर में
एकदम नवा हो गइल कि ओके जरी से कवनो मतलबे ना रहि
लेकिन जे सहर में रह ता आ गाँव के बाति कबो-कबो कवनो-कवनो
अपने लगे रख ता। ई देखीं खाँटी देहाती चीज ह, जेइसे देहाती चीज
खातिर एक जिनिस ह। ओकरे से हम घबराई ले। काहे कि ई आदमी
बड़ा भयावन लागेला। लोक साहित्य लोक कविता के बाति करेवाला
लोग अइसने बा। कमे लोग अइसन बा जेकरा खातिर ना गाँव तमासा
ना लोक-साहित्य तमासा बा। ई सज्जी साँस-साँस में, रोवाँ-रोवाँ में
बा। ओही से हम आसो कर ताटीं कि ओकरे काने तक हमार बात पहुँचे
ऊ भोजपुरिहा हो चाहे बुन्देलखण्डी हो। चाहे मगही हो, मैथिल हो, हरियाणवी
हो, कहीं के अपने के माने, अगर ई समझे कि हम जवन पवलीं अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज समकर ह। आ ई धरती जइसनहमार महतारी ह ओइसन समकर महतारी एकरे ऊपर हमार इजारा नाहीं ह। ई जरूर चाही कि हम हीरा पवले त गठिया के ना राखीं। जहाँ-जहाँ अन्हार होखे हीरवा कहीं ऊँच ताखे पर रख दीं। समकर चेहरा पर ओकर अँजोर आ जाव। आ जेकरे चेहरा कवनो मुखौटा लागल होखे, मुखौटवा चिन्हा जाव। असली आ नकली चीन्हा जाव।

ई लक्ष्य अगर आप लोगन के रुचे त एके उजागिर करे खातिर एक ओर त अपने वाचिक परम्परा के अइसन संग्रह तइयार कराईं जवने में सगरो जीवन के ए देखेवाली बात समके एक दूसरे से मिलावे वाली बात हो आ जिन्दगी के हर एक घड़ी के कवनो-कवनो अर्थ देबेवाली बात हो। ओकर व्याख्या करीं। ओकर तुलना दूसरे लोकसाहित्यन के अइसने सनातन मूल्य वाला पंतिन से करीं आ अपने के जाँची कि हम एह मूल्यन के जिय ताटीं कि ना। ई काम बहुत बड़ संकल्प के काम बा। काहे से कि एह काम में जे लगी ते अपने के मिटा दी। डॉ० उदयनारायण तिवारी चउदह बरिस ले लगले त भोजपुरी पर आपन बड़का प्रबन्ध लिखलन। पं० गणेश चौबे जी कहीं ते खटते जा ताड़े। राहुलजी गाँव-गाँव आजमगढ़ में घूमि के नाँव से कुछ लगावे के कोसिस कइले कि खाली नाँव के रेख के सहारे कइसे ओकर इतिहास बाँचल जा सकेला। ई सभ काम तपस्या से भइल। गीत लिखेवाला पूरो बीच में बा। आ चटकार गीत लिखेवाला बा। कहानियो लिखेवाला एक-से-एक समर्थ बा। बड़ी जानदार कहानी लिखेवाला बा। लेकिन हम चारूँ ओर देख ताटीं, अइसन आदमी कम बा जे अपने के खपा के ई कुल्हि काम करे। भोजपुरी सम्मेलन के लोग—ई लोग बिना सुविधा-सहायता के भोजपुरी के ई सभ कइले खातिर धुनियाइल बा। एक तरह से सयान लोग त इहे कहिहें कि ई कइसन बउरहपन ह कि ई भोजपुरी के एगो अलगे झण्डा ई लोग खड़ा करले बा। लेकिन ई कहे के जरूरत आ गइल बा कि ई भोजपुरी के झंडा नाह। ई हिन्दुस्तान के खाँटी मिजाज के झण्डा ह। जेके भुलववले के कारन आज अइसन लउकता कि आज केहू केहू के ना ह। भोजपुरिये के कारन, पूर्वी उत्तर-प्रदेश आ बिहार में हिन्दू-मुसलमान, बाम्हन-चमार कहीं मिल सकेले। आ एही से बिरहा, चैती, के नाते, केहू कवनो जाति के होखे, कवनो स्थान के होखे, दुइ घड़ी जुट सकेला। लोरिकायन, चनइनी, कजरी, आल्हा गावेवाला जेतना हिन्दू होइहें ओतने मुसलमान होइहें। आ पूरबी धुन जवने में अधिकार भोजपुरिये के होई, कवनो एक जाति के लगे धरोहर नाहीं बा।

ru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

हमरे कहले क ई मतलब नाहीं ह कि भोजपुरी के जवन साहित्य
जाता ओकर कम महत्व होखे। लेकिन हम वाचिक परम्परा के फेर में
दोहरा के एसे गोहरावल चाह ताटीं कि बिना ओकरा जवन कुछ
जाई, डर ह कि नकली न हो जाव। केहू बुरा ना मानो, केहू एक
लेखक के ऊपर हमार टीका-टिप्पणी नाहीं ह। कवे-कवे हमें
जवन खड़ी बोली में दस-बीस साल पहिले लिखल गइल बा आ ऊ
पीटल गइल बा, ओही के अनुवाद कइके भोजपुरी में फिट कइल
जबकि ओमे ना भोजपुरी मुहावरा होला ना भोजपुरी माटी के कवनो
माटियो में गन्ध कब निकलेला जबकि ओके खूब जोतल जाला आ
खातिर छोड़ि दिहल जाला। आ वैसाख आ जेठ में जब झेंवा जाला त
असाढ़ बरिसला पर माटी गमक उठेले। ओही के कालिदास — 'सद्यः
सृण सुरभिक्षेत्रमारुह्यमालम्' कहले बाटन। कहले क मतलब ई कि
मटिया पहले जोतब आ मटिया के साथे-साथ अपने के झेंवाइब तबे
सुगन्ध पाइब। भोजपुरी अइसन होखे जवन भोजपुरी लागे आ ओही
भोजपुरी भोजपुरी लागी जे भोजपुरी के भरपूर जोही। खाली ओकर
ना सूंघी, पर काँट-कूस से आपन हाथ-पैर, अपने लोहू से चभचभाई।
ओकरे आगी में अपने के तपाई, ओकरे पानी में अपने के सेरवाई।
ओकरे एकदम जगजगात खुलल अकास के नीचे छँहाई। भोजपुरी
ससार के जादू तबे ओके जाहिर होई। आ ई कवनो मामूली संसार
बा। एमे एतना तरह के रंग बा आ तह-के-तह अर्थ बा कि आजु एकर
पहिले चिन्ता करेके चाहीं कि ई संसरवा कहीं आँखि से ओझल ना होइ
एसे भोजपुरी के सम्मेलन के सामने दूसरा काम हम भोजपुरी-प्रयोग-कोश
रख ताटीं जवने में खाली भोजपुरी शब्द आ अर्थ ना होखे, ओकर प्रयोग
जरुरत पड़े त उहाँ तसवीरो दिहल जाव। जइसे एगो चउकठ के कम-से-कम
हिस्सा होइहें आ सभकर अलग-अलग नाम आजु केहू-केहू के मालूम होई।
तसवीर से समझवले कइसे समझ में आई। आ ई कोश बनि जाई त हिन्दीओ के
बड़ उपकार होई। काहे कि ऊ सबदवा हिन्दी के भी कामे आई। भारतेन्दु
स्व० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', स्व० पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी, स्व०
काशिकेय, स्व० पं० बलदेव प्रसाद मिश्र और आजु के लेखकन में शिवप्रसाद
सिंह, विवेकी राय, कुबेरनाथ राय के साहित्य में अगर लोकतत्व के
प्राण-प्रतिष्ठा भइल बा त ओकर मन्त्रवा भोजपुरिये से आइल बा। ओ
बाँकपन खातिर दूसर लोग ललचात बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्त में, तीसर काम हम जब अपने लोगन के अवढर कृपा से बिकरमाजीत के सिंहासन पर एक अनगइयाँ मनई के बइठाइ देले बाटीं त एह सिंहासन के प्रताप से—कवनो अवरो अधिकार से नाहीं—ई सौंपब कि चाहे साहित्य अकादमी हो, चाहे सरकार के अऊर संस्था होखे, सभ इहे पूछेला कि भोजपुरी साहित्य के कवनो इतिहासो बा ? एमे में पढ़ावे के होखी त का पढ़ाइं ? त कम-से-कम कबीर से लेके आजु तक एतना लमबार साहित्य बा ओकर कवनो परिचय हमनी के तइयार करेके चाहीं। खाली जस गावें खातिर ना हो। अगर भोजपुरी अपने के एक सगरो राष्ट्र के भाषा के निर्माण में सहायक बनलि बा। कइसे आपन दावा खाली घर के भीतर रखलसि। आ जइसन हम शुरू में कहलीं एतना समर्थ होइके भी बराबर अपना के नवा के रखलसि। एह रणभूमि में इतिहास लिखे के चाही ! आ आगे खातिर ई सकेतो देवे के चाही कि ई बहुत सहेला आ जे बहुत चुप रहेला ऊ कमजोर नाही होला। ओकरा भीतर एक हो बिसवास होला कि जहिया चाहब तहिया 'कंदुक इव ब्रह्मांड खंडउ' के करतब देखा देइब। उत्तर प्रदेश के दक्षिणांचल में जंगल आ औद्योगिक संस्कृति के दुपचट में ई सम्मेलन होता त उत्तर प्रदेश के, मध्य प्रदेश के आ बिहार के सरकार-इहाँ तीनों राज के सीवान बा—के काने तब ई पहुंचाई कि एतना बड़ा जनशक्ति आ श्रमशक्ति के निरादर कइल ठीक ना होई। एक दोस चटावे खातिर भोजपुरी अकादमी बिहार सरकार खोलले बा। ओकरे ले अपना मनइन के दरमाही देवे खातिर मुस्किल से पइसा मिल ता। उत्तर-प्रदेश बा मध्य प्रदेश में ऊहो ना बा। साहित्य अकादमी ई कहले बि हँ, लोक साहित्य एगो सोता ह, ओसे कबो-कबो पानी लिहल जाला। ओकरे ऊपर कबो-कबो गोष्ठी हो जाए के चाही। आजु ले हमरे जानकारी में ऊहो ना भइल। लोक-साहित्य के नाम पर भी कवनो जियतार संस्था अखिल भारतीय स्तर के नाहीं बा। आ ना कवनो एगो शोध-संस्था अइसन बा जवन एतना सुघर धरोहर आ एतना जियतार समकालीन रचना-संसार के सरहारे। कुछ अगारिये अइसन बहता कि जे नाचता, गावता आ तान तूरता ओही क दुनिया मान रखता। साठे हजार जेकरे बोलेवाले क संख्या बा इहाँ तक कि चार सौ, आठ सौ संख्यावाला गनती भी सुरक्षा के अधिकार पाव ताटें आ बारह करोड़ के कोई पूछेवाला ना बा। ई कवनो नीमन चीज नाहीं ह। अन्याय त हइहे ह। जे करता तेकरे खातिर शुभो नाहीं ह। जे बेहू देश के बड़की रक्त के कमनी के चिन्ता नाहीं करी ऊ जानो कि फेरु ऊ सूखी त दूसरन में खून रहवे करे त देह ना चली। भोजपुरी ऊ धमनी ह जवने से ए देश के श्रम के बड़वर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-GI

से-बड़वर काम हो ताड़े। पंजाब में फसिल सोना उगिलता, इस्पात [illegible] कोइला निकालल जाता। बड़का-बड़का कारखाना चल ताटे। ए मट्टी के [illegible] जे जराव ता आ जे जरता ओकरा प्राण हुलसावे वाला अगर कुछ ह त [illegible] के चइता, कजरी, फगुआ, बिरहा, लोरिकायन। ई खाली शोधे के विषय [illegible] से काम चली ना। सउँसे जिन्दगी से एकर का रिश्ता बा एके जब तक [illegible] ना आ चिन्हाई ना तब तक जइसे पहिले कहलीं ह कि अजायबघर के वस्तु [illegible] रहि जाई। भोजपुरी में रचना बड़वार तब होई जब ई चीन्हल-चिन्हल [illegible] शुरू होई। काहे कि रचना त भाषा के प्रतिष्ठा से जुड़ल होई। [illegible] के प्रतिष्ठा मिली त भोजपुरी रचना के शक्ति जरूर जागी।

एह अधिवेशन में हम एकर माँगि उठाईं। आ अपने लगे बल-बूता [illegible] त एके गाँव-गाँव जगवले के अभियान करीं, ब त शायद जे देश के, प्रदेश [illegible] भार सम्हरले बा ते कुछ चेती।

बाति त ओराए के बा नाहीं, राति चाहे ओरा जाय। लेकिन [illegible] कहीं आपन बाति समेटे के चाही। अब हम आपन बात समेटब। आ [illegible] बेर सबके आगे हाथ जोड़ब। अगर हमरे नीयर अनगी के ई आसन [illegible] त ओकर मान राखीं आ अगर कवनो भूल-चूक हो त क्षमा करीं।

जय भोजपुरी ! जय हिन्दी !

कर्म प्रेस, लोदीपुर, पटना-१ (दूरभाष — ३२७८०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

के

बारहवां अधिवेशन, छपरा (सारन)

के

अध्यक्ष

मोती बी० ए०

के

अभिभाषण

२१-२२ मार्च, १९९२

समारोह-स्थल

प्राचार्य मनोरंजन नगर

(मौलाना मजहरुल हक एकता भवन)

छपरा, सारन (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जय जय जय भोजपुरिया माई,
तोहरे खातिर भीख मँगाई,
तोहरे खातिर गीति गँवाई,
तोहरे खातिर समर लियाई,
ऊ केइसन भोजपुरिया होई,
जे ना तोहके माथ नेवाई।
जय जय जय भोजपुरिया माई॥

जनता जनार्दन सवरूप जेभरि भाई-बहिन लोग इहाँ आइल बा, सबके हमार प्रणाम।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के बारहवाँ वार्षिक अधिवेशन छपरा में हो रहल बा। एकरे सीवान अधिवेशन में स्वनाम धन्य श्री भगवत शरणजी उपाध्याय अध्यक्ष रहलीं। डा० कृष्णदेव उपाध्यायजी पूर्णिया जिला के बरहज नगर में एकर अध्यक्ष रहलीं। एकरे छपरा अधिवेशन में अध्यक्षता के पगरी हमरे माथे पर बनहाइल बा। ई हमार सौभाग्य बा कि एही बहाने छपरा एइसन भोजपुरी संस्कृति के लाल मिला के दुआरि पर ठाढ़ होखे के अवसर हम पा गइलीं। दुआरि झारेके, दुआरि पर पहरा देवे के सेवा कार्य हमके मीलल, ई हमरे जीवन के सबसे बड़हन उपलब्धि बा। हम भोजपुरी जनता जनार्दन के चरण में कृतज्ञता से ओत-प्रोत होके आपन माथ नेवावत बानी, रउरे हुकुम तबि बानी।

ई ऊ छपरा ह जेकर एगो मणिदीप जवना के ध्रुव तारा कहल जा सकेला नक्षत्र लोक से संसार भरिके जुग-जुग तक ज्योति के दान देत रही। रउरा सभें बूझि गइल होखबि कि ए मणिदीप के नांव का ह। भारतीय गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद के नांव के के ना जानेला। चन्द्रगुप्त मौर्य, सम्राट अशोक, सेनापति पुष्पमित्र शुङ्ग,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-GI

सम्राट समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एइसन विश्व प्रसिद्ध एक महापुरुष के बाद हजार बरिस ले गुलामी के यातना सहत-सहत जब स्वतंत्र भईल त एही धरती के सपूत के माथे पर राज तिलक गईल। जवन इतिहास में पढ़ले रहलीं जां ऊ आँखी से प्रत्यक्ष देखि जां। भोजपुरी में भारत के राष्ट्रगीत लीखेवाला बाबू रघुवीर एही माटी के उपज हँईं। ई गीत समवेत स्वर में आरम्भ होला त राष्ट्रीय भावना राष्ट्र ध्वज नीयर फहराये लागेला। विष्णु पुराण में के जवन सीमा रेखा खींचल बा—

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रिश्चैव दक्षिणम्,
वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्तति।

(दक्षिण में समुद्र जेकरे उत्तर में हिमालय बा, ओही भूमि के भारत आ ओइयें निवास करेवाला के भारती कहल जाला) ओहे साफ, अएना नीयर झलकत भावपूर्ण सरूप भारतीय राष्ट्रीयता के रघुबीर नारायण के भोजपुरी राष्ट्रगीत में बा। सुनी सभें—

सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देशवा से,
मोर प्रान बसे हियखोहरे बटोहिया,
एक द्वार घेरे एक हिय कोतवलवा से,
तीन द्वार सिन्धु घहराये रे बटोहिया।

ए भोजपुरी राष्ट्र-गीत में चारों दिसा, चारो धाम, पूरा भारत व्याप्त बा। भारत के अखण्डता, एकता, संप्रभुता अउर आध्यात्मिकता के पूरा व्याख्या ए राष्ट्र-गीत से हो जात बा। एह दिसा के संदेश वाला छपरा धन्य ह, बाबू रघुबीर नारायण धन्य हँईं। हमार ई भोजपुरी राष्ट्र-गीत अमर रहे।

एही छपरा में मनोरंजन बाबू राजेन्द्र महाविद्यालय के रहलें जेकर भोजपुरी कविता फिरंगिया राष्ट्रीय चेतना के उद्घोष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगदान कइले रहे। बाबू कुँअर सिंह पर लिखल उनके कविता लोकप्रिय रहे। मनोरंजन बाबू हिन्दी आ भोजपुरी के कवि के रूप विख्यात रहलें। हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में अंग्रेजी के प्रवक्ता रहलें। १९३७-३८ में हम उनके छात्र रहलीं बी० ए० कक्षा में। ऊ शान्त प्रकृति के पुरुष रहले। उनके कविता के एगो बानगी देखीं—

हमरा लाज लागेला
राम नाम हम कइसे लेंई लाज लागेला
हमरा लाज लागेला
मुँह से नाम राम के लेई करीं अधम के काम
हमरे एइसन के होई दुनिया में नमक हराम
हमरा लाज लागेला

एही छपरा के चमत्कार ह कि एगो नाऊ के थइली के छूरा तलवरी शाखा लेखनी के स्वरुप बनि गईल। कविवर भिखारी ठाकुर भोजपुरी के अवतारी महापुरुष के रुप में मानल गइलें। एही शहर के एगो लाल रहलें महेन्दर मिसिर जेकरे पुरुबी धुन के चमत्कार दिसा-दिसायें फैल गईल। पाण्डेय कपिल के उपन्यास फुलसुंघी में उनके चमत्कारिक व्यक्तित्व उरेहल गईल बा। उनके व्यक्तित्व के जादू एइसन रहल कि फुल फूल एगो फूल बनि गईलि। फुलसुंघी के अभिमान बाबू हलिवन्त सहाय आ महेन्दर मिसिर करलें। पटना, आरा, छपरा भोजपुरी लोकगीत के गायन के केन्द्र मानल गईल बा। आरे-छपरा असली भोजपुरी भूमि ह एकर नाम ह भोजपुर।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना कवनो आकस्मिक घटना ना ह। ई बहुत कठोर आ कड़ा तपस्या के वरदान ह। राहुल सांकृत्यायन, बाबू शिवपूजन सहाय, स्वामी सहजानन्द सरस्वती, बाबा राघवदास जेइसन महाप्राण व्यक्ति आ मनीषा भोजपुरी के उन्नयन

BajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Me

वदे आन्दोलन आ प्रयास कइल लोग। सामान्य भोजपुरी जनता के रहिके ई लोग व्यक्तिगत सम्पर्क से उनके सुख-दुःख के अनुभव कइ साहित्यिक, सास्कृतिक, आर्थिक स्थिति में सुधार ले आवे के वन्दनीय कइल लोग। एही आन्दोलन के प्रभाव रहे कि बाबू रघुवंश नारायण महेन्द्र शास्त्री, पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय उनके अधूरा काम के पूरा कइ अपने सामर्थ्य भरि कुछू उठा ना राखल लोग। नवयुवकन के टोली जगह संगठित होखे लागल आ पटना में सन् १९७४ में अखिल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल। तबसे लेके आजु ले ई सम्मेलन भोजपुरी साहित्य के विकास कार्य में उत्तरोत्तर आगे बढ़ल सीतलपुर बरेजा के पूरा पाण्डेय परिवार भोजपुरी के प्रति समर्पित बाटे। ए साहित्यिक संस्था में एक से एक बढ़ के विद्वान, चिन्तक, लिख साहित्यकार वृन्द सम्मिलित भइलें आ एहमें आपन सक्रिय भूमिका कइलें। स्वर्गीय सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, प्रसाद द्विवेदी, भगवत शरण उपाध्याय, उदय नारायण तिवारी, राम पाण्डेय, डा० स्वामीनाथ सिंह, महेश्वराचार्य, पण्डित गणेश चौबे, राय, ईश्वर चन्द्र सिन्हा, आचार्य विश्वनाथ सिंह, विद्या निवास कुलदीप राय 'झड़प' साहित्य सम्मेलन के स्तम्भन में कुछ न नांव हवे कारण ए संस्था के विराट वितान तनाइल बाटे। सम्मेलन के सभे लोगन के मन में ईहे साध बा कि कइसे हमार भोजपुरी पल्लवित पुष्पित फलित होखो। सभे एक जुट बा, सभे समर्पित बा। एगो दृढ़, एगो योजना आ एगो निश्चित दिशा में चलला के चलत रहला के काम बाटे।

डाक्टर कृष्णदेव उपाध्याय अपने अध्यक्षीय भाषण में बानी कि भोजपुरी भाषा आ सन्स्कृति के सम्बन्ध में जेतना शोध कार्य बा आ जेतना दस्तावेजी रेकार्ड बा ओतना अउरी कवनो भाषा में ग्रियर्सन के सेवा भोजपुरी के प्रति स्तुल आ महान बा। डाक्टर उदय तिवारी, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, आचार्य विश्वनाथ सिंह डाक्टर उपाध्याय, पण्डित गणेश चौबे जेइसन उद्यट विद्वान के स्थायी आ ओ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेखन कार्य से भोजपुरी के जवन बल मीलल बा ऊ आगे आवे वाली के बदे अचल सम्पत्ति बा जवना के अध्ययन मनन आ चिन्तन के द्वारा रचनात्मक प्रतिया के विकास हो सकेला। आ भोजपुरी साहित्य के भण्डार भर जा सकेला। भोजपुरी में एकरा बदे सामग्री आ सम्धन के कमी बा। जरुरत बा लगपाती लता के। ई सिकाइति कि भोजपुरी साहित्य भारतीय भाषन के साहित्य के तुलना में पीछे बा क्षोभ के बाति बा। पास कवनो पूँजी नइखे ऊ रोजगार से अढ़तिया बनि गइल बा आ लगे पूँजी बा अ अपने रहनि से बेकारी काटत बा। ए बति के उचित ना मानी। बाकी एइसन बाति बा ना। हमनी के सजग बानी आ के पथ पर अग्रसर बानी जां।

साहित्य रचना के सम्वन्ध में सरकार के ओर अंगुरी उठावल उचित नइखे। सरकार रचना ना करी साहित्यकार रचना करी। सरकार भिखारी ठाकुर भोजपुरी के झण्डा फहरवलें। बहुत होई त सरकार मदद क देई जवना से अडर कुछू होखे भा ना होखो साहित्यिक कुण्ठित हो जाई। साहित्य सर्जना के काय साहित्य सम्मेलन क सकेला से कि एकरे लगे पइसा के सिवाय अडरी कुल्हि चीजु बा। साहित्य सम्मेलन जो धनी हो जाई त ऊहो व्यवसायिक हो आई। साहित्य के रचनात्मक शक्ति ओकर क्षीण हो जाई। पइसा कमाइल अउर चीजु ह, साहित्य रचना ओसे भिन्न चीजु ह। ए सिल सिला में भोजपुरी अकादमी के नांव लीहल जा सकेला बाकिर जेतना अदिमी एइमें लगिहें—बकिहें ऊ नौकरी पवला से खुश हो जइहें। अपने नोकरिए के अ साहित्य बूझे लगिहें। भोजपुरी अकादमी नौकर साही आ लाल फीता साही के शिकार हो जाई। साहित्य रचना से केहू जी ना सकेला अपर हो सकेला। साहित्य सम्मेलन त राजनीति क सकेला ना कवनो व्यवसाय। साहित्य के सम्यक रुप से चाल कइल ओकर काम ह।

व्यक्ति आ समाज के सम्वन्ध त समुझ में आवता बाकी व्यक्ति आ संस्था के सम्वन्ध त समुझे के परेला। कवनो स्वप्रदर्शी व्यक्ति संस्था स्थापित करेला। कुछ अदिमी एसे प्रभावित होके संस्था में सम्मिलित हो जालें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बाकी सबके सब त स्वप्नदर्शी हीला ना। संस्थापक जवले रहेला तबे
फगड़ि के अपने सपना के जियवले रहेला। ओकरे ना रहला पर
गतिविधि में भेद परिजाला। महात्मा गान्धी आ कांग्रेस के
सम्बन्ध में दीहल जा सकेला। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र स्वयं में एगो संस्था
ओहीगां महावीर प्रसाद जी द्विवेदी रहलीं। स्वतन्त्रता संग्राम के दौर
भारतवर्ष अंग्रेजी आ अंग्रेजियत के विरोधी रहे, हिन्दी, हिन्दुस्तान
संस्कृति के प्रति समर्पित रहे। बाकी बापू क ना रहला से सब गड़बड़
ग्राम स्वराज्य आ राम राज्य के सपना चकना चूर हो गईल। जब
के आगे क के स्वतन्त्रता के युद्ध लड़ल गइल ओ हिन्दी के अस्तित्व
खटाइए पड़ल रहि गइल। व्यक्ति समाज आ व्यक्ति संस्था में ई है
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन में एह तरह के
नइखे। अबहिन ले सब कुछ पछावत बा। ई संस्था हरदम ठीक रही
महान लक्ष्य के प्राप्त करो। एकर प्रखरता आ तेजस्विता हमेसा
हमरे कहला के ई हे अर्थ ह।

एही क्रम में भोजपुरी भाषा के सरकारी मान्यता पर
के विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कइला के सवाल पर
चाहत बानी। जवन सरकार हिन्दी के राष्ट्र भाषा ना बना पवली
सरकार के जनमतुआ विश्वविद्यालय भोजपुरी के अपने पाठ्यक्रम
सम्मिलित करी। जे हिन्दी के खटाई में डरले बा ऊ भोजपुरी के
करी। हिन्दी ए बात के बूझे या ना बाकी भोजपुरी ए के खूब
असों अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन
शंकर दयाल सिंह के ऐलानिया कहलें कि भोजपुरी के मान्यता
से ना मीली। ए बयान से साफ जाहिर हो जाता कि भोजपुरी
सरकार के नीति से बौखला गइल बा आ अपने माँग बदे आन्दोलन
ओकर मिजाज चढ़ल जाता। जनता में जागृति होखो ई बहुत
बाकी जवन कुछ होखे के चाही शान्ति से धैर्य के आ विवेक से, सहनशी
होखे के चाही। गरमइला से नाहीं ठण्ढा मिजाज से सोच-समुझ के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काम बा। ताकि सरकार के कुम्भकरणी निद्रा भंग होखे आ भोजपुरी संविधान के आठवीं अनुसूची में स्थान के न्यायपूर्ण मांग के ऊ स्वीकार करो। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन एकरा वदे बहुत दिन प्रयत्नशील बा। भोजपुरी भाषा सम्मेलन आ भोजपुरी परिषद् के चाहीं कि ई दूनू अपने मातृ संस्था के हृदय से समर्थन करे आ मिलि-जुलि के प्रयत्न करे कि सरकार भोजपुरी के मान्यता दे दें। एइसन न होखे कि सरकार ए संगठन में फूट के बीया बो दे आ ई तीनू सरकार से लड़ला के बदले आपसे में लड़े लागे लें।

इतिहास से ई बाति सिद्ध बा कि भोजपुरिया वीर जाति ह। एकरा में अकूत बल होला। डा० ग्रियर्सनो ओकरे ए शक्ति के स्वीकार कइले बाँड़ें। बाकी ए घरी ओकर ई-शक्ति बिखरि गइलि बा। एकरा वदे एकता आ संगठन के नितान्त आवश्यकता बा। सांसद आ सुप्रसिद्ध साहित्य-कार शंकर दयाल सिंह देवघर के भाषा सम्मेलन में ई उद्घोष कइलनि कि भोजपुरी प्रान्त के मांग से सब मांग पूरा हो जाई। राजनीतिक चेतना के बिना भोजपुरी भाषा के मांग पूरा ना होई। ई समय के गोहार ह बाकी खाली घोषणा कइला से काम ना चली। बिना आत्म-बल आ चरित्र-बल के राजनीतिक चेतना होखबो करी त ओसे लाभ के बदले हानियें होई।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना के पहिले भोजपुरी में ढेर- कुल्हि लिखाइल-पढ़ाइल गइल बाकी सहीदिसा में कवनो कदम ना ऊठल रहे। चाहत सभे रहे कईल केहूना। हम ओ पवित्र सङ्कल्प दिवस के धन्य मानत हँई जहिया अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल। ए नीमन काम में जे जे हार्दिक योगदान कईल ओमें से बहुत लोग अब नइखे तबनो पर जे वर्तमान बा ऊ तन मन धन से ए महान कार्य में लागल बा। कुछवे समय में भोजपुरी साहित्य सम्मेलन भोजपुरी के विकास वदे बहुत कइलसि आ करत जाता। एक तरह से ई भोजपुरी के महतारी संस्था ह। आजु भोजपुरी क्षेत्र के कोना कोना मे भोजपुरी के विकास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

बदे जवन वैचारिक क्रान्ति हो रहल बा ऊ एही महतारी संस्था के पु
ह। ए संस्था के नाँव के साथ जवन साहित्य शब्द जुटल वा ओकरे
बदे ई संस्था अपने सामर्थ्य परि कुछ उठाना रखलसि। अखिल भारत
सार्थक कइलसि।

भोजपुरी के सामने समस्यन के कमी नइखे बाकी एतनी
गो समस्या प्रमुख वाड़ी सँ जइसे—

(१) संविधान के आठवां अनुसूची मे भोजपुरी के स्थान

(२) विश्व विद्यालयन के पाठ्य क्रम में भोजपुरी के शामिल

(३) भोजपुरी अकादमी आ भोजपुरी प्रान्त बदे सरकार से
एइ में पहिला दू गो साहित्यिक आ तीसरा राजनीतिक महत्व के बा।
भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मंच से भोजपुरी प्रदेश के
वाति अबहिन ले कवों नइखे ऊठल। ई विशुद्ध राजनीतिक प्रश्न ह।
विचार कइल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्रकृति के बाहर के
एकरा बदे अलग से संघर्ष कइल जा सकेला। भोजपुरी साहित्य
चाहो त कार्य समिति के बइठक में एयर विचार क सकेला शेष
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन बराबर प्रयत्नशील बा। भोजपुरी भाषा
के चाहीं कि भाषा सम्बन्धी समस्या के हल करी। भोजपुरी
चाहीं कि भोजपुरी प्रान्त आ भोजपुरी अकादमी बदे संघर्ष करो।
साहित्य सम्बन्धी समस्यन के भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
वैचारिक क्रान्ति आ विकास के लक्षण ह।

सरकार भोजपुरी के मान्यता ना दे के बहुत अनुचित
रहलि बा। ना जाने भोजपुरी में ऊ कौन कमी देखति बा। वीर
भूमि कबो बीरन से खाली ना रहल। सरकार भोजपुरी के विरावति
ई ठीक काम नइखे करति। जवन साफे न्यायपूर्ण लउकत बा ऊ हो
सरकार त का उपद्रव, अराजकता, आन्दोलन के ऊ निमन्त्रण
सरकार के इहे नीति देखिके जो अलता भोजपुरी प्रान्त के मांग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खले वंदे सरकार एक नाहीं करी। सरकार भारत के भोजपुरी प्रदेश
रक्षा करति बा आ निर्भय होके एकरे सम्पदा के शोषणो करति बा।
सरकार के प्रति निष्ठा में जो कमी होखे लागे त एहमें दोष केकर बा ?
में ए घरी उदार आ विचार सील सरकार कायम बा। हम आसा करत
कि भोजपुरी के मान्यता दे के सरकार यश के भागी होखी। सब लोग
आँखि मुनि के आदेश पालन करत जाउ, कर्तव्य पालन में कवनो चूक
रे आ आपन हक भी छोड़ दे। ई अन्याय ना ह त का ह ? मैथिली शरण
ई ललकारि के लिखले बाँड़ कि—

अधिकार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है

स्थिति जे उत्पन्न करेला भले ओकर नांव सुयोधन होखे ऊ दुर्योधने
ओकर भाई दुःशासने होला।

आजु काल्हि भोजपुरी के मानक रूप आ बर्त्तनी के वड़ा चर्चा
बुझात बा कि एकर चिन्तो ढेर कईल जाता। भोजपुरी साहित्य
पत्रिका आ भोजपुरी लोर में ए विषय पर बराबर लेख छपत
भोजपुरी में जक्कन उपन्यास नाटक आ कहानी छपत बाड़ें सँ
में भाषा सम्बन्धी कवनो कठिनाई के अनुभव ना होला। अखिल
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के मूर्धन्य साहियकार
अध्यक्ष लोगन के भाषण पढ़ी आ बताई कि भोजपुरी के मानक रूप
में कवनो कमी वा। जब हमरे सामने रासि-रासि उदाहरण स्तरीय
भाषा के साहित्यिक कृतियन के वाड़ें सँ तबो हम एकर मानक रूप
बानी। भोजपुरी के मानक रूप के सम्बन्ध में सम्मेलन के आमनौर
के अध्यक्ष, ईश्वर चन्द्र सिनहा के विचार से हम पूर्ण रूप से सहमत
कि—

तमाम दुनिया का भाषा के इतिहास बतावेला कि ओकरा व्यवहार
वाला क्षेत्रीय भाषा रूप अलग ढंग से होला आ साहित्यिक रूप अलग
होला। ई साहित्यक रूप तनिक देर में भाषा का घिसत-घिसत जाके
निकला। एह कारण से भोजपुरी के क्षेत्रीय अनेकरूपता कवनो चिन्ता के

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

विषय नइखे। ओकर रुप जइसे जइसे साहित्य लिखात जाई ओइसे कवनो रंग-ढंग निखरत जाई। असल में समर्थ साहित्यकार आ साहित्य पाछा-पाछा भाषा के प्रयोग चलेला। भाषा बनावल चाहे गढ़ल सकेला। एइसन प्रयास होइबो करी त हास्यास्पद होई। एह से एकरा बारे में चिन्ता कइला के कवनो जरुरत नइखे।

डाक्टर ग्रियर्सन साहब शाहाबाद आ ओकरे आस पास के आदर्श रुप मनले बाड़ें। हमरा समुझ में थोड़ बहुत अन्तर के साथ छपरा, चम्पारण पश्चिमी, बलिया गाजीपुर, बनारस, आजमगढ़ गोरखपुर, देउरिया के भीतर जवन लीखल-पढ़ल, बोलल-बतियावल ऊ सब भोजपुरी ह। एइमें सार्थक आ समर्थ साहित्य रचना होई त मानक रुप आ वर्तनी के कवनो समस्या ना रही। थोर-बहुत अंतर तो होइबो करी त ऊ सोना में सोहागा होई। ओके बरिआई से निकाल काम नइखे। ऊ भाव-प्रयोग के जरिए धीरे-धीरे मेल में आ जाई।

सन्स्कृत निष्ठ भोजपुरी बनाम ठेठ भोजपुरी प्रयोग के उठावल जाला। जबने घरी हिन्दी, सन्स्कृत वाली प्राकृत अपभ्रंश आ बोलिन के शहर में लुप्त रहलि अपेह घरी लश्करी जवान के माध्यम उभरले के क्रिया अल्प हो गइल रहे। हिन्दवी आ फारसी के रगभरल हिन्दी के सरुप जब धीरे-धीरे उभरे लागल तब अमीर खुशरो कारामात देखवलें। चमत्कारी पहेली, सुधरी, सरस गीत, आ मार्मिक के जरिये ऊ हिन्दी के सरुप उजागर कइलें। अमीर खुशरो लोक जीवन साहित्य आ संगीत में, घुलमिल गइल रहलें। खुशरो के एगो दोहा सुनीं आ तब के हिन्दी के सरुप के कल्पना करीं—

गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केसा
चल खुशरो घर आपने, रैन भई चहुँ देसा

सन्स्कृत निष्ठ भोजपुरी अस्वभाविक आ असहज हो जाई लोकधारा से कटि जाई तब न ऊ घर के रही न घाट के। आवश्यकता जो कवनो तत्सम शब्द भोजपुरी भाषा प्रवाह में पड़ि जाई त ऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमल के लेखां खिलि जाई। भाषा में सहज ढंग से ऊ आ जाय त आवे
। ओके खोजि-खोजि के मति ले आई। रामचरित मानस में जवने तरें
कृत के तत्सम शब्द आइल बाँड़े सँ ओही तरे भोजपुरी के बहुत शब्द
ने व्याकरण सहित बइठल बाँड़े सँ जवना से रामचरित मानस के दोहा
चरपाई जगमगा गइल बाड़ी सँ। रामचरित मानस मे जो भोजपुरी ना
त त मानस जायसी के पदमावत हो गइल रहीत। एगो दूगो उदाहरण
सभें—

हमहुँ कहबि अब ठकुर सोहाती
नाहीं त मौन रहबि दिन-राती

तत्सम आ भोजपुरी के मेल के एगो उदाहरण देखीं—

ब्राह्मण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रतिवेद कहे
सो मम उरबासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहे

भोजपुरी बहुत पुरान ह। एइमें कई-कई सन्स्कृतियन के योगदान बा।
जपुरी में देखल जाव त उर्दू फारसी शब्दन के भरमार बा। 'सुर्खरु'
रसी ह। भोजपुरी में ई 'सुरुखरु' हो गइल बा। भोजपुरी में कहल जाला
सुरुखरु भइल बाड़। अंग्रेजी के तमाम शब्द भोजपुरी में मिलिखिलि
ल बाँड़े सँ जइसे टीकट, टीसन, लालटेन, रेल, इन्जन, सिंगल, पोसकार्ट
रह-२ जब ई कुल्हि भोजपुरी के साथ गलबहियाँ डारि के चलिहें
त का सन्स्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दवे दूबर बाँड़े सँ? अवधी आ भोजपुरी
बोली क्रिया पद आ विपलिन के प्रयोग में अन्तर बा। अवधी आ भोजपुरी
बहिन बुझाली सँ। सुप्रसिद्ध विद्वान पण्डित विद्यानिवास के विचार
—अइसन है कि हिन्दी के जेतना बोली बाटी अइमें अवधी आ भोजपुरी
करीब के बोली हई, लगभग पूरा सन्स्कृति एक्के है।' एह उद्धरण में
पण्डित जी के भाषा स्वयं प्रमाण। एह में अवधी भोजपुरी के मिश्रण
गंगा-जमुना के संगम एइसन पवित्र लागत बा। बाटे बाटी भोजपुरी ह। एहमे
बोली क्रिया पद 'है' भरि अवधी बाटे। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मूर्धन्य विद्वान लोग अध्यक्ष पद से जवन भाषण देले वाँड़े ओहमें
खूब आइल वाँड़े सँ आ भाषा-प्रवाह के साथ-साथ विचार-प्रवाह
अपने पूर्ण वेग से हिलोरा ले रहल बा। साहित्य के समृद्धि एकरे
ना;सकेला।

भोजपुरी के कवने तरे देश निकाला भईल, एकर कहानी
मार्मिक बाटे। बाकी भोजपुरी जहाँ-जहाँ गइल अँजोर होत गइल
प्रसंग के कथा बहुत रोचक आ सूने-समुझे लायक बा।

अंग्रेज, फ्रान्सीसी, पुर्तगाली, स्पेनी आ डच लोग भारत में
धरम, रोजगार आ हूकूमत कायम करे बदे आइल। एह लोगन के
आ सांस्कृति के प्रभाव हमरे देस पर परल। एकरे पहले इसलामी
के प्रवेश हमरे देस में हरबा-हथिआर आ लाव-लस्कर से भइल। तब
देश कमजोर रहे फुटमति से। इसलामी हुकूमत भारत में कायम
एहू के प्रभाव हमरे देस पर परल। राज-पाट लुटि गइल बाकी धरम
कवनो तरे बचि गइल।

अंग्रेजी हुकूमत के जमाना में भोजपुरी प्रदेश के गरीबी से
उठाके बँधुआ मजूरन के रूप में गरीब भाई लोग पूर्वी-पश्चिमी द्वीप
में भेजि दीहल गइल जहाँ से ई लोग अपने देस में फेरु लवटे ना पइल।
लोगन पर तरह तरह के अत्याचार क के जगल पहाड़ नदीं से इनके
दीहल गईल। ई लोग रोके भा गाके परिस्थितियन से जूझत सब तरह
काम कईल आ सगरे टापुन के इलाका के इलाका हरियर कंचन बना दीहल
ई लोग इँहवें के बासिन्दा हो गईल सगरे द्वीप सम्पन्न हो गइले सँ बाकी
लोग गुलाम के गुलामे रहि गइल। अपने संगे रामचरित मानस आ
ई लोग लेके गइल रहे। ईहे दूगो पोथी भवसागर के नाई हो गइली
परमतमा के दया भइल। ई लोग अब अपना द्वीपन के स्वतंत्र नागरिक हो
बा। कवनो कवनो द्वीप में ए लोगन के राजो कायम हो गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन हाले स्वतन्त्र भइल ह। अपने भाषा के सहारे ई लोग जीयत चलि
ल आ अपने भोजपुरिये परिवेश में ई लोग सम्पन्न समृद्ध का जीवन्त
ह बा। सागर में भोजपुरी नाव अब झिझरी खेलति बा।

विदेसी जलवायु आ विदेसी परिवेश से ई लोग वञ्चितो नइखे
ई पावल। हमरे भाई लोगन के अस्तित्व विदेसी गंद-गुवार के भीतर से
ओइसन दग-दग चमकत बाटे। सिंगापुर हांग-कांग, मारीशस, मलेसिया,
ना-जावा फीजी, त्रिनीदाद, कनिया, सूदीनाम सोचल जाव त एक तरह
ई सगरे देस भारत के एगो अभिन्न अंग नीयर बाड़ें सँ। भारत के धर्म,
त के सन्स्कृति, भारतीय लोकगीत आ भारतीय संगीत इहाँ पूर्ववत बा।
सम्पति में कमी नइखे। भाई लोग सुखी आ सम्पन्न बा। राजनीति आ
हित्य मे ई लोग आगे बा। सबसे बढ़ के नीमन ई बाति बा कि अपने के
लोग भारत के मूल निवासी बूझेला आ अपने मातृभूमि के इयादि
ला। इसमे लोग भोजपुरिया। चइता, फगुआ, कजरी, अल्हा, पुरुबी,
रिकायन, बिजयमल, सोरठी वगैर गीतिन के गावे वाला, होली-दीवाली
रमी-नउमी मनावेवाला रामलीला आ रासलीला रचावेवाला, ढोलक-
लि धोती कुरता वाला भोजपुरी भाई लोगन के संख्या अपरिमित बा।
लोग भोजपुरी में बाति वेहवार करेला, लीखेला-पढ़ेला बाकी जलवायु
विदेसी-संगति के कारण इनके स्वभाव पर त नाहीं, भाषा पर प्रभाव
ख परि गइल बा। ओइसन प्रभाव त हमनियों के भोजपुरी पर
ला क्षेत्रीयता के कारण।

हम सूरीनाम के सुप्रसिद्ध विद्वान साहित्यकार डाक्टर जीतन
सरनामी के एगो कविता प्रस्तुत करतानी—

बरिसन अँखिया मिलाइस रहा
पल भरि में कांहे धूरि परि गैल
हमके समझ ना आइल है
एक एक गुलाब से रोज रोज तोहरे
दिल खात माला गुथले रहलि

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

तोहरे जीव के माठा करि के
प्यार के बत्ति वरले रहलि, वरले रहलि, वरले रहलि
माठा जमि गैल, वत्ति बुत गैल
प्यार ना जानि कौन खोंकड़ में घुस गैल
हम झुरे रह गैलि, प्यार ना समझ में आइल है
बरिसन अँखिया मिलाइए रहा

इधरो ना उधरो, किधरो ना लागे है दिल हमार
चन्दा, तू चल जा, सूरज तू ढल जा
हम रहवे करब, रहवे करब
रहि जाब अकेल।

चाँदन में अपन पुरखन
के खुसियाली हमके
जय जय देश हमार
जय हक पर लड़ेवाल
तू सुख के चिन्ह है
हम तोहर रखवाल।

सूरीनाम के इहे भाषा ह। उहाँ रोमन लिपि के प्रयोग
'जीत नराइन की सरनामी कविताएँ' नांव से देवनागरी लिपि में ई
पहिला बेर पं० माता प्रसाद त्रिपाठी के सम्पादन में शीला प्रिंटर्स, वा
वाराणसी से मुद्रित भइल बा। विदेसी आन्ही-पानी से जवन भोजपुरी
बा जीयत बा तवन रउरा सभन के सोभा बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से हमार नि
बा कि अपने मूल्यन के रच्छा वदे ऊ आपन दृष्टिकोण व्यापक बना
विदेस में जहाँ ले जेतना ले भोजपुरिया साहित्य बा ओकर सुधि ले, ग
सम्हार करे। मारीशस, केनिया, त्रिनीदाद, फीजी, बंकाक में बस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहित्यकार बाँड़न। उहाँ के महिला वर्ग भी साहित्य सृजन में आगे बा। लोगन से सम्पर्क स्थापित कईल आ इनकर सुख-दुख, हालि-चालि जानल जरूरी बा। भारत में जवन साहित्य रचना हो रहल बा तवन त बहुत जानले जाता। एहू पर पूरा-पूरा नजर रखे के पुण्य काम साहित्य सम्मेलन के ह। जे काम करे अपेही के यश गान होला। भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सामने कार्य क्षेत्र के बहुत व्यापक बिस्तार बा। रिगउलि में परि हकरा न पाछे हटे के चाहीं ना हतोत्साह होखे के चाही—

घाई ऊहे पाई एही कें बाजार बा।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मंच से हम ई कहि के बहुत प्रसन्नता के अनुभव करत बानी कि बम्बई के फिल्म संसार भोजपुरी भाषा सन्स्कृति के प्रभाव सिर झुका के स्वीकार कइलसि। भोजपुरी के बधिकार करे खातिर फिल्मी दुनिया में होड़ ला ग गइल। एकर तात्कालिक कारण रहे शाहाबादी के पहिला भोजपुरी फिल्म। 'गंगा मइया तोहें पियरी चढइबों।' बाकिर एकर भूमिका तैयार भईल सन् १९४८ में नदिया के पार फिल्म में। पहिले पहिल दुनिया के कान में आवाज गूँजल—'कठवा के नइया बनइहरे मलहवा, नदिया के पार दे उतार। 'मोरे राजा हो लेचल नदिया के पार' अँखिया मिलाके अँखिया रोवे दिन रतिया न भूले बतिया भूले ना सुरतिया हो तोहर, 'दिल लेके भागा दगा देके भागा' आदि। ए गीतन से दुनिया के भोजपुरी गीतन के आन्तरिक मिठास से, भिखारी ठाकुर के बिरहिया धुन के रस से परिचय मीलल। एकरे पहले हम सन् १९४६ में हिन्दुस्तान में एगो भोजपुरी गीतिलिखि के सुनवले रहलीं जवना से हमार मुक्ति फिल्मिस्तान में गीतकार के पद पर हो गईल। अशोक कुमार ए गीत के सुनि के मस्ती में झूमे लागें। ओ गीत के स्थायी पंक्ति सूनली सभें—

काटे ना कटे मोरा दिनवा गवनवा कब होई
पिया के यवनवा मिलनवा कब होई
भइले सजनवा सपनवा गवनवा कब होई।
काटे ना कटे ... .

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सफलता के सब मान्यता देला। फिल्म में भोजपुरी के फि
के ई संक्षिप्त विवरण ह जवना कें वादे दिलीप कुमार अवधी में फि
आ भोजपुरी में शाहाबादीजी "गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो
सफलता के मोहर लगा दिहले। भोजपुरी बोले वाला लोग दि
नजर से देखल जात रहे। अब ओ लोगन के सम्मान बढ़ गइल।
देस-विदेस के कोना-कोना में पहुँच गइल। ई त होखही के रहल।
नदिया के पार से महान। चाहीं कि अखिल भारतीय भोजपुरी
सम्मेलन एहू के बाति के स्वीकार करे। भिखारी ठाकुर के सभे
ना जाने ए बात के केहू काहे ना मानत बा।

हम देवरिया जिला के हँई। देउरिया भरि के बाँचि
लागल होई कि हमरो दुख-सुख ए बड़का जगह में सूनल जाई।
आपन अलहन छोड़ावे खातिर दू-एगो बाति के चर्चा कइल चाहतानी
पूर्वी उत्तर प्रदेश पूरा के पूरा खांटी भोजपुरी प्रदेश ह। बस्ती, बा
गोरखपुर, नेवम्ल के तराई क्षेत्र, देउरिया, बलिया, गाजीपुर, बा
मिर्जापुर, इलाहाबाद आ जौनपुर के कुछ याग पूर्वी उत्तर प्रदेश में बो
जवन सरगरमी भोजपुरी के विकास बदे पश्चिमी बिहार में बाटे उ
उत्तर प्रदेश में नइखे बाकी भोजपुरी के सबल सुदृढ़ स्तम्भ इहाँ
बाटे। हम नांव का गिनाई। रउरा सभें जानते भरि नइखी इनके खूब
बानी। हम थोर बहुत नाम स्मरण ओ लोगन के कइल चाहतानी
पुछ लिख भइल आ अधों लीखता बाकी लोग चर्चित ना भइल एसे कि
ई लोग साहित्य सम्मेलन से सक्रिय रुप से जुटि ना पावल। आ
विश्वनाथ लाल शैदा राम प्रकाश शुक्ल निर्मोही गोरखपुर के अरुण
पुर के अरुण गोरखपुरी, चंचरीक, रवीन्द्र श्रीवास्तव जोगानी, मंनाल
रामनवल मिश्र, राजनाथ त्रिपाठी (राजू गोरखपुरी) उर्मिला शुक्ल।
जगदीश ओझा 'सुन्दर' नागेन्द्र भट्ट प्रभुनाथ मिश्र, देउरिया के
त्रिपाठी 'जीवन' धरीक्षण मिश्र, दूधनाथ शर्मा श्याम जनार्दन पाण्डेय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाथ पाण्डेय राहगीर, गोरख पाण्डेय आ कुबेरनाथ मिश्र "विचित्र" भोजपुरी के प्रति समर्पित आत्मा ह ई लोग। कविता लिखे वालन के कतार बल बा बाकी गद्य में कुछू लिखे के उत्साह देखे में ना आवेला। चर्चित पइला के कारण सक्रिय सहयोग के अभावे ह। कवि सम्मेलन से दिल-ही अधिक, पत्र-पत्रिकन से लगाव कम ईहो, कारण बा। बाकी बिहार भोजपुरी क्षेत्र में भाषा, साहित्य आ संस्कृति के प्रति बड़ा सक्रियता बाटे। रण के काम में छोट-बड़ जे भी बा सभे लागल बा। झड़पजी, आञ्जनेय श्री भोलानाथ गहमरीजी, विवेकी रायजी सम्मेलन के प्रत्येक कार्य में ान से लगल रहलें लोग उत्तर प्रदेश में। एकरे बादो बहुत रचनाकार हैं। सबके संगिरहा करे के चाहीं।

पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय, बाबू रघुवंश सिंह, पण्डित महेन्द्र शास्त्री, पंडित गणेश चौबे, डा० स्वामीनाथ सिंह, ब्रजकिशोरजी आ पाण्डेय कपिल ी तरे मिशनरी भावना से भोजपुरी के उन्नयन कार्य कइल ओही के नरा आगे हू चले के चाहीं। भाषा साहित्य सम्मेलन के मंच से श्री एस० ुरी पाण्डेय के भी भोजपुरी उत्थान कार्य कम सराहनीय नइखे।

सबसे आखिर में पथ सम्बल के दृष्टि से हम श्रद्धेय डा० उदय नारायण तिवारी के एह विचार से पूरा सहमत बानी कि मीलि-बइठि के विकास खातिर सबके जुटि जाय के चाहीं। सरकारी सहायता के बारे ीजी कहतानी कि एकर खातिर सरकार से एक्को पइसा के मदत एह भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ठीक ना होई। काहे कि जहाँ सरकारी पइसा आई उहां सम्मेलन सरकारी हो जाई आ सरकारी मदत ला से लोगन में गुटबन्दी हो जाई। हमनी का चाहीं कि बीसन लाख के एक-एक रुपया के सदस्य बनाईं आ ओसे मीलल धन से भोजपुरी ा साहित्य, काव्य नाटक, एकांकी आ व्याकरण के सुन्दर किताबि-पोथी ल जाए। धन के कमी से भोजपुरी के बहुत से किताबि अच्छा ढंग से नइखी सें पावत। ई बड़ा हँसी आ दुख के बाति बा।

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

डा० उदय नारायण तिवारी के ई विचार शत-प्रतिशत सही
एहीगां विश्वविद्यालयन में भोजपुरी पाठ्यक्रम सम्मिलित कइला के
बा। भोजपुरी विश्वविद्यालय के स्तर तक पहुँचि जाइल चाहति बा।
नाही एकरा बदे ऊ प्राथमिक शिक्षा के स्तर से उठल चाहति बा? कौ
के प्रारम्भिक शिक्षा के छोड़ के कइसे सीधे उच्च शिक्षा के स्तर तक
साथे-साथ निजी प्रयास के जरिए प्राइमरी आ पूर्व माध्यमिक स्तर के
पुरी शिक्षण बाति काँहे ना सोचल जाता। प्रौढ़ शिक्षा में भी भोजपु
माध्यम से शिक्षा दीहल जा सकेला। उच्च शिक्षा बदे स्तरीय आ
पुस्तकन के कमी दूर कइला के आवश्यकता बा। जबले भोजपुरी में
लिखाई नाहीं होई तबले भोजपुरी सुसंस्कृत भाषा कईसे होई कबले
आ क्षमता के बल पर ऊ अगिला प्रस्ताव प्रस्तुत करी?

बिना पढ़ल-लिखल मनई करी कविता त का करी
करे के काव्य रचना ज्ञान भाषा के जरुरी ह
जो कवनो बून आँसू के गिरल चाही, कहां गीरी
बिला जाए न कतहीं, हाथ आसा के जरुरी ह
जो जनमलि भोजपुरी दूध के संग-संग, भला मइल
एहू के सन्स्कारन के तरह मांजल जरुरी ह
क क़हरा, व्याकरण, साहित्य—दर्शन मति रहे मइल
प्रगति चाहीं त भोजपुरिया पढ़ल—लीखल जरुरी ह
पढ़ावल जांए लइके भोजपुरी—हिन्दी के मीडियम से
चलेला रवानगी जवना तरें देखीं ले सिंसु मन्दिर
चलाईं प्रौढ़ शिक्षालय परिश्रम अउर उद्यम से
रही शासन व्यवस्था पुष्ट, जनता तुष्ट मन भीतर
बइठि होटल में ध के चाय टेबुल पर जो बतिआईं
इहे नीमन 'एकेडिमी' घूमि आईं, फिलिम में जाईं

स्वावलम्वन स्वाभियान दृढ़ संकल्प लगन कर्मठता आ
ईहे पूँजी ह। एही से आत्म बल बढ़ेला, काम होला। छोड़ सब के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपन ल सहारा। तनी अउरी दउर हिरना पा जइब किनारा।
पुरिया स्वभाव प्रगति के ह, जीवन्तता के ह। केहुं के वैभव आ एश्वर्य
करां ईर्षा ना होला बल्कि ऐसे एकर मनोबल बढ़ेला आत्मोत्थान के
जागेला। आत्म सन्तोष के बल ई जानेला—

दालि रोटी आ माठा जो मीलल करी
जवले गमछा में भूजा आ भेली रहीं
तेल सरिसों के बुकवा जो लागलकरीं
अपने किस्मत पर झंखत चमेली रहीं

देखीं सभे गमछा के भूजा आ भेली सरिसों के तेल आ बुकवा चमेली के
के कवने तरें चुनौती देता—

भोजपुरिया के हे भइया का कहेल
खुलि के आव अखाड़ा लड़ा दीहँ सँ
तोहरे चरका पढ़वला में का धइल बा
तोहके सगरे पहाड़ा पढ़ा दीहें सँ।

देस विदेस के पनरह सोरह करोड़ भोजपुरी भाषा भाषीजन
के अकूत बल, एकता आ संगठन के स्वर के प्रतीक्षा करत बा।
सक्षमता बा समर्पित नेतृत्व के। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के 'मुझे खून
तुम्हें आजादी दूँगा' के माँग पर खून के समुद्र गरजि उठल तड़पि उठल
गइल। एक-एक रुपया कवन चीजुवा। ताकत होखे त केहु ई रुपया
लेउ।

सन् १९५१-५२ में कवनो पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर छपल डा०
विचार पाण्डे के कविता—का कहीं कुछ ऊ कहाते नइखे। कहले बिना
तो तइखे, हम पढ़लीं। भोजपुरी में काव्य रचना आ साहित्य सृजन हो
एकर आभास हमके सर्व प्रथम भइल। बाबू रघुवंश नारायण सिंह आ
ओझा 'सुन्दर' हमके भोजपुरी में कविता लीखे के बहुत प्रोत्साहित
। चतुरी चाचा के चीठी आ आकाशवानी पटना से प्रसारित
सिंह' नाटक से हमके बहुत बल मीलल। सुन्दर जी के एगो भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

गीत– 'का जानी ए अ खया में केतना ले लोर बा। जवले सनेहिया ले अँजोर बा' सुनि के हम भोजपुरी के रस के सागर में डूबे-उतराय इलाहाबाद आकाशवाणी ग्राम जगत के प्रोडूसर केशव चन्द्र वर्मा भोजपुरी में लीखे के बहुत प्रेरित कइलें आ लोक भाषा कवि गोष्ठी बराबर आमंत्रित कइलें आ संगीत रुपक कई गो प्रसारित कइलें। वाणी गोरखपुर केन्द्र में हरीराम द्विवेदी, रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव भाई आ व्रजभूषण शर्मा मुखिया जी भोजपुरी के विजय केतु आ फहरी दीहल लोग। आकाशवाणी पटना, इलाहाबाद, लखनऊ, गोरख हम बहुत कृतज्ञ बानी कि ए कुल्हिन के प्रयत्न से भोजपुरी दिशा-दि मँहके लागल।

चन्द्रशेखर मिश्र के कविता कुँअर सिंह हम सन् ५२-५३ सन् १९५२–५३ आ भोजपुरी के भाषा शक्ति के प्रभाव से हम मोहि चन्द्रशेखरजी भोजपुरी के नाम यश जेतना बढ़वले बाँड़े ओतना करी। एइसने मूल्यदान सेवा गोरखपुर के त्रिलोकीनाथ उपाध्याय अल्पकालीन जीवन में कइले। उनके कविता–"रोइ-रोइ पतिया रजमतियाँ" भोजपुरी इलाका मे गूँजि गइल। कैलाश गौतम बंगाली के भोजपुरी कलम भोजपुरी के नया रंग देले बा। एगो देवेन्द्र बंगाली के देखी सभे—"ना चली तोर ना मोर पिया होखे कैलाश गौतम से बहुत आशा कइल जा सकेला। कृष्ण मुरारी गोरखपुरी, चकाचक बनारसी, विजय वालयाटिक भोजपुरी के पाठ आपने काहल गावल बा लोग। भोजपुरी बिहार में जेतना व्याप्त कम उत्तर प्रदेश में नइखे। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन ई कुल्हि निधि हँइवे सँ। सम्मेलन के चाहीं कि एकर संतरता करो सम्मेलन मातृ संस्थान।

हम अपने उद्गार के समापन एही-नारा से करतानि कि—

जय जय जय भोजपुरिया भाई
तोहरे खातिर भीखि मंगाई
तोहरे खाति गीति गवाई
तोहरे खाति मर लिआई
ऊ केइसन भा रया होई
जे ना तोहके नेवाई
जय जय जय जपुरिया माई।

जय भोजपुरी जय हिन्दी

मोती बी० ए०
बरहज, देउरिया (उत्तर प्रदे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

संतोष प्रिंटर्स छपरा-१९९२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ष-८ : अंक-७
जुलाई १९९७

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

९१

परामर्श-मण्डल

श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय : पं० गणेश चौबे
आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र
श्री मोती बी० ए० : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
श्री भोलानाथ गहमरी : श्री पाण्डेय कपिल

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : जगन्नाथ
डॉ० शम्भुशरण : नागेन्द्र प्रसाद सिंह : पाण्डेय आशुतोष
कृष्णानन्द कृष्ण : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र : भगवती प्रसाद द्विवेदी

एह अंक के प्रायोजक

श्री कपिलदेव नारायण सिंह (अम्बिकापुर) : श्री रविशंकर (दिल्ली)

दूरभाष : ०६१२-२६११३४

इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding fr

एह अंक में

कथनी सम्पादक के : भोजपुरी के उत्सवधर्मिता भगवती प्रसाद द्विवेदी
पुण्यश्लोक डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय: पाण्डेय
कविता ... गीत ... ...
,, ... खाये के चीझ ... रामदेव सिंह
,, ... गीत ... ...
,, ... गजल ... ... डॉ सविता
,, ... गजल ... ... डॉ. जोहर
,, ... सउँसे गाँव में लागल आग (श्रीमती) गरिमा
,, ... ठकमुरकी ... ... परमेश्वर
,, ... हाइकु ... ... कुमार
कहानी ... अन्दर से बाहर ... विष्णु कमल
उपन्यास ... अमंगलहारी (किस्त-७) चौधरी कन्हैया प्रसाद
निबन्ध ... त्योहारी लोकगीतन में भोजपुरिया संस्कृति डॉ. द्विवेदी
व्यंग्य लेख .. माफ करीं, शार्टेज बा प्राध्यापक
पुस्तक-समीक्षा खंड-खंड संवेदना के कहानी-संग्रह 'हम दहेज ना लेब' डॉ शंकरमुनि राय
'एक से एक'—एक नजर में परमेश्वर
राउर चिट्ठी मिलल सुनील कुमार
गणेश चौबे, रमापति उपाध्याय 'उत्सुक', डॉ स्वर्ण किरण, डॉ. शंकरमुनि राय 'गड़बड़', राजकुमार सिंह 'कुमार' विष्णुपुरी

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

सदस्यता शुल्क दर

सम्मान्य आजीवन सदस्य	...	...	११०१ रु०
विशिष्ट आजीवन सदस्य	...	...	५५१ रु०
आजीवन सदस्य	...	...	२५१ रु०
वार्षिक सदस्य	...	...	१५ रु०

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

ग्राहक शुल्क दर

एक अंक के दाम	...	...	...	...
साल-भर के ग्राहक शुल्क	...	...	...	...
सम्मेलन के सदस्य खातिर साल भर के रियायती ग्राहक शुल्क				
पत्रिका प्रायोजक शुल्क (आजीवन ग्राहक शुल्क)				...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
[अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका]
इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४
जुलाई १९९७ अंक-७
वर्ष-८

बतनी सम्पादक के

भोजपुरी के उत्सवधर्मिता

भोजपुरिया संस्कृति के जियतार पक्ष ई रहल बा जे ई 'सुरसरि सम सकर हित होई' के भाव से लबालब भरल बा। स्व-हित के जगहा पर पर-हित, राष्ट्र-हित आ विश्व-हित एकरा सोच के धुरी रहल बा। इहे कारण बा जे संकेत आ तंग दायरा में अपना आपके ना समेट के ई लोग आत्मसत्ता होके व्यापक फलक पर कवनो निर्णय लेवे के आदी रहल बा। एहू से बहुत बेगड़नो लोग के एह में अपनापन भेंटाइल बा, त कुछ अपनो लोग अपना हो गइल बा। तंग-नजरिया त एकरा सोच के सिवान में कबो समाइले नाहीं।

जहाँ तक बल आ बेंवत के बात बा, भोजपुरिया के कपार एकर पाग पहिरावत आइल बा। दीगर लोग एकरे के लाठी आ लंठई नांव देले बा। लेकिर इहाँ के मनई त मनई, चिरई-चुरुंगो में अपना हक खातिर लड़े-भिड़े के इतिहास रचे के हियाव जोर मारत आइल बा। तबे नू एगो अदना चिरई अपना मेहनत के कमाई दाल के दाना खूंटा में से निकलवावे खातिर ना खाली लड़ल, बलुक मए समरथ जीव-जन्तु आ राजा-रानियो से निहोरा करत बिया आ बाखिरकार ओकरा जिजीविषा का आगा सभकरा झुके के पड़ल बा। ई एगो प्रतीकात्मक लोककथा बिया भोजपुरिया मन-मिजाज आ तेवर के खुले-खुलुहे-खातिर।

आज समय आ गइल बा, जब अपना अस्तित्व आ माई के अस्मिता के खातिर संघर्ष के धार तेज कइल जाउ। कई गो संगठन भोजपुरी के हक के लड़ाई में आवाज बुलन्द करत बाड़न स। सवाल उठ सकेला कि जब सभकर उद्देश्य भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति के बढ़न्ती-उन्नयने बा, त केहू तीरघाट आ केहू मीरघाट काहें? कतहीं अतिमहत्वाकांक्षा बा, कतहीं राजनीति बा, त कतहीं लीक के अलगा हटके कुछ नया करेके उदबेग। आज वातावरण आ राजनीतिए ना, बलुक साहित्यो-संस्कृति के हलका प्रदूषित हो गइल बा आ सगरो कूहा छपले बा। कारण जवन होखे, बाकिर अब समय आ गइल बा, जब अपना हक के खातिर आपुस के बैर-भाव आ महत्वाकांक्षा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS

के भुला के एक-दोसरा से सामंजस्य बनाके आगा बढ़ल जाउ आ एकरा
परिचय दिहल जाउ, काहे कि समय के मिजाज आ तकाजा बा—
चूँकि महामहिम राष्ट्रपति, कई गो राज्यपाल, मुख्य मंत्री भोजपुरी
अधिकार देबे के दिसाई सकारात्मक अउर अनुकूल रोखी अपनवले
एह से ओह जुझारू चिरई-अस चोट करेके आ संघर्ष के धार में तेजी ले
जरूरत बा।

आज दुखद पहलू ई बा जे भोजपुरी के आयोजन अपना प्रयोजन
भुला के समारोहपरक आ उत्सवधर्मी होखत जात बाड़न स। साहित्य
अधिवेशनन आ अउर समारोहन में धूमधाम त लउकत बा, बाकिर
गोष्ठियन, संगोष्ठियन अउर कवि सम्मेलनन में खाली खानापूरी हो
बा। कई बेर त अइसनो होता कि जेकरा विषय पर परचा पढ़ेके बा,
ओह विषय पर आलेख लिखे के कहो, ओह के कामचलाउओ जानकारी
आ बेगर अध्ययन-अनुशीलन के कुछऊ बोल दिहल अइसन संगोष्ठियन
ढंम-ढर्रा हो गइल बा। जे अधिकृत कइल जात बा, ओकर ई हाल बा
ओह विषय के अधिकारी बा ओकरा के केहू पुछहूँ वाला नइखे। नतीजा
होता कि आयोजन के मकसदे भुला-हेरा जात बा आ साधने साध्य हो
बा। मीडिया से जबन कुछ जनता तक जा रहल बा, ऊ दमगर भोजपुरी
हलुक बना रहल बा। फिल्मि आ गीतन के कैसेटन से त पहिले
भोजपुरी के कमजोर पक्ष उजागर होत रहल बा।

आज जरूरत एह बात के बा कि भोजपुरी के समारोहपरकता
उत्सवधर्मिता से बचावल जाउ आ एकरा पोढ़, गम्भीर, धारदार
सर्जनात्मक सरूप के तरजीह देके प्रतिबिम्बित कइल जाउ।

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

पुण्यश्लोक डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

एह अंक के छपत-छपत ई दुखद सूचना मिलल ह कि भोजपुरी लोक साहित्य
के विश्व-विश्रुत विद्वान आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
के पूर्व अध्यक्ष डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय के निधन एही १६ जून १९९७ को
भइल। उहाँ के दिवंगत आत्मा के प्रति अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य
सम्मेलन आ 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के विनत श्रद्धांजलि।

—पाण्डेय कवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गीत

—रामदेव सिंह 'रमण'

बिसरल राह जिनिगिया के बा
अब जिनिगी के राह बता द

राही के बैरी बा राही
केकर के बा इहवाँ दाही

सबका आपन आपन लागल
कइसे निकली दाह बता द

अपना हक के थाहे नइखे
ना केहू केहू के परखे

कतना जोतीं कतना कोड़ीं
करीं निकौनी पाह बता द

आसमान में आगी लहके
धरती धाह धुआँ से धहके

गाछ-बिरिछ के पतई सूखल
कहाँ लुकाईं, छाँह बता द

ऊपर पर्वत नीचे खाई
संगी सब गइलन अगुआई

कइसे उतरीं अगम अगोचर
एह नदिया क थाह बता द

दुनिया में बा सभे मुसाफिर
के आइल बा केकरा खातिर

बात अगर कुछ दो सर होखे
अपना मन के चाह बता द

दिलावरपुर, पूर्वी चम्पारण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-In

खाये के चीझ

चाहा नियन
एने-ओने तिकवत
घुचुर-घुचुर आँख लेले
ऊ मुस्कुराइल,
तनी-मनी,
शायद बराबो लउकल रहे
छाँछ प चढ़ल।
ओठ प जीभ फेरलस,
त शंका भइल—
खाएक ना मिले का रे?
सुनलस, त हँसल ठठा के।
ना रहि गइल
त पुछलीं—
तू ऊहे नु हवे?
कह
हमार किरिया खा के।
ऊ शांत हो गइल,
कसमसात
धीरे से कहलस—
अतना दिन प त भेंटइल
आ हमरा-अस
भूखे टटात मनई के
खियावतो बाड़ऽ
त किरिया?

—अनुरा

□ योगियाँ, बक्सर, बिहार-८०२

गीत

—डॉ० सविता सोना

अइसे जिनिगी भइल बा हमार गोइयाँ
जइसे राई भइल बा पहाड़ गोइयाँ
बार दीले, बुता जाला मन के दिया
घुप अन्हरिया पसर के डेरावे जिया
धूर आँखिन में झोंके बेयरिया धिया
भइल कइसे कुभुदनी सेवार गोइयाँ
नेह पाके गलीले भरम में बहल
रोज सपना सजा के रचीले महल
कवना साइत में डोली ई निकलल रहल
ले के आइल बा कहवाँ कँहार गोइयाँ
आस के एगो बिरवा अँगनवाँ रहे
आही बिरवा में अँटकल परनवाँ रहे
तिनका-तिनका जोगावत मयनवाँ रहे
ले गइल ओके आन्ही उखाड़ गोइयाँ

□ ३३, गुरुधाम कॉलोनी, वाराणसी-२२१०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गजल

—डॉ० जौहर शफियाबादी

ई का गजब भइल गमला में नागफनी
सब कुछ बदल गइल गमला में नागफनी
जस धरती बा तस बा छवि के सुघराई
ऊ दिन कहाँ गइल गमला में नागफनी
मुरुछा में इतिहास पड़ल बा, बेसुध बा
माटी भइल कइल गमला में नागफनी
दहशत बढ़ते जाता मनमाना युग के
गमलो काँप गइल गमला में नागफनी
आदम के धरती पर सबकुछ बा वाकिर
चदरा भइल मइल गमला में नागफनी
साँच कहे के आँतर में बूता चाहीं
गाँव भइल लठइल गमल में नागफनी
अबहूँ त कुछ सोच-विचार करऽ 'जौहर'
दुनिया बदल गइल गमला में नागफनी

खानकाहे आलिया, शफियाबादशरीफ, गोपालगंज

गजल

—(श्रीमती) गरिमा बन्धु

रउरा बातन के बा असर अइसन
हमरो जिनिगी भइल जहर अइसन
रउआ हर बात चाहीं बूझे के
अब त रउरो भइल उमर अइसन
आज राउर सनेह के पा के
गाँव ई हो गइल शहर अइसन
गीत के चाँद का उगल मन में
उठ रहल भाव के लहर अइसन
आज हमहूँ लिखीं गजल 'गरिमा'
रउरा गजलन के बा बहर अइसन

मार्ग-३, इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding fr

ठकमुरकी

—कुमार वि

लंगड़न के साथे लंगड़ा के रह गइनी
दूनो गोड़ रहे बाकिर चलहीं ना पइनी

गाड़ी बोझाइल बा, पुलिया कमजोर बा
आन्हीं-तूफान उठल अइसन घनघोर बा

हिंजड़न के साथे हिंजड़ा के रह गइनी
हिम्मत का अछइत हम लड़हीं ना पइनी

नारा त बहुते दिआइल, के बोलल?
ठकमुरकी लागल आ केहू ना डोलल

बहिरन के साथे बहिरा के रह गइनी
दूनो कान रहे बाकिर सुनहीं ना पइनी

छूँछ परल बाती बा, दियरी में तेल कहां
जिनिगी में दुख अइसन, जइसन बा जेल कहां

गूँगन के साथे गोंगिया के रह गइनी
मुँह में रहे बात बाकिर कहहीं ना पइनी

चारो तरफ से अन्हरिया मुँह झाँपेला
सूरुज लुकाइल बा, भीतर से काँपेला

कउअन के साथे कउआ के रह गइनी
दूनो पाँख रहे बाकिर उड़हीं ना पइनी

भीड़ बहुत बा जूटल, मति अब भरमाइल बा
नदी बीच माँझी त बहुते घबड़ाइल बा

अन्हरन का साथे अन्हरा के रह गइनी
दूनो आँख रहे बाकिर देखहीं ना पइनी

द्वारा-श्री शत्रुघ्न प्र० सिंह, स्कूल रोड, पाड़ीपुर, मुजफ्फ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

सउँसे गाँव में लागल आग

—बरमेश्वर सिंह

सउँसे गाँव में लागल आग

धधकि रहल कुल्हि राम मड़इया
कलपत-छछनत लोग-लुगइया

मुखिया बइठि के गावत फाग

धुआँ-धुआँ सब ओर उठल बा
हुआँ-हुआँ के शोर मचल बा

जेतना मुँह ओतने बा राग

राजा के बाजा बा बाजत
आपन मुँह, अपने बा गाजत

प्यादा के जागल बा भाग

रेलमपेल, पड़ल बा हाँका
किसिम-किसिम के टँगल पताका

बाकिर पगड़ी दागे-दाग

उड़ि-उड़ि गिधवा शोक मनावत
बगुला बा उपदेश सुनावत

दाँव देखि उचरत बा काग

अब पानी बा नाक ले आइल
तीस अँखियन बीच फुलाइल

मुँह से निकल रहल बा झाग

□ धनडीहा, भोजपुर, बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding fr

राउर चिट्ठी मिलल

श्री गणश चौबे (बंगरी, पूर्वी चम्पारण)—

श्री विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव के राष्ट्रगीत पर लेख बड़े जँचल। लेखक के श्रम आ सूझ के हम प्रशंसा कर रहल बानी, लेकिन मंगल-कामना का साथ। 'वह देश कौन सा है' कविता श्री श्रीधर पाठक के ह, जहाँ तक हमरा याद बाटे। लेकिन हम निश्चय का साथ कुछ कहि सकत बानीं।

श्री रमापति उपाध्याय 'उत्सुक' (भण्डारीदह, बोकारो)—

स्तर के उच्च सोपान देख के चिट्ठी लिखे खातिर मजबूर होवे के पड़ल हा। विशेषकर 'अमगलहारी' उपन्यास के शिल्प अउर कथ्य के कसाव देश-काल के गठन.....पर मंत्रमुग्ध हो जाये के परत बा।.....कसौटी के अंक में श्रीराम सिंह 'उदय' जी के निबन्ध में.....अध्ययन के गम्भीरता भोजपुरी के काव्य-ज्ञान साफ-साफ परिलक्षित होत बा। डॉ० रामाधीन के समालोचना भी अति सराहनीय बा।.....साधुवाद!

डॉ० स्वर्णकिरण (सोहसराय, नालन्दा)—

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के मासल आ उपयोगी रूप देख के मन अगराना स्वाभाविक बा। सम्पादकीय सोच-समझ के लिखल जा रहल रचना के चुनाव में सम्पादक महोदय के तेज-तर्रार नजर के असर लेखा जाता। कैथी लिपि के सम्बन्ध में हमार विचार अपने से मिलत बा। आ भाषा के मामला में हम सावधान ना होखब त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में भोजपुरी भाषा कइएक सौ साल पीछे चल जाई।

डॉ० शंकरमुनि राय 'गड़बड़' (जोबट, झाबुआ, म० प्र०)—

पत्रिका के मई अंक में छपल सामग्री विशेष महत्वपूर्ण लगल। रउरा पत्रकारीय दृष्टिकोण के सराइना करके ओछा नहलीं कहल जाई। अतना छोटा पत्रिका में तथ्यन के समेटे में माहिर बानी रउरा।

श्री राजकुमार सिंह 'कुमार' विष्णुपुरी (विष्णुपुरी, गुलटेनगंज, सारण--८४१२११—

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' नीक राह पर चल रहल बा। एकरा खातिर बधाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

अन्दर से बाहर

—चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

गइल लुंगी, फाटल गंजी पहिरले सायकिल के बीच में चाउर से भरल बोरा ग्रइले, पैदल, ठेलत जात रहीं। हमार ध्यान कतो दोसरा जगह ना रहे सायकिल पर के भारी बोझ के ठेले में लागल रहीं। एगो कार पाछा से आके सायकिल से सट के खाड़ हो गइल। हम डेरा गइनी, सायकिल हाथ से छूट के फरका फेंका गइल।

घूम के देखीं त साहब रहन।

सड़क पर जात लोग समझल कि कार सायकिल के धक्का मार देलस। लोग चुप आइल बाकिर अफिसर-चपरासी के देख के जेने से आइल रहे ओनहीं चल गइल।

"सलाम हजूर!"

"सलाम! कइसन बाड़स?"

हम झेंप गइनी। समझ में ना आवत रहे कि का कहीं? का ना कहीं? 'हुजूरन, ई का दशा बनवले बाड़े?'

'हमार नौकरी खतम हो गइल। चाउर-दाल, नून-तेल के दोकान करत बानी सरकार। कहाँ बानी, आजकल?'

'पटना में। फर्टिलाइजर के निदेशक बानी, तोर नोकरी त पुरान रहे? कइसे खतम हो गइल? सरकारी खजाना खा गइल रहस का?'

'ना सरकार! खजाना ना खइले रहीं। औरत बिमार रहे, आजो बीमार बोकरे दवाई करावे खातिर छुट्टी पर रहीं।'

'के खतम कइल?'

हमरा समझ में आइल रहे कि फर्टिलाइजर खेतिए के चीज ह। इहो बात बुझल रहीं कृषि के नौकरी से कि पटना में निदेशक रहेलन। कहनी, 'कृषि विभाग के आफिसर, अउर के?'

'के?'

'बारा के उप निदेशक।'

'एकदम?'

'जी!'

'तू कुछ ना कइले? चुपचाप बइठ रहले घरे आके?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding fr

'ना हजूर! रउवे पास दरखास्त भेजले बानी।'

'भेजले बाड़ऽ ?'

'जी।'

'देखऽ। आज त हम ओह विभाग में नइखीं।'

एगो आशा के किरण झलकल रहे ऊ मधिम हो गइल कि फिर
कहनी, 'पन्द्रह दिन के बाद हम ओह विभाग में प्रशासन सभाले
बानी। तू आपन कागज-पत्तर लेके मिलिहे।'

'सरकार! हमरा पास कवनो कागज नइखे, सब निदेशक के
देले बानी। सोच के कि नौकरी मिल जाई तब ठीक ना त ई सब
का करी ?'

'रजिष्ट्री से ?'

'जी।'

साहब ड्राइवर के तरफ तकनी तब हम बुझ गइनी कि
बढ़ावे बदे इशारा कर रहल बानी। 'सरकार! हम त राउर
चुकल बानी। का रउवा गरीब के एक कप चायो ना कबूल कर सकीं?'

'उहे डेरा बा! पहिले ?'

'जी।'

'अइसन करऽ। आज हमरा के जाये द। भभुआ तक जाये
बिक्रमगंज में, इहवें दू बज रहल बा। अउर देर कइल ठीक ना होई।
नव बजे तक हम चल आइब। बिक्रमगंज डाक बंगला पर रुकब। तू
चल अइह चाहेऽ। ना, तोहार नस्ता करब। तोहार सब बात सुनब।'

कार बढ़ गइल। सलामी दाग के हम सायकिल के तरफ बढ़नी।

दोसरा दिन भोरहीं से हम तैयार रहीं। साहब ठीक नव बजे
रहन।

नास्ता कर के आराम कुर्सी पर बइठ के हमरा से कहले, 'देख।
हम गैर हईं। साहब हईं। तू चपरासी हव। बाबीर आज तू रोज
आ हम डाक्टर। आज तोहार फाइल हमरा पास नइखे बाकिर पन्द्रह
बाद ऊ हमरा पास आ जाई। नाहियों आई त अब हम जरूर मंगवा
तब तोहरा आपन सब बात खोल-खोल के कहीं के पड़ी। बाकिर
तू कानून बतिअइबऽ आ हम चाहियो के तोहरा से तोहार सब बात
पाइब। आज तू हमरा के आपन हमदर्द भा डाक्टर समझ के सब बात
साफ कहऽ। तोहार नौकरी त चलिए गइल बा। अउर केहू ज्यादा
झूठ मत कहिहऽ। हम सुन के कवनो राह निकाले के कोशिश करब।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरा दरखासो देला महीना दिन से ऊपर भइल। आज तक एको चिट्ठी ना आइल। हम त ओने से निराश हो गइल रहीं। हम त रउवा चिट्ठी ना करतीं, सायकिल ठेले में ध्यान रहे। बाकिर आज रउवा मिल गइनी तब हम कहब कि एह में जरूर खुदा के कवनो किरपा बा। रहल बात रउवा के त सरकार विश्वास रखीं हम रउवा से झूठ ना कहब। गलत-सही जे बात बा सब कहब। अगर हम गलत कइले होखीं तब रउवा जे सजाय देब ओहा कबूल रही बाकिर रउवो जानत बानी कि हम कइसन आदमी हईं। हम दोष के केहू के दबाव ना मानी।'

'ठीक बा, कहऽ।'

'हम काराकाट में काम करत रहीं। खत मिलल कि तोहार बदली तोहर कइल जात बा। हम साहब से मिले आरा गइनी आ आपन अरज-बिनती कहनीं कि हम बाल-बच्चादार आदमी हईं। अतना दूर बदली मत करीं। दया करीं।

'साहब कहले, तोहरा जाये पड़ी।'

हम कतनो रोवनी-गवनी बाकिर ऊ ना पिघलले अउर बार-बार कहस, 'तुहार कलम में जब तक रोशनाई रही तोहरा के काराकाट ना रहे देब।'

हम वापस आके, रिलीभ होके करगहर चल गइनी।

उहाँ पर सहायक निबन्धक के आदेशपाल रहीं। साहब करगहर आ दूसरा जगह के काम देखत रहीं। नोखा में डेरा राखत रहीं। एक बार कहनी, 'तू हमार आदेशपाल हवऽ त हमरा साथे नोखा रह।'

हम उहाँ साथे नोखा रहे लगनी। एह बात के पी० ई० ओ० साहब के खबर बाजार गुजरल। उहाँ के रिलीभ कर देनी। हम नोखा चल अइनी। उहाँ जगह खाली रहे। उहें से वेतन मिले लागल। कवनो दिक्कत ना रहल। आरा साहब के मालूम भइल। हम छुट्टी में रहीं। एही बीच चिट्ठी मिलल कि हमरा छुट्टी बाद आरा योगदान करे के बा। हम छुट्टी बाद आरा जाके योगदान देनी। डेढ़ महीना तक तनखाह ना मिलल। हम साहब से जाके कहनीं तब हमार पोस्टिंग रामगढ़ कर देले।

एक दिन साहब रामगढ़ गइल रहीं। आस-पास के आफिसर लोग उहें रहे। पी० ई० ओ० साहब के डेरा के बाहर लान में कुर्सी लागल रही स। चाय होत रहे। हमहूँ उहाँ पर गइनी। मोका मिलित त आपन दुखदर्द साहब से बात ना रहे। हमरा के देख के साहब कहे लगले, 'ई खूनी ह। लुटेरा ह। डाकू ह। एकरा से बच के रहब।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by

पी. ई. ओ. के डेरा से चाय आइल। नौकर ट्रे में घर के चाय ले आवत रहे। आठ-दसगो कप रहन स। साहब के बात सुन के हमरा खउले लागल रहे। चाय देख के अउर गर्मा गइल। बढ़ के अइसन चाय कि चाय सहित कप आरा के साहब के चेहरा पर गिरल। सब केहू के के खड़ा हो गइल। हम उहाँ से हट गइनी।

आरा जाके उहाँ के आदेश भेज देनी। रामगढ़ से रिलीभ होके आरा जाके योगदान देनी।

आरा में डेढ़ माह रहनी, बाकिर वेतन ना मिलल। कहीं होइत तब नू मिलित।

बाद में हरा आदेश मिलल कि तोहार पदोन्नति कइल जात बा, प्रशिक्षण केन्द्र आरा में प्रयोगशाला सहायक के पद पर योगदान करऽ। उहाँ जाके योगदान कइनी।

उहाँ के एक आदमी कहल, 'तोरा के फँसावे के उपाय हो रहल सब सामान तोरा चार्ज में रही। तोरा कुछ बुझाई ना कि कवन चीज जवन चीज दिआई ओह पर दसखत करिए देवे। बाद में खोजाई तब ना मिली। फिर तोर नौकरी खा जइहें स।'

हमरा ओकर बात बुझाइल। लइकाई में सुनले रहीं।

गाँव से बहरी इनार पर कुछ लोग नहात रहे। इनार के रास्ता रहे। रास्ता के बगल में एगो पेड़ के ठूँठ रहे। रास्ता पर जात के ठुंठवा से ठेस लाग गइल। ऊ सराप देले, 'तू जड़ से उखड़ जा।'

समय बीतल। बरसात आइल। ठूँठ से कलंगी फूटे लगली। देखते-देखत ठूँठवा एगो नीमन हरियर-झखाड़ पेड़ हो गइल। लोग कहे 'साधु सराप देले रहन कि आशीर्वाद।"

हथिया नक्षत्र आइल। रातदिन बरखा होखे लागल। आँधी चले लागल ऊ पेडवा जड़ से उखड़ के फेंका गइल।

हमरा अपना पदोन्नति के राज समझ में आ गइल। हम पूछनी, "का करे के चाहीं?"

"तू चार्ज मत लिहे।"

हम चार्ज ना लेनी।

औरत के देखवनी त डाक्टर कहले, टी० बी० ह। तीन साल इलाज करावे पड़ी। हमरा घर में अउर केहू ना रहे। दूगो लइका रहन स। बाप रहन। हम छुट्टी पर चल गइनी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहां के एम० एल० ए० साहब से आरा के साहब से खूब पटत रहे। ...
...ला से कहनी। ऊ मदद करे खातिर तैयार हो गइलन। हम उनका के ...
...र से आरा ले गइनी। ऊ साहब के डेरा प गइले। लोग का का व त कइल ...
...ना जननी। उ आके कहले, "तोर काम हो जाई। तोर बदली विक्रम ...
...र हो जाई।"

हम इन्तजार करे लगनी। महीना दिन के भीतरे लिफाफा आइल। ...
...नी कि काम हो गइल। लपक के ले लेनी। खोल के देखला पर पैर के ...
...के धरती धसक गइल।

...के कागज एम० एल० ए० के आगा में फेंक देनी। "रउवा कहत ...
...काम हो जाई। का काम भइल? गरीब के बाल-बच्चन के अलम एगो ...
...ती रहे, उहो खतम हो गइल। लीं। रखीं। हम का करब? हमरा त ...
...ख रहे कि ई दिन सामने आई। ना आवत रहे तब तक ताजूब करत ...
...ही।"

"हमरा अफसोस बा कि तोहार नोकरी चल गइल, एह महंगी के जमाना ...
...खिर ओहू से ज्यादा अचरज होता उनकरा कथनी आ करनी पर सोच ...
...तू ई रखऽ। पटना दरखास्त द। हम उहां देखब।"

एम. एल. ए. कहले तब हम कागज उनका हाथ से ले लेनी। हमहूँ तय ...
...कनी दरखास्त देवे के आ हमरा अन्दर विश्वास पैदा हो गइल कि ई ...
...खुब के हमरा साथे अन्याय कइले बाड़न। उहां पर हमरा जरूर न्याय ...
...ली। आ इहो कि ई जरूर दोषी करार देल जइहें।

एम. एल. ए. से सुना के कहनी, "रउवा हाकिम हईं। उहो हवन। ...
...ला टोपिए वाला के मदद करेला, ई झूठ ना ह। रउवा जानत बानी, ...
...ना केहू जाने चाहे मत कि हमरा साथे अन्याय कइले बाड़न। हम पटना ...
...पेज रहल बानी। एक ना एक दिन सच्चाई सामने आई आ झूठ के ...
...लाश होई। उनकर गर्दन पकड़ाई। अब हमार साथ छोड़ीं। उनकरे ...
...स करीं। राउर दोस्त हवन। पटना जालन तब रउवे डेरा पर ...
...लन।"

उनकरा पास से आके पटना अर्जी भेज देनी। इहो लिख देले रहीं कि ...
...हो सके त सी. आई. डी. से जांच करा लीं।"

"ठीक बा। अगर अतने बात बा तब कुछ नइखे बिगड़ल। तू पन्द्रह ...
...के बाद पटना सचिवालय में आवऽ। हम चार्ज लेला के बाद पहिला ...
...काम देखब।"

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by

हम नया सचिवालय में कृषि निदेशक (प्रशासन) के चैम्बर में रहीं। साहब भीतर बोलवले आ कहले, "आरा फोन कर देले बानी। निदेशक आ प्रसार प्रशिक्षण के प्रिंसिपल दूनो लोग आवत बा। तब लोग। आई तब हम बोलवाइब। तब तक स्टेनो के कमरा में बइठ।"

हम स्टेनो के कमरा में जाके बइठ रहनी।

जब दूनो लोग आ गइल तब साहब दूनो लोग के बइठे के पहिले देलन, "आरा में प्रयोगशाला सहायक के नौकरी खतम कइले बानी। बात बा?"

"हम नइखीं कइले, प्रिंसिपल साहब बहब।" उपनिदेशक कहले।

"ऊ दरखास्त देले बा। निदेशक से हमरा पास आइल बा। जाये के समय नइखे। इहँवें कहीं। का बात भइल रहे?"

"ऊ बहुत बदमाश आदमी रहे। एक रोज साहब" उप निदेशक तरफ देख के, "कहनी कि ओकरा के पत्र दे द कि फलाना तारीख से नौकरी के आवश्यकता नइखे। हम ओकरा के खबर कर देले रहीं।"

"चार्ज का रहे, से ना कहीं?"

दूनो लोग एक-दोसरा के मुंह देखे लागल। उप निदेशक कहले, "चार्ज रहे। हजूर से सब का कहल जाय!"

साहब बगल में से उठा के फाइल ओह लोगन के सामने में पटक "ईहे नू फाइल ह। ना चार्ज, ना वार्निंग, ना सेंसर; एके बे डिस्चार्ज! डी० एम० के साथ रहल बा। एस० डी० ओ० के साथ रहल बा। ना कहल ओकरा के। लोग कहीं कि अपना सेवा काल में बतना चपरासी ना देखनी। हमरो साथ ऊ रहल बा। आजतक नीक काम आज ऊ दोषी हो गइल?"

घंटी बाजल। चपरासी आइल। हम जाके खड़ा हो गइनी।

साहब कहले, "का रे हरामी! तू जिंदगी भर हरामिए रह सामने तोर साहब लोग बा। अफिसर बाप दाखिल होला बा तुम ना कइले।"

"ई अफिसर ना, राक्षस ह लोग। हमार नौकरी ले लेलन बा। रोजी-रोटी छिन लेलन जा। हमरा बाल-बच्चन के मुंह में जाब लगा जा। हमार औरत दबा बिना मरत रहल आ एह लोग के दया ना अइसने बाप होला। ई लोग बाप ना; कसाई ह। हमार बस चले त सर के सर काट लीं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaiga

CC-Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"तोरो कुछ कहे के बा ?"

"हमका कहीं सरकार ? हम निर्दोष बानी। हमार नौकरी बरकरार रहे के चाहीं। हमरा पर कवनो चार्ज होखे तब बतलावल जाय; हम ओकर जवाब देब। बाह रे बरियारी ? हम कलक्टरी के स्टाफ ठहरनी। हमरा के एस-डी. ओ. बहाल कइले रहन। नौकरी इहाँ सभे खतम कर देनी। हमरा चलती रहे तब इहाँ के हमरा के वापस भेज दिती एस० डी० ओ० के पास। हमरा सामन केवल एक चीज के पूछ होला, ओकरे के देवे-दिलावे से नीक, ना त बाहर। ओकर नाँव ह रुपया। जे रुपया चीन्हे लागल ऊ आदमी बा चीन्ही।

हमार नौकरी लेवे के पावर इहाँ के नइखे। इहाँ सभे हद से बाहर चल गइल बानी। डाक्टर लिखले बाड़न कि टी. बी. ह। तीन साल इलाज करावे पड़ी। पूरा सेवा करे पड़ी। छूआ छूत बरावे पड़ी। हमरा घर में एक बूढ़ मार बा दूगो छोट लइकन के छोड़ के दोसर आदमी नइखे। अगर बात झूठ साबित होखे तब हम कसुरबार ठहरावल जा सकीला।

साहब इशारा कइले तब हम बाहर चल अइनी। ऊ ओह लोग से कहले, "अइसन ओकरा साथे भइल बा, न्याय त कहत बा कि तूहूँ लोग के तरह ओइसहीं पेंश आइल जाय बाकिर तोहरा लोगन के परिवार के सोच के हम सब नइखी कइल चाहत।" फाइल में से डिसचार्ज लेटर निकाल के, "केकर दस्तखत ह ?"

"हमार ?" प्रिंसिपल कहले।

"तोहरा के त चाहीं त आज अबे सस्पेंड करा दीं। ना टाइपिस्ट के लिखल, ना प्रधान सहायक के साइन; एगो ईसू नम्बर बइठा के दे देलऽ। ओकर के बात त बड़ले बा। कृषि विभाग में रहला से दिमागो में भूसा भर गइल बा। ई सोझ बात ना समझ में आइल कि ऊ कलकटरी के स्टाफ ह।"

प्रिंसिपल, साहब के पैर धर लेलन। "सरकार ! एक दफा मौका दीं। हम माफ कर दीं। फिर अइसन गलती ना होई। हम इहाँ के कहला में, हम कुछ, इहां पर विश्वास कर के कर देले रहीं। हम आजे जाके सब ठीक कर देब।"

"गलती त बहुत संगीन भइल बा। ई सब ना होखे के चाहीं। बाकिर हा, जब कहत बाड़ऽ कि सब ठीक कर देब तब कवनो बात नइखे। जा, फिर बाद में देखल जाई। अगर रेगुलर करे में कवनो कानूनी दिक्कत होखे तब ओह समय के ओकर वेतन अपना पास से दे दिहऽ बाकिर ओकरा कवनो तरह के दिक्कत ना होखे के चाहीं।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

ऊ लोग चल गइल तब फिर उहां गइनी। साहब कहनी, "
जो। आज पटने में रह। काल्ह आरा जइहे। तोर नौकरी मिल
सलाम कर के, डेरा के पता लेके हम साहब के डेरा पर चल
साहब डेरा पर अइले तब कहले, "लोग के ठीक जवाब
आज काल्ह ढेर काम एही से बिगड़त बा कि गलत के सही कह
बा। सब केहू गलत के गलत कहे लागे तब त केहू गलतिए ना करे।
बात बा कि लाख गलती करऽ आ चान-सूरज अस चमकत चेहरा
समाज में घूमत रहऽ। पहिले ई बात ना रहे। लोग कहेला कि ई
के देन ह। अगर ई सभ्यता ह तब एह सभ्यता से असभ्यते नीमन।"

चाय पियत खा साहब कहे लगले, "नौकरिये में ना गांवों में
गलत करे में डरत रहे कि लोग का कही? बाहर-भीतर फुसफास
तब आदमी बेपानी हो जाय। बाद में कहला-सुनला पर असर
देख, अँग्रेज रहन स। ऊ जानत रहन स कि हमनी के कतना पानी
जा। ना जानत रहन स, से ना कहल जा सके। बाकिर धरना-सत्याग्रह
असर पड़त रहे? अब त जगह-जगह सत्याग्रह हो रहल बा, लोग
अनशन कर रहल बा, बाकिर एकरा पर असर होत बा? आदमी
मोट हो गइल बा।

हमरा विश्वास इहे कि तोर नौकरी लाग जाई बाकिर
से हो जाई, हमहूँ ना सोचले रहीं। लोग एके डांट में सीधा हो
चल जइहे। जाके देख, का होखत बा?"

"केकरा पास जाइब?"

"उप निदेशक के पास।"

"ऊ अर्जी ना लिहें तब का करब?"

"जाके लिख के दिहे। इएस भा नो कुछ त लिखबे करिहें।
होई आके फिर हमरा से कहिहे।"

दोसरा दिन हम साहबे से दस रुपया लेके आरा गइनी। उप
अपना डेरा में रहन। हम उहें चल गइनी। उनका आगा में आपन
देनी। ऊ पढ़ले कि ना, ना कह सकीं। बिगड़ गइले, "तोहरा
जाये के के कह देले रहे? तू हमरा पास काहे ना आइल रहऽ? का
आ गइल बा? लोग ऊपरे से बात करत बा।"

"हम पटना ना जाइल चाहत रहीं। रउवे मजबूर कइनी
जाये पड़ल। हम त एकरा पहिलहूँ कइएक बार रउआ से मिलल रहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिलल रहे? पटना जाये में कुछ लागेला। ऊ हमरा पास ना रहे। हमरा कर्जा लेबे पड़ल रहे। जानत बानी? विश्वास करब? आजो दस रुपया साहब से मंगनी हीं तब लौट के इहां अइनीं हीं। बाकिर छोड़ीं ई सब बात। हमार अर्जी रउआ सामने बिया। एउवा हाथ में कलम बिया। कलम में सियाही जरूर होई। होखे तब इएस भा नो लिख दीं। फालतू बात कइल बेकार बा।

उप निदेशक प्रिंसिपल के बोलववले। उनकरा के हमार कागज देत रहले, "ए भाई! ले जा। ई हाथी के कान्ह पर बाड़न। देखब कि ई छत्तर-बाबा इनकरा के कब तक बचाई।"

"हाथी के भरोसा हम ना करीं। हम त इहो ना जानी कि सांझ खा का होई। रउआ ना रहब कि हम, ई केहू नइखे जानत। इहां से तुरन्ते बाहर जाके का होई; हम इहो नइखीं जानत। बाकिर रउआ जानत बानी कि कयामत तक एही कुर्सिया पर रहब आ लोग के खून चूसत रहब। पिहीं।" एहूं सुना देनी। डरे के का रहे? ओखर में सिर देके चोट ना गिने के बा। अब तक अकेले रहीं। हार ना मनले रहीं त, अब का सोचे के रहे अब कि साहब मिल गइल रहीं।

बाहर आके प्रिंसिपल बहे लगले, "देखऽ हमार कुछ दोष नइखे। उनकरा कहे से कर देले रहीं। हम त देखत रहीं कि ऊ शैतान तोहरा के तंग कर रहल बा। बाकिर हम ना कइसे कर दितीं। ऊ हमरो के तंग करे लागित। करित कि ना? तूहीं कहऽ।"

"छोड़ीं, ऊ सब बात। बीत गइल से बीत गइल। आगे का होई?"

"होखे के का बा? बड़ा बाबू के रातहीं कह देले रहीं। आवत होइहें। आवेद। हम बानी नू। सब ठीक हो जाई।"

देर देर ना रहे पड़ल। बड़ा बाबू आ गइले।

"बड़ा बाबू इनकरा के ले जाईं। इनकर सब कागज-पतर ठीक कर के ले आईं। इनकर नौकरी रेगुलर कर दीं। इनका तीन दिन में वेतन मिल जाही।"

बहरी आके बड़ा बाबू कहले, "हई धरऽ।

"काहे खातिर?"

"चार्ज ना लेबऽ?"

"ना, अबहीं चार्ज ना लेब।"

फिर साहब ले पास बड़ा बाबू के साथ गइनी। ऊ कहले, "ऊ चार्ज लेबे खातिर तैयार नइखे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

"छोड़ दीं। उनकरा जब मन आई चार्ज लिहैं। बाईं इनकर के निकाले के काम करीं। ईं चपरासी ना आफत हवन।'

"ना साहब, हम आदमी हईं। आ आदमी अस रहल चाहीला, आदमीयत के साथ। आफत त ऊ कहाले जे केहू के आगा में बवंडर आलम लेके आवेले। कहीं त, हम केकर का बिगड़ले बानी? हमार कहे बा कि हम आदमी अस रहल चहनी।

रउआ सभे के हजार-बारह सौ के नौकरी बा। घर पर बाप-दादा जगह-जमीन बा। तबो एगो शैतान के सामने झुक गइनी। हमरा पास रहे? बाप-दादा के जमीन-जायदाद ना वेतन आ घूस के जमा कइल पइसा ना कवनो व्यापार। बाकिर हमरा भीतर पक्का विश्वास रहे कि अन्याय के दीवार के नींव पोखता ना होखे। खोखंड होके ओकरा ढहत देर ना लागी। शोषण के बल अन्हार जब तक रहेले तबे तक रहेला। रौशनी के एगो किरन ओकर छाती चाक कर देले। भ्रम आ मिथ्या जवन फइलवले रहेले ऊहवा ई जाला। फिर त ओकरा छिपहूँ के जगह ना मिले।"

दिन भर उहाँ रहनी आ साँझ खा पटना चल गइनी। साहब के डेरा पर ठहरनी। अब रोज के इहे हाल हो गइल। दिन भर आरा आ रात के पटना साहब के डेरा पर। ठीक तीसरा दिने हमार वेतन मिल गइल।

उहें चपरासी के पद पर तीन चार महिना काम कइनी। बाकिर पटना कवनो दूर त बा ना। बराबर पटना चल जात रहीं। साहब से कहत रहीं, "हमार बदली बिक्रमगंज करवा दीं।" साहब कुछ ना कह के, मुस्का के रह जात रहीं।

आरा के उप निदेशक के बदली हो गइल। दोसर आदमी आइल। अबहीं उहाँ के डेरा पटने में रहे। एक दिन साहब उहाँ के बोला के हमरा बारे में कहनी। उहाँ के वादा कइनी, "हम आरा जाके पहिला इहे करब।"

उहाँ के लौट के आरा अइनी। फाइल मंगवा के हमार बदली बिक्रमगंज करे के आदेश कर देनी। टाइप करे वाला बदमासी कइलस, बिक्रमगंज के बदला सासाराम कर देलस।

हमरा कागज मिलल। पटना ले जाके साहब के देखवनी। साहब देख के कहले, "हम बिक्रमगंज खातिर कहले रहीं। सासाराम कइसे भइल?"

"जी उहाँ के फाइल पर आदेश कइले रहीं बाकिर अब नाटल बा।"

"ठीक बा। आवे द तब पूछब।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हम विक्रमगंज अइनी तब मालूम भइल कि काराकाट में एगो चपरासी बा। ऊ सासाराम गइल चाहत बा हम पता कइनी। बात ठीक निकलल। एक आदमी से ऊ कहले रहे। कहलहीं भर ना रहे, लिख के देलहूँ रहे। ऊ रुपइया हम आरा लेके चल गइनी। आरा में कुहराम मचल रहे। उप निदेशक पटना गइल रहन। साहब से बात मालूम भइल रहे। लौट के आरा चल आइल रहन। फाइल देख ले ले रहन। टाइपिस्ट के सस्पेंड करे वाल रहन।

बाँझ का जाने परसवती के पीरा। हम आफिस में गइनी। टाइपिस्ट हमहूँ ताके लगले। कुछ कहल चाहत रहन। बाकिर कह ना पावत रहन। उप डिसचार्ज, सस्पेंशन के पीरा भुगत चुकल रहीं। हम ना चाहत रहीं कि दूसरक केहू के उठावे पड़े।

उप निदेशक के मालूम भइल कि हम आइल बानी तब हमरा के बोलवलन। हम जाके सलाम कइनी आ काराकाट के चपरासी वाला रुपइया पेश करत कहनी, "सरकार! ओकरा के सासाराम कर दीं। हम काराकाट चल जाइब। हमरा खातिर कवनो अन्तर ना होई। दूनो आफिस विक्रमगंज में बा।

उपनिदेशक के बात पसंद आ गइल। हमरा आदेश मिल गइल आ काराकार चल अइनी। तब से इहें बानी।

पहिले त हमरो समझ में ना आवत रहे कि उप निदेशक हमरा से काहे नाराज बाड़न। बाद में मालूम भइल रहे कि ओही आफिस के मिश्रा जी लगा-वा देले रहन। एगो मुसलमान चपरासी के टरका देवे खातिर। बाकिर बाद में उपनिदेशक झूठ-मूठ के प्रेस्टिज इशु बना लेले रहन।

हम त अइसन दलदल में फँस गइल रहीं कि हमार कवनो अकिल ले काम ना करत रहे। जइसे नया-नया दलदल में फँसल आदमी हाथ-गोड़ पीटेला दलदल से निकले खातिर, बाकिर जब ऊ देखेला कि ऊ जतने जोर मारत बा ओतने भीतर धँसल जात बा तब ऊ हाथ छितरा के पटे पड़ जाला। हमहूँ हाथ-गोड़ मार के पटा गइल रहीं। ऊ त कहीं कि ओह दिन ना जाने कवना भाग से साहब भेंटा जइनी। हमरा के अन्दर से बाहर कइनी ना त हम त बाँझहूँ के निराश हो गइल रहीं चारो तरफ होत झूठ, अत्याचार आ मनमानी देख के। एक से एक बड़ पद पर के लोगन के देखत रहीं रात-दिन खुशामद करत, तरवा सहलावत, रुपया-पइसा के के कहो बेटी-बहिन तक के साहब के सामने परोसत। देश नया-नया आजाद भइल रहे। राजा-महाराजा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding

आ जर-जमींदार खतम हो गइल रहन। केहू केहू के रोके-टोके वाला ना गइल रहे। आपन राज रहे। सभे जल्द से जल्द लखपति हो गइल चाहत रहे। चारो तरफ एगो अजबे आपा-धापी रहे। केकरा से हम का कहे सुनित आ के हमार सुनित ?

का सोचे लगनी ? हम प्रयोगशाला सहायक रहीं, चपरासी कइसे हो गइनी ?

एक दिन मालूम भइल कि प्रयोगशाला सहायक के पद कांके में खाली बा। हमार बदली उहें होखे जा रहल बा। घर से अतना दूर ना जाइ सोच के हम नोकरी छोड़ के सोचत रहीं। बड़ा बाबू से आपन अर्जी लिखे के कहनी। उहां के अपना डेरा पर ले गइनी आ समझवनी, "तू नोकरी छोड़ऽ भले कलक्टर के दरखास्त दे द कि हमरा पदोन्नति ना चाहीं। अगर ऐसे चाहीं त हमरा के निम्नवर्गीय लिपिक बना दीं।"

फिर का पूछे के रहे ? हमरा ई बात पसंद आ गइल आ दोसरे दिन आपन अर्जी ले जाके कलक्टर के आगा में रख देनी।

कलक्टर पढ़ के चिहा गइली। ऊ औरत रही। पूछली, "काहे? का बात बा ?"

हम कहनी "सरकार ! ओहदा पर रहब तब हमार बदली बिहार के कतो दूर हो जाई। हम गरीब आदमी अपना बाल-बच्चा के छोड़ के ना जा सकीं। साथे ले गइला पर खर्चा ना आंटी। जाके दोगदान ना करत नोकरी छिना जाई।"

"मांगल गइल रहे तब काहे दरखास्त देले रहऽ ?"

"मालूम भइल रहे कि तरक्की होई। चपरासी के महीने पइसा मिलेला ? ओह से एह महंगी में काम नइखे चलत। सोचनी, कुछ पइसा बढ़ जाई तब राहत मिली।"

अउर बड़ी प्रेम से आ ढेर बात पूछली। सब अफसर ओइसने हो जइतन तब फिर का पूछे कहे के रहे ? उनकर दया-माया से भरल बात सुन के हमरा ढेर उमेद हो गइल। बुझाइल कि अब त किरानी होइये जाइब। एह में कवनो संका नइखे। अफसर लोग एक-दोसरा के विभाग के शिकायत करत रहेला। अपना विभाग के प्रशंसा सुन के लोग खुश होला। उहे सोच के हम कहनी, "ओह दिन इंटरभियु में कलक्टरी के केहू ना रहे। खाली कृषिए विभाग के लोग रहन। अपना विभाग के सब लोग के तरक्की दे देले रहे लोग। कलक्टरी के दुइए आदमी के तरक्की मिलल रहे। कहल जाय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...र्च के ल। रउवे कहीं कि हम का चीन्हत बानी ? लेलीं। बाद में कुछ
...जाय तब हमार नौकरी रही कि जाई ? चलिए जाई। घटी पुराने
...में पड़ी। एह से पहिलहीं लिख के दे रहल बानी।"
...ठीक-नइखऽ करत। अउर सोच ल। एक माह के समय देत बानी।"
...ठ आडर कर देली।
...हम चार दिन के बाद फिर उहे लिख के पेश कर देनी।

—।—। —।— —।—

...हमार नोकरी ? ओहूमें कुछ ना करे पड़ल रहे। घर से भागल रहीं।
...कचहरी पर घुमत रहीं। ए० डी० एम० के चपरासी एगो खान रहन।
...ता के देख के पूछले, "का घुमत बाड़ऽ ?"
...हमरा नोकरी चाहीं।"
...करब ?"
...करब काहे ना ?"
...का करबऽ ?
...खवने काम मिली। । हम कुछुवो करब।"
...कब से ?"
...मिले त आजे से।"
...ठ अपना साथे डेरा पर ले गइले। पूछले तब बता देनी।
...मैट्रिक में दस नम्बर से फेल हो गइल रहीं। मतारी मयभा रहे।
...ता होत रहे एही से भाग गइल रहीं। घर से आसनसोल, उहाँ से
...ता, फिर पटना से आरा।"
...चर्चा ?"
...चर्चा ना जे का रहो। एक भेली गुड़ लेले रहीं। घरही से। खाये
...ना रहे। पियास लागे तब एक काटा काट के पानी पी लेत रहीं।"
...आसनसोल में केहू रहे का ?"
...आसनसोल, कलकत्ता भा आरा पटना में केहू जानल ना रहे। हम
...पहिले शहर में ना गइल रहीं। गाड़िए से गइनी आ गाड़िए से चल
...। उहो बिना टिकट के। यात्रा ठीक रहे। धरइनी ना कतहूँ। सोच
...रहीं धराहीं खातिर। सोचले रहीं कि धरा जाइब तब गलत नाव-
...लिखा के जेल जाइब।
...हमरा गांवे एगो गफूर मियाँ बाड़न। उनका स्वतंत्रता सेनानी के
...मिलेला। समाजवादी पार्टी में बाड़न। जेल जात आइत रहेलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

उहे कहिहें। ऊ लोग जेल में कबनो काम ना करे। देश में राज रहे। थोड़हीं दिन पहिले देश आजाद भइल रहे। बराबर कांग्रेस के खिलाफत करत रहन आ जेल जात रहन। आजादी के पहिलहूँ जेल गइल रहन।

ऊ एक दिन कहत रहन। "अब जेल गइला पर लोग राजनैतिक मानल जाला। बे टिकट धराइल लइकन के लोग के साथ रख देल ऊ सब काम करेलन स। हमनी के खाना-नास्ता मनमाना मिलेला। के काम ओही से चल जाला। हम सोचले रहीं कि कुछ दिन उहाँ बाद में देखल जाई।

ठीके कहत बानी। ओह घरी एकरा से ज्यादा ना सोचले रहीं। के बुद्धियो ना रहे। लइका के बुद्धिये कतना होला।

चार-पांच रोज हम उहें रहनी। फिर ऊ हमरा के ए० डी० एम० डेरा पर पहुँचा देलन। हम उहें रहे लगनी। उनका डेरा के सब काम

बाद में ए० डी० एम० के बदली होखे लागल तब ऊ हमरा के एस० डी० ओ० के हवाले कर देलन। उहें पर साहब के डेरा पर रहत बाद में उहाँ के हमार बहाली तहसील पिऊन के पद पर कर देनी। में जगह खाली रहे। उहें भेज देल गइनी।

चार महीना रहनी। फिर एक दिन एस० डी० ओ० साहब के गइनी। मेम साहब प्रेम से हाल-समाचार पूछे लगनी। माया हम रोवे लगनी। इहो कहनी, "हमरा उहाँ पर दिक्कत बा। इहवें रहब।"

"रहऽ। इहँवे रहऽ। कतो मत जा।" बाद में ऊ एस. डी. ओ. से कहली। एस डी. ओ. रोहतास चिट्ठी भेज देले। हम इहँवें रहे लगनी।

एस. डी. ओ. के बदली होखे लागल तब ऊ हमार बदली नोखा में कर देलन। उहाँ पर ठीक से रहनी। ओकरे बाद काराकाट भइल।

घर पर खबर हम ना कइले रहीं। दोसरो केहू ना कइले रहे। सासाराम रहत रहीं तबे के बात ह। एक दिन गांव के एक बादमी गइल रहे। उहे जाके घरे कह देले रहे। बाद में हमार बाबूजी आइल आ हम घरे गइल रहीं।

शादी? ऊ त पहिलहीं हो गइल रहे। औरत ससुरारे में रहे। घरे ना आइल रहे। बेचारी रातदिन रोवत रहत रहे। ओही घरी रोवत एक आंख खराब कर लेले रहे।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अतना कहत कहत ओकर आँख डबडबा गइल। ऊ रोवे-रोवे हो
। बंडी से रूमाल निकाल के आँख पोंछे लागल। वातावरण बोझिल
। बुझात ना रहे कि का कइल जाय। एगो दोसरा चपरासी के
कहली, "का हो ! चाय ना पियल जाई ? तनी कह; दू-तीन कप चाय
।"

नु रहऽ। काम करऽ। हमहीं कह देत बानी।" कहत ऊ बहरी चल
। हम ओकरा के जात देखत रह गइनी। रोकनी ना, बाहर हवा में मन
होवहिए; सोच के।

☐ नोनार, बाया पीरू, भोजपुर, बिहार

हाइकु

—विष्णु कमल डेका

नारा धरना	हवाला हवा
राजनीति के रोटी	घोंट ल भरपेट
नेता के रोजी	नेता नू हवऽ
☐	☐
सत्त के चस्का	धन रे धन
कबो कम ना होला	चाहत ना घटे
भले बुढ़ापा	मुअला तक

☐ नाहरकटिया, डिब्रूगढ़, असम

समीक्षा

संड संवेदना के कहानी संग्रह 'हम दहेज ना लेब'

—बरमेश्वर सिंह

[पुस्तक—'हम दहेज ना लेब'। विधा—कहानी संग्रह। कहानी-
—डॉ० शालिग्राम शुक्ल 'नीर'। प्रकाशक—भोजपुरी संस्थान
पुरी, पटना-८०००२४। संस्करण-पहिला, १९९६ ई०। दाम-
सिर रुपया। पृष्ठ-५६]

भोजपुरी आ हिन्दी के सुपरिचित साहित्यकार डॉ० शालिग्राम शुक्ल
के सद्यः प्रकाशित भोजपुरी कहानी संग्रह 'हम दहेज ना लेब'-नारी-
आन्दोलन में भोजपुरी के रचनात्मक योगदान के रूप में सामने आइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

बिया। एह संग्रह में कुल एगारह गो कहानी संग्रहीत बाड़ी स। कुल्हि
पाठक का सामने आपन छोट-छोट कलेवर में बड़-बड़ बात ले के आ
बाड़ी स। निस्संदेह इन्हनी के विषय-वस्तु नारी-समस्या पर आधारित
बाकिर ई कुल्हि, ना खाली नारी के शोषण, उत्पीड़न, अधि
अबलापन जइसन समस्यन के उजागर करत बाड़ी स, बल्कि नारी के
के रक्षा खातिर नारी के आक्रोश, आ विद्रोह के महातमों के प्रतिपादि
में इन्हनी के समान रूप से समर्थ हो रहल बाड़ी स। एकरा अलावे,
दहेज ना लेब' के कहानियन में नारी के त्याग, बलिदान आ ओर
के खूब आदर दिहल गइल बा। एह से ई कहल अधिका ना होखी कि
दहेज ना लेब' के कहानियन के यथार्थ आदर्शोन्मुखी बा। अइसे, ई दोस
बा कि उन्हनी के फलक समाज के खाली मध्यमे वर्ग तकले सीमित
समाज के निम्न वर्ग भा उच्च वर्ग एह कहानियन से गायब बा, जब कि
समस्या कउनो वर्ग विशेष के समस्या नइखे।

'हम दहेज ना लेब' के कहानियन के भाषा सरल आ सहज बा। इ
के शिल्प लोककथात्मक बा, जउना में छोट-छोट बिम्ब, दृश्य बा जि
उकेरे खातिर आंचलिकता के सहारा लिहल गइल बा। हालांकि कुल
कुल्हि कहानी सोद्देश्य लिखल गइल बाड़ी स, बाकिर इन्हनी के कहानी
आपन खण्ड-खण्ड संवेदना के घनीभूत संवेदना में ढालत खानी, कुछ कमजो
पड़ि गइल बाड़ें, जउना का चलते तथ्य आ कथ्य के संगठित रूप कमजो
प्रभावशाली नइखे बनि पड़ल, जतना कि होखे के चाहत रहे? एक
अउरी! एह कुल्हि कहानियन से गुजरत खानी ई बात साफ झलकि बा
बा कि इन्हनी के रचना मांग आ पूर्ति के ख्याल राखि के कइल गइल
तबे नू कहानियन के पात्र कबो-कबो हड़बड़िये में समझौता करि लेत
खैर, ई कुल्हि होखला के बादो 'हम दहेज ना लेब' के कुल्हि कहानी
खाली अपना के पाठक से पढ़वा लेवे के दम-खम राखत बाड़ी स, बल्कि
के अपना पक्ष भा विपक्ष में बोले खातिर पाठक के बरबस मजबूर
बाड़ी स। आ ई बात कउनो कहानी खातिर छोट बात ना होखे। इ
इहे बात 'हम दहेज ना लेब' के कहानियन के जीवंतता बा। आशा बा,
शालिग्राम शुक्ल 'नीर' के ई जीवंतता भविष्य में अउरि निखार
सामने आई।

□ ग्राम पो० धनडीहा, जिला-भोजपुर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धारावाहिक उपन्यास (किस्त - ७)

अमंगलहारी

— डॉ० विवेकी राय

सप्तम अध्याय

एक दिन सबेरे-सबेरे बिक्रम सायकिल कसि के जगदीश का खोज में घर से निकले के तेयार रहलन आ प्रशान्त का महतारी के समुझावत रहलन कि ई खोजले-पूछले ऊ कइसे आ जइहन तबले पार्वती जी चोंहपि गइली। बिक्रम के देखते प्रशान्त के महतरी अगरा गइलीं आ बोले सुरू कइली—

'ऐईं, बहिन जी रउआँ आई गइलीं त इनकरा के अब रउएँ समुझाईं। रउआँ झूठे कहले बानी कि ऊ अपनहीं डगरल अइहें? .....बिरथा घबराइ देक रिसि बानी। से राउर कहनाम बरमरेख बा! जरूर ऊ अपनहीं डगरल-टगरल चलि अइहें।.....काहाँ-काहाँ जाके इहाँ का खोजि के पतान होइब?..... एगो घर के दुलरुआ रहलन से नेता हो गइलन दुसरका सवांग इहाँ का मेजर साहेब के खोजे निकलल बानी! बेटी त नहीं बदान बा बाकी मित्र के पोती बिअहे लायक भइलि बा ओकरा बर-घर के खोजे निकले के केहू का सुरता नइखे!.....आरे, मेजर साहेब का रेल-बेल हवन कि भुलाइल बाड़न, खोजि ले आइल जाव?..... भला ताई बहिन जी?'

'अच्छा, बहुत बकबक इलू। अब बस कर। नेता के महतारी न हऊ!' पार्वती जी कहली आ बिक्रम का ओर घूमि के बोलली —

'ओह दिन काली भइया का धर्मसाला पर जिन्न का दास्तान में लेफ्टिनेन्ट अब्दुल रजाक वाला मजेदार तमासा रउआँ सुनवलीं त ऊ ओह में सन फारसी में कुछ बोलल ओकर का अर्थ रहे? ..... एहर से जात रहलीं ई त मन में आइल ह पूछले चलीं। लमहर तीर्थ-यात्रा पर जाये के पहिले ई एगो काम हमरा कपार पर बा। मेजर साहेब के बझावे के बा।

'अच्छा, त घरी भर खातिर बइठि जाईं।' कहत-कहत में बिक्रम एक मोढ़ा भीतर से उठा ले अइले। उनकरा के ई मालूम रहे कि पार्वती गाँव का चलन का मोताबिक मरदाना बइठकी में खटिया पर ना बइठेली। ऊ मोढ़ा पर बइठि गइली त अपना चारपाई पर बइठि के बिक्रम कहले—

'ओह फारसी वाली बात के मतलब ई रहे कि सन् १९४७ में रामराधिनी भारत माता के प० जवाहर लाल नेहरू दिल्ली ले गइलन। सन् १९६२ में ऊ उहाँ से भागि के गाँव में आ गइली। सन् १९६५ में लाल बहादुर शास्त्री का कहला-सुनला से ऊ फेरु दिल्ली गइली। बाकी ताशकन्द

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha. Courtesy: Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

में जब शास्त्री जी मर गइलन त ऊ फेरु उहाँ से भाग गइली। बा
हो गइली, हम ओही भारत माता का खोज में निकलल बानी !'

'ई त गजब के बाति बा ! अइसन त आजकल केहू नइखे सोचत
के साधे खातिर ऊ मेजर का कपारे पर चढ़ल बा त ऊ भूत नाहीं देखता
बाकी बहुत दुर्गति बा मेजर बाबू के ! नाटक में फँसा के उनका के
जाव। काली जी का छोह से चंगा हो जइहें।'

'ई नाटक सरकार का पास कइसे सही साबुत खेले लायक ह लत में
गइल ? मेजर साहेब का पास लिखल-लिखावल रहे बाकी ओकर
पता नइखे। हमन का बीचे त बस ओकर चरचे भर ले रहि गइलि बा!

'ई भेद ओही दीने बताइबि।'

'अच्छा अब ई त बता दीं कि कइसे रउआँ ई विश्वास बा कि ऊ
देखे आ जइहें आ दूसर बाति ई कि एह नाटक का खेलला का बारे में
उनकरा के पता चली ? पता ना कहाँ होइहें ! फेरु फँसिहें कइसे ?

'कुछ काम भगवानो जी पर छोड़े के चाहीं।' कहि के पार्वती
गइली। विक्रम के दुलहिन चाय पीये खातिर रोकते रहि गइली,
अड़कली। जात-जात में हाथ जोरि के ठाढ़ विक्रम मास्टर साहेब से
गइली, जेकरा घरे कुँआरि आ बिअहे जोग कन्या होले ऊ सूतल ना रहे
पार्वती के आखिरी कहनाम विक्रम के भीतर से झकझोरि दीहलसि
अपना शिष्य मित्र जगदीश का छोट भाई तुलसी का छोटका बेटा दिपि
के तीनों लइकनी रागिनी, शालिनी आ दामिनी जइसे सोझा ठाढ़ हो
स ! बटवारा, रगरा-झगरा, कुल खान्दान के गड़ल खजाना यानी
गो मोहरि के चक्कर, खून, बमबाजी, रिटायरमेन्ट, मुकदमाबाजी,
वगैरह के आफति आ कुल्हि का ऊपर मेजर साहेब के बेरामी
में एकर सुरते बिसर गइल रहल ह ! केतना बढ़िया ढंग से मेहराइ
धरा दीहलसि ह !

मित्र के पोती !' केतना ऊँच विचार बा ! धन्य हो धर्म पत्नी देवी!
तोह के मालूम बा कि अब ओहू परिवार के भार-बोझा अपने कपार पर बा!
अब जइसे तोहार बिक्रमे ओहू लइकनिन के दादा-बाबा बाड़न ! बाबा-दादा तुलसी अबहीं लें जीअत जरूर बाड़न बाकी ऊहे हालत बा जइसे तुलसी दास लिखलनि कि 'जीअत सब सम चउदह प्रानी !' से, ऊ चउदह प्रानी का गिनती में आ गइल बाड़न, सोरह आना नाकाम।

सचहूँ, मेजर जगदीश के बड़ भाई अब न मुअले में बाड़न आ न जीअले में। जिनिगी में जवन कुछ रहि गइल बा कुल्हि पछतावे-पछतावा बा!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public.Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाप परतच्छ हो के लउके लागल बाड़न स। बस, खटिया पए
बाड़न। खटिया कटाइलि बा। दइब के कागद के रात-दिन जोहाहटि
अर-अर लोर बहत रहत बा। सब्द बस एगही जबान पर चढ़ल बा,
कइल करावल ह, करम-भोग ह, दीनानाथ हो !' अइसना में ऊ अब
खाकिर का करिहन ? कइला का नाँव पर बस एगही बहुत नीमन
गिरला ले पहिले कइलन कि जवन गलती सें, भरम में पड़ि के, ऊ
का मतिहरनी बुद्धि में परि के बटवारा के देवाल ठाढ़ कइले रहलन
के ढाहि दीहलनि ।

तुलसी के दुलहिनों अब कूदि-फानि के ठंढा गइलि बा। ऊ चंट-चढ़बाँक,
कराली आ तुलसी बाबा के गनावल आठो अवगुनन से भरल-पूरल,
परिवार में आग लगा के तहस-नहस करे वाली, बीच आँगन में बटवारा
ठाढ़ करावे वाली अब बुढ़ौती में का करसु ? झख मारि के जरत-
पति का अइसन 'सेवा' में जुटलि रहेली कि ई मंत्र छनो भर ना
पपिऊ के दइवो भुला गइल बाड़न !' अब परिवार का अइसना
दादी पर कवन आसरा बान्हल जाव ?

अब बाँचलि लक्ष्मी ! के हई लक्ष्मी ! मंगल भवन में आग लगावे वाला
भ्रष्टाचारी नेता आ माफिया सरगना बने का चक्कर बाजी में गोली के
बनि जाये वाला नेता रणविजय, तुलसी के बड़का बेटा के धर्म पत्नी,
उमिर में बेवा हो गइलि अभागिन, बाकी असत्य से लड़े वाली
बा प्रणम्य नारी वाला आकर रूप बनल रहि गइल। अपना के
में झोंकि के टूटल चीज के जोरी वाली, बिगरल के बनावे वाली लक्ष्मी
के लक्ष्मी ! सदेहे मंगल भवन के लक्ष्मी बा। बिक्रम के ऊ दिन ना
जब हजार-हजार चिन्ता-पीरा में नोचाइल-चोंथाइल ढेर दिन बाद
मन भरले एक दिन मंगल भवन का दुआरी पर चोंहपलन त देखत का
कि लक्ष्मी कोरा में एगो जनमतुआ के लेके ठाढ़ रहली। अब बिक्रम
जाने के रहे कि ई मेजर जगदीश के नतिनी ह कि नाती ह ? एही
जगदीशबाबी आ बटवारा का परिवारिक रगरा-झगरा में ई एगो प्रसव
बनोगो जुटल रहे। अपना मेहरारू के ले के जगदीश के बेटा प्रशान्त
गइल रहे। एने जगदीश के पते ना रहे कि ऊ कहाँ बाड़न। कई दिन
घबड़ाइल-घबड़ाइल बिक्रम मित्र केहें चोंहपल रहलन हालचाल पूछे
गोदी का जनमतुआ के देखि के पूछले रहन कि 'मंगल भवन में ई के
बा ?' त ओही घरी लक्ष्मी तनिकी-तनिकी घूघ कढ़ले आगे बढ़लि आ
का पंखुरी नियर ओह बारभोर जनमतुआ के हाथ पर धरति आँचर का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-GI

छोर लगा के गोड़ छुअत बोललि रहे कि 'मंगल भवन में ई अमंगल आइल बाड़न !'

बाहर से बिक्रम मास्टर साहेब गइल रहलन बहुत उदास आ बिरा बूड़ल बाकी लक्ष्मी के गदगदा देवे वाला मबद सुनि के आ ओह अमंगल के देखि के मन लहलहा गइल। भीतर से भाव उठल कि हे मंगल भवन लक्ष्मी तू सचहूँ साक्षात लक्ष्मी बाड़ू, असली अमंगलहारी ! आ बिरा चित्रन नियर लक्ष्मी के कुछ उत्तम चरित्र आँखि का सोझा छन भर नाचि गइल !

जवनी घरी जानमरौवल के दुस्मनी भाई-भाई यानी जगदीश का बीचे चलति रहे आ मंगल भवन नाँव वाली अपनी हवेली में आवि रहे आ एक घर के लइको दूसरा घरे झाँके ना जा स ओह घरी लछिमिये रहे जवन दूनों परिवार का बीचे कइसहूँ मारि-गारि सुनिके, अपमान आ दुरदुराहट सहिके आ साँच का पाछा करटही सासुं के कटकटा प्रहार पर प्रहार अँगेजि के सेतु बनलि रहि गइलि !

लक्ष्मी, तुलसी के पतोहि, पढ़लि-लिखलि संस्कारी के बड़ा घर के बेटी भइला का प्रभाव से बहुत संस्कारी आ ऊँचा सुभाव के रहे। ओकर के ठीक-ठीक पता रहे कि ओकर सास-ससुर आ खुद पतिदेव लोग बलात अन्यायी बा। आ दुस्मनी बस झूठ-मूठ के अछरंग लगा के देवलसिंह सत्यवादी आ सज्जन बड़का ससुर मेजर जगदीश आ गुरु जी के दुर मोकदिमा में फँसावल गइल बा आ तरह-तरह से ओह सज्जन-परिवार डाहल जात बा ! ई मुहावरा ऊ सुनले भर ले रहे कि 'देआद आदाल गवाह के मोल ह' बाकी खास अपने लोगन के अइसन घिनौना चरित्र देखि ओकर रोआँ काँपि गइल ! ओकर गलती इहे रहे कि ऊ सभका मुँह पिआज का छिलका नियर तमाम झूठ के खोलि के उघिया देबा कहिके पर्दाफास कइ दे ! बाकी केतना-केतना साँसत सहि के? केतना अनगराहित आ बझराहा नियर बनि के ?

नटिन नटुरी आ करटही सासु कई-कई बेर लक्ष्मी के मरलसि-पीटलसि झोंटा पेरि के घर से बहरिअवलसि, जरल-कटल सुनवलसि बाकी धीरज आ संजम ना छूटल ! ऊ एह कुलिह साँसति के अनमल मानियो के मनलसि। केतना बड़ घाव रहे कि अबहीं हाले में जोकर सँवाग गोली के मराइल रहे, ओकर माँग धोआ गइलि रहे आ सुहाग लुटि गइल रहे एकरा बाद ऊपर से सासु के, ससुर के अनखुन खोजि-खोजि के बरसा उपद्रव ?..... बाकी अपना धरम-मरजाद के निभावत ऊ अपना चरित्र ना हेललि, नइहर ना गइल, परिवार के अखंड देखे वाली आँखि तरसि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दीपक ना भइल, साँच पर अड़लि रह गइलि आ मंगल भवन का अन्हार में दूनो भविष्य का आसरा का ज्योति नियर जरति रहि गइलि ! सगरे झंझा-वात आँधी-पानी में ऊ ज्योति बनलि रहि गइलि !

आ, फेरु आगे चलि के भइल का ? साँच के जीत भइलि। मंगल भवन के भयानक अन्हरिया राति बीति गइलि। जवन कुछ धुन्ह वा ऊहो कटल जाता बा। बाँट-बखरा वाली देवालि ढहि गइलि। भरमे भरम में समय का टेढ़ी में दूनो तीनू परिवार के फाटल मन समय का फेर से जुट रहल बा। त के बा एह कुल्हि दिन बहुरला का जरि में ? जग जाहिर बा आ गाँव-जवार सरधा के साथ जपत बा, वाहरे देवनपुर बलिया) का मुरली बाबू के बेटी ! जगदीश के होनी के होनी कइ दीहलसि, छछात लक्ष्मी जी बाड़ी ! आपन माया देखवन फइलवली कि काली जी दबि गइली।

विक्रम के ऊ दिन कवे भोर ना परे कि विक्षिप्त छोट भाई तुलसी का हाथे अर्थ में गोली खा के जान देत-देत में ऊ लछिमिये रहे जे जगदीश के दीहलसि। जगदीश गइल रहलन युधिष्ठिर बनि के सफाई देवे कि हमसे तीवा रणविजय का खून से कवनो सम्बन्ध नइखे आ अधिका भावुक होके बेटी स्थान पर टाँगल बन्दूक लेके अपना छोट भाई तुलसी का हाथ में थमा देले रहलन कि ल, सचहूँ के जो हिरदया में बइठल बा कि हम दोषी बानी त मार द गोली, एह कलंक से टँटा छूटो !

बेचारू जगदीश के का पता रहे कि पुत्र-शोक में जरल-भुंजाइल आ मोकदिमाबाजन का संगे-संगे दुष्ट मेहरारू का मति में परिके तुलसी पागल हो गइल बा। एकरा आगा सफाई अनेर बा। बस, एक छन में साँच पर आँच अइली रहे कि लजाइल छोड़ि के ओही घरी लछिमी सोझा जाके ससुर का हाथ से बन्दूक छोरि लीहलसि; आ जगदीश से बोलली कि बाबू जी, बेकार जान गँववला से का फायदा ? ई अदिमी नइखे रहि गइल लोग ! देखीं हं न, अब अँगुठा का नीचे परल बन्दूक के घोड़ा दबले रहल ह !

कुछ पहिले वाला समय रहित त एह काण्ड के लेके बाद में लक्ष्मी के केतना फजीहत भइलि रहिति, केतना गारी-मार, झोंटा पेरउअलि आ खेद-खेद घहराइल रहित बाकी ओह दिन सास-ससुर दूनो बेकति हीसे में भीतरे भीतर घुरमुसा के, आँखि तरेरि के आ खून के घोंट पीके रहि गइलन। काहें ? ई लक्ष्मी के माया रहे। सासु-ससुर दूनो जना अवस लाचार रहलन।

कमाऊ जेठ पूत रणविजय के ऊपर बोलाहटि हो गइलि। छोटका किसान बेटा दिगविजय अलगा हो गइल। झगड़ा झंझट आ मोकदिमाबाजी में खेती चउपट हो गइल। टेक्टर बिका गइल आ कुछ खेती बाकलम खुद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Punding IKS-MoE-GI

का कबाला वाला दाव पर चढ़ि गइल त घर में मुसरी डड करे लागलि। ससुर तुलसी थउसले कि विछिपित हो के मउनी बाबा हो गइले। एह वेहाल में परिबार के सहारा हो गइलि जेटकी वेवा पतोहि लक्ष्मी। तीज-तिहवार, पाहुर-बायन वगैरह का बहाना से ओकरा नैहर से ढो-ढो तमाम तरह के सामान आवे लागल, चावल, गेहूँ, दाल, चीनी आ खाये-पिये के जिनिस। सास-ससुर का भीतर से त नीक लागे बाकी बाहर से लोग रोज-झांव-झांव करे! भला एह 'दुस्मन' लक्ष्मी का ओर के आइलि चीज हमन का छुअव ना? बाकी धीरे-धीरे ई सब नाक मारल नाटक बन्द हो गइल। मने-मने सास-ससुर पछतइले कि जवन पतोहि एह विपति के नइया खे रहलि वा ओकर केतना साँसति कइल गइल रहे कि ऊ ओह 'दुस्मन' का घर माने जेठ मेजर का घर से काहे नइखे ओही लोगन नियर 'दुस्मनी' कहू लेति? बाकी वाह रे 'लक्ष्मी' के माया! धीरे-धीरे समय ओह दुस्मनी का गाँठ के ढील कइ दीहलसि। धीरे-धीरे ऊ खुले लागलि। बटवारा के देवालि टूटि गइलि। बाकी वोह देवालि के ठाढ़ कइके तुलसी जनन गिरले ऊ ना उठले! ऊठसु कइसे? एगो हूक भीतर समाइल रहे कि साधु-सुभाव सहोदर जेठ भाई जगदीश के त केतना गलती समझि के ओकरा सगे का-का ना कइ दीहलनि। बेचारा परदेस के घर से निकलि गइल। पता नाहीं कहाँ गइल?

दूनो-तीनू परिवार के लोग दू महीने से ऊपर भइल कि एही चक्कर में रात दिन नाचत बाड़न। सभकर मन डांवा-डोल बा। खेती-गृहस्थी के काम कइसहूँ निपटत बा। कवनो अकिल काम नइखे करति। ओने मेजर साहेब बाड़न कि भुड़किया-भुड़किया के हाथे लागत-लागत बेहाथ हो बात बाड़न। कहाँ से आइलि एह तरह के चकमाबाजी आ फरफन के सुवार? गाँव में त ऊ गाय नियर सीधा बन के रहत रहलन हउअन। जरूर ई कुछि फरफन ओह कपार पर चढ़ल नखड़ाबाज जिन्न के करतूत बा। आपन भेष बदलि लीहल, लोगन का आँखि में धूरि झोंकि के नव-दू एगारह हो गइल आ जहाँ-तहाँ अचके में उपटि गइल, ई सब गजब के बाति बा। सवाल एगो सभका जबान पर चढ़ल रहत बा कि ओह दिन पार्वती जी का धर्मशाला से बइठल लोगन के अँगुठा देखा के मेजर साहेब कहाँ भागि गइलन? बाद में खोजवइया लोग हलकान हो गइलन। जनाइल कि जइसे ऊ देखते-देखते अतरिच्छ हो गइलन!

बाकी ना, जगदीश कवनो भूत-दइत भा सचहूँ के अइसन जगता जिन ना रहलन कि अतरिच्छ हो गइलन। साँच बाति त ई रहे कि ऊ ओह सभा से निकलि के अइसन एकसुरुकिया जइसे कपार पर गोड़ धइके दतदनात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबले कि हवा हो गइले। एक त फौजी आदमी दूसरे कपार पर सवार जिन्न अब्दुल रजाक के बल, अब उनकरा के पकड़ो के? तवनो अइसन अचके में मेजर के उछड़न कि सभके कठुआ मारि दीहलसि। केहू के कुछ ना बुझाइल कि ई का भइल?

भइल ई कि मेजर साहेब पहिले त गाँव का ओर भगलन बाकी फेरु कुछ सोचि के सोझ उत्तर मुँहे होके नागा का कुटी का बगल से निकलत एक साँस में पाँच किलोमीटर दूर परसवनी चट्टी पर जाके साँस लीहलन। एगो कहावति ह कि बिना आदत के चननो लिलार पर लगवले घराला। तवने रहा रहे। बिना आदत के ई दउरकिया थका दीहलसि आ सरकारी चाँपा नल पर दू घोंट पानी पीके जगदीश तनी चट्टी से ओहटा एगो पोखरी का किनारे एकलहाँवा आम का पेड़ तरे जाके पसरि गइलन। कुछ घरी बाद जब सुस्ता के साँस लवटि के सोझ भइलि त मेजर जगदीश बोललन, 'हे मेजर बाबू, अब तनिक देर खातिर अलग हटि जा, सोझा आव। तोहरा से कुछ बतिआवे के बा।

एकरा बाद आवाज आइलि, 'सोझा कइसे आई? का हमार कवनो रूप-सूरत बा? हम त हवा हईं। रहि गइलि अलगा हटे वाली बात त हमरा बिगरी दोस्त रिक्शा जी अब त हम अलगा होई गइल बानी। हमरा जिनगी के जवन आखिरी ख्वाहिश रहे ओकर खोज मोकम्मिल हो गइलि बा। हमरा धक्का में अब हमार मजाल बा कि तोहरो ऊपर बरिआई से सवारी करीं? ना, अब त तोहरे हुंकुम से तोहरा मूँड़ी पर बानी। अब हमरा के कवनो दर त भला! हम जहाँ के हईं तहाँ चलि जाईं।'

'नाजीप बाबू, जगदीश कहलन, 'अबहीं ना। २५ दिसम्बर के नाटक होवे वाला बा। ओह दिन तक तोहरा संगे रहे के बा। तोहरी आवाज तोहरा के केहू ना भाँप पाई। कुछ भेस-भूसा में तिकड़म करे के परी। ऊ तिकड़म तोहरे मदद से होई। देखीं त नाटक में लोग कइसे हमरा के जरि लेला!.... हँ, ऊ धक्का वाली बाति हमरा समझ में ना आइलि ह।'

'डू यू नाट अण्डरस्टैंड इट? सो क्लियर!'

'देस के मेजर के बच्चा, बिलयिती बानी मति बूक ई गांव ह। अपना देस बोली में जवन कहे के बा कहु।'

'माफी दे दे दोस्त, भूल हो गइलि। हँ, ऊ धक्का वाली बात सुन। धक्का हलुक धक्का त तब लागल जब तू अपना कवनो अमंगलहारी नाँव का पेड़ा के छिपल-छिपल रात में अचानक देखि लिहले।'

'त का ई धक्का ओह अमंगलहारी के देखि के लागल?'

'ना, ओह चनरमा का टुकड़ा नियर लाल के लेके जवन देवी आइल रहली, का नाँव रहे उनकर? सुनलीं ल-क-श-मी.....।'

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

'हँ, लक्ष्मी। ओह दिन धर्मशाला पर ऊहो आइल रहे अचके में ऐ
आ गइलि। ओह भेस में ऊ हमरा के ना चिन्हलसि। हम चीन्ह गइलीं
पता नाहीं कइसे ओह देबी के देखते छन भर खातिर हमरा होस हो गइल।

'होस भइला के कारन के पता तोहके नइखे, हम के बा। हम तोहरा
तोहरा मन-बुद्धि के छोड़ि के चट हटि गइलीं। सगरे उपद्रव बन्द हो गइल
तोहरा संगे छाया नियर, तोहार आज्ञाकारी बनि के रहि गइलीं।...अरे
ओतना तिबरता, तेजसी आ सतवन्ती देवी का संझा हमरा नियर मलेछ कहीं

बस चुप। अपना के मलेछ कहि के आपन आ हमार अपमान मत क
दोस्त। केतना हिमालय नियर ऊँचा उद्देश्य लेके तू बउँड़ियात बाड़, ओ
ओके हम जानत बानी।.....अब तनी दूसरका धक्का वाली बाति बताव

'का करबे सुनि के? एक दिन बिना बतवले जानि जाइबे। बस, ऐ
नीके-नीके नाटक बीति जाये दे आ हम पूरा-पूरा तोरा के बकसि देईं। नीक
होके, पहिले नियर सभ्य-सदान आदमी हो के आ पूरा-पूरा अपना निजी
में घर परिवार में जाके तू बिराजु। मालिक तोके एक से एकईस करसु।

'वाह फकीर साहब, बस अपना ओह आशीर्वाद का आगा ई टटका
देईं कि दुआ फकीरा रहमल्ला!'

'शटप! हमके का तू निछाने रहमल्ले बूझत बाड़े? हम के हो
तोह के मालूम होखे के चाहीं। कहीं अइसन त ना भइल कि घर का झा
झंझट, बटवारा का प्रपंच आ मोकदिमाबाजी वगैरह में ओह लड़ाई
भेस होस आ करतूती के याददास्त घिस पिट खिया के खतम हो गइलि!

'ओह निरदयी दोस्त! केतना दिन पर ई कुल एक झटका में
दिआ दीहले?, याद बा, याद वा बाकी कुल भुला गइल बा।

'अरे, का ऊहो भुला गइल बा, जब हमरा-तोहरा में तूफानी
सुरू भइलि?

'आरे नाहीं रे, ऊ कइसे भुलाई?'

'अच्छा, याद बा त भला सुनाउ त?'

'सुनाइबि, आज खुसी-खुसी में सुनाइबि। आ ऊहो सुनाइबि कि
कहाँ कइसे कन्धा से कन्धा मेराइ के लड़ल गइल। केतना दिन पर
हलुक भइलि बा। कपार पर से तू उतरल बाड़ऽ। बाकी, तूत हवा
तोहरा न भूख लागी आ ना पिआस। एहर हम शरीर हईं। अब हमो
कइले बा।'

'तब चलि के चट्टी पर कवनो लहान लगावल भा जोगाड़ बान्हल
सावधान, अब हम तोहरा कपार पर सवार होत बानी!'

छनभर बाद जगदीश झूमत-झामत चट्टी का ओर बढ़ले।

□ बड़ीबाग, गाजीपुर, उ०प्र०

(शेष अंगिला अंकन में)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्योहारी लोकगीतन में भोजपुरिया संस्कृति

—प्राध्यापक 'अचल'

भोजपुरिया त्योहारी लोकगीतन में भोजपुरिया संस्कृति क झलक देखे ई बुद्धि लेवे के चाहीं कि संस्कृति का ह ? डा० भगवत शरण उपाध्याय 'लोक संस्कृति की कहानी' में टँकले बानऽ कि 'सभ्यता ह—वनइला जीवन से नगरी जीवन का ओरां सामाजिक जीवन क पसार। संस्कृति क ओही सामाजिक जीवन से नाता ह। जब आदमिन क जमात भा समाज जब एके रीति से किछु करेला, एके तरे क बिसवास राखेला, एके तरे क आदर्श अपना सोझां राखेला, आ पुरुखन का कामकाज के एक भाव से आदर, गरव आ गौरव क चीज मानेला त संस्कृति जनमेले। संस्कृति आदमी का सामाजिक जीवन क परान ह।' ए बारे में महाकवि दिनकर 'संस्कृति के चार अध्याय' में लिखत बानऽ कि संस्कृति आ सभ्यता में भेद होला। खुनुसाइल मानुस क प्रकृति ह, लोभ में परल ओकर लक्षण ह इरिखा, मोह, राग-दोख आ काम-वासना; ई सभं प्रकृति क दिहल लक्षण। बाकी जो ई गुन बेलगाम छोड़ दिहल जइहन त आदमी आ जानवर में कवनो अन्तर ना रहि जाई। ए अवगुनन के आदमी जेतने जीती ओतने ओकर संस्कृति निम्नन कहाई। ....हमा-सुमा जेवन किछु करब-धरब जा ओकरा में सभ्यता का संस्कृति क झलकि मिलला बिना ना रही। इहां ले कि हमनी क उठल-बइठल, पहिरल-ओढ़ल, घूमल-फिरल आ रोवल-हँसलो में हमनी का संस्कृति क झलक मिलेले।' बाति ई बा कि सभ्यता आदमी क खाली ओढ़न-पहिरन ह। सुंदरता से ऊ आदमी का समाज में, सभा-बटोर में बइठे क अधिकारी हो जाला। बाकी ई आदमी के आदमी बनावेवाला गुन ना ह; ई खाली ढोंग-ढकोसला बा। एकरा से संस्कृति से भेंट ना होई। संस्कृति आदमी का रग-रग में रेंगल रस क ऊ रस-धारा ह जेवना से बराबर बराबर खातिरदारी पावेला आ जीवन भर मगन रहेला। ऊ कबो अनगराहित ना हो पावे।

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha. Courtesy: Shri Gurudev Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

हम दुइ-तीन महीना बदे नसावाज हो जाइलें। हमरा नसा ह आम का सहताई, सुधराई, सवाद, सक्ती आ लोकप्रियता क भाँट हईं। दिन में जो ओकरा से रोज भेंट ना होई त हमार होश ठेकाने ना रही, लरुआइल रही आ दिनभर किछु भुलाइल बुझाई। एक दिनाँ दिन भर ना मिलल रहे। सनकल साँझि खानी बाजार में चोहँपि गइलीं। झँकलीं-झुँकलीं। एगो चिक्कन-चिक्कन, चमकदार, गोल-गोल, पीयर-पीयर आ मजे क पाकल आम लउकल। मन लोभाइ गइल। भावो-ताव में परता निहाल होइ के उमराहे कीन लिहलीं। चखे क टिसुना तेज रहे। घरे अइले छोलि के चभकलीं कि कपार झनझना गइल। गरें परि गइल रहे। ओके हके लगवलीं। कुल्हि दाँत कोट हो गइलन स। भोजन करे में एको नउवन ना रह गइल। बाकी आमन के गरवाइ से चीनी ओनी मिलाइ के फेरु उनुकरा पजराँ जाए क हियाव ना भइल। वे कारवाइड क से तोपि-तापि के पकावल मिठुवा आम क मसुआइल आ उदास देखि के गहँकी भड़किहन; बाकी जब ओकर गूदा-रस के चीख ओकरा बदे चिउँटा होइ जइहन। आम का बोकला के सभ्यते बुझल आ ओकरा गूदा-रस के संस्कृति। गूदा-रस क विशेषता होखे के मिठास, सवाद आ सक्ती जेवना से कि संसार का परानिन के परान मिले। अपना संस्कृति का बलें संसार में नाँव-जस कमाला। सभ्यता क महातिम से सटि के ओकरा के संचे सँवारे आ ओकरा में सराबोर रहे में बा। एही संस्कृति क प्रकृति, प्रवृत्ति आ रीति बूझि-समझि के भोजपुरिया संस्कृति क रंग निहारत भोजपुरिया त्योहारी लोकगीतन में भोजपुरिया संस्कृति क हमनी का निरखे के बा।

भोजपुरी संस्कृति गो-संस्कृति ह। गो से गाय आ धरती-माता बोध होला आ इनिकरा से समाज के क्षमा, त्याग, सेवा आ समर्पण क मिले ले जिनकरा से कि मन अमनियाँ हो जाला। संस्कृति मन क शुद्धिए ह। गो-संस्कृति का पुजारिन क भोजन गोहूँ-गुड़-गोरस ह। पहिरावा धोती, कुरुता आ गमछा ह। इनिकरा समगरदा आ सादा सुभेस ह। भोजपुरी-प्रदेशन में प्रसिद्ध ह कि जइसन अन्न, तइसन मन आ जइसन तइसन तन। ई लोग सुअन्न खाला आ सुमन होइ के रहे क चाव राखेला। क फल ह कि एहिजा पहलवान ढेर होलन। सोभाव से ई लोग शाकाहारी आ ए लोग क सतोगुणी मनोवृत्ति होले। इनकर संस्कृति मानवता के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...ता आ अमिट बनावे वदे पयस्विनी कामधेनु ह। एही से एहिजा का गऊ का ...ता का कंठ ले बेरेप फूट परेला—

हम छोटी-मुटो रहलीं, कि बछरु चरवलीं
कि पियलीं बकेनवाँ क दूध।
हरे रामा पियली बकेनवाँ क दूध।
आजमगढ़वा में लगली लड़इया
कि छटके बकेनवाँ क दूध।

ई गऊ चाहे गऊ-स्वरूपा संस्कृति क गाढ़ह-गरिष्ठ दूध ह जेवना के पीके ...रिया जवान रण-बाँकुरा कुँवर सिंह का नेतृत्व में लड़े जायेवाला १८५७ का स्वतंत्रता-संग्राम में छटकत-छउकत वा आ ऊ देश-सेवा वदे अपना ...ति के जान हथेली पर लेइ के तलवार उठवले बा।

छोटो भोजपुरी प्रदेशन में भोज-भात क अधिकाई भोजपुरिये संस्कृति क ह। ए प्रदेशन का वायुमंडल में भोज-भात क हल्ला हिलकोरा लेत रहेला। ...ई हंसी-मजाक का सुर में एकरा के लोग भोज-संस्कृति कहि के मजा लेलन। ...ई कहल सोनुक बा। काहें कि भोज-भात का पाँति में बइठे बदे आदमी क ...त, स्नेह, सौहार्द, त्याग, सेवा आ सहनशीलता क अपना में लकम डाले के ...ता। बेरपटा क चन्ननो माथा पर चरचराला। भोज संगे-संगे काम करे, संगे-संगे ...ओरे, संगे-संगे चले-फिरे, संगे-संगे रहे आ संगे-संगे सोचे-समझे क संस्कृतिये क ...कार्यक्रम ह। भोज-भात का ए पाँति में सभकरे एक समान महातिम ह। ...ड़ा बड़ड़-छोट क भेद-भाव बिला जाला। पाँति में बइठल सभे बड़कवा ह आ ...र मान राखे वदे माटी क भरुका सोवरना वनि जाला। भोजपुरिया संस्कृति ...ई का मन के दुखावे-कलपावे क उतजोग ना होखे, बलुक सभकरा मन के ...तव जाला आ आदर-सत्कार कइके आदमी क मान बढ़ावल जाला।

भोजपुरिया संस्कृति भोजपुरिहा प्रदेशन का त्योहारी लोक-गीतन में ...ी बजागर भइल बा। दीवाली का महोत्सव पर अमवसा का रात में घरे-...शेक जगमगा जाले। भिनसहरें घरनी लोग बिकट अन्हार क बिरोध करत ...ा बजाइ के गुनगुनाला—

इस्सर पइठसु, दलीदर निकलसु,
महा दुओर परमेसर बइठसु।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

मानव-समाज ले अज्ञान क अन्हार भगावे, आ ज्ञान क जोति जगावे पयान ह। एही क फल ह गो क बढ़न्ती करेवाला भगवान क दरसन। दरसन पाइ के कामिनी-कठ क काकली फूट परेले—

गोधन बाबा अइलन पाहुन हो,
का हम बइठे के देउँ?
चन्नन काठ पिढ़इया हो,
से हम बइठे के देउँ।

अतिथि-भक्ति भारतीय संस्कृति क एगो अंग ह। एगो खाँटी-भारतीय दुआरे अतिथि-रूप में केहू देवते पधारे ला—अतिथि देवो भव। ए अतिथि भोजपुरिहा लोग पाहुन कहेला। पाहुन-प्रीति ए लोग क सहज धरम दनि बहुत ई लोग पाहुन क आदर-सत्कार, मन-बचन-कर्म से करेला आ हाथ जोरि के गोड़ पर आगे ठाढ़ होइ के विनती करेला—'ए हमरा छान्हि-छप्पर में ई नानू सँकारल जाउ। जेवन सरिगों में आँटल बा तेवन लेइ के सेवा में ठाढ़ बानी मानवता का अइसने अहंकारहीन सेवकन बदे भोजपुरिहा मेहरारू लोग के एक सुर में संगे-संगे गावेला—

कारी लउरिया चितकाबरि हो सोनवाँ मढ़ावल मूठि।
से लउरि लेलन फलाना रइया हो दुसुमन मारेलन हियरा फारि॥

जेकरा मन में मानवता के पाले-पोसेवाला गोधन भा गो-संस्कृति ठौर-ठिकाना नइखे आ जे एकर अहित करे बदे सतुवा-पिसान बान्हि के ठाढ़ गइल बा ओही पर भोजपुरिहा भाइन क लउरि घहराले। ई अहिंसक हउवन बायर ना। जे केहू, दुसमन इनिकरा ओर्‍ँ कुरोख ताकी तेकर मारि के बिगारि दिहन। लउरि गोजी ह; गो-जन्मा ह। एही से एकरा के कन्हइयो लउरी हउवन आ महात्मा गांधियो। ई भोजपुरी प्रदेशन क सांस्कृतिक हथियार। भोजपुरिहा गिरहत्त क ई लंगोटिया यार ह आ साधु-संत क अलम्म ह।

बसंतपंचमी के भोजपुरिहा प्रदेशन क विद्यालय 'या वीणा वरदण्डित करा' का मीठ धुन से गूँजि जालन। ए क्षेत्र का गिरहत्तन का घरन में ई त्योहार 'नेवान' का नाँव से जानल-मानल जाला। एही दिन गिरहत लोग रबी का फसलि क नया अन्न खाए-पीए का काम में ले आवे क शुरू करेला। नया अन्न पावे का सौभाग्य का उछाह में एक-दूसरा का घरे जाइ के ई लोग नइ के पालगी कइ के असीस लेइ के राति खानी केहू का दुवारे बइठ के ढोलक, डफ आ झाल बजाइ के हुलास से एके संगे सुर छोड़ेलन जा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

...Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का लेइ के सिव के मनाईं हो
सिव मानत नाहीं।
हाथी घोड़ा सिव मनहों न भावे
बुढ़वा बयल कहवाँ पाईं हो।
सिव मानत नाहीं।

फागुन भर एकरा सोझाँ अउरी कुल्हि गीत पसघे हईं। एक गीत में ...का शिव क रूप उरेहल बा। ए शिव के हाथी, घोड़ा, जीप-कार जइसन ...का दामी गरामी बाहनन क जरूरत नइखे। ओकरा के आपन पुरान-चिरान, ...पुनल गोवंशीय वाहने पसन्न बा। सिव क वाहन ह—कामधेनु क बेटा ...नंदी से पुरान गऊ कहवाँ मिली? सिव सगरो ज्ञान-विज्ञान क खानि आ ...क गुच्चा स्वरूप हउवन। जे संस्कृति के निवाहेला उहे नंदी यानी आनन्द ...ह। सिव के रिझावे बदे संस्कृत मन चाहीं। भोजपुरी भाई लोग के ज्ञान-...के डोवेवाला संस्कृत मन क खोज बा। अइसने मन सधल, तपल, उदार, ...सेवा आ सेवा-समर्पित होला।

महाशिवरात्रि के शिव मंदिरन पर भोजपुरिहा भाई लोग झूमि-झूमि ...ला—'शिव मठ पर सोहे लाल धुजा।' जहवाँ सांस्कृतिक शिव आसन जमवले ...ओहिजे मानवता का सुख-शान्ति बदे धरम-करम क धुजा फहरात रहेले ...मेल मिलाप से नेह-नाता क तेजस्वी सुर लहरात रहेला। एही का जोरें ...चिल्लाइ के गवाये लागे ला—'सदा आनंद रहे एहि द्वारे मोहन खेलें ...।' ई मानव का सांस्कृतिक विकास क आसमान छूवत आ वायुमंडल में ...बगहर-चाकर त्रिविक्रम स्वरूप ह जेवना से ऊ सभकरा बदे मंगल-कामना ...बरसावत फिरेला—'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु।' जब केहू ए उदार भावना के ...खुंनावेला तब भोजपुरी संस्कृति क पुजारी मर्माहत हो जालन आ अइसन ...करेवाला के राछछ बूझेलन आ ओकर विरोध करे में आपन परान तक होम ...। ए पुन्न कर्म के करे बदे बूढ़ो में जवान क तागति आ जाले। अइसने पुन्न ...में ह—एगो गऊ-गोहारि। गऊ-गोहारी शरनागत-वत्सलता ह। गऊ-गोहारि ...बुझत-मरत सरनामी सूरबीर रनबाँकुड़ा बूढ़ जवान का बल आ हिम्मत क ...भोजपुरिहा लोग अपना फगुवा का मीत में करेला—

निरखत जात जटाई रथा पर, निरखत जात जटाई।
'बा केहू जोधा तिनो लोक में, सरन सरन', गोहराई।
एतना सुनि खगपति उठि धवलन हाँक देत नियराई।
'का करि तिरिया नाँव हवे का, कवन हरे तोहि जाई।'

...RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

'उत्तर दिसा अजोध्धा नगरी दसरथ-सुत रघुराई।
तिनि कर तिरिया नाँव सीता हवे हरे निसाचर जाई।
चोंचन मारि महा जुध्ध कइलन रथ से दिहलन गिराई।
अगनि बान खिचि मरलसि निसाचर पंख भसम होइ जाई।
बलिहारी प्रभु आस चरन की गीध परमपद पाई।

गोहारि पर हाँक देइ के कसाई-कर्म का विरोध में जूझत आ
देवेवाजा जटाऊ धनि हउवन। सांस्कृतिक आदर्श खातिर जरि-मरि
जटाऊ एह संसार क दुरलभ परानी हउवन। संस्कृति का शिव के इहे
हउवन। मानवता के हरेवाला राछछ ह। ऊ शिव क झुठिया भगत ह।

फागुन का पूरनवाँसी के मन का देख-दोख आ पाप-पराछित आ
आ कूड़ा-करकट के तितिक्षा-तियाग का आगि में भसम कइके मन का
दमकाइ के भोजपुरिहा लोग चइत का एकम के प्रेम क रंग बरसावत
क अबीर उधियावत एको दूसरा का मुँह पर गुलाल पोतत ठहाका मारत
गर में गर मिलाइ के अँकवार-भेंट करेला। एकरा बाद सभ एके संगे
के गावे लागेला—

भाई भाई अबीरा क मारी बिरिज में
भोला हमरो कान्हइया।
कइ मन ऊड़े केसरी, भाई केसरी,
कइ मन उड़े अबीरा बिरिज में
भोला हमारो कान्हइया।
कइ मन ऊड़े केसरी, भाई केसरी
सवा लाख मन उड़े अबीरा बिरिज में,
भोला हमारो कान्हइया।

भोजपुरिये संस्कृति में हजार-हजार क झुंड बटुराइ-सटुराइ के
सघल, आकास छूवत हहासी सुर में एक संगे गावेले जेवना से कि नेह-
घोरल रंग बरिसे ला। ए कार्यक्रम में भोजपुरी संस्कृति क सहगान,
सहवास, सहचार आदि के एक संगे चरितार्थ होखे क सुघर अवसर मिलेला।

भवानी दुरगा माई का रूप में महामातृ शक्ति क पूजा-पाठ आ
बरिस में दुइ बेर चइत आ कुवार महिनन का नवरातन में जमि के
चइत का अँजोर पख का अष्टिमी के कलसा धइ के भोजपुरिहा मेहरारू
महा शक्ति के गाइ-बजाइ के पूजेला आ ए मोकन पर ए पारंपरिक आ
लोकगीतन के बहुते भाव-भगति से गावेला—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निमिया का डाढ़ि मइया लावेली झुलुववा
कि झूली झूली ना,
मइया मोरि गावेली गीत
कि झूली झूली ना।
झूलत झूलत मइया का लगली पियसिया
कि चलि भइलो ना।
मलहोरिया अवसवा,
कि चलि भइली ना।
भितराँ तूँ बाड़ू कि बहराँ मलिनियाँ
कि एक बून ना।
मोहीं पनियाँ पियावऽ
कि एक बून ना।
कइसे के पनियाँ पियाईं, सीतल मइया
कि मोरे गोदे ना।
बानऽ बालक तोहार मइया।
कि मोरे गोदे ना।
बालक सुताउ मालिनि ! सोने क खटोलवा
कि एक बून ना।
मोहीं पनियाँ पियावऽ, मालिनि !
एक बून ना।
सोना क खटोलवा मइया ! टूटि-फाटि जइहें,
बालक, राउर ना।
भुइयाँ लोटि-पाटि जइहें
बालक राउर ना।
एक हाथ लिहली मालिन झंझड़ गड़ुववा
दहिन हाथे ना।
सिंहासन बइठवली
दहिन हाथे ना।
जइसे के मालिन तूँ हमके जुड़ववलू ह
कि ओइसे-ओइसे ना।
तोहार पतोहिया जुड़ाउ
मालिनि ओइसे-ओइसे ना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gi

धियवा पतोहिया मइया घरवाँ बइठइबों
कि अपने से ना।
हम नगरिया फेरिया डलबों
कि अपने से ना।

ए लोकगीत में दुरुगा माई का बहाने एगो भोजपुरिया महतारी क सीधा, उदार, संतान-हित-लवलीन आ बे बर-बनावट क आचार-विचार के गइल बा। कुल्हियों सवँहरवाली जगदम्मा दुरुगा माई वेहिचक क एगो मकुं का दुआरें आयनि पियासि बुतावे बदे चोहँपि जात बाड़ी आ पानी पियावे अर हावति बाड़ी। मलहोरिन अपना अबोध शिशु क अगोर-पछोर आ सुसुरुखा करे में वाझल बा। ई ओकर आपन खास करतब बा। एकरा बदे क्वनो हालति में पलखत परे बदे तइयार नइखे। अपना महतारीपना का जिम्मे का ओरां तत्पर भइला से आउरी केहू क सेवा करे क सवँहर बनावे में उ परति बा। एगो उदार महतारी हिरदया दूसरा महतारी क संतति-ममता संवेदनशीलता के समझत बा। ऊ ओकरा ए बात-बेवहार से अनकसात, सुसु आ सरापत नइखे, बलुक ओकरी दोविधा, दिक्कति आ जिम्मेवारी का बोझ बूझऽता। 'फल' होता कि ऊ मलहोरिन क पानी आने क अड़चन-अड़गा दूर कर देता। फेरु त मलहोरिन दुरुगा माई क आव भगति करे में तनिको असकियात नइखे आ मइया के पानी पियाइ के उनुकर असीस पा जात बा। महतारी हिरदया बड़ा उदार आ भावुक होला। महतारी अपना ले अगते अपना संतान सुख चाहेले। एही से विस्वास कइल गइल बा कि पूत कपूत हो सकेला बा माता कुमाता ना हो सके। महतारी खातिर आपन लायक आ नालायक सुपुत्र संतान एक समान हउई। भोजपुरिहा मेहरारू लोग महतारीपना का एही गुन बखान ए हेठां-लिखल गीत में करेला—

बारहो बरिसवा कऽ उकठलि बेइलिया
बेइलिया तरवाँ ना।
मइया लीहली बसेरा हो
बेइलिया तरवाँ ना।
'कोंहरा कऽ पूतवा गरबवा से मातल
कलसा काहें ना ले अउवे तूँ
बेहलिया तरवाँ ना।'
'आजू का राति छिमा करिहऽ सीतलि मइया।'
होत भिन्सार, कलसा हम लेइ के आइब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ए बेइलिया तरवाँ ना
'मलिया क पूतवा गरबवा से मातल
माला काहें ना ले अउवें तूँ
बेइलिया तरवाँ ना।'
'आजू का राति छिमा करिहऽ सीतलि मइया !
होत भिन्सार माला हम ली के आइब
ए बेइलिया तरवाँ ना।'

ए तरे ए गीत में आगे बजाज से दवनी, पटहेरा से सेनुर–ओनुर ना ले
क ओरहन दिहल गइल बा। सभ आपन भूल-चूक बदे क्षमा माँगत बा।
देवे के जरूरत मातृशक्ति का काहें परलि ? अपना गरब-मातलि संतान
देखि के। एगो बेइलि क पेड़ ए स्वारथी संसार का बगइचा में बेरस-
क हो गइल बा। फेरु ए छूँछा तोके के पूछा ? ओ दुरदिन क मारल,
शाखल फेड़ के सभ अनगराहित बनवले बा। भारतीय महतारीपना का
स्वारथ क ई बेवहार नइखे सोहात। दुरुगा माई अपना अनगराहिते संतान
क्हरत बाड़ी। ओहिजा उनुकरा पूजा–पाठ का सर–सामान क जोगाड़
हो पावत। ई मतंग समाज एगो दीन–हीन का ओरां फूटहियो आँखि से ताके
नइखे। भगवती जगदम्मा ओही दीन-हीन किहाँ ठहरि के ओके तीहा आ
देत बाड़ी आ अउरी सभ के ए अमानवीय बेवहार बदे दुतकारत-धिधिकारत
। ई उकठल बेइलि क फेड़ हमरा मानव–समाज क दुरदिन क सतावल
बेकति ह जेवना से मदाइल, लोभी–ओभी परानिन का कवनो भाँति क
बधे क आसरा आ टिसुना नइखे रहि गइल। मदाइल आदमिन से पुन्नो
में सहयोग क आसरा ना राखे के चाहीं। उनकर मति मराइल रहे ले।
के सिंह–बाघ पर असवार होखेवाली जगदम्मे ठिकाने ले आ सकेली।
क शक्ति भारतीय समाज के एक ठावें बटोरे में सभले अधिका काम देले।

भोजपुरी संस्कृति मिलल–जुलल, लमहर–चाकर परिवार का पक्ष क
ह। बिलाइती फेमली में खाली मियाँ–बीबी क पइसार ह। अपना लइका–
से सकदमे ह। भारतीय परिवार एकरा ले उलटा ह। एहिजा मियाँ–
के निलज–निघरघट दरमेर ना ह। ई मरद–मेहरारू का प्रणय क पोखरा ना
ह, ई त भाइन का प्रेम–प्रीति क लहरात पारावार ह। भारतीय परिवार क
रूप भोजपुरिहा परिवार ह। ए परिवार में आजा–आजी, माता–पिता,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

काका–काकी, जेठ–जेठानी, देवर–देवरानी, बेटा–बेटी, भतीजा–भतीजी, नाती, बहिनि–फूआ अउरी एकदम नजदीक क नाता–गोता ह। एकरा भाई–भयवद आ हीत–नरीत चारू ओरां ले एके छपले हउवन। परिवार बेकति एगो–दूसरा के आपन बूझेला आ ओकरा संतिर मरे–जरे खातिर हो सजग रहेला। ए परिवार में संगे-सगे सुख-दुख क भोग होला। एही बेवस्था का धरती पर ठाढ़ होइ के 'वसुधैव कुटुम्बकम्' क आदर्श चरितार्थ क उतजोग ह। भोजपुरिया संस्कृति के निबाहे वाला भोजपुरी परिवार चवका स्वारथ का धुरी पर ना घूमे; परार्थ का धुरी पर ठाट से घूमत रहे परिवार का हर बेकति क हित साथ-साथ सोचाला। भोजपुरिहा भेहराह भगवती जगदम्मा से सगरो परिवार का जय-जीवन बदे मनौती-विनती करेला–

मइया जै जै बोली ना।
अगवरवाँ खड़ी मइया ! जै जै बोलीं ना।
पिछवरवाँ खड़ी मइया ! जै जै बोलीं ना।
जै जै बोलत महल में पइठीं, जै जै बोलीं ना।
बाबा जी का पगरियाँ, मइया, जै जै बोलीं ना।
आजी का अँचरवाँ, मइया, जै जै बोलीं ना।
बाबू जी का पगरियाँ, मइया, जै जै बोलीं ना।
माई जी का अँचरवाँ, मइया, जै जै बोलीं ना।
हमरा भसुर का पगरियाँ, मइया, जै जै बोलीं ना।
हमरा जेठानी का अँचरवाँ, मइया, जै जै बोलीं ना।
हमरा देवर का पगरियाँ, मइया, जै जै बोलीं ना।
देवरानी का अँचरवाँ, मइया, जै जै बोलीं ना।

ए तरे भगवती जगदम्मा से अपना परिवार का सभे बेद जय क विनती कइल जाले। भोजपुरिहा परिवार में अपने सुख से सुखी रहे क तइयार डालल जाले बलुक सभकर हित का पाछे अपनो हित क सोचान क रपटा कइल जाला। जेकरा भोजपुरिया संस्कृति क मरम समझे के होखे ऊ भोजपुरिया त्योहारी लोक गीतन क मन लगाइ के पढगीत कइ लेउ। हमरा बिसवास कि ऊ भोजपुरिया संस्कृति का सक्ती-सवाद से पुरहर अघा जाई। भोजपुरिया त्योहारी लोक गीतन में भोजपुरिया संस्कृति क गूढ़ मरम समझे-बूझे बदे हम छोट-मोट उतजोग कइल गइल ह जेवना में कि दुइ-चार गो गीतन पर ए बेरा बिचार कइल गइल ह।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माफ करीं, शॉर्टेज बा

—डॉ० शंकर मुनि राय 'गड़बड़'

ई हमार देश ह—भारत। धरम-प्रधान देश। धरम के चलते एहिजा [illegible] हो जाव, मंजूर बा। एहिजा धरमे खातिर जीअल जाला, धरमे खातिर [illegible] जाला। केहू मारल चाहऽता, त मार के अपना मन के मुरुचा मेटा लेव। [illegible]र धरम मत छोड़ाओ। उजड़ जइहें तवन कबूल, बिला जइहें तवन मंजूर, [illegible]र धरम में नरम ना पाइब। पानी पर मरेवाला देश ह ई। एकरे पर [illegible] पाम्हल बा।

धरम ना त धरती ना। ई देश ह, जवन धरम खातिर अधरमो करे में [illegible] बिहुंके। एहिजा के लोग जूझ मरी, कट मरी, मार के घवाहिल क दीही, [illegible] पर लाश बिछा दीही, खानदान डुबा दीही, मेहरारुन के माँग धो दीही, कोरा [illegible] के लइका पर बनूक चला दीही, लइकिन के झोंटा ध के लसार दिही, इनार में [illegible] दीही, कुइयां में ढकेल दिही, पेट गिरवा दीही—बाकिर आपन धरम ना [illegible]ही। बाप-दादा एक बेर जवन कह दीहल, तवन कह दीहल। ओकरा में [illegible] फेर-बदल ना होई। ई मरदाना के देश ह। आ कहल बा कि मरदाना [illegible] एक जबान। इहे आपन रीत ह, रिवाज ह, परम्परा ह, संस्कृति ह। विस्वास [illegible] 'अयोध्याकांड' पढ़ीं, ओह में लिखल बा—'प्रान जाहु पर बचन ना जाई।'

एह देश में सबकर पूजा होला—चाहे साकार होखो भा निराकार, [illegible] होखो भा सरकार। ईंट से लेके पीठ तक के पूजा एहिजे मिली। आ [illegible]-पूजा खातिर त एह भारत में महाभारत तक हो जाला। चिहाईं मंत, [illegible] मत, ई परोपकारी देश ह। दोसरा खातिर जान हाजिर बा, कूबत होखे [illegible] आजमा के देख लिहीं; टेट खोलीं। का बोलब रउआ जी? खिस्सा ह जे [illegible] ना कउड़ी बाजार करे छँउड़ी। चलल बानी परोपकार देखे, जाके ऐनक [illegible] आपन भेख देखीं ना।

बारे ई ऊहे देश ह, जहाँ पहिले मंदिर में दिआ बराला। घर में अन्हार [illegible] त रहो, केहू बेमार बा त मर जाव, बाकिर पूजा में बिघिन मत डालो, खिस्सा ह [illegible] पहिले पूजा, बाद में दूजा। आपन बिलाता त बिलाए दीं, दोसरा के बचे के

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha. Courtesy: Jagadguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

चाहीं। हमरा घर में कुकुर मूतो भा बिलार हगो, केहू के का परे। हम घर-मंदिर खातिर जान देबे में कोर-कसर करीं त कहीं ?

ऊ अपना महजिद में धोड़ा बान्हस चाहे गदहा, केहू के का परे। महजिद एहिजा खाली अदिमिए खातिर ना बनेला, मालो-मवेशी खातिर इहे हमनी के धरम ह। एकरे के परोपकार कहल जाला। मानस पढ़ीं। बा—'परहित सरिस धरम नहिं भाई।'

ई देश ह भारत, जहां के लोग दोसरा के तकलीफ में देख के रोवे देला, सुख में देख के चिहा जाला। ई दोखारल गुन एहिजे मिली। केहू मिली, आँख डबडबा जाई, घेंघ बईठ जाई—भोंकार छूट जाई। हँसत उछड़ परी, मटकी मार दोही, लोर पोंछ लिही। तनिके में रंग बदल ई देश ह जहाँ भिखमंगा गावेला, नाचेला, बजावेला आ सेठ-साहूकार रोवेला, डेराला, दांत चिअरले रहेला। खिस्सा ह जे देखा-देखी पाप, देखा-देखी पून। एहिजा सब कुछ देखा-देखी होला, नीक होखो भा जबून।

ई महान देश ह। एहिजा सब कुछ बिकाऊ बा, पइसा चाहीं; का एहिजा। राम एहिजे रहीम एहिजे, कृष्ण एहिजे, करीम एहिजे, कबीर नानक, दाद, रैदास का चाहीं रउआ के! मंदिर, महजिद, गुरुद्वारा सब खाड़ा बा, बिकाऊ बा। आई कीन लीहीं, चटकवाहिए रहे। धरम बा, बा, करम बा, कुरसी बा, गुन बा, कनन बा, का चाहीं ? एँ! का मँगनी ह? नैतिकता ? माफ करीं, ना मिली, शॉर्टेज बा।

शासकीय महाविद्यालय, जोबट, झाबुआ (मध्य प्रदेश)—४५७६६

भोजपुरी के छमाही पत्रिका

'बयार'

प्रवेशांक १५ अगस्त १९९७ के निकली।
आगे के अंक कहानी-विशेषांक होई।
लेखक लोग से रचना भेजे के निहोरा बा।

भगवान सिंह 'भास्कर'
सम्पादक 'बयार'
लखरांव, सीवान—८४१२२६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'एक से एक' –एक नजर में

—सुनील कुमार पाठक

[पुस्तक - एक से एक (हाइकु-संग्रह)। संपादक—डॉ० रसिक बिहारी 'निर्भीक'। प्रकाशक–भोजपुरी साहित्य परिषद्, जमशेदपुर। संस्करण—पहिला, १९९६।]

भोजपुरी में हाइकु के चउथकी किताब 'एक से एक' के प्रकाशन भोजपुरी साहित्य परिषद्, जमशेदपुर से जून, 1995 में भइल बा। एकर संपादक बानी—भोजपुरी के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक'। एह संकलन में सात-गो कवियन के कुल 400 (चार सौ) हाइकु संगृहीत बाड़े सन। एह कवियन में अधिकतर भोजपुरी के सुपरिचित हस्ताक्षर बाड़े।

एह संकलन के 'ई एक से एक' नामनी अपना भूमिका में डॉ० 'निर्भीक' जी कहले बानी—'संग्रह के हर रचनाकार के एक तरह के, भा एक वर्ग के छितराइल रचना के लगातार एक साथे राखि दिहल गइल बा। मुख्य वर्ग सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, दार्शनिक आ विविध (नीतिपरक, उक्तिसूक्तिपरक, मिथकीय, संकेतात्मक आदि) बा।' अर्थात् ई रचनाकार सब जीवन आ जगत् के लगभग हर पक्ष के, अपना हाइकुअन के जरिये छुए के कोसिस कइले बा लोग। 'एक से एक' के हाइकुअन के पढ़ला के बाद 'निर्भीक' जी के एह दावा में बहुत कुछ सच्चाई नजर आवत बा। हाइकु के प्रकृतिपरकता से जुड़ल कुछ नमूना देखे लायक बा—

(क) जोन्ही आकाशे
मोतीलर टूटल
इन्द्र-परी के।
—रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक'

(ख) सूर्य किरिन
आदिवासी के तीर
गर्मी के दिन।
—रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक'

(ग) संझा-पराती
झूम-झूम गावे
बरखा रानी।
—धर्मनाथ ओझा

(घ) घाटा घहरे
बरिसे झमाझम
होरी निहाल।
—जयबहादुर सिंह

(ङ) धूप चादर
ओढ़ले पारबती
रूबी के कोट।
—मनोकामना सिंह 'अजय'

'एक से एक' के हाइकुअन में सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियन पर भी खूब बेबाकी से टिप्पणी कइल गइल बा। सामाजिक व्यवस्था में घुसल 'दहेज' के बुराई के प्रति लगभग सब हाइकुकार सजग बाड़ें। समाज के चेतावत, ई आपन

FaiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-C

बात, बड़ा मजिगर आ मारक रूप में रखले वाड़े। कुछ बानगी देखे सकत बा—

(क) दुलहीनें के
मानीं दहेज, छोड़ीं
दहेज लेल।
—अजय कुमार ओझा

(ख) शुभ बिआह
वर के घर भरे
जनक मरे।
– मनोकामना सिंह 'अजय'

(ग) बढ़ते आवे
दहेज के दैत्य
तराह मचे।
—गंगा प्रसाद

(घ) विचित्र देश
भारतवर्ष, जहाँ
बेटा बेचाले।
—जयबहादुर सिंह

(ङ) बेटा के बाप
बाटे ई मूलधन
बाप के बेटा।
—रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक'

(च) बेल किनके
तिलक आ
बेटा बेचत।
– शिवकुमार

साम्प्रदायिक उन्माद, राजनीतिक बेहयाई, नैतिक दोगलापन, सामाजिक जीवन में गिरावट—एह सब के प्रति 'एक से एक' के हाइकुकारन के स्वर में, बड़ा तल्खी भरल बा—

(क) फँस गइल
राजनीतिज्ञ दल
द-ल, द-ल में।
—शिवकांत ओझा

(ख) जनवादी सोचल
पीअल
मुर्गा टाँग नोचल।
(सेनरयू)-गंगा प्र० 'अरुण'

(ग) विष पिअत
सभे शंकर
अपना देश
—मनोकामना सिंह

संकलन के अधिकांश हाइकुअन में, समय के साथे-साथे चले के, 'करेन्ट' राखे के, कोशिश भइल बा। एही क्रम में, एह संग्रह के अधिकांश हाइकुअन में देश में सत्तारूढ़ संयुक्त मोर्चा के सरकार के प्रति, खफाई स्पष्ट रूप से, देखे मिलत बा। इहाँ ई बात गौर करे लायक बा कि ई हाइकुकार-सब, कहीं-ना-कहीं एह देश के एगो राजनीतिक दल-विशेष के विचार के प्रति, आपन सहमति आ सुझाव देखावत, साफ तरे लउकत बा लोग।

कवनो भी तरह के कविता भा साहित्य के, राजनीतिक नारावाजी आ एकतरफा सोच से परहेज करे के चाहीं; बाकिर, ई बात एह संग्रह में देखे के खातिर मिलत। सब कवि आपन-आपन भड़ाँस एकदम खोलि के सामने रख दिहले बाड़े। जवना के चलते उनकरा रचना में कविता के आत्म-स्वर कम, राजनीतिक नारा के शोर ज्यादा सुनाई पड़त बा—

(क) जनता दल
जात-पाँत के नाम
बाटे कलंक।
—शिवकांत ओझा

(ख) मोर्चा शासन
पशु-हवाला कांड
पर्दा खातिर।
—शिवकान्त ओझा

(ग) सिद्धांत छोड़
साँठ-गाँठ कर के
राज चलाव।
—धर्मनाथ ओझा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ङ) बहुसंख्यक
भाड़े जासु, पुजाई
अल्पसंख्यक।
—जयबहादुर सिंह

(च) बिलार भागे
टूटल सिकहरा
राज मोर्चा के।
—अजय कुमार ओझा

संयुक्त मोर्चा
अन्तर्विरोध भुला
शामिल होई।
—जयबहादुर सिंह

डॉ० सत्यपाल चुघजी लिखले बानी कि 'हाइकु पिण्ड में ब्रह्मांड या वामन चरण के व्यापकतम के समाहार की बान लिए होता है और यह बिना संयम के संभव नहीं। इसके लिए, विशिष्ट चयन में समर्थ दृष्टि और भी जरूरी शब्द एवं भाव की संयम-साधना की परिपूर्ण मितव्ययिता और छोटे मुँह से बात कहने की मूल्यवत्ता ही हाइकु के महत्त्व को बढ़ाते हैं।' डॉ० चुघ साहब तरह के संयम-साधना आ अभ्यास के चर्चा अपना एह कथन में कइले बानी, अभाव बहुत-कुछ 'एक से एक' के हाइकुकारन में देखे के मिलत बा। ई बात बा कि डॉ० 'निर्भीक', श्री 'अरुण' आ श्री 'अजय' के कुछ हाइकु, हमरा कथन के अपवाद हो सकत बाड़े सन। भोजपुरी लोकोक्ति आ कहावतन के प्रयोग में प्रयोग, कवनो गड़बड़ बात नइखे; बाकिर ओकनिये के हाइकु के में सजा देवे के काबिलियत, हाइकु के साथ मजाक मानल जाई; जइसे—

(ख) ओठ प तेल
गाछ पर कटहर
हवाई किला।
—जयबहादुर सिंह

(ग) बानर जानी
का अंदरख-स्वाद
मुरख जीव।
—अजय कुमार ओझा

कहेला लोग
गरीब के औरत
गाँव के भाभी।
—धर्मनाथ

प्रतीकात्मकता हाइकु विधा के प्राण ह। 'एक से एक' के हाइकुअन में, भी प्रतीकात्मक अभिव्यंजना आ बिम्बधर्मिता के प्रधानता मिलल बा; ऊहाँ के हुलास देखे लायक बाटे—

(ख) उड़े अबीर
देवन के होली ह
पूर्ब के लाली।
—रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

उधो उधारी
समय के फेरा में
माधो मदारी।
—गंगा प्रसाद 'अरुण'

अभिधा में बात कहल उत्तम काव्य के निशानी ह जरूर; बाकिर 'राग' 'रमणीयता' त कविता खातिर जरूरी तत्त्व हटे नू। एह संग्रह के कुछ हाइकु कथन बाड़न सं, जवनन में कविता कवना कोना लुकाइल बिया, दिया लेके खोजे के पड़ी; जइसे—

(ख) रात-दिन
मानल प्रतीक बा
दुख-सुख के।
—अजय कुमार ओझा

ताजमहल
भारत के शान ह
बाटे अजूबा।
—अजय कुमार ओझा

FaiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

कुछ हाइकुअन में 'निर्भीक' जी के भी डाक्टरी सुझाव देखे लायक हैं।

(क) भोजन बाद
लीं दिन में विश्राम
रात में घूमीं।

(ख) कम खोराक
सबेरे में घूमल
स्वास्थ के राज।

व्यंग्य, हाइकु-विधा में ना फबे; बाकिर भोजपुरी हाइकुकार-सब एह 'फार्म' में आपन व्यंग्य के धार आउरो तेज आ चमकदार बनावे में सफल भइल लोग। 'एक-से-एक' के भी हाइकुअन में व्यंग्य के नुकीलापन देखे लायक बा—

(क) ऊहे सफल
जे समझौता करे
राजनीति में।
—धर्मनाथ

(ख) आज के युवा
उमिर जवानी के
जोस बुढ़ापा।
—जयबहादुर सिंह

(ग) बरसत बा
हथियार देखीं न
उदार नीति।
—मनोकामना सिंह 'भ

संग्रह के कुछ विशुद्ध हास्य से भरल हाइकु मन के गुदगुदावे में सफल सन, यथा—

(क) रक्षामंत्री देश के
कड़ा ना
मुलायम भइल।
—धर्मनाथ

(ख) गनना बनो
बर-कनिया के ना,
सासु-बहु के।
—रसिकविहारी ओझा 'निर्भीक'

हाइकु अपना शिल्प में जेतने सघन विधा ह, अपना विषय में ओतने व्यापक भी हटे। एकरा एह व्यापकता में जीवन आ जगत् के सगरी अनुभूति, आ कल्पना समा जाले। बस, जरूरत एह बात के होला कि एह सब चीजन के प्रभावपूर्ण ढंग से भावात्मक भाषा में रचल-परोसल जाव। शब्द के साथे-साथे आ विचार के उद्घाटन में भी तारतम्य आ लयात्मकता हाइकु विधा खोजेला। हाइकु, खाँटी अनुभूति आ महीन आवेगन के कविता हीय। अपना 'नेवतन' के भूमिका में हम ई निवेदित कइले रहलीं कि छन के 'जरिये, छने में; मन के देवेवाली आ छाँय-दे लागियो जायेवाली-दूनो तरह-के भूमिका में हाइकु विधा सध बिया। 'एक-से-एक' के कुछ हाइकु जरूर एह कसौटी पर सफल वाड़े सें; बाकिर ज्यादातर हाइकुअन में शब्द आ भाव-साधना के लगन आ गहराई पुरहर रूप नइखे मिलत। साँच पूछल जाव, त एह संकलन में विषयगत विविधता से भरल हाइकुअन के एक-पर-एक लदाई जरूर भइल बा; बाकिर ऊ अपना काव्यगत सुघरई में एक-से-एक' नइखन सन उतर सकल।

□ सूचना आ जनसम्पर्क पदाधिकारी, [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रिका प्रायोजक मंडल

नारायण सिंह (मुख्य प्रायोजक) : पाण्डेय कपिल : नागेन्द्र प्रसाद सिंह : प्रो० किशोर : डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' : आचार्य विश्वनाथ सिंह : कृष्णानन्द : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : करुणानिधान केशव : शैल वर्मा : बी० एन० सिंह : डॉ० प्रभुनाथ सिंह : डॉ० व्रजभूषण मिश्र : जगन्नाथ : (भोजपुरी साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान) वोकारो : विन्ध्याचल प्रसाद वास्तव : डॉ० शत्रुघ्न सिंह : भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना : डॉ० वसन्त : जनार्दन प्रसाद : आनन्द सन्धिदूत : शत्रुघ्न सिंह : जगदीश सहाय : डॉ० शम्भुशरण : पाण्डेय सुरेन्द्र : उर्मिला पाठक : डॉ० धीरज कुमार चार्य : शिवनन्दन प्रसाद 'हर्षवर्धन' : पी० चन्द्रविनोद : राजेश कुमार : माधव सिंह : रामबाबू प्रसाद : आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत : राजनारायण : अतुल कुमार : गीता देवी : बब्बन सिंह : कुसुम सिंह : सुशीला पाण्डेय : प्रेस, पटना : शांति कुमारी : रामअयोध्या तिवारी : दण्डिस्वामी नन्द सरस्वती : प्रो० रामेश्वर राय : प्रो० उमाकान्त वर्मा : सूर्यदेव पाठक : शालिग्राम माधव : मोती बी०ए० : डॉ० रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव : सिन्हा : निशान्तकेतु श्याम : भोला प्रसाद 'आग्नेय' : गरिमा बन्धु : प्रसाद सिंह : हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' : प्रो० रामेश्वर नाथ तिवारी : दीक्षित : डॉ० राजेश्वरी शाण्डिल्य : डॉ० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी : डॉ० उषा : चन्द्रदेव पाठक 'सुधाकर' : सुरेश कांटक : पी० नीरजनयन : दयाशंकर : सरिता शिवम् : हरिनारायण 'हरीश' : श्रीहरि मिश्र : सत्येन्द्र नारायण : दीप्ति : अजय कुमार ओझा : इनरपरी देवी (बेला शर्मा टोला) : पाण्डेय : रामाश्रय सिंह 'नीरव' : जगतनारायण प्रसाद : लेजर प्रिंटर, : डॉ० कपिलदेव सिंह : डॉ० चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' : नरेन्द्र रस्तोगी : चन्द्रशेखर मौर्य : महामाया प्रसाद 'विनोद' : व्यास मिश्र : डॉ० अशोक : हरिचरण राम : डॉ० प्रभुनारायण विद्यार्थी : श्री दीनानाथ पाण्डेय : कविता सौरभ : डॉ० एम० एम० पी० श्रीवास्तव : डॉ० चित्तरंजन प्रसाद : राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता : डॉ० विवेकी राय : रामाधार ओझा 'तुच्छ' : भगवतीशरण मिश्र, : नरेन्द्र प्रसाद 'नवीन' : अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे' : उदय : वरमेश्वर सिंह : हरिहर नाथ पाण्डेय : शारदानन्द प्रसाद : प्रसाद : भगवान सिंह 'भास्कर' : देवसुन्दर पाण्डेय 'व्याकुल' : आवुन : प्रियरजन गोपाल : सन्त कुमार : अणिमा श्रीवास्तव : गगा प्रसाद : जय बहादुर सिंह : डॉ० जौहर शफियाबादी : डॉ० शालिग्राम शुक्ल

PaiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

R.N.I. Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. PT.—

दशहरा-दीवाली के शुभ अवसर पर
भोजपुरी के पाठक खातिर विशेष उपहार

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

के

कहानी विशेषांक

(अक्तूबर-नवम्बर, १९९७)

संभावित कथाकार

पाण्डेय सुरेन्द्र, प्रो० ब्रजकिशोर, डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डे
पी० चन्द्रविनोद, विक्रमा प्रसाद, कृष्णानन्द कृष्ण, भगवती
प्रसाद द्विवेदी, सुरेश कांटक, रामलखन विद्यार्थी, नरेन्द्र
रस्तोगी 'मशरक', डॉ० उषा वर्मा, बरमेश्वर सिंह, आदि

एकरा अंलावे
समकालीन भोजपुरी कहानी पर मूल्यांकनपरक लेख

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से
पाण्डेय कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, कदमकुआं
पटना-८०००२४ (दूरभाष : २६११३४) से प्रकाशित, आउर पाण्डेय कपिल
द्वारा कर्मा प्रेस, बुद्ध मार्ग, पटना-१ (दूरभाष : २३२७८०) में मुद्रित

सम्पादक—पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

अप्रैल-मई १९९३

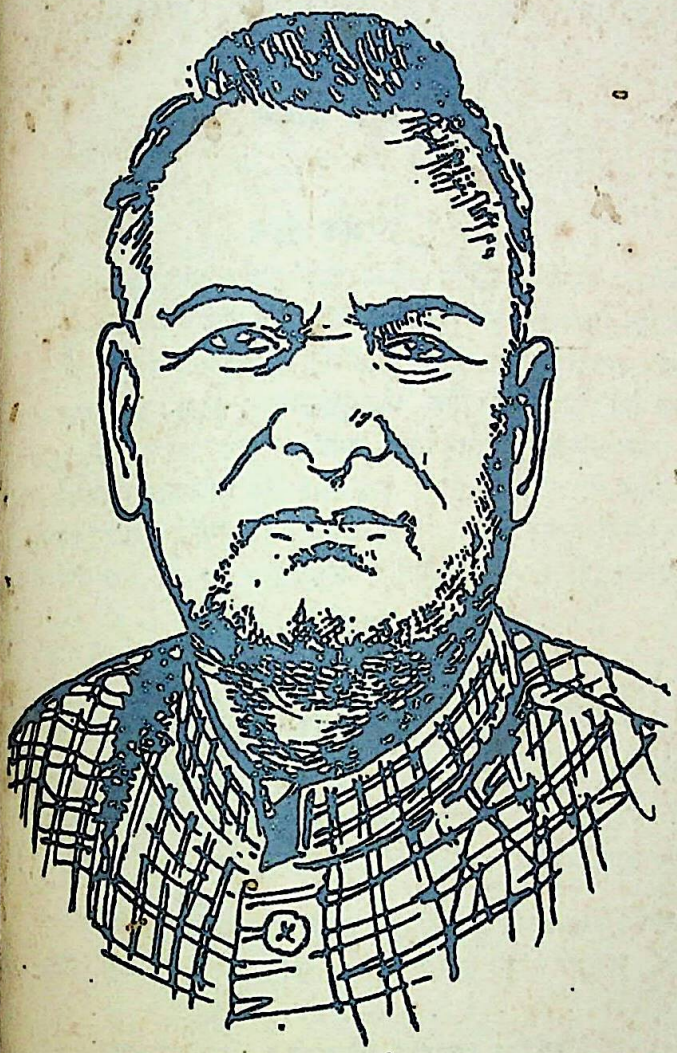

राहुल सांकृत्यायन भोजपुरी रचनावली विशेषांक-१

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE, G

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)

अप्रैल-मई १९९३

परामर्श-मण्डल

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय : श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय
पं० गणेश चौबे : आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ विद्यानिवास मिश्र
श्री मोती बी० ए०

मुख्य संरक्षक

श्री सत्यनारायण सिंह

संरक्षक मंडल

पाण्डेय कपिल : नगेन्द्र प्रसाद सिंह : प्रो ब्रजकिशोर, डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' : उ
विश्वनाथ सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण : डॉ० रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' : करुणानिधि
: शैल वर्मा : जगन्नाथ : रंगश्री (भोजपुरी साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान) बोकारो : दि
प्रसाद श्रीवास्तव : डा० शत्रुघ्न सिंह : भोजपुरी संस्थान, पटना : डॉ० वसन्त कुमार :
प्रसाद : आनन्द सन्धिदूत : शत्रुघ्न सिंह : जगदीश सहाय 'असीम' : डॉ. शंभुशरण :
सुरेन्द्र : उर्मिला पाठक : डॉ० धीरज कुमार भट्टाचार्य : शिवनन्दन प्रसाद हर्षवर्धन
चन्द्रविनोद : राजेश कुमार : रूपश्री : माधव सिंह : रामबाबू प्रसाद : आचार्य श्रद्धानन्द
: राजनारायण दीक्षित : अतुल कुमार : गीता देवी

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' : डॉ० शम्भुशरण, नगेन्द्र प्रसाद
जगन्नाथ : कृष्णानन्द कृष्ण : विपिन बिहारी चौधरी : भगवती प्रसाद द्विवेदी :
सिंह : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र

दाम–एक अंक के तीन रुपया/साल-भर के तीस रुपया
सम्मेलन-सदस्य खातिर साल-भर के रियायती दाम बीस रुपया
एह विशेषांक के दाम–दस रुपया

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

इन्द्रपुरी, पटना-८०००२३
(दूरभाष : २६११३४)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेहरारुन के दुरदसा

नाटक — राहुल सांकृत्यान

नाटक के खेलाड़ी

1. लछिमी	मुखिया लइकी
2. जसोदरा	लछिमी के सखी
3. सीता	लछिमी के सखी
4. रामकली	लछिमी के मतारी
5. सूखा	गाँव भर के फूआ
6. उधो परसाद	लछिमी के भाई
7. रामलेखावन लाल	बुरबक दुलहा
8. फरगुद्दी उपधिया	बुरबक दुलहा

अंक 1

(गीत गावल जाति-आ)

एके माईबपवा से एक ही उदरवा में,
दूनो के जनमवाँ भइल, रे पुरुखवा।
पूतके जनमवा में नाच आ सोहर होला,
बेटि के जनम परे सोग, रे पुरुखवा॥१॥
धनवा धरतिया प बेटवा के हक होला,
बिटिया के किछुवो ना हक, रे पुरुखवा।
मरदा के खइला-कमइला के रहता बा,
तिरिया के लागेला केवाड़ रे पुरुखवा॥२॥
खेवे के रणपवा जिनिगिया भर परी ओके,
लइकें जे मरदा मुअल, रे पुरुखवा।
तिरिया के मुवले त बतिये कवन पूछा,
जिअते सवतिया ले आवे, रे पुरुखवा॥३॥
अँखियै के देखतै पतुरिया ले रखले बा,
मार-गारी देला दिन-रात, रे पुरुखवा।
ओहि रे खसुरवा मरदवा के किछु नाहीं,
तिरिया के भकसी झोंकावे, रे पुरुखवा॥४॥

(लछिमी, लछिमी, जसोदरा तीनिगो जुवान लइकी बइठि के बतियावत बाड़ी)

लछिमी-जसोदरी! आज त तोर गोड़े धरती पर नइखे पड़त?

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जसोदरा—भतीजा भइल ह नु सीता! तु नइखू जानत? भइया के तीनिगो बेटा रहली सनू, से आज घर में बेटा भइला से माई के खुसिहाली के त पुछबे मति करीं।

लछिमी—आ तोहरा खुसिहाली के देखि के त बुझात-आ जसोदरा! जनु तीनों बेटा राज तोहरे के मिलि गइल ह।

जसोदरा—भतीजा नु भइल ह लछिमी बहिन!

लछिमी—आ तीनों भतिजिया जब भइल रहलीं तब्बो एइसने खुसिहाली भइल रहे? तोहरा घर मे सोहर गवाइल रहै?

जसोदरा—तू कौनो आन मुलुक से आइल बाड़ू दीदी! बेटी के जनमला पर ना गवाला।

लछिमी—मेहरारू के जनमला पर सोहर ना गवाला, खुसिहाली ना मनावल जाला, उलटे घर भर पर सोग उदासी छा जाला, मालूम होला जनु घर के केहू मरि गइल बा। के जनमला पर, ई सोहर, ई नाच, ई बाजा-गाजा! जसोदरा! तोहरा कब्बो मन मे ना आइल बेटा-बेटी भै मरद-मेहरारू के ई दु आँख से देखल जाला।

जसोदरा—इहै सनातन से चलि आइल बा दीदी!

लछिमी—सनातन से चलि आइल रहै सत्ती होखल। सौ बरिस भइल ह, बस्ति त बड़का जाति में—एक जनमियाँ में—सौ गो बेवा में दसे-बारहगो जीयै पावत रहली, बाकी आगि में झोंकारि के मुवा दीहल जात रहलीं। साल में एक-एक गाँव में दस-बीस बो जियते जरावल जायँ। देस भर में हर साले दस लाख से कम मेहरारू न जरावल जायँ।

जसोदरा—दस लाख दीदी!

लछिमी—आ पनरह सौ बरिस ले सत्ती के नावें मेहरारू जरावल जात रहली, लगावा कै करोड़ कै लाख हमनी के जाति के मेहरारू मुवाइल गइलीं।

जसोदरा—दस लाख के हिसाबे डेढ़ अरब आ एको लाख मानल जाये त पनरह करोड़ भइलीं दीदी?

लछिमी—सत्ती मति कहा जसोदरा बबुनी! अदिमी के आगि में जरावे के कैसन हिम्मत धइले रहल ई मरद लोग।

जसोदरा—लछिमी दीदी! लोग कहत-आ कि अपना खुसी से मेहरारू आग में जरि जाय

लछिमी—कब्बो भउर पर गोड़ परल बा जसोदरा बबुनी!

जसोदरा—एक बेर कराही में पूड़ी डारे में घिउ उछरि परल रहे दीदी! एही दरद में। आलू पीसिके बान्हल गइल, केतना-केतना दवाई कइल गइल। आजो ऊ दुख मन परे आँख में लोरि आवे ले दीदी!

लछिमी—दुख दरद के समुझावें के होला, त कहल जाला, "देही मे आग लागल बा" "करेजा में आगि लागल बा"। आगि लगला से बेसी दूसर दरद नइखे। अजानै बिख दै के मुवा में अदिमी के किछु ना बुझाई, मुदा पुरुख जाति हमनी के मुवावै खातिर बिख कै हिंहत का कइले।

सीता—ऊ चहले दीदी! कि जौना तरे से बेसी से बेसी तकलीफ होय, ओहि तरे से मुवा के मुवावै के चाही। बिख से भै तरुवार से दु-टुक काटि देहला में ऊ दुख ना नु होवे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जसोदरा—ये सीता दीदी! ई त सोरहो आना कसैपन रहल हा।

सीमी—जसोदरा बबुनी! हिनुतान के पुरुख जाति के गुन गावे बखत ई मन में रखिहा, कि जे डेढ़ अरब मेहरारुन के सबले निधिन, सबले बाउर, सबले सासत के मौवत हु ओमया ह जे डेढ़ अरब मेहरारुन के हतिया एही मरद लोग के गरदन पर बा।

सीता—आ देखावे खातिर पोथी में लिखि देलन् कि बच्चा आ मेहरारू के ना मारे के। ऊ मुद्दा मारि के बिलाई भइलीं भगतिन" इहै कहाला।

सीमी—तोहरा भतीजा से हमरा के कौनो दुसमनागत नइखे जसोदरा बबुनी! बाकी जब के बखत सोग मना के बेटा के बखत सोहर गावे के मेहरारू एखट्टा होलीं, त हमरा बूझि डेढ़ अरब मेहरारुन के आग में झोंकारि के मुआला के बधावा हमनी गावतानी।

सीता—लछिमी बहिन! हमरा मन परत-आ कराही के घिउआ से आपन हाथ जरला के डेढ़ अरब मेहरारुन के छटपटा छटपटा मूअल।

सीमी—जेकरा चारो ओर मरद डंडा लेहले खड़ा रहें, कि जे आखिर बेर कतहूं जिउ बचावे त ओके भगहू के ठौंव ना मिले।

सीमी—ऊ काहेके कहत बाडू सीता! अवहिनो केतना जाति में लइकिन के जनमतै मुवा राज, हां, आगि में झोंकारि के ना! मरदा करौवा के हाथ में होइत त ऊ उहै करित, बाकी मेहरारू से लेल जात-आ, मरद कसाई मेहरारू के कसाई बनावत-आ। सोचा मतारी के जनु-पंछी में ऐसन मतारी मिलल दुरलभ बा, जे अपना बच्चा के मुवावत देखी।

जसोदरा—आ मेहरारू बेटी के अपने हाथे मुवावेले?

सीमी—हां, बबुनी! बाकी परवस परिके। मरद के राज हवै, मरद कै हुकुम ना मनला से छुटकारा कैसे होई? एही खातिर मेहरारू आपन दयामया छाड़ि के जनमतै बेटी के मुआ मुवावे में तनी छोहि देखावै ले, आगि में ना जरा के नून भै खैनी चंटा देले, चाहे नार मुंह धै देले, जौना से साँस बन्न होके बचिया मर जाये। एकरा साथे दु-चार बुन्न लोरो बहाई।

जसोदरा—घर कै मेहरारू ऐसन होई, ई हमरा बिसवास न रहल ह दीदी!

सीमी—मुदा ई मेहरारू कै मतारीपन छोड़ावल पुरुख कै काम ह, जसोदरा! आज के मेहरारू के हाथ-गोड़ बान्हि के मरद के समने पटकि दीहल गइल बा। ओकर आपन बस।

सीता—धरम करम कै पोथी समुच्चा मरद के बनावल हा, जौना में मरद लोग हमनी के हतिं हुनि के कलम चलौले बा। ई त सात समुन्दर पार से दूसर जाति के लोग, आइल, जे हियतै मेहरारू के जारल—बन्द कइलस्। जमनतै बिटिया के मुअब हूँ के रौके-थामै के भइल बा, तौनो पर कतहूँ कतहूँ ऊ चलि रहल बा। पोथी-पतरा के धरम कै चलल जाजि ले सत्तो ना बंद भइल होइत।

जसोदरा—सबसे बेसी धरम-करम हमनिये करी ले। हमनी एतना बरत-उपास ना केहू करे, कामन के दान केहु देय।

सीमी—दु अच्छर जे पढ़ै के मिलल बा जसोदरा! इहौ पोथी में बरजित हा। अबहूँ देखा मे इहगो पढ़ावल जालीं।

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

सीता—लइकन के पढ़ावै में करजा-कुवाम करेके बाप लोग तयार रहेला, बाकी पढ़ावे में कानियो कौड़ी खरच कइल जबूनै बुझाला। कहैला लोग कि का ई पढ़ि के होइहैं।

जसोदरा—सीता दीदी! जे हमनी के बेटा लेखा पढ़े कै सुविहिता होइत, आ मोका कै मोका मिलित, त हमनी केहू से पाछै ना रहतीं दीदी!

लछिमी—ई सौंच हा बबुनी! बाकी जब ले बेटवन के भइला में सोहर गाके सोर काटब, तब ले कौनो मोका न मिली। ई त किछु बाबू भइया लोग जे पढ़ावत-आ, ओहू में दूसरै मतलब बा।

जसोदरा—कवन मतलब बा दिदिया?

लछिमी—पढ़ल-गुनल लइका मुरुख लइकी से बियाह नइखै करै चाहत, एहू तिलक-दहेज लेखा पढ़ौहू कै चाल भइल हा।

सीता—आ देखलू नु जसोदरा! हमरा टोला-महल्ला में देवकलिये नु सोहर, गारी सबसे फरकोर बाड़ीं?

जसोदरा—हौं, दीदी! ऊ सोहर में त अदवदाय के चहुँपल रहेलीं।

लछिमी—मेहरारुन कै महिमा हेठ कइला खातिर ई मरदन के जीत के गीत गाइ अउरि किछुओ ना।

जसोदरा—त हमनी के सोहर ना गावै के लछिमी दीदी!

लछिमी—ई सोझै दु आँखि से देखल बा नू?

जसोदरा—बा नु, नाहीं त बिटियौ के जनमला में सोहर गावे के चाहीं।

लछिमी—मेहरारू सोहर गावे के छोड़ि दी, त इनरासन गरम होखे लागी। हमनी के अपना हाथ में नइखे, हमनी के नाक छेदाइल बा, जौनी में मरद सोना के नाथ पहिरौले बाड़ें।

सीता—रसरी के होइत, त हमनी तुरियो फेंकती, मुदा मुरुखपन, हमनी सोना के नथेल नाकि में पहिरले फिरतानी।

जसोदरा—त हई सोहर गावै के का कहत बाड़ू, लछिमी दीदी!

लछिमी—हमनी के सोहर एकको इयादै ना करैके, न रही बाँस न बजी बाँसुरी।

जसोदरा—ई निम्मन कहत बाड़ू दीदी!

लछिमी—मरद हमनी के एह-एह तरे से जकड़बंद कइले बाड़न्। खेलौना में देखा, हमनी छिपिया-मउनिया, जाँता-चूल्हा, गुड्डवा-गुड़िया कै खेलौना मिलेला औ लड़कन के तीर-धनुष घोड़ा-हाथी, गुल्ली-डंडा। एहू के भीतर भेद बा जसोदरा बबुनी!

जसोदरा—कवन भेद बा लछिमी दीदी?

लछिमी—इहै जे पुरुख लइकैयें से अपना भुजा पर भरोसा करें, हियाव आ विरहा आ हमनी मेहरारुन के मन में बइठि जाये, कि हमनी के करम में खाली जाँता-चूल्हा बा।

जसोदरा—बाकी ई बतिया ज मेहररुअन के कहल जाय, त उहौ मरही धउरिहैं।

लछिमी—ई नइकी बात नइखै। राजा बाबू लोग गरिबवन के पीटै खातिर गरिबन के के राखैला। एही तरे मरद लोग मेहरारुन के दबावे खातिर मेहरारुन के गोइन्दा रखले बा।

जसोदरा—लछिमी बहिन! हमनिओ कै कबहूँ दिन लौटी?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सखीमनी—दिन लौटल ठीक कहत बाड़ू जसोदरा बबुनी! एक दिन रहे, जब मतारी-मेहरारू बन रहे, ई बात हेई धरम-करम के पोथी में नइखे, ई पोथी त हमनी की आँखि में धूर नु झोंकै रहल बा।

जसोदरा—हाँ, त पहिले मेहरारुन के राज रहल?

सखीमनी—राजा-रानी लेखाँ राज मत समुझिहा। ऊ राज पंचैती ऐसन रहै।

जसोदरा—से राज उलटि कैसे गइल?

सखीमनी—मेहरारू के रोजी मरद चलावे लागल, ओही से।

जसोदरा—त जब ले मेहरारू मरद के कमाई खात रही, तबले ऊ मरद के चेरि बनि के रही।

सखीमनी—हाँ, एमें तनिको झूठ ना हवे।

देखा—देखीं नु हमार माई बाबूजी से कम ना नु खटैले। बाबूजी दस बजे से चारि बजे ले पढ़ावे इसकूल में पढ़ावे जालें, ना माई दु घड़ी रात रहैले तबै से उठ के आधी रात ले रसोई, बर्तन, कूटल-पीसल केतना काम करत रहैले, बाकी बाबूजी के छ घंटा पढ़ावल काम रहे जाता, माई के अठारह घंटा खटल, कौनो गिनती में ना हवे।

सखीमनी—आज दुनिया भर में खाली रूस के मेहरारू मरद के चेरी नइखीं। से कैसे? एही रूस मरद के दीहल लूगा-कपड़ा ना लेलीं।

(परदा गिरि गइल)

अंक 2

(गीत गावल जाति-आ)

हम चेरी करीं दिन भर टहलवा।।
हमरे से जेकर जनमिया करमिया,
सेई हो भइल हमरा से फुटलवा।
गुँगवा के चुमि चुमि बोलिया सिखौलीं,
से रखले हमरा के बलेलवा।।
बारे से परदा घुँघटवा कढ़ौले,
घरवै भइल हमनी के जेहलवा।
दुधवा के पी पहलवनवा बनल जे,
सेही कहे हमरा के अबलवा।।
जिभिओ चलावै औ हथवो चलावै,
से देखि के हँसै लागे महलवा।
राजौ धरमवौ में मरदै के चलती,
हामर नहीं केहु मानै कहलवा।।
ढोल औ पसू समतुलवा जे भइनीं,
इहँवा खसूर हमनी के दबल बा।
ढहलै पुरनका नौका उठत बा,
ई आहल हमनी के समलवा।।

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

(टेसन से रेल चलि गइल, गोड के झाँझर झन-झन करत दु-गो दुलहिन समुच्चा ठाढ़ बाड़ीं, दु-गो मरद आ के एक नजर देखि के एगो मेहरारू के एक, दुसरकी के दुख ना देखि के छाती पीटत-आ।)

मरद—हाइ, हम लुटा गइनी, हाइ! केहू देखला ह भइया! ललकी चादर ओढ़ले मेहरारू हेही ठाड़ रहल हा। ए दादा! हम समान उतरवावै लगनी हा, एही में ना अलोप हो गइल।

लछिमी—अलोप ना हो गइल मुरुख जपाट राम! हेंही दुगो मेहरारू लाल चादर ओढ़ले-पहिरले ठाढ़ रहलीं, आ दु गो मरद चुपैचाप एक-एक के चादर धैके, बकरी के पकड़ला लेखा, ले गइलैं हा।

मरद—ए माई-बहिनी! ओमें एगो मेहरारू हमरो रहलि हा। कौना ओर ले गइल हो? केहू बतावा ए दादा! हमार सात पुहुत के इजत चलि जाई।

(छाती पीटत-आ)

लछिमी—त सात पुहुत के ईजत बोरा में कस के नु ले आवेके चाहत रहल हा?

मरद—एको अँगुरी के पोरो न लौकत रहल हा, ए दादा! केहू देखले होवै, त बतावा ओर हतियरवा ले गइल ह?

लछिमी—एगो पुरुब आ एगो पच्छिम गइल।

मरद—अपने बड़ सग्यान बुझातानी, अपनेहीं बताई, हम कौना ओर जाई?

लछिमी—जइबा, आ जे असल मेहररुआवाला मरदवा भेंटाइल आ ओकरा के टोकला, त हाड़गोड़ एकको ना छोड़ी।

मरद—*(छाती पीटि के)* हे भगवान्, कहाँ गइल मोर इजतिया! कवन मुँह लेके गवना ले आवत रहनी हौं। हे दादा केहू मदत करिहा, गरीब कायथ लुटा गइल।

लछिमी—कयथन किहां त किछु कम परदा होला?

मरद—हमार घर पंचुआ हा, हम सहर में ना रहीले।

लछिमी—त केहू के साथे न ले आवै के चाहत रहल हा?

मरद—ए दादा! हम आठि आना में बियाह कइनी। हम अगुआ के कहि देहनी कि करै के होइ त करा, बाकी, रामखेलावन लाल आठ आना से बेसी ना खरच करिहैं।

लछिमी—त जाये दा, आठै आना नु लोकसान भइल।

मरद—ए दादा! हमार लाख रुपया के ईजत बिगरि गइल।

लछिमी—लाख रुपया औखों से देखले बाड़ा, जे लाख रुपया के ईजत बिगरी। *(एही बीच सीता जलदी-जलदी में आ के बोलली)*

सीता—लछिमी दीदी! एगो दुलहिन गरियार बैल लेखाँ ठाढ़ भइल बा, मरदवा चलै के कहत-आ, बाकी ऊ हिलत नइखे।

लछिमी—उठा रामखेलावन लाल! तोहार त भाग खुलल, अब ऊ आपन भाग ठेलै। अबेर मति करा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(सीता आ लछिमी के पाछे-पाछे लोर पोंछत रामखेलावन लाल चललें, मंच के आड़े गइला
एगो मरद आ एगो दुलहिन उहाँ आके ठाढ़ हो गइलैं। मरद चादर तानत-आ, मेहरारू धप् से
बइठ जाली-आ। एही बखत सीता आ लछिमी के पाछे रामखेलावन लाल चहुँपि जात बाड़न।)

रामखेलावन लाल—(देखते) ए दादा! ई हमरे मेहरारू हा।

लछिमी—मुँह देखबे ना कइला, तोहार मेहरारू कैसे?

रामखेलावन—ई हमरे चदरिया ह?

लछिमी—धत्, झुट्ठा कहीं के! आठ आना में चादर मिली?

रामखेलावन—कनियवाँ के बाप देहले रहल हा।

लछिमी—(दुसरा मरद से) ई तोहार मेहरारू हयीं?

मरद—हाँ, बबुई जी!

लछिमी—कैसे चीन्हत बाड़ा?

मरद—काहे, ई ललकी चादर हमार कीनल-बेसहल हा।

लछिमी—हई रामखेलावन लालो कहत बाड़ैं, कि ई चादर हमरा ससुर के दीहल ह।

मरद—हमार नौंव फरगुद्दी उपधिया हा, माधोपुर घर हा। कायथ-कथुल्ली जे मुँह से फेनु ई
कहलते त हाड़-गोड़ एकको न छोड़ब, बदामास कहीं के।

रामखेलावन—(आसते से) छोड़ दीं ए बबुई जी! हमरा करम में ना रहल हा, बाम्हन रार
के हथार बा।

फरगुद्दी—रार के नौंव लेबा, देखाई तोहरा के (धोती खूँटि के पैंतरा बान्हत डंडा भाँजि के),
रहा मामा!

रामखेलावन—जाये दीं, हमरा बाप के अपना बाप के सार बनौले, किछु औरि इ मुँह से
हम जातानी, ए बबुई जी!

लछिमी—तनी भर ठहरा। (फरगुद्दी से) उपाधिया जी! अपने बराभन नु हवीं।

फरगुद्दी—(सानत हो के) हाँ बबुई जी! हम उपधिया हवीं, निम्मन बराभन।

लछिमी—आ कनिया के कहाँ से विदा करा के ले आवतानी?

फरगुद्दी—सीतलपुर से, हमरा ससुरारै के घर में टेसनियो बाटे।

लछिमी—घर में टेसन?

फरगुद्दी—जीभि लटपटा गइल हा, बबुई जी! वहीं गाँवें में टेसन बा।

लछिमी—बाकी उपाधिया जी! जे अपने के घरे कायथ के बेटी दुलहिन बनि के जाय, त
कहबो?

फरगुद्दी—राम-राम बबुई जी; हमरा उपधिया बराभन के घरे कायथ के बेटी दुलहिन बनि
जाई, त चउकठ के भीतर माई ढुके दी?

लछिमी—रामखेलावन लाल! बुरबक अदिमी के मेहरारू गुम हो गइल बा। का जानी
कहीं तोहरे न दुलहिन बनि गइल होय, एसे हम हिनकरा से पूछि लीं त, कौनो हरज बा?

फरगुद्दी—(आपन बोली सुनतै दुलहिन के गोड़ गड़ा के खड़ा होखैके बात मन पड़तै फरगुद्दी
घबड़ा गइल, बड़ जोर लगा के कहले) हाँ, देख लीं बबुई जी!

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

लछिमी—*(बइठि के घुँघुट में अपनो मुँह डालिके किछु बतियौली फेनु बौरा*
कोपा-समहुता टेसन से चढ़ली हौं, समहुता के राम पदारथ लाल कै बेटी हवीं। अपना
नौंव नइखी बतावति, अपने दूनों अदिमी बूझि लीं, कि ई केकर दुलहिन हवीं।

फरगुद्दी—*(डंडा हाथ से गिरि गइल, देह काँपै लागल, रोआइन मुँह क' के बोलल*
डंका देहले रे दैया! तीन बिगहा कसकारी बेंचि के हजार में किनले रहनी हौं। हाद
ढूँढीं।

लछिमी—उपाधिया जी! एजनी बप्पा-दैया कहले से काम ना चली। हमरे सामने
अदिमी आइल, उहै दुसरकी दुलहिन के लें गइल। रामखेलावन लाल! समहुता के राम
तोहरे नु ससुर हवें?

रामखेलावन—हौं, ए दादा! हौं बबुईजी! अपने देवता बानीं।

लछिमी—उपाधिया जी! इहौं अगोरला से ना काम चली। बिसवास ना भइल
अउरिउ देखीं। रामखेलावन लाल हेने हमरा दहिने ठाढ़ होइहा त *(रामखेलावन आके*
ठाढ़ हो गइले) उपधिया जी! अपने ओहीं ठाढ़ रहीं। रमपदारथ के बेटी! लाज-सरम
त फरगुद्दी के साथे जा, आ माधोपुर में झाड़ू-लबदा खइहा, नाहीं त हमरा दहिने रामखेलावन
खड़ा बाड़ें, एनकरा पंजरा में आ के खड़ा होजा। *(दुलहिन लाल चादर में लपिटाइल रामखेलावन*
लाल के पंजरा ठाढ़ हो गइल।)

फरगुद्दी—हे दैया! एहि राति के एकमा में कहौं खोजीं?

लछिमी—रामखेलावनै के उप्पर डंडा ताने के रहला, खोजा भै उफ्फर परा।

(कपार पर हाथ धइले फरगुद्दी चलि गइलन)

लछिमी—आ रामपदारथ के बेटी! आपन नौंव बतावा त? (चुप देखि के)
फरगुदिया के? बोलाव रे सितिया बबुनी! ओही के समुझा दीहल जाउ, कि केतनो ई
कायथ कें बेटी कहस, कहि दी, कि फरगुद्दी के पाकल बार देखि के पखंड कइले बिया।

रामखेलावन— *(झट से धरती में बइठिके लछिमी के गोड़ पर मूँड़ ध के)*—हे
अपने कालीमाई होइके हमार सहाय भइलीं हा।

सीता—जबान सम्हार के बोला रमखेलावन! हमार दिदिया काली नइखी, इ गोर
चमकति-आ।

रामखेलावम—खसूर माफ करा हे धरमावतार! अपने हाथे दीहल ईजत अपनेहि हो
बिलुवावा। रामखेलावन के एही एकमै में इनार-कूआँ देखेके परी।

लछिमी—इनार-कुआँ ना, धुरदह के पुल मिली उहै रहता में, परसा से एने; पुल
पूरा बा। बोलाव सितिया! फरगुद्दी पधियवा के, ले जाउ गुगिया के मधवैपुर।

रामखेलावन—*(सीता के चलत देखि, गोड़ पर कपार पटकि-पटकि के हाँफत-हाँफत)*
भर ठाढ़ होख, हम बोलवा देतानी *(रोवत)* तनिके भर। *(सीता ठाढ़ भइली)*

लछिमी—हेई गुगिया अबहिनों चुप बा।

रामखेलावन—हम बोला देतानी, ए दादा! नउवौं बोल दा हो, नाहीं त फरगुदिया
कसाई। *(चादर के भीतर सुगबुगाइल लेकिन चुप देखि के)*, नउवौं बोलि दा, बोलि दा हो
हाइ! हम काहे रमपदरथा के फेर में परनीं, हमरौ ईजत लेहलस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लछिमी—सीता! ई ना बोलिहैं, फरगुदिया टेसन के बहरा ना भइल होई,. अपना कुल्ली से कि "फरगुदी के दुलहिन मिलि गइल" कहिके गोहरावा।

(लछिमी धप से भूँइ में बइठि के चादर के भितरै से लछिमी कै गोड़ छानि लेहली)।

लछिमी—उहुँक, एसे काम ना चली ए रामपदारथ के बेटी! आपन नौंव बतावा। (चादर में से जे साय-साय के अवाज) सौंय सौंय से तोहार नौंउ ना मालुम होई, जोर से बोला, जौना से हम कान से ऊ चहुँपउ (फेनु तनी जोर से सौंय-सौंय) जा सीता! ई भुँका के हमार कपार खा ली।

रामबेलावन—(हाथ जोरि के) हम बतावतानीं, एकर नौंउ सुभगिया ह।

लछिमी—(ओठै पर हँसी रोक के) उहुँक, तोहरा कहला के कवन ठेकाना?

रामबेलावन—(निराश होके) रामपदारथ के बेटी! लाज छाड़ि के नौंव बतावा, नाहीं त बेकवन हइहै घुरदह के रहता धरत बाड़ै, फेनु जिनगी भर रणापा खेइहा। हा भगवान्! हम बखत रहनीं, कि आठ आना में जिउ लेवै के बियाह होत्-आ (अबकी आवाज साफ बाकी निकसल) "सुभगिया।"

लछिमी—अच्छा ई त भइल सुभागो! ठाढ़ होइ जा। हई एतना जे सासति-दुरगति भइल ई खाली घुघटवे खातिर नु, तनि अँखिया लौंके भरके एके खोलै दा (कहि के लछिमी घुघुट राम के नाक आँख खोल लेहली!)

(परदा गिरत-आ।)

अंक 3

(लछिमी के मतारी रामकली रमनामा ओढ़ले मौनी में सालिगराम के राखि के तुलसी-चन्नन, फूल, फेनु, घंटी बजावत आरती उतरलीं। लछिमी आ ओनकर सखी सीता आ के दूनो हाथ रामकली ते के कपारे चढ़ौलीं। रामकली माला जपै के तयारी करै लगलीं। एही बखत लछिमी आवै)

लछिमी—हमहूँ ए गो अहतुति सिखनी हाँ माई! सूरसागर से। तें माला जपु, हम अहतुति कहतानी। (लछिमी गावति आ।)

साचें तू बोला हमरा देवतवा!
जुग-जुग से टेरनीं तनिको न सुनला,
रहि गइला खाली अपने लेवतवा।
अरबन तिरिवा सीसओ चढ़ौलीं,
तबहूँ न कइला तनिको मदतवा।।
चलतै चलत कहूँ ठावों न पावल,
झूठै त नइखे तोहरा रहतवा।
एक-एक के बतिया उलटै सुनावत,
अन्हरन के पाछे अन्हरा चलत बा।।
आपन जे बुधि-बल तनिको सम्हरले,

Re Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

टारीं ते करमों कै रेखवा टरत बा।
बीतल कुदिनवा आइल सुदिनवा,
हौवा न अब चौवैयां बहत बा॥
जहँवा पलकवा न अँखिया प लागल,
देखा पुरान ऊ घरवा ढहत बा।
सूरसाम कहें पाथर देवतवा,
बकसैं बिलार रही बौड़ैं जगतवा॥

रामकली—*(माला फरका राखि के, आँखि निकारि कै)*—ई सूरसागर के कहनी लछिमी?

लछिमी—हाँ, माई! सूरसागरे से नु इयाद कइनीं हौं।

रामकली—आ सूरसागर में भगवान् के गारी दीहल जाई?

लछिमी—भगवान् के गारी-मार का का ना दीहल जाला, माई!

रामकली—महतारी के चरावा मति लछिमी!

लछिमी—चरावतानी माई! तोरा से कै बेर कहनीं कि ककहरा पढ़िले, दु लिं में कहे फेनु अपनेहि सूरसागर, बिने-पतिरिका पढ़ै लगबिस्।

रामकली—हमार चलल होइत, त तोहरा के एक्को अच्छर पढ़ै के ना मिलल होइत कहीं ऊधो के बाबू के। साँचे बेटिन के अच्छर ना सिखावै के।

लछिमी—तें त ना नु मनबे माई! सालिगराम के पुजला में मेहरारू कें छप्पन कुम्भीपाक—पीबवाले नरक—में रहेकें परैला।

रामकली—झूट, पोथी में नइखे। तहरा बाति बनावै बहुत आ गइल बा।

लछिमी—ले आ के पोथी देखाई?

रामकली—जानत नु बाड़ू कि हमरा अच्छर ना आवैला, एही से।

लछिमी—त तें समुझत बाड़िस् कि हम झूठे पढ़ि देइब।

रामकली—ज पोथी में लिखल होइत, त गुरु बाबा काहे हमरा के सालिकराम के कहानी से ले आ के देतें?

लछिमी—साँचे कहीं माई! ते पाँच गो रुपया चढ़ा के गोड़ जे लागैलिस्?

रामकली—गुरु-गोसैयाँ के अपना मुँह से ऐसन वचन निकालेलिंस्, हे भगवान! ई कहे कि सन्ताप?

लछिमी—त माई! तें चाहत बाड़िस, कि हम पोथी में छछात देखत रहीं, कि ई कहानी से तोरा के छप्पन कलप नरक में रहै के परी, आ तौनों पर चुप रहीं।

(सीता आ के)

सीता—ना लछिमी दीदी! चाची जौन बात नापसंद करैं, ओके नानु कहैं के।

रामकली—इहौ बा नु एगो बेटी! देखा नु कैसन मुँह से फूल झरत-आ।

लछिमी—*(नराज ऐसन मुँह बना के)* त सीता! हम झूठ कहतानी?

सीता—लछिमी दीदी! हमरा पर नराज मति होखा, हम तोहरा के झुट्ठी नइखी कहत। बाकी जौन बात चाची के मन के नइखे, तौना के ना नु कहेके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामकली—मतारी-बाप के अदब-लिहाज नु करैके परैला. बेटी सीता! सिखावा एहि बिटिया के।

सीता—हम सिखावतानी चाची!

लछिमी—हम तोहार सिखावल कुलि मानव सीता! बाकी इमान-धरम से कहिहा, पुरान में सालिगराम के पूजा से मेहरारू के छप्पन कलप नरक में जाये के बात तहरा के ना हम बतवनीं?

सीता—हम ई ना नु कहतानी, बाकी चाची के समने ना नु कहे के?

रामकली—साचै बिटिया! पोथी में ई बात लिखल बा?

(ऊधोपरसाद आ गइलैं)

सीता—चाची! ऊधो भैया आ गइलैं एनहीं से पूछ।

लछिमी—आ हम पोथिये उठा लिआवातानी। *(धउरि के एगो बड़का पोथा ले आइल, आ ऊधो के ऊ पतरा ऊधो के समने धइ देहलस।)*

रामकली—पढ़ त बबुआ! साँचे एमें मेहरारू के सालिकराम के पूजा वरजित हवे?

ऊधोपरसाद *(संसकीरत में पांती पढ़िके)*—साँचै माई। ई त छप्पन कलप नरक के बासा बा।

रामकली—*(मूह पीअर कऽके)*—छप्पन कलप नरक! आ हम सालि भर से पूजा करतानी? एही के काम कइला में पाप होला?

लछिमी—धरम उहै कहाला, जौन पोथी में लिखल रहेला।

रामकली—फेनु गुरुबाबा काहे सालिकराम के हमरा के देहलें?

लछिमी—गुरुबाबा कुलि पुरान ना नु पढ़ले होइहैं। हेइसन हेइसन ना जानी कैसो पोथी बा।

रामकली—तेंही बताव बबुआ! अब का करै क चाहीं?

ऊधो—जानि के पाप कइला के औरू बेसी पाप होला, माई!

रामकली—त हई ठाकुर जी के काकु करैके?

ऊधो—ई त सोचै के परी माई!

लछिमी—अ भइया! लछिमी पंडित के ठकुरबारी में दे अइला से कैसन कोई?

ऊधो—हाँ, निमन त होई, बाकी भोग-राग खातिर किछु देवै के परी।

रामकली—का देवै के परी बबुआ!

ऊधो—पूछै के परी माई! बाकी साँझ-सबेरे एक-एक पाव मिठाई, एगो सीधा, आ धूप-बत्ती चारि गो पैसा से का कम लागी?

रामकली—केतना परी बबुआ!

ऊधो—आस् सेर मिठाई चारि आना, धूप-बत्ती एक आना, एगो सीधा तीनि आना, कुलि आठ आना भाई!

रामकली—आठि आना रोज!

लछिमी—ला खुब पूजऽ सालिकराम के? ओ अबहिन ई सालि भर पुजला के पराछित जे होई?

रामकली —पराछितौ!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. JaiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

ऊधो—ई त ठाकुर जी के आगे के इतिजाम नु करे के खरच हवे। नाहीं त माओ पूजा छोड़ि देहलू, फेनु जे ठाकुर जी उपास परिहें, त ओकर पाप घर भर पर नु पड़ी।

रामकली—*(कपारे पर हाथ ध के)* तोहार बाबू त एको पैसा दीहैं ना, ऊ त ठाकुर जी घर में रखही के खेलाप रहलें। अच्छा ले जा, दी आवा लछिमी पंडित के ठकुरबारी में।

ऊधो—आ महीना भर के भोगराग के पनरह रुपया नु चाहीं माई?

रामकली—पनरह रुपया महिन्नै महिन्नै! ई त हमार कुलि कोसिला के रुपया चलि जाई।

ऊधो—साल में एक बीस कम दुसै, पाँच साल में नै सै माई!

रामकली—पाँच सै त रुपैयवा बा बबुआ!

ऊधो—पौने तीन बरिस चली, फेनु ठाकुर जी के उपास करै के परी। जौना महिन्ना बंद भइल, ओही महिन्ना माओ। ठाकुर जी लउटि अइहैं?

रामकली—हे भगवान्!

(रामकली रुपया ले आवे गइली)

ऊधो—लछिमी! देखा अब पनरह रुपया महिन्ना भर मिठाई खाये के इंतिजाम भइल। ठाकुर जी रहिहैं हमरा बाकस में, सिगरेट के डिब्बा बा, ओही में।

लछिमी—आ कहीं माई लछिमी पंडित के ठाकुरबारी से पुछवावै तब?

ऊधो—बात त ठीक कहत बाड़ू। बाकी अबहिन त माओ के पराछित के फेर में नु के बा।

लछिमी—पराछित!

ऊधो—हाँ, जे पोथी के हुकुम के खेलाप एक बरिस पुजली हौं।

लछिमी—ठीक।

ऊधो—ई बड़ मजगूत पकड़न पकड़ले बानी। गुरुओ बाबा के समने जे ऊ पोथी लइहें सिटपिटाई जइहें।

लछिमी—आ, जे ठाकुरबाबा के माँगि लें तब?

सीता—हम एगो सलाह दीं भईया?

ऊधो—कह न सितिया?

सीता—चिन्ता करै के काम नइखै, पराछित के डरवावन में चार महीना खेपि देवै के बीच गुरुबाबा आ गइलें, त ठाकुर जी के नु मँगिहें, बकसा खोलि के दे दियाई।

ऊधो—ई ठीक सलाह बा। पराछित के भै जबले रही, तबले माओ ठाकुर जी आ ठाकुर के नौंव ना लीहैं।

(रामकली लेआके पनरह गो रुपया ऊधो के हाथ में देहलीं, औ ऊधो ठाकुर जी के उठौलें। लछिमी औ सीता के ओठ ले "रामनाम सत्त ह" आ गइल रहैं।)

(परदा गिरत-आ)

अंक 4

(लछिमी, सन के एइसन केस औ सूत से मढ़ल चसमा लगौले सूखा फूआ औ रामकली बइठल बाड़ीं।)

सूखा—सुनलू इ, रामकली! आज मनुसपलटी के घर में सभा करे गइल रहलीं सब?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामकली—सुनली हाँ, फूआ! आजकल के मेहरारुन के किछु मति पूछी! देहिं जरि जाति-आ, देखि-देखि के कुफति होति-आ। रिकसवा जब ले छपरा मे ना आइल रहै, तब ले पैदल रहल। बग्गी के केरयवा बेसी नु लगत रहल हा। आ अब त घर के घर खाली हो जाता-आ, आज का त सामा हवे, आज का त सिनामा हवे।

सुखा—महल्ला में बस रामकली! हमरै तोहरा ले बा, नाहीं त कलि धरम-करम देहती।

रामकली—हमरो घर में फुआ! एक जनी हेई लछिमी औतार लेहले बाड़ीं। एनकर चौबीसो घंटा बगले लागल रहैले।

लछिमी—माई तें सभा से काहे नराज रहैलिस्। बुझबो ना कइलिस् कि सभा कौना खातिर होत रहल हा, आ एक ओरा सें दूसै लगलिस्।

रामकली—बुझले बानी। हमरा खन्दान में केहू ना बुझले रहल हा, ई त एगो तुहीं न जनमी जनम लेहले बाड़ू?

लछिमी—अच्छा ई त बताव माई! आमी अत्थान में बग्गी में गइला पर कौनो हरज ना, आमी अत्थान रिकसा धौरौला में कौनो हरज ना, मेला-ठेला में देह छिलौला में कौनो हरज ना, औ सभा-सम्मेलन में भले घर के सौ-पचास मेहरारू बइठि के किछु बतियावैलीं, ए एमे काहे ब्रह्मंडल टूटे के गिरे लगेला।

रामकली—सुना फुआ! आमी अत्थान, काली-अत्थान देवी-देवता के पूजा-दरसन, आ हई बैठकि के तावनहाल में बइठल बरोबर बा?

सुखा—चारो ओर एक्कै बयार बहति-आ रामकली! तोहरे हमरे पीढ़ी ले पुरखिन के मरजाद भंग ना रही बबुई! हम त साँझे-सबेरे सुरुज नरायन के मनाई ले, कि सूखाके अब ले चलसुँ।

(सीता आ जसोदरा अइली)

सुनो—गोड़ लागतानी सुखा फूआ!

सुखा—*(आँखी पर हाथ से छाँह करके)* के हा?

लछिमी—सीता आ जसोदरा अइली हाँ फूआ!

रामकली—एक्कै आँवा कै पकवल, फूआ!

सुखा—ना सितिया बबुनी निम्मन बेटी ह रामकली!

रामकली—हमहूँ इहै समुझत रहनीं फूआ! बाकी एक बेर चारि महिन्ना ले ई हमरा के बेटी-अंगे के मिठाई खाति रहलीं।

सीता—हमनी के नहके नु अजस देत बाड़ू चाची! ऊधो भइया नु कुलि कइलें।

रामकली—आ पोथिया उठा के उघवे ले अइलें?

लछिमी—मुदा पोथिया के त माई! गोरुओ महराज देखि के साचै नु कहले?

रामकली—आ कहि दा कि साठि रुपया के मिठइया खाये के गुरुवे महराज कहलें।

सुखा—साठि रुपया के मिठाई!

लछिमी—चारि महिन्ना में अठठ आना रोज फूआ! आठि गो लइका जमा होई जौंसू एकेको मिठाई त ना परे। आ फेनु ई भइया के करनी हवै, हमनी के कौनो खसूर नइखै फूआ!

रामकली—आ चारि महिन्ना ले ठाकुर जी के सिगरेट का गोलका डिब्बा में बन्न कइके रखले बाँ फूआ। ई हतियारी नु बा?

सुखा—बिना भोग-राग लगौले?

CC-0. JangamWadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Funding IKS-MoE-Grant-2. Source: Shri Gurudev Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding KS-Mo

लछिमी—गुरुमहराज कहले बाड़ें फूआ! कि भोगराग लगौला ना-लगौला के पाप-पुन्न नइखे।

सूखा—चारि महिन्ना ले ठाकुर जी उपास परिहें, आ पाप-पुन्न ना लागी। ए भाई! के का हो गइल बा?

लछिमी—जे चारि महिन्ना के उपास के पाप-पुन्न लगित, त माई के साल भर पुजला के पाप के फल छप्पन कलप नरक के बास होति फूआ! गुरु महाराज कहें ठाकुर जी के परानपतिट्ठा ना कइले रहलीं, एही से पाप-पुन्न किछुओ ना भइल।

रामकली—ई बात ठीक ह फूआ! मुदा ठाकुर जी के चाहे परानो-पतिट्ठा ना सिगरेट के बाकस में ना नु राखैके?

लछिमी—ऊ हमनी के खसूर नइखे माओ! अपना बेटा से पूछा।

रामकली—बेटे ना नु अकेले मिठइया खइले?

सूखा—आ दुत् तोरा की, ए देवतो से खियाल कइल जाला?

जसोदरा—लछिमी दीदी! आज हम सभा में न जा सकनी, सुनावा, संकरपुर के बेचारी के बारे में का परसताव भइल?

सूखा—संकरपुर के बहुरिया कवनि, बहुरिया धनराजी कुँअरि?

लछिमी—हाँ, फुआ! बहुरिया धनराजी कुँअरि सौ गाँव के मलिकाइन, रायबहादुर के दयाद दावा क देहलें, कि बहुरिया जैजात बरबाद क दीहें; इनके खोरिस मिले के चाही, आ के मालिक हमनी हवीं।

सूखा—बहुरिया धनराजी कुँअरि बड़े लायक मेहरारू हवीं बेटी!

सीता—बहुरिया के देखलें बाड़ू फूआ!

सूखा—आमी अहथान में भेंट भइल रहे बेटी। ध के अपना तम्मू में ले गइलीं, हमार के घोड़ागाड़ी लौटवाय देहलीं, आ रातिभर ना आवे देहलीं। का केहू बेटी-पतोह वैसन सेवा

लछिमी—बहुरिया के बेटा-बेटा नइखे फूआ!

सूखा—*(आँखिमें लोरि भरि के)* से हम जानीले।

लछिमी—ओनकर हिच्छा बा, कि जेतना देस के लइकी बाड़ीं, ओही सबके आपन मानि के ई कुलि धन खरच कइल जाव।

सूखा—बहुरिया बड़ लायक बाड़ीं बेटी! हमार अस्सी बरिस के उमिर भइल, नाती के देख चुकनीं, मुदा एइसन लायक मेहरारू ना देखनीं—हौंड़ी परिखीं बरंबार, अदिमी परिखीं एक

लछिमी—त आज टावनहाल में सभा बहुरिये खातिर भइल रहल हा।

सूखा—का भइल ह बेटी?

लछिमी—छपरा भरिके पाँच सै मेहरारू जमा भइल रहलीं हाँ। जज, वकील, मुख्तार, बलिहटर, हाकिम-हुकुम, अमला-फइला सबके घरके मेहरारू आइल रहली हाँ। जज साहेब मेहरारू सभापति भइल रहलीं। सभा में सरकार के कहल गइल कि राजकाज बहुरिया के हाथ ना छीनल जाये के चाहीं।

सूखा—राज-काज छिनाता-आ बेटी?

सीता—सुनलू ह ना फूआ! बहुरिया के दयाद लोग मोकदमा कइले बा, कि मेहरारू जर-ज़मीन पर हक ना होला, ऊ खाली खोरिस पा सकेले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लछिमी—सूखा फूआ! जेकर पति सौ गाँव के मालिक रहै, आज बेटा रहित, त ऊ मालिक
[illegible] घर में बहुरिये रहि गइनीं, त ओनकर हक ना होए के चाहीं, काहे से कि ऊ मेहरारू
[illegible] ही देखले ही बाड़िस, बहुरिया कौनो मरद से कम लायक नइखीं।
सूखा—से लछिमी बबुनी! तोहार बात सोरहो आना ठीक बा। बहुरिया ऐसन इतिज़ाम
[illegible] मेहरारू न मिली। हम ओनकरा खवास-खवासिन नौकर-चाकर के देखले बानीं, ओनकर
[illegible] एक-एक बात में देखात रहे।
लछिमी—त बहुरिया के मालिक ना होवे दीहल जात-आ, ए में ओनकर इहै खसूर नु बा,
[illegible] मेहरारू हवीं? मेहरारू होखल का कौनो पाप हा?
सूखा—मेहरारू के जाति त छोटे कहल जाला बबुनी! मुदा बहुरिया केहू मरद से कम बाड़ीं,
[illegible] मानव।
लछिमी—सूखा फूआ! ज तू खाली बहुरिया के पच्छ लेके कहबू, त ना सरकार मानी, ना
[illegible] कौनो खियाल करिहैं, ज समुच्चा मेहरारुन के हक खातिर कहबू, त इनरासन
[illegible]।
सूखा—चाहे जैसे होखो, लछिमी बेटी! बहुरिया के हई हक ना छिनाये के चाहीं।
लछिमी—फुआ! सरकार कहति-आ कि बहुरिया लायक हवीं, ई मानै में उजुर नइखै; मुदा
[illegible] जाति के जमीन के मालिक होखल ई अइन-कनून से बहरे के बाति ह। बहुरिया मेहरारू
[illegible], त उनकरा के पूरा हक मिलित।
[illegible]—आ फूआ! ई एगो बहुरियै के बात नइखे। केतना पीढ़ी बीति गइल, ना जानी केतना
[illegible] हकसे बेहक भइलीं, आ आगेहू कइल जइहैं, जौ हमनी अपना हक कै दावा ना करब।
लछिमी—औ देखैलिस् नु फूआ! चाहे घर-फूँक बेटा होय; ओकरा के बाप के जैजात मिलै
[illegible] उजुर नइखे, मुदा मेहरारू केतनो लायक होय, ओकरा के हक ना मिली, एके नियाव
[illegible] गाय सकेला?
सूखा—ई हमरो तनी तनी समुझि में आवत-आ।
लछिमी—हमनी मेहरारू सब ई नइखीं चाहत, कि मरद के कौनौ हक ना मिले। मुदा हमनी
[illegible] ना मानि सकीले, कि बेटा सोना की डीबिया में से आइल बा, आ बेटी इमिली के
[illegible]।
सूखा—दूनो एकै ओद्र से आवेला बेटी!
[illegible]—आ मेहरारू के नीच-नीच कहल जाला, जे मेहरारू नीच होइत त ओही से जनमल
[illegible] कइसे हो जाला?
सूखा—इहो बात ठीके कहत बाड़ू सीता बेटी! बलुक मतारी के उपकार मतारी के
[illegible] देखि के त ओकरै के बड़ माने के चाही।
[illegible]—तुहूँ फूआ! छौड़िन के फेर में पड़ल जात बाड़ू?
सूखा—निम्मन बात कहत बाड़ीं सन्, त काहे न माने के चाही बेटी? नौ महिन्ना पेट में
[illegible] पोसल, फेन कै बरिस ले अपने गीला में रहि के बच्चा के सूखा में सुतावल, अपना देहि
[illegible] खींचि के बेटा के दूध पिआवल, ई कुल ऐसन काम हा, जे मरद कबहुँ ना कइ सकैला
[illegible]?
लछिमी—फूआ! इहै बाति हमनिओ कहीले। काहे मरद आ मेहरारू के दु आँखि से देखल
[illegible] ऐसन बेटा वैसे बेटी के माने के चाहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri
CC-0. ShivaGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सूखा—इहौ ठीके कहति-आ बिटिया। बेटा के जनम में मतारी के थन में दुधरा रहल अवैला, बेटी के जनम में दुसरा तरह के, ई त ना देखल जाला? फेनु काहे दूनों के दु ओर देखल जाई? इहै दु आँखि से देखला के फल हा, कि संकरपुर के बहुरिया के लायक रहले हक छीन लीहल जात-आ। ह, नु बेटी लछिमी?

लछिमी—इहे बात हमनी के सभा में भइल हा। हमनी कहलीं हौं, कि मुसुरमान में जैजात में हक होला बेटा के बराबर ना, मुदा ओकर हक दियाला। किरिस्तानों में मतारी-बाप के जैजात में हक होला, फेनु हिन्नू की बेटी-मेहरारू के काहे हक ना मिली?

सूखा—त दुसरा दुसरा मजहम में बेटी के हक मानल जाला बेटी?

लछिमी—हौं फूआ! आ हिनुतान से बहरा कुलि दुनिया-संसार में बेटी के मानल जाला।

सूखा—फेनु हिनुतान में हिन्नूलोग काहे ना मनलस् बेटी!

लछिमी—मरद लोग के सुवारथ। जे हमनिओ अपने जैजात के मालिक होइतीं, त गँवार सूद्र पसु नारी। ए सब ताड़न के अधिकारी।" ना नु, होइतीं?

सूखा—त बेटी! हमनी के कहला से जैजात मिले लागी?

लछिमी—जरूर फुआ! हमनी जे पहिले से जोर-जोर से कहले होइतीं, त हमनी के मानि लीहल गइल होइत। मुदा हमनी चुप लगा गइलीं, मरद लोग सरकार के समुझा देलें मेहरारू के धन के कौनो खाहिस नइखे।

सूखा—ई बात झूठ हवे बेटी! धन के खाहिस ना होइत, त मेहरारू आपन काहे रखतीं?

लछिमी—आ जैजात होइत ता पेट काटि-काटि, कौड़ी-कौड़ी बचाइ के कोसिस कवन काम रहति? एही से हमनी सभा में लिखि के सरकार के पठौनी हौं, कि जैजात में के उहै हक माने के चाहीं जौन मरद के हवे।

सीता—आ इहौ फूआ! कि जैसे एक मरद अछतैं मेहरारू दुसरा मरद के ना बियाहि सकै वैसे मरदो एक मेहरारू के रहतै दूसरा मेहरारू से बियाह ना कर सकै।

सूखा—इहौ ठीक।

लछिमी—आ इहौ कि राजकाज चलावें में बहुरियाजी के उहे हक होखे के चाहीं जे रायबहादुर के रहे।

सूखा—इहौ ठीक।

लछिमी—जैसे बहुरिया जी के राज-काज चलावे में मरद के बरोबरे हक मिले, वैसे सरकारी राज-काज चलावे में कुलि मेहरारुन के मरद के बरोबर हक होवै के चाही।

सूखा—बेटी! जे मेहरारुन के सभा में ऐसन निम्मन बाति होले, त हमरौ के ले चलिहे।

(सब मिली के गीत गावत बाड़ी)

उठु उठु रे तें भुखवन्हुई, उठु रे धरती के अभगिया।
बा न्याव बजर घरहावत, जनमत बढ़िया संसरवा॥
पुरुबिज फिनु नाही बान्ही, उठु रे अब नहि तें बन्हुई।
नइ नेव उठत बा जगवा, ना रहली सब किछु होइबी॥
आ जुटहु नु सखिया समुहें, ई आखिर बेरि लड़इया।

(परदागिरिगइल)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नइकी दुनिया

(नाटक)

—राहुल सांकृत्यायन

नाटक के खेलाड़ी

1.	बटुक	मुखिया खेलाड़ी
2.	रामधनी	बटुक के बाप
3.	सुकरुल्ला	गँवई पंच
4.	सुखारी	सर पंच
5.	रामदेव सिंह	बूढ़ बाबू
6.	विसुनदेव परसाद	बूढ़ देवान
7.	रमेसर तिवारी	बूढ़ बाभन
8.	सोना	बटुक के मेहरारू
9.	जगरानी	बटुक के आजी
10.	सुगिया	गँवई पंच
11.	बतुलिया	गँवई पंच
12.	महदेई	गँवई पंच

अंक 1

(गीत गावल जाति-आ)

नइकी दुनिये के बसौले, ई कुलि दुखवा जाई ना,
जहवाँ न केहुए छोट बड़ लोगवा, सब्बै भाई-भाई ना।
केहुके त गाँजल बाड़ै अनधन सोनवा, केहु भुखिया तड़फै ना,
केहु त नहाला नित अतर-गुललवा, केहु पनिया तरसै ना।
कबहुँ न देखल जे घमवा-बतसवा, नाहीं जड़वा जनलै ना,
कोठवा बइठि के धोखवा के बलवा, से जगवा लुटलै ना।
आवा हो आवा मोरे भइया बहिनिया, सब हिलमिल लागीं ना,
चमवा के छाड़ि जब कमवा पियार होई, तबे भुखिया भागी ना।

(रामधनीसिंह ओनकर मतारी जगरानी अइली)

जगरानी—बबुआ! तें पहिले जब गान्हीबाबा के नून बानौला में जेहल गइले, तें गइले, ओहू वखत हमार करेजा काँपत रहल।

रामधनी—काहे माई! रजपूतिन के करेजा काँपी, लइका के जेहल गइला में?

जगरानी—तब जेहल जाये के बात पहिले पहिल सुनलीं नू। आउर तें हमार एकी बेटा, एकैगो बतिहर जिनगीके अवलम्। केतना अतवार केतना एकादसी कइलीं। बाबा बैजनाथ किहाँ जाके धरना देहनीं, तब भगवान् तोरा के दइलें। जब जेलिया में अइले, तब से तोरा के अँखियै बना के रखनीं। कै बेर सोगियानौनी कइनि तोरा पर नजर गड़ौलीं सौं, मुदा कालभैरव बाबा के गंडा जब से तोरा गर में पड़ल तबे से तोरा तीने दिन से सलतनत भइलीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
CC-0. JangamaGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

रामधनी—गंडा त कतना दिन से हम तुर के फेंक देहनीं।

जगरानी—तू नु तुरि फेंकला, मुदा जबले घरे सुतत रहला, तबले हम में बान्हि देत रहनीं। आ जब पतोहिया आइल त ओही के कहली—गंडा आठो पहर बतीसो घरी पहिरले रहिहा।' ओइसे त हमार एको बात मुदा ई बाति मानि गइलि।

रामधनी—त माई! तोरा के अपना पतोहिया के मुवला के दुख नइखे?

जगरानी—दुख काहे ना होई, बबुआ! मुदा ऊ बड़, बेकहल रहे। बेचारी के भगवान ले गइले, अब सिकाइत कइला में अपराध बा।

रामधनी—गाँव के लोग त कहत रहै, कि जगरनिये के मुँह करजी तीत ह, ऊ पतोहिया के फुटिलिउ आँखि देखै ना चाहें।

जगरानी—कवन कहलै ह सोगियानौनी, हमरा के पहिले नु बतावे के रहल।

रामधनी—त तें झगरै नु करतिस् ?

जगरानी—हमार घर फोरि देहलीं बबुआ! इहै गाँव भरि के भतराचबौनी मिलि के।

रामधनी—मति गरियाउ माई! अब त पतोहिये नइखे, घर कैसें फोरिहीं।

जगरानी—पतोहि ले आइब नू।

रामधनी—पतोह ले अइलू, कि गाँव भरि के भतराचबौनी मिलि के घर के फोरि दीहें, आ तोहरे के अपराध लगइहें, कि जगरानी एगो पतोह मुवौलीं, अब दुसरो के मुवावै चाहत बाड़ीं। आ कतहूँ पतोह जव्वर मिल गइ हमरा त कै के दिन ले घरे ना आवै के परैला, आ जे झोंटाझोंटी क के बुढ़िया मतारी के मुवा देलस; त हम का करब?

जगरानी—तोर गुन हम मानब बबुओ! तें कबों मेहरारू के पच्छ ना गाँव भर के पुतकाटी पतोहिये लेखा तोरौ के बिगारे चहलीं, बाकी तोरा तनिको ना डिगल।

रामधनी—कैसे डिगित माई! तें हमराके पालि-पोसिके बड कइली, पतोह? आ मेहरारू के मुअला पर केतना मेहरारू मिलिहैं, मुदा मतारी मतारी ना नु मिली।

जगरानी—*(आँखिमें लोर भरिके)*—ऐसन बेटा कौनो मतारी के बा? मुअ त ना हवै। बेटा! पाँच बरिस हो गइल पतोहिया के मुअला, अ केतना आवत बाड़न। ऊ हरपालपुर में हमरा नइहरा के बेटी निम्मन बा, एहीं बियाह होइ जाव।

रामधनी—जो महिन्ना में ई पाँचों-सात दिन जे तोहरा हाथ के बनावल मिलत-आ, एहू के छोड़ावे के मन होय, त बियाह के बात करिहा। अभे बरिस के नाति बा, ओटी के गंडा पहिरावा।

जगरानी—ऊ गंडा पहिरी! ओकर चले त हम कौनो बरत ना करे पाई बेर पलखत पौते हलुवा में नून डाल देहलस्। बेटा! बरजु ना, सरुजनरायन के तोरला में बड़ पाप होला।

रामधनी—तुहई बरजा, तोहरे नू मुँहे बेसी लागल बा।

जगरानी—हम त बरजि के हारि गइनीं। ऊ देवता-पित्तर के का मानी *(एने-ओने देखिके आसते से)* ऊ त सुकुरुलवा के घरे जाके मुरगी के अंडा एक दिन ले आके हमरा के कहलस्—'इयवा! इहै नरबदेसर के पिंडी तोरा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के ते अईली हा।' साँचे बबुआ! उज्जर-उज्जर चमकत रहै, जैसे हमरा बाबा के पूजा में नरबदेसर बाबा बाड़न्।

रामधनी—त तें एको दिन पूजा कइलिस् कि ना माई?

उषरानी—बड़ उतपाती लइका हा बबुआ! आ कहाँ से कुलि अक्किल सीखि गइल बा। हमरा से नइकी मौनी नयका लुग्गा मँगौले, फेनु हमरै हाथे गत्ते से ओही राखवौले। हम समुझनीं, साँचे नरबदेसर बाबा हवें।

रामधनी—त बेलपत्तर-वत्तर चढ़वलीं कि ना?

उषरानी—हम अबहिन ले तुलसी माई के जल ढारि के गोड़ लगले ना रहनी, नहाये में लगनीं, ऊ धउरि के बेलपत्तर उतारि ले आइल।

रामधनी—त तें समुझलिस् कि नाती अब देवता-पित्तर के बड़का भगत हो गइल बा?

उषरानी—हाँ, बबुआ! ऊ कहलस् कि इयवा! मेहरारू के सालिगराम के पूजा लिख ह, मुदा नरबदेसर बाबा आ तुलसी माई ई दूनो परानी के पूजा नइखे होत।

रामधनी—त तें तुलसी माई के नरबदेसर के मेहरारू समुझि लेहलिस्।

उषरानी—ओहि बखत ऊ जैसे बतियावत रहे, हम कुलि बिसवास क लेतीं।

रामधनी—त तें पूजा-डंडवत कइलिस् माई?

उषरानी—मति किछु पूछा बेटा! ओकरा कहलै लेखाँ फुलकै हाथे पानी में मौनी में रखनीं। बेलपत्तर चढ़ाके धूप, आ मिसरी के भोग लगौनीं। फेनु हम कहनीं चनाइमिरितवा के तुलसी माई के थाला में ढारे के, त ऊ कहलस्, ना चरनाइमिरित दूसर महादेव के ना नरबदेसर बाब के हा, एमें से हमरो के दे आ थोरा अपनेहू पिउ। गुरुबाबा इहै चरनाइमिरितवा नु देलें।

रामधानी—त तें पियलिस् माई!

उषरानी—आ-ा-क्, आ-ा-क्, आ-क्-का-क्-का-क्।

रामधनी—*(धउरि के गरदन सुहराव लगलें।)* जाये दे माई। ऊ बड़ बदमास बा हा। तें मरलिस् ना?

(बीच में नाती बटुक ठठाके हँसत चलि आइल।)

बटुक—इयवा के बाति हम कुलि सुनली हाँ बाबू!

उषरानी—तें सुनले हा कुलि बाति?

बटुक—तनि बतिया पूरा क देवे दे त इयवा! फेनु एगो बड़ निम्मन बात सुनि के तोर मन खुस हो जाई।

रामधनी—माई के तें हरान करैले, *(चिल्ला के)* अच्छा ले आवतानी छड़ी।

उषरानी—*(नाती के अँचरा में लुकवाके)*—ना बबुआ! लइका खसूर करेला, त, मारे के ना नू।

रामधनी—त तुँही नू सहकावत बाड़ू माओ! नाहीं त हम एक दिन में ठीक कइतीं।

उषरानी—किछुओ करै हमरै नु नाती हा। *(बटुक आजी के अँचरा में मुँह छाप की ओर मुँह फेर के हँसत-आ)*

रामधनी—औ ई जे माई के नरक में भेजलस्। नासकेत के कथा में नरक के बारे नु वाड़ी माई!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Funding by IKS-MoE-Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जगरानी—कै बेर बंबुआ। आ ओहू से बेसी विरह-विसेख त भइल बा। गुरुबाबा पतोहिया के मुअला प सुनौले रहलन्।

रामधनी—संसकीरत तें कैसे बुझलिस्?

जगरानी—नरक के बखान जँहवा रहल, ओकर अरथ नु क के रहलन्।

रामधनी—हाँ, माई! हमरो मन परत-आ। त बोल माई! जवन नरक के कुम्भीपाक औ रौरव नरक में भेजत-आ, ओकरा के तें दुइओ छड़ी ना बाड़िस्, ई निम्मन हवे?

जगरानी—मुदा बेटा! जुरते बता देहले, आ हम साति दिन खाली पानी उपास रहनीं।

रामधनी—छाड़, माई! छाड़ एइसन् बेटा के हम घर मे ना रहै देब।

(हाथ बढ़ावत बाड़ै, जगरानी अउरि लुकवा के)

जगरानी—ना मोर सुग्गा। इहै एगो बतिहर बा *(आँखि में लोरि)* एकरा घर से निकरला पर हम ना जीअब्। लइका के खसूर छमा नू करै के हमार कुलि पाप धोवा गइल, सात दिन बरत रखला से बचवा! आ मोर ना बतौले होइत, त बरत ना नु कइले होतीं, फेनु त अनचक्के मे नू जमराज बेर सजाय सुनौतें।

रामधनी—त माई! तोरा पूरा बिसवास बा नू, कि अब तोरा के नरक जाये के परी?

जगरानी—हाँ बेटा! हम गुरुओ महराज से पूछि लेहले बानी।

रामधनी—का? कि अंडा के धोवन पियला के पराछित सात दिन के से हो नू जाला?

जगरानी— अंडा के नाँव लेहब बबुआ!

रामधनी— तब का पुछलिस् हा ?

जगरानी—कि भूलि-चूक से कौनो खसूर हो जाय, त सात दिन के छुटि जाला कि ना?

रामधनी—खसूर माई! छोट बड़ केतना तरह के होला। पहिले नरक के चाहत रहल नू, कि ई छोट खसूर हा, कि बड़।

जगरानी—ई कैसे पूछितीं बेटा। फेनु गाँव भर सुनि लीत, त रउरा मेंडर में मुँह दिखावे लायक रहता?

बटुक—*(मुँह निकार के)* समुच्चा गाँव जानत-आ इयवा!

जगरानी—*(घबरा के)* समुच्चा गाँव! तें त ना कहले?

बटुक—ना इयवा! एगो खसूर भइल उहै बहुत रहै। रमदेइया फूल लागि के कुलि देखलस्।

जगरानी—*(गुस्सा से लाल होके हाथ मलत)*—जा रमदेई! ससुरा चंडाल नाहीं त आज जगरानी के महाभारत देखतू।

रामधनी—ई त भुइली भर के रजपुताँव जानि गइल, अब का करे के?

जगरानी—*(रोवत)* अब हमार घर बूड़ल। हे भगवान्! अब के हमरा आपन बेटी दी!

बटुक—ना दी, त हम कुँआरे रहब इयवा! तें रोअत काहे बाड़िस?

जगरानी—*(अउरि जोरसे रोवत)* के हमरा पिंडा-पानी दी! हाय रामजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बटुक–तोरा के पिंडा-पानी हम देब इयवा! मति रोउ, मति रोउ इयवा!
ई त हमरो रोआई छूटति-आ।
जगरानी–*(आँखि पोंछि के)*–ना मोर अँखिया! तें मति रोउ।
रामधनी–त माई! तोरा नरको से बेसी डर बिरादरी के बा नू?
जगरानी–बरत-उपास, दान-पुन्न से नरक से अदिमी बँचि सकैला बेटा! मुदा बिरादरी के कोप से बाँचे क त कौनो उपाइ ना नु बा।
बटुक–बिरादरी काहे कोप करी इयवा!
जगरानी–इहै जे रमदेइया–ओके हैजा उठा ले जाउ।
रामधनी–हैजा मति माई! हैजा गाँव भर खातिर आवेला, एगो अदिमी खातिर ना।
जगरानी–उहै रमदेइया जे गाँव भर आग लगौलस्। अब त तहार बानी बन्न भइल नू?
बटुक–हुक्का-पानी के बाति मत कर इयवा! ऊ केहू ना बन्न क सकेला।
जगरानी–कैसे बबुओ!
बटुक–रजपुताँव में केकर लइका बा, जे सुकरुलवा आ हमरा साथे अतवारे के मुरुगी के अंडा ना खात-आ?
जगरानी–*(संतोख देखावत)*–साँचे बबुओ!
रामधनी–देखु माई! एक अदिमी के चरनाइमिरित पियला-खइला से त तें तरतिस्, आ गाँव भरि के सुनला से तोरा मन में खुसी होति-आ।
जगरानी–अब हमरा के केहू जात से छाँटैवाला नइखे नू?
बटुक–हमनी का जानत रहनीं इयवा! ई त बनारसी काका के एक दिन खात रहनीं ओही दिन से हमनिओ परकनीं। भुइली के बारहगो लंइका हमनी बानीं। अतवार सुकरुलवे के घरे बारहगो हमनी खातिर ओ एगो सुकरुलवा खातिर अंडा उसिनल जाला।
जगरानी–राम-राम! ओही के बधना के पानी से।
बटुक–अंडा जब ओकरा घर के बा, त पानी में कवन छूत लागल बा?
जगरानी–मति खो बबआ! ऊ कइसन उज्जर-पीयर रहेला? ओहि दिन जे रंगे के खइले।
रामधनी–तोरा समने माई ?
बटुक–उहै नरबदेसर के एक दिन खइनीं, अउरि फेनु कहाँ?
जगरानी–मति खो बबुआ! गुरुबाबा अइहैं, त सुनिहे नरक में कइसन-कइसन लोग रहे के परेला।
बटुक–ओइसन-ओसन खिस्सा इयवा! किताब में बहुत लिखल बा। आ नरक रहे त समुच्चा भुइली के रजपुताँव जाई, तब नू इयवा! तोरा के जाय के परी।
जगरानी–हमरा ना जाय के परी, हम त सात दिन बरत कइले बानी।
बटुक–आ हम जे अतवारे अतवार नरबदेसर के खा के तोर चूल्हा-चौका, बरतन-भांडा पवित्तर करतानी।
जगरानी–*(मुँह गिरा के)* हे राम जी।
रामधनी–जाय दे माई! दुनिया उलटति-पलटति-आ।
जगरानी–साँचे बबुआ! हमरा आँखे के समने दुनिया कहाँ से कहाँ चलि गइल। हमरे नु हाड़-मांस ह ई हमार नाती, आ बरहे बरिस में देवता-पित्तर धरम-करम सबके उपहास करत-आ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

रामधनी—अउरो दिन बीते दे माई! फेनु देखिहे कइसन धरती तड़े होले।

जगरानी—कुलि होई बेटा! कुलि होई, भगवानै औतार ले के आवे ले बँची।

बटुक—औ जे कछ-मछ से सूअर ले औतार लीहैं, त इयवा! हमनी के के ना छाड़ब।

(परदा गिरि जात-आ।)

अंक 2

(उरिदी में लपटेन बटुकसिंह गावत बाड़न)

ढाहा भइल पुरनका घर ई, नइकी नेवँ करा तइयार।
नई हवेली सिरजा भाई, नयका होई अब संसार॥
स्वारथ लागि समर ई ठनलें, राछछ जरमन औ जापान।
चहैं बँचावै पुरना घरवा, राखै तोन्-फुल्लन के सान॥
गहि के तेगा जूझत बाड़ैं, जग के सबै मजूर-किसान।
लाल फउजि के पाछे-पाछे हाथ मे लेहले लाल निसान॥
अन बिन तलफत जँहवा लइका, जहँवा उठत गरीब क आह।
जहँवा तोन फुलत दुई-चरिके, ऊ संसार दिहब हम ढाह॥
रात अन्हरिया कुलि बीतल बा, आइल पह फाटे के वेर।
काटा रछछन के मूँडी धरि, तिनको अब न लगावा देर॥

(रामधनी सिंह आ जगरानी आके)

जगरानी—*(फौजी उरदी देखि के आँख से खुसी झलका के)*—मोर नाती देखत केतना बढ़ि गइल।

रामधनी—बढ़ी ना एकइस बरिस के हो गइल।

जगरानी—कवनु दरजा मिलल ह, बबुआ! अब कौनो बात मनो ना नु फेर

रामधनी—लपटेन माई! ई उरिदी लपटेन क हा।

जगरानी—उरिदिया त निम्मन लागति-आ, मुदा ऊ सुनि के मन दुखी होत-आ।

रामधनी—का सुनि के?

जगरानी—कि हमार बबुआ लड़ाई में जइहैं।

बटुक—देस खातिर नु इयवा! देसै खातिर बाबू कै बेर जेहल गइलैं।

जगरानी—ऊ गान्हीबाबा कै लड़ाई रहे, ओमें बरिस-छ महीना जेहल में रहे के लउटि आवे के रहे।

रामधनी—हमहूँ इहै बात बेरी-बेरी समुझौनीं, बाकी आज काल के लइका हमनी के बात ना नु सुनै माई!

बटुक—त बाबू! चाहत बाड़ा, दुनिया ओहीं लें आ के गोड़ तोर के बइठा जाय, जहाँ ले गान्ही जी तोहरा लोग के पहुँचौलें?

रामधनी—गान्हीजी के संती के रहता निम्मन ह बटुक बेटा!

जगरानी—ओहि बखत जब बबुआ पहिले-पहिल नून बनावे गइल, आ हम पुलुस के लाल मुरैठा देखनीं, त गन्हियोजी के बात हमरा के जबूने लागल; काहीं नाती के रंग-ढंग देखि के बुझात-आ, गान्हिए जी के रहतवा निम्मन बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बटुक—गान्हीजी के रहता ओही दिन कौनो काम के ना रहि गइल, जौना दिन गान्हीजी के चेलन के हाथ से मजूरन-किसानन के गला रेताइल।

रामधनी—गला रेताइल, कि किसान सहकि गइलन्। अब असामी बर-बेगारी, लगान-सलामी किछुओ बात पूछत बाड़न्?

बटुक—बाबू! ज बर-बेगारी आ जरिबानै-सलामी लेवे के रहल, त देस के गान्ही तें-तें जेहलखाना काहे गइला?

रामधनी—अङ्गरेजन के हाथ से आपन राज लेवे खातिर।

बटुक—आपन राज, कि जिमदरवन आ सेठवन के राज! आ केकरा मद्दत से? जनता के मद्दत से गरीबन के मद्दत् से! आ फेंनु ओकनिये से बर-बेगारी आ लगान-सलामी असूल करे के?

रामधनी—ना जेहल गइल होतीं त डिस्टिकबोट के चेरमैन भइल होइतीं?

रघरानी—चेरिमौंने ना बबुआ! होऊ जे लाट साहेब के का कहावेले?

रामधनी—कौंसिल माई!

रघरानी—ऊ नइखे माई बबुआ! माई हम नु हवीं? कौंसल कहा, ऊ कौंसल बबुआ हमार लोमर भइल बाड़न्, उहौ एही जेहलियै गइला से नु! गान्ही रहता निम्मन रहल ह, बबुआ! ओमें हेई लड़ाई में मूवे के ना नु रहल हा।

बटुक—गान्ही के नाँव मति ले इयवा! सुनि के जिउ जरत-आ। जरमनवा लगा—दूनो रछछवा अनधन त लुटते बाड़ैं, दस बरिस के लइकिनों के ईजत ना बा।

रघरानी—ईजत लेलैं बचवा!

बटुक—आ उप्पर से बाबूजी के गान्ही महतिमा कहत बाड़न, कि मेहरारुन के बँचावे के काम मेहरारुनै के नोह-हात पर छाड़ि देवै के चाही! इयवा। तें ही हमरा जियला के धिरकार ना होई, जे केहू तोरा ओर हाथ बढ़ौलै, औ हम हात-नोह से काटै-बकोटै पर छाड़ि दीं।

रघरानी—*(काँपि के)*—एइसन राछछ बाड़न्?

बटुक—पूछ बाबूजी से, ई रोजे खबर के कागद पढ़ैले।

रघरानी—साँचै बेटा!

रामधनी—ई बात साँच हा माई! मुदा—

रघरानी—तब त बेटा! भाई-बहिनि के ईजत बचावे खातिर जिओ देहला में दुख नइखे!

बटुक—जपनिया रछछवा हमरा देस के सिवाना पर चहुँपि गइल बा, हमनी के सिवाने पर नु रोके के चाहीं, नहीं त भुइली में चहुँपि गइला पर किछु होई।

रामधनी—गान्हियो जी त संती से लड़ै के कहत बाड़न्।

बटुक—बोलु तें ही इयवा! राछछ संती-फंती के मनिहैं?

रघरानी—ना बबुआ! ज संती से काम चलित त रामजी के ना औतारे लेवै पड़ल रहल, न रवना से लड़इयै करे के।

बटुक—एको सीता के ईजत बँचावै खातिर त लंका ढाहै के परल, रामजी लोगों के ना नु कहि देहलें कि जाँय, ऊ रवनवा से हात-नोह चला के इज्जत बचावु।

रघरानी—औ दरोपदी के खाली चीर खिंचला पर महाभारत नधि गइल?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mc

बटुक—जपनिया जरमनवा राछछ ईजत ले के लरकोरी मेहरारुन के छो लागल बेटा के साथै संगीन खोभि के मुआवत बाड़न् इयवा?

जगरानी—दुध-पिउवा बच्चा के!

बटुक—औ एहि तरे लइका मेहरारुन के मुवा के ईजत ले के चाहुत अपना मुलुक के बनियन के राज चलावे।

जगरानी—बनियन के राज!

बटुक—ई लड़इयै बनियन के कारन भइल। बनिया के मतलब जात के ना इयवा! हमरा देस में रजपुतौ, बाम्हनो सूद पर रुपया देत वाड़ें, दुकान खोलले बाड़न्, कल-कारखाना चला रहल बाड़न्। एहि सब के बनिया कहल आजकाल एगो रूस के छाड़ि के समुच्चा दुनिया में बनिया-सेठन के राज बा।

जगरानी—बनिया सेठन के राज?

बटुक—हाँ इयवा! हिनुतानो में गान्ही महतिमा अब ओही सेठवन के पर नाचत बाड़न्।

रामधनी—ई गलत बात ह माई!

बटुक—अच्छा इयवा! तें ईमाने धरम से पूछ त, कि बंबई के सेठ पाँचे सात लाख रुपैया गान्हीजी के हाथ में दे देहलैं कि ना?

रामधनी—ऊ त दुसरा काम खातिर देहलें।

बटुक—हम हूँ नइखीं कहत कि गान्हीजी के पेट में ऊ सात लाख ओनकरा बकरी के दूध-घिउ फर-फरहरी में जे रुपया दू रुपया रोज ओकर इतिजाम एगो बरधै के सेठ क सकैला। मुदा जे बेसी पूजा चढ़ावेला, महतिमो लोग गीत गावैला कि ना इयवा?

जगरानी—"सुर-नर-मुनि की ऐही रीती। स्वारथ लाइ करहिं सब प्रीती। बबुआँ! रमायन में हम आजै के पाठ में पढ़नी हाँ।

रामधनी—गान्हीजी के स्वारथ नइखै माई!

जगरानी—बेटा! सुर-नर मुनि से बढ़ि के जे तू गान्ही महतिमा के कहल ई हम मानै के तयार नइखीं।

बटुक—हाँ इयवा! गान्हीजी हिनुतानों में बनियन के राज करावें बाड़न्।

जगरानी—सुनतानी बबुआ! गान्ही जिउ अपनेहू बनिये हवें?

बटुक —जाति के बनिया के राज ना इयवा! अरे जे केहू बनिया के करत-आ विल्लाइत-अमिरिका जरमनी-जपान के बनियन लेखा से बनिया चाहत बाड़े हिनुतानों में बनिया-राज कायम होउ। मुदा एही बनियन के खातिर पचीसे बरिस में दु-दुगो बड़का लड़ाई हो गइल; ओही लड़इया में तू बाबा मुवलें?

जगरानी—*(आँखि में लोर भरि के)*—रामधनी के उमरि रहलैं बबुआ! बाबा सुबेदार।

बटुक—गाहक-औ-खदुकन के सरमेटै खातिर इयवा! बनिया ओहि वेर कइले रहलन्। जरमनवा बनिया सब चाहत रहलन् दुनिया भर में हमार राज बात चले, ओही से ऊ लड़ाई भइल। पचीस बरिस बितला पर जरमन बनियन पायक हिटलरवा फेनु ओही मतलब से लड़ाई सुरू कइले। आ अबकी वेर ऊ राछछ बनि के आइल बा। गाँव के गाँव उजारत, लाखन मेहरारू-लइका मारत, जिल्लाके जिल्ला बरबाद कइल चाहत-आ। समुच्चा दुनिया के जीति के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नु तेहूँ बना के राखे चाहत-आ जौना में फेनु केहू किछु बोले लायक ना
जाय।
राधधनी—अंगरेजो त हमनी के सुराज नइखे देत, फेनु हमनी काहें के
आई?
बटुक—जरमनवा के छोट भाई जपनिया राछछ जौन हाङ्ग-काङ्ग के आधा
के बड़का-छोटका घर के रंडीखाना बना देहले, ऊ जपनिया जे भुइली में आ
त हमार ईजत लूटी कि अंङरेज के?
जगरानी—भुइली में कहाँ एकोगो अंगरेजिन मेहरारू बा?
बटुक—त इयवा! पहिलका लड़ाई में गरीब के बेटा आपन समुझि के लड़ाई में
जुत रहे, ऊ गइल रहे अपना बनिया-मलिकन के हंसेड़ी बनि के। हमनी हँसेड़ी
के नइखी जात इयवा! हमनी जातानी एहि रछछवन के संहार करे, आ ओही
बनियन के राजो के संहार करे।
जगरानी—त बबुआ! सुराज के तेहूँ नु मानत बाड़े?
बटुक—हँ इयवा! मुदा हमरा सुराज में भुइली में एको घर गरीब ना रहे पाई,
के बड़का भूखा-लंगा न रहे पइहैं। केहू मसलंद पर बैठल-बैठल घिउ-मलीदा
मोटा के भइंसा ना होये पाई; ओ न केहू काम करत-करत सिटुकि के
बनें पाई।
जगरानी—त, तें एगो नइकी दुनिया बनावै चाहत बाड़े बबुआ!
बटुक—आजकल के दुनिया के करोड़न जवान एही खातिर मूवै जात बाड़े
करोड़ में करोड़ों अदिमी न मु जइहैं। हमनी के इहै नेति बा।

(परदा गिरत-आ)

अंक 3

(जगरानी के समने बटुक औ ओनकर मेहरारू सोना गावत बाड़े)

देव समान देस हमनी बनौली हाँ,
जँहवा न केहु बा भिखारी, मोरि इयवा।
सबसे मुलुकवा के एक घर कइ देलीं,
सब हवै अपनै सवाङ, मोरि इयवा ॥१॥
जड़ू-नरैनी से नहरा बनौली हाँ,
गावें गावें पनिया पटावै, मोरि०।
खेतें खेते हरवा चलत बा मोटरवा के,
कबहूँ न पड़ैला अकाल, मोरि०॥२॥
घरें घरे लइकी, लइकवा पढ़त बाड़ै,
केहु नाहिं मुरुख अजाना, मोरि० ॥
गावें गावें नाटक-सिनेमा चलत बाड़े,
देखताड़ें लइका सयान, मोरि० ॥३॥
छोट बड़ जाति न धनिक ओ गरिब बाटै,
नहिं केहु रजवा हमार, मोरि० ।
नहिं जमिंदरवा न केहु बनिजरवा बा,
नाही बेटा सुदिया सवाई, मोरि इयवा ॥४॥
बटुक—बताव त इयवा! पुरनकी दुनिया निम्मन रहे, कि नइकी?

CC-iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जगरानी—हमरा अँखिये देखत दुनिया कहाँ से कहाँ चलि गइल? चमरौटी के पता नइखे।

सोना—चमरौटी ना रहला के अपसोस त नइखे इयवा?

जगरानी—अपसोस काहे होई बछिया!

बटुक—आ नतोह बेकहल बा?

जगरानी—*(उसास ले के)* —अब अपसोस होले बच्चा! साँच हम मतारी के बड़ दुख देहनीं।

बटुक—तें त अबौ उहै नु बाड़िस् मुदा नतोहिया के त कव्वो गारी ना

जगरानी—बुझात-आ हमहूँ ऊ नइखीं बबुआ! हजार तरह के गारी जीभ पर रहे, मुदा अब बरिसन हो गइल, कौनो मुँह से निकरति-आ; कुलि परल जाति-आ।

सोना—इयवा! मन पार के तें बोल, त तोर नतोह कुलि गारिन के घाली, आ इयवा-नतोह दूनो के नाँव से छाप दीहल जाई।

जगरानी—ना बछिया! लोग का कही?

सोना—कही का? ई कुलि गारी दस-पनरह बरिस में भुला जाई, फेर कितबिये से नु लोग जानी कि पुरनकी दुनिया में कइसन-कइसन गारी रहल हा।

जगरानी—ना बेटी! जगरानियो नू बदनाम हो जइहें।

सोना—अच्छा त तोर नाँव ना रही, हम लिखि देब कि जहाँ-तहाँ से मेहनत से संगिरहा कइनी हाँ।

जगरानी—जाये दा, बेटी! का करबू ऊ कुलि गारी-फारी लिखि के।

सोना—देखत ना बाड़े इयवा! "सारन समाचार" में रोजे एकाध गो पुरनी कथा, बियाह-सादी के गीत छपैले।

जगरानी—पढ़त बानी बिटिया! आ दु-तीनि गो कथा हमहूँ लिखली नु हीं।

सोना—आ इयवा! देखले नु कथा के साथें तोर फोटवो छपल रहे।

बटुक—बोलु इयवा! पुरनकी दुनिया में लिखाड़िन में तोर नाँव होइत?

जगरानी—लिखाड़ी! जिनिगी भर रमायन पढ़त रहि गइनीं, अच्छर लिखना सिखले रहलीं। ई त नइकी दुनिया में जब अपनी बोली में केताप आ कथा छापे लागल, तब नु हमरौ चाटक खुलल हा?

बटुक—आ बोल इयवा! हमरा अंडा खइले से तें डेराइल रहले?

जगरानी—हाँ, बबुओ! हम समुझत रहनीं, रजपुतवा जात से छोंट होंही, नाती के बियाह कहाँ होई।

सोना—त राजपुत के बेटी ना नु मिलल इयवा! आखिर कायथ के सोनिया तोर नतोह भइल नु?

जगरानी*(सोना के गरे लगा के)*— मोर बछिया रजपुत के बेटी से का कम बाड़ू। आ रजपुत के बेटी त कै गो तयार रहलीं, बबुवै ना नु बियहले।

बटुक—रजपुत के बेटी ना बियहले से तोरा के अपसोस त नइखे इयवा!

जगरानी—सोना ऐसन नतोह ना नु मिलित बबुआ!

बटुक—ई कहाँ अँचरा के खूँट धरती पर राखि के तोरा के गोड़ लागे हमरा जाने में त इयवा! ई नतोह निम्मन नइखे। कह त एके घर से बाहर करीं?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रानी—हम हाथ में केताप लेहले खुरसी पर बइठल रहीले, त ओसे ई मति
बबुआ! कि हमार आँख अपना चारों ओर देखत नइखे। पुरनकी दुनिया में
मरद के गोड़ के पनही समुझल जाति रहै, आ तुलसियो बाबा लिखि देहलन्
नारी। ए सब ताड़न के अधिकारी"॥
सूद्र पसु
बटुक—त इयवा! तोरा ताड़न मिलल रहे?
रानी—तोहरा बाबा सुबेदार के कुलि जिनगी त पलटनिये में बीति गइल,
तीन महिन्ना पर दू-एक महिन्ना के छुट्टी आवस्।
सोना—त इयवा! तें अकेले घर अगोरत रहलिस्? बटुक एइसन करें, त हम
बेर एनके कान धैके उठाई बैठाई।
रानी—ई कान धैके उठावल-बैठावल मरदे के हाथ में रहै बेटी। मुदा
कबो हमरा देंह पर हाथ न छोड़लें।
बटुक—जानत बाड़े इयवा! काहे पहिले के मरद मेहरारू कें देहि पर हाथ
जकत रहैं, आ आज तोर नाती बटुक सोनिया के हरुस बचनें ना बोलि
ता।
रानी—कहु बेटा!
बटुक—सोनिया त आजिकाल भुइली के पंचाइत के सरपंच नु हा; जब सरपंच
तबो पनरह सै रुपया साल के मेहनत करत रहै; मोटरवा कें हर जोते में ई
सारन में मीर भइल रहै; आ हम कमातानी बारहै सै रुपया।
रानी—छ सौ रुपया त हमरो खिस्सा-कहानी लिखला में "सारन समाचार"
जाला।
सोना—इयवा! तें आपन जिनिगी के हाल एगो केताप में लिखि घलती, त
होइत। तोरा कलम में बड़ जोर बा।
रानी—हमरा बुझात रहे बेटी! कि गारियै में हम गाँव भर में फरकोर
नइकी गारी बना-बना के देवै में हमरा हब्बास बड़ खुलल रहै।
सोना—उहे गारी के हब्बास अब कलम में नु खुलल हा। इयवा! तोर बूढ़
के लिखहू में नु तकलीफ होले। हमार मन करत-आ, तें बोलु आ हम
जाई।
रानी—तोहरा बेटी! गाँव के इतिजामे से कहाँ छुट्टी मिलति-आ।
सोना—त बटुक के कहु इयवा! ई लिखिहें।
रानी—सोचतानी बेटी! पहिले एइसन जे घरे-घरे चूल्हा फुँकात, त
घरी त तोहार चुल्हियै तर बइठलै बिति जाइत, फेनु ई गाँव के काम, ई
पढ़ल कइसे होइत?
बटुक—इयवा! तेंही नु बागी भइलिस्, जब पहिले-पहिल गाँव भर के चूल्हि
गइल्।
रानी—हम ही ना बबुआ! दस गोड़ी औरिउ रहनीं। आ तीन गो बाबा
रहे।
बटुक—त हमनी जबरजस्ती ना नु कइलीं? छोड़ि देहलीं, कहनी—दा एहि
के कोखरै सीधा, आपन बनावे खाँय।
रानी—अ दुइये महिन्ना में कुलि चिरई फुर्र से उड़ि गइलीं।
सोना—औ तें अकेले चूल्हा फूँकत रहि गइले नु इयवा!
रानी—हम सबकरा से पाछे चूल्हा छोड़नी बेटी। इहे मुढ़ताई।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Contributed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

(गाँव पंचाइत के पंच सारी-जूता पहिरलें तीनिगो मेहरारू आ अ... कुरता जंघिया जूता में दुगो मरद आवत देखइलें।)

जगरानी—बेटा! अब हम जातानी तोहरा लोगन के पंचइती के काम हो...

(जगरानी चलि गइलीं, पाँचो पंच चहुँपि गइलन)

बटुक—*(हाथ बढ़ावत)* सुन्नर साँझ सब साथिन के।

सब—सुन्नर साँझ साथी बटुक के, सुन्नर साँढ साथी सोना के।

(सबै हाथ मिलावल)

सुकुरुल्ला—ईया त ना नु रहली हाँ, बटुक भइया!

सोना—तें बड़ चुल्ली हवे सुकुरुआ! इयवा के बड़ हैरान करैले।

सुकुरुल्ला—ना सोनिया मोर सोने के भौजी! उहे अतवार के ज हमनी... लइका अंडा उसिन के खाई, उहै बतिया। मुदा बटुक भइयवा जे इयवा... चरनाइमिरित पियौले, ऊ सुनि के त हँसत-हँसत हमनी के पेट फाटे लागत... सुगिया त औरो सुनि के लोट-पोट हो जाले।

सुगिया—हमही ना सुकुरू देवर! बतुलिया के ना देखला।

बतुलिया—आ महेदेइया बहिन त कहत रहे, आजो जे इयवा के... पूजा-पाखंड करित, त हमनियों के मोका मिलित।

महदेई—सुखारी भसुर से पूछ, बतुलिया बहिन!

सुखारी—महदेई! दुनिया भर तोहार देवर, आ हमही अभागा भसुर हो... बानी।

महदेई—एगो भसुरो नु चाहेला?

सुखारी—मुदा, ना हम हरखुयै महतो से उमिर में बड़, न तोहरै से, फेनु ... कइसे?

महदेई—इमान से कहतानी सुखारी भसुर! सुगिया आ बतुलिया गवाही दे... चिट्ठी डरला में तोहरै नाँव परि गइल, हम का करीं?

सुखारी—हमहूँ चिट्ठी डरले रहलीं, त भौजाई में महदेई के नाँव निकल...

महदेई—जेकरा गाँव भर भौजाई सेकरा चिट्ठी डरला के कवन काम... हमार भसुर हवा। ओ देखा पुरखन के चाल छाड़ै के ना, तनी हमरा से देखे... छुवावै के। नाहीं त भसुर आ भवेह दूनों के नरकों में ठेकाना ना मिली। ... चला बइठा खुरसी पर भसुर जी! अब पंचाइत के काम होई। सोना सरपंच के ... लाल-लाल भइल बा। *(सब लोग बइठि के)*

सोना—मंतिरी सुकुरुल्ला पहिले पुरनकी बइठकी के लेखा सुनइहैं। आ ... की बइठकी में जिल्ला-पंचाइत पंच साथी बटुको के काम हवै, एहि वासते उन्हें... रहै के कहल जात-आ।

सुकुरुल्ला—पहिला बइठकी में बहुत कहाइल ना रहै, हाँ, एहि बीच में पंचाइत के हुकुम पर कवन-कवन काम तमील भइल, कवन-कवन हो रहल बा, ... सुनावै के बा। धुरदहताल से भुइली के रसोईघर में एक मन दस सेर मछरी रोज... आवत रहल हा, अब पंचाइत के हुकुम से दु मन बीस सेर क दीहल गइल। बरस... के महिन्ना आइल, अब मछरी दूना निकारि के चिट्ठाके मोताबिक गाँवे-गाँवे भेजल जाति-आ।

महदेई—मुदा सरपंच सोना! दयालपुर आ सेनुआर का रसोइया तोय किरिया करत-आ, कि मछरी हमनी किहाँ अबेर से चहुँपति-आ, गमकि-ओ जाति-आ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुकुरुल्ला—साथिन महदेई के कहल ठीक ह। मुदा अब ऊ सिकाइत ना होये हमनी के पास लोरी कम रहलि ह, परसों साँझि के बीसि गो नइकी लोरी सहर से चहुँपि गइलीं। दिन भर के फँसावल मछरी ए गो बड़का जालीदार में पानिये में राखल जात बाड़ीं, आ पहर भर राते से लोरी छूटे लागत

सुगिया—एकर मतलब भइल, कि सुरुज उगत-उगत मछरी सब जगह चहुँपि

बुकुरुल्ला—हाँ।

सुगिया—आ फसिल कइसन बा साथी मंतिरी!

बुकुरुल्ला—हमरा जवार में गोहूँ सड़तर-पड़तर चालिस मने बिगहा भइल भुइली में त खाली मछरी आ साग-भाजी के कारबार बा। आलू के हिसाब त सब जनते बाड़ें। पियाज खूब निम्मन लागल बा, सौ मने बिगहा जाये के बा। आलू खनते, कलकतिया खाद दियाइल हा।

बतुलिया—आ ककरी खरबुज्जा?

बुकुरुल्ला—ककरी, खरबुज्जा, लौकी, कोहड़ा, करैला औ दूसरो फल तरकारी निम्मन बा। खरबुज्जा के बीया लखनऊ से मँगावल गइल ह। मालुम होते-आ पानी के फेर बा, अपने इहां के जनमल ओही खरबुज्जा के बोआ से ओतना खरबुज्जा ना होखे। हमरा साथी कमकर, कमकरिन लोग बड़ा मुहतैदी से काम त-आ। दलपति सिटहल राउत, मूँगा के टोली के काम के बहुत सराहना करत

बतुलिया—मुँगा बहिन के टोली तीस-मने कट्ठा आलू उपरजले ई साथी के मालूम बा।

सुखारी—औ मूँगिया कहत रहल, कि हमनी के पियाजो दस मन कट्ठा उपराजब।

बुकुरुल्ला—अउरि त कुलि बात हो गइल, एगो बड़की बात पर हमनी के करै के बा। भुइली, एकमा, हंसराजपुर, आमडाढ़ी ओगर्रह दस गो गाँवन के सिगित के एक जगह बसावै के बात सारन से पुछाइल बा। दसो गाँव एपर विचार आ। हमनिओं के एहि बतिया के फैसला त गाँव भर से लेवे के परी, बाकी पंचाइतो के आपन राय कौनो निहिचय कर के चाही।

सुगिया—हमरा से जेकरै से बात भइल बा, ओमे केहू केहू बूढ़ लोग कहत-आ पुरखन के डिह छोड़ल निम्मन नइखे। बाकी त सब लोग के कहतव इहै बा कि जगह बसिगित बसि जायेब निम्मन ह। बिजली त तार पर बा, एहि वासते भुइली मे का धुरदह के चँवर तक में मछरी मारै खातिर लागि गइल बा। मुदा नो के नल एक जगह से दस गाँवन में ले गइला में लोहा के पंप बहुत लागी। एक जगह दसो गाँवन के बसि गइला से ओकर खरच बहुत कम होई। हमनी के स्नानघर मे नल के लागल बहुत जरूरी बा।

सुखारी—आ पैखानो के अब अदिमी से ढोआवै के काम नइखे, उहो नल से हो जाई, आ गाँवे-गाँवे नल लगौला में बहुत खरच होई।

सोना—इसकूल, असपताल नाटकघर सब बाते के इतिजाम अच्छा होई। बुटुक बाबी! सारन में हमनी के बड़का पंचाइत के का राय बा?

बटुक—सिवान-गोपालगंज की ओर आधा जिल्ला से बेसी में बड़का बड़का गाँव बसि गइलें।

CC-0. JangamWadi Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सुखारी—हमहूँ हथुआ की ओर देखनी, मार उज्जर उज्जर पक्का मार बिजुली से जगमगात, चारो ओर साफ-सुत्थर हरियर-हरियर दूब-बिछावल खेले के मैदान देखि के मन खुस हो-जाला।

सुगिया—हम समुझतानी, समुच्चा बसती के नाव लेनिनपुर और गाँव नाँव भुइली, एकमा, हंसराजपुर.....राखि देहला में बुढ़वौ लोग के मन रहि

बतुलिया—इहै राय हमरो बा।

सब—हमनी सब के इहै राय बा।

सोना—त इहे राय पास। आज के बइठक के काम खतम भइल।

(सब लोग चलि जात-आ)

अंक 4

(जगरानी, रामदेवसिंह, बिसुनंदेव परसाद और रमेसर तिवारी चारों जन गाछ के छेहरा खुरसी पर मेच के समने बइठि के चाय पी रहल बाड़न।)

जगरानी—हमनी के पुरनकी दुनिया से लइकन के ई नइकी दुनिया कइसन निम्मन बा रामदेव बाबू?

रामदेव—का निम्मन बा? एकनी के बोलहू के लूर नइखे। छोट-बड़ लिहाज ना जाने, सब के 'साथी' 'साथी' कहैलें। एनकरा खातिर सबे धन वाईस पसेरी। न देखा सुखरिया चमरा के, ऊ लेनिनपुर के मालिक बनल बा!

जगरानी—मालिक नइखे रामदेव बाबू! सरपंच हवें।

रामदेव—उहै एक्के बाति हा। पचास पुहुति से हमार खनदान परसा के करत चलि आइल। हमरा के लोग कहत रहैं, बाबू रामदेव परसाद नरायन जब गढ़ से निकसत रहनीं त बीस गो मोसाहिब, आ पट्टा जवान पाछे-पाछे परसा के ऊ बाजार कहाँ बा, अब त कुलि पंचइतिया अपना हाथ में ले लेहलन।

जगरानी—मुदा पहिले परसा में रोजिन्ना पंच-पंच सै रुपया के सेव-अंगूर बिकत रहे। आज देखी नु पंचमहला मकान में कै सै तरह के चीज सजाय के रखल बा। मोलौ भाव करै के काम नइखे, दाम लिखि के कागज साटल बा।

रामदेव—ई सेव-अंगूर चमार-सियार के मुँह में जाये लायक हा? हमनी के राज में साँवा-मँडुवा आध पेट मिलत रहल, आ अब देखा उहै सुखरिया चमार लेनिनपुरके—नाहीं पुरनकै नाँव राखल जाई एकमा-भुइली के—मालिक भइल बा।

(यही बखत सरपंच सुखारी, सोना, बतुलिया, तीनि गो अउरी मेहरारू-मरद साथे कान्हे पर फरुहा रखले समने से निकरलैं। मेहरारुनो के पोसाक जूता, मोजा, अधबहियाँ-कुरता औ कपारे पर घाम रोकैवाला टोप मरदै जइसन बा। रामदेव पहिलेइ उठि के खड़ा भइ गइलैं। सुखारी टोप के दाहिना हाथ से उठा के बोललैं)

सुखारी—सब बूढ़ा साथी लोगन के सुन्नर सबेर। *(फेनु ऊ लोग आपुस में बतियावतै चलि गइल।)*

रामदेव—*(बइठि के मुँह बिचुका के)*—देखा नु जगरानी बहिन! तू हऊ के निकुम्ह रजपुत, आ हम एकसरिया भुंइहार कुल भुंइहारन में सिरताज, चमार-सियार, जोलहा-धुनिहा के सामने खड़ा होखे के पड़त-आ?

जगरानी—ऊ जबरदस्ती नइखे नू करत? बाकी देखतानी रामदेव बाबू, हमनियों से पहिले ठाढ़ हो गइनीं?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

रामदेव–जौना बखत हमार मोटर परसा बजार से निकरै, त कुलि
[illegible]-बकाल ठाढ़ हो करिहांव दोहरि के सलाम करैं; सेही रामदेव सिंह के
[illegible]वा के सलाम करे के परत-आ।
जगरानी–ना करीं त सजाय ना नु करीं?
रामदेव–उपहास करे लगिहैं बहिन! एक दिन परसा में हमरे भेख बना के
[illegible]र पर निकरले रहें, आ परसा के आजकल के इ बड़की पकिया सड़क पर खड़ा
[illegible] के भुई के हाथ चहुँपा चहुँपा के 'सलाम सरकार' कहि-कहि हमरा नाँव पर
[illegible] रहतें। का करीं, खून के घोंट पी के रहि गइनीं। ना भइल पुरनका दिन, नाहीं
[illegible]खोरसिंङवा से पकड़ि मँगवा के गढ़ पर धुरछक उतरवा देतीं।
जगरानी–त रामदेव बाबू! अपना के ई नइकी दुनिया निम्मन नइखे लागत?
[illegible] चाहतानी कि ओहीतरे लोग करिहाँव दोहरा के सलाम करौ, ओही तरे लोग
[illegible] बेट मँडुवा-कोदो पर गुजर करौ, आ सेब-अंगूर ना खाव; ओही तरे हाड़-हाड़
[illegible] लइका लगा फिरैं?
रामदेव–चारि जुग से बड़का-छोटका चलि आइल ह, पाँचों अँगुरी बरोबर
[illegible]। कहा बिसुनदेव बाबू!
बिसुनदेव–साँचे कहतानी सरकार! हमरा रसूलपुर के कायथ अ परसा के
[illegible] राजा देवान के नाता चारों जुग से चलि आइल बा। हमनी के ऊ अपनी
[illegible] भर निवाहे के बा।
जगरानी–आ हई अपना नातिन सोनिया के फरुहा कान्ह पर घ के चलत
[illegible] देखत?
बिसुन–पगरी उतारि लेहले जगरानी बहिन! तुँहही बतावा ई निम्मन बा?
जगरानी–कायथ के बेटी राजपुतिन के पतोह होय, ई निम्मन बा?
बिसुन–इहो अनेति हा, मुदा का कइल जाव, इनरवे में भागि घोरा गइल बा,
[illegible] नु बौरा गइल बा!
रामेसर तिवारी–बरेजा में हमरे घर भर–बलुक कहीं हमरे देहिं भर–नेति
[illegible] बा। पुरिखा रामजी के मंदिर बना गइल रहलैं, से दूनों साँझ जा के हम पूजा
[illegible], आ रामजी से विनईले कि हे भगवान्! कहिया अकलंकी औतार लेबा?
जगरानी–तिवारीजी! हमरा नतिया बटुकवा के जानैला नु?
रामेसर–तोहरा नतिया के के ना जानी, उहै नू कपतानी छाड़ि के एहि जवार
[illegible] कुलि खुराफात रचलस्, आ पहिले दुसरा जाति में बियाह कइले। बिसुन बाबू!
[illegible] मति होइहा।
बिसुन–हमार चलत होत त तिवारी जी! एहि छौंड़ि के दीदा रहल बियाह
[illegible]? आ देखत नइखीं हमरैं समने जंघिया पहिरले टोप लगौले चलल जातिआ,
[illegible] के बोलति-आ 'सुन्नर सवेर" जनुक एनकरा ना कहला से सबेर सुन्नर ना होई।
जगरानी–अरे बिसुन बाबु! चीन, जापान, रूस, बिल्लाइत, अमिरिका सबे
[illegible] "सुन्नर सवेर", "सुन्नर दुपहर", "सुन्नर साँझि", "सुन्नर रात", "सुन्नर दिन" कहल
[illegible], ओही से हमनियो के लइका कहत बाड़ें, एमें बाउर का बा?
रामदेव–जगरानी बहिन! तू हमनी बूढ़न में सबसे बड़, बाकी तू लइकन के
[illegible] तेतू, ई काहे?
जगरानी–नइकी दुनिया में लोग के हम बेसी सुखी देखतानी। देखीं, हमरा
[illegible] सारन जिल्ला में केहू भूखा-भिखमंगा लौकत-आ? आ खाये के बताई,

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

लेनिनपुर, परसा, भै कौनो गाँव के रसोईघर में जा के देखीं, एतना निष्प्रभ अपनेहूँ के जेवनार में बनत रहल हा?

बिसुनदेव—हमनी के जिमदारी, मोलहू साहु के रोजगार आ चाउर के इहै कुलि छीनि-झपटि के नु ई छप्पन परकाल बन रहल बा!

जगरानी—खाली ओतने से गाँव भर छप्पन परकाल ना खाइत बाड़े नइखी होऊ बिसुन बाबू के नातिन सोनिया कान्हे फरुहा लेके जाति बिरा समुच्चा मरद-मेहरारू जाँगर चलावत-आ ओही से ई छप्पन परकाल बनल भगवान् से कि अब हेई कुलि मति देखावा।

रमेसर तिवारी—साँचै कहत बानी बिसुन बाबू! हमरा गाँव में त घर बहि गइल। ओनकरा नतोहन में कौनिउ जाति नइखै बंचल। हमनी मेहरारू के ईजत रहिल हा।

बिसुनदेव—खवास-खवासिन छोड़ि केहू परछाई ले ना देखि सकत रहे से देखीं हई कसबी-पतुरिया लेखा मुँह खोलले घूमति बाड़ीं। माँझी से लाइन रेल के संड़क का बनति-आ, एहि लोग के रूप के बजार लगावे के मौका गइल हा।

जगरानी—एइसन मति कहीं देवान जी! हमनियों के नु वेटी पतोहू अपने सब नहकै पुरनका दिन के झंखत बानीं। ऊ अब फेनु लउटि के न देखतानी, हमनी के जमाना में एक घर के दस घर दस घर के चालिस घर हो जात रहल हा, आ अब देखी समुच्चा देस एक घर बनि गइल। मेहरारू मरद ओही एक घर के सवाँग हवै। जे काम करै लायक बाटे, सेके देंह चोरावै ना जात-आ। जे देहि से बेकाम बा, तेकरा के खाये-पीये, पहिरे-ओढ़े के इंतिजाम करत आ। लइका लइकिन के पोसे-पालै, पढ़ावै-लिखावै के एइसन सुंदर कौनो जुग में रहल हा? हमरा त देखि के अँखिया पतियाय ना, कि एहीं जिलवा के धरतिया में एतना अन-धन कहँवा लुकावल रहें। हमनी पुरनकी के अदिमिन के ई सरग एइसन नइकी दुनिया के देखि के खुस होये के चाहीं।

(एही बखत मरद मेहरारू फरुहा लेहले गावत अइलन।)

उठु-उठु रे तें मुखबन्हुआ, उठु रे धरती के अभगवा।
बा न्याव बजर घहरावत, जनमत बढ़िया संसरवा ॥१॥
पुरुबिल फेनु नाहीं बान्हीं, उठु रे अब-नहिं तें बन्हुआ।
नइ नेंव उठत बा जगवा, ना रहलै अव सब होइबै ॥२॥
आ जुटहु संघतिया समुहे, ई आखिरि बेर लड़इया।

(परदा गिरि जात-आ।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

जोंक

(नाटक)

—राहुल सांकृत्यायन

नाटक के खेलाड़ी

१—नोहरराउत	मुखिया खेलाड़ी
२—बुझावन महतो	किसान
३—सिरतन लाल	जिमदार के पटवारी
४—ढोंढ़ामल	मिल मालिक
५—भाकुरचन्द	दूकानदार
६—लादूचंद	भाकुर के बेटा
७—दुब्बर साहु	महाजन
८—रमजान	मजूर
९—गोपाल गिरि	संन्यासी साधु
१०—रामदास	वैरागी साधू
११—भगतिन	विधवा बाभनी
१२—पडित	पडित
१३—मंसीजी	मुनीम
१४—रंगसिंह	जिमदार
१५—लोटनसाहु	महाजन
१६—नोकर	नोकर
१७—अंग्रेजसिपाही	सिपाही
१८—खेलावन	सिपाही
१९—हिनुतानी	सिपाही

ई नाटक जुलाई ११, १२ तारीख (१९४२) के हजारीबाग जेहल में लिखल गइल।

(गीत गावल जाति-आ)

हे फिकिरिया मरलस् जान।
सौंझ बिहान के खरची नइखे, मेहरी मारै तान॥
अन्न बिना मोर लड़का रोवैं, का करीं हे भगवान्॥हे०॥
करजा काढ़ि-काढ़ि खेती खइलीं, खेतवैं सूखल धान॥
बैल बेचि जिमदरवा के देलीं, सहुआ कहै बेइमान॥ हे॥

(बुझावन महतो एगो फाटल-मइल धोती पहिरले खड़ा बाड़े। एही घरी नोहर राउत के आँखि बुझावन महतो की फिल्ली पर पड़ल, ऊ झट के फिल्ली के कौनो चीजु नोच के बुझावन से भागेला।)

नोहर—हई देखा बुझावन महतो!

Re Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

बुझावन—(*थथमि के*) नोहर भाई! फेकऽ हाँ, फेकबो करबा, हमारा पकड़ा लेआवा, का दु करिया-करिया हिल्लत-आ।

नोहर—तोहरे फिल्ली में से निकलनी हाँ, देख नु हई गोड़ लोहू-लोहान भइल जानी केतना बेरि से लागल रहल हा!

बुझावन—(*खून से समुच्चा फिल्ली के भीजल देखिके*) जोंक लागल रहल हा भाई! हमार माथा घूमत-आ। (बइठि गइले)

नोहर—(*बइठि के घाव के मुँह अगुरी से दाब के*) भइंसवां जोंक हा बुझाल। मतलब क चुकल बा। हो देखऽ नु अउँठा अइसन मोट बा।

बुझावन—ओकरा ओर देखे के मन नइखे करत। पाव भर खून पियले होई नोहर केतना त खून बहि गइल हा। तोहरा मालूम ना भइल ह बुझावन?

नोहर—ना, पाव भर ना, पाव भर बहुत होला, मुदा कनवाछटाँक से ना कम

बुझावन—जोंकि के लागल ना नु मालूम होखे। हम पोखरा में भइंसिया के ढोंढी मिगडाह नु तपल बा, रोहिनी के पानी बरिसि गइल बा, से पोखरवा में नयका पानी नयका पनिया में ना जाने कहाँ से छैंटी के छैंटी जोंक उप्पर भइल बाड़ीसन।

नोहर—तोहरा तनिको ना बुझाइल हा?

बुझावन—ना नोहर भाई! हम अपना भइंसिया के ढोंढी से चारिगो जोंक बिगले रहली हैं, बाकी हमरा ई ना पता रहल ह, कि हमरो जोंक लागल बा।

नोहर—अदिमी के खून मिट्ठ होला बुझावन! ऊ एक कनवा पी के मोटाइल फेंकि देनी, देखा इतना पिअले बा, कि मुँह से खून निकरि रहल बा। मुदा पाकी ना, जोंकि के काटल घाव पाके ना।

बुझावन—साचे नोहर भाई! नाहीं त हमार भइंसिया त सरि के मुड़ गइल रहे ओकरा देहिं से चार गो पाँच गो बीगीले। भगवान् एनी के काहे के बनौलें?

नोहर—हमनी के देहिं में जम्मा-पूंजी नवै सेर खून बतावल जाला।

बुझावन—त एक्कै कनवा निकरला से कपार में घुमरी काहे आवेले नोहर भाई?

नोहर—घुमरियै के पूछत बाड़ा, बेसी खून गिरि गइला पर अदिमी मरि जाला। मोटकी नस काटि दा, जे खूनं ना बन्न होई, त अदिमी मर जाई। दुई मन के समुच्चा देहि नौ सेर खून फइलल बा।

बुझावन—छोड़ दा नोहर भाई, अब बन्न हो गइल होई।

नोहर—(*हाथ हटा के*) हाँ खून बन्न हो गइल।

बुझावन—(*उठि के जोंक पर हुमचि-हुमचि के पाँच-छ एड़ी मार के*) नोहर भाई केतना खून बहत-आ, इ जोंकिया सुटुकि के पातर हो गइल, बाकी मूअल ना।

नोहर—जोंकि के जिउ बड़ा कठकरेजी होला! बुझावन! ऊ जलदी ना नु मूअे।

बुझावन—हाँ, नोहर भाई! लोग त कहेला कि सुखा के पीस के फेंक दीहल जाय तो बरखा के पानी बरसतें जोंक फेनु जी जाले।

नोहर—ई हमरा नइखें मालुम, बाकी जोंकि बड़ कठकरेजी होले, ई देखतें बाड़ा।

(*गाँव के पटवारी सिरतन लाल टोपी-मिरजई पहिरले, कान में कलम खोंसले आवेले*)

बुझावन—सलाम देवान जी! कहाँ घुमतानी।

सिरतन लाल—मालिक के दु मन घिउ, पाँच मन दही, दु गाड़ी कटहर केलना के अवगे विदा कइनी हाँ, तीन दिन से परसान-परसान रहनी हाँ, बुझावन महतो! आज हई साँस लेहनी हाँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

बुझावन—देवान जी! ई पँच-पँच मन दही, दु-दु गाड़ी कटहर, एगो खस्सी हमहूँ देहनी
आ बुझावनो गाँव से बारह गो खस्सी अउर गइल हा, मालिक के छगो परानी ई कुलि ले के
गइलें?

सिरतन—तुहूँ नोनिये भुचेंग रहि गइला। बड़का लोग के अपने देह ले ना नु होखे। एक
के पाछे पचास गो जियैला; तौनो में ई त बबुई जी के बियाह के सरजाम नु हवे?

बुझावन—एगो बरात के सरजाम त हमरे गाँव से गइल हा, फेनु हमनी के मालिक के
नोंका बाटे, ई कुल्ह रखहू के जगह त ना होई?

सिरतन—राखे के कौन बात लेले बाड़ा, देखले नइखा, भंडारघर केतना बड़ बा? भंडारी
ने चाभी के झब्बा नइखा देखले? फेनु सरकार संतोखी साह के गोला खाली करा देले

नोहर—हाँ, जब गाँव भर के घर खाली करा दीहल जाय, त छप्पन मौजा का छसै मौजा
के सबुन राखल जा सकेले।

सिरतन—बुझावन महतो! अबकी चला नु तुहूँ, का केहू सवाँग के भेजवा मरदे। उहाँ
नोनियें जुटिहें।

नोहर—भुइहार बाबू के घरे बरात आई; औ ई दु सै नोनिया जुटि के का करिहें?

सिरतन—फरुहा-कुदार के बहुत काम रहैला नोहर! बबुआजी के बियाह भइल रहल, त
रहला?

नोहर—ना देवान जी! सुनी ले खाये बिना गति बनि जाले, एही से ना जाई।

सिरतन—खाये के तकलीफ न होले, हमरा त नइखे भइल।

बुझावन—अपने के का होई, अपने के त बहनोईये बाड़े दरबार में .... बाकी देवान जी!
ने लूट लागल बा। अदिमी बर-बेगारी में अपना कंपारे चीज-बतुस लादि के दस कोस
चलता। मर-मजूरी त का मिली, अपना घर से सुतआ बान्हि के जाईले, इहो ना होला कि
से भूले छुट्टी मिल जाओ; चारि दिन चिट्ठियै-पुरुजा देवे में लगा देलें।

सिरतन—एमें सरकार के कौनो दोस नइखे बुझावन महतो! दरबार में अइसहीं चलेला।
सरकार के पाछे हजार गो अदिमी जीयलें। बड़का के इहे नु ह?

नोहर—आठ आना रुपया महीना जब तनखाह दिआई, त अदिमी का करी देवान जी! ई
के नु सोचे के चाही कि रुपया-आठि आना महिन्ना में हरवाहो-चरवाह आजकल के दिन
में।

बुझावन—तीन ढेबुआ सेर त मंडुआ बा नोहर भाई! औ ढेबुआ सेर महुआ।

नोहर—मंडुओ-महुआ से गुजारा करे त खाली खोराकी में एक अदिमी का डेढ़ रुपया
लग जाई, आपन कपड़ा-लत्ता आ मेहरारू लइका के पोसे के त बातै फरका? मालिक ई
लता?

सिरतन—सनातन से दरबार में जेकर जेतना नोकरी लाग गइल बा, उहै चल जाति-आ।
सरकारी, हमार तनखाह पचीस रुपया साल हवे, दु रूपया के महिन्ना।

नोहर—मुदा देवान जी! अपने महरौली के बारह टोला के राजा बनि के बैठल बानी।
दरबार महरौल में रुपया पीछे दु पैसा केतना होला?

बुझावन—ओ खाये-पिये में एको पैसा खरच ना होके के, घर भर के काम एहीं से

सिरतन—अब का अमदनी बा बुझावन महतो! हमरा बाबूजी के बखत देखता, एही
में सोना बरसत रहल हा।

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

नोहर—महरौली में सोना अबहियो बरसत-आ देवान जी! बाकी हमनी खातिर हजार के तहसील अब छः हजार हो गइल। दु-दु पुहुत के जोतल खेत मालिक निकरिये बना लेहलें, दु सै बिगहा जिरात कबहीं रहल ह देवान जी! ई हमनी का मुँहे जाव नू?

बुझावन—आ, सुनतानी मोटरवाला हर आवत-आ, जौनो गाँव के चमार महिन्ना जीअत रहले हौं, उहो बन्न भइल, ओकनी के मुँह के अन्न छूटल।

सिरतन—बकास के झगड़ा जिला-जवार में ना उठल होइत, त ना नु निकरते के एमे कौनो खसूर नइखे।

नोहर—ए देवान जी! देखत-देखत आँख पाकि गइल। जान पड़त-आ कि जेकर जनम-करम बा, जेकरा हजार पुहुत के हाड़ इहाँ गलि गइल, से किछुओ ना। लमहरा ई अमहरा के बाबू साहेबै महरौली के सब कुछ बाड़ें।

सिरतन—नोहर राउत! तोहार सिकाइत कई बेर हमरा कचहरी में चहुँपल ह, राउत के खियाल आवत-आ, नाहीं त जानत नु बाड़ा जिमदारी फन्ना।

नोहर—देवान जी! बाबू के खियाल मति करीं, जिनगी भर एगो भइंसि के उठरी के लगौले रहलें, आ, ओही से नु अपने के छोह बनल रहल हा।

सिरतन—मालिक के जमीन में बसल बाड़ा, उनकरा निगाह से जीयत-खात ना नु दही-दूध देला?

नोहर—ए देवान जी! बघउछ बाबा के चौरा अबहिन ले हमरा इहाँ हर साल महरौली कुल्ह जंगल रहै, जब हमनी के पुरुखा अइलें। हमार, बुझावन आ अउर लोग के जंगल काट के खेतबारी बनौलें; बघउछ बाबा लेखौं कतना लोग के बाघ मुअवलसु; घर के बच्चन के हुँड़ार उठा ले गइल।

बुझावन—हुंडरहो त हौं खनी हमरा दादा के होस तक होत रहल हा, नोहर राउत।

नोहर—आ खेत बनावै में कतना अदिमी साँप के कटला से मु गइलें, तब महरौली बसल, तब महरौली में सोना बरिसे लागल, तब ओही सोना के लूटे खातिर अमहरा के चहुँपले। अमहरा के बाबू के एको बुन्न पसीनों नइखै चूअल महरौली में।

सिरतन—विधि-बरम्हा के रेख पर मेल मारल तोहरा हाथ में नइखे नोहर! अमहरा के गढ़ में नइखे न जनम भइल, नाहीं त तुहूँ दु लाख के तसील पर बइठल, साहेब तोहरो के खुरसी दीतें। आपन हसियत देखा!

नोहर—ए देवान जी! ई हमरा कहला के जबाब ना भइल। हमनी के जनम भइल बा। हम त इहै जानी ले कि मतारी के थन में दूध पहिले आवेला, तब लइका के हमनी के जनम जब महरौली भइल बा, त महरौली हमनिये के जीये-खाये खातिर हवे।

सिरतन—जीअत-खात नइखे? महरौलिये का परताप से, बाबुए साहेब का परताप से जौना पतरी में खाये के ओही में छेद ना करे के नोहर राउत!

नोहर—बाबू साहेब के पतरी होई, त अमहरा में होई, महरौली में ना देखल गइल। महरौली ओही के हवे जेकर पुरुखा जंगल काटि के, बाघ-हुंड़ार मारि के एके कइलें। महरौली में सोना बरसत-आ, ओही हाथन के परताप से, जौनन में दस-दस गो ठेला पड़त बा।

सिरतन—तोहरा अकिल से सोचे के होई, तब नु? मुदा 'अन्हरा के आगे रोवें दीदा खोवै' अहिर के बुधियै केतना?

नोहर—लूटै के बुधि नइखे, खून चूसे के बुद्धि नइखै; बाकी माटी के सोना हमनी बनावेला देवान जी! छः हजार मालगुजारी दा, तीन हजार बबुनी कें बियाह में दा, दु हजार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

के चिट्ठा में दा, पान सै हाथी के चिट्ठा में दा, तीन सै घोड़ा के चिट्ठा में दा। साल भर करत-करत मू-आ। हेइ मालिक के सवारी आइल, हेई मनेजर साहेब के हुकुम आइल, हेई साहेब अइलें, हेई पटवारी, हेई सवार, हेई सिपाही-पियादा, हेई गोराइत-बराहिल। दुत् कमाई हमनी के, ओ हरियरो ना होये पाई, जेही आवत-आ से ही कुपुटि के खा जा।

हिरतन—घास जेतने कंटाले-नोचाले ओतनै फुनगी फेंकैले। नोहर! तोहरा लोगन के का देवे के पड़ित, त इतना कमइबो ना करत-आ?

नोहर—कमा-कमा के मुवही भर हमनी के काम ह। ओ हमनी के कमाई में आगि लगा उहाँ अमहरा में केहू बैठल बा। बबुआ के बरात गइल रहल, त कै हजार अदिमी रहलें, पाँच हजार त अतिश-बाजी में उड़ावल गइल। बनारस, लखनऊ आ कलकत्ता तक के नामी-नामी तायफा गइल रहलीं, ई केकरा कमाई से देवान जी?

हिरतन—अपना भाग से नोहर राउत! कमायेवाला कमाला, भागवाला खाला। "करम लिख करि राखा। जे जस करै से तस फल चाखा।" बाबू साहेब ओह जनम में करम कइले रहा चुकि राज" भइल बा, तू ओह जनम के पापी हवा, उहे भोगत बाड़ा? केहू का हिरिस से ना किछुओ होला।

नोहर—त हमनी जे ई घाम में खेत कोड़त-जोतत मूईले, बरखा में दिन भर भीजीले; खेतवे, घास सोहीले, जाड़ा पाला में कठुआते खेत में सत्ती होई ले, ई करम किछुओ नइखे?

बुझावन—हमरा सोझवा अदिमी के बुधि में त इहे आवत-आ, कि भगवान् जेकरा के पैदा में जनम दिहलैं, भगवान की ओर से ऊ गाँव ओकरे लिखा गइल; बाकी कागज-पत्तर में भगवान की ओर से नइखे लिखा के आइल। महरौली के कचहरी से छपरा के कचहरी ले तू बानी, कैसन कागज में इमानदारी राखल जाले?

नोहर—बुझावन! ज धरतीमाता के पाछे आपन खून-पसीना एक करेला, उहे इमनदारी के रखा, नाहीं त ई जिमदार बड़का जोंक हवें। बाप रे बाप! हमनी के देही में रचिको रकत ना बचे, हाड़ी-चाम एक-जगहा राखल मुसुकिल बाटे, आ ओने गुलछर्रा उड़त-आ।

(परदा गिरि जात-आ)

अंक २

हाइ हो देहियाँ लगली जोंक।
रात-दिना हम कमवा में खटलों, कपरा लेहलीं ठोंक।
ऐहा सवाई सहुआ कइले, देलै करेजवा भोंक।।
खोलि दुकानिया सेठवा लूटै, दैवो के नाही रोक।
मिल में बइठि मजुरवा रोवै, भकसी देहले झोंक।।हाई हो०।।

(सेठ भाकुरचंद दुकानदार, सेठ ढोंढ़ामल मिल-मालिक, दुब्बर साहु महाजन, तीनों अदिमी में एक मोट, गोड़ छितरौले आवत बाड़े, दुब्बर साहु उढ़कि के गिरि गइलै, ढोंढा आ भाकुर ओनही के ऊपर गिरि पड़लें।)

दुब्बर साहु—बाप रे बाप! पिसा गइनी, केहू उठावा हो।

ढोंढ़ामल—जिउ गइल रे दादा! भकुरवा हमरौ के जंतले बा। अरे कौनो बँचावा।

भाकुरचंद—घ्-घ्-घ-र-वा-क्-कै क् -कुली ब्-बै-क-तिया म्-मु ग् गइ-लें क्-का।

Re Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ढोंढ़ामल—पेट फाटत-आ रे भकुरवा! कहाँ से तोरा घरे अइनी।

भाकुरचंद—ह-ह-मरा क्-क्-के म्-म्-म .....

दुब्बर साहु—हाइ मुअनी,हाइ, हाइ.....।

(तीनो गो नोकर आ के पारी पारा तीनों जने के उठा के खड़ा कइले, फेनु भर
पर तीनों जने बइठलै।)

भाकुरचंद—(हाँफत, हाथ से पंखा करत) द्-दु-ब्-ब्-र स्-सा-हू। च्-च्-चै-

दुब्बर साहु—*(साँस तर-उप्पर होत)* जिव बौंच गइल भाकुरचन्द जी।
असगुन भइल।

ढोंढ़ामल—पैदल दुइयो डेग चलै लायक ना हवे। आ दुब्बर साहु! नौवा के
ना नु तहरा में बा। मरदवा! तनी सैका कम करे के चाही।

दुब्बर साहु—रामदुहाई ढोंढ़ा! खोराक आधी क देहनी, दूनों साँझ मिला के
पाव घीउ लेतानी। सहुआइन फ़िकिर के मारे झुराइल जात बाड़ी।

ढोंढ़ामल—ऊ काहें?

दुब्बर साहु—हमार देहियाँ किछुओ बा? कहत बाड़ी 'तू त सूखि के कँटा
जात बाड़ा'।

ढोंढ़ामल—काँटा! समुच्चा कलकत्ता सहर में इहै हमनियें तीन गो त झुग
भइल बानी।

दुब्बर साहु—हेई मरदवा, भाकुर के मुँह से त बकारो नइखै निकरत। आ झुग
पर इहै नु गिरलैं पहिले।

(नोकर गिलास में सरबत लेके अइले)

ढोंढ़ामल—हमरा अगरवालन के जात में बरजित त बा, मुदा सुननी हाँ, कि
कै सुरुवा पिअला से मोटाई कम होले, चार महिन्ना से पाँच गो रोज लेतानी, आ कुछ
होत-आ।

दुब्बर साहु—*(आँखि आ मुँह फारिके)*—ढोंढ़ामल जी! साँचे फैदा भइल हा? ढोंढ़
ओजनवा किछु, कमल ह?

ढोंढ़ामल—एक बेर तौलले रहनीं, त दु सेर कम भइल।

दुब्बर साहु—आ अबकी सेर?

ढोंढ़ामल—दस सेर बढ़ली हाँ, मुदा देहिया में बड़ फुरती मालुम होले।

भाकुरचंद—फ्-फ्-फु-र-त्-त्-ती!

दुब्बर साहु—भोजन बढ़ला घटला से किछुओ न होखे, असल चीजु फुरती हो।

ढोंढ़ामल—फुरती त मालुम होत-आ, हमरा घर भर के लोग कहत-आ।

भाकुरचंद—ह्-हम ह्-ह्-हू ख्-खा-येब,

दुब्बर साहु—त हमरो ई दवाई करै के बा।

(पाछे की ओर से अवाज आवति-आ) "पूँजीसाही, नास हो"

ढोंढ़ामल—सुनला ह दुब्बर साहु?

भाकुरचंद—ह्-ह-हम हूँ स्-सुन-लीं।

दुब्बर साहु—मजूर किसान राजवाला अइलें।

ढोंढ़ामल—ई जिउ ना छड़िहैं दुब्बर साहु! सपना में नींदि केतना बेर उचटि

दुब्बर साहु—विदादसमी में देस गइल रहनी हाँ, गाँवनों में बेरामी फइल गइल
" जिमदारसाही नास हो" कहे लै, आ इहाँ " पूँजी-साही नास हो।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढोंढ़ामल—तहरा छपरा जिल्ला ले ई ललका झंडा चहुँपि गइल बा?

दुब्बर साहु—गाँवन तक ले ढोंढामल! हमरा एक जना पाहुन के थैली गिन के खरीदल

बारी मे सैकड़न बिगहा खेत छीन लेहलें।

ढोंढ़ामल—सरकार पुलिस मद्दत ना कइले?

दुब्बर साहु—किसान एतना एकवट गइलें, कि ओकनी के बाति माने के परल। बाकी

बाति छाँड़ी, हई बताई, ई जे हमनी कें उप्पर सकट आइल बा, एकरा बारे में का करै के

काल हमरो गद्दी के समने ललका झंडा घुमौलें, आ "सूदखोर नास हो" चिल्लात रहलें।

ढोंढामल—हम त समुझत रहनी, कि हमनी के चटकल-पटकल के मजुरवे

बाड़े।

भाकुरचंद—हु-हु-मरा त-द्-द दु ..... (लतफल हो गइले, पूरा बात मुँह से न निकसल)

ढोंढ़ामल—ई तहरा से बात न होई सेठ भाकुरचंद! बोलावा अपना बेटा के।

भाकुरचंद—(नौकर के) ज् ज्-जा, ब्-ब्-ब्-ब—

नोकर—बबुआ जी के बोला ले आई सेठ जी।

भाकुरचंद—ह्-ह्-ह्-हाँ।

(नौकर निकर गइल। बापे लेखा मोट-झोट जवान लादूचंद के ले आइल)

लादूचंद—जै राम जी की चाचा ढोंढ़ामल! जै रामजी की!

(कुरसी पर बइठि गइलन)

ढोंढ़ामल—अब नोकरन के जाये देवै के चाही।

लादूचंद—जा सन! (सब नौकर चल गइलन)

दुब्बर साहु—खदुका, गाहक, मजूर सब के चोट हमनी के उप्पर बा लादूचंदजी।

लादूचंद—से त देखतानी, साहुजी।

दुब्बर साहु—कलकत्ता सहर में छोट-बड़ जेतना सूद के रोजगार करैवाला बाड़े, सब के

सकट आइल बा। खदुका एक ओर से हमनी के डाकू कहत बाड़े।

लादूचंद—हमनियों घर के लछिमी लगा के दुकान क़इले बानी। एकम-टीकस दा, मकान

दा, रोसनी-पानी के टीकस दा। टीकस भाड़ा के मारे तबाह-तबाह बानी—

एगो बुढ़िया भिखारिन *(आके)*—सेठजी! एगो ढेबुआ भिख-मगिनियों के मिले, दूध-पूत

रहैं।

लादूचंद—भाग इहाँ से, मुखुत के पैसा खाये के सिखले बाड़ी।

बुढ़िया—केहू नइखे सेठजी! भरला पर ना, जरला पर माँग तानी। फुलल रह सेठजी!

ढेबुआ।

ढोंढामल—ई त मालुम होत-आ, कि किछु दिन में कलकत्ता भिखमंगवनें के हो जाई।

से सीख ले, बड़चो.... जब देखा तब भिखमंगा घेरले रहैंलें।

दुब्बर साहु—पुलुस का घ के ले जाये के चाही, एकनी के मारे भलमानुस के कतहूँ

मुसकिल हो गइल बा।

बुढ़िया—सेठजी! पुलुसियो ले जाइत हमनी के, त खइला से निहिचिन्त त रहतीं, एगो

सेठजी! बाल-बच्चा जुड़ाइल रहैं।

लादूचंद—(एगो अधेला फेंकि के) जो भाग, फेनु एने कीओर देखली, त निम्मन ना होई।

ढोंढामल—दुब्बर साहु जे बात कहले, उहै बात हमनी मिलवाला लोगनौ के बा। चट,

कपड़ा, कागज जेतना मिल, कारखाना बा; सब जगह मजूर एकवट के सभा करत बाड़े; जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Funding by IKS-MoE-Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. Digitization and Digital Preservation by eGangotri & Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

से सुनली हौं, कि रूसी मुलुक में मजूर-किसान के राज बाटे, तब से एकनी के मन बढ़ गइल बा।

दुब्बर साहु—ठीक कहलीं हौं, ई ललका झंडी ओहीं से उप्पर भइल हा। हमनी के सब डाकू बूझैलें।

ढोंढ़ामल—रोजगार में टोटा पर टोटा पड़ल जात-आ। चौथा साल चार लाख के भइल रहल, परियार पाँच हजार मजूरी बढ़ावे के पड़ल, परसाल दु हजार औरू बढ़ावे के एहि साल फेनु हड़ताल के तयारी करत बाड़ै, बाहर के न जानी कहाँ के लुहेड़ा भड़कावत बाड़ै, मजूर-सभा, ऊनियन-फूनियन का-का बनावत बाड़ैं।

दुब्बर साहु—अपने लोगन के त सेठ ढोंढ़ामल! दवर बा, पाँच हजार मजूरी बढ़ावे चीज पर सात हजार दाम राखि देब। हमनी के त सूद बेसी करीं, त कनून से पकड़ल बहीखाता में तनिको फेर-बदल होय, तो, जरिबाना-जेहलखाना।

लादूचंद—महाजनों के रहता बा साहूजी, अपने लोग त ९० रुपया देके बही में पर सौ रुपया चढ़ाई ले। कहै के रही छः रुपया सैकड़ा, आ होई चौबीस रुपया सैकड़ा। छोट-भैया त रुपया पर पैसा रोज के सूद असूले लें। हमनिये दुकनदारन के मुमुकि दिआइल बा। अब हई जे कनून बनल हा, जौना में दुकान के नोकरन के घंटासिरे काम के बात लिखाइल बा, ओसे त औरू हमनी के हाथ बन्हा गइल।

ढोंढामल—लादूचंद! तू त अपने बापो से बढ़ के कइयाँ निकरला। आजकाल दिन में त दुकनदरनै के नु पाँचो अँगुली घीउ में बा। एक रुपया के चा बाड़न, सरकार दाम ठीक करै के अईन-कनून बनावते रहति-आ, बाकी ऊ तोहन लोगन पात-पात।

लादूचंद—इहै त कमाये के दिन ह, सेठजी! तूहूँ कपड़ा के मिलवाला लोग, गइला। डेढ़ सौ रुपया के रूई के गाँठ रहे, तब एक रुपया सात आना धोती-जोड़ा, गाँठ भइला पर दु रुपया सात आना, फेनु भाव गिरि के जब गाँठि १६० रुपया रहि गइल, रुपया से बेसी।

दुब्बर साहु—हमनी के एक-दूसरा के हिरिस कइला से काम ना चली सेठ ई देखत नु बानी कि कुल्ह भुक्खड़ आ कुछु पढ़ुओ मिलि देवै के, औ हिनुतानी में ऊ रूसै लेखा राज कायम करे चाहत बाड़ै।

ढोंढ़ामल—ई बात सौचै के ह, बेटा लादूचंद!

(आवाज आवति आ) "मजूर-राज, कायम हो", "किसान राज, कायम हो", "पूँजीवाद नास हो।" "लाल झंडा, अमर हो।'

(नोहर, रमजान केतना लोग के साथे लाल झंडा लेले चहुँपलै, औ मंच के नीचे खड़ा भइलैं, सेठ लोग सहमि के सुनत-आ)

रमजान—*(वाख्यान देवै के सुर में)* भाई लोनी! काम में दिन-रात खटत-खटत हमनी के जिउ जात-आ, औ हमनी के बाल-बच्चा अन्न बिना पटपटात बाड़ै। होने हेइ देखीं, कोठा पर कोठा उठल चलि जात-आ, बिजुली के पंखा रात-दिन चलत-आ। ई कुलि केकरा कमाई से? हमनी मजूरन के कमाई से। चीनी के मिलन में चार बरिस में लागल रुपया कुल्हि मुनाफा से गइल, इ केकरा कमाई से? हमनी का कमाई से। अन्न, कपड़ा, लोहा, लक्कड़ दुनियाँ भर के चीज जौंगर चलौला—चोटी कै पसीना एड़ी ले बहौला से पैदा होला। जे आपन देहि ना खटा सकैला, से का चीजु आ धन उपराजी। कामजोर-चामचोर हमनी के कुलि कमाई लूटि के करत बाड़ै। केहू मिल के मालिक बनि के लूटत-आ, केहू दुकान छानि के लुटत-आ, केहू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...र के कमाई रुपया के रूप में चोरा के डेढ़ा-सवाई क रहल बा। "बोलीं कमकरन के (सब ...)।" "बोलीं कामचोरन कै (सब लोग) छै।"

...मोहर—भाई लोनी! अहिर सोझे बतियावै जानैला। जेतना लोग दूसरा के कमाई पर, ...के पसीना पर, दूसरा के खून पर जीयैला, ऊ सब जोंक हवै। जबले जोंक दुनियाँ में रहिहें, ...जोंकन के सरदारी रही, तबले मजूरन, किसानन, जौंगरवालन के हौंड़ी पर ढकनी न ...। "बोलीं जोंकन के, (सब लोग) छै।" "बोलीं मजूरन के (सब लोग) जैं।"

(सिल झंडा लेले लोग चलि जात-आ।)

...मल—देख हो दुब्बर साहु! जे किछु बचल रहल ह, ऊहौ पुरनाहुत हो गइल। ...के इ जोंक बनावत बाड़ेंसन!

दुब्बर साहु—ई मतारी-बहिन के गारी से बढ़िके हवे, सेठ भाकुरचंद!

भाकुरचंद—ए-इ-इ-इ-स्-स्-सन ग्-ग्-ग-गारी ज्-ज्-ज्-जिनि- ग्-ग्-ग्-गियों, ...न्-न्-ना स्-स्-सुन-लीं।

(परदा गिरत आ)

अंक ३

(गीत)

हाइ दैवा बनल गरे फाँसी।
स्वास्थ से जोड़ि पोथिया बनौलस,
बम्हना भइल सतनासी।
हमनी के खुनवा सुखौला के किछु ना,
जोकिया सरग के वासी।।
जेतनी अनैया औ पपवा जगत् में,
भगियै लगौलै झाँसी।।
झूठ तोर सधुआ धरमवा करमवा,
झूठै बम्हनवा के कासी।।हेई0।।

(बड़ बड़ जटा ओ देह में भभूत लगौले साधु गोपालगिरि धूनी के पास बैठल बाड़े, ...हाथ में गंजही चिलम में 'कंकड़' भरल हवै)

गोपालगिरि—लेना हो शंकर, गाँजा है न कंकर। शंकर आजा, कैलासपती के राजा ...में दम लगावत-आ)

(दुसर जटाधारी साधु रामदास माथे में बैरागी तिलक लगौलै आके)

रामदास—सीत्-ता-रा-ा-ा-म्।

गोपालगिरि—आवा सीताराम, आवा दम लगावा।

रामदास—दम हवै! ओ हो! महतिमा आजकाल दमो सपना हो गइल बा। कांगरेजवालन ...हो! "रहै न कोउ कुल रोविन हरा।" दु महिन्ना दम लगौला भइल।

गोपालगिरि—सुखा भुर्रा हा सीताराम! नैपाल से आवे में एक चिलम गाँजा निकल ...खातिर, मत पूछा, एक महिन्ना के जेहल दे देहलस्।

रामदास—आखिर ससुरी कांगरेज गइल, बाकी संकर के बूटी साधुन के मुँह से छोड़ा के ...के दम लगावत-आ, फेनु चिलम देके उठे चाहत-आ)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2. Digitized by eGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

गोपालगिरि—कवन जल्दी पड़ल बा, सन्त!

रामदास—सौकेरे कहीं बसती-नगर धरै के चाही, इहाँ जंगल अगोरला से का चली?

गोपालगिरि—संत बइठि जायें, त जंगल में मंगल होला। महतिमा! अपने के

रामदास—हमार एक गो छोटा सा नाँव रामदास ह, आ, अपने के?

गोपालगिरि—एहि चोला के नाँव गोपालगिरि हा, गुरु महराज की किर रामदासजी! जंगल से डेरा मत।

रामदास—पेट में मूस कूदत-आ गोपालगिरिजी; आ दुपहर हो गइल।

गोपालगिरि—बइठा महतिमा! गुरु महाराज की दया से इहैं बैठले-बैठल सब चहुँप जाई।

रामदास—त मालूम, होत-आ, गोपालगिरिजी! अपने बसती के चेतौलने बानी?

गोपालगिरि—साधु जहां बइठि जायें, वहाँ दुनिया ससुरी चेती न त का करी?

(गोड़ के आहट सुनाइल, रामदास देखलें ए गो मेहरारू थरिया में किछु लेइले आवत

रामदास—(देखि के) मालुम होता, ई भगतिन् किछु ली आवति-आ, पेट में बा महातमा! सवेरे आरान छोड़ला पर एक लोटिया (*तीन सेर भरे लायक लोटा देखा* पियलीं।

गोपालगिरि—गुरु महाराज भेज देहलें रामदासजी! अब डंड-कमंडल राखा, आसन लगावा।

(रामदास कमरा और कमंजल राखि के मिरिगछाला बिछा के बइठि गइले। मेहरारू थरिया गोपालगिरि के समने रख के दूनों साधुन के गोड़ लगल, औ "सुख रहा भगतिन" पाँ के एक ओर बइठि गइल। गोपालगिरि थरिया खोलि के हलुआ-पूड़ी रामदास के बोललन्)

गोपालगिरि—ला महात्मा! अब देर मत करा, माई परेम से बना के ले आइल गुरु महाराज के भोग लगावा।

रामदास—आवा महात्मा! दूनों मूरती रामजी की हिच्छा से।

भगतिन—तब ले पावल जा, हम घर से औरू ले आउतानी।

गोपालगिरि—नाहीं माई! तकलीफ ना करै के, सन्त एतनै से गुजरा क महाराज की किरपा से।

भगतिन—ना महाराजजी! घर में बहुत राखल बा (*भगतिन जल्दी से निकरि*

(रामदास भगतिन के मुँह की ओर खुब निहारत रहल)

गोपालगिरि—कहा महात्मा! नारद-मोह त ना हो गइल?

रामदास—मुनि लोग के जहां ऊ हाल, तहाँ हमा-सुमा के कवन बात? बाउर नइखीं।

गोपालगिरि—अवहिन तीस बरिस के छोकरी हवे, बाउर कहत बाड़ा रामजी

रामदास—बाउर नइखी कहत। कवन जाति हवे?

गोपालगिरि—"जात-पाँत पूछे नहीं कोई"। ओ फेनु "रौंड बामनी सूखा हक्क फकीरों का है।" समने थरिया राखि के देखत का बाड़ा?

रामदास—दूनो मूरती के साथे भोग लागी।

गोपालगिरि—ई न कहा, बभनिया मन हर ले गइल बिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामदास—मुँह से जौने ना तौने बचन ना निकाले के चाहीं, कौनो भगत सुनि तब?

गोपालगिरि—साधु लोग देखि सुनि के धुनी रमावै ला सन्त! गुरु महाराज की किरपा हमनी के रोज-रोज के इहै काम हवे।

रामदास—"दुनिया ठगीं मक्कर से। रोटी खाईं घिउ-सक्कर से।"

गोपालगिरि—और ई बसती त अब्बै नु चेतै लागल हा।

रामदास—त कुछु सिद्धाई देखौला हा?

गोपालगिरि—दु गो मेहरारुन के साल-साल भर के लागल भूत छोड़ौनी हाँ। तीस गो बच्चन के कोख खोलै के जतर देहनी हाँ।

(भगतनि थरिया लेहले चहुँपि गइली)

गोपालगिरि—बहुत तकलीफ भइल माईराम!

भगतिन—नाहीं बाबा! एहि देहीं से सन्त-महात्मा के जेतना सेवा हो जाय, उहै नु हवे।

रामदास—*(अपना सगी की ओर मुँह कैके मुस्कुरातै)* त आवा महात्मा! पानी हमरा में बा *(दूनो जने भोजन करै लगलैं।)*

भगतिन—आज एकादसी के पारन रहल ह बाबा! अपने दु जने सन्त-महात्मा के भूखा हाजिर क के हिच्छा पूरा भइल।

गोपालगिरि—जिनगी में जेतना हो सके ओतना पुन्न कमाये के।

भगतिन—हाँ, बाबा! एहि देह के कवन ठेकाना? आ हम त मनाई ले भगवान् से कि सरन में ले चलस्।

गोपालगिरि—अबही माईराम! तोहार चौथा-पन ना आइल ह।

भगतिन—ई दुनिया से ऊ दुनिया निम्मन ह बाबा! उहाँ भगवान् के भगती-पूजा निम्मन हवे।

गोपालगिरि—इहौ दुनिया भगवाने के बनावल हवे माईराम!

भगतिन—हवे, बाकी इहाँ माया-मोह बेसी हवे बाबा! जिउमें माया बेसी लपटि जाले। तब साधु-महतिमा के असिरवाद होखो कि भगवान् के चरन में जल्दी सरन मिलो।

गोपालगिरि—ऐसन धरम के काम में साधु-सन्त के असिरवाद सदा रहैला माई!

(भोजन हो गइल, गोड़ लागि के भगतिन थरिया लेके चल देहली)

रामदास—ई त कोरै भगतिन लौकति-आ रामजी की हिच्छा से।

गोपालगिरि—सब्बे अंगुरी बरोबर ना नु होय। आ बीस गो बसी फेंकल बा, कुल्ह में लगै ना नु फँसै?

(एही बखत, उज्जर पाग, मिर्जई, एड़ी ले धोती पहिरले कपार में तिरपुंड लगौले एक जने आ ओनकरा साथ कान पर टोपी के नीचे कलम खोसलै मंसीजी अइलैं। दूनो जने दूनो साधुन के हाथ जोड़ि के डंडवत कइले)

गोपालगिरि—आईं देवता। आईं देवानजी! ओह दिनके बाद त फेनु दरसनै ना भइल।

मंसीजी—नयका साल के बहीखाता के काम ह बाबा! का करीं "गृहं कारज नाना जंजाला।"

गोपालगिरि—हाँ ऐसे होला! अच्छा पंडितजी! अपनेहू के दसरन ना भइल रहल ह?

मंसीजी—इहाँ के हमरा सरकार—बाबू साहेब—के गुरु बड़का पंडित हवीं। कासीजी से बड़का थरिया पढ़िके आइल बानी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

गोपालगिरि—कहाँ चललीं हा, पंडितजी।

पंडित—कासीजी से एगो बहुत भारी महात्मा आइल बाड़े, भारी विद्वान स्वामी जी महाराज। हमरा सरकार के बहुत आग्रह बा, कि स्वामी जी कुछ दिन अमहरा में आ अपना मुखारविंद से उपदेस सुनावस, बाकी स्वामीजी एकन्ता छाड़ि दुसरा जगह ना रह अपने के तकलीफ ना होई, त एही कुटिया में स्वामी के आसन रही, सरकार अपने के पलानी के घर बनवा दीहैं।

मंसीजी—*(दु तोला के पुड़िया हाथ में थमावत)*—हमरा साहुजी भेजले हैं, बड़ा से बाबा!

गोपालगिरि—*(उतरल मुँह पर हँसी दउरि गइल)*—जगत-गुरू ब्राह्मण के बात टारल जा सकलै पंडितजी।

पंडित — आ ब्राह्मण गुरु संन्यासी।

गोपालगिरि—संन्यासी गुरु अविनासी। ले आवा पंडितजी! ई स्वामियैजी के आसरम हवे।

(लोग चलि गइल)

रामदास—विधिन त भइल रामजी की हिच्छा से, तोहार बंसी त कुल्हि खाली

गोपालगिरि—*(पुड़िया के खोलि के)* हई देखा, केतना महिन्ना बाद संकर के बूटी तोला से कम ना।

रामदास—*(खुस होके)* गाँजा! बाकी संडसिया हमनी के भजन-भाव में विघिन नु करी।

गोपालगिरि—पढ़ला-लिखला से बेसी फरक ना होला रामदास। गुरुमहाराज की सुखानंदी ठीके उतरी, नाहीं त बच्चू के भगावत केतना देर लगी।

(आगे-आगे गेरुआ बहतर पहिरले एगो मजबूत अधेड़ संन्यासी पाछे-पाछे बाबू जिमींदार, लोटन साहु महाजन, पंडित चाणूर दत्त, मंसी फुलेनालाल औ लगटू बिसतरा-उसतरा लेहले अइलें। गोपालगिरि आ रामदास उठ के कहलें)

"स्वामीजी नमो नारायण!"

स्वामी—*(मुँह आ आँख से भरपूर खुसी देखावत हाथ जोरि के)*—सन्तलोग इहाँ रहल बा। अहोभाग्य। शिवोहं शिवोहं। हमरा रहला से संतलोग के कौनो कष्ट त ना होई।

रंगसिंह—लंगटू। देखा महातमा लोग के कौनों कष्ट ना होखै के चाही। एक लक्कड़ ले आ के गिरा दा। कौनो तरह के कष्ट ना होवे के चाही, सुन ला।

लंगट—हाँ सरकार। *(लंगटू धूनी से फरके बिछौना राख के कुटिया में जाके बीचै में)*

स्वामी— भीतर मत ले जा नारायण! शिवोहं, अबहिन एहीं बहरे आसन बिछा दा।

(लंगटू स्वामी जी के आसन बिछा के, एगो कमरा फरका बिछा देहलै)

स्वामी—(बइठि के) बइठीं नारायण, शिवोहं।

रंगसिंह—*(कमरा पर बइठिके)* बइठीं पंडित जी, बइठीं लोटन साहु! कमरा पर।

लोटन साहु—सरकार के बरोबर!

(लंगटू दूसरा कमरा ले आ के बिछौलस, पंडितजी आ साहुजी ओपर बइठलें, मंसीजी एक ओर चुक्का-मुक्का भइलें।)

रंगसिंह—सरकार के आराम करैके होई?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी—नाहीं, नारायण! शिवोहं रात के एक घंटा विश्राम हमरा खातिर बहुत हा।

रंगसिंह—सरकार स्वामी जी महाराज! संसार दुख चिन्ता के घर हा।

स्वामी—जुग के प्रताप हा नारायण शिवोहं, कलिजुग पाँच हजार बीति गइल। मरजादा बहल बा। "बरण धरम वहि आश्रमचारी" सब लोग कुपंथ धै लेहले बा।

रंगसिंह—स्वामीजी के मुखारविंद से ठीक निकर रहल बा।

स्वामी—दुनिया में पाप छा रहल बा, नारायण शिवोहं एहीसे सालै साल महामारी, अकाल पड़त-आ।

लोटन साहु—करम-धरम सब उठल चल जात-आ। गुरु महाराज! भगवान् के डर बहल बा।

स्वामी—हाँ, नारायण शिवोहं, चार दिन की जिनगी ई मायारूपी संसार में लोग भूल बा। फेनु अन्तकाल में खाली पछताला। बाकी करमबोग टर ना सकैला।

रंगसिंह—महाराज स्वामी जी! जीव काहे ना समुझेला कि ई दुनिया रैन-बसेरा हा?

स्वामी—नारायण शिवोहं, माया के फेर इहै कहाला। माया के फेर में पड़ि के जीव असली रूप के भुला देले बा। शिवोहं शिवोहं, शिवोहं, ब्रह्म में ई जगत तीनों काल में भरम हा।

(एही बखत नोहर कलिकतिया मजूर के भेस में आ के स्वामी के हाथ जोड़ि के बइठे।)

स्वामी—नारायण शिवोहं भरम, बैठा (नोहर एक ओर भुईं पर बइठि गइले)

लोटनसाहु—भरम!

स्वामी—सपने के माया, अन्हार में देखला पर रसरी में साँप के भरम। मेरा तेरा— हमार—सब भरम साहुजी! पाँक में गिरल जीव के उप्पर-उठावल, कहल जा सकैला बाकी इहौ ब्रह्म छाड़ि जब दूसर चीज तीनों काल में नइखै, त केके के उठाई, कहवाँ से उठाई।

नोहर—महराज जी! साँचै ई दुनिया समुच्चा भरम हवे?

(रंगसिंह लोटन साहु आ पंडितजी कान खड़ा कैके मजूर की ओर गुरेर के देखै लगलैं।)

स्वामी—हाँ, नारायण शिवोहं। तू, आ जेतना लोग हवै, केहू तीनों काल में नइखे, एकै ब्रह्म नास्ति।

नोहर—केहू दुनिया में सुख करत-आ, निम्मन खात-आ, निम्मन पहिरत-आ दस हजार रुपये के परान, इज्जत ओकरा हाथ में हा। केहू हमरा लेखा रात दिन काम क के मूवत-आ, एक मुट्ठी अन्नौ ना जुरत-आ, ई काहे?

स्वामी—ब्रह्मरूप में ई कौनो भेद ना, ना केहू निम्मन खात-आ पहिरत-आ, ना केहू भूखा मरत-आ।

नोहर—भूख पेट के आरा लेखा चीरै ले, घर में खरची ना रहला पर लइकन के रोटी दैखि के करेजा फाटै लागैला। हमनी के ई भरमना साँच बुझाला।

स्वामी—सपना साँच बुझाला, दिसा-भरमवाला का आपन दिसा साँच बुझाले। बाकी एको ब्रह्म दूसरो नास्ति, ब्रह्म में कहीं किछुवो विकार नइखे, किछुओ दुख-संताप नइखै, सब सदा आनंद नारायण शिवोहं।

नोहर—सपना होइत त केतना खशी के बात रहल हा, बाकी ई भूख, ई लइकन क रोटी-रहल झूठ ना, सोरहो आना साँच बुझाला सामी जी महाराज!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

पंडित—स्वामीजी महाराज! ई वेदांत ना समुझि सकलें, एनकरा के हम समुझावत नाव हवै तोहर भैया!

नोहर—नोहर नौव पंडित जी!

पंडित—दुनिया में ई दुख-सुख सब पुरूबिला करम से हा। हमरा सरकार एकर -महतिमा, देवी-देवता के सेवा-टहल दान-पुन्न करत बाड़ै एकर फल ओनके आगे मिली। अमहरा के लखपती महाजन लोटन साहु जे नौका ठकुरवाड़ी बनवलै हौं, सदावरत कराई एकर फल बौंव ना जाई। एहि जिनगी के पुन्न के फल भोग-सुख अगिला जनम में मिली पछिले जनम के कइल पुन्न के फल एहि बखत मिलि रहल बा।

नोहर—पुन्न के फल! बाकी पंडित जी! लोटन साहु लइकैया अपना चाचा के मरन पर दौरी ध के तेल बेंचत रहलन। ओहि बखत पछिला जनम के पुन्न सहाद ना रहे दौरी-दुकान राखि के एक के डेढ़ा करै लगलैं, गरीबन के कमाइल धन अपना घरे सहेंटे लगलैं फेनु सवाई सूद पर रुपया लगावे लगले, तब जमा होये लागल। जेतना धन औ रुपया बाड़े पाले बा, ऊ सब हमनी लेखौं कमेरन के पेट काटि के जमा भइल बा।

पंडित—पेट काटि के कहत बाड़ा!

नोहर—हम बुर्वक अदिमी हवीं पंडितजी! एसे बुर्वक लेखा हमार बातो होई, मगर देखल जात-आ कि अमहरा के बाबू साहेब होंय, लाहे लोटन साहु होंय, केहु का घरे पुन्न-परताप से भूँइ नइखै फूटल। हजार घर के भूखन मारि के एहिं लोग के घरे धन जमा हा। एसे हमरा त बुझात-आ कि पछिला जनम के पुन्न-उन्न कहल, एहीं पपवा के खातिर हा।

(रंगसिंह औ लोटन साहु के त्योरी बदल गइल)

पंडित—त साधु-बराभन, धरम-करम तोहरा खातिर किछुओ ना हा?

नोहर—पहिले हमहूँ बूझत रहलीं, कि किछु बा; बाकी अब लौकत-आ, कि बाबी हा। तीन अदिमी मिलि के तीस अदिमी के कमाई खा जात-आ, आ साथै बुरवकी बनावत गरिबवा मुँह ना खोले, एहीं खातिर कहल जाला कि बाबू साहेब भै साहुजी अपना करम के खात बाड़ें। आँखि के समने त लूट-पाट छाड़ि ई लोग कौनो कमाई नइखे करत।

(रंगसिंह, लोटू साहु आ पंडित तीनों लाल-पीयर आँख करै लगले, स्वामी मर्मिता देखि के बोललन)

स्वामी—नाहीं नारायण शिवोहं, तू चाम के आँखि से देखत बाड़ा, ग्यान की आँख से देखला से साच-साच मालुम होला। नारायण शिवोहं, ब्रम्ह छाड़ि के जब जीव माया में पड़ला से दुनिया के झंझट झगड़ा होला।

नोहर—स्वामी जी! अपना परमगियानी चेला लोग के कह ना दीं, कि माया के हवा गरीबन के दे देस् जोकि लेखा हमनी के काम-करनिहारन के खून ना चूसस्। ई बात कहीं त हम मानब, नाहीं त हम इहै समुझब कि धरम-वेदानत-देवता सब हमनी की आँखि में धूरि झोंकै हवे, आ कुलि चोरे-चोर मौसियाउत भाई हवें।

रंगसिंह—धत् तोरा बदमास की *(उठि के नोहर के गरदन पकड़ै चहलैं, अहिर के हाथ लगतै ढिमला के मुँह के बले गिरलैं। पंडित जी छोड़ावै चहलैं, ओनहूँ के पगड़ी कहीं पड़ल औ सटपिटा के एक ओर बहाना बना के गिरि पड़लें। साहु आ मसी जी बाबू साहेब के नगीचा रहलैं। असल लड़ाई लगटू, गोपालगिरि आ रामदास से भइल। सब के बेकाबू क के गोपालगिरि की छाती पर नोहर बइठि गइल, त स्वामी जिओ डंडा चला देहले। नोहर के हँसल)*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नोहर—देखली न, सामाजी महाराज! इ दुनिया माया हा कि साँच। हई जिमदरवा, सहुवा, [illegible]वा हमनी कमेरन के देहि में लागल जोक हवें, औ सधुअवा, बम्हनवाँ, मोलवियवा ई [illegible]न के दलाल। ना तोहरा के छाड़ देतानी, काहे से तोहरे कारन हमरा के हेतना बोले के [illegible]लत।

(परदा गिरि गइल।)

अंक ४

(हंटर्वाई-हमला रच्छा-सिपाही के पोसाक में नोहर गोड़ से लँगड़ात चलत बाड़ै, ओनकरा [illegible] अगरेज औ दुगो हिंनुतानी सिपाही वाडैं! नोहर के खुरसी में बैठा के तीनो अदिमी बइठि [illegible] अगरेज सिपाही अगरेजी में बोलत-आ, आ ओके अपना बोली में हिनुतानी सिपाही [illegible]लान करत बाटै।)

अगरेज सिपाही—(कुछ कह के) बहुत तरीफ, बहुत तरीफ।

खेलावन—नोहर भाई! हमार साथी इ अंगरेज सिपाही तोहरा हिम्मत के बहुत तरीफ [illegible]। ओनकरा अफसोस बा कि ऊ हमनी के बोली ना बोल सकैलें।

नोहर—खेलावन भाई! तरीफ के कवन बात हा, तोहरा लोगन जपनिया रच्छछन के [illegible] खातिर चौबीसो घटा आगि में गोड़ धइले बाड़ा, हमनी के घर के हिफाजत नू करै के [illegible]

अंगरेज—(खेलावन से किछु पुछलैं, खेलावन बतियौलें, फेनु ओकरा मुँह से निकसल) [illegible]चजस।

खेलावन—जिउ जोखिम में डारि के चारो ओर धधाके जरत बंगला के भित्तर घुस के [illegible] निकारि ले आइब, त बहादुरी के काम बड़ले बा; बाकी एहू से बड़का काम ई बा, कि [illegible] पहिले तोहरा लोगन के हड़ताल कइल खातिर मलिकवा मिलटरी बुलौले, औ तोहरा [illegible]पिन के लाठी से कपार फोरवौले, केतना के जेहल पठौले।

नोहर—ऊ त मनेजर के लइका रहै खेलावन भाई! जे खुदे मनेजरो रहित, त ओहू [illegible] आगि मे कुदि जइतीं। हमरा बड़ संतोख बा, कि लइका निदाग बाँचि गइल।

खेलावन—(अगरेज सिपाही के किछु कहलें, ऊ हँसल फेनु) नोहर भाई! साँच ई [illegible] के बात हा। कैसे लइकवा के तनिको रेपो ना लागल।

नोहर—जइसहीं जपनिया रच्छछवन के उड़नखटोला के मडरात हम देखनी, ओइसहीं [illegible] के चहबचवा में एक डुबकी लगौली, फेनु देखली अततइया बमगोला गिरावत-आ, घरन में [illegible] रहल बा, हम एगो चदरा भिजा के करिहाँव में बन्हली, औ चललीं घरन के देखै।

खेलावन—बम गिरते में?

नोहर—खेलावन भाई! हम एही के परवाह करीले, कि जेतना दिन जीये अदिमी लेखाँ [illegible] से भय खाइल हमरा देखै में बड़ बुरबकई हा।

(खेलावन अगरेज सिपाही के कान में कहले)

अगरेज सिपाही—(खुश होके उछल के नोहर के हाथ अपना हाथ में ले के) अदिमी, [illegible], बहादुर, बहादुर (बइठि के खेलावन से किछु कहले)

खेलावन—नोहर भाई! ई हमार अँगरेज बिरादर पूछत-आ कि हम त सुनले रहली, कि [illegible] में कुलि मजूर जपनिया के पच्छ के हवे।

eGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

नोहर—जरमनवा जपनिया रछछवा, मिलैं त कच्चै खा जाई। आ ओहि से मति ला खेलावन भाई! हमनी मरि जाइब तबै जपनिया राछछ हमरा बाप-चाचन के राखै पाई।

खेलावन—(*अंगरेज से बात कइलन फेनु*) ई पूछत बाड़न कि लड़ाई के कैसन दुनिया बनावै चाहत बाड़ा?

नोहर—जौना में जोंक ना रहें, खुनचुसवा ना रहें; जिमदार, मिल-मालिक, सेठ ना रहें। जौना में सब केहू के देहि से काम करै के पड़े; सब केहू के खाये कपड़ा-रहे इतिजाम होखे। समुच्चा देस औ दुनिया के एगो खान्दान बनि जाय। हइ करिया-गोर बड़े तनखाहवाली जोंक सपना हो जौंय।

खेलावन—(*बात क के*) पूछत बाड़े, कि करिया—गोर जोंक के?

नोहर—बड़का लाट बाइस हजार रुपया महिन्ना पावैलें, घर-दुआर नोकर-चाकर खरच लगावल जा, त ऊ एक लाख के महिन्ना परी। हमनी इहौं के गौंवन में आना रोर महिन्ना मजूरी पावेवाला करोड़नं लोग बा। ई इगारह हजार गुना तनखाह लूट ना त का ह गरीब के खून चूसल ना त का ह?

खेलावन—(*अंगरेज सिपाही मुँह लाल क के किछु कहले*) कहत बाड़े कि हमरा सबसे गरीब के मजूरी २०० पौंड (२६०० रुपया) साल हवे, और बिल्लाइत के महाजनों के ६०००० पौंड (७८००० रुपया साल) भै ६ हजार रुपया महिन्ना मिलेला। सबसे बड़का नोकर की तनखाह में ३० गुना के फरक हवे। हमनी एतनो फरक बरदास तैयार नइखीं, पौंच गुना छ गुना के फरक बहुत हा। इगारह हजार गुना तनखाह लिहल सोझै लूटि हा।

नोहर—विलायत में तीस गुना और हिनुतान में इगारह हजार गुना तनखाह हुनिके देहिं में आगि लगि जाले खेलावन भाई! बिल्लाइत के बड़का मंतिरि छ हजार महिन्ना पावे ओनकर एगो ममूली नोकर बड़का लाट २२ रुपया, छोटका लाट दस हजार रुपया महिन्ना भाई! जब ले एहि जोंकन के बिदा न कइल जाई, तबले न ई लड़ाई बन्न होई, न मजूरनके के पेट के अन्न आ तन के कपड़ा जूरी।

(*खेलावन अंगरेज सिपाही से बतियौलें, फेनु उ कहले।*)

अंगरेज सिपाही—जोंक नास हों।

सब—(*एक साथ*) जोंक नास हों, जोंक नास हों, जोंक नास हों।

(*सब मिलि के गावत-आ*)

उठु उठु रे तें भुख-बन्हुआ
उठु रे धरती के अभगवा
बा न्याय बजर छहरावत,
जनमत बढ़िया संसरवा।
पुरुविज फेनु नाहीं बान्ही
उठरे अब नहि तें बन्हुआ
नइ नेव उठत बा जगवा,
ना रहले सब किछ होइबे।
आ जुटहु संघतिया समुहें,
ई आखिरि बेर लड़इया।।

(*परदा गिरि जात-आ*)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक के : कथनी प्रकाशक के

राहुल सांकृत्यायन भोजपुरी रचनावली

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ई निर्णय रहे कि राहुल सांकृत्यायन जन्म-शती वर्ष का दौरान 'राहुल सांकृत्यायन भोजपुरी रचनावली' के प्रकाशन कइल जाय। ई में लिखल राहुल बाबा के आठ गो नाटक, कुछ फुटकर निबंध, भाषण आ चिट्ठियन के, कुल नौ खण्ड में, एके जिल्द में, एह रचनावली के प्रकाशन के योजना रहे। बाकिर तब, जब कि शताब्दी वर्ष के समाप्ति के समय नियरा गइल बा, राहुल बाबा के सिर्फ नाटक' ('मेहरारून के दुरदसा', 'नइकी दुनिया' आ 'जोंक') मिल सकल बा।

बाद, पहिले के योजना में कुछ परिवर्तन करत, ई निर्णय लिहल गइल कि जे तीन गो मिल गइल बा ओकरा के, एह शताब्दी-वर्ष का भीतर, 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के अंक का रूप में, आ एकरा अलावे, अलग-अलग तीन जिल्द में पुस्तक रूप में (जे कि रचनावली के अलग-अलग तीन भाग का रूप में भी प्रस्तुत होखे) प्रकाशित कर दिहल जाय आगे, जइसे-जइसे राहुल बाबा के भोजपुरी रचना मिलत जाय, ओइसे-ओइसे अलग-जिल्द में, अलग-अलग भाग का रूप में, एह रचनावली के प्रकाशन के काम आगे बढ़ावल जाय।

अनुसार, 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के विशेषांक का रूप में, आ एकरा अलावें, उपर्युक्त के भाग १, २ आ ३ का रूप में अलग-अलग तीन गो किताब का रूप में उपर्युक्त नाटक के प्रकाशन कइल जा रहल बा। आगे, जइसे-जइसे सामग्री मिलत जाई, एह के आगे के भाग प्रकाशित होत जाई।

नवादा (बिहार) के युवा साहित्यकार श्री जीतेन्द्र वर्मा के परिश्रम आ खोज के ई सुफल राहुल बाबा के ऊपर लिखल तीनो नाटक के फोटोस्टेट प्रति एह सम्मेलन के सुलभ हो जाई प्रकाशन संभव हो सकल। एकरा खातिर श्री जीतेन्द्र वर्मा धन्यवाद आ साधुवाद के बाड़े। भोजपुरी के नेही भाई लोगन से निहोरा बा कि राहुल बाबा के आउर-आउर रचना—नाटक, निबंध, भाषण, चिट्ठी—के खोज करो आ एह सम्मेलन के सुलभ कराओ, 'राहुल सांकृत्यायन भोजपुरी रचनावली' के सम्पूर्ण प्रकाशन के काम पूरा कइल जाई।

—पाण्डेय कपिल
सम्पादक, 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'
आ 'राहुल सांकृत्यायन भोजपुरी रचनावली'

—रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'
महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

Digitized by eGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

Registered No. PT-428/90 भोजपुर-सम्मेलन पत्रिका : अप्रैल-

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२३

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से, प
कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-
०२३ (दूरभाष : २६११३४) से प्रकाशित, आउर पाण्डेय कपिल द्वारा
प्रेस, लोदीपुर, पटना-८०० ००१ (दूरभाष : २३२७८०) का ओर से
प्रिंटर, कार्जीपुर, नयाटोला, पटना-८०० ००४ में मुद्रित।

सम्पादक —पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

फरवरी, १९९५ अंक-२

परामर्श-मण्डल

कृष्णदेव उपाध्याय : श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय
गणेश चौबे : आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र
श्री मोती बी० ए० : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
श्री भोलानाथ गहमरी

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

रवकिशोर : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : डॉ० विश्वरंजन :
शम्भुशरण : नगेन्द्र प्रसाद सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण : विपिन बिहारी
री : भगवती प्रसाद द्विवेदी : पशुपति नाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूषण
मिश्र : रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष'

फोन : ०६१२-२६११३४ इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

एह अक के प्रायोजक

डॉ० उषा वर्मा : श्री चन्द्रदेव पाठक 'सुधाकर'

मुख्य संरक्षक

सत्यनारायण सिंह

संरक्षक मडल

पाण्डेय कपिल नगेन्द्र प्रसाद सिंह : प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' : आचार्य विश्वनाथ सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण। डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : करुणानिधान केशव : शैल वर्मा : डॉ० बी० एन० सिंह : डॉ० प्रभुनाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र : जगन्नाथ : रंगश्री (भोजपुरी साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान) बोकारो : विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव : डा० शत्रुघ्न सिंह : भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना : डॉ० वसन्त कुमार : जनार्दन प्रसाद : आनन्द सन्धिदूत : शत्रुघ्न सिंह : जगदीश सहाय 'असीम' : डॉ० शम्भुशरण : पाण्डेय सुरेन्द्र : उर्मिला पाठक : डॉ० धीरज कुमार भट्टाचार्य : शिवनन्दन प्रसाद 'हर्षवर्धन' : पो० चन्द्रविनोद : राजेश कुमार : रूपश्री : माधव सिंह : रामबाबू प्रसाद : आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत : राजनारायण दीक्षित : अतुल कुमार : गीता देवी : बब्बन सिंह : कुसुम सिंह : सुशीला पाण्डेय : कर्मा प्रेस प्रा० लि०, पटना : शांति कुमारी : राम अयोध्या तिवारी : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती : प्रो० रामेश्वर राय : चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र : डॉ० उमाकान्त वर्मा : सूर्यदेव पाठक 'पराग' शालिग्राम माधव : मोती बी. ए. : डॉ० रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव : अम्बुजा सिन्हा : निशान्तकेतु श्याम : भोला प्रसाद 'आग्नेय' : गरिमा बन्धु : दिनेश्वर प्रसाद सिंह : हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' : प्रो० रामेश्वर नाथ तिवारी : श्री फुलेना दीक्षित : डा० राजेश्वरी शाण्डिल्य : डा० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी

☐ दाम एक अंक के—तीन रुपया पचास पइसा ☐

दाम—साल-भर के—पैंतीस रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर साल भर के रियायती दाम—तीस रुपया

पत्रिका संरक्षक शुल्क (आजीवन ग्राहक शुल्क)—साढ़े सात सौ रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

[अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका]

इन्द्रपुरी, पटना–८०० ०२४

र्ष : ६ फरवरी, १९९५ अंक : २

अपनी सम्पादक के

भोजपुरी के भाषिक रूप के विकास

भोजपुरी के भाषिक रूप के विकास कवना रूप में कइल जाय, एकरा के में, दूगो विचारोत्तेजक लेख एह अंक में प्रकाशित कइल जा रहल बा— डॉ० कुवेरनाथ राय के, आ दोसर डॉ० शालिग्राम शुक्ल 'नीर' के। इन बिन्दुअन पर एह दूनू विद्वान लेखक का विचारन में गम्भीर मतभेद हो सकत बा। भोजपुरी के लेखक लोग एह बिन्दुअन पर गम्भीरता से विचार करे आ आपन व्यक्तिगत धारणा-अवधारणा छोड़ के, भोजपुरी के भाषिक स्वरूप के स्वस्थ विकास में सहयोग करे, एही उद्देश्य से ई दूनू लेख प्रस्तुत कइल जा रहल बा।

भोजपुरी के उत्कर्ष खातिर, हमरा समझ से, ऊहे रास्ता अपनावे के चाहत बा, जवना का ओर डॉ० कुवेरनाथ राय बड़ा तार्किक आ मार्मिक ढंग से इशारा कइले बाड़े। डॉ० शालिग्राम शुक्ल 'नीर' के अनेक विचार, हमरा समझ से, भोजपुरी के यथोचित आ समुचित विकास मे सहायक ना हो सकी। भोजपुरी भाषा के शालीन रूप विकसित कइल भोजपुरी के साहित्यिक विकास खातिर अपरिहार्य बा, आ एह नीति के दोसर विकल्प हो नइखे सकत। भोजपुरी के अपना भाषिक क्षमता के विकास-विस्तार खातिर उहे करे के होई जे हिन्दी, बंगला आ मैथिली कइले बा। भोजपुरी अब विचार आ शास्त्र के भाषा हो रहल बा, काल्ह ज्ञान-विज्ञान आ प्रशासन के भी भाषा होई। अइसन स्थिति में जरूरी बा कि अपना शब्द-सम्पदा के सम्यक आ समुचित उपयोग करत, ऊ जरूरत का मोताबिक संस्कृत, हिन्दी आ उर्दू से अपना शब्द-भण्डार के समृद्ध करो, आ अपना तद्भव प्रकृति के रक्षा करत, तत्समता से अपना भाषिक बल के विकास आ विस्तार करो।

केहू माने भा मत माने, स्थिति ईहे बा कि भोजपुरी के अधिकांश गम्भीर साहित्यिक लेखन ओही राहे बढ़ रहल बा। ओकरा बिना काम नइखे चल सकत। 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के भाषा-नीति आम तौर पर, ईहे रहल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-G

नागरी लिपि के कवनो अक्षर, संयुक्ताक्षर भा मात्रा के भोजपुरी
अछूत बनावल आत्मघाती होई। भोजपुरी के आपन शब्दन का अलावे,
संस्कृत भा उर्दू-फारसी के जे भी शब्द अपनावे के पड़े, भोजपुरियावे का
में, ओकर रूप भा वर्तनी मत बिगाड़ल जाय। भोजपुरी के अपना
में मौजूद शब्दन के छोड़ के हिन्दी शब्दन के अपनावे के प्रवृत्ति त
देवे के चाहीं, बाकिर साहित्यिक आ भाषिक सौन्दर्य, सौकर्य आ
सुरुचिपूर्ण अभिव्यक्ति खातिर अइसन करे के पड़े त ओकरा से
कवनो जरूरत नइखे। शब्द कवनो भाषा के बपौती ना होखे। एक
दोसरा भाषा में शब्दन के सक्रमण होत रहेला, आ जवन भाषा बाहर से
शब्दन के पचा ना पावे ओकर समुचित विकास ना हो पावे।

भोजपुरी भाषा में एकरूपता ले आवे खातिर, कम क्षेत्र में
स्थानिक भा खाँटी प्रयोगन से भरसक बचे के चाहीं आ ओइसने
तरजीह देवे के चाहीं जवना के प्रचलन अपेक्षाकृत व्यापक होखे भा
का नियरा होखे।

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' भोजपुरी के लेखक लोगन से इहे
अपनावे के आग्रह करत बा।

—पाण्डेय

(पृष्ठ ८७ के शेष)

नमस्कार। बहरा से लक्ष्मी घरे आओ, घर के कुल्ही पीड़ा दूरो हटो,
पति के शतायु मिलो।' एकरा बाद लोक-परम्परा-संस्कार के प्रभाव
एगो ऋषि मंत्र कहेले --

"शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धन सम्पदाम्।
शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपकं ज्योति नमोस्तुते।"

वस्तुतः साँझ के संगे दीआ के जवन गाढ़ संबंध बा ऊ सभतर
महत्व प्रकाशित करेला। ऊ हमरा कामना, मनोरथ के पूरे के
बल देला। एही से संस्कृत में साँझ के दीआ के अभ्यर्थना ब्रह्म-ज्योति
रूप में, साक्षात् परमेश्वर के रूप में कइल गइल बा—

"दीप ज्योतिः परंब्रह्म दीपज्योतिर्जनार्दनः।
दीपो हरतु पापानि संध्यादीप ! नमोस्तुते॥"

ज्ञान कें ई आध्यात्मिक सम्पदा हमरा लोक जीवन, पारिवारिक
के उदात्तीकरण हइए ह, राष्ट्र के सांस्कृतिक एकता के प्रकाशनो ह।

☐ १४२, बाघम्बरी गृहयोजना, भरद्वाजपुरम्,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत

—दक्षनिरंजन शम्भु

रोम-रोम में दरद समाइल, पोरे पोर दुखाइल,
शायद, फागुन आइल
रंग गंधकी सरिसो लिहलस मटरा रंग गुलाबी
रंग बिरगा धरती भइली मौसम भइल शराबी
नया बूढ़ के भेद भुलाइल, सभकर मन बउराइल;
शायद फागुन आइल
कोइलर कुहुक - कुहुक कुहुकेले पपिहा अलख जगावे
पुरुवा के बहकल बरजोरी मन में आग लगावे
आकुल प्राण बेआकुल जिनिगी मन में टीस समाइल
शायद फागुन आइल

☐ कपिलदेव गुप्ता हाउस, महमूद चौक, दहियावाँ छपरा-८४१३०१

गजल

—बरमेश्वर सिंह

केकरा के दोष दीं, केकरा के आंकीं
सबसे निमन बाटे, अपने में झांकी
साबुन सोडा मलि मलि कतिना नहइलीं
तबहूं धोवाइल ना मनवां के पांकी
सुई-डोरा कीनी हम कई दफा सोचनी
टूंघवा फटलका के कइसे अब टांकीं
पेट-पीठ, हाथ-गोड़, मुड़ी बा उघारे
फटही चदरिया से केने-केने ढांकीं
पहिले लगवनी ना मनवां के पगहा
हरही के संगे अब केने - केने मांकीं
आपन हिसाबवा के जोड़नी - घटवनी
हाथवा में फुक्का लागल, काथी अब फांकीं
अब जाके बुझनी, हम कइसे ठगइनी
गफलत में रखलस नयनवें नू बांकी
ठगनी बजरिये पर सुगना लोभाइल
चलीं दादा! ओकरा के अबहूं से हांकी

☐ पो० अगडीहा, भोजपुर (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Jeevandhara Foundation Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-GoI

ओठ फटल गाँव

—डॉ० विश्वनाथ

ओठ फटल गाँव के
घाम-घाम नेह भइल पोपर के छाँव के
सीख गइल हवा बा बारूदी बोली
तोता के रटना के भूँज रहल गोली
खिस्सा कुहराम भइल खपरैला ठाँव के
खाये ला ठोकर आ पीये ला सीठी
कर्जा में मालिक के दबा गइल भीती
जूता से कचराइल बिरहा बिसराँव के
धूरा के अंधड़ में सपना के चिंदी
दरकल बा रंग संधुल फाटल पगडंडी
नाम भइल बा बबूल अपने हर पाँव के

☐ भगवानबाजार, छपरा-८४१३०१

विरह गीत

—प्रो० आशुतोष सिंह

जिनिगी के फुनुगी पर आशा ठहर गइल
प्रणय-दश अइसन कि मनवाँ लहर गइल
एतिया के बतिया बताई का संघतिया हो
तोहरे वियोग रोग कुहुँकेला छतिया हो
अँखिया के कजरा बनि रतिया पसर गइल
एक दिन के बतिया बा रतिया सपनवाँ में
देखत हई खड़ा बाड़ऽ आके अंगनवाँ में
गरवा मिललीं, सउँसे देहिया सिहर गइल
दिनवाँ गिनत पोर अँगुरी खियाइल हो
बटिया जोहत मोर अँखिया पिराइल हो
नन्हकी गछुलिया अब बरगद के गाछ भइल

☐ अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सत्येन्द्र नारायण सिंह कालेज, दीघी, हाजीपुर-८४४१०१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

—जगन्नाथ

आँख दरपन में जसहीं समाइल रहे
खुद के सोझा परत कुनमुनाइल रहे
दोस्त मिलले कहाँ कायदा के इहाँ
दुश्मनो ढंग के ना भेंटाइल रहे
मन में जे भी रहे आँख में आ गइल
बे रहे ना कहाइल, कहाइल रहे
लोर तनिकी सा चूअल रहे, याद बा
दोष मुलकन के माथे मढ़ाइल रहे
हमरा जे कुछ भइल ऊ उमर से भइल
जिन्दगी बेवजह कुनमुनाइल रहे
सेन्ह लागत रहल मन प भर जिन्दगी
बा ना सुरता प का का लुटाइल रहे
लोर रोनक के बा, रंग के बा बहुत
का जगन्नाथ महफिल में आइल रहे ?

□ ए/२१, साधनापुरी, पटना-१

गजल

—डा० आसिफ रोहतासवी

कपिला केनना देर ले हियरा ई ताल के
अंजुरी भ रउआ देख लीं पानी निकाल के
सीसा के घर हमार कहियो टूटबे करित
तहरा के का मिलल भला पत्थल उछाल के
दरियाव में कुदलीं हमीं, डुबलीं हमीं त का
हमहीं नु लइलीं सीप से मोती निकाल के
जिनिगी तोहार जब कबो भटकी अन्हार में
रख देब तोहरा हाथ में पुतरी निकाल के
'आसिफ' हजार खोट बा मनलीं कि हमरा में
पछतइबऽ हमके गाँव से अपना निकाल के

□ कुदरा, कैमूर-८२११०८

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Digitized by Digital Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gi

नियति

—डॉ० अशोक द्विवेदी

कइसन बइसाख जेठ
जल ओनहत सावन
हम सीलत रहि गइनी—
पेट के अदहन।
आगा बढ़ला खातिर
का का ना कइनी हम
जरल सेराइल जिनिगी
लायक ना भइनी हम
माई के, बाबू के, लरिका-मेहरारू के
बाटे ओरहन।

घाम-सीत-बरखा में
बारहो महीना
सत्तर गो चोट सहे
पाथर कऽ सीना
मालिक का मर्जी से मिल जाला दू जूनी
छोड़ना - छाड़न।

पछिला इतिहासे के
दोहरावत बा सदी
राजा बिराट किहाँ
लउँड़ी बा द्रौपदी
कीचक का पहरा में भीम कर रहल बाड़ें
चउका-बासन।

फरुहा कुदारी बा
हँसुवा से यारी बा
बैलन अस घींचे के
जिनिगी के गाड़ी बा
पुअरा चबाए के, पुअरा बिछावे के
ऊहे बा ओढ़न-डासन।

४७ टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-२७७००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई के आली मन भावन ह ?

—राम बदन राय

ई के आली मन भावन ह ? जियरा क प्यास बुझावन ह
रहम-पट्टी हर धावन क, हर हियरा क सरसावन ह
रिम-झिम फुहार रिम-झिम पानी, धरती धारे चूनर धानी
ई रानी ह कि राजन ह, केकर आवन बूझऽ जानी !
पहली कहलस सखि राजन ह, दूजी कहलस सुख-साजन ह
तीजी चउथी पचवीं चह-चह, ना-ना बहिनी ई सावन ह
छठवल कजरा सखि सावन ह, गमकल गजरा ह सावन ह
सातवल अँचरा खनकल चूरी, आली मनभावन सावन ह

सावन क काजर करखहवा, जस भादो भइंसा मरखहवा
केतने घायल पटरा केतने, केतने उठि भइलन सरकहवा
केहु कजरी गइया फेरि रहल, केहु कजरी लइया टेरि रहल
केहु कजरी रात आँख कजरी, कजरी सखिया के हेरि रहल
कहिं कजरी कासीपुरी बा, कहिं खाँटी मिर्जापुरी बा
कहिं बृजवाली अवधी खड़ड़ी, कहिं देसवाली भोजपूरी बा
कहिं भभकत साज सरंगिया बा, कुहुंकत ढोलक हरमुनिया बा
टुनकत टुनकी लहरत सुर में, छम छमकत पांव नचनियाँ बा
संझिया चाचे भोरवा नाचे, पंखिया फारो मोरवा नाचे
थपरी बजाइ किलकारी दे, मुनवां माई-कोरवा नाचे
डलियन-झुलवा पतिया नाचे, फुनगी-झुलवा फुलवा नाचे
अलियन कलियन गलियन-गलियन, राधा नाचे काँधा नाचे

कहिं हो कहिया पंचैयाँ ह ? संग पूड़ी खीर सिवइया ह
सखी-भइयां बइठक मारे, धुरि रगरत ननदो-भइया ह
केहु क कछिया खरिदाइ गइल, केहु दर्जी घरे दियाइ गइल
केहु दूध चढ़ाइ पचाइ रहल, केहु क बदाम रगराइ गइल
कहिं चिक्का बा कहिं बरगत्ता, कहिं खेल-कबड्डी जमकऽता
कहिं ऊड़ा बा कहिं कुस्ती बा, केहु झपटऽता केहु पटकऽता
ई काला जंग लगवले बा, ऊ धोबिया पाठ चढ़वले बा
बस बहरल्लो या अल्लो ! हउ साफे चित्त गिरवले बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-GI

कहिं तनवां सावन पुलक उठल, कहिं मनवां सावन हुलक उठ
झूला का संग पटेंगा पर, मधुकंठी कलरव किलक उठ
चढ़ि झूला संग दुनिया घूमे, अँचरा फहरा लहरा उठ
नागिन चोटी—हिलकोरा ले, बेसुध बरवा मुहवा उ
केतने खाड़ा केतने बइठल, केतने ओठंगल केतने लट
केतने चहकल बहकल सहंकल, झुलुवा उड़ि असमाने पहुँच
तबले अचके डढ़िया चरकल, केहु चित्त गिरल केहु पट्ट गि
केहु सरक-संभल उठि खड़ा भइल, केहु केहू का उपरा छ
केहू हँसि-हँसि के निहाल भइल, केहु बुलुक बुलुक बेहाल भ
'आ का बछिया रोवले बाड़, हमरो त केहुनी लाल भ

हथवा थरिया हियवा दुलार, मुँह मीठाई रोरी लिलार
कच्चा धागा से बन्हा रहल, पक्का ना टूटे अमिट प्यार
मोर भइया जीयें लाख बरिस, बल बढ़े बहादुर भीम सरिस
बिद्या बुद्धि बेजोड़ बढ़े, ऊँचा ओहदा बड़की सरविस
केहु लड्डू पेड़ा बना रहल, कतहीं दलपुरिया छना रहल
सब पहिरो खाइ अगराइ गाइ, राखी-तिहवार मनाइ रहल
सुनि बिपति मेवाड़ी बऽहिनियाँ, उड़ि गइल हुमायूँ क निनियाँ
राखी क लाज आज अबहीं, तैय्यार करू रे पलटनियाँ

घिर-घिर बदरी झिर-झिर फुहार, ठंढी हल्की सिर-सिर बयार
केकर हियरा ना हुलसे ला, रिम-झिम सावन बरखा बहार
हरियर चूरी हरियर सारी, हरियर हियरा हर नर-नारी
हरियर दिनवां हरियर रतिया, हरियर बतिया प्यारी-प्यारी
हरियर धनवां क बेहनियां, हरियर मनवां बनिहारिनियां
गा गा गितिया भरि पीरितिया, खेतवन में लागल रोपनियां
रावल मुनियाँ दिलवर जनियां सब निहुरि-निहुरि घुट्टी पनियां
बा तरह-तरह बोली-बनियां, ननदी रोपे भउजी-सरियां

गड़हा गड़ही से करे प्यार, गड़ही पूछे नारा-दुवार
नारा चऽलल नदिया घरवा, नदिया पहुँचल सागर-इयार
जहाँ वैरी-बैरी करत प्यार, बेरिया-कंटवा केरवा-इयार
का हाथ मिलाई ! गले लगीं, कर फार करे सावन-गुहार

☐ इति० विभागाध्यक्ष, खरडीहा म० वि० खरडीहा, गाजीपुर-२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

एलर्जी

—प्रो० हरिकिशोर पाण्डेय

'बाबा, हम एक ठो पोएम सुनायें ?''

'सुनाव भाई, नेकी पूछ-पूछ के !'

'टॉफी दीजिएगा न ?'

'जरूर-जरूर.....बाकिर साँझ के नू.....अबहीं बड़ा घाम बा.....साँझ के तोहार टॉफी आ जाई।'

'जैक ऐण्ड जिल वेण्ट अप द हिल'—लइका हाथ उठा के आ आँख ऊपर उठा के भाव बतावत लाइन पढ़लस तबले एगो अनजान आदमी के ओसारा पर चढ़त देख के लजा-सकुचा गइल आ ई कहत घर में भाग गइल कि—'और शाम को सुनायेंगे.....टॉफी दीजिएगा.....जरूर।' बाबा हँसे लगलन।

'प्रणाम माट साहेब।'

'आईं मैनेजर साहेब, प्रणाम। केने रास्ता भुला गइलीं हँ।'

मैनेजर साहेब कहलन—'का कइल जाव जी। रिटायर हो गइला का बाद रउआ से, इनका से, उनका से भेंट-मुलाकात करके मन बहलावे के बा।'

मास्टर साहेब ठहाका मरलन—'रुपया ओढ़न, रुपया बिछावन, रुपये का पेरहाना, अब त बड़ा अहवत होई !' मैनेजर साहेब जवाब देलन—'रउआ त खाली मजाके सूझेला। रिटायर त रउओ कइले बानीं, बाकिर राउर बात दोसर बा। दस-पाँच लड़िका पढ़े आइए जात होइहन, तबे नू ई ठहाका लगत बा। बूढ़ डाक्टर आ बूढ़ मास्टर के मोल बढ़बे करेला। अच्छा ई कहीं? इंजीनियर साहेब आइल बाड़न का ?

मास्टर साहेब बोललन—'हँ, बबुआ आइल बाड़न, तीन दिन भइल। कहइए जाहूँ के तइयार बा लोग; एक दिन आवे में, एक दिन जाये में आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-GI

दू दिन हमरा लगे। दू दिन से बड़ा मनसायन बा। काल्ह के बाद का हो भायँ-भायँ करी; हम आ हमार श्रीमती जी! भीतर ऊ खटर-पटर... हम बक-बक।

मैनेजर साहेब कहलन—'छोड़ीं महराज, ई त लागले बा जीवन भर बाकिर पाछा में सभे ईहे कहेला कि भाग्य होय त रउआ लेखा। रउआ के तीन बेटियन के बियहलीं आ तीनू एक-पर-एक। लड़िका एगो त ऊहो इंजीनियर। अब दोसर भाग्य का कहाला जी? रउआ अइसन जिन्दगी सभकर होखे। मुँह पर तारीफ से लजा के मास्टर साहेब नव गइलन—'ठीके बा, बाकिर मास्टर के बउसाव केतना आ हियाव केतना! साईं कृपा दीजिये जामे कुटुम समाय.....बस.....खाली एने तनी खोंखी आ दम फुलाव से कबहूँ-कबहूँ बड़ा लाचार हो जात बानी।'

मैनेजर साहेब राय देलन—हई मुखर्जिया जे आइल बा, तनी देखीं ओकरा से। बा त जवान बाकिर कह रहल बा लोग जे बड़ा तेज बा, रोगिन के ताँता लागल रहत बा ओकरा इहाँ।' मास्टर साहेब कहलन—'महाराज देखवलीं त कई ठइर। सभकर कहनाम बा जे एलर्जी ह। धुआँ से बाँचीं, धूल से बाँचीं, मिठाई से बाँचीं, खटाई से बाँचीं,...अरे भाई कवन-कवन चीज बाँचीं। देह धरे को दण्ड है।' फेरू ठहाका लगवन मास्टर साहेब।

चाय आ गइल। कुछ देर एने-ओने के आउर बतकही भइल। तब मैनेजर साहब हाथ जोड़त खड़ा हो गइलन—'अच्छा, अब हुकुम दिआव।'

दुपहरिया में खाना खइला का बाद मास्टर साहेब कोठरी के आराम करत रहस। उनकर मेहरारू बर्त्तन-बासन समेट के उठली त झाड़ू ले मास्टर साहब के कोठरी बहारे लगली। मास्टर साहेब पाँच-सात देर बीतला आ उठके बइठ गइलन। खोंखी शुरू भइल त सुरहुरी चढ़ गइल। हाथ इशारा से पानी मँगलन। ऊ एक गिलास पानी ले अइली त घोंटे-घोंटे पीये लगलन। कुछ देर बाद खोंखी नरमाये लागल। इंजीनियर साहेब रूम से निकल के तौलिया से हाथ-मुँह पोंछत आके खड़ा हो गइलन। कुछ देर अपना बाबूजी का ओर देखत रहलन, फेरू अपना कमरा में लौट गइलन। करीब-चार बजे इंजीनियर साहेब अपना बाबूजी से आके कहलन—'बाबूजी रउआ पास एक हजार रुपया होई?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Hewlett-Packard. Funding: IKS-MoE-Education, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मास्टर साहेब एक क्षण बेटा का ओर तकलन आ कहलन……'एक हजार……हँ होई… होई एक हजार……कब काम वा ?' इंजीनियर साहेब बोललन—'दू-एक घण्टा का बाद।' एतना कहके ऊ भीतर चल गइलन।

मास्टर साहेब खूँटी पर से कुरता आ छाता उतरलन, कुरता पहिनलन आ निकले लगलन त उनकर मेहरारू पूछली—'दूर जाये के बा ?' ऊ कहलन—'ना भाई, मनीष के टाँफी सकरले बानीं। भुला गइला पर ऊ हल्ला करे लागी। भोरहीं वचन लेले बा।' मेहरारू कहली—'त कुछ नीमन तरकारी ले ले आयेब, बिहाने ईहो लोग चलिए जाई।' ऊ एगो झोरा धरा देली।

मास्टर साहेब संधे मैनेजर साहेब कीहाँ गइलन। 'आईं-आईं, मास्टर साहेब, कहत मैनेजर साहेब भीतर का ओर आवाज देलन—'एक कप अउरो चाय हो।' मास्टर साहेब सकुचात बोललन—'एजी एगो जरूरी मदद चाहीं, बड़ी खातिर अइली हँ।' 'कहीं, कहीं; हाजिर बानीं' मैनेजर साहेब कहलन। बबुआ एक हजार रुपया के फरमाइश कइलन हँ। पाँच सौ त हमरा लगहीं बा, बाकिर पाँच सौ के काम चलाईं। हमरा बुझाता जे कवनो उनका जरूरी काम पड़ गइल बा। हो सकेला जे कम ले आइल होखस आ तनखाहे टाइम पर ना मिलल होय'—अतना कहके मास्टर साहेब छाता के बेंट सुगावे लगलन। मैनेजर साहेब 'कवनो बात ना' कहत उठ गइलन आ भीतर से पाँच सौ रुपया आ दू कप चाय ले ले अइलन। चाय पीके मास्टर साहेब खड़ा हो गइलन—'त अब चलीं, इजाजत।'

तरकारी आ टाँफी लगहीं से जल्दी-जल्दी कीन के मास्टर साहेब घरे अइलन। मेहरारू के झोरा धरावत कहलन—'तनी बबुआ के देब द।' इंजीनियर साहेब अइलन आ मास्टर साहेब उनका हाथ में एक हजार रुपया धरा देलन। चिराग-बत्ती का बाद इंजीनियर साहेब घूमे निकल गइलन। ऊ घूम के लउटलन त उनका साथ में एगो लमहर समान रहे। ऊ बोललन आ ओह में से एगो मशीन निकाल के बाबूजी का सामने रखवावत कहलन—'बाबूजी; ई वैकुअम क्लीनर हउए खातिर कीन के ले अइली हँ; कुछ रुपया हमरा पाले रहले रहे। बहुत काम एकरा से होई। झोल-बोल सुनी सोचली, आ अपना माई के पुकार के कहलन—'तोरा अब बाबूजी के कोठरी झाड़-सोहार नइखे करे के। तें पुरनिया अब भइले, जेने-तेने दरद होला,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

बहार सोहार में नौ घण्टा डांड़ टेढ़ आवला के जरूरत नइखे।' मास्टर साहेब अकबका के देखे लगलन आ फेरू बोललन—'का जरूरत रहे अतना खर्च करे के। काम चलिए रहल बा·····रह गइल हमार दम फूलल, त एकरो कवन उपाय बा। ई सब त अब हमनी का लागले रहे के बा। तबहीं इंजीनियर साहेब आंगन में चल गइल रहस।

मगर मास्टर साहेब के मन चंदन का सुगंध से भर गइल। उनकर दुख ना, रोआं-रोआं आशीर्वाद में उठ गइल। ई सुख क्लीनर के ना रहे, देह के सुख ना रहे। ई सुख रहे बाप भइला के, तने से ना मनो से। पुरनका कियारी का पानी का नयकी कियारी से लर लाग जाये के सुख, बेटा के बाप के अवतरण के सुख। अबगे मैनेजर साहेब के बात 'भाग्य होय त रहल लेखा' बुझाइल कि सही बा। मास्टर साहेब मनीष के पुकरलन, टॉफी देके गोदी में उठा लेलन।

माई किसिम-किसिम के तरकारी बनवली। दुलहिन सांझहीं से साथ बान्हे-छाने लगली। रात के खइला-पियला का बाद देर ले बतकहीं भइल फेरू सभे सूते गइल।

सबेरे नाश्ता-पानी भइला पर जाये के तइयारी भइल। रिक्शा आइल। बाबा-इया पोता के दुलार-हँकार कइल लोग। रिक्शा पर बइठला पर मनीष नन्हीं-नहीं हाथ उठा के बाबा टा-टा, इया टा-टा करे लागल। इया बंसवारी सुसुकत रिक्शा का लगहीं खड़ा रहली। रिक्शा बढ़ गइल। मास्टर साहेब मोड़ ले गइलन, फेर लवट अइलन। इया का खायेक करे के मने ना रहे। अपना खटिया पर ओठंग गइली।

ऊपरी बेरा ले लोग के मन कुछ हलुक भइल। मास्टर साहेब के बेटा रारू भीतरी ओसारा में तरकारी चीरत रहलीं। मास्टर साहेब कोठरी से के पुकरलन—'सुनत बाड़ू? कहीं रखलू ह का हो?'

ऊ तरकारी चीरत में बड़बड़इली—'राते बड़ा खटपटाइल रहे।

झनक के मास्टर साहेब बोललन—'का बरात रहेली ई। अरे हम पूछ तानी कि वैकु·····आरे हऊ मशीनवा जे बबुआ ले आइल रहस, कहीं दूं। देलू ह का?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ कहली—'हम काहे के धरीं मसीन-तसीन।'

'त कहां बा ?' मास्टर साहेब पुछलन।

ऊ कहली—'ले गइल लोग।'

'लोग ? के ?' मास्टर साहेब के आवाज ऊँच हो गइल।

ऊ कहली—'बबुआ आ दुलहिन।'

मास्टर साहेब खंभा धइले कोठरी में ताकत रह गइलन। उनका इल जे देवाल एक-ब-एक सरक गइल होय आ अन्हार सुरेख लउकत ।

उनका मेहरारू का बगले में बिलाई बोलल—'म्याऊँ।'

'बोहीजा बइठल बाडी आ ससुरी के बेलावतो नइखी, बुझइबे ना करे जें आ...' मास्टर साहेब खिसिया के बोललन आ खोंखी शुरू हो गइल। खांसत-हांफत ऊ बाहर ओसारा में चल गइलन। मेहरारु पाछा-पाछा एक लोटा पानी लेके पहुँचली आ बोललीं—'आज कवन हम बहार-सोहार कइलीं ...हमरा त कबहूँ एलर्जी-टेलर्जी में बिसवासे ना भइल... ..आरें.....देह-हे कवन भरोसा।'

□ प्रधानाचार्य, जगदम महाविद्यालय, छपरा-८४१३०१

नवगीत

—डॉ० शम्भुशरण

केकरा से बेवहर आ केकरा से ऋन
रात निपट बाँझिन आ हिजड़ा बा दिन
रेंगनी के काँटा पर जिनिगी बिछवना
कुरहा पर बज्जर आ डँहकत बा थवना
करइत के माथा पर बीते छिन-छिन
जाल फँसल मछरी अस आकुल बा प्रान
करवट बदलत-बदलत होला बिहान
असरा में बीतेला दिनवाँ गिन-गिन
करजा के बेंवत ना, बेटी के गवना
पटपटात भुँभुरी में जइसे मृगछवना
नरको से बदतर ई जिनिगी घिन-घिन

□ चित्रगुप्त नगर, पटना-२०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

कहानी

सुनीता

—डॉ० रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव 'बि

पूस के पुरवइया सिसकत रहे। हवा के झकोरा हड्डी ठि
ओह शीत लहरी में कभी-कभी बुन्दा-बुन्दी हो जाय। जवना अंग प
बुन्द पानी गिरे बुझाए कि अंग जल जाई। ओला पड़े के भी
रहे। हम सुनीता का दुआर पर दालान का ओसारा में बइठल जनवर
में निगाह गड़वले रहीं आ हाथ में कलम लेके गलती-सही के निशान
रहीं। सामने अँगनई में कुछ बनिहारिन धान के अँटिअवनी करत
कबो-कबो फूही पड़े त ओसारा में आके लुका जा स। हमरा सामने
बइठल रहली। हम उनके काँपी देखत रहीं। एही घड़ी अँगना के
के जंजीर झनझनाइल। सुनीता सकेत बुझ गइली आ उठ के अँग
गइली। हम ओमहीं काँपी में नजर थझुरवले रहीं। एकाएक एगो
हारिन अपना छ महीनवा लड़िका के एगो फाटल-पुरान चिथरा में लपेटे
आ एगो पातर कपड़ा ओसारा के पक्का पर बिछा के सुतावत रहे।
के देख के हमरा दया आ गइल। हिया में करुणा के सागर हिलोर
लागल। हम अपना के रोक ना सकलीं आ कहलीं— लड़िकवा के
पर सुतावता ओकरा पाला ना लागी? सनी सा पुअरा ले के है
पर बिछा द आ ओही पर कपड़वा बिछा के सुता द। ऊ हमरा
डालके आँख के भाषा में कुछ कहलस। फेर तनीसा चुप रहके
ल ठीके कहतानी माहटर साहेब। बाकिर बलकिन अँगना से
बोले लागब। हम कहलीं—तू सुताव ना; हम मलकिनी से कह देब
कहलीं हूँ। ऊ हमरा ओर एक टक देखलस आ आपन साहस बटोर के
कहलीं, कइलस। अँटिया के झारन के पुअरा बिछा के ओही पर
लड़िका सुता देलस आ अपना काम में लाग गइल।

हम समझ गइलीं कि जरूर एह तरे के चोट ई सहले बिया
आहत होके सहमल बिया। अतने में सुनीता अँगना से अइली आ
छिपी हमरा सामने रख के ओह बनिहरिनिया पर उबल पड़ली "ए
तहरा चउकिये पर लड़िका सुतावे के रलऽ। कहीं गुह-मूत क दी त
लोगना के तनिको बिचार ना रहे।" ऊ एतना बात समतमाइले
में कह गइली। ऊ हमरा ओर एके टक ताकत रह गइल। हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका के मत बोलऽ। हमहीं उनका के उहाँ लड़िका सुतावे
देखऽ, एगो चिथरा बिछा के पक्का पर सुतावल रली ह त हमहीं मना
हीं हँ। तू ही सोचऽ, सबका अपना धीया-पुता खातिर दरद-मोह होला।
मोह बेचारी के अपना पूत खातिर दरद नइखे"। हमार बात सुनके
एकनी करे वाली सब मेहरारू हमरा ओरी ताके लगली स। सुनीता माथ
झुकवले बस सुनत रह गइली। बाकिर उनका बुझाइल कि ओकनी के सोझा
हमरा बहस के धक्का लागल। ऊ बड़ा मोलायमियत से हमरा से कहे लगली—
"त एह सबके सामने अइसन बात कहल जाला कि एकनी के मन आउर
खराब जाला।" कहके ऊ एगो लम्बा साँस लेली आ चुप हो गइली। हमहूँ
उनका के समझा-बुझा के थोड़ा देर पढ़ा के चल गइलीं।

बिहान भइला हम सुनीता के क्लास में हिन्दी पढ़ावत रहीं। निबन्ध
सरदार पूर्ण सिंह के "मजदूरी और प्रेम"। एगो पंक्ति आइल जवना
माथ रहे कि मजदूर के मजदूरी रुपया-पइसा से ना चुकावल जा सके।
उनका के परस्पर के प्रेम-भाव से चुकावल जा सकेला। एही सिलसिला में
बहुत कुछ कह देलीं। हमार भाव सबसे ज्यादे सुनीता समझली, काहे
कि उनका भावुकता में आ के ऊ रोवे लगली। सब लड़िका-लड़की खातिर
हमरा बचरज बुझाइल। हमरा से सवाल पर सवाल होखे लागल। हम एक
दिन पहिले के घटना कह देलीं। सुनीता दूनों हाथ में मुँह छुपवले हाई बेंच पर
माथा टेक देली। उनकर सखी लोग चुप करावे लागल। बाकिर ऊ आउर
रोवे लगली आ ओढ़नी के छोर में लोर बटोरत बाँसन रूम में चल गइली।
हमरा बाँस में लोर देख के हम अपना-आप पर पछतावे लगलीं आ सोचे लगलीं
कि हम बहुत गलती क के उनकर दिल दुखा देलीं।

बिहान भइला भोरे हम उनका के पढ़ावे खातिर उनका घरे गइलीं।
उनका का लेखा पहिलहीं से टेबुल-कुर्सी लागल रहे। टेबुल पर किताब-
कापी रखल रहे। हम चुप-चाप कुर्सी पर बइठ गइलीं आ कापी के पन्ना उलटे
लगलीं। एतने में विशु बहू अइली आ कहे लगली— ए माहटर साहेब रउरा
बबुनी के का कहलीं हँ कि उहाँ के अइसे कइले बानीं। काल्ह जबसे पढ़के
गइलीं तब से खाइल-पियल छोड़ देले बानी आ मनगर बतिअइबो ना कइलीं
हँ। बा आज त बबुनी के देख के बुझाता कि अपने जादू डाल देले बानीं।"
हम कहलीं—हो हम त उनका के कवनो खास बात ना कहलीं बाकिर ऊ कुछ
हमरे समझ लेले होखस त ना कह सकीं। बोलाव ना, हम उनका से पूछीं।"

(शेष पृष्ठ ६७ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

पुस्तक-समीक्षा

'नारायण' : संपूर्ण कृष्ण-कथा

—डॉ० ब्रज भूषण

नारायण (महाकाव्य)—भाग-१-मूल्य-२१ रुपया; भाग-२-मू
रुपया। कुल पृ० सं०—४३२। कवि—डॉ० चन्द्रधर पाण्डेय 'क
प्रकाशक—भोजपुरी प्रकाशन, आशा पड़री, भोजपुर (बिहार)।

पौराणिक कथानक सब पर आधारित प्रबंध काव्यन का रचना के
भारतीय कवियन के रुझान जादा रहल बाटे। ओहू में राम का
सम्बन्धित कथा के बड़ा प्रमुखता के साथ ग्रहण कइल गइल बाटे। भोजपुरी
काव्यनो के जादा संख्या राम और कृष्ण का चरित पर आधारित
एकर कारण ई बा कि भोजपुरी सस्कृति पर राम के चरित के बाद
चरित के प्रभाव बेसी बाटे। जहाँ ब्रजभाषा साहित्य में कृष्ण के बाल
आ रासलीला प्रसंगन के ही जादे महत्व मिलल बाटे, उहँ भोजपुरी
में भोजपुरी संस्कृति के साथे अनुकूलता देखावत कृष्ण के संपूरन जीवन
के ग्रहण कइल गइल बाटे। भोजपुरी प्रबंधकाव्यन में कृष्ण का संपूर्ण
वृत्त पर आधारित एकमात्र महाकाव्य चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' लिखित
यण' बाटे।

'नारायण' में कथा के कुछ मुख्य विन्दु बा—

अग्रसेन के पत्नी के साथ द्रुमलिक राक्षस के बलात्कार, कंस
कंस के आतंकवादी आ धुंधकारी चरित्र आ जरासंध के मल्लयुद्ध में
के ओकरा बहिन से बिआह कइल, माता-पिता के कारागार में बन्दी
आकाशवाणी भइला पर बहिन-बहिनोई के बन्दी बना लिहल आ कारा
बहिन के सात गो सतान के जान से मार दिहल। कारागार में कृष्ण
आ बसुदेव द्वारा कृष्ण के यशोदा अउर नंद में घर कै पहुँचा दिहल।
कृष्ण के पूतना सहित कई राक्षस-राक्षसियन के सहयता से मारे
कइल आ सबके विफल करत सब राक्षस राक्षसी के कृष्ण द्वारा मार
सूखा आ बाढ़ से गोकुल वासी के रक्षा कइल, मथुरा पहुँच के कृष्ण
के बध कइल। कृष्ण-बलराम के जनेऊ, शिक्षा-दीक्षा, बलराम के
कृष्ण का रुक्मिणी के हरण करके विवाह कइल, जरासंध के साथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के परास्त कइल आ राजधानी बदल के द्वारिका के गइल, जाम्बवान से युद्ध आ बोकरा बेटी से शादी। कृष्ण के बेटा प्रद्युम्न आ पोता अनिरुद्ध के कथा, आ प्रसंग प्रकरण, राजसूय यज्ञ अउर जरासंध आ शिशुपाल के बध। युद्ध में कई हजार युवतियन के मुक्ति आ उनका सामाजिक मान्यता खातिर विवाह। बृकासुर आ भौमासुर के बध। अर्जुन द्वारा सुभद्रा-हरण आ विवाह। जुआ में राजपाट सहित द्रौपदियो के युधिष्ठिर द्वारा हार गइल, दुर्योधन-दुशासन का द्रौपदी के अपमान कइल, बाकिर कृष्ण द्वारा मौका पर द्रौपदी के लाज बचा लिहल। सुदामा कथा, दुर्योधन के सेना आ कृष्ण के शरीर से सहायता कइल, व्यामोह में पड़ल अर्जुन के गीता के उपदेश, महाभारत युद्ध, युधिष्ठिर राज्याभिषेक, गृहयुद्ध, बलराम द्वारा जनशांति ले लिहल, कृष्ण का व्याधा के तीर से घायल हो गइल आ आत्रेय द्वारा कृष्ण के यशोगान कइल।

'नारायण' में परम्परा से प्राप्त विपुल सामग्री के उपयोग भइल बाटे। जन्म से ले के कृष्ण के स्वर्गारोहण तक के कथा में परम्परागत कथा का साथे-साथे प्रक्षिप्त-कथा आ किंवदंतियन के सगुंफित कइल गइल बाटे। 'नारायण' में परम्परा के साथ साम्य जादा देखाई पड़त बा, बाकिर कृष्ण के बचावे खातिर नंद-बसुदेव योजना, कृष्ण जन्म के बाद कंस द्वारा देवकी-बसुदेव के बंदी बनल स्नान निषेध, कृष्ण के द्वारा शिव-धनुभंग, कृष्ण-बलराम-यज्ञोपवीत, विवाह आदि नया उद्भावना के समावेश बढ़िया से कइल गइल बाटे।

महाकाव्यन के परख भारतीय काव्य-शास्त्रीय परम्परा आ पाश्चात्य काव्य-शास्त्रीय निकष पर करे के परम्परा बाटे। भारतीय काव्य शास्त्रीय रूप में महाकाव्य खातिर पहिला शर्त बाटे ओकर कम-से-कम आठ सर्ग में विभक्त भइल। डॉ० चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' रचित नारायण' (दू भाग) में एगारह सर्ग बाटे। पहिला भाग में 'वन्दना', 'वन विहार', 'विवाह', 'कुरुक्षेत्र' आ 'वृन्दावन'— पाँच सर्ग अउर दोसरा भाग में 'मथुरा', 'द्वारिका', 'महाभारत युद्ध', 'आरोहण' आ 'अंत'— छव सर्ग बाटे। इहाँ सर्ग के शर्त पूरा भइल बाटे।

भारतीय काव्य-शास्त्रीय परम्परानुसार महाकाव्यन में एगो संपूर्ण कथा के मानल जाला, साथे-साथे ओह में कुछ अवान्तर कथा आ प्रासंगिक कथन के समावेश भी होखे के चाहीं। 'नारायण' में भगवान श्रीकृष्ण के सम्पूर्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

जीवन-वृत कथा के रूप में संयोजित कइल गइल बाटे। प्रसंगवश 'भागवत' के प्रारम्भ कंस जनम के कथे से होत बाटे आ द्रुमलिक राक्षस द्वारा पत्नी के साथ बलात्कार के कथा स्वतः संगुंफित हो गइल बा। एहीं पूर्ण महाभारत के कथा एक सूत्र में बन्हा गइल बाटे। लाक्षागृह-कथा, अनिरुद्ध-कथा, राजसूय यज्ञ कथा, सुभद्रा अपहरण, पाण्डव लोग के कथा अइसन अनेकन कथा अवान्तर कथा के रूप में चाहे प्रसंगवश 'नारायण' के कथानक में आ गइल बा।

कवनो प्रबंध काव्य के महाकाव्य कहावे ला ई जरूरी बाटे कि कोई महत उद्देश्य होखे। महाकाव्य अपना पहिले के युग के अध्ययन करे, वर्त्तमान के अवलोकन करेला आ भविष्य के पुर्वानुमान लगावेला। एगो महाकाव्य के रचयिता के सोझा समसामयिक समाज के उन्नत करे के आ बड़हन उद्देश्य होला। 'नारायण' में श्रीकृष्ण जइसन चरित का माध्यम से उत्तरवर्त्ती व्यवस्था के विरोध में आस्तिक विश्वासन के दृढ़ लक्ष्य आ उद्देश्य प्रमुख बाटे।

भारतीय काव्य शास्त्री लोग महाकाव्य में सर्गान्त खातिर ई नियम देले बा कि परवर्ती सर्ग का कथा से पूर्वसंकेत ओह में आ जाए, जवना से कथा के एकसूत्रता बनल रहे। 'नारायण' में एह शर्त्त के पूरा करे के कोशिश भइल बाटे।

महाकाव्य के प्रारम्भ में आ कबो-कबो प्रत्येक सर्ग के प्रारम्भ में कवनो देवता, राष्ट्र आ इष्ट के स्तुति, प्रार्थना, गुण-गान के व्यवस्था शास्त्री लोग कइले बाटे। 'नारायण' के प्रारम्भ में एगो पूरा सर्ग एकरा खातिर राखल गइल बाटे, जवना में गणेश, सरस्वती, हनुमान आ अनेक देवी-देवता लोग के प्रार्थना कइल गइल बा आ शुभ के आशीर्वाद दे गइल बा।

भारतीय काव्यशास्त्री लोग ई निश्चित कइले बा कि महाकाव्य में रूप से वीर, श्रृंगार चाहे शांत रस में से कवनो एगो रस प्रधान रही ओकर निर्वाह आद्योपांत होई। आन-आन रस गौण रही, बाकिर रसन के उपयोग से एकरसता टूटल जाई आ रसाभास से बाँचल जाई। आजकल भक्ति' आ वात्सल्य के शामिल कर के रस के संख्या एगारह दिआइल बा। आजकाल भक्ति रस के महाकाव्यन खातिर मुख्य रस के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई गइल स्वीकार कर लिहल गइल बा। 'नारायण' भक्ति प्रधान रस महा-काव्य बा। यथा-स्थान आन-आन रसन— वात्सल्य (कृष्ण के बालपन में), शृंगार (कृष्ण-राधा प्रेम), वीर (महाभारत युद्ध) के साथ-साथ रौद्र आ करुण के—जगह-जगह उपयोग भइल बाटे। 'नारायण' से भक्ति रस के कुछ उदाहरण देखल जा सकत बा—

होखल पुत्र अनोखा रूप, तेज-पुंज शीतल पुर्णेन्दु।
बाल सुलभ चंचलता साथ, सुन्दरता सिमटलि बनि विन्दु॥

निराकार के तेज महान, नराकार में धइलस रूप।
विश्वंभर मानवता पाई, खेलि करी जस छाया-धूप॥

भाग—१, पृ० —४७

शरदे काल के वन में कान्हा साधल वेणु बजावे,
उठे वेणु से सुर रसीला जग के ताप मिटावे

भाग—१, पृ० ८९

जे लखल ह जवना भाव में
ए लखइले सबका भाव में

युवतियन के उर में नेह रस
बसल सुघराई सभ नयन में

भाग—२, पृ० १२४

भारतीय साहित्य शास्त्र के मान्यता के अनुसार महाकाव्य में संध्या, चन्द्रमा, रात्रि, प्रदोष, अन्धकार, दिन, प्रातः काल, मध्याह्न, मृगया, ऋतु, षड्ऋतु, वन, समुद्र, संयोग, वियोग, मुनि, स्वर्ग, नरक, यज्ञ; संग्राम, नगर, विवाह, मंत्र, पुत्र, आ अभ्युदय वगैरह के यथासंभव सांगोपांग वर्णन होखे के चाहीं। 'नारायण' में एह सब के जगह-जगह सांगोपांग वर्णन भइल बा। कुछ के एक-आध उदाहरण देखल जा सकत बा—

उड़े पराग मधुप छकि झूमे
तितिली उड़ि कलियन के चूमे
खउलति घटा प्रकृति सर-केश
पवन उसाँस क्रोध—आवेग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

गरजत टूटत नभ अरराई
बिजुली सांपिनि के उद्वेग

भाग—१, पृ० ५६

वृन्दावन रस राज के, शोभा बरनि न जाई

भाग—१, पृ० ११

कोइलर कूक जगावे मधुवन
ध्वनित सरस होइ उठे उपवन

भाग—१, पृ० ११

असित, वशिष्ठ, कण्व, त्रित आसुरि
गौतम, श्रीकृष्ण द्वैपायन
विश्वामित्र, पराशर, कश्यप,
गर्ग, समति, ऋतु, वैशम्पायन।

भाग—२, पृ० २६६

रजनी होखल ह घनघोर, देखसि ह निज रंग निखार
गोकुल के घन-बन में छीपि, बइठल आपत मांग संवार

भाग—२, पृ० ४६

'नारायण' में नाट्य संधियन के भी निर्वाह कइल गइल बा, बस एकर कथा विकासशील भइल बाटे। महाकाव्य के भारतीय मान्यता अनुसार विशद चाहे संक्षिप्त रूप में जगह-जगह सज्जन-प्रशंसा आ दुर्जन भी कइल गइल बाटे।

भोजपुरी का ध्वन्यात्मकता के बरकरार राखत कवि तत्सम, देशज आ विदेशज शब्दन के उपयोग जरूरत के मोताबिक कइले बा। अइसे तत्सम के उपयोग आउर सबसे जादा देखाई पड़त बा।

पाश्चात्य काव्य-शास्त्री लोग महाकाव्य के ऊपर विचार करत औचित्य, औदात्य, शक्तिमत्ता, मार्मिकता आ अलंकरण के एकरा आवश्यक तत्व मनले बाड़न। 'नारायण' में आद्योपांत प्रौढ़ता बा। औचित्य के निर्वाह में कवि के ध्यान बाटे। विशिष्ट प्रसंगन के घनीभूत संप्रेषण में शक्तिमत्ता के प्रयोग भी मिलत बा। आलंकारिक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के शक्तिमत्ता बढ़ावे में कवि का सफलता मिलल बा। जगह-जगह पर मार्मिकता प्रचुर मात्रा में बा। कहीं-कहीं 'नारायण' के कवि शब्दाडम्बर आ अतिविस्तार से अपना के नइखन बचा पवले। महाकाव्यन के अनिवार्यता शिथिल पदावली योजना के कारण कहीं-कहीं बाधित हो गइल बाटे।

'नारायण' सब मिलाजुला के संस्कृत से हिन्दी तक का परम्परा के निर्वाह करत देखाई पड़त बा। भोजपुरी भाषा-भाषी जनपद अपना खातिर एक आदर्श के सृजन करेला आ ओकर दृढ़तापूर्वक अनुकरण करेला। इहे आदर्श रूप में राम आ कृष्ण भोजपुरिया लोग के विशेष प्रभावित कइले बाड़ें। एही से राम आ कृष्ण के कार्य भोजपुरिया खातिर अनुकरणीय, मार्गदर्शक आ मानक हो गइल बाटे। श्रीमद भागवत पर आधारित संपूर्ण श्रीकृष्ण कथा डॉ० चन्द्रधर पाण्डेय 'कमल' के 'नारायण' में महाकाव्य के विषय बनल बा आ सामाजिक मूल्यन के बरकरार राखे के उद्देश्य के पूरा करत बा। ई एगो पढ़े जोग महाकाव्य बा, जवना में भोजपुरी भूईं के सोंहाई बरकरार बा।

□ ई-१८-३, कांटी थर्मल पावर, मुजफ्फरपुर

(पृष्ठ ६१ के शेष)

सपने में सुनीता गोदी में एगो लड़िका लेले अंगना से अइली। एक हाथे छाती से साट के लड़िका सम्हरली आ एक हाथे हमार गोड़ छूके प्रणाम करे लगली। त बुझली कि गोदी में के लड़िकवा उनकर बहिन बेटा सोनू हउवन। बाकिर गौर करके देखली त बुझाइल कि ई विशू बहू के लड़िकवा ह जवना के ऊ सोनू के देह पर के उतारल कपड़ा पेन्हा के ले आइल रली। ऊ गोदी में लड़िका लेले चुप-चाप खड़ा रह गइली। आंख फेरू मोती से भर गइल। कुछ मोती बखरा से खिसक के भुइयां छितरा गइल। सभे एक दोसरा के निहारत रह गइल।

□ युवा-समायोजक, नेहरू युवा केन्द्र, छपरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

विशेष लेख

भोजपुरी के शालीन रूप के विकास कइसे

—डॉ० कुबेरनाथ रा

अगर भोजपुरी का सब विषयन आ भावन के समर्थ आ सहज वाहक के बात भोजपुरी गद्यकार का ऊहे करेके होई जे विद्यासागर युग में बंग वाला लोग कइल आ द्विवेदी युग में हिन्दी वाला लोग कइल, अर्थात् चयन आ मुहावरा के भोजपुरी लक्ष्मण रेखा पार कइके, संस्कृत शब्द भण्डार से आ हिन्दी-बंगला गद्य-साहित्य से, भोजपुरीपन के रक्षा करत, अपना जोड़े के होई। अपना तद्भव प्रकृति के रक्षा करत, तत्समता से कइसे आ विस्तार प्राप्त कइल जा सकेला, एकर प्रमाण मिलऽता तुलसी का में। तुलसी के अवधी खांटी अवधी ना ह। ऊ अवधी के ढांचा का संस्कृत के तत्समता आ सार्वदेशिक लोकभाषा सभन के बल अन्तर्भुक्त बाड़े। फलतः तुलसी के अवधी होखत भी 'अखिल भारतीय अवधी' ऊ तद्भव के बुनावट में तत्सम के कसीदा काढ़त गइल बाड़े। फलत गुजरात से लेके मिथिला तक छा गइले। तुलसी का समय में भारत सांस्कृतिक राष्ट्रभाषा रहे ब्रजभाषा। बंगाल से लेके गुजरात तक भाषा के ही विविध प्रारूप धर्म, संस्कृति आ साहित्य के वाहक रहे। वल्लभाचार्य सुदूर कच्छ में ब्रजभाषा के पाठशाला स्थापित कइले बे ले चलल आ जेकरा के राष्ट्रीय सरकार के स्थापना का बाद समाप्त दिहल गइल, काहे कि राष्ट्रीय एकता के समूचे सूत्रन के, आजादी मिल फालतू, निरर्थक आउर साम्प्रदायिक माने के एगो प्रवृत्ति भारतीय राजनी में चल पड़ल रहे। एह विडम्बना पर इहाँ हम कुछ नइखीं कहल चाहे कि ई विषयान्तर हो जाई। हमरा कहे के मतलब ई ह कि ब्रजभा के ओह प्रभाव-परिधि का भीतर रहतो, तुलसी अपना निजी अवधी भाषिक स्वायत्तता आ अखिल भारतीय महत्व प्रतिष्ठित कइले, जेकर उनका व्यक्तिगत काव्य प्रतिमा का अलावें उनका से स्वीकृत भाषा प्राप्त भी बा, जेकरा माध्यम से सूक्ष्मतम विचारन के भी अभिव्यक्त करे में कठिनाई ना भइल आ जे अन्तरप्रान्तीय स्तर पर बोधगम्य रहे। एह तुलसी के भाषागत आदर्श कवनो विकासशील भारतीय भाषा खातिर विचा णीय बा। एह मर्म के पहचनले रहले भारतेन्दु आ उनका बाद पं० महावीर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसाद द्विवेदी। फलतः कुरुजांगल के एगो क्षेत्रीय भाषा आज अखिल भारतीय हिन्दी ह। हिन्दी के एह 'अखिल भारतीय' के पीछे संस्कृत शब्दन के तत्सम-संस्कृति ह, आ एकरा खिलाफ भारतीय राजनीतिज्ञ आ कुछ राजनीति आविष्ट साहित्यकारो 'हाय तोबा' मचावत रहल, जेकरा दृष्टि मे सबसो तरह के अखिल भारतीयता एगो अपराध ह, आ फासिज्म ह, सम्प्रदायवाद ह। इहो तकले कि हिन्दी के एगो बहुत बड़ साहित्यकार पार्टी से एही अपराध पर निकाल बाहर कइ दिहल गइले। तबहूँ हिन्दी आपन रास्ता ना बदललस। भोजपुरी के भी अगर आपन स्वस्थ आ सहज विकास आ विस्तार करेके बा त ओ भाषा सूत्र हिन्दी-बंगला अपनवलस ओही भाषा सूत्र के लेके चले के बा। आउर कवनो रास्ता नइखे! भोजपुरी के कुछ समर्थके लोग एह पर नुँह बिचकाई कि ई त हिन्दी हो गइल, भोजपुरी ना रहल। ब किर आगे चलके पता चली कि ई चिन्ता अमूलक बा। भोजपुरी वाक्य संरचना (syntax) एतना भिन्न बा कि खड़ी बोली ओकरा के हजम कइ ली, ई सम्भव बाटे। भाषा का भीतर दूगो बात होला :— भाषा के व्याकरण या syntax आउर भाषा के संस्कृति। ओकर व्याकरण सुरक्षित राखत हमनी के चाहत बा कि भाषा स्वयं में लक्ष्य ना, बलुक साधन ह। लक्ष्य ह संस्कार सम्पन्नता भा सांस्कारिक ऋद्धि। एह संस्कार-साधने खातिर हमनी का हिन्दी चाहीं भा भोजपुरी चाहीं भा कवनो भाषा चाहीं। भारतीयता, हिन्दी, भोजपुरी आदि प्रिय बात ह आ सब प्रिय बात साधन ह। लक्ष्य ह आत्मा। 'आत्मा वा अरे सर्वं कामाय सर्वं प्रियं भवति, आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति'—ई औपनिषदिक महावाक्य बड़ा महत्वपूर्ण ह। लक्ष्य ह मनुष्य के आत्मा के विकास। बाकी सब चीज खान-पान, शिक्षा-दीक्षा, धर्म-संस्कृति, कला-साहित्य आदि अन्तिम विश्लेषण में 'साधने' ठहरेलन स। साध्य ह हमना अन्तर के निहित आत्म-शक्ति के परिष्कृत आ सुसंस्कृत कइल, अपना भीतर निहित ब्राह्मणत्व के अग्नि के प्रज्वलित कइल। जे लोग भारतीय वाङ्मय के पढ़ले बा ऊ लोग जानऽता कि एकरा में कण्ठ फाड़ के, चिल्ला के घोषणा कइल गइल बा कि ब्राह्मणत्व जाति के नाम ना ह, एगो संस्कार भा एगो प्रवृत्ति के नाम ह, आउर जन्मतः जे वंचित, दलित भा शूद्र बा ओकरो में ब्रह्मणत्व बीजबीज के रूप में छिपल बा। ई ब्राह्मणत्व व्यक्ति के गुण ह, जन्मना जाति नहीं गुण ना ह। केकयराज अश्वपति, मिथिला के जनक, भगवान वेदव्यास,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ऐतरेय महो, सूत पौराणिक, भगवान महावीर, गुरु नानक, कबीर, शंकरदेव, महात्मा रविदास आदि सभे जन्म से 'अब्राह्मण' रहले। महाभारत में युधिष्ठिर के कथन एह बारे में बड़ा स्पष्ट बा—

"हे महामति नागराज, मनुष्यन में सब वर्ण में संकरता बा, एह से जाति के ठीक पहचान सम्भव नइखे। अइसन स्थिति में, हे भुजंगम, संस्कृते (संस्कारवाने) वृत्त (चरित्र) वाला ब्राह्मण ह।" (वन पर्व—अध्याय पर्व १८०/श्लोक ३१ से ३७ तक)।

एह से, जब हम कहऽतानी कि संस्कार साधना के अर्थ ह अर्थात् ब्राह्मणत्व के प्रज्वलित कइल त हमार मतलब 'जाति' से नइखे। भाषा आ संस्कृति के सन्दर्भ म 'ब्राह्मणत्व' एगो तत्व ह आ एह तत्व के बल में भारतीय भाषा आ संस्कृति अपना 'अस्मिता' के रक्षा ना कर पावेला। एकरा के नकरला के अर्थ ह ओकरा के नकारल जे विश्व के मानव समाज में भारत के पहिचान बनावेला आ एकरा के नकारे के प्रयोजना उहे सब शक्ति कर ली बा जे अपना राजनीतिक महत्वाकांक्षा में भारतीयते के बाधक मानत बा। जेकरा दृष्टि में भारत मातृभूमि ना, एगो उपनिवेश भा एगो जमींदारी है। भाषा चाहे हिन्दी होखे, बंगला होखे, गुजराती होखे, तमिल होखे भा भोजपुरी होखे, एगो साधन ह (आ सर्वाधिक सशक्त आउर मूलभूत साधन ह)। एकरा ह ऊ संस्कार-साधना जे 'ब्रह्म' आउर 'ब्राह्मण' शब्दन से जुड़ल बा। एकरा आ सपाट चुनावी राजनीति के बुद्धि से एह सूक्ष्म तत्व के समझल जा सके। बाकिर ह ई अकाट्य, अभ्रान्त आउर मूलभूत बात। अगर भोजपुरी जाति में 'विद्या', 'ज्ञान' आ उच्चतर 'मनुष्यत्व' के आदेश प्रतिष्ठित नइखे बा त ई मान के चले के होई कि भोजपुरी संस्कृति 'गोबर' ना, 'गोहर' है। जेकरा के भोजपुरी में 'गोरस' भी कहल जाला। एह से, भाषा के एगो रूप के यथार्थवाद आ जनवाद के नाम पर एकमात्र स्वीकृत रूप माने के बात कइल गलत होई, एकरा से ज्ञान के क्षेत्र के अन्दर विकास के मार्ग अवरुद्ध होई आ ओकरा प्रकृति के उच्चतर संस्कार देवे में बाधा उपस्थित होई। कुछ दिन पहिले भाई आंजनेय जी हमरा से पटना में 'बउध' शब्द पर अइसन विचार के चर्चा कइले रहले। 'बौद्ध' के 'बोध' त भोजपुरी के प्रकृति के अनुसार परिवर्तन मान्य हो सकत बा, बाकिर आगे 'बउध' कइल संस्कारहीनता के समर्थन कइल होई। लोग 'बउध' बोलेलन त बोलस। हर भाषा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

...In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपभ्रंश रूप होखेला, जेकरा के 'COCKNEX' बोली कहल जाला, आ एगो कालीन रूप। आज ना त काल्ह, यानी पचास बरिस के भीतर; भोजपुरी उपप्रदेश अंचल के राजभाषा आउर उच्च शिक्षा के भाषा बनी, ई सोच के एकरा कालीन रूपके विकास कइल जाय आ 'खाँटीपन' के आग्रह के संस्कारहीनता के सीमा तक मत खींचल जाय। ई हमार विनम्र प्रार्थना होई।

भोजपुरी कवो राजभाषा होई, एह बात के कवनो आशंका से जोड़ के ना देखे के चाहीं। वस्तुतः, उत्तर भारत यानी मध्यदेश के संस्कृति 'वैदिके युग से द्विभाषी रहल बा। छान्दस आ प्राकृत, संस्कृत आ प्राकृत, प्राकृत आ अपभ्रंश जइसन भाषायुग्म एह क्षेत्र में क्रमशः वैदिक, वैदिकोत्तर आ तत्कालीन युगन में साथ-साथ प्रतिष्ठित रहल बा। दोसरा-दोसरा साहित्य के अपेक्षा नाटक जीवन के जादे स्पष्ट अनुकृति देवेला आ संस्कृत के कुलिन नाटक द्विभाषी बाड़न स। मध्यकाल में विद्यापति तत्कालीन अखिल भारतीय भाषा शौरसेनी अपभ्रंश आ मैथिली बोली दूनू में रचना कइले रहले आ दूनू के महत्व स्वीकार कइले रहले। ब्रजभाषा आ अवधी दूनू साथ-साथ चलल। दूनू से, हिन्दी आ भोजपुरी के युग्म, घर से लेके संसद तकले, सहचारी रही, एकरा में ना त आश्चर्य के बात बा आ न भय के। हँ, हमरा व्यवहार आ विचार में ई हमेशे व्यक्त होखे के चाहीं कि हिन्दी के शत्रुअन खातिर इनी 'एक सौ पाँच' बानी, काहे कि हिन्दी का साथे समग्र 'भारतीयता' के अस्मिता के रक्षा वाली बात जुड़ गइल बा। भोजपुरी आ हिन्दी के बीचे, ऐतिहासिक कारणन से; एगो आत्मिक सम्बन्ध बा। हरेक भोजपुरी नागरिक हिन्दी के आपन 'व्यापक' भाषा का रूप में आ भोजपुरी के अपना 'विशिष्ट' भाषा का रूप में देखेला। दूनू का बीचे एगो रचनात्मक सामंजस्य स्थापित क देखेला। ग्रेट ब्रिटेन के 'व्यापक' भाषा अंग्रेजी ह जे वस्तुतः दक्षिण इंगलैण्ड के ही बोली ह। 'वंश' आ 'अंग्रेजी' में, भा 'प्रोवेन्सल' आ फ्रेंच' में जेतना पारिवारिक भाषिक दृष्टि से भेद बा ओकरा तुलना में हिन्दी-भोजपुरी के भेद कम बा। कबहीं एह देश के व्यापक भाषा रहे 'संस्कृत'। तब 'प्राकृत' विविध क्षेत्रन के 'विशिष्ट' भाषा रहे। संस्कृत में प्रादेशिक भेद ना रहे, बाकिर प्राकृत प्रदेश के आपन प्राकृत रहें ले आगे चलके अपभ्रंश बनल। ओही तरे, हिन्दी सर्वव्यापी भाषा ह आ भोजपुरी, अवधी, ब्रजभाषा आदि क्षेत्रन के विशिष्ट भाषा ह। इहाँ तकले कि खड़ी बोली के प्रादेशिक रूप भी हिन्दी के एह व्यापक संस्करण से शत प्रतिशत मेल नइखे खात। खड़ी बोली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

यानी हिन्दी में हमनी कहीले 'रेल आयी' त निरक्षर भोजपुरियो कहेले 'रेलिया आइल'। ऊ 'रेलवा आइल' ना कहे। भाषिक प्रातिभ ज्ञान के पहिचान जाला कि रेल स्त्रीलिंग ह आ क्रियापद तदनुसार रही। एहिसे मतलब ई कि भोजपुरी जेकर मातृभाषा घोषित कइल जाला, ओकरो खातिर हिन्दी 'बेगानी' भाषा नइखे। एह बात के सभे अनुभव करेला। एह दूनू में परस्पर द्वन्द्व के सवाल नइखे उठत। भारतीय मानस में 'सजातीय' 'सगोत्र' भाषा के प्रति युग्म प्रतिवद्धता हमेशा से स्वीकार कइल चलत रहल बा।

[डॉ० राजेश्वरी शाण्डिल्य के भोजपुरी निबन्ध संग्रह 'सदानीरा' के भूमिका-स्वरूप डॉ० कुवेरनाथ राय के हिन्दी में लिखल लेख से साभार उद्धृत-अनूदित। (अनु०—पा० क०)]

गजल

—पाण्डेय कपिल

अब त दिल सबसे भर गइल बाटे
दर्द हद से गुजर गइल बाटे

चढ़ल रहे जे जहर नफरत के
पोरे पोरे पसर गइल बाटे

बुद्धि का जोम में जमाना ई
खेत ममता के चर गइल बाटे

आदमी के भइल बढ़न्ती ना
आदमीयत त मर गइल बाटे

अवले जे ना गइल ऊ अइँठन ह
मन के रसरी त जर गइल बाटे

□ इन्द्रपुरी, मार्ग-३, पटना-१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी-लेखन : क्वालिटी चाही, क्वाण्टिटी ना

—डॉ० शालिग्राम शुक्ल 'नीर'

भोजपुरी करीब-करीब कुल बिहार अ 'उत्तर प्रदेश' के पूरबी जिलन के मातृभासा हो। आजमगढ़ येही के हिस्सा हो। जेसे हमरो मातृभासा हो। हमरे जिला के भोजपुरी 'पश्चिमी भोजपुरी' कहल जाले अ येकरे के उदाहरण हमार ई लेख हो। आज हम येही भोजपुरी में अपने भाइन के बारे भोजपुरी-लेखन के बारे में विनम्रता के साथे कुछ सुझाव रखल चाहत हईं। हमके पूरा विस्वास हो कि लोग येके अन्यथा ना लीहैं अ येह पर आपन रचनात्मक विचार व्यक्त करिहैं। येसे भोजपुरी साहित्य में सुधार होई, परिपक्वता आई अ लोगन के निगाह में भोजपुरी के इज्जत बढ़ी।

आजकल निकरे वाली भोजपुरी पत्रिकन में येह भासा के मानकीकरण, पूर्णता अ मौलिकता के बारे में अक्सर कुछ न कुछ देखे के मिलेला। येकरे सम्मेलनन अ अधिवेसनन में भी विचार कयल जाला लेकिन कुछ खास नीजा अवहिन ना मिलल हवे। हमार आज के विचार येही प्रसंग से सम्बन्धित हवे अ ई येह धारा के कुछ आगे बढ़इहैं अइसन हम सोचत हईं। हम्हूं भोजपुरी के छोट-मोट विद्यार्थी हईं। भोजपुरी में कुछ लिखीला भी अ भोजपुरी-अवधी में 'शोध' भी कइले हईं। वर्तमान भोजपुरी-लेखन के देखले के बाद हम येह निर्णय पर पहुँचल हईं कि हिन्दी खड़ी बोली के तरह भोजपुरी में किताबन, पत्र-पत्रिकन अ विविध लेखन के भीड़ बढ़त जाति हो। जरूरत 'क्वालिटी' के हो, 'क्वाण्टिटी' के ना। देस के चीज छपे अ पढ़े लायक न रहें त सब बेकार हो। जवन भी छपे ऊ ठीक, सुद्ध, सार्थक अ पठनीय छपे त रचना अ भासा के सम्मान बढ़ी। दुनिया भर के कूड़ा-करकट छपले से मान्यता ना मिली। एक त ओही तरह सरकार येकरे प्रति उदासीन हो, दूसरे रचनाकार लोग भी येके हलका बनइहैं त येकर का दसा होई? भोजपुरी भाइयन से हमार ई निवेदन हो कि येह पर गम्भीरता से सोचें अ येकर प्रचार-प्रसार करें कि लेखक लोग भासा अ विसय के प्रति उदासीन न होंय।

आज हम भोजपुरी के व्याकरण, ओकरे क्रियापद या गूढ़ आन्तरिक बातन पर न जाय के ओकरे बाहरी कलेवर पर ही कुछ कहल चाहत हईं। नीचे पत्र-पत्रिकन से कुछ उदाहरण लेके हम आपन विचार रखत हईं।

पहिली बात ई हो कि भोजपुरी लिखत समय ओह में खड़ी बोली के शब्दन के उपयोग तबे करे के चाही जब ओकरे खातिर भोजपुरी के पास

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-M

आपन सब्द न होंय। येसे भोजपुरी विकृत ना होई अ ओकर स्वाभाविक बनल रही। 'प्रकाशित हो चुकल बा' के जगह 'छप चुकल बा,' 'मेहरारू चउराहा पर केस बिखरले' के जगह 'एगो मेहरारू चउराहा पर बार छितरवले,' 'चीख चीत्कार के शोर उभरे लागल' के बजाय 'रोवे चिल्लइले कै हल्ला-गुल्ला सुनाये लागल' अ 'बाघिन कबों मेमना के ना देले…जइसे शेर से शेर अ कौआ से कौआ पैदा होला ओसहीं ब्राह्मण, क्षत्रिय से क्षत्रिय, वैश्य से वैश्य अ शूद्र से शूद्र पैदा होला' के बजाय 'बाघिन कबों छेरी के जनम ना देले……जइसे बाघ से बाघ अ कउवा कउवा पैदा होला ओसहीं बाभन से बाभन, ठाकुर से ठाकुर, वैस्य से वैस्य अ सूद्र से सूद्र पैदा होला' आदि से भोजपुरी के आत्मा ज्यादा सुरक्षित बनल आवति हो। पुष्प, सूर्य, ज्योति आदि भोजपुरी कै शब्द ना हवैं। एकै जगह फूल, सुरुज अ अँजोर/उजियार कै प्रयोग होवै के चाही। हाँ, कौनो या कवनो खास जगह प्रयोग कयल जा सकैला। भोजपुरी लिखले-बोलले में तालव्य 'श' कै उपयोग दन्ती 'स' के तरह करैं के चाही। अपवाद छोड़ि के। जइसे हम 'शोध' कै प्रयोग दुसरे पैराग्राफ में कइले हईं। येक अउर उदाहरण खड़ी बोली के शब्दन पर देके हम आगे बढ़ल चाहत हईं। देखीं 'श्रीमद्भगवद्गीता उपनिषदन कै सार, अध्यात्म ज्ञान के अमूल्य निधि अ निराश-हताश आदमी का जिनगी के कर्म का ओर प्रेरित करे वाला ग्रंथ ह' के बजाय अगर येह तरह लिखल जाय त कइसन रही—'श्रीमद्भगवद्गीता उपनिसदन कै निचोड़ अध्यात्म ज्ञान कै बेसकीमती खजाना अ निरास-टुटल आदमी का जिनगी के 'कर्म' का ओर ले जाये वाली बहुत बड़ी किताब ह।'

दूसर बात खड़ी बोली के शब्दन कै भोजपुरीकरण कै हो। बहुत लेखक लोग खड़ी बोली के शब्दन के तोड़-मरोड़ के जबरदस्ती भोजपुरी बना देलैं। ई काम एकदम ना ठीक हो, 'मध्यरात्रि' कै मध्यराति,' 'क्रोध', कै करोध,' 'हृदय', कै हिरिदया, 'युवकों' कै जुवकन, 'विलम्ब' कै बिलम्ब,' घोषणा,' कै धोसना,' 'समर्पण' कै समरपन,' 'ब्रह्मचर्य' 'कै ब्रह्मचर्ज,' प्रमाणित कै परमानित, 'प्रयास' कै परयास, 'अधेड़' कै अधवूढ़, 'उन्नीस' कै 'उनइस,' 'मर्मस्पर्शी' कै 'मरमछुवनी', अ शैक्षिक आवश्यकता' कै 'शिक्षहिया अवसक' सीधे-सीधे भोजपुरी के बिगाड़ल हो। पहिले भोजपुरी शब्द खोजीं। न मिलले पर खड़ी बोली के शब्दन कै उपयोग करीं। लेकिन बिगाड़ीं बा भासा बिकृत मत करीं। 'मध्यरात्रि' के जगह 'आधीरात' ओसे बना लगी। 'अभी हाल ही में' खड़ी बोली या उर्दू कै प्रयोग हो। ई भोजपुरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइसे खपी ? भोजपुरी खुद धनी भाषा हो। शब्दन कै कमी इहां ना हो। कमी हो त खोजले कै, मेहनत कइले कै।

तीसर बात एकरूपता कै हो। लोग भोजपुरी में लिखत त हवैं लेकिन लिखले पर ध्यान ना देत हवैं। अर्थात कहीं कवनो प्रयोग कहीं कवनो। में 'एक रूपता' ना हो, समानता ना हो। उदाहरण के खातिर कुछ देई। येकै लेख में 'मन्तर फूके लगलें' अ 'ऊ सोचे लगलन' दूनो हो। 'सरदार कहलन' अ 'सरदार चल देलन' कहां तक ठीक हो? मार देलस' अ 'ऊ जवाब देहलस' गड़बड़ प्रयोग हो। 'पहिलका फगुआ' 'पहिला उपहार,' 'दोसरा सत्र' अ ओहीं 'दुसरहो भाषण' कइसे ? कहीं 'समरपन' कहीं 'आत्म समर्पण' का ठीक हो? हो सकैला में ई चल जाय 'लेकिन साहित्य में ई ठीक ना हो। येकै पत्रिका में 'प्रबन्धक,' 'पत्राचार,' 'प्रकाशक,' 'मुद्रित', लिखले से परहेज ना लेकिन 'ग्राहक,' 'छमाहीं' अ 'वार्षिक' लिखले से परहेज हो। येकेर जगह 'शुल्क' 'छवमाहीं' अ 'बारह माहीं' लिखले कै कवन जरूरत हो? 'केहू' 'कोई' लिखल, 'रुपया' के जगह 'रुपिया' लिखल, 'सूची के बदले 'महजिद' अ 'मगरिब' के बदले 'महजीद' अ 'मगरीब लिखल का पलटल ना हो? का येसे भोजपुरी कै सिंगार होई?

चउथी अ सबसे बड़ी बात साफ-सुन्दर छपाई अ प्रूफ रीडिंग कै हो। कविता, किताब अ पत्र-पत्रिका केतनो उच्च कोटि कै रही लेकिन अगर सुन्दर ना छपल रही त ऊ दु कउड़ी कै हो जाई। होत का हो कि लेखे प्रति गम्भीर ना हवैं। कुछ लिखके प्रेस में दे दीहैं। न त दुवारा-चारा पढ़ि के सुद्ध करिहैं न त प्रेस में झरिहैं। बस किताब छपले से काम हो। चाहे ऊ कइसनो रहै। येसे का होई? खाद-गोबर बढ़ी, क्वालिटी जाई। येह विषय में हमार ई प्रार्थना हो कि लेखन के प्रति गम्भीरता हो। कम लिखीं, लेकिन अच्छा लिखी? सुद्ध अ साफ लिखीं। खुद लिखीं अ कृति के उत्कृस्ट बनाईं, निकृस्ट ना।

अगर भोजपुरी जगत येह पर विचार ना करी, लेखन में प्रोढ़ता अ गम्भीरता ना ले आई त भोजपुरी अनपढ़न अ गवांरन के बोली के नाँव से छुटकारा ना पा सकी। जइसे आप लिखले पर समय देत हईं ओही तरह के सुद्ध कइले पर, प्रूफ देखले पर, सुन्दर टाइप पर अ सुन्दर रूप-रंग पर ध्यान देईं। येसे भोजपुरी कै इज्जत बढ़ी, लोग सम्मान के निगाह से देखीं अ सरकार भी ओके ऊ स्थान देई जवने कै ऊ हकदार हो।

३०१ एलवल, आजमगढ़, उ० प्र० २७६००१

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

निबंध

आलोचना आ नीतिशास्त्र

—आचार्य अम्बिका दत्त त्रिपाठी 'व्यथि

'शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि' अर्थात् शत्रु के गु बखान करे के चाहीं आ गुरुओ के दोष देखावे में पीछा ना रहे के चाहीं।

हमरा समझ में आलोचना आ नीतिशास्त्र दूनों के प्रतिपाद्य विषय हऽ आ रहहूँ के चाहीं।

जबतक शत्रु अवरू गुरु के भेद ना मिटी, जबले आपन आ परायाभाव समाप्त ना होई तबले आलोचना आलोचना ना रही। नीतिशास्त्र आध्यात्मिक मर्यादा इहे रहे के चाहीं।

ध्यान से देखला पर एह दूनों में कवनो भेद नइखे। आलोचना आलोचन से विषय (कृति) के देखल चाही ओह में नीति के नियमन त करी। बिना नीति के सम्यक् ईक्षण—समीक्षण भा समीक्षा कइसे होई?

आज काल्ह आलोचना के ढेर बोलबाला बा। समीक्षण भा कुछ पुरान पड़ गइल बा। आज आलोचना गुण-दोष-विवेचन मात्र हो के गइल बिया। समाचार पत्र में छपल किताबन के रिव्यू नीयन।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'त्रिवेणी' नीयन समीक्षा आज कहाँ मिलता जवन जायसी, सूर, आ तुलसी के कृतियन के सर्वांग समीक्षण बा।

प्रभाकर माचवे "समीक्षा की समीक्षा" लिखि के समीक्षा के गुण-दोष विवेचन क गइलन त आचार्य सीताराम चतुर्वेदी अपना "समीक्षा-शास्त्र" माध्यम से एकर शास्त्रीयता सिद्ध करे में आपन अद्भुत पण्डिताई देखवलन।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'सूर-साहित्य' त खाली सूर सागरे के ना ह बलुक अपना भाषा, शैली भा प्रसाद गुण के कारण आजुवो ओह खम्भा नियन खड़ा बा। उनकर 'कबीर' त कबीर के साहित्य में प्रति भा प्रतिष्ठापित करे में अद्भुत क्षमता-सम्पन्न ग्रन्थ बड़ले बा। कबीर जइसन सटीक आ सजीव वर्णन एह ग्रन्थ में भइल कि कबीर के कवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...के तैयार आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र भी आपन हथियार डाल देलें ...सोझा।

...ग्रन्थन के नामावली हिन्दी-साहित्य में आजुओ ढेर नइखें तबो ...राम विलास शर्मा के निराला पर, शिवदान सिंह चौहान के प्रगतिवाद ...डॉ० नामवर सिंह के छायावादोत्तर काव्य-विधन पर विवेचन कुछ कम ...पूर्ण नइखें। डॉ० नगेन्द्र के रसवाद भा रसवादी समीक्षा पर त आपन ...बहले बिया।

...ई कुल्हि ग्रन्थन के प्रतिपाद्य समीक्षण भा समीक्षा ह जवन समीक्षा-...त के कुछ आपन मान-दण्डन से प्रभावित होके कृतियन के भा कृतिकारन ...खें के आपन दृष्टि होले जवन सद्-असद्-विवेकिनी दृष्टि कहाले। एही ...से समीक्षा भा समीक्षण सम्पन्न होला।

केहू माने चाहे मत माने एकरे के आध्यात्मिक दृष्टि सम्पन्न लोग ...मारमिता" कहेलन। साहित्य शास्त्री भा योगी लोग मधुमती भूमिका ...जवन सर्जक आ आलोचक दूनो खातिर आवश्यक होला। एहीं ...में ओह तत्वन के दर्शन होला जवना के सम्यक् ईक्षण भा समीक्षा ...ना।

त आलोचना का ह ?

का ऊ कवनो चश्मा पहिनि के कवनो कृति के एक झलक देखल मात्र ...अथवा ऊ लोचन माने आँखि के आ माने समन्तात् विस्तार भी ह ?

जब लोचन के विस्तार होई त ढेर खा ले ढेर खा ले आसमान समाई ...का कोरन में। ढेर खा ले तथ्यन आ सत्यन के दर्शन-दिग्दर्शन होखें ...।

तब का आलोचना समीक्षा ना बनि जाई ? का फरक बा आलोचना ...समीक्षा में ?

आलोचना जब कवनो खास चश्मा से देखे के प्रक्रिया ह तब त कवनो ...नइखे। देखीं सभे। चश्मा के रंगो अलग-अलग होला, ओह में पावर ...संयोग से दूर के कौड़ी ले आवे के भी कम उपक्रम नइखे होखत। ले...जाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

सब कुछ क्षम्य बा। बाकिर शब्दन का साथे खिलवाड़ कबहूँ ना होखे। एह से हमार निहोरा बा कि शब्दन का साथे छेड़खानी से कम होखे आ ओकरा अर्थ भा अर्थवत्ता पर कवनो बट्टा ना लागे।

अइसने एगो शब्द बा 'सम्वेदनशील' जवन आज शासकीय-प्रशासनिक शब्दावली के उपज ह। एकरा सम्बन्ध में निवेदन बा कि वेदन अर्थात् वेदना अर्थात् पीड़ा से युक्त खाली हृदय होला, एही से सम्वेदनशील ही विशेषण बनि सकेला, कवनो निर्जीव जगह खातिर एकर प्रयोग ना त नीक रहित।

आलोचना का सँगहू कुछ अइसने बात बा। ऊ जबतक जहाँतक लोचन के विस्तार के पक्षधर बा तहाँ तक ठीक, बाकिर जब कवनो विशेष चश्मा के बदौलत कवनो विशेष कृति के खाली गुण चहके देखे लागी त अपना धर्म से गिर जाई आ ओकर कवनो मूल्य ना रहि जाई।

दिनकर जी कामायनी का सम्बन्ध में एगो लेख लिखले – "काम दोष रहित दूषण सहित" त इहो एगो बात भइल। दोष नइखे दोष बा भी। खलिहा दोष देखल जेकर लक्ष्य होखे ओकरो नजर में के ना रहल, गुण से भरल ना कहल जाई आ दोष रहल गुण से त कहइबे ना करी। एह से कुछुओ ना कहाई कि दोष कम गुण जादा गुण कम दोष जादा। चलीं इहो एगो रास्ता ठीके बा। हम कुछुओ कहबि, जवन बा तवन बा, जवन नइखे तवन नइखे।

आलोचनो आज काल्ह कम गुमराह नइखे भइल। पहिले त ऊ वाच्य अर्थ में निन्दा, आक्षेप भा दोष दर्शन तक सिमटि के रहि गइल रहे। कबो कबो त अइसन लागऽता कि कबीर के "निन्दक नियरे राखिये" के निन्दा मात्र से सम्बन्ध हो के रहि गइल बा एह आलोचना के। दृष्टि-विस्तार का बदले दृष्टि-संकोच भा संकुचित दृष्टि के पर्याय बनि के रहि गइल बा आलोचना भी।

का 'क्रिटिसिज्म' के इहे माने होला ?

बाकिर जब ओकरा लक्ष्यार्थ भा व्यंग्यार्थ पर ध्यान दिहल जाई त ऊ "आ + लुच् + ल्युट् + टाप्" के व्युत्पत्यर्थ का साथे आपन दृष्टि के कोण के भा ईक्षण के विस्तार में समा जाई। तब ऊ डेर देखे लागी। ओकरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऑखि पर कवनो चश्मा ना रही, ना पावरे वाला ना रंगीने। नजर में फरक
ह्वरी करी त कहाँ से ?

अंगांगि भाव सम्पन्न व्यंग्य के अंजन रहित दृष्टि में अंगी अर्थात् अभि-
धेय अर्थ जब अंग माने शब्दन का माध्यम से दर्शन देबे लागी तब आलोचना
का समीक्षा सार्थक हो जाई।

व्यंग्य चाहे ऊ कवनो छोट रचना के होखे चाहे ऊ बड़े-बड़े महाकाव्यन
में होखे ओकर निष्कर्ष एगो आ सर्वसम्मत होखबे करी। ओकरा में कवनो
प्रकार का पूर्वाग्रह ना होई।

दूध में छिपल घीव नीयन ऊ (व्यंग्य) आम आदमी का नजर से ओझल
होखे बाकिर समीक्षक का दृष्टि में त ऊ साफ-साफ लउकबे नू करी।
ऊ दूध ओंटे सें लेके दही जमावे, दही महे, नवनीत निकाले तब ओकरा
बाद के घीव निकाले जइसन कतना क्रिया-प्रक्रिया से काहे ना जुड़ल
होई।

दूध देखि के घीव के बात बतावल कवनो शान्तचित्त समीक्षके करि
सकेला जे अपना ज्ञान का अध्ययन का माध्यम से दूध से घीव तक के क्रिया-
प्रक्रिया से परिचित होला आ जे अपना प्रतिभा से समाधि स्थिति के साक्षा-
त्कार कइले होखे।

आम आदमी त बतवला का बाद जब जानि जाई त जानिये जाई कि
कुछ में हई बात बा, हई सत्य बा।

साहित्य के "सत्यं शिवं सुन्दरं" के ई तीनू तत्व त साहित्य के हर
विधा में रहबे करी। समीक्षा आ आलोचना एह से अलगा कइसे रही।
चाहे कविता में ओइसे कथा में ओइसहीं आलोचनो में एह तत्वन के दर्शन
होबे करी। ध्वन्यालोक कार आनन्दवर्धन कहलें—

प्रतीयमानं पुनरन्य देव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्तद् विभक्तावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यदिवांगनासु॥

अर्थात् महाकवियन के वाणी में कुछ अइसन वस्तु (प्रतीयमान) अवश्ये
होला जवन कवनो अंगना के हर अंगन के रुचिर सौन्दर्य में से झलकत ओकर
कांति, दीप्ति आ आभा-मण्डल लेखा कुछ अउरे दृश्य होला।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE

ओह दृश्य के दर्शन त सभे करेला बाकिर ओकर वर्णन सभ नै करि सके। ई त ऊहे करि सकेला जे प्रतिभा सम्पन्न कवि भा महाकवि होई। "नव नवोन्मेष ऊहे करि सकला शालिनी प्रज्ञा प्रतिभा" नया-नया उन्मेष करेवाली प्रज्ञा के प्रतिभा कहल जाला। आ "क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः"। क्षण क्षण नवीन, हरपल कुछ नया-नया रूप जाला रमणीयता के। ईहे रमणीयता के रूप भा सौन्दर्य के सुन्दरताई ह। तुलसीदास जी रामचरितमानस में जगज्जननी जानकी जी में देखलीं—

"सुन्दरता कर सुन्दर करई
छवि-गृह दीप शिखा जनु बरई"

रमणीयता के भाव ह, रमणी के रमणीय स्वभाव। "रमु क्रीडायाम्" से बनल रमणी में रमण सभ करेला, सभ रमेला। आदमी से लेके पशु, कीट, पतंग तक। बाकिर ओकर वर्णन समझकर प्रतिपाद्य ना होखे।

रमन्ते योगिनोऽस्मिन्निति 'रामः'। योगी लोग भी रमण करेला राम में। भोगी लोग भी रमण करेला काम में। रमण में राम आ काम दुनो जहवें रमि जाईं। काम में रमल 'प्रेम' ह। राम में रमल 'श्रेय'। एह श्रेय आ प्रेम के अन्तर जानि के रमण करीं। सब ठीक बा। दुरुस्त बा।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहऽतानीं—

भूषन, भणिति, भूति भल सोई
सुरसरि सम सबकर हित होई

सबकर हित माने लोक मंगल के भावना। इहे साहित्य के, संगीत के, नीति के, नीतिशास्त्रो के रीति ह। एहीं रीति आ नीति से परिचालित होके संस्कृत के कवनो नाटक का आरम्भ में मंगलाचरण आ अन्त में भरतवाक्य के परम्परा बा।

'परम्परम्' इति परम्परा। आगे, अउर आगे, अउर आगे। आदि काल से चलत आवत, कहाँ तक चलत जाई, एकर जानकारी (ज्ञान) के अभाव परम्परा के मूल स्रोत ह। इहे परम्परा समीक्षा के बा। भले ऊ प्रस्थानों समीक्षा का रूप में संस्कृत के सूक्तियन में होखे, जइसे—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थं गौरवम्, दण्डिनः पदलालित्यम्, माघे सन्ति त्रयोगुणाः, बाणोच्छिष्टं जगत् सर्वम्" नौयन हिन्दीयो में "सतसइया के दोहरे, अरु नाविक के तीर, देखन में छोटो लगे, घाव करे गम्भीर" भा सूर सूर तुलसी ससी उडुगन केशव दास, अब के कवि खद्योत सम जहँ तहँ करत प्रकाश"। आजकाल्ह कुछ लोग एकरा पर खिसिया जाता कि "वाह बा, तुलसीदास जी सूर्य हो गइलन, तुलसीदास जी चनरमे रहि गइलन ?

"गूढ़ तत्व सूरा कहीं, तुलसी कहीं अनूठ

क्या खुचा कबिरा कही अन्य कहे सो झूठ"। का कबीर का बाद के सब कवि झूठा हवन ? झूठे कबीर का बाद कविता कहानी लिखल जाता ? भाई। ई त प्रभाववादी समीक्षा के प्रभाव ह। सागर में सागर भा थोर तीर। ओहू पर 'सूर सूर तुलसी ससी" में अनुप्रास आ यमक के मोह में सत्यन कहा जाला, खिसियाये के ना चाहीं। आँखि में खून उतरि आई त का चीज धुँधराह लउके लागी। आ समीक्षक खिसियाई त का होई ?

समीक्षा के परम्परा भी चलत चलत आज ओहीजा आ पहुँचल बीया जहाँ ओकरा औजारन पर भी सन्देह के नजर पड़ि गइल बा। कहल जाता कि आलोचना के औजान पुरान पड़ गइल, ऊ घिस गइल भा पिट गइल। औजारे ऊ मानदण्ड होलन स जवना पर कृतियन भा कृतिकारन के परखल जाय-जाँचल जाला। भारतेन्दु युग से आजतक एह में अतना विकास आ उतार-चढ़ाव आइल कि ऊ साँचो पुरान अस लागे लागल।

ई सही बा कि कवनो युग के आपन कुछ खास दृष्टि होला। भारतेन्दु युग के औजार द्विवेदी युग तक आवत आवत भोथर हो गइलन स। द्विवेदी युग के मानदण्ड भा मापदण्ड छायावाद के समीक्षा खातिर भोथराइये ना गइलन स बल्कि मुरुचाइयो गइलन स।

छायावाद के निराला के प्रगतिवादी आलोचक डॉ० राम विलास शर्मा तुलसी दास के बाद सबसे बड़ कवि कहलन। सचमुच छायावादी युग हिन्दी भक्तिकाल के बाद दोसरका स्वर्ण युग रहे जवना के प्रसाद पन्त निराला आ महादेवी के गरिमा के छाया तक बाद के कवि ना छू सकलें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

छायावाद के समीक्षा खातिर जवन औजार काम में आइल ओह हो
रन से प्रगतिवाद आ प्रगतिवादी औजारन से प्रगतिवादी समीक्षा का
में भी ऊहे हाल बा।

बाद में त वादन के अतना बाढ़ आइल कि हिन्दी-साहित्य-समीक्षा
गुमराह हो गइल एह विवादन का घेरा में पड़ि के। अब त 'नकेन' के
वाद भा डॉ० श्रीनिवास के प्रगद्यवाद में कविता अकविता आ कहानी
हो गइल त समीक्षा भा आलोचना के का कहल जाउ आज त जनवाद का
पर पुरहर हल्ला गुल्ला का सँगे रचना से अधिका आलोचना के
औजारन का माध्यम से जवन चीज उभरि के सामने आवत बा ओकरे के
के सन्तोष करे के बा। समय के गति ह। एकरा सँगे त चलहीं के
चलहीं के परी। आ चहबो करी।

भोजपुरी साहित्य में समीक्षा के का हाल बा? एह पर कतना
भइल भा हो रहल बा? कवन कवन मानदण्ड भा मापदण्डन के सहाय
आलोचना के गाड़ी आगा बढ़ि रहल बिया? ई त हम नइखीं
बाकिर एहू में समीक्षा लिखात चलि आवत बा। अबही लगभग
सम्मेलन पत्रिका' के सितम्बर ९४ के अंक में डॉ० (श्रीमती) शारदा
के "आलोचना संहिता" देखे में आइल ह। 'फुलसुंघी' 'परशुराम'
उवाच' जइसन उपन्यासन के नामो एह संहिता में आइल बा।

फुलसुंघी का सम्बन्ध में विदुषी लेखिका के एह कथन में कतना
बा कि "स्वभावतः ओकरा के पढ़ि के एगो भाव जागल कि
दोषी हो सकेला बाकिर व्यक्तिगत रूप में पूरा जाति दोसिहा कइसे हो
जे एह देस के रूप गुण से बन्हाइ के मोका रहतो एकरा के छोड़ि ना
का ओकर भाव हमरा ले कम महत्वपूर्ण बा?" स्पष्ट बा कि
फुलसुंघी के ओह अंग्रेज रिबेल के बारे में बा। इहे भाव
प्रभाववादी बना देला। केहू कुछुओ कहो, कहत रहो, हम त ई
करब।

□ मोडेल इंस्टीच्यूट, आरा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबन्ध

सँझवत

—डा० शारदा पाण्डेय

कबो कबो कवनो बात चाहे घटना मन के अनासे अइसन छू ले ले कि अवचानते ऊ संस्कार भा स्मृति के आधार बनि जाले। ओकरा खातिर ना देह के मुँह जोहे के परेला ना कवनो विशेष उतजोग करेके परेला, ना मन के बोदिबावे के परेला। कुछु-कुछु अइसने स्थिति सँझवत के बा। मन के अन्हार के फरिआवत आस के टेम्ही नीअर साँझ के कोरा में सुगबुगात-उझुकत एगो बरत बाती, प्रकाश के किरिआ नीअर, जीवन के अलम नीअर एगो बाती, साँझ के अंगुरी थमले एगो बाती जइसे विकास आ गति के यात्रा कथा। भगवान आदित्य नारायण के हाथ समेटते आ आँखि झँपाते के संगे एगो परिवर्तन लउके लागेला कि ऊ अँजोर, जवना में फूलन के रंग खिलल रहे, किसिम-किसिम के फड़न के रूप के अलगा पहिचान बनल रहे, नदी के बहाव, झरना के अदभुत सुन्दरता हँसत रहे, भवनन के शोभा जवन संस्कृतियन के विविधता के प्रदर्शक रहे, कुल्ही धूमिल होखे लागेला। एगो उदासल लाल रंग चारो ओर पसरे लागेला आ ओकरा पाछा-पाछा अन्हार के परछाहीं बढ़ल आवेले। फेरु, कुछु साफ-साफ ना लउकेला। कुछु अइसन हरासी धरती से आकाश तक, खेत से घर तक पसरत चलि जाले कि गाय-गोरू खरामे-खरामे अपना दँवर पर आवे लागेला, चिरई आपन खोंता जोहे लागेली सँ आ कीरा-मकोड़ा आपन पँसार पावे के जतन करे लागेला। बुझाला जे नदी के धार चलत-चलत थाकि के तनी लहर के गरुहाइ देले बिआ, झरना के सोर तनी हाँफि गइल बा, तब आदिमी के का चर्चा कइल जाउ ?

बाकिर साँच कहीं त एह घरी चर्चा अदिमिए के करे के बा। काहें कि खाली अउरी जीव-जन्तु थाकि-हारि के अपना दँवर पर आइ के आराम करे लागेला, अन्हार के आगा हाथ बान्हि लेला, ओजू ई अदिमिए बा कि सुरुज के अँजोर के विकल्प खोजेला। ओकरा मन में उजास के पावे के भाव अइसन लहर मारेला, अन्हार के भगावे के जोस अइसन हिलोरेला कि ऊ एगो छोटी-मुकी अँजोर जगाइए लेला 'दीआ' के रूप में। ऊ ई देखा देला कि अदिमी के जिनिगी संकल्प, काम आ प्राप्ति के इतिहास ह। ई सुरुज के शक्ति के ऊर्जा के आधार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

मानि के पूजा भाव त अर्पित करेला बाकिर अपना के बेबस निरद्यम बो
माने के जल्दी तेयार ना होला।

एही से जब दूनू बेरा बराबर हो जाली सँ, गदहवेरी होले दिन के
होत आवेला आ राति के आवे के घरी नगिचावत आवेले आ ओकर
जनावे खातिर ई साँझि आवेले, घरी भर बेलमि के साँस भरि के सरकि
त धरती के बेटा ई अदिमियो अपना महतारी के शोभा सिंगारे खातिर,
अनथक काम के लगातार चलावे खातिर एगो संकल्प ले लेला। एही
घरन में ऊ संकल्प दीआ के अंजोर के रूप में मुस्कराइ जाला। जवन
थकान आ डर के पर्याय बनि के संसार में आपन अधिकार जनावत रहे
के एगो छोट 'दीआ' के हँसी चीर देले। अन्हार के ठठाइल थमकि जाला
साँझ के अगवानी के ई रूप अपने से पुरुषार्थ आ श्रद्धा के प्रतीक बनि जाला
बाकिर कब गंवें से ई स्वागत अभिनन्दन के समारोह घरनी के हाथ
प्राण में समा गइल ओकरा के ई अदिमियो ना बूझि पवलस। आ जब
तब तकले सँझवत के विलास नारी के आँचर के आड़ में हुलास बनि के
उठल रहे। सँझवत के कथा एहिजे से सुरू भइल। ई घरनी के
स्वरूप के भाषा ह।

घर के मर्द मानुष साँझि खा जहाँ बहरा खम्हिआ-दलान, खुला
पर बइठि के अब आराम करेला, भा गाइ-बैल के पगहा बान्हेला उहाँ
(रूई के बाती पूरि के दीआ में घीउ डालि के) घीउ के दीआ बारि के
माई' के प्रणाम करेले। आँगन में रोपल तुलसी के 'चउरा' पर सँझवत
बाती) देखावेले आँचर के ओट में कइले ओह छोटी-मुकी अंजोर के
शीलता से घर के एक-एक कोना-अँतरा के भरि देले। ऊ जइसे संकल्प
कि हमरा घर में कतहूँ अन्हार, उदासी आ भय ना रही। ऊ जीवन के
पढ़ेले, सृष्टि के पारिजात अपना कोरा के बालक के चारो ओर अंजोर
प्रकाश के मण्डल खींचि देले, जइसे बालक के रक्षा कवच पहिरावत होखो-

"आख मइया चाखऽ बलराज मइया राखऽ।
मानिक घरे दीप जरो, भैरो बाबा रइछा करसु।
रोवनी कलनी दीआ में जाउ, हँसनी खेलनी बबुआ
के आगा आओ।"

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका/फरवरी, १९९५/८४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओकर प्रार्थना बा कि "हे संज्ञा माता ! हमरा आँखि में प्रकाश भरऽ, शक्ति के पूर्ण वरदान द, घर में माणिक के दीप जरो, समृद्धि-ऐश्वर्य विलास करो, आसुरी आतंक से तहार सेवक भैरो बाबा हमरा घर के सदा बचवले राखसु दुख-कलह कुल्ही एही दीआ के अंजोर में नष्ट हो जाउ आ हँसी-आनन्द-क्रीड़ा से हमरा बालक के सम्पूर्ण जीवन भरि जाउ।" स्त्री के ई 'सँझवत' संज्ञा के पूजा खाली लौकिक रीति ना ह। ई वैदिक ऋषि के 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' के आह्वान ह। बलुक उनको ले आगा बढ़ि के प्रकृति के कुल्ही शक्ति के आह्वान ह। एजू 'पश्येम शरदः शतम्' के अभिलाषा बा, कबो ना थाके वाला पौरुष के पुकार बा, घर के दारिद्रय-नाश आ चारो ओर प्रकाश बाँटे के लालसा बा, बुराई के पराभूत कइ के प्रेम से अपना बस में कइ के ओकरा के उचित रास्ता देखावे के दिशा-निर्देश बा, दुर्मति विनाश के कामना बा, आ जीवन के खेल जानि के खेले के आनन्द के निर्मल स्वरूप-दर्शन के कल्पना बा। ई कुल्ही भाव के सृष्टि-भूमि नारी रुई में पूरि के, अपना नेह में बोरि के आ आत्मिक बल के चिनगारी से बारि के जिनिगी भर आवे वाली पीढ़ी के अर्पित करत जाले। 'सँझवत' के रूप में ऊ ना त खाली दूनू बेरा के मिलन के पुजेले, ना खाली अन्हार भगावेले बाकिर ऊ मानो अपना बीज के नया जीवन देले, अँजोर के संसार देखावेले, आ अपना विरोधी के बल के ह्रास करत रहेले कि—

"चारि दीआ चारि बाती। मुदई के बरे छाती।
बेटा सोवे सुख के राती।"

ऊ धन-जन आ आत्मबल संगेरे के परिचय देले।

नारी के एही भाव-विलास के देखि के आ सृजनात्मक पक्ष के अनुभव कइ के मनु महाराज लिखले होखबि कि—'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'। काहें कि एह नारी में सृष्टि के क्षमता बा त विधिन हरे के बल आ अपना रचना के सुरक्षा के चेतनो ओतने प्रबल बा। 'प्रकाश लक्षणा देवाः' के अनुसार प्रकाश जगावे के संकल्पना नारी में बा। ऊ कुदृष्टि के अन्हार, चाहे ओकर आपने होखो, ना सहि सकेले—

'आई डीठी, माई डीठी, पार परोसिन गोतिन डीठी।
जे बेटा के लावे डीठी, ओकर फूटे दूनू डीठी॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

'सँझवत' के बेरा ओकरा मन में जइसे ब्रह्मा के चाक घूमे लागेला, के संसार डोले लागेला, अपना वंश बेलि के विकास नाचे लागेला। मन से माथ तोपले घीउ से सुवासित, कपूर से बासल 'संझा माई' के से ऊ बालक के भरि देले, भविष्य के सुरक्षित कइ देले। चाक पर मांटी के दीआ कब ओकरा आँखी में सोना-जात रूप के सोहाग बनि गइ रूई सुख के चमक में लपिटाइ के आनन्द के सोता बनि गइल, सरसो आ से उठल धुआँ कब उज्ज्वल कपूर से भीनि गइल, एकरा के देखे के होखी केहू ओकरा आँखी के अंजोर में देखो, ओकरा राति के जागरण में देखो अन्हरिया में डूबल रातिओ में डोलावत बेना आ ओढ़ावत रजाई के बिछा में देखो; साँस-साँस में घुमड़त मंगलभाव में देखो—

"आको दीआ चाको दीआ। कपूर बासल बाती दीआ।
सोने के दीआ, रेशम के बाती।
बचवा सूते सुख के राती॥"

'नारी की झाईं परत अंधा होत भुजंग' कहे वाला कबीर के अंतर जगत के काहें ना बिना नारी के रहे दिहलस अउरी काहें उनुकर आराधक के नारी-रूप में अपना के लय करिके बेर-बेर दुलहिन बनि के भगवान के कइलस, ई कबीरे बता सकेलन। बाकिर सच्चाई त ईहे बा कि नारी के आ पालक भाव रूप से ऊ कबो मुक्त ना होइ पवले, एही से ऊ जिनगी-भ नारी के आड़ टोवते रहि गइलन। सँझवत देखावत नारी के ऊ रूप, जे कुटुम्ब-कल्याण के साकार प्रतिमा रहेले, उनुका मन में समा गइल रहे। के घरन के सँझवत उनुका मन में गूँजत रहे—

"काल हरे, विधिन करे, सँझा मइया रक्षा करे।
हँसनी खेलनी आगा आवे, रोवनी धोवनी पाछा जाय।"

काशी में पीढ़ी दर पीढ़ी 'संझा मइया' के आरती उतारत नारिन ई शिवानी रूप आ गंगा के लहर में 'दीप' के फूल चढ़ावत साकार शक्ति रूप नारी के ई शोभा ऊ कइसे भुला दीहितन! एही से बुला कहि गइलन कि—

"साँझ भया तो क्या भया, दीपक दीजै बार।"

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका/फरवरी, १९९५/८६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्वांचल के प्रकृत भाव, गृहिणी के कल्याणी आचार के रसमयता यदि प्रकृत बा त ई सांस्कृतिक अखण्ड चेतना भारत के अउरियो क्षेत्रन में आपन रूप देखा देले।

सँझवत के मंगल भाव संस्कार रूप में एगो सुन्नर चित्र बनि के प्रकृति कुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत के कवितो में आपन छवि झलका गइल बा। उनकर 'नौका बिहार' कविता एह दृष्टि से उल्लेखनीय बिआ—

"जिनके लघुदीपों को चंचल, अंचल की ओट किए अविरल
फिरती लहरें लुक-छिप पल-पल।"

एने-ओने घूमि-घूमि के घर-आँगन में दीआ देखावत, भीतियन के ओट हो जाए वाला सुन्दरी के रूप-चित्र केकरा मन के ना मोहि ली? के जानो कि उनुका मन में अपना महतारीं के आँचर के ना लहरा देले होई, मन ना देले होई, नेह-छोह के अँजोरिया में ना नहवाइ देले होई?

सँझवत के ई 'आलो' (आलोक-अँजोर) रूप बंगाल में लक्ष्मी के अगवानी करना देला। गृहिणी माथ तोपि के आँचर के गर में लपेटले धरती पर सूर्य के सझा-बाती' के प्रणाम करेले। आँख मूनि के दीआ के 'आलो' अपना में भरि लेले। त महाराष्ट्र के गृहिणी 'संझाबाती' बारि के अपना लइकन के बुलावेली स—"दिव्या दिव्या दीपाकार। कानी कुण्डल मोती द्वार। तुझा देखून नमस्कार।" माने कि 'दीआ रे दीआ! तू जगमग-जगमग करऽ। तहरा कान में कुण्डल आ कण्ठ में मोती के हार बा। दीआ! तहरा के प्रणाम करऽतानी।' दीआ के अइसन मानवीकरण पूर्वांचल के रूपवे। हँ अउरी भाव समान रूप से ओहुजू वर्तमान बा, जइसे—

"दिव्याला पाहुन नमस्कार" तिलाच तेल कापसाची

वात दिवा जके सारी रात।

दिव्याल पाहुन नमस्कार, बाहेरची लक्ष्मी घरातयेवो।

आतली पीड़ा दूर व्हो, घरच्या धन्याना सत आयुष्य मिलो।"

हे दीप रूप दिव्य अतिथि! तहरा के नमस्कार। तिल अउरी तेल, रूप के बाती से सजल दीआ राति भर जरऽ। दिव्य पाहुन, तहरा के

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

R.N.I. Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. PT.—
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका : फरवरी, १९९५

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
के सदस्य बनीं
या
साढ़े सात सौ रुपया शुल्क देके जिनगी-भर खातिर
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
के संरक्षक आ आजीवन ग्राहक बनीं।

महामंत्री, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-२४

सेवा में :—

२०८ दण्डिस्वामी
विमलानन्द सरस्वती
राजगुरुमठ
जी-३/१७५, शिवालाघाट
वाराणसी

प्रेषक :—
व्यवस्थापक
'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'
अखिल भारतीय
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से पाण्डेय कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४ (दूरभाष : २६११३४) से प्रकाशित, आचार्य पाण्डेय कपिल द्वारा कर्मा प्रेस, बुद्ध मार्ग, पटना-१ (दूरभाष : २६१०५३) में मुद्रित।
सम्पादक—पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

वर्ष-७ जनवरी १९९६ अंक-१

परामर्श-मण्डल

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय : श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय
डॉ० गणेश चौबे : आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र
श्री मोती बी० ए० : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
श्री भोलानाथ गहमरी

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

डॉ० ब्रजकिशोर : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : डॉ० विश्वरंजन :
डॉ० शम्भुशरण : नागेन्द्र प्रसाद सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण : विपिन बिहारी
डॉ० : भगवती प्रसाद द्विवेदी : पशुपति नाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूषण
मिश्र : रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष'

दूरभाष : ०६१२-२६११३४ इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding-IKS-MoE

एह अंक के प्रायोजक

श्री नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक': श्री चन्द्रशेखर मौर्य

मुख्य संरक्षक

सत्यनारायण सिंह

संरक्षक मंडल

पाण्डेय कपिल : नगेन्द्र प्रसाद सिंह : प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० [illegible]
कुमार 'आंजनेय' : आचार्य विश्वनाथ सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण[illegible]
डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : करुणानिधान केशव : शैल [illegible]
डॉ० बी० एन० सिंह : डॉ० प्रभुनाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूष[illegible]
मिश्र : जगन्नाथ : रंगश्री (भोजपुरी साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान) चौक[illegible]
विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव : डा० शत्रुघ्न सिंह : भोजपुरी संस्था[illegible]
इन्द्रपुरी, पटना : डॉ० वसन्त कुमार : जनार्दन प्रसाद : आन[illegible]
सन्धिदूत : शत्रुघ्न सिंह : जगदीश सहाय 'असीम' : डॉ० शम्भूशरण[illegible]
पाण्डेय सुरेन्द्र : उर्मिला पाठक : डॉ० धीरज कुमार भट्टाचार्य[illegible]
शिवनन्दन प्रसाद 'हर्षवर्धन' : प्रो० चन्द्रविनोद : राजेश कुमार : रूपक[illegible]
माधव सिंह : रामबाबू प्रसाद : आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत : राजनारायण[illegible]
दीक्षित : अतुल कुमार : गीता देवी : बब्बन सिंह : कुसुम सिंह : सुधीर[illegible]
पाण्डेय : कर्मा प्रेस पटना : शांति कुमारी : राम अयोध्या[illegible]
तिवारी : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती : प्रो० रामेश्वर राय[illegible]
चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र : प्रो० उमाकान्त वर्मा : सूर्यदेव पाठक 'पराग'[illegible]
शालिग्राम माधव : मोती बी. ए. : डॉ० रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव[illegible]
अम्बुजा सिन्हा : निशान्तकेतु श्याम : भोला प्रसाद 'आग्नेय' : गरि[illegible]
बन्धु : दिनेश्वर प्रसाद सिंह : हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' : प्रो० रामेश्वर[illegible]
नाथ तिवारी : श्री फुलेना दीक्षित : डा० राजेश्वरी शाण्डिल्य[illegible]
डा० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी : डॉ० उषा वर्मा : चन्द्रदेव पाठक 'सुधाकर'[illegible]
सुरेश कांटक : पी० नीरजनयन : दयाशंकर मिश्र : सरिता जिन्दल[illegible]
हरिनारायण 'हरीश' : श्रीहरि मिश्र : सत्येन्द्र नारायण चतुर्वेदी : दीप[illegible]
अजय कुमार ओझा : इनरपरी देवी (बेला शर्मा टोला) : संगीता पाण्डेय[illegible]
रामाश्रय सिंह 'नीरव' : जगत नारायण प्रसाद : लेजर प्रिंटर, पटना[illegible]

□ दाम—एक अंक के—चार रुपया □

दाम—साल-भर के—चालीस रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर साल भर के रियायती दाम—पैंतीस रुपया

पत्रिका संरक्षक शुल्क (आजीवन ग्राहक शुल्क)—साढ़े सात सौ रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पादक के

भाषा आ लिपि का साथे मनमानी मत करीं

भोजपुरी में हरदम खाली ललित साहित्य के रचने ना लिखात रही
एकरा में इतिहास, भूगोल, दर्शन, विज्ञान, मनोविज्ञान, तकनीकी विषय
लिखइहें स आ ऊ सभ छापाखाना में छपिहें स। हिन्दी आ भोजपुरी
छात्र सभ पढ़िहें स।

भोजपुरी आगे अधिक बाहुल्य वाला राज्यन के राजभाषा बनी।
एकरा अनेक विषयन के शब्द अपनावे के पड़ी। आगे के बात ध्यान
के हमनी के भाषा आ लिपि के बारे में कुछ कहे के चाहीं। दोसरा
विषय के शब्द के ओही लगले जबरन बिगाड़ि के भोजपुरी रूप बनवला
आसानी से समुझ में ना अइहें स। गैर भोजपुरी भाषा-भाषी एकरा के
सीखि ना पइहें। भोजपुरियो विद्यार्थिन के कठिनाई होई।

एह घरी भोजपुरी अपना विकास-क्रम के नाजुक दौर से गुजर रहल
बोली से विकसित हो के आपन मानक रूप ले रहल बिया। गँवारू
के शिष्ट साहित्य के रूप धारन कर रहल बिया। अइसन समय में
पत्रिकन के सम्पादक लोग के बड़हन जबाबदेही बा। ओह लोग के
ना भइला पर आ आपन डफली आपन राग अलपला से भोजपुरी के
होई।

साल-डेढ़ साल से 'भोजपुरी भासा सम्मेलन पत्रिका' के मान्यवर सम्पादक
ठीक से विचरले, बिना बहुमत के राय जनले, आ बिना सामूहिक विद्वत्
के निर्णय कइले, आपन मनमानी कर रहल बानी। पहिले त उहां का
खातिर लोप भइल कैथी लिपि के समर्थक रहलीं आ ओकरा के अपनावे
करत रहलीं। अब बुझला छोड़ि देले बानी। बाकिर ओकरे
पर भोजपुरी वर्णमाला से —' ऋ, ङ, ञ, ण, श, ष, क्ष ज्ञ' अक्षरन के
देवे खातिर आपन मत दे रहल बानी, संयुक्ताक्षरन के मुख-सुख बदे
व्यवहार करेके सलाह फरमा रहल बानी।

एह मनमानी से ऊबि के ई टिप्पणी लिखे के पड़त बा। कुछ महीना पहिले
'भोजपुरी भासा सम्मेलन पत्रिका' के आपन कुछ विचार भेजलीं, त ओह में
ना पावल, खाली दू-तीन लाइन जवन सम्पादक जी के भावल, ऊ छपल। चिट्ठी
। सम्पादक जी हमरा ओह विचार से सहमत रहलीं कि व्यक्तिवाचक
वाला नांव के ना बिगाड़े के चाहीं। बाकिर ओकर पालन ओह पत्र में
ना हो पावल। हम खास कक एहिजा 'भोजपुरी भासा सम्मेलन पत्रिका' के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

अंक 17 (सितम्बर—नवम्बर 1995) के मद्देनजर राखि के आपन ध्यान राखत बानी—

शुद्ध तत्समे रूप लिखके चाहीं जइसे—

	भोजपुरी उच्चारण मोतबिक बिगाड़ के के चाहीं जइसे—
भोजपुरीरत्न श्री अक्षयवर दीक्षित.....	भोजपुरी रतन सिरी दीक्षित
अध्यक्ष.....	अध्यछ
श्रीवास्तव.....	सिरिवास्तव
डॉक्टर त्रिभुवन ओझा.....	डागदर तिरभुवन ओझा
डॉक्टर चन्द्रभूषण सिन्हा	डागदर चनरभुसन सिन्हा

इत्यादि

उच्चारण के अनुसार कवनो मनई के सही नांव बिगाड़ि के अइसन लिखला से खत भटकि जइहें स । खत जल्दी मिलि ना पहुहें स।

गाँवों में कवनो सुशिक्षित आदमी अइसन उच्चारण करे भले कवनो निपट गँवार अपढ़ पुरान बूढ़ गँवई मौखिक रूप में बोलचाल ओकरा के साहित्य में लिखित रूप ना दिआई । हँ, भले कवनो नाटक में ओइसन उच्चारण करे त ओह शब्द / नांव के उद्धरण चिह्न भीतर भले लिखाउ।

पत्रिका के एही अंक में प्रयोग कइल शब्दन के दशा देखीं जा—

शुद्ध तत्सम रूप—	जबरन बिगाड़ल भोजपुरी रूप—	एकर उच्चारण भोजपुरी में
श्री	सिरी	
गद्य	गद्द	ॐ
विश्वविद्यालय	विस्वविद्यालय	×
भारतवर्षीय	भारत वर्सीय	भारतवर्ष के
शीर्षक	सीर्सक	यथेष्ट
श्रृंगार	सिरिगार	सिंगार
वरिष्ठ	वरीस्ठ	वरीय/अग्रज
परीक्षा	परीछा	इम्तहान/परीक्षा
स्पष्ट	स्पस्ट	साफ
ज्ञापन	ग्यापन	ॐ
निदेशक	बिदेसक	×
शब्द कोश	सब्द कोस	शब्द संग्रह/शब्दकोश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परसक तत्सम शब्दन के बदला ओकर भोजपुरी शब्द खोजे के चाहीं। ...लला पर ओकरा के शुद्ध तत्समे रूप में लिखे के चाहीं। जइसे, परिसद ना ...परकासक ना, प्रकाशक, आदि। बंगला वर्णमाला में 'स' 'ष' बाटे बाकिर ...ई बांकर उच्चारन 'श' के होला। इहे ना, भोजपुरियो में लिखाता कुछ आ ...कुछ, जइसे 'कह' लिखाता पढ़ाता कहऽ' सुन-सुनऽ आव-आवऽ इत्यदि। ...ी (ऽ) के प्रयोग भोजपुरी गद्य में कम भइल जाता।

...बिगड़ल भोजपुरी रूप से हिन्दी आ भोजपुरी पढ़ेवाला विद्यार्थिन के दूनो ...दूरदम खातिर कमजोर हो जाई। ऊ दुविधा से पड़ल रहिहें स। हिन्दी ...बया बिया। भोजपुरी के एकरा नजदीक राखहीं के होई। आगे कवनो ...ी महकमा में हिन्दी माध्यम से इम्तहान देवें वाला अभ्यर्थी शब्दन के ...लिखे में गलती करिहें स। एह से हथजोरी बा कि भोजपुरी क्षेत्र के ...लइकन के भविष्य के साथे खेलवाड़ मत कइल जाउ। भरम में डाले ...ओइसन प्रचार बंद कइल जाउ।

...सीचे के अउर बात बा कि हिन्दी/संस्कृत के तत्सम शब्द जब भोजपुरी ...ह लिआते बा त खाली ओह शब्द के अगल-बगल भा बीच में आइल ...बलाते 'स' में बदलला से ऊ थोड़े भोजपुरी के आपन शब्द बन जइहें ...कर व्युत्पत्ति खो जाई त ऊ अपना मूल भाषे के शब्द निकलिहें स।

...तत्सम शब्दन के समूह में श, ष वर्ण के स्थान पर 'स' के प्रयोग ...लाभ नइखे सिवाय भोजपुरी के गँवारू बनवला के आ भोजपुरी संतानन ...बिगड़ला के।

...इन कि 'भोजपुरी भासा सम्मेलन पत्रिका' में सलाह दिहल जाता ओइसन ...वर्णमाला से कवनो वर्ण (अक्षर) निकाले के जरूरत नइखे। संस्कृत आ ...वर्णमाला लेखा भोजपुरियो के वर्णमाला आ लिपि देवनागरी बा। एह से ...ध्वनि एकरा में समाइल बा। भोजपुरी के मानक आ शिष्ट भाषा के ...र बइठावे खातिर तत्सम शब्दन में सभ वर्ण के जरूरत पड़ी। हँ, जवना ...एह वर्ण सभन के तदभव रूप बन गइल बा उहाँ ओही रूप के प्रयोग करे ...जइसे—

तत्सम शब्द	भोजपुरी में तदभव शब्द उच्चारण
पौष	पूस
षोड़स	सोलह/सोरह
षष्ठी	छठी
क्षण	छन
वृक्ष	फेंड़/बिरीछ
पक्षी	पंछी
त्रास	तरास
प्राण	प्रान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

एगो अउर मार्का के बात बा कि जवन वर्ण (ङ, ञ) भोजपुरी के
बा ओकरा के निकाले के आ जवन स्वर मात्रा (ॅ, ॊ) नइखे ओकरा
वाले सूची में ओह पत्रिक के हर अंक में सलाह दिहल जा रहल बा
खातिर कुछ के उदाहरण—

ङ—आङन (आंगन), बेङ (बेंग), वाङमय (वांगमय), जङल (जंगल)
ञ—बढ़िञा (बढ़ियां), भूइञा (भुइयां), टुइञा (टुइयां) इत्यादि।
मात्रा—ॅ मइल (मैल), कइंची (कैंची), भइया (भैया) इत्यादि।
ॊ—गवन (गौना), अवगुन (औगुन), कवन (कौन),
कवर (कौर) इत्यादि।

हिन्दी में एह दूनो वर्ण (ङ,ञ) के स्वतंत्र रूप से कवनो शब्द
ना होला। ऊपर के उदाहरण में ङ खातिर पहिले वाला वर्ण
लगा दिहल जाला आ ञ यां में बदल जाला। हम एह दूनो वर्ण के
प्रयोग करे के समर्थक नइखीं। हमनी के हिन्दी वाला तरीके अपनावे के
एहसे कि छापाखाना आ टाइप राइटर में ई वर्ण नइखन स। बराबर
बनल रही। हमनी के शिष्ट साहित्य हिन्दी के नजदीक रहबे करी,
कुछ कहो।

एही तरह हम ॅ आ ॊ मात्रा के निकाले के नइखीं कहत
के बनल रूप जवन भोजपुरी में प्रचलित बा ओकर प्रयोग करे के

एहिजा हमार खाली मकसद इन्हनी के सही स्थिति भोजपुरी
में देखावे के रहल ह।

हमेशा से बोली आ शिष्ट साहित्य के भाषा में अंतर रहल बा।
देश के कवनो शिष्ट भाषा के रूप अपना गँवारू बोली के रूप ना होई,
ओकरा शिक्षित व्यक्ति द्वारा ओकर विकसित शब्द आ ना मिलला
भाषा के शब्दन प्रयोग के अपना अभिव्यंजन-शक्ति में गति ले आवे
विषय के ठीक से अभिव्यक्त करे खातिर कइल जाला।

निहोरा बा भोजपुरी प्रेमी, साहित्यकार, विद्वान, वैयाकरण
ऊपर के लिखल सभ बिन्दु पर क्षेत्रीयता के मोह छोड़िके निष्पक्ष भाव से
करसु आउर भोजपुरी भाषा आ संतानन के भविष्य के ध्यान में राखि के
के मानक शिष्ट साहित्य रूप वास्ते, जबना से हर विधा/विषय लिखा
निस्संकोच निधड़क निष्पक्ष विचार भोजपुरी के हित ख्याल में राखि के

—(डा०) रसिक बिहारी ओझा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

—जगन्नाथ

सांस का गुनगुनाये के मन हो गइल
रउरा अइला से घर ई चमन हो गइल
साथ हमरो हिया में त कम ना रहल
पेट के आग में सब दफन हो गइल
जब ले जीअल गरीबी रहल ओढ़ना
मर गइल त गगन ई कफन हो गइल
जिन्दगी जिन्दगी से बा भागत रहल
खुद के छाँहो में बा बेसरन हो गइल
गूंग शब्दन के कविता भइल संकलन
व्यंजना के बुला अपहरन हो गइल

□ एस० पी० सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड, पटना—१

संझा

—हीरालाल अमृतपुत्र

साँझ भइल,
बितला दिन के सब कुछ
भुला देवे के बेरा।
संझा—
दिया-बाती
भगवान का आरती के बेरा।
मंगल भाव, शुभ बिचार का
मन का होखे के डेरा।
इहे राह के सतुआ—पिसान
आई काम रात का अन्हारा।
आँख खुली
पंछी बोली, फड़फड़ाई—
पाँख आपन फेरु
भोर का अँजोरा।

□ चरिहारा, मशरक, सारण—८४१४१७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

चारि गो चतुष्पदी

—आचार्य सत्यनारायण लाल

हमहूँ पीहिलें, बाकी जब केहू पिया देला
नसा चढ़ला पर, कनमना ना, हिया से लगा लेला
ओइसे पीए के हमरा सौख कबहूँ ना रहल
पी लिहिले कि मुअलो प, केहू जिया देला

•

कतना कहलीं, बाकिर, केहू सुननिहार ना मिलल
मिलल सुननिहारो त, केहू समुझनिहार ना मिलल
साइत-संजोग केहू समुझनिहारो मिलल, ता का कहीं
समुझियो के बात, केहू कुछ करनिहार ना मिलल

•

कहलऽ कि हमहीं आके तोहरा से भेंट कइ लेब
पँवरऽ छूटि के, डूबे लगवऽ त हाथ धके बचा लेब
अब त देह थाकल, दम फूलल, साँस टूटि रहल
आ के तनी मुसुका द ना, हम खुदे पार लगा लेब

•

गावऽ जनि गीत मीत, गवला में अब मजा नइखे
मिलला प मजा आवेला, दुनिया में अब ऊ सजा नइखे
काँट गड़ी, टभकी; बाकिर गुल के सुवास ना पइबऽ
लोग मुइ-मुइ के जे खोजेला, अब कतहूँ ऊ कंजा नइखे

•

☐ साधना कुटीर चौधरी टोला महेन्द्र, पटना-६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0, In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल जेवनारी

—पी० चन्द्रविनोद

बास मिजल बाड़ो चढ़बाँकिन, मैभाउत महतारी जी
बसया रोटी पर अरुआइल अरुई के तरकारी जी

असरा के उसरल बजार में, ईहो माल गिरा लिहले
कतना लोग देखावल लीला, इनकर बाटे बारी जी

माहिर बाड़े टकटोरे में अइसन घुप्प अन्हरियो में
जाने का बाँची जब आई सूरुज के असवारी जी

घाना, डोहा लेके सगरो बान्ह बन्हाइल पानी में
बाकिर मछरी छड़प-छड़प के फान गइल बरिवारी जी

जेकरा अँगना से दुअरा ले बा चुड़इल के बास भइल
कादो ऊहे ओझा बन के सबकर भूत उतारी जी

नेवता बाँट रहल बाड़े ऊ सगरो जात जवारी के
आवस इहवाँ तब नू पइहें काटल-काटल गारी जी

न्यू एफ/11,हैदराबाद कालोनी बी० एच० यू० परिसर, वाराणसी-५

आशा के दियरी

—डा० दिवाकर पाण्डेय

योगावती के धार के
बँझधार में
फँसल नाव।
मांझी बिन
डगमगात
हिचकोला खात
इहसे-तइसे तट पकड़ल
चाहत बिया नाव।
एक त ई
जर्जर नाव,
दोसर, राह में
किसिम-किसिम के
भारी-भरकम; चट्टान।
तीसर, धारा के वेग
राह के पत्थरन से
टकरा के
कर रहल बा
भयानक शोर।

अमावस के अन्हरिया में
जर्जर नाव के ऊपर
एगो आशा के दियरी
टिमटिमात
हमरा कान में फुसफुसात
कह रहल बिया—
हे मीत!
अफसोस कइसन
थाम्ह ल पतवार
मारऽ डाँड़
पार ना लगबऽ
त कम से कम
लहर आ चट्टान के
ई एहसास त होई
कि हमरा से
एगो जर्जर नाव
जोर से टकराइल।

रहथुआ, थाना-रघुनाथपुर, बक्सर-८०२१३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

मकड़ी जस जाला

—भोला प्रसाद 'आनंद'

राम क नाव न लेइ सकीं पर आपन राज तबो इ कहाला,
भारत देस महान जहाँ भगवान अदालत में धसिटाला।
कीमत ढेर मिली जहवां उहवें बस हाकिम रोज बिकाला,
केकर नांव कहीं हम बा इहवां सगरे मकड़ी जस जाला॥

के सभसे अब राम कथा कहिहें मनवा बहुते अउंजाला,
प्रेम रही कइसे तब भाइ सँगे हमके त इ नाहिं बुझाला।
रोक सकी न कबो कतहू सब आपन गोड़ गिरी जब साला,
केकर नाव कहीं हम बा इहवाँ सगरे मकड़ी जस जाला॥

लालच रोज अकास चढ़े अब पूत कपूत न बाप चिन्हाला,
मूड़ कटे मनई क इहां जइसे घरवां तरबूज कटाला।
फिल्म सिखावत एक न एक नया तरकीव फँसावल जाला,
केकर नांव कहीं हम बा इहवाँ सगरे मकड़ी जस जाला॥

साल हरेक भले पुतरा जरिहें पर रावन नाहिं मराला,
सेवक रूप धरे घननाद बने अवधेस निहारत हाला।
बोलत नाहिं डरे कबहूं अब धोबिन जीभ लगे दस ताला,
केकर नांव कहीं हम बा इहवाँ सगरे मकड़ी जस जाला॥

नीति इहाँ कुरसी जवना चलते अपने सब लोग पिसाला,
वोट क रीति बढ़े जस दूनहु हाथन साँप कबो लपटाला।
देस जले परदेस जले पर एक बनो सब लोग चिलाला,
केकर नांव कहीं हम बा इहवाँ सगरे मकड़ी जस जाला॥

29, रघुनाथपुरी, सिविल लाइंस, बलिया (यू० पी०) 277001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथी के दाँत

—सुरेश काँटक

पात्र परिचय—

पुरुष पात्र :—

सूत्रधार — सूत्रधार का साथ विदूषकों के काम में
छोटा बाबू — नेता (नायक)
मोटा बाबू — नेता, दूसरका
मोटा बाबा — नेता तिसरका
मूसर — किसान
नन्हका — मूसर के छोट बेटा
सुखदेव बाबू — गांव के सामंत
धमधूसर — मूसर के संघतिया, किसान
चभोरन — गाँव के किसान
भभोरन — गाँव के किसान, मजदूर
ढकेलन — गाँव के मजदूर
चमचा १ — छोटा बाबू के अदिमी
चमचा २ — मोटा बाबू के अदिमी
चमचा ३ — मोटा बाबा के अदिमी
समाजी — ढोलक वाला
हरमुनियावाला
जोड़ीवाला

(प्रचार का समय तीनों चमचा एकें साथे आ सकत बा)

स्त्रीपात्र :—

लछमिनिया — मूसर के मेहरारू
भगजोगनी — मूसर के बेटी

वन्दना

करीं सुमिरनिया तोहार मइया शारदा
दीहीं बुधी विमल विचार मइया शारदा
अन्हरा के आँखि दीहीं कोढ़िया के काया
मुरुखन के दीहीं ज्ञान करीं मइया माया
बेरी बेरी करींला पुकार मइया शारदा
तुलसी के तरनी कबीर सुर के तरनी
कालीदास, वेदव्यास के रउवे उबरनी
बहुते के कइनी उद्धार मइया शारदा
वीणा आ पुस्तक, हंस रउरे सिंगारवा
काटीं ना अन्हरिया देखाई उजियारवा
दीहीं ना दुलार प्यार धार मइया शारदा
राखि लीं सरनिया में भूलि के जदनिया
कांटक के माथ बाटे रउरे चरनिया
रोई रोई करेले गोहार मइया शारदा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

पहिला अंक

झलक : १

[मंच प समाजी लोग ढोलक झाल हरमुनिया आ सम साज लेके बइठल बाड़े। हरमुनिया के बोल का साथे ढोलक झाल के बा। एकरा साथे एगो गीत गावत बा लोग]

गीत

बड़ा रे जतनवा से मिलली अजदिया हो
माई के इजतिया बचावऽ हो संघतिया।
वीर हो भगत, सुखदेव, राजगुरु ताजऽ
माई खातिर तेजले परान हो संघतिया।
अमर आजाद देस जेकर बा अनेक भेसऽ
भासा धरम विविधऽ बतावे हो संघतिया।
सुंदरऽ ई संस्कृति जेकर विमल कीर्तिऽ
मिलि जुली प्रेमऽ धुनऽ गावे हो संघतिया।
बड़ा रे जनतवा से.....

उत्तरऽ में हिमताजऽ दखिने सागर नाजऽ
दायें बायें बंग गुजरात हो संघतिया।
ठाकुरऽ विवेक, बोस, कुंवर, प्रताप, जोसऽ
झांसी रानी तोहके जगावे हो संघतिया।
सत्य के संदेस मंत्र बंधुता के शिव तंत्रऽ
ध्वज सुंदर गरिमा उड़ावे हो संघतिया।
धरती के कण कण मानव सरग बड़ऽ
दानव के मानव बनाव हो संघतिया।
बड़ा रे जतनवा से.....

गंगा जमुना सरजू के धार से पुनीत देसऽ
ऋषि मुनी देव अवतार हो संघतिया।
कपिल कणाद व्यास पाणिनी आ माघ भासऽ
कालीदास तुलसी के गावे हो संघतिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखऽ चारो ओरे उड़े करिया बदरिया होऽ
आवे घेंरले करिया बदरिया संघतिया।
कांटक कहेले फेंनू दियवा जराव भइयाऽ
काटऽ ना बिदेसियन के जरिया संघतिया।

[ई गीत खतम होते जोकड़ का भेस में एगो विदूषक सूत्रधार मंच प
धमंग धमंग के आवत बा। ओकरा हर डेग का साथे झन्न झन्न का आवाज
का साथे ढोलक के थाप लागत बा। दर्शक का ओर चारो ओर बारी बारी
देख के सलाम करत बा, आ बोलत बा]

सूत्रधार—ता धिन् धिन् ना, ता धिन् धिन् ना, ना धिन् धिन् ना, ता धिन्
धिन् ना, ताक तिनक् धिन् धा, ताक् तिनक धिन् धा, ताक् तिनक्
धिन् धाऽऽ.

बहिनी अवरू भाई लोग! लोग आ लुगाई लोग! जनि घवड़ाईं
लोग! कांटक जी के नाटक हो गइल सुरू। बजाईं मत बाजा तुरु रू
रू रू रू रू। बइठीं सभे चुपचाप, बुधी बटोर के। सुरसती मइया
के दूनो हाथ जोर के। हाला गुला बन करीं। आपस में जनि लड़ीं।
आइल बा मौसम, अब नेता जी अइहें! फेंकि फेंकि कवरा तुरते
परइहें! केहू जिअइहें केहू के मुअइहें! राउर हरियरी लुकाइ के
चबइहें! उनुका आवे के समे हो गइल बा। उनुकर चेला जटही बो
गइल बा। आपन आपन कफन बान्हीं अपना माथे! कोल्हू के बएल
बन जाईं उनुका साथे! अबकी उमेद बा कुछुओ ना छूटी!
गंगालाभ होई बिलाइ हुटीहुटी! एक बेर बोलीं सभे (दर्शक का
ओर देख के) खप्पर वाली माई की·····जय!

(एही घरी नेता लोटा बाबू अपना चमचन का साथे आवत बाड़े
उनुका के देखते सूत्रधार हहुआइल हवड़ाइल आ डेराइल मुँह
बना के भीतरी भाग जाता। नेता जी आवते हाथ जोर के दर्शक
लोग के प्रणाम करत बाड़े। हंसत मुसकात घूम घूम के चारो ओर
देखत बाड़े। उनुकर चमचा लोग जोर से नारा लगावत बाड़े)

जनता १ — इंकलाब जिंदाबाद!
सभी चमचा — जिंदाबाद! जिंदाबाद!
जनता १ — लोटा बाबू जिंदाबाद!
सभी चमचा — जिंदाबाद! जिंदाबाद!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

चमचा १ — हमार नेता कइसन हो !
बाकी चमचा — लोटा बाबू जइसन हो !
चमचा १ — हमनी के मोहर कहंवा लागी !
बाकी चमचा — जहां होई गिरगिट के दागी !

[एगो चमचा गिरगिट छाप के बड़हन पोस्टर दर्शक लोग के
बा। एकरा बाद सभ चमचा चुप हो जात बाड़े। नेता जी
अगिला भाग में ठाड़ होके भासन सुरू करत बाड़े]

लोटा बाबू—आदरणीय भाई लोग आ बहिनी लोग ! हम रउआ सभ के
जोरि के प्रणाम करत बानी ! पांच बरिस बाद हमनी के
मिलल बानी जा ! पिछला बेरी रउआ सभ हमरा के आपन
वाद देले रहीं सभे। ओकरा खातिर हम रउआ सभ के
भुलाइल बानी ना जिनगी भर भुलाइब !

हम रउवा सभ के सभ दुख जानत बानी ! बाकी पिछला
पहिले पहिले जीतल रहीं ! अपने के सम्हारे में कुछो
गइल ! रउवा सभका ओर देखे के मोका ना मिलल ! बाकी
खूब बढ़िया से पुहुट होके अपना पैर प खाड़ हो गइल बानी !
कल छल बल जान गइल बानी। अब हम सभ किसिम के
लगाइब आ रउआ सभ के सभ दुख दूर क देब।

(एही घरी चमचा नारा लगावत बाड़े, आ थपरी बजा देत

चमचा १. —जिंदाबाद ! जिंदाबाद !
बाकी चमचा —लोटा बाबू जिंदाबाद !
चमचा १ —जीत गइल भाई जीत गइल !
बाकी चमचा — गिरगिट छाप जीत गइल !

(नेता जी अतना देर चुप हो जात बाड़े। जब नारा बंद हो
फेरु बोलत बाड़े)

लोटा बाबू—भाई लोगन, हम जानत बानी, रउआ सभे बहुत से बड़ी
बानी। बाघन आ हुंड़ारन से रउआ लोग के सउसे जिनगी
गइल बा। बाकी अबकी बेर हमरा के मोका दीहीं। हम
के जीयत ना छोड़ब। सभ बाघन आ हुंड़ारन के नाक खेंड़
में डरि के गार घालब ! खाली जीत गइला के देर बा। हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभे के अपने भाई हईं । भाई के दुख भाई ना समुझी त के समुझी ? छोट भाई आपन दुख बड़ भाई से ना कही त केकरा से कही ? रउवा सभे के गोड़ प आपन पगरी ना धरब त केकरा गोड़ प धरब ? हम जदी कवनो गलती कइले बानी त हमरा के माफी आ सही राह देखाई ! जे मारेला उहे दुलारे ला । जे डांटे ला उहे पुचकरबो करेला ।

(नेता जी चुप हो जात बाड़े नारा फेनु लागत बा)

—वाह भइया वाह !

—हमार नेता वाह !

—जिंदाबाद ! जिंदाबाद !

—लोटा बाबू जिंदाबाद !

(नेता जी फेनू बोलत बाड़े)

—भाई लोगन, रउआ सभे लोटा बाबू से होसियार रहब । ऊ सभका से भरस्ट अदिमी ह । एक नंबर के हतेयार पापी आ अतेयाचारी ह । ओकर निसान मगरमच्छ ह । ऊ सांचहू के मगरमच्च ह । सउँसे देस के ठाढ़े लील के बइठ गइल आ बुजबुजिओ ना देलस। ऊ लोग कुरसी के आपन जागीर बनवले बा । एह गरीब देस के बुड़बक गरीब लोगन के आपुस में लड़ा भिड़ा के, परसान क के सउँसे देस के लूट के आ चूस के मातल बा । अबकी ओकरा के कवनो कीमत प जीते मत दीहीं । अइसन पटकनिया दे के हराईं कि मुँहें माटी ले के चारो खाना चित हो जाउ । ऊ सभ से खतरनाक अदिमी ह ।

अब अंत में हम रउआ सभ से हथजोरी करत बानी । रउआ सभे आपन मोहर गिरगिट छाप प लगाइब । हमरा उमेद बा कि रउआ सभे हमार पिछिलका गलती माफ क देले होखब । अबकी बेर हमरा से ओइसन गलती ना होई । रउआ सभे आपन दुख सितम लिखि के हमरा के दे दीहीं । हम अब अपना दिल के डायरी में राउर दुख लिख लेत बानी । अब हमरा के आसिरबाद दीहीं आ अहथिर से आके बरकिट हाउस में गीलीं हम तीन दिन तक ओहिजे रहब । जय हिंद ! जय गिरगिट !

नेता जी हाथ जोरत बाड़े । जनता ताली बजा के नारा लगावत बाड़े आ परदा के भीतर जाता । परदा गिरता बा ।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

झलक : २

[सूत्रधार परदा के भीतर से मंच प आहिस्ते अहिस्ते आवत बा। [illegible] अस चारो ओर ताक ताक के सभ दरसक लोग के प्रणाम करत बा। [illegible] लोग के थाप ओकरा हर डेग के साथे लागत बा। झन्न ठप् झन्न् ठप् [illegible] ऊ घूम घूम के बोलत बा मुँह बना बना के]

सूत्रधार—धे धे न ग धिनऽ धिनऽ धे धे न ग धिनऽ। के के न क कीनऽ [illegible]
धे धे न ग धिनऽ। धा तिरकिट तक् धाऽ। धा तिरकिट तक् [illegible]
धा तिरकिट तक् धाऽऽ।

अंजोरिया डोल डोल, अन्हरिया डोल डोल
लकड़ा के माई, कइसे बेली रोटी गोल गोल
केहू बा अन्हरिया में केहू बा अंजोरा
केहू के अतड़िया अइठे, केहू भरे बोरा
अन्हरी अंजोरिया के पोल दीही खोल खोल, अंजोरि-
एगो बा अंजोरिया में ढेरिखा अन्हारा
कुरता बीना कुकुरेला लकड़ा बेचारा
मुंहवा बिरावेले अंजोरिया बोल बोल, अंजोरि-
डोलिहें अंजोरिया त चहकी अन्हरिया
होइहें अंजोर जब चमकी बिजूरिया
लकड़ा बहारी अपना झोपड़ी के झोल फोल अंजोरि-
हाय रे अंजोरिया बढ़ावे ना अंजोर
हाय रे अन्हरिया देवे ना झकझोर
लकड़ा बेकारे चलेला राह डोल डोल, अंजोरि-

(सूत्रधार रुक जाता। फेरू कपार पीट के चिहा के बोलत बा)

सूत्रधार—आ रे रे रे, रे रे रे रे, रोवता है क्या ? आगें आगे देख भइया [illegible] है क्या ? माटीं के गोरेया टिकाइये में गइले। गीधन के भाग [illegible] कुकुर धधइले। (दर्शक का ओर देख के) बोल सियावर रामचन्द्र [illegible] जय ! हंस वाहिनी मइया की···जय !

(एही घरी भीतरी से नारा सुनाता—जिंदाबाद जिंदाबाद ! [illegible] चकचिहा के एने ओने ताकऽ ता। तले सोटा बाबू अपना चमचन [illegible] साथे मंच प आ जात बाड़े। चमचा हड़बड़ा के भागत बा। [illegible] साष्टांग प्रणाम करत बाड़े। चमचा लोग नारा लगावत बा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

— इंकलाव जिंदाबाद !

बचवा १ — जिंदाबाद ! जिंदाबाद !

बाकी चमचा — सोटा बाबू जिंदाबाद !

बचवा १ — जिंदाबाद ! जिंदाबाद !

बाकी चमचा — हमार मोहर कहंवा लागी !

बचवा १ — मगरमच्छ के जहंवा दागी ! (मगरमच्छ के बड़हन पोस्टर देखावत बा)

बचवा १ — मगरमच्छ के जीत बा !

बाकी चमचा — एही में आपन हीत बा !

(नारा बन होता त नेता जी बोलत बाड़े)

बाबू — (हाथ जोर के) हिंदू भाई के राम राम। मुसलमान भाई के वालेकुम सलाम। सिख भाई के सत श्री अकाल आ ईसाई भाई के गुड मार्निंग। भाई लोगन आ बहिनी लोगन, सभ केहू के प्रणाम आ पव-लग्गी। भाई लोग ई देस धरम के देस ह। इहंवाँ अतिथि देवता मानल जाला। दुआर प आवेवाला के दुतकारल ना जाला। दिन भर के भुलाइल सांझि के घरे आ जाला त ओकरा के भुलाइल ना कहाला। हम राउर हईं। रउआ सभे हमार हईं। ई नाता कबो ना छूटी। हम राउर सेवक, रउआ हमार मालिक। हमार पगड़ी रउवा सभ के पाँवें। कीरिया खा के कहत बानी, अबकी ओइसन गलती ना होई। पिछला बेरि हम अपने काम में लागल रहि गइनी। अबकी रउए सभ के सेवा करब। लींहीं सभे आपन पगड़ी रउआ सभके गोड़ प धरत बानी। एकरा के चाहे रउँद दीहीं चाहे उठा के फेंनु हमरा के पेन्हा दीहीं। (टोपी उतार के मंच प ध देत बाड़े)

(चमचा नारा लगावत बाड़े)

बचवा १ — जिंदावाद ! जिंदावाद !

बाकी चमचा — सोटा बाबू जिंदाबाद !

बचवा १ — जीत गइल भाई जीत गइल !

बाकी चमचा — मगरमच्छ जीत गइल !

(नारा बन होता। नेता जी चुपचाप खाड़ बाड़ें। कबो टोपी का ओर देखत बाड़े कबो दरसक लोग के देखत बाड़े। चमचा एक दोसरका के मुँह ताकत बाड़न स। अचके में एगो चमचा निरास होके बोलत बा।

aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

चमचा १—का महराज (दर्शक लोग से) रउआ सभ के कुछऊ बुझात बा
हतना बड़ महान नेता रउआ सभ के गोड़ प गिरल बाड़े। हे
के उठाईं सभे। सभ कुकुर सियार कासी चल गइबन से आ
सभे कुंभकरन बनल बानी। सरन में आवे वाला के उठावल
गंगा जी बनि जाईं सभे। सभ पाप पी जाईं सभे। एक बेर
अजमा के देखे लीहीं। तीसरका उड़ाने तितिर पकड़ाला। आपन
बचाईं सभे।

(कवनो दरसक मंच प आके टोपी नइखन पेन्हावत त
ठहरि के चमचा टोपी उठा लेत नाड़े आ बोलत बाड़े)

चमचा १—ठीके बा। मौनं स्वीकृति लक्षण। रउआ सभे बइठल रहीं। ते
सभका ओर से हमहीं नेता जी के टोपी पेन्हा देत बानी (
पेन्हावत बाड़े) रउआ सभे बइठले बइठल आसिरवाद दे दीहीं
(सभ चमचा ताली बजावत बाड़े। नेता जी कुछु बोलत बाड़े।)

सोटा बाबू—(दर्शक लोग से) अब हमरा संतोख हो गइल कि रउआ
हमरा के भुलाइब ना। बाकी लोटवा से सावधान रहब। ठ
पेनी के लोटा ह। जब जेने मन होई ओनहीं ढरकि जाई। ठ
खूनी ह। निठाह गुंडा ह। कतने खून क के राजनीति में
बचावे आइल बा। गह देस में अइसन अदिमी के जरूरत
ई देस किसान के देस ह। रउआ सभे के खेती खातिर पानी
बिजुली चाहीं। खाद चाहीं आ बढ़िया बीया चाहीं। बाकी
सभ के कुछुओ नइखे मिलत। खेती साथ नइखे देत। गरीबी
दिन बढ़ल जाता। बेकारी दिन दिन बढ़ल जाता। चोरी, घूसखोरी
बेइमानी, दलाली बढ़ल जाता। हत्या अपराध आ भ्रष्टाचार
जाता। सभ लोग देस के लूटे में लागल बा। हम ई सब
दूर करब। हमरा के जिताईं आ आपन मुराद पाईं। एगो
छाप ओकरो से बांचबि सभे। ना त जियते सभके लील जाई।
देह ओकरा पेट में चल जाई। अब हम चलत बानी। तोन दिन
हाउस में रहब। रउवा सभे आपन आपन समस्या आ दुख
लिखके ले आइब। हम सब के दुख दूर करब। जय हिंद।
मगरमच्छ! (नेता जी जात बाड़ें। चमचा नारा लगावत बाड़े
परदा गिरत बा।)

(शेष अगिला अंक में)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

इहे बूँद गंगा जल

—रविरंजन सिन्हा

अइसे त जइसहीं ओह दिन बाँकीपुर टेलर्स कने से कपड़ा के पाकिट लेके रिक्शा पर बइठलीं ओइसहीं बुझाइल कि हम नीमन काम ना कइली हँ। बाकिर दोस्त-संगतिया लोग के फेरा में पड़के दू सौ रूपया खर्चा क चुकल रहीं। कमल किशोर अउर सतीश के कहला पर सार्क-स्किन के हल्का गुलाबी रंग के सूट, चुस्त पंजामा, सिल्क के कुर्त्ता अउर जवाहर बंडी सिवा लेलीं। पहिले चार पाँच दिन तक हम टालत रहलीं। एक दिन कमल किशोर कहलन कि कि जिनगी भर बबुए रहबऽ का? बिआह में कपड़ा त तोहरे पेन्हे के बा। हमातो बाड़ऽ। कौनो कर्जा त नइखऽ लेले। त फेर बाबूजी एकरा से काहे घिनाइहें?

पटना जक्शन स्टेशन पर दोस्त लोग विदा करे भी आइल रहन। बाकिर मन उचाटे लागत रहे। रास्ता भर बुझाइल ना कि काहे अइसन भइल बा। रात दस बजे घरे पहुँचलीं। खात बेर बड़की अम्मा पूछत रह गइली कि बचउ! काहे उदास बाड़ऽ, बाकिर हम जवाब ना देसकलीं। "भाभी चुहलो कइली। कहली: अम्माजी! बबुआ के उदासी अभी बारह दिन अउरो चली। तबो हमरा हँसी ना आइल।

बारहे दिन बिआह के रह गइल रहे। दू दिन के बाद बुध के तिलक बाद ओकरा बाद अगला सुक के बरियात।

भाभी भोरहीं हमरा बिछावने पर चाह दे गइल रहीं। फेर कुछ कहवो कइली बाकिर हमरा जइसे कुछ सुनइबे ना कइल। आठ बजल होई कि हम बाहर चल अइलीं। दुआर पर ओसारा से उतरते रहीं कि देखलीं कि गली के मोड़ पर भरत चचा अउर द्वारिका चचा बरोबर लेखा खड़ा बाड़न अउर सुभान चचा जल्दी जल्दी दुअरा के ओर लपकत आ रहल बाड़न।

भरत चचा यानी बाबू भरत सिंह। धप-धप गोर रंग। सवा छः फूट के बेसिये होइहें। ओइसहीं गठल देंह। आरा-ससराम लाइट रेलवे में गार्ड रहन। गार्ड के वरदी पेन्ह के चलत रहन त आउर रोबीला लागत रहन। प्रनाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-

गार्ड साहेब, सलाम गार्ड साहेब के दूतरफा सलामी देख के हमनिओं के अ
में बुझाय कि हँ ! भरत चचा कुछुओ हवन । सीदी ना बजावस आ
देखावस त गाड़ी चली भला ? ओहदा होखे त अइसने होखे । रस्ता में
स्टेशन से आध कोस पर उनकर ससुरार रहे । सुनत रहीं जा कि
स्टेशन पर जब गाड़ी पहुँचे त उनकर ससुरार से केहू, टाइम का
भोजन भा जलपान लेके पहुचल रहत रहे । भरत चचा खा-पी के
पान दवा लेस तबहीं गाड़ी आगे बढ़े ।

एकदम मस्त मौला आदमी । चुहल के जवाब चहक के अउर टोका-
के टनक के देत रहन । कभी कभी डयूटी से लौटस त ससुरार के नौकर
कोंहड़ा चाहे दोसर तरकारी के झोरा लेले पाछे पाछे आवे । एक दिन
बाबूजी टोकलीं "का भरत जी ! तोहरा ससुरार में आजकल कोंहड़े-भतुआ
का ?"

"छान्हिये-छान्हीं ललन भइया", भरत चचा छूटते जवाब देलन । "
ना हमरा साला लोग के ? जिन कोंहड़ा ना भ सकलन ऊ भतुआ त
गइल बाड़न ।" आ ओकरा बाद ऊ जोर के ठहाका कि अगल-बगल के
घर के छत-छप्पर हिल जाय । थोड़े देर में देखी आदमी कि उनकर नौकर
लउका भा छितनी भर रामतरोई लेले दुआर पर ठाढ़ वा कि मलकिनी
हँ । ओइसने छितनी बगल में बबन भइया कने आ सामने राधिक
कने भी पहुँची ।

द्वारिका चचा यानी द्वारिका प्रसाद कलक्टरी में पेसकार रहन । कि
सालन-मछरी, चाहा-बगेरी के कौर हलक का नीचे ना उतरी तबो रह
टिटिहरिये अइसन । बाकिर मिजाज से दिलदार । जइसन खाये के
ओइसन खिआवे के । स्कूल से टिफिन में हमनी कचहरी के कवनों दोकान
फाउन्टेन पेन बनवाने भा जिस्ता कागज कीने जात रहीं जा । द्वारिका
देख लीहें त पन्ना हलुआई के दोकान पर पूड़ी-तरकारी अउर चमचम भा
के दोकान में कलिया-परौठा खिअवले बिना आवे न दीहें । देखते पुकरिहें
हो सूचित भाई ! नीमन हू-हू परचा, अउर एकदम लाल परौठा लड़िकन के
दसे बजे के नू खइले होइहें स । भूख लागल होखी ।"

सुभान चचा के देखते द्वारिका चचा पुकरलन: "का सुभान भाई ! आ
जेकरे-तेकरे देंह पर आपन फीता रख देत बानी ? ई रउआ हैसियत के
देता ? अरे नापहीं के होखे त भरत भाई के सीना नापीं, बासठ इंची के ।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुभान चचा कम ना रहन। बोललन: "हम नापब खाली सीने ना नू, गरदनों नू नापे के पड़ी।"

द्वारिका चचा भला मौका छोड़स: 'अरे सुभान भाई, अब का गरदन नापब? कतना जानी रउआ जवानी के दिन में रउए नाम पर आपन गरदन नापले नाप लेले हाइयें।" सुभान चचा मुस्कुरा के रह गइलन।

बात द्वारिका चाचा सांचे कहले रहन। सुभान चचा सुबुक मिजाजे का रहन सुबुक देहों-धजा के आदमी रहन। लोग कहत रहे कि उनकर बरियात जब रामपुरनगर पहुँचल रहे त गाँवभर के मेहरारू लोग नौशा देखे खातिर उनकर टमटम घंटा भर घेरले रह गइली। खैर, बिआह त उनकर बारह बरिस के उमिर में भइल रहे।

बिआह के बाद उनकर चचा बच्चू मियाँ अपना साथे उनका के कलकत्ता लेवा गइलन। बच्चू मियाँ रेल में फायरमैन रहन आ ओइसन डाक गाड़ी के इंजन पर रहत रहन जेकर ड्राइवर अँगरेज भा एंग्लो-इंडियन लोग होत रहे। सुभान कौनो ड्राइवर का मदद से बच्चू मियाँ सुभान चचा के एगो टेलर मास्टर कने रखवा देलन जे विलायत से सीख के आइल रहे। पांच बरिस तक संगत में सुभान चचा कारीगरी त सिखवे कइलन बोले-बतिआवे भी लेब गइलन अउर कभी-कभार दू-चार जुमला अंगरेजियो में खींच लेत रहन। रामपुर पर ठीक चौक पर दुकान खोललन: "मोहम्मद सुभान एण्ड कम्पनी" आ रामगढ़िया के खेती-बारी अउर पुरान पुस्तौनी परचून के दूकान छोट भाई के जिम्मा दे देलन।

सुभान चचा के कारीगरी के लोग धीरे-धीरे लोहा मान लेलस। शहर के नामी-गिरामी लोग कने उनकर बुलाहट होखे लागल। सूट से लेके सेरवानी तक सुभान चचा हर कपड़ा काटे-सीये के माहिर रहन। चेचक से उनकर एक आँख खराब हो गइल अउर पत्थर के आँख लगावे के पड़ल तबो ना उनका कारीगरी में फरक आइल ना उनका चलती में। वकील-मुख्तार के हमरा इलाका में आधा से अधिका लोग उनकर गहकी रहे। बाकिर सुभान चचा के किसमत दर्जिये के ना रहे। हमरे घरे बिआह-सादी, काज-परोज सबमें उनका से राय-बात होखे। बड़का बाबूजी से उमिर में छोट रहन ऐसे उहाँके उनका के सुभान बाबू कहत रहीं अउर बाबूजी से बड़ एसे बाबूजी सुभान भाई कहत रहीं।

SriGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

महल्ला में कवनो काम से अइहें त सुभान चचा हमरा डेरा पर अइहें बड़का बाबूजी के पास बइठिहें। उनका के देखते बड़का बाबूजी पुछलन "के बा हो ? सुभान बाबू अइलन, कुछुओ चाह-जलपान देख लोग।" कप-प्लेट सीसा के गिलास घर में रहे जे कबहूँ हाकिम-हुक्काम भा अइसने लोग खातिरदारी में निकलत रहे। सुभान चचा के चाह त साफ अँगौछा में फुलहा गिलास में आवत रहे जइसना में घर के लोग चाह-पानी पियत रहे। साँझ के कहिओ आवस त चाह पीयत-पीयत शतरंजो पर बइठ जाय। बाबू वकील अउर सुभान चचा के शतरंज के बाजी जहाँ बइठल तहाँ हुँभर घंटा खातिर दुअरा पर मेला लाग जाय।

सुभान चचा, भरत चचा अउर द्वारिका चचा के बतकही अभी जारी रहे अउर हमरा भइया के बिआह याद आवत रहे।

हल्दी-कलसा के दिन दुआर के सामने परती पर सभे बइठल रहे। सुभान चचा इनार के चउतरा पर पलथी लगा के केकरो से बतिआवत रहन। एतने में रघू आके कहलन कि बड़की मलकिनी ड्योढ़ी पर ठाढ़ बानीं। सुभान चचा लपकत पहुँचलन अउर बड़का केवाड़ी के लगे परदा के बाहर खड़ा हो गइलन। परदा के पीछे बड़की अम्मा खड़ा रहीं। परदा धइले दाई-माई उनका बात सुभान चचा तक पहुँचावे खातिर।

सुभान चचा दाई-माई से कहलन : "गोपी के माई ! बड़की भौजी से हमार सलाम कहल जाय।" ओकरा बाद परदा के बावजूद बातचीत सोझा-सोझी होखे लागल। बड़की अम्मा पुछलीः 'आज त सभ मदनि लोग के बन्दोबस्त रहे। सभ चीज ठीक बनल रहे ?"

"सभ चीज सोअदगर", सुभान चचा कहे लगलन, "बचन भइया बाद कटहर के दम अपने खड़ा होके बनववले रहीं। आ भौजी ! एह घर के काम परोज में कौनों कमी होखी ? जरूरे मुन्ना बाबू के कनियां लछमन हांहें। तिलके के दिन नू भौजी के पोता भइल !"

बड़की अम्मा जैसे चिहुँकली "हँ ! एह भीड़ में हम मुबारक-बादीयो देबे के भुलाइल जात रहीं। पतोह-पोता ठीक बा नू ?"

"सब रउआ बड़ सरदार के दुआ-असीस", सुभान चचा कहलन अउर पूछलन "अबहीं का हुकुम बा ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़की अम्मा बहुत सँकुचात-सँकुचात कहली : "काल परिछावन में त
अउर दुलहिन ना आ सकिहें। वाकिर लड़िका के परिछावन के दिन मतारिओ-
बाबी के नया साड़ी-चूड़ी के हक होला। चिन्ता में बानी कि कइसे पहुँची।
रघु रघुबू रामगढ़िया वाला डेरा देखले बाड़न। उनका एह भीड़ में छुट्टिये
नइखे मिलत।"

बात काट के सुभान चचा कहलन: "त एकरा में सकुचाय के कवन बात
है। घर के बात ह। हम पहुँचा देव।"

जाये के बेरा बड़की अम्मा सुभान चचा के अपने हाथे साड़ी-चूड़ी,
बुनी-सेनुर के पाकिट देले रही।

गली जे मोड़ से सुभान चचा आगे बढ़लन। उ ओसारा पर चढ़त रहन
हमार करेजा ढोंढी पर सरकत रहे। सलाम के अबाव में कहलन "का बचउ
हो? कवन नौकरी करताड़ऽ कि आपनो बिआह में छुट्टी नइखे मिलत? परसों
तक बा आ तू आज अइलऽ ह?"

जीभ तक बुझाय कि तलुआ से सट गइल बा! कवनो तरह सँभार के
कहलीं "रेडियो में छुट्टी कहाँ होला चचा। उहाँ बन्दी ना होखे।"

"खैर! बइठऽ। "सुभान चचा कहलन "का-का सिआई? अब त तोहरे
मन से बनी। अचकन-साफा के त दिन गइल।" हमरा त बुझाय कि
सुभान चचा के कान्हा से लटकत फीता सरक के हमरा गरदन पर साँप लेखा
आ गइल आ हमार गरदन कस रहल बा! बहुत सम्हार के अउर बहुत
जोर लगा के एतने बोल सकलीं कि दोस्त लोग बाँकीपुर टेलर्स किहाँ सूट सिअवा
रहे, कि सुभान चचा धम्म से चौकी पर बइठ गइलन अउर हमरा के एक
टक देखे लगलन। एक आँख पत्थर के त रहले रहे, हमरा बुझाइल कि दुसरको
आ गइल बा। कवनो हरकत ना।

एतने में बाबूजी आ गइलीं। सुभान चचा के अइसन चुप्प बइठल अउर
हमरा के खड़ा देख पुछलीं: "काहे सुभान भाई, काहे अइसन बइठल
हउ?" सुभान चचा पलट के बाबूजी का ओर देखलन आ अपना अँगौछा से
मुँह पोंछत कहलन "लड़िकाई के लँगोटी त सुभान सिअलन आ अब बचऊ के
बिआह के जोड़ा बाँकीपुर टेलर्स किहाँ सिआई!"

Guru Math; Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

बाबूजी के बुझाइल कि देह में बिजली के करेंट मार देलस। गेट हमरा सामने आ गइलीं अउर पूछलीं "पटना में कपड़ा सिअवलऽ ह का?" मूड़ी झुकवले खड़ा रहलीं। सोचलीं कि बोलल अउर जंजाल हो जाई। जे होखे के बा से होखो।

तेइस बरिस के उमिर तक बाबूजी ओतना जोर से हमरा से ना बोलल होखब। "बेहूदा काम कइले बाड़ऽ। तोहरा बुझाता, केतना बड़ा गलती कइले बाड़ऽ। तोहरा हिम्मत हो गइल? लड़िका नइखऽ। बूझे-समझे के चाहीं। कौन मौका पर का करे के चाहीं।"

एतना कह के ऊ सुभान चचा के ओर घूमलन "सुभान भाई। ओ लीहीं। जवन बुझाय ऊ कपड़ा के नाप लीहीं। हम घंटा भर में कपड़ा तुहार घर पहुँचा दे तानी। रउआ जे सीअब, वचऊहें पहिनिहें।" ई कहत बाबूजी सुभान चचा के हाथ धर के खड़ा क देहलीं।

× × ×

दुआरे बरियात लाग चुकल रहे। दुआर पूजा सुरू भइल त बेंड बाजा रोकवा देल गइल। दुनों ओर के पुरोहित लोग मंत्रोच्चार करत रहे। एगो आउर लोग के हटावत साफ मलमल के कुरता, दुपल्ली टोपी पेन्हले, गला बेली के माला डलले सुभान चचा मोटर के लगे सरकत आवत रहन। सबका लड़ी के पीछे हमार आँख ऊ ना देख सकत रहन बाकिर हम देख सकत रहीं कि सुनहरा पाड़वाला अँगोछा से ऊ आपन आँख पोंछत रहन। एक दिन उनका पत्थरो के आँख हमरा के पानी-पानी क देले रहे। ओने पुरोहित जी केकरो अक्षत पर छींटे खातिर गंगाजल वाला लोटा माँगत रहीं। मन में आइल कहीं कि सुभान चचा के गाल पर से पोंछ लिआय। एहू जल से पवित्र कौन चीज होखी?

□ 7 एच. एफ-6/30 हाउसिंग कालोनी, बहादुरपुर, पटना 800.0

□

हाइकु

—(श्रीमती) अलका पाण्डेय

सुर के जोर
कविता कमजोर
लोग विभोर

अंग्रेजी खाद
भुलवा देले बाटे
असली स्वाद

मन माने
डगरत रहे
पहिया

न्यू एफ/11, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिसरका जानवर

—अवध बिहारी ओझा

कातिक के हरवाही से गधबेरि भइला तीन गो जीव लवटले। दिनभर करइल जोतला से थाकला के अलावा पैना के साटि से छनछनाइल आ जवानी के खुराफात के जनावे खातिर गरदन में बान्हल घंटी टुनटुनावत मद से मातल दू गो बैल। पीछा-पीछा हर-जुआठ के बोझ से सिकुरल हरवाह। घंटी के टुनटुनाहट से गृहस्थ के दुआर पर उपस्थित सभ बगवगा के फुसफुसाए लगले—बैल अइलन सऽ-बैल अइलन सऽ। बिजुली से पानी, खरी फुलावल महुआ, दाना, भूसा, गवत तेयार होखे लागले। सवांग आगहूँ बढ़ि गइलें आ बैलन के सुहुरावत नाद पर ले अइले—वी. पी० अतिथि अइसन। सभ केहू सम काल छोड़ि के सेवा में लागि गइले बैल धनसुत होखऽसऽ। जबले वृषभ-सेवा से फुरसत मिलल तबले अन्हार खल आ तब जा के नजर परल धुरवीगना हरवाह पर जे कोना में सुटुकल ठाढ़े पुछिहें तें का बइठल बाड़े रे? ई हरवाहीं से लवटल तिसरका जीव पूछीं त पशु श्रेणी में भी बैल से भी नीचे स्थान पावेवाला तिसरका हरवाह - धुरवीगना हरवाह।

मालिक के प्रश्नोत्तर में धुरवीगना गते से मेमियाइल—बनि चाहीं। बुढ़ऊ मालिक डपटिहें - रोज रोज बनि दियाला। हफ्ता लेबे के सीखु। जो, दू बेरा के बेरि बा। ए घरी कुछु ना लेबे-देबे के। धुरवीगना घिघियात—घरे खरची नइखे—लइका दिनहीं से उपास होइहें सऽ। बुढ़ऊ मालिक जाँघि गुड़रते रहन तबले धुरवीगना के घिघिअइला पर तरस खा के के अर्द्धशिक्षित पोता बाबा से बोलल—"दे ना दऽ—खाई ना त जांगर कइसे ठेठाई—पांड़े बाबा के बनिहार अइसन बी. डी. ओ. चलि जाई त बुझाई।" बुढ़ऊ मालिक खरवार फेंकि के गरजले—से के पूछल ह जे वकालत छाँटत बाड़ऽ। पढ़े में त पत साल फेले करे कर हमार बात काटे में पीआर दास बन जालऽ। चउवनिया मुसुकी काटत कहलो टुभुकल—"जा हम ना बोलब—हर जोतवला से मन नइखे भरत त के नस में छूँछी लगा के सिरिंज से दू बोतल खूने निकाल ल-कामे।" बुढ़उवे नरम परले—ए भाई, आजु कालु के पढ़ाई में इहे सिखावल जा का? खैर, मारऽ गोली। ए बड़कू, बुढ़ियो से बोल द बनि देबे के।"

कड़का के तेल लगावत आ गोदीलवा के माँड़-भात खियावत बुढ़िया के कान में जब ई सनेस परल त अपना काम में बिना तनिको

SriGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

विचलित भइले बरबरइली — 'मर मटिलगवना ई कवन वेरा हे बनि देवे हे,
आ ओहिजे से हाँक परली—ए असतुरनी, देखु त बनि वाला वटखरा
कोना सान्ही में बा (ई ग्रामीण शास्वत सत्य ह कि बनि के वटखरा
के कहल जाला जवन वजन में कम होखे आ बनि देवे के अलावा औकर
दोसर उपयोग ना होखे)। अन्हारा में टकटोरत असतुरनी बनि वाला
खोज त लेलस बाकी घरी भर लगा के। तब मातृरूपा बुढ़िया
घुरबीगना के गमछी में बनि तौलि के बान्हि देली आ दुआर पर भेजि
घुरबीगना जानत रहे जे चाहे त एकरा में गहूम होई चाहे धान—
बनावल आटा-चाउर ना। तदहूँ गेंठरी लेके अइसे अगराइल जइसे
हूँड़ी मिल गइल होखे :

अतना देर में बैलन के सवाद बदले खातिर कइ बार चोकर
में छिंटाइल - मलिकार लोग के नास्ता आइल-चाय के पीआली
बुढ़उ मलिकार के चिलम गरमाइल बाकी घुरबीगना के ओरि केहू दृष्टि
ना कइल।

अवरू दिन लेखा घर के सभ बेकत बनि के अनाज छाँटे-पीसे में
गइल। बाकी ओह सभ से चिन्तामुक्त घुरबीगना टूटही खटोला पर जे
त तुरन्ते फोंय-फोंय नाक बजावे लागल। आधा राति खा जब खाना
भइल त घुरबीगना ब जगा के खियवलस आ घुरबीगना अन्न के सुगंध
फेनु सुति गइल। भोरहरिया के मीठ नींद अभी जवानी पर रहे - सुकवा
बाँस ना चढ़ल रहे — तीन डड़ियवा लडकते रहे कि मझिला मालिक के
कान में परल। अधे राति गये कपि नहीं आवा।" ऊ पुरुषपुंगव घुरबीगना
दुआरि पर पहुँचते हकड़ले - का रे सुतले रहवे — आजु छपरा बधार में
जाई—जल्दी तेयार हो जो-कोस भर जाये के बा। घुरबीगना तड़ाक दे
जइसे रिंग मास्टर के हन्टर देखि के सरकस के बाघ के कँपकँपी ले लेला
कि घुरबीगना जानेला कि मझिला मालिक के पहलवानी वाला हाथ के
से जे बाम उघरेला त ऊ तीन दिन ले पपराला—छनछनाला।

ई कालचक्र घुरबीगना के जीवन चक्र हो गइल बा। एकर रोज के
जिनिगी मुरुगा के बोले के पहिले सुरू हो जाला आ आधा राति के पारल
व्रत टूटेला बाकी ई तीसरका जानवर कबहीं—कतहीं—केहू से कवनो
ना करे काहे कि ई जानेला कि अब्बर जानवर के बरियार के खिलाफ
के हक ना बने—इहे शास्वत सत्य ह। कवनो विधान चाहे संविधान बनो—
मुखिया आम प्रधान बनो-एह तीसरका जानवर के उद्धार ना हो सके।

61, बार कौंसिल भवन, पटना-800001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेलल अभुआइल

—आनन्द सन्धिदूत

मिरिजापुर में मोहन बरम के चउरा बा। नवरातर में ओहिजा मेला लगेला। मेला का लागेला समझल जाव कि ऊ पगलेटन के कुम्भ ह। देसादेसी खेलत-अभुआत मेहरारू ओहिजा पहुँचेलिन। सबकर आपन अलग-अलग कोंचाट होला। केहू के कोंख मराछ रहेले त केहू का कोंखि पर ओकर बिरवे बइठा दिहल गइल रहेले। केहू के डहर-डाँड़ के चुरइल-भूत धइले रहत केहू के घरवे के बामत-हड़कोस एतना तंग कइले रहेला कि दिन भर घर में गोंइठा के आग बरसेले आ रात भर जांघ के कोंचना। कहे के माने ई कइगो अदिमी तइगो भूत भाँवर !

मोहन बरम किहें के एगो अलगे दुनियाँ बा। एह बेवस्था के आपन इतिहास बा। एकर आपन जज-बलिस्टर आ पेशकार बाड़न। एहिजा हर मिनट पर गोहार लगावल जात बा, पुकार आ पेशी होत बा। एहिजा के बतिआवत सब मिली बाकिर के केकरा से बतिआवत बा ई पता नली। बरम बाबा का चउरिया का बगले में एगो कुण्ड बा जवना में चउर के चढ़ावल पानी आ दूध बहि के बटुरात रहेला। ओह कनई में पचासन मेहरारू सूअर अइसन हपटि-हपटि के खेलत मिलिहें जेमे केहू के चीन्हल जाव। कठिन सब एँड़ी-मूँड़ी तक कनई-चहटा में लसराइल, अकबक बकत बा होलले नाना प्रकार का भाव भगिमा में नंग-धड़ंग निउर-निहचिन्त !

जे कुण्ड में ना नहात मिली ऊ कवनो फेंड़ का तरे चाहे कवनो पत्थर पटिया पर बइठल टिभुक-टिभुक के रोवत आ अभुआत मिली। जे त अइसनो मेहरारू मिलिहें जे अभी जीप-कार से नीचे उतरलहूँ ना हुँ कि खेले सुरूम कइ दीहें। देखे वाला अदिमी अवाक् हो जाई कि तनिके पहिले जे एकदम सामान्य रहल ह ओकरा का हो गइल। ओहिजा खेलावे वाला बोझइतो बाड़न। ई लोग सबसे पहिले खेलनिहार के झोंटा खोल देला ओकरा बाद जिरह-बहस आ निर्णय के अधिवेशन आरम्भ होला जवन के पूरा देखल तबे जा सकेला जब मजबूरी हो नाहीं त जेकरा अभ्यास ने ऊ चाहे जेतना पोढ़ मन के आ स्वस्थ संस्कार के होखे ओह पगलेटहिन के बीच बिना डगमगइले ना रह सके। एगो अजीब दहशत के हुकूमत ओहिजा

JaiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

मिली जहाँ खड़ा भइल मुश्किल बा। सबसे खास बात त ई बा कि जोहिर
जे भी समस्याग्रस्त बा ऊ मेहरारुये बा कवनो कोमल मन के किशोर
नौजवान भले ओहिजा मानस विकार में लउक जासु नाहीं त झार के
मेहरारुये लउकिहन आ सबकर उमिर सतरह-अठारह साल से लेके
बरिस का भीतर।

मनोविज्ञान का दुनियाँ में ईहो उन्माहे ह। एह उन्माह में जेतना
हाथ बा ओह से ढेर परिवार के रीति-रिवाज आ अन्तरपरिवरिही वेवस्था
हाथ बा। अक्सर देखे में आवेला कि एक परिवार से दूसरा परिवार में
आदि का कारन स्थान्तरिआवे वाली लइकी अगर सांस्कृतिआइल हीन भावना
के अनुभव करे लीसनि त उ खेले-अभुआये लागेली स। एह मानस कुंठा
अकबक बकल से लेके बेहोशी तक कुछऊ हो सकेला आ बाहरी लक्षण का रूप
में पलक के चिपकल भी। अगर रोग के मिलान कइल जाय त कई गो रूप
सामने आई—

१. एह में अधिकाह मेहरारू अशिक्षित, गँवार आ संस्कारहीन
जेकरा में गरीबियो रही।

२. परिवार या त संयुक्त वेवस्था के रही या पति से वार्तालाप के
सम्पर्क बाहर रहले टूटल रही चाहे खुद पति एतना भीरु आ सीधा होई कि
पत्नी के सलाह आ संरक्षण देवे में असमर्थ होई।

३. अपना मन का हीन भावना के बाजूबेर मेहरारू मतहाव गंढ़
के बखूबी छिपा लेलीसनि जवन कालान्तर में उहनी के अपना गिरेह
अदरावन त देंवे करेला चढ़ावन का रूप में नीक आमदनियों के साधन
देला।

एह तरे ई नारी समस्या के एगो अंग बा जवना का निदान खातिर
पोस्ता इन्तजाम बा। एह इन्तजाम में अइसन अनेकन जूता सीये वाला
जुआठ बनावे वाला अदिमी के नियोजन भइल बा जे ओझइती का बल पर
आदर पवले बा।

एहर हाल का बरिसन में त शिक्षितो अदिमिन में जादू-टोना, गंडा-
तावीज आ तंत्र-मंत्र का पराशक्ति में बहुत रुझान बढ़ल बा जवन आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही पत्रिका जादू-टोना आ तंत्र मंत्र विशेषांक निकाल के सामान्य जनता का
मलक के भँजा रहल बाड़ी स। असल में जब समाज का कर्मठपन पर
भाग्यवादी प्रथा के कायर प्रवृत्ति जन्म लेले त समाज बहुत भाग्यवादी
हो जाला आ अपना असफलता के संघर्ष से जीते का बजाय रत्न-
धारण, गंडा-तावीज के पहिनल आ विभिन्न प्रकार का तंत्र-पूजा से जीते के
कोशिश करेला जवना में ओकर आमदनी मदद देले। आज आफिसन में देखल
जाव त सायदे कवनो अइसन अफसर चाहे बाबू-चपरासी मिली जेकरा बाँह में,
गर में चाहे डाँढ़ में कवनो पुड़िया का बराबर के मोटरी-गठरी लाल चाहे
करिया तागा में न झूलत होखे। ई प्रथाचार ओह अन्ध-विश्वास-विरोधी प्रथा-
चार का बाद फेरु से आइल ह जवन उन्नीसवीं सदी का अन्त में आ बीसवीं
सदी का आरम्भ में सन्त आ समाज-सुधारक मन का महापुरुखन का संगे
आइल रहे आ ई सिखा के गइल कि ई फालतू चेष्टा ह आ जवना का सलाह
पर कुछ दिन खातिर मन भिड़िकलो रहे। हमनी का अन्धविश्वास के गँवारूपन
बनवो रहलीं जा। लेकिन भौतिक दउड़किया में ई कुल भोर पड़ गइल,
बिसरि गइल।

भौतिक ललक में अझुराइल अदिमी के ई जल्दी समझवले समझ में ना
आई कि बिना गंडा-तावीज के सहारा लिहले खाली अपनो हाथ-गोड़ का बल
पर जीवन पथ पर चलल जा सकेला अगर सत्य आ प्रेम पर विश्वास होखे।
कहें कि जे सत्य आ प्रेम पर विश्वास राखी ऊ अपना से पहिले आन के सुख-
सुविधा के ख्याल राखी। अइसना अदिमी के भूत-प्रेत के के कहो एक बेर
भगवानो देख के नतमस्तक होइहें। गंडा-तावीज के त सवाले ना रही।

बाकिर सब त अइसन ना हो सके। मनुष्य अगर सामान्य बा त ऊ
डेराइला का बाद डेरवावहूँ के कोशिश करी। हिन्दू धरम में जरूर लिखल बा
कि साँप बानर माछी आ गदहा के पुत्रवत् प्रेम देबे के चाहीं बाकिर पढ़ला का
बुरले बाद नाक पर माछी अगर बइठ जाय त बिना हँकले हाथ ना रही।
समुदाय में रहले आ परिवार बेवस्था में रुचि रखले शरीर के हरेक ऊर्जा
वाली धन चिन्तन करेलीसनि जवन कवनो साधन सूत्र का ना भेंटइला पर
अरो के खजाना आ अलादीन का चिराग के कामना करत पराशक्ति का
फेर में फँसल रहेलीसनि। अइसना काम में अझुरा के कवनो शिक्षित बेमार
पड़ी त भले मनोचिकित्सक से मिलो आ ध्यान धारणा के अर्थ समझ के कुम्मक
रेचक करो बाकिर आम जनता का पास अभी आजुवो सिवाय ओझा-गुनी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

आँख से आपन समस्या देखे के आ सूअर छौना मुरगा जाउर बताशा कपूर से मन मनसायन करे के अलावे अउर कौनो चारा नइखे।

साँच पूछीं त भूत-प्रेत चुरइल-डाइन के सृजन मानव सभ्यता के मनगर उपलब्धि ह। अगर ई ना रहल रहित त गरीब आ असहाय समाज से हजार साल पहिले बिना मरले मर गइल रहित। काहें कि साधन का सामने अपना असफलता से मुँह मोड़े के अउर कवनो उपाय सर्वहारा का सामने ना रहल ह। ईहे कारन बा कि खाली हिन्दुए धर्म नाहीं अइसन धर्म नइखे जवना धर्म में ओझा-गुनी, टोना-टोटका, सगुन-असगुन पराशक्ति का चमत्कार के सृजन न होखे। एह लाइन में अन्तर धर्म बा। हिन्दू, मुसलमान के फूँकल पानी पी सकत बा आ मुसलमान, सलाह मान सकत बा। कहल त इहाँ तक जाला कि हजरत मुहम्मद साहेब बोखार का द्वारा शैतान से सतावल गइलन त एगो ईसाई ओझइत से देखावल गइल।

एह कुल का ऊपर साँच ई बा कि भूत आपन अतीत ह। जवन चुकल बा उहे भूत ह। हमके हमार आपन अतीतिये भूत बन के डेरावत रहेले। उदाहरण में अगर हम निरपराध तपस्वी के हत्या कइलीं त आत्मा में लथरा के एतना डँहकलि कि हम चउरा बान्ह के पूजे लगलीं। भला झूठ बोलले, चोरी कइले, छिनैती कइले आ केहू का विश्वास के धोखा दिहले चैन मिल सकेला। जे आलसी बा, मानस पाप में लीन बा, आन का सम्पत्ति पर ललकल बा ऊ कुछ ना पा सके सिवाय करेजा में एक जलन के जवन कबे अदकल मानस में कोंख मराछ करी आ कबे अपने के अँगार अपने आँगन में फेंक के हल्ला करी कि आग बरसत बा।

कुछ समस्या अइसनो बाड़ी सनि जवना के जवाब नइखे। अरबहूँ अपना के लोक वेवहार में बहुत चतुर-चल्हाँक मानेला ऊहो समाज का बीच से फेंकल हरेक सवाल के त जवाब दे ना सके। अइसना में बिना उत्तर सवाल अगर ईश्वर के भरोसा नइखे चाहे आपन संगी-साथी के बेवहार बा त बड़ा चभकेला। ई मानसिक असर त डलबे करी, जे समझदार बा ओहू के लकवा आ हृदय रोग जइसन मानस रोग के चपेट में ले सकेला। एह से अहंकार फेंक विनम्र होके मुस्कात जइसे प्रकृति जिआवे जी लिहला में कल्याण बा।

☐ इलाहाबाद बैंक, मुख्य शाखा, मीरजापुर, उ० प्र०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding ICS-MoE-Grant-2

भोजपुरी काव्य में राष्ट्रीय भावना

—श्रीराम सिंह 'उदय'

संस्कृत हिन्दी आ क्षेत्रीय भषन के काव्यन नियर भोजपुरी काव्य में भी अपना गौरवशाली राष्ट्र के—स्वर्ग से बढ़िके देश के—महिमा-गरिमा से भरल मातृभूमि के भव्य आ प्रेरक चित्रन भइल बा। भोजपुरी काव्य त अपना लालित्य, प्रवाह, लालित्य, गेयत्व, मारमिकता आ कल्पना-वैभव के माने में बेजोड़ रहले बा। एह सन्दर्भ में भोजपुरी-काव्य में राष्ट्र भा मातृभूमि के जेवन गौरव-गरिमा के तसवीर उरेहल बा, ऊ अनुपम बा, मोहक बा, जगमग बा।

राष्ट्र के केहू कवि पिता, केहू माता, केहू दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-अन्नपूर्ना, केहू सीधे-सीधे राष्ट्र भा देश के रूप में, केहू मानवता के रक्षक के रूप में आ केहू दूसरी रूप में कल्पना कइले बा आ ओही अनुरूप काव्य रचना कइले बा, चित्र खींचले बा। गुन गवले बा। राष्ट्र के रूप विराट होला आ ओकरा बारे में सहज-सरह के भावना उठेले। मगर राष्ट्र के सबसे बड़हन गुन ह अखण्डता, एकता में एकता, भाईचारा, जन-जन के मन में समर्पित सेवा-भावना, अटूट आस्था निष्ठा। एह ओर भोजपुरी के सजग आ राष्ट्र-भक्त कवि लोगन के ध्यान पहिले से ही बा, आगे भी रही।

अपना देश या मातृभूमि के गुन-गान पराधीनता-काल में भी, तोपन के सामने छाती तान के, निडरता के साथे, कवि लोग करत रहले। सन १९१२ ई० में श्री रघुवीर नारायण के 'बटोहिया' गीत देश में सगरे गूंजत हलचल मचावत रहे। एह गीत में अखण्ड भारत के आत्मा त हंसते-बोलति बा, साथ ही इहो में भारतीय संस्कृति के प्रखर रूप के भी जगमगाइट बा। ई गीत अपना समय अंग्रेजी हुकूमत के डोला-कंपा देले रहे आ जन-जन में चेतना के संचार क देले रहे। गीत के किछु अंश के रसास्वादन करीं—

'सुन्दर सुभूमि भइया, भारत के देसवा, से
मोरे प्रान बसे हिमखोह रे बटोहिया !
एक द्वार घेरे रामा, हिम कोतवाला से,
तीन द्वार सिन्धु घहरावे रे बटोहिया !
गंगा रे जमुनवा के झगमग पनिया से,
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ब्रह्मपुत्र, पंचनद घहरत निसदिन,
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया !
नानक, कबीर दास, शकर-श्रीरामकृष्ण
अलख के गतिया बतावे रे बटोहिया !
विद्यापति कालिदास, सूर-जयदेव कवि,
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया !

श्री रघुवीर नारायण के ही दोसर गीत 'मोर जननी' भी हवे ! एह में मातृभूमि के महिमा के बखान कवि बहुते हुलासि के कइले बाड़न—

'सुनसान अगम सघन वन गिरिवर,
आनन्द के उड़त निशानी मोरी जननी !
गेहू-धान जामे रामा, सरसों विपिन फूले,
सुख फूले मड़ई-पलानी मोर जननी !

सन् १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होके देशभक्त श्री मनोरंजन प्रसाद सिन्हा बटोहिया गीत के तर्ज आ लय पर 'फिरंगिया' गीत के रचले, जेकरा के ऊ खुदे सभा-जलसन में गाइ के सुनावसु। एह गीत से गोराशाही के नींद हराम हो गइल रहे। एह गीत पर ओह घरी रोक लगल रहे। गीत सुनके लोग जहां अंग्रेजन के लूट-खसोट, धांधली, अनीति खीसि से तमतमा जासु, उहां देश के दुरदशा आ बदहाली पर लोर भी बह लागसु, गीत के किछु अंश देख लीं—

सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा,
आजु उहे भइल मसान रे फिरंगिया !
अन्न धन जन-बल, बुद्धि सब नाश भइल,
कवनो के ना रहल निशान रे फिरंगिया।

श्री लक्ष्मण त्रिपाठी प्रवासी, अपना 'वन्देमातरम्, गीत में श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी के राष्ट्रीय गीत 'वन्देमातरम्' के भाव-प्रवाह के अपना के बड़ी लय, उछाह आ गर्व के साथे, मातृभूमि के वैभव, प्रताप आ लोक-हितकारी गुन के जस बखनले बाड़न। साथे-साथे अपना जोशीला स्वर में भारतमाता के आरती आ बोध भी देले बाड़न—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरग से ऊँच माता भारत के भुइयां से
तोरा कोरा पलेला पियार, वन्दे मातरम् ।
तोरे रस-पनिया में सजेले गतरिया से,
जनमेला सुधर विचार वन्दे मातरम् ।
सोना चानी बाटे रामा,-तोरा धूरा मटिया में
हीरा-मोती होखेला अंजोर वन्देमातरम् ।
नाहीं हम हईं रामा, बकरी-पठरुआ से,
लेइ भागी चोरवा सियार, वन्देमातरम् ।
हम हईं तोर माता, पूतवा-सपूतवा से,
हम हईं शेर बरियार, वन्दें मातरम् ।
तोरे हवे सीख माता शान्ति उपकरवा के
मनवा में राखीले सम्हार, वन्दे मातरम्
बाकी केहू अंगुरी देखावे वदनेतिया से,
तब हम बघवा-हुँड़ार, वन्दे मातरम् ।

भोजपुरी रत्न श्री राम विचार पाण्डेय अपना मशहूर गीत 'भारत हमार' भारत के अतीत के महानता, संवसार के मार्ग-दर्शन कइल, सभ्यता के जंगल-ओसेरह कामन के चरचा चलाइ के, इहो बतवले वाड़न कि एह त देश के शोभा, पावनता, सरलता पर लोभाय के आ आह्लादित होइ निराकार परमात्मा साकार रूप में बार-बार अवतार लेवे खातिर बेवस हो ले। पापियन के विनास कइके सुधर्म, परेम, समता, निर्भयता आ न्याय के ख ज्योति पसार देले। गीत के किछु अंश से ई सभ उजागर हो ल बा...

'धरती माता के आंगन में
बन बीहड़ घन झंखाड़ रहल,
ऊबड़-खांवड़, गड़हा गुड़ही
दह-नारा, नदी, पहाड़ रहल,

ओकरा के सुघर बनावल के ?
भारत हमार, भारत हमार ?

पसरल चारू ओर जाह रहल,
लउकत ना केनियो राह रहल,
मानव जीवन अंउजाह रहल

ajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

तब ज्योति अखंड जगावल के ?
भारत हमार, भारत हमार ?

वन वन वनचर घूमत रहलन
कतहूं ना गांव-गिरांव रहल।
मानवता रोवति रहलि बइठि,
ना अन्न-वस्त्र के नांव रहल,
तब 'वेद' के गान सुनावल के ?
भारत हमार, भारत हमार।
तब धाट सुहेल बनावल के ?
भारत हमार, भारत हमार।

जब-जब पपियन के पाप बढ़ल
धरती पर जब-जब भार भइल,
पाताल लोक कांपल जब-जब,
जब देवलोक के हार भइल,
समनी के दउरि बचावल के ?
भारत हमार, भारत हमार।
धरती के सरग बनावल के ?
भारत हमार, भारत हमार।

हिन्दी-भोजपुरी के यशस्वी वयोवृद्ध कवि श्री प्रभुनाथ मिश्र (बलिया) के गीत 'हमार' देशवा' से त जइसे अमरित के सागरे लहरा उठल बा। देखीं, एह गीत में अपना भारत देश के सौन्दर्य, उल्लास, रमणीयता आ प्रकृति रानी के उछाह आ वैभव। देखीं अपना भारत देश के महमहात-जगमगात मनमोहनी सुरम्य झांकी —

नन्दन वनवा से चलेला पवनवा,
हमरा देशवा में।
सिहिकेला सीतला बयार,
हमरा देशवा में।
धरती ओढ़ेले सतरंगिया चदरिया,
हमरा देशवा में।
मटिया के जोति उजियार,
हमरा देशवा में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोहिनी मुरलिया बजावेले कोइलिया,
हमरा देशवा में ।
पपिहा करेला पिहिकार,
हमरा देशवा में ।

भोजपुरी के चर्चित कवि परमहंस पाठक अपना गीत में भारत के अतीत गौरव आ वैभव के याद एह रूप में कर रहल बाड़न—

अमरित बहे नदी-नारन में,
डोले मन्द बयारी,
कामधेनु कुल्हि गइया रहली,
कुन्ती अस महतारी
एइजा दूधवो के सगरा बहत रहले ।
हमरा देशवा में देउता रहत रहले ।

श्री गोवर्धन सिंह 'गोरक्षहरि' अपना महान भारत के कीरति-गान से उमंगित आ हुलसित होके गवले बाड़न—

गंगा रे जमुनवा के ऊँची अररिया हो,
सरग झलके ।
जहां अन-धन सोनवा हो,
सरग झलके ।
मोर भारत महानवा हो, करेज हुलसे ।

प्रख्यात रस-सिद्ध कवि श्री अनिरुद्ध माता, मातृभूमि आ मातृभाषा तीनू के एक ही समान मंगल आ बढंती चाहत बाड़न, काहें कि ई तीनू देशवा के पूरक बा—

जय माता । जय मातृभूमि ।
जय, जय भाषा महतारी ।
तीनू उन्नति-सिखर बिराजे,
इहे लालसा भारी ।

काव्य-कल्पना-शिल्पी आ परम देश-भक्त 'श्री रमेशचन्द्र झा के प्रसिद्ध गीत 'झंडा हमरा बलिदान के' पढ़ि-सुनि के चित्त गदगदा उठत बा । कवि

eGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

एह गीत में देश के बारे में अपना बलिदानी भावना के, देश के महानता आ निरालापन के दरसा के, आपन अगाध आस्था, अजेय सकल्प के उद्घोष कइले बाड़न, जेवना में राष्ट्रीयता के वियापक रूप में जय-घोष कइल रहल बा—

हिन्दुस्तान जनम धरती,
हम वासी हिन्दुस्तान के
आसमान पर लहरत बा
झंडा हमरा बलिदान के

खेतन में सीता उपजेली
जहाँ जनक के देस में
लोग जहाँ सोना जइसन
गौतम-गाँधी के भेस में
आपन कीमत बा हमनी के
चरचा देस-विदेस में,

आपन सभ केछ खोके हम
बारब दियना निरमान के।
आसमान पर.....।

भोजपुरी काव्य के सशक्त हस्ताक्षर श्री जगन्नाथ त भारत के बहुत गूंजत जय-जयकारन में एकता के अटूट परम्परा निरेखि के फूले नहइ समात—

जय भारत के गूंज रहल बा
सगरे जय-जयकार ।
तन-मन सबके एक आजु,
सब के एके बा प्रान।

श्री 'अड़भंग' बलियावी एही बातन, प्रसंगन के तनी अउरी विस्तार दे आ साफ-साफ पर गटक के बता रहल बाड़न, जेवना में 'पंचशील' के प्रयोग भारत के आन-बान के, गद्दारन के संहार करे के आ भारत के राष्ट्रीय भावना के हुंकार दा, जय-नाद बा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत राष्ट्र महान जगत में,
एकर तेज निराला बा।
'पंचशील' के बांट रहल ई
सभ के अमरित-प्याला बा।
अलग भेस, भाषा, बोली बा
गुँथल एकता-माला बा।
हम सम भारतवासी हईं,
फइलल प्रेम-उजाला बा।
जे गद्दार-भेदिया बाड़न,
उन्हकर मउवत आइल बा।
उग्रवादियन-हत्यारन के।
अतकाल निगिचाइल बा।
राष्ट्र-पताका शान-मान से
हरदम ई फहरात रही
भारत के जस दुनिया गाई,
सगरे जय घहरात रही।

लोक-धुनन पर, सामयिकता के सुर आ लय के मनोहर रंग-चढ़ा के, भाषा आ सुघरता से ओतप्रोत कर के भोजपुरी काव्य के संवारे-गुंजावे आ जीवन्त बनावे में माहिर श्री श्याम सुन्दर ओझा 'मंजुल' त आजु भारत माता के रूप-रंग आ बढ़न्ती निहार के एतुना अगरा गइल बाड़न कि ई तराना उनका मुँह से निकल के लहरा रहल बा—

सोने के साड़ी में चमचम चमकल
आशा के झलके निशान।
विहंसलि बा धरती, गगन अगराइल,
नवजुग के आइल विहान।

एह तरे आजु के भोजपुरी काव्य में अपना देश के—मातृभूमि के—अपना देश भावना के बहुते वियापक, जोरदार, ज्वलन्त-जीवन्त आ उदात्त चित्रन भइल बा। राष्ट्रीयता-परक कविता भा गीतन के कमी नइखे। संकलन-संपादन के जरूरी बा। भोजपुरी काव्य के हर एक पक्ष या अंग पर विवेचनात्मक अध्ययन होखे के चाहीं।

□ बांसडीह, बलिया (उ० प्र०) 277202

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Funding by IKS-MoE-Grant-2. Contributed by Vidyaguru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

पुस्तक-समीक्षा

भोजपुरी के एगो जबरदस्त रचना खोलक दास के खुलल चिट्ठा

—मधुकर सिंह

"पुस्तक : खोलक दास के खुलल चिट्ठा (भोजपुरी व्यंग्य) : लेखक : विजयानन्द तिवारी प्रकाशक जरगन प्रकाशन, स्टेशन रोड, कोइरपुर बक्सर (बिहार)

भोजपुरी में व्यंग्य-स्तंभ लिखे के लमहर परम्परा रहल बा। स्वर्गीय चाचा, भैया जी बनारसी नियर दमगर स्तंभकारन के स्मृति आजो जेहन में जिन्दा बा। ओही सचेत परम्परा में 'खोलकदास के खुलल चिट्ठा' एगो जबरदस्त भोजपुरी के व्यंग्य संकलन बा। विजयानन्द तिवारी के ई रचना कवनो जमाना में 'दिनमान' हिन्दी साप्ताहिक में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के लोकप्रिय स्तंभ 'चरचा ओर चर्खे' के स्मृति ताजा कर देता। 'खोलकदास के खुलल चिट्ठा' प्रमाणित कर देता कि विजयानन्द तिवारी का लगे सामाजिक-राजनीतिक आ ओकर बदल रहल यथार्थ पर जबरदस्त पकड़ आ समझ बा—लेखकीय दिशा और दृष्टि बा। सर्वेश्वर और हरिशंकर परसाई के पैनापन बा। भोजपुरी में साइते अइसन बेजोड़ आ सामयिक चेतना और चिन्ता से लैस कवनो व्यंग्य भा स्तंभ हमरा नजर से गुजरल होखे। भोजपुरी के दुर्भाग्य बा जे अभी ले नयापन के नाम पर देसी-विदेसी बा सी रचनन के नकल चल रहल बा—ओइसन नकल जवना के समकालीन चिन्ता से कउड़ियो बराबर सरोकर नइखे। एही ओहा—पोह में 'खोलकदास के खुलल चिट्ठा' भोजपुरी के लगाव जगावे वाला एगो सार्थक प्रयास का रूप में सामने आइल बा।

खोलक दास का लगे व्यापक दृष्टि बा—खाड़ी, काश्मीर आ चुनाव के राजनीतिक-सामजिक प्रभाव से लेखक अछूता नइखे। 'बकलम खुद, 'सम्पादक के नांवे चिट्ठी', 'करिया कोट में खोलकदास, 'टी०एन० शेषन से भिड़न्त, 'खाड़ी से खोलकदास' आ 'कुकुर का खोज में अपहरन' जइसन रचनन के कवनो भारतीय भाषा के मिलान खातिर सीना तान के रखल जा (सकेला.....।

खोलक दास के व्यंग के धार तेज त बड़ले बा, ओकरा में विविधतो बा। कबहूं त ऊ छाँय-छाँय लागत बा। कबहूं खंइक गड़ला अस बिसबिसात बा, कबहूं गतरे-गतर में पिड़ुरी चढ़ा देत बा. त कबहूं मन के गदगुदाइयो देत बा।

विजयानन्द, तिवारी एगो समर्थ पत्रकारो बानीं। भोजपुरी में अइसन त बरोबरे पत्र-पत्रिका निकल रहल बाड़ी स। बाकिर हमरा ई कहे में तनिको संकोच नइखे कि विजयानन्द तिवारी के 'जगरम' के एगो अलगे पहचान बा। ईमानदारी से कहेके पड़ी कि 'जगरम' के लीक कबीर के लीक लेखा अलग-अलग पहचान राखता। आज जहाँ वैचारिक राजनीति के दिशा तलाश बा, उहें साहित्य में समय के धारा के सही-सही अंकन चित्रण जोखिम से भरल रहल बा। एह अर्थ में विजयानन्द तिवारी बधाई के पात्र बानीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोक रागिनी

गीत

—डा० अशोक द्विवेदी

दुअरा लवटलें बलमु मोर
धुरिया नहाइल हो
रामा बिहिटी लपेटला क माख
रएन-दिन सालेला हो !

लुगवा जो रहितें बदलि लेतीं
चोलिया फराइ देतीं हो
बाकि बिधना के लिखल ल करिया
मेटवले ना मेटेला हो !

लरिका मलछि रहि जालें
त मन मछियाइ जाला हो
रामा जिनिगी के ऊसर खेत
कि बियवो ना बहुरेला हो !

काल्हु हम सपना में देखलीं
अजब एगो अजगुत हो
रामा सोनवाँ के बलिया से
खेतवा, झपर झप लहरेला हो ।

सपना टुटल हम देखलीं
सजन मुख चमकत हो
रामा करिया रएनियाँ के चीरि—
सुरुज नभ फूटेला हो !

□ 47 टैगोर नगर, सिविल लाइन्स; बलिया 277001 (उ० प्र०)

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

गीत

—(सुश्री) अनीता सोनपरी

आवेलें जब-जब चकोर मोरे अँगना ।
नाचै ठुमुकि मन मोर मोरे अँगना ॥

सुधि-बुधि खो जाला, मन सकुचाला,
अल्हरैं उमिया 'सरम' बनि जाला ।

उतरै चननियाँ के भोर मोरे अँगना ।
नाचैं ठुमुकि मन मोर— — — —

धधकत अगिनियाँ लवर लिए थाती,
नयनन से निकरि-निकरि लिख जाली पाती,

बाँचै उमगि चित चोर मोरे अँगना ।
नाचै ठुमुकि मन मोर— — — — ॥

दरद बँसुरिया बजाय मन मोही
लोगै न फिर कत्तों जाय निर्मोही,

चुप्पी में भी भारी शोर मोरे अंगना ।
नाचै ठुमुकि मन मोर — — — — ॥

पलना झूलै मन रसे-रसे गावै,
परग-परग सरधा से शीश झुकावै,

युग पुग से इहै हथजोड़ मोरे अंगना ।
नाचै ठुमुकि मन मोर— — — —

□ शाहगंज, सोनभद्र (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमार नेहिया

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

हमार नेहिया
देहिया में गदराइल !

महुआ के फूल नियर
मुखवा कोंचाइल
सपना में सुग्गा पंखी
पंखवा घोराइल,
मन में पिरितिया
के भाव अंखुआइल ।

मन मनसनाला
अंग गनगनाला,
बगल बयरिया में
अलसाला,
मचले नदिया
लहर बउराइल ।

प्रीत के पखेरू
गगनवा में पंवरे,
ठोर चूमे सुगवा
सुगिनियां का जवरे,
स्नेह के सरोवर में
अमरित घोराइल ।

मोठ रे अगिनिया से
तन कसमसाला,
अजब निसा छवलस
पियास ना बुताला,
कस्तूरा-गंध से
सिवान गमगमाइल ।

हमार नेहिया
देहिया में गदराइल ।

☐ पोस्ट बॉक्स ११५, पटना—१

घरी छने आवेले बिजुरिया

—बलभद्र

घरी छने आवेले बिजुरिया त धनि मन मोद भरे हो
रामा गोदिया के छउके बालकवा छउकी भुंइया पग धरे हो ।
एक पग धइलें दोसर पग धरहूँ ना पावेलें हो
रामा बिजुरी परइली नइहरवा त सगरो अन्हार घेरे हो ।
चिहुँकी जे रोवेला बालकवा त काहे बाबू लोर ढरे हो ।
रामा गँउवा करमवा के छोट त कहिया जे दिन फिरे हो ।
बिजुरी जे बबुआ के बाबू देखे लपकी सिवान चले हो ।
रामा अँखियन उमड़े सपनवा त मुँह उजियार भइलें हो ।
पनिया जे पहुँचेला खेतवा पहुँचियो ना पावेला हो ।
रामा जम्ह जे छुअलस बिजुरिया त कइसे के नइया चले हो ।
बारी-ओरी बबुआ के बाबू त काहे माथे हाथ धरे हो
रामा जाँगर फुलेला तोहरे हाथ त गँउवा गोहार करे हो ।

☐ 61, ए० बी० होस्टल, कमच्छा, वाराणसी —10

Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
SriGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding JKS-MoE

हाइकु

—चतुर्भुज मिश्र

धरती पर
जात पात धरम
आदमी कहाँ ?

×

सूरज कबो
जीवन बढ़ावस
घटावतारे

×

बिदेशी कबो
आइल रहे इहवाँ
फर आवता

×

माघ के धुंध
थर भरात देह
गरमी कब

×

पितराइल
पिरीत पर लोग
ठगात जाता

संगीत अब
हाय हाय छूय हो
प्रान से दूर

×

गाँव भाव के
पहचान भइल
बारूदी गंध

×

अब लइका
लइकाई ना जाने
बीसवीं सदी

×

नेह खेत में
इ काथी बोवऽतानी
काटे के बा

सम्पादक, 'हाल-चाल', बेतिया

हाइकु

—प्राध्यापक अचल

खेलि रे खेलि !
अधरम क खेलि,
का चली खेलि ।

×

खेलऽ तूँ खेलऽ
हमके जनि ठलऽ
अरे ! न रेलऽ ।

×

पीके तूँ भाँगि
रूम्हत बाड़ऽ झाँगि
इहे ह गाँगि ?

बोआत काँटा
मारि मारि के चाँटा
का कहीं घाटा ?

×

ना चली देस
सभत्तर भदेस
हंसी बिदेस ।

तिवारीपुर, मुहम्मदाबाद, गाजीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

अंदाज आपन-आपन

—प्रस्तुति : जगनाथ

घूम के राह आ गइल उहईं
फेर से ठाँव पा गइल उहईं

—विश्वरंजन

ओनचि देले फिकिर जेकर माथा
रेखि भिनते अधे ड़ हो जाला

—'अँजोर' गाजीपुरी

देवता जानि पूजत रहीं रात-दिन
कइसे उल्टा उहाँ के नजर हो गइल

—रामजी पाण्डेय 'अकेला'

ई अवहीं ले जाने ना पवलीं 'विमल' हम
कि काहें केहू हमसे रूसल-फुलल बा

—रामरक्षा मिश्र 'विमल'

हमरा गुमान मान काथी के
अपना चीलर कि उनुका हाथी के

—प्रकाश उद

रउआ हँस दीं त भोर हो जाई
सगरो अँगना अँजोर हो जाई

—शिव प्रसाद किरण

बात उनकर कहीं उघर जाला
आँखि से लोर तब टघर जाला

—कुमार विरल

सपना में आके रोज सतावल गुनाह बा
सूतल दरद के नींद उड़ावल गुनाह बा

—अजय भोजपुरी

सबेरे उठ के रजा नित चलऽ तू बहरीं ओर
पियें के पानी बा खाये के हीं हवा सुन्दर

—तेग अली 'तेग'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

R.N.I Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. PT.—42

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

पन्द्रहवाँ अधिवेशन

गाजीपुर शहर में ६-७ अप्रैल १९९६ के हो

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पन्द्रहवाँ अधिवेशन के तिथि आ स्थान बदल गइल।

एह अधिवेशन के तिथि तय रहे २-३ मार्च १९९६। बाकिर, एकरा तीन दिन पहिले, २७ फरवरी १९९६ के दिल्ली में भोजपुरी के मान्यता खातिर धरना देवे के कार्यक्रम भोजपुरी अभियान समिति का ओर से आयोजित बा; आ एकरा एके दिन बाद ५ मार्च १९९६ के होली के त्योहार पड़ जाता।

धरना में शामिल होखे खातिर दिल्ली जाके एतना जल्दी दिल्ली से अधिवेशन में पहुंचे में, आउर होली का पहिले अधिवेशन स्थल से अपना घर लवटे में दूर-दराज के भोजपुरी-प्रेमी भाई-बहिन लोग बहुते दिक्कत महसूस करत रहे। सगरो से जोरदार आग्रह होत रहे कि अधिवेशन के तिथि आगे बढ़ा दिहल जाय। एह से, स्वागत-समिति से विचार-विमर्श का बाद, अधिवेशन के तिथि आगे बढ़ा के ६-७ अप्रैल १९९६ निश्चित कहल गइल ह।

गाजीपुर शहर के गण्यमान्य नागरिक लोगन के इहो आग्रह रहल ह कि अधिवेशन नन्दगंज में ना होके खास गाजीपुर शहर में होखे। एह से विचार-विमर्श का बाद, अधिवेशन गाजीपुर शहर में करे के निश्चय भइल ह।

कृष्णानन्द कृष्ण
महामंत्री

भोलानाथ गहमरी
अध्यक्ष

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से पाण्डेय कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, गन्धपुरी, पटना-८०००२४ (दूरभाष : २६११३४) से प्रकाशित, आउर पाण्डेय कपिल द्वारा कर्मा प्रेस, बुद्ध मार्ग, पटना-१ (दूरभाष : २३२७८०) में मुद्रित।
सम्पादक—पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

माँझी अधिवेशन विशेषांक

सम्पादक :
प्रो. ब्रजकिशोर

अखिल भारतीय
भोजपुरी साहित्य सम्मेलन
पटना-6

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

जनवरी-मार्च, 2003

दाम : पन्द्रह रुपया

पत्रिका परामर्श मण्डल

(श्री) ईश्वरचन्द्र सिनहा: (डॉ.) विवेकी राय: (आचार्य) विश्वनाथ मिश्र
(डॉ.) विद्यानिवास मिश्र: (श्री) मोती बी. ए.: दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
(श्री) पाण्डेय कपिल: (डॉ.) विजय बलियाटिक: (डॉ.) अर्जुनदास केसरी

सम्पादक

प्रो॰ ब्रजकिशोर

•

सम्पादक मंडल

डा॰ अनिल कुमार 'आंजनेय'
नागेन्द्र प्रसार सिंह
कृष्णानन्द कृष्ण
भगवती प्रसाद द्विवेदी
डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र
व्यास मिश्र
प्रो॰ वैद्यनाथ विभाकर
प्रो॰ जयकान्त सिंह 'जय'
जीतेन्द्र वर्मा

•

प्रबन्ध संपादक

भगवान सिंह 'भास्कर'

•

रचना आ शुल्क आदि भेजे के पता:

प्रो॰ ब्रजकिशोर
श्रीभवन, प्रोफेसर कॉलोनी
महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू
पटना-800 006
फोन:-0612-2671180

•

रचना में दिहल तथ्य-विचार रचनाकार के बा, ओसे संपादक मण्डल के सहमति जरूरी नइखे।

माँझी (सारन) अधिवेशन विशेषांक

•

-प्रायोजक

स्वागत समिति
अठारहवाँ अधिवेशन,
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

•

अ. भा. भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के
वार्षिक सदस्यता शुल्क/25 रुपया सालाना
आजीवन सदस्यता शुल्क/251 रुपया
विशिष्ट आजीवन सदस्यता शुल्क/551 रुपया
सम्मान्य आजीवन सदस्यता शुल्क/1101 रुपया

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के
वार्षिक ग्राहक शुल्क / 65 रुपया
सम्मेलन के सदस्य खातिर
वार्षिक ग्राहक शुल्क.../50 रुपया
प्रायोजक (आजीवन ग्राहक) 750 रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)

श्रीभवन, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-800 006

वर्ष 14 अंक 1-3 पूर्णांक 157-159 जनवरी-मार्च, 2003

सम्पादकीय

भोजपुरी का चाहीं राउर तन-मन-धन

भोजपुरी हमनी के मातृभाषा ह। महतारी के दूध तन के पोस-पाल के पुष्ट बनवले
दूध का जवरे मिलल बोली मन के, मन का सपना के, बचपन के चलबिधर बना के
के काम कइले बिआ। तन-मन के बउसाव समाज में आपन जगे बनावे खातिर, धन
कमाये के रास्ता बनवले बा। हमनी के तन-मन-धन के विकास का जड़ में महतारी,
आ मातृभूमि भा समाज बा। एह तीनू के ऋण बा हमनी पर। हमनी के व्यक्तित्व
व्यक्तित्व के नींव में इहे तीनू बा। हमनी के लगे जे कुछ बा, एही तीनू कारक का चलते
एह से एह ऋण के चुकावे के कर्त्तव्य बा हमनी के। महतारी, मातृभाषा आ मातृभूमि
कइल, विकास (सेवा) कइल हमनी के धरम बा। एह धरम से, कर्त्तव्य-कर्म से मुँह
नीक ना कहल जा सके। एह नजरिया से आज भोजपुरी का चाहीं हमनी के सेवा;
-धन से सेवा। तन-मन-धन लगा के भोजपुरी भाषा के विकास कइल, एकरा के हर
विकसित आ मान्य बनावल हर भोजपुरी-प्रेमी आ भोजपुरीभाषी जन के कर्त्तव्य बा।
क्षेत्र के समग्र विकास के रास्ता एही कर्त्तव्यपालन से खुली। भोजपुरी क्षेत्र के गरीबी,
आ कुपोषण एही से दूर हो सकेला। एह सच्चाई के महसूस कइल, कबूल कइल आ
में डेग बढ़ावल आज के सन्दर्भ में बहुत जरूरी बा।

'तन' से भोजपुरी आन्दोलन का गति मिली। 'मन' लागी त भाषा के विकास होई,
रचनाशीलता बढ़ी. आ ढेर-से-ढेर लिखाई, पढ़ाई होई। 'धन' लागी त रचना छपिहें स
जनकी के प्रचार-प्रचार होई। बिना धन के, संसाधन के कवनो काम ना हो सके। एह
खातिर तन-मन-धन के तालमेल बइठवला के जरूरत बा। जे 'तन-मन-धन' लगावत
ओकरा वरीयता मिले के चाहीं। आगा बढ़ के ओकर स्वागत-आदर करे के चाहीं।

तन यानी भोजपुरी-सेवा, भोजपुरी-प्रेम, भोजपुरी पढ़े-सुने के चाव। मन यानी
के रचनाधर्मिता, भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के प्रति लगाव आ निष्ठा।
-संसाधन के माने बा भाषा के आन्दोलन, ओकरा मान्यता आ समादर के राह के प्रशस्त
। एह तीनू भाव के अभाव में कुछ विशेष ना उजिआई। भोजपुरी-मन, भोजपुरी के
लोग आपन धने लगा के नू किताब छपवा-छपवा के आ उदार मन से बाँट के भाषा
समृद्ध बना देले बा कि भोजपुरी देश के कवनो भाषा का सोझा सिर ऊँचा करके
तान के ठाढ़ हो सकत बिआ। एह से दोसर वरीयता ओकरा मिले के चाहीं, ओह
का मिले के चाहीं जे 'मन-धन' से भोजपुरी खातिर लागल बा।

तीसर जगे 'तन-मन' लगावे वाला रचनाकार बाड़न जे खूब लिखले बा बाकिर

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

ओकर लिखल पुस्तक रूप में नइखे आ सकल। धन अछइत ऊ प्रकाशन से उदासीन बा, धन के अभाव बा ओकरा लगे. असमर्थ बा ऊ। अइसनो लोग के सुध लेवे क पड़ी, खाइ-पी राखे के पड़ी। ई काम 'तन-धन' लगावे वाला लोगन का करे के पड़ी। भोजपुरी क अइसन लोग के कमी नइखे जेकरा लगे पूरा साधन बा। खाली ओह लोगन के ई बात समुझावे के पड़ी कि भोजपुरी खातिर धन के कुछ अंश खरचल धन के सदुपयोग कइल बा, भोजपुरी-मातृभूमि के सेवा कइल बा। अइसन लोग का लगे ले पहुँचे के पड़ी आ ओकरा सुतल भोजपुरी-भक्ति के जगावे के पड़ी। ई काम ऊ लोग कर सकत बा जे 'तन' से भा 'तन-मन' से भोजपुरी के काम में लागल बा।

आखिर में खाली 'धन', खाली 'मन' (रचना) भा खाली तन (समय, श्रम) लगावे वाला नेही-छोही लोग बा। बरीयता आ आदर पावे-देवे के इहे क्रम होखे के चाहीं- (1) तन-मन-धन, (2) मन-धन, (3) तन-मन, (4) तन-धन, (5) मन (6) धन, आ (7) तन। सोच-विचार के अगर वरीयता के एह क्रम के तय कर लिहल जाय त भोजपुरी आन्दोलन के बिखराव जरूर थम्ह जाई।

आन्दोलन के पहिलका चरण में खाली भाषा आ साहित्य के सृजन-प्रकाशन पर जोर दिहल गइल। एकर फल मिलल। आज अइसन कवनो विधा नइखे, जवना के भोजपुरी का लगे ना होखे। ई गर्व के बात बा। भोजपुरी अब भाषा का रूप में विकसित हो चुकलि बा - एह में व्याकरण, शब्दकोष, छन्दशास्त्र सब बा; कविता, कहानी, उपन्यास, महाकाव्य, प्रबन्ध काव्य, रिपोर्ताज, लघुकथा, यात्रा-वर्णन, संस्मरण, निबन्ध, ललित-निबन्ध आदि सबकुछ। बाकिर जरूरत बा अबहीं खूब लिखे के, छपे के, भंडार भरे के।

●● सोचे के बात बा

सोचे के बात बा कि भोजपुरी क्षेत्र के विकास खातिर का भोजपुरी भाषा-साहित्य-संस्कृति के विकास अनिवार्य नइखे ? भोजपुरी के मातृभाषा का रूप में मान्यता मिलल का क्षेत्र के शिक्षा के गति देवे में सहायक ना होई ? साहित्य अकादमी से मान्यता ना दिहल का अठारह करोड़ भोजपुरियन के भावना के अनादर कइल नइखे ? का भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा ना दिहल भोजपुरियन के अपमान कइल नइखे ? भोजपुरी के रोजी-रोटी से जोड़ल का भोजपुरियन के आर्थिक विकास खातिर जरूरी नइखे ? का ई कुल्हि काम आज बिना राजनीति से हाथ मिलवले हो सकत बा ? का भोजपुरी जनता का मन में अपना मातृभूमि का प्रति अतना लगाव पैदा हो गइल बा कि राजनेता लोग मजबूर होके भोजपुरी का प्रति उदासीन रहल छोड़ देवे ? का भोजपुरी भाषा के विकास राष्ट्र के विकास के गति ना दी ? ई सब बिन्दुअन पर सोच-विचार आ मन्थन करे के जरूरत बा। बहस करीं आ एगो निर्णय पर पहुँच के तब आगे डेग बढ़ाईं।

बहस करीं बाकिर बहसे करे खातिर बहस मत करीं। एगो निर्णय तक पहुँचे खातिर बहस करीं। हर पहलू पर गंभीरता से सकारात्मक सोचीं। आज के सोचल-समुझल हमनिके खातिर ना बलुक आद-औलाद का भविष्य से भी जुड़ल बा। आगे के दिशा तय करे खातिर सोचीं। दिशा निश्चित हो जाई त आवे वाली दशा भी तय हो जाई। अन्हार का बाद अँजोर आवेला; रात बीत जाले आ सुबह के किरिन के गवरइया अँगनाई में चहकले-फुदकले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

के किरिन खातिर सोचीं-विचारीं। सउँसे भोजपुरी क्षेत्र घोर गरीबी आ अशिक्षा के भकसावन में रास्ता भूल के भटक रहल बा, दुख आ कष्ट के झाड़-झंखाड़ में अभुरा के आपन फोड़-फोड़ के लहुलुहान हो रहल बा। एह सबसे निजात पावे खातिर सोचीं आ हिम्मत कस लीं। जाति-जमात में अभुरा के कुछ लोग अपना स्वार्थ के रोटी सेंक रहल बा आ जनता उपेक्षित रह के दुख पावे-भोगे खातिर अभिशप्त बिआ। ओकरा से ओकर बोलिए रहल बा। ओकर जबाने छिना रहल बा। ओकरा के आ ओकरा सपनन के बठक बनावे कोशिश हो रहल बा। आईं आ एह भरम के तूड़ीं ताकि हमनी का भीतर जे आग बा, ताप लहको, धधको आ चिनगारी उड़-उड़ के सभ भरम के खर्ह-पात धनका देबे। एह अपना भाषा से बढ़के दोसर कवनो हथियार ना होला जवना से अपना प्रति होत अन्याय अपमान से लड़ल जा सके। जिनगी के लड़ाई जीते खातिर का एह हथियार के उपयोग के बारे में हमनी ना सोचब ? ना सोचब त ई चारू ओर पसरल अन्हरिया खतम ना होई हमनी के आगे वाली पीढ़ी का पेट के आग बुतावे खातिर ना मालूम कहाँ-कहाँ छिछिआये पड़ी, ना मालूम कवना-कवना दुआरी जाके लात-जूता आ गाली-फजीहत सहे-सुने के ह। एह से भाई, हमनी का सोचे के पड़ी आ अपना छुदर राग-द्वेष के फेंक के सही रास्ता दिशा तय करे के पड़ी। ई सोच अकेलहीं में ना, बलुक बिटुरा के करे के पड़ी, समूह में के पड़ी आ ओह सोच के निष्कर्ष के साफ मन से सकार के आगे बढ़े के पड़ी। ल-बइठल बात-पर-बात बनवला से, गाल बजवला से कुछ ना तिराई। एही से निहोरा बा से कि सोचीं, बहस करीं आ जवन तय हो जाय ओकरा के पावे खातिर, ओह सपना के खातिर आपन पूरा ताकत झोंक दीं। निष्ठा आ लगन जब मन में जड़ जमा ली त सफलता मिलबे करी। तब कवनो सरकार के बाधा ओह आन्ही-बवण्डर के ना रोक सकी। आज अपने सभे मिल-जुल के एह कुल्हि के बारे से सोचब ? कुछ ना कुछ कइल चाहीं हो गइल बा। कुछ ना कइल आत्मघात कइला का बराबर होई, अपना सन्तति का भविष्य के खुशहाली के हत देवे का बराबर होई।

कुछुओ करे के पहिले सोचे-समुझे के पड़ी- 'बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।' बाकिर सोचे के ढोंग कइला से ना चली। कारगर सोच के जरूरत बा। बिना समय गवाँवे दिशा तय कर लिहल ठीक से जीये खातिर, सम्मान आ सुख से जीये खातिर जरूरी है। निरर्थक बहस खातिर ना, अपना अहं के तुष्टि खातिर ना, बुद्धिवादी के मुखौटा बनवले के खातिर ना, आ ना अपना अकिल के सबसे बड़ साबित करे खातिर सोचे के बा बलुक हमें सार्थक, सकारात्मक आ धनात्मक दिशाबोध पावे खातिर सोचे के बा- कुछ नीमन करे खातिर सोचे के बा- अपना भोजपुरिहा अस्मिता के रक्षा खातिर सोचे के बा आ सोचे के बा अपना भाषा, साहित्य, संस्कृति, समाज, सुभाव आ क्षेत्र के विकसित सोगहग स्वरूप खातिर।

●● संगठन आ सम्मेलन के संरचना

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के जब गठन भइल, करीब तीन दशक पहिले तय बहुते उछाह रहे, जोश रहे, सपना रहे। सभे एकरा के सफल आ गतिशील बनावे खातिर आपन-आपन हाथ बढ़ावल। देश के कोना-कोना में बसल भोजपुरिया लोगन के बीच सार्थक संवाद बनल। उद्देश्य तय भइल लेखन के, रचना करे के, साहित्य सृजन के। एह

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

दिशा में सफलता मिलल । बहुत लिखाइल, खूब छपाइल आ आज भोजपुरी के हर क्षेत्र भरल-पूरल बा । जहाँ कमी बा, ऊ लिखइला बिना ना- संसाधन के अभाव में प्रकाशन कि ऊ कमी लउक सकत बा । सम्मेलन एगो आन्दोलन खडा कइलस खूब लिखे के, प्रेरि साहित्य रचे के आ एह में सफलता मिलल । हर अधिवेशन में रचनाकार लोग उछह के प्रेरि लिहल आ अपना रचना के दूर-दूर ले पहुँचावे में आसानी महसूस कइल । भेंट-मुलाकात आपुसी संवाद से भोजपुरी भाषा के एगो मानक स्वरूप अपने आप निखरे-सँवरे लागल। पढ़े-पढ़ावे के दिसाईं एगो जागृति-स्फूर्ति आइल आ आज एम. ए. तक भोजपुरी साहित्य के पढ़ाई हो रहल बा । शुद्ध रचनात्मक साहित्य के प्रगति खातिर सम्मेलन के अवदान बेजोड़ महत्त्वपूर्ण रहल बा ।

मातृभाषा के रूप में मान्यता, साहित्य अकादमी से स्वीकृति, संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करके भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा देवे के आ लोकसेवा आयोग के परीक्षा में भोजपुरी के विषय रूप में शामिल करके रोजी-रोटी-रोजगार से भोजपुरी के जोड़े के मांग बराबर होत रहल बाकिर अब एही खातिर आन्दोलन के दूसरका चरण के जरूरत बा। ई काम एकजुटता से, मिल-जुल के संघर्ष करे के चाव से संभव हो पाई । जहाँ-तहाँ भोजपुरी के छोट-बड़ सैकड़न संस्था काम कर रहल बाड़ी स; सब अलग-अलग ढंग से । आपन डफली, आपन राग । संस्थन के संख्या बढ़ल नीक ह बाकिर बड़ स्तर पर निर्धारित लक्ष्य हासिल करे खातिर त एकजुटता जरूरी हो जाला । अपना-अपना वर्चस्व आ अहं के तुष्टि खातिर भोजपुरी के अहित कइल गलत कदम बा । दुर्भाग्य से इहे हो रहल बा । सम्मेलन के तइयार कइल खेत में अनेक राष्ट्रीय आ विश्वस्तरीय संस्था फसल उगा रहल बाड़ी स- तोड़ बा; बाकिर भोजपुरी के लक्ष्य त पूरा होखे के चाहीं । लक्ष्यो के नजर में राख के विकल्प रूकल जरूरी बा । संस्था बने, बाकिर आपुसी तालमेल त रहे । जाति-जमात, गुटबन्दी आ व्यक्ति-वर्चस्व के बढ़ावा मिली त पचास साल के मेहनत पर पानी फिर जाई । भोजपुरी के आज समर्पित कार्यकर्त्ता के जरूरत बा; राग-द्वेष से ऊपर उठ के निष्पक्ष नेतृत्व के जरूरत बा। अपने सोच के, अपने अकिल से तय बात के अन्तिम सच ना मान के, सामूहिक लक्ष्य के प्राथमिकता देके आगे बढ़े के जरूरत बा.। एक-दोसरा के पक्ष-विपक्ष में बयानबाजी आ चरित्रहनन के राजनीतिक ढंग के लफ्फाजी-लहज़ा अपना के भोजपुरी के हित नइखे साधल जा सकत । भोजपुरी-सेवा में दोसर पीढ़ी नइखे पनपत । ओकरा प्रोत्साहन मिले के चाहीं। सही तालमेल आ संवाद खातिर पत्र-पत्रिकन के नियमित प्रकाशन जरूरी बा । ई केहू एक के बूता के बात नइखे । मिलजुल के हो सकेला । एकरा खातिर तन (समय, सेवा), मन (रचना, निष्ठा) आ धन (संसाधन) चाहीं । एही तीनू से संगठन का बल मिली, योजना साकार होई, पत्रिका नियमित निकल पाई । 'हम बड़ त हम बड़' के कैंसर फइल रहल बा- जतन से रोके के होई । हिन्दी के यश-लोभ त समर्पण कमजोर करियें रहल बा । भोजपुरी अबहीं कुछ हो नइखे बाकिर जब दी भरपूर दी । संगठन में स्वेच्छा से ऊहे लोग आवो, आगे आवो जेकरा में करे के-जूझे के जज्बा होखे, सहयोग के भाव होखे । खाली शोभा आ सजावट बने के सपना ना होखे । का सम्मेलन के संगठन में एह दिसाईं कारगर परिवर्तन हो पाई ?

-ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविता-गीत-गजल

गीत

-पी० चन्द्रविनोद

ोर गढ़ेला शब्द रात संगीत हो !
ठेसेला मन में, ऊ बसल अतीत हो !
ुआ जाला बात, दरद का बाँह में !
कटोरेला प्रान, मरम का छाँह में !
पन जस दरकल, सोभ्रा बा भीत हो !
ोर गढ़ेला शब्द, रात संगीत हो ।.....
ई जाने कब कहाँ, मिली का राह में !
ग जाई कब गात, बरफ का धाह में !
क छुअन रह-रह, लागेला हीत हो !
ोर गढ़ेला शब्द, रात संगीत हो ।.....
ुग-जुग के चाहत, छटपट ए जाह में ।
न भर के भेंटल, सुख बा ए आह में ।
-गजल के गाँव, बनेला मीत हो !
ोर गढ़ेला शब्द, रात संगीत हो ।.....

गजल

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी

हिय में उठत जुआर, प्यार के गजल कहीं,
मउसम बा बटमार, प्यार के गजल कहीं ।
पियत दूध बछरू के जब गैया चाटे,
तिरपित होत निहार, प्यार के ग़ज़ल कहीं ।
जब सुधियन के आँगन में केहू अचके,
भरत आइ अँकवार, प्यार के ग़ज़ल कहीं ।
अंग-अंग दरपन में निरखि घवाइल बा,
नयना बने कटार, प्यार के ग़ज़ल कहीं ।
मुसुकी में मिसिरी, करनी में जहर भरल,
मीत-हीत हतियार, प्यार के ग़ज़ल कहीं ।
जब आँतर में पइंसि गिरावे गाज सभे,
तब का करीं गुहार, प्यार के ग़ज़ल कहीं ।
ठूँठ गाँछ पर रूखी फुदुके, कउल करे,
चिउँटी चढ़े पहाड़, प्यार के ग़ज़ल कहीं ।

बहस खातिर

❑ अनीश श्रीवास्तव

ला चाहे जिनिगी के होखे
ध बस के,
ू फांकल, आ धक्का खाइल
ंकर पहिल शर्त ह !
ं बा कि,
ुचाप सहत रहऽ ।
ें-पसन्द धक्कन के
ध यात्रा के दउरान
ख्ता बाय वाला बहसन के
ख्त के अन्त
ख्ता के साथे हो गइल निश्चित बा ।
ख्त, एगो इत्तफाक ह
ख्त कवनो सीट से उड़ि के,
ख्तो सीट तक जा सकेला ।
ंयो, एगो मजाक ह'
ख्त के फोकिर में

यात्रा, कब खतम हो जाला
पते ना चले ।
"यात्रा', कतना चिन्तनीय 'शब्द' बा
कि, सदियन-सदियन से चलत
ई-यात्रा, आजो पूरा ना भइल,
कि हमनी के
कवनो पड़ाव पर उतरि के
मान लेनीं जा-यात्रा के अन्त ।
कि भुला जानी जा-
बहस अभी जारी बा
कि जारी बा यात्रा-ज़िनिगी के ।
धूर आ धक्का के, शर्त का बादो-
जरूरी, जरूरत बा-यात्रा
काहें कि, बाकी बा, बहुते कुछ
अभी, बहस खातिर !

● बड़ी बाजार, बाँसडीह, बलिया (उ. प्र.)

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

माँझी अधिवेशन के अवसर पर

दोहा

❑ पाण्डेय कपिल

माँझी पहुँचत हो गइल काहे माँझा ढील
गदकी से गाँजल सड़क बाटे सातें मील
माँझी धरनीदास के ह धरनी के दास
चिन्तन माटी से जुड़ल ह इहवाँ के खास
थाना अउर प्रखण्ड ई, माँझी जेकर नाँव
हवे राजवल्लभ सदृश पत्रकार के गाँव
माँझी के पुल पर लिखस कविता कवि केदार
जवना का नीचे बहे सरजू जी के धार
माधव स्वागत में खड़ा बहुरल आज वसन्त
भोजपुरी उद्यान के शोभा भइल अनन्त
भोजपुरी के काम में अब के दी ना साथ
बाड़े जेकरा हाथ में दू-दू गो प्रभुनाथ

● *मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-24*

क्षणिका

❑ प्रो० पी० के० आ

जिन्दगी जोगावे के ह
लुटावे के ना
आपन अपनावे के ह
बिलगावे के ना।

प्रेम बुझे के ह
बुझावे के ना
सुराही के पानी पीये के ह
पटावे के ना।

आपन अपना के रखब त
विरान कइसे होई
खेत में बोअब खेसारी
त धान कइसे होई।

अनाज जाता में ना परी त
पिसान कइसे होई
इन्सान बिगड़बे ना करी त
हैवान कइसे होई।

● *अध्यक्ष, भौतिक विभाग, अम्बेडकर मेमोरियल कॉलेज, कंकड़बाग, पटना-2*

श्रद्धांजलि

● कविवर 'अशान्त'

अर्जुन कुमार सिंह 'अशांत' के दिवंगत हो गइला के खबर मिलल त सन्न-से लागल। एगो जबाना रहे जब पचास का दशक में आकाशवाणी (पटना) से अनिरूद्ध, अशान्त अ वसन्त के गीत-बराबर प्रसारित होखे आ सगरे धूम मचल रहे। 'अशान्त' जी गीत-गजल के आधुनिक भाव-भूमि पर ठाढ़ करे के लगातार कोशिश कइले। 'अमरलत्ती' एकर सबूत ब पुलिस के नौकरी के व्यस्तता का बीच भी उनकर कवि हमेशा संवेदनशील सजग-सचे रहल। ओह घरी 'भोजपुरी परिवार' का गोष्ठीयन में अशान्त के सस्वर गीत-गजल मन के तृप्त कर देवे। सेवा-निवृत्ति का बाद अशान्त जी अपना गाँवे 'आमी' (सारन) जाके रहे लगले। भगवान बुद्ध का जीवन-चरित के केन्द्र में रख के एगो प्रबन्ध काव्य के रचना कइले रहस। भोजपुरी साहित्य में अशान्त जी के योगदान के बिसरावल नइखे जा सकत। उनका अप्रकाशित रचनन के इकट्ठा करके प्रकाशित करावल जरूरी बा। इहे साँच श्रद्धांजलि होई। अशान्त जी के निधन से भोजपुरी काव्य के बहुते क्षति हो गइल जवना के पूरा कइल कठिन बा। भोजपुरी के एह सिद्धकवि के 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' आ सम्मेलन किओर से श्रद्धा-सुमन अरपित बा। भगवान आ आमी के भगवती उनका आत्मा के शान्ति देसु आ उनका इयाद के अमिट बनावे के वरदान भी।

-सम्पादक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

अठारहवाँ अधिवेशन

(माँझी, सारण, बिहार)

[7-8 फरवरी 2003]

के

स्वागताध्यक्ष

श्री माधव सिंह

के स्वागत-भाषण

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के सदस्य लोग, एह अधिवेशन में जुटल प्रतिनिधिगण, एह समारोह में दूर-दूर से आइल अतिथिगण, भोजपुरी के नेही-छोही बहिन लोग आ भाई सभे !

अठारहवाँ अधिवेशन के अवसर पर हम अपने सभन के हृदय से स्वागत करत बहुते हर्ष के अनुभव करत बानी । बसन्त के आगमन का साथे-साथे अपने सभन के शुभ आगमन से चमनं गुलजार हो उठल बा । भोजपुरी भाषा, साहित्य आ संस्कृति के विद्वान लोगन के मिलन-उद्बोधन का साथे-साथे भोजपुरी के रससिद्ध आ कोकिलकंठ कवि-कलाकारन के बसन्ती सुनं के लोभ से, अबहिंएँ से इहाँ के माहौल बासन्ती हो रहल बा । एह बासन्ती परिवेश में अपने सभन के समादर-सम्मान करे के सौभाग्य मिलला खातिर हम अपना के धन्य मानत बानी। ई अपने सभन के महती कृपा बा कि अपना मातृभाषा भोजपुरी के आ ओकरा साहित्य आ संस्कृति के अलख जगावे खातिर अपने सभन दूर-दूर से एह उजड़ा-टाँड़ में पधारे के कृपा कइले बानी ।

बाकिर, आज जे उजड़ा-टाँड़ जइसन लागत बा, ऊ आज के माँझी, मुगल काल में 'माँझीगढ़' नाम के एगो सुन्दर शहर आ राज रहल बा । इहाँ के प्रजापालक राजा समतली खाँ के दरबार में एह क्षेत्र के साधु-संन्यासी, पण्डित-विद्वान आ साहित्यकार-कलाकार लोगन के बड़ा मान-सम्मान, आदर आ वृत्ति मिलत रहे । पुण्य सलिला सरयू नदी के किनारे, बिहार आ उत्तरप्रदेश के सीमा पर, बिहार का ओर बसल एह माँझीगढ़ में, आजो, पुरातन काल के अवशेष मौजूद बा ।

इहाँ के प्राचीन गढ़, सउँसे ऊँच 'उसरायन', आजो अपना किम्वदन्तियन का साथे खड़ा बा । लोग कहेला कि उसरायन का भीतर-भीतर राजा के महल, खजाना, हथिसार, घोड़सार वगैरह सब कुछ रहे । अब त ना राज बा, ना राजा बाड़े । बाटे सउँसे ऊँच 'उसरायन ।' लोग कहेला कि आजो, रात खानी, उसरायन का भीतर से, राजा के खजाना के 'झनर-झनर' आवाज आवेला । उसरायन पर एक ओर, भीतर जाये खातिर एगो दरवाजा बा, जवना में लकड़ी के चौखट लगल बा । बाकिर केहू ओकरा में घुसे के हिम्मत ना करे । लोग कहेला कि अंगरेजी जमाना में एगो अंगरेज अफसर सर्चलाइट आ कॉलबेल का साथे, अपना कमर में रस्सी बँधवा के आ ओकर दोसरा सिपाही के पकड़ा के घुसल रहे आ कहले रहे कि जब हम घंटी बजाईं त खींच लीह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

लोग। बहुत देर ले जब घंटो ना बाजल त सिपाही लोग के चिन्ता भइल। ऊ लोग रस्ता
लागल। बाकिर ऊ अंगरेज अफसर निकल के बाहर ना आ सकल। ओह उसरायन के
'माँझी मकरा के गढ़' भी कहेला। पता ना माँझी मकरा आ राजा समतली खाँ में का
रहे, आकि ओह क्षेत्र के कवनो दोसर स्थल माँझी मकरा के गढ़ रहे। तरह-तरह के किम्वदन्ती
से भरल ई ऐतिहासिक आ रहस्यमय 'उसरायन', आजो, सरकार के पुरातत्व विभाग के
शिकार बा।

सरयू के बायाँ किनार, सिसवन (सिवान) से लेके छपरा शहर का पूरब गंगा-
संगम तकले, साधु-सन्त, संन्यासी, साधक आ ऋषियन के तपोभूमि रहल बा, जवना का
ई माँझी पड़त बा। जनश्रुति बा कि रामजी के बारात जनकपुर जात खानी सिसवन
कइले रहे। बारात के उपयोग खातिर जगह-जगह पोखरा खोनावल गइल रहे, आ आरी-
इमली के गाछ लगावल गइल रहे। एगो फैकड़ा के ई पाँती एकर सबूत पेश करेला कि-"
घाट, जनकपुर डेरा, आवऽ तारे रामधारी, पोखरा खोनावऽ तारे, पोखरा के आरी-आरी
लगावऽतारे।" दरौली का लगे दोन गुरू द्रोणाचार्य के आश्रम रहे, अइसन लोग कहेला।

माँझी में नदी का किनारे अनेक साधु-सन्त के आश्रम चिरकाल से रहल आइल
बाबा धरनी दास के आश्रम एही माँझी में सरयू का किनारे आजो मौजूद बा। आउर आगे,
के रिविलगंज आ तब के गोदना में गौतम ऋषि के स्थान रहे, जहाँ पाषाणी अहल्या के
खातिर, विश्वामित्र का साथे, रामजी का आवे के पड़ल रहे।

छपरा के धर्मनाथजी के मन्दिर के महिमा प्रसिद्ध बा, आ दहियावाँ दधीचि
आश्रम-स्थल रहल बा, जइसन लोग बतावेला। पूरब का ओर चलीं त आमी में अम्बिका
के मन्दिर एगो सिद्धपीठ मानल जाला। फेर, आउर आगे, चिरान, मयूरध्वज आ सती-
स्थल एह सम्पूर्ण क्षेत्र के पौराणिक महत्ता के कथा कहेला। आउर आगे पड़ी सोनपुर, जहाँ
हरिहरनाथ के सुप्रसिद्ध मन्दिर आ गज-ग्राह के पौराणिक आख्यान जन-जन के आस्था के
रहल बा। सोनपुर के विश्वप्रसिद्ध मेला सारण्य-मण्डल के एगो विशिष्टता बा।

बाबा धरनीदास माँझी के माटी के देन रहले। उनकर जनम आ कार्यक्षेत्र माँझी
रहल, जहाँ उनकर वंशधर लोग आजो मौजूद बा आ उनका आशीर्वाद से फरत-फुलात
बा। अपना गृहस्थ जीवन में बाबा, राज के मोलाजिम रहले, आ खाता-बही लिखेवाला मुंशी
काम करत रहले। साधक त ऊ बचपने से रहले। लोग कहेला कि एक बेर बही लिखत-लिखत
ऊ उठ के घड़ा के पानी अपना बही पर गिरावे लगले। चारो ओर से लोग हाँ-हाँ करत पूछल
ई का करत बानी। बाबा कहले कि पुरी में जगन्नाथजी का मन्दिर में आग लागल बा, उहे
बानी। ई बात राजा तक पहुँच गइल, त ऊ एह बात के तसदीक करे खातिर आपन
कर्मचारी के जगन्नाथपुरी भेजलन। त उहाँ पता चलल कि ओही दिने, ओही समय में,
आग लाग गइल त बिहार से आइल एगो साधु पानी उड़ेल के आग बुतवलस। एह
जानकारी भइला पर राजा त उनका के बहुत आदर देबे लगले, बाकिर बाबा धरनीदास
छोड़ के संन्यासी हो गइले, आ परिवार से अलग, सरयू के किनारे आश्रम बनाके रहे लगले।
आश्रम आजो कायम बा। ओही घरी के उनकर लिखल ह कि-"अब नोकरी ना करबि
अब राम नाम सुधि आई।" उनकर शिष्य लोग उनका साधना के परम्परा बढ़ावल, जे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...का रूप में प्रसार पवले बा।

माँझी के ई गाँव हिन्दी के विशिष्ट पत्रकार बाबू राजवल्लभ सहाय के जन्मभूमि ह। ...ब जी काशी के दैनिक 'आज' आ साप्ताहिक 'समाज' के सम्पादन में, ज्ञानमंडल के 'वृहत ...कोश' के निर्माण के, आ काशी विद्यापीठ में ग्रीस-रोम के इतिहास के प्राध्यापन में लागल ...। सेवानिवृत्ति का बाद ऊ फेर अपना एह जन्मभूमि में लवट के रहे लागल रहले, जहाँ ...तीस बरिस पहिले उनकर देहावसान हो गइल।

माँझी के साहित्य पुस्तकालय बिहार के बहुते पुरान पुस्तकालय ह, जहाँ पुरान ग्रंथन ...पुरान पाण्डुलिपियन के अच्छा-खासा संग्रह रहल बा। पता ना, आज ऊ कवना स्थिति में ...सरकारी सहयोग के अभाव में अइसन संस्थन के का दशा होत होई, सहजे अनुमान कइल ...सकेला।

माँझी से सटले, ताजपुर गाँव के सुकवि रामफल राय भारतेन्दु-युग के प्रसिद्ध आ ...कवि रहले, जे ब्रजभाषा में उत्तम कविता करत रहले। ऊ पचबेनिया (सिवान) के सुप्रसिद्ध ...कवि चन्देश्वरी कवि के शिष्य-परम्परा में रहले। उनकर लिखल ग्रंथन के पाण्डुलिपि उनका ...लोग का पास होई। 'बिहार का साहित्यिक इतिहास' लिखत खानी आचार्य शिवपूजन ...आंकरा के उपरावे के बहुत कोशिश कइले, बाकिर उनकर कुछ छन्द छोड़ के उनका हाथे ...लाग सकल। परिवार के थाती बूझ के, भावनावश, उनकर वंशधर लोग पाण्डुलिपि देवे ...चाहल। पता ना, अबहीं ऊ सब सामग्री कवना हालत में बा। पड़ोस के ब्रजभाषा कवि ...राय 'रावण संवाद' आ 'मन्दोदरी नाटक' के रचयिता रहले।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के ज्योतिष विभाग के अध्यक्ष आ 'विश्व पंचांग' के ...सम्पादक पं० रामयत्न ओझा पड़ोस के गाँव डुमरी के निवासी रहले। एह प्रखण्ड के ...में निखिल शास्त्र निष्णात पं० यशोदानन्द त्रिपाठी, पंडित पंचानन, पं० पंचानन्द मिश्र, ...कंसरी पं० पद्मनाभ शास्त्री आ मीमांसक शिरोमणि पं० वामदेव शास्त्री अपना-अपना ...के अधिकारी विद्वान मानल जात रहले।

एह क्षेत्र के सबसे पुरान हिन्दी साहित्यकारन में प्रमुख रहले पाण्डेय शीतल सिंह जे ...काल में इहाँ आके शीतलपुर गाँव बसवले, आ एह क्षेत्र में प्राचीन हिन्दी के साहित्यिक ...के नेंव डललें। ब्रजभाषा के कवि शीतल उपाध्याय 'शीतल द्विज' आ बाबू भगवत शरण ...जी) एही शीतलपुर गाँव के रहले। द्विवेदी-युग के सुप्रसिद्ध साहित्यकार दामोदर सहाय ...कविकिंकर' एही गाँव के रहले, जे पहिले ब्रजभाषा में आ आगे चलके खड़ी बोली में ...करत रहले। उनकर लिखल गद्य-पद्य के कुल अड़सठ ग्रंथन में सिर्फ एकइस गो प्रकाशित ...करत रहे। बाकिर उनकर समस्त कृतियन के मिला के 'कविकिंकर ग्रंथावली' प्रकाशित ...उनकर सम्पूर्ण कृतित्व बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् में सुरक्षित बा। एह गाँव के आगे के ...साहित्यकारन में प्रमुख नाम बा उपेन्द्रनाथ मिश्र मंजुल', पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह, ...सारंग शास्त्री, पाण्डेय कपिल आ डॉ० महेन्द्र मधुकर के, जेकरा उल्लेख के बिना एह ...साहित्यिक परम्परा के सही स्वरूप उजागर ना हो सके।

शीतलपुर के पड़ोसी गाँव बरंजा के निवासी पाण्डेय पुण्याला 'आत्मा' विशारद ...पंडित सुधी साहित्यकार रहले, जिनकर लिखल शोधपरक समीक्षात्मक निबन्ध तत्कालीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित भइल रहे। हिन्दी के यशस्वी कवि सत्यव्रत शर्मा 'सुजन' के 'मौलसिरी' के प्रकाशन उहे कइले रहले। ओही गाँव बरेजा के रामपूजन तिवारी भक्ति के कविता लिखत रहले।

एह क्षेत्र के एगो पुरान समृद्ध पुस्तकालय बा शीतलपुर के हिन्दी मन्दिर, जे पुरान हिन्दी ग्रंथन का अलावें हिन्दी के पुरान पत्र-पत्रिकन के दुर्लभ फाइल संग्रहीत बा। समय रहल बा, जब कि एह क्षेत्र के विद्यार्थी लोग आ बाहर-बाहर के शोधार्थी लोग एह पुस्तकालय के लाभ उठावत रहल। हिन्दी मन्दिर के तत्वाधान में समय-समय पर साहित्यिक सम्मेलन आयोजन आ हर साल दशहरा का छुट्टी में नाटक खेले के सिलसिला इहाँ रहल बा, जवार भर के लोग शिरकत करत रहल बा। बाकिर अब जमाना बदल गइल बा, आ गाँव-गाँव सांस्कृतिक आयोजनन के लोप होखे लागल बा।

एह प्रखण्ड के पिलुई-इनायतपुर गाँव के निवासी रहले रामचरित्र भक्त 'मधुकर' जिनकर ब्रजभाषा आ खड़ी बोली में लिखल सत्रह गो प्रबन्ध काव्य के पाण्डुलिपि बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के संग्रहालय में सुरक्षित बा। एही गाँव के श्यामकिशोर श्रीवास्तव 'शाम' इनकर फारसी आ उर्दू के मशहूर विद्वान आ शायर रहले। उनकर सुपुत्र मणिशंकर श्रीवास्तव हिन्दी आ सुपुत्री शैलजा कुमारी श्रीवास्तव भोजपुरी के यशस्वी साहित्यकार भइल लोग, हालांकि इनकर वंशधर लोगन में उर्दू शायरी के परम्परा आजो कायम बा। ''शाम'' साहब के पोता सुनीत कुमार 'तंग' इनायतपुरी उर्दू के मजाहिया शायर का रूप में अखिल भारतीय स्तर पर मशहूर बाड़े।

जहाँ ले भोजपुरी-लेखन आ भोजपुरी-विषयक सक्रियता के बात बा, माँझी प्रखण्ड एह देश के सबसे जादे रचनाशील आ सक्रिय क्षेत्र रहल बा। एह क्षेत्र में भोजपुरी लेखन शुरूआत त बाबा धरनीदास से ही हो गइल रहे। ऊ जे भी ग्रंथ लिखले, भोजपुरी में लिखले। पड़ोस के गाँव घोरहट के दुर्गाचरण भारती भोजपुरी के विशिष्ट लोककवि रहले। उनकर 'फेरु' लोक में त सराहले गइल, काव्य शास्त्र के विद्वाननो से समादृत भइल। एह क्षेत्र के भोजपुरी दोसर प्रसिद्ध लोककवि भइले चंदेश्वर भारती, जिनकर गाँधी जी के हत्या पर लिखल गीत जनता में बहुत प्रसिद्ध भइल रहे- 'गावेले चंदेश्वर भारती साँच-साँच बेयनवाँ सुनऽ ए नबाबन'। लोककवियन के एह कड़ी में एगो नाम बा 'राजा पाँड़े' के, जे एह प्रखण्ड के उत्तरवर्ती शीतलपुर के रहले, आ जे लोकधुन में रसगर गीतन के रचना करत रहले। ओही गाँव के दोसर लोककवि रहले राम असीस राम, जिनकर लिखल गीत 'गति राम' नाँव के आसरा रहे। उनका एगो गीत के एगो पांती बाटे- 'रामअसीस राम कथे कथनियाँ, त गतिराम गावे भजनियाँ। ए दीनबन्धु, दुनिया के बिगड़ल रहनियाँ।' अइसन लोक कवियन में एगो रहले बरेजा के श्याम दत्त चौबे जे आजादी के लड़ाई के दौरान भोजपुरी में राष्ट्रीय गीत लिखस आ झूम-झूम गावस। शीतलपुर के साधुशरण लाल आ रासबिहारी पाँड़े जइसन कुछ आउर स्मरणीय नाम जेकर खड़ी बोली, ब्रजभाषा, अवधी आ भोजपुरी के कुछ-ना-कुछ छन्द पुरनिया लोगन के मन पर आजो चढ़ल रहेला।

आजादी मिलला का बाद, भोजपुरी में शिष्ट साहित्यिक रचना के जे दौर शुरू भइल ओकरा विकास में, एह क्षेत्र के महत्वपूर्ण योगदान रहल बा। एह क्षेत्र के गाँव शीतलपुर एह तरह से, भोजपुरी लेखन आ आन्दोलन के केन्द्र में रहल बा। जहाँ पहिले ब्रजभाषा आ खड़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हिन्दी के रचनात्मक सक्रियता रहे, उहाँ अब भोजपुरी के साहित्यिक सक्रियता उठान पर पैंतीस-चालीस बरिस का दौरान, एह राज्य के राजधानी पटना में भोजपुरी के लेखन, संगठन आ आन्दोलन का दिसाईं जे सक्रियता बनल बा, ओकरा में एह गाँव के लोगन भूमिका रहल बा। सुप्रसिद्ध भोजपुरी उपन्यास 'फुलसुंघी' के लेखक, कवि आ पत्रकार पाण्डेय कपिल, जे एह सम्मेलन के पन्द्रहवाँ अधिवेशन के अध्यक्ष रह चुकल बाड़े, एही के निवासी हवे। भोजपुरी आन्दोलन के पहरूआ का रूप में उनकर सक्रिय भूमिका आ एह सम्मेलन के संचालन में, आ 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के सुदीर्घ नियमित सम्पादन-प्रकाशन में, उनका जिनगी के बहुत बड़ भाग समर्पित भाव से लागल बा। पिता पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह, जे आजीवन हिन्दी के लेखक रहले, पटना में भोजपुरी विकसित माहौल से अनुप्राणित होके, अपना बुढ़ापा में, आपन आत्मकथात्मक आंचलिक 'घर टोला गाँव' भोजपुरी में लिखले। भोजपुरी अकादमी, पटना के पूर्व उपनिदेशक आ अकादमी पत्रिका' के पूर्व सम्पादक श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह, जे भोजपुरी लेखन आ से गहिरे जुड़ल रहल बाड़े आ एह सम्मेलन के एगो महत्वपूर्ण अंग रहल बाड़े, एही के निवासी हवे। पाण्डेय सुरेन्द्र, डॉ॰ वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय आ पी॰ चन्द्रविनोद जइसन शील कवि-कथाकार एही गाँव के रहनिहार हवे, जिनका रचनात्मक अवदान से भोजपुरी आ कथा साहित्य के परिपक्वता आ स्तरीयता सुलभ भइल बा। करूणानिधान केशव मिश्र एही गाँव के हवे जिनका रचनात्मक आ संगठनात्मक अवदान से भोजपुरी लेखन आंदोलन के बरोबरे बल मिल रहल बा। भोजपुरी कविता में नवलेखन के नवोदित प्रतिभा सिन्हा, आ गीत-गजल के उदीयमान मेधा गरिमा बन्धु शीतलपुर के बेटी ह लोग। एही के बेटी रहली स्वर्गीया रामदुलारी, आ पतोह हई सुशीला पाण्डेय, जिनकर भोजपुरी लोककथा संकलन पुस्तकाकार प्रकाशित होके भोजपुरी लोककथा के सही स्वरूप उजागर कर रहल

आज-हमरा इयाद आवत बाड़े बरेजा गाँव के रघुनाथ चौबे, जे सही माने में जन-जीवन के कवि रहले आ साहित्यिक गतिविधि में उनकर बड़हन हाथ रहत रहे। आ अब कि एह सम्मेलन के अठारहवाँ अधिवेशन इहाँ हो रहल बा, उनकर अभाव हमनी का बहुत महसूस हो रहल बा।

एह माँझी प्रखण्ड के मौजूदा भोजपुरी साहित्यकारन में पहिले चर्चित साहित्यकारन में विशेष रूप से सक्रिय बाड़े- डॉ॰ भूदेव शर्मा, दक्ष निरंजन शम्भु, तंग इनायतपुरी, मिश्र, राधिका रंजन सुशील, सुधीर प्रियरंजन, सत्येन्द्र नारायण चतुर्वेदी, राकेशरंजन, श्रीहरि मिश्र आ साकेत रंजन प्रवीर। ओने, ढोंढ़ स्थान में पिछला दू- अढ़ाई दशक से विशेष सक्रिय संस्था कार्यशील बा -' भोजपुरी भारती', जवना का तत्त्वावधान में, आ प्रो॰ विभाकर का संयोजकत्व में, पचास-साठ भोजपुरी कवियन के जमात माँझी, एकमा चन्द्रपुर प्रखण्ड के कवनो-ना-कवनो [illegible] मासिक रूप से, भोजपुरी के कवि-सम्मेलन करेला। एह जमात के कविलोग अपना-अपना सायकिल पर चलके जवना गाँव में आपन सम्मेलन करेला ऊ गाँव गह गह करे लागेला आ रात-भर भोजपुरी गीतन के लहरा में झूमे लागेला। भारती अपना कुछ सदस्य.कवियन के छोट-बड़ संग्रहो प्रकाशित कइले बा; आ अइसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

किताबन के संख्या तीन दर्जन से कम ना होई। जब-तब भोजपुरी नाटकन के स्क्रीप्ट
एह संस्था के एगो उपलब्धि रहल बा।

शीतलपुर से लगले, एकमा प्रखण्ड में पड़ेवाला नवतन गाँव के निवासी हवें
के पहिलका उपन्यास 'बिंदिया' के लेखक श्री रामनाथ पाण्डेय, जिनकर भोजपुरी कथा-
के विकास में अनुपम आ बहुशः योगदान रहत आइल बा, आ जे छपरा नगर में
सक्रियता में अग्रणी भूमिका निभावत रहल बाड़े।

ओही पड़ोसी एकमा प्रखण्ड के नचाप गाँव के रहले, भोजपुरी खातिर
स्वर्गीय राधेश जी, जे आपन समूचा सम्पत्ति भोजपुरी का काम में झोंक दिहले आ आपन
जिनिगी भोजपुरी खातिर दाव पर लगा दिहले।

आ ओही पड़ोसी एकमा प्रखण्ड के मुबारकपुर गाँव के निवासी हवें बिहार
राज्यमंत्री, आ आज के एह अधिवेशन के मनोनीत अध्यक्ष डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह, जे अपना
से भोजपुरी साहित्य के कई एक अनमोल ग्रंथन के अवदान दे चुकल बाड़े, जे बी
बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर में भोजपुरी के पढ़ाई के अन्यतम सूत्रधार रहल बाड़े
सम्मेलन के कोई आधा दर्जन बेर अधिवेशन करवले बाड़े, आ जे इहवाँ से लेके
राजधानी दिल्ली तकले भोजपुरी के अलख जगावत रहल बाड़े।

एह अधिवेशन के मनोनीत उद्घाटनकर्ता माननीय श्री प्रभुनाथ सिंह, एम॰ पी॰
के सच्चा सपूत बाड़े, जे भारत के संविधान के अष्टम अनुसूची में भोजपुरी के शामिल
आपन मिशन बना चुकल बाड़ें। बहुत पहिले, एकरा खातिर ऊ संसद में संविधान
विधेयक भी पेश कर चुकल रहलें। दू साल पहिले, राजधानी दिल्ली में, विश्व भोजपुरी
के विशाल आ अभूतपूर्व आयोजन कराकें, ऊ केन्द्र सरकार के ई देखा चुकल बाड़े कि
के आउर उपेक्षा अब बर्दाश्त ना कइल जाई। भोजपुरी के मंच पर भोजपुरी के पक्ष में बोलेवाला
अइसे त कई एक नेता अइले, बाकिर मंच से उतर के जाते ऊ भोजपुरी के भुला गइले
प्रभुनाथ सिंह, एम॰ पी॰ राजनीति के क्षेत्र के पहिल व्यक्तित्व बाड़े, जे व्यावहारिक रूप में,
में, भोजपुरी के आर-पार के लड़ाई लड़े पर उतारू हो गइल बाड़े। हमनी के एह बात के
गौरव बा कि भोजपुरी के राजनीतिक लड़ाई लड़े वाला ई भोजपुरी-सेनानी एही संसदीय
क्षेत्र के प्रतिनिधित्व करत बा।

आज के ई आयोजन, एह क्षेत्र के लोकप्रिय जन-नेता आ सारण जिला परिषद के
अध्यक्ष स्वर्गीय बाबू दलन सिंह के स्मृति-पर्व पर हो रहल बा। आज, जहाँ, जवना उच्च विद्यालय
का परिसर में हमनी एकट्ठा भइल बानीं, ऊ उच्च विद्यालय बाबू दलन सिंह के स्मृति
जवना के नाम का साथे उनकर नाम जुड़ के एकाकार हो गइल बा। एह अवसर पर हम
ओर से आ अपने सभन का ओर से, उनका पुण्य स्मृति में सरधा के फूल चढ़ावत बानीं।

एही शब्दन का साथे, हम अपने सभन के बारम्बार हृदय से स्वागत करत बानीं
अपने सभन के लायक, स्वागत में जे भी त्रुटि रह गइल बा, ओकरा खातिर, दसों जोड़े
माफी माँगत बानी। जय भोजपुरी!

माधव सिंह
स्वागताध्यक्ष, अठारहवाँ अधिवेशन
अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य

माँझी, सारण, बिहार
7 फरवरी, 2003

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी आन्दोलन के दशा आ दिशा

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

अठारहवाँ अधिवेशन, माँझी (सारण, बिहार)

(7-8 फरवरी, 2003)

के

अध्यक्ष

डॉ० प्रभुनाथ सिंह

के

भाषण

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अठारहवाँ अधिवेशन के अध्यक्षता विम्मा हमरा माथा पर ठोकइला के सूचना टेलिफोन पर पटना से आदरणीय पाण्डेय जी जब दिहलीं त हम अकचका गइनी । कुछ देर तक हमरा ठकुआ मार दिहलस । अइसन अदना आदमी के एतना बड़ा सम्मान कुछ उटपटांग जइसन लागल । साहित्य के सृजन के क्षेत्र में एक से एकाल लोग पड़ल बा जे लोग विद्वता आ उमिर से हमरा से श्रेष्ठ बा । हम उहाँ से कहनी कि ई अच्छा काम ना भइल ह । ई हमार लोग का बुझाई कि "धिया ससुरा ना जाली, मने-मने गाजे ली ।" हम अपना के सही साबित करे खातिर कवन किरिया खाईं, समझ में नइखे आवत । हमरा त बुझात बा कि "छुछुन्दर का मुँड़ी पर चमेली के तेल" वाली कहावत शत-प्रतिशत रहल बा । एह निर्णय के पृष्ठभूमि के बारे में जब उहाँ का विस्तार से बतवनी त लल कि एह आग्रह के हमरा स्वीकार कर लेवे के चाहीं । भोजपुरी आन्दोलन में एगो झंडा ढोवे वाला कार्यकर्त्ता आ सिपाही के रहल बा । उहाँ के बात से लागल विशेष परिस्थिति में हमरा के ई काम सँउपल जा रहल बा । आ प्रवर समिति के ई संसम्मत बा । संकट बा कि सम्मेलन से जुड़ल सब लोगन के कवना तरह से एक चलल जाव ताकि एकर अधूरा पड़ल काम पूरा कइल जा सके । चुनौती से भरल ई ना के अपने सब सउँपले बानी त एकरा के आदेश मान के एगो जुझारू कार्यकर्त्ता के पूरा कइल हमार फर्ज बनत बा । सब कुछ साफ होके सामने आ गइल कि एह अधि अध्यक्षता हमरा के सम्मान करे का दृष्टि से नइखे सऊँपाइल बल्कि एगो टहल दृष्टि से देहल गइल बा । प्रवर समिति एह काम का योग्य हमरा के मनले बा, ओह समिति के तमाम सदस्य लोगन का प्रति हम हृदय से आपन आभार व्यक्त कर ।

भोजपुरी आन्दोलन के विश्लेषण आ लेखा जोखा यदि कइल जाव त पता चली कि विभिन्न तरह के लोग विभिन्न रूप में बरिसन से जुड़त आ रहल बा । एक तरफ आन्दोलन के उपलब्धि के लम्बा सूची भी बा आ दोसरा ओर एकर कमजोरी भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

उभर के सामने आइल बा, जवन समाधान खातिर मुँह बवले खड़ा बा। सब मिला-जुला हमरा कबो निराशाजनक स्थिति नइखे लागल। आज से पचास बरिस पहिले भोजपुरी आ साहित्य के जवन स्थिति रहे आज ऊ नइखे। आज के तिथि में भोजपुरी में स्वतंत्र रूप हर विधा में लिखा रहल बा। ई भोजपुरी साहित्य के तुलना दुनिया के कवनो भाषा के से आज गर्व से सीना तान के कइल जा सकेला। आज भोजपुरी के पढ़ाई विश्वविद्यालय पर एम. ए. तक हो रहल बा। काम भोजपुरी आन्दोलन के चलते ही भइल बा। बाकी भी जरूर होई, यदि एह आन्दोलन के सही नेतृत्व मिले आ एकर तेवर तनी जुझारू लेवे। ई तब संभव बा जब राजनेता, भोजपुरी भाषाभाषी लोग, भोजपुरी के साहित्यकार संस्कृति-कर्मी लोग एकजुट होके भोजपुरी के हक के लड़ाई लड़े खातिर तन-मन-धन सड़क पर उतर जाव।

भोजपुरी आन्दोलन आ राजनेता

भोजपुरी आन्दोलन के नेतृत्व अब तक राजनेता आ साहित्यकार दुनू तरह के लोग करत आइल बा। बहुत सब चीज अइसन बा जवना के आन्दोलन के माध्यम से प्राप्त खातिर कवनो ना कवनो राजनेता के आगे आके नेतृत्व करे के पड़ी जइसे भोजपुरी संविधान के अष्टम सूची में शामिल करे के सवाल, साहित्य एकाडेमी से मान्यता दिलाने के सवाल आ राज्य लोकसेवा आयोग आ केन्द्रीय लोकसेवा आयोग के परीक्षा में भोजपुरी एगो विषय का रूप में स्वीकार करे के सवाल। गाहे-बेगाहे बिहार विधानसभा आ संसद में सब सवाल उठावल भी गइल बा लेकिन एह सम्बन्ध में कवनो ठोस नतीजा सामने नइखे आइल। एकर मतलब ई भी नइखे कि राजनेता लोग अबतक एह सम्बन्ध में कवनो काम नइखे कइले।

भोजपुरी भाषा-भाषी लोग बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री आ भोजपुरी माटी के लाल स्व० केदार पाण्डेय के कइसे भुला सकेला जेकरा प्रयास से भोजपुरी एकाडेमी के स्थापना बिहार में भइल। दिल्ली प्रदेश के विधायक आदरणीय महाबल मिश्र जी के योगदान के कइसे नकारल जा सकेला जेकरा प्रयास से दिल्ली सरकार "भोजपुरी मैथिली एकाडेमी" के स्थापना के घोषणा कइले बिया। भोजपुरी माटी के लाल सांसद प्रभुनाथ सिंह के जुझारू नेतृत्व के तेवर के कइसे भुलाइल जा सकेला जे संविधान के अष्टम सूची में भोजपुरी के शामिल करे के सवाल संसद में उठा के सरकार से ई आश्वासन ले चुकल बाड़ें कि केन्द्रीय गृह विभाग एगो समिति बना के एह माँग पर गंभीरता से विचार करी। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के, जेकरा के ठेठ भोजपुरिया नेता कहल जा सकेला, बोल-चाल पहिनावा-ओढ़ावा, आ बात-विचार का दृष्टि से उनकर भी भोजपुरी भाषा का प्रति प्रेम जग-जाहिर बा। इनकर हिन्दी आ अंग्रेजी दुनू के भाषण केहू ना समझ पाई जे भोजपुरी नइखे जानत-बुझत। भोजपुरी के पढ़ाई एम० ए० में शुरू करावल उनकर व्यक्तिगत देन बा जेकरा खातिर भोजपुरी संसार उनकरा प्रति आभारी बा। उ चहिते त आवरू कुछ कर सकत रहले ह। मैथिली हिन्दी लोकसेवा आयोग में एगो पत्र का रूप में स्वीकृत रहल ह। ओकरा साथे यदि भोजपुरी के जोड़ देले रहते त अब तक भोजपुरी भाषा-भाषी लोग निहाल हो गइल रहित, लेकिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के बिहार लोकसेवा आयोग से हटा के मैथिली भाषा-भाषी लोग के अनिष्ट त कइबे भोजपुरी भाषा-भाषी लोग के आस पर भी पानी फेर देहले। भोजपुरी माटी के एह अइसन अपेक्षा केहू ना कइले रहे। भोजपुरी माटी में लोट-पोट करत, गाय, भईंस के करत, सतुआ-भूँजा फाँकत, भोजपुरी में बराबर साँस लेबे वाला जीव जब राजनीति पर पहुँच के भोजपुरी के ही भुला गइल त ई अचरज के बात बा। भोजपुरी के ऋण आज से ऊ आज भी उतार सकत बाड़न यदि बिहार लोकसेवा आयोग में मैथिली आ दुनू के एक पत्र के रूप में शामिल करे के घोषणा कर देस। हमरा विश्वास बा कि त काल्ह भोजपुरी माई सरस्वती बन के उनका कपार पर जरूर सवार होइहें आ ई हमरा अस्थिर से उनका से भेंटो नइखे होत, ना त उनका के हम डँटिती-फटकरतीं।

भारत सरकार के पूर्व प्रधानमंत्री, भोजपुरी के गौरव आदरणीय चन्द्रशेखर जी से बड़ा अपेक्षा रहल बा। भोजपुरी से सम्बन्धित आयोजन में जब भी उनके नेवतन जाला, भाग लेले, आ भोजपुरी में अच्छा भाषण भी करेले। विश्व भोजपुरी सम्मेलन नई द्वारा उनको के "भोजपुरी गौरव" से सम्मानित भी कइल जा चुकल बा। हाल में जब भोजपुरी के सवाल सांसद प्रभुनाथ सिंह आ आउर नेता लोग उठावल आ चन्द्रशेखर भोजपुरी के पक्ष में बोले खातिर चिरौरी कइल लोग त उल्टे बोल गइले। भोजपुरी भाषी लोग के दिल पर भारी आघात जरूर लागल। एह पर भोजपुरी जगत में जेने तेने खुसी भी भइल। चन्द्रशेखर जी अपना तरह के एगो अकेले नेता बाड़े- एक नम्बर के हो सकेला कि भोजपुरी के पक्ष में संसद में ना बोले के उनकर कवनो लाचारी होई भोजपुरी सम्मेलन, नई दिल्ली के प्रथम अधिवेशन में मुख्य अतिथि का रूप में मंच आदरणीय चन्द्रशेखर के स्वागत भाषण के क्रम में हम कहले रहीं कि, भोजपुरी गौरव चन्द्रशेखर जी एगो अइसन नेता बाड़े जिनका के जब एक नाद आ खूँटा पर बान्हे के प्रयास भइल, त ऊ नाद भी फोरले आ खुँटवो उखाड़ के भाग चलले। ई संस्कृति के एगो विशेषता रहल बा कि एकरा के बाँध के राखल ना जा सके। यदि ई कोशिश त दुनिया में भोजपुरिया लोग आ भोजपुरी संस्कृति ना पसरित। शायद चन्द्रशेखर माने में भोजपुरी संस्कृति के प्रतीक बाड़े। हम इहो कहले रहीं कि चन्द्रशेखर जी देश अइसन नेता बाड़े जिनका जब भी क्रोध आवेला त जवना लाठी से ऊ दोसरा के कपार ओही लाठी से ऊ अपनो कपार फोरे ले। इहो शायद भोजपुरी संस्कृति के एगो पहचान में जब ऊ कवनो गलत काम कर दी त गलती के एहसास भइला के बाद पश्चाताप अपनो कपार फोर लेला। आज ना त काल्हे चन्द्रशेखर जी के एहसास होई। ऊ चाहे जे करस, भोजपुरी माटी के एकबाल उनको साथे जरूर बा। भोजपुरी भाषा-भाषी उनका पर आज भी नाज बा। भोजपुरी के सम्बन्ध में उनका विचार से निराश होखे नइखे। पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का भी दिमाग में ई बात रहे कि भोजपुरी का हिन्दी के अनिष्ट हो जाई, लेकिन जीवन का अन्तिम घड़ी में उनका एह बातो के भइल रहे कि उनकर सोंच सही ना रहे। चन्द्रशेखर जी भी रास्ता पर अइहें, उनका के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Mo

छोड़े के नइखे, बल्कि पोंछिवले रहे के बा।

मिला-जुला के समुचा स्थिति के देखला-परखला के बाद राजनेता लोगन में सारा भोजपुरी भाषा-भाषी लोग के आँख श्री प्रभुनाथ सिंह सांसद पर ही टिकल बा। हर सार्वजनिक सभा में ऊ आपन भाषण अपने मातृभाषा भोजपुरी में ही करेले। भाषा के लड़ाई लड़े में आज ऊ अगुआई कर रहल बाड़े। तन-मन-धन से भोजपुरी विकास में ऊ लागल बाड़े। सांसद प्रभुनाथ सिंह के छवि एगो बाहुबली नेता के रहल बा लेकिन भोजपुरी के प्रति उनकर समर्पण आ प्रेम देखला का बाद हमरा बुझाला कि एह आदमी के लोहा के छाती के अन्दर संवेदनशीलता के एगो सोता भी बा जवन बाँध तुड़ के छलक लहर आवते रहेला। भोजपुरी आन्दोलन के नेतृत्व के जिम्मेवारी पूर्ण रूप से उनका लेवे परी। बीस करोड़ भोजपुरी भाषा-भाषी तन-मन-धन से उनका पीछे बाड़े। दोसर कवनो भी नइखे दिखाई पड़त।

बिहार सरकार के राज्यमंत्री, श्री उदित राय जी भी जी-जान से भोजपुरी आन्दोलन के एगो दिशा देबे में लागल बाड़े। भोजपुरी के नाटककार पद्मश्री भिखारी ठाकुर के कीर्ति पताका आसमान में फंहरावे खातिर भिखारी ठाकुर लोकसाहित्य महोत्सव के आयोजन बरिसन से करत आ रहल बाड़न। भोजपुरी-सेवी लोग के मान-सम्मान में ऊ हमेशा सक्रिय रहल बाड़न।

भोजपुरी आन्दोलन आ भोजपुरी साहित्यकार

साँच पूछीं त भोजपुरी आन्दोलन के नेतृत्व आज तक भोजपुरी साहित्कार लोग करत आइल बा। एक तरफ भोजपुरी-साहित्य के सृजन आ दोसरा ओर भोजपुरी के हक लड़ाई में लाठी भाँजे के भी काम ई कौम अबतक करत आइल बा। केतना लोग अपना जीवन के सबकुछ अबतक भोजपुरी का पीछे पागल हो के लुटा चुकल बा। स्व० राधा मोहन 'राधेश' के जीवन सब लोग के सामने बा। ई आदमी भोजपुरी-साहित्य के सृजन, प्रकाशन आ आन्दोलन के गति देवे के पीछे आपन जमीन-जायदाद सबकुछ फूंक के फाकाकसी जीवन वसर करते एह दुनिया से गुजर गइल। भोजपुरी के प्राय: अधिकांश साहित्यकारन के जिन्दगी कमो-बेश राधेश जी के तरह ही गुजरल बा या गुजर रहल बा। अपना खून-पसीना के कमाई लगा के भोजपुरी के अपना किताबन के प्रकाशन कइला के बाद मुफ्त में बाँट के आपन सबकुछ गँवा के ई बलिदानी जमात अपना चेहरा पर कभी भी सिकन ना आवे दिहलस आ भोजपुरी के सेवा में आपन सर्वस्व न्योछावर कर दिहलस। आज भोजपुरी के समृद्ध साहित्य, जवन सामने आइल बा, ऊ कवनो सिआही से नइखे लिखाइल, बलुक भोजपुरी साहित्यकारन का खून-पसीना से लिखाइल बा।

भोजपुरी-भाषा-भाषी लोग भी कम बदेल नइखे। अंग्रेजी आ हिन्दी के किताब पढ़े के होई त पाकिट से दाम निकाले में तनिकों हिचक ना होई, लेकिन भोजपुरी के किताब किन के पढ़े के होई त एह लोग के नानी मरे लागेली। मुफ्त लाल ग्रुप के भोजपुरी पाठक भोजपुरी के फटेहाली के स्थिति खातिर कम जिम्मेवार नइखन। यदि ई लोग भोजपुरी के विकास चाहत बा त एह लोग के अपना आचरण में बदलाव ले आवे के होई। यदि अपना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ लोग आपन परिवार आ बाप-माई के पालत-पोसत बा त ओह कमाई के कुछ
बीड़ी, सिगरेट के अलावा भोजपुरी माई के आँचर में भी आवे के चाहीं। भोजपुरी
धोखा के कटोरा ई लोग कब तब घुमवाई ? भोजपुरी भाषा-भाषी लोग का अपना
के मान-सम्मान के रक्षा में आगे आवे के चाहीं। कभी-कभी त गैरभोजपुरी भाषा-भाषी
पुरी खातिर कुछ कर दिखावे में भोजपुरिया लोग से बाजी मार के आगे निकल गइल
बात कतना लोग के मालूम बा कि बिहार विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पढ़ाई शुरू
के आन्दोलन के नेतृत्व भले डॉ॰ ललन प्र॰ सिंह, प्राचार्य भोलानाथ सिंह, डॉ॰ सिद्धेश्वर
रिपुसूदन प्र॰ श्रीवास्तव आ डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह कइले होखस, लेकिन एकर सारा
भोजपुरी भाषा-भाषी बिहार विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति डॉ॰ टी॰ बी॰ मुखर्जी
बात बा। अगर ऊ ना चहिते त भोजपुरी के गौरवमय इतिहास के ई पन्ना ना खुलित।
साहब के एह ऋण से भोजपुरी कबो उऋन ना होई। अइसन लोग भी बिहार विश्वविद्यालय
पति भइल जे लोग भोजपुरी भाषा-भाषी रहे लेकिन केहू के पाले भोजपुरी के प्रति ऊ
उजागर भइल, जवन मुखर्जी साहब दिखा के युगपुरूष के दर्जा पा गइले।

भोजपुरी के अब तक जवन भी सम्मानजनक स्थिति प्राप्त भइल बा, ऊ चाहे बिहार
पुरी एकाडेमी के स्थापना, दिल्ली में भोजपुरी मैथिली एकाडेमी के स्थापना आ
विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पढ़ाई शुरू करावे के काम, एह सब का पीछे भोजपुरी के साहित्य-
के ऊ ऊर्जा बा जवन भोजपुरी में स्तरीय साहित्य के सृजन कर के एह लायक बनवले
ता के चलते कुछ हक के प्राप्ति भइल बा आ आगे भी होई। भोजपुरी-साहित्य-सृजन
-साथ भोजपुरी आन्दोलन के गति आ दिशा देवे के काम जे साहित्यकार लोग कइले
एगो लमहर सूची बा- हर काल के। भोजपुरी के संत साहित्य भोजपुरी आन्दोलन
के काम कइले बा। हम अपना होश में जे लोग के एह रूप में देखत आवतानी
में प्रमुख रूप से स्व॰ महेन्द्र शास्त्री, स्व॰ रघुवंश नारायण सिंह, दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह
नर्मदेश्वर सहाय, पाण्डेय कपिल, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, डॉ॰ राजेश्वरी शाण्डिल्य, पं॰
चौबे, डॉ॰ विवेकी राय, प्रो॰ ब्रजकिशोर, स्व॰ सिपाही सिंह श्रीमन्त, डॉ॰ रसिक बिहारी
निर्मोक', स्व॰ सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी, कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य', हवलदार त्रिपाठी,
पाण्डेय, उमाकान्त वर्मा, सतीश्वर सहाय वर्मा, अशान्त, अनिरूद्ध, बसन्त कुमार,
किरण, अविनासचंद्र विद्यार्थी, महेश्वराचार्य, लक्ष्मण पाठक प्रदीप, संत कुमार
प्रदीप नारायण झड़प, डॉ॰ भोलानाथ गहमरी, डॉ॰ रामविचार पांडेय, चंद्रशेवर मिश्र,
देव उपाध्याय, स्व॰ जमादार भाई, डॉ॰ विद्यानिवास मिश्र, डॉ॰ ईश्वर चन्द्र वर्मा,
बी॰ ए॰, रामनाथ पांडेय, स्व॰ रामेश्वर सिंह 'काश्यप', डॉ॰ बच्चन पाठक 'सलिल',
विश्वनाथ सिंह, शिवनाथ चौबे, स्व॰ रासबिहारी पांडेय, डॉ॰ आंजनेय आदि लोग के
जा सकेला।

कुछ अइसन भी साहित्यकार बाड़न जवन भोजपुरी के साथ-साथ हिन्दी के भी
हल बाड़े। अईसन लोग एक रफ्तार से दुनु भाषा में आपन रचना कर रहल बा। आ
साहित्यकार के दर्जा में बा। अइसन भी साहित्यकार लोग के कमी नइखे जवन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Funding by IKS-MoE-Grant-2. RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gt

लोग एह सोच के शिकार हो गइल बा कि भोजपुरी के बढ़न्ती से हिन्दी के अनिष्ट हो जाई। अइसन लोग शायद राष्ट्रभाषा आ मातृभाषा में अन्तर करे में कहीं भूल कर रहल बा। हे भोजपुरी भाषा के उत्थान में लागल बा ऊ सब लोग राष्ट्रभाषा हिन्दी आ मातृभाषा भोजपुरी दुनु खातिर कटे-मिटे के तइयार बा। ''जय हिन्दी, जय भोजपुरी'' भोजपुरी आन्दोलन के नारा रहल बा। शायद एही तरह के भ्रम पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी का रहल जवन जीवन के अन्तिम समय में पहुँच के दूर भइल। भोजपुरी माटी के सपूत आ हिन्दी के गौरव आदरणीय नामवर जी के भी अपना गुरु पं० हजारी प्रसाद द्विवदी जी के पहिलका सोच अभी दिमाग से बाहर नइखे भइल। हालाकि उहाँ का अब सत्तर पार कर गइल बानी आ हमनी का उम्मीद बा कि अपना गुरूए साहब खानी ऊहों के भी भ्रम अब जल्दिये टूटी। नामवर जी पर भोजपुरी माटी का गौरव बा। भोजपुरी से जुड़ल साहित्यिक समारोह में हम जब भी आमंत्रित कइनी बानी ऊहाँ का आइल भी बानी। भोजपुरी में भाषण भी कइले बानी, ओही ऊँचाई आ तेवर जवना में ऊहाँ का हिन्दी में बोली ले। भोजपुरी माटी से पैदा भइल हिन्दी के महान कवि और लेखक लोग के कलम जब भोजपुरी में भी उठ जाइत त भोजपुरी साहित्य तनी आउरी एगो ठूँठी ऊँच जरूर लागित। हमरा एह बात के खुशी बा कि हिन्दी के स्थापित कवि आदरणीय डॉ० केदारनाथ सिंह जी के पीछे-पीछे लागल लागल कुछ रास्ता पर ले आइल बानी। नामवर जी अइसन लोगन का पीछे भी हम हाथ धो के पड़ल बानी। देर-सबेर अइसन लोग का भी भोजपुरी माई के दूध के ईयाद आयी त एक दिन धधा के जरूर आई लोग। हम हार मानेवाला जीव ना हईं आ अइसन सब निमन काम में हम थेथरई भी करे से संकोच ना करीं।

भोजपुरी से जुड़ल साहित्यकार लोग का अभी बहुत कुछ करे के बाकी बा। भोजपुरी साहित्य के कुछ अइसन भी विधा बा जवना में कुछ ज्यादा लिखे के जरूरत बा- जइसे भोजपुरी व्यंग, नाटक, एकांकी, शोध-ग्रन्थ आदि। भोजपुरी में भोजपुरी साहित्य के बड़ शब्दकोश एगो उच्चकोटी के इतिहास-पुस्तक के कमी हमरा बराबर खलेला। दोसर भाषा के उत्कृष्ट साहित्य के भोजपुरी में भी अनुवाद आवे के चाहीं। अइसन सब काम तबे हो सकेला जब साहित्य एकाडेमी से भोजपुरी के मान्यता मिल जाव। ओकरा से भोजपुरी प्रकाशन, आ भोजपुरी के साहित्यकार लोग का आर्थिक सहायता आ प्रोत्साहन के जोगाड़ हो जाई। अइसन बहुत सब भाषा के संविधान के अष्टम सूची में सामिल कइल गइल बा जवना के बोले वाला लाख में होइहें आ प्रकाशित पुस्तकन के भी संख्या सैकड़न में होई', हजारन में ना। भोजपुरी के उपेक्षा से देश के एगो बहुत बड़ समाज के उपेक्षा हो रहल बा जवना के परिणाम आगे चलके गंभीर भी हो सकेला।

आज उदारवादी युग के दौर चल रहल बा। सरकारी साधन पर बहुत भरोसा कइला से धोखा भी हो सकेला। भोजपुरी प्रकाशन के आर्थिक संकट से उबारे खातिर जरूरी बा एगो **''भोजपुरी प्रकाशन ट्रस्ट''** के व्यवस्था कइल। दस-बीस लाख के उपाय कर के ओहि राशि के संचित कोष में जमा कर दिहल जाव आ ओकरा सूद से भोजपुरी के अनुदित ग्रन्थन के प्रकाशन आ बिक्रय के व्यवस्था कइल जाव। ई विचार कवनो नया नइखे लेकिन अबतक केहू के कुबत ना भइल कि एह काम के करो। हमरा पूरा भरोसा आ विश्वास बा कि प्रभुनाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...का दिभाग पर यदि ई बात चढ़ जाव त उनकरा खातिर ई कवनो कठिन काम ...जवना ईमानदारी आ निष्ठा से आज भोजपुरी आन्दोलन के एगो दमदार नेता के रूप ...उभर के ऊ आइल बाड़े, यदि एही माँड़े-भाते इहो काम कर देते त भोजपुरी माई के ...जाइत। एह काम में भोजपुरिया संस्कार के प्रतीक बिहार सरकार में राज्यमंत्री श्री ...जी के भी सहयोग मिल जाइत त ई सोना में सोहागा के काम करित।

भोजपुरी आन्दोलन आ भोजपुरी से जुड़ल साहित्यिक संस्था

भोजपुरी साहित्य के समृद्ध करे में आ भोजपुरी आन्दोलन के स्वरूप आ दिशा का ...में भोजपुरी से जुड़ल साहित्यिक संगठन के लमहर भूमिका रहल बा। गँवई स्तर से ...राष्ट्रीय स्तर तक आज भोजपुरी से जुड़ल सैकड़न संस्था अपना अवकात का मुताबिक ...साहित्य के सेवा आ आन्दोलन के हवा देवे में तन-मन से जुटल बा। अइसन सब ...के कुछ संचालक लोगन में एक दोसरा से सौतिया डाह के भी गंध मिलेला। एह ...मानसिकता से ऊपर उठे के जरूरत बा। एह संस्थन के माध्यम से जे भी कुछ करता ...भोजपुरी माई के आँचर ही भरत बा। एक दोसरा से मिल के एगो ताकत बने के काम ...बने के ना। एही मानसिकता से भोजपुरी आन्दोलन का ताकत मिल सकेला, आपसी ...से ना।

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना हमरा नजर में सबसे सशक्त ...संस्था बा जवन पच्चीसन बरिस के भोजपुरी साहित्य से सृजन का ओर भोजपुरी ...के नेतृत्व प्रदान कर रहल बा। राष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी के ई प्रतिनिधि संस्था ...काल से लेके आज तक **'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका'** के प्रकाशन प्रायः नियमित ...कइल सबका बस के बात नइखे। भोजपुरी के बहुत सब साहित्यकार के जन्म देवे के ...संस्था के बा; एह में कवनो दू मत ना हो सके। एह संगठन के जेतने शक्तिशाली ...बाई भोजपुरी के सोर ओतने पसरी आ गहराई में जाई। एह संगठन के रीढ़ के हड्डी ...पाण्डेय कपिल जी बानी। भोजपुरी का दवनी में कभी पोठिया बहे वाला ई बैल ...के मोंहिया बैल बन गइल बा। कपिल जी के भोजपुरी साहित्य के यात्रा गरिमामय ...मय रहल बा। एह दँवरी में आउर लोग जे अबतक बन्हाइल रहल बा ओकरा में ...बड़े आदरणीय नागेन्द्र प्रसाद सिंह, प्रो. ब्रजकिशोर, डॉ. निर्भीक, कृष्णानन्द कृष्ण, ...भूषण मिश्र, बरमेश्वर सिंह, भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ० विवेकी राय, डॉ० अनिल ...आंजनेय', भोलानाथ गहमरी, अशोक द्विवेदी, प्राचार्य विश्वनाथ सिन्हा, प्रो० विश्वरंजन, ...किशोर पाण्डेय, प्रो० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय आदि। एह जमात में आपसी बहसा-बहसी ...होत रहेला जवन जीवन्त संस्था के एगो पहचान ह। जहाँ लोग के जमाते ना रही ...जमात ना होई आ सन्नाटा के स्थिति हो जाई जवन कवनो संस्था के मरनासन्न स्थिति ...**अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन** एगो लमहर परिवार बा जवना में हर ...के लोग जुड़ल बा। एह संस्था के विस्तार आ ताकत देवे खातिर जे बुजुर्ग लोग बा ...ओम बा भावी नेतृत्व के तइयार कइल। एकरा पर योजनाबद्ध तरीका से काम करे के ...बा। धीरे-धीरे युवा पीढ़ी पर भार देवे के काम बा आ हमनी के काम बा एह पीढ़ी के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Funding by IKS-MoE-Grant-2. Contributed by Sri Gajendra Sharma, Varanasi. Courtesy: Shri Vishwanath Sinha, Varanasi. Photo Courtesy: Shri Ajay Kumar Jaiswal, Varanasi. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2. Contributed by Sri Gajendra Sharma, Varanasi. Courtesy: Shri Vishwanath Sinha, Varanasi. Photo Courtesy: Shri Ajay Kumar Jaiswal, Varanasi. CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Funding by

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सहले रहला के, हर तरह के सहयोग कइला के । पुरान लोग के अवहेलना भी ना होखे के चाहीं । एह कहावत में दम बा कि पुराने चाउर पंथ होला । सब तरह के लोग का आपस के काम बाँट के एह संस्था के माध्यम से साहित्य सृजन के आ आन्दोलन के काम दूनू को बा ।

राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलनात्मक तेवर के साथ साहित्य सृजन के काम अखिल **भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन** भी करत आ रहल बा जवना के अगुआ रहले स्व. सर्वेश्वर त्रिपाठी, आ संचालक रहले स्व० रामबिहारी पाण्डेय । राजेश्वरी शान्डिल्य जी का नेतृत्व **भारतीय भोजपुरी परिषद्**, लखनऊ, के भी बड़हन योगदान बा । भोजपुरी साहित्य समृद्ध बनावे में **अखिल भारतीय अन्तर जनपदीय परिषद्**, उजियार, बलिया, उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में ओही तरह के काम करत आइल बा जवन अ. भा. भोजपुरी साहित्य सम्मेलन राष्ट्रीय स्तर पर कइले बा । स्व. कुलदीप नारायण झड़प, डॉ. विवेकी राय आदि अइसन लोग के जोड़ के भोजपुरी आन्दोलन के आगे बढ़ावे के काम आ भोजपुरी साहित्य के एगो ऊँचाई प्रदान करे के काम एह संस्था के माध्यम से भोजपुरी के वरिष्ठ साहित्यकार आरदणीय अनिल कुमार आंजनेय जी एक हाथ में कलम आ दोसरका हाथ में मशाल लेके कइले बानी आ कर रहल बानी। राष्ट्रीय स्तर पर बम्बई में भी एगो संस्था भोजपुरी आ लोक संस्कृति के विकास में लागल बिया जवना के नाम 'सेतु' बा । ''सेतु'' के तत्वावधान में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के आयोजन भी होत रहल बा । संस्था हाल में भोजपुरी के शब्दकोष के प्रकाशन कर के भोजपुरी साहित्य के क्षेत्र में एगो लमहर कमी के दूर कइले बिया । 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' जइसन स्तरीय पत्रिका के नियमित प्रकाशन के श्रेय भी एही संस्था के बा, जवना से भोजपुरी के गौरव बढ़ल बा । एह पुनीत काम खातिर हम भोजपुरी भाषा-भाषी लोग का तरफ से सेतु संस्था के अगुआई करेवाला लोगन के बधाई दे रहल बानी ।

भोजपुरी के अलख जगावे में आज जवन संस्था लागल बाड़ीसन ओकरा में ऊपर चर्चित संस्थन का अलावें, प्रमुख बा- जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद्, जे पचासन किताब प्रकाशित कइला का अलावे लौहनगरी जमशेदपुर के भोजपुरी के रचनात्मक सक्रियता में ओत-प्रोत कइले रहेला । बक्सर के भोजपुरी साहित्य सम्मेलन एगो अइसने संस्था रहल बा जे स्व० डॉ. कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र' के संयोजकत्व में प्रकाशन आ साहित्यकारन के अभिनन्दन नियमित रूप से करत रहल बा । पटना के इन्द्रपुरी स्थित **भोजपुरी संस्थान**, महेन्द्रू स्थित **भोजपुरी साहित्य संस्थान** आ बोरिंग रोड स्थित **भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान** अपना स्तरीय प्रकाशनन से भोजपुरी साहित्य के समृद्धि में अनुपम योगदान कइले बा । बी. आर. ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के भोजपुरी सेवी प्रोफेसर लोग के देखरेख में भारतीय भोजपुरी **साहित्य परिषद्** भोजपुरी का दिसाई सारस्वत काम करत रहल बा । कलकत्ता के पश्चिम बंगाल भोजपुरी परिषद् भोजपुरी के पुरान संस्था ह जे आजो सक्रिय बा । पूर्वांचल एकता परिषद्, दिल्ली आ भोजपुरी अवधी समाज, फरिदाबाद के कार्यकलाप राजधानी दिल्ली में भोजपुरी के माहौल बनावे में अद्भुत काम कर रहल बा । भोजपुरी के एगो बहुते पुरान, बहुत सक्रिय आ अपना ढंग के अकेला संस्था ह ढोढ़स्थान (सारण) के भोजपुरी भारती जेकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...न में स्थानीय साहित्यकारन के तीन दर्जन से बेसी किताब प्रकाशित भइल बा। एह ...ते रूप में साठ सतर कविलोग जुड़ल बा। हर महीने अपना क्षेत्र में कवनो ना कवनो ...कवि सम्मेलन के आयोजन एह संस्था के नियम बन गइल बा। विलासपुर (छत्तीसगढ़), ...भोजपुरी समाज ओह क्षेत्र में भोजपुरी के अद्भुत काम कर रहल बा। भोजपुरी के ...संस्थानमें छपरा, सीवान, गोपालगंज आ बलिया जिला के जिला भोजपुरी साहित्य ...बा जे एह अ० भा० भो० सम्मेलन के अंगीभूत रहल बा आ जे अपना-अपना जिला में ...न के काम आगे बढ़ा रहल बा।

संगीत नृत्य नाट्य के क्षेत्र में भी, भोजपुरी के गतिविधि कुछ अइसन रहल बा, ...से दोसरा भाषा-भाषी लोगन के एह भाषा के प्रति आकर्षण बनल रहेला। एह सांस्कृतिक ...भोजपुरी के मान बढ़ावे में जे लोगन के योगदान देत रहल बा, ओकरा में संतराज सिंह ..., बालेश्वर आ ब्रजकिशोर दूबे प्रमुख बाड़े, जिनका संगीत के लहरा में जनता के मंत्रमुग्ध ...कत बा। नन्दन जी त अब स्वर्गवासी हो गइले, जिनका से भोजपुरी गायन के बाहरो ...मिलत रहल बा। नृत्य का दिसाईं गाजीपुर के बाबूनन्दन के नाम हमरा नइखे भुलात, ...बेर एह सम्मेलन के अधिवेशन में अपना मण्डली का साथ धोबिया नृत्य के धूमगज्जड़ ...कल बाड़े। बलराम लाल आ उनकर सुपुत्र मधुकर आनन्द अइसन एही भोजपुरी क्षेत्र ...हवे; जिनकर नृत्य देश-विदेश के कवना कोना के प्रभावित नइखे कइले। नाटक-लेखन- ...का दिसाईं महेन्द्र प्रसाद सिंह, नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक' आ सुरेश कांटक के अवदान ...जपुरी भाषियन के भी आकर्षित करत रहल बा। पहिले बोकारो के आ अब राजधानी ...के एगो प्रमुख भोजपुरी नाट्य संस्था बा 'रंगश्री', जेकर संयोजक श्री महेन्द्र प्रसाद ...के कवनो-ना-कवनो हॉल में, हर महीने भोजपुरी के नाटक खेलत रहेले आ अपना ...प्रस्तुति से भोजपुरी के गौरव बढ़ावत रहेले।

विश्वभोजपुरी सम्मेलन, नई दिल्ली

राष्ट्रीय आ क्षेत्रीय स्तर पर कार्यरत अनगिनत संस्थन के विश्व स्तर पर जोड़े के ...से विश्वस्तर पर काम करे वाली एगो संस्था के कमी बराबर खलत रहल। एह दिशा ...भोजपुरी सम्मेलन, नई दिल्ली के स्थापना मील के एगो पत्थर के काम कइले बा आ ...राष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी के जीवित संस्थन के जोड़े के काम चल रहल बा। श्री ...सिंह, सांसद का प्रेरणा से स्थापित एह संस्था के प्रमुख उद्देश्य बा, देश-विदेश में ...बीस करोड़ भोजपुरी भाषा-भाषी के बीच आपसी समझदारी आ एकजुटता के प्रदर्शन ...साथ भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति के विकास, भोजपुरी अपसंस्कृति के समाप्ति, ...का माध्यम से भोजपुरी के हक हासिल करे खातिर जुझारू लड़ाई, भोजपुरी के ...स्तरीय साहित्य के प्रकाशन आ विक्रय के व्यवस्था, भोजपुरी के लेखक लोगन के ...सहायता, आ सम्मान देवे के काम। अपना उद्देश्य के पूर्ति में ई संस्था जी जान से ...दिया। अब तक 20-25 भोजपुरी के जानल-मानल देश-विदेश के विद्वान आ नेता ...सम्मानित करे के काम ई संस्था अपना जनम के दू-तीन बरिस का अन्दर में कर ...दिया। दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, बोकारो के राष्ट्रीय अधिवेशन, गोपालगंज के

...aiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

बिहार राज्य सम्मेलन से भोजपुरी आन्दोलन के एगो नया तेवर देवे के प्रयास विश्व भो
सम्मेलन, नई दिल्ली कर चुकल बा । प्रकाशन का क्षेत्र में बिहार विश्वविद्यालय भो
पद्य-संग्रह, बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी गद्य-संग्रह के दोसरका संस्करण के प्रकाशन
के एगो सराहनीय कइले बा, जवना का अभाव में विश्वविद्यालय स्तर पर काम भोजपु
पढ़ाई बीच भँवर में फँस गइल रहल ह । ई संस्था हाल ही में डॉ॰ भूदेव शर्मा के भोजपु
गीता अनुवाद के पुस्तक आर्थिक सहायता दे के छपववलसिया । भोजपुरी के महान कीर्तन
मास्टर अजीज के रचित कीर्तन के आ पूर्वी सम्राट आ भोजपुरी के लोकप्रिय गीतकार
महेन्द्र मिश्र के भोजपुरी रामायण के छपवावे के उत्तरदायित्व अपना ऊपर लेले बा । भो
साहित्य सृजन का क्षेत्र में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के माध्यम से जे लोग जुटल बा ओक
प्रमुख बाड़े डॉ॰ केदारनाथ सिंह, पाण्डेय कपिल, सरिता बुद्ध, सुचिता रामदीन, नागेन्द्र प्र
सिंह, डॉ॰ रमाशंकर प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह, प्रो॰ ब्रकिशोर आदि ।

सम्मेलन राजनीति आ साहित्य दुनु स्तर पर विश्व का पैमाना पर जुझारू लड़ाई
बिगुल फूँक देले बा । राजनीति का क्षेत्र में प्रभुनाथ सिंह सांसद, आ साहित्य का क्षेत्र में
केदारनाथ सिंह के नेतृत्व एगो स्वस्थ परम्परा के जन्म देले बा । एह महायज्ञ में आहुति देवे
काम विश्व में फइलल बीस करोड़ भोजपुरी भाषा-भाषी लोगन के कर्त्तव्य बनता ।

अब आगे का करे के बाः

अब आगे हमनी का मिलजुल के जवन जरूरी काम करे के बा ओह में प्रमुख
(1) भोजपुरी के संविधान के अष्टम सूची में सामिल करे खातिर आ साहि
एकाडेमी से मान्यता दिलावे खातिर श्री प्रभुनाथ सिंह, सांसद आ डॉ॰ केदारनाथ सिंह जी
नेतृत्व में जुझारू लड़ाई ।

(2) बिहार लोक सेवा आयोग के परीक्षा में भोजपुरी भाषा के एगो पत्र के रूप
सामिल करे खातिर श्री उदित राय राज्य मंत्री बिहार सरकार का नेतृत्व में जुझारू आन्दोलन

(3) राजनेता आ भोजपुरी के फरल-फुलाइल सपूत लोग का सहयोग से भोजपु
प्रकाशन ट्रस्ट के स्थापना आ निधि के जोगाड़ ।

तत्काल अभी एही तीन काम के लेके आगे बढ़ल जाव आ आन्दोलन के रूपरे
एह सम्मेलन में तय कइल जाव । ई कवनो भारी काम नइखे । भोजपुरिया लोग के हम "मान
संसाधन" ना कह के "हनुमान संसाधन" कहीले । हनुमान जी के असीम ताकत आ क्षम
रहे लेकिन उनका अपना कुबत के ज्ञान ना रहे । ओकर एहसास करवला के बाद ऊ धवल
गिरि पर्वत उठा ले अइले आ समुन्दर लाँघ गइले । भोजपुरिया जवानन के अन्दर के हनुमान
के जगा देवे के जरूरत बा । ई सब समुन्दर अपने आप लँघा जइहें ।

इहाँ उपस्थित तमाम भोजपुरी भाषा-भाषी लोग, साहित्यकार, कवि, लेखक
संस्कृतिकर्मी लोगन के प्रणाम करत बानी आ जे लोग एह सम्मेलन के अध्यक्षता कर
काम हमरा क़पार पर ठोकले बा ओह लोग के स्नेह आ आशीर्वाद के कामना करत बानी
ताकि जवना आशा आ विश्वास से हमरा के ई लोग ई काम सँउपवले बा, ओकरा के पूरा क
सकीं । भूल-चूक सब माफ करब सभे ।

जय हिन्दी ! जय भोजपुरी !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

सतरहवाँ सत्र के कार्य-विवरण (प्रतिवेदन)

(सम्मेलन के अठरहवाँ अधिवेशन में प्रस्तुत)

अठरहवाँ अधिवेशन के माननीय अध्यक्षजी, स्थायी समिति के सम्मानित सदस्यगण, अधिवेशन में पधारेवाला प्रतिनिधिगण, साहित्यकार-संस्कृतिकर्मी, गुरुजन, बहिन आ भोजपुरी के नेही-छोही भाई-बहिन सभे !

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अठरहवाँ अधिवेशन के इयादगार अवसर पर हम घाघरा नदी के तट पर अवस्थित सारण जनपद के एह पावन धरती के धूर माथ प चढ़ावत बानीं । वैदिक काल से लेके आज तकले एह हलका के धार्मिक, सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक अवदान के कतई भुलावल-बिसरावल नइखे जा सकत । नामी-गिरामी सन्तन आ महापुरूषन के कर्मस्थली-साधनास्थली रहल ई इलाका आज अपना वाजिब हक खातिर बढ़ि-चढ़ि के जनचेतना जगावे के दिसाईं अगुवाई रहल बा, उहँवें अपना महतारी भाषा के बढ़न्ती खातिर हरदम आगा-आगा रहल बा, तबे नू अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अब तक के अठारह गो अधिवेशन में से आधा यानी नौ गो अधिवेशन सारणे प्रमण्डल करवले बा आ अइसन अवसर रचल एह इलाका के फितरत रहल बा । भोजपुरी आन-बान का संगे अइसन आयोजन करावल सभकरा बूता के बात नइखे आ एकरा खातिर आयोजन समिति के अगुवा अधिवेशन के सम्मानित अध्यक्ष डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह के दरियादिली के चर्चा करत हम आपन प्रतिवेदन (रपट) पेश करेके सम्पूर्ण उपस्थिति से इजाजत लेत बानीं ।

पिछिलका सत्र में जवन सबसे दमदार आ ऐतिहासिक काम भइल, ऊ रहे भोजपुरी साहित्य विधा के दूगो जरूरी सम्पादित कृतियन के प्रकाशन । भोजपुरी गीत के संकलन 'के खिलाफ' आ सात शतक से अधिका भोजपुरी दोहा-संग्रह 'भोजपुरी सतसईं', भोजपुरिया रचनिहार-पढ़निहार लोगन के भरपूर सराहना मिलल । सम्मेलन के मुखपत्र 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के ओइसे त कारगिल लड़ाई के मोका प छपल कारगिल विशेषांक, गीत-नवगीत प केन्द्रित गीत विशेषांक आ दोहा छन्द प रचाइल दोहा विशेषांक के चर्चा में रहल बाकिर ओह से महत्वपूर्ण रहल 'संदर्भ विशेषांक', जवना में सम्मेलन के शुरू से 2001 तक के मए अंकन में छपल रचनन आ रचनाकारन के क्रमवार सूची बड़ा करीना से परोसल गइल बा । शोधार्थियन खातिर उपयोगी एह अंक के तइयार करे में संपादक आचार्य पाण्डेय कपिल के श्रमसाध्य आ सूझबूझपरक योगदान के चर्चा-चारज नइखे कइल जा सकत । सम्मेलन ऊहाँ के एह अवदान खातिर हरदम ऋणी बा ।

सतरहवाँ सत्र का दौरान कार्य-समिति के कुल्हि पाँच गो बइठक हो पावल: 2000 में 23 जुलाई के, 2001 में 21 जनवरी, 29 जुलाई, 2 दिसम्बर के आ 2003

iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

में 5 जनवरी के । पिछिलका अधिवेशन के बाद के पहिलकी बइठक में ई निरनय भइल कि सम्मेलन-कार्यालय में हफ्ता में कम-से-कम एक बेर पदाधिकारी लोग सुविधा के जाके ऊहाँ के काम निपटाई आ एक-दोसरा के तालमेल से सम्मेलन के कार्य-निष्पादन में सहयोग करी । कार्य-समिति के मंत्री लोग से अपना-अपना विभाग के योजनन के विस्तृत ब्यौरा ओकरा के कार्यान्वित करेके संसाधन सहित सम्मेलन के सउँपे के निर्देश कइल गइल रहे । बाकिर एह दिसाईं कवनो ठोस पहल ना हो सकल । पत्रिका के प्रकाशन से जुड़ल बिन्दुअन पर चरचा कके प्रमुख जगहन पर पत्रिका के प्रतिनिधि बनावे के निरनय लिआइल रहे आ आरा, बिहिया, छपरा, एकमा से प्रतिनिधि बनावलो गइल रहे, बाकिर काम आगा ना बढ़ि सकल । नतीजतन पत्रिका के कुछ संयुक्तांक निकाले के परल, जवन का एवज में सम्मेलन के प्रकाशन के किताब पत्रिका के सदस्यन के क्षतिपूर्ति आ मुआवजा का रूप में देबे के निरनय लिहल गइल ।

एह बीच साहित्य-संस्कृति से जुड़ल विषयन आ मुद्दन पर गोष्ठियन के आयोजन गाहे-बगाहे होत रहल । भोजपुरी सिनेमा के संभावना आ कठिनाइयन पर एगो ऐतिहासिक आयोजन भइल, जवना में प्रबन्ध मंत्री मनोज कुमार सिंह 'भावुक' के आलेख- पाठ आ भोजपुरी फिल्म से जुड़ल नामी-गिरामी हस्तियन के सहभागिता आ मौजूदगी खास तौर पर रेघरियावल गइल । अलग-अलग विधन पर केन्द्रित गीत गोष्ठी, गजल-गोष्ठी दोहा-गोष्ठी में जहाँ ओह विधन के प्रतिनिधि रचनन के पाठ भइल, ऊहँवें विधागत आलेख-पाठ का जरिए भोजपुरी के रचनिहारन के देन के रेखांकित कइल गइल । आत्मकथा संस्मरण विधो पर चरचा-परिचरचा भइल ।

सम्मेलन से जुड़ल रचनाकारन के सहयोग से साहित्य, खास कके काव्य के विभिन्न अंगन पर चरचा आ एगो साहित्यिक माहौल बनावे का गरज से कविता क्लब के स्थापना भइल, जवना के शाखा पटना आ आरा में सार्थक आयोजन करि रहल बा ।

एह साल पटना में जवना दिन कार्य-समिति के बइठक रहे, ओही दिन बलिया जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन भइल, जवना में जिला के वरिष्ठ भोजपुरी साहित्यकारन के सम्मानितो कइल गइल ।

एह दौरान अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से आँतर से जुड़ल लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार प्रो॰ रामेश्वर नाथ तिवारी, विंध्यवासिनी दत्त त्रिपाठी, पं॰ प्रभुनाथ मिश्र, डॉ॰ लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी, श्रीराम सिंह 'उदय', डॉ॰ कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र', डॉ॰ विकल आ अशान्त के देहावसान से भोजपुरिया साहित्य संसार के अपूरणीय क्षति भइल बा । एह दिवंगत विभूतियन के प्रति हम अश्रुपूरित नयन से सरधा-सुमन अर्पित करत बानी ।

हमरा ई कहत दिली दुःख हो रहल बा कि सत्र के पहिलकी बइठक में एक-दोसरा के तालमेल से सम्मेलन के कार्य-निष्पादन में सहयोग करेके जवन निहोरा सम्मेलन के पदाधिकारियन से कंइल गइल रहे, ऊ दिनो-दिन असहयोग में बदलत चलि गइल । प्रबन्ध मंत्री शुरूआतिए दौर में शहर छोड़ि के चलि गइलन, बाकिर ओह पद पर कवनो उपयुक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...के चुने के दिसाईं कवनो सकारात्मक पहल ना भइल । साहित्यमंत्री अपना पद से ...प देके पल्ला झाड़ि दिहलीं । फेरू अपना आवास से सम्मेलन के कार्यालय हटावे ...रोध करत आचार्य पाण्डेय कपिल जी 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के संपादक पद ...फा दे दिहलीं । भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के एह एकमात्र लोकतांत्रिक संस्था में ...पर कुछ करे के स्थिति ना रहे, काहे कि संस्था से जुड़ल लोगे एक-दोसरा के ...चाई में अझुराइल रहे । फलतः 3 जनवरी, 2002 के हमरो 'महामंत्री' पद से ...देबे के परल । बाकिर ओह इस्तीफा पर विचार करे के बइठक भइल पूरा एक ...बाद जाके 5 जनवरी, 2003 के आ अनिच्छे से सही, गुरूजन-अग्रज लोग का ...के चलते हमरा एह अधिवेशन तक पद पर बनल रहेके परल आ ओही दबाव के ...ह कि हम ई कार्य-विवरण पेश करि रहल बानीं ।

सम्मेलन के सतरहवाँ सत्र के आमद-खर्च के लेखा-सार एह प्रतिवेदन का संगे ...जा रहल बा । एकरा पहिले ई अधिवेशन मूंजा (गोपालगंज) में दू बेर, फेरू पटना ...वाला रहे, बाकिर सम्भव ना हो पावल ।

पिछिला 5 जनवरी, 2003 के कार्य-समिति आ प्रवर-समिति के बइठक में ...के मनोनयन का संगही पुरस्कार-समितियन के गठनो भइल रहे आ ओह समितियन ...सा का आधार पर पुरस्कार के घोषणा कइल गइल । हम पुरस्कृत रचनाकार आ ...के सूची प्रस्तुत करत भोजपुरी भाषा, साहित्य, संस्कृति के उन्नयन खातिर समर्पित ...सिरिजनरत कृतिकारन के दिली बधाई देत बानीं ।

माननीय सांसद श्री प्रभुनाथ सिंह भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे ...संसद में आवाज बुलन्द कइलीं । एह खातिर सम्मेलन का ओर से हम ऊहाँ का ...र्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करत बानीं । अब समय आ गइल बा भोजपुरी के भाषाई ...लन के गति आ दिशा देबे के । एह दिसाईं हरेक भोजपुरिया भाई-बहिन के ई ...जिम्मेदारी बनत बा कि ऊ तन-मन-धन से महतारी भाषा के बढ़न्ती आ हक ...आगा आवो आ सरकार के आपन अधिकार देबे खातिर मजबूर करो । चूंकि पत्रिका ...के आपन बात मजबूती से कहे के एगो नियमित जरिया बा, एह से पत्रिका के समय ...में सभ केहू नेही-छोही दिली मदत करो आ आपन मए राग-द्वेष भुलाके सम्मेलन ...में सोचो । भूमण्डलीकृत बाजारवाद, मुअत जात सपनन के एह बेरहम खतरनाक ...में भोजपुरी के नेही-छोही रचनिहारन-पढ़निहारन के एकजुटता, जीवटता आ तन-मन-सहयोग-समर्पण महतारी भाषा के गौरव-गरिमा आ आबरू में चार चाँद लगा ...।

अंत में कार्य-समिति आ स्थायी समिति का प्रति आभार आ अपने सभके हार्दिकता ...हम आपन कृतज्ञता ज्ञापित करत बानीं ।

भगवती प्रसाद द्विवेदी
महामंत्री
● अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

...iGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

Details of Receipts and Expenditures of

RECEIPT

During

(A) OPENING BALANCE:

(a) Fixed Deposits:-

1. JaGarnath Singh Award	In S.B.I	5000=00
2. Madhava Singh Award	In Bank of India	11,000=00
3. Mahant Laldas Award	In Bank of India	5,000=00
4. Life Membership Sries-1	In Bank of India	5,000=00
5. Bagishwari Prasad Award	In Bank of India	1,000=00
6. Pandey Yogendra Narain Award	In Bank of India	1,000=00
7. Pandey Gagarnath Pd. Sinha Award	In Bank of India	5,000=00
8. Giriraj Kishori Award	In Bank of India	1,000=00
9. Abhaya Anand Award	In Bank of India	10,000=00
10. Ram Nagina Rai Award	In Bank of India	11,000=00
11. Chitralekha Award	In Bank of India	11,000=00
12. Hari Shankar Verma Award	In Bank of India	5,000=00
13. Acharya Mahendra Shashtri Award	In Bank of India	11,000=00
14. Pandeya Narmadeshurar Sahay Award	In Bank of India	5,000=00
		87,000=00
(B) Crrent Account In S.B.I		591=00
(C) Saving Bank Account In Bank of India		10,386=37
(D) Cash in Hand		7952=42
		1,05,929=79
(E) Deligatis Fee in 17 th Session		1,950=00
(F) Yearly Members Fee		2,690=00
(G) Life Members Fee		2,597=00
(H) Special Life Member Fee		1,000=00
(I) Annual Contribution For Magazine		5,585=00
(J) Donation For Magazine and Books		17,609=00
(K) Sale for Magagine Issuls and Books		1,833=00
(L) Special Donation From Kandeya Papil to meet extra expenditure in Publication of Magazine & books (From April 2000 to December 2001), as restriction on diversion From Bank Inttrest Towards Publication has been imposed by the Karya Samiti.		6,000=00
(M) Special Donation From Sri Nagendra Prasad Singh, as First installment, for creation of one more Puraskar of Fund Rs. 5000/- the rest amount of which, will be donated by him, in instalmants, later on.		501=00
(N) Bank Interest From Bank of India (From April 2000 to December 2002.		28,108=04
Receipt for Bhojpuri Sammelan Patrika from Jan. 02 To Dec. 2002		10,163=50
Total		1,83,966=00

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Akhil Bharatiya Bhojpuri Sahitya Sammelan, Patna
Current Session

PAYMENT

By Award		7,711=00
General Printing		640=00
Magazine & Books Publication		30,944=75
Conveyance & Cartinge		135=00
Telephone Bill		12,806=00
Postal Expence		1,592=00
Office Expednture		834=00
Repayment of last Session's Loan to Sri Pandeya Kapil as Decided by Sinayee Samiti in the last Session		10,000=00
+ Expenditure on four issues of B.S. Patrika in 2002		10163=50
	TOTAL	74,826=85

CLOSING BALANCE:

Fixed Deposits:		
1. Madhave Singh Puraskar	In Bank of India	11,000=00
2. Chitralekha Puraskar	In Bank of India	11,000=00
3. Ram Nagina Ray Puraskar	In Bank of India	11,000=00
4. Acharya Mahendra Shashtri Puraskar	In Bank of India	11,000=00
5. Abhaya Anand Puraskar	In Bank of India	10,000-00
6. Pandeya Jagarnath Prasad Singh Puraskar	In Bank of India	5,000=00
7. Life Membership Series-I	In Bank of India	5,000=00
8. Hari Shankar Verma Puraskar	In Bank of India	5,000=00
9. Mahant Laldas Puraskar	In Bank of India	5,000=00
10. Pandeya Narmadeshwar Sahay Puraskar	In Bank of India	5,000=00
11. Giriraj Kishori Chhatra Kavita Purskar	In Bank of India	1,000=00
12. Bagishwari Prasad Chhatra Kehani Puraskar	In Bank of India	1,000=00
13. Pandeya Yogendra Narain Chhatra Nibandh Puraskar	In Bank of India	1,000=00
14. Jagarnath Singh Puraskar	In S. B. I	5,000=00
		87,000=00
Current Account	In S.B.I	591=00
Savings Bank Account	In Bank of India	12,281=71
Cash in Hand		9, 266=77
		1,09,139=48

Total Expence	74,826=85
Closing Balance	1,09,139=48
Total	1,83,966=33

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

अठारहवाँ अधिवेशन में दिहल जायेवाला पुरस्कार

क्रम	पुरस्कार	राशि	हेतु/विषय/विधा	ग्रंथ/रचना	पुरस्कार व्यक्ति
1.	माधव सिंह पुरस्कार	1101/-	सर्वतोभावेन भो॰ सेवा		(स्व॰) सिपाही सिंह श्रीमन्त
2.	चित्रलेखा पुरस्कार	1101/-	महिला के लिखल ग्रंथ	राधा गावे मल्हार (कविता-संग्रह)	(श्रीमती) सुभद्रा वीरेन्द्र
3.	रामनगीना राय पुरस्कार	1101/-	प्रबंध काव्य	विश्वामित्र	(श्री) अमर सिंह
4.	आचार्य महेन्द्र शास्त्री पुरस्कार	1101/-	स्फुट काव्य	हेराइ गइल जिनिगी	(श्री) कन्हैया पाण्डेय
5.	अभय आनन्द पुरस्कार	1101/-	उपन्यास	नइहर के पायल	(श्री) अनिरूद्ध नारायण वर्मा
6.	पाण्डेय जगन्नाथ प्र॰ सिंह पुरस्कार	1101/-	कहानी-संग्रह	लाइची	(प्रो॰ डॉ॰ श्रीमती) उषा वर्मा
7.	जगन्नाथ सिंह पुरस्कार	501/-	नाटक	शुरूआत	(श्री) केदारनाथ पाण्डेय
8.	हरिशंकर वर्मा पुरस्कार	501/-	निबन्ध-संग्रह	ए बचवा, फूलऽ फरऽ	(डॉ॰ श्रीमती) आशारानी लाल
9.	पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय पुरस्कार	501/-	पत्रकारिता		(श्री) अविनाशचन्द्र विद्यार्थी
10.	महन्त लालदास पुरस्कार	501/-	संगीत/नृत्य/नाट्य		(श्री) महेन्द्र प्रसाद सिंह
11.	गिरिराज किशोरी छात्र कविता पुरस्कार	101/-	छात्र के लिखल कविता	होली; मिसरी काशी	(श्री) राकेश कुमार निशाकर काशी हिन्दुविश्वविद्यालय एम. ए. (हिन्दी) के छात्र
12.	वागीश्वरी प्रसाद छात्र कहानी पुरस्कार	101/-	छात्र के लिखल कहानी	अछूत	(श्री) दिनेश प्रसाद शर्मा वीरकुँवर सिंह विश्वविद्यालय के शोध-छात्र
13.	पाण्डेय योगेन्द्र नारायण छात्र निबन्ध पुरस्कार	101/-	छात्र के लिखल निबन्ध	भोजपुरी लोकगीतन राष्ट्रीय चेतना	(श्री) अजय अभिषेक (लोक महाविद्यालय हाफिजपुर बनियापुर सारण के बी. ए. आनर्स के छात्र)

5 जनवरी के अपना नइठक में प्रवर समिति कम समय के चलते पुरस्कार नियमावली के शिथिल करत तीने गो निर्णायक समिति बनवलस (1) उपाध्यक्ष मण्डल-श्री सत्यनारायण, डॉ॰ शम्भुशरण आ डॉ॰ अशोक द्विवेदी -माधव सिंह पुरस्कार, महन्त लालदास पुरस्कार आ पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय पुरस्कार खातिर, (2) डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, प्रो॰ वैद्यनाथ विभाकर आ प्रो॰ जयकान्त सिंह 'जय' -तीनू छात्र-पुरस्कार खातिर आ (3) शेष सातो पुरस्कारन खातिर श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह, श्री कृष्णानन्द [illegible] आ श्री जीतेन्द्र वर्मा के निर्णायक बनावल गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ष 2002 में 'सम्मेलन पत्रिका' के आय-व्यय

...आर्थिक संसाधन संपादक-मण्डल का जुटावे के रहे। एह मद में संपादक-मण्डल के सदस्य लोग ...-दिहल आ अन्य भोजपुरी -प्रेमी लोग से जे आय आइल भा प्रकाशन पर आ पत्रिका भेजे आदि ...भइल ओकर विवरण नीचे दिहल जात बा।

आय

...क-मण्डल द्वारा जे मिलल आय	
...ज्ञकिशोर (4 प्रायोजक के ...पर आ दान-सहयोग)	3865/50
...अनिल कुमार 'आंजनेय' ...प्रायोजक+दान)	850/00
...न्द्र वर्मा (1 प्रा॰ + दान)	858/00
...न्द्र प्रसाद सिंह (विज्ञापन+दान)	750/00
...नन्द कृष्ण (विज्ञापन+बिक्री)	450/00
...व्यास मिश्र (दान)	100/00
...न्य स्रोत से	
...या चन्द्रभूषण सिंह (प्रा॰)	750/00
...राजनारायण दीक्षित (प्रा॰)	750/00
...तारी आजाद (प्रा॰)	500/00
...भगवान सिंह भास्कर (विज्ञापन)	800/00
...क शुल्क से	490/00
...ल आय	10,163/50

व्यय

(प्रेस+कागज+डाक+अन्य)	
अंक जनवरी-फरवरी	2069/50
अंक मार्च-जून	3250/00
अंक जुलाई-सितम्बर	2396/00
अंक अक्टूबर दिसम्बर	2448/00
कुल खर्च	10,163/50
कुल आय	10,163/50

हाथ में शून्य

सम्पादक
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

लेखक/कवि से

...मौलिक रचना छपे खातिर भेजीं। रचना कागज पर सके ओर साफ लिखल भा टाइप ...होखे के चाहीं।

...-व्यवहार खातिर जवाबी कार्ड भा टिकट साटल लिफाफा भेज के पत्रिका के मदद ...।

...छपना पर लेखकीय प्रति रउरा पता पर जरूर भेजल जाई।

...गाँव-जवार में केहू स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवी, साधु-सन्त भइल होखे त ओह ...के जीवनी भेजीं। कवनो दर्शनीय स्थल भा मन्दिर होखे त ओहू पर लेख भेजीं।

...जपुरी के सभी नया-पुरान लेखक-कवि लोग से रचना मांगल जात बा। एकरे के आग्रह ...। अलग से रचना मांगे खातिर चिट्ठी लिखे में पत्रिका के संसाधन के कमी बा।

...छापे में कवनो भेद-भाव भा पक्षपात के सवाल नइखे। पत्रिका अपना सीमा का ...समकर सम्मान करी।

...गुंजाइश कि कवनो विवाद, व्यक्तिगत आक्षेप, आ असंयत भाषा के प्रयोग रचना में ना ...। शालीन ढंग से कवनो तर्कपूर्ण बात के स्वागत होई। *-सम्पादक*

...Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

सम्मेलन के मनोनीत अध्यक्ष

डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह
पत्थर फोड़ के निकलत झरना

❑ श्रीमती अ

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अठहवाँ अधि
वेशन के मनोनीत अध्यक्ष डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह के व्यक्तित्व बहुआयाम
बा। साहित्य, अर्थशास्त्र आ राजनीति के शीर्ष पर विराजमान डॉ॰ सिंह तन-मन-धन तीनों
भोजपुरी के विकास में लागल बानी। अइसन अध्यक्ष पाके सम्मेलन उत्साहित बा। सम्मेल
के गौरवशाली अध्यक्ष परम्परा में एगो नया अध्याय जुड़ल बा। डॉ॰ उदय नारायण तिवारी
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ॰ भगवतशरण उपाध्याय, डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय, डॉ॰ देवेन्द्रनाथ
शर्मा, डॉ॰ विवेकी राय, डॉ॰ विद्यानिवास मिश्र जइसन विख्यात साहित्य मनीषियन से अलंकृत
सम्मेलन के अध्यक्ष पद आउर गौरवशाली भइल बा।

डॉ॰ सिंह भोजपुरी के उन्नति में रात-दिन लागल रहीले। भोजपुरी के मान्यता
दिलवावे खातिर इहाँ का हरदम कुछ-ना-कुछ करत रहीले। बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
में भोजपुरी के पढ़ाई शुरू करावे खातिर इहाँ के आन्दोलन चलवलीं जवना में सफलता मिलल
अब भोजपुरी के साहित्य अकादमी आ संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करावे खातिर
आन्दोलन चला रहल बानी। एह क्रम में इहाँ के पटना से लेके दिल्ली तक कई बेर
धरना-प्रदर्शन के आयोजन कर चुकल बानी।

इहाँ के राजनीति से जुड़ल बानी। स्वभाविक बा कि कवनों एगो दल में होखत
बाकिर भोजपुरी के मुद्दा पर इहाँ के दल के बन्धन ना मानीले। इहे वजह बा कि इहाँ के
नेतृत्व में चले वाला आन्दोलन के आउर सब दल के भोजपुरी हितैषी लोग के समर्थन मिलेला
साँच पूछी त डॉ॰ सिंह के असली पार्टी भोजपुरी पार्टी हवे। विश्व भोजपुरी सम्मेलन आ
भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद् बना के इहाँ के भोजपुरी आन्दोलन के गति देले बानी।

डॉ॰ सिंह के जन्म 2 मई 1940 के सारण जिला के मुबारकपुर गाँव में भइल। इहाँ
के माई के नाँव श्रीमती दुलारी देवी आ पिता के नाम श्री लक्ष्मीनारायण सिंह हवे। इहाँ के
प्रारंभिक शिक्षा गाँवे आ एकमा से पूरा कइलीं। आगे के शिक्षा छपरा, मुजफ्फरपुर आ पटना
में भइल। इहाँ के पी-एच॰डी॰ में शोध के विषय रहे-'मैनेजेरियल प्रोब्लेम्स ऑफ पब्लिक
इन्टरप्राइजेज इन इंडिया विथ स्पेशल रेफरेन्स टू एच॰ ई॰ सी॰ लिमिटेड, राँची।'

इहाँ के अध्यापन-कार्य राजेन्द्र कॉलेज, छपरा से शुरू कइलीं। कुछ समय ले बी॰
एस॰ कॉलेज दानापुर में पढ़वलीं। 1963 के अंत में इहाँ के बिहार विश्वविद्यालय में योगदान
कइलीं। बिहार विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष के पद से सेवा-निवृत्ति का बाद
अबहीं इहाँ के दिल्ली के एगो मनेजमेंट संस्थान में डायरेक्टर बानी। 1985 से 88 के बीच
इहाँ के बी॰ आई॰ टी॰ मेसरा (राँची) में प्रोफेसर ऑफ मैनेजमेंट के पद पर काम कर चुकल
बानी।

डॉ॰ साहेब के राजनीतिक योगदान से सभे परिचित बा। शुरू में इहाँ के कांग्रेस में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टिकट पर दू बेर 1972 आ 1980 में तरैंया क्षेत्र से विधायक रह चुकल बानी। मिश्र के मुख्यमंत्रित्व काल 1980-83 में इहाँ के वित्त राज्य मंत्री के रूप में राज्य बानी। एह दौरान कार्यकुशलता के वजह से इहाँ के चर्चित भइलीं। 1990 का के सक्रिय राजनीति से अलग हो गइनी। एह घड़ी इहाँ के समाज आ साहित्य के लगल बानी।

विभिन्न व्यस्त पदन पर रहला का बावजूद डॉ॰ साहेब खूब लिखिले। इहाँ के में प्रकाशित किताब बाड़ी सन- **इ हमार गीत** (काव्य-संग्रह) प्रकाशक जानकी पटना (1984), **गाँधी जी के बकरी** (ललित निबंध-संग्रह), प्रकाशक-पुस्तक पटना (1987), **हमार गाँवः हमार घर** (ललित निबंध-संग्रह), प्रकाशक-लोकभाषा पटना (1998)। एकरा अलावे इहाँ के रचना दर्जनों पत्र-पत्रिकन में छपल बाड़ी

डॉ॰ सिंह अर्थशास्त्र में कई गो किताब लिखले बानी जवना में प्रमुख नाम बा- इन इकोनॉमिक प्लानिंग (सहयोगी लेखक) प्रकाशक- बुक लैण्ड प्रा॰ लिमिटेड, (1968), गिल्म्पसेज ऑफ इकोनॉमिक पॉलिसीज एण्ड प्लानिंग इन इंडिया, प्रकाशक- प्रकाशन, पटना (1982), प्लानिंग एण्ड मैनेजमेन्ट ऑफ इंडियन इकोनॉमी। ई सब अपना क्षेत्र में चर्चित आ लोकप्रिय बाड़ी सन।

डॉ॰ सिंह के बहुआयामी व्यक्तित्व का बारे में हिन्दी के प्रख्यात कवि डॉ॰ केदारनाथ के लिखले बानी- "प्रभुनाथ नाम में एगो जादू बा। एह पद के अर्थ का होला, हम 'प्रभु' के अर्थ मालूम बा आ ओसहीं 'नाथ' के भी। लेकिन दूनू के मिलला से बनत बा-'प्रभुनाथ', ओकर अर्थ एतना भारी हो जात बा कि खुद एह पदे में समात सीधे-सीधे पूछल जा सकेला कि 'प्रभु' त खुदे सबके नाथ हवें, फेर उनकर 'नाथ' त ऊ जवन एगो खुबसूरत रहस्य बा एह पद में, ऊहे एह नाम में जादू के सृष्टि करत शुरू में जब पहिले-पहिल हम प्रभुनाथ सिंह के नाम सुनलीं, त कवनों खास आकर्षण न जागल। राजनीतिक नाम- खासतौर से आज के राजनीति में- एगो निरर्थक पद बना में जबरदस्ती अर्थ ठूँसे खातिर अखबार, रेडियों आ टेलीविजन के मदद लेवे के लेकिन प्रभुनाथ सिंह के प्रसंग में तनी उलिटा भइल। जब पहिली बेर उनका से भेंट उनकर व्यक्तित्व एकदम पानी लेखा लउक- बाहर से भीतर तक पारदर्शी। फेर ईहो कि ऊ खाली राजनीतिक ना हवें, विश्वविद्यालय के प्राध्यापक के साथ-साथ के कवियों हवें। अब ई भोजपुरी हमार कमजोरी ह।.....प्रभुनाथ जी व्यस्त प्राणी अर्थशास्त्र के प्रोफेसर ना, एगो जानल-मानल राजनीतिकर्मी भी।"

(भूमिका लेखा कुछ शब्द, हमार गाँवः हमार घर)

तिरसठ बरिस से बेसी उमिर हो गइला का बादो डॉ॰ सिंह के उर्जा आ ताजगी खतम इहाँ के हरदम कुछ ना-कुछ नधले रहीले। इहाँ के व्यक्तित्व आ कृतित्व पत्थर निकलें वाला झरना का तरह वेगवान, स्वच्छ, पवित्र आ मीठ बा। उमेद बा कि इहाँ कार्यकाल में सम्मेलन भोजपुरी खातिर उल्लेखनीय काम करी।

● *क्रेजी क्रिएशन, रघुनगर, नई दिल्ली।*

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

भोजपुरी के लोकप्रिय व्यक्तित्व : डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह

डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह जी के कई गो रूप बा- सुयोग्य अध्यापक के, कुशल प्रशासक के, सफल नेता के, उत्तम साहित्यिक-सांस्कृतिक संगठनकर्त्ता के, संवेदनशील गीतकार के, चटक व्यंग्यकार के, गहन अनुभूति से भरल ललितनिबन्धकार के, मानवीय मूल्यन के सहेजत कहानीकार के, मिलनसार-मृदुल सुभाव के धनी सहृदय व्यवहारकुशल व्यक्तित्व वाला मनई के, दिन-रात भोजपुरी के सेवा में लागल अथक भाग-दौड़ में व्यस्त मातृभाषा के सपूत के आ पटना, छपरा, मुजफ्फरपुर, दिल्ली एक कइले रहे वाला प्राणवान कर्मठ कर्मवीर भोजपुरिहा पहरूआ के। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अठारह गो अधिवेशनन में से लगभग आधा के श्रेय अकेले डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह जी के बा। हमेशा कवनो-ना-कवनो आयोजन में मशगूल; मन में आइल कि कइ नधाइल आ दउड़-धूप के ओके सफल बनाइये के दम लिआइल। भोजपुरी के पढ़ाई विश्वविद्यालय स्तर पर शुरू करावे के आ खुदे पढ़ावे के भी श्रेय इहें के बा। आज जब सम्मेलन का थथमा लागल बा, लमहर संघर्ष से थाक-हार के समर्पित सेवक लोग अलगे हट के ठाढ़ होत जात बा भा नई जमात-गरोह बान्ह के अपने राग में गावे खातिर बेचैन हो रहल बा- डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह जी जइसन लोकप्रिय, कर्मठ, सक्रिय आ व्यवहारकुशल व्यक्तित्व के अध्यक्ष बनावल बहुते सार्थक कदम बा। एह में ना केवल डाक्टर साहब के भोजपुरी सेवा के सम्मान बा बलुक सम्मेलनो का अपना संकट से उबरे खातिर एगो संकटमोचक के सहारा लेके आगा डेग बढ़ावे के हियाव जुटी- ई उम्मीद कइल जा सकेला।

डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह जी के पहिलकी कविता 'लहर लहर पुरवइया' राजेन्द्र कॉलेज (छपरा) के पत्रिका 'राका' में 1958 में छपल रहे। बाद में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक भइलो पर भा राजनीति में गइलो पर साहित्य के प्रति प्रेम के सोता सूखल ना। अर्थशास्त्र एगो शुष्क आ गणित खानी गंभीर विषय बुझल जाला। अइसहीं राजनीति के चमक-दमक त संवेदनशीलता आ रसप्रियता के सोख लेले। बाकिर डॉ॰ सिंह के हृदय में कविता आ साहित्य-प्रेम के जे रसवन्ती बहत रहे ऊ ना घटल ना सूखल बलुक आउर बेग से बहे लागल। ई कर्त्तव्यनिष्ठ आ जनप्रिय जननेता अपना जनता के लगे पहुँचे खातिर भोजपुरी के साहित्यिक रचनात्मक गतिविधि के ही माध्यम बनवले बा- ई अचरज के बात बा।

'इ हमार गीत' के गीतन में लोकगीतन के रसगन्ध बा, राष्ट्रचेतना' गँवई-मन के पीर आ पुलक बा, गाँधी-चिन्तन आ प्रकृति के रूपसौन्दर्य के झलको बा। एह गीतन में संगीत के लय-धुन मोहक बा। डॉ॰ विवेकी राय जी के शब्दन में-"संगीत, चित्र, ध्वनि, लोकगीत और लौकिक जीवन क मिथकों और मुहावरों के साथ-साथ कुछ आधुनिक प्रयोग चित्र भी इस काव्य-संग्रह में बिखरे हुए हैं।.....'लाल गवरइया पीयर लागे माटी' में आई प्रतीकात्मकता कवि की मौलिक सूझ है।" डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह के निबन्ध-संस्मरण-कहानी के जे संग्रह 'हमार गाँव हमार घर' छपल बा, ओह में संवेदनशील आ मानवीय मूल्यन के आग्रही रचनाकार के मनोभाव सोझे आइल बा। गीत-कविता में जवन रोचकता बा, ओह से कम आकर्षण डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह का गद्य में नइखे। गद्य-पद्य दूनू में एगो शैलीकार का रूप में भोजपुरी के एह साधक का प्रतिष्ठा मिलले चाही। संभावना के पूरा क्षितिज खुलल बा अबहीं, आ उम्मीद कइल जा सकेला कि एह लोकप्रिय व्यक्तित्व के आकर्षक कृत्तित्व-शक्ति से भोजपुरी साहित्य आ आन्दोलन प्रगति के राह पर प्रबल बेग से चली।

● -आनन्दपुरी, बौरिंग कैनाल रोड, पटना-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महिमा माँझी माटी के

❑ व्यास मिश्र

हर जगहा के आपन महातम होला, आपन इतिहास होला, आपन भूगोल होला; आपन संस्कृति, साहित्य आ संस्कार होला। जुग-जुग से अरजित आपन धरोहर होला। हम बात माँझी के संदर्भ में।

माँझी सारन के सिरमौर ह। ओकरा दिल के धड़कन हं। एकरा त्याग, बलिदान, आन-बान के कौनो शानी नइखे। आजो "माँझी थाना ह मरदाना" के गीत एकरा कन-कन में गूंज बा। देश के आजादी ला माँझी के जवानी के रवानी आ अरमान मचलत रहे त कहीं साधना आ के समिधा जरत रहे। एकरा कंठ-स्वर से कहीं राष्ट्रगान फूट पड़त रहे त कहीं अपना खून से के इतिहास लिखात रहे। 'हर गाँव समर मैदान जहाँ, कन-कन बा लहुलुहान जहाँ' के बोध अपना बलिदानी परम्परा के सार्थक स्वरूप देत रहे माँझी। एक ओर माँझी जहाँ शोषन-उत्पीड़न आवाज उठवले बा त दोसरा ओर अपना हक खातिर तेरूवारो खनखनवले बा। आपन पर राख के माँझी के सपूत अपना माटी के मरजादा के मोल चुकवले बाड़े। एकरा लउर के ताव के आगे मजाल बा जे केहु टिक सके। एकरा मर्दानगी के आपन अलग पहचान के मनइन में 'भर बांह चूड़ी ना त पट दे रांड़' वाली बात बा। इहां के लोग लाठी आ कलम धउकार बाड़े। इहां मन के मइल केहु ना भेंटाई। इहंवा 'खुलल खेल फरूखाबादी' चलेला के कौनो बात ना।

एकर आपन अलग एगो लमहर आ दमगर पुरान इतिहास, भूगोल, संस्कृति, साहित्य, कला आ विशिष्ट संतपरम्परा बा।

कहीं के इतिहास के सही जानकारी खातिर उहां के भूगोल के जानकारी जरूरी होला। के मुख्यालय छपरा से लगभग पन्द्रह-सोलह कि॰ मीटर पच्छिम सरयू नदी के उत्तरी छोर पर एगो प्राचीन आ बहुत बड़ गाँव बा माँझी। माँझी-बरौली रोड के अन्तिम दक्खिनी छोर पर की महत्त्वपूर्ण सम्पर्क मार्ग के साधन बा। इहां के इतिहास बहुते पुरान बा जवना के आजो ह वा खंडहर कीला के टीला। पुरातत्त्व विभाग के अनुसार बुद्धकाल के पहिले के ई गढ़ ह बतावता कि हिन्दूकाल में चेरो वंश के माँझी मकरा के बनावल ई किला रहे। एगो दोसर के मोताबिक इहां के राजा दुसाध भा मलाह रहले। परमान त इहो मिलता कि ई किला हरिहो राजा के अधिकार में रहे जवना वंश के मुख्यालय उत्तर प्रदेश के बलिया जिला के हल्दी रहे। इतिहास का पिछे पलटला पर एगो आउर पक्ष सामने आवता कि एकर जागीरदार फैजाबाद के फउफुंद गढ़ के सेमरजित राय भइले। शाहजहां से इसलाम धर्म कबूल करे का शर्त माँझी के जागीर मिलल आ मल्लिक कहाए लगले। बाद में दीवान कहाए लगले आ अंत के उपाधि से जानल गइले। एह राज के प्रवन्धकर्ता माँझी अंचल के शीतलपुर गाँव के कायस्थ परिवार के लोग रहे। एह अंचल के केतना ब्राह्मण परिवार के अपना पंडिताई आ वदौलत दान में जमीन मिलला के बातो पुष्ट होता। अंगरेजी राज के समय के सरयू नदी पर रेल पुल पश्चिमी भारत आ उत्तरी भारत से पूर्वी भारत के जोड़े में महत्त्वपूर्ण सेतु बा। आ बिहार सरकार के सहयोग से जयप्रकाश प्रभा रोड पुल निर्माणाधीन बा। फिलहाल का पूरब लचका पुल (पीपालुल) उत्तर प्रदेश से बिहार में आवागमन के वैकल्पिक माध्यम

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बा ।

सरयू नदी के तट पर बसल माँझी तीर्थ भूमि का रूप में बा । कवनो पर्व, त्योहार आ उत्सव का अवसर पर इहां मेला लाग जाला । सतुआन, नवरात्र, रामनवमी, गंगादसहरा, अक्षय तृतीया, अक्षय नागपंचमी, सतिमी, जिउतिया, पितर परव, नवरात्र, दसहरा, दीवाली, भइया दूज, सूर्यषष्ठी, छिठ्ठी, मौनी अमावस, वसंत पंचमी, शिवरात्रि आदि का अवसर पर लोग सरयू के पवित्र जल में स्नान करके आ माटी का पवित्र आ नया पात्र में जल भर के पूजा पाठ ला घरहूँ ले जाला ।

सरयू नदी माँझी खातिर बरदान बाड़ी । माँझी के धरती के पाँव पखारत रहेली । माँझी के खेत-बधार नदी के पार (उत्तरी छोर पर) आ एह पार (दक्खिनी छोर) भी बा । कवो फसल खेत उगावेली आ कवो डुबावेली । नदी के धार कभी नजदीक कभी दूर, कभी उठत कभी गिरत, कभी किनार के माटी कटत कभी भरत इहे सिलसिला चलत रहेला । आ दियरा के खेतिहर लोग के तीन-पीढ़ी अनुभव होत रहेला । सरयू इहां के लोग के लोक-परलोक त संवरवे करेली, इहां के संस्कृतियो के सींचत रहेली ।

कुल मिला के माँझी के एगो आपन बहुआयामी समृद्ध परम्परा बा जवना के अनदेखी ना कइल जा सके । माँझी के चर्चा के बिना देश के आजादी के इतिहास ना लिखा सके । एकरा के छोड़ के संत साहित्य आ संतन के परम्परा पर केहू कलम ना चला सके । माँझी के चरचा बिना भोजपुरी संस्कृति आ साहित्य के इतिहास अधूरा रह जाई ।

संत परम्परा के इतिहास के मुसरा माझिए ह । धार्मिक आ आध्यात्मिक धरातल पर आपन अमिट छाप छोड़े वाला संत कवि धरनीदास के अवतरण भूमि माँझी ह । सत्रहवीं सदी के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण संत धरनीदास रहीं । आजो इहां के माँझी में मठ बा आ इहां के लिखल साहित्य बा । धरनी दास जी अत्यन्त उच्च कोटि के सिद्ध संत रहीं । इहां के रचनन में शब्द प्रकाश, प्रेम प्रकाश, महराई, प्रबोधलीला आ रत्नावली प्रसिद्ध बा । प्रेम प्रकाश शूफी शैली में, महराई मुरली ध्वनिरूपक का रूप में, प्रबोधलीला संतसंगति पर आधारित बा । जनश्रुति का अनुसार धरनीदास जी माँझी के नवाब के दीवान रहीं । लोकमत के अनुसार इहां का चन्द्रहास स्वामी के शिष्य रहीं । बाद में संवादासजी के चेला भइलीं आ ओकरा बाद स्वामी विनोदानंद जी से दीक्षा लिहलीं । धरनीश्वर सम्प्रदाय के दूसरा गद्दी बा- माँझी आ परसागढ़ । पंचलक्खी (सीवान), रोसड़ा कल्याणपुर (समस्तीपुर) आ चैमुहान (बलिया) में इहां के मठ बा आ अनुयायी लोग बा । इहां के सिद्धि आ प्रसिद्धि बड़ा दूर-दूर ले रहे । जब बाबा धरनीदास जी सिद्धि के शिखर पर पहुँच गइलीं आ भगवान के भक्तिभाव में पूरा तरे रम गइलीं त नोकरी से जवाब दे दिहली आ लिखलीं-

"लिखनी ना करबी रे भाई अब मोहि राम नाम सुधि आई ।
रो रो के सब लोग पुकारे धरनी बड़ा कसाई ।।"

माँझी के संत परम्परा में साध्वी स्व॰ देवकी जी के अवदान भी बहुते बा । इहां के आध्यात्मिक व्यक्तित्व सतह से उठ के आसमान के ऊँचाई तक पहुँचल बा । संघर्ष, त्याग, तपस्या आ सतत साधना के बल पर सिद्धि के शिखर छुवलीं । परमसिद्ध संत स्वामी शरणानंद जी से दीक्षा लेके साधना में लीन होके सिद्धि प्राप्त कइलीं । मानव-सेवा-संघ, वृन्दावन के प्रधान संचालिका का रूप में मानव कल्याण के काम कइलीं । देवकी माता के जनमभुईं माझिए ह । साहित्यिक संतन में माँझी के शिवसहाय जी के प्रमुखता से नाम लिहल जाला । आज से लगभग एक सौ बरिस पहिले भोजपुरी आ अवधी के मिलल जुलल रूप में दासजीवन, मानसशिक्षा, ब्रह्माष्टक के स्रोत आ योगाजन जइसन ग्रंथन के रचना कइलीं । इहां के रचना के एगो बानगी देखीं-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"जेकर घर मइल तेकर घर गइल ।
जेकर घर साफ, तेकर घर आप ।"

माँझी अंचल के नचाप गाँव के मठ के सरभंगी सम्प्रदाय के संत अलखानन्द जी रहीं । इ लिखल 'निर्पक्ष वेदान्त राग सागर' महत्त्वपूर्ण ग्रंथ बा जे 1987 में कमला प्रेस छपरा में पंडित नारायण तिवारी के द्वारा मुद्रित बा । इहां के प्रमुख भजनन के संपादन दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक 'कहत अलखानन्द' के नाम से पुस्तक रूप में कइले बानी । अलखानन्दजी के रचना में बानगी देखीं राग कजरी में-

"अजपा लगि सोहंग के डोर सावन झूले मनवा मोर
शीतल मंद सुगंध पुरवाई, बिनु बादल बहु गरज सुनाई
तड़तड़ाय बिजुली अति चमके नयना के झपि जाय कोर
निसुदिन बरिसे अमृत धारा हीरा मोती झरत अपारा
दादुर झिंगुर कोकिला बोले मानहु करत सोर
श्यामा तोता कहत बनै ना अनहद शब्द कोउ जाय सुनै ना
बिना पृथ्वी के जंगल सोहावन नाचत कुहुकत मोर
अलखानंद कहैं बड़ भागि, जो यह झूला चढ़े अनुरागी
आठों याम स्थिर हो बैठे सो भवबन्ध के छोर ।।"

माँझी अंचल के शीतलपुर गाँव के रहवइया भगवतशरण जी रहस । वैष्णव संत कवि का रामानंदी सम्प्रदाय के रहस । इनकर विशेष भक्ति आसक्ति हनुमानजी में रहे । एही शीतलपुर के स्वामी शंकरानन्द सरस्वती हंई जे वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय योग विद्यालय मुंगेर में योग साधना आ योग शिक्षण-प्रशिक्षण में मार्गदर्शन दे रहल बानी । धर्मपुरा गाँव (माँझी) के स्वामी प्रज्ञानन्द जी मुंगेर योग विद्यालय से जुड़ के पाणिनी के संस्कृत व्याकरण के आधार पर सरल भाषा हिन्दी में 'संस्कृत प्रबोधिनी' पुस्तक के रचना कइले बानीं । योग के क्षेत्र में चर्चित बाड़े राधाकृष्ण योगाश्रम के वैद्यानाथ योगी । ताजपुर फुलवरिया (माँझी) के दुर्गा के उपासक रामफल राय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के परम्परा के कवि रहस । इनकर लिखल पावस-बतीसी आ विविधा विनोद बा । समस्या पूर्ति रूप में उहां के रचना कौशल के एगो बानगी देखीं:-

"सिय सोने की अंगूठी राम सांवरे नगीना हैं ।"

एह तरे से इहां के जन-जन में धर्म के प्रति अटूट आस्था बा । इहां के लोग साम्प्रदायिक रूप आ सर्वधर्म समभाव के अपना व्यावहारिक जीवन में सधले बा ।

जब-जब देश पर आफत आइल बा, आंधी बवंडर आ तूफान उठल बा, तब-तब जान हथेली में डाल के माँझी पतवार हाथ में थमले बा । आजादी के आहट सुनते माँझी के सपूत बिगुल बजा के डंग आगे अउर आगे-आगे बढ़ावत गइल बा । अंगरेजी सलतनत के ईंट से ईंट बजा के गोरा पलटन के नांको चना चबवा देले बा आ साफ-साफ बतला देले बा कि हमार माई छेर नइखे जनलस बाघ विआइल बिया । जब-जब गोहार भइल बा माँझी अंचल के हिरावल दस्ता जिनगी के मैदान पर आपन अंगदी पांव रोप के सीना तान के खड़ा भइल बा । आजादी के आंदोलन में माँझी अंचल के नाम सोनहुला आखर में टंकाइल बा । चाहे आजादी के लड़ाई होखे, आ असहयोग आ सत्याग्रह-सभ में एह अंचल के अगुवाई रहल बा ।

सन् 1920-22 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन में महापंडित राहुल सांकृत्यायन, पंडित

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गिरीश तिवारी, लक्ष्मी नारायण सिंह, रामनरेश सिंह, रामबहादुर लाल आ सभापति सिंह एह क्षेत्र के अगुवा रहले। सन् 1930 में महात्मा गांधी के नमक-सत्याग्रह में एह अंचल के महती योगदान रहल बा। इ आंदोलन सारन में सबसे पहिले माँझी के बरेजा गाँव से शुरू होके गोरेयाकोठी में समाप्त भइल। सूरत के बारदोली में महात्माजी द्वारा नमक सत्याग्रह के बाद देश में सबसे पहिले माँझी के बरेजा गाँव में भइल। बरेजा क स्व० राम राजेश्वर प्र० तिवारी (साँवलियाजी) नमक सत्याग्रह के अगुवाई कइले। नसाबंदी के पक्ष में माँझी अंचल के गावांगाई घूमघूम के तड़कुल के बाल कटवावले ओह समय में गवात गीत के इयाद करके एह क्षेत्र के लोग बड़ा गर्व के अनुभव करेला-

"माँझी थाना है मरदाना वीर बनाया सावलिया।
गाँव-गाँव में घूम-घूम कर बाल कटवाया सावलिया।"

नसाबंदी आ चौकीदारी टैक्स बन्द करेके कामो पहिले एहिजे से शुरू भइल। माँझी ताजपुर बरेजा आ आउर गाँवन में शराब-ताड़ी के दुकानन पर धरना दिआइल आ बन्द करावल गइल। चौकीदारी टैक्स वसूली के खिलाफ नारा लागे-

"वीरो सुनो चौकीदारी न दो
सरकारी कुत्तों से घिनाओ महवारी न दो
चाहे लाट कलक्टर आवें इन्हें महवारी न दो।'

टैक्स विरोधी आंदोलन, नसाबंदी आ नमक सत्याग्रह के सफलता के खबर जंगल के आग अस पूरा देश में फइल गइल।

एह सफलता से प्रभावित होके 1930 में देश के चोटी के नेता लोग के जुटान बरेजा में भइल। आंदोलन के सूत्र संचालक लोग में पं० जवाहरलाल नेहरू, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, लोकमान्य तिलक, सरदार वल्लभ भाई पटेल, भूला भाई देसाई, श्री कृष्ण सिंह के नाम प्रमुख बा। गांधी जी के भी पदारपन होखे वाला रहे बाकिर कौना कारन से बरेजा ना पहुंच के एकमा में भासन करके लौट गइले। एही लोग के सभा में जवाहर लाल जी के सम्मान में गवाइल गीत के एगो बानगी देखीं-

"भारत का डंका आलम बजाया वीर जवाहर ने
स्वाधीन बनो स्वाधीन बनो ललकारा वीर जवाहर ने
एक रोशन आग धधकती है मुर्दो का दिल भी फड़कता है
मर्दो में भी जीवन फूंका है मेरे वीर जवाहर ने।"

एही सभा में राजेन्द्र बाबू के सम्मान में गीत गवाइल-

"देश के रत्न राजेन्द्र जी हैं
तिनि रंग पताका लिए ललकारे
भागो फिरंगी यहाँ से अभी
बार-बार सभी यही बात उचारे।"

एह सभा के बाद पूरा माँझी अंचल गरमा गइल। आजादी के आग के लहोक बरेजा से उठ के माँझी के चप्पा-चप्पा में पसर गइल। गाँव-गाँव में प्रभातफेरी आ राष्ट्रभक्ति के जोशिला गीत गवाए लागल। गुलामी के जंजीर तोड़े खातिर मरे मिटे के हुंकार सुनाए लागल। सरकारी दफ्तर फुंकाए लागल आ रेल के पटरी उखड़ाए लागल। दाउदपुर रेलवे टिसन के पासे आंदोलनकारी छट्ठूगिरि शहीद हो गइले। फागूगिरि आ कमता गिरिओ के गोली लागल। एकर चिन्हासी दाउदपुर में छट्ठूगिरि के स्मारक बा जवना के शिलान्यास राहुल जी के पत्नी डॉ० कमला सांकृत्यायन जी के कर कमलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् 1931 में गांधी-इरविन समझौता के बाद आन्दोलनकारी रिहा भइलो। आंदोलन के दौरान थम गइल बाकिर लंदन के असफल गोलमेज कान्फरेंस से गांधी जी का लवटला के बाद आंदोलन के आग फेनु धनके लागल। आंदोलनकारी लोग धराए लागल आ जेल जाए लागल। जलेश्वर प्रसाद तिवारी (सावलियाजी), जलेश्वर दुबे, अनिरूद्ध तिवारी, वृजबिहारी तिवारी, सूरजबली राजवल्लभ सहाय, बब्बन सिंह आ उमादत्त शर्मा के गिरफ्तारी भइल। जेल जात समय के सत्याग्रहियन के गवात गीत सुनके आजो रोवां फड़-फड़ा उठेला।

"बबन ए है बब्बर, श्याम सावलियाजी
मुसकराते रहेंगे पर दुनियां को हिला देंगे।
ये बन्दर तो बिदा होंगे जैक फना होगा
भारत की धरती पर तिरंगा फहरा देंगे।
है किरीच तुम्हारे कितने, किसको किसको मारोगे, हम लाखों शीश चढ़ा देंगे
अपने हुंकारों से हम लॉर्ड वेलिंगटन को थर्रा देंगे।"

गांधीजी के 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह के पहिलका सत्याग्रही ताजपुर गांव के जलेश्वर आ इन्द्रजीत सिंह के गिरफ्तारी भइल। सत्याग्रही लोगन में प्रमुख रहले परमात्मा सिंह, राम नरेश आ कृष्ण सिंह, शिव प्रसाद सिंह आ राम बालक महतो। सत्याग्रही लोग के नारा रहे-

"एह आन्हर सरकार के मत पाई द मत भाई द।" मतलब कि टैक्स ना दिआव आ केहु भर्ती ना होखे। 1930 में एह क्षेत्र के आंदोलन के अगुवाई कइले, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, नारायण सिंह, अम्बिका सिंह 'दादा', फूलन देवगिरि, रामप्राय सिंह मालिक, रामचन्द्र बिहारी, सिंह, मधु सूदन सिंह, रामनारायण भारतीय आ राम गुलाम रावत। 1932-33 के आंदोलन लोग के गिरफ्तारी भइल। 1942 में 'अंगरेजी भारत छोड़ो' के नारा बुलन्द भइल। इ आन्दोलन माँझी, दाउदपुर, ताजपुर आ बरेजा गाँव में उफान पर रहे। आंदोलन के अगिला पंघत में सिंह, लछुमन प्रसाद, गोपालदास, रास बिहारी लाल, रामचन्द्र शर्मा, जलेश्वर दुवे, परमात्मा रामनरेश सिंह, कपिलदेव सिंह, बबुआनन्द तिवारी, सभापति सिंह, हेमनारायण यादव, श्री किशुन विन्देश्वरी सिंह, यमुना साह, शिवप्रसाद सिंह, रामायण प्रसाद, मानकी साह, बुन्देला सिंह, महतो, भूपनारायण मिश्र, कामेश्वर नाथ सहाय (मनीबाबू), मुरलीधर पाण्डेय, भोला पांण्डेय, तिवारी, रामचन्द्र दुबे, वैकुण्ठ पाण्डेय, रामायणसिंह आ आउर लोग जेल गइल। माँझी के मुबारकपुर गाँव के रामानन्द यादव (काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के छात्र नेता का रूप में) के छात्र आंदोलन के नेतृत्व करत गिरफ्तार भइले। ई जान के सिर ऊंचा हो जाला आ गर्व के होला कि एही माँझी अंचल के वीर सपूत रहले रामाश्रय महतो, रामकृपाल यादव, जंगी आ नूर हसन जे नेताजी सुवास चन्द्र बोस के आजाद हिन्द फौज में भर्ती होके अंगरेजन से लड़ले। 8 अगस्त 1942 में कांग्रेस बम्बई अधिवेशन में महात्मा गांधी के 'करो या मरो' के गूंज अंचल में गूंजे लागल आ रेलवे टिसन, डाकघर आ कलक्टोरियेट के कार्यालय पर फहराए। क्रांतिकारी लोग गोरी सरकार के गोली के शिकार होखे लागल। एही आंदोलन में माँझी के दक्षिण सरयुपार के गांव सिताब दियारा (नया नाम जयप्रकाश नगर) के महान क्रान्तिकारी नेता जयप्रकाश नारायण जोगेन्दर शुकुल के सहयोग से सेन्ट्रल जेल हजारीबाग के देवाल फांद के नेपाल में राष्ट्रीय मुक्ति सेना के माध्यम से अंगरेजी सलतनत के हिला दिहले। आजादी मिलला का बाद क्षेत्र से सामाजिक कार्यकर्ता आ राजनीतिक नेता लोग के एगो दमगर जत्था सामने आइल

eGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

आ विधायक, सांसद, मंत्री आ विधान पारषद का रूप में कुशल नेतृत्व मिलल । लोकसभा के विधान सभा के प्रतिनिधित्व कइले पंडित गिरीश तिवारी, लक्ष्मी नारायण सिंह, रामेश्वर दत्त शर्मा, राम बहादुर सिंह, हजारी सिंह आ बुद्धन प्रसाद यादव । अभी वर्तमान में माँझी विधान सभा के विधायक आ ग्रामीण विकास राजमंत्री का रूप में नेतृत्व मिल रहल बा रबीन्द्र नाथ मिश्र के । महाराजगंज लोक सभा संसदीय क्षेत्र से, जवना में माँझी विधान सभा क्षेत्र सामिल बा, सांसद बानी प्रभुनाथ सिंह जी । पूरा भोजपुरिहा आ भोजपुरी साहित्य खातिर बड़ा गर्व के बात बा कि भोजपुरी भाषा के सवाल पर राजनीतिक स्तर पर पहिला बेर प्रभुनाथ सिंह सांसद का रूप में कुशल आ जुझारू नेतृत्व मिल रहल बा । लोकसभा में आ बाहर भोजपुरी भाषा के सवाल उठा के भारत सरकार के सामने इहे अइसन मुद्दा खड़ा कर देले बानी जवना के सरकार ढेर दिन ले अनदेखा ना कर सके । राजनीतिक आ सामाजिक कार्यकर्ता लोग के एगो पुरहर जमात एह क्षेत्र के आपन सेवा दे रहल बा ।

पत्रकारिता, साहित्य-संस्कृति-कला आ रंग कर्म में भी कलम के सिपाहियन के एगो लमहर आ दमगर जमात सिरजन के सार्थक कर रहल बा । माँझी अंचल में साहित्य, कला आ संगीत के एगो गर्व करेवाला ऊँचाई मिलल बा । हिन्दी, भोजपुरी, संस्कृत, उर्दू-फारसी गायन-वादन में स्वनामधन्य साहित्यकार इहां पैदा भइले । एह क्षेत्र में साहित्यिक संस्थन के माध्यम से भी साहित्य के सेवा भइल बा आ आजो मिल रहल बा । इ अंचल साहित्यिक तपोधनन के तपोभूमि ह । शिक्षा साहित्य आ संस्कृति के त्रिवेनी के संगम ह ।

अध्यात्म के सिद्धसाधक धरनीदास जी संत परम्परा के कवि रहीं । शीतलपुर के पाण्डेय शीतल सिंह जी मुगल सम्राट शाहजहां के समय में व्रजभाषा में वीर काव्य के रचना कइलीं । शीतलपुर गाँव के ही शीतल द्विज, स्व॰ भगवतशरण (भगतजी) आ पं॰ यशोदानन्द तिवारी व्रजभाषा के रचनाकार रहे लोग । एही गाँव क पाण्डेय दामोदर सहाय सिंह कविकिंकर के द्विवेदी युग के कवि साहित्यकार रहीं । पिलुई (माँझी) के रामचरितर भगत (मधुकवि) के डेढ़ दर्जन प्रकाशित-अप्रकाशित रचना बा । इनका कुछ कृतियन पर पटना विश्वविद्यालय में शोधकार्य भी भइल बा । मेलाघुमनी के रचयिता घोरहट (माँझी) गाँव के रहीं ।

काशी हिन्दु विश्वविद्यालय में ज्योतिष के पहिला प्राध्यापक आ विश्व पचांग के आदि सम्पादक पं॰ रामयत्न ओझा माँझी के डुमरी गाँव के रहीं । हिन्दी के मुर्धन्य साहित्यकार डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी ओझा जी के शिष्य रहल बानी ।

टेघरा (माँझी) के बलभद्र पाण्डेय विविधरसराज शरण के नाम से बहुत कुछ लिखते बानी । उनकर सभ अप्रकाशित रचना सुयोग्य उत्तराधिकारी के अभाव में बक्सा में बन्द पड़ल बा आ दियका खा रहल बा । मुबारकपुर (माँझी) के स्व॰ भागवत प्रसाद वर्मा बहुते लिखले बाकिर छपल रचना बा हिन्दी के एगो खण्ड काव्य 'सुदामा चरित्र' ।

संस्कृत, हिन्दी, भोजपुरी के पुरनका पीढ़ी के साहित्यकारन में उल्लेखनीय नाम बा- शीतलपुर के पं॰ पद्मनाभ शास्त्री, मीमांसक शिरोमणी पं॰ नामदेव शास्त्री, संगीत आ तंत्रशास्त्र के पं॰ रामशरण मिश्र (नकछेदी मिश्र) आ अद्वितीय वाद्यविद्याविशारद बाबू प्रताप चन्द्र जी के ।

माँझी के स्व॰ राजवल्लभ सहाय एगो अइसन प्रतिष्ठित नाम बा जवना के हिन्दी साहित्य आ पत्रकारिता जगत कबो ना भुला सके । सहाय जी 'आज' हिन्दी दैनिक (काशी संस्करण) के सम्पादक आ हिन्दी के वृहत कोष 'हिन्दी शब्द सागर' के सम्पादक मंडल में रहल बानीं । माँझी के स्व॰ जयगोविन्द ओझा एगो अच्छा हिन्दी भक्त आ जनपदीय पत्रकार रहलीं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आंचलिक उपन्यास, कथा कहानी, निबंध आ कविता के क्षेत्र में आदर के साथे जेकरा कइल बहुते जरूरी बा ओह में बाड़े स्व० पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह, राधा मोहन राधेश, नाथ मिश्र मंजुल, पाण्डेय पुण्यात्मा 'आत्मा, रघुनाथ चौबे, राजा पाण्डेय आ स्व० सारंग दिवंगत साहित्यकारन में उर्दू आ फारसी के भंडार भरे में आदरणीय नाम बा स्व० श्याम प्रसाद श्रीवास्तव आ स्वः मणिशंकर प्रसाद श्रीवास्तव के। माँझी अंचल के वरिष्ठ आ नया कारन में उल्लेखनीय बाड़े काशीनाथ पाण्डेय, पाण्डेय कपिल, डॉ० प्रभुनाथ सिंह, करूणा निधान नाथ पाण्डेय, राधा मोहन सिंह, पाण्डेय सुरेन्द्र, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, प्रो० चन्द्र विनोद, डॉ० महेन्द्र शिवदास पाण्डेय, व्यासमिश्र, डॉ० परमेश्वर सिंह, प्रो० राजगृह सिंह, डॉ० कपिलदेव सिंह, दक्ष शंभू, तंग इनायतपुरी, राजीव रंजन, राधिकारंजन सुशील, प्रियरंजन सुधीर, राकेश रंजन रणधीर, मुक्त, अरविन्द श्रीवास्तव, उमेश सिंह, पाण्डेय नीरज नयन, डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, अविनाश अर्जुन सिंह 'अकेला', निर्भय राज आ आयुर्वेदाचार्य भूदेव शर्मा। हिन्दी-भोजपुरी पत्रकारिता से राम या पाण्डेय कपिल, नागेन्द्र प्रसाद सिंह, डॉ० वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, स्वः राधामोहन राधेश, मिश्र, अविनाश नागदंश, अद्धेन्दु भूषण, स्वः सभापति पाण्डेय, ज्ञानेश उपाध्याय, अखिलेश्वर पाण्डेय, सिंह, वीरेन्द्र कुमार यादव, रामेश्वर गोप, आ वीरेश सिंह आदि।

एह क्षेत्र के साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थन पर भी एक नजर डालल जरूरी बुझाता। 1947 अंचल के साहित्यकारन के सहयोग से सारन जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के स्थापना भइल जिला हिन्दी सा० सम्मेलन के दुसरका अधिवेशन शीतलपुर (माँझी) में भइल रहे जवना में राहुलजी स्थिति एह अधिवेशन के विशेष उपलब्धि रहे।

पहिला विश्वयुद्ध के समय सुप्रसिद्ध साहित्यकार, 'श्री कमला', के सम्पादक स्वः पं० श्रीवानन्द के सहयोग से 'सज्जन विलासिनी सभा' के स्थापना स्वः कविकिंकरजी कइले रहीं। वर्तमान में माँझी भोजपुरी साहित्य परिषद एह क्षेत्र में आपन सक्रिय सहयोग साहित्य के दे रहल बा। माँझी पुस्तकालय, शीतलपुर के कविकिंकर हिन्दी मंदिर आ जैतपुर के आदर्श पुस्तकालय के अपना में काफी नाम रहे।

माँझी अंचल के महिला साहित्यकारन में श्रीमती प्रमिला पाण्डेय, स्वः रामदुलारी जी, श्रीमती वर्मा, श्रीमती सुशीला पाण्डेय, श्रीमती संध्या सिन्हा आदि के नाम उल्लेखनीय बा।

खेल-कूद आ नाटक मंचन के दिसाईं इ अंचल काफी सक्रिय बा।

बाकिर एह अंचल के वर्तमान स्थिति ओतना संतोषजनक नइखे। आर्थिक उदारीकरण आ संस्कृति के एह समय में तेजी से मानव मूल्य के क्षण हो रहल बा। लोक जीवन से संवेदना के रहल बा। गाँव-गंवई के धरोहर आ मूल्य आज के व्यवस्था में अप्रासंगिक हो रहल बा। के संस्कृति तेजी से फइलत जा रहल बा। सांस्कृतिक प्रदूषण के लत्तर फइल-पसर रहल बा। के भविष्य चिन्ताजनक बा। तबहूँ सार्थक बदलाव खातिर आगे बढ़त रहे के बा।

एह माटी के सपूत डॉ० प्रभुनाथ सिंह भोजपुरी-सेवा के अखण्ड दीया जरा रहल बानीं। एह समाजसेवी नेता श्री माधव सिंह जी एह यज्ञ में सक्रिय भूमिका निवाह रहल बानी। क्षेत्र के के काम में इहाँ का आग-पाछ ना सोचीं। एह आयोजन में दिनरात लागल डॉ० भूदेव शर्मा, रविप्रकाश कुमार सिंह, सत्यनारायण यादव आ उमाशंकर ओझा आदि बहुते सक्रिय बा। लोग। हम कि- दियना बाती माई के मन्दिर में जरत रहो सतत साधना सेवा के पुरवाई बहत रहो।

●

-शीतलपुर बरेजा, सारन

CC-0. Suru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

अबले पुरस्कृत/सम्मानित साहित्यकार

1. चित्रलेखा पुरस्कार

(महिला)

सं०	नाम	रचना	अधिवेशन	वर्ष
1.	श्रीमती शैलजा कुमारी श्रीवास्तव (मरणोपरांत)	चिन्तन कुसुम निबंध-संग्रह	ग्यारहवाँ अधिवेशन	1990
2.	श्रीमती रूपश्री	जिनगी क परछाही (कहानी-संग्रह)	बारहवाँ अधिवेशन	1992
3.	श्रीमती शारदा त्रिपाठी	सगुनी बाछा (एकांकी-संग्रह)	तेरहवाँ अधिवेशन	1993
4.	श्रीमती राजेश्वरी शांडिल्य	सदानीरा (निबंध-संग्रह)	चउदहवाँ अधिवेशन	1994
5.	डॉ० शारदा पाण्डेय	सुपर्णा कथा (कविता-संग्रह)	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	1996
6.	श्रीमती दीप्ति	मन (कविता-संग्रह)	सोलहवाँ अधिवेशन	1998
7.	डॉ० नीलिमा सिन्हा	माई के अँचरा (कविता-संग्रह)	सत्रहवाँ अधिवेशन	2000
8.	डॉ० सुभद्रा वीरेन्द्र	राधा गावे मल्हार (गीत-संग्रह)	अठरहवाँ अधिवेशन	2003

2. माधव सिंह पुरस्कार

(भोजपुरी के सर्वतोभावेन विशिष्ट सेवा खातिर)

सं०	नाम	अधिवेशन	वर्ष
1.	स्व० राधा मोहन राधेश (मरणोपरांत)	सोलहवाँ अधिवेशन (एकमा, सारन)	1998
2.	श्री रामनाथ पाण्डेय	सत्रहवाँ अधिवेशन (कोठेयाँ, सारन)	2000
3.	श्री सिपाही सिंह श्रीमंत	अठरहवाँ अधिवेशन (माँझी, सारन)	2003

3. पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह पुरस्कार

(कहानी/लघुकथा-संग्रह/रेखाचित्र)

सं०	नाम	किताब	अधिवेशन	वर्ष
1.	श्री कृष्णानन्द कृष्ण	रावण अबही मरल नइखे	दसवाँ अधिवेशन	1988
2.	श्री भगवती प्रसाद द्विवतदी	थाती	ग्यारहवाँ अधिवेशन	1990
3.	श्री पी० चन्द्रविनोद	केरा के टुकी-टुकी पतई	बारहवाँ अधिवेशन	1992
4.	श्री चौधरी कन्हैया प्र० सिंह	बड़प्पन	तेरहवाँ अधिवेशन	1993
5.	स्व० डॉ० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी	रेखा पर रेखा	चउदहवाँ अधिवेशन	1994

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ॰ शालिग्राम शुक्ल 'नीर'	हम दहेज ना लेब	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	1996
अभियनाथ चटर्जी	केकरा खातिर	सोलहवाँ अधिवेशन	1998
पाण्डेय सुरेन्द्र	जिये मरे के बेबसी	सत्रहवाँ अधिवेशन	2000
उषा वर्मा	लाइची	अठरहवाँ अधिवेशन	2003

4. अभय आनन्द पुरस्कार

(उपन्यास)

नाम	किताब	अधिवेशन	वर्ष
हरिशंकर वर्मा	आखिरी गीत (निबंध-संग्रह)	दसवाँ अधिवेशन	1988
पाण्डेय कपिल	फुलसुंघी	ग्यारहवाँ अधिवेशन	1990
रत्न किरण	रावन उवाच	बारहवाँ अधिवेशन	1992
पाण्डेय जगन्नाथ प्र॰ सिंह	गाँव घर टोला	तेरहवाँ अधिवेशन	1993
सूर्यदेव पाठक पराग	अछूत	चउदहवाँ अधिवेशन	1994
विक्रमा प्रसाद	भोर मुसकाइल	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	1996
रामनाथ पाण्डेय	इमरीतिया काकी	सोलहवाँ अधिवेशन	1998
डॉ॰ विवेकी राय	अमंगलहारी	सत्रहवाँ अधिवेशन	2000
अनिरुद्ध नारायण वर्मा	नइहर के पायल	अठरहवाँ अधिवेशन	2003

5. आचार्य महेन्द्र शास्त्री पुरस्कार

(स्फुट कविता-संग्रह)

नाम	रचना	अधिवेशन	वर्ष
विनय राय	बिहान होई कहिया ?	सोलहवाँ अधिवेशन	1998
डॉ॰ चन्द्रविनोद	केतना बेर	सत्रहवाँ अधिवेशन	2000
कर्मवा पाण्डेय	हेराइ गइल जिनगी	अठरहवाँ अधिवेशन	2003

6. रामनगीना राय पुरस्कार

नाम	रचना	अधिवेशन	वर्ष
आनन्द संधिदूत	एक कड़ी गीत के	ग्यारहवाँ अधिवेशन	1990
स्वामी विमलानंद सरस्वती	बउधायन	बारहवाँ अधिवेशन	1992
कुमार विरल	किरिन छुअत दरपन	तेरहवाँ अधिवेशन	1993
कैलाशचन्द्र विद्यार्थी	पँखुरी भइल हजार	चउदहवाँ अधिवेशन	1994
अनिरुद्ध त्रिपाठी अशेष	प्रेमायन	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	1996
डॉ॰ सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'	जल के धारा में दीयना	सोलहवाँ अधिवेशन	1998
[illegible]	-	सत्रहवाँ अधिवेशन	2000
[illegible] सिंह	विश्वामित्र	अठरहवाँ अधिवेशन	2003

7. जगन्नाथ सिंह पुरस्कार

(विविध आ 1988 से नाटक खातिर)

नाम	रचना	अधिवेशन	वर्ष
[illegible]नाथ उपाध्याय (मरणोपरांत)	गोविलाप छंदावली	तीसरा अधिवेशन	1987

CC-0. Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

2.	श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी	कौशिकायन (प्रबंध-काव्य)	चउथा अधिवेशन	19
3.	श्री सत्यवादी छपरहिया	कलमिया नाहीं बस में (निबंध-संग्रह)	पाँचवाँ अधिवेशन	19
4.	श्री पाण्डेय सुरेन्द्र	ई हरनाकुश मन (कविता-संग्रह)	छउवाँ अधिवेशन	19
5.	श्री जगन्नाथ	लर मोतिन के (गजल-संग्रह)	सातवाँ अधिवेशन	19
6.	डॉ॰ वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय	दरबा (कहानी-संग्रह)	आठवाँ अधिवेशन	19
7.	श्री रामनाथ पाण्डेय	बिंदिया (उपन्यास)	नउवाँ अधिवेशन	19
8.	श्री निवास मिश्र	केहू ना हमार (नाटक)	दसवाँ अधिवेशन	19
9.	महेन्द्र प्रसाद सिंह	बिरजू के बियाह	ग्यारहवाँ अधिवेशन	19
10.	डॉ॰ धीरज कुमार भट्टाचार्य	इन्दुमिता के सपना	बारहवाँ अधिवेशन	19
11.	श्री जगदीश सहाय असीम	अनहोनी (नाटक)	तेरहवाँ अधिवेशन	19
12.	श्री रामलखन विद्यार्थी	माटी के पहरूआ	चउदहवाँ अधिवेशन	19
13.	श्री नरेन्द्र रस्तोगी मशरक	मास्टर गनेसी राम	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	19
14.	श्री सुरेश कांटक	हाथी के दाँत	सोलहवाँ अधिवेशन	19
15.	स्थगित	-	सत्रहवाँ अधिवेशन	20
16.	श्री केदारनाथ पाण्डेय	शुरुआत	अठरहवाँ अधिवेशन	20

8. पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय पुरस्कार
(भोजपुरी पत्रकारिता)

सं॰	नाम	अधिवेशन	वर्ष
1.	श्री गिरजाशंकर राय गिरिजेश	सत्रहवाँ अधिवेशन	200
2.	श्री अविनाशचन्द्र विद्यार्थी	अठरहवाँ अधिवेशन	200

9. महन्थ लालदास पुरस्कार
(कला)

सं॰	नाम	रचना	अधिवेशन	वर्ष
1.	श्री अखौरी नगेन्द्र नारायण सिंह	भोजपुरी लोक संगीत	तेरहवाँ अधिवेशन	19
2.	श्री बलराम लाल	भोजपुरी लोक नृत्य	चउदहवाँ अधिवेशन	19
3.	श्रीमती कला अमनौरिया	भोजपुरी रंगमंच	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	19
4.	श्रीमती मैनावती देवी श्रीवास्तव	भोजपुरी लोक संगीत	सोलहवाँ अधिवेशन	19
5.	श्री ब्रजकिशोर दुबे	भोजपुरी लोक संगीत	सतरहवाँ अधिवेशन	20
6.	महेन्द्र प्रसाद सिंह	भोजपुरी रंगमंच	अठरहवाँ अधिवेशन	20

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

10. हरिशंकर वर्मा पुरस्कार
(निबंध आ शोध)

नाम	रचना	अधिवेशन	वर्ष
विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव	मन के मौज	ग्यारहवाँ अधिवेशन	1990
...वरचार्य	बतकूचन	बारहवाँ अधिवेशन	1992
अनिल कुमार आंजनेय	विचार बन्ध	तेरहवाँ अधिवेशन	1993
रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'	भोजपुरी शब्दानुशासन	चउदहवाँ अधिवेशन	1994
अशोक द्विवेदी	राम जी के सुगना	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	1996
...जगन्नाथ	गजल के शिल्प विधान	सोलहवाँ अधिवेशन	1998
...न्द्र प्रसाद सिंह	सोच विचार	सत्रहवाँ अधिवेशन	2000
आशा रानी लाल	ए बचवा फूलऽ फरऽ	अठरहवाँ अधिवेशन	2003

11. पाण्डेय योगेन्द्र नारायण छात्र (निबन्ध) पुरस्कार

नाम	रचना	अधिवेशन	वर्ष
सुनील कुमार पाठक	भोजपुरी कविता में सामाजिक चेतना	नउवाँ अधिवेशन	1985
...ती संध्या सिन्हा	भोजपुरी क्षेत्र के सांस्कृतिक गौरव	दसवाँ अधिवेशन	1988
...ती अर्चना कुमारी	भोजपुरी के पढ़ाई: समस्या आ समाधान	ग्यारहवाँ अधिवेशन	1990
...चन्द्र वर्मा	भोजपुरी के हमार प्रिय कवि	बारहवाँ अधिवेशन	1992
...ती सुप्रिया तृप्ति	हमार प्रिय भोजपुरी कथाकार	तेरहवाँ अधिवेशन	1993
...ती रुचिका रंजन	भोजपुरी के महिमा	चउदहवाँ अधिवेशन	1994
...क्तशेखर पाठक	भोजपुरी कविता में राष्ट्रीय चेतना	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	1996
...नोद रंजन सिंह 'इन्दु'	आजादी के पचास बरिस आ भोजपुरी	सोलहवाँ अधिवेशन	1998
...क्तशेखर सिंह अरविन्द	भोजपुरी के नाटककार	सतहवाँ अधिवेशन	2000
...ल अभिषेक	भोजपुरी लोकगीतन में राष्ट्रीय चेतना	अठरहवाँ अधिवेशन	2003

12. वागीश्वरी प्रसाद छात्र (कहानी) पुरस्कार

नाम	रचना	अधिवेशन	वर्ष
...निरुद्ध त्रिपाठी अशेष	सिसिकत फूल	नउवाँ अधिवेशन	1985
...नवीर अहमद	बेचारी औरत	दसवाँ अधिवेशन	1988
...मेशचन्द्र चतुर्वेदी	जमला के सुख	ग्यारहवाँ अधिवेशन	1990
...ती नीहारिका	मउसी	बारहवाँ अधिवेशन	1992
...य बिहारी पाण्डेय	गाँव के दरद	तेरहवाँ अधिवेशन	1993
...विन्द्र रवि	मातम	चउदहवाँ अधिवेशन	1994
...सिद्धार्थ शेखर	भारत के नक्शा	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	1995
...प्रेम तिवारी	टीस	सोलहवाँ अधिवेशन	1998
...कान्त	–	सत्रहवाँ अधिवेशन	2000
...दिनेश प्रसाद शर्मा	अछूत	अठरहवाँ अधिवेशन	2003

13. गिरिराज किशोरी छात्र (कविता) पुरस्कार

नाम	रचना	अधिवेशन	वर्ष
...पिका रंजन सुशील	आँख के लोर बह गइल	दसवाँ अधिवेशन	1988

Suru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

2. श्रीमती दीप्ति	मन	ग्यारहवाँ अधिवेशन	19
3. श्री नीरज कुमार पाठक	केने केने का का	बारहवाँ अधिवेशन	19
4. श्री साकेत रंजन प्रवीर	गीत सावन के	तेरहवाँ अधिवेशन	19
5. श्री लक्ष्मी कांत मुकुल	भरमे में	चउदहवाँ अधिवेशन	19
6. श्री फारूख साहेबगंजवी	सोनहुला सपना	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	19
7. श्रीमती उमा	हायकु	सोलहवाँ अधिवेशन	19
8. श्री मनोज कु॰ सिंह 'भावुक'	कवि के मन	सतहवाँ अधिवेशन	19
9. श्री राकेश कुमार निशाकर	होली, मिसरी, काशी	अठरहवाँ अधिवेशन	20

प्रस्तुति- श्रीमती उ

अठारहवाँ अधिवेशन तक

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से सम्मानित भोजपुरी सेवी

(अक्षर- क्रम से)

1. श्री अविनाश चन्द्र विद्यार्थी	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	(गाजीपुर)	19
2. (पं॰) कमला प्रसाद मिश्र 'विप्र'	बारहवाँ अधिवेशन	(छपरा)	19
3. (श्री) कलक्टर सिंह 'केसरी' (मरणोपरात)	तेरहवाँ अधिवेशन	(आरा)	19
4. (श्री) कुलदीप नारायण 'झड़प'	बारहवाँ अधिवेशन	(छपरा)	19
5. (डॉ॰) कृष्णदेव उपाध्याय	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	(गाजीपुर)	19
6. (श्री) चन्द्रशेखर मिश्र	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	(गाजीपुर)	19
7. श्री दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती	बारहवाँ अधिवेशन	(छपरा)	19
8. (श्री) दूधनाथ शर्मा 'श्याम'	बारहवाँ अधिवेशन	(छपरा)	19
9. (पं॰) धरीक्षण मिश्र	बारहवाँ अधिवेशन	(छपरा)	19
10. (श्री) बनारसी प्रसाद भोजपुरी (मरणोपरान्त)	तेरहवाँ अधिवेशन	(आरा)	19
11. (श्री) भुवनेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव 'भानु'	तेरहवाँ अधिवेशन	(आरा)	19
12. श्री महेश्वराचार्य	बारहवाँ अधिवेशन	(छपरा)	19
13. श्री मुहम्मद खलील (परणोपरान्त)	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	(गाजीपुर)	19
14. (श्रीमती) राधिका देवी श्रीवास्तव (परणोपरान्त)	तेरहवाँ अधिवेशन	(आरा)	19
15. (श्री) रामजियावन दास 'बावला'	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	(गाजीपुर)	19
16. (श्री) रामनगीना सिंह 'विकल'	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	(गाजीपुर)	19
17. (डॉ॰) रामनाथ पाठक 'प्रणयी' (मरणोपरान्त)	तेरहवा अधिवेशन	(आरा)	19
18. (श्री) रामेश्वर सिंह कश्यप (परणोपरान्त)	तेरहवा अधिवेशन	(आरा)	19
19. (श्री) राहगीर	पन्द्रहवाँ अधिवेशन	(गाजीपुर)	19
20. (श्रीमती) विन्ध्यवासिनी देवी	बारहवाँ अधिवेशन	(छपरा)	19
21. डॉ॰ सर्वदेव तिवारी 'राकेश' (मरणोपरान्त)	तेरहवा अधिवेशन	(आरा)	19

-प्रस्तुतिः पाण्डेय कपि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरस्कृत कृतियन के समीक्षा

आचार्य महेन्द्र शास्त्री पुरस्कार

स्फुट काव्य पर दिहल जाये वाला ई पुरस्कार-सम्मान श्री कन्हैया पाण्डेय के 'हेराइ गइल हेराइ गइल जिनिगी कन्हैया पाण्डेय के सद्य: प्रकाशित भोजपुरी कवितन के पहिल संग्रह कन्हैया पाण्डेय के कवितन में वैचारिकता के साथे-साथे गहन चेतना आ संवेदन के भरपूर प्रयोग । इनकर नजर समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, लूट-खसोट, असमानता के कहीं नजरअंदाज नइखे । उ एक ओर अगर भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद से सहमल लोगन के चिंता करत नजर आवत दूसरा ओर ओह दबल-सहमल आम जनता के दब्बूपन स्वभाव से जादे चिंतित नजर आवत 'सुराज', 'आपन हिन्दुस्तान' आ 'जुम्मन काका' शीर्षक कवितन में आजादी के बाद के भ्रष्ट सामाजिक राजनैतिक परिवेश के चित्रण बड़ा सशक्त ढ़ंग से भइल बा ।

भाषा के सरल प्रयोग हेराइ गइल जिनिगी के कविता आ गीतन के संप्रेषण शक्ति के तेज कर । प्रचलित मुहावरन आ ठेठ भाषा के ठाट आ लोकगीत आ लोकधुन के प्रयोग इनका कवितन के सत गइल बा । कुल मिला के 'हेराइ गइल जिनगी' के भोजपुरियन समाज आ जीवन-जगत के उत्तम कहल जा सकेला ।

-कृष्णानन्द कृष्ण

रामनगीना राय पुरस्कार

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का तरफ से 'प्रबन्ध काव्य' पर दिआए वाला रामनगीना राय पुरस्कार' अबकी बेर डॉ॰ अमर सिंह के 'विश्वामित्र' पर दिहल गइल बा ।

रामनगीना राय पुरस्कार से पुरस्कृत प्रबंध काव्य 'विश्वमित्र' के रचइता डॉ॰ अमर सिंह के भोजपुरी पाठकन खातिर अब परिचय के मोहताज नइखे । दू-दू गो प्रबन्ध काव्य के साथे भोजपुरी में आपन उपस्थिति दर्ज करा चुकल बाड़न ।

'विश्वामित्र' प्रबन्ध काव्य में विश्वामित्र के कार्य व्यापार, उनका रहन-सहन के, उनका सोच के मानवीय धरातल प उतारे के सफल कोशिश कइल गइल बा । विश्वामित्र के सोच आदमी के नियरा रहे एह से ऊ हमेसा से साधारण मानव के उत्थान के बात करत नजर आवत मानवधर्म के उ एह दुनिया के सर्वश्रेष्ठ धर्म मानत रहले । एह से विश्वामित्र समृद्ध शांतिमय समाज सपना खातिर सगरे संघर्षशील आ बेचैन नजर आवत बाड़न । विश्वामित्र के चरित्र के समकालीन स्थिति आ समाज के साथे तालमेल सृजन करत कवि पौराणिक कथा के सार्थकता सिद्ध करत सरल भाषा आ सटीक छंदन के सधल प्रयोग से रचना संप्रेषणीय बन गइल बा । पुस्तक के हर सर्ग के कथा दे दिहला से किताब के उपयोगिता बढ़ गइल बा । **- कृष्णानन्द कृष्ण**

पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह पुरस्कार

अबकी बेर पाण्डेय जगन्नाथ प्रसाद सिंह पुरस्कार से पुरस्कृत डॉ॰ उषा वर्मा के कहानी, 'लाइची' में उनुकर एगारह गो कहानी संगृहीत बड़ुए । लाइची में संगोरल बिटोरल कहानियन के पढ़त के ओकर मरम जाने के कोशिश कइला पर चारो ओर भोजपुरिया समाज के तस्वीर रउवा सामने हो जाई । जहाँ गरीबी बा; अशिक्षा बा, आर्थिक बदहाली बा, सामाजिक आ पारिवारिक स्तर प होत संबन्धन आ ओह से उपजल विकृतियन के ढेर बा । ओही भयावह स्थितियन से अपना सपना खातिर उषा वर्मा कथा-वस्तु जुटवले बाड़ी ।

'लाइची' आ 'काकी के गहना' जहाँ संवेदना के धरातल प सराबोर कर देत बा ओहिजे भाग्यवादी प्रवृति आ वस्तुवादी सोच के चलते पैदा होत संबन्धहीनता के तस्वीर उकेरे में सफल भइली नरे 'धाम' आर्थिक तनाव में पिसात निम्नमध्यवर्गीय परिवार के कथा बा जवन पाठक के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri. Contributed by Sri Gurु Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

मन में करुणा आ आक्रोश दूनों जगावत बा ।

'लाइची' के भाषा सहज सरल बा जवन पाठक के आनंद लेबे में कहीं बाधक नइखे बनत सहज बोलचाल के भाषा के मारक शक्ति बहुत होला । उ पाठक के हिरदय में सीधे उतर जाला । मिला के ई कहल जा सकेला कि उषा वर्मा के लाइची भोजपुरी समाज, ओकर बोली-बानी, कार्यक्रम के मुँहबोलता एलबम बा ।

-कृष्णानन्द कृष्ण

● हरिशंकर वर्मा पुरस्कार

'ए बचवा फूलऽ फरऽ' डॉ॰ आशारानी लाल के ललित निबन्ध संग्रह हवे, जवना के हरिशंकर वर्मा पुरस्कार अबकी बेर सम्मेलन का अठारहवाँ अधिवेशन का अवसर पर दिहल रहल बा ।

नारी मुक्ति के चेतना नयका युग के देन हवे । शोषण आ अन्याय के आउर रूप के खिलाफ पुरनको जमाना में योजनाबद्ध ढंग से लड़ाई होत रहे ।

आज विश्व भर में नारी मुक्ति खातिर आन्दोलन चल रहल बा । हमनियो के सभ एकरा से अछूता नइखे । भोजपुरी में अइसन विषयन पर कमें लेखन भइल बा । एह दिशा में डॉ॰ आशारानी लाल प्रयास कइले बानी आ ई प्रयास काफी प्रभावशाली बा ।

डॉ॰ लाल के निबंध संग्रह ' ए बचवा ! फूलऽ फरऽ ' में नारी के केन्द्र बिन्दु बना कईगो निबंध लिखल गइल बा । जवना में 'ईया', 'अम्मा', 'मेहरारू', सवत' मर्मस्पर्शी बन पड़ल बा । लेखिका का लगे बात कहे के आपन ढंग बा, जवन नारी मुक्ति आन्दोलन में कुछ उन्हा होखे वाला छिछला आ सतही नारावाजी से अलग बा । नारी के संगे होखे वाला भेदभाव के भूमि का माध्यम से धैर्य का संगे राखल गइल बा, जवन थोड़हू संवेदनशील पाठक के गहिरे बेधे के सामर्थ्य लेले बा ।

परम्परागत परिवार में बेटा के अपेक्षा बेटी के पढ़ाई-लिखाई, रहन-सहन के कम महत्व दिहल जाला । 'ईया' में एकर वास्तविक चित्र उतरल बा-

"ईया' अपना पोता लोगन के त कुछ ना दोष दिहन, बेटी (पोती) खराब होले ई उनका शब्दकोष में खूबे रहे.....स्कूल से घरे आइजां त ईया के डरे लुका के अपन-अपन बस्ता धइ भईया के साथे खेले जाये के जइसे तइयारी करे के सोंची कि ईया के बोलिया गूंजे लागी-चलऽ ए बेरा ले स्कूल में रहे, अब बेटवन साथे खेले जाई । अरे, एगो बेटी बा त का रासबिहारी तऽ (हमार बाबूजी) के नउवाँ डूबा दी । कहते-कहते भूजा भईया आ बबुआ के भर पॉकिट दे दे रही, त हमरा के एक मुट्ठी दे के कहत रही जो, जो दुअरा पर तऽ धइल बा ले आके चउका में रख दे । महतारी त बोलत नइखे, आ इ बा कि बेटवा बनल बिया ।

हमनी किहाँ नारी के बचपन में पिता, जवानी में पति आ बुढ़ापा में पुत्र के अधीन रहे के धार्मिक विधान बा । ओकर पहचान पुरूष के कवनो ना कवनो संगे साटिए के होला । फलाना के बेटी, फलाना के बहिन, फलाना के पत्नी, फलाना के माई । नारी के स्वतंत्र रूप सहज प्रकट ना होला । एह पक्षपातपूर्ण व्यवस्था के डॉ॰ लाल अपना 'मेहरारू 'शीर्षक निबंध में कारूणिक ढंग से उजागर कइले बानी । एकर शुरूआते बड़ी प्रभावशाली ढंग से होता-

"हमार नाव मेहरारू ह । एही से त हमरो भुला जाला कि हमार का नाव रहे, जब हम रहनी, गांवे रहत रहीं त हमार माई हमरा के बबुनिया कहे ।.....कुछ दिन बितला के बाद हम लरिकाई खतम हो गइल काहे कि लाल सेनुर हमरा करिया बार के बीचे लहराये लागल ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

...में हमरा के केहू दुल्हिनिया कहे, त केहू कनिया कहे, केहू भउजी कहे, केहू भईया ...त केहू फलाना बो कहे.....हम फलाना वो से हट के बवुअवा के माई कहावे ...

ई वर्णन काफी व्यवस्थित आ सशक्त बा । सौत के प्रति सबका मन में एगो पूर्व ...ल बा । बाकिर लेखिका के नजर ओह स्त्री पर भी गइल बा जवना के स्थिति पूर्व धारणा ...ई बा । 'सवत' में दूसरकी मेहरारू के दुर्दशा होता । एकरा पीछे आर्थिक आ शैक्षणिक ...

एगो गरीब माई-बाप आर्थिक दबाव में अपना बेटी के शादी अइसन शादीशुदा व्यक्ति ...विवश होता जेकरा पहिलकी पत्नी से कवनो संतान नइखे हो पावत । दूसर शादी क के ...से संतान पैदा करता आ फेर ओकरा के बेला देता । अइसन स्थिति औरत के वस्तु ...मानसिकता के वजह से बनल बा ।

नारी के संगे डेगे-डेग पर होखे वाला भेदभाव के बहुते घटनन के एह में चित्रण भइल ...मुक्ति के ध्यान में रख के एतना प्रभावशाली लेखन अबहीं ले भोजपुरी में नइखे भइल । ...निबंध कवनो भाषा के श्रेष्ठ निबंध से टक्कर ले सकता ।

-जीतेन्द्र वर्मा

...लेखा पुरस्कार

डॉ० राकेश कुमार पाण्डेय द्वारा दिहल राशि से चित्रलेखा पुरस्कार उनका दिवंगत पत्नी ...बी का स्मृति में केहू महिला रचनाकार के दिहल जाला । अबकी बार ई पुरस्कार श्रीमती ...सिंह के उनका 'राधा गावे मल्हार' नाँव के हाल में छपल गीत-संग्रह पर दिहल गइल ...सुभद्रा वीरेन्द्र भोजपुरी-हिन्दी के सुकंठ गायिका आ कवयित्री हई । ...मल्हार' का पहिले इहाँ के भोजपुरी गीत-संग्रह 'इचिको ना लउके', हिन्दी गीत ...-ऋचा' आ हिन्दी लेख संग्रह 'आरोह-अवरोह' छप चुकल बा ।

ई ठीक बा कि आज कविता के फैशन बदल गइल बा । कविता गद्य के बहुते नजदीक ...विया । एकरा बावजूद छंदोबद्ध कविता के महत्त्व खतम नइखे भइल । साँच बात त ई ...कविता छंद में आ छंदमुक्त दूनों रूप में हो सकत विया । आम लोग के बीच भोजपुरी गीत ...अश्लील गीत लगावल जाला । अइसन स्थिति खातिर व्यवसायिक कैसेट कंपनी आ ...रूप के मंचीय कवि त जिम्मेवार बड़ले बाड़े । संगे-संगे भोजपुरी के रचनाकारों जिम्मेवार ...अपन सही गीत लोग का सामने ना रखस । अइसन स्थिति में सुभद्रा वीरेन्द्र के गीतन ...बड़ जाता । इहाँ के गीतन से भोजपुरी गीत के स्वस्था प्रवृत्ति सामने आवता ।

समीक्ष्य कृति में उल्लास के भाव से भरल गीतन के प्रमुखता बा । 'इचिको ना लउके' ...के गीत वाड़ी स । एकरा प्रकाशन के बाद कुछ समीक्षक लोग इहाँ के भोजपुरी के ...में कहे लागल । ई बहुते बड़हन बात रहे । प्राय: सब रचनाकार के बड़ रचनाकार से ...नीमन लागेला । आ ओहू में भोजपुरी के कूपमंडूक वातावरण त कुछ पूछही के नइखे ...जे कबीर-तुलसी, भारतेन्दु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र शुक्ल, निराला, प्रेमचन्द्र या ...आउर बा । अइसन वातावरण में सुभद्रा जी के ई कहल कि 'हम महादेवी ना हई आ ...कवि । हम त सुभद्रा बानी आ सुभद्रा बनि के जीये चाहतानी । इहे हमार सही पहचान

...Suru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ह ।' (समीक्ष्य कृति, आपन बात, पृष्ठ संख्या-7) साहस आ आत्मविश्वास के परिचायक बा
एह से भोजपुरी के सुखद भविष्य के उमेद जागता ।

'राधा गावे मल्हार' के गीतन के एगो सम्मोहक दुनिया बा । ऊ अपना
बंधन में पाठक के बान्ध लेता । पाठक महसूस भी नइखे करत कि ऊ बन्धाइल बा । अइसन
के बन्धन अतना मोहक होला कि सभे एह में बन्धाए के चाहेला । एह गीतन में एके जगे
मिठास नइखे बल्कि गीत के पोर-पोर में रस भरल बा । पाठक के लहे-लहे रस मिलता ।
मिलन के आशा में होखे वाला तड़पन के विभिन्न मनोदशा के सजीव चित्र उरेहाइल बा । स्वर
सुर में बन्हाइल हरेक गीत जइसे कवयित्री का हृदय से निकल के सीधे पाठक आ सुनिहार
मरम के छू रहल बा ।

एह संग्रह में पचहत्तर गो गीत संकलित बाड़ी स । किताब के साज-सज्जा कलात्म
बा ।

-जीतेन्द्र वर्मा

● जगन्नाथ सिंह पुरस्कार

अठरहवाँ अधिवेशन में नाटक विधा खातिर जगन्नाथ सिंह पुरस्कार श्री केदार
पाण्डेय के 'शुरूआत' पर दिहल जा रहल बा । 'शुरूआत' के पहिला संस्करण भोजपुरी
सीवान से 1977 में छपल रहे ।

केदारनाथ पाण्डेय के लिखल नाटक 'शुरूआत' भोजपुरी के ओह गिनल-चुनल नाटक
में बा जवना में एगो दृष्टि बा, विजन बा । आज देश, विशेष कके बिहार के एगो हिस्सा, में
संघर्ष में नरसंहार के अंतहीन सिलसिला चल रहल बा । एकरे के एह नाटक में कथानक बना
गइल बा । एह में देखावल गइल बा कि जहाँ एगो नरसंहार खतम होला ओहीजा से दूसरा नरसं
के शुरूआत होला । अन्याय, गैरबराबरी जबले रही तबले शांति ना स्थापित होई । ई
अत्याचार के खिलाफ लड़े के प्रेरणा देता । ई नाटक रंगमंच के दृष्टि से सफल बा । एकर कई
सफलतापूर्वक मंचन हो चुकल बा । एकरा मंचन में नाटककार खुद प्रभावशाली अभिनय
चुकल बा; जेकर सराहना बराबर होत रहल । बिहार विधान परिषद् के तेजस्वी सदस्य श्री
के ई नाटक भोजपुरी नाटक के इतिहास में एगो मील के पत्थर बा ।

-जीतेन्द्र वर्मा

●

निवेदन बा

गाँहक लोग से

- भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के वार्षिक शुल्क जनवरी से दिसम्बर ले रहेला रउए । अ
  शुल्क फरवरी का अन्त ले जरूर भेज दीं । नाँव पता साफ-साफ लिखीं ।
- बिना शुल्क पवले अब पत्रिका भेजल संभव ना हो पाई ।
- आजीवन ग्राहक शुल्क भेजे का सँगे आपन एगो फोटो आ संक्षिप्त परिचय भी लिख
  भेजीं । प्रायोजक लोग के सचित्र परिचय पत्रिका में छापल जा रहल बा ।
- पत्रिका के नियमित बनावे खातिर राउर सहयोग जरूरी बा । दिल खोल के चन्दा
  आ हित-मीत के ग्राहक बनाईं । अइसन अधिकारिक एजेन्सी के पता हर अंक में दि
  जाई ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

अठरहवाँ सत्र

स्थायी समिति

सदस्य सूची

(क) संरक्षक सदस्य

(डॉ०) अर्जुनदास केसरी, लोकवार्ता शोध संस्थान, राबर्टसगंज, सोनभद्र (उ० प्र०)
ईश्वरचन्द्र सिन्हा, पत्रकार, के-67/86, ईश्वरगंगी, वाराणसी-221001
(आचार्य) पाण्डेय कपिल, इन्द्रपुरी, मार्ग-3, पटना- 800024
मोती बी. ए., लक्ष्मी निवास, नन्दना वार्ड पश्चिमी, बरहज, जिला-देवरिया (उ. प्र.)- 274601
(डॉ०) विद्यानिवास मिश्र, बादशाह बाग कॉलोनी, वाराणसी-221001
(दण्डिस्वामी) विमलानन्द सरस्वती, राजगुरुमठ, बी-3/175, शिवालाघाट, वाराणसी
(डॉ०) विवेकी राय, विवेकी राय मार्ग, बड़ी बाग, गाजीपुर, (उ. प्र.) - 233001
(आचार्य) विश्वनाथ सिंह, पूर्व प्रधानाचार्य, आशोक नगर, गया - 823001

(ख) विशिष्ट आजीवन सदस्य

कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र' भाटपाररानी, देवरिया (उ. प्र.)
पी० एन० सिंह, एम-37, हरमू, राँची - 834012
प्रभाशंकर मिश्र, एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट, ई- 245, ग्रेटर कैलाश, फेज-2 गेट-6, नई दिल्ली
डॉ० प्रभुनाथ सिंह, डायरेक्टर, दिल्ली स्कूल ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज ऐड रिसर्च, एन० डी० एस० ई० पार्ट-1, नई दिल्ली-110041
माधव सिंह, 201, शांति विहार, ऑफ फ्रेजर रोड, पटना- 800001
डॉ० राकेश कुमार पाण्डेय, बी-101, राजकिशोरी कम्पलेक्स, बहादुरपुर, पटना-20
(डॉ०) रामचन्द्र सिन्हा, कंकड़बाग, कम्यूनिटी हॉल के पास, पटना-20
शिवनन्दन प्रसाद 'हर्षवर्धन', शिवांजनि, 139-डी श्रीकृष्णापुरी, पटना-1
(श्रीमती) शैल वर्मा, द्वारा- श्री अमल वर्मा, फ्लोरेंटाइन एपार्टमेंट, विंग ए, तेरहवीं मंजिल, मकान नं० 1301, हीरानन्दानी गार्डेन, पवई, मुम्बई-480072
सत्यनारायण सिंह, एकवना कोठी, केसरीनगर, पटना-24

(ग) आजीवन सदस्य

अक्षयवर दीक्षित, भोजपुरी भवन, निरालानगर, सीवान-841226
अक्षयवर नाथ मिश्र, इन्द्रपुरी, मार्ग-5 राँची - 834005
अखिलेश गुप्त, पोस्ट बॉक्स-76, नागा रोड, रक्सौल, पूर्वी चम्पारण- 845305
अखिलेश्वर प्रसाद सिन्हा 'अखिलेश', रसिक निवास, उतरवारी द्वार देवी, बेतिया,

CC-0. Suru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

पश्चिमी चम्पारण

5. अजय कुमार ओझा, ओझा प्रकाशन, जोन 11, होल्डिंग 102, भोजपुरी पथ, बिरसानगर, जमशेदपुर - 831004
6. अजीमुद्दीन 'अजीम', जयगोविन्द इण्टर कॉलेज, दिघवारा, सारण
7. अतुल कुमार, ब्लॉक 17, फ्लैट 137, मोईनुल हक स्टैडियम के सामने, राजेन्द्र नगर, पटना-800016
8. अतुल मोहन प्रसाद, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, कोरान सराय, बक्सर-802101
9. अनिरूद्ध, डीहीं, सारण (बिहार)
10. (डॉ०) अनिल कुमार 'आंजनेय', उजियार, पो० कोरंटाडीह, जिला-बलिया (उ. प्र.)- 266501
11. अनिल ओझा 'नीरद', पाल गुड्स ट्रान्पोर्ट कम्पनी, 13/4, सैयद मैल्ली लेन, कलकत्ता-700007
12. (श्रीमती) अनुराधा कृष्ण रस्तोगी, द्वारा- श्री सुरेन्द्र कृष्ण रस्तोगी, शैय्या भवन, रोहिताश्व पथ, महाराजा हरिचन्द्र नगर, कुदरा कैमूर (बिहार) -821108
13. अमरनाथ वर्मा, अमर फैन्सी आभूषण भण्डार, हिण्डालको गेट, रेणकूट-231217, सोनभद्र (उ. प्र.)
14. अमिताभ कुमार, पो. कौड़िया, वाया-वसन्तपुर, जिला-सीवान (बिहार)
15. अमीरचन्द्र सिंह, वरिष्ठ अभियंता, डी-31/5, काँटी थर्मल पावर, जिला-मुजफ्फरपुर-843130
16. (श्रीमती) अम्बुजा सिन्हा, द्वारा- श्री राजेश्वर प्रसाद सिन्हा 'राजेश' एडवोकेट, ए/107, ए. जी. कॉलोनी, पटना - 800025
17. अरविन्द कुमार श्रीवास्तव, ब्लॉक रोड, एकमा, सारण (बिहार)
18. अरविन्द 'विद्रोही', ई. डब्लू. एस. 13/8, छोटा गोविन्दपुर, जमशेदपुर-832101
19. डॉ० अरूण मोहन भारवि, शारदा सदन, निकट मुख्य डाकघर, बक्सर-802101
20. (श्रीमती) अर्चना कुमारी, द्वारा- डॉ० अवधेश मिश्र, बारादरी कटरा, छपरा - 841301
21. अवधकिशोर सिंह 'अवधेश', डी. डी. ओ. आई. बी. लहेरियासराय, जी. पी. ओ. के पास, दरभंगा ।
22. अवधेश कुमार सिंह, पो. डुमाईगढ़, भाया- ताजपुर फुलवरिया, सारण
23. अविनाशचन्द्र विद्यार्थी, चन्द्रायण, शिवाजी पथ, यारपुर, पटना - 800001
24. अशोक कुमार सिंह, पतरातू थर्मल पावर, हजारीबाग - 829119
25. (डॉ०) अशोक द्विवेदी, सम्पादक 'पाती', 47, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया, (उ .प्र.) - 277001
26. अशोक मोहन सिंह, नवयुग कारपोशन, वशिष्ठनारायण रोड, कदमकुआँ, पटना-3
27. अशोक शेरपुरी, नेहरू युवा केन्द्र, नया बाजार चौक, भागलपुर, बिहार
28. अश्विनी कुमार 'आसूँ', जिला परिषद कार्यालय, मोतिहारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदित्य नारायण कसौधन, नारायण पथ, वार्ड नं०-12, सिद्धार्थ नगर, (भैरहवा), लुम्बिनी अंचल, नेपाल
आनन्द सन्धिदूत, इलाहाबाद बैंक, रीजनल ऑफिस, जूली गार्डन, जंगी रोड, मिर्जापुर (उ. प्र.) -231001
आमोद कुमार, ग्राम- सागर, पोस्ट- सुलतानपुर, जिला- सीवान
(डॉ०) आर. एन. त्रिवेदी, 198-बी, श्रीकृष्णपुरी, पटना-1
(डॉ० श्रीमती) आशारानी लाल प्रोफेसर्स कॉलोनी, आनन्द नगर सीवान- 841226
(श्रीमती) आशा सिन्हा द्वारा- श्री युगल किशोर सिन्हा, इन्द्रपुरी, मार्ग-5, पटना-800024
उदय नारायण सिंह, कला-साधक, गौतम स्थान, रिविलगंज, सारण
उदयराज सिंह, सम्पादक 'नईधारा', सूर्यपुरा कोठी, बोरिंग रोड, पटना - 800001
उदितेन्दु बोस, पोपुलर बुक स्टोर्स, अशोक राजपथ, पटना- 800004
उपेन्द्र नारायण विद्यार्थी, बजरंग निकेतन, पीरमुहानी, पटना- 800003
उमानाथ मिश्र, कनीय अभियंता (यांत्रिक), लोक स्वास्थ्य अवर प्रमण्डल, दुमका (बिहार)
(श्रीमती) उमा 'क्रेजी' क्रिएशन, I बी मिन्डीकेट इनक्लेब, रघुनगर, नई दिल्ली
(श्रीमती) उर्मिला पाठक, द्वारा- श्री कृष्णानन्द कृष्ण, पथ 8-बी, दक्षिणी अशोकनगर, पटना-20
(डॉ० श्रीमती) उषा वर्मा, प्रोफेसर कॉलोनी, मिशन रोड, दहियावाँ, छपरा -841301
(डॉ० श्रीमती) ऋता शुक्ल, टैगोर गिरि शिखर पथ, मोराबादी, राँची-834003
(डॉ०) एम. एम. पी. श्रीवास्तव, राजेन्द्र पथ, उत्तरी श्रीकृष्णापुरी, पटना-1
एम. नारायण, 12, विनय नगर, दिल्ली रोड, सहारनपुर (उ. प्र.) -247001
कपिलदेव नारायण सिंह, (पूर्व विधायक, म. प्र.), स्कूल रोड, अम्बिकापुर, सरगुजा, - 497001
(डॉ०) कपिलदेव सिंह, हेकाम, पो. एकमा, सारण
कमला कस्ट्रक्शन कम्पनी, 201, कोऑपरेटिव कॉलोनी, बोकारो स्टील सिटी
करुणानिधान केशव, ऐडवोकेट, 113, श्रीकृष्णानगर, पटना-1
कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य', सूर्योदय, सतबहिनियाँ मंदिर के पास, पुराना पावर हाउस, देवरीडीह, बिलासपुर छत्तीसगढ़ - 495004
(डॉ०) कामेश्वर प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, श्रम एवं समाज कल्याण विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना-4
काशीनाथ सिंह, पी. सी. स्टोर, बुधवारी बाजार, बिलासपुर (म. प्र.)
किरणकान्त वर्मा, 25, आनन्दपुरी, पश्चिमी बोरिंग केनाल रोड, पटना-1
किशोरीशरण शर्मा, साहित्यांगन, सेक्टर -14 (खड़कपुर), इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

55. (डॉ०) कुबेर मिश्र, ग्राम- करसौली गौर, मालटारी, जिला- आजमगढ़ -276134
56. कुशवाहा 'कुसुम', सम्पादक 'पुजारिन', पटना-800014
57. कृष्ण कुमार, सुबोध प्रकाशन, खजांची रोड, पटना 800004
58. कृष्ण कुमार विद्यार्थी, 124, पाटलिपुत्र, पटना-800013
59. कृष्ण बालापुरी, 1, कालिदास नगर, हरपुर, नई बस्ती, बलिया (उ. प्र.) -
60. कृष्णानन्द कृष्ण, पथ 8-बी, दक्षिणी अशोक नगर, पटन-800020
61. (श्रीमती) कैथेराइन चैम्पियन CATHERINE CHAMPION, CEIAS 54 BOULEVARD, RASPAIL, PARIS, FRANCE
62. गंगाधर प्रसाद श्रीवास्तव, मधु-गंगा, बाँध पर, आदर्श कॉलोनी, पश्चिमी पटेल नगर पटना-23
63. गंगा प्रसाद 'अरुण', एल. 4/21, रोड-17, टेल्को कॉलोनी, जमशेदपुर -831004
64. (आचार्य) गणेशदत्त 'किरण', द्वारा- श्री ध्रुव तिवारी, सोहनीपट्टी, बक्सर-802101
65. (श्रीमती) गरिमा बन्धु, भोजपुरी संस्थान, मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800024
66. (प्रो०) गुरूचरण सिंह, कालीस्थान के उत्तर, सिविल लाइन्स, सासाराम, रोहतास
67. गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश', बी-10, पत्रकारपुरम, राप्तीनगर, पो-अरोग्य मंदिर गोरखपुर-3
68. गिरिजाशंकर शुक्ल, मौलाबाग, आरा- 802301
69. (डॉ०) गुलाबचन्द प्रसाद 'अभय', घघा घाट महेन्द्रू, पटना-800006
70. गौरीशंकर प्रसाद सिन्हा, 8-बी, इन्दु पार्क, फोर बंगलोज, अंधेरी वेस्ट, मुम्बई-58
71. (डॉ०) चन्द्रभानु शर्मा, हरिजन होस्टल के पास, अशोक राजपथ, पटना-6
72. चन्द्रभूषण तिवारी, उत्तर रेवले कॉलोनी, क्वार्टर नं०-56/ई. एफ. जी. पो गजाधरगंज, बक्सर-2
73. (डॉ०) चन्द्रभूषण सिन्हा, दिनकर परिषद्, बिहार एसोसियेशन, जमशेदपुर-831002
74. चन्द्रशेखर मौर्य, शनिचरी रपटा मार्ग, बिलासपुर-495001 (छत्तीसगढ़)
75. (डॉ०) चन्द्रशेखर सिंह, विश्वम्भरपुर, वाया- अमनौर, सारण (बिहार)
76. (श्रीमती) चन्द्रावती देवी, द्वारा- श्री शालिग्राम 'माधव', ज्ञानकेन्द्र, नया टोला पटना-
77. चन्द्रिका मिश्र, सेवानिवृत सहायक श्रमायुक्त, समता कॉलोनी, हाजीपुर, जिला- वैशाली (बिहार)
78. (डॉ०) चित्तरंजन प्रसाद सिन्हा, रोड-3, क्वार्टर बी/5, आर. ब्लॉक, पटना-1
79. चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, पो.- नोनार, वाया- पीरू, भोजपुर, बिहार - 802207
80. जंगबहादुर सिंह, भारती प्रकाशन, खजांची रोड, पटना-4
81. जगतनाराण प्रसाद, शांतिनिकेतन, पथ-4, पूर्वी पटेलनगर, पटना-800023
82. जगतनाराण सिंह, पतरातू थर्मल पावर, हजारीबाग-829119
83. जगदीश सहाय 'असीम', क्वार्टर टाइप III-3/25, जादूगोडा माइन्स, पूर्वी सिंहभूमि (झारखंड)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगनारायण राम, कार्यपालक अभियन्ता, लोक स्वास्थ्य प्रमण्डल, चक्रधरपुर, जिला-पूर्वी सिंहभूम (झारखंड)
जगन्नाथ, श्याम भवन, एस. पी. सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड, ललिता होटल के पीछे, पटना-800001
जनार्दन तिवारी, बुक सेन्टर, अशोक राजपथ, पटना-4
(प्रो॰) जयकान्त सिंह 'जय', टीचर्स होस्टल-3 (सी)/49, पंजाब नेशनल बैंक के पीछे, बिहार विश्वविद्यालय परिसर, मुजफ्फरपुर
जयबहादुर सिंह, एन-319/4, रीवर विऊ कॉलोनी, टेल्को, जमशेदपुर-831004
जीतेन्द्र कुमार सिन्हा, बी-17, पत्रकार नगर, पटना-20
जितेन्द्र वर्मा, वर्मा ट्रांसपोर्ट, राजेन्द्र पथ, सीवान-841226
(मौलाना डॉ॰) जौहर शफियाबादी, खानकाहे- आलिया-एमामिया, शफियाबाद शरीफ, जिला गोपालगंज-841416 (बिहार)
झुन्नीलाल, पो.-नचाप, जिला- भोजपुर (बिहार)
डी. एन. सिंह, 64/40, मठपारा, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492001
डी. एन. चौबे, जी-14/6, जवाहर चौक, नार्थ टी. डी. नगर, भोपाल,(म. प्र.)
तंग इनायतपुरी, रजिस्ट्री रोड, कागजी मुहल्ला, सीवान-841226
डॉ॰ ति. दमिस्तेख्त INSTITUTE OF ORIENTAL LANGUAGE DRIFT 15 3512 BR UTRECHT, THE NETHERLANDS
तुलसी सिंह, कुँअर सिंह भोजपुर संस्थान, पो. बिहटा इंगलिस, भोजपुर (बिहार)
(डॉ॰) तैयब हुसैन 'पीड़ित', हिन्दी विभाग, जेड. ए. इस्लामिया कॉलेज, सीवान-841226
त्रिगुणा सिंह, गौसगंज, पो. आरा, भोजपुर (बिहार)
त्रिलोकी नाथ तिवारी 'लोकदर्शी' 2424/एच. एस. एफ. आयुध निर्माणी, मुरादनगर, जिला गाजियाबाद -201206 (उ. प्र.)
दक्षनिरंजन शम्भु, कपिलदेव गुप्ता का मकान, महमूद चौक, दहियावाँ, छपरा-841301
दयाराम, लक्ष्मी फार्मा, गोविन्द मित्र रोड, पटना-4
दयाशंकर तिवारी, 197, गायत्री भवन, भीठी, मऊ-275101
दिनेशचन्द्र पाण्डेय, मेंटेनेन्स ऑफिस, एक्सल डिवीजन, टेल्को, जमशेदपुर-831004
दीनानाथ पाण्डेय, प्रधान अध्यापक, ग्राम-खुखरी, पो. बम्रिमा, जिला सरगुना (छत्तीसगढ़) -497001
दीनानाथ प्रसाद 'कृषक', सहायक परियोजना पदाधिकारी, जिला ग्रामीण विकास अभियन्ता, बेतिया, पश्चिमी चम्पारण
(श्रीमती) दीप्ति, 150/1, अमरनाथ सिंह का मकान, आनन्दपुरी, पश्चिमी बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1
देवकुमार सिंह, रामनगर, बलिया - 277204 (उ. प्र.)

Suru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

109. देवसुन्दर पाण्डेय 'व्याकुल', छोटकी टेल्हा, पो. गया रेलवे स्टेशन, गया - 823001
110. देवस्वरूप पाण्डेय, अंजना प्रकाशन, बी. एम. दास रोड, पटना-4
111. देवेश शंकर, फ्रेंच फुड्स इण्डिया प्रा. लि., 24 वाँ माइलस्टोन, मथुरा रोड, बल्लभगढ़, फरीदाबाद
112. धर्मेन्द्र कुमार वर्मा, मुखिया सह अध्यक्ष, गोरयाकोठी प्रखंड मुखिया संघ, ग्राम+पो. भिट्ठी, गोरयाकोठी सीवान
113. धर्मनाथ, ई. डब्लू. एस. 10/5, छोटा गोविन्दपुर, जमशेदपुर-831015
114. (डॉ०) धीरज कुमार भट्टाचार्य, शिवरामपुर, पो. बड़गछिया, जिला-हावड़ा 711404 (प. बं.)
115. ध्रुवनारायण सिंह, लाह बाजार, छपरा-841301
116. नागेन्द्र प्रसाद सिंह, शेफाली एपार्टमेंट, ए. के. सेन पथ, राजेन्द्र नगर, पटना-8000
117. नन्द कुमार सिन्हा, जनता फ्लैट-18/211, कंकड़बाग, पटना-20
118. निर्भय कुमार तिवारी, ब्लॉक रोड, एकमा, जिला- सारन
119. निरंजन नाथ बन्धु, रेजिडेंट इंजीनियर (एस. डब्लू. के.), तमिलनाडु ब्रिज प्रोजेक्ट, तंजावुर, तमिलनाडु-613001
120. निशान्तर, इनफोटेक, महेश नगर, पटना-23
121. पन्नालाल चौरसिया, पो.- मँगुराहाँ, वाया- अरेराज, पूर्वी चम्पारण
122. पशुपति उपाध्याय, कनीय अभियंता, पी. एच. डी., पो.- सेन्हा, जिला- लोहरदगा (झारखंड)
123. पशुपति नाथ सिंह, आद्री, उत्तरी श्रीकृष्णापुरी, पटना-13
124. पाण्डेय अरुण कुमार श्रीवास्तव, इन्द्रपुरी, मार्ग-4, पटना-24
125. पाण्डेय देवीशरण, सीताश्रम, मीरगंज, आरा-202301
126. पाण्डेय ब्रजेन्द्र नारायण, 4-डी/2312, बोकारो स्टील सिटी-827004
127. पाण्डेय शिवस्वरूप, आदर्श शिशु बिहार, जक्कनपुर, पटना-1
128. (प्रो.) पाण्डेय सुरेन्द्र, सावित्री, सी-2/ एम-81, सेक्टर 'बी', सीतापुर रोड योजना, लखनऊ-226020
129. पी. चन्द्रविनोद, मूर्त्तिकला विभाग, दृश्यकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005
130. पी. नीरंजनयन, आई. पी. एस., डी. आई. जी., सी. बी. आई. लखनऊ रेंज, नवलकिशोर रोड, लखनऊ
131. प्रकाश उदय, प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, श्रीवलदेव पी. जी. कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी-221204
132. प्रभंजन भारद्वाज, श्रीगीता मन्दिर, बक्सर-802101
133. प्रभासचन्द्र शर्मा, 2 ईस्ट गार्डिनर रोड, पटना-1
134. (डॉ०) प्रभुनारायण विद्यार्थी, बी.-140, हरमू कॉलोनी, राँची-12 (झारखंड)
135. (स्वामी) फन्दोत्तीर्णानन्द पुरी, अद्वैत आश्रम, रामडिहरा, वाया-निरसा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोहतास-821312
(डॉ॰) बच्चू सिन्हा, पथ-6/ए, राजेन्द्र नगर, पटना-800016
(डॉ॰) बजरंग वर्मा, आर. एफ. 420, फेज-3, कंकड़बाग हाउसिंग कॉलोनी, पटना-20
(नृत्याचार्य) बलराम लाल, शिवपुरी, बेउर रोड, पो. अनीसाबाद, पटना-2
बाइडसन विजय, (विजय कुमार सिन्हा), एस. डी. ओ., डुमराँव, जिला बक्सर
(डॉ॰) बालेश्वर सिंह, डुमराँव, बक्सर
(डॉ॰) बी. एन. सिंह, (प्रोफेसर, श्रम एवं समाज कल्याण पटना विश्वविद्यालय), राजीव नगर, पटना-24
ब्रजकिशोर सिंह, पो.- भगवानपुर हाट, जिला-सीवान (बिहार)
ब्रजकिशोर सिंह, द्वारा- श्री वीरेन्द्र कुमार मिश्र 'अभय', ससना, पो.- सिसई, वाया-सहाजितपुर, सारण
(प्रो॰) ब्रजकिशोर, श्रीभवन, मुहम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-6
ब्रजकिशोर दूबे, कैलाश भवन, पुनाईचक, पटना-23
ब्रजेन्द्र कुमार सिन्हा, प्रतीक्षा, यमुनापुरी, प्रभुनाथ नगर से पश्चिम, छपरा-841301
ब्रजबिहारी सिंह, बी. आई. डी. मुहल्ला, लोहरदगा (झारखंड)-835302
ब्रजबिहारी सिंह 'अमिट', ग्राम-बंगालीपुर, पो. चकिया, वाराणसी
भगवती प्रकाश शास्त्री, पो.- शंकरगढ़, वाया- राजपुर, जिला-सरगुजा (छत्तीसगढ़)-497118
(डॉ॰) भगवती शरण मिश्र, एम. आई. जी. 289, डीफेन्स कॉलोनी से पूरब, कंकड़बाग, पटना-20
भगवान पाण्डेय 'निराश', रामबाग, पी. पी. रोड, बक्सर-802201
भगवान सिंह 'भास्कर', प्रखंड कार्यालय के सामने लखरॉव, सीवान-841226
भोला प्रसाद 'आग्नेय', 29, रघुनाथपुरी, सिविल लाइन्स, बलिया-277001
भोला यादव, सचिव, बिहार बालू-मजदूर एवं नाविक कल्याण संघ, बबुरवानी घाट, कोइलवर, भोजपुर, बिहार
मदन मोहन द्विवेदी, 3-बी/299, बोकारो स्टील सिटी-827002
(डॉ॰) मधुबाला सिन्हा, द्वारा- श्री विजयशंकर वर्मा, एडवोकेट, चानमारी चौक, मोतिहारी (बिहार)-845401
(डॉ॰) मधु वर्मा, बी-204, चार मीनार एपार्टमेंट, रोड नं॰-12, राजेन्द्र नगर, पटना-16
मनोकामना अजय, कृष्णाभवन, विवेक-अशोक नगर, छोटा गोविन्दपुर, जमशेदपुर-831015
मनोज कुमार सिंह, रसियन होस्टल 1, पतरातू थर्मल पावर, हजारीबाग-829119
मलयार्जुन, मनोरंजन कर निरीक्षक, बलिया (उ. प्र.)-277001
(डॉ॰) महाकालेश्वर, हिन्दी विभागाध्यक्ष, राँची कॉलेज, राँची/पर्वत विहार, एदंल लतु, वाया मोराबादी, राँची-834008

Suru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE, Grat

162. (डॉ॰) महामाया प्रसाद 'विनोद', राजकीय इण्टर कॉलेज, अमनौर, सारण
163. महेन्द्र प्रसाद सिंह, बी-1/1111, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
164. महेश्वराचार्य, पो. भरौली, वाया- शाहपुर पट्टी, भोजपुर (बिहार)
165. (प्रो॰ श्रीमती) माधुरी सिंह, द्वारा- डॉ॰ कुमार वीरेन्द्र, ज्ञाननिकेतन के सामने, कंकड़बा पटना-20
166. (श्रीमती) मालती सिंह, अध्यापिका, पी.- एन. ऐंग्लो संस्कृत स्कूल, नया टोला पटना-4
167. (श्रीमती डॉ॰) मिथिलेश कुमारी मिश्र, संपादक, परिषद् पत्रिका, बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद्, आचार्य शिवपूजन सहाय पथ, सैदपुर, पटना-4
168. (श्रीमती) मीरा पाण्डेय, द्वारा- श्री रामाकिशोर पाण्डेय, भारत स्पेयर्स, सुगौली पूर्वी चम्पारण (बिहार)-845456
169. (डॉ॰ श्रीमती) मुन्नी सिंह, भोजपुरी विभाग, डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह कॉलेज, छपरा-841301
170. (डॉ॰) मुरली मनोहर प्रसाद, जैन स्कूल कम्पाउन्ड, आरा-802301
171. मुहम्मद अब्दुल सलीम, जेडो 3, अब्दुल खबीर रोड, कलकत्ता-700044
172. मूसे मुहम्मद जानी, ग्राम- बरहुआँ, पो.- सैदूपुर, वाया- चकिया, वाराणसी
173. (श्रीमती) मैनावती देवी श्रीवास्तव 'मैना', प्राचार्य, शारदा संगीतालय, प्रिया टॉकीज के पास, आर्यनगर, गोरखपुर (उ. प्र.)
174. मोतीलाल मंजुल, महामंत्री, भोजपुर कला संगम, आर. जेड-45, वैशाली कॉलोनी पालम रोड, नई दिल्ली-45
175. मोहन शुक्ल, पोस्ट बॉक्स-31, पतरातू थर्मल पावर, हजारीबाग-829119
176. रंजन कुमार, कुमार एण्ड कुमार पब्लिकेशन्स (प्रा.) लि॰, 1215, रतना निलय चन्द्रा लेआउट, विजयनगर, बैंगलोर-560040
177. (डॉ॰) रंजन विकास, बच्चूलाल चौधरी का मकान, पश्चिमी शिवपुरी, पटना-2
178. (श्रीमती) रत्नकुमारी श्रीवास्तव, द्वारा- पो. लोकेश प्रसाद, आम्रपाली सोसाइटी राजीव नगर, पटना-24
179. रमापति उपाध्याय 'उत्सुक', भारत रीफ्रैक्टरीज लिमिटेड विद्यालय, भण्डारीदह जिला-बोकारो-829132
180. रमाशंकर राम, आर. पी. 18/4, देवीगंज, अम्बिकापुर, सरगुजा, (छत्तीसगढ़) -497001
181. (डॉ॰) रमाशंकर श्रीवास्तव, आर-7, त्राणी विहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली-59
182. (प्रो॰) रविशंकर, डिपार्टमेंट ऑफ मैकेनिकल इंजीनियरिंग, आई. आई. टी. नई दिल्ली
183. रविशंकर चौबे, भोजपुरी अकादमी, पटना
184. रवीन्द्र किशोर सिन्हा, अन्नपूर्णा पाटलिपुत्र टेलिफोन एक्सचेंज रोड, कुर्जी, पटना-
185. (प्रो॰) रवीन्द्र कुमार, राजकीय पोलिटेकनीक, गुलजारबाग, पटना-7

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रवीन्द्र कुमार शर्मा, सम्पादक 'भिनसार', 252-जे. डांगपाड़ा, कांचरापाड़ा, 24 परगना (पश्चिम बंगाल)
(प्रो०) रवीन्द्रनाथ पाण्डेय, असोसिएट प्रोफेसर ऑफ सिविल इंजीनियरिंग, राजकीय पॉलिटेकनिक, मढ़ौरा (सारन)
रवीन्द्रनाथ शुक्ला, बीबीगंज, आनन्दपुरी, पो.- माड़ीपुर, मुजफ्फरपुर
रवीन्द्रनाथ सिंह, सहायक कार्यपालक अभियन्ता, कोल हैण्डलिंग डिवीजन, पतरातू थर्मल पावर, हजारीबाग-829119
(डॉ०) रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', पो.- निमेज, जिला-बक्सर-802130
राजगुप्त, राज साड़ी घर, चौक कटरा, बलिया-277001
राजनाथ राय, अवर प्रमण्डल पदाधिकारी (यांत्रिक), लोक स्वास्थ्य प्रमण्डल, पानी टंकी, डालटेनगंज, पलामू (झारखंड)
(डॉ०) राजनारायण दीक्षित, द्वारा- राकेश बुक डिपो, नया सरकंडा, बिलासपुर, (छत्तीसग) -495001 / पो.- मिर्जापुर, सारण-841419
राजवल्लभ सिंह, पो.- कौड़िया, वाया- बसन्तपुर, जिला- सीवान (बिहार)
राजेन्द्र ठाकुर 'निगम', विज्ञान शिक्षक, राज्य सम्पोषित उच्च विद्यालय, पतरातू, जिला- हजारीबाग, (झारखंड)
श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता, अध्यक्ष, कला विभाग, नेतरहाट विद्यालय, नेतरहाट (झारखंड)-835219
(डॉ०) राजेन्द्र प्रसाद सिंह 'राही', एम.-7/13, पथ-12, राजेन्द्र नगर, पटना-16
राजेश्वर प्रसाद सिन्हा 'राजेश', एडवोकेट, ए-107, ए. जी. कॉलोनी, पटना-25
(डॉ० श्रीमती) राजेश्वरी शाण्डिल्य, सम्पादक 'भोजपुरी लोक', ए-14, माल एवेन्यू कॉलोनी, लखनऊ-226001
(डॉ०) राधाकृष्ण शर्मा, उर्मिला कृष्ण भवन, मोहननगर, छपरा-841301
राधिकारंजन सुशील, द्वारा- विशाल ऑटो इंटरप्राइजेज, जी-103, श्रीराम मार्केट, छत्रीबारी रोड, गुवाहाटी -781001 (असम)
राम आशीष सिंह, गाँधीनगर, पतरातू थर्मल पावर, हजारीबाग-829119
(प्रो०) रामएकबाल सिंह, रसायन शास्त्र विभाग, राजेन्द्र कॉलेज, छपरा-841301
(डॉ०) रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव, रीजनल कोआर्डिनेटर, नेहरू युवा केन्द्र संगठन, कलमबाग रोड, मुजफ्फरपुर -842001 (बिहार)
श्री रामजन्म मिश्र, शंकर पुस्तक भंडार, कॉलेज रोड, साहिबगंज, (झारखंड)
राम देव सिंह 'रमण', पो०- दिलावरपुर, पूर्वी चम्पारण
रामध्यान सिंह 'सरस', नहर अंचल कार्यालय, लोहरदगा-835302
रामनारायण उपाध्याय, VI-A/ 3277, बोकारो स्टील सिटी-827006
राम प्रवेश शास्त्री, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल, बी-1299, इंदिरा नगर लखनऊ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

210. (डॉ०) रामबख्श मिश्र, अध्यक्ष, भाषा विज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी-221005
211. रामवल्लभ प्रसाद सिंह, पूर्व प्रधानाचार्य, पो०- धनडीहा, भोजपुर (बिहार)
212. रामश्रय सिंह 'नीरव', श्री रा. रा. इण्टर कॉलेज, जहानागंज, जिला आजमगढ़-276135 (उ. प्र)
213. राहगीर, कुलपति, निवास, बुन्देलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ. प्र.
214. (श्रीमती) रूचिका रंजन, द्वारा- श्री रौशन प्रकाश, 410, डी-16, सेक्टर-7, रोहिणी दिल्ली-110085
215. (श्रीमती) रूपश्री, श्रीभवन, मुहम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-6
217. (प्रो०) श्रीमती लक्ष्मी श्रीवास्तव, द्वारा-- श्री कन्हैया प्रसाद, कपिल प्रसाद का मकान, द्वारका हाई स्कूल के सामने, उत्तरी मन्दिरी, पटना-1
218. ललन दुबे, भोजपुरी अकादमी, दयानन्द कन्या विद्यालय के पीछे मीठापुर, पटना-
219. (डॉ०) ललन पाण्डेय, कृतपुरा-बंगरा, पो०- पहाड़पुर, वाया- राजापट्टी जिला-गोपालगंज
220. (डॉ०) वंशीधर मिश्र, पोस्ट बॉक्स-6945, काठमांडू-3, नेपाल
221. (डॉ०) वसन्त कुमार, परमार्थ सदन, परमार्थनगर, टुपुदाना, पो.. हटिया, राँची
222. (प्रो०) वैद्यनाथ विभाकर, भोजपुरी सेवा सदन, ढ़ोढ़स्थान, पो: पंडितपुर, सारण
223. विक्रमादित्य सिंह, ग्राम जलालपुर, पो०- अमनौर, सारण (बिहार)
224. विक्रमा प्रसाद, पसनौली गगन, पो०- महाराजगंज, जिला- सीवान-841238
225. (डॉ०) विजयशंकर प्रसाद, मुहम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-6
226. विद्यानाथ ओझा, 211, पाटलिपुत्र, पटना-800013
227. विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव, पो.- सुगौली, पूर्वी चम्पारन, (बिहार)
228. विपिन बिहारी चौधरी, डी-236, पथ- 11, पतरातू थर्मल पावर, हजारीबाग-849119
229. विष्णुहरि, संयुक्त निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, पटना-15 (बिहार)
230. (डॉ०) वीरेन्द्र कुमार दुबे, प्राध्यापक, कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय चौराई, जिला छिन्दवाड़ा
231. (डॉ०) वीरेन्द्र नारायण पाण्डेय, द्वारा- श्रीरामनाथ पाण्डेय, उमा निवेश रतनपुरा, छपरा-841301
232. वीरेन्द्र पाण्डेय, सम्पादक 'भोजपुरी माटी', पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद् 24-सी, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-73
233. (डॉ० श्रीमती) व्यंजना, द्वारा- श्री अभय कुमार, 29, रवि नगर, इन्दौर-452001 व्यास मिश्र, ग्राम+पोस्ट- बरेजा, सारन
234. शंकरशरण श्रीवास्तव, सेवानिवृत्त ए. डी. एम. जन-सम्पर्क कार्यालय सामने चूल्हाबगान, दुमका-814101
235. (स्वामी) शंकरानन्द, गंगादर्शन, बिहार योग विद्यालय, मुंगेर (बिहार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(श्रीमती) शकुन्तला राम, प्राचार्य, पवहारीअन्ध विद्यालय, स्टेशन रोड, गाजीपुर (उ. प्र.)
(प्रो॰) शमशेर बहादुर सिंह, तारकेश्वर पथ, चिरैयाटाँड़, पटना-20
शम्भूनाथ चौधरी, शशि प्रेस, बक्सर-802101
(डॉ॰) शम्भुशरण, एन.-14, प्रोफेसर्स कॉलोनी, चित्रगुप्तनगर, पटना-20
शम्भुशरण श्रीवास्तव, नारायण प्रिंटर्स, पटना-4
(श्रीमती) शांति कुमारी, शेफाली एपार्टमेंट, ए. के. सेन पथ, राजेन्द्र नगर, पटना-4
शारदानन्द प्रसाद, द्वारा- डॉ॰ रंजन विकास, बंच्चूलाल चौधरी का मकान पश्चिमी शिवपुरी, पटना-23
शालिग्राम माधव, ज्ञानकेन्द्र, नया टोला, पटना-4
शिवनारायण सिन्हा, बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1
(डॉ॰) शिववंश पाण्डेय, 307, पथ-3/जी, न्यू पाटलीपुत्र, पटना-13
(डॉ॰) शुकदेव सिंह, कबीर विवेक, 107-बी, ब्रिज इनक्लेब, सुन्दरपुर, वाराणसी-221005
(डॉ॰) शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्त, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अन्तः शिक्षा परिषद्, एम-13, पथ-10 ई., राजेन्द्र नगर, पटना-16
(आचार्य) श्रद्धानन्द अवधूत, आनन्द मार्ग प्र. संघ, वी. आई. पी. नगर, तिलजला, कलकत्ता-39
श्रीकांत राय, तकनीकी सचिव, महाप्रबन्धक-सह-मुख्य अभियंता, संचार जोन-3, चन्दौती, गया-823001
श्रीराम तिवारी, 7 आनन्दपुरी, पटना-1
श्रीविलास तिवारी, ए-14, माल एवेन्यू कॉलोनी, लखनऊ-226001
श्रीहरि मिश्र, मुखिया, बरेजा ग्राम पंचायत, पो॰- बरेजा, सारण
सतीश्वर नारायण श्रीवास्तव, एडवोकेट, बेतिया हाता, नेशलन हाईवे, गोरखपूर
सत्यनारायण, डी ब्लॉक, कदमकुआँ पटना-3
सत्येन्द्र नारायण चतुर्वेदी, बरेजा, सारण
(प्रो.) सन्त साह, सुगौली, टोला भोजनगर, पो॰- सुगौली-845456
श्री सन्तोष सिंह, 11/20, ऋषि बंकिमचन्द्र रोड, पो॰- रिसड़ा जिला- हुगली, (पश्चिम बंगाल) 712248
सभाजीत मिश्र, प्रबन्ध सम्पादक 'भोजपुरी माटी', पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद्, 24-सी रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-73
सभापति कुशवाहा, कम्तरबा नगर, लूबी सर्कलर रोड, हीरापुर, धनबाद-826001
सरिता शिवम् चम्पाबाग, गाजीपुर, उ. प्र.
(डॉ॰ श्रीमती) सविता सौरभ, 51, टीचर्स फ्लैट, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005
सिद्धनाथ सिंह, कांट्रेक्टर, पतरातू थर्मल पावर, हजारीबाग-829119
(डॉ॰) सिद्धेश्वर, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची-8

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

264. सीताराम पाण्डेय 'प्रशान्त', रामपुर, पो॰- दिघार, जिला- बलिया, (उ. प्र.)
265. सीतेन्द्र देव नारायण, नन्द्रलोक, नया टोला, पटना-4
266. सी. व्ही. दुबे, एच.-4161/ई. 7, अरेरा कॉलोनी, भोपाल -462014 (म. प्र.)
267. (श्रीमती) सुचिता रामदीन, हेड, डिपार्टमेंट ऑफ फॉकलोर एंड ओरल ट्रेडीशन महात्मा गाँधी इंस्टीच्यूट, मोका, मारीशस
268. सुदर्शन सिंह, वैशाली क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, बरूराज, जिला- समस्तीपुर
269. सुधांशु रंजन, केन्द्रीय विद्यालय, समस्तीपुर (बिहार)
270. (श्रीमती) सुप्रिया तृप्ति, द्वारा- श्री सीताराम प्रसाद सिंह, गायत्री मंदिर के निकट कंकड़बाग, पटना-20
271. (श्रीमती) सुभद्रा वीरेन्द्र, द्वारा- डॉ॰ कुमार वीरेन्द्र, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, ए. एन. कॉलेज, बोरिंग रोड, पटना-1
272. (डॉ॰) सुरेन्द्र गम्भीर, साउथ एशिया रीजनल स्टडीज, यूनिवसिटी ऑफ पेन्सिलवानिया फिलेडेल्फिया, पी. ए., संयुक्त राज्य अमेरिका
273. सुरेन्द्रनाथ राय, राजभाषा विभाग, सचिवालय, पटना-15
274. सुरेश कांटक, कांट, वाया- ब्रह्मपुर, जिला- बक्सर -802112 (बिहार)
275. (श्रीमती) सुशीला पाण्डेय, द्वारा- आचार्य पाण्डेय कपिल, इन्द्रपुरी, मार्ग-3, पटना-24
276. सूर्यकुमार शास्त्री, आभाधाम, सोनपुर, सारण, -841101 (बिहार)
277. सूर्य देव पाठक 'पराग', अध्यापक, मढ़ौरा उच्च विद्यालय, मढ़ौरा, सारण
278. (डॉ॰) स्वर्णकिरण, सम्पादक 'नालन्दा दर्पण', करुणाबाग, सोहसराय, नालन्दा (बिहार)
279. सुरेन्द्र सिंह, फैन्सी मार्केट, गाँधी पथ, सासाराम, रोहतास
280. (प्रो॰) हरिकिशोर पाण्डेय, आदर्श कॉलोनी, चिउड़ा मिल से उत्तर, श्याम चक, छपरा-841301
281. हरिचरण राम, रेलवे क्वा. नं॰ 3-ए वायरलेस कॉलोनी, बिलासपुर - 495004 (छत्तीसगढ़)
282. हरिद्वार प्रसाद 'किसलय', राजापुर, पो॰- दलीपपुर, भोजपुर
283. हरिनारायण 'हरीश', विवेकानन्द कॉलोनी, गाजीपुर -233001 (उ. प्र.)
284. हरिवंश पाठक 'गुमनाम', जमानिया रेलवे स्टेशन, जिला- गाजीपुर
285. (डॉ॰) हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, 254, नेहरू नगर, पटना-23
286. हीरालाल अमृतपुत्र, अमृतायन, चरिहारा, पो॰- मशरक, जिला- सारण-841417 (बिहार)
287. (प्रो॰) हरीन्द्र हिमकर, प्रोफेसर कॉलोनी, रक्सौल, पूर्वी चम्पारण-845305

वार्षिक सदस्य लोग के सदस्यता दिसम्बर 2002 में खतम हो गइल बा। नवीनीकरण के बाद सूची प्रकाशित कइल जाई।

प्रस्तुतिः जगन्नाथ

संयोजक, प्रवर समिति, सतरहवाँ सत्र

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सद्व्यवहार

ब्रह्मलीन ब्रह्मषि योगिराज देवराहा बाबा

बच्चा, एह संसार में जे कुछ बा, सब त भगवान के दिहल बा। आपन कुछ नइखे। एह बात के घमंड कइल बेकार बा। आपुस के व्यवहार में घमंडी आदमी दूर भागला। घमंड के झूर बना देला। जिनगी में सुखी रहे खातिर जरूरी बा कि मनई बुद्धि में कुटिलता ना ले केहू के बिगाड़े, केहू के अनमल ना सोचे, ओकर अपनो कुछ ना बिगड़ेला। शुद्ध विचार वाला का मन में भय पैदा ना होखे। आचार-विचार साफ आ पवित्र होई त केहू त केहू खटका ना होई। मनुष्य दोसरा के अपना प्रति कइल व्यवहार के अनुचित समुझेला, ओकरा बदले दोसरा का प्रति कबहूँ ना करे के चाहीं। जवन बात-बर्त्ताव अपना खातिर प्रिय नइखे ऊ केहू के कइसे प्रिय होई। सबसे प्रेम कइल, सभकर भला सोचल, सबकर हित कइल सदाचार कहलेला, सद्व्यवहार आ सद्विचार सुख-शान्ति ले आवेला जिनगी में आ मन के भगवान किओर ले जाला।

-प्रस्तुतिः रूचिका रंजन

ज्ञानयज्ञ

फूल पर जब मधुमक्खी बइठेले तब ओकरा मिठास के अनुभव मिलेला बाकिर ऊ उड़ ना सके, मधे से चिपक के रह जाले। जब मधुमक्खी चीनी पर बइठेले तब ओकरा मिठास के आनन्द मिलेला आ ऊ फेर उड़ियो सकेले। संसार में जीये के इहे तरीका सही होला। संसार के सुख ल बाकिर माया में फँस मत जा, लपिटा मत जा।

संसार में दू तरह के लोग होला-एगो त्रस्त और दोसर मस्त। जे शोक, मोह आ भय से घिरल बा ऊ त्रस्त बा आ जे एह तीनू से मुक्त बा ऊ मस्त बा। भगवान के भगति से ही संसार से मुक्ति मिलेला। भगति आइल ना कि सब मलिनता, कलुष आ अशुद्धि खतम।

भगवत कथा के त सुनले से शोक, मोह आ भय से छुटकारा मिल जाला। मन के शुद्ध करे खातिर भागवत से बढ़ के दोसर साधन नइखे।

श्रीमद् भागवत परमहंस संहिता हवे-एमें परमहंस, परमज्ञानी सन्त-भक्त लोग के चर्चा बा। बिना वैराग्य के ज्ञान ना टिके। जेकरा में जतने ढेर वैराग्य बा ऊ ज्ञान के, भागवतकथा के उतने बड़ अधिकारी बा। ज्ञान उत्तम हवे बाकिर बिना योग्यता के पच ना पावे। घीव के खातिर नीमन हवे जेकरा पचे। ज्ञान पाके यदि अभिमान हो जाय त पतन हो जाला। गुरु हवे जेकरा से प्रेरणा मिले, जे जिनगी में नया मोड़ ला देवे, भगवान से लगन लगवा देवे।

बुद्धि के देवता हवन। बुद्धि से निर्णय होला आ मन भजन करेला। हंस विवेक के प्रतीक हऽ- एही से ब्रह्माजी के सवारी हवे हंस। 'बिनु सत्संग विवेक न होई।' मन त प्रकाशो में चलेला। पल-छन में ना जाने कहाँ-कहाँ पहुँच जाला। बुद्धि-विवेक मन के सही दिशा देला।

भगवान के भजन से सुख मिलेला। आदमी दुख में त भगवान के सुमिरेला बाकिर सुख में सुमिरन ना करे। यदि सुखो में भगवान के सुमिरन होखे लागे त फेर दुख होइबे ना करी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

- सन्त ऊहे ह जे दोसरा के कल्याण खातिर आपन सरबस लुटा देवे-आपन तप तक। दोसरा के दोष के ढोल पीटल दुष्ट के, दुर्जन के काम ह, सन्त आ सज्जन के ना। जे दोसरा के पतन पर हँसेला ऊ अपना पतन के राह बनावेला।
- माला में जइसे फूल में धागा बा आ धागा में फूल ओइसहीं जगत में जगदीश आ जगदीश में जगत व्याप्त बा।
- मन में जतने राग रही ऊ ओतने चंचल बनल रही। जतने संसार में आ विषय-सुख में आसक्ति से विराग बढ़त जाई मन ओतने असथिर होत जाई। जब भगवान श्रीकृष्ण मन-सहित इन्द्रियन के हर लेले, अपना ओर खींच लेले त प्रबल मन वश में हो जाला, संयमित हो जाला, निर्मल हो जाला।
- प्रेमी के प्रेम-पत्र पर मन हो गइल दीवाना
  अब त लगल लगन बा, माटी में मिल जाना
  जब इयाद बा सतावत त फाट रहल बा छाती
  रो रो के लिख लोर से भेज रहल बा पाती
  बा पूछ रहल हर पात-पात से ओकर पता ठिकाना।

इहे तड़प, इहो वियोग भगवान से मिलावेला-प्रभु मिलन के राह सहज बना देला।

-प्रस्तुतिः रूचिका रंजन

बधाई

● पद्मश्री डॉ॰ शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

डॉः शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव के एह साल गणतंत्र दिवस का अवसर पर पद्मश्री के सम्मान दिहल गइल ह। ई बिहार खातिर, शिक्षा आ शिक्षक जगत खातिर बहुत प्रसन्नता के बात बा कि पहिला बेर एगो बिहारी शिक्षाविद् के सम्मान कइल गइल। डॉः श्रीवास्तव 1959 में समस्तीपुर कॉलेज में अध्यापन शुरू कइलीं, आ 1960 में बी. एन. कॉलेज (पटना) आ गइलीं आ 1996 में सेवानिवृत्त भइलीं। 1980-85 तक पटना (मध्य) क्षेत्र से विधायक आ 1989-93 तक पटना लोकसभा क्षेत्र से सांसद रहीं। इहाँ का भाजपा के एगो समादृत नेता बानीं, आ भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति आदि अनेक पदन के सुशोभित कर चुकल बानीं। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना) से इहाँ के जुड़ाव शुरूए से रहल बा। इहाँ के पिता डॉः मुरलीधर श्रीवास्तव जी भी सम्मेलन से जुड़ल रहीं आ उहाँ के एगो पुस्तक पटना अधिवेशन के बेरा छपल रहे। इलाहाबाद अधिवेशन में उहाँ के शामिल भइल रहीं। सम्मेलन आ 'सम्मेलन पत्रिका' का ओर से पद्मश्री डॉः श्रीवास्तव जी के बहुत-बहुत बधाई। भोजपुरी क्षेत्र खातिर ई विशेष गौरव के बात बा।

● पद्मश्री डॉ॰ विजय प्रकाश

गणतंत्र दिवस के अवसर पर पटना के जानल-मानल चिकित्सक डॉः विजय प्रकाश के 'पद्मश्री सम्मान' से सम्मानित कइल गइल। ई सम्मान 21 साल पहिले डॉः सी. पी. ठाकुर जी के मिलल रहे। 'मेडिकल गैस्ट्रोलॉजी' पर महत्त्वपूर्ण काम कइला खातिर ई सम्मान दिहल गइल ह। नेतरहाट के छात्र रहल डॉः विजय प्रकाश जी के जनम आरा जिला के मिर्जापुर गाँव में भइल बा। भोजपुरी क्षेत्र के एह सपूत के 'पद्मश्री' पवला खातिर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन (पटना) आ 'सम्मेलन पत्रिका का ओर से बधाई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डी. पी. ओझा, डीजीपी, बिहार

भारतीय पुलिस सेवा के बिहार-कैडर के वरिष्ठतम अधिकारी श्री ध्रुव प्रसाद ओझा के सम्मान गइल ह । इहाँ के कर्त्तव्यनिष्ठा आ कार्यकुशलता चर्चित रहल बा । इहाँ के जनम सारन) में भइल । शिक्षा अटौली हाई स्कूल, राजेन्द्र कॉलेज (छपरा) आ एल. एस. मुजफ्फरपुर) में भइल बा । दू साल सायन्स कॉलेज (पटना) में भौतिकी के व्याख्याता रहला 1967 में इहाँ के चयन भारतीय पुलिस सेवा में भइल । अब पुलिस के सर्वोच्च कमान इहें के सरकार सउँपले बिआ । एह भोजपुरी सपूत के सम्मेलन किओर से बहुत-बहुत बधाई ।

बलभद्र कल्याण

हिन्दी-भोजपुरी के कवि-लेखक श्री बलभद्र कल्याण के जिनगी के 75 साल पूरा कइला पर हमनी के शुभकामना का साथे 'सम्मेलन पत्रिका' किओर से बहुत-बहुत बधाई । ●

खबर

रायपुर (छत्तीसगढ़) में राजेन्द्र जयन्ती:

भारत के पहिलका राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद के 118 वीं जयन्ती त्रिवेणी भवन, व्यापार मेला, रायपुर (छत्तीसगढ़) में धूमधाम से मनावल गइल । एह अवसर पर 'देशरत्न भोजपुरी भवन' के शुभारम्भ दिआइल । भोजपुरी समाज के दूगो वरिष्ठ संरक्षक श्री कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' आ श्री बाबूलाल मौर्य के सम्मानित कइल गइल । 'उड़ान के सम्पादक डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर' के 'दिव्य सम्मान' से भोजपुरी समाज सम्मानित कइलस । एह सफल आयोजन में सर्वश्री विजय कुमार, दौलत राम, भास्कर, आर. डी. सिंह, उमाशंकर जायसवाल, ठाकुर बलराम सिंह आ जितेन्द्र सिंह आदि के भाषण लोग खूब सराहल । भोजपुरी समाज से प्रकाशित स्मारिका 'इयाद' के लोकार्पण के बाद मनोज तिवारी 'मृदुल' द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम के लोग जम के आनन्द लेलस ।

महेश्वरी शाण्डिल्य, संपादक, 'भोजपुरी लोक' (लखनऊ) के एगो सम्पादित पुस्तक 'भोजपुरी बनारस में छप रहल बा ।

मंडल के वर्तमान सत्र के प्रबन्ध मंत्री मनोज कुमार 'भावुक' उगांडा जा रहल बाड़न । उहाँ के गजलन के एगो संग्रह भोजपुरी संस्थान (पटना) से प्रकाशित होखे जा रहल बा ।

भगवान सिंह 'भास्कर' के दूगो पुस्तक जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के एम. ए. पाठ्यक्रम में सहायक ग्रन्थ का रूप में शामिल कइल गइल बा । एह पुस्तकन में सिवान में 2002 के 'साहित्य संगम' का तरफ से एगो आयोजन भइल जवना में श्री भास्कर के शाल, श्रीफल चिन्ह आ प्रशस्ति पत्र देके 'दिनकर सम्मान से सम्मानित कइल गइल । एगो कवि गोष्ठी भी आयोजन कइल गइल जवना में सिवान आ आसपास के कवि आ शायर लोग शामिल भइलन ●

चिट्ठी मिलल बा -

रामपूजन लाल विद्यार्थी

स्वस्थ पठनीय सामाग्रियन से भरल, चीकन-चाकन आवरण-पृष्ठ से सजल आ राउर कुशल कल्याण करावत जुलाई-सितम्बर-02 के अंक मिलल । आपन अस्वस्थता का चलते प्रतिक्रिया देबे में विलम्ब भइल ।

राउर एह विचार से हमरे ना, सभ रचनाकार के सहमत होखे के पड़ी कि आजु हमनी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बीच आपसी संवादहीनता के कुहरा छाइल बाटे। लोग अलग-अलग आपन खिंचड़ी पका रहल बा। एह से संगठन के बुनियाद कमजोर पड़ी आ भोजपुरी भाषा-साहित्य के विकास ला सरकारी मान्यता खातिर हमनी के जवन राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलनात्मक सफर शुरू भइल बा, ओकरा झटका लग सकेला। संवाद-शून्यता के स्थिति अपनन बीच कबो-कबो अनेक गलत- फहमियन के जनम देले आजु संभवत: अइसनके हालात पैदा हो गइल बा, जवना चलते संगठन से जुड़ल पदाधिकारी लोग इस्तीफा देवे के संगठन के कमजोर करे के नासमझी कर रहल बा। एह स्थिति के रोके के चाहीं।

राउर ई कहनामों एकदम सही बा कि अगर हमनी के आपन अहं-अहंकार वर्चस्वादि आ हठधर्मिता के चहारदीवारी से ना निकलबऽ त भोजपुरी के बहुते नोकसान होई। एह से चाहीं हम सभ भोजपुरी प्रेमी भाई मन-वचन आ कर्म से संगठन के बरियार आ जीवन्त बनावे में भरपूर सार्थक सहयोग दीही जा।

एगो बात अउर। भाई बरमेश्वर जी आ द्विवेदी जी हमार नगीची मित्र ह लोग। बरनर प उनका लोगन से बातचीत होत रहेला आ पटना गइला प भेंटो मुलाकात। इहाँ हमरा डेरो पर लोग आइल बाटे। अभी-अभी द्विवेदी जी के फोन आइल बा बतकही भइल हा। अतना कहे के हम मतलब ई कि अतना निकटता रहते उनुका लोग के संगठन से आपन हाथ खींचला के प्रसंग से अवगत ना रहीं। ई त रउवे पत्र-बरमेशर जी के नाँवे लिखल- से जानकारी मिलल कि ऊ लोग इस्तीफा दे चुकल बा। जरूर कुछ बात लेके गलतफहमी पैदा हो गइल बा। अपन न का बीच कबो-कबो अइसन स्थिति आवेला। एकरा के संवाद द्वारा आपसी बातचीत के जरिया दूर करे के प्रयास होखे चाहीं।

गत 6 दिसम्बर के आरा में कविता-क्लब के स्थापना के उपलक्ष्य में जगन्नाथ जी के नेतृत्व में द्विवेदी जी, बरमेश्वर सिंह, योगानन्द हीरा, सतीस सिन्हा प्रभृति कवि-कथाकारन के अउर भइल रहे। अस्वस्थता का बावजूद हमहूँ ओकरा में शरीक भइल रहीं।

सम्मेलन पत्रिका के प्रस्तुत अंक के एक मात्र कहानी-सपना में कहानीकार मुसहर नितान्त अभावग्रस्त आ लाचार जिन्दगी के आँखि देखल तस्वीर उकेरले बा। सचमुच एह अभागे पिछड़ल गरीब अभागन के किस्मत में पूड़ी-जिलेबी कहँवा नसीब बा? पता ना, कउना युग में भूखल नंगन के पूड़ी-जिलेबी खाये के सपना साकार होई? आजादी के आधा शताब्दी से ऊपर बीतलो प अभी ले त उनका जिनिगी में खुशहाली के लहर ना आइल हा।

नेपाल में बोलल जावे वाला भोजपुरी के साथे अउर अनेक भासावन के जानकारी देत शर्मा प्रशांत के आलेख काफी उपयोगी लागल।

एकइसवीं सदी में भोजपुरी नाँव से भोजपुरी साहित्य के इतिहास एगो बड़हन अभाव के पूर्ति के दिसा में बहुत महत्त्वपूर्ण कदम बा। नागेन्द्र पसाद सिंह के निबन्ध अपहरन उद्योग सामयिक बड़ले बा, साथ ही समस्या मूलक आ विचारोतेजक भी। भिखारी ठाकुर के अप्रकाशित रचनन के प्रकाशन का दिशा में जरूर प्रयास होखे के चाहीं। अगर ठाकुर जी के समग्र साहित्य के प्रकाशन हो जाई त भोजपुरी साहित्य के समृद्धि में बहुत बड़ इजाफा होई। सुप्रिया तृप्ति जी के सत्संग संबंधी साहित्यिक सामग्रियन का बीच विजातीय चीज भा कहीं पेबन्द जइसन लागता। एकर मतलब ना समझल जाव कि पत्रिका खातिर साहित्यिक सामग्रियन के अभाव हो गइल बा? कविता-गीत स्तंभ में मुफलिस के गीत शब्द-चयन के सुन्दरता आ आपन अनुप्रासिक छटा के कारन विशेष रूप से आकर्षित कइलस। चौधरी कन्हैया जी के बैरवे उनकर प्रयोगधर्मी प्रकृति के उदाहरण बा। हम एक हजार दोहन के संग्रह 'आरोही-हजारा निकालि के एगो कीर्तिमाने स्थापित कइले बाड़न। सभ सामग्री बस ठीक-ठाक बा।

❖

-प्रकाशपुरी, आरा जिला भोजपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हित्य मनीषी डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर' की पुस्तक यात्रा

सरकार के हिन्दी अकादमी नयी दिल्ली द्वारा साहित्यिक कृति सम्मान, बिहार पुरी अकादमी पटना द्वारा साहित्य सेवा सम्मान, भारतीय स्टेट बैंक द्वारा रजत तथा राष्ट्रीय गीतकार संत तुलसी सम्मान, मैथिली शरण गुप्त सम्मान आदि सम्मानों, पुरस्कारों, अलंकरणों से सम्मानित, पुरस्कृत, अलंकृत साहित्यकार]

शोधपूर्ण निबंध-संग्रह हिन्दी (ज॰ प्र॰ वि॰ वि॰) पाठ्यक्रम में संकलित]	60/-
के विवाह गीत : हिन्दी (ज॰ प्र॰ वि॰ वि॰) पाठ्यक्रम में संकलित	50/-
: हिन्दी कविता-संग्रह की दो कवितायें साहित्याचार्य (एम॰ ए॰ स्तर) में संकलित]	
हित्य सुधा: समेकित संकलन की दो रचनायें साहित्याचार्य (एम॰ ए॰ स्तर) में संकलित]	40/-
फुहार: समेकित संकलन की एक रचना बी॰ ए॰ भोजपुरी (बि॰ वि॰ वि॰) में संकलित]	40/-
बोले कोइलिया: लघु शोध प्रबंध	40/-
: 102 मांगलिक झूमर एवं सहाना	40/-
सफर : देश-विदेश के सात यात्रा-संस्मरण	45/-
ड़ान : देश-विदेश के सात यात्रा-संस्मरण	35/-
संगात : 11 कहानियों का सुन्दर संग्रह	30/-
बहुरल : 18 कहानियों का अनूठा संग्रह	40/-
गीता : भोजपुरी लोकधुन में श्री मद्भगवगीता	24/-
के अस्मिता चिंतन : भाषण संग्रह	200/-
चिंतन के	101/-

प्रकाशित पुस्तकें:-

सिंह 'भास्कर' अभिनन्दन ग्रन्थ (प्रथम खण्ड)	201/-
साहित्य समीक्षा (25 पुस्तक-पत्रिका के समीक्ष)	151/-
मनीषी भगवान सिंह 'भास्कर' (संक्षिप्त परिचय)	10/-
मनीषी डॉ॰ भगवान सिंह 'भास्कर' और लोकधर्म	85/-

दुर्गी पत्रिका 'बयार' भास्कर लोक रामायण के सम्पादन-प्रकाशन उड़ान
दी पत्रिका साहित्य प्रहरी
ला, मोना के सिन्होरा, लोक लहरी (चार भाग) लोक दर्पण, आस्था के धाम,
ते का साहित्यिक इतिहास आदि दो दर्जन किताब प्रकाश्य

भास्कर साहित्य भारती

उपेन्द्र कार्यालय के सामने, लखराँव, सिवान (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

R N I Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No P

18 वाँ अधिवेशन, माँझी (सारण) के

कार्यक्रम

7 फरवरी 2003 (शुक्रवार)

स्थायी समिति - 10 बजे से 1 बजे तक
भोजनावकाश - 1 बजे से 2 बजे तक
खुला सत्र - 2 बजे से 6 बजे तक
स्वागताध्यक्ष के भाषण
उद्घाटन भाषण
महामंत्री के प्रतिवेदन
विशिष्ट अतिथियों के भाषण
पुरस्कार आ
पुस्तक के
अध्यक्षीय
नाश्ता - 6 बजे से 7 बजे
[illegible] समिति की बैठक - 6 बजे से 7 बजे
- 7 बजे रात्रि से

8 फरवरी 2003 (शनिवार)

स्मृति व्याख्यान - 8 बजे प्रातः से 12 बजे
विचार गोष्ठी - 12 बजे से 1 बजे तक
विषय - भोजपुरी साहित्य: पिछला दू
विषय प्रवर्तक- डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र
अध्यक्षता - प्रो॰ ब्रजकिशोर
भोजनावकाश - 1 बजे से 2 बजे तक
विचार गोष्ठी - 2 बजे से 4 बजे तक
विषय- भोजपुरी के मान्यता: समस्या आ कार्यनीति
विषय- प्रवर्तक- प्रो॰ जयकांत सिंह 'जय'
अध्यक्षता - नागेन्द्र प्रसाद सिंह
नाश्ता - 4 बजे से 5 बजे तक
खुला अधिवेशन - 5 बजे से 6 बजे तक
(दूसरा सत्र)
आगत अतिथि के भाषण
प्रस्ताव
नया सत्र के कार्यसमिति के घोषणा
धन्यवाद ज्ञापन
कवि सम्मेलन- 6 बजे से

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से, प्रो॰ ब्रजकि
द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, मोहम्मदपुर लेन, पटना-800
से प्रकाशित, आउर प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा जे॰ एम॰ कम्प्यूटर्स, पश्चिमी लोहान
पटना-800 003 में अक्षर-संयोजित एवं मुद्रित।

सम्पादक: प्रो॰ ब्रजकिशो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgao

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जपुरी सम्मेलन पत्रिका

जनवरी १९९६ अंक-१

परामर्श-मण्डल

कृष्णदेव उपाध्याय : श्री ईश्वरचन्द्र सिनहा : डॉ० विवेकी राय
गणेश चौबे : आचार्य विश्वनाथ सिंह : डॉ० विद्यानिवास मिश्र
श्री मोती बी० ए० : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती
श्री भोलानाथ गहमरी

सम्पादक

पाण्डेय कपिल

सम्पादक मण्डल

शकिशोर : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : डॉ० विश्वरजन :
शम्भुशरण : नागेन्द्र प्रसाद सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण : विपिन बिहारी
: भगवती प्रसाद द्विवेदी : पशुपति नाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूषण
मिश्र : रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष'

: ०६१२-२६११३४ इन्द्रपुरी, पटना-८०० ०२४

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एह अंक के प्रायोजक
श्री नरेन्द्र रस्तोगी 'मशरक': श्री चन्द्रशेखर मौर्य
मुख्य संरक्षक
सत्यनारायण सिंह
संरक्षक मंडल

पाण्डेय कपिल : नगेन्द्र प्रसाद सिंह : प्रो० ब्रजकिशोर : डॉ० अनिल कुमार 'आंजनेय' : आचार्य विश्वनाथ सिंह : कृष्णानन्द कृष्ण : डॉ० रसिकबिहारी ओझा 'निर्भीक' : करुणानिधान केशव : शैल वर्मा : डॉ० बी० एन० सिंह : डॉ० प्रभुनाथ सिंह : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र : जगन्नाथ : रंगश्री (भोजपुरी साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थान) बोकारो : विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव : डा० शत्रुघ्न सिंह : भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना : डॉ० वसन्त कुमार : जनार्दन प्रसाद : आनन्द सन्विदूत : शत्रुघ्न सिंह : जगदीश सहाय 'असीम' : डॉ० शम्भुशरण : पाण्डेय सुरेन्द्र : उर्मिला पाठक : डॉ० धीरज कुमार भट्टाचार्य : शिवनन्दन प्रसाद 'हर्षवर्धन' : पो० चन्द्रविनोद : राजेश कुमार : रूपश्री : माधव सिंह : रामबाबू प्रसाद : आचार्य श्रद्धानन्द अवधूत : राजनारायण दीक्षित : अतुल कुमार : गीता देवी : बब्बन सिंह : कुसुम सिंह : सुशीला पाण्डेय : कर्मा प्रेम पटना : शांति कुमारी : राम अयोध्या तिवारी : दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती : प्रो० रामेश्वर राय : चतुर्वेदी प्रतिभा मिश्र : प्रो० उमाकान्त वर्मा : सूर्यदेव पाठक 'पराग' शालिग्राम माधव : मोती बी. ए. : डॉ० रामकिशोर प्रसाद श्रीवास्तव : अम्बुजा सिन्हा : निशान्तकेतु श्याम : भोला प्रसाद 'आग्नेय' : गरिमा बन्धु : दिनेश्वर प्रसाद सिंह : हरिद्वार प्रसाद 'किसलय' : प्रो० रामेश्वर नाथ तिवारी : श्री फुलेना दीक्षित : डा० राजेश्वरी शाण्डिल्य : डा० लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी : डॉ० उषा वर्मा : चन्द्रदेव पाठक 'सुधाकर' : सुरेश काटक : पी० नीरजनयन : दयाशंकर मिश्र : सरिता शिवम् : हरिनारायण 'हरीश' : श्रीहरि मिश्र : सत्येन्द्र नारायण चतुर्वेदी : दीप्ति : अजय कुमार ओझा : इनरपरी देवी (बेला शर्मा टोला) : संगीता पाण्डेय : रामाश्रय सिंह 'नीरव' : जगत नारायण प्रसाद : लेजर प्रिंटर, पटना

☐ दाम—एक अंक के—चार रुपया ☐
दाम—साल-भर के—चालीस रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर साल भर के रियायती दाम—पैंतीस रुपया
पत्रिका संरक्षक शुल्क (आजीवन ग्राहक शुल्क)—साढ़े सात सौ रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषा आ लिपि का साथे मनमानी मत करीं

भोजपुरी में हरदम खाली ललित साहित्य के रचने ना लिखात रही एकरा में इतिहास, भूगोल, दर्शन, विज्ञान, मनोविज्ञान, तकनीकी विषय पुस्तक लिखइहें स आ ऊ सभ छापाखाना में छपिहें स। हिन्दी आ भोजपुरी वाला छात्र सभ पढ़िहें स।

भोजपुरी आगे अधिक बाहुल्य वाला राज्यन के राजभाषा बनी। से एकरा अनेक विषयन के शब्द अपनावे के पड़ी। आगे के बात ध्यान राखि के हमनी के भाषा आ लिपि के बारे में कुछ कहे के चाहीं। दोसरा आ विषय के शब्द के ओही लगले जबरन बिगाड़ि के भोजपुरी रूप बनवला आसानी से समुझ में ना अइहें स। गैर भोजपुरी भाषा-भाषी एकरा के से सीखि ना पइहें। भोजपुरियो विद्यार्थिन के कठिनाई होई।

एह घरी भोजपुरी अपना विकास-क्रम के नाजुक दौर से गुजर रहल बिया। बोली से विकसित हो के आपन मानक रूप ले रहल बिया। गँवारू छोड़ि के शिष्ट साहित्य के रूप धारन कर रहल बिया। अइसन समय में पुरी पत्रिकन के सम्पादक लोग के बड़हन जवाबदेही बा। ओह लोग के मत ना भइला पर आ आपन डफली आपन राग अलपला से भोजपुरी के नुकसान होई।

साल-डेढ़ साल से 'भोजपुरी भासा सम्मेलन पत्रिका' के मान्यवर सम्पादक बिना ठीक से विचरले, बिना बहुमत के राय जनले, आ बिना सामूहिक विद्वत् सभा के निर्णय कइले, आपन मनमानी कर रहल बानी। पहिले त उहां का भोजपुरी खातिर लोप भइल कैथी लिपि के समर्थक रहलीं आ ओकरा के अपनावे प्रचार करत रहलीं। अब बुझला छोड़ि देले बानी। बाकिर ओकरे बाद पर भोजपुरी वर्णमाला से —'ऋ, ङ, ञ, ण, श, ष, क्ष ज्ञ' अक्षरन के निकालि देवे खातिर आपन मत दे रहल बानी, संयुक्ताक्षरन के मुख-सुख बदे व्यवहार करेके सलाह फरमा रहल बानी।

एह मनमानी से ऊबि के ई टिप्पणी लिखे के पड़त बा। कुछ महीना पहिले 'भोजपुरी भासा सम्मेलन पत्रिका' के आपन कुछ विचार भेजलीं, त ओह में छपे ना पावल, खाली दू-तीन लाइन जवन सम्पादक जी के भावल, ऊ छपल। चिट्ठी लिखि। सम्पादक जी हमरा ओह विचार से सहमत रहलीं कि व्यक्तिवाचक वाला नांव के ना बिगाड़े के चाहीं। बाकिर ओकर पालन ओह पत्र में ना हो पावल। हम खास कक एहिजा 'भोजपुरी भासा सम्मेलन पत्रिका' के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अंक 17 (सितम्बर—नवम्बर 1995) के मद्देनजर राखि के आपन कुछ विचार राखत बानी—

शुद्ध तत्समे रूप लिखके चाहीं जइसे—

भोजपुरीरत्न श्री अक्षयवर दीक्षित.....
अध्यक्ष.....
श्रीवास्तव.....
डॉक्टर त्रिभुवन ओझा.....
डॉक्टर चन्द्रभूषण सिन्हा

भोजपुरी उच्चारण के मोतबिक बिगाड़ के ना लिखे के चाहीं जइसे—

भोजपुरी रतन सिरी अक्षयवर दीछित
अध्यछ
सिरिवास्तव
डागदर तिरभुवन वोझा
डागदर चनरभुसन सिनहा

इत्यादि

उच्चारण के अनुसार कवनो मनई के सही नांव बिगाड़ि के डाक के पता लिखला से खत भटकि जइहें स । खत जल्दी मिलि ना पहहें स ।

गाँवों में कवनो सुशिक्षित आदमी अइसन उच्चारण ना करे, भले कवनो निपट गँवार अपढ़ पुरान बूढ़ गँवई मौखिक रूप में बोलत होवे। ओकरा के साहित्य में लिखित रूप ना दिआई । हँ, भले कवनो नाटक के पात्र ओइसन उच्चारण करे त ओह शब्द / नांव के उद्धरण चिन्ह (" ") के भीतर भले लिखाउ ।

पत्रिका के एही अंक में प्रयोग कइल शब्दन के दशा देखीं जा—

शुद्ध तत्सम रूप—	जबरन बिगाड़ल भोजपुरी रूप—	एकर प्रचलित भोजपुरी रूप
श्री	सिरी	
गद्य	गद्द	☒
विश्वविद्यालय	विस्वविद्यालय	×
भारतवर्षीय	भारत वर्सीय	भारतवर्ष के
शीर्षक	सीर्सक	मथेला
श्रृंगार	सिरिगांर	सिंगार
वरिष्ठ	वरीस्ठ	वरीय/उमिरगर
परीक्षा	परीछा	इम्तहान/परीक्षा
स्पष्ट	स्पस्ट	साफ
ज्ञापन	ग्यापन	☒
निदेशक	निदेसक	×
शब्द कोश	सब्द कोस	शब्द संग्रह/शब्द कोश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भरसक तत्सम शब्दन के बदला ओकर भोजपुरी शब्द खोजे के चाहीं। बिलला पर ओकरा के शुद्ध तत्समे रूप में लिखे के चाहीं। जइसे, परिसद ना परकासक ना, प्रकाशक आदि। बंगला वर्णमाला में 'स' 'ष' बाटे बाकिर में ओकर उच्चारन 'श' के होला। इहे ना, भोजपुरियो में लिखाता कुछ आ कुछ, जइसे 'कह' लिखाता पढ़ाता 'कहऽ' सुन-सुनऽ आव-आवऽ इत्यदि। (ऽ) के प्रयोग भोजपुरी गद्य में कम भइल जाता।

बिगाड़ल भोजपुरी रूप से हिन्दी आ भोजपुरी पढ़ेवाला विद्यार्थिन के दूनो हरदम खातिर कमजोर हो जाई। ऊ दुबिधा से पड़ल रहिहें स। हिन्दी भाषा बिया। भोजपुरी के एकरा नजदीक राखहीं के होई। आगे कवनो सरकारी महकमा में हिन्दी माध्यम से इम्तहान देवे वाला अभ्यर्थी शब्दन के रूप लिखे में गलती करिहें स। एह से हथजोरी बा कि भोजपुरी क्षेत्र के हार लइकन के भविष्य के साथे खेलवाड़ मत कइल जाउ। भरम में डाले ला ओइसन प्रचार बंद कइल जाउ।

एगो सोचे के अउर बात बा कि हिन्दी/संस्कृत के तत्सम शब्द जब भोजपुरी हू ब हू लिआते बा त खाली ओह शब्द के अगल-बगल भा बीच में आइल ष के बदलाते 'स' में बदलला से ऊ थोड़े भोजपुरी के आपन शब्द बन जइहें? ओकर व्युत्पत्ति खो जाई त ऊ अपना मूल भाषे के शब्द निकलिहें स।

एहसे तत्सम शब्दन के समूह में श, ष वर्ण के स्थान पर 'स' के प्रयोग कवनो लाभ नइखे सिवाय भोजपुरी के गँवारू बनवला के आ भोजपुरी संतानन भविष्य बिगड़ला के।

जइसन कि 'भोजपुरी भासा सम्मेलन पत्रिका' में सलाह दिहल जाता ओइसन भोजपुरी वर्णमाला से कवनो वर्ण (अक्षर) निकाले के जरूरत नइखे। संस्कृत आ हिन्दी वर्णमाला लेखा भोजपुरियो के वर्णमाला आ लिपि देवनागरी बा। एह से सब वर्ण ध्वनि एकरा में समाइल बा। भोजपुरी के मानक आ शिष्ट भाषा के आसन पर बइठावे खातिर तत्सम शब्दन में सभ वर्ण के जरूरत पड़ी। हँ, जवना भाषन में एह वर्ण सभन के तदभव रूप बन गइल बा उहाँ ओही रूप के प्रयोग करे चाहीं, जइसे —

तत्सम शब्द	भोजपुरी में तदभव शब्द उच्चारण
पौष	पूस
षोड़स	सोलह/सोरह
षष्ठी	छठी
क्षण	छन
वृक्ष	फेंड़/बिरीछ
पक्षी	पंछी
त्रास	तरास
प्राण	प्रान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एगो अउर मार्का के बात बा कि जवन वर्ण (ङ, ञ) भोजपुरी में सुरक्षित बा ओकरा के निकाले के आ जवन स्वर मात्रा (ॅ, ॊ) नइखे ओकरा के राखे वाले सूची में ओह पत्रिक के हर अंक में सलाह दिहल जा रहल बा। समूचे खातिर कुछ के उदाहरण—

ङ—आङन (आंगन), बेङ (बेंग), वाङमय (वांगमय), जङल (जंगल) इत्यादि।
ञ—बढ़िञा (बढ़ियां), भूइञा (भुइयां), टुइञा (टुइयां) इत्यादि।
मात्रा—ॅ मइल (मैल), कइंची (कैंची), भइया (भैया) इत्यादि।
ॊ—गवन (गौना), अवगुन (औगुन), कवन (कौन), कवर (कौर) इत्यादि।

हिन्दी में एह दूनो वर्ण (ङ,ञ) के स्वतंत्र रूप से कवनो शब्द में प्रयोग ना होला। ऊपर के उदाहरण में ङ खातिर पहिले वाला वर्ण पर अनुस्वार लगा दिहल जाला आ ञ यां में बदल जाला। हम एह दूनो वर्ण के भोजपुरी में प्रयोग करे के समर्थक नइखीं। हमनी के हिन्दी वाला तरीके अपनावे के चाहीं। एहसे कि छापाखाना आ टाइप राइटर में ई वर्ण नइखन स। बराबर कठिनाई बनल रही। हमनी के शिष्ट साहित्य हिन्दी के नजदीक रहबे करी, लाख केहू कुछ कहो।

एही तरह हम ॅ आ ॊ मात्रा के निकाले के नइखीं कहत बलुक इन्हनी के बनल रूप जवन भोजपुरी में प्रचलित बा ओकर प्रयोग करे के कहतानी।

एहिजा हमार खाली मकसद इन्हनी के सही स्थिति भोजपुरी वर्णमाला में देखावे के रहल ह।

हमेशा से बोली आ शिष्ट साहित्य के भाषा में अंतर रहल बा। कवनो देश के कवनो शिष्ट भाषा के रूप अपना गँवारू बोली के रूप ना होखे, बलुक ओकरा शिक्षित व्यक्ति द्वारा ओकर विकसित शब्द आ ना मिलला पर दोसरा भाषा के शब्दन प्रयोग के अपना अभिव्यंजन-शक्ति में गति ले आवे आ अपना विषय के ठीक से अभिव्यक्त करे खातिर कइल जाला।

निहोरा बा भोजपुरी प्रेमी, साहित्यकार, विद्वान, वैयाकरण लोग से कि ऊपर के लिखल सभ बिन्दु पर क्षेत्रीयता के मोह छोड़िके निष्पक्ष भाव से विचार करसु आउर भोजपुरी भाषा आ संतानन के भविष्य के ध्यान में राखि के भोजपुरी के मानक शिष्ट साहित्य रूप वास्ते, जबना से हर विधा/विषय लिखा सके, आपन निस्संकोच निधड़क निष्पक्ष विचार भोजपुरी के हित ख्याल में राखि के देसु।

—(डा०) रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

—जगन्नाथ

पांख का गुनगुनाये के मन हो गइल
रउरा अइला से घर ई चमन हो गइल
साव हमरो हिया में त कम ना रहल
पेट के आग में सब दफन हो गइल
जब ले जीअल गरीबी रहल ओढ़ना
मर गइल त गगन ई कफन हो गइल
जिन्दगी जिन्दगी से बा भागत रहल
खुद के छाँहो में बा बेसरन हो गइल
गूंग शब्दन के कविता भइल संकलन
अंजना के बुला अपहरन हो गइल

☐ एस० पी० सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड, पटना—१

संझा

—हीरालाल अमृतपुत्र

साँझ भइल,
बितला दिन के सब कुछ
भुला देवे के बेरा।
संझा—
दिया-बाती
भगवान का आरती के बेरा।
मंगल भाव, शुभ विचार का
मन का होखे के डेरा।
इहे राह के सतुआ—पिसान
आई काम रात का अन्हारा।
आँख खुली
पंछी बोली, फड़फड़ाई—
पांख आपन फेरु
भोर का अँजोरा।

☐ चरिहारा, मशरक, सारण—८४१४१७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चारि गो चतुष्पदी

—आचार्य सत्यनारायण लाल

हमहूँ पीहिले, बाकी जब केहू पिया देला
नसा चढ़ला पर, कनमना ना, हिया से लगा लेला
ओइसे पीए के हमरा सौख कबहूँ ना रहल
पी लिहिले कि मुअलो प, केहू जिया देला

•

कतना कहलीं, बाकिर, केहू सुननिहार ना मिलल
मिलल सुननिहारो त, केहू समुझनिहार ना मिलल
साइत-संजोग केहू समुझनिहारो मिलल, ता का कहीं
समुझियो के बात, केहू कुछ करनिहार ना मिलल

•

कहलऽ कि हमहीं आके तोहरा से भेंट कइ लेव
पँवरऽ छूटि के, डूबे लगवऽ त हाथ धके बचा लेव
अब त देह थाकल, दम फूलल, साँस टूटि रहल
आ के तनी मुसुका द ना, हम खुदे पार लगा लेव

•

गावऽ जनि गीत मीत, गवला में अब मजा नइखे
मिलला प मजा आवेला, दुनिया में अब ऊ सजा नइखे
काँट गड़ी, टभकी; बाकिर गुल के सुवास ना पइबऽ
लोग मुइ-मुइ के जे खोजेला, अब कतहूँ ऊ कजा नइखे

•

□ साधना कुटीर चौधरी टोला महेन्द्र, पटना-६

RajGuru Math, Shivala; Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल जेवनारी

—पी० चन्द्रविनोद

दिनन बाड़ो चढ़वाँकिन, मेंभाउत महतारी जी
रोटी पर अरुआइल अरुई के तरकारी जी

असरा के उसरल बजार में, ईहो माल गिरा लिहले
कतना लोग देखावल लीला, इनकर बाटें बारी जी

र बाड़े टकटोरे में अइसन घुप्प अन्हरियो में
का बाँची जब आई सूरुज के असवारी जी

धाना, डोहा लेके सगरो बान्ह बन्हाइल पानी में
बाकिर मछरी छड़प-छड़प के फान गइल बरिवारी जी

ता अँगना से दुअरा ले बा चुड़इल के बास भइल
ऊहे ओझा बन के सबकर भूत उतारी जी

नेवता बाँट रहल बाड़े ऊ सगरो जात जवारी के
आवस इहवाँ तब नू पइहें काटल-काटल गारी जी

न्यू एफ/11,हैदराबाद कालोनी बी० एच० यू० परिसर, वाराणसी-५

आशा के दियरी

—डा० दिवाकर पाण्डेय

वती के धार के
ार में
न नाव।
ो बिन
मात
ोला खात
इसे तट पकड़ल
बिया नाव।
ई
नाव,
, राह में
म-किसिम के
भरकम; चट्टान।
, धारा के वेग
के पत्थरन से
के
हल बा
क शोर।

अमावस के अन्हरिया में
जर्जर नाव के ऊपर
एगो आशा के दियरी
टिमटिमात
हमरा कान में फुसफुसात
कह रहल बिया—
हे मीत!
अफसोस कइसन
थाम्ह ल पतवार
मारऽ डाँड़
पार ना लगबऽ
त कम से कम
लहर आ चट्टान के
ई एहसास त होई
कि हमरा से
एगो जर्जर नाव
जोर से टकराइल।

रहथुआ, वाया-रघुनाथपुर, बक्सर-८०२१३४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मकड़ी जस जाला

—भोला प्रसाद 'आनेश'

राम क नाव न लेइ सकीं पर आपन राज तबो इ कहाला,
भारत देस महान जहाँ भगवान अदालत में धसिटाला।
कीमत ढेर मिली जहवां उहवें बस हाकिम रोज बिकाला,
केकर नांव कहीं हम बा इहवां सगरे मकड़ी जस जाला॥

के सभसे अब राम कथा कहिहें मनवा बहुते अउँजाला,
प्रेम रही कइसे तब भाइ सँगे हमके त इ नाहिं बुझाला।
रोक सकी न कबो कतहूं तब आपन गोड़ गिरी जब साला,
केकर नाव कहीं हम बा इहवाँ सगरे मकड़ी जस जाला॥

लालच रोज अकास चढ़े अब पूत कपूत न बाप चिन्हाला,
मूड़ कटे मनई क इहां जइसे घरवां तरबूज कटाला।
फिल्म सिखावत एक न एक नया तरकीब फँसावल जाला,
केकर नांव कहीं हम बा इहवाँ सगरे मकड़ी जस जाला॥

साल हरेक भले पुतरा जरिहें पर रावन नाहिं मराला,
सेवक रूप धरे घननाद बने अवधेस निहारत हाला।
बोलत नाहिं डरे कबहूं अब धोबिन जीभ लगे दब ताला,
केकर नांव कहीं हम बा इहवाँ सगरे मकड़ी जस जाला॥

नीति इहाँ कुरसी जवना चलते अपने सब लोग पिसाला,
वोट क रीति बड़े जस दूनहु हाथन साँप कबो लपटाला।
देस जले परदेस जले पर एक बनो सब लोग चिलाला,
केकर नांव कहीं हम बा इहवाँ सगरे मकड़ी जस जाला॥

29, रघुनाथपुरी, सिविल लाइंस, बलिया (यू० पी०) 277001

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका/जनवरी, १९९६/१०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हाथी के दाँत

—सुरेश कांटक

पात्र परिचय—

पुरुष पात्र :—

सूत्रधार	—	सूत्रधार का साथे विदूषको के काम में
लोटा बाबू	—	नेता (नायक)
सोटा बाबू	—	नेता, दूसरका
मोटा बाबा	—	नेता तिसरका
मूसर	—	किसान
नन्हका	—	मूसर के छोट बेटा
सुखदेव बाबू	—	गांव के सामंत
धमधूसर	—	मूसर के संघतिया, किसान
चभोरन	—	गाँव के किसान
भभोरन	—	गाँव के किसान, मजदूर
ढकेलन	—	गाँव के मजदूर
चमचा १	—	लोटा बाबू के अदिमी
चमचा २	—	सोटा बाबू के अदिमी
चमचा ३	—	मोटा बाबा के अदिमी
समाजी	—	ढोलक वाला
		हरमुनियावाला
		जोड़ीवाला

(प्रचार का समय तीनो चमचा एके साथे आ सकत बा)

स्त्रीपात्र :—

लछमिनियाँ	—	मूसर के मेहरारू
भगजोगनी	—	मूसर के बेटी

वन्दना

करीं सुमिरनिया तोहार मइया शारदा
दीहीं बुधी विमल विचार मइया शारदा
अन्हरा के आंखि दीहीं कोढ़िया के काया
मुरुखन के दीहीं ज्ञान करीं मइया माया
बेरी बेरी करींला पुकार मइया शारदा
तुलसी के तरनी कबीर सुर के तरनी
कालीदास, वेदव्यास के रउवे उबरनी
बहुते के कइनी उद्धार मइया शारदा
वीणा आ पुस्तक, हंस रउरे सिंगारवा
काटीं ना अन्हरिया देखाईं उजियारवा
दीहीं ना दुलार प्यार धार मइया शारदा
राखि लीं सरनिया में भूलि के नंदनिया
कांटक के माथ बाटे रउरे चरनिया
रोई रोई करेले गोहार मइया शारदा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पहिला अंक

झलक : १

[मंच प समाजी लोग ढोलक झाल हरमुनिया आ सम साज-बा
लेके बइठल बाड़े। हरमुनिया के बोल का साथे ढोलक झाल बाज
बा। एकरा साथे एगो गीत गावत बा लोग]

गीत

बड़ा रे जतनवा से मिलली अजदिया हो
माई के इजतिया बचावऽ हो संघतिया।
वीर हो भगत, सुखदेव, राजगुरु ताजऽ
माई खातिर तेजले परान हो संघतिया।
अमर आजाद देस जेकर बा अनेक भेसऽ
भासा धरम विविधऽ बतावे हो संघतिया।
सुंदरऽ ई संस्कृति जेकर विमल कीर्तिऽ
मिलि जुली प्रेमऽ धुनऽ गावे हो संघतिया।
बड़ा रे जनतवा से.....

उत्तरऽ में हिमताजऽ दखिने सागर नाजऽ
दायें बायें बंग गुजरात हो संघतिया।
ठाकुरऽ विवेक, बोस, कुंवर, प्रताप, जोसऽ
झांसी रानी तोहके जगावे हो संघतिया।
सत्य के संदेस मंत्र बंधुता के शिव तंत्रऽ
ध्वज सुंदर गरिमा उड़ावे हो संघतिया।
धरती के कण कण मानव सरग बड़ऽ
दानव के मानव बनाव हो संघतिया।
बड़ा रे जतनवा से.....

गंगा जमुना सरजू के धार से पुनीत देसऽ
ऋषि मुनी देव अवतार हो संघतिया।
कपिल कणाद व्यास पाणिनी आ माघ भासऽ
कालीदास तुलसी के गावे हो संघतिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देखऽ चारो ओरे उड़े करिया बदरिया होऽ
आवे घेंरले करिया बदरिया संघतिया।
कांटक कहेले फेंनू दियवा जराव भइयाऽ
काटऽ ना बिदेसियन के जरिया संघतिया।

[ई गीत खतम होते जोकड़ का भेस में एगो विदूषक सूत्रधार मंच प
[illegible]वम के आवत बा। ओकरा हर डेग का साथे झन्न झन्न का आवाज
[illegible] ढोलक के थाप लागत बा। दर्शक का ओर चारो ओर बारी बारी
[illegible] के सलाम करत बा, आ बोलत बा]

[illegible]—ता धिन् धिन् ना, ता धिन् धिन् ना, ना धिन् धिन् ना, ता धिन् धिन् ना, ताक तिनक् धिन् धा, ताक् तिनक धिन् धा, ताक् तिनक् धिन् धाऽऽ.

बहिनी अवरू भाई लोग ! लोग आ लुगाई लोग ! जनि घबड़ाईं लोग ! कांटक जी के नाटक हो गइल सुरू। बजाईं मत बाजा तुरु रू रू रू रू। बइठीं सभे चुपचाप, बुधी बटोर के। सुरसती मइया के दूनो हाथ जोर के। हाला गुला बन करीं। आपस में जनि लड़ीं। आइल बा मौसम, अब नेता जी अइहें ! फेंकि फेंकि कवरा तुरती परइहें ! केहू जिअइहें केहू के मुअइहें ! राउर हरियरी लुकाइ के चबइहें ! उनुका आवे के समे हो गइल बा। उनुकर चेला जटही वो गइल बा। आपन आपन कफन बान्हीं अपना माथे ! कोल्हू के बएल बन जाईं उनुका साथे ! अबकी उमेद बा कुछुओ ना छूटी ! गंगालाभ होई बिलाइ हुटीहुटी ! एक बेर बोलीं सभे (दर्शक का ओर देख के) खप्पर वाली माई की……जय !

(एही घरी नेता लोटा बाबू अपना चमचन का साथे आवत बाड़े उनुका के देखते सूत्रधार हहुआइल हबड़ाइल आ डेराइल मुंह बना के भीतरी भाग जाता। नेता जी आवते हाथ जोर के दर्शक लोग के प्रणाम करत बाड़े। हंसत मुसकात घूम घूम के चारो ओर देखत बाड़े। उनुकर चमचा लोग जोर से नारा लगावत बाड़े)

[illegible] — इंकलाव जिंदाबाद !
[illegible]मचा — जिंदाबाद ! जिंदाबाद !
[illegible] — लोटा बाबू जिंदाबाद !
[illegible]मचा — जिंदाबाद ! जिंदाबाद !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चमचा १ — हमार नेता कइसन हो !

बाकी चमचा — लोटा बाबू जइसन हो !

चमचा १ — हमनी के मोहर कहंवा लागी !

बाकी चमचा — जहां होई गिरगिट के दागी !

[एगो चमचा गिरगिट छाप के बड़हन पोस्टर दर्शक लोग के देखा
बा। एकरा बाद सभ चमचा चुप हो जात बाड़े। नेता जी मंच
अगिला भाग में ठाड़ होके भासन सुरू करत बाड़े]

लोटा बाबू—आदरणीय भाई लोग आ बहिनी लोग ! हम रउआ सभ के हाथ
जोरि के प्रणाम करत बानी ! पाँच बरिस बाद हमनी के एक बा
मिलल बानी जा ! पिछला बेरी रउआ सभे हमरा के आपन आशि
वाद देले रहीं सभे। ओकरा खातिर हम रउआ सभ के नाव
भुलाइल बानी ना जिनगी भर भुलाइब !

हम रउवा सभ के सभ दुख जानत बानी ! बाकी पिछला बेरी
पहिले पहिले जीतल रहीं ! अपने के सम्हारे में कूल्ही समे
गइल ! रउवा सभका ओर देखे के मोका ना मिलल ! बाकी अब
खूब बढ़िया से पुहुट होके अपना पैर प खाड़ हो गइल बानी ! अ
कल छल बल जान गइल बानी। अब हम सभ किसिम के लक्ष
लगाइब आ रउआ सभ के सभ दुख दूर क देब।

(एही घरी चमचा नारा लगावत बाड़े, आ थपरी बजा देत बाड़े)

चमचा १ —जिंदाबाद ! जिंदाबाद !

बाकी चमचा —लोटा बाबू जिंदाबाद !

चमचा १ —जीत गइल भाई जीत गइल !

बाकी चमचा — गिरगिट छाप जीत गइल !

(नेता जी अतना देर चुप हो जात बाड़े। जब नारा बंद हो जा
फेरु बोलत बाड़े)

लोटा बाबू—भाई लोगन, हम जानत बानी, रउआ सभे बझवन से बड़ी परे
बानी। बाघन आ हुंड़ारन से रउआ लोग के सउँसे जिनगी तबाह
गइल बा। बाकी अबकी बेर हमरा के मोका दीहीं। हम एकहू
के जीयत ना छोड़ब। सभ बाघन आ हुंड़ारन के नाक छेद के गि
में डरि के मार घालब ! खाली जीत गइला के देर बा। हम र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभे के अपने भाई हईं । भाई के दुख भाई ना समुझी त के समुझी ? छोट भाई आपन दुख बड़ भाई से ना कही त केकरा से कही ? रउवा सभ के गोड़ प आपन पगरी ना धरब त केकरा गोड़ प धरब ? हम जदी कवनों गलती कइले बानी त हमरा के मारीं आ सही राह देखाईं ! जे मारेला उहे दुलारे ला। जे डांटे ला उहे पुचकरबो करेला।

(नेता जी चुप हो जात बाड़े नारा फेनु लागत बा)

चमचा १ —वाह भइया वाह !

बाकी चमचा —हमार नेता वाह !

चमचा १ —जिंदाबाद ! जिंदाबाद !

बाकी चमचा —लोटा बाबू जिंदाबाद !

(नेता जी फेनू बोलत बाड़े)

लोटा बाबू —भाई लोगन, रउआ सभे सोटा बाबू से होसियार रहब। ऊ सभका से भरस्ठ अदिमी ह। एक नमर के हतेयार पापी आ अतेयाचारी ह। ओकर निसान मगरमच्छ ह। ऊ सांचहूं के मगरमच्च ह। सउँसे देस के ठाढ़े लील के बइठ गइल आ बुजबुजिओ ना देलस। ऊ लोग कुरसी के आपन जागीर बनवले बा। एह गरीब देस के बुड़बक गरीब लोगन के आपुस में लड़ा भिड़ा के, परसान क के सउँसे देस के लूट के आ चूस के मातल बा। अबकी ओकरा के कवनो कीमत प जीते मत दीहीं। अइसन पटकनिया दे के हराईं कि मुँहें माटी ले के चारो खाना चित हो जाउ। ऊ सभ से खतरनाक अदिमी ह।

अब अंत में हम रउआ सभ से हथजोरी करत बानी। रउआ सभे आपन मोहर गिरगिट छाप प लगाइब। हमरा उमेद बा कि रउआ सभे हमार पिछिलका गलती माफ क देले होखब। अबकी बेर हमरा से ओइसन गलती ना होई। रउआ सभे आपन दुख सितम लिखि के हमरा के दे दीहीं। हम अब अपना दिल के डायरी में राउर दुख लिख लेत बानी। अब हमरा के आसिरबाद दीहीं आ अहथिर से आके बरकिट हाउस में मीलीं हम तीन दिन तक ओहिजे रहब। जय हिंद ! जय गिरगिट !

नेता जी हाथ जोरत बाड़े। चमचा ताली बजा के नारा लगावत बाड़े आ परदा के भीतर जाता। परदा गिरता बा।)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Mahayajna Trust. Funding IKS-MoE-Grant

[सूत्रधार परदा के भीतर से मंच प आहिस्ते अहिस्ते आवत बा चिहुंकी अस चारो ओर ताक ताक के सभ दरसक लोग के प्रणाम करत बा। समाजी लोग के थाप ओकरा हर डेग के साथे लागत बा। झन्न ठप् झन्न् ठप् होता। ऊ घूम घूम के बोलत बा मुंह बना बना के]

सूत्रधार—धे धे न ग धिनऽ धिनऽ धे धे न ग धिनऽ। के के न क कीनऽ कीनऽ धे धे न ग धिनऽ। धा तिरकिट तक् धाऽ। धा तिरकिट तक् धाऽ। धा तिरकिट तक् धाऽऽ।

अंजोरिया डोल डोल, अन्हरिया डोल डोल
लकड़ा के माई, कइसे बेली रोटी गोल गोल
केहू बा अन्हरिया में केहू बा अंजोरा
केहू के अतड़िया अइठे, केहू भरे बोरा
अन्हरी अंजोरियां के पोल दीही खोल खोल. अंजोरिया...
एगो बा अंजोरिया में ढेरिखा अन्हारा
कुरता बीना कुकुरेला लकड़ा बेचारा
मुंहवा बिरावेले अंजोरिया बोल बोल, अंजोरिया...
डोलिहें अंजोरिया त चहकी अन्हरिया
होइहें अंजोर जब चमकी बिजूरिया
लकड़ा वहारी अपना झोपड़ी के झोल फोल अंजोरिया...
हाय रे अंजोरिया बढ़ावे ना अंजोर
हाय रे अन्हरिया देवे ना झकझोर
लकड़ा बेकारे चलेला राह डोल डोल. अंजोरिया...

(सूत्रधार रुक जाता। फेरू कपार पीट के चिहा के बोलत बा)

सूत्रधार—आ रे रे रे, रे रे रे रे, रोवता है क्या ? आगे आगें देख भइया होता है क्या ? माटीं के गोरेया टिकाइये में गइले। गीधन के भाग जागल कुकुर धधइले। (दर्शक का ओर देख के) बोल सियावर रामचन्द्र की जय ! हंस वाहिनी मइया की···जय !

(एही घरी भीतरी से नारा सुनाता—जिंदाबाद जिंदाबाद ! सूत्रधार चकचिहा के एने ओने ताकऽ ता। तले सोटा बाबू अपना चमचन का साथे मंच प आ जात बाड़े। चमचा हड़वड़ा के भागत बा। सोटा बाबू साष्टांग प्रणाम करत बाड़े। चमचा लोग नारा लगावत बा)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चमचा १ — इंकलाव जिंदाबाद !
बाकी चमचा — जिंदाबाद ! जिंदाबाद !
चमचा १ — सोटा बाबू जिंदाबाद !
बाकी चमचा — जिंदाबाद ! जिंदाबाद !
चमचा १ — हमार मोहर कहंवा लागी !
बाकी चमचा — मगरमच्छ के जहंवा दागी ! (मगरमच्छ के बड़हन पोस्टर देखावत बा)
चमचा १ — मगरमच्छ के जीत बा !
बाकी चमचा — एही में आपन हीत बा !
(नारा बन होता त नेता जी बोलत बाड़े)

सोटा बाबू — (हाथ जोर के) हिंदू भाई के राम राम । मुसलमान भाई के वालेकुम सलाम । सिख भाई के सत श्री अकाल आ ईसाई भाई के गुड मार्निंग । भाई लोगन आ बहिनी लोगन, सभ केहू के प्रणाम आ पव-लग्गी । भाई लोग ई देस धरम के देस ह । इहंवाँ अतिथि देवता मानल जाला । दुआर प आवेवाला के दुतकारल ना जाला । दिन भर के भुलाइल सांझि के घरे आ जाला त ओकरा के भुलाइल ना कहाला । हम राउर हईं । रउआ सभे हमार हईं । ई नाता कबो ना छूटी । हम राउर सेवक, रउआ हमार मालिक । हमार पगड़ी रउवा सभ के पाँवें । कीरिया खा के कहत बानी, अबकी ओइसन गलती ना होई । पिछला बेरि हम अपने काम में लागल रहि गइनी । अबकी रउए सभ के सेवा करब । लींहीं सभे आपन पगड़ी रउआ सभके गोड़ प धरत बानी । एकरा के चाहे रउँद दीहीं चाहे उठा के फेनु हमरा के पेन्हा दीहीं । (टोपी उतार के मंच प ध देत बाड़े)
(चमचा नारा लगावत बाड़े)

चमचा १ — जिंदाबाद ! जिंदाबाद !
बाकी चमचा — सोटा बाबू जिंदाबाद !
चमचा १ — जीत गइल भाई जीत गइल !
बाकी चमचा — मगरमच्छ जीत गइल !

(नारा बन होता । नेता जी चुपचाप खाड़ बाड़ें । कबो टोपी का ओर देखत बाड़े कबो दरसक लोग के देखत बाड़े । चमचा एक दोसरका के मुँह ताकत बाड़न स । अचके में एगो चमचा निरास होके बोलत बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चमचा १—का महराज (दर्शक लोग से) रउआ सभ के कुछऊ बुझात नइखे। हतना बड़ महान नेता रउआ सभ के गोड़ प गिरल बाड़े। इनिका के उठाईं सभे। सभ कुकुर सियार कासी चल गइबन स आ रउआ सभे कुंभकरन बनल बानी। सरन में आवे वाला के उठावल जाला। गंगा जी बनि जाईं सभे। सभ पाप पी जाईं सभे। एक बेर अवरी अजमा के देखे लीहीं। तीसरका उड़ाने तितिर पकड़ाला। आपन धरम बचाईं सभे।

(कवनो दरसक मंच प आके टोपी नइखन पेन्हावत त थोरे देर ठहरि के चमचा टोपी उठा लेत नाड़े आ बोलत बाड़े)

चमचा १—ठीके बा। मौनं स्वीकृति लक्षण। रउआ सभे बइठल रहीं। रउआ सभका ओर से हमहीं नेता जी के टोपी पेन्हा देत बानी (टोपी पेन्हावत बाड़े) रउआ सभे बइठले बइठल आसिरवाद दे दीहीं सभे। (सभ चमचा ताली बजावत बाड़े। नेता जी फेनु बोलत बाड़े।)

सोटा बाबू—(दर्शक लोग से) अब हमरा संतोख हो गइल कि रउआ सभे हमरा के भुलाइब ना। बाकी लोटवा से सावधान रहब। ऊ बिना पेनी के लोटा ह। जब जेने मन होई ओनहीं डगरि जाई। ऊ बड़का खूनी ह। निठाह गुंडा ह। कतने खून क के राजनीति में जान बचावे आइल बा। गह देस में अइसन अदिमी के जरूरत नइखे। ई देस किसान के देस ह। रउआ सभे के खेती खातिर पानी चाहीं। बिजुली चाहीं। खाद चाहीं आ बढ़िया बीया चाहीं। बाकी रउआ सभ के कुछुओ नइखे मिलत। खेती साथ नइखे देत। गरीबी दिन दिन बढ़ल जाता। बेकारी दिन दिन बढ़ल जाता। चोरी, घुसखोरी बेइमानी, दलाली बढ़ल जाता। हत्या अपराध आ भ्रष्टाचार बढ़ल जाता। सभ लोग देस के लूटे में लागल बा। हम ई सभ बेमारी दूर करब। हमरा के जिताईं आ आपन मुराद पाईं। एगो बा बाघ छाप ओकरो से बांचबि सभे। ना त जियते सभके लील जाई। सउसे देह ओकरा पेट में चल जाई। अब हम चलत बानी। तीन दिन सरकिट हाउस में रहब। रउवा सभे आपन आपन समस्या आ दुख सितम लिखके ले आइब। हम सब के दुख दूर करब। जय हिंद। जय मगरमच्छ! (नेता जी जात बाड़ें। चमचा नारा लगावत बाड़ें स। परदा गिरत बा।)

(शेष अगिला अंक में)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

इहे बूँद गंगा जल

—रविरंजन सिन्हा

अइसे त जइसहीं ओह दिन बाँकीपुर टेलर्स कने से कपड़ा के पाकिट लेके रिक्शा पर बइठलीं ओइसहीं बुझाइल कि हम नीमन काम ना कइली हँ। बाकिर दोस्त-संगतिया लोग के फेरा में पड़के दू सौ रूपया खर्चा क चुकल रहीं। कमल किशोर अउर सतीश के कहला पर सार्क-स्किन के हल्का गुलाबी रंग के सूट, चुस्त पैंजामा, सिल्क के कुर्त्ता अउर जवाहर बंडी सिवा लेलीं। पहिले त पाँच दिन तक हम टालत रहलीं। एक दिन कमल किशोर कहलन कि का जिनगी भर बबुए रहबऽ का? बिआह में कपड़ा त तोहरे पेन्हे के बा। बिआतो बाड़ऽ। कौनो कर्जा त नइखऽ लेले। त फेंर बाबूजी एकरा से काहे घबड़ाइहँ?

पटना जंक्शन स्टेशन पर दोस्त लोग बिदा करे भी आइल रहन। बाकिर उन उचाटे लागत रहे। रास्ता भर बुझाइल ना कि काहे अइसन भइल बा। खैर दस बजे घरे पहुँचलीं। खात बेर बड़की अम्मा पूछत रह गइली कि बचउ! काहे उदास बाड़ऽ, बाकिर हम जबाब ना देसकलीं। "भाभी चुहलो कइली। कहली: अम्माजी! बबुआ के उदासी अभी बारह दिन अउरो चली। तबो पूरा हँसी ना आइल।

बारहे दिन बिआह के रह गइल रहे। दू दिन के बाद बुध के तिलक अउर ओकरा बाद अगला सुक के बरियात।

भाभी भोरहीं हमरा बिछावने पर चाह दे गइल रही। फेर कुछ कहवो कइली बाकिर हमरा जइसे कुछ सुनइबे ना कइल। आठ बजल होई कि हम शहर चल अइलीं। दुआर पर ओसारा से उतरते रहीं कि देखलीं कि गली के मोड़ पर भरत चचा अउर द्वारिका चचा बरोबर लेखा खड़ा बाड़न अउर सुभान चचा जल्दी जल्दी दुआरा के ओर लपकत आ रहल बाड़न।

भरत चचा यानी बाबू भरत सिंह। धप-धप गोर रंग। सवा छः फूट के बेसिये होइहँ। ओइसहीं गठल देंह। आरा-ससराम लाइट रेलवे में गार्ड रहन। गार्ड के वरदी पेन्ह के चलत रहन त आउर रोबीला लागत रहन। प्रनाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

गार्ड साहेब, सलाम गार्ड साहेब के दूनरफा सलामी देख के हमनिओं के बड़िआई में बुझाय कि हँ ! भरत चचा कुछुओ हवन। सीदी ना बजावस आ झंडो ना देखावस त गाड़ी चली भला ? ओहदा होखे त अइसने होखे। रस्ता में सेमरौरा स्टेशन से आध कोस पर उनकर ससुरार रहे। सुनत रहीं जा कि सेमरौरा स्टेशन पर जब गाड़ी पहुँचे त उनकर ससुरार से केहू, टाइम का मुताबिक, भोजन भा जलपान लेके पहुचल रहत रहे। भरत चचा खा-पी के कल्ला में पान दबा लेस तबहीं गाड़ी आगे बढ़े।

एकदम मस्त मौला आदमी। चुहल के जवाब चहक के अउर टोका-टोकी के टनक के देत रहन। कभी कभी डयूटी से लौटस त ससुरार के नौकर कमुआ-कोंहड़ा चाहे दोसर तरकारी के झोरा लेले पाछे पाछे आवे। एक दिन हमार बाबूजी टोकलीं "का भरत जी ! तोहरा ससुरार में आजकल कोंहड़े-भतुआ होता का ?"

"छान्हिये-छान्हीं ललन भइया", भरत चचा छूटते जवाब देलन। "देखीं ना हमरा साला लोग के ? जिन कोंहड़ा ना भ सकलन ऊ भतुआ त होइबे गइल बाड़न।" आ ओकरा बाद ऊ जोर के ठहाका कि अगल-बगल के दू-चार घर के छत-छप्पर हिल जाय। थोड़े देर में देखी आदमी कि उनकर नौकर एगो लउका भा छितनी भर रामतरोई लेले दुआर पर ठाढ़ बा कि मलकिनी भेजलीं हँ। ओइसने छितनी बगल में बबन मइया कने आ सामने राधिक चचा कने भी पहुँची।

द्वारिका चचा यानी द्वारिका प्रसाद कलक्टरी में पेसकार रहन। बिना सालन-मछरी, चाहा-बगेरी के कौर हलक का नीचे ना उतरी तबो रह गइलन टिटिहरिये अइसन। बाकिर मिज़ाज से दिलदार। जइसन खाये के सौकीन ओइसन खिआवे के। स्कूल से टिफिन में हमनी कचहरी के कवनों दोकान पर फाउन्टेन पेन बनवाने भा जिस्ता कागज कीने जात रहीं जा। द्वारिका चचा देख लीहें त पन्ना हलुआई के दोकान पर पूड़ी-तरकारी अउर चमचम भा सूचित के दोकान में कलिया-परौठा खिअवले बिना आवे न दीहें। देखते पुकरिहें "ए हो सूचित भाई ! नीमन दू-दू परचा, अउर एकदम लाल परौठा लड़िकन के ! दसे बजे के नू खइले होइहें स। भूख लागल होखी।"

सुभान चचा के देखते द्वारिका चचा पुकरलन: "का सुभान भाई ! का जेकरे-तेकरे देंह पर आपन फीता रख देत बानी ? ई रउआ हैसियत के सोभा देता ? अरे नापहीं के होखे त भरत भाई के सीना नापीं, बासठ इंची के।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुभान चचा कम ना रहन। बोललन: "हम नापब खाली सीने ना नू, रखवों नू नापे के पड़ी।"

द्वारिका चचा भला मौका छोड़स: 'अरे सुभान भाई, अब का गरदन नापब? कतना जानी रउआ जवानी के दिन में रउए नाम पर आपन गरदन अपने नाप लेले हाइयें।" सुभान चचा मुस्कुरा के रह गइलन।

बात द्वारिका चाचा सांचे कहले रहन। सुभान चचा सुबुक मिजाजे का रहा सुबुक देहों-धजा के आदमी रहन। लोग कहत रहे कि उनकर बरियात जब रामनगर पहुँचल रहे त गाँवभर के मेहरारू लोग नौशा देखे खातिर उनकर टमटम घंटा भर घेरले रह गइली। खैर, बिआह त उनकर बारह बरिस के उमिर में भइल रहे।

बिआह के बाद उनकर चचा बच्चू मियाँ अपना साथे उनका के कलकत्ता लेवा गइलन। बच्चू मियाँ रेल में फायरमैन रहन आ ओइसन डाक गाड़ी के इंजन पर रहत रहन जेकर ड्राइवर अँगरेज भा एंग्लो-इंडियन लोग होत रहे। उनके कौनो ड्राइवर का मदद से बच्चू मियाँ सुभान चचा के एगो टेलर मास्टर कने रखवा देलन जे बिलायत से सीख के आइल रहे। पांच बरिस तकरा संगत में सुभान चचा कारीगरी त सिखवे कइलन बोले-बतिआवे भी सीख गइलन अउर कभी-कभार दू-चार जुमला अंगरेजियो में खींच लेत रहन। कोलकाता पर ठीक चौक पर दुकान खोललन: "मोहम्मद सुभान एण्ड कम्पनी" आ रामगढ़िया के खेती-बारी अउर पुरान पुस्तौनी परचून के दूकान छोट भाई के जिम्मा दे देलन।

सुभान चचा के कारीगरी के लोग धीरे-धीरे लोहा मान लेलस। शहर के नामी-गिरामी लोग कने उनकर बुलाहट होखे लागल। सूट से लेके सेरवानी तक सुभान चचा हर कपड़ा काटे-सीये के माहिर रहन। चेचक से उनकर एक आँख खराब हो गइल अउर पत्थर के आँख लगावे के पड़ल तबो ना उनका कारीगरी में फरक आइल ना उनका चलती में। वकील-मुख्तार के हमरा इहाँ में आधा से अधिका लोग उनकर गहकी रहे। बाकिर सुभान चचा के मुहिबत दर्जिये के ना रहे। हमरे घरे बिआह-सादी, काज-परोज सबमें उनका से राय-बात होखे। बड़का बाबूजी से उमिर में छोट रहन ऐसे उहाँके उनका के सुभान बाबू कहत रहीं अउर बाबूजी से बड़ एसे बाबूजी सुभान भाई कहत रहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

महल्ला में कवनो काम से अइहें त सुभान चचा हमरा डेरा पर जरूर अइहें बड़का बाबूजी के पास बइठिहें। उनका के देखते बड़का बाबूजी पुछतन, "के बा हो ? सुभान बाबू अइलन, कुछुओ चाह-जलपान देख लोग।" कप-प्लेट, सीसा के गिलास घर में रहे जे कवहूँ हाकिम-हुक्काम भा अइसने लोग के खातिरदारी में निकलत रहे। सुभान चचा के चाह त साफ अँगौछा में लपेटल फुलहा गिलास में आवत रहे जइसना में घर के लोग चाह-पानी पियत रहे। साँझ के कहिओ आवस त चाह पीयत-पीयत शतरंजो पर बइठ जास। लट्टू, बाबू वकील अउर सुभान चचा के शतरंज के बाजी जहाँ बइठल तहाँ दुअढ़ाई घंटा खातिर दुअरा पर मेला लाग जाय।

सुभान चचा, भरत चचा अउर द्वारिका चचा के बतकही अभी जारी रहे अउर हमरा भइया के बिआह याद आवत रहे।

हल्दी-कलसा के दिन दुआर के सामने परती पर सभे बइठल रहे। सुभान चचा इनार के चउतरा पर पलथी लगा के केकरो से बतिआवत रहन। एतने में रघू आके कहलन कि बड़की मलकिनी ड्योढ़ी पर ठाढ़ बानीं। सुभान चचा लपकत पहुँचलन अउर बड़का केवाड़ी के लगे परदा के बाहर खड़ा हो गइलन। परदा के पीछे बड़की अम्मा खड़ा रहीं। परदा धइले दाई-माई उनकर बात सुभान चचा तक पहुँचावे खातिर।

सुभान चचा दाई-माई से कहलन : "गोपी के माई ! बड़की भौजी के हमार सलाम कहल जाय।" ओकरा बाद परदा के बावजूद बातचीत सोझा-सोझी होखे लागल। बड़की अम्मा पुछलीः 'आज त सभ मदनि लोग के बन्दोबस्त रहे। सभ चीज ठीक बनल रहे ?"

"सभ चीज सोअदगर", सुभान चचा कहे लगलन, "बचन भइया आलू-कटहर के दम अपने खड़ा होके बनववले रहीं। आ भौजी ! एह घर के काज परोज में कौनों कमी होखी ? जरूरे मुन्ना बाबू के कनिया लछनमान होइहें। तिलके के दिन नू भौजी के पोता भइल !"

बड़की अम्मा जैसे चिहूँकली "हँ ! एह भीड़ में हम मुबारक-बादीयो देबे के भुलाइल जात रहीं। पतोह-पोता ठीक बा नू ?"

"सब रउआ बड़ सरदार के दुआ-असीस", सुभान चचा कहलन अउर पूछलन "अबहीं का हुकुम बा ?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़की अम्मा बहुत सँकुचात-सँकुचात कहली : "काल परिछावन में त
दुलहिन ना आ सकिहैं। बाकिर लड़िका के परिछावन के दिन मतारिओ-
के नया साड़ी-चूड़ी के हक होला। चिन्ता में बानी कि कइसे पहुँची।
रघू रामगढ़िया वाला डेरा देखले बाड़न। उनका एह भीड़ में छुट्टिये
मिलत।"

बात काट के सुभान चचा कहलन: "त एकरा में सकुचाय के कवन बात
घर के बात ह। हम पहुँचा देब।"

बाये के बेरा बड़की अम्मा सुभान चचा के अपने हाथे साड़ी-चूड़ी,
सी-सेनुर के पाकिट देले रही।

गली जे मोड़ से सुभान चचा आगे बढ़लन। उ ओसारा पर चढ़त रहन
हमार करेजा ढोंढी पर सरकत रहे। सलाम के अबाव में कहलन "का बचउ
? कवन नौकरी करताड़ऽ कि आपनो बिआह में छुट्टी नइखे मिलत ? परसों
बा आ तू आज अइलऽ ह ?"

जीभ तक बुझाय कि तलुआ से सट गइल बा ! कवनो तरह सँभार के
रेडियो में छुट्टी कहाँ होला चचा। उहाँ बन्दी ना होखे।"

"खैर ! बइठऽ। "सुभान चचा कहलन "का-का सिआई ? अब त तोहरे
के मन से बनी। अचकन-साफा के त दिन गइल।" हमरा त बुझाय कि
चचा के कान्हा से लटकत फीता सरक के हमरा गरदन पर साँप लेखा
गइल आ हमार गरदन कस रहल बा ! बहुत सम्हार के अउर बहुत
कके एतने बोल सकलीं कि दोस्त लोग बाँकीपुर टेलर्स किहाँ सूट सिअवा
ह, कि सुभान चचा धम्म से चौकी पर बइठ गइलन अउर हमरा के एक
लगलन। एक आँख पत्थर के त रहले रहे, हमरा बुझाइल कि दुसरको
गइल बा। कवनो हरकत ना।

एतने में बाबूजी आ गइलीं। सुभान चचा के अइसन चुप्प बइठल अउर
हमरा के खड़ा देख पुछलीं : "काहे सुभान भाई, काहे अइसन बइठल
?" सुभान चचा पलट के बाबूजी का ओर देखलन आ अपना अँगौछा से
पोंछत कहलन "लड़िकाई के लँगोटी त सुभान सिअलन आ अब बचऊ के
के जोड़ा बाँकीपुर टेलर्स किहाँ सिआई !"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बाबूजी के बुझाइल कि देह में बिजली के करेंट मार देलस। तड़प के हमरा सामने आ गइलीं अउर पूछलीं "पटना में कपड़ा सिअवलऽ ह का?" सो मूड़ी झुकवले खड़ा रहलीं। सोचलीं कि बोलल अउर जंजाल हो जाई। सो जे होखे के बा से होखो।

तेइस बरिस के उमिर तक बाबूजी अतना जोर से हमरा से ना बोलल होखब। "बेहूदा काम कइले बाड़ऽ। तोहरा बुझाता, केतना बड़ा गलती कइले बाड़ऽ। तोहरा हिम्मत हो गइल? लड़िका नइखऽ। बूझे-समझे के चाहीं। कौन मौका पर का करे के चाहीं।"

एतना कह के ऊ सुभान चचा के ओर घूमलन "सुभान भाई। ... लीहीं। जवन बुझाय ऊ कपड़ा के नाप लीहीं। हम घटा भर में कपड़ा ... पर पहुँचा दे तानी। रउआ जे सीअब, बचऊहें पहिनिहें।" ई कहत बाबू सुभान चचा के हाथ धर के खड़ा क देहलीं।

× × ×

दुआरे बरियात लाग चुकल रहे। दुआर पूजा सुरू भइल त बैंड बाजा रोकवा देल गइल। दुनों ओर के पुरोहित लोग मंत्रोच्चार करत रहे। एतने आउर लोग के हटावत साफ मलमल के कुरता, दुपल्ली टोपी पेन्हले, गला बेली के माला डलले सुभान चचा मोटर के लगे सरकत आवत रहन। मड़वा का लड़ी के पीछे हमार आँख ऊ ना देख सकत रहन बाकिर हम देख सकत रहीं कि सुनहरा पाड़वाला अँगोछा से ऊ आपन आँख पोंछत रहन। एक दिन जवन पत्थरो के आँख हमरा के पानी-पानी क देले रहे। ओने पुरोहित जी केकरो अक्षत पर छींटे खातिर गंगाजल वाला लोटा माँगत रहीं। मन में बाइल कहीं कि सुभान चचा के गाल पर से पोंछ लिआय। एहू जल से पवित्र कौन ... होखी?

□ 7 एच. एफ-6/30 हाउसिंग कालोनी, बहादुरपुर, पटना 8000...

□

हाइकु

—(श्रीमती) अलका पाण्डे...

सुर के जोर
कविता कमजोर
लोग विभोर

अंग्रेजी खाद
भुलवा देले बाटे
असली स्वाद

मन माने
डगरत रहे
पहिया ...

न्यू एफ/11, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिसरका जानवर

—अवध बिहारी ओझा

कातिक के हरवाही से गधबेरि भइला तीन गो जीव लवटले। दिनभर करइल जोतला से थाकला के अलावा पैना के साटि से छनछनाइल आ जवानी के खुराफात के जनावे खातिर गरदन में बान्हल घंटी टुनटुनावत के मद से मातल दू गो बैल। पीछा-पीछा हर-जुआठ के बोझ से सिकुरल हरवाह। घंटी के टुनटुनाहट से गृहस्थ के दुआर पर उपस्थित सभ बघवगा के फुसफुसाए लगले—बैल अइलन सऽ-बैल अइलन सऽ। बिजुली से पानी, खरी फुलावल महुआ, दाना, भूसा, गवत तेयार होखे लागले। सवांग आगहूँ बढ़ि गइलें आ बैलन के सुहुरावत नाद पर ले अइले—वी. पी० अतिथि अइसन। सभ केहू सम काल छोड़ि के सेवा में लागि गइले बैल धनसुत होखऽसऽ। जबले वृषभ-सेवा से फुरसत मिलल तबले अन्हार भइल था तब जा के नजर परल धुरबीगना हरवाह पर जें कोना में सुटुकल बैठे पुछिहें तें का बइठल बाड़े रे? ई हरवाहीं से लवटल तिसरका जीव जीव पूछीं त पशु श्रेणी में भी बैल से भी नीचे स्थान पावेवाला तिसरका जीव ह- धुरबीगना हरवाह।

मालिक के प्रश्नोत्तर में धुरबीगना गते से मेमियाइल—बनि चाहीं। बुढ़ऊ मालिक डपटिहें -रोज रोज बनि दियाला। हफ्ता लेबे के सीखु। जो, दू बेरा के बेरि बा। ए घरी कुछु ना लेबे-देबे के। धुरबीगना घिघियात —घरे खरची नइखे—लइका दिनहीं से उपास होइहें सऽ। बुढ़ऊ मालिक आँखि गुड़ेरते रहन तबले धुरबीगना के घिघिअइला पर तरस खा के के अर्द्धशिक्षित पोता बाबा से बोलल—"दे ना दऽ—खाई ना त जांगर कइसे ठेठाई—पांड़े बाबा के बनिहार अइसन बी. डी. ओ. चलि जाई त बुझाई।" बुढ़ऊ मालिक खरवार फेंकि के गरजले—ला से के पूछल ह जे वकालत छाँटत बाड़ऽ। पढ़े में त पत साल फेले करे कर हमार बात काटे में पीआर दास बन जालऽ। चउवनिया मुसुकी काटत बकवो टुभुकल—"जा हम ना बोलब—हर जोतवला से मन नइखे भरत त ला के नस में छूँछी लगा के सिरिंज से दू बोतल खूने निकाल ल-कामे।" बुढ़ऊवे नरम परले—ए भाई, आजु कालु के पढ़ाई में इहे सिखावल जा का? खैर, मारऽ गोली। ए बड़कू, बुढ़ियो से बोल द बनि देबे के।"

लइका के तेल लगावत आ गोदीलवा के माँड़-भात खियावत बुढ़िया मालिक के कान में जब ई सनेस परल त अपना काम में बिना तनिको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विचलित भइले बरबरइली — 'मंर मटिलगवना ई कवन वेरा हे बनि देवे के।' आ ओहिजे से हाँक परली—ए असतुरनी, देखु त बनि वाला वखरा कुकुर कोना सान्ही में बा (ई ग्रामीण शास्वत सत्य ह कि बनि के वटखरा बोकरा के कहल जाला जवन वजन में कम होखे आ बनि देवे के अलावा ओकर कवनो दोसर उपयोग ना होखे)। अन्हारा में टकटोरत असतुरनी बनि वाला वटखरा खोज त लेलस बाकी घरी भर लगा के। तय मातृरूपा बुढ़िया मलिकाइन घुरबीगना के गमछी में बनि तौलि के बान्हि देली आ दुआर पर भेजि देली। घुरबीगना जानत रहे जे चाहे त एकरा में गहूम होई चाहे धान—बनावल आटा-चाउर ना। तदहूँ गेंठरी लेके अइसे अगराइल जइसे कवनो हूँड़ी मिल गइल होखे :

अतना देर में बैलन के सवाद वदले खातिर कइ बार चोकर चलौली में छिंटाइल - मलिकार लोग के नास्ता आइल-चाय के पीआली खनखनाइल बुढ़उ मलिकार के चिलम गरमाइल बाकी घुरबीगना के ओरि केहू दृष्टि ना कइल।

अवरू दिन लेखा घर के सभ बेकत बनि के अनाज छाँटे-पीसे में लग गइल। बाकी ओह सभ से चिन्तामुक्त घुरबीगना टूटही खटोला पर जे ओठंघल त तुरन्ते फोंय-फोंय नाक बजावे लागल। आधा राति खा जब खाना तेयार भइल त घुरबीगना व जगा के खियवलस आ घुरबीगना अन्न के खुमारी फेनु सुति गइल। भोरहरिया के मीठ नींद अभी जवानी पर रहे - सुकवा एन बाँस ना चढ़ल रहे—तीन डंड़ियवा लडकते रहे कि मझिला मालिक के आवाज कान में परल। अधे राति गये कपि नहीं आवा।" ऊ पुरुषपुंगव घुरबीगना दुआरि पर पहुँचते हंकड़ले - का रे सुतले रहवे—आजु छपरा वधार में जाई—जल्दी तेयार हो जो-कोस भर जाये के बा। घुरबीगना तड़ाक दे उठ जइसे रिंग मास्टर के हन्टर देखि के सरकस के बाघ के कँपकँपी ले लेला की कि घुरबीगना जानेला कि मझिला मालिक के पहलवानी वाला हाथ के चटकन से जे बाम उघरेला तऽ ऊ तीन दिन ले पपराला—छनछनाला।

ई कालचक्र घुरबीगना के जीवन चक्र हो गइल बा। एकर रोज के करम जिनिगी मुरुगा के बोले के पहिले सुरू हो जाला आ आधा राति के पारन कइ व्रत टूटेला बाकी ई तीसरका जानवर कबहीं—कतहीं—केहू से कवनो शिकायत ना करे काहे कि ई जानेला कि अब्बर जानवर के बरियार के खिलाफ बुदबुदाने के हक ना बने--इहे शास्वत सत्य ह। कवनो विधान चाहे संविधान बनो—मुखिया आम प्रधान बनो-एह तीसरका जानवर के उद्धार ना हो सके।

61, बार कौंसिल भवन, पटना-80000

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेलल अभुआइल

—आनन्द सन्धिदूत

मिरिजापुर में मोहन बरम के चउरा बा। नवरातर में ओहिजा मेला लगेला। मेला का लागेला समझल जाव कि ऊ पगलेटन के कुम्भ ह। देसादेसी खेलत-अभुआत मेहरारू ओहिजा पहुँचेलिन। सबकर आपन अलग-अलग कंसेप्ट होला। केहू के कोंख मराछ रहेले त केहू का कोंखि पर ओकर मरदवे बइठा दिहल गइल रहेले। केहू के डहर-डाँड़ के चुरइल-भूत धइले रहला त केहू के बरवे के बामत-हड़कोस एतना तंग कइले रहेला कि दिन भर मन में गोंइठा के आग बरसेले आ रात भर जांघ के कोंचना। कहे के माने ई बइगो अदिमी तइगो भूत भाँवर !

मोहन बरम किहें के एगो अलगे दुनियाँ बा। एह बेबस्था के आपन इजलास बा। एकर आपन जज-बलिस्टर आ पेशकार बाड़न। एहिजा पांचमिनट पर गोहार लगावल जात बा, पुकार आ पेशी होत बा। एहिजा के बतिआवत सब मिली बाकिर के केकरा से बतिआवत बा ई पता चली। बरम बाबा का चउरिया का बगले में एगो कुण्ड बा जवना में चउर के चढ़ावल पानी आ दूध बहि के बटुरात रहेला। ओह कनई में पचासन मेहरारू सूअर अइसन हपटि-हपटि के खेलत मिलिहें जेमे केहू के चीन्हल बा। कठिन सब एँड़ी-मूँड़ी तक कनई-चहटा में लसराइल, अकबक बकत मुंह खोललें नाना प्रकार का भाव भगिमा में नंग-धड़ंग निउर-निहचिन्त !

जे कुण्ड में ना नहात मिली ऊ कवनो फेंड़ का तरे चाहे कवनो पत्थर पटिया पर बइठल टिभुक-टिभुक के रोवत आ अभुआत मिली। जे त अइसनो मेहरारू मिलिहें जे अभी जीप-कार से नीचे उतरलहूँ ना रहें कि खेले सुरूम कइ दीहें। देखे वाला अदिमी अवाक् हो जाई कि तनिके पहिले जे एकदम सामान्य रहल ह ओकरा का हो गइल। ओहिजा खेलावे वाला बोझइतो बाड़न। ई लोग सबसे पहिले खेलनिहार के झोंटा खोल देला। ओकरा बाद जिरह-बहस आ निर्णय के अधिवेशन आरम्भ होला जवन के पूरा देखल तबे जा सकेला जब मजबूरी हो नाहीं त जेकरा अभ्यास होई ऊ चाहे जेतना पोढ़ मन के आ स्वस्थ संस्कार के होखे ओह पगलेटहिन के बीच बिना डगमगइले ना रह सके। एगो अजीब दहशत के हुकूमत ओहिजा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मिली जहाँ खड़ा भइल मुश्किल बा। सबसे खास बात त ई बा कि ओहिजा जे भी समस्याग्रस्त बा ऊ मेहरारुये बा कवनो कोमल मन के किशोर चाहे नौजवान भले ओहिजा मानस विकार में लउक जासु नाहीं त झार के झार मेहरारुये लउकिहन आ सबकर उमिर सतरह-अठारह साल से लेके चालिस बरिस का भीतर।

मनोविज्ञान का दुनियाँ में ईहो उन्माहे ह। एह उन्माह में जेतना सेक्स के हाथ बा ओह से ढेर परिवार के रीति-रिवाज आ अन्तरपरिवरिही-बेवस्था के हाथ बा। अक्सर देखे में आवेला कि एक परिवार से दूसरा परिवार में विवाह आदि का कारन स्थान्तरिआवे वाली लइकी अगर सांस्कृतिआइल हीन भावना के अनुभव करे लीसनि त उ खेले-अभुआये लागेली स। एह मानस कुंठा की अकबक बकल से लेके बेहोशी तक कुछऊ हो सकेला आ बाहरी लक्षण का रूप में पलक के चिपकल भी। अगर रोग के मिलान कइल जाय त कई गो तथ्य सामने आई—

१. एह में अधिकाह मेहरारू अशिक्षित, गँवार आ संस्कारहीन मिलि जेकरा में गरीबियो रही।

२. परिवार या त संयुक्त बेवस्था के रही या पति से वार्तालाप सम्पर्क बाहर रहले टूटल रही चाहे खुद पति एतना भीरु आ सीधा होई जब पत्नी के सलाह आ संरक्षण देबे में असमर्थ होई।

३. अपना मन का हीन भावना के वाजूबेर मेहरारू मतहाव गंरह के बखूबी छिपा लेलीसनि जवन कालान्तर में उहनी के अपना गिरेह अदरावन त देबे करेला चढ़ावन का रूप में नीक आमदनियों के साधन बन देला।

एह तरे ई नारी समस्या के एगो अंग बा जवना का निदान खातिर बा पोस्ता इन्तजाम बा। एह इन्तजाम में अइसन अनेकन जूता सीये वाला हो जुआठ बनावे वाला अदिमी के नियोजन भइल बा जे ओझइती का बल पर बा आदर पवले बा।

एहर हाल का बरिसन में त शिक्षितो अदिमिन में जादू-टोना, गंडा तावीज आ तंत्र-मंत्र का पराशक्ति में बहुत रुझान बढ़ल बा जवन आ बढ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रिका जादू-टोना आ तंत्र मंत्र विशेषांक निकाल के सामान्य जनता का के भंजा रहल बाड़ी स। असल में जब समाज का कर्मठपन पर प्रथा के कायर प्रवृत्ति जन्म लेले त समाज बहुत भाग्यवादी वाला आ अपना असफलता के संघर्ष से जीते का बजाय रत्न-, गंडा-तावीज के पहिनल आ विभिन्न प्रकार का तंत्र-पूजा से जीते के करेला जवना में ओकर आमदनी मदद देले। आज आफिसन में देखल त सायदे कवनो अइसन अफसर चाहे बाबू-चपरासी मिली जेकरा बाँह में, में चाहे डाँढ़ में कवनो पुड़िया का बराबर के मोटरी-गठरी लाल चाहे तागा में न झूलत होखे। ई प्रथाचार ओह अन्ध-विश्वास-विरोधी प्रथा- का बाद फेरु से आइल ह जवन उन्नीसवीं सदी का अन्त में आ बीसवीं का आरम्भ में सन्त आ समाज-सुधारक मन का महापुरुषन का संगे रहे आ ई सिखा के गइल कि ई फालतू चेष्टा ह आ जवना का सलाह कुछ दिन खातिर मन भिड़िकलो रहे। हमनी का अन्धविश्वास के गँवारूपन रहलीं जा। लेकिन भौतिक दउड़किया में ई कुल भोर पड़ गइल, गइल।

भौतिक ललक में अझुराइल अदिमी के ई जल्दी समझवले समझ में ना कि बिना गंडा-तावीज के सहारा लिहले खाली अपनो हाथ-गोड़ का बल जीवन पथ पर चलल जा सकेला अगर सत्य आ प्रेम पर विश्वास होखे। कि जे सत्य आ प्रेम पर विश्वास राखी ऊ अपना से पहिले आन के सुख- के ख्याल राखी। अइसना अदिमी के भूत-प्रेत के के कहो एक बेर देख के नतमस्तक होइहें। गंडा-तावीज के त सवाले ना रही।

बाकिर सब त अइसन ना हो सके। मनुष्य अगर सामान्य बा त ऊ का बाद डेरवावहूँ के कोशिश करी। हिन्दू धरम में जरूर लिखल बा साँप बानर माछी आ गदहा के पुत्रवत् प्रेम देबे के चाहीं बाकिर पढ़ला का बाद नाक पर माछी अगर बइठ जाय त बिना हँकले हाथ ना रही। में रहले आ परिवार बेवस्था में रुचि रखले शरीर के हरेक ऊर्जा धन चिन्तन करेलीसनि जवन कवनो साधन सूत्र का ना भेंटइला पर के खजाना आ अलादीन का चिराग के कामना करत पराशक्ति का में फँसल रहेलीसनि। अइसना काम में अझुरा फे कवनो शिक्षित बेमार त भले मनोचिकित्सक से मिलो आ ध्यान धारणा के अर्थ समझ के कुम्मक करो बाकिर आम जनता का पास अभी आजुओ सिवाय ओझा-गुनी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आँख से आपन समस्या देखे के आ सूअर छौना मुरगा जाउर बतासा छोड़ब
कपूर से मन मनसायन करे के अलावे अउर कौनो चारा नइखे।

साँच पूछीं त भूत-प्रेत चुरइल-डाइन के सृजन मानव सभ्यता के बड़े
मनगर उपलब्धि ह। अगर ई ना रहल रहित त गरीब आ असहाय समाज आज
से हजार साल पहिले बिना मरले मर गइल रहित। काहें कि साधन सम्प
का सामने अपना असफलता से मुँह मोड़े के अउर कवनो उपाय सर्वहरा के
का सामने ना रहल ह। ईहे कारन बा कि खाली हिन्दुए धर्म नाहीं कवनो
अइसन धर्म नइखे जबना धर्म में ओझा-गुनी, टोना-टोटका, सगुन-असगुन
पराशक्ति का चमत्कार के सृजन न होखे। एह लाइन में अन्तर धर्म सम्भव
बा। हिन्दू, मुसलमान के फूँकल पानी पी सकत बा आ मुसलमान, ईसाई
सलाह मान सकत बा। कहल त इहाँ तक जाला कि हजरत मुहम्मद साहेब को
बोखार का द्वारा शैतान से सतावल गइलन त एगो ईसाई ओझइत से उन
देखावल गइल।

एह कुल का ऊपर साँच ई बा कि भूत आपन अतीत ह। जवन
चुकल बा उहे भूत ह। हमके हमार आपन अतीतिये भूत बन के डेरवा
रहेले। उदाहरण में अगर हम निरपराध तपस्वी के हत्या कइलीं त आत्मा प
में लथरा के एतना डँहकलि कि हम चउरा बान्ह के पूजे लगलीं। भला
बोललें, चोरी कइले, छिनैती कइले आ केहू का विश्वास के धोखा दिहले
चैन मिल सकेला। जे आलसी बा, मानस पाप में लीन बा, आन का सोन
आ सम्पत्ति पर ललकल बा ऊ कुछ ना पा सके सिवाय करेजा में एक
जलन के जवन कबे अदकल मानस में कोंख मराछ करी आ कबे अपने
के अँगार अपने आँगन में फेंक के हल्ला करी कि आग बरसत बा।

कुछ समस्या अइसनो बाड़ी सनि जवना के जवाब नइखे। अइसहीं
अपना के लोक बेवहार में बहुत चतुर-चल्हाँक मानेला ऊहो समाज का
से फेंकल हरेक सवाल के त जवाब दे ना सके। अइसना में बिना उत्तर
सवाल अगर ईश्वर के भरोसा नइखे चाहे आपन संगी-साथी के बेवहार कम
बा त बड़ा चभकेला। ई मानसिक असर त डलबे करी, जे समझदार बा ओह
लकवा आ हृदय रोग जइसन मानस रोग के चपेट में ले सकेला। एह से अहं
फेंक विनम्र होके मुस्कराव जइसे प्रकृति जिआवे जी लिहला में कल्याण बा।

☐ इलाहाबाद बैंक, मुख्य शाखा, मीरजापुर, उ०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी काव्य में राष्ट्रीय भावना

—श्रीराम सिंह 'उदय'

संस्कृत हिन्दी आ क्षेत्रीय भषन के काव्यन नियर भोजपुरी काव्य में भी ना गौरवशाली राष्ट्र के—स्वर्ग से बढ़िके देश के—महिमा-गरिमा से भरल भूमि के भव्य आ प्रेरक चित्रन भइल बा। भोजपुरी काव्य त अपना आग, प्रवाह, लालित्य, गेयत्व, मारमिकता आ कल्पना-वैभव के माने में बेजोड़ ले बा। एह सन्दर्भ में भोजपुरी-काव्य में राष्ट्र भा मातृभूमि के जेवन रव-गरिमा के तसवीर उरेहल बा, ऊ अनुपम बा, मोहक बा, जगमग बा।

राष्ट्र के केहू कवि पिता, केहू माता, केहू दुर्गा-लक्ष्मी-सरस्वती-अन्नपूर्ना, सीधे-सीधे राष्ट्र भा देश के रूप में, केहू मानवता के रक्षक के रूप में आ केहू री रूप में कल्पना कइले बा आ ओही अनुरूप काव्य रचना कइले बा, चित्र हले बा। गुन गवले बा। राष्ट्र के रूप विराट होला आ ओकरा बारे में ह-तरह के भावना उठेले। मगर राष्ट्र के सबसे बड़हन गुन ह अखण्डता, लता में एकता, भाईचारा, जन-जन के मन में समर्पित सेवा-भावना, अटूट ाथ निष्ठा। एह ओर भोजपुरी के सजग आ राष्ट्र-भक्त कवि लोगन के तान पहिले से ही बा, आगे भी रही।

अपना देश या मातृभूमि के गुन-गान पराधीनता-काल में भी, तोपन के ाने छाती तान के, निडरता के साथे, कवि लोग करत रहले। सन १९१२ ई० भी रघुवीर नारायण के 'बटोहिया' गीत देश में सगरे गूंजत हलचल वले रहे। एह गीत में अखण्ड भारत के आत्मा त हंसते-बोलति बा, साथ ही में भारतीय संस्कृति के प्रखर रूप के भी जगमगाइट बा। ई गीत अपना समय अंग्रेजी हुकूमत के डोला-कंपा देले रहे आ जन-जन में चेतना के संचार क ले रहे। गीत के किछु अंश के रसास्वादन करीं—

'सुन्दर सुभूमि भइया, भारत के देसवा, से
मोरे प्रान बसे हिमखोह रे बटोहिया !
एक द्वार घेरे रामा, हिम कोतवाला से,
तीन द्वार सिन्धु घहरावे रे बटोहिया !
गंगा रे जमुनवा के झगमग पनिया से,
सरजू झमकि लहरावे रे बटोहिया !

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ब्रह्मपुत्र, पंचनद घहरत निसदिन,
सोनभद्र मीठे स्वर गावे रे बटोहिया !
नानक, कबीर दास, शंकर-श्रीरामकृष्ण
अलख के गतिया बतावे रे बटोहिया !
विद्यापति कालिदास, सूर-जयदेव कवि,
तुलसी के सरल कहानी रे बटोहिया !

श्री रघुवीर नारायण के ही दोसर गीत 'मोर जननी' भी हवे ! एह गी
में मातृभूमि के महिमा के बखान कवि बहुते हुलासि के कइले बाड़न—

'सुनसान अगम सघन वन गिरिवर,
आनन्द के उड़त निशानी मोरी जननी !
गेहू-धान जामे रामा, सरसों विपिन फूले,
सुख फूले मड़ई-पलानी मोर जननी !

सन् १९२१ ई० के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित होके देश-भ
श्री मनोरंजन प्रसाद सिन्हा बटोहिया गीत के तर्ज आ लय पर 'फिरंगिया'
गीत के रचले, जेकरा के ऊ खुदे सभा-जलसन में गाइ के सुनावसु। एह गी
से गोराशाही के नींद हराम हो गइल रहे। एह गीत पर ओह घरी रोक भी
लगल रहे। गीत सुनके लोग जहां अंग्रेजन के लूट-खसोट, धांधली, अनीति
खीसि से तमतमा जासु, उहां देश के दुरदशा आ बदहाली पर लोर भी बहु
लागसु, गीत के कि छु अंश देख लीं—

सुन्दर सुघर भूमि भारत के रहे रामा,
आजु उहे भइल मसान रे फिरंगिया !
अन्न धन जन-बल, बुद्धि सब नाश भइल,
कवनो के ना रहल निशान रे फिरंगिया।

श्री लक्ष्मण त्रिपाठी प्रवासी, अपना 'वन्देमातरम्, गीत में श्री बंकिमच
चटर्जी के राष्ट्रीय गीत 'वन्देमातरम्' के भाव-प्रवाह के अपना के बड़ी लट
उछाह आ गर्व के साथे, मातृभूमि के वैभव, प्रताप आ लोक-हितकारी गुवन
जस बखनले बाड़न। साथे-साथे अपना जोशीला स्वर में भारतमाता के आस्था
आ बोध भी देले बाड़न—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सरग से ऊँच माता भारत के भुइयां से
तोरा कोरा पलेला पियार, वन्दे मातरम् ।
तोरे रस-पनिया में सजेले गतरिया से,
जनमेला सुघर विचार वन्दे मातरम् ।
सोना चानी बाटे रामा,-तोरा धूरा मटिया में
हीरा-मोती होखेला अंजोर वन्देमातरम् ।
नाहीं हम हईं रामा, बकरी-पठरुआ से,
लेइ भागी चोरवा सियार, वन्देमातरम् ।
हम हईं तोर माता, पूतवा-सपूतवा से,
हम हईं शेर बरियार, वन्दे मातरम् ।
तोरे हवे सीख माता शान्ति उपकरवा के
मनवा में राखीले सम्हार, वन्दे मातरम्
बाकी केहू अंगुरी देखावे वदनेतिया से,
तब हम बघवा-हुँड़ार, वन्दे मातरम् ।

भोजपुरी रत्न श्री राम विचार पाण्डेय अपना मशहूर गीत 'भारत हमार' भारत के अतीत के महानता, संवसार के मार्ग-दर्शन कइल, सभ्यता के तावल-ओसेरह कामन के चरचा चलाइ के, इहो बतवले वाड़न कि एह भारत देश के शोभा, पावनता, सरलता पर लोभाय के आ आह्लादित होइ निराकार परमात्मा साकार रूप में बार-बार अवतार लेवे खातिर बेवस हो । पापियन के निनास कइके सुधर्म, परेम, समता, निर्भयता आ न्याय के ज्योति पसार देले । गीत के किछु अंश से ई सभ उजागर हो वा…

'धरती माता के आंगन में
बन बीहड़ घन झंखाड़ रहल,
ऊबड़-खांबड़, गड़हा गुड़ही
दह-नारा, नदी, पहाड़ रहल,
ओकरा के सुघर बनावल के ?
भारत हमार, भारत हमार ?

पसरल चारू ओर जाह रहल,
लउकत ना केनियो राह रहल,
मानब जीवन अंउजाह रहल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

तब ज्योति अखंड जगावल के ?
भारत हमार, भारत हमार ?

वन वन वनचर घूमत रहलन
कतहूं ना गांव-गिरांव रहल।
मानवता रोवति रहलि बइठि,
ना अन्न-वस्त्र के नांव रहल,
तब 'वेद' के गान सुनावल के ?
भारत हमार, भारत हमार।
तब धाट सुहेल बनावल के ?
भारत हमार, भारत हमार।

जब-जब पपियन के पाप बढ़ल
धरती पर जब-जब भार भइल,
पाताल लोक कांपल जब-जब,
जब देवलोक के हार भइल,
समनी के दउरि बचावल के ?
भारत हमार, भारत हमार।
धरती के सरग बनावल के ?
भारत हमार, भारत हमार।

हिन्दी-भोजपुरी के यशस्वी वयोवृद्ध कवि श्री प्रभुनाथ मिश्र (बलिया) के गीत 'हमार' देशवा' से त जइसे अमरित के सागरे लहरा उठल बा। देखीं एह गीत में अपना भारत देश के सौन्दर्य, उल्लास, रमणीयता आ प्रकृति रानी के उछाह आ वैभव। देखीं अपना भारत देश के महमहात-जगमगात मनमोहनी सुरम्य झांकी —

नन्दन वनवा से चलेला पवनवा,
हमरा देशवा में।
सिहिकेला सीतला बयार,
हमरा देशवा में।
धरती ओढ़ेले सतरंगिया चदरिया,
हमरा देशवा में।
मटिया के जोति उजियार,
हमरा देशवा में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोहिनी भुरलिया बजावेले कोइलिया,
हमरा देशवा में ।
पपिहा करेला पिहिकार,
हमरा देशवा में ।

भोजपुरी के चर्चित कवि परमहंस पाठक अपना गीत में भारत के अतीत गौरव आ वैभव के याद एह रूप में कर रहल बाड़न—

अमरित बहे नदी-नारन में,
डोले मन्द बयारी,
कामधेनु कुल्हि गइया रहली,
कुन्ती अस महतारी
एइजा दूधवो के सगरा बहत रहले ।
हमरा देशवा में देउता रहत रहले ।

श्री गोवर्धन सिंह 'गोरक्षहरि' अपना महान भारत के कीरति-गान में उमंगित आ हुलसित होके गवले बाड़न—

गंगा रे जमुनवा के ऊँची अररिया हो,
सरग झलके ।
जहां अन-धन सोनवा हो,
सरग झलके ।
मोर भारत महानवा हो, करेज हुलसे ।

प्रख्यात रस-सिद्ध कवि श्री अनिरुद्ध माता, मातृभूमि आ मातृभाषा तीनू के एक ही समान मंगल आ बढ़ंती चाहत बाड़न, काहें कि ई तीनू जोगरा के पूरक बा—

जय माता । जय मातृभूमि ।
जय, जय भाषा महतारी ।
तीनू उन्नति-सिखर बिराजे,
इहे लालसा भारी ।

शब्द-कल्पना-शिल्पी आ परम देश-भक्त 'श्री रमेशचन्द्र झा के प्रसिद्ध गीत 'हमरा बलिदान के' पढ़ि-सुनि के चित्त गदगदा उठत बा । कवि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

एह गीत में देश के बारे में अपना बलिदानी भावना के, देश के महानता के आ निरालापन के दरसा के, आपन अगाध आस्था, अजेय संकल्प के उद्घोषणा कइले बाड़न, जेवना में राष्ट्रीयता के वियापक रूप में जय-घोष चहरा रहल बा—

हिन्दुस्तान जनम धरती,
हम वासी हिन्दुस्तान के
आसमान पर लहरत बा
झंडा हमरा बलिदान के

खेतन में सीता उपजेली
जहाँ जनक के देस में
लोग जहाँ सोना जइसन
गौतम-गाँधी के भेस में
आपन कीमत बा हमनी के
चरचा देस-विदेस में,

आपन सभ केछ खोके हम
बारब दियना निरमान के।
आसमान पर.....।

भोजपुरी काव्य के सशक्त हस्ताक्षर श्री जगन्नाथ त भारत के घहरल गूंजत जय-जयकारन में एकता के अटूट परम्परा निरेखि के फूले नइखन समात—

जय भारत के गूंज रहल बा
सगरे जय-जयकार।
तन-मन सबके एक आजु,
सब के एके बा प्रान।

श्री 'अड़भंग' बलियावी एही बातन, प्रसंगन के तनी अउरी विस्तार से आ साफ-साफ पर गटक के बता रहल बाड़न, जेवना में 'पंचशील' के प्रणेता भारत के आन-बान के, गद्दारन के संहार करे के आ भारत के राष्ट्रीय भावना के हुंकार बा, जय-नाद बा—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत राष्ट्र महान जगत में,
एकर तेज निराला बा।
'पंचशील' के बांट रहल ई
सभ के अमरित-प्याला बा।
अलग भेस, भाषा, बोली बा
गुँथल एकता-माला बा।
हम सम भारतवासी हईं,
फइलल प्रेम-उजाला बा।

जे गद्दार-भेदिया बाड़न,
उन्हकर मउवत आइल बा।
उग्रवादियन-हत्यारन के।
अतकाल निगिचाइल बा।

राष्ट्र-पताका शान-मान से
हरदम ई फहरात रही
भारत के जस दुनिया गाई,
सगरे जय घहरात रही।

लोक-धुनन पर, सामयिकता के सुर आ लय के मनोहर रंग-चढ़ा के, आ सुघरता से ओतप्रोत कर के भोजपुरी काव्य के संवारे-गुंजावे जीवन्त बनावे में माहिर श्री श्याम सुन्दर ओझा 'मंजुल' त आजु भारत रूप-रंग आ बढ़न्ती निहार के एतुना अगरा गइल बाड़न कि ई तराना मुँह से निकल के लहरा रहल बा—

सोने के साड़ी में चमचम चमकल
आशा के झलके निशान।
विहंसलि बा धरती, गगन अगराइल,
नवजुग के आइल बिहान।

एह तरे आजु के भोजपुरी काव्य में अपना देश के—मातृभूमि के—अपना प्रेम भावना के बहुते वियापक, जोरदार, ज्वलन्त-जीवन्त आ उदात्त चित्रन बा। राष्ट्रीयता-परक कविता भा गीतन के कमी नइखे। संकलन-संपादन के जरूरी बा। भोजपुरी काव्य के हर एक पक्ष या अंग पर विवेचनात्मक लिखात रहे के चाहीं।

□ बांसडीह, बलिया (उ० प्र०) 277202

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

पुस्तक-समीक्षा

भोजपुरी के एगो जबरदस्त रचना खोलक दास के खुलल चिट्ठा

—मधुकर सिंह

"पुस्तक : खोलक दास के खुलल चिट्ठा (भोजपुरी व्यंग्य) : लेखक : विजयानन्द तिवारी प्रकाशक जरगन प्रकाशन, स्टेशन रोड, कोइरपुर बक्सर (बिहार)

भोजपुरी में व्यंग्य-स्तंभ लिखे के लमहर परम्परा रहल बा। चतुरी चाचा, भैया जी बनारसी नियर दमगर स्तंभकारन के स्मृति आजो जेहन में जिन्दा बा। ओही सचेत परम्परा में 'खोलकदास के खुलल चिट्ठा' एगो जबरदस्त भोजपुरी के व्यंग्य संकलन बा। विजयानन्द तिवारी के ई रचना कवनो जमाना में 'दिनमान' हिन्दी साप्ताहिक में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के लोकप्रिय स्तंभ 'चरचा ओर चर्खे' के स्मृति ताजा कर देता। 'खोलकदास के खुलल चिट्ठा' प्रमाणित कर देता कि विजयानन्द तिवारी का लगे सामाजिक-राजनीतिक आ ओकर बदल रहल यथार्थ पर जबरदस्त पकड़ आ समझ बा—लेखकीय दिशा और दृष्टि बा। सर्वेश्वर और हरिशंकर परसाई के पैनापन बा। भोजपुरी में साइते अइसन बेजोड़ आ सामयिक चेतना और चिन्ता से लैस कवनो व्यंग्य भा स्तंभ हमरा नजर से गुजरल होखे। भोजपुरी के दुरभाग बा जे अभी ले नयापन के नाम पर देसी-विदेसी बा सी रचनन के नकले चल रहल बा—ओइसन नकल जवना के समकालीन चिन्ता से कउड़ियो बरोबर सरोकर नइखे। एही ओहा—पोह में 'खोलकदास के खुलल चिट्ठा' भोजपुरी से लगाव जगावे वाला एगो सार्थक प्रयास का रूप में सामने आइल बा।

खोलक दास का लगे व्यापक दृष्टि बा—खाड़ी, काश्मीर आ चुनाव के राजनीतिक-सामजिक प्रभाव से लेखक अछूता नइखे। 'बकलम खुद, 'सम्पादक के नांवे चिट्ठी', 'करिया कोट में खोलकदास, 'टी०एन० शेषन से भिड़न्त, 'खाड़ी से खोलकदास' आ 'कुकुर का खोज में अपहरन' जइसन रचनन के कवनो भारतीय भाषा के मिलान खातिर सीना तान के रखल जा (सकेला.....।

खोलक दास के व्यंग के धार तेज त बड़ले बा, ओकरा मे विविधतो बा। कबहूं त ऊ छाँय-छाँय लागत बा। कबहूं खंइक गड़ला अस बिसबिसात बा, कबहूं गतरे-गतर में पिड़ुरी चढ़ा देत बा, त कबहूं मन के गदगुदाइयो देत बा।

विजयानन्द तिवारी एगो समर्थ पत्रकारो बानीं। भोजपुरी में अइसन त बरोबरे पत्र-पत्रिका निकल रहल बाड़ी स। बाकिर हमरा ई कहे में तनिको संकोच नइखे कि विजयानन्द तिवारी के 'जगरम' के एगो अलगे पहचान बा। ईमानदारी से कहेके पड़ी कि 'जगरम' के लीक कबीर के लीक लेखा अलग-अलग पहचान राखता। आज जहाँ वैचारिक राजनीति के दिशा तलाश बा, उहें साहित्य में समय के धारा के सही-सही अंकन चित्रण जोखिम से भरल रहता बा। एह अर्थ में विजयानन्द तिवारी बधाई के पात्र बानीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत

—डा० अशोक द्विवेदी

दुअरा लवटलें बलमु मोर
धुरिया नहाइल हो
रामा बिहिटी लपेटला क माख
रएन-दिन सालेला हो !

लुगवा जो रहितें बदलि लेतीं
चोलिया फराइ देतीं हो
बाकि बिधना क लिखल ल करिया
मेटवले ना मेटेला हो !

लरिका मलछि रहि जालें
त मन मछियाइ जाला हो
रामा जिनिगी के ऊसर खेत
कि बियवो ना बहुरेला हो !

काल्हु हम सपना में देखलीं
अजब एगो अजगुत हो
रामा सोनवाँ के बलिया से
खेतवा, झपर झप लहरेला हो ।

सपना टुटल हम देखलीं
सजन मुख चमकत हो
रामा करिया रएनियाँ के चीरि—
सुरुज नभ फूटेला हो !

□ 47 टैगोर नगर, सिविल लाइन्स; बलिया 277001 (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

गीत

—(सुश्री) अनीता सोनपरी

आवेलें जब-जब चकोर मोरे अँगना।
नाचै ठुमुकि मन मोर मोरे अँगना ॥

सुधि-बुधि खो जाला, मन सकुचाला,
अल्हरै उमिया 'सरम' बनि जाला।

उतरै चननियाँ के भोर मोरे अँगना।
नाचै ठुमुकि मन मोर— — — —

धधकत अगिनियाँ लवर लिए थाती,
नयनन से निकरि-निकरि लिख जाली पाती,

बाँचै उमगि चित चोर मोरे अँगना।
नाचै ठुमुकि मन मोर — — — — ॥

दरद बँसुरिया बजाय मन मोही
लोगै न फिर कत्तों जाय निर्मोही,

चुप्पी में भी भारी शोर मोरे अंगना।
नाचै ठुमुकि मन मोर — — — — ॥

पलना झूलै मन रसे-रसे गावै,
परग-परग सरधा से शीश झुकावै,

युग पुग से इहै हथजोड़ मोरे अंगना।
नाचै ठुमुकि मन मोर— — — —

□ शाहगंज, सोनभद्र (उ० प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमार नेहिया

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

प्रीत के पखेरू
गगनवा में पंवरे,
ठोर चूमे सुगवा
सुगिनियां का जवरे,
स्नेह के सरोवर में
अमरित घोराइल।

मोठ रे अगिनिया से
तन कसमसाला,
अजब निसा छवलस
पियास ना बुताला,
कस्तूरा-गंध से
सिवान गमगमाइल।

हमार नेहिया
देहिया में गदराइल।

☐ पोस्ट बॉक्स ११५, पटना—१

हमार नेहिया
देहिया में गदराइल !

महुआ के फूल नियर
रतवा कोंचाइल
रतना में सुग्गा पखी
रतवा घोराइल,
मन में पिरितिया
भाव अंखुआइल।

फल सनसनाला
अंग गनगनाला,
फल बयरिया में
मन मलसाला,
उमड़ले नदिया
पूर बउराइल !

घरी छने आवेले बिजुरिया

—बलभद्र

घरी छने आवेले विजुरिया त धनि मन मोद भरे हो
रामा गोदिया के छउके बालकवा छउकी भुंइया पग धरे हो।
एक पग धइलें दोसर पग धरहूँ ना पावेलें हो
रामा बिजुरी परइली नइहरवा त सगरो अन्हार घेरे हो।
चिहुँकी जे रोवेला बालकवा त काहे बाबू लोर ढरे हो।
रामा गँउवा करमवा के छोट त कहिया जे दिन फिरे हो।

बिजुरी जे बबुआ के बाबू देखे लपकी सिवान चले हो।
रामा अँखियन उमड़े सपनवा त मुँह उजियार भइलें हो।
पनिया जे पहुँचेला खेतवा पहुँचियो ना पावेला हो।
रामा जम्ह जे छुअलस बिजुरिया त कइसे के नइया चले हो।
आरी-ओरी बबुआ के बाबू त काहे माथे हाथ धरे हो
रामा जाँगर फुलेला तोहरे हाथ त गँउवा गोहार करे हो।

☐ 61, ए० बी० होस्टल, कमच्छा, वाराणसी —10

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

हाइकु

—चतुर्भुज मिश्र

धरती पर
जात पात धरम
आदमी कहाँ ?

×

सूरज कबो
जीवन बढ़ावस
घटावतारे

×

बिदेशी कबो
आइल रहे इहवाँ
फर आवता

×

माघ के धुंध
थर भरात देह
गरमी कब

×

पितराइल
पिरीत पर लोग
ठगात जाता

संगीत अब
हाय हाय छूप हो
प्रान से दूर

×

गाँव भाव के
पहचान भइल
बारूदी गंध

×

अब लइका
लइकाई ना जाने
बीसवीं सदी

×

नेह खेत में
इ काथी बोवऽतानी
काटे के बा

सम्पादक, 'हाल-चाल', देलिया

हाइकु

—प्राध्यापक अचल

खेलि रे खेलि !
अधरम क खेलि,
का चली खेलि ।

×

खेलऽ तूँ खेलऽ
हमके जनि ठलऽ
अरे ! न रेलऽ ।

×

पीके तूँ भाँगि
रून्हत बाड़ऽ झाँगि
इहे ह गाँगि ?

बोआत काँटा
मारि मारि के चाँटा
का कहीं घाटा ?

×

ना चली देस
सभत्तर भदेस
हंसी बिदेस ।

तिवारीपुर, मुहम्मदाबाद, गाजीपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंदाज आपन-आपन

—प्रस्तुति : जगनाथ

घूम के राह आ गइल उहईं
फेर से ठाँव पा गइल उहईं

—विश्वरंजन

ओनचि देले फिकिर जेकर माथा
रेखि भिनते अंधेड़ हो जाला

— 'अँजोर' गाजीपुरी

देवता जानि पूजत रहीं रात-दिन
कइसे उल्टा उहाँ के नजर हो गइल

—रामजी पाण्डेय 'अकेला'

ई अबहीं ले जाने ना पवलीं 'विमल' हम
कि काहें केहू हमसे रूसल-फुलल बा

—रामरक्षा मिश्र 'विमल'

हमरा गुमान मान काथी के
अपना चीलर कि उनुका हाथी के

—प्रकाश उदय

रउआ हँस दीं त भोर हो जाई
सगरो अँगना अँजोर हो जाई

—शिव प्रसाद किरण

बात उनकर कहीं उघर जाला
आँखि से लोर तब टघर जाला

—कुमार विरल

सपना में आके रोज सतावल गुनाह बा
सूतल दरद के नींद उड़ावल गुनाह बा

—अजय भोजपुरी

सबेरे उठ के रजा नित चलऽ तूँ बहरी ओर
पियऽ के पानी बा खाये के हो हवा सुन्दर

—तेग अली 'तेग'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

R.N.I. Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. PT.—428/90
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका : जनवरी, १९९६

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

पन्द्रहवाँ अधिवेशन

गाजीपुर शहर में ६-७ अप्रैल १९९६ के होई

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पन्द्रहवाँ अधिवेशन के तिथि आ स्थान बदल गइल।

एह अधिवेशन के तिथि तय रहे २-३ मार्च १९९६। वाकिर, एकरा तीन दिन पहिले, २७ फरवरी १९९६ के दिल्ली में भोजपुरी के मान्यता खातिर धरना देवे के कार्यक्रम भोजपुरी अभियान समिति का ओर से आयोजित वा; वा एकरा एके दिन बाद ५ मार्च १९९६ के होली के त्योहार पड़ जाता।

धरना में शामिल होखे खातिर दिल्ली जाके एतना जल्दी दिल्ली से लवट के अधिवेशन में पहुंचे में, आउर होली का पहिले अधिवेशन स्थल से अपना घरे लवटे में दूर-दराज के भोजपुरी-प्रेमी भाई-बहिन लोग बहुते दिक्कत महसूस करत रहे। सगरो से जोरदार आग्रह होत रहे कि अधिवेशन के तिथि आगे बढ़ा दिहल जाय। एह से, स्वागत-समिति से विचार-विमर्श का बाद, अधिवेशन, के तिथि आगे बढ़ा के ६-७ अप्रैल १९९६ निश्चित कहल गइल ह।

गाजीपुर शहर के गण्यमान्य नागरिक लोगन के इहो आग्रह रहल ह कि अधिवेशन नन्दगंज में ना होके खास गाजीपुर शहर में होखे। एह से विचार-विमर्श का बाद, अधिवेशन गाजीपुर शहर में करे के निश्चय भइल ह।

कृष्णानन्द कृष्ण
महामंत्री

भोलानाथ गहमरी
अध्यक्ष

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से, पाण्डेय कपिल द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, इन्द्रपुरी, पटना-८०००२४ (दूरभाष : २६११३४) से प्रकाशित, आउर पाण्डेय कपिल द्वारा कर्मा प्रेस, बुद्ध मार्ग, पटना-१ (दूरभाष : २३२७८०) में मुद्रित।
सम्पादक— पाण्डेय कपिल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरूर पढ़ें

आज के सर्वाधिक रहस्यमय महासिद्ध योगी

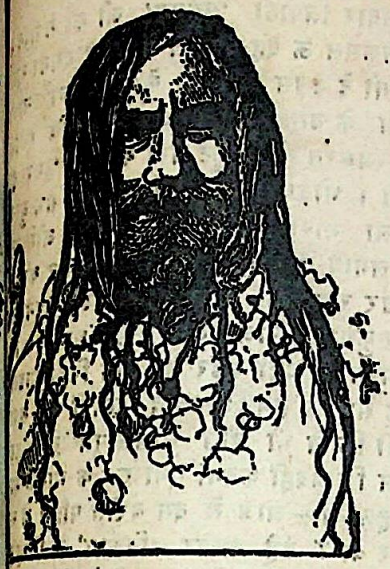

देवराहा बाबा

पर प्रो० ब्रजकिशोर
की दो अनमोल पुस्तकें

- योगिराज श्री देवराहा बाबा के चमत्कार ४·००
- योगिराज देवराहा बाबा (जीवनवृत्त एवं लीलामृत) ३·००

रूप प्रकाशन

शाहगंज, महेन्द्रू, पटना—८०० ००६

भोजपुरी, हिन्दी, अँग्रेजी भा मगही में लिखल
पुस्तक, पत्र-पत्रिकन का
सुन्दर, शुद्ध, सस्ता छपाई खातिर इयाद राखीं —

दि प्रेस दीप्ति

भिखना पहाड़ी, पटना-४

फोन न० ५११८०

गोविन्द द्वारा दि प्रेस दीप्ति, भिखना पहाड़ी, पटना-४ में मुद्रित और गोविन्द, पटना-६ द्वारा प्रकाशित।
किशोर।

सालाना १५·०० : एह अंक के १ रु० ५० पैसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भोजपुरी अकादमी पत्रिका

'भोजपुरी अकादमी' से श्री हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' जी का संपादन में जे 'अकादमी पत्रिका' के पहिलका अंक निकलल ऊ देह-देवासा में जतने दमगर रहल, भाषा-नीति के लेके ओतने विवाद के जनमो दे देलस। भाषा के कवन रूप चलावल जाय, ई निर्णय केहू एक आदमी का बूता के बात नइखे। अइसन निर्णय एकांगी होई आ जब सभ से मन म एकता के जरूरत बा— फूट पैदा करी। 'हमरा सही बोलल जाला' ई जुमला से काम ना चली। भोजपुरी पत्रिका के संपादक सभ बुरवक ना रहल ह कि बिढ़नी का खोता में ढेला मारो! जे जवन लिखता—ओमें हस्तक्षेप सुधार भर होखे, ओके हैगा के लेव ना लगावे के नीति काफी सोच-विचार का बाद रखाइल रहल ह। भोजपुरी के रूप निखर रहल बा, एगो मानक रूप अपने सोचा आ जाई। लिखाए त दीं! डा० बसन्तकुमार, राजवल्लभ सिंह, घनश्याम मिश्र, जगन्नाथ जी जइसन भोजपुरी साहित्यकारन के बड़ा कड़ेर आ तीत चिट्ठी आइल बा अकादमी-पत्रिका का भाषा पर! ओह सभ के हम धन्यवाद देतानीं आ संपादक मण्डल का विद्वानन से अनुरोध करतानी कि जे भी होखे सोच-समुझ के! हड़बड़ी कइले गड़बड़ होला। समय नइखे भइल कि अबहीं कवनो एगो रूप के मानक मान जाव। गवें-गवें एकरूपता खुद आ रहल बा—आज से दस बरीस पहिले जे चतुर्थी चाचा लिखत रहलीं हें आज ओमें अन्तर बा? ईहे अन्तर 'विकास' के चिन्ह ह। भोजपुरी के भाषा बनाई। एकाध आदमी का उतजोग से "हड़बड़ी के बिआह कनपटी ले सेनुर" के हाल हो जाई!

भोजपुरी किताबन खातिर आजुए लिखीं

१.	जोत कुहासा के	(गद्य गीत)	—ब्रजकिशोर
२.	जिनगी के परछाहीं	(कहानी संग्रह)	—रूपश्री
३.	लहर लहर में सावन	(गीत संग्रह)	—वसन्तकुमार
४.	धुआँ	(कहानी संग्रह)	—ब्रजकिशोर
५	सेसर कहानी भोजपुरी के	(कहानी संग्रह)	संपादक : ब्रजकिशोर
६.	पंच परमेश्वर (नाटत)		—प्रो० ब्रजकिशोर
७.	लर मोतिन के	(गजल)	—जगन्नाथ
८.	पंछी (कहानी संग्रह)		—सं० रूपश्री
९.	सुन्नर काका (उपन्यास)		—प्राध्यापक अचल
१०.	भोर मुसुकाइल (उपन्यास)		—विक्रमा प्रसाद

भोजपुरी साहित्य संस्थान

शाहगंज, महेन्द्रू, पटना-६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४. चिखुरा—दू बिआह कइले क नजारा येमे देखावल बा। बिमाता अकसर होली सनि। जोखूआ आ ओकरी नवकी मेहरारु क सदेहे दुराचार लउकत बा। चिखुरा क जान जोखुआ अपनी नवकी मेहरारु के नाज नखड़ा से ले लिहलसि। कहानीकार चिखुरा के प्रति पाठक क करुणा जगावे में खूब सफल बा। जोखूआ भुरभुर रूप त खूबे ढंग से खड़ा हो गइल बा। जोखूआ के नवकी ज़ोरु क रूपि रूप भी बड़ा सहज से उरेहल बा। ओकरी कटले त लहरि नइखे आवत। ये सभी क चरित्र चित्रण वेजोड़ बा। भाषा या शैली भी सराहे लायक बा। चिखुरा के देखिके भमरत, घसकत बड़भइया लोगन क हजामति कहानीकार दूइये लाइन में बखले में काफी सफल बा। येही के कहल जाला भासा क कसावट आ शैली क जोर।

५. बंजुआ—मध्यमवर्ग के जिनिगी क दास्तान सुनावेवाली ये कहानी में परम्परा क गुण दोस देखावल बा। बाप बेटा दूनू जानी क रखैल सनिचरी लइका बंजुआ क चरित्र बहुत प्रभावकारी बा। विद्वेस क आगि से उ जरत बा चउधुरी के सनिचरी के रूप लोभ में ओकरे बिअहुता के मरवावल, जमीन क देखा के राखल, आ मंगला पर ओकरी लारिका बंजुआ के साथ दुर्व्यवहार साफे जाहिर क देत बा चारित्रिक खोखलापन। चरित्र चित्रण भाव भाषा सैली से ईहो कहानी सफल बा।

६. बन्द केवाड़ी—परदेस में सपरिवार रहें वाला लोगनि क तिरिया लोग के नीचे केतरे अपने लाज के मुफुते बेची रहल बा ई ये कहानी क विषय है। बुझाता एमें से किछु भाग काट दिहल बा जवनी से चरित्रन क रूप धूमिल भाव बा। हालांकि व्यंजना से कहानी बुझा त जात बा, भासा शैली रोचक आ जिज्ञासा भी।

७. धरती के फूल—कहानी मनोवैज्ञानिक बा। कवनो जवान में परेम क जब जरिजाले त उ ताब, कुताव खेत कुखेत उँच खाल ना देखेला। महेसरो बुलि रहे। उ अपनी बापे से पटरिया लिहले कि समाज क नियम तूरि के रम- जनी बान्हीं के उनुके चोकरत परेम पर पानी डालिके चुटिया बना दिहलसि पैसा के खरचा से अपन मनचाहा परेमी देवना से बिआहो क लिहलसि। सिनेमा क परभाव, तिरिया क चालाकी आ गाँव में लड़किन की पीछे घूमे वाला लोगन क चित्र खूबे साफ उरेहल बा। भाव भासा शैली या चरित्र चित्रण हर से कहानी सफल बा।

८. 'जनम जनम के नाता'—भारतीय नारी का साहस आ निष्ठा, के उजा- गर बा।

९. लाचार जिनगी—में मनोविज्ञान बड़ा पोढ़ ढंग से आइल बा। जिनिगी के सच आ मन क उड़ल दूनू एमें देखावल बा।

—वेदव्यास शुक्ल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जनार्दन के एकरा खातिर अपना के तइयार करे के परी। इहो क्रान्ति के मंत्र ए
फूँक गइल बा। साहित्य-कार क भविष्य द्रष्टा आ युग बोधी सरूप खूब साफ
लउकत बा। एकरी खातिर भारवि जी के जेतना धन्यवाद दियाउ परसंसा कइल
जाउ कलि थारे बा।

३. सिलासिला - अछूतोद्धार भा हरिजन प्रेम के नांव पर केतरे केतना
छल, कपट, अनाचार, स्वार्थ साधल जाता ई ये कहानी में देखावल गइल बा। सबसे
पहिले त ये कहानी क मनोवैज्ञानिकता सराहे लायक बा। हर व्यक्ति के मन में अपना
पेसा के प्रति घृणा आ दोसरका के प्रति प्रेम भरल रहेला। उ चाहेला कि हमार
लरिका एमे न आके ओ में जाई त जियादे सुख पाई। बाकी ओकर लारिका जब उहाँ
पहुँचेला त उहाँ इहे अनुभव करेला की ई नीक नइखे, हउ नीक बा, उहाँ लरिका
के भेजे के चाहीं। एह तरे जिनिगी क चक्कर चलत रहेला। धर्मशास्त्र का भाषा में
योनि परिवर्तन के भी इहे सिद्धान्त ह। नन्हकी क माई-बाप चहलें की हलखोर
क पेसा गन्दा बा। काहें न अपनी बेटी के ऊँच जाति के लइका से बाँहि धरा देवल
जाउ। मन क इ बिचार, खद्दर धारी नेतन क अछूतोद्धार क परचार, आ ओ
ये से एगो क नन्हकी क हाथ मंगले क लाचार आचार माई-बाप क मति मोटा
दिहलसि। नन्हकी के पाके ओकर अपनी साथिन के साथे, ओकर (नन्हकी का) ओर
एगो दूसर कलई खोलता। खद्दर धारिन क छल कपट धोखा धड़ी आदि क पर
इहवें उघरत बा। आ एकर अन्त होत बा जब उ नन्हकी के ई-कहिके लवटावत
कि हम कलकाता जात बानी। अकेले ई कहाँ रहिहें। कहानी कार का चालाकी
पाठक क मन पूछि पड़त बा कि जवनी ईयरवन, सहेबवन कीइहवाँ पटिया धइ
हसन आजु ले, उहाँ रखले में अब काहें हिचकिचात बानी जी? पाठक बिना कहा
बूझि लेत बा कि नन्हकी क उपयोग, भोग्या के रूप में करेक पलाने ये लोगन
रहे। ई कूल अछूतोद्धार नाटक रहे दूसरे के उल्लु बनवले क सुनियोजित योजना
रहे। ये कहानी क इहे क्लाइमेक्स हवे। एकरी बाद कहानी आदर्शोन्मुख यथार्थ
ओर मुड़तिया। बिसवास घात की आग में भुँजात महतारी बाप लोग कउड़िया
सलुआ से बाँहि धरावल। बाकी ओहिजगियो सन्देह क सिकार बनि जात बा नन्हकी
क चरित्र आ अन्त में माई-बाप क पेशा उठाके गुजर करवला क उपाय कइल सूचित
क के कहानी कार बिराम लेत बा। सिलसिला क मथेला दे के का कहानी कार
नइखे बतावल चाहत की नन्हकी के माइयो क चरित्र अइसही रहे आ चमरवटी
निन्नानवे फीसदी चरित्र अइसने होला। खाली भंगी वृत्ति क सिलसिला देखावल
कहानीकार क उदेश्य मानल ठीक नइखे। कहानीकार ये लोगनि के कसमकस जिनिगी
गरीबी लोभ आ तिनदिनहा नेता लोगनि क आ तथाकथित लोफर समाज सुधारक
कन क कलई खोले में सफल बा। ए कहानी क पात्र अपने वर्ग क प्रतिनिधि
बाड़न सन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिट्ठी-पत्री

□

राउर दीहल 'भोजपुरी कथा कहानी' दिसम्बर १९७८ पढ़लीं। बड़ा नोक-
। इ परयास सराहे लायेक बा। भोजपुरिया माई क निखरत रूप देखि के
तरे लोग एने की ओर झूकता जइसे शरत बाबू क उपन्यास पढ़ खातिर
बाला बंगला सीखल सुरू क दिहले। अबहिन इ हाथे हाथ घूमति बा। हमरा
सुभाता की सफलता ढेर मिली। अपना मन में जवन भाव आइल ओके लिख
ल तानी। जो हो सके त साहित्यकार भाईन के देखा देब।

१. के भेजल—समाज क जरजरात दू ठो समस्या ए कहानी में बड़े ढंग
उठावल गइल बा। (१) बेरोजगारी आ शहर के परेम (२) सद्भाव आ सद्
क तेज गिरावट। बहोरना आ उमा शंकर क चरित्र क्रम से एके देखावत बा।
चित्रण अतना बेजोड़ बा की इ दूनू पढ़ला का बाद बिभाग का परदा पर
रहे ताने स। लालचन का चरित्र से पर दुःख कातरतो देखवले क चाह
गइल बा। लेकिन इ पात्र ऊपरे की मने सब किछु क रहल बा इ सदेहे भंपा
बा। उमा शकर, जेकर तोनो तोना जरि गइल बा, जमुना बहु से अतना
आ परेम पावत बा, क विसवास घात, चाल बाजी, धोखा धड़ी छल कपट
आदि मन्दिर क पुजारी बना के अउर साफ साफ उजागिर क दीहल बा। इ
भास कहानी क जान बा। जो ऊ मन्दिर क पुजारी ना रहित त ई कूल्ही
अतना साफ ना लउकि पाइतिं सन। भगवान के सामने रहे वाला क इ चरित्र
के मुख में राम बगल में छूरी वाली लाइन क बड़ी सुन्दर व्याख्या क दीहल
बा। वर्तमान भारत में हर आदमी दोहरा मुखोटा लगवले बा इ बाति
कार कहल चाहत बा। हर सफेद पोस में काला चरित्र, हर धनी में गरीब
, हर अगुआई करे वाला में तुच्छ स्वार्थ केतरे छिपावे क कोसिस कइल
बा मगर जनता के सामने उ बेनकाब होत चलि जात बा, इ ए कहानी से बे
गहीर हो जात बा।

२. भोर ना भइल—इमरजेन्सी क लेखा जोखा ए कहानी में खूब साफ २
न गइल बा। प्रकृति क उपयोग सदीक रूप में ये कहानी क बड़हन विशेषता
हल क दरबाजा, बन्दीं से मुलाकात क समस्या साथी-संघाती क व्यवहार
जीवु प्रकृति के साथे अतना सटा दीहल बा कि ओकचलोपर उकचत नइखे।
क छलकत नेह देखवला में कहानीकार के बड़ी सफलता मीलल बा।
साथे दू ठो बाति आउर साफ हो गइल बाड़ी सनि (१) जे स्वार्थ साधक बा
कवनो समर्थन भा विरोध से तबले मतलब रहेला जलक स्वार्थ सिद्ध होत
रातो रात जेपी के नकली समर्थक क संजय क समर्थक बानि गइल ई साफ
बा (२) जेपी आ उनुकर साथी लोग जवनी आशा से इ इमरजेन्सी हटावल
कवनो हटल ना। ओकरी खातिर अबहिन लमहर क्रान्ति करे के परी, जनता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-Me

कहानी ना ह। डायरी जिनगी के अन्हार आ तोपल पन्ना होला। जेवना के उजाग
कइके लेखक गूढ़ रहस्यन के जाने वाला ज्योतिषी हो गइल बा। (बुझाता कि लेखक
के मन भी लुकलुकाता)

'लहोक' आ 'एगो अउर अभिमन्यु' एकदम टटका चित्र ह। जेवन 'नक्सल
वाद' का नांव से पुकारल जात ब'। ई दूनो कहानी 'टेलीवीजन' का तरह
का सोझा लउकत बाड़ीस। 'छोट बड़' जात का आधार पर आंकल ठीक नइ
'धन' का आधार पर दूगो बरग बा। धनी आ गरीब। 'कुरमी' भी चमार पर
चार करत बा। देखीं—

'चमटोली के सुगबुगाइल देखके त आग अउरो लहके लागल। बूढ़-
सभे ना जाने कबसे चल आवत एह भोग सुविधा के अइसहीं छोड़ देवे के
ना भइल। का बाप आ का बेटा सभे त पियासले रहे, रात-बिरात बिना
चिन्हले····पानी पिए के आदी।' (पृ० ४४)

बाकी गरीबो में पानी होला। अपना धरम के ऊ रक्षा करेला।
बेबश हो जाला तब मन मारि के चुपा जाला।' 'गम्हीरा' अइसन क्रान्तिकारी
समाज में जन्मेले आ उनकुर अन्त भी ओही तरे होला।

'धुंआ' भोजपुरी कहानी में एगो परिवर्तन ले आइल बा। अबले भोज
में पुरानापन के बोलबाला अधिक लउकत रहल ह। बाकी अब अइसन संग्रह नवी
(टटकापन) के प्रतीक बाड़न स। अइसे ई निःसंकोच कहल जा सकेला कि भोज
कहानी अब हिन्दी के चाहे अन्य भासासन का पांति में गर्व से आपन स्
आपन सम्मान स्थापित करे में जी जान से होड़ लगवले बा। ब्रजकिशोर जी के
रचना खातिर धन्यवाद।

बाकी कहानी एकदम टटका ह। एहसे कहीं-कहीं कहानीकार 'रिपोर्ता
समीप में पहुँच जात बा। ई ओकर मजबूरी बा। रंजना आदि नारी पात्रन के
भावन के उभार तनी आउर विविध रूप में चाहत रहल ह। ओही तरे 'लहोक
'एगो अउरी अभिमन्यु' में कुछ पात्र ओही पूंजीपतिन के संतान रहिते त अउरी
आ जाइत। काहें जे बा एक चौथाई हरिजन अब मिश्रित, मिलल-जुलल हो
बाड़े।

सम्पूरन रूप से ई संग्रह प्रशंसनीय आ संग्रहनीय बा।

धुआं—(कहानी संग्रह) ब्रजकिशोर, पृष्ठ ५८

प्रकाशक—भोजपुरी साहित्य संस्थान, महेन्द्रू, पटना-६

मूल्य—चार रुपया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में पानी का जगह पर अब अंग प्रदर्शन के लालसा बढ़ि गइल बा। ओकर ई होता कि रंजना' का आपन आबरू आ परान दूनों से हाथ धोवे के बा।

लेखक के ई विचार केहू-केहु का अच्छा ना लागी। ऊ सोची की लेखक विकृत ह। बाकी उ साफ स्वीकार करत बा (धुँध-धुँआ के) अपना कथा में कि नूतन आ बदलाव का तड़प के चिन्हासी भर महसूस करे का व्यग्रता में सउँ-त लेखक के मन एही धुँआ के भोग रहल बा।" (पृ० ५)

लेखक के चारू कहानिन में पूँजीवादी घिन, सामन्तवादी मनमानी, जमीन-वाद के मनमानापन साफ (स्पष्ट) झलकत बा। एह विकार से विद्रोह के जागत बा। एकर चित्रण करे में लेखक सफल बा। आ ओकरा अन्दर खीझ बेहसे पूरा-पूरा चित्र उतारे में कबों-कबो अऊँजा जात बा।

आजु के रक्षक थाना, पुलिस; मंत्री सभे वोट का चक्कर आ कुर्सी बचावे के रहत बा। ई बात थानेदार साँच मन से स्वीकार कइलेत बा। मंत्री जी भी देखावत बाड़े बाकी 'स्टेज' पर लमहर चाकर आदर्श भाखन देवे में ओज-करत। एक तरह में गुण्डीज्य' हो गइल बा। मंत्री जी के व्यंग (फैशन पर) आ विवसता पृ० १६ पर देखे के मिलत बा।

पांचो कहानिन में हमरा सिरजनात्मक आ अत्याचार के डट के विरोध के 'खनतलासी' में मिलत बा। अइसने कथा समाज के एह घरी आवश्यकता बा। के विधा में खनतलासी, एगो आपन स्थान राखत बा। एतरे आपन आपन ह। प्रतिष्ठा सभका पास होला, चाहे ऊधनी होखे चाहे गरीब होखे। खाली आ दृष्टि के अन्तर बा। ई कहानी समाज के जगावे वाली बा। एमें समाज-सरकार पर बहुत बड़हन व्यंग बा। आजु तीस बरिस में भी केतना आदमी घर आ वे पता ठिकाना के बाड़े। ई कहानी सुराज आ सरकार का गाल पर थप्पड़ मारत बिया।

'होसिला' राष्ट्रीय भावना के जगावे वाली कहानी ह। चीन आ पाकिस्तान आक्रमण के समय के ए कहानी में ज्वलंत चित्र बा। एमें त ई देश हमेशा अगहर है।

जेवन जनता पार्टी 'दल बदल' के विरोधी रहे उहे सत्ता में आवते ओकर हो गइल। ओकरा खातिर कानून बनावे में हिचकिचाये लागल। ए में कुर्सी हथियावे आ कुर्सी बचावे के जेवन-जेवन हत्थकण्डा बा पूरा प्रकाश डालत बा। इतिहास एके कभी भूली ना। ई त आजुकाल्हि के के फोटो ह। रेखाचित्र ह। ई बहुत मनोरंजक आ तथ्य परक भी बा। (एने-के कइगो मंत्री लोगन पर प्रेमिका काण्ड उभरल बा)। बाकी ई डायरी ह,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

समीक्षा

धुँआ

□ डॉ० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी

'धुँआ' श्री ब्रजकिशोर जी के टटका सामाजिक चित्रण ह। जेवना के हम का रोज जीयत, भोगत आ देखत-सुनत बानी जा। ई एकसरे ह। लेखक वर्तमान घटत घटनन के अपना रचना के विषय बनवले बा। एह से एमें प्रान बा (जी-तता) बा।

एह रचना में कुल्हि पाँच गो कहानी आ एगो डायरी बा। 'बालू के भीत' खनतलासी, होसिला, लड़ोक आ 'एगो अउर अभिमन्यु' कहानी ह आ 'दल बदलू डायरी' डायरी ह।

लेखक ए संग्रह के नाँव धुँआ' रखले बा। एकरा संबन्ध में ओकर कहना बा कि 'समाज आ व्यक्ति दूनू घुटन से आ टूटन से भीतरे-भीतर धुँआ रहल बा ना त साफ धनकते बा आ ना बुताते बा····दूनू घुटन से टुटन से भीतरे-भीतरे धुँआ रहल बा।' (पृ० ५)

ई कहानी संग्रह आजु के समाज के छाया चित्र ह आ वर्तमान परिस्थिति के चित्रण बा। आजु काल्हि अपहरण (मेहरारून के लूटल) के कइगो घटना प्रतिदिन अखबारन में पढ़े से मिलत बा। इहवाँ तक चोपड़ा के अबोध लरिकी के ई मन सहकल असामाजिक लोग ना छोड़ल ई कुल्हि वर्तमान सेक्स आ छीना-झपटी राजनीति के प्रभाव ह। एने बेकारी के सुरसा दिन पर दिन मुँह फइलवले बा। बेकार मन शैतान होला। 'रंजना' स्त्री समाज के (फैशनेबुल) प्रतीक हउवे लेखक ई सभ रोज देखत बा। ऊ एह से आँख नइखे मूँदत। फैशन में मतवाल सड़क पर अपना जवानी के प्रदर्शन करत चलत बाड़ी आ सिनेमा का नग्न चित्र से होड़ लागवत बाड़ी। फल स्वरूप नवजवान लोग अपना 'मन' के रोके असमर्थ हो जाता।

मार्क्सवादी धारा, (समकर समान अधिकार के नारा 'टके सेर खाजा टके सेर भाजी' के कहावत चरितार्थ करत बा। रंजना के लुटेरा कहत बाड़न स 'ओ केहू के बपौती ना होला। ओकरा के देखे, के, भोगे के, हवेखे के पूरा समाज का बा।····। (पृ० १२)

प्राचीन काल के संयम, सामाजिक बन्धन ढील हो गइल बा। आंचल में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तनी गाँव में गइल रहलीं ह न एनिये से राउर हालि चालि लेवे चलि अइनी ह मलिकाइन का करत बाड़ी। तवले बबुओ भी आ गइलन ह। हमरो देरी बा, रतनी के बाबू जोहत होइहे।'

'चेंघना आजु तीन दिन से जर से बूत भइल बा। सिरफल आ हरसिंगार ई अँवटि—अँवटि पियावल गइल। तुलसी के काढ़ा दियाइल बाकी ओकर असरते नइखे।'

'रतनी के बाबू! तनी सरमाजी बैदराज कींहा ना जा, उनकर त तू रोज बेगारी में करत रहेल। तनी आ के चेंघना के देख लेते आ केवनो बरिया त एकर जर कम हो जाइत। हरो घरी आहि-आहि करत बा, बड़ा पीर बा। बा। आल्हर लरिका ह। जर त बड़े-बड़े के तूरि देला।'

'काहो मंगरू, केने से आवत बाड़ । हाल-चाल ठीक बान ?'

'अरे सरमाजी' आजु त विपत्ति परल बा, त रउवाँ कीहाँ आवत बानी। के जर चढ़ले आजु चउथा दिन ह, तनि को ओनइस नइखे होत। रतनी के तीन रात जागल हो गइल। ऊ सिरहाना बइठ के चेंघना के कबो माथ आ गोड़ सुहरावत बिया। तनी चल के देखलीं आ केवनो बीरया दे दीं।'

'एह घरी हमरा फुरसत नइखे। कइगो रोगिन कींहा जाए के बा। आ दवा भी बढ़ि गइल बा। आजु काल्हि दाई महंगा हो गइल बाड़ी स। केवनो दवाई दवा से कम में ना मिली।'

मंगरू बहुत चिरौरी-मिनती कइले बाकी सरमा जी तनिको ना पसीजले। सरमा जी हँस-हँस के मंगरू से बतियावत रहले ह, उहे आजु अपन खूब देखावसु।

मंगरू घरे अइले आ एने रोवन-पिटल परल रहे। हमरा बाहर से अइले ता हो गइल रहे। कई दिन से मन करत रहे कि तनी मगरू का ओर घुमि काहें जे लरिकपन में मंगरू हमरा के खूब खेलवले हउवन। हमरा बाबू जीस बहुत बनत रहे।

जब हम ओने गइलीं, त उनका दुआर का एनिये से रोवला के आवाज है। हरिचरन से कुल्हि बात मालूम हो गइल। जब हम मंगरू के देखलीं त धक्का हो गइलीं। जेवन मंगरू के देहि लउर नीयर सोझ, खूब गठल, बाँहि आ रान मजल रहे, उनके जे देखे से देखते रहि जाय। देहि पर माँछी ना बैठि बिछलाये लागे, गुल्ली-डण्डा में जे जवारके हरा दे। उहे मंगरू अब गा रहले। उनकर चाम लटकि गइल रहे। हाड़-हाड़ लउकत रहे, अब हड्डी रहि गइल रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE

के नाँव ना बोलाइल । जहाँ जासु खेहो रानी, उहाँ परे पत्थर पानी । साहब कांपरेंसी बाबू कींहा चाह पानी करे गइले । आ लेखपाल साहब के हुकुम भइल कि अब राशन खतम हो गइल । मंगरू टुकुर टुकुर ताकत रहि गइले । घरे अइले त रतनी के आगे उनकर झुराइल मुँह देखि के सन्न हो गइनि ।''

''काल्हि अनन्त ह । अबहीं ले केवनो उपाइ ना भइल । हमनी का त अइसन रहि जाइबि जा बाकी लरिकन के का होई ?' रतनी के माई कहलसि । मंगरू जेवन चुप्पि सधल कि उनुकर बकार ना फूटत रहे ।''

रतनी इनकर चुप्पी देखि के बच्चा बाबू कीहाँ गइल । मलिकाइन गाँव बेग़ाहे एकरा के कुछ ना कुछ देत रहेली । ईहो इनुका खातिर आपन परान सौंपेले दूनों जानी के नइहर भी त एके गाँवे ह । बाकी जबसे मलिकाइन के रेहन धरा लागल तबसे उनकरो हाल ठीक नइखे । बड़-बड़हुआ हउवन । एगो बियाह एकदम धूम-धाम से भइल कि अवार-जवार बरात देखे जुटल रहे बाकी तब रंगरेज साहब जमाना रहे आ अब सुराज भइल बा । तबो अबहीं खरच-बरच में कटौती कइले पर पुरनका बानि नइखे छूटत । हींग के बरतन केतनो धोवाला ओकर सुगंध ना जाला ।

रतनी के माई अबहीं दालान में चोंहपल रहे तबले बच्चा बाबू आ मलिकाइन के बाति ओकरा कान में परल ।

'काल्हि खातिर केवनो बेवस्था ना भइल । रासन का दुकान पर तीनि गइलीं । एतना भीड़ रहल ह कि भीतर घुसल मुस्किल हो गइल खतम होखे के लोरि टँगा गइल ह । बकिया लोगन के अगिला महीना मिली ।'

'ओनिये से गंजेसर साहु कीहाँ गइलीं हँ । देखते आदर-सतकार कइले बाकी जब कहलीं ह कि हमरा के अनन्त के समान दे द, पइसा पास में नइखे, त ऊ मुँह बिदोर दिहले ह । आ कहले हकि रउवा जनते बानी अब हमनी के नइखे चलत । लरिका—फरिका मालिक बाड़न स । उन्हने से कहला पर फरिआई ।

एने इस्कूल से मुँह लटकवले गोबिन बबुआ अइले ।

'अरे बबुआ ! तू आजु उदास काहे बाड़ । तोहार आँखि लोरा गइल बा ।'

'आजु कुल्हि लरिका फीस दे दिहलन ह स, हमरे बाकी रहि गइल बा । मास्टर साहब कहलन ह कि काल्हि फीस ना आई त तोहार फारम ना भराई । तू पढ़े मति अइह । असो फिसियो बढ़ि गइल बा । कुल्हि पचपन रुपया लगी । ओ से कई तार कहली, त ऊ चुप्प लगा गइले ।'

रतनी के माई के काठ मारि दिहलस । एगुड़ा का एके गाइ ना लागे छूछे खाइ । 'एगो आसरा रहल ह उहो टूटल ।' ऊ उलुटे पाँव लवटि चलल ।

'कहाँ आइल बाड़े रतनी के माई आ लौटलीं जात बाड़े ।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तें काव, नाही त हई 'पाड़ी' खोलि के मुरखाना (मवेशीखाना) मे ढुक दल
ता तोहरा जेहल काटे के परी।'

मंगरू का आकास-पाताल लउके लागल। कपार घूमि गइल। जनाइल जे
ऊ भुइयाँ बइठि गइले उनकर कंठ रूधि गइल।

'पइसा ले आव नाटक जनि फइलाव। तोहन लोग के मुफ्त के माल चाभे
दत हो गइल बा। हरे लागे ना फिटिकरी। हरिया तू देखु त एकरा घर में
का-का बा।'

'अरे सरकार। घर-दुआर रउवां कुल्हि ले ली, बाकी ई झूठ तोहमत मत
। हम एतना रुपया कबों ना लिहलीं। लउर कपार भेंट ना, बाप-बाप गोह-
हम करे गइली हाथ जरि गइल।'

'अच्छा, दुइगो दस टकिया ले आव त किछु दिन ले तोह के हम छेम कइ
नाहीं त आजु जेहल के दुआर जरूर देखब।'

रतनी के माई ई कुल्हि सुनलस त ओकर पारा चढ़ि गइल। ऊ दनदनात
से निकलसि। "आ मार मुंह झाँसा के, एकर मजाल हमरा चीझ वस्तु, माल-
के छुवे के। अरी हईं देखीं सभे, छछात हमनी पर कलंक लगावल।'

"हरिया। जो दूगो सिपाही बोला ले आउ। ई मेहरारू ना ह, करकसा ह।
लाये के बेरि त साँसि ढेकार ना लिहल लोग। आ अब देबे के बेर ई कुल्हि
।"

मंगरू सोचले कि अब त ई बड़ बेइज्जत भइल आ कहीं पुलिस आइल त
बनि जाई। उ घर में गइले आ पाँच-पाँच रुपया के दूगो नोट लेके अमीन
का गोड़ पर धइके माथ पटक दीहले। मरता का न करता।

"रतनी के माई देखलसि त कपार पीटि के रहि गइलि। दू महीना का
कइला पर ई दस रुपया बचवले रहल कि असो का जाड़ि में एगो गान्ही
के चादर लिया जाई त उनकर आ चेंघना के जाड़ कटि जाई।"

'आजु मंगरू झलफलाहे से हरी बाबू कीहा लम्मर लगवले बाड़न।' कालि
चला चलल कि लेखपाल साहब अइहें आ आटा बटिहें। दुपहर ले देखत-
ताकि से लुत्ती निकले लागल, बाकी अबही ले केहू के पता ठेकान ना रहे।
घर के लोगन के भीड़ लागल रहे। अपना-अपना आदमिन के लिहिट बनत
मंगरू के नाँव तीनू लिहिट में लिखा गइल। तहसीलदार आ डिप्टी साहब के
नवकी गाड़ी आ गइल। सुवाती का बदरी नीयर उनुके देखि कें लोग
खड़ा हो गइलन। लेखपाल साहब के हुकुम भइल कि सभ केहू बइठि जाउ।
नाँव बोलाइ आ ओके सामान मिली। किरिन डूबे लागल बाकीं मंगरू

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लेस। दइबो-पर दुख परेला। रामो का बन जाये के परल आ किसुन जी का ओर छोड़े के परल। हमार सरकार तोहर लोगन खातिर बहुत-बहुत जोजना बनवले बा। अब तोहने लोग बड़ बाड़ जा आ हमनीं का छोट।"

"ना बाबू। बड़ छोट भगवान का दरवार से बना के आइल बाड़ा। टिटिहिरी केतनो टाँग उठाई त का ऊ आकास छू ली। चउवे गइले छव्वे हो आ दुबे बनि के अइल।"

'मंगरू! देख, अब समाजवाद आइल बा। हमरा राज में केहू छोट बड़ा नइखे। बाभन चमार के नाँव नइखे। सभे एक बा। सरकार कानून बना बा आ बाघ-बकरी के एक घाट पर पानी पियावत बा।"

'बाबू। सूखा में त 'सड़क' पर माटी फेंकाइल त केहू तरे गुजर हो बाकी एह घरी त केवनो काम मिलते नइखे। धरम गइल, करम फूटल। जोगाड़ करीं।"

'हमरा दिल्ली गइला के देर बा मंगरू, एह क्षेत्र के हम सरग बना देब तू घबड़ा मत।"

"मंगरू के हिम्मत ना परल कि अउरी कुछु कहसु। उनुकर बाबू मुँह बेर सिखवले रहलन कि बड़ बड़का से फइलवें रहल जाला। मन मरले घरे पलन। अबहीं रतनी के माई किहु पूछहीं के बा कि दुआर पर पियादा चिल्ला आकास पाताल भेंटे नाहीं, दइब-दइब चिल्लाइ।"

'मंगरू तोहरे नाँव ह?'

'हँ, सरकार हमरे नाँव ह। का हुकुम बा।' हाथ जोरि के आ दाँत निपोर के मंगरू कहले।

'तोहरा ऊपर सोसाइटी के पाँचि सइ रुपया नगद आ दू सइ सूदि बाकी आजु ना देब त तोहरा जेहल चले के परी।'

मंगरू के कठेया मारि दिहलस। ना साँस ऊपर जाये आ ना नीचे आवे काँपे लागल। बड़ा हिम्मत कइके लड़खड़ाते बोललन—'आरे सरकार। हम त ले पाँचि सइ रुपया देखलहीं नइखीं। ई पाँचि सइ आ दू सइ कहाँ से आ गइ हम त पाँचि गो दस टकिया लोट लेवें गइल रहलीं, उहो कांगरेसी बाबू बतवलन सहायता मिलत बा आ ओही में से दस गो सुपरवाइजर बाबू ले लिहलन सरकार। ई पहाड़ कहाँ से गिरा दिहलीं। एक त गाइ अपने दूबर आ दूसरे पाँकि में।'

'रिन लेवे बेर त अगहीं घउरल, तोहार गोड़ भुइयां ना परत रहे आ बेरि दस कम पचास हो गइल। तोहर लोगन के दिमाग बिगड़ गइल बा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

टूटल आदमी

☐ डॉ० लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी

"कांगरेसी बाबू ! एह साल सूखा का बाद बरखा आ बाढ़ि दाबि दिहलसि। भगवान के लीला। कहीं धूप कहीं छाया आ जानि ना जाइ राम की माया। अपना के चाहे चान पर उड़ा ले, चाहे सूरुज पर आ चाहे लोहा के नाव, चाहे कागद के, बाकी एक जगह त सभकर माथ झुकिये जाला। आ जब होला त ओही जा सरन मिलेला। बाकी जब ले सकती बा काम दनादन का करंट नीयर फरियाइल जात बा, तबले ओकर हाथ मोंछ पर रहत बा। मल्ल, बिगड़ले कुर्मी। काम बनला पर ऊ अपना के राम, किसुन आ से कम नइखन समझत। त आजु काल्हि त सभे "ट्रें" बोलि देले बा। बिचारल सभ एक ओर धइल के धइल रहि जात बा। आसाढ़ सावन सूखा, भादों भरि दिहलस। एक त चढ़लीं तरकुल आ दूसरे मरलस बीछी। के फसल मर गइल रहल ह। भदई के आसरा पर किसान जीयत रहल ह। (भदई) बिला गइल।

"हं ए मगरू, बड़ा गजब भइल। हमर जिनिगी मे अइसन ना भइल रहल कातिक, तीनि असाढ़ जे चुकल से गइल बाजार। ई सूखा आ दहार दूनो के बधिया बइठा दिहलसि। कह तोहार कइसे चलत बा।"

"का पूछले बानी ! गरीब के धरम आ किरिपन के करम एके ह। आजु से चूल्हा ना जरल ह। घर में चूहिया दण्ड करत बिया। चेंघना फेंकरत ह त ओकर माई बखारी में से किछु ले जाके ओके चुप्प करवलस ह। बाकी रो लाज लागत बा। काम ना मिलला से देहि फाटत बा। हाथ गोड़ पिरात बेकार मन सैतान होला। गरीबी पाप के घर ह। केवन काम ना करे के उहो मन करेला आ बेबस होके करे के परेला। गरीब के रिनियो करज ना मिले। कटावेला। अबही त 'रतनी' के बिआह के 'दिन' कपार धइले बा आ ध्यान हो चलल। लरिकी नदी के बाढ़ ह। ओकरा बढ़त आ फफात देर लेले।"

एतना कहि के मंगरू चुप हो गइले आ आकास का ओर तिकवे लगले, एगो आंखि भी लिहले।

देख, घबड़ाइल ना जाला। सबै दिन होत न एक समाना। मरदे पर न दुख। दुख-सुख गाड़ी के दूगो चक्का हउवनस। कबो ऊपर आ कबो नीचे आवे-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ऊ त अपना मने दे देत रही जवन आज नइखीं देत !' बौस अपना कुर्सी के निकाल
बेहोस रहस । डपट के कहलन– तोहरा देवेला होई ! हम चलते-चलते 'पुरुषा
कहलीं आ कहत भइलीं—ऊ हमरा ड्यूटी में सामिल नइखे ।

—ओs !

ऊ चुपा गएल रहे ।

हम पूछलीं –अब ?

ऊ अबकी कुछ रुआँसी होके बोलल—यूनियन के सेक्रेटरी त कहलन
यूनियन मरल नइखे । हमरा साथे इन्साफ होई । फाइल ओही शर्मा के टेबुल पर
राज आज के बिहान में डाल के एक दिन सरका देवेला ।

—तब ?

—अब त आखरी बेरा एह लोग से मिलके कहेला बा—हम आदमी
चहलीं बाकी तू लोग ओइसन ना होय देल । तोहरे अइसन लोग 'चम्बल घाटी
डकइत पैदा करेला । अब हमहूँ कहीं बाहरे भेंट करब, बाकी तब हमार ई
रही साइत····। कुछ ओइसन रही जवना पर तू लोग आसानी से विश्वास ना
हम ओकरा में चढ़त खीस का चलते साँस के चढ़ाव-उतार नापत कह
आखिर इरादा का बा ?

—रगदारी से रहब । स्साले के स्कूटर एक्सीडेंट करवा देब । जेल में
से मिलल रलीहं । ऊ अपना कै गो साथी कन ई सब देखेला पुर्जी लिख देलेहं

हम दाँते अंगुरी काटे लागल बानीं । सोचत बानीं-नोकरी से त ऊ
काल्ह निकाल बाहर कइले जाई । (हालांकि ओकरा कहला के मोताबिक इ
के रेडियों स्टेशन के बौस नाम क एगो भेड़िया स ओकरा से माफी मांग के
कुछ दिन डायलोमा में रखे में कामयाब हो गइल बारन) आ जो कवनो
उपाय से एह नाजायज के हटाइयो देवे त फेर ओह नाजायज से निबटे खाति
कवनो ओइसने नाजायज के सहारा लेवेला पड़ी आ अइसहीं छूटत-छूटत ऊ
चाहें त बेतरह टूट जाई या ए लड़ाई से उबिया के अपना स्थिति से कवनो
रूप मे समझौता क ली ।

हम केतना अइसन लोग के जानत बानीं जे अकेले अथाह समुन्दर
पर कंकड़ मार-मार के लहर पैदा कइलक बाकी फेर थाक के ओही शान्त
असरा में देरी ले बइठल रहल । एगो कहानी में त अइसे पैदा भइल लहर
से किनारा के लमहर अड़ार ढहें के बात भी पढ़लें बानीं आ इतिहास अइसन
लोगन के लाश बानर के मरल बच्चा नियर आजो अपना कोरा में चिपकवले
ज़े सही रास्ता चलेला जसहीं डेग बढ़वलन-जमाना के आन्ही उनका
उड़ा ले गइल····। जादे से जादे शहीदी के नाम पर उनका के कवनो मंदिरवा
में पत्थर से जकड़ के जयन्ती का बहाने साल में एक बेर खोलल गइल ; ना
के चौराहा पर टाँग के अपना समझ से उनका के कई बेर गड्ड-मड्ड कइल गइल

हम एगो अनजान डर से आँख ऊपर नइखीं उठा पावत, बाकी
सवालिया चुप्पी हमर कोना-कोना चाल रहल बा । आखिर हमरा पास ई
आउर का जवाब बा कि 'ऊ' सही होइयो के एगो भीड़ बा आ 'ई सब' गलत
के एगो बेवस्था····।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिख पावत रहे आज तिकड़म से हमर बौस का बन गएल, चाहे ला कि हम ओकर चिरौरी करत रहीं। देखल छँउड़ी समधिन। का जानेला ऊ ?

हम कहलीं—तिकड़म।

ओकर ओठ फड़फड़ाये लागल। मुस्काइल ऊ बाकी फेर अपन टांग हमरा सिंहासन पर पसारत बकत गएल—हम ओकरा के दोस्त समुझ क बराबरी के दर्जा ओकर मन से इज्जत करत रलीह। ओहि दिन ईहे अधिकार से जब ऊ अपने सेक्टर एगो अफसर से बात करत रहे, त हम इयाराना अंदाज में ओकरा कान्ह पर हाथ रख देलीं। चिढ़ के ऊ हमर हाथ झटक देलक आ सिनेमा के खलनायक नियर गुर्राइल—अपना हद में रहल सीख।

एगो घटना आउर घटल रहे ओकरा साथे जब ओकरे ड्यूटी में हमरा बहुते बार चढ़ आइल आ एनाउन्समेंट करत खानी हमर बोलती बइठे लागल। हम ओकरे ५-१० मिनट के काम सँउप के घरे आ गइलीं। हमर ड्यूटी करत खानी टेप पर बइला पर उ खाली समय के कवनो बिधी भर ना सकल आ तब रेडियो से ओकर काफी झलक गइल। 'लजायेल बिलइया खम्भा नोचे।' अपन गलती छिपावेला बिहान भइला हमरा खिलाफ डाइरेक्टर कन रिपोर्ट ठोक देलक—कि हम बिना कहले उठके घरे चल गएल रहीं आ मजबूरी में ओकरा ड्यूटी करेला पड़ल कि हम बराबरे अइसन करत रहीला आ—कि बेमारी से हमर दिमाग खराब लागल बा।

दोसरका दिने हम एह सफेद झूठ खातिर ओकरा से जवाब तलब कइलीं। ऊ डाँट बतइलक आ नोकरी से निकलवा देवे के धमकियो देले रहे। एतने ना जइसे सेक्टर लइका के गलती कइला पर डाँट के क्लास से निकाल देवेला, कुछ ओइसहीं हमें दफ्तर से निकल जाये के ऊ कहले रहे। हमरा त देह में आग लाग गइल। फेर कालर धइलीं आ एक तरफ घसोर देलीं। ऊ कुर्सी से गिरते-गिरते बचल।

—अच्छा ?

—तबे से हमरा खिलाफ एगो गुट बनाके ई खुर-खार शुरू कइले बा।

—हूँ...हूँ। हम फेर सुने लगलीं।

—हमरा दफ्तर में ई रेवाज चल आवता कि कंजुअल एनाउन्सर जे प्रोग्राम तैयार करेला ओकर लिखल ब्योरा चलत खा ड्यूटी अफसर के थमा देला आ देहचोरन के उहे उतार-भर लेला से ड्यूटी हो जाला, जबकि ई सब ओकरा देख-सुन के तइयार करे के चाहीं।

—हूँ: हूँ।

—त ओहि दिन जब हम ड्यूटी कके स्टुडियो से बाहर निकललीं आ सीधे राह लेलीं तब ड्यूटी अफसर रोक के पूछलन—आज तू रिपोर्ट ना देल ! हम कहलीं—कइसन रिपोर्ट ? बौस बोललन—उहे जे तू रोज देवेल ! हम कहलीं—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

रहे, हालांकि एह फन में बहुत कुछ कच्चापन ओकरा में बाकी रहे तबहूँ साफ उच्चारण, शुद्ध बोली आ कवनो बात पर अपन स्पष्ट मत दे देल ओकरा कावर झुकाव पैदा हो जायेला काफी रहे। हमरा से मिलके ऊ एगो समझौता कइले रहे। एह समझौता का मोताबिक हमनी जब बात करीं—भोजपुरी में। हमरा ई समझत देरी ना लागल रहे कि एह समझौता के पीछे ओकर भाषा-प्रेम कम रहे, दोसरा भाषा-भाषी लोगन के हमेशे अपना भाषा में बतिअवला के जवाब देल जादे। फेर ऊ अपन दोस्त बताके हमरा से एगो अइसन आदमी से मिलवइले रहे जे ओह थियेटर के करीब आधा मकान मुफ्त में अपन ईंटा लगावे देले रहे आ बाकियो पूरा करे के नियत से थियेटर कम्पाउण्ड में अपना बादमी जन साथे झोंपड़ी बनाके रहत रहे। ई अमीर आदमी ईंटा के बेपारी रहे, कएगो ट्रक के मालिक। साफ रहे कि नाटक-प्रेम के ओकर कमजोरिये ओकरा के एतना गँवावे भा तकलीफ उठावेला मजबूर करत रहे ना त ओह लखपति के (अइसन हम देखलीं) एगो चोबदार के छोटहन रोल ओतना रम के करत ना देखतीं।

फेर एक दिन एह दोस्त खातिर हम ओकरा के थियेटर का मालिक के अझुरात देखलीं। ऊ बड़ा जोर-जोर से थियेटरे के एक-एक ईंटा में लागल अपन मेहनत आ अपना दोस्त के तेयाग के इतिहास दोहरिया-दोहरिया के एह आदमी के वकालत करत रहे। उहाँ के सब लोगन के पोसुआ कुत्ता बनाके रखे वाला ओ मालिक नाम 'बाघ' के ऊ पइसा नियर उलिट-पलिट के खोट साबित करे के कोशिश कइलक आ बड़ा इतमिनान से उनका अपसवारथी के नकाब हटा-हटा के लंपटे का उनका गिरगिटी रंग पर थूकत थियेटर का गेट से बाहर चल गइल।

ओकरा दोस्त के पत्ता काट देल गएल रहे थियेटर से। मकान में लाग पइसो मोकदमा के शतरंजी मात देके हड़प लेल गएल रहे आ तब दुनों मिल एगो नया नाटक के क्लब खोलके एह बड़का थियेटर के ख्वाब देवे के नाकाम कोसिस कइले रहस।

एह बीच हम ओ कमजोर लागत आदमी के थियेटर में बलजोरी घुस नाटक देखे के हियाव, ओह मोट मालिक का सामने सिगरेट धुकत बिना हाथ उठवले निकल जाये के शान से ओके नीचे देखावे काम हिमाकत देखले रही बाकी ओकर ओह टिटहीरी लेखा हास्यास्पद होके रह गएल रहे जे सुतत खानी अपन टाँग से ऊपर उठवले रहेले कि आसमान गिरी त रोक लेब।

हम ओकरा से कहले रहीं – कवनो लकीर के छोट करे के एगो उपाय ओकर भीरिये लमहर लकीर खींच देहल भी होला बाकी ऊ काटिये छाँट के छोट करेला अपना हिकमत पर डटल रहल।

—ऊ स्साला बिनयिआ। जवन काल्ह ले हमरा बिना नाँ लगइले एक ला

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—हूँ ऽ !

—शमो से मिलल रनीहं ।

—शमो कवन ?

—चीफ प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव ।

—ओ···हूँ ऽ ।

—उ सब सुनला का बाद कहलक—आखिर कुर्सियो के अपन इज्जत होले । अपना हमरे के सीख देवे चल ह । फेर सफाई देलक—बाकी तोरा हेड एनाउन्सर मिले के चाहत रहे । बुक त उहे करेलन । हमनी त खाली एप्रूवल दिहिले जा सब ।

—तब ?

—उहहूँ से हो अइलीं ।

—हमरा के देखते कहे लागल—तू के हव ? हम नाम बतइलीं । इहो कह देलीं कि अपनहीं के मातहत काम करेवाला एगो कैजुअल एनाउन्सर हईं । अनचिन्हार बनत कहलक हम त तोहरा के पहिले बेर देखत बानीं । हम कहलीं-अइल में एकरा पहिले कवनो जरूरते ना पड़ल रलख, एह से ड्यूटिए कइल हम अपन ड्यूटी समझलीं । बाकी आजकाल हमरा साथे नाइन्साफी···, ऊ बात काटत कहलक—एही से आदमी के मिलत जुलत रहे के चाहीं । हम निरुत्तर होके अपन किस्सा कह सुनवलीं । ऊ बड़ा चालाकी से अपन मजबूरी देखावत कहलक—हम करिये का सकीले ? बुक करे के सजेशन त हमरा ऊपरेवाला लोग से होला ।

ऊ अपना नियर मुँह लेके लवट आइल रहे । ऊ ईहो बतवले रहे कि ओकर उल्टे पैर शर्मा का आफिस कावर जायेला भइल रहे जे में पूछीत कि—अबगेत खाली एप्रूवल देत रल ह आ अब ई सजेशन ? बाकी लाठी खाइल गेंहुअन नियन फुफकारत ऊ घरे लवट आइल रहे ।

उ अपना बातन के फेरू एगो नया मोड़ दे देले रहे आ हम देखत रहीं—पातर-पातर, लमछर कद के एह जवान के जे बड़ा बिसवास का साथे कान्ह उचका-उचका के अपन बात हाव भाव का जरिये हमरा के समुझावे के कोसिस करत रहे । फेर ईहो कि पातर-पातर ओकरा बाँह में खून के साथे बदला लेवे के जोशी उबल रहे आ छोटी-छोटी कुइसाह आँख में एह गलत बेवस्था का प्रति खीस उबल रहे ।

हम ए लइका के पहिला बेर एगो थियेटर में देखले रहीं । जान पहिचान होला पर ऊ तपाक से हमरा से हाथ मिलवले रहे आ हमनी दोस्त बन गएल रहीं । गम्भीराह रोल के ऊ माहिर रहे शो डाइरेक्शन पर अपन अधिकार बूझत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

ऊ एगो भीड़ आ बेवस्था

□ तैयब हुसैन पीड़ित

अबहीं भोरे-भोरे एह धमक के पहिचाने के कोसिस करते रहीं कि उ केंवाड़ी में बिना कवनों 'ठक् ठक्' कइले पर्दा उठाके रूम में समा आइल आ हमरा कुछ कहला के पैंरा हेरले बिना कुर्सी पर धम्म से बइठ गएल।

ऊ एहीतरे ना आवे। पिछलको दफे जब बहुत दिन ले बेमार पड़ल-पड़ल अच्छा होके ऊ आइल रहे त बतवले रहे कि ऊ अपना बाप के धन में से कानिको कउड़ी ना लेवे के कसम खाके खुद अपना भरोसे अलग किराया के कोठरी लेके नया जिनकी शुरू कइल चहले रहे बाकी एह बेमारी के दौरान ना खाली अपन पुरखा पुरनिया के दौलत हीक भर देह लगवलक बलुक सेवा टहल खातिर पूरा परिवार के कर्जदारो बनल आ अब रूढ़ि परम्परा का खिलाफ जेहाद छेड़ेवाला ओकर ऊ पुरुष दबीज से लैस होके मनता के जोग-टोटका से घेरायेल मंदिर मंदिर कपार पटकत चलेला।

अइसहीं बीच में ऊ बिआह के अपना चूक पर कान धइले रहे आ बस्स चेहरा अलग-अलग विहिया के देखावत अपना खातिर कवनो रास्ता खोजे में मगन मंगले रहे।

हम त पढ़ल-लिखल आधुनिक विचारवाली लइकी पसन्द करेवाला ओ अप्-टू-डेट आदमी के गाँव के मिडिल पास मेहर साथे भांवर फेरत देखले रही आ पंडीजी के हर इध-बीध पर हुक्मी बन्दा नियर डेग बढ़ावतो।

अइसन कवनो बात ला बिना केहू के असरइया करेवाला ओके बेकारी मार से तिलमिला के ट्यूशन के नाम लइकन के गारजियन के गुलामियो करत देखले बानीं आ कारपोरेशन के माहमूली किरानीगिरी खातिर अपना दुराहुत नाता के मिनिस्टर चाचा कन पैरवी में एड़ी रगड़तो। आ अतना के बादो ऊ तेली के बएल नियन बहुत दूर चलियो के कुछुओ दूर ना जा सकल त अपने अपन गोड़ पर खड़ा होखे के एगो मोका ओकरा हाथ लाग गएल...बाकी आज...?

अबहीं हम ओकरा आवे के कवनो ओर-छोर खोजते रहीं कि ऊ बिना कवनो हीला-हवाला के कहे लागल—

—एह महीना में हमार बुकिंग बन्द कर दियाइल ह। हम डाइरेक्टर से बात बता देली हं, ऊ देखे के कहलनहें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'ओह दुश्मन के नाम हमनी के बता दीं ना मास्साहेब जी ?' जोर से हिटकी सुखराम कहलक।

रामरतन मुस्काये के कोशिश कइलन।

'एकर मतलब ई भइल कि तू लोग हमरा के नइखे चाहत। हमरा से दुश्मनी के सिर का माने हो सकेला ? हम तोहन के गाँव छोड़ के जा रहल बानी बउआ !'

लइकन अइसन घेरा बना के खड़ा हो गइलन स, जइसे रामरतन अबहींये रहल होखस। ऊ सब चारों ओर से चिचिआय लगलन स—'हमनी अपने के ना देब, ना त हमनियो साथे चलब····!'

ई बात मामुली जरूर बा कि चोर-गुण्डा मास्साहेब जी कन बुरा नीयत आ खातिर आइल रहे। गाँवन में अइसन घटना होते रहेला। एह वजह से मास्साहेब जी के गाँव छोड़ के गइल एकदम वुजदिली बा। बाकी पिआर राउत के माहमुली बात कहके टारे ल. बेलकुले तइयार ना रहस। मास्साहेब जी के लइये नया तरह के बा, एह वजह से कुछ लोग का बुरा लागत बा। गाँव के अधि- सब लोग रामरतन के समझवलक, गाँव छोड़ के जरूरत नइखे। हमनी के लइकन के पाठ अपने पढ़वले बानीं, ओके अपने के जाते ऊ भुला जइहन स। हमनी कवनो हाल म अपने के जाये ना दे सकीं स. डिप्टी साहेब अपने के बदली कर देस तबहूँ। हमनी के लइकनो के ईहे भरोसा बा कि अपने ई गाँव छोड़ के कहीं ना जाएब।

रामरतन के तबादला के फिकिर ना रहे। ऊ त कतहीं नौकरी कर सके- ल। बाकी दू-चार आदमी गांव में बलवा के कल्पना से डेरायेल बा, उनका जबाब सिर उनकर इहां रहल जरूरी बा।

एह घटना के एक हप्ता बाद मिसिर जी के एगो आदमी आइल आ बोलल, मास्साहेब जी ! मुखिया जी के कहनाम बा कि अबहीं गर्मी के दिन बा, लइकन बगइचे में पढ़ाईं। खरिहान से भुसा उठवा के बरामदा में रखवावे के बा।'

रामरतन एकर कुछओ जबाव ना देलन। बात दू-चार दिन तक टरत रहल। फेरो दोबारा मिसिर जी के भाई सुदामा सिंह के लेके आइल आ उनका पर गरमाये लगल।

'ई स्कूल बा मिसिर जी ! गउशाला ना।' रामरतन जवाब दे देलन।

स्कूल के टैम हो गइल रहे। लइका धीरे-धीरे आवे लागल रहस. स। ऊ सबके कतारे में खड़ा हो जात रहे स। जब मिसिर जी के भाई रामरतन पर हाथ उठा देलन, त लइकन मास्साहेब जी क बेइज्जती बदाश्त ना कर सकलन स आ अपना जान के परवाह ना कके ओह दुश्मन पर बाज नियर टूट पड़लन स। सुदामा सिंह घरे स बनूक ल आवे दउड़लन। एकरा पहिलहीं लइकन के घरवालन सौ-डेढ़ सौ के करीब लाठी, भाला, बर्छी का साथे स्कूल पर आ गइल रहस। निश्चिन्त आ निडर रामरतन मुस्कात पहिला पाठ शुरू कर देलन आ लइकन कतार में खड़ा होके पीछे दोहरिआवे लगलन स—

'जागो रे मजदूर किसान
रात गयी अब हुआ बिहान····

सीना तान के खड़ा ऊ सब अब सुदामा सिंह का बनूक के पैरा हेरत रहस।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

के लइका खराब हो जाई। हमनी गंदा आदमी बानीं जा! गंदा लोग के किरोध अबहीं उनका मालूम नइखे....।

एक दिन त एको लइका स्कूल ना आइल। बाकी रामरतन के घरे-घरे घुमला के असर होत रहे। दोसरका दिने दस-पन्द्रह लइकन अइलन स। एकरा बाद त आस्ते-आस्ते सब आवे लागल। रामरतन के जे उदासी अचानक बढ़ल रहे, ऊ गायेब होखे लागल रहे। पिआर राउत उनका के बड़ा ढ़ाढ़स देले रहस। पिआर मौला मस्त जीव रहस। उनको स्कूल के प्रार्थना बहुत बढ़िया लागत रहे, ऊ अपना लइकन से पूछ-पूछ के सीख गइल रहस। ऊ रामरतन से कहलन—मास्साहेब जी, राउर गाना बड़ा जोशीला रहे। 'जीव करत बा कि अपना लइकन से बराबर गवावते रहीं।'

रामरतन हँस देलन।

'अपने हमर बात अच्छा लागेले ?'

'सपना जरूर आवे लागल बा मास्साहब जी। बाकी अपनहूं का नइखे मालूम कि मजुर-राज कब आई ? हमर बेटा त कहेला, मास्साहेब जी बतावेलीं कि बहुत जल्दीए आई। साँचो ?'

रामरतन सहमती में सिर हिला देले रहस।

एक दिन लइकन गर्मी में स्कूल अइलन स त देखलन स—मास्साहेब जी के कपार पर पट्टी बान्हल बिया आ ऊ बरामदा का नीचे कुर्सी लगाके उदास बइठल बारन। बात ई भइल रहे कि रात रामरतन पिआर कन से लवट के इनरा के भीतरी अन्हार में खड़ा रहस आ अपना बेटी के पुकारत बाल्टी मांगत रहस, तबे तीन-चार गोरे अइलन स आ रामरतन पर लाठी छोड़े लगलनस। रामरतन गिर पड़लन। औरत आ बेटी रोये-चिचिआय लागल लोग। आस-पास के आदमी जमा हो गइल रहे। पिआर राउत होशियारी कइलन, जे बगल के डाक्टर के बोला के मलहम-पट्टी करा देलन।

लइकन हैरत में डबडबाइल आँख से बहुत देरी ले रामरतन के ताकत रहस। एह हालत में लइकन नियर ऊ रो पड़लन। मास्साहेब के रोअत देख के अधिकांश लइको सिसके लगलन स। रामरतन से जे ओकनी का अपनापन मिलत रहे, ऊ का सभे से मिलेला ?....

'तू लोग रोअतार हमार बच्चा!' रामरतन उठ के अपन आ उन्हन के लोर-पोंछत जात रहस।

'तोहरा लोग के का बताईं कि हमर ए बनगांव में के दुश्मन बा। असल में जे दुश्मन बा, ऊ एह रामरतन के ना, हमरा-तोहरा खुशी के बा। ऊ जान गइल बा कि तू लोग आ तोहरा बाप-माई के नासमझी अब मेटाये लागल बा।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खिलाफ मिसिर जी साचहूँ आन्ही तूफान खड़ा कके तबाहला मत करा देस। फेर बच्चन पर धयान देबेवाला पता ना कब आई।....हमनियो के लइका स आदमी सागल बाड़न स, त मिसिर जी, सुदामा सिंह अतना चिढ़त काहे बाड़न ? इ लोग के नक्सलाइट कह के कहीं हमनिए ओर त इशारा नइखे करत।

जेह दिन डिप्टी साहब आवेवाला रहस ओह दिन रामरतन सुदामा सिंह आ बनवारी मिसिर का अलावे दोसरो-दोसरो लोग के स्कूल पर बोलवा लेले रहस जइसे गांव प्राइमरी स्कूल के कवनो सालाना जलसा होय। ठीक घंटी लागते लइकन मैदा का नीचे कतार में खड़ा हो गइल रह स। रामरतन आगे-आगे लाइन गावत जात रहस आ लइकन मगन होके गावत रह स—

"जागो रे मजदूर किसान
रात गयी अब हुआ बिहान
किरणों की आ हट पाकर कमलों ने आँखें खोलीं
ताकत नयी हवा से पाकर गूंगी लहरें बोलीं
भौंरा बन सब ओर गूंजता परिवर्तन का गान।
खोने को हथकड़ियाँ पाने को है दुनिया सारी
गूंज रही हैं दसों दिशाएँ होंगी विजय तुम्हारी
चलो साथियों चल जल रहा सारा हिन्दुस्तान।
जागो रे....।"

बनवारी मिसिर आ सुदामा सिंह आपुस में बुदबुदाये लगलन। ऊ लोग ताव के रामरतन के हर निष्ठा के गारी देत रहे लोग—ई मास्टर लइकन के हड़ के गीत सिखावत बा।....बनगांव में बलवा कराई। डिप्टीयो साहब से ऊ रामरतन के भरपेट सिकाइत कइलक। डिप्टी साहब तोख देके चल गइलन कि रामरतन के बदली के सिफारिश जरूर करींहन। गाँव में बनवारी मिसिर अब से खुल्ला प्रचार करे लगलन कि मास्टर नक्सलाइट ह आ बनगांव में बलवा के चाहता। ओकरा मेहरो-बेटी के चाल-ढाल ठीक नइखे। सब मरद से हँस-बतियावे लीस: आ चमरटोली से लेके बाबूटोली तकले दिनभर घूमते रहेली-....लइका लइकिन के गाना आ नारा सिखावल जाला। लइकन बिगड़ के माटी होइल स।...

बाकी गाँव के सबलोग बुद्धू ना रहे। पिआर राउत त साफ-साफ कह देलन मास्टर साहेबजी बनवारी मिसिर आ सुदामा सिंह से स्कूल खाली करवइलनहं ई नाराजगी बा। स्कूल के कोठरी में उनकर भैंइस बन्हाई त राउत के कांहे स्कूल बिद्या के मन्दिर बा कि भैंइस के बथान....? हम त अपना लइकन के भेजब। अइसहूँ मिसिर जी आ सुदामा सिंह अपना लइकन के स्कूल कहाँ भेजे। उनका त बिश्वास बा कि हमनी के लइकन साथे उठला-नइठला से उन्नह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'कहीं मास्साहेब, कइसे आइल गइल ?'' बनवारी मिसिर टोकलन।

'एगो निवेदन रहे मुखिया जी !' रामरतन दुनो कर जोड़ लेलन, जइसे भीख मांगत होखस।

'सोमार के डिप्टी साहेब आवेवाला बारन'

'तब हमरा का हुकुम बा ?'

'स्कूल खाली करवा देतीं।'

बनवारी मिसिर मुंह फारके हंस पड़लन।

'काल्ह सफाई हो जाई। बस ईहे नू ? कि आउर कुछ ?'

'हम कहां रहेब ? ओह में त सुदामा सिंह जो के भैंइस बान्हल बा।'

'उनको से कहत बानीं।'

बनवारी मिसिर अतने कइलन कि बरामदा में से घास-पुआर निकलवा लेलन, बाकी कोठरियन में ताला जस के तस लागले रहल। सुदामा सिंह त दउड़ावते दउड़ावते मुंआ देलन। बड़ी मुसकिल से कोठरी खाली कइलन। रामरतन, मेहरी, बेटी मिलजुल के बरामदा आ अपना रहे के कोठरी साफ कइलक लोग। गांव के कुल लोग खड़ा-खड़ा तमाशा देखत रहे —ई नयका मास्टर पता ना कवना अगर से आएल बा। दुनियादारी में एकदम अबोध बा निराबुद्धू। गांव के आदमी अतना मूरूख अब नइखे रह गइल। मिसिर जी एकरा नक्सलाइट कह के गांव का गरीब न मजाक काहे उड़ावत बारन ? अच्छा तमाशा बा। जवना आदमी से बदला लेवेके होय भा सतावे के नियत होय, बस पुलिस में ओकर नाम नक्सलाइट बता दी आ लूट-खसोट करे खातिर निश्चिन्त हो जाईं। रामरतन के गांव गनपत टोली थोड़का बड़ा आ बाबू किसिम के लोग रोज निर्दोष आदमियन के अइसहीं पुलिस का मेल-जोल से जेल भेजत रहल बारन। कहीं मिसिरो जी के रामरतन का खिलाफ कवनो साजिश त नइखे चलत ? अबोध आ सिधुआ रामरतन पर गांव के अधिकतर लोग के दया आवे लागल। मिसिर आ सुदामा सिंह एकदिन रामरतन के नोकर चिरा के रहीहन। उन्हन के बरामदा आ कोठरी से निकलवा देत हंसी-ठट्ठा का ? अब त आउर जोर-जोर से इनका के नक्सलाइट कहीहन स—नक्सलाइट रामरतन मास्टर।

मने-मन लोग रामरतन का पछ में होखे लागल। रामरतन के धेयान लइकन का पढ़ाई कावर जादे रहे, अपना ओर चाहे बनगांव के राजनीति का ओर बेलकुले ना। लइकन पर कवनो के दबाव ना रहे, ऊ त टैम से पहिलहीं स्कूल कावर भागत रह स। पहिला बेर उनका सबके भरोसा भइल रहे कि उनका लइको कुछ अधिकार से पढ़ाई-लिखाई कर सकेले आ रामरतनो पहिलका स्कूल मास्टर हवन जे उनका लइका के 'लइका' बूझ रहल बाड़न। कहीं अइसन आदमी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामरतन एकर कवनो जवाब ना देलन आ माथा ध के बहुत देरी ले सोचत रहलन।

कई दिन तक उनकर माथा काम ना करत रहे कि का करे के चाहीं। घरे-घूम के लइकन के स्कूल आवे के निहोरा करत चललन। धीरे-धीरे लइकन होय लगलन स। बनवारी मिसिर के दुआर पर सब कुर्सी पड़ल रह स। बाकी अकेले रहस, दू गो आउर शिक्षक के बनगांव में योगदान करे के आदेश भइल। बाकी ऊ लोग अबही पहुँचल ना रहे। रामरतन का पता रहे कि ऊ लोग अपना के आस-पास बदली खातिर पैरवी करत रहे लोग। रामरतन खातिर त इहाँ उहाँ—कहींहीं कवनो फरक पड़वाला ना रहे।

ऊ भोरे-भोरे बनवारी मिसिर का दुआर पर पहुँचलन। मिसिर जी अनराज—एसो दिन से ऊपर हो गइल एह मास्टर का गाँव म अइला आ अइसन घमंडी के दुआर पर झाँके तकले ना आइल। जवना-तवना से मिसिर जी बोलियो रहस कि ई राम रतन महतो नक्सलाइट ह। परम्परा, धरम के एकरा कवना लइखे। सबसे बराबरी के बात करेला। एह मास्टर से तनी होशियार रहे के बा। सुदामा सिंह रामरतन के देखते नाक-भौं सिकोड़े लगलन। दोसरा तरफ का हैरानी रहे कि ई नयका मास्टर दुआरें-दुआरे घूम-घूम के लइका बिटोरत बा। एकरा पहिले तक कवनो अइसन मास्टर ना रल ख जे दोसरा के लइकन के चिन्ता फिकिर करो। स्कूल में अइसनो लइका-लइकी आवे लागल रह स बाप-मतारी के स्कूल नाम से कवना मतलब ना रहे। कुँआ के पिछुत्ती आम के नीचे गाँव-भर के लइका भर जा सऽ। कुछ खासे लोग अबहीं तकले अपना के ना भेजत रहे। राम रतन के गाँव अइला के दोसर के दिन से आम के का नीचे पढ़ाई शुरू हो गइल रहे। स्कूल ठीक टैम से साढ़े दस बजे लाग जात छुट्टी ४ बजे साँझ खानी होय। गाँव-घर खातिर इहो एगो नए बात रहें। गो बुद्धिमान लोग त आपुस में मजाको करस कि एह तरह जो पढ़ाई चलत रह त गाँव के सब लौंडा विद्वान हो जइहन स। सब कुता काशीए जाई त के हँड़ी! ई सब खबर रामरतन का मिलत रहे। बाकी ऊ अबहीं तकले इहाँ के समुझ ना पवले रहस एह से कवनो जबाब ना देत रहस। एगो आउर तुके उनका अचरज होत रहे, सुदामा सिंह कहत रहस—ई नयका स्कूल बेइज्जता आदमी ह। बेटी-बहू के लेके चले के का जरूरत रलख? ओकर वाली औरत के देखते हम पहिलहीं समुझ गइल रहीं कि ई औरत खानदानी खानगी ह—खानगी। रामरतन के मुड़ी सुनते गरम हो गएल रहे, बाकी के ना समझला का वजह से परहेज करत रहस। कइसन सुदामा सिंहवां आदमी बा। ओकरा अपना बहू-बेटी बा कि ना!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

'काहे मारलन बनवारी मिसिर ?'

'कहेलन उनकर पुअरा नोकसान होले। कवनो सार के स्कूल पर देख लेब त टांग काट देब।'

'अइसन बात बा ?' रामरतन घबड़ा के आँख बड़-बड़ क लेलन।

'हँ जी, एही से त हमनी ओने तकवो ना करीं।'

'तोहनी हमरा देख के भागत काहे बार ?'

'पहिले वालू बड़ा मारत रहस।'

'हम ना मारब।' रामरतन हँस देलन।

'अपने हमनी के नया पंड्डि जी बानी नू ?'

'पंड्डि जी ना, हम तोहरा लोग के नया शिक्षक बानी ?'

'शिक्षक का होले ?—मास्साहेब जी नू ?'

'हँ, जे शिक्षा देला, जे तोहरा लोग के नया रोशनी देला। हमरा के से पंडी जी मत कहीह लोग।' लइका उनका के ताके लगलन स। ई नयका जी पहिलका नियर ना खिसिआह लागत बारन ना बुढ़ुए।

'अपने हमनी के कहाँ पढ़ायेब मास्साहेब जी ?' लइकन नगीच पूछलन स।

'स्कूल में आउर कहाँ ?'

'स्कूल में त मुखिया जी के भूसा रखल बा। ऊ केहू के भीतर घूसे ना देत आ हमनी उहाँ बगइचा में पढ़ीले स। पिछिलका पंडी जी उनका भूसा राखे स्कूल हरमेसा खातिर दे देले बारन।

'ऊ कहाँ रहत रहस ?'

'मुखिया जी के दुअरा पर आ कबहूँ-कबहूँ बगइचा में।'

'बगइचा में !' रामरतन मने-मने फुस-फुसइलन। बुझाता बनवारी मिसिर गाँव के सबसे बड़ आ इज्जतदार आदमी हवन। एही से लइकन तक पर उनका दबदबा बा। त अपना गाँवें नियर इहँहूँ आतंक बा का ?

'आउर कुछ इहाँ का बारे में बताव बेटा !' रामरतन पूछलन।

'गर्मी में इहाँ ढेर लोग रात में सूतेला। रात-भर ताश खेलेला आ गांजा पीएला।'

'बिजुली रात भर जरेले ?'

'हँ !' लइका बोलल, 'केहू जरावे से मना ना करे।'

'तब इहाँ शिक्षक के रहेला घरो नइखे ?'

'बा काहे ना ? उहाँ इनार के पिछुत्ती, सामने वाला। बाकी ओमें बुद्धू सिंह के भैंइस आ नोकर रहेले। अपने कहाँ रहब ?'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गत-भूसा से भरल रहे। रामरतन देरी ले अकबकायेल रहलन। कुछो समुझ में आवत रहे—ईहें स्कूल बा कि ऊ केहू के दुअरा पर भटक आइल बारन। तबे आदमी उनका के टोकलक— 'शुभ स्थान कहाँ पड़ी पंडी जी ?'

'गनपत टोला।'

'अपन नाम का बा ?'

'रामरतन।'

ऊँ। आदमी चउँकल।

'आगे पीछे कुछुओ ना ?'

'जी, खाली रामरतन····।'

'अच्छा, रामरतन जी। अबहीं त अपने अइबे कइलीहं, आराम करीं।' आदमी चल गइल।

रामरतन का हँसी आ गइल। कइसन बनइला गाँव ह-जइसन नाम, ओइसने सबब चलन बा। जे स्कूल में आइल, ऊ लइका से लेके बुढ़वा तक ला पंडी बाले। रामरतन के एही चलते कुछ लोग पंडी जी कहेला। ओह आदमी के अपन नाम रामरतन सुन के उनका थोड़का अचरजो भइल रहे। बाकी ही ले अपना भविष्य के अन्हार में खड़ा देख के ऊ स्कूल कावर ताकत रहलन। बेटी आ मेहर साथ पुअरा आ खर-पात के एक बगल समेट के बइठ ।

आस्ते-आस्ते साँझ हो गइल आ साँझ के बाद रातो होखे लागल। तब ओह बुझाइल कि भूख जोर से लागल बिया। ऊ लोग बकशा खोलके घर के चना क। स्कूल का इनार पर बाल्टी पड़ल रहे। चना खाके भर पेट पानी पीलक पुअरा में घुस के ओह रात चुपचाप सूत गइल।

भोरे कमी-बेस एक दर्जन लइकन इनका भीरी जमा होके उनका के खेल-बइसन देखत रहस। रामरतन अन्दाज कइलन— ई सबके सब स्कूले के हन स। छव महीना से पढ़ाई-लिखाई छूट गइला से उन्हन के भीतर हे। जब ऊ ओकनी कावर बढ़लन त लइकन धीर-धीरे भागे लगलन स। का हँसी आ गइल, 'भइया रामरतन; कवना टापू में ससुरा डिप्टी तोहर ग देले बा।'

सो लइका के छोड़के सब भाग गइल रहे।

ओइली भागत काहे बार ?' ऊ पूछलन।

मुखिया जी मारेलन।'

कौन मुखिया जी ?'

पकारी मिसिर।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पहिल पाठ

☐ मधुकर सिंह

रामरतन बैलगाडी से बनगाँव प्राइमरी स्कूल का सामने उतरलन। गाँव हलचल मच गइल कि स्कूल में छव महीना का बाद नया पंडीजी अइलनह। जब स्कूल के मंजूरी मिलल तब से रामरतन इहाँ के तीसरका मास्टर हवन। गाँव दूगो आउर मास्टर के जगह बा बाकी अबहीं तकले एके मास्टर इहाँ रहल ह। मास्टर कागजे पर बाड़न। एकरा पहिले जवन मास्टर आपन बदली कराके से चल गइल रहस उनका बाद से केहू ना आइल रहे। छव महीना गुजर रहे। सुपरिंटेंडेंट कन एह गाँव के कुछ उत्साही नवजवान बहुते दउर-बरहा लगा रहस बाकी ओ लोग का बराबर एके गो जवाब मिले—अपने सबसे आगे सरकार का बा। शिक्षक के नयकी बहाली होते तीन गो शिक्षक इहाँ जरूर देल जाई। रामरतन का तीन-चार दिन पहिले चिट्ठी मिलल रहे। उनका दिन के भीतर योगदान कर लेवे के हुकुम रहे। रामरतन का साथे उनकर मेहरारू बेटियो रहस। गाँववालन के देखके अचंभा होय बाकी रामरतन के सामने आ रहे। दू-तीन साल से ट्रेनिंग कइला का बाद शहर मे पड़ल रहत रहस। बारह के बेटी भइली तबहीं ऊ नसबंदी करा लेले रहस। पता ना, बेरोजगारी जिनगी खातिर रह गइल त सूअरन के बच्चा जइसन गहेट के गुजर कहाँ से कारहन। टके बेटी औरत के परवरिश करत रहस। ई त संयोग कहीं कि ट्रेनिंग कइला तीन साल का भीतर उनकर बहाली हो गइल रहे आ बनगाँव प्राइमरी स्कूल खातिर पहिला जगह रहे। उनका पाले सामान एतना कम रहे कि लागते कि इनकरो कवनो अपन दुनिया बा। बस छोट-छोट बक्शा रहे, एगो बिस्तर र न गो मोटरी में आउर-आउर समूचा सामान। केतना लोग क त हँसियो रहे कि पंडी जी नोकरी करे आइल बारन कि बेटा-बेटी लेके तीरथ करे। ले त अइसन पंडी जी इहाँ रहल बारन जे शनिचर के घरे भागस त सोमार के तकले लवटस। कभी कभार त आवे म हप्ता लगा देस। स्कूल के सोझा बैलगाड़ी खड़ा भइल त एक दू गो लोग पूछबो कइलक—अपने एतवारा के जाइब का? रामरतन बड़ा सीधापन से हँस के मूँड़ी हिला देले रहस—'ना, हम इहाँ से कबहूँ ना जाइब।'

रामरतन, उनकर औरत आ बेटी बैलगाड़ी से सामान उतार के बहुत ले भउँचक खड़ा रहस। स्कूल के कोठरी में ताला लागल रहे आ बरामदा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ गँवई-गँवार लउके वाला आदमी तड़ना गइल। ओकरा तेवर में अब
घट गइल रहे—कुछे देर में ऊ अक्खड़ हो गइल रहे। ऊ अपना मुट्ठी के
में लहरा के कहलस—'....जज साहेब, मरता का ना करे? हमरा भूख के
समाज का लगे नइखे, सरकार का लगे नइखे, अदालतो का लगे नइखे।...
हमरा खाली अपना भूख के देखे के पड़ी....दोसरा का भूख के देखत-देखत
जाएब। रउआ हमरा भूख से सहानुभूति बा—ए खातिर धन्यवाद।
ई सहानुभूति हमनी का भूख के भरमावत आइल बा, आँख पर पट्टर बान्हत
बा, करेजा में ठटल हियाव के ढील करत आइल बा।....रउआ लोगिन के ई
भूति साँचो जहर बा जज साहेब। बीस टकिया का रूप में दीहल ई सहानुभूति
भीतर का धनकत लहोक के बुता दी। हम अब नइखीं चाहत कि ई
बुताव, ईहे चिनगारी हमरा खातिर राह बनावत जाई, रास्ता पर आइल हर
के जरावत, धनकावत जाई। हम अपना आग के चिन्ह लिहलीं।....आच्छा,
द।'....

जज साहेब ताकत रह गइले। ऊ आदमी तेजी से गेट कावर बढ़ गइल।
का बेरा जे संकोच आ झिझक रहे ऊ बिला गइल रहे। ओकर गोड़ अब
पड़त रहे आ तरा तर कें दूभ बुझाअ कि दरमसा जाई। ऊ कसल मुट्ठी
गेट खोललस आ ओकरा कें बिना बन्द कइले सड़क पर बढ़ गइल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जज साहब चुपे रह गइले। उनका पूरा लान में सांय-सांय बहत हवा बेचैन लागल। उनुका अपना भीतरो कुछ लेसले रहे। भोरे-भोरे क, जाने से ई बउचट आके मूड खराब क देलस। बाकी, बात जवन कहता ऊ करेवा देता, मन का लाग जाता।

—'हम भूखले फुटपाथ पर का सुत मकीले ?' ऊ आदमी एगो चिरई उड़त देख के अचक पूछलस।

—'ना, फुटपाथ सुते के जगे ना ह। एसे लोग का आवाजाही में बा होई। फुटपाथ के छेंकलो अपराधे ह।'

—त फेर रउअें बताईं कि हम का करीं। हमरा भूख लागल बा। शरीफ नागरिक बन कें रहे के चाहतानीं। कवनो अपराध कइल हमार इरा नइखे।....बाकी, एगो बात साफ बा। हमरा रोटी चाहीं। भूख मेंटावे खा रोटी के जरूरत बा। हम का करीं ?....' गांव का ओह मजूरा का चेहरा कठोरता आ गइल रहे। आंख में से एगो निश्चय झांकत रहे। बगल में लटक मुट्ठी बन्हा गइल रहे। अब ऊ रह-रह के तरहथी ना मीसत रहे बलुक कसइला से ओकर नस-नस तन गइल रहे।

जज साहेब ओकरा चेहरा के बदलत रग निहार के सहम गइले। अब आदमी दोहमत में नइखे! एकरा भीतर चिनगारी दहके लागल बा। एह चि गारी के तोपल-झांपल अब का तनिको सँपरी ?

—'हम का बताईं। हमरा लगे कवनो-उपाय नइख।' जब साहब आंख बुझल बुझल रहे आ बोली में तनिको खनक ना रहे।

—एही से पूछतानीं कि रउआ जज हईं। आज खंखार के हमरा के दीं कि हम का जिन्दा बानी ? रउरा कानून का नजर में का हम जिन्दा बानीं ऊ सोझे जज साहेब का आंख में झंकलस।

—एकर उत्तर हम का दीं ? एही से बचे खातिर त अतना देर ले मेंहटिय हईं। हम कह नइखीं सकत। तूं जिन्दा रह सकतार बाकी खाली कानून के। कानून का हद में तहार निस्तार नइखे लउकत। सरकार आ समाज तहा के ओह कगार पर ले आके ठाढ़ क देले बा....। हमरा तहरा से पूरा सहानुभू बा।...हम अपना लगे से तहरा के दस-बीस दे सकतानीं बाकी कानून तहार म नइखे कर सकत, तहार भूख नइखे मेंटा सकत।' जज साहेब के आंख झुक रहे। आवाज में मजबूरी रहे। पहिरल कुरता का जेब से ऊ एगो बीसटकि ओह आदमी का ओर बढ़ा देलन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—ई हम कइसे कहीं। सभे जनता ह।

—ना, हमरा अइसन नइखे लागत। रउआ पांच बेकत बानी त रहे के बड़ बगला बा। रउआ से चौगुना-पचगुना जमीन धके मंत्री लोके महल कोमें मजूर राख के सरकारी पइसा से फूल-पत्ती उगावल-सजावल जाता, आलू के खेती होता! का ऊ जमीन सरकार के ना ह?

—सरकारे के ह।

—त उहे लोग असल में जनता ह। 'जनता' जे बा से एमेले बा, अफसर कर्मचारी बा, मंत्री बा, मुख्यमंत्री बा—हमरा अइसने बुझाता। हमहूं जनता हीं त हमार मड़ई उजाड़े का पहिले हमरो के कवनो कोना में बइठावल जाइत। तनी जगे छेकला से केहू का सकेता ना होइत। जानतानीं सरकार, हमरा एह सुघड़ बेटा भइल रहल ह। अबहीं पनरहो दिन के ना रहे। पलानी दिआइल त घाम-पानी के आड़ ओरा गइल। दू दिन ऊ पानी में भींजल, सूखल।....अतना तेज बुखार भइल कि...ओही से ऊ आखिर रात चलिए ...रउआ न्याय करीले, तरजुई में पसंघा ना होखे दीं। बताईं, हमरा ओह पूत बेटा के खून के कइल? ओकर सजाय केकरा मिले के चाहीं?'....कहत-कहत ओह गँवई मजूर के गला भर आइल आ आँख से दू ठोप लोर चू के दूभ पर गइल।

जज साहेब चुप रहलन। उनकर आँख नीचा हो गइल रहे। सोचत कि का हो गइल बा एह आदमी का? आज ले केहू उनका से अइसन दू टूक ना कहले रहल ह। वकील लोग के दांव-पेंच में अकिल-गियान बाझल रहेले। उहर का जबाब देसु?

—मालिक, रउये माई-बाप बानीं। बरियार का जोर-जुलुम से कमजोर के जर-गातर के रछेया कइल न्याय के धरम ह। ह नू?

—हँ, हँ। अदालत एही खातिर होला।

—त हम रउआ कइसन लागत बानीं? कमजोर कि बरियार? हमार के करी? राउर अदालत का हमनी खातिर नइखे?' अबकी एह गँवार के तीर सोझे जज साहेब का थुथुना मे ठेकल। ऊ अपना आराम कुर्सी पर से—' अदालत में तूं फरियाद कर। तहार रक्षा न्याय जरूर करी।'

—'हमरा लगे त एक बेर खाए के फुटहा दुलम बा आ पाले दुगो पइसा हमार बेटी आपन अस्मत बेंच के आ मेहर हमरा आँख का सोझे दोसरा का दुगो समकरा पेट में दूगो दाना नइखे जा पावत।' 'हम कहाँ से ले आइब कोर्ट के फीस, वकील के फीस आ....।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

अपराध ह। तूँ भीख नइख मांग सकत।' जज साहेब हाथ आ मूड़ी दुनू हिला हिला के मना कइले।

—'त, सरकार का हम चोरी कर सकीले ?' ऊ हाथ जोड़ के पूछलस ओकर कंठ कुछ-कुछ मेहरा गइल रहे।

—'चोरी कइल त जुर्म ह। जा, अब हमार आउर समय नष्ट मत कर' जज साहेब का चेहरा पर तनाव के रेघारी पड़ गइल रहे।

—'पेटो भरे भर हम चोरी नइखीं कर सकत ? हाथ का काम नइखे त भूख मेंटावे भर कतहीं से दू-चार दाना अनाजो नइखीं ले सकत ?'

—'चोरी ककरी के होखे भा हीरा के-चोरिए ह आ कानून ओकरा खा सजाय देला।'

—त ककरियो का चोर का ऊहे सजाय मिली ? आ जे सभकर हीरा के धोखा से अपना तिजोरी में लुका लेता ओकरा कवनो सजाय ना होई ?

—मामला बिना अदालत में चलवले कइसे सजाय होई ?

—'जाए दीं मालिक, हमरा भूखे आँखि में जोन्ही फुलाता। हुकुम होई त हम आपन ई फाटल-पुरान कपड़ो बेंच के पेट के आग बुतइतीं।' ऊ आदमी चिरौरी कइलस।

—कानून तहरा के लंगटे घुमे के छूट नइख दे सकत। ईहो अपराध ह।

—हमरा घर-दुआर नइखे। एक जगे एगो पलानी धके बेटा-बेटी आ मेहरा जवरे रहत रहीं। एक हफ्ता भइल सरकार के हाकिम लोग मजुरा लेले आइल नोंच-नोंच के बीग देहल। घर मे जे लुगा-फट्टा आ बर्त्तन-बासन रहे सेहू लाद ले गइल लोग।...रोकनीं त देखीं एक लाठी हमरा पीठ पर बजर के चिन्हासी उ दिहलस।...का' ओह लोके कवनो खसूर ना भइल सरकार ?

—तूँ सरकार का जमीन पर जबरदस्ती पलानी धइले रहल। जबरी धइल त कानूनन अपराध ह नू।

—ऊ जमीन केकर ह मालिक ? हमार, समाज के कि सरकार के ?

—सरकार के।

—आ सरकार केकर हवे ?

—प्रजातंत्र में त सरकार जनता के होले।

—त हम का जनता ना हईं ? सरकार के मालिक जनता त ओह जनता के मालिक के ? मुख्य मंत्री...कि मंत्री...कि हाकिम लोग...? कह दीं सरकार, हम जनता ना हईं।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत रहे। महँगाई अतना बा कि···कतनों जांगर ठेंठवला पर जवन पगार
रहे ओमें बालो-बच्चा पेट भर ना खा सके। भरपेट भोजन मंगला खातिर
हो गइल।···चारूओर घुम फिर के देख लहिलीं। एही शहर में हमरा
हजारन-लाखन मजूर बेकार बाड़न····।'

—अच्छा।

—जी, हम कवनो यूनिअनो के मेम्मर नइखीं, कवनो पाटियो में नइखीं।
लोगन के कवनो संगठन बड़लो नइखे। बस एक अदद आदमी भर बानीं आ
बानीं कि आदमी बनल रहीं।

—आगे बोल।

—जबसे छंटनी भइल हम बहुते कोसिस कइलीं कि कवनो दोसर नोकरी
जाव बाकी ना मिलल···। कवनो जोगार ना बइठल। केहू सुनत नइखे। केहू
नइखे कि हमरो लगे एगो पेट बा जवन कुछ खाजेला। केहू का अतना सवाँस
कि अतनो जानो कि हमरो भूख लागेला।

—सरकार के ना लिख ल ? इहाँ त जनता के राज बा। तहरे लोगिन के
ल, तहरे लोगिन खातिर····

—ना मालिक, केहू ना सुनल, केहू ना मानल। मंत्री जी किहां गइलीं त
दीहल गइलीं। एमेले—कवनो बैपारी से होटल में बतिआवत रहस आ
साहेब औल इण्डिया का टूर में बाझल रहस····।

—हूँ s····।

—बस रउअे बता दीं। पानी के पानी आ दूध के दूध करे के रउअे हक
करज-रिन काढ़त-काढ़त अगुता गइल बानी। बेटी-मेहर पटुआइल बाड़ी।
चला पर पेट नइखे भरत।····भूखे मर रहल बानी। का हमरा, हमरा बाल-
का, हमरा मेहर का जिए के कवनो हक नइखे····?'

जज साहेब के नजर झुक गइल। कुछ पल बिलम के ऊ एक हाली अपना
इमारत के देखले···आ एक हाली गेट के। फेर गंवे से कहले—'भाई,
का हद में रह के तूँ कवनो काम कर सकेल।'

—सरकार, हम भुखाइल बानीं। भूखे हमार आंत कुलबुलाता।····एक
से पेट का जरले नन्हका रात टूट गइल ह····ओकरा के गंगा का लहर में
कहलावाँ दहवा के सोझे रउओ इहाँ चलल आवतानीं।····का हम भीख
कोले ?

—ना-ना। भीख मंगला से मन मरेला। भीख मांगल इन्सानियत का
धब्बा ह, समाज का मुँह पर करिखा पोतल ह। भीख मांगल एगो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

चिटल, कुछ गन्दो रहे बाकी चेहरा देखला पर ऊ शरीफ लागत रहे। हो सकेला कवनो नीमन खानदान के होखे—समे बाउर भइला पर 'हर डेग पर नचा देले चिचिरी लिलार के।' ई बेचारा ओही चिचिरी का चक्कर में दरदिआइ बुझाता।

जज साहेब के बिना खोनसइले, खिसिअइले चुपचाप अपना ओरी ताकत देख के ओह गंवई मजूर का कुछ दम मिलल! कई दिन के बान्हत हियाव के बान्ह छितराइल ना। ओकरा अनेसा रहे कि कहीं देखते साहेब का खीस बरल त ओकरा हूब के पतई त उधिया के ओही में जर जाई। असरा के तनिको ओही ओमें नइखे नू बांचल!

—'सरकार! एगो बात पूछे आइल बानीं।' ओकर जीभ कुछ लटपटाइल बाकी ओकरा आंख में अइसन कुछ रहे कि जज साहेब चुपे रह गइले।

—'बस एक टुम। रउआ न्याय के रखवार बानीं। किरपा कके ई बता दीं कि हम जिन्दा बानीं कि मरल।' अब ओकर डर खतम हो गइल रहे ओकर शरीफ जइसन लागत चेहरा कुछ तन गइल रहे।

—'भोरे भोरे काहे समय बर्बाद करे आ गइल। ईहो पूछे के बात बा··· ऐ··?' जज साहेब के मूड़ी तनी डोलल आ उनुकर सुर तनी झुझुआ गइल।

—'मालिक, हम पूरा होश में बानीं।····हम ई पक्का निहचय क लेले बानीं कि अब 'हम जिअत बानीं कि मुरदा' एकर पता लगा ली! हम अटट देहात में रहे वाला एगो लोहार हईं!···

—'पहिले ई त बताव कि, दारू-ओरू नइखे नू चढ़ल?'

—ना सरकार, एको चिरूआ ना! हम पूरा होश में बानीं! फरकों स दारू नइखीं देखले! एको डगरत दाना पेट में नइखे गइल। दारू कहवां स भेंटी?'

—'त फेरू अइसन सवाल काहे पूछतार? हमरा सोझा ठाढ़ होके बोलत बतिआवत बाड़ आ तहरा ई पता नइखे कि जिअत बाड़ कि मरल?'

—सरकार, हम बेकार बानीं। रउआ बेकार आदमी का जिनगी के अन्दाज ना होई।'

—कइसे बेकार हो गइल?

—गांव से आके एही शहर का एगो मिल में काम करत रहीं बाकी जब महीना भइल हमार छँटनी हो गइल।

—काहे?

—'हमार कवनो खसूर ना रहे। सभ लोग मिल-जुल के दरमाहा बढ़ा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आग के पहिचान

□ मलय

इमरजेन्सी के भूत देश का माथ पर से उतर गइल रहे। अचानके भेंटल देवे के मौका जनता ना चुकल आ सउँसे देश एगो ववंडर से निकल के अब के इन्तजार करत सड़क पर ठाढ़ रहे। आंधी थिराइल लागत रहे। बुझाइल अन्हार के गर्हे कटल आ भिनुसार के मुसुकी अब जिनगी में कुछ रस घोरी। एही उमेद में दिन बीतल, हप्ता बीतल, पखवारा आ महीना बीते लागल! बाकी, कुछ बदलल ना—फरीछ होखे के भरम भर हो गइल रहे। पूरब में दउड़ल अबहीं ललिआइलो ना रहे।

एगो जज साहेब अपना कई एकड़ में फइलल बंगला का लान में बइठल। उनुका भोर के किरिन बड़ा नीमन लागत रहे। आंख मूंद के ऊ एह के लूटत रहस-भीतरे-भीतर। दूभ का फुलुँगी पर रात के लोर लटकल रहे। जज का सोझा टेबुल पर चाय के पिआली धइल रहे, जवना से भाफ निकल-के किरिन के ललचावत रहे। लमहर रंगीन चोंगा पेन्हले मेम साहेब दूभ गलइचा पर नंगे पाँव चले के सुख बटोरत रहली। ठढई आ दूभ का फुलुँगी कला से लरम तरवा में गुदगुदी बरे त कतहीं उनका अधेड़ मन के करेजा ले जाय। पलक रह-रह के झँप जात रहे।

एही बीचे 'चरं-चों-चरं-चों' कके गेट खुलल। जज साहेब का माथा पर पड़ गइल। ओने नजर जो उठल त ऊ फटही पुरान झिरकुट पेन्हले एगो टाइप आदमी के आवत देखले।

बरदली कतहीं गइल रहे। ऊ आदमी लजात-सरमात, गवें-गवें गोड़ बढ़ावत साहेब का नियरा ले आ गइल। गेट से लान तक आवत में ऊ कै हाली, तनी बिलमल जनु सोचत होखें कि इहां आके ऊ जज साहेब के कीमती बर्बाद त ना कइलस, कि कतहीं कानून के कवनो गुत्थी सोचत साहेब के ओकरा अइसन फटेहाल आम आदमी के देखला का झटका से मोंच त ना जाई, कि हरियर कचनार प्रेम से कतरल—छाँटल दूभ का एह गलइचा पर में सँउनाइल ओकरा गोड़ के छाप उखड़ के साहेब का लरम दिल के चोटाह कर दी, कि····कि····। बड़ा सकोचले ऊ आके जज साहेब का लगे ठाढ़ हो।

जज साहेब के नजर ओकरा ओर उठल। कपड़ा त पुरान रहे, फाटल-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

आ ए सब लोके गोड़ो छान दिहल । पाँचो आदमी के बहरा ले आके एगो गाड़
तर धइल गइल आ रामप्रीत के हुकुम भइल कि सब सरवन के जीअते फूंक दिआव।
ना रही बांस आ ना बाजी बँसुरी । साँप के मरला का बादो मुंह कूंच दिआव।
ओसहीं ए रामफलवा के गतर-गतर काट के फूंक दिआव ।....फेर, कवनो सार के
मूड़ी उठावे के हियाव ना पड़ी ।...''

सउँसे गाँव से सूखल लकड़ी आ चउकी एकट्ठा हो गइल । जेकरा जवन चीज
मिलल आ गइल । घर में के तेल जवरियाइल आ डालडा टीन-के-टीन आ गइल
चिता सज गइल —ओमें आग जरे लागल । रामप्रीत जब कटार लेके लगे पहुँचल
रामफल घृणा से उनका मुँह पर थूक देलस । सउँसे मुँह बोथा गइल । महतो लोग
रामफल के गतर काट-काट के पहिले आग में डालल आ फेर उनकर लाथ आही
फेंक दिहल । उनका संघ-तियनो के ईहे हाल भइल । धू-धू कक आग जरे लागल
चारूओर चिराइन गन्ध फइल गइल । एही बीच केने से दो आके सुन्नरी जिअते ओ
आग में अपने कूद गइल ।

गाँव के एगो गरीब सोनार के पनर-सोरे बरिस के लइका किरासन तेल बेंच
बेंच के गुजर करत रहे । जब ओकरा से किरासन तेल मांगल गइल त ऊ लाथ
देलस । भीड़ ओकरा घर में ढुक के दू टीन तेल ढूंढ़ लेलस आ ओकरा के भर ही
कुहलस । ओहि में केहू कहल—'एहू सरवा के झोंक दे आग मे!...
बोलता....।'

अपना जीविका खातिर झूठ बोले वाला ओह बेचारा के भीड़ उठवले-उठवले
ओही आग में डाल दलस । ओकर बूढ़ मतारी पहिले त हक्का-बक्का रह गइल
बाद में भोंकार पार के रोवे लागल ।

आज अनगुते से दंगा के खबर थाना का रहे बाकिर पुलिस के कहीं पता
रहे । महतो टोली के नवजवान आग का चारुओर चौकस खड़ा होके खार-खार
लाश जरावत रहलन आ आग के लपट ऊपर-ऊपर ले उठके एह शहादत के इतिहास
आकास का पन्ना पर बनावत रहल ।

भोर होत-होत ओजा एको चुटकी राख ना बाँचल । सभी लोग सहोर
नाहर में दहवा दिहल ताकि बिहान भइला पुलिस का कवनो निसानी ना मिले ।

गाँव के महतो लोग एकोरी देश में लोकतंत्र का तस्वीर पर राख डा
रहल आ दोसरा ओर पूरा चमटोली गवे-गवे अदंक में डूबल आन गाँव का चमटो
में सँसरत रहल ।

पह फाटल त रामफल का शहादत के लहोक जइसे पूरा पूरुबी क्षितिज
कइल के लाल टेस हो गइल रहे ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव भर में अकेला महतो रहस जेकरा से रामफल का भा चमटोली का अउर का कवनो अनेसा ना रहे।

अन्त में सँझलौका में रामफल चार पाँच गो सँघतियन का जवरे महतो जी का में आ गइले। आमने-सामने बतकही होखे लागल। सदर दरवाजा बन्न कइल कीली ठोकल रहला से बाहर से केहू का आवे के बात वा रहे। आमतौर पर कवनो मार पीट के अनेसा ना रहला से आ पुलिस का जाल में फँसे का डर से झोक में आपन-आपन दाव देखा के रामफल के गोल आपन जगे-ध लेले। महतो किहाँ भी बहरा से आइल अब कुछे लोग बिलमल रहे।

आपुस में आँख में आँख डाल के जब बतकही जमेले त मन के ढेर मइल साफ भाला। तय हो गइल कि केहू महतो टोली के मरद अब चमटोली का लइकिन पर नाह ना डाली आ बेगार ना ली। चमटोली के लड़िका-सयान मन से काम करिरें टिअइहें ना। एके गाँव मे रह के वैर रखल गाँव के सत्यानास कइल वा। ई त आन गाँव का जवरे झंझट में नू लागे के चाही। चमार भा चउधरी सभे ही गाँव का माटी में नू खेल-कूद के सयान भइल वा आ फेर ए माटी मे मिल के वा!

रामफल मान गइले। रामप्रीत आ रामफल दून जाना हाथ मिलवले। फेर खुशी में कुछ पी-पा लेवे के प्रस्ताव भइल त तनिए देर में बोतल पहुँच गइल जल मांस का कुटिया पर चुक्कड़-के-चुक्कड़ ढराये लागल। सभे खूब छक के त। रामफल भीतर से खुश रहले—एसे तनी ढेर चढ़ गइल।

रामफल का पता ना रहे कि रामप्रीत के मन साफ नइखे आ ना घरभरने कर भरम रहे। ई लोग निहचित्त रहे कि एगो दीवार में के ईंटा खसका- के एगो नवहा छोकरा गोड़ जँतले घर में ढुकल आ सभकर नजर बचा के की कीली खोल देस।... फेर त खमाखम बीस-पच्चीस आदमी भाला-बर्छी लेके पतले ओह जगे पहुँच गइलन जहाँ रामफल सुलह भइला के खुशी मनावत ल। जब ले ऊ आ उनुकर सँघतिया लोग धोखा के बात बूझे तले बेकाबू ह लोग। पलक झपकत सब हो गइल।

पाँचो जाना के बाँह चउर-चउर के पाछा बान्ह दिआइल आ घरभरन का को कइला पर केहू कान ना कइल। ऊ रामप्रीत के गोड़-ध लेहले त एक लात पेट में लागल कि 'बाप रे...' कहके ओहिजा ढुहरिया गइले। रामफल का में खून उतर आइल। ऊ लात चला दिहले जवन निहुरल रामप्रीत का मुँहो पेंट बइठल आ झाईं आ गइल। ओठ फाट गइल त खून के एगो लकीर खींचा। रामफल के चेहरा अदंक से ना घृणा से भर गइल रहे।

रामप्रीत का मुँह पर खून देख के महतो टोली के नवहा आग हो गइल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रीत महतो के सनीचर आपन पूरा निगाह डाल देलस। उनुकर बिअहल बेटी चल
ससुरार जाए के चाहे, जब पंडित जी ओकर दिन धरे के चाहस त रामप्रीत बाधा
डाल देस। ऊ उनुका कन्या के आपन कनिया बूझ के भोगे लगले। एक दिन पंडित
जी कुछ तरख भइले त रामप्रीत घर मे ढुक के उनका के हुरपेट देहले!

पंडित जी जब रोवत-गिलगिलात रामफल से आपन दुखड़ा सुनवलन त रामफल
से ना सहाइल। ऊ उनुकर दुख हरे के बचन देके निहुचिन्त कइले आ कहले
"घबड़ाई मत। तुरन्ते राउर बेटी ओह चण्डाल का जाल से बचा लिहल जाई।
आ, साँचो एक दिन ऊ बेचारी गाय अस सुधा ब्राह्मण-कन्या अपना ससुरार से
सलामत पहुँच गइल। पंडित जी का साँस मे साँस आइल आ पहिलही से ओटा
रामप्रीत अब गँहुअन खानी छत्तर कढ़ले डंकरत-फुँफकारत रामफल के काटे खातिर
व्यग्र हो गइले।

रामफल का बढ़त-चसकत मन के अगर बल आ डटा से ना रोकल गइल
फेर महतो-टोली के नाक कटा जाई, सब रोबदाब माटी मे मिल जाई!

एकतरे से दूनू ओर से दिन रोपा गइल आ आपन-आपन बउसाव तरह
तेयरी होखे लागल। हीत नात के खबर चहुँपावल गइल। जवार के कुछ
गरामी लोग जुट क रामप्रीत महतो किहा डरा डालल। मुर्ग-मुसल्लम चल लागल
बातल चढ़े लागल। घर से दूआर ले गहमागहमी बा। रामप्रीत आ सही
आवभगत में बाझल बाड़े जइसे कहू उनका दुआरी बारआत लेके आइल होखे रा
उठा ना धइल। दूर दूर के लठघर दुसाध चमार छाती तनल आ लाठी
चमटोली पहुँच गइलन।

आखिर दूनू दल में हचमहच हो गइल। कस के लाठी चलल। या
दगाइल। कतने जाना के कपार फूटल। चमटोली बीसे पड़ल। महतो गोल का
हटे के पड़ल। दूपहरिया का पहिलही जवार भर का हरिजन का सजग एकजुट
विरोध कइला से रामप्रीत महतो का अपना मन के पूरा करे म बिफलता मि
आमने-सामने का एह द्वन्द्व युद्ध मे बहुत लोका चूना हरदी चढ़ल बाकी कवनो
ना गइल।

हार पर हार का चोट से रामप्रीत महतो के मुँह लटक गइल। उनका प
के कुछ बूढ़ पुरनिया लोग चाँप चढ़ावे लागल कि सभ रार झंझट के खतम कके रा
से सुलह क लेहल जाव। खेती गृहस्थी के काम बड़ा हरज होता। ऊहे बिना
फेर कंकर भरोस कइल जाई। अब पहिले के जबनो ना रहल। ऊपर से स
ओही सभ के मन चसकावतिया। रामप्रीत त भीतर से अदहन खानी खऊलत
बाकिर उपर से मान गइले। सुलहा करावे खातिर रामफल से बातचीत जरूरी
ओकरा महतो टोली में आके बतिआए में उजुर रहे। रामप्रीतो चमटोली
खातिर तैयार ना रहस। अन्त मे तय भइल का ई घरभरन महतो के दिबाव का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थान -दूर-दूर ले धावा मारेला। रामप्रीत अपने के हाली जाके दारोगा जी के
धरले। उनुकर जेब गरमवले आ फंदा तैयार हो गइल। एक रात रामप्रीत
इतान में सेन्ह पड़ल आ हो-हल्ला भइल। होत भिनुसहरा पुलिस लेले दारोगा
हाजिर हो गइले। रामप्रीत साफ बयान दिहले कि हल्ला भइला पर उ रामफल
आवत देखले। रामफल का एकर-अनेसा रहे काहे कि ई बाबु लोग के पुरान
यार रहें। उ सम्हर के देखवा लेलस कि ओकरा घर का आस-पास महतो के
चीझ-बतुस बा कि ना आ इतमिनान हो गइला पर चुपके से टकस गइल।
आइल बाकी गिरफ्तारी ना हो सकल। तत्काल रामफलवा बाँच गइल आ
हल साँप खानी खतरनाक हो गइल।

दूनू गोल क दुश्मनी बढ़ गइल। एक तरफ धन-जन जोम देवे लागल आ
ओरी रामफल क अकिल आ गरीब-दुखिया से मिल-जुल के रहे के बल बढ़े
। पुलिस किहाँ जवार म कै गो इकइतो मे रामफल क हाथ भइला के सिकाइत
हो गइल। पुलिस का निगाह में रामफल एगा इकइत बन गइलन आ
आस का गाँवन के गरीब हरिजन के उ अपने-आप नेता मान लिहल गइलन।

रार बेसाहे वाला खातिर ढर इन्तजार ना करे के पड़ें। आन्हर कुक्कुर त
भूकेला। पूरा महतो मण्डलो अपना सामरथ का घमण्ड आन्हर रहे। लागल
छूटे ना। एक-ब-एक जे पूरा चमटोली म रामफल का चौकस बाँह क चहार
खींचा गइल त महतो कुल के जवान दुलरुआ लोग तड़फड़ा उठल। एकाध
इन अइसन रहली जे कभा-कभरा कनखी का कार स तनो लुक-छिप के रस
रस ना त सभे अपना बेबसी क उघार कर स कतराए लागल। रामफल का
नगी के पुरजोर असर भइल आ काल्ह ल हरजाई बूझ के मनभाना भोग लाग
चमटोली का अपना अनमाल अस्मत क नाक पाहचान हो गइल।

महतो टोली आ चमटोली के आपुसी दुश्मनी तब आउर लहक उठल जब
के रामप्रीत महतो के एगो आउर चिड़ई रामफल का मदद से फुर्र से उड़ गइल।
गाँव में एगो पंडित जी। जजमनिका ढेर बाकी घर में सुबहित दाना मोहाल।
कवनो जाति चीन्ह के त आपन गोड़ ना पसारे। सभ जाति में गरीब बाड़े।
हीं त दुइए गो जाति बा समाज में —एगो धनिक के, एगो गरीब के। धनिक
सभ ओर हरिअरे बा आ गरीब का नसीब में अँजोर लिखाइले नइखे। धनिक
मरथ वाला चाहे चमटोलो मे रहे भा बभनटोली में ओकर चारु घीवे में डूबल
केरा सभ मउज-मस्ती अलगंज लागल बा आ, जे गरीब बा ऊ चाहे हरिजन
ना ब्राह्मण ओकरा जिनगी भर सासत, घुटन आ भूख के कलेस एके खानी सहें
। गरीब पंडित जी के सामाजिक मान-सम्मान चाहे जवन होखे बाकी अर्थ से
लकर जिनगी एगो हुकहुकी बन के रह गइल रहे। ओपर से उनका पर राम-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

उहे करे बा जे रामफल का भावे। ओकरो मनोबल बढ़ गइल बा, उन्हो सब दनवाँ-दईंत से लड़े खातिर, जुझे खातिर तेयार हो गइल बिआ। रह-रह के ओकरा बनेला कि का ओकरा सउँसे चमटोली में जुझे के हियाव बा, का गरीबी से टूट गइल जिनगी ठाढ़ हो सकतिया, अपना पहुँचा का भरोसे का धनी-मानी जर-जमीन वाला एह राक्षसन का चपेट से बचल जा सकेला ? रामफल कहेलन कि ई हो सकता खाली साँच मन से आपुसी एका के जरूरत बा।

....आ संघर्ष शुरू हो गइल बा। तिलेसरी के कांड लेके पूरा गाँव दू गो गोल में बँटा गइल बा। महतो जी लो के परलगे त उ लोग रामफल के बोटी-बोटी चबा जाई, बुन-बुन रकत पी जाई ! कतहीं माँह-पतरा में....

एने रामफलो हँसियार रहता। अकेले चलत नइखे। ओकरा अपना हाथ का लाठी पर भरोसा बा आ भरोसा बा कहीं से उपरावल ओह नली पर जवना से एक हाली 'ठाँय' कइला पर फेरू घट में प्राण ना रह जाय। अइसे त ठाँय-ठाँय वाला देशी बनूक घरे-घरे बा। चमटोलियो में बा-ई ढेर बल बा। रामफल बवड़ेरा खानी घूमत रहेला। कब केने से निकल के उपर हो जाई, ना कहा सके।

एक दिन सुन्नरी के रामप्रीत महतो फेरु घेर लेहले। पहिले पोल्हवले-फुसलवले, पहिले के बात क इयाद दियवले। सुन्नरी जब हत्था पर ना चढ़ल त डरवले-धमकवले। रामफल के जीयते बलि चढ़ा देब के कहले। सुन्नरी बमक के कहलस—'....जे हो गइल से हो गइल। अब अगर तूँ हमरा के छू दिहल त जुलुम हो जाई।—जा ना, अपना मेहरी के देख जे दोसरा से आस लगावतिया।....तहरा, बाहन—बेटा बा। अतना देयानत ना बिगाड़ क।....'

जब रामप्रीत ना मनले आ फेरू पहिला दिन खानी जबरदस्ती पर उतर अइले त सुन्नरी बाघिन खानी बिफर के कहलस—'....हो चउधरी, अइस ना मनबे त ठीक ना होई। लगे अइल कि लाद फाड़ देब।'....आ आकर एगा तघन मुक्का उनका नाके पर बइठल। भिनास फुट गइल आ उ तलमला के गिर गइले।

रामप्रीत खासी दाँत पीस के रह गइलन। उ झपिटते बाकी का जाने देने के राम फलवा दू गा लंवंडन का जवरे आ गइल—'चउधरी, सउँसे छुरा लाद के छोंप देब....। चुपचाप चल जा। हमनियो के जीये द। आज चेता क छोड़ दतानी फेरू हाथ डाले के कोसिस कइ ल त बुझ लीह....।'

आ रामप्रीत मुँह लटकवले रस्ता ध लेलन। सुन्नरी के छाती धौंकनी खानी चलत रहे आ नाक फुलत-पचकत रहे। रामफल आँख लाल-लाल कइले रामप्रीत के जात देखत रहे। ओकरा बुझा गइल कि अब निबही ना। आमने-सामने आवहीं के पड़ी। ई रामप्रीतवा एजा के हुँड़ार बा बाकी जब ठन गइल त ठन गइल। देखल जाई।

रामफल के सिकाइत थाना में पहुँचे लागल। ई डकइत ह, गरोह बन्हले बा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

—'ना भाई, ई ना ना होखे के चाहीं। जइसन हमनी के मेहर-बेटी-बहिन के बउधरी के धिया-पुतरी! मेहरारू के देह भोगे के बतुस ना ह।....हमनी का एकरा देखावे के बा, अइसन बरत तेज आँख में भर लेवे के बा, अतना तागद राख लेवे के बा कनहूँ का मुँहकरखी लगावे खातिर चमटोली किओर ताके आवे ना पड़े!...गरीब के शक्ति एकता में बा, एक होके अपना समस्या से लड़ बा!—'

रामफल के मेहारारू सुन्नरी पहिले गाँव के सबसे बड़ आ धनिक आदमी के महतो के होके रह गइल रहे। ऊ अतना सुन्नर रहे कि । बाकी, जब से बिआह भइल ओकरा रामप्रीत पर मन भिन-भिन करत रहेला। कतना बा एह मरदुआ के मन, कतना पोढ़ बा एकर छाती! कवनो तूफान से टकरा डूब बा रामफल में! कतना बेरहमी से सुन्नरी के बगइचा मे से घेरवा के महतो ओकरा सँगे मुँहकरखी लगलवे रहले....ई इयाद पड़ते ऊ पच्च से बा थूक फेंक देले धरती पर। अतना घिनावन बा आदमी के मन? घर में हेर-चेंथरूआ पर लहालोट बिआ आ अपने दोसरा जगे कुक्कुर खानी हाँड़ी में मत फिरेले।

सुन्नरी सभ बात खोल के कह देले रहे रामफल से। छाती में मुँह लुकवले के आपन दर्दनाक कहानी सुनवले रहे। पहिले ओकरा डर रहे कि कतहीं मत जास बाकी बात-बेवहार से ओकरा लागल कि एह बात के ना कह देहल पत्थर धके जीयल होई! औरत भरसक जवन बात मुअ का दिन ले दोसरा से ऊहे सुन्नरी अपना रामफल से रत्ती-राई सब बता देलस। रामफल के ओकरा पीठ पर नेह से घूमते रह गइल, ओकर लोर पोंछ के उ कहले रहस.... ई त अत्याचार हमनी का सहते आइल बानीं—खाली अपना कमजोरी से, गरीबी से। जवाना बदलत बा, अब कुछ अइसनके करे के पड़ी कि कवनो का जबरदस्ती कवनो रामप्रीत का गोदी में एह से ना जाए के पड़े कि बिआ, ओकरा पेट में भूख के आग बा....। तहरा सँगे जे रामप्रीतवा कइलस, उ त कवनो लगाव बा ना, उ त बेबसी का ओजे से भइल—बाप—भाई बचावे खातिर भइल—देह के क्लेश से निवुकावे खातिर भइल। तूँ हमरा सभनो से बढ़के पवित्तर बाड़ू—सती—सतवन्ती बाड़ू।'

सुन्नरी का दिल पर के भार हट गइल रहे आ अपना रामफल के उदार परस में ओकरा मन के फूल आउरो गमक उठल रहे।

ओ चाहत रहे सुन्नरी कि फेरू एह घाह में धनके आ जाव बाकी रामफले बचावे के पड़ल। भाग के केहूँ कहवाँ जाई? भागमे भाग में त ई दिक्कत बा, मुँहे चोरवला से त सभका जिल्लत उठावे के पड़त बा। सुन्नरी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

लाठी के हाथ पीठ पर बजरल आ आँय कके उ ओहीजा पसर गइले। डाँड़ के हड्डी चटक गइल। पीठ पर के जब खलरा ओदर गइल त बलबला के लोह बह चलल उनका दाँत लाग गइल। दोसर जना चहले कि अझुरा जाईं त रामफल का लाठी के हुर्रा उनका गाल पर बइठ गइल त पच्च से भर मुँह खून भर गइल। दूगो दाँत साफ हो गइल। रामफल खीसि भूत हो गइल रहे। ओकर लाठी मुड़ी का ऊपर से चढ़ के आ लहरा के गिरही चाहत रहे कि तिलेसरी बाँह धके कहलस—"ना हो पाहुन जाने मत मार!"

रामफल के लाल-लाल आँख तिलेसरी कावर घुमल "चुप रह ते....."

—...हँगामा हो जाई। सउँसे गाँव बनूक लेके चमटोली के उजाड़ दे पाहुन। आज अतने भर। भगवान जी सहाय हो गइलो हँ ना त ई पापी आज हमरा इज्जत बिगाड़ दितें स।" तिलेसरी का आख से झर-झर लोर गिरत रहे।

रामफल के हाथ तिलेसरी के बात सुनके कि चउधरी लोग का संगे ई उपटला के बमत सोच के ईना मालूम। ओह दून के ओहीजा पटाइल छोड़ के तिलेसरी का जवरे गाँव कावर चल दिले। सड़क पर टहलत दोस्त लोग जब टोंग के ओह चउधरी--सपूतन के गाँव में ले आइल त सऊँसे चउधरी टोला चोटाइल गहूँअन सरप लेखा फन काढ़ के ठाढ़ हो गइल।

चमटोली के सुगबुगाइल देख के त आग आउरो लहके लागल। बूढ़-जवान सभे ना जाने कबसे चल आवत एह भोग सुविधा के अइसहीं छोड़ देवे के तइयार भइल। का बाप आ का बेटा - सभे त पियासले रहे, रात-बिरात बिना कुआँ चिन .... पानी पिए के आदी। एसे सभे बिढ़नी अइसन बनबना गइल। जवानन के बइठ अलगे भइल, बूढ़ चउधरी लोग अलगे बइठल। मोरवा बन्हाये लागल, गोल बिटुर लागल।

चउधरी लोग ई सहे के तेयार ना रहे कि चमार-दुसाध अब एह तरे लरिकन के मारस-पीटस। जवने पत्तल में खाए के ओही में छेद करे के? रामफल के जान बलाय भइत बा।

सउँसे चमटोली के फूँक के ताप घाले के पड़ी। कतहीं सँसरे के जरे सार लो....का? जवना जमीन पर बसगीत के पलानी वा तबनो त ओकनी नइखे? फेरु ई रामफलवा सार काहे आग बोअता! कबना बल पर फउँकता?

एने चमटोली का जवानन के गोलो गनगना गइल रहे। ऊँ रामफल के धके किरिया खइले स—जहाँ तहरा रेफ लागल कि खून के धार बह जाई। हमनी का भाई-बहिन-मेहर के इज्जत होला। अब मूड़ी लटका के अपना सोझे बेटी-मेहरा का जवानी से खेलत चउधरी लोग के सिहुर-सिहुर कके छोड़ दिहल मउगई होई। खून के बदला खून से लिआई.... अगर एको कबनो चमटोली का लइकी पर हाथ आँख उठल त दूगो कुरमी लोके लइकिन के जबरदस्ती उठा के बेइज्जत ..."

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ी पानी करे लेमन कुछ चरवाही। अइसन कवनो घर ना बा एह चमटोली में
कवनो ना कवनो चउधरी का नाँव से जुटल ना होखे। ऊ घर चउधरी के गुलाम
र बा जब जइसन हुकुम तब तइसन सेवा। नाँ ना करे के बा आ ना कुछ बात
के बा। गारी - बात थूका-फजीहत के आसीरबाद बूझ के लीलत रहे के बा जइसे
सानल सतुआ के पिठूरी होखे - मुँह में धइलीं ना कि गट से नरेटी से नीचा
रल।

चमटोली का लइकिन का कम सासत नइखे। दूर-दूर ले चँवर बा। माँह
र कतहीं कुछो ना। चाल करीं त केहू ना सुनी। ओह खेतन में फसिल लहराले
चउधरी लोग के मन सुगबुगाला। ऊ लोग कब कवना छउँड़ी के ध ली नइखे
ल जा सकत। सगरी जइसे जजाते ह। दोसरा गाँव से बिअह के आवे वाली
तियाँ आ एही गाँव का माटी में खेल के जवान भइल धनिया - कवनो के सत
बत मोसकिल होला। बाप बेटा में कवनो बरावा ना रहे। ई आदत जइसन हो गइल
। जवना चीझ के सुभाव बन जाला ओमें बाधा पड़ला से बड़ा लहर आवेला।
सन के एगो लहर आ गइल तेलछी गाँव में रामफल का अइला का पाँच छव
हीना बाद।

साँझ के बेरा रहे। किरिन लुक - झुक करत रहे। गाँव का बहरी सड़क पर
- पाँच गो नवहन के गोल टहलत रहे। एही बीचे ओ लोके नजर लगहीं खेत
हँड़ पर से चलल जात तिलेसरी पर पड़ल। मोसकिल से पन्नरे के होई ऊ।
हीं भोरे का धूप खानी रूप खिलत रहे। अचचके दू जाना चउधरी टोला के सपूत
न छड़प के दउड़ल आ तिलेसरी के दबोच लेहल लोग। ऊ भागे के कोसिस कइलस
ो हड़बड़ा के गिर गइल। ओकर हाथ पाँव चलावल बेमानी रहे। ओह छोकरन
बाँहि मे लहोक उठ गइल रहे; करिया गाल धीकत जात रहे। दू-दूगो जवान
चिड़ई पर टूट पड़ले। पाँख नोंचाये लागल। धींचा-मकुनी में एक जना अनराज
एक थापड़ मारिओ देहले। तिलेसरी के चिकरल-चिलाइल के सुनत रहे ओजा।

बाकी संजोग कहीं....। रामफल के निगाह दूरे से पड़ल। ओकरा बूझत देर
लागल। उहो खेत पर से लवटल आवत रहे। तिलेसरी ओकर चचेरी साली लागे
अपना हाथ के लाठी सम्हरत धावल बुझात रहे कि हनुमान जी हहास बनहले
ा सतवन्ती के बचावे खातिर अशोकवन में ढुकत होखस। रामफल निगिचा गइले
तिलेसरी के कवहूँ रोवला के कवहूँ निहोरा कइला के आ कबहूँ गरिअवला के
ाज सुनाये लागल। आवाज जब ठीक से कान में पड़ल त रामफल त जइसे भूत
गइल।

चउधरी के एक जना उलाँक छँवर जहसहीं तिलेसरी के पटक के ओकर
धके दराक से फड़ले कि उनका आँख में जोन्ही फुला गइल। रामफल का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

ल हो क

□ ब्रजकिशोर

बड़ी मचण्ड देह रहे रामफल के। गभरु जवान लोहा खानी बज्जर
चाकर मुँह पर अईठल मोछ बड़ा कड़इला लागे। आँख तनी बड़-बड़ रहे
बरौनी का तनी उपर कटइल के कुछ गहिरा लकीर दू कइसन दू लगवे करे।
से रामफल आइल चमटोलीके रंगते बदल गइल। आज ले कपसल - कंकुरल
चले वाला बुढ़वनो के डांड़ तनी सोझ हो गइल रहे निहुरल मूड़ी कुछ तन
अइसन लागत रहे। जवान लड़िकन के त बागे ना धराय। ओकनी के पहि
रोजो साँझ भइला का बाद रामफल का पलानी का लगे बटूरा के फुस
कइले स आ बाद में छानल कउड़ी मारे लगले स। जे जवान तनी सा पढ़ल लि
रहे ऊ साफ जामा - जोरा पहिरले बेहिचक मेला-बाजार टहरे लागल आ भोर
पर जाए का पहिले आ साँझ के गदवेरा का लगभीर देह मे माटियां लाग
रामफल का अइलन चमटोली के हियावे दरियाव हो गइल, हवा का झोंका में
मड़ई के खहाँ डोले त बुझाय कि पूरा टोला के साँस साँप अस फोफ मारत

रामफल एह गाँव के रहे ना। ओकर बाप दादा एह माटी में ना
रहस। ओकर जनम भूई इटवाँ से दस कोस से ऊपरे पड़ी। बाकी ओकर
नाता जुट गइल रहे एह गाँव से। सयोग रहे कि चमटोली के सबसे सुन्दर
मांग मे सेनूर भरले रहे रामफल। घर केहू रहे ना एसे घरजमाई बनक ऊ
रे मे रहे कमाय आ गइल रहे। घर क अकसरुआ भइला का ओजे ऊ
फिरवो खूब करे। पूरा जवार मे हरिजन समाज ओके जान गइल हे। ओ
बात के लोग आदर करत रहे एही से रामफल जब अपना ससुरार तलछी मे
बस गइल त सउँसे चमटोली ओके अगहर के अपना लेलस।

तेलछी बड़हन गाँव ह। बहुत आबादी बा। ढेर दमगर गिरहस
लाम बा नीमन जियका - जैजाद बा सभका। बीस-पचीस घर अहीर लोग बा।
घर बबोजी बाड़न। गाँव का एक ओर अलगे हट के चमटोली बसल बा।
चमटोली के चमार आ पाँच - सात घर दुसाधन का बलपर गाँव भर के
जोताला, बोआला, सरिहराला आ कटाला। ई लोग अंडे बच्चे मरद - मेह
किरिन उगते अपना - अपना मालिक का खेत मे जुम जालन आ फेर तर - तर
ना चुआवत अढ़ाई-तीन सेर मजूरी लेके साँझ खा घर लवट आवेलन। कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभ्यादकाय

भोजपुरी कथा कहानी' के एक साल

आज हिन्दी-अंग्रेजी के पत्रिकनो के निकाले में पूँजी आ वितरण का व्यवस्था मजबूत भइल जरूरी बा। जहाँ ई दूनू नइखे—ऊ पत्र कै दिन खैर मनाई? कुछ कइसी लोग 'विज्ञापन' का जोगाड़ में अपना पत्र आ पेट के जोगाड़ लगा लेता की क्षेत्रीय भाषा का पत्रन का सोझा त सगरो अन्हारे-अन्हार बा—नां पूँजी, ना ना, ना वितरण, ना विज्ञापन! मुट्ठी भर लोग दीया जरा रहल बा, अपना के घीव बना के! नेही-छोही भाई लोग बात त बड़ा लमहर करता—भाषा का ति पर गद्गदा उठता बाकी तनी प्रचार-प्रसार खातिर पत्र-पत्रिका के नाँव लीं त तरे के बहाना तुरन्त तैयार! पढ़े के मनो बा, त मुफ्ते पावे के लालच बलवान। किताब त एक हाली छपाला, बाँट-चुँट के लेखक के मन ग्रहथिर हो जाला की पत्रिका का त नियमित छपे के बा—ऊ खाली बँटइबे करी त कइसे सपरी?

'भोजपुरी कथा कहानी' के पहिलका साल पूरा हो गइल। डिमाई आकार में लगभग छव सौ पृष्ठ के छपल सामग्री अँजोरा आइल—एक से एक कहानी! मात्र दस रुपया में अतना पढ़नउक सामग्री अचरजे बा। चाहियो के हम ओतना संवार ना सकलीं। नियमित निकलत जाव एही पर ध्यान टँगाइल रहल आ प्रेस का कष्ट-पुष्पम खातिर साँस बन्हक फेंकाइल रहल। हमरा सर्वश्री जगन्नाथ जी, रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' आंजनेय, तैयब हुसैन पीड़ित, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, रुद्र नारायण पाण्डेय, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा, प्राध्यापक अचल, भारवि, राजनाथ सिंह, देवनारायण सिंह, विक्रमा प्रसाद, आदि से बहुते बल मिलल। बहुत लोग से कहले-सुनले बानीं। दूसरका साल में सभे खुल के 'कथा-कहानी' के समृद्ध बनाई—ई उम्मीद बा।

अपना सभी कथाकार लोग के बधाई देत खुशी होता आ अरज बा कि ओह के रचना 'कथा-कहानी' का बरमहल भेंटत रही। कथाकार बन्धु सभ जो तनो-भी आपन अँगुरी के सहारा दे दी त एह गोवर्द्धन के उठवले रहे के बहानीं होत बा।

'बाल उपन्यास' आ 'बाल कथा-अंक'

१९७९ दुनिया भर में बाल-वर्ष का रूप में मनावल जाता। बच्चन पर ही संसार के भविष्य टिकल बा, उहे काल्ह के नेता, वैज्ञानिक आ डाक्टर, इंजिनियर होइहन स। एह अवसर पर 'भोजपुरी कथा कहानी' एगो अंक में लरिकन के कथा-कहानी दी आ एगो बाल-उपन्यास के धारावाहिक रूप में अगिला अंक से छापी। भोजपुरी में बाल-साहित्य के साँच पूछी त जनमो नइखे भइल। एह रूप से एगो बड़ अभाव के पूरा करे के भाव रही।

(आवरण ३ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

कहानी

संपादक
ब्रजकिशोर

तेज जनर
शाहगंज, महेन्द्र,

☐ पहिल पाठ
● मधुकर
☐ एगो भीड़....
● तैयब हुसै
☐ टूटल आदमी
● डा० लक्ष्मी
☐ लहोक
● ब्रजकिशो
☐ आग के पहिचान
● मलय
☐ धुआँ (समीक्षा)
● डा० त्रि

जनवरी, १९

बरिस २ ☐

सालाना —रु

एक अंक के —

Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha. Collection, Equipment, Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

सम्पादक : प्रो० ब्रजकिशोर

अक्टूबर, 2005

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaipur

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)

वर्ष–16, अंक–10, पूर्णांक–190, अक्टूबर,2005, दाम–दस रुप

परामर्श मंडल

डॉ॰ विवेकी राय, आचार्य विश्वनाथ सिंह, श्री मोती बी॰ ए॰, दण्डिस्वा
विमलानंद सरस्वती, श्री पाण्डेय कपिल, डॉ॰ विजय बलियाटिक
डॉ॰ अर्जुन दास केसरी, डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह, डॉ॰ अनिल कुमार 'आंजनेय

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक : श्री माधव सिंह

संरक्षक मंडल : श्री कृष्णानंद 'कृष्ण', डॉ॰ जयकांत सिंह 'जय',
डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, श्री भगवान सिंह 'भास्कर',
श्री व्यास मिश्र

संपादक मंडल

डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', राजनारायण दीक्षित, डॉ॰ लारी आजाद,
कृष्णानंद कृष्ण, सूर्यदेव पाठक 'पराग', डॉ॰ रामकिशोर श्रीवास्तव,
डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, भगवान सिंह 'भास्कर', व्यास मिश्र,
भगवती प्रसाद द्विवेदी, रवीन्द्र शाहाबादी ।

अ॰भा॰ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के
वार्षिक सदस्यता शुल्क 25 रुपया सालाना
आजीवन सदस्यता शुल्क 251 रुपया

विशिष्ट आजीवन सदस्यता शुल्क 1101 रुपया

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के
वार्षिक ग्राहक शुल्क 100 रुपया
सम्मेलन के सदस्य खातिर
वार्षिक ग्राहक शुल्क 80 रुपया
प्रायोजक (आजीवन ग्राहक) 1000 रुप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दक
ब्रजकिशोर
•
संपादक
जीतेन्द्र वर्मा
•
दकीय संपर्क
वन, प्रोफेसर कॉलोनी, महम्मदपुर लेन,
पटना-6
9334112960,
2669183 एक्सटेशन-8
•
कार्यालय :
प्लॉट सी-58/6,
अधिकारी अपार्टमेंट, सेक्टर-62
-201 301,
:0120-3956703
स :0120-2401853
•
में दिहल तथ्य, विचार रचनाकार के बा,
पादक मंडल के सहमति जरूरी नइखे ।
संपादन अवैतनिक ।
•

विषय-सूची

संपादकीय/4

कहानी

एकरारनामा/डॉ. प्रभुनाथ सिंह/9

दो हंसों का जोड़ा बिछुड़ गयो रे...!/
लव शर्मा 'प्रशांत'/13

कविता

मुक्तक/मुफलिस/19

सपना बापू के/
श्यामाकांत ओझा 'निराला'/20

आलेख

बटोहिया के अमर गायक बाबू रघुवीर नारायण/ डॉ. जयकांत सिंह 'जय'/5

भोजपुरी के प्रखर आलोचक : नागेन्द्र प्रसाद सिंह/ कृष्णा नन्द 'कृष्ण'/21

समीक्षा

आँख आँख में आशा/
डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव/29

गतिविधि

माटी के भाग के.....के लोकार्पण संपन्न/
डॉ. रामाशंकर लाल/34

भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति पर गोष्ठी/राजीव रंजन सिंह 'हिमांशु'/35

चिट्ठी मिलल/35-36

•

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gi

संपादकीय

भोजपुरी आंदोलन के धारदार बनाईं

आज जब भोजपुरी भाषा के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के निर्णय केन्द्रीय सरकार कवनो-ना-कवनो बहाना से लटकवले बिआ, त जरूरी हो गइल बा कि आईं, हमनी सभे मिलजुल के जोरदार धक्का लगावल जाय, आंदोलन के तेवर कड़ा कइल जाय आ एह बात के एहसास करावल जाय कि टाल-मटोल अब तनिको ना चली। ई काम जनजागरण से ही हो सकेला। राजनीति के लोग तवले बात ना सुनें जबले ओकरा वोट पर असर पड़े के संभावना ना बने। भाषा कवनो जमात का अस्मिता के पहचान होले। जे अपना भाषा के ना सहेज सके, ऊ अपना क्षेत्र के विकास का करी आ लोग के दुख-तकलीफ का दूर करी। आपन पहचान खो देल के मतलब होला अपमान के जिनगी जीये खातिर मजबूर भइल। भोजपुरिया सोभिया होला, ऊ त्याग करे के जानेला बाकिर जब आन पर आ जाला तब फेर केहू के कुछुओ ना गुदाने। जब ऊ विद्रोह पर उतर जाई त फेर ओकर ताव आ धार सहल कवनो सरकार के बूता के बाहर हो जाई। अइसन मौका ना आवे, एही में देश के भलाई बा। अब समय आ गइल बा कि एह बात के साफ कर दिहल जाय कि 'सोभिया के मुँह कुक्कुर चाटे' के कहाउत अउर ना चली। अन्याय सह के जीअला के भोजपुरिया धिरकार के जिनगी मानेला। मातृभाषा अपना महतारी अस होले आ ओकरा जवरे अन्याय होत देखत-सहत रहल मरदानगी के बात ना होखे। एह सच्चाई के सभका लगे पहुँचावे के पड़ी। अब राजनीति से परहेज कइल उचित नइखे। भोजपुरी आंदोलन के खाली साहित्यिक-सांस्कृतिक आंदोलन के रूप में राखल ठीक नइखे। एकरा के राजनीतिक स्वरूपो दिहल जरूरी बा। राजनेता लोग खाली दाँव-पेंच के बात बूझेला। ओह लोग के ओही लोग का भाषा में बतलावे के पड़ी कि विशाल भोजपुरी क्षेत्र के विकास के रास्ता भोजपुरी भाषा के आदर आ मान्यता से होके ही गुजरी।

एह जरूरत के समुझल सबसे पहिले भोजपुरी के साहित्यकार आ बुद्धिजीवी लोग खातिर जरूरी बा। जे भाषा आ साहित्य के समृद्ध करे में तीस-चालीस बरिस लगा चुकल बा, ओकरा सेवा के सम्मान खातिर ओकरो कुछ करे के पड़ी। जे एक-दोसरा के टाँग घींचे में लागल रही त अपमान का अलावा कुछ ना भेंटाई। 'हम ऊपर, त हम ऊपर' के भाव, अपना उहं के सम्हार के दोसरो के मान-सम्मान दीं आ छोट-मोट बात के बतंगड़ बना के वर्चस्व के झूठ लड़ाई मत लड़ीं। जे बड़-बुजुर्ग बा ओकरा चाहीं कि ऊ सही माने में मार्गदर्शन के भूमिका अपनावो आ नवही जमात के आगे बढ़ावे में मदद करो। अपना भाषा के महमूली सेवको दोसरा भाषा के महान लोग से कबहूँ छोट ना होखे। आज भोजपुरी आंदोलन के एह सच्चाई के कबूल के आगे बढ़ावे के बा। एह आंदोलन का तिकरम ना, तेवर के जरूरत बा आ ई तेवर त्याग आ सेवा से मिली, दोसरा के सम्मान देला से मिली, आपुसी मेल-जोल से मिली। दाँव-पेंच आ गुटबन्दी त कमजोर के लक्षण ह। आईं, भोजपुरी आंदोलन के बरियार आ धारदार बनावल जाय।

—ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जन्मदिवस (30 अक्टूबर) पर विशेष

हिया के अमर गायक बाबू रघुवीर नारायण

-डॉ. जयकान्त सिंह 'जय'

भारतीय वाङ्मय में कवि के रिसि आ रिसि के मंत्रद्रष्टा कहल बा। सब रिसि के कवि नइखे कहल गइल आ नइखे कहल जा सकत। कारन रिसि नू कवि हो सकेलन जिनका में काव्य प्रतिभा होई, मंत्रद्रष्टा अथवा भइला के बावजूद जबले केहू अपना अनुभूत दर्शन के सुन्दर शब्दन के कलेवर ना दी तबले ऊ कवि कइसे हो सकेला। 'क्रौञ्च' पक्षी के स्वर के सुन के रिसि बाल्मीकि के हिरदय पघिलल आ उनका अन्दर के श्लोक बन के छलकल तब नू ऊ कवि कहइलें। एह तरह से त कवि आ मंत्रस्रष्टा दूनू नू भइल। तब रहल कि अइसन कवि जुग पीछें कबहीं पैदा होलन, जेकरा पाके जाति, वंश, समाज आ देश सभे गरिमामय हो ना त एह संसार में के ना जनम लेवेला आ मर जाला। संस्कृत में एगो एही भावभूमि के पढ़ले रहीं-

"स जातो येन जातेन, जाति वंश सम्मुन्नतिम्।
परिवर्त्तिनि संसारे, मृतो को वा ना जायते॥"

संस्कृत में एगो आउर श्लोक बा-

"नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा।"

मतलब, एह संसार में आदमी के देह पाके आदमियत के गुण से व्यक्ति दुर्लभ होलन, आदमियत के गुण से सम्पन्न विद्वान के मिलल होला आ काव्य प्रतिभा सम्पन्न आदमियत वाला विद्वान व्यक्ति त अत्यन्त होलन।

सुन्दर सुभूमि मइया भारत के देशवा से।
मोर प्रान बसे हिमखोह रे 'बटोहिया'॥

जइसन अमर राष्ट्रीय गीत के अमर गायक बाबू रघुवीर नारायण जी का व्यक्तित्व आ कृतित्व के जब सिंहावलोकन कइल जाला तब उहां का के एह दृन श्लोक रूपी कसउटी पर खड़ा उतरिले। अइसे त उहाँ का हिन्दी, उर्दू आ फारसी भाषा में साधिकार रचना करेवाला भोजपुरी के कवि रहीं। बाकिर एह तमाम भाषा के सफल साधक साहित्यकार भइला बावजूद उहाँ के लिखल ई 'बटोहिया' राष्ट्रीय गौरवगान उनकर सांगोपांग देवे खातिर काफी बा। एह गीत के देशभक्ति के गीता कहल गइल बा कि जइसे गीता में चारो वेद, छवो शास्त्र, अठारहो पुराण आ कुल्ह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-GI

उपनिषद्न के सार संक्षेप कहल गइल बा ओही तरह से ई 'बटोहिया' भारत के हर गरिमामयी अतीत, आ वर्त्तमान विषय-वस्तुअन के ज्ञान करा देला ई गीत देशप्रेम के ऊ पोथी बा जवना के पारायण करके केहू अपना देश से करे के प्रेरणा पा सकेला । संस्कृत के महाकवि अमरूक के विषय में कहल जाला कि उनकर खाली एगो गाथा सैकड़न महाकाव्य के समान है **"अमरूककवे : श्लोकोपि, प्रबन्धशतायते ।"** ओही तरह से रघुवीर बाबू बटोहिया के एक एक बानगी सैकड़न राष्ट्रीय महाकाव्य से कहीं बढ़चढ़ के

30 अक्टूबर 1884 के ऊ दिन भोजपुरी भाषाभाषी लोगन खातिर गरिमा के रहे जहिया छपरा शहर के दहियावाँ मुहल्ला में रघुवीर नारायण जइसन कालजयी कवि के जनम भइल रहे । अपने सभन का मालूम होई रघुवीर बाबू छपरा जिला स्कूल से 1899 में मैट्रिक आ पटना कॉलेज से । में फस्ट इयर ऑफ आर्ट के इम्तहान पास कइले रहस आ बीमार पड़ गइल चलते बी.ए. के अंतिम इम्तहान ना दे पवले रहस । साँच पूछीं त एहीं उनकर जिनगी एक तरे से बिखरे लागल जवन उनका वाकी जिनिगी अस्थिरता के कारन बन गइल ।

एह सब के बावजूद उनका अन्दर जवन जन्मजात काव्य प्रतिभा ओकरा पर उनका एह बिखराव-अभ्फुराव के कवनो असर नइखे लउकत रउआ सब ई कह सकिले कि जदि उनका जिनिगी में अइसन अस्थिरता आइत त साइत ऊ साहित्य सृजन के काम आउर ढंग से करितें आ बिहार बल्कि देश-विदेश में उनका साहित्य संसार के कुछ आउर बेहतर ढंग मूल्यांकन होइत । एह बात से केहू का इन्कार ना हो सके । तब रहल कि सभका सभ कुछ अनुकूले ना मिले आ कवि के काव्य चेतना त अभावे अभ्फुराव-बिखराव में निखार पावेला । रघुवीर बाबू का जन्मजात काव्य प्रति में निखार आवे के रहे-साहित्य महारथी पं. अम्बिका दत्त व्यास आ महान मर्मज्ञ विद्वान पं. रामावतार शर्माजी जइसन समर्थ गुरु लोग के सान्निध्य आ साहित्य सत्संग, आरा-निवासी बाबू शिवनन्दन सहाय जी से कइल साहित्य गोष्ठी रामभक्त सीतारामशरण भगवान प्रसाद जी **'रूपकलाजी'** जइसन महात्मा आशीर्वाद आ काव्यकर्म करे के प्रेरणा ।

रघुवीर बाबू अपना कॉलेज जीवन में ही अंग्रेजी में कविता लिख देशे ना बल्कि विदेश में भी जस पा चुकल रहस । उनका 'ए टेल ऑफ बिहार' खण्ड काव्य के प्रशंसा करत इंग्लैंड के राजकवि अल्फ्रेड आर्नल्ड उनका किहां चिट्ठी लिखले रहस कि "अंग्रेजी साहित्य में राउर ज्ञान पूर्ण हम अपना देश का साहित्यकार लोग से अनेक कविता प्राप्त करीले, बाकिर सभे भाव उरेहाई में रउआ कविता के बराबरी ना कर सके ।" बनारस 'सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज के मैगजिन के सम्पादिका श्रीमती एनी बेसेंट उनका अंग्रे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

'लोक टेल्स ऑफ बिहार' के पढ़ के एतना प्रभावित भइलीं कि रघुवीर
के पास अइसन रचना भेजत रहे के आग्रह लिख भेजलीं । उनकर अंग्रेजी
खंड 'ए टेल ऑफ बिहार' सन् 1905 में आ सीताहरण सन् 1927 में
प्रकाशित भइल रहे । रघुवीर बाबू 'वे साइड ब्लॉसम' नाम के एगो आउर अंग्रेजी
कविता के संग्रह तइयार कइले रहीं । एकरा अलावे दी बैटल ऑफ केरेन
और रोज ऑफ दी बाइल्डस आदि अनेक कविता अंग्रेजी काव्य के नमूना
रघुवीर बाबू अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू आ फारसी में समान गति से लिखेवाला
के पहिल कवि रहीं बाकिर एह तमाम भाषा के काव्यकर्म कइला के
उनका अपना मातृभाषा भोजपुरी बोली के साहित्य जगत में विद्वान लोग
कवनो मोल महातम ना रहे, भोजपुरी में आपन कलम चला के भोजपुरी
के भाषा के ऊ सम्मानित पद दिलवलीं कि ओकरा बाद भोजपुरी भाषा
साहित्य लिखेवाला लोगन के बाढ़ आ गइल । भोजपुरी में उहाँ के कई छन्द
रस के कविता लिखले बानी । कहल जाला कि 'हनुमान जी के लंका
पर लिखल उनकर कविता -

'लपट लपेट पूंछ पटकत ढायँ-ढायँ'
हकहक् प्रान हहरात असुरान के
भभक भभक खूब भभकत भूमि पर
बाँचे कौन असुर तमाचे हनुमान के ।''

उनकर पहिल कविता ह, जवन भोजपुरिये में लिखाइल रहे । 'विजयी रामायण', संकीर्तन के पद, लोकलय धुन में लिखल अनेक भजन उनकर भोजपुरी में लिखल कविता बाटे ।

रघुवीर बाबू अनेक भाषा में अनेक साहित्यिक विधा पर लिखलीं जवन प्रसिद्धि उनका 'बटोहिया' लिखला पर मिलल ऊ आउर भाषा में पर साइत ना मिल सकल । 'बटोहिया' लिख के त उहाँ का अमर कवि लीं । 'बटोहिया' एह देश के अमर कविता हो गइल । जवना तरे महाभारत के व्यास, रामायण लिख के बाल्मीकि, रामचरित मानस लिख के तुलसी, ने विदेसिया लिख के भिखारी आ लोहा सिंह नाटक लिख काश्यप जी हो गइले ओही तरे रघुवीर नारायण जी के आउर काव्य कर्म के छाड़ियो एगो बटोहिया उनका के अमर कवि लोग का कतार में खड़ा कर ।। ओह घड़ी बटोहिया के तवन धूम मचल रहे कि राष्ट्रकवि दिनकर राजेन्द्र प्रसाद सभे रघुवीर बाबू के चिट्ठी लिख के बधाई दीहल । राजेन्द्र कर तुलना बंगाल के प्रसिद्ध गीत 'आमार जन्मभूमि' से कइलें आ फेर अनुरोध पर रघुवीर बाबू का 'भारतभारती' लिखे के पड़ल । 19 नवम्बर, के 'रामराज्य' साप्ताहिक में रामनाथ गुप्त जी 'बटोहिया' के समीक्षा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छपले कि श्री रघुवीर नारायण जी के उरेहल 'बटोहिया' गीत अतना अधि
ताकतवर, करुण, कोमल, हृदय छुवेवाला आ प्रभावोत्पादक बा कि शायदे कव
भाषा में अइसन गीत होई । एह गीत के सुनीं आ सँउसे भारत के साक्षात दर्श
करीं ।' प्रसिद्ध इतिहासकार सर यदुनाथ सरकार त रघुवीर बाबू के चिट्ठ
लिखलें कि- I cannot think of you without remembering your Batohiya.
मतलब, बिना रउरा बटोहिया के इयाद कइले रउरा बारे में हम सोच नइ
सकत । 'बटोहिया' अइसन सोगहग राष्ट्र गौरव गान रहे जवन सदियन से सु
भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से अपना के अछूता बुझेवाला गाँव देहात के ल
के आन्दोलन से जुड़ेला प्रेरित कइलस जवना के बदौलत स्वतंत्रता आन्दोलन
अइसन गति आइल कि अंग्रेजन के होस उड़ गइल । फेर ई गीत एह देश
सीमा लांघ के मारिसस, फिजी, सूरीनाम, टीनीडाड, गुयाना आदि अनेक दे
में पहुँचल आ धूम मच गइल ।

तब रहल कि 'बटोहिया' के एतना ना प्रसिद्धि मिलल कि रघु
नारायण जी के लिखल आउर बहुमूल्य साहित्य पीछे पड़ गइल । उनकर
कविता-संग्रह **'रघुवीर रसरंग'** आ **'रघुवीर पत्र पुष्प'** अपना-अपना विधा
बेजोड़ कविता संग्रह बाड़ी स ।

अइसे त लोग रघुवीर नारायण जी के कवि रूप के ही जानता बा
उहाँ का एगो सफल गद्यकारो रहीं, उनकर अंग्रेजी निबंध वैशाली, श्वेत
मोनास्ट्री, दी रोप ऐड सारनाथ, हिस्ट्री ऑफ सारन आदि उनकर निबंध ले
के अइसन उदाहरण बा ।

बाबू रघुवीर नारायण जी जइसन राष्ट्रीयगीत के पहिल रचनाक
बटोहिया के प्रयोग, लोकलय धूम के मसहूर कवि, अंग्रेजी, हिन्दी, ब्रजभा
उर्दू, फारसी में साधिकार लिखेवाला बिहार के पहिल कवि जीवन ब
उथल-पुथल वाला रहल । रघुवीर बाबू अपना आर्थिक तंगी से निपटे खा
मुंगेर जिला स्कूल, में अध्यापक पद पर काम कइले त 1912 से 1932
बनौला के राजा कीर्त्यानन्द सिंह के प्राइवेट सेक्रेटरी भी रहलें । भागलपुर
चावल मील बइठवलें । फेर 1934 से 1940 तक बनैली राज दातव्य औषधाल
में दवाइयो बँटलें । 1940 के बाद उनकर जिनगी संन्यासी के जिनगी हो ग
जवन उनका देह त्यागे के दिन तक बनल रहे ।

-अध्यक्ष, भोजपुरी विभाग, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

एकरारनामा

-डॉ. प्रभुनाथ सिंह
पूर्व राज्यमंत्री, वित्त विभाग, बिहार सरकार

सुनीता के लाश जला के अभी-अभी श्मसान घाट से लौट के घर पहुँचल बानी । गाँव-जवार के जे लोग भी एह शव-यात्रा में गइल रहल ह, सब लोग दरवाजा पर से जा चुकल बा । घर में रोअन-पिटन के जवन दृश्य रहल ह, अब कुछ-कुछ थम चुकल बा । विगत पैंतीस वर्ष के जिअल जिनगी के हर क्षण के ईयाद ताजा हो गइल बा । सुनीता से पहिल-पहिल हमार मुलाकात एगो यात्रा के क्रम में ट्रेन में भइल रहे । सब कुछ साफ-साफ ईयाद आ रहल बा । हम दिल्ली से एगो सेमिनार में भाग लेके लौटत रहीं । हमरा बर्थ के ठीक सामने वाला बर्थ पर गुम-सुम एगो औरत बइठल रहे । एकहरा, लम्बा, छरहर शरीर, गोर रंग, आकर्षक नाक-नक्स; सब कुछ मिला-जुला के सौन्दर्य के एगो साक्षात् देवी । रेल के ओह कम्पार्टमेन्ट के जे भी यात्री ओह तरफ से होके गुजरे वरबस ओकर नजर ओह बर्थ के कोना पर खिड़की से सटके बइठल ओह औरत पर जा के ठहर जाव । चेहरा पर उदासी स्पष्ट रूप से झलकत रहे । उजर साड़ी-ब्लाउज ओह उदासी के आउर बढ़ा देले रहे । उमीर लगभग बीस-बाईस बरिस के अन्दाज में रहे । एगो रूपवती नौजवान स्त्री के कवनो हाव-भाव के झलक ना आवत रहे । शरीर में कवनो तरह के हरकत ना बुझात रहे । ओकर चेहरा पढ़ला से हमरा लागल कि कवनो महा विपत्ति के मारल ई औरत बिया । ओकर सुन मांग देखला से हमरा ई एहसास भइल कि या त ई कुंवार बिया या विधवा । सबसे आश्चर्यजनक ई लागल कि ओकरा साथे केहू मर्द ना रहे । एगो नौजवान आ सुन्दर औरत के अकेले ट्रेन में यात्रा चौंकावे वाला रहे ।

बहुत दिन के बाद कवनो औरत के प्रति हमरा अन्दर उपजल आकर्षण हमरा के बेचैन कर देले रहे । एक बार जब आँख ओने उठल त पपनी गिरे के नाम ना लेलस । एक टक ओकर रूप निहारत रह गइल रहीं । हमरा अन्दर कइसे एह तरह के अचानक बदलाव आ गइल, हम समझ ना पवले रहीं । हमरा खातिर औरत घृणा के एगो पात्र बन चुकल रहे । हम ई दृढ़ निश्चय कर लेले रहनी कि जीवन में अब कवनो औरत के माया-जाल में ना फँसब । एकरा पीछे कारण रहे बचपन में भइल हमार बियाह । परिवार के लोग हमार बियाह लड़िकाइयें में कर देले रहे जब हम आई.ए. में पढ़त रहीं । माई अस्वस्थ रहत रहे । ओकरा साध रहे कि मुअे का पहिले पतोह के मुँह जरूर देख लीं । ओकरा हठ के आगे हमार कुछ ना चलल रहे । बियाह बड़ा धूम-धाम से भइल । बारात में हाथी-घोड़ा के अलावा तीन गरोह नाच रहे और जवार के नामी-गिरामी बाजा रहे । ई बियाह हमरा गर्दन के फाँसी साबित भइल । लड़की का विषय में केहू ठीक से सवचले ना रहे । ऊ पागल निकलल । जब तक जिअलस खोर-खोर के खइलस । पूरा परिवार ओकरा आचार-व्यवहार से तबाह हो चुकल रहे । करिआ रंग, मुँह पर चेचक के दाग, उठे-बइठे के ना कवनो लुर ना ढंग । कभी हँसे त हँसते रह जाव, सुते त घंटन सुतले रह जाव, जब बोले त बोलते रह जाव । केहू के गाली-गलौज कर देवे में एको मिनट ओकरा ना लागे । वैवाहिक जीवन के कवनो सुख ना मिल पावल रहे । जीवन एक तरह से नरक हो गइल रहे । स्त्री के ई रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

जवन हमरा दिल-दिमाग में बइठल ओकरा के हम ना निकाल पवनी । बियाह के तीन साल के बाद हमरा पत्नी के देहान्त हो चुकल रहे । ओह घड़ी हम एम.ए. के प्रथम वर्ष के छात्र रहनी । जीवन में फेर दोसर बियाह से तौबा कर चुकल रहनी । एकाकी जीवन बड़ा संतोष आ आनन्द से बितत रहे । पढ़-लिख के प्राध्यापक हो चुकल रहीं । जीवन के आनन्द के स्रोत पठन-पाठन बन गइल रहे । एगो सफल शिक्षक आ विद्वान का रूप में अपार ख्याति आ सम्मान के एगो अलग सुख रहे । दिमाग पर सबसे बड़ा असर रहे माई के घुट-घुट के मुअला के । जवना हुलास से ऊ बेटा के बियाह कइले रहे ऊ तार-तार हो गइल रहे । ओकरा बुझाइल रहे कि अपना हाथ से जिअते बेटा के गर्दन मरोड़ देले बानी । पश्चाताप के पीड़ा से ऊ कभी उबर ना पावल आ अकाल मृत्यु के शिकार हो गइल ।

लगभग तीन बरिस तक झेलल नरक के ऊ जिनगी हमरा के झकझोर के रख देले रहे । जीवन-यात्रा के ऊ एगो अइसन पड़ाव रहे जहाँ स्त्री-पुरुष के बीच के संबंध, भोग-संभोग सब पर प्रश्नचिन्ह लाग चुकल रहे । पता ना काहे ट्रेन के ओह यात्रा में फेर से स्त्री-सुख प्राप्त करे के लालसा मन में कुलाच मारत रहे । ट्रेन तेज रफ्तार से भागल जात रहे । मन का अन्दर ट्रेन के तेज रफ्तार से अधिक तेज वेग से सोच के प्रक्रिया चलत रहे । सामने बर्थ पर पसरल ओह अनजान औरत के देख के लागल रहे कि स्त्री के बिना पुरुष अपना जिनगी के ढो सकेला, जी ना सके । स्त्री-पुरुष के बीच के संबंध सृष्टि के एगो शाश्वत प्रक्रिया लागल रहे ।

ट्रेन अपना निर्धारित समय से लगभग चार घंटा बिलंब से चल के एगारह बजे रात में मुजफ्फरपुर स्टेशन पर पहुँचल रहे । ट्रेन से उतरला के बाद ओह औरत का पीछे-पीछे चल के प्लेटफार्म से स्टेशन का बाहर पहुँचल रहीं । ओह रात में एक्का-दुक्का रिक्सा स्टेशन पर नजर आवत रहे । कहीं भी कवनों एगो रिक्सा दिखाई पड़े त लोग झुण्ड के झुण्ड ओकरा पर टूट पड़त रहे । धक्का-मुक्की कर के हम कवनो तरह से एगो रिक्सा पकड़नी । साथ में आइल ऊ औरत तरह-तरह के आशंका से चुप-चाप खड़ा रहे । एह आपाधापी में ओकरा खातिर मुश्किल रहे कवनो रिक्सा के पकड़ल । एकरा से भी भारी सवाल रहे रात में अकेले गन्तव्य स्थान पर पहुँचे के । पता ना काहे ओकरा से हमरा हमदर्दी हो गइल रहे । साथ छोड़े के मन ना करत रहे । साहस बटोर के ओकरा से पुछल रहीं- 'कहां जाये के बा ।' जवाव मिलल रहे -''अस्पताल' । मन तरह-तरह के आशंका से घबड़ाये लागल । हम कहनी, 'चलीं हम छोड़ दे तानी ।' बिना कवनों ना-नुकर के ऊ औरत हमरा साथे रिक्सा पर बइठ गइल रहे । हम चहले रहीं कि रास्ता में कवनो पहल ओकरे तरफ से होखे । निराशा ही हाथ लागल । रिक्सा में सट के बइठला के एगो अलगे सुख रहे । जब कभी रिक्सा हिचकोला मारे त जान-बूझ के हम अपना देह के भार ओकरा पर डाल देत रहीं । पूरा शरीर गन-गना उठत रहे । अस्पताल पहुँचत-पहुँचत रात के बारह बज चुकल रहे । अस्पताल के गेट पर रिक्सा छोड़ के पीछे-पीछे अस्पताल के बच्चा वार्ड के ओह बेड पर पहुँचल रहीं जवना पर एगो पाँच छह साल के लइका पड़ल रहे । बेड का बगल में एगो बुढ़ औरत आ बारह तेरह बरिस के लइका बईठल ओह औरत के बेचैनी से बाट जोहत रहे । ऊ सब लोग घबड़ाहट में रहे । माई-माई चिल्लात बच्चा सुत चुकल रहे । ओकरा आँख से ढरकल लोर के रेखा गाल पर स्पष्ट झलकत रहे । ऊ बुढ़िया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनीता नाम से ओह औरत के संबोधित कइलस त पता चलल की ओकर नाम
रहे । बातचीत का क्रम में आगे मालूम भइल कि ओकर एकलौता बेटा
टिस 'बी' के रोगी बा । ऊ निर्भेद सुतल रहे । पानी चढ़ावल जात रहे । कभी-कभी
ऊ कराह उठे । बधार से दौड़ल-धुपल आइल गाय जइसे अपना बछरू के चाटे
ते ओसहीं सुनीता अपना बीमार बेटा के बगल में सुत के ओकरा के अपना छाती
के सुसुक-सुसुक के रो पड़ल रही । बुढ़ माई आ उहाँ खाड़ छोट भाई के भी
थमत रहे । अजीब कारूणिक दृश्य रहे । ई सब कुछ देखके हमहूँ अपना के
ना पवले रहीं । ओह घरी तक हमहूँ ओह परिवार के अंग बन चुकल रहीं । ई
कुछ संवेदना के आवेग से आप से आप हो गइल रहे । ओह रात में अपना घर
सुरक्षित ना रहे । रात अस्पताल में ही बितवले रहीं ।

सुनीता के साथ सहानुभूति हो गइल रहे । एह में कहीं ना कहीं स्वार्थ के
भी आवत रहे । कभी-कभी लागे कि विपत्ति में फँसल एगो अबला के संबंध
दोसरा तरह के बात सोचल केतना घृणित रहे । अपना आप से घृणा हो गइल
। मानवता के आड़ में कुछ गलत तरह के एगो ओछ सोंच से हम अपने नजर से
चुकल रहीं । बहुत देर का बाद स्थिति सामान्य भइल रहे । सुनीता के माई आ
से बातचीत के क्रम में पता चलल रहे कि आठ बरिस पहिले सुनीता विधवा हो
न रही । ससुराल के माहौल भी ठीक ना रहे । सास-ससुर के व्यवहार सारा सीमा
पार कर चुकल रहे । बाद में सुनीता से पता चलल रहे कि ससुर का ओर से भी
छाड़ के प्रयास भइल रहे । ओकरा शरीर से खेलवाड़ करे के ओकर देवर भी कई
असफल प्रयास कर चुकल रहे । जब अइसन माहौल में जीअल कठिन हो गइल
स्पताल छोड़ के सदा खातिर सुनीता अपना नइहर आ चुकल रही । बीमार बेटा के
खोज-खबर लेबे खातिर सास, ससुर आ देवर में से केहू ना आइल रहे । नइहर
के आर्थिक स्थिति ठीक ना रहे । शेष जीवन जिये के एकमात्र आधार अपना
के जानलेवा बीमारी के ईलाज खातिर कुछ पइसा के तलाश में आपन सब
मर्यादा के ताक पर रख के सुनीता अपना ससुराल गइल रहली आ खाली हाथ
हमरा साथे ट्रेन से उतरल रही । पाँच बजे भोर में अस्पताल छोड़ के हम अपना
र लौटल रहीं । अस्पताल का गेट ले सुनीता के छोट भाई हमरा के छोड़े खातिर
ल रहे । हमरा पास जवन भी पईसा बाचल रहे सुनीता के भाई के हाथ में थमा
रहीं । हिदायत देले रहीं कि ईलाज में कवनों कोताही न होखे के चाहीं चाहे जेतना
पइसा खर्च हो जाय । एह बात के सुनीता से ना कहे के भी वादा ओकरा से करवले
। अपना माई से सब कुछ बता देवें के इजाजत ओकरा के जरूर देले रहीं ।

कॉलेज से अइला के बाद शाम चार बजे रोज अस्पताल जाये के दिनचर्या
बइल । घंटन उहाँ बइठ के रात के नव बजे अपना डेरा पर लवटीं । सुनीता के बीमार
के नाम रहे आशुतोष । प्यार से सब लोग ओकरा के अंशु नाम से पुकारत रहे । सुन्दरता
अंग-अंग में पइसल रहे । ठीक अपना माई पर गइल रहे । ओकरा के छोड़े के मन
। बुझाय जइसे कि कवनो जनम के ऊ हमार आपन अवलाद होखे । सुनीता के प्रति
के केन्द्र अब अंशु बन गइल रहे । ओकरे रूप में अब सुनीता के रूप हम देखे
रहीं । धीरे-धीरे ओकरा स्वास्थ्य में सुधार होखे लागल । लगभग एक माह तक
चलल । अंशु के साथ हमार लगाव एगो अजीब रूप ले लेलस । हमरा बिना ओकरा
आवे । बराबर अपना माई से पुछत रहे, 'अन्कल जी कब आइब ? मम्मी, अंकल
में काहे न रहस ? ई के लगिहें ? कुछ-कुछ कह के अंशु के बोधे के प्रयास सुनीता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आ ओकर नानी करस । अस्पताल में पहुँचला पर हमरा के देख के ओकर चेहरा खिल उठत रहे ।

आखिर ऊ दिन भी पहुँच गइल जवना के कल्पना कर के मन कांप उठत रहे । आज अस्पताल से 'अंशु' के छुट्टी के दिन रहे । सब लोग अपना घर लौटत रहे । 'अंशु' साथ में चले के जिद्द ठान लेले रहे । ई स्थिति हमरा खातिर असहनीय हो गइल रहे । सब लोग के समझा-बुझा के कुछ दिन अपना डेरा पर रहे खातिर राजी कर लेले रहीं । लगभग एक सप्ताह तक सब लोग हमरा डेरा पर ठहरल । सुनीता के चुप्पी कुछ टुट चुकल रहे । कभी-कभार कुछ बात हो जाय । बात-व्यवहार से अइसन लाग जइसे सुनीता के नजर में पुरुष कुत्ता से भी बदतर कवनो जीव होखे जवना के काटे आ चाटे दूनू से परहेज करे के चाहीं । हमार जीवन सोंच पहिले औरत का संबंध में रहे उहें सोच पुरुष का संबंध में सुनीता के रहे । ई दूनू सोच भोगल जीवन से उपजल रहे जवना के कवनो तर्क से काटल ना जा सकत रहे ।

जीवन के गाड़ी कभी एक पटरी पर ना चल सके । समय आ परिस्थिति के अनुसार पटरी बदलल कभी-कभी जरूरी हो जाला । खाली भूत के भय से वर्तमान के ना जी ना सके । भविष्य के संवारे या सुखमय बनावे खातिर भूत से पीछा भी छुड़ावे पड़ेला । कवनो एकाकी घटना के आधार पर सम्पूर्ण के संबंध में अवधारणा बनावल कवनो बुद्धिमानी ना कहल जा सके । सकारात्मक सोच आदमी के उज्ज्वल भविष्य के तलाश में सहायक होला । हमरा आ सुनीता खातिर जीवन के प्रति नकरात्मक सोच में परिवर्तन लावे समय के मांग रहे । सबसे अहं प्रश्न रहे 'अंशु' के भविष्य संवारे के जवन सुनीता के लक्ष्य रहे । एकरा खातिर कवनो तरह के कुर्बानी करे के मानसिकता उनकरा अंदर जरूर रहे ई तक कि देह बेचे के भी । ई एगो अइसन व्यवसाय लागत रहे जहाँ स्त्री कवनो पुरुष के बंधन से मुक्त नजर आवत रहे । फिर भी लोक लाज भी कवनो चीज जरूर होला जवन कवनो परिस्थिति के मारल औरत या मर्द के एह मर्यादा के लांघे से रोकेला आ ओकर पैर के बेड़ी बन जाला ।

कुछ दिन साथ में रहत-रहत हमरा जिनगी के पहिलका पन्ना सुनीता आ उनकर माई भी पढ़ ले ले रही । कवनो ना कवनो मोड़ पर ई दुनो जिन्दगी मिलत जरूर रहे । सुनीता के नइहर के लोग के अस्पताल में भी आवा-जाही रहे आ हमरा डेरा पर भी । सबकर सोच रहे कि भगवान एगो देवदूत का रूप में सुनीता के शेष जिन्दगी संवारे खातिर हमरा के देले बाड़े । सुनीता के राजी करे में ऊ लोग कवनो कोर-कसर ना उठा राखल । हम एक दिन एकान्त में सुनीता से खुल के बात कइले रहीं । आखिर एगो समझौता भइल जवन के बियाह ना कहल जा सके । एह बियाह में सिन्दूर दान के कवनो माने मतलब ना रहे ऊ त एक बार हो चुकल रहे । साथे-साथे शेष जिन्दगी खुशी-खुशी बितावे के एगो मौखिक एकरारनामा पर रजामंदी भइल रहे । तय भइल रहे कि 'अंशु' के अलावा कवनो बच्चा हमनी का जिन्दगी में ना आवे के चाहीं । पैंतीस बरिस के साथ-साथ के जिन्दगी के गाड़ी एही पटरी पर चलल रहे जवना में प्रेम के साथ-साथ एक दूसरा के प्रति समझदारी, समर्पण आ त्याग के भाव रहे । एगो सम्पूर्ण जिन्दगी हम जिअनी जवना में कभी कवनो खटास ना आइल । हम सब सुख भोग चुकल रहीं । स्त्री-सुख, पुत्र सुख आ पतोह सुख भी । अंशु हमार बेटा आज इन्जिनियर बाड़े आ पतोह डॉक्टर । एह दूनू का मन में हमार देवी के रूप बा । खाली सेवा भाव ही नइखे आदर आ समर्पण के भाव भी बा । अब खुशी-खुशी सुनीता के पास जाये के इन्तजार कर रहल बानी । दोसरका जनम में फेर सुनीता से मुलाकात जरूर होई आ उनकर मांग सून ना रही, धूम-धाम से सेनुर से भराई ।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो हंसों का जोड़ा बिछुड़ गयो रे....!

-लव शर्मा 'प्रशांत'

डोम जाति में चम्पा पाँचवा क्लास ले पढ़ल लड़की रहे । ओ दियर डोम जाति के पहिलकी लड़की रहे जवन एतनो पढ़ल-लिखल रहे । अभई अवरो आगे ले पढ़ के चाहत रहली लेकिन ओ शहर के नेताजी पड़ोसी रहस, चम्पा के बाबूजी के साँच-झूठ आ एगो में दू गो जोड़ के ओकर पढ़ाई छोड़वा देलें । एगो डोम के लइकी के पाँचवा से आगा उनका से ना सहाएल । एह तरह चम्पा अपन भावी जिनगी के जवन महल के चाहत रहली, ऊ नेताजी के एके धक्का में टूका-टूका हो के छितरा कर एक दिन हिम्मत क के चम्पा अपना बाबूजी के समझावे के कोसिस लेकिन उनकर बाबूजी ओकरा के डाँटत कहलें -'डोम के बेटियो कतहीं देख त, एह जिला में जहवाँ-जहवाँ डोम के आबादी बा, ओतही बेटी कहां कवनो लड़िको पढ़ल बा ? आ, फेर तोहरा के पढ़ा-लिखा देहब पढ़ल-लिखल लड़िका तोहरा साथे बियाह ला कहवाँ से ले आइब ? त जल्दिए हम तोहर शादी क देवे के चाहत बानी ।''

चम्पा आपन मन मसोस के रह गइली । सात महिना बीतत-बीतत हरी मुजफ्फरपुर शहर के खदेरन डोम के साथे हो गइल । खदेरन, लिखल ना रहे । ओकरा ला करिया अक्षर भइँस बराबर रहे । लेकिन बहुते अच्छा इन्सान रहे । ऊ चम्पा से बहुते प्रेम करत रहे । धीरे-ओकरा से प्रेम करे लगली । एक बरिस बाद त दूनू बेकत बीचे एतना गइल कि दूनू के एक दोसरा बिना चैन ना रहे । जहाँ देखल जाय दूनू साथे देखल जाय । दूनू शहर के चौक पर जा के डोम-डोमिन के बीचे आ फूटपाथ पर के चाय-बिस्कुट के दोकान से चाय-पियत गप खदेरन गोदी में बच्चा के लेले गाना गावत, नाचत आगा-आगा आ पाछा-पाछा तेज चाल से अपना घर ओरि लवट आवस । दूनू के में एहू वास्ते मशहूर रहे कि चम्पा खूब गोर आ सुन्नर चेहरा के रहे । ओकर देह साँचा में ढलल रहे । ऊ अपना मरद का फुदकत तेजी का साथ चले त बुझाय जइसे इन्द्रलोक के कवनो पर उतर के आ गइल होखे । डोम टोला के छवारिक स ओकर छलकत जवानी के ऊपर जब से ऊ बियह के आइल तबइहें से रहन स बाकिर थोर -बहुत पढ़ल-लिखल चम्पा ओ लोग के कबो लली । तबहूँ धरिछन नाम के एगो जवान डोम हार ना मनलख । ऊ के तरफ से निराश हो गइल त खदेरन के दारू आ जुवा के लत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

धरा देलख । अब खदेरन दारू आ ताश में आपन मेहनत के कीमती कमाई उड़ा लगलन । ऊ साँझे से दारू पी के बउराए लगलें । ताशो में ऊ बहुते रोप जियान करत रहस । चम्पा ओकरा के समुझा-समुझा के हार गइल लेकि खदेरन से दूनू में से एको ना छुटल । एक दिन चम्पा आखिरी दफे ओकरा समझावत कहली-

"देखीं, हम कहतानी कि अब बहुते हो गइल । पानी मुड़ी से ऊ अब बह रहल बा । अपने इ दूनू बुरा लत छोड़ दीं ना त रउवा कतहूँ के रहब । लोग कहेला कि दारू, जुआ आ रंडीबाजी में से एको गो के लत जे लाग जाला ओकर नाश हो जाला । रउवा त दू-दू गो लत पोसले बानी । से अभइंए से इ दूनू बुरा लत ना छोड़ब त अब हमनी के बरबाद होखे में क देर नइखे । हम इहो कह देत बानी कि अगर रउवा इ सभ बुरा लत ना छो त हम नइहर चल जाएब आ जल्दी अइबो ना करब ।"

चम्पा के एह धमकी से खदेरन डेरा गइल आ कहलख -"चम्पा, हम एह दूनू के जल्दिए छोड़ देहब । तोहर बात टारब ना काहे कि हम तो के बहुते प्यार करीले । अब त हमरा माथ पर बहुते करजा हो गइल बा । इ अब हम छोड़ देहब । तूँ नइहर जाए के ख्याल छोड़ द ।"

चम्पा खदेरन के बात पर विश्वास क के चुप हो गइली लेकिन दिन के बाद धरिछन ओकरा के पोट-पाट के दारू के भट्टी में ले गइल जम के दारू पिया देलख । जब पूरा तरह नशा में खदेरन डूब गइलन आ उन बोलियो लटपटाए लागल त धरिछन खदेरन के भट्टिए में छोड़ के चल गइ राति में जब ढहत-दिलमिलात खदेरन आपन नाम के छोट मड़ई का लगे चहुँ त ओकरा के एह हालत में देख के चम्पा आपन माथा पीटे लागल । ऊ ओ इ हालत देख के डँटलख त खदेरन उल्टे ओकरे के डाँट देलख । चम्पा गइल कि एह बखत खदेरन नशा में बा, ऊ ओकर कवनो धाक ना मानी झगड़ा बढ़ जाई । ऊ ओह रात चुप रह गइल । लेकिन अब दिन ही में ख पी के हुड़दंग मचावे लागल । ऊ नशा में ट्रैफिक के सिपाही आ कवनो श आदमी के अब बेइज्जत कइल शुरू कइलख । एक दू बेर त सिपाही लो सोच के सह गइलें कि नशा में बा, लेकिन जब इ घटना खदेरन बेर-बेर दोह लागल त एक दिन दू जने सिपाही ओकरा के पकड़ के मारे लगले बा खदेरन दूनू के ढाह के भाग परल ।

खदेरन के इ खेल ज्यादे दिन ले ना चलल । अब ओकरा सिर धरिछन के बहुते करजा हो गइल रहे । अब धरिछन ओकरा के दारू पियाव बंद क देले रहे आ आपन रोपेआ के तगदो करे लागल रहे । एकरा चलते ख बराबर चिन्ता में डूबल रहे लागल । ओकर पियाइयो अब छूट गइल । एक धरिछन ओकरा से कहलख -"देख खदेरन ! हमरा रोपेया के बहुते जरूरत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

। एह से हमर रोपेया वापस क द । लेकिन हमरा पता बा, तूँ हमर करजा
र के पोजिशन में नइख । एह से तूँ आपन मेहर चम्पा के हमरा भिरी
ख द । अइसन करे में शिकाइतो नइखे काहे कि इ सभ त हमनी के
न सयकड़न बरिस से आज ले चलत आ रहल बा । जब तोहरा भिरी
ा सधावे लायक रकम जमा हो जाई त रकम देके चम्पा के वापस ले
"

"धरिछन भाई, चम्पा इ बात ना मानी आ हमरो आत्मा नइखे मानत कि
ना के बन्धक राखीं । तूँ हमरा के कुछ समय द रोपेआ वापस करे वास्ते
रन निहोरा कइलख ।

"ना, अब हम कुछो समय ना दे सकीं । तूँ जल्दिए हमर रोपेया वापस
त चम्पा के हमरा भिरी बन्धक राख । तोहरा सामने दोसर रास्ता अब
।" धरिछन कहलख ।

खदेरन रात भर बिछौना पर छटपटात रहल लेकिन ओकरा आँखि में
परल । ओकर चारू ओरि से उघार झोपड़ी भिरिए शहर के पक्की
हे । ऊ सड़क एह बखत ले सून हो चुकल रहे । निस्तब्ध रात में खदेरन
पर बराबर करवट बदलत रहे । ओकर इ हालत देख के चम्पा घबड़ात
-"का बात ह, अभइँले रउवा सुतल नइखीं आ करवट पर करवट
ा रहल बानी ? जल्दी बताईं कि का बात बा, हमरा चिन्ता हो रहल

खदेरन कुछ देर ले चम्पा के कुछो जबाब ना दे सकल । ऊ एक टक
ओरि देखते रह गइल । लेकिन चम्पा ना मानल । ऊ आपन किरिया
पूछलख -" सही-सही बताईं कि बात का बा, झूठ बोलब त हमर
..... कहते ऊ आपन दूनू आँखि में पश्चाताप के लोर भर के धीरे से
ल -"चम्पा ! हम तोहार मुजरिम बानी । सभ गलती हमरे से भइल
त बराबर हमरा के समझावते रहलू ह । हमहीं तोहार बात ना मनलीं ।
कड़कस पिआइ आ लगातार जुआ खेलला से धरिछन के बहुते करजा
चढ़ गइल बा । आज ऊ दारू के भट्ठी में हमरा से रोपेआ के तगादा
क-साफ कहलख ह कि एक-दिन का भीतर हमर पूरा रोपेया तूँ दे द,
म्पा के हमरा भिरी बन्धक राख द । कुछो समय देवे ला ऊ तइयारे
बे-बेर कहता कि या त पूरा रोपेया द ना त चम्पा के हमरा भिरी
ख ।"

"इ का कहत बानी रउवा, होश में त बानी ? रोज-रोज हम रउवा के
रहनी ह, लेकिन रउवा ना समझनीं । एकरे चलते आज धरिछन के
जाए के हिम्मत हो गइल ना त जबसे रउरा साथे बियाह के हम अइनी
ऊ हमरा पर आँख गड़वले रहल ह । लेकिन हम कह देतानी कि हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

ना त धरिछना के पइसा से ना त जुआ खेलले बानी, आ ना दारूए पीयले बानी
एह से धरिछना के सभ करजा रउरे सधावे के परी । हमनी डोम जाति के संस्
आ नियम हिन्दुअन के दोसर जाति से अलगे होला । हमनी के जाति में कर
भा कवनो बड़ संकट के समय में मरद आपन मेहरारू के बन्धक राख सकता
बन्धक के समय सीमा के भीतर महाजन ओह औरत के जवानी के भोग
सकता । बन्धक राखल औरत एकर विरोध ना क सकतिया । जब औरत के
महाजन के रोपेया वापस क दी त ऊ आपन मेहरारू के वापस ले जाई ।
बीचे ओह मेहरारू के कोख से जवन सन्तान जनमी ओह पर महाजन के
होई । का हमर जवानी के भोग दोसर केहू करे, इ रउरा अच्छा लागी ? वा
हम थोर-बहुत पढ़ल बानी, हम इ बात ना मान सकीं कि हमरा मरजी
खिलाफ केहू हमरा के बन्धक राख देवे । हम पढ़ल-लिखल बानी, एही
हम सतीत्व आ इज्जत का ह से नीमन से जनले बानी । अगर रउवा हमर म
के बिना हमरा के धरिछना के हाथ बन्धक राखे के कोशिश करब त हम अ
नइहर भाग जाइब चाहे एस.डी.ओ. साहेब के मेहरारू से जा के कह देहब ।
लोग त डोम जाति के हवन । ऊ लोग पढ़-लिख के केतना तरक्की क
बाड़न, एस.डी.ओ. हो गइल बाड़न । मेम साहेब से कह देहब त धरिछना
राउर खाल खिंचवा लिहन काहे कि औरत के बन्धक राखे के बात सुनते
आगि के लुत्ती हो जाली ।''

''देख चम्पा, अब जे होखे के रहे से त होइये गइल । हम तोहरा
बहुते प्यार करीले, एसे तोहरा के बन्धक धरे के हमर मन ना करता । लेकि
हम करीं त का करीं । एक-दू दिन में अगर धरिछना के करजा वापस ना क
जाइ त ऊ तोहरा के खींच के ले जाई । हमनी के डोम समाजो ओकरे साथ द
हमरा लगे ओकर रोपेया वापस करे के दोसर कवनो रस्तो त नइखे ।'' बड़ दु
मन से खदेरन कहलख । अब ओकरा दूनू आँखि में फेर से लोर भर गइल

चम्पा के अपना मरद पर दया आइल । तनि देर पहिले ज
खीस-क्रोध ओकरा खदेरन पर रहे, ऊ खदेरन के दूनू आँखि में पश्चाताप
लोर देख के सूखल पत्ता अस उधिया गइल । ऊ खदेरन के नजीक जाके
प्यार से पूछलख -''धरिछना के केतना करजा रउरा सिरे बा ?''

''दू हजार !'' लोर बहावत खदेरन जबाब देलख ।

''अच्छा त अबहीं घबड़इला के कवनो काम नइखे । हम अबहीं ए
डी.ओ. साहेब के मेम साहेब का भिरी जाके इ सभ कुल्ही बात कहके उन
से दू हजार रोपेया पैंचा मांगतानी । उहाँ का बहुते मुलायम दिल के औरत बानी
उहाँ के हमरा पर विशेष कृपा रहेला । थोर-बहुत कमो रोपेया दिहन त हम आप
गहना बन्धक ध के पूरा करब । ज्यादे तंग करिहन त मेम साहेब पुलिस
पकड़वा के नीमन से थूरवा दिहन । त हम जातानी ।'' कह के चम्पा ओता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइल ।

चम्पा जा के मेम साहेब से सभे बात कहलख आ भोकार पार के ऊ लगल । इ कुल्ही बात सुन के मेम साहेब जर के अंगार हो गइली । ऊ के बोला के ले आवेला ड्यूटी पर के सिपाही के भेज देहली आ चम्पा कहली -"देख चम्पा, एह समय हमरा भिरी एक हजार रोपेया बा । इहे रोपेया ओकर मुँह बंद क देत बानी आ बाकि रोपेया तोहनी थोर-थोर कके दे । एह बारे में हम धरिछन से कह देहब कि तोहनी के ऊ तंग मत करो । तूँ हमरा बंगला पर काम करेवाली आ थोर-बहुत पढ़ल-लिखल बाड़ू । छोट बहिन अस बाड़ू । हमरा एह शहर में रहते एक बरिस बीत गइल । पता बा कि तोहरा के छोड़ के कवनो दोसर एको गो डोम भा डोमिन -लिखल नइखन स आ ना आपन सतीत्व के कीमते एकनी के मालूम बा । पिताजी तोहरा के पाँचवा पास करा देले त तोहरो फर्ज बा कि तूहूँ आपन के कम से कम मैट्रिक ले पढ़ा द । पढ़ले पर नोकरी मिलेला आ संस्कारो । बुझलू नू ?"

"जी दीदी, हम अपना बच्चन के मैट्रिको से आगे ले पढ़ावे के करब ।" चम्पा जबाब देलख ।

एही बखत सिपाही का साथे धरिछन गेट के भीतर घूसल । ऊ मेम का आगा आपन दूनू हाथ जोड़ के खड़ा हो गइल । मेम साहेब ओकरा पर से नीचे ले नीमन से नपली आ फेर कहली -"तोहरे नाम धरिछन ह?"

जबाब में धरिछन धीरे से बोलल -"जी ।"

"तें चम्पा के काहे तंग करतारे ? तें जानत नइखस का कि चम्पा हमरा पर काम करेली आ हमर छोट बहिन अस बा । हमरा चम्पा के बन्धक के तोहरे औकात बा, उहो दू हजार रोपेया में ! जानतारे कि ना, औरत के -विक्री कइल भा बन्धक लेहल भा राखल गैरकानूनी ह । इ बाबा आदम जमाना के सामाजिक कानून अभहुँओ चलते रही का ? आज सभे जात -लिख के केतना आगा चल गइल बाड़न आ तोहरा अइसन गिरल आदमी पसेना के कमाइल कीमती रोपेया अपना बाल बच्चन पर खर्च ना क के के सुन्नर मेहरारू के बन्धक लेके ओकर जवानी से खेले के चाहेला । गुण्डा, बदमाश, तोहरा के त पुलिस से थूरवा देवे के चाहीं आ रोपेया हजम जाए के चाहीं । लेकिन हम अइसन ना करब । हई ले एक हजार रोपेया, अपना पास से दे तानी । बाकी एक हजार चम्पा के मरद कमा के तनि-तनि दे दी । बीच में रोपेया ला टोकबे त ठीक ना होई ।" मेम साहेब चेतावत । "जी, ना टोकब ।"

मेम साहेब जाए के इशारा कइली आ धरिछन डोम उनका के प्रणाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कइलख आ पाछा घूम के झटकत भाग गइल ।

चम्पा मेम साहेब के गोड़ छू के प्रणाम कइलख आ सुसकत कहलख- "मेम साहेब ! राउर इ एहसान हम जिनगी भर ना भूलाइब । आज रउवा हमर इंज्जत लुटाए से बचवनी ह ।"

मेम साहेब ओकरा के आर्शीवाद देत कहली -"चम्पा ! हम त खाली आपन फर्ज निभवनी ह । अब तूँ जा, फेर कवनो संकट आवे त कहिह । वइसे तूँ रोज हमरा लगे काम वास्ते अइबे करेलू ।"

चम्पा मेम साहेब के फेर एक बेर प्रणाम कइली आ लवट परली । अब दूनू बेकत हाड़तोड़ मेहनत कके कमाए लगलन । ओने खदेरन दारू आ जुआ खेलल बंद क देले रहे । दूनू बेकत बीचे एह बीच प्रेम बहुते बढ़ गइल रहे । दूनू नाश्ता क के एके साथ खरहरा आ बड़का टिन हाथ में लेले निकल स आ अपना-अपना काम पर चल जा स । एक बिहने गइल दूनू तीन-चार बजे लवट स । एह तरह तीने महीना में ओकनी धरिछन के एक हजार रोपेया सधा देलन स । एकरा बाद फेर तीन महीना काम क के मेम साहेबो के एक हजार सधा देलन स । एह तरह फेर से ओकनी के प्रेम में भींजल जिनगी के गाड़ी नीमन से पटरी पर चले लागल । कुछे दिन में कुछ रोपेया कमा के खदेरन एक ठो ट्रान्जिस्टर खरीदलख । रात में खा-पी के खदेरन ट्रान्जिस्टर खोले आ दूनू बेकत प्रेम से फिल्मी गाना सुन स ।

लेकिन एक दिन सभे कुछ खतम हो गइल । खदेरन के ट्रान्जिस्टर एक दिन धरिछन चोरा लेलख । ऊ चोर के खोजे लागल । एक दिन ओकरा पता लागल कि ओकर ट्रान्जिस्टर धरिछना चोरवले बा त ऊ ओकरा के खोजे लागल । ओकरा धरिछन रेलवे लाइन का लगही ताश खेलत मिलल । खदेरन धरिछन के पकड़ के पीटे लागल त ऊ सकार लेलख कि ओकर ट्रान्जिस्टर उहे चोरवले बा । खदेरन ओकरा से कहलख कि घरे चल के ओकर ट्रान्जिस्टर वापस करो । खदेरन ओकर कमीज के कॉलर पकड़ क रेलवे लाइन के किनारे-किनारे चले लागल । ओही समय सीटी देत सद्भावना एक्सप्रेस लाइन पर आवत रहे । जब ट्रेन नजदीक आ गइल त धरीछन खदेरन के ट्रेन के सामने ढकेल देलख । खदेरन इंजन का आगा फेंका गइल । ट्रेन ओकरा के दू टूका करत आगा बढ़त चल गइल । फेर ऊ उठ ना सकल । नजीके ओकर झोपड़ी रहे, एह से चम्पा के खबर मिले में देरी ना भइल । ऊ रोवत-कान्हत तुरन्ते रेलवे लाइन के नजीक चहुँपली । खदेरन के दू टूका भइल लाश देखते ऊ "हमर राजउ...." कहत खदेरन के लाश पर गिर के बेहोश हो गइली । ओही समय बगल के हॉल के लाउडस्पीकर से गीत बाजत रहे -"दो हंसों का जोड़ा बिछुड़ गयो रे.....!"

-ग्राम- रघुनाथपुर, पोस्ट- मोतिहारी, (पूर्वी चम्पारण) - 845401

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविता

मुक्तक

-मुफलिस

कइसन चलन हो रहल बा,
दमी बदचलन हो रहल बा ।
कमइले, कमा लिहीं सबकुछ,
में इहे लगन हो रहल बा ।।

दमी में जलन हो रहल बा,
में ऊ मगन हो रहल बा ।
मारल भइल बा मसखरी,
मीयत दफन हो रहल बा ।।

मार-धरम कहि रहल बा,
हवी सब रसम कहि रहल बा ।
एके रही अब जहाँ में,
पापी गरम कहि रहल बा ।।

गजबे धरम बनि गइल बा,
-हिंसा करम बनि गइल बा ।
के अन्दर बा करिया अन्हरिया,
अधम बेरहम बनि गइल बा ।।

हवी नशा पियावल जाता,
दिली में फँसावल जाता ।
के जहर से भरलि खइनी,
बना के लड़ावल जाता ।।

जाति के गीत सब गा रहल बा,
गैर इन्सानियत भा रहल बा ।
जाति के नाम पर आजु देखीं,
आदिमी आदिमी खा रहल बा ।।

प्यार-मिल्लत कहाँ रहि गइल बा,
दिल से इन्सानियत बहि गइल बा ।
आदिमी जब बनल बा दरिन्दा,
आदमीयत कहाँ रहि गइल बा ?

मन के बतिया बतावल बा मुश्किल,
दर्द आपन सुनावल बा मुश्किल ।
हर घर में घुसल बाटे रावन,
आदिमी के बचावल बा मुश्किल ।।

जन-जीवन के भइया बचाईं,
दुख के फरियाद सब के सुनाईं ।
वक्त रहते स्वयं रउरा जागीं,
अउर लोगन के भी अब जगाईं ।।

आदमीयत कभी मति घटे दीं,
शुद्ध मानस के तन में सटे दीं ।
दुनिया के बा एके रचइया,
राम-रहमान के मति बँटे दीं ।।

-चौधरी टोला, डुमराँव (बक्सर) - 802 119 (बिहार)

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुक्तक

-मुफलिस

बदलन चलन हो रहल बा,
बदचलन हो रहल बा ।
बदले, कमा लिहीं सबकुछ,
इहे लगन हो रहल बा ।।

में जलन हो रहल बा,
में उ मगन हो रहल बा ।
नाल भइल बा मसखरी,
नल दफन हो रहल बा ।।

धर्म-धरम कहि रहल बा,
सब रसम कहि रहल बा ।
एके रही अब जहाँ में,
गरम कहि रहल बा ।।

सबे धरम बनि गइल बा,
करम बनि गइल बा ।
अन्दर बा करिया अन्हरिया,
बेरहम बनि गइल बा ।।

नशा पियावल जाता,
में फँसावल जाता ।
जहर से भरलि खइनी,
के लड़ावल जाता ।।

जाति के गीत सब गा रहल बा,
गैर इन्सानियत भा रहल बा ।
जाति के नाम पर आजु देखीं,
आदिमी आदिमी खा रहल बा ।।

प्यार-मिल्लत कहाँ रहि गइल बा,
दिल से इन्सानियत बहि गइल बा ।
आदिमी जब बनल बा दरिन्दा,
आदमीयत कहाँ रहि गइल बा ?

मन के बतिया बतावल बा मुश्किल,
दर्द आपन सुनावल बा मुश्किल ।
हर घर में घुसल बाटे रावन,
आदिमी के बचावल बा मुश्किल ।।

जन-जीवन के भइया बचाईं,
दुख के फरियाद सब के सुनाईं ।
वक्त रहते स्वयं रउरा जागीं,
अउर लोगन के भी अब जगाईं ।।

आदमीयत कभी मति घटे दीं,
शुद्ध मानस के तन में सटे दीं ।
दुनिया के बा एके रचइया,
राम-रहमान के मति बँटे दीं ।।

-चौधरी टोला, डुमराँव (बक्सर) - 802 119 (बिहार)

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जन्मदिन (2 अक्टूबर) पर विशेष :

सपना बापू के

-श्यामाकांत ओझा 'निराला'

बापू तू सपना देखल
'राम राज्य' स्थापित करे के
सुनऽ कहानी आगे अब
के चानी काटेवाला बा
अनैतिकता सर चढ़ के बोले
नैतिकता छुपल चुहानी बा । सुनऽ..... ।
जातिवाद सम्प्रदायवाद
राजनीति के मुद्दा बा
अगर कहीं से खाड़ा बा 'दादा'
अपोजिसन वाला के लागत जाड़ा बा । सुनऽ.....।
चोरी सीनाजोरी सगरो फैलल
धरम-करम मिट गइल बा
व्यभिचार अत्याचार परवान चढ़ल
देखे-भाले वाला केहू ना इहाँ बा । सुनऽ.....।
मानवता मरि गइल आज
लूट खसोट मचल बा
आतंकी प्रभाव बढ़ल
केहू ना सोचे वाला बा । सुनऽ.....।
असुरक्षित अनाथ जनता
ना सुनवइया का कहता
असहाय हाथ सब भइल बा । सुनऽ.....।
चिल्ह गीध अस भइल नजर
जइसे सभे 'मांस' नोचेवाला बा
पर्दाहीन समाज भइल
के पर्दा डालेवाला बा ? सुनऽ.....।
सपना बापू के का रहल
गुन गुन के सब भरम ढहल
ना आज केहू गुदाने वाला बा-
सुनऽ कहानी आगे अब.... ।

-निमेज, बक्सर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के तेरहवाँ सत्र के महामंत्री

भोजपुरी के प्रखर आलोचक : नागेन्द्र प्रसाद सिंह

-कृष्णानन्द कृष्ण

सन् 1974 के साल खाली बिहार के राजनीति में ना बलुक, अखिल भारतीय राजनीति में हड़कंप मचा के रख देले रहे । पूरा बिहार के लोग जयप्रकाश नारायण के लड़ाई में सत्ता के खिलाफ सड़क पर उतर आइल रहे । खास क के पटना में बड़ा नजारा देखे के मिलत रहे । सचिवालय के चारो तरफ बांस-बल्ला आ कटहवा तार के घेरा लगा देल गइल रहे- लोकतंत्र के बचावे खातिर । ओही साल जुलाई में पोस्टिंग पटना में भइल रहे आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के गठन के प्रक्रिया बहुते जोर-शोर से चलत रहे । हमहूँ एह आंदोलन से अपना के अछूता राख सकलीं आ एगो छोट कार्यकर्त्ता के रूप में ओह आंदोलन से जुड़ गइलीं । ओही साल के कवनो बैठक में नागेन्द्र जी से कबो हमार परिचय भइल होई । ई परिचय समय के साथ-साथ कब अउर गाढ़ होत गइल, ठीक-ठीक ना कहल जा सके ।

बचपन

नागेन्द्र प्रसाद सिंह उर्फ लछुमन जी के जनम पुरनका सारन जिला में सरयू नदी के तट पर एकमा के लगे बसल गाँव शीतलपुर बरेजा में सुख-सुविधा से भरल-पूरल परिवार, जेकर मुखिया रहलीं शिक्षाशास्त्री, साहित्यकार श्री बब्बन प्रसाद सिंह, के घर में 7 अप्रैल 1937 के भइल । धर्म-परायण ममतामयी निर्भीक मतारी के सानिध्य में बीतल बचपन के समय, जेकर छाप उनका जीवन पर पड़ल, आजुओ तक के मिल जाला । ऊ लरिकाईयें से पढ़े में बहुत तेज रहले, बाकिर विधाता के गति के केहू ना जाने । कहलो जाला कि विधाता के गति-मति के आगे आदमी के मन के चलले । लरिकाईयें में नागेन्द्र प्रसाद सिंह के ऊपर विधाता के अइसन बज्रघात भइल कि उनकर जीवन खुद उनकरे खातिर चुनौती बन के खाड़ हो गइल । डॉक्टर के सावधानी के चलते एगो आँख के रोशनी त पूरा के पूरा चलिए गइल, दोसरको आँख के अधूरा रोशनी ना बांचल जवना से सीधे-सीधे कवनो चीज के देखल भा पढ़ल जा सके । बाकिर ऊ एकरा के चुनौती के रूप में स्वीकार कइले । माई के अंचरा के छांह, ममतामयी के स्नेह आ दूध में घुल के जवन निर्भीकता, संवेदनशीलत आ दृढ़ता उनका लरिकाई में मिलल रहे, उहे दृढ़ता आ निर्भीकता उनका के आज एह मुकाम प ले आके खड़ा कइलस अस खाड़ क देले बा, जहँवा से इनका के डिगावल कवनो आसान काम ना रहे ।

शिक्षा-दीक्षा

ऊ विधाता के दिहल चुनौती के स्वीकार करत अपना जिनगी के गाड़ी आगे बढ़ावे लगलें । अथक परिश्रम आ दृढ़ विश्वास के बल पर शिक्षा के उच्च डिग्री एम. ए. आ एम.एड., पटना विश्वविद्यालय से अपना अध्यवसाय का बल पर प्राप्त कइलें । कहल जाला कि हर आदमी के जीवन में जे सफलता मिलेला ओकरा पीछे कवनो ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

कवनो नारी के हाथ जरूर होला । आ ई कुछ हदले ठीको बा । नागेन्द्र प्रसाद सिंह के सफलता के राज के भी इहे वजह बा । सन् 1959 ई. में श्रीमती शांति कुमारी के साथ परिणय-सूत्र मं बंधलीं आ ओकरा बाद पलट के कबो पीछे ना तकलीं । आ सामान्य रूप से आम आदमी के जीवन के जे सुंख होला, ऊ नागेन्द्र प्रसाद सिंह के उपलब्ध बा । भरल-पूरल उच्च शिक्षा-प्राप्त सुसभ्य-सुसंस्कृत परिवार के मुखिया का रूप में उहाँ के जीवन बहुते आनन्दमय बीत रहल बा ।

साहित्यिक सक्रियता आ उपलब्धि

पारिवारिक परिवेश के आधार साहित्यिक-सांस्कृतिक भइला का चलते इहाँ के मन के भीतरे दबल साहित्यिक भाव बहरी आवं खातिर कुलबुलात रहत रहे । ओकर प्रतिफलन इनका विभिन्न विधन के प्रकाशित पुस्तकन में भइल बा, जवना से इनका प्रतिभा के अंदाज लाग जाला । उनका व्यक्तित्व के बहुआयामी विकास भइल बा, जवना में साहित्य-सृजन से लगायत संपादन, मुद्रण, अध्ययन, शोध, प्रचार-प्रसार, संगठन, आंदोलन आ प्रकाशन के काम ले शामिल बा । इनकरा लेखन के शुरूआत साहित्य के एगो बड़ा कठिन विधा होले व्याकरण, ओही से शुरू भइल आ इहाँ के लिखल पहिल पुस्तक **''हिन्दी बाल व्याकरण''** के प्रकाशन सन् 1961 ई. में सर्वश्री शिव भण्डार, सीवान से भइल । एकरा बाद शिक्षे से जुड़ल सन् 1962 ई. में **''हिन्दी में शिक्षा साहित्य : उपलब्धियाँ एवं संभावनाएँ''** छपल । एह दूनो किताब के जरिए शिक्षा जगत में इहाँ के बड़ा सम्मान मिलल । एही तरह से इहाँ के साहित्यिक गतिविधि यन के चर्चा गूंजे लागल रहे । एही बीचे सर्वश्री जयदुर्गा प्रेस के स्थापना हो गइल रहे । सन् 1963 ई से 1979 ई. के बीचे के समय पर अगर नजर डालल जाव, त पता चलेला कि सर्वश्री जयदुर्गा प्रेस लोकभाषा के साहित्य प्रकाशन के अड्डा बन चुकल रहे । जब कबो ईमानदारीपूर्वक लोकभाषा के साहित्य के विकास के इतिहास लिखल जाई, ओह घरी बिना नागेन्द्र प्रसाद सिंह के चर्चा कइले ओकर इतिहास पूरा ना हो सके । काहे कि साहित्य-सृजन के बाद ओकर प्रकाशन के काम सबसे बड़ा महत्वपूर्ण होला । भोजपुरी, मगही, मैथिली, बज्जिका आ अंगिका के साहित्य-प्रकाशन के गढ़ रहे सर्वश्री जयदुर्गा प्रेस । प्रेस के काम के साथे-साथे संस्था-संगठन आ अपना मातृभाषा भोजपुरी के विकासो में नागेन्द्र प्रसाद सिंह आपन योगदान देत रहल बाड़न ।

अइसे त प्रकाशन के नाव पर मौलिक आ संपादित / सह-संपादित ग्रंथन के कुल संख्या करीब-करीब दू दरजन के करीब ले पहुँच जाई, बाकिर भोजपुरी साहित्य में उहाँ के कुल तीन गो मौलिक कृति छपल आ चर्चित भइल बा । मौलिक किताबन में 1. **नवरंग**, 1979 ई., 2. **सोच-विचार**, 1997 ई. आ 3. **सुर ना सधे**, गजल संग्रह, 2000 ई. । संपादित पुस्तकन में **'गीत जे गूंजत रहल'**, 1994 ई. उमाकांत वर्मा के गीत आ ओह पर आलेखन के संकलन आ दोसरकी पुस्तक जवना के आपन अलग महत्व राखत बा **'भिखारी ठाकुर रचनावली'**, 2005 ई. ह । एकरा अलावे भोजपुरी अकादमी से कई खंडन में प्रकाशित **'भोजपुरी निबंधमाला'**, **'भिखारी ठाकुर ग्रंथावली'**, **'एकइसवीं सदी आ भोजपुरी'**, **'भोजपुरी कहानी संकलन'** आ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

र अजीज के रचनन के संकलन के काम बहुते महत्त्वपूर्ण बा । कवनो आदमी व्यक्तित्व के आकलन करे खातिर अतना काम कम नइखे । इनका पूरा रचना संसार अवलोकन-अवगाहन कइल जाव, त इहाँ के व्यक्तित्व प्रमुख रूप से गद्यकार, में आलोचनात्मक निबंधकार, उभर के लोगन के सामने आवता । इहाँ के गद्यकार स्याव नमूना इहाँ के आत्मकथा **'चुनौती भरल जिनगी'** में लोगन के देखे के ी, जब प्रकाशित हो के ऊ लोगन के सामने आई । हमार मत ह कि कवनो कार के मूल्यांकन करत खाँ ओकरा सैद्धांतिक विचारन के नजरअंदाज ना करे चाहीं । अगर ओकरा के नजर अंदाज कर दिहल जाव त ओह रचनाकार के साथे ाय ना कइल जा सके ।

भोजपुरी में निबंध-लेखन के इतिहास बहुत जादे पुरान नइखे आ ओहू में नपरक समीक्षात्मक निबंधन आ ललित निबंधन के अभाव त हरमेसे रहल बा । अभाव के पूर्ति कुछ हद ले नागेन्द्र प्रसाद सिंह के दू गो निबंध-संग्रह **'नवरंग'** **'सोच विचार'** कर रहल बा । गंभीर निबंध-लेखन का दिसाई इनकर ई प्रयास ी हदतक सफल कहल जाई । एह निबंधन के अध्ययन से साफ पता चल जाला उनको भीतरे भोजपुरी भाषा-साहित्य के स्थिति ओकरा विकास के संभावना के लेके र एगो द्वंद्व चलत रहेला । इहे द्वंद्व इनका के बराबर उदबेगत रहेला । बेचैन करत ा । सोचे-समझे खातिर बराबर बेचैन कइले रहेला, जवन समय-समय पर अवसर ी अपना स्वरूप में पाठकन के सामने आवत रहेला । अपना व्यक्तिगत जीवन में न्द्र प्रसाद सिंह भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ल रहल बाड़न एह से इनकरा ान-पद्धति के विकास मार्क्सवादी चिंतन-पद्धति के अनुसार भइल बा । बातचीत के में ऊ बराबर कहेलन कि उनका मन पर आचार्य नलिन विलोचन शर्मा के समीक्षा ति के बहुत असर पड़ल बा । एकरा के हिगरावत ऊ कहलन कि भारतीय समीक्षा ा पद्धति बा, पहिला विहगावलोकन आ दूसरा सिंहावलोकन पद्धति । विहगावलोकन ीक्षा में बहुते फैलाव रहेला, जेकरा चलते बिखराव के हमेसा डर बनल रहेला । उहँवे ावलोकन पद्धति में आलोचक के दृष्टि अपना लक्ष्य पर ही केंद्रित रहेला तबे ओकर ा प्रभाव पाठक पर पड़ेला । नागेन्द्र प्रसाद सिंह सिंहावलोकन पद्धति वाला ोचकीय दृष्टि अपनवले बाड़न । एही से इनकर समीक्षात्मक आलोचकीय निबंध ी शैली वाला होला ।

अपना निवेदन में नागेन्द्र प्रसाद सिंह लिखत बानीं -'कार्लमार्क्स आ इलिच ादिमिर लेनिन के समग्र साहित्य पढ़े के अवसर हमरा भइल । एह अध्ययन के िकल भइल कि विषय-प्रतिपादन आ तर्क-पद्धति पर एकर गहिर छाप हमरा पाठक ा के मिली'..... एही क्रम में आगे विचार करत ऊ लिखले बाड़न -'एह सूचना-विस्फोट ा वैश्विक व्यवस्था के आक्रमण का युग में आदमी का पास अतना समय कहाँ बा ि ऊ कवनो बात के 'व्यास-शैली' में कहो-सुनो । एही क्रम में हमरा कुछ अमरिकी ीय ग्रंथन के पढ़े के अवसर मिलल आ वेदो उपनिषद् देखलीं । हमरा लागल कि ि अगर सूत्र-शैली में कुछ लिख जाईं, त शायद अब, 60 बरिस का बाद बाँचल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

जिनिगी में आंशिक रूप से कुछ लिख जायेब ।' यानि कि नागेन्द्र प्रसाद सिंह के पहचान अब उनकर सूत्र-शैली बन गइल बा । अपना एही विशिष्टता के चलते भोजपुरी आलोचना में उनकर आपन अलग पहचान बन गइल बा । **'नवरंग'** आ **'सोच-विचार'** नाम के दू गो निबंध के पुस्तक उनकर प्रकाशित बा । एह दूनों किताबन में कुल मिला के पच्चीस गो विविध वर्णी निबंधन के स्वरूप पाठक के सामने आवत बा । **'भोजपुरी समीक्षा के मानदण्ड'** निबंध पढ़ला के बाद उनका ग्यान के गहिराई के पता चलेला । पाश्चात्य आलोचना पद्धति के सार तत्व सूत्र रूप में, भोजपुरी साहित्य में उतारे के पीछे उनकर मकसद साइत भोजपुरी आलोचना साहित्य के एगो मजबूत आधार प्रदान कइल होई । निबंध में वस्तुगत दृष्टि के वकालत करत ऊ कहले बाड़न कि रचना के साथे अन्याय ना होखे एह से ओकरा परिवेश के ज्ञान भइल बहुत जरूरी बा, काहे कि परिवेश के जानकारी के अभाव में रचना के विश्लेषण सही ढंग से ना कइल जा सके । एही तरह समीक्षा में तटस्थता के विषय में खास तौर पर उहाँ के विचार बा कि समीक्षक के तटस्थ भाव से रचना के विश्लेषण करे के चाहीं । समीक्षा के उद्देश्य आ भाषा-शैली सीधा-सरल आ विषय के प्रतिपादन पर विचार करत ऊ एगो बहुत अच्छा बात कह गइल बाड़न कि 'समीक्षक के काम एगो अच्छा दोस्त के होला, जे रचना का खूबी भा खामी-दूनों से रचनाकार के सही दिशा देत रहेला । एह से समीक्षक के कटु ना होखे के चाहीं । यानि समीक्षक के हरमेस रचना के प्रतिपादन वस्तुगत दृष्टि से रचना के परिवेश के ख्याल करत तटस्थ भाव से रचनात्मक समीक्षा करे के चाहीं । (नवरंग-पृष्ठ-19) एही से रचनाकार आ पाठक दूनों के सही दिशा मिलेला । **'भोजपुरी कहानी के परिवेश'** नामक आलोचनात्मक निबंध में भोजपुरी कहानी में आइल परिवेशगत बदलाव के रेखांकित करे के साथ-साथ भोजपुरी कहानी के काल निर्धारण करे के एगो सफल प्रयास कइल गइल बा । एकरा आधार पर भोजपुरी कहानी के मूल समस्यन के रेखांकित करत लेखक कुछ सूत्र ओह निबंध में देले बा, जवना के आधार पर भोजपुरी कहानी पर बातचीत कइल जा सकत बा, हालांकि ओह में कइगो अइसन बिंदु बा, जवना पर अलग-अलग ढंग से विचार कइल जा सकत बा । दोसरका निबंध **'भोजपुरी कथा साहित्य : स्वरूप, समस्या आ संभावना'** में भोजपुरी कहानी के विकास-क्रम के ओकरा सामाजिक परिप्रेक्ष्य में देखे-परखे के एगो सफल प्रयास कइल गइल बा । एकरा संगे-संगे भोजपुरी कथा साहित्य के समस्यन के तरफ इशारा करत ओकरा विकास के संभावना पर भी विचार कइल गइल बा । हालांकि सब कुछ सूत्र-शैली में लिखल गइल बा, तवनो पर एकर महत्व कम नइखे होत । विचार आ बहस खातिर त एगो मजबूत आधार मिलिए जात बा । इहे ना कथा साहित्य के नव्यतम विधा लघुकथा पर विचार करे का क्रम में लघुकथा के परिभाषित करे के कोशिश **'लघुकथा आ भोजपुरी लघुकथा'** में कइल गइल बा । साथे-साथे लघुकथा के तत्वन का ओर भी संकेत करत लघुकथा के भाषा, संवाद-योजना, शिल्प, कथा-रस आ ओकरा सोद्देश्यता पर गहन चर्चा एह आलेख के माध्यम से कइल गइल बा । साथे-साथे लेखक आलेख के उत्तरखंड में भोजपुरी लघुकथा के विकास क्रमो के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करे के एगो सफल प्रयास कइले बा । व्यक्तिपरक निबंधन में जहाँ 'भिखारी के माध्यम से उनका द्वारा रचित साहित्य पर निबंधकार कई तरह से विचार जवना में लोकनाट्य आ लोकमंच के परंपरा से लगायत विदेशिया शैली तक बान करे के कोशिश कइल गइल बा । 'विदेशिया : शैली ना, परम्परा ह' दृष्टिकोण से विचार करत लेखक ई सिद्ध करे के प्रयास कइले बा कि विदेशिया परम्परा ह, जवन भिखारी ठाकुर से पहिले सन् 1857 ई. के सिपाही विद्रोह से पहिले शुरू भ गइल रहे आ ऊ विकास के कई गो सोपान तय करत भिखारी के समय में परवान चढ़ल । अपना आलेख में लेखक बहुत बारीकी से लोकनाट्य आ लोकमंच के विशेषतन के प्रतिपादित करत ई सिद्ध करे के प्रयास कइले बा परंपरा भिखारी ठाकुर से पहिले सुंदरी बाई, दुनिया बाई, द्विजराम, गुदर आ अइसन कइगो मंडलियन के माध्यम से काफी प्रचार प्रसार पा चुकल रहे, 'भिखारी ठाकुर के सामाजिक चेतना' आलेख में भिखारी ठाकुर द्वारा रचित के विवेचन करत ओकर व्याख्या लीक से हट के नया दृष्टिकोण के तहत कइले कइसे भारतीय समाज में आर्थिक, सामाजिक, आ राजनैतिक परिवर्तन के पर होत बदलावन के समायोजन भिखारी ठाकुर अपना नाटकन में समाहित बाड़न । एह से भिखारी ठाकुर के रचना पर काम करेवाला अध्येता लोगन के से सोचे-समझे के नया नजरिया मिलत बा आ भिखारी ठाकुर के नाटकन के विस्तारो मिलत बा । लेख के अंत में अपना आदत के मुताबिक लेखक अपना के सूत्र रूप में सात गो विन्दुअन के चरचा करत भिखारी ठाकुर के नाटकन में सामाजिक रीति-रिवाज, सामाजिक चेतना, प्रगतिशीलता के सटीक वर्णन कइले 'पुण्यश्लोक रघुवीर नारायण' में भोजपुरी के राष्ट्रीय चेतना के कवि 'बटोहिया' सिद्ध लेखक रघुवीर नारायण के सम्पूर्ण व्यक्तित्व आ रचना संसार के बौद्धिक सामान्य पाठक से विद्वान अध्येता तक के बाँधे में सफल भइल बा । 'आधुनिकता के आहट : उमाकांत के गीत' के माध्यम से लेखक भोजपुरी कविता बदलावन के विवेचना कइले बा । 'आधुनिकता' के विवेचन करत लेखक लिखत बा -'आधुनिकता एगो बोध ह, जवना के मूल आधार 'स्वचेतना' ।ई हर युग में रहेला आ क्रियाशील होला, जवन युग के सामाजिक परिवर्तन के वन क ओकरा के सहारा देला ।'' (सोच-विचार, पृ.-48) एही तरह से लेखक कइले बा कि आधुनिकता, प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण के फसल ह । रोमांटिक कविता व्यक्ति स्वातंत्र्य के महत्व देला, उहंई आधुनिकता आम आदमी के स्वतंत्रता आ जिक दायित्व से जुड़ेला । एह निबंध में लेखक उमाकांत वर्मा के कविता के से पूरा भोजपुरी काव्य परंपरा के समझे के सार्थक प्रयास कइले बा ।

एह निबंधन के अलावे तिसरका श्रेणी के निबंधन में ओह सब निबंधन के जा सकता बा जवन समय-समय पर अवसर विशेष खातिर लिखल गइल बाड़न एह तरह के निबंधन में कुछ त भोजपुरी साहित्य आ संगठन से जुड़ल बा, त कुछ व्यवसाय आ सामान्य ज्ञान से । निबंधन के मथेला देखला से एकनी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

उपयोगिता आ सार्थकता के पता चल जाई । **'भोजपुरी आंदोलन : स्थिति आ संभावना'** भोजपुरी आंदोलन से संबन्धित निबंध बा त **'भोजपुरी प्रकाशन व्यावसायिक समन्यव''** में प्रकाशन से संबन्धित स्थिति आ ओकरा संभावना पर गंभीरता पूर्वक विचार कइल गइल बा । एह आलेख में लेखक प्रकाशन व्यवसाय से संबन्धित अपना अनुभव के आधार पर वर्त्तमान में भोजपुरी प्रकाशन के स्थिति पर आपन राय जाहिर कइले बा जवना से भोजपुरी के प्रकाशक लोग लाभ उठा सकत बा। एकरा अलावे **'भारत के पूरबी अंचरा : अरूणाचल'**, **'बिहार के ग्राम पंचायत चुनाव'** आ **'प्रबन्धन में मालिक मजदूर के साझ'** अइसन विवरणात्मक, वैचारिक आ राजनैतिक आधार आ सर्वहारा के हित के ख्याल रखत ज्ञानवर्द्धक निबंधन के पढ़ले से लेखक के विद्वता के परिचय पाठक का अनियासे मिल जाला ।

निबंध साहित्य में रम्य रचना के रूप में हिन्दी में ललित निबंध आ व्यक्तिगत निबंध के आपन अलग स्थान बा । भोजपुरी में अइसे त कई गो महत्वपूर्ण निबंध लेखक बाड़न बाकिर नागेन्द्र प्रसाद सिंह के आपन अलग स्थान आ पहचान बा । ललित निबंध आ व्यक्तिगत निबंध का श्रेणी में **'गांव के अझुरहट'** आ **'एगो भाषण, जे हो न सकल'** के राखल जा सकत बा । एह निबंधन में अपना प्रकृति के अनुरूप सवाल के उठावल गइल बा । आ लेखक अपना लेखकीय क्षमता के उपयोग करत अपना विचार से समाधानो प्रस्तुत करे के कोशिश कइले बा ।

एकरा अलावे सन् 2000 ई. में लेखक के गजलन के एगो स्वतंत्र संग्रह **'सुर ना सधे'** प्रकाशित भइल बा । एह में कुल 35 गो गजलन के गुलदस्ता के रूप में सजावल गइल बा । 'सुर ना सधे' में लेखक के पोढ़ जीवन दर्शन के झलक पाठकन के मिली, जवना में अध्यात्म से लगायत जीवन-जगत के सुख-दुख आ संवेदना तक पसरल बा, त दोसरा ओर राजनैतिक समझ आ वर्त्तमान जीवन के त्रासदी आ मानवीयता के उपर होत हमला से चिंचित भावो के अभिव्यक्ति गजलन के शेर में मिली । **'मजिगर सधल बा सुर'** में कविवर जगन्नाथ लिखले बानीं- 'नागेन्द्र जी का शायरी में पुराना आ नया-दूनो-रंग मौजूद बा । रिवायती रंग के पसार ढेर बा आ जदीदी रंग के कम, बाकिर दूनो रंग अपना-अपना के शोभनउक बाड़सन । रिवायती रंग के रचनन में कवि इश्के हकीकी से ढेर सटल बा आ ओही में ढेर रमलो बा । इश्के मजाजी के शेर संख्या में बहुत कम बाड़सन ।..... कवि रिवायत के प्रति निष्ठा त राखत बा, बाकिर जदीदीयत के प्रति भी ओकर आकर्षण कम नइखे । परंपरा-प्रवृत्त से बाहर निकल के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आ राजनैतिक विसंगतियन तथा मानव-आचरण के क्षरण के अंकन ऊ अच्छा-खासा कइले बाड़न ।' कविवर जगन्नाथ के सधल विचारन से नागेन्द्र प्रसाद सिंह के गजलगो स्वरूप के साफ पता चलत बा । साचहूं में 'सुर ना सधे' के गजलन के कई गो शेर बाड़न स जवन तग्जुल से भरपूर बाड़न स । आ इहे एह गजल संग्रह के खासियत बन गइल बा ।

पुस्तक आ पत्रिका संपादन

नागेन्द्र प्रसाद सिंह लेखक के साथे-साथ कुशल संपादको बाड़न । इनका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के नमूना इनकर संपादित करीब डेढ़ दरजन पुस्तकन में देखल जा सकेला। पुस्तकन में खास तौर पर **'भिखारी ठाकुर रचनावली'**, **'मास्टर अजीज व्यक्तित्व एवं कृतित्व'**, **'भिखारी ठाकुर ग्रंथावली'** भाग-1 एवं भाग-2, **'बीसवीं सदी आ भोजपुरी'** आ **'भोजपुरी कहानी संग्रह'** के रेघरियावल जा सकेला। ई पुस्तक सब भोजपुरी साहित्य के अध्येता लोग खातिर अनिवार्य पुस्तक बा। 'भिखारी ठाकुर रचनावली' के प्रकाशन से भोजपुरी साहित्य खास क विधा के एगो बहुते बड़ उछाल मिली जे भोजपुरी साहित्य खातिर बहुते शुभ मास्टर अजीज के रचनन के खोज-बीन के ओकरा के संपादित क के ओकरा प्रकाशन पर आलेख तइयार करवा के ओकरा के प्रकाश में ले आवे के काम प्रसाद सिंह अइसन सुधी अध्येता से ही संभव रहे। ई किताब अउर लेखक लोग संदेश देत बा कि अपना इलाका के भुलाइल-हेराइल साहित्यकारन के रचनन के खोज के निकाले आ संपादित क के ओकरा के पाठकन के सोझा ले आवे।

पुस्तक के संपादन के अलावे नागेन्द्र प्रसाद सिंह सन् 1995 से 1998 तक अकादमी के मुख पत्र **'भोजपुरी अकादमी पत्रिका'** के संपादन कार्य बड़ी कुशलता पूर्वक कइलीं। भोजपुरी निबंध माला के रूप में संकलित पुस्तक 'भोजपुरी पत्रिका' के विशेषांक के रूप में पहिलही काफी चर्चित हो चुकल रहे। एकरा अलावे **'भोजपुरी उचार'** नामक त्रैमासिक पत्रिका के कई साल ले कुशल संपादन एगो खास विचारधारा से संलग्न रहला के कारण एह पत्रिका के साहित्य जगत में एगो अलग स्थान बन गइल रहे, जेकर चर्चा आजो भोजपुरी पत्रकारिता के बइल जाला।

साहित्यिक-सांस्कृतिक संगठन से जुड़ाव

नागेन्द्र प्रसाद सिंह के व्यक्तित्व बहुआयामी रहल बा। उनकर कार्य क्षेत्र लेखन-प्रकाशन तक ही सीमित नइखे बलुक; ऊ संगठन का दिसाईं भी सक्रिय रहल। चाहे ऊ संगठन प्रकाशन व्यवसाय से जुड़ल होखे आ साहित्य के प्रकाशन आ संवर्द्धन खातिर होखे, ऊ हर स्तर पर सक्रिय नजर आवेलन। **अखिल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन** के स्थापना काल से ही ओकरा साथे नागेन्द्र जी के संलग्नता बढ़ुए। सम्मेलन के स्थापना काल से उनकर जुड़ाव हर स्तर पर रहल बा। एकर अंदाज समय-समय पर उनका द्वारा धारित पदन के देख सकेला। सम्मेलन के आजीवन सदस्यता से शुरू भइल यात्रा सम्मेलन के कार्य समिति के सदस्य के साथे प्रबंध मंत्री, महामंत्री, कोषाध्यक्ष, उपाध्यक्ष आ अध्यक्ष पद पर पहुँचल बा। एकरा अलावे इहाँ के प्रवर समिति के सदस्य आ ओकर संयोजको के दायित्व के निर्वहण बड़ा खूबी के साथ कइले बानीं। एकरा अलावे सारण भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के महामंत्री (सन् 1994 ई.) आ अध्यक्ष (2003 ई. से) **कलाकार भिखारी ठाकुर आश्रम**, कुतुबपुर (सारण) के संयुक्त उपाध्यक्ष, कोषाध्यक्ष आ अध्यक्ष के पद के दायित्वो के निर्वाह सन् 1979 ई. तक कइलीं। बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना में, सारण जिला हिंदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

साहित्य सम्मेलन के मनोनीत सामान्य परिषद् के सदस्य (1965 ई.)। सन् 1979 से 1994 ई. से **भोजपुरी अकादमी पटना** के अनुसंधान पदाधिकारी, सहायक निदेश आ उप निदेशक के पद पर सफलतापूर्वक काम कइलीं। साहित्य से इतर मुद्रक परि बिहार के संयुक्त महामंत्री, महामंत्री आ कोषाध्यक्ष के पद पर क्रमशः 1966-68 1965 के पद पर काम कइलीं। वैचारिक दृष्टि से वाम चेतना के समर्थक नागेन्द्र प्र सिंह के जुड़ाव भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के काजीपुर शाखा के मंत्री, आ बाँकी अनुमंडलय समिति के सदस्य आ पटना जिला परिषद् के सदस्य का रूप में 1970 2004 तक सक्रियता के साथे रहल बा। साहित्यिक संस्थन में जे भोजपुरी से जु रहल बा, ओह में विश्व भोजपुरी सम्मेलन, दिल्ली के राष्ट्रीय इकाई के उपाध्यक्ष 2000 ई. से आ सन् 1996 ई. से बिहार राज्य **विश्व भोजपुरी सम्मेलन**, पटन उपाध्यक्ष पद पर आसीन बानीं। एने इहाँ के सक्रियता के ही फल बा कि इहाँ के **राज्य प्रगतिशील लेखक संघ**, पटना के कार्य समिति के सदस्य आ **अखिल भार प्रगतिशील लघुकथा मंच** के संरक्षक सदस्य के रूप में मनोनयन कइल गइल

पुरस्कार आ सम्मान

नागेन्द्र प्रसाद सिंह साहित्य सृजन, प्रकाशन आ संस्थन से सांगठनिक स्त जुड़ाव आ ओकरा माध्यम से भोजपुरी के सेवा करे के त जइसे व्रते ले ले बा एकरा खातिर ऊ जगह-जगह घूम-घूम के भोजपुरी के सभा आ सम्मेलन में लेवेलन। इनका एही संलग्नता आ सेवा-भाव के महसूस करत कई गो गैर सर संस्थन द्वारा पुरस्कृत आ सम्मानित कइल गइल बा। सबसे पहिले 1984 ई. में इ के हिन्दी भाषा आ साहित्य के सेवा खातिर 'विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ, ईश (भागलपुर) **'विद्यावाचस्पति'** (पी-एच.डी.) से सम्मानित कइलस, त सन् 200 में उनका भोजपुरी निबंध संग्रह 'सोच-विचार' के अखिल भारतीय भोजपुरी सा सम्मेलन द्वारा **'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार'** से पुरस्कृत कइल गइल। भोजपुरी सा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान खातिर सन् 2002 में विश्व भोजपुरी साहित्य के वि में महत्वपूर्ण योगदान खातिर सन् 2002 में विश्व भोजपुरी सम्मेलन, (दिल्ली बोकारो अधिवेशन में **'भोजपुरी भूषण'** के उपाधि से अलंकृत कइल गइल। भो महोत्सव (2061 वि. सं.) सह-विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बिहार इकाई द्वारा 'भोज **साहित्य भास्कर'** के उपाधि से सम्मानित कइल गइल। सन् 2005 में भोजपुरी सा में निबंध-लेखन में महति योगदान खातिर विद्वत् परिषद्, आरा द्वारा प्रशस्ति-पत्र सम्मानित कइल गइल। 'भोजपुरी विकास मंच' सीवान द्वारा निबंध-साहित्य के वि में योगदान खातिर 18 सितम्बर-2005 ई. के सम्मानित कइल गइल ह। नागेन्द्र प्र सिंह के भोजपुरी सेवा आ साहित्य-सृजन खातिर जे भी सम्मान आ पुरस्कार उनक दीहल गइल बा, ओह से ऊ ना बलुक सम्मान आ सम्मान करेवाली संस्था भी गौरवा भइल बा। नागेन्द्र प्रसाद सिंह आजो ओही सक्रियता के साथे भोजपुरी साहित्य संस्कृति के सेवा समर्पण भाव से कर रहल बाड़ें। भोजपुरी साहित्य आ भो आन्दोलन का इनका से अबहीं बहुत उमेद बा। ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँख आँख में आशा

-डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव

दमगर वकील होखे त कमजोरो मुकदमा जीतवा देला । डॉ. आशारानी के वकालत के आगे कवना मरद के केस टिक पाई । केहू घूसघास देके जोड़ी कि आशा जी, तनी हमनी मरदनों के केस जीता दीं, त उ ना मनिहें । उ पूरा संकल्प के साथ नारी-उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठावे वाली हुका हईं । दुनिया भर के मेहरारू सन के सामाजिक प्रतिष्ठा के पक्षधर आशारानी उनकर आशा बाड़ी । केतना बेर मरद लोग के कटघरा में खड़ा करा नारी-शोषण के जिम्मेदार ठहरा चुकल बाड़ी । अइसन दस-बीस गो आशारानी लाल अउरी लेखन सेवा में उतर जास त मरद लोग के खटिया खड़ा जाई ।

अइसन बात लिखे के हमार कवनो पूर्वाग्रह नइखे । उनकर प्राय: सजी किताब हम पढ़ गइल बानी जइसे **एऽ बचवा, फूलऽ फरऽ, 'हमहूँ माई घरे हीं'** आ **'दिठौना'** । सब में घटना, विचार, पात्र आ चरित्र के लक्ष्य के बेर जाँच पड़ताल कइला के बाद हम एह निष्कर्ष पर पहुँचल बानी । आशारानी लाल **'माटी के भाग'** लिख के सउँसे नारी-समाज के भाग बन गइल बाड़ी ।

बाकिर एकर मानी पाठक-समाज में इ ना लागे के चाहीं कि लेखिका कस के पुरुष समाज के पीछे पड़ गइल बाड़ी । जहाँ अइसन रूप में उ होत बाड़ी त ओकर जायज आधार बा । उ कबो-कबो पुरुषो के पुचकार । नाहीं त अपना कतना लेख में उ इ ना लिखती कि मरद मेहरारू गाड़ी दू पहिया हवे । इ बात नया ना ह । युगन से लोग इहे उपमा देत आवत बा । एगो पहिया दोसरका पर अत्याचार करे, इ केहू के ना सहाई । विदेशी मरद के समाचार हिन्दुस्तान में कबो-कबो पहुँचेला कि अमुक मेहरारू अपना के खूब पीटलस, तलाक देके अलगा हो गइल भा मोकदमा जारी बा । अभी नौबत भारत में नइखे आइल, बाकिर आभास मिलल शुरू हो गइल बा । के पहिया वाला उपमा सर्वमान्य बा । टहले भा सैर-सपाटा में के कही आज खाली दहिने पैर टहली, बायां के टकसला के जरूरत नइखे । अइसन चाल के सफल जीवन थोड़े कहल जाई । चले के दूनू के बा, बाकिर में तालमेल-संतुलन जरूरी बा । एक-दोसरा के केहू दबावे ना । कवनो ओर अत्याचार नइखे एही मिलल-जुलल भाव पर डॉ. आशारानी लाल के लेखन चल बा ।

हाले में लेखिका के एकइस गो भोजपुरी ललित निबन्ध के संकलन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

'माटी के भाग' प्रकाशित भइल ह । मुम्बई दिल्ली से लेके पटना-सीवान तक ओकर चर्चा हो रहल बा । एमे कुछू बा, तबे नू चर्चा होता । ना त केतना किताब जनमते सउरिए में प्राण त्याग देला । केहू जानल, केहू ना जानल । एही से लोग झूठ ना कहेला- जंगल में मोर नाचा किसने देखा ।

आशारानी लाल के मोर के पूरा भोजपुरी समाज नाचत-झूमत देखी । शुरूए में एह किताब पर भोजपुरी के ख्यातिनाम समर्पित साहित्यकार पांडेय कपिल जी लिखले बानी कि 'डॉ. आशारानी लाल के कलम चलत रहे आ भोजपुरी साहित्य के भंडार भरत रहे, इहे हम मनावत बानी ।' इ कवनो छिपल बात नइखे । आशारानी लाल के कलम निरंतर चलत रहेला । शुरूए में लेखिका के वक्तत्व बा -'एकन्ता में जब मन उबिया जाला काहे कि ओही घरी इयादन के हल्ला-गुल्ला होखे लागेला, तब उ कुल नीक बाउर इयाद आके एह मन के अंकवारी में धरे लागेली सन ।''

लेखिका के रचना-संसार में जेतना टोला, गाँव, शहर, नगीच-दूर के तीर्थ-पर्यटन स्थल बाटे ओ सभन के संख्या अब बढ़त जात बा । बाहर-भीतर के दुनिया से बटोरल अनुभव लेखिका के बारीक नजर में पड़के सृजन के नीमन-नीमन दुआर खोलत बा । आ बिना सृजन कौशल के त साहित्य सुन्दर होइए नइखे सकत । कवना घर-परिवार में ईया, माई, फुआ, बहिन, दाई, जइसन लोग ना होला बाकिर लेखिका के शाब्दिक श्रृंगार ओह लोग के व्यक्तित्व के अइसन चमका देले बा कि उ सब साहित्य के धरोहर बन गइल बा । लेखिका के आपन ईया इयाद आवत बाड़ी आ उनकरे इयाद के साथे पाठक 'माटी के भाग' के पन्ना पलटत-पलटत आपन ईया के इयाद करे लागत बा । बुभात बा जे हर घर के आजी कवनो बबुनी से कहत बाड़ी -' ए बबुनिया, हेने आउ । तनी देखबे हमरा बरवा में बड़ा काटता । हरदमे खजुआत रहता । तनी उटकेर के देख त ढील त नइखे पड़ गइल ।' गाँव के ईया आजी-माथा के केस लटिआइल होखे आ ओमे ढील लीख ना पड़े, ई कहाँ संभव बा ! कल्पना के पाँख चाहीं बाकिर अंजोर-आन्हार के भीतर ढुक के झांके खातिर अइसन आँखों चाहीं जे सूई के टूटल नोकवो लउक जाव । हाथी-ऊँट त दूरे से सभे देख लेता मगर टूटल टांगवाली चिंउटी के केतना लोग देख पावेला । ओइसनो चिंउटी आशारानी लाल के नजर से नइखे बच पावल । चाउर में से अंकड़ी बीनल आ घुन के निकालल ऊपर ले त एके कर्म लागेला तबो घुन के खोजे में आँख के परीक्षा हो जाला । अइसन परीक्षा में लेखिका उत्तीर्ण बाड़ी । कवनो पात्र भा घटना जब उनका निगाह में चढ़ जाला त शब्दन के माला से फूल नीयर झरे लागेला । एमे कइसन-कइसन उपमा के प्रयोग देखे के भेंटाई -'जेकरा देह पर माछी बिछलात रहे ओही देह पर अब माछी भिनभिनाता ।' बिछलात के आकाश समय के बदलला पर भिनभिनात के पाताल में जाके धंस जाता । विचार के नचावत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्द । फैशन के आँधी में मनुष्यता कुरूपता के अंकवार भर लेत बा- इ
ईया के बहाने -'आज ईया क ना रहे से एह जमाना में आग लाग गइल
कुल बतिए उलट गइल बा । मरद मेहरारू अइसन बार बढ़ावता तऽ मेहरारू
अइसन अपन बार कटवा दे तारी ।' (पृ.-11)

लइकाई में केहू के गावत सुनले रहनी -'मीठ-मीठ बोलिया से जान
ली ।' कई गो स्थल पर पढ़त-पढ़त झटका से हमरा उहे गीत इयाद पड़
ल बा । आशारानी ललित निबंधकार हईं, यात्रा-संस्मरणकार हईं आ सबके
उ एगो संवेदनशील साहित्यकार हईं । सब बतिए सहज-सहज लिखत जाली
कहीं कहीं मीठ व्यंग्य के छंवक लगा देली । मेथी-तेजपता त ना
खावेला, बाकिर मरीचा बिना छींकवले ना मानेला । त मरीचा के छंवक
-कहीं एह लेखन में भी बाटे । कांटवाला झाड़ी पर रेशम के चादर बिछा
ल बा । आ संजोग अइसन कि जब उ व्यंग्य के तीर पीजावत बाड़ी तले
करा सामने कौनो मरदे आ जात बा । उनकरा भोंकात देरी नइखे लागत । घर,
ज, धर्म, तीर्थ-स्थान के देवी-देवता के प्रति आपन नेह-छोह आ श्रद्धा-भक्ति
ट करतो में अगर कहीं कुछ बाउर लउक जाता त ओकरा के उ नइखी
सले । इ उनकर शैली के गुण बा । एही प्रवाह में नीमन नीमन सफेदपोश
न के आरती उतारे में आशारानी देर नइखी कइले । महाभारत के पाँचो पांडव
खबर लेत लिखत बाड़ी -'अइसन बुझाता कि पाँचो पांडव सोच लेले रहे
न कि मेहरारू के पुरहर पियार कबो ना देबे के चाहीं, त ओह पर राज कइले
बा सके । इ मरद जब भँवरा बन के दोसरा जगह मँड़राई त मेहरारू ओकरा
ड़े-पीछे धउरी ।' (पृ.-44)

ओही लेख (लहू के पियासल झोंटा) में लेखिका के आक्रोश भी
ता हो रहल बा -'जब ले इ नारी गूँग बाड़ी तबे ले इ मरदो इनका पर राज
ता नाहीं त का माँ कालिका के आगे आज ले केहू टिकल बा ? शंकर अइसन
द के माँ काली के रोके खातिर भुंइया सूते के पड़ल । इ द्रौपदी जब अपना
त के गोहरवली त भरल सभा के पसीना के धार बहे लागल । सभे अकबका
ल, थथम गइल आ नारी जस के तस ठाढ़ रहि गइली ।' (पृ.-45)

अक्सर देखल जाला कि विचार से लदल रचना नीरस हो जाला आ
धीरज वाला पाठके ओकरा के पूरा-पूरा पढ़के सपरावेला । बाकिर एह लेखन
इ दोष नइखे आ पावल । विचार के प्रस्तुति रोचक शैली में भइला के कारण
खन में कहीं नीरसता नइखे । गाँव, घर भा कवनो यात्रा के वर्णन में मनलगाऊ
वद आ घटना के कौतूहल पाठक में पढ़े के ललक पैदा करत बा । इ गुण
ल लेखक लोग में ना होला । आपन दुःख भा विमति भले प्रच्छन्न व्यंग्य आ
क्रोश में प्रकट होता तबो ए रचनन में करुणा आ सहानुभूति के पहिलका
ज्यात के बिछलहर कहीं-कहीं बाटे । उ करुणा एह लेखन के शक्ति बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भइया के गीत में आदिशक्ति माता आ मालिन के बीच जवन गीतात्मक संवाद बा तवना के भीतर से उपजत श्रद्धा-भक्ति आ करुणा बेजोड़ बा । अइसने गीतन में आधुनिक प्रगति के आँधी में भोजपुरी संस्कृति के तोप-ढांप के प्रयास कइल गइल बा । माता के पियास आ मालिन के मजबूरी गीत नदी के करुण धारा बन गइल बा । एह गीत पर त हम खुदे भावुक होके आपन छलकत आँख केतना बेर पोंछ चुकल बानी ।

हिंडोला पर झूलत-झूलत मइया के पियास लाग जात बा । मालिन से मांग के पानी पियला पर भइया आर्शीवाद देत बाड़ी-

जइसे जइसे मालिन तू हमके जुड़वलू कि ओइसे ओइसे ना ।
तोहार बेटिया जुड़ाव कि ओइसे ओइसे ना ।
तोहार पतोहिया जुड़ाव कि ओइसे ओइसे ना ।' (पृ.-19)

जेकरा एह गीत के सुने के मौका मिलल होई उ आपन दिल के हाल खुदे कही । गीत के मधुर सुर सुरा बन जात बा । गीतन के अइसन ताकत भोजपुरी में ठांवे-ठांव पसरल-बिखरल बा ।

लेखिका के करुणा आ सहानुभूति के जबरदस्त उदाहरण 'उ हमार रहे' लेख में बा । एतने ना, मानव मन के परख करे में उनकर कलम पीछे नइखे । मानव स्वभाव के विडम्बना में हास्य-व्यंग्यों के झलक मारे के मौका मिल गइल बा -**'अब कहला में का बा'** में सोनवा के बातचीत-

.....गोड़िनिया के पतोहिया आज आठ नौ दिन से घर छोड़ के भागल बिया । पता चलल हऽ कि अपना नइहरवो उ नइखे गइल, बाकी गोड़िनिया एह बात के चुप्पे-छिपे रखले बिया । कहत रहे कि एह भतरकटनो के तनिको एकर लाज होखी तऽ आइए जइहन । ए सोना दीदी केहू से कहिह जनि ।....ए चाची एही इज्जत के बचावे खातिर हम केहू से ना कहलीं हऽ । खाली तोहरे से कहतानी ।' (पृ.-67) एही लगले **'छछनल मन'** के योगेश जी के बातचीत पढ़ के देखीं । (पृ. 71)

'आस' शब्द अपना में जेतने मीठ आ मुलायम होला ओमे आशारानी ओतने अपना आक्रोश के बारूद भर के तोप चलावत बाड़ी-

'ई मेहरारू कब, कहाँ, कइसे कचार देहल जइहें, कहल ना जा सकेला । समाज में ई कुल बात, कनुई माटी नीयर ढाँप-तोप के राख देहल जाला । मेहरारून के देह, जांगर, आँख, कान, नाक आ जीभ, सब रहते उ समाज के सोभ्फा कब्बो बोलिहें ना । ई समाजे इनका के कोठा पर पहुँचावेला । भर रात एही मेहरारून में डूब के, छक के, मस्ती के गीत गा-गा के नशा के शराब पीयेला । एह नशा के शराब पीयेवाला मरदन के, इ समाज़ पूजेला, आ पियावे वाला पर दिन भर थूकेला । ओने तकबो ना करे ।' (पृ.-52)

भोजपुरी के एह लेखिका के कलम से जवन-जवन व्यक्तिचित्र उरेहा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कला में चमक आ गइल । समाज में त ढेर लोग होला आ ओह लोग पर के साथ उपेक्षा के धूरा-माटी पड़त रहेला । उ धूरा झार के चमकावे के साहित्यकारे के होला । ओइसन लोग के नीमन-बाउर आ जीअल-मरल जगत, केहू ना जानल बाकिर आशारानी के कलम त कफनो के भीतर मोह लेबिया । जवन कफन मुर्दा के ढंपले-तोपले रहेला उहो मोहजड़ित होके व्यक्तित्व पर लोर गिरावे लागेला । कुछ लेखन में कौनो-कौनो पात्र पर ढेर अइसन गुन आइए गइल बा । एमे धनु, ईया, कुन्ती, द्रौपदी, भाई, जी आ सोना भउजी के चित्र देखल जा सकेला ।

आज के जिनिगी में बाउर-बाउर बात के कमी कहाँ बा । तबो जगह विद्रूपता के चट्टान पर हथौड़ी चलावे खातिर आशारानी तइयार बाड़ी । एह काम खातिर उ लोकगीतन में झांकत बाड़ी-

'हो बाबा, शादी ना कइलऽ बरबादी कइलऽ
अस्सी बरिस के दमाद खोजलऽ
उपरा चढ़त बुढ़वा पानी माँगेला,
सिढ़िया चढ़त हमरा लाज लागेला ।
सखी सब पूछे, बुढ़वा के लागेला ?
लाजे कहीलां बुढ़वा ससुर लागेला ।
लाजे कहीलां बुढ़वा भसुर लागेला ।' (पृ.-30-31)

बेमेल बियाह पर चोट करे खातिर लेखिका लोकगीतन के घर से पंइचा माँग ली आइल बाड़ी । एही सिलसिला में मैथिली कवि विद्यापति के कुछ पंक्ति के उपयोग भइल बा ।

सब ले दे के देखीं त लेखिका के सूक्ष्म पर्यवेक्षण से भोजपुरी साहित्य भर भर रहल बा । उनकर कथा, संस्मरण भा विचार लेख में भोजपुरी सुरक्षित बा । एह से भोजपुरी माटी के भाग संवारे में डॉ. आशारानी लाल योगदान कम नइखे । विशेषकर के नारी-समाज के शोषण के चित्र से पुरुष के आत्ममंथन के अवसर मिली । उनकर लेखनी हर महिला के आँख में के संचार करी । आँख-आँख में आशा झलकी । उपलब्धि के खुशी अगर ना बनल त भोजपुरी के सेवा खातिर उनकरा सम्मान में कवनो कमी ।

*पुस्तक- **माटी के भाग.....** (ललित निबंध संग्रह)/ लेखिका- डॉ. आशारानी लाल प्रकाशक- हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली/ मूल्य- 100 रुपया/ पृष्ठ संख्या-86*

-आर-7, वाणी विहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली-59

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

गतिविधि

माटी के भाग..... के लोकार्पण संपन्न

-डॉ. रामाशंकर ल

नवभारत टाइम्स के संपादक शचीन्द्र त्रिपाठी, नवम् वित्त आयोग (महाराष्ट्र के अध्यक्ष सतीश त्रिपाठी, बम्बे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के अध्यक्ष रामजी तिवारी, लेखिका डॉ. आशारानी लाल, पूर्व मंत्री हुसैन दलवाई, दोप का सामना के संपादक प्रेमशंकर शुक्ल, थाने दर्शन के संपादक कल्याण राय

भोजपुरी क्षेत्र के बहुते नीमन लेखक भोजपुरी में लिखे के बदले हिंदी में लिख कुछ लोग हिंदी में सोचत भोजपुरी में लिखता । एह परिप्रेक्ष्य में देखल जाव त आशार लाल के ई किताब ऊँचा दर्जा के भोजपुरी रचना बा । भोजपुरिया लोग के चाहीं कि लोग अपना भाषा, अपना अस्तित्व के रक्षा खातिर एकजूट हो जाव । ई बात महाराष्ट्र रा के नउवाँ वित्त आयोग के अध्यक्ष सतीश त्रिपाठी, डॉ. आशारानी लाल के ललित नि संग्रह 'माटी के भाग...' के लोकार्पण समारोह में कहलीं । पिछला 19 जुलाई के मुम्बई प्रेस क्लब में 'ठाणे दर्शन' साप्ताहिक के तत्वावधान में आयोजित एह समारोह में व विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त) डॉ. रामजी तिवारी कइलीं । डॉ. तिव कहलीं कि भोजपुरी में काव्य आ लोकगीत खूब लिखाइल बा बाकिर गद्य अबहीं ले उपेक्षि बा । आशारानी लाल के ललित निबंध संग्रह एह कमी के पूरा करता ।

एह अवसर पर डॉ. आशा रानी लाल अपना रचना प्रक्रिया के बारे में बतवलीं समारोह में मुख्य अतिथि का रूप में बोलत नवभारत टाइम्स के सहायक संपादक शचि त्रिपाठी भोजपुरी के रोटी खायेवाला लोग पर कटाक्ष कइलीं कि भोजपुरी के आठवीं अनुसूच में शामिल करावे खातिर ऊ लोग आगे काहे नइखे आवत । अन्त में धन्यवाद ज्ञापन अनि शुक्ल कइलीं । ●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी भाषा साहित्य आ संस्कृति पर गोष्ठी

-राजीव रंजन सिंह हिमांशु

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन आ भास्कर साहित्य भारती के संयुक्त में 14 अगस्त 2005 के सीवान में एगो गोष्ठी आयोजित भइल जवना में भोजपुरी साहित्य आ संस्कृति पर विचार-विमर्श भइल । गोष्ठी के अध्यक्षता प्राचार्य सुभाष यादव आ संचालन प्रतिष्ठित हस्ताक्षर महामंत्री भगवान सिंह 'भास्कर' कइलीं । गोष्ठी में दीपक कुमार वर्मा कहलीं कि भोजपुरी एगो अन्तर्राष्ट्रीय भाषा ह जवन भारत के अलावा मारीशस, गुवाना, नेपाल, ट्रिनीडाड, मारीशस आदि देशन में आदरपूर्वक बोलल जाले । राजीव रंजन सिंह 'भास्कर' भोजपुरी के संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल करे सम्बन्धी प्रस्ताव के विस्तृत विवरण देत अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के क्रियाकलापन पर प्रकाश दिहलीं । उहाँ के कहलीं कि मारीशस के राष्ट्रकवि ब्रजेन्द्र भगत मधुकर भोजपुरी के महतारी कहले । समूचा संसार में 118 करोड़ से बेसी लोगन द्वारा बोलल जाले भोजपुरी के उपेक्षा अब बर्दाश्त नइखे कइल जा सकत । रेयाज मोहिउद्दीनपुरी भोजपुरी भाषा के मीठास के वर्णन कइलीं त अध्यक्ष सुभाष चन्द्र यादव भोजपुरी के पाठकन के संख्या के अभाव पर दुःख व्यक्त कइलीं । गोष्ठी में सर्वसम्मति से अश्लील गीत के गीतकारन, कैसेट बनावेवालन आ वितरण करेवालन के कठोर से कठोर दंड देवे के कइल गइल ताकि भोजपुरी के प्रतिष्ठा बचावल जा सके ।

गोष्ठी में परवाना सीवानी, राजीव रंजन सिंह 'हिमांशु', तंग इनायतपुरी, राकेश रघुवीर, कमर सिवानी आदि साहित्यकार लोग भी आपन-आपन उद्गार व्यक्त करि भोजपुरी के संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल करे के जरूरत पर बल दीहल । महामंत्री भगवान सिंह 'भास्कर' उपस्थित साहित्यकार लोग के धन्यवाद ज्ञापित करत भोजपुरी के संविधान के अष्टम अनुसूची में शामिल करावे खातिर संघर्षरत रहे के आह्वान कइलीं ।

-प्रखंड कार्यालय के सामने, सीवान

चिट्ठी मिलल

रश्मि चौधरी, पी.डब्लू.-3, दक्षिणापुरम, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-67

आपके द्वारा भेजी गई पत्रिका भोजपुरी सम्मेलन के अंक मिले । भोजपुरी मेरी भाषा नहीं है, परंतु मैंने आधुनिक भारतीय इतिहास पर पी.एच.डी. करते हुए भोजपुरी की रचनाओं को भी 1857 के इतिहास लेखन का आधार बनाया ।

आपकी पत्रिक में समय-समय पर देखती रही हूँ । देवेन्द्र (देवेन्द्र चौबे) के पास आप भेजते रहते हैं । अभी पिछले दिनों हमलोगों ने रंगश्री के बैनर तले प्रथम कुंवर सिंह स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया था, जिसमें इतिहासकार प्रो. दीपक कुमार ने व्याख्यान दिया था । आशा है आप स्वस्थ और प्रसन्न होंगे ।

डॉ. प्रभुनारायण विद्यार्थी, बी-140, हरमू हाउसिंग कॉलोनी राँची-834002 (झारखण्ड)

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' नियमित मिल रहल बा । ई पत्रिका भोजपुरी गियान खातिर जरूरी लगता । भोजपुरी दुनिया के कामकाज के एकरा से बरोबर जानकारी होखेला । हर माह एकर हमरा के इन्तजारी रहेला । एकर जुलाई 05 अंक मिलल । पूरा पढ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

R.N.I. Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. Pt-428/90
भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका अक्टूबर, 2005

गइली हँ । लोक कलाकार भिखारी ठाकुर पर भाई जीतेन्द्र वर्मा के सम्पादकीय से उनकर पुण्यतिथि पर उनका इयाद कइल गइल बा- खूब निमन लागल । बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् भिखारी ठाकुर रचनावली प्रकाशित क के उनकर सभे कृतियन के एक स्थान पर उपलब्ध करावे के सारस्वत कार्य कइले बा । पाण्डेय कपिल के सौजन्य से आचार्य महेन्दर शास्त्री के 1961 में भिखारी ठाकुर के पत्रन के देखके उनकर सामाजिक सरोकार भा सामाजिक सदभाव के भावना लें परिचित भइल जा सकेला । शिवपूजन लाल विद्यार्थी के कहानी संतान सुख पढ़ गइनी । आज के समाज के एकरा में भरपूर चित्रण भइल बा । भोजपुरी पुरोधा पाण्डेय कपिल आ भोजपुरी साधक प्रो. ब्रजकिशोर के कृतियन के विस्तार से गियान भइल । इनकर भोजपुरी साहित्य में न भुलावे वाला योगदान बाड़ेसन । पाण्डेय जी आपन भोजपुरी उपन्यास 'फुलसुंघी' हमरा भेजले रहलीं । एने भोजपुरी भाषा आ साहित्य खातिर सम्मेलन पत्रिका के माध्यम से हमार खूब रूचि जगल बा । हम रउवा के साधुवाद देतानी ।

● **डॉ. देवेन्द्र प्रसाद सिंह**, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, एस.पी. जैन कॉलेज, सासाराम, (बिहार), पिन-821 115

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' 2005 के जून अंक पढ़े के मिलल । सम्पादकीय में जहाँ आसाम राज्य के भोजपुरिया लोग पर कहँर ढँवला खातिर चिन्ता बा ओइजे क्षेत्रीयता के भावना प्रबल भइला से देश के अखंडता पर सोचल स्वाभाविक लागत बा । अइसन घटना से हमनी के देश पर बुरा असर परी । भोजपुरिया समाज एक-दोसरा के ऊँचा-नीचा देखा रहल बा जवन शुभ संकेत के सूचक नइखे । कलक्टर सिंह 'केसरी' के 'बापू' विषयक कविता 'जेकरा भीतर के आँख रही, ऊ बापू के अबहूँ देखी' सचमुच आँख खोल देता । 'कबीर आ लोक जीवन' भी सूचनापरक लागल । गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' के कहानी 'डेढ़ लाख टकिया सिपाही' भ्रष्टाचार के सुरसा जइसन खुलल मुँह के तरफ इशारा कर रहल बा जवना में पूरा व्यवस्था समा गइल बा । ईमानदार साधुशरण जइसन एस.पी. के दिमाग के ऊथल-पुथल से ई बात साफ लउकत बा । महकमा के गंदा के कइल ? सस्पेंड भइल सिपाही के प्रश्न पूछल भी जायज लागता । राम यश के गीत भ्रष्टाचार आ बेचैनी के व्यक्त कर रहल बा । डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के 'रात' के कई रूप देखे में नीक लागल । बिआह के रीति में जनजतिअन के सामाजिक सांस्कृतिक जीवन के झाँकी मिलत बा । कुल मिला के साहित्य, समाज, संस्कृति से लेके जीवन के कई छुअल-अनछुअल पक्ष के सामने रखला के चलते सम्मेलन पत्रिका के स्तुत्य प्रयास बा ।

●

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, महम्मदपुर लेन, पटना-800 006 से प्रकाशित, आउर प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा जे॰ एम॰ कम्प्यूटर्स, पश्चिमी लोहानीपुर, पटना-800 003 में अक्षर-संयोजित एवं मुद्रित । सम्पादकः प्रो॰ ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

सम्पादक :
प्रो. ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)

वर्ष-15 अंक-10 पूर्णांक-178 अक्टूबर, 2004 दाम- दस रुपए

एह अंक के प्रायोजक

श्री श्याम ललित सिंह, श्री अरविन्द आश्रम, पांडीचेरी -605002

परामर्श मंडल

(डॉ॰) विवेकी राय, (आचार्य) विश्वनाथ सिंह, (डॉ॰) विद्यानिवास मिश्र, (श्री) मोती बी
ए॰, (दण्डिस्वामी) विमलानंद सरस्वती, (श्री) पाण्डेय कपिल, (डॉ॰) विजय बलियाटिक
(डॉ॰) अर्जुन दास केसरी, (डॉ॰) प्रभुनाथ सिंह, (डॉ॰) अनिल कुमार 'आंजनेय

संपादक

प्रो॰ ब्रजकिशोर

सह संपादक

डॉ॰ जीतेन्द्र वर्मा

पत्रिका परिवार

संरक्षक सदस्य : श्री माधव सिंह

सदस्य : श्री कृष्णानंद 'कृष्ण', डॉ॰ जयकांत सिंह 'जय', डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, श्री भगवान सिंह 'भास्कर', श्री व्यास मिश्र

संपादक मंडल

डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', राजनारायण दीक्षित, डॉ॰ लारी आजाद, कृष्णानंद कृष्ण, सूर्यदेव पाठक 'पराग', डॉ॰ रामकिशोर श्रीवास्तव, डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, भगवान सिंह 'भास्कर', व्यास मिश्र, भगवती प्रसाद द्विवेदी, रवीन्द्र शाहाबादी ।

संपादकीय संपर्क

प्रो॰ ब्रजकिशोर, श्रीभवन, प्रोफेसर कॉलोनी, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू पटना-6

फोन: 0612-2671180, 2669592 एक्सटेशन-8

रचना में दिहल तथ्य, विचार रचनाकार के बा, ओसे संपादक मंडल के सहमति जरूरी नइखे

अ॰भा॰ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के

वार्षिक सदस्यता शुल्क 25 रुपया सालाना

आजीवन सदस्यता शुल्क 251 रुपया

विशिष्ट आजीवन सदस्यता शुल्क 1101 रुपया

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के

वार्षिक ग्राहक शुल्क 100 रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर

वार्षिक ग्राहक शुल्क 80 रुपया

प्रायोजक (आजीवन ग्राहक) 1000 रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)
श्रीभवन, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-800 006

अंक-10 पूर्णांक-178 अक्टूबर, 2004

सम्पादकीय

भोजपुरी के विशेषतन से परिचित करावत एगो कृति

सरकारी उपेक्षा आ आर्थिक दृष्टि से घाटा के सउदा भइला का बादो भोजपुरी विधा के किताब लिखा आ छपा रहल बा बाकिर ओकर प्रचार प्रसार नइखे हो । भोजपुरी के अबहीं ले संविधान के अष्टम अनुसूची में स्थान आ साहित्य से मान्यता ना मिले के एगो बड़हन कारण इहो बा । एह स्थिति से उबरे ई जरूरी बा कि भोजपुरी भाषा-साहित्य के बारे में हिन्दी-अंग्रेजी के माध्यम से जाव, भोजपुरी के उत्कृष्ट साहित्य के दोसरा-दोसरा भाषा में अनुवाद होखे । में कुछ काम भइलो बा । एह दिशा में एगो महत्त्वपूर्ण काम राजेन्द्र प्रसाद ले में कइलीं हईं । उहाँ के अपना पुस्तक -'भाषा का समाजशास्त्र' में के कईगो विशेषतन पर प्रकाश डलले बानी । ई पुस्तक हिन्दी के प्रतिष्ठित राजकमल प्रकाशन (नई दिल्ली) से छपल बा ।

एह पुस्तक में कुल ग्यारह गो अध्याय बा जवना मे से चार गो भोजपुरी पर बा- 1. मागधी और भोजपुरी का रक्त संबंध, 2. भोजपुरी में 'र्-ल्' की स्थिति पुरी निरूक्त की एक झलक 4. भोजपुरी शब्दों के साथ एक यात्रा । पुस्तक में भोजपुरी शब्दानुक्रमणिक दिहल बा जवन उपयोगी बा । भोजपुरी खातिर ई महत्वपूर्ण कृति बावे । राजेन्द्र प्रसाद सिंह के अध्ययन गंभीर आ व्यापक बा । भाषा के संबंध में सुनीति कुमार चटर्जी, उदय नारायण तिवारी, भोलानाथ रामविलास शर्मा, रामदेव त्रिपाठी के अध्ययन के आगे के बात एह पुस्तक में बा । एह पुस्तक से गैर भोजपुरी भाषी लोग के भोजपुरी भाषा का बारे में मिली ।

राजेन्द्र प्रसाद सिंह के ई काम ऐतिहासिक बा । एह से हिन्दी जगत भोजपुरी के कई गो विशेषतन से परिचित होई । 'भाषा का समाजशास्त्र' भोजपुरी भाषी के भी कई गो नया जानकारी देता ।

-जीतेन्द्र वर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

दोहा

कृष्णानन्द 'कृष्ण'

आइल ई नयकी सदी, ले अइसन सौगात,
अपसंकृति के जाल में, फँसल लोग छपिटात।।
धुआँ-धुआँ सब ओर बा, लउकत नइखे राह,
मन मिरगा घउरत फिरे, मिले ना मन के छाँह ।।
मन मतंग मातल रहे, घावत फिरे अकास,
एही से ना हो सकल, एकर कतहूँ बास ।।
बीत गइल जिनगी सगर, करते जोड़ घटाव,
चाहत के ना हो सकल, अबले कही अंटाव ।।
पात-पात ले झर गइल, निकलल नाही आह,
फूटी कोपल आस में, बइठ निहारे राह ।।
जीवन के एह जंग में, के आपन, के गैर,
सभे मनावत बा इहाँ, आपन-आपन खैर ।।
देह-देह से नेह के, बहत रहे जे धार,
लोग भइल निर्मम इहाँ, मिले ना कतही प्यार ।।
थाहल चाहेला सभे, मनवा के औकात,
बाकिर संगव ना भइल, अबले मन के बात ।।
का बाट अपना हाथ में, सब मालिक के हाथ,
आपन कह सटले रही, उहो छोड़लस साथ ।।
अजब उदरीकरण के, दौड़ रहल बा रेल,
विश्वग्राम के कल्पना, बा पूंजी के खेल ।।
अपने करनी कारने, लोग भइल पैमाल,
लोग फँसल जाता इहाँ, बीनल अपने जाल ।।

पथ- आठ बी, अशोक नगर, कंकड़बाग, पटना-800020

●

देश हमार

-चन्द्रदीप पाण्डेय

अइसन सुन्दर देश हमार
कताना एकर माटी उर्वर, कइसन गंगा के जलधार
ब्रह्मपुत्र, यमुना के पानी, सींचे एकर खेत, बघार-1
वृन्दावन का ऊंज गली में राधाकृष्ण विहार
यमुना तट, कदम्ब के डाली, वंशी धुन विस्तार-2
हरिद्वार के शान्तिकुंज में गायत्री झंकार
देश देश के मानव आके, करे शान्ति हुंकार-3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तर,दखिन, पूरब, पश्चिम, सगरो बा उजियार
गाँधी का महिमा से मंडन, सब कर घर पिछुआर-4
राम, कृष्ण के जन्म भूमि ई, सगरो से होनिहार
महावीर आ बुध, अशोक के दर्शन इहाँ अपार-5
शीश नवाई, नित गुणगई, अइसन देश हमार
ई ह देवभूमि, एकर झंडा, फहरे नित बारंबार-6

-ग्राम- पिपरहिया, पोस्ट- अरुआँ, सीवान

●

जिनगी के राह पर

-अंकुश्री

चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल
चलत-चलत रहिआ पर दिनवा हेरा गइल ।
ऊबर-खाबर-टेढ़ ई जिनगी के राह बा,
दिन सागर बित गइल बांचल खाली आह बा ।
भोरे से चलत बानी पेटवा भुखा गइल,
चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल ।
आश-विश्वास के बाचल एगो सांस बा
हंसी-खुशी झंकोसाइल खाली ई लाश बा ।
सांस ले तानी पर जीव कबे सुखा गइल,
चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल ।
एने औटो-रिक्शा ओने मोटर-कार बा,
बचत-कटत चलत-भइल पैरवो बेकार बा ।
एहसान-उपकार से चालो अझुरा गइल
चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल ।
'ई राहि से काहे अइल ?' 'ओने त ठीक बा ।'
तबे कोई टोक दिहलस, 'ऊहे त नीक बा'
इहे सब सुन-सुन के हमार, 'हम' भुला गइल ।
चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल ।
चलत जात बानी मगर ना मिलल ठेकाना
भीतर त पीड़ा बा, गाई कहां ले गाना ?
हंसिआ भुलाइले बा, बोलिओ लुका गइल
चलत-चलत रहिआ पर गोरवा दुखा गइल ।

-सी/204, लोअर हिनू, रांची 834 002

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

प्रौढ़-आजादी

-दयाशंकर तिवारी

पहचान साल के प्रौढ़ आजादी के देहीं में लउकत जान न बाटे ।
राति ओराति ना बाति बुझाति ना सपनों होत बिहान न बाटे ।
भटकति बा सगरे लँगटे कतो पावति ठाँव ठेकान न बाटे ।
जाड़ि कँपावति हाड़ भइलि जमराज निशंक निदान न बाटे ।।1।।

कर्म के धर्म से दामन में जेकरे कबों लागलि दागि न बाटे ।
ओढ़े पुरान जोगाइ रजाई कमाई से जागलि भागि न बाटे ।
खून जराइ खटे केतनों बखरे फ़र लागलि बागि न बाटे ।
पेटे के आगी क बेग बढ़े घरे सुनुगति चूल्हि में आगि न बाटे ।।2।।

बिसवरियन से कुहास अकास में सुरुज चान हेराइल बाटे ।
अदिमी कऽका अवकाति कहीं दिनवों केतना कठुआइल बाटे ।
ठंड के कोप कठोर से बेबस काल से लोग बन्हाइल बाटे ।
राई केराइ मराइ गइल रोजहाई कऽ राहि रुन्हाइल बाटे ।।3।।

हिल्लत काँपत लोगन के तन के तऽ बचाव अलाव से बाटे ।
बीतल के का बयान करीं बटुरी बदलाव छलाव से बाटे ।
बेपतवार बेखेवनहार समुद्र में जीवन नाव से बाटे ।
सीयत रोज अभाव में जीयत पीयत माहुर चाव से बाटे ।।4।।

-गायत्री भवन, अंधामोड़, भीटी, मऊ (उ.प्र.) पि-275101

●

धरती मइया

-डॉ॰ अरुण शीतांश

धरती मइया के अँचरा हिलोर मारेला
जइसे बहेला ब्यार हिलकोर मारेला
परती पइयाँ के नखरा विभोर करेला
जइसे आवेला किसान भोरमभोर जागेला
सरहद सइयाँ के सपना अँजोर मारेला
जइसे चमके बदरिया शोर करेला
झंडा खइयाँ में लेके फहर मारेला
जइसे सागर में मोती दमक उढ़ेला
गाँधी नेहरु के बतिया सुनर लागेला
जइसे बरसेला बदरा घनघोर लागेला

-मणि भवन, संकट मोचन नगर, आरा - 802302

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुते घुमलऽ

-कमलाकांत ठाकुर 'हाकिम'

बहुते घुमलऽ बबुआ
अब घूमल तू छोड़ऽ
घर-समाज परिवार से अबहुँ नाता जोड़ऽ

एह महँगाई में सुँघें के
दूर दलम बा
घर भर में दूध जारत में कहाँ सरम बा

घर के तूँ का [illegible] जानऽ
के मुअल के जीयल
खा खा के तू मउज उड़ा[illegible] में ना सीयल
घर में मुसरी दंड करी
फैशन में उड़बऽ
एस्नो पाउडर सेंट आउर इंतर में बुड़बऽ

चिकना चुकना बनि के
तू मस्ती में फिरऽ
फेनु पतरकी आई त भहरा के गिरऽ

सुनत बानी रोज रोज
ओरहन तहार हम
झगड़ा करबऽ केहू से फोरब कपार हम

लाते मार परिवार के
जे मन आवे करऽ
गहना-बरतन बेचि निसा में पान कचऽरऽ

मानऽ अबो से बात
हाकिम के, धरती कोड़ऽ
घर समाज परिवार से अबहुँ नाता जोड़ऽ

ना त बिगड़ी बात
ना केहू साथी होई
आँखि छिपा के भागी, तहार समइया रोई

-ग्राम+पोस्ट- काटं, भाया-ब्रह्मपुर, जिला- बक्सर, पिन-802112, (बिहार)

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लघुकथाएँ

शिवदर्शन

-जितेन्द्र कुम

छठ-पूजा के नेवरतक बतिआवे आईल रहली कौशल्या जी । सुधा का स बात शुरू भइल । पूजा-पाठ के बात होला त देवी-देवता के प्रसंग छिड़ीये जाल कौशल्या जी कहे लगली "हमरे नइहरे के शिवजी बड़ी जाग्रत बानीं । बड़ा आप उनकर । दूर-दूर से आवेला लोग दर्शन आ पूजा-अर्चना खातिर ।"

ऊहाँ का आपन बात बड़ा आत्मविश्वास से सुना हलीं । लागे उनके नइहरे के शिवजी अऊरी शिवजी से अलग हो बतकही बड़ा नीक लागेला ।

योगेश जी के पत्नी सुधा के कवनो धर्म जी के बतकही के रसपान व अतिशय विश्वास आ सग्रह म बतकही त जानी उनका खातिर एगो पुण्य-कर्म व रहली । हाल बा कि धार्मिक आस्थावाली बातन में भी तर्क-वितर्क बे क ॥ मानहीं । ऊहाँ का आपन सहज सुभाव के मोताबिक बतकही में कूद पड़ीं "रउ नइहरे के शिवजी बड़ा प्रतापी बाड़न, इ कइसे पता चलल ?"

कौशल्या जी आपन पक्ष राखे खातिर एक दिन के एगो घटना सुनवली कहली जे उनके नइहरे के शिव-मदिर गाँव से थोड़ीका दूर बा । मंदिर का पिछवा एगो विशाल बड़ी पुरान पीपल के गाछ बा । सुबह-सुबह एक दिन शिव पूजा खा ऊ गइली मदिर । पुजारी अबही ना आइल रहले । आस-पास पीपल के सुखल प कुल्हि विखरल रहे । हवा को झोंक से उधिया के कुछ पत्ता मंदिरों में चल गइल रहे गेट में ताला ना लागल रहे । येही तरी ओढंगावल रहे । गेट खोल के अंदर च गइलीं । पूजा के डोलची जइसही अर्धा का बगल में रखलीं, सुखल पत्तवन में व खड़खड़ाइल । हमार नजर ओनिये घूम गईल । देखत बानी कि एगो लमहर सर्प का ओरी तेजी से रेंगता । साक्षात शिव बाबा सर्प बनि के मंदिर के रखवाली क रहलीं । हम डेरा गइलीं । बाहर भागि अईलीं । देखत बानी कि सर्प पीपल प चढ़ि र बा । तबले नजर पड़ल बइसने एगो आऊर सर्प पीपल पर रेंगत रहल । हम भागि घरे आ गइलीं । पूजो ना कर पवलीं भय का मारे हमरा मुँह से कुछ निकलते ना रहे। माई पूछलसि "का भइल रे ।" मुँह से बड़ा धीमे निकललि । "साँ....प।"

माई पूछलसि । कहवाँ?

हाँफत बोललीं । "शिव मंदिरवा में ।"

अतना सुनि के योगेश जी के ना रहाइल । टोकि दिहले । जब साक्षात शि जी सर्प बनि के मंदिर के रखवाली करत रहलीं, त रऊवा उनकर दर्शन के लाभ प्रा हो गइल । आप भगली काहें ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौशल्या जी के आँखि में आस्था आ सरधा के जल छलक आइल । ऊहाँ जइसे योगेश जी ऊहाँ के बात के विश्वास नइखीं करत । बोललीं समझी रऔं ।''

योगेश जी कहलन -''हमरा पूछे के बा कि रऊवा भगलीं काहें ? कतना कइला का बाद साधु-संत लांगन के भगवान के दर्शन होत रहल । रऊवा त ऊहाँ का दर्शन दे दिहलीं । रऊवा वरदान ना माँगि के भागि अईली घरे । घर कहलीं -साँप ।

योगेश जी के पत्नी सुधा बीच बचाव कइली -''हर चीज में शंका ना करे ।''

योगेश ''शंका हमरा कहाँ बा । शंका भइल कौशल्या जी के । सर्प रूपी गले लगावल चाहत रहे । इहाँ का भागि गईलीं ।

-मदन जी के हाता, आरा 802 301

●

अलग-अलग भूख

-शिवपूजन लाल विद्यार्थी

ऊ बेशरम-बरबर इन्सानी भेड़िया सब आपन वासना के भूख मिटाके ओह युवती के सड़क का किनारे फेंक के चलत बनले । सामूहिक बलात्कार के ऊ असहाय युवती नंग-धरंग पड़ल रहे । ओकर खून से सनल कपड़ा, बेमार दवा के पुरजा अऊर बटुआ बगल में बिखरल रहे ।

थोरिका देर बाद एगो भूखा भिखारी ओह रस्ता के गुजरल । बटुआ प ओकर पड़ल । संवेदनाशून्य भिखार झट से बटुआ से पइसा निकलस आ चलत बनले । भुखाइल पेट के समाधान हो गइल रहे ।

फेर कुछ देर बाद ऊहाँ दू-चार गो लवारिस कुत्ता आ चील कउवा आपन उपाय ढूँढत पहुँप गइलन आ मुअल जानि के ओह लहूलुहान लाचार पड़ल आपन चोंख चोंच आ पायल दाँत गड़ावे लगले ।

-प्रकाशपुरी, आरा भोजपुर-802 301

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

बिन साजन मन कइसे भावे

-हंसराज ओझा 'प्रभात'

बरसात के जाड़ा ओहू में घरवाली के बिना जीवन, रात के टह-टह अंजोरि में काहे दो कटावन लागे लागल त हम अपना एगो साथी से कह उठनी "देखऽ मन करत बा कि फौज के नौकरी छोड़ के घरवाली के लगे भाग जाई, मला एह जिन से कवनो फायदा बा काऽ उ कहवां आ हम कहवां।"

"अतने में घबड़ा गइलऽ त आगे का होई" हमार एगो साथी कहे लगल "जहवां देश के सेवा के सवाल बा उहवां अपना 'स्वार्थ के बलिदान करही पड़ेला। ई-ज़ान के अपना मन के घोड़ा के करतब के लगाम लगावऽ कि कहीं ब ना जाय आऽ देश के माटी के पहचान करके ओकरा सुरक्षा में जुट जा। तबही अ देश के लोग आउर तहरा घरवाली के भला हो पाई।"

अपना देश के प्रति साथी के बात सून के हमरा मन में एगो उद्गार जा आ हम अपना के संभालत इश्क के आसमान से नीचे करतब के धरती पर उतर अ। फेर हमरो मन में एगो भाव जागल-जब आपन देश ना रही त घरवाली कहां रही काहे ना हम अपना देश के संभार के राखी कि सभे के कल्याण होखो। अबही ही कुछ-कुछ सोच विचार करत रहनी कि एही बीच सरकारी टेलीफोन के घंटी टुनटुन लागल। झट से फोन उठवनी आ कान पर सटवनी त सूने के मिलल तोहरा लोग कान पर जूं नइखे रेंगत आ इहवां दुश्मनवां के गाड़ी के ताबड़तोड़ आवाजाही लाग बा। जनात बा कि सीमा के नजदीक वाला चौकी पर ओकनी के जमावड़ा करत बा सऽ। हो सकेला कि ऊ धावा भी बोल स। हम झट से अपना साहेब के बतलव आ फोन पर उनकरो के बतवनी कि घबड़ा जनि, एनहूं से सबकुछ तइयारी बाटे। एत में झटपट सब कुछ तइयारी करके हम अपना फौजी टुकड़ी के सीमा वाली चौकी जायेंके आर्डर दे दीहनी।

सीमा चौकी पर पहुंचला पर मालूम भइल कि दुश्मनवां सन के हमनी जागरूकता के बारे में जानकारी मिल गइल एह से उ अपना सेना बल के सीमा चौक से दूर हटा लेलन स। भोजपुरी में एगो कहावत कहाला-हरकाह बछा के देह माछियो ना बइठेली। ओही तरे दुश्मनवन के हमनी के हरकाही के बारे में मालू होगइल त कवनो दोसर-तिसर सोचे के ओकनी के मौका ना मिलल आ ऊ भाग खड़ भइलन।

अबही हम अगिला प्रोग्राम के बारे में योजना बनावते रहीं तलेक हमरा घ से एगो तार आ गइल-बाबूजी लिखले रहलन ताहरा घरवाली के तबियत खराब जनात छुट्टी लेके 10 दिन खातिर आऽ जा। अब तार के मजमून पढ़ के हम उधेरबून फंस गइनी। सोचे लगनी कि अब का कइल जाव। एक तरफ घरवाली के देश क सुरक्षा आ दोसरा तरफ के स्वास्थ्य के चिंता। बहुत मन में विचार कइला पर हम एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर पहुंचनी की हम कवनों बैद्य त हई ना घरवाली के तत्काली कुछ रुपया पहुंच ओकर इलाज होखे लागी । फेर जब सीमा के हलचल थमीं त हम छुट्टी लेके देब ।

अपना एगो साथियों से राय लीहनी त उहो हमरा विचार से सहमत भइल । हेडक्वार्टर में खबर क दीहनी आ घरे मनिआर्डर भेजा गइल । तार मनीआर्डर पहुंचे में देर ना लागल । ओह घड़ी देश में टेलीफोन के ढेर प्रचार रहे नाऽ अपना घराली से बतिआइयो लेती ।

सीमा वाला चौकी पर तैनाती से हप्ता भर बाद में छुटकारा मिले के रहे काहे अमन के आवाजाही बंद हो गइल रहे आ हमनी के टुकड़ी के अदला-बदली भी वाला रहे । अइसन सूचना मिलल त हमरा मन में लड्डू फूटे लागल काहे कि साहेब वायदा कइले रहलन कि चौकी से बदली भइला पर हमरा छुट्टी मिल फौज के नौकुरी वाला के जीवन में सबसे बड़हन खुशी के दिन छुट्टी के जब कवनो जवान छुट्टी लेके घरे जाये लागेला त ओकरा खुशी के ठेकान ना

जइसही हमनी के टुकड़ी बदल के शांति क्षेत्र में पहुंचल हमरा अपना के एगो बैरन चिट्ठी मिलल । पहिले त हम बैरन चिट्ठी देखके भौचक्का हो कि जब खोल के पढ़नी त जान में जान आइल । हमार जीवन संगिनी लिखले बाबूजी से बीमारी के बहाना बनाके हम तार पेठवले रहलीं त रउरा अपने आवे रुपया भेज दीहनी । भला रुपया खा के हम जीयब का । रउरा बियाह क के अइनी आ छोड़के विदेश भाग गइनी । भला बिना साजन के कइसे मन भाई ?

यदि रउरा छुट्टी मिले त आ जाई । हम एगो फौजी के धर्मपत्नी हई । एह के प्रति हमरो लगाव बाटे । यदि रउरा सीमा वाला चौकी से वापिस शांति क्षेत्र हो होखी त कम से कम एको हप्ता खातिर आ जाई ।

अपना घरवाली के बैरन चिट्ठी पढ़ के हमार मन समुद्र के पानी में उतराये । चूंकि हमार तैनाती शांति क्षेत्र में हो गइल रहे एह से हमारा दूनो हाथ में लड्डू देश के सेवा आ आपन स्वार्थ । आवेदन पत्र दे के जब छुट्टी के अनुरोध कइनी अमन साहेब झट से छुट्टी मंजूर कर देहलन आ हम एक हप्ता के बदले पूरा 30 खातिर छुट्टी ले के घरे चल देहनी ।

रास्ता में अपना माता-पिता के संगे-संगे पत्नी के बारे में कई तरह के मन में जागे लागल । हमरा इहो ना बुझाइल कि एतना लंबा सफर कइसे कट गइल दोसरे दिने घरे पहुंच गइनी । माई-बाबू के चरण छुवनी फेर अपाना रेखा के में गइनी जहां बिन साजन मन कइसे भावे के रट लगावत हमरा इंतजार में बइठल ।

-ग्राम+पोस्ट-मांझी, जिला-सारण, (छपरा) बिहार

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

दूनो जानी हूके गिर गइली

-जय बहादुर सिंह

जगदामा सिंह आ उनुकर पत्नी कमला देवी के विचार अपना बेटा के विया एह साल करे के बा । कमला जी के अपना सहेली के बेटी जूही बड़ा पसन विअ । उनुका ओकर सुन्दरता, सुभाव आ काम में फुर्ती सब कुछ बड़ा नीमन लागेला अ ऊपर से आ बी.ए. पास कइये लेले बिआ । बाकी बोलत एसे नइखे लोग काहे कि हमनी में बेटावाला अपने ना बोले, आ बेटीवाला के आवे के इन्तजार करेला ।

जूही के बाप मतारी के कमला देवी के लइको बाड़ा पसन बा आ विआ करे के चाहत बा लोग बाकी जगदामा सिंह चुकी बड़का घराना के हवे आ व अफिसरो बाड़े, साइत तिलक ढेरि मंगिहें । एह से ओह लोग के हिआव नइखे क कि मुँह खोली । ओतना पइसा कहाँ बा ।

कमला देवी के लइको सुन्दर-सुडौल बा आ पढ़-लिख के नीमन नोकरि पकड़ लेले बाड़े । तिलकहरु लोग रोजे पहुँचल रहता । चारु ओर के दबाव से उबि के जगदामा सिंह एक जगे लड़िका के बिआह ठीक क दीहले । जब लेन-देन के बा चलल त जगदामा सिंह कहले कि हमरा तिलक नइखे लेबे के आ ना हमरा सामा चाहीं । हम अपना पइसा से सब करबि ।

सब कुछ ठीक होके बरछा पर गइल, संगही तिलक बिआह के दिनो घ गइल ।

जब जूही के मतारी बाप के मालूम भइल कि जगदामा सिंह के तिलक लेबहीं के ना रहे त ऊ लोग के बड़ा अफसोस भइल । जूही के माई दउरल आव कमला देवी से मन के बात कहली ।

कमला देवी कहली कि हमहूँ त चाहते रहलींहा । पहिले काहे ना बोलल हां सभे । अब त सब ठीक होके बरछो हो गइल ।

दूनो जानी हूके गिर गइली ।

●

भोजपुरी के बढ़त डेग

१. **दरकल नींव** (पंचतंत्र के कुछ बीनल-बीछल कथा)
रूपश्री

प्रकाशक- भोजपुरी साहित्य संस्थान, महेन्द्रू, पटना-800 006,
मूल्य 25 रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेख

भोजपुरी के मान्यता खातिर आन्दोलन होखे

-गणेश चौबे

आदरणीय अध्यक्ष जी आ भाई लोगन !

अपने सभन एह सम्मेलन के उद्घाटन करे के काम हमरा के सँउप के हमरा के धन्य कइनी ह, हमार सम्मान कइनीं ह, एह लागि हम अपने सभन के आभारी बानी आ धन्यवाद देत बानी ।

सबसे पहले हम एह सीवान जिला के धरती के परनाम कर रहल बानी जवन डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद अइसन राजर्षि आ भोजपुरी से अनुराग रखेवाला महापुरूष के धरती ह । अपने पहिलका आदमी रहीं, जे जनगणना में मातृभाषा का खाना में हिन्दी भोजपुरी दरज करा के हमनी के रास्ता बतवनी । अपने भोजपुरी बोलेवाला लोग भोजपुरिये में बात करीं, भोजपुरी इलाका में भोजपुरिये में भाषण दी । जब भोजपुरी आन्दोलन के इतिहास लिखाये लागी त ओह में सीवान के नाम आदर के साथ लिखाई । धरती ह जहाँ सन् 1947 ई. का एही फरवरी महिना में पं. महेन्द्र शास्त्री का प्रयास भोजपुरी प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन के पहिलका अधिवेशन भइल रहे । एकर अध्यक्ष डॉ. उपाध्याय रहीं आ प्रधानमंत्री डॉ. परमेश्वरी लाल जी गुप्त । एकर दोसरका अधिवेशन ओही साल दिसम्बर महिना में गोपालगंज में राहुल जी का अध्यक्षता में भइल । भोजपुरी के पहिलका संगठन रहे । एह धरती पर भोजपुरी के जे झंडा गड़ाइल, आज फहरा रहल बा, लहरा रहल बा । इहाँ भोजपुरी के जवना आन्दोलन के बिआ बोआइल, ओ डाढ़-पाख समूचा देश भर में फइल गइल । जहाँ-जहाँ भोजपुरी बोलेवालोग बा, चाहे दिल्ली होय या बम्बई, ऊ लोग के कोई ना-कोई आपन संगठन कायम हो गइल ओह समय भोजपुरी एगो बोली मानल जात रहे, लेकिन आज त हमनी के ई दावा बा कि भोजपुरी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा ह ।

भोजपुरी एगो विशाल क्षेत्र के भाषा ह जवना के विस्तार लगभग पचास हजार वर्ग मील में बा । ई क्षेत्र उत्तरे दखिने नेपाल का तराई से ले के मध्य प्रदेश का सरगुजा आ रीवा का गंगापुर स्टेट तक आ पुरूवे-पछिमें मुजफ्फरपुर जिला से लेके बनारस तक फैलल बा । भारत में भोजपुरी बोले वाला लोग के संख्या अन्दाजन साढ़े पाँच करोड़ बा । एकरा अलावा नेपाल का चारे जिला के मौरिशस का दु-तिहाई आबादी के ई मातृभाषा बा, फिजी ब्रिटिश गायना, ब्राह्मदेव आ अफ्रिका में भी भोजपुरी भाषी बड़हन संख्या में बाड़ें । ब्रिटिश गायना के प्रधान मंत्री भी छेदी जगन आ मौरिशस के प्रधानमंत्री डॉ. सर्वगुलाम भोजपुर भाषी हउए । नेपाल सरकार भोजपुरी के क्षेत्रीय भाषा के रूप में मान्यता भी दे चुकल बा आ ओकरा पढ़ाई के व्यवस्था होखे जा रहल बा ।

'भोजपुरी एगो कर्मठ जाति के भाषा ह, जे हमेशा परिस्थिति का मोताबिक बदलत आ ऊ आपन प्रभाव समूचा भारत पर जमा देले बा । हिन्दुस्तान का सभ्यता का निर्माण में दु जाति के प्रबल हाथ बा । ई काम बंगाली लोग अपना कलम से कइलस आ भोजपुरी लोग अपना लाठी से । भोजपुरी अइसने जाति के भाषा ह । एकर व्यवहार सुगमता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

से हो सकेला आ ई व्याकरण का उलझन से मुक्त बा ।' अभी जे कुछ कहाइल ह, हमरा मन के उफिजल बात ना ह । भोजपुरी का बारे में ई बात डॉ. ग्रियर्सन अपना भारतीय भाषा सर्वेक्षण में लगभग सत्तर बरिस पहिले कहले बाड़े । डॉ. ग्रियर्सन प्रथम विद्वान रहल जे भोजपुरी का समग्र रूप के दर्शन कइले आ एह क्षेत्र का गौरवमयी संस्कृति के अनुभव कइले डॉ. ग्रियर्सन का कथन में बहुत कुछ सचाई बा । चम्पारन के सन तीस मे नमक सत्याग्रह बलिया के सन बेयालिस के भारत छोड़ो आन्दोलन एह बात के प्रत्यक्ष प्रमाण बा । सांच पूछीं त भोजपुरी के क्षेत्र बड़ा-बड़ा राजनेता, कानूनदाँ, साहित्यकार, विचारक सन्त महात्मा के जनम देले बा । उ अब कलमो में ओतने मजबूत बा, जेतना लाठी में

हमनी का भाषा के भोजपुरी नाम पहिले शोधी विद्वानन तक सीमित रहे । सब पहिले सन् 1868 ई. में जौन बीम अपना लेख में भाषा का अर्थ में भोजपुरी के व्यवहार कइले । बाद में भोजपुरी पर काम करेवाला डॉ. ग्रियर्सन, फैलन, फ्रेजर, हौर्नली आ अनेक यूरोपीयन विद्वान रही नाम से एह भाषा के पुकरले आ इहे नाम भारतीय विद्वान में भी प्रचलित बा । जहाँ तक कवि समुदाय के सवाल बा, एकरा के भारतेन्दु जी 'बिहार बोली', पंडित दूधनाथ उपाध्याय 'दोआबा के बोली' पंडित मन्नन द्विवेदी 'सखरिया हिन्दी' 'रघुबीर नारायण 'प्रान्तिक भाषा' आ चंचरीक उत्तर पदेश के ग्रामीण बोली' का नाम पुकरले बाड़े । बेतिया स्व. श्याम बिहारी तिवारी 'देहाती' पहिला कवि रहस जे अपन 'देहाती दुलकी' में एह भाषा वास्ते भोजपुरी नाम के व्यवहार कइले । भोजपुरी आन्दोलन से एह नाम के प्रचार पढ़ल लिखल लोग में भइल, लेकिन देहात का निपढ़ जनता त भोजपुरी के नाम पहुंचावे के सुयश त ओह अठारह फिलिम का बा, जवन भोजपुरी भाषा में अबतक बनल बा ।

इहाँ एक बात के चरचा जरूरी मालुम हो रहल बा । स्व. राहुल जी मातृभाषा के हिमायती रहस सही, लेकिन उनका नजर में भोजपुरी नाम के कवनों भाषा ना रहे । ऊ गोपालगंज में भोजपुरी प्रान्तीय साहित्स सम्मेलन के अध्यक्षता कइलें, लेकिन अपना भाषण में भोजपुरी नाम के चरचा तक ना कइले । ऊ भोजपुरी क्षेत्र के काशिका आ मल्लिका दू क्षेत्र में बांट देले रहस । ऊ मल्लिका में आठ गो एकांकी नाटक लिखलें । अब एगो आऊर नाम सुने में आवत बा- बल्लिका । भोजपुरी का हित में एह सब नाम के चरचा तक छोड़ देल जरूरी मालूम हो रहल बा । राहुल जी बैशाली के आस पास का भाषा के बज्जिका नाम रखलें । बज्जिका के क्षेत्र बहुत छोट बा, लेकिन ओह भाषा के समर्थक लोग चंपारन का समूचा सिकरहना सब डिविजन पर मुजफ्फरपुर जिला का बेरगनिया, बरूराज, पारू आ साहेबगंज अंचल पर सारन जिला का परसा सोनपुर, दिघवारा आदि क्षेत्र पर आपन दावी धरत बा, जवनो के जनसंख्या लगभग बीस लाख बा । भाषा विज्ञान के विश्वविख्यात विद्वान डॉ. ग्रियर्सन एह सब क्षेत्र के भोजपुरी क्षेत्र मनले बाड़े । ई सब पूरबी भोजपुरी के क्षेत्र ह । एह में कवनो सन्देह नइखे । कवनो के त ऊ लोग कह देत बा कि ग्रियर्सन के पहिला प्रयास रहे, लेकिन पुष्ट प्रमाण देके उनका बात के काटे वाला अभी तक कोई सामने ना आइल ह । दोसरा का बेटा से कोई मतारी पुत्रवती नइखे बन सकत । ओइसही दोसरका धन से केहू धनिक ना बन सकेला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का वज्जिका या वैशालिका के सत्ता त मानत बानीं लेकिन एह सब क्षेत्र पर ना । के उत्तमपुरूष के क्रिया एन 'हूँ' का बदला में जहाँ हती' व्यवहार होला, ऊ के क्षेत्र ह आ जहाँ बानी, बाड़ी, बाटी बोलल जाला ऊ भोजपुरी के क्षेत्र ह । टी एह से दूनू भाषा के पहचानल जा सकेला ।

भोजपुरी क्षेत्र में कवनो खनिज ना पावल जाला, कवनो उद्योग-धन्धा नइखे, वावे के छोड़ के कवनो कल-कारखाना नइखे । क्षेत्र में गंगा, सरयू, सोन, गंडक आदि नदी बा, जवना में बरसात में बाढ़ आ जाला आ इहाँ के खेती बारी जाला । एह सब कारन से एह क्षेत्र में भयंकर गरीबी बा एकर फल ई बा कि निवासियन का अपना रोजी-रोटी का खोज में जनम धरती छोड़ के दूर-दूर जाये ला । ई लोग जहाँ जाला उहाँ का निवासियन से घुल मिल जाला । एह से यन में संकीर्णता के पनपे के अवसरे ना मिले आ ई लोग राष्ट्रीयता के प्रबल बन जाला । ई सब भइलो पर ई लोग अपना भाषा आ संस्कृति के कायम रखले ग्रियर्सन साहब के कथन बा कि भोजपुरियन में अपना भाषा पर एतना गर्व बा कि भोजपुरी भाषी भेंटइहें, उ भोजपुरिये में बात करिहें । लेकिन हमरा समझ से का प्रयोग में अपनापन के भावना काम करेला आ ई नम्रता आ निराभिमानता परिचय देवे ला । भोजपुरी भाषियन में प्रगतिशीलता के परंपरा वैदिक युग से आ ा । वैदिक यग में एह क्षेत्र में ब्रात्य लोग निवास करे जे रूढ़ीवाद के विरोधी रहे । न बा कि बुद्धदेव का एह क्षेत्र में अपना धर्म के प्रथम-प्रथम प्रचार करे में मिलल । एतने ना एह क्षेत्र कबीर पंथ, शिवनारायणी, बावरी, सखी, सरभंग, री आदि अनेक सन्त संप्रदाय का फूले-फले के अवसर मिलल । एह सब का सन्तन के ढेर के ढेर पद मिलेला । जे साधु सन्तन का जबानी इयाद बा लोग का मठ में पोथियन में सुरक्षित बा । भोजपुरी के संत साहित्य बहुत समृद्ध ठवीं सदी का सिद्ध सै लेके आज का आनन्दमार्गी सन्तन तक के बहुत-बहुत पुरी में पावल जाला । अब अइसन शोधी विज्ञानन के बहुत जरूरत बा, जे में घूम-घूम के, साधु-सन्तन से मिल-मिल के लोग का 'सबद' आ 'बानी' को, अध्ययन करे आ प्रकाश में लावे ।

कहलन जाला कि भोजपुरी मे रीति काव्य ना बा । सांच बात त ई बा कि के अपना प्राचीन साहित्य का खोज का दिसा में कवनों ठोस कदम उठइबे ना ह । भोजपुरी क्षेत्र का पंडितन का बस्ता के तलासी होखे के चाही कि ओह में के कवन-कवन ग्रन्थ बा । भोजपुरी क्षेत्र का प्राचीन कवियन का कविताई के र से अध्ययन होखे के चाही कि ओह में भोजपुरी के प्रभाव बा । भोजपुरी में के साहित्य के आरम्भ पं. राम गरीब चौबे का नागरी विलाप आ पं. रविदत्त शुक्ल र चरित आ जंगल में मंगल नाटक से भइल बा । ई सब नाटक हिन्दी के ह ओह सब में कुछ अंक भोजपुरी बा । एह सब पुस्तकन के रचना सन् 1885 ई. पास भइल बा । तब से सन् 1947 ई. तक भोजपुरी में छिटपूट रचना होत आइल में अधिकांश राष्ट्रीय गीत रहे । एकरा बाद भोजपुरी में बहुत तेजी से साहित्य के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विकास भइल ह । एह में हरेक विद्या के कम या बेसी रचना पावल जाता । भोजपु
के काव्य आ नाटक साहित्य त बहुत आगे बढ़ गइल बा । लेकिन इतिहास कोष, निब
आ समीक्षा साहित्य के कमी बा विद्वानन का एह दिसा में भी काम करे के चाहीं

भोजपुरी काव्य के भाषा में त एकरुपता आ गइल बा, लेकिन गद्य का भा
में अराजकता के स्थिति बा । जेकरा मन में जइसन खेयाल आ जाला, ओही ढंग से
आदमी लिख देबेला । विद्वात्समाज में त कवनो भाषा का परिनिष्ठत रूप के मान्य
मिलेला । अइसे त कबो भाषा गढ़ल ना जा सकेला आ ओकरा रूप के आप से अ
विकास होला, लेकिन अब उपयुक्त समय आ गइल बा कि भोजपुरी का वर्तनी श
के विभक्ति का क्रियापद् का प्रयोग आ वर्तनी संबन्धी मोटा-मोटा सिद्धान्त तय
लिहल जा । एके शब्द के अलग-अलग क्षेत्र में अलग-अलग रूप प्रचलित
कहीं-कहीं अलग-अलग अर्थ भी पावल जाला । जगह-जगह पर क्रियापद आ विभ
के भी अलग रूप बा । कवनों भाषा के पहचान त एही दूनू से होला । एह से एव
ई सवाल पर विचार जरूरी बा । बिहार विश्वविद्यालय का भोजपुरी के मान्यता दे दे
का बाद से इ सवाल सामने आ गइल बा । एह वास्ते गोष्ठी के आयोजन होखे के चा
-"वादे-वादे जयते तत्व बोधः"।

आज भोजपुरी जनता का ओर से मांग हो रहल बा कि साहित्य अकाद
भोजपुरी के मान्यता प्रदान करे, भारत सरकार संविधान का आठवां सूची में भोजपु
स्थान देवे, भोजपुरी क्षेत्र में आकाशवाणी के केन्द्र खुले आ एह भाषा में प्रसारण कइ
जाय, प्राइमरी स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक भारतीय भाषा का रूप में भोजपुरी
पढ़ाई होखो आ राज्य सरकार क्षेत्रीय भाषा का रूप में भोजपुरी के मान्यता देवे । भोजपु
क्षेत्र के विस्तार, एह भाषा के बोलेवाला जनता के संख्या आ भरल-पूरल साहित्य
ख्याल से ई सब मांग उचित बा आ ई सब मन्जूर होखे के चाहीं । सरकार कवनो
कवनो बहाना पर एह सवाल के टारत जात बा । सरकारी सहायता आ सहयोग का अभा
में भोजपुरी का विकास में बाधा पहुंच रहल बा । मैथिली के अनेक विश्वविद्याल
मान्यता दे चुकल बा, साहित्य अकादमी से भी एह भाषा का मान्यता मिल गईल बा
आकाशवाणी का पटना केन्द्र से मैथिली में प्रसारण हो रहल बा । हाले में बिहार सरक
मैथिली के बिहार लोक सेवा आयोग का परीक्षा में एक भाषा का रूप में मंजूरी देल
ह । एह सब के फल ई हो रहल बा कि मैथिली पढ़ेवाला विद्यार्थीयन का अच्छा अ
मिल जाता, अच्छा डिविजन आ अच्छा क्लास मिल जाता आ भोजपुरी भाषी विद्या
पिछड़ जात बाड़े । एह कारन से भोजपुरी के मान्यता के सवाल अब रोजी-रोजगार
सवाल बन रहल बा । मैथिल के जवना समय साहित्य अकादमी मान्यता देलस, ओ
समय मैथिल में जेतना साहित्य रहे ओह से बेसी साहित्य आज भोजपुरी में बा । भोजपु
के क्षेत्र आ बोले वाला के संख्या त मैथिल से बहुत वासी बा । एह हालत में भोजपु
के मान्यता ना मिलला से भोजपुरी भाषियन में रोष पैदा हो रहल बा । सरकार मैथि
के केतनो सुविधा देत बा एह में हमनी का उज्र नइखे । हमनी त एतने चाहत बानी वि
ऊ सब सुविधा भोजपुरी का भी मिले के चाही । दू बरिस होता, बिहार विश्वविद्याल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के आधुनिक भारतीय भाषा का रूप में पढ़ाई लागि मान्यता दे देलस आ कवनो कौलेज में पढ़ाई भी हो रहल बा । लेकिन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सरकार से एह काम वास्ते विश्वविद्यालय का कोई तरह के आर्थिक सहायता मिलत, जवना से भोजपुरी का पढ़ाई में बाधा हो रहल बा । बिना पइसा के त कोई नइखे सकत । बिहार सरकार का एह सवाल पर सहानुभूति से विचार करे के

भोजपुरी का मान्यता वास्ते व्यापक आन्दोलन होखे के चाहीं आ जब तक ना मिले, आन्दोलन चलत रहे के चाहीं । हिन्दी आ अंग्रेजी का पत्र-पत्रिकन में साहित्य पर लेख भी लिखाये के चाहीं जेसे पठित समाज का भोजपुरी का प्रगति कारी मिलत रहे । हमनी के प्रचार पक्ष बहुत बहुत कमजोर बा । इहाँ इहो बात कर दिहल जरूरी बा कि हमनी का कोई अइसन काम नइखे करे के जवना से के अहित होय । हमनी हिन्दी का छत्रछाया में भोजपुरी के विकास चाहत बानी ।

भोजपुरी का सामने कई गो समस्या बा, जवना में सबसे कठिन बा पुस्तकन काशन आ खपत के सवाल । भोजपुरी में अइसन कोई समर्थ प्रकाशन नइखे जे न का पुस्तक के प्रकाशित कर सके । लेखक लोग कइसहुँ किताब छपवा देवेला, विज्ञापन आ बिक्री का व्यवस्था का अभाव में ऊ खप ना सके । एह वास्ते साहित्यकार सहयोग समिति के स्थापना होखे के चाहीं आ सरकार से आर्थिक लेके ग्रंथ के प्रकाशन आ बिक्री के व्यवस्था होखे के चाहीं । व्यवसायिक बुद्धि न लेला पर पुस्तक खप सकेला । भोजपुरी पुस्तकन के कवनो अइसन दोकान जहाँ अब तक के प्रकाशित सब पुस्तक एके जगह मिल जाव । ई स्थिति भी का खपन में बाधक बा । अइसन कवनो पुस्तकालय भी नइखे, जहाँ भोजपुरी के क के प्रकाशित सब पुस्तक आ पत्र-पत्रिका देखे के मिल सके । एह से शोधी का बहुत दिक्कत उठावे के परेला । पटना नगर में अइसन केन्द्रीय पुस्तकालय पना जरूरी बा । साथ ही भोजपुरी भाषी हरेक जिला में भी अइसन पुस्तकालय थापना के प्रयास होखे के चाहीं ।

सुने के आइल ह कि बिहार सरकार भोजपुरी भवन वास्ते पटना में एगो जमीन वा । ई शुभ सामाचार बा । एह वास्ते बिहार सरकार धन्यवाद के हकदार बा । साथ बिहार सरकार से हमनी का इहो आग्रह करे के बा कि भोजपुरी भवन का आ उचित व्यवस्था वास्ते सरकार ट्रस्ट भी बना देवे ।

अंत में हम ई करे के चाहत बानी कि भोजपुरी आन्दोलन विशुद्ध साहित्यिक सांस्कृतिक आन्दोलन ह आ एकरा राजनीति से कवनो सरोकार नइखे ।

एतना कह के हम सम्मेलन के उद्घाटन करत बानी ।

जय हिन्दी । जय भोजपुरी ॥

-[सीवान जिला भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पहिला अधिवेशन (24 फरवरी 1973) के उद्घाटन भाषण]

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

विजयदशमी पर विशेष

थावे वाली भवानी

-श्रीमती उमा कुमार

गोपालगंज जिला मुख्यालय से पाँच किलोमीटर दूर थावे में देवी के मंदि बा । एह मंदिर के बहुत प्रसिद्धि बा । अगल-बगल के जिला के संगे-संगे दूर-दूर लोग एजवा आवेला । देवी के दरसन कके मनौती मागेला ।

एह मंदिर के बारे में एगो कथा प्रचलित बा । बहुत पहिले के बात हवे थावे में से दू किलोमीटर दूर भवानीपर निछपरी में एगो संत रहत रही । उहाँ के आ काम मन से करी । बाचल समय में भगवान के पूजा करी । ऊहाँ के केहू निंदा-प्रशंसा ना करी । लोग से मिले जुले के ऊहाँ समय ना मिले । लोग के ऊ के रहस्यपूर्ण व्यक्ति लागी । लोग उहाँ के रहसू संत कहे लागल । ओह घरी ओ जंगल रहे । बाघ, चीता, सांप चारो ओर घूमत रहस । उहाँ पूजा-पाठ कइल आ बढि से रहल कुछ लोग का नीमन ना लागे । ऊ लोग राजा मदन सिंह के कान भ -"महाराज ! रहसू जादू-मंतर जानता । झूठो साधू बनल बा । रात में ऊ मूस से कत (एक तरह के घास) कटवावे ला । सात गो बाघ बोला के ओकनी के गला में स के बांध के दवनी करावेला आ ओसे बासमनी चाउर निकलेला । सुने में आइल ह कि ऊ बाघन के सेना बनावता । कहीं ऊ रउवा राज पर हमला ना देव ।

राजा बड़ा चिन्तित भइले । ऊ एहसू के अपना दरबार में बोलवले । ऊ रह से पूंछले -

"तू कवना तरह से आपन जीवन यापन करेल ।" संत रहसू जबाब दिहलीं "जवना तरह से भगवान कराइले ।' फेर राजा पूछले -"का मूस से कतरा कटवा बाघन के गला में साँपन के सहारे दवनी कइला से बासमती चाउर निकल सकत ?

संत रहसु कहलीं -"महराज ! भगवान के कृपा से सब कुछ सभव बा ।

राजा मदन सिंह कहले-"तू हर बात में भगवान के दोहाई दे तार । का भगवान के देखले बार ?"

संत रहसू कहलीं -"हाँ महाराज ् हम देखले बानी ।"

संत के बात पर दरबार में केहू विश्वास ना कइल । राजा मदन सिंह संत रह के खिल्ली उड़वले आ हुकुम दिहले कि रहसू अपना भगवान के बोलावस । संत रह राजा के बहुत समझवलीं कि भगवान के दर्शन नीमन काम कइला से होला । रउव जबरदस्ती करतानी । अइसे कइला से त ना रउवा बाचब ना राउर राज, ना रउव खानदान के केहू बाची ।

रहसू के कतनो समझवला के कवनों असर राजा मदन सिंह पर ना पड़ल ऊ रहसू के चुनौती देस । अंत में संत रहसू भगवान के देवी रूप के स्मरण कइलीं कहल जाला क समाधिस्थ संत रहसू के मस्तक से देवी के कंगन युक्त हाथ निकल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के चमक से राजा, दरबारी, सैनिक सभे अंधा हो गइल । फेर देवी प्रगट भइली
समय ओजा भंयकर आँधी आइल । राजा के महल ढ़ह गइल । राजा, दरबारी,
सभे मर गइल । एही जगे देवी के मंदिर बनल बा । एकरा के 1804 में हथुवा
चक्रधर शाही बनववलीं । एहीजा संत रहसू के भी मंदिर बा । भक्त लोग देवी
संगे संत रहसू के भी पूजा अर्चना करेला । देवी के अइसन प्रतिमा बाली
आ कोलकत्ता में बा ।

एजवा एगो गीत गावल जाला–

केकरा भरोसे ए रहसू कतरा कटवल हो
देवी का भरोसे मदन सिंह कतरा कटवनी हो
केकरा भरोसे एह रहसू साँप के दँवरिया हो
देवी का भरोसे मदन सिंह साँप के दँवरिया हो
केकरा भरोसे ए रहसू बाघ के दँवरिया हो
देवी का भरोसे मदन सिंह बाघ के दवरिया हो
केकरा भरोसे ए रहसू वासमति चउरा हो
देवी का भरोसे मदन सिंह वासमति चउरा हो

एजवा के मंदिर छोट बाकिर गरिमापूर्ण बा । एकरा मुँह पूरब दिशा का ओर
बाकिर प्रवेश द्वार उत्तर के ओर से बा । मंदिर के चारो ओर लाल रंग के
दीवारी बा ।

पहिले एजवा चारो ओर जंगल रहे । कई तरह के जानवर रहस बाकिर अब
कट गइल बा । एजवा के प्रसादी पीडुकियाँ हवे जवन दोसरे स्वाद के लागेला ।
न पीडुकियाँ दोसरा जगे ना मिले । एजवा सड़क मार्ग से या छोटी लाइन के रेल
इल जा सकेला । अंगल-बगल के जिला के लोग शादी भइला, मनौती पूरा भइला,
गाड़ी खरीदला आ अइसने आउर अवसर पर एजा जरूर जाला ।

रहसू से सम्बन्धित लोग एगो गीत गावेला–

कवना कियरिया में दवना मडुंअवा
कवना कियरिया में धूप हो
आरे कवना कियरिया में बइठे देवी शारदा
धरी पवनवा के रूप हो
अगिली कियरिया में दवना मडुंअवा
बिचली कियरिया में धूप हो
पिछली कियरिया में बइठे देवी शारदा
धरी पवनवा के रूप हो ।

–आर. जेड.–1/बी सिन्डीकेट इनक्लेब, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली–45

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

नवरात्रा पर विशेष

माँ भगवती के नौ गो रूप

-रंजन कुमा

बिना शक्ति के कवनो काम ना हो सके, आदमी के के कहो-कवनो जीव एको डेग नइखे घसक सकत । एही से कहल बा कि बिना शक्ति के शिव 'शव-तुल्य हो जाले । शक्ति के उपासना आदमी करेला लोक-परलोक दूनू संवा खातिर महाशक्ति के महिमा 'देवी भागवत' में बखानल बा । माँ दुर्गा के उपासना चण्डीपाठ कइल जाला-दुर्गा सप्तशती के पाठ होला । शारदीय नवरात्र में नौ दिन देवी के साधना आ पूजा चलेला । चइतो में 'नवरात्र' होला बाकिर शरद ऋतु में पू ज्यादा लोकप्रिय बा । देवी के अनन्त रूप बा । जब-जब दानवी अनाचार बढ़ेल तब-तब देवी अवतार लेके अइसन बाधा के दूर करेली । माँ के हृदय में सन्तान खाति अपार ममता होले । देवी के किरपा पा लिहल साधक खातिर एही से सहज मान बा । सृष्टि के रचना, पालन, संहार- सबमें देवी के किरपे हेतु होला ।

शक्ति के अविनाशी कोष के 'आदि शक्ति' कहल जाला । सभ तरह शक्ति एही कोष से निकल के आपन काम करेली आ फेनु ओही खजाना में स जाली । आदि शक्ति जगजननी हई, जगदम्बा आ जगन्माता कहल जाई । जगदम्बा क किरपा से त्रिदेव-ब्रह्म, विष्णु, महेश आपन-आपन सृजन, पालन आ संहार के का करेलन । ममता आ करूणा के अपार सागर हई जगन्माता ! दुर्गम नांव के राक्षस क मार के देवी जगत् के रक्षा कइली त उनुकर नांव 'दुर्गा' पड़ गइल । दुर्गा के ढेर प्रसिद्ध एक सौ आठ गो नांव बा । एह नांवन के पाठ कइला से भा सुनलो से माता प्रसन्न हो जाली । ई नांव बा - (1) सती, 2. साध्वी, 3. भवप्रीता, 4. भवानी, 5. भवमोचनी 6. आर्या, 7. दुर्गा, 8. जया, 9. आद्या, 10. त्रिनेत्रा, 11. शूलधारिणी, 12. पिनाक धारणी, 13. चित्रा, 14. चन्दुघंटा, 15. महातपा, 16. मन, 17. बुद्धि 18. अहंकार, 19. चित्तरूपा, 20. चिता, 21. चिति, 22. सर्वमंत्रमयी, 23. सत्ता, 24. सत्यानन्दस्वरूपिणी 25. अनन्ता, 26. भाविनी, 27. भाव्या, 28. भव्या, 29. अभव्या, 30. सदागति, 31. शाम्भवी, 32. देवमाता, 33. चिन्ता, 34. रत्नप्रिया, 35. सर्वविद्या, 36. दक्षकन्या, 37. दक्षयज्ञ विनाशिनी, 38. अपर्णा, 39. अनेकवर्णा, 40. पाटला, 41. पाटलावती, 42. पट्टाम्बर परिधाना, 43. कलमंजीररंजिनी, 44. अभेय विक्रमा, 45. क्रूरा, 46. सुन्दरी, 47. सुरसुन्दरी, 48. वनदुर्गा, 49. मातंगी, 50. मतंगभुनिपूजिता, 51. ब्राह्मी, 52. माहेश्वरी, 53. ऐन्द्री, 54. कौमारी, 55. वैष्णवी, 56. चामुण्डा, 57. वाराही, 58. लक्ष्मी, 59. पुरूषाकृति, 60. विमला, 61. उत्कर्षिणी, 62. ज्ञाना, 63. क्रिया, 64. नित्या 65. बुद्धिदा, 66. बहुला, 67. बहुलप्रेमा, 68. सर्ववाहनवाहना, 69. निशुम्भशुम्भहननी, 70. महिषासुर, 71. मधुकैटमहन्त्री, 72. चण्डमुण्ड विनाशिनी, 73. सर्वासुरविनाशा, 74. सर्वदानवघातिनी, 75. सर्वशास्त्रमयी, 76. सर्वास्त्रधारिणी, 77. सत्या, 78. अनेकशास्त्रहस्ता, 79. अनेकास्त्रधारिणी, 80. कुमारी, 81. एककन्या, 82. कैशोरी, 84. यती 85. अप्रौढ़ा,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

87. वृद्धमाता, 88. बलप्रदा, 89. महोदरी, 90. मुक्तकेशी, 91. घोरूपा, 92. 93. अग्निज्वाला, 94. रौद्रमुखी, 95. कालरात्रि, 96. तपस्विनी, 97. नारायणी, कालो, 99. विष्णुमाया, 100. जलोदरी, 101. शिवदूती, 102. कराली, 103. 104. परमेश्वरी, 105. कात्यायनी, 106. सावित्री, 107. प्रत्यक्षाधात्री, 108. । एकरा अलावा भी जयन्ती, मंगलाकाली, कपालिनी, क्षमा, शिवा, रूपन में रूप के पूजा नवरात्रा में कइल जाला । देवी से बढ़के दरिद्रता, दुख आ भय के करेवाला आउर कवनो देवी-देवता नइखे । देवी सभकर उपकार करे खातिर तत्पर रहेली काहे कि ऊ हमेशा करूणा से भरल रहेली । सभी मनोरथ पूरण सर्वेश्वरी महादेव के पूजनीय नौ गो रूप बा-

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीय ब्रह्मचारिणी
तृतीयं चन्द्रघंटेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्
पंचमं स्कन्धमातेति षष्ठं कात्यायनीति च
सप्रमं कालरात्रीति महाबगौरीति चाष्टमम्

सिद्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिताः

नवदुर्गा में शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्मांडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी त्रि, महागौरी आ सिद्धिदात्री के रूप बा ।

दिन के पूजा :

माँ दुर्गा के पहिला सरूप 'शैलपुत्री' के हवे । पर्वत्तराज हिमालय के बेटी का पैदा भइला से शैलपुत्री नाँव पड़ल । घोर तप कके भगवान शंकर पत्नी बनली । गौरी, पार्वती आदि नाँव से देवी दक्षप्रजापति के बेटी रहली । पति के सम्मान-रक्षा सती आत्मदाह करके दक्ष का यज्ञ के विध्वंश कर दिहली । वृषमवाहना ी के दहिना हाथ में त्रिशूल आ बायाँ हाथ में कमल के फूल होल । प्रकृति ी का रूप में शैलपुत्री (उमा, गौरी) के पहिलका दिन पूजल जाला ।

मंत्र- या देवि सर्वभूतेषु प्रकृतिरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोऽनमः ।

इहाँ के सरूप के ध्यान बा-

वन्दे वांच्छितलाभाय चन्द्रर्धकृतशैखराम् ।
वृषारूढ़ा शूलधरां शैलपुत्री यशस्विनीम् ॥

पहिलका दिन साधक मन के मूलाधार चक्र में स्थित करके उपासना शुरू । गौरी माँ के पूजा का पहिले पूरा शिव-परिवार के पूजा होला, मण्डप में स्थापित करके व्रत के संकल्प लिहल जाला ।

का रूप : ब्रह्मचारिणी

ब्रह्म जी के शक्ति आ तपस्या करेवाली देवी के नाँव बा- ब्रह्मचारिणी, जेकर पूजा नवरात्रा में दोसरका दिन कइल जाला । शंकर भगवान के पति रूप में पावे देवी घोर तप कइली- निराहार रहके, शीत-ताप सह के, पतइयो ना खा के ी) । एह रूप में देवी अनन्त फल देली । आदमी में तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

संयम आदि सद्गुण बढ़ेला । जिनगी में संघर्ष करत मन विचलित ना होखे । साधक का सगरे सिद्धि आ विजय प्राप्त होला । एह दूसरका रूप के पूजा पुत्र बनके कइल जाला । देवी के स्फटिक माला, रूद्राक्ष के माला का संगे सफेद फूल चढ़ावल जाला । एह दिन साधक के मन स्वाधिष्ठान चक्र में स्थित होला ।

ध्यान : दधाना करपदमाभ्यामक्षमालांकमंडलू ।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा ॥

मंत्र : या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

तिसरका रूप : चन्द्रघंटा

नवरात्रा के तिसरका दिने माँ चन्द्रघंटा के पूजा होला । माँ के स्वरूप प शान्तिदायक आ कल्याणकारी होला । देवी का माथा में घंटा के आकार के अर्द्धच होला । देह के रंग सोना खानी होला । देवी के दसो हाथ में तलवार आ बाण आ शस्त्र-अस्त्र आ सवारी सिंह के बा । मुद्रा लड़ाई खातिर तत्पर लउकेला । पूजा का दि अलौकिक वस्तुअन के दर्शन, दिव्य सुगन्धियन के अनुभव होला आ साधक का तरे- के आवाज सुनाई देला । साधक पराक्रमी आ निर्भय बनेला । दुष्ट-दमन में तत्पर रहल का बादो देवी के रूप बहुते सौम्य आ शांत होला । साधक का देह में कन्ति बढ़ जाल स्वर दिव्य आ मधुर हो जाला । साधक का मन, वचन, कर्म आ काया से पवित्र रहल पूजा मन लगा के करे के चाहीं । माँ का किरपा से सभी दुख आ विधिन-बाधा क नाश हो जाला, भय मिटजाला आ साधक, विनम्र आ सौम्य बनेला । कहल बा-

पिण्डजप्रवरारूढ़ा चण्डकोपास्त्रकैर्युता ।
प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघंटेति विश्रुता ॥

रूप : कूष्मांडा चउथा

माँ के चउथा रूप कूष्मांडा देवी के पूजा चउथा दिन कइल जाला । अपन मनद-मन्द हलुक मुसुकी से ब्रह्मण्ड के उत्पन्न कइला का कारण देवी के नाँ 'कूष्मांडा' पड़ल । आठ भुजा भइला से 'अष्टभुजा देवी' भी कहल जाला । सात हाथ में कमण्डल, धनुष, बाण, कमल, अमृत के कलश, चक्र आ गदा बा । आठवाँ हाथ में आठो सिद्धि आ नवो निधि देवे वाली जपमाला बा । वाहन सिंह ह । देह के कान्ति सूरज का समान दम-दम तेज से भरल बा । इनहीं का तेज से दसो दिशा में अँजोर होला । कोंहड़ा के बलि देवी का प्रिय होला । माँ का प्रसाद से सब रोग-शोक खतम हो जाला । अश्दोयात्र, यश, बल आ निरोगता में बढ़न्ती होला । साधक का सुख, शान्ति आ समृद्धि हासिल होला । ध्यान-मंत्र बा-

सुरासम्पूर्णकलशं रूधिराप्लुतमेव च ।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्मांडा शुभदास्तु मे ॥

पाँचवाँ रूप : स्कन्दमाता

देवासुर संग्राम में देवता लोग के सेनापति भगवान शंकर के बड़ बेटा कुमार कार्त्तिकेय के स्कन्द, कुमार, शक्तिधर आदि कह के पुकारल जाला । एही कुमार के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइला से देवी माँ के नाँव 'स्कन्दमाता' पड़ल । छान्दोग्य श्रुति का मुताबिक में उत्पन्न सनत्कुमार के 'स्कन्द' कहल जाला आ भगवती के 'स्कन्दमाता' । देवी का विग्रह में गोदी में बालक का रूप में स्कन्द जी रहेलन । देवी के भुजा बा । दाहिना हाथ जे ऊपर उठल बा ओह में बालक, आ नीचे दहिनवारी कमल के फूल बा । बायाँ ओर के ऊपर भी बाँह वरदमुद्रा में आ निचलकी कमल के फूल बा । देवी के रंग शुभ्र बा । स्कन्दमाता का कमल के आसन आसन दूनू नींक लागेला । वाहन सिंह हवे । साधक के मन एह दिन विशुद्ध चक्र । मन सांसारिक बन्धन से हट के विशुद्ध चैतण्य किओर अग्रसर होला । साध से भर जाला । ध्यान-मंत्र बा-

सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रित कर द्वया ।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी ॥

रूप : कात्यायनी

देवता लोग के काम सिद्ध करे खातिर माँ 'कात्यायनी' के रूप में अइली । के एगो नाभी ऋषि रहले । उनका बेटा के नाँव कात्य रहे । इन्हनीं का गोत्र सिद्ध महर्षि कात्यायन जी भइले जे देवी के उपासना से प्रसन्न कके उनुका के रूप में पवले । महिषासुर के मारे खातिर जब देवी अवतार लिहली त उनकर सबसे पहिले कात्यायन ऋषि कइले- एही से महषासुर मर्दिनी के एगो नाँव बनी पड़ल । देवी माँ अमोध फल देली । गोपी लोग इनकर पूजा यमुना किनारे भगवान श्रीकृष्ण के पति-रूप में पावल । भगवती के सरूप बहुते दिव्य आ बा । विग्रह के दहिनवारी ऊपर वाला हाथ अभय मुद्रा में आ नीचे वाला वरद होला । बाँयारी ऊपरकी बाँह में तलवार आ निचलकी में कमल के फूल रहेला के सवारी सिंह हवे । एह दिन साधक के मन आज्ञाचक्र में रहेला । माँ का में सबकुछ निवेदित करेवाला साधक आसानी से अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष-चारू पा लेला । ऊ अलौकिक तेज से मर जाला आ ओकर रोग, शोक, दुख, आ भय नष्ट हो जाला । ध्यान बा-

चन्द्रहासोज्जवलकरा शर्दलवरवाहना ।
कात्यानी शुभं दद्यादेवी दानवधातिनी ॥

माँ सरूप: कालरात्रि

नवरात्र के सातवाँ दिने माँ का कालरात्रि रूप के उपासना कइल जाला । मारेवाला कालो के रात यानी नाश करेवाली भगवती के कालरात्रि कहल जाला । कालरात्रि के रंग धन अन्हार खानी कुचकुच करिआ कहल बा । सिर के केश आ गरदन में बिजुली खानी चमकेवाली माला । देवी के तीन गो गोल-गोल जवना से किरिन निकलत रहेले । साँस-प्रश्वास से अगिन के ज्वाला निकलत देवी के सवारी गदहा हवे । भगवती कालरात्रि के चारगो भुजा बा- दहिनवारी अभय आ वरद मुद्रा में आ बाँयारी एगो हाथ में तलवार का दूसरका में लोहा के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

काँटा बा । माँ का एही रूप के ध्यान धइल जाला । देवी के सरूप भयंकर बा बाकि भगतन खातिर सब शुभ-शुभ करेवाला बा- एही से इनकर नाँव 'शुभंकारी' हवे । म का किरपा से सभी सिद्धियन के दुआर खुल जाला, ग्रह-बाधा दूर हो जाला, हर तरह के भय मिट जाला । एह दिन साधक के मन 'सहस्त्रर चक्र' में रमेला । एकनिष्ठ भाव से देवी के स्मरण-ध्यान करे के चाहीं-

एकवेणी जपाकर्णपुरा नग्ना खरास्थिता
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाम्यक्त शरीरिणी
वामपादोल्लोहलता कंटक भूषणा
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयंकरी ।

आठवाँ सरूपः महागौरी

नवरात्र के आठवाँ दिने भगवती के 'महागौरी' सरूप के ध्यान-पूजा कइल जाला । भगवती के रंग शंख, चन्द्रमा आ कुन्द के फूल खानी एकदम गोर होला । इनकर सभ वस्त्र आ गहना उज्जर होला । आठ बरिस के बालिका के रूप होले भगवती के । वाहन वृषभ हवे । ऊपर के दहिना हाथ अभयमुद्रा में, आ नीचे के दहिनवारी हाथ में त्रिशूल होला । बाँया ऊपरका हाथ में डमरू आ निचलका वरद मुद्रा में रहेला । माँ के मुँह पर शान्ति बिराजेले । माँ प्रसन्न होके तुरन्त फल देली । भगत के सभ कलुष धोआ जाला, दुख-दरिद्दर भाग जाला आ अलौकिक सिद्धि प्राप्त होले । आदमी का हरदम भगवती महागौरी के चरणकमल के ध्यान करे के चाहीं-

श्वेते वृषे समारूढ़ा श्वेताम्बरधरा शुचिः ।
महागौरी शुभ दद्यान्महादेवं प्रमोददा ॥

नौवाँ सरूपः सिद्धिदात्री

नवमी का दिने भगवती के 'सिद्धिदात्री' सरूप के ध्यान आ पूजन कइल जाला । भगवती सिद्धिदात्री सभी सिद्धियन अणिका, महिमा, गरिमा, लछिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व आ वशित्व के देवेवाली हई । माँ का दहिनवारी निचलका हाथ में चक्र, आ ऊपरका में गदा बा । बाँवारी निचलकी बाँह में शंख आ ऊपरकी में कमल के फूल होला । भगवती के किरपा से साधकका सबकुछ मिल जाला, प्रकृति पर विजय पावे के सामर्थ्य आ जाला आ ओकर लौकिक-पारलौकिक सभ मनोरथ पूरा हो जाला । कहल बा-

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैर सुरैरमरैरपि ।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी ॥

नौ दिन ले भगवती के नवो रूप के ध्यान, पूजा करके विजया दशमी मनावल जाला । एह दिन श्मी वृक्ष के आ शस्त्र के पूजा कइल जाला । ई राष्ट्रीय पर्व हवे- बुराई पर अच्छाई के जीत, अनाचार पर सदाचार के विजय । माँ भगवती आदमी में चेतना आ शक्ति भर देली आ ओकरा भीतर दिव्य गुण आ जाला । सभी जीव के कल्याण करत साधक मोक्ष प्राप्त कर लेला ।

-206, गौरव अधिकारी अपार्टमेंट, सेक्टर-62, नोएडा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समीक्षा

तस्वीर जिन्दगी के बा चिन्हार ई

-बरमेश्वर सिंह

(पुस्तक-तस्वीर जिन्दगी के (गजल), गजलगो-मनोज 'भावुक', गजलन संख्या-साठ, पृष्ठ 110, दाम- साठ रुपया ।)

'तस्वीर जिन्दगी के', मनोज कुमार 'भावुक' के पहिल गजल संग्रह ह । 'भावुक' बहुमुखी प्रतिभा के धनी बोड़े । 'पाती' जइसन स्तरीय पत्रिका के प्राय: संपादक के ना खाली अनिवार्य गजलगो, बलुक मनोज 'भावुक' ऊं नाम आ जेकर कविवर जगन्नाथ अपना समय के राग के सोलह सक्रिय गजलकारन में कइले बा । जगन्नाथ के 'समय के राग' के हिसाबस से ओह सोलह गजलकारन के नाम, महज दू-चार नाम अउरी छूटि रहल बा । हालांकि, जगन्नाथ के 'भोजपुरी के विकास यात्रा' के हिसाब से भोजपुरी के सक्रिय गजलकारन के संख्या पाँच से ऊपर बा । दरअसल, ई समय-समय के बात बा । कउनो कवि के एगो बा-

'उहाँ के कविता के कहीं कविता
ना त उहूँ !
उहाँ के चान के कही चान, भा फूल के कहीं फूल
तब त ऊ चान, भा फूल
ना त उहूँ !!
माने कि, सूरूज के उगला से डूबला तकला
बलुक, सृजन से संहार तकला
उहें के खाली उहें के जमिन्दारी बा !!''

खैर, गजलगो के ई गजल संग्रह गजलगो के गुरूद्वय पाण्डेय कपिल आ जगन्नाथ के समर्पित बा । गुरूद्वय के तस्वीर पुस्तक के शुरूए में छपल बा । दूनों तस्वीर साफ बा । दरअसल, ई गजल संग्रह गुरूद्वय में से पहिलकू, पाण्डेय कपिल के अनुसंधान संस्थान (भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी पटना-24) से प्रकाशित बा; आ गरूद्वय में दूसरकू, जगन्नाथ के कम्पोजिंग केन्द्र में एकर अक्षर संयोजन भइल बा ।

खैर, एह गजल संग्रह के भूमिका, हिन्दी के वरिष्ठ कविद्वय, सत्यनारायण आ माहेश्वर तिवारी लिखले बानी । सत्यनारायण आपन भूमिका भोजपुरी में आ माहेश्वर तिवारी आपन भूमिका हिन्दी में लिखले बानी । सत्यनारायण अपना भूमिका में मनोज 'भावुक' के भोजपुरी के दमगर गजलगो मानत, उनुका से आसमान के पीछा करत रहे के अपेक्षा कइले बानी । माहेश्वर तिवारी अपना भूमिका में गजल में वस्तु-चेतना के रास्ते से उपजल सामाजिकता के विस्तार देखत, अन्तत: 'भावुक' खातिर 'शुभेस्तु

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

पन्थानः' कहले बानी । एकरा बाद, संग्रह में, खुद गजलगो के उद्गार बा, जे महज बीस पृष्ठ में बा । उहो तब, जबकि उद्गार के पहिल पंक्ति बा- भूमिका बान्हे हमरा ना आवे ।' एकरा अलावे अलग से दू पृष्ठ पर, गजलगो के कृतित्व-व्यक्तित्व से सम्बन्धित सूचना बा । सूचना का संगे गजलगो के तस्वीर बा ।

खैर, संग्रह में व्यक्त गजलगो के उद्गार से ई पता चलत बा कि सन् 2000 के पहिले उनुका गजल के क, ख ना आवत रहे । बाकिर, गुरूद्वय के शरण में जाते उनुका मिसरा, शेर, काफिया, रदीफ, अरकान, बहर, मुक्त, मतला, वजन, तखल्लुस झटाझट बुझाये लागल, आ सन् 2002 बीतत-बीतत, ई संग्रह छपे खातिर तइयार हो गइल । गुरू कृपा अमोध जग माहीं, ना त गजल के गाँव अतना नगीच कहां बा ।

खैर, गजल अरबी भाषा के शब्द ह । जउना के अर्थ प्रेमी-प्रेमिका के बीचे के बतकहीं बतावल गइल बा । जाहिर बा, बतकही एकतरफा ना हो सके । ऊ कुछ हम कहीं, कुछ तू कहऽ', तबे सम्भव बा । बाकिर, 'कोई पास न रहने पर भी जन-मन मौन नहीं रहता । आप आप से है कहता वह, आप आप की है सुनता ।' शायद एही से गजल में पहिलहूँ एकतरफा बतकही भइल बा, आ अबहियों हो रहल बा । दरअसल, दू तरफा बतकही के लक्ष्य निर्धारित रहेला । बाकिर एकतरफा बतकही बहुत माँकेला । गजल के इश्क-मिजाजी से इश्क-हकिकी तकला फइलाव के शायद इहे कहानी बा । दोसर बात ई कि अरबी में एको गजल नइखे लिखाइल । हालांकि कुछ विद्वान अरबी के 'तश्बीब' के ग़जल से मिलत-जुलत मानेलन । बाकिर, एकरा पर गहरा मतभेद बा । गजल के शुरूआत फारसी में 'रौदकी' कइलें, एकरा पर कउनो मतभेद नइखे । एही तरी, गजल फारसी से पहिले उर्दू में आइल कि हिन्दी में एकरा पर मतभेद बा । बाकिर, भोजपुरी में गजल के शुरूआत तेग अली तेग कइलें, एकरा पर कवनों मतभेद नइखे ।

खैर, गजल एगो नाजुक विधा ह । दरअसल, ई एगो 'फार्म ह । बाकिर 'फार्म' में कहल हर रचना गजल ना हो जाय । इकबाल के कई गो 'नज्म' फॉर्म में रहला का बादो गजल ना मानल जाय । दरअसल, भोजपुरी के गजलगो गजल से परिचित त बाड़े, बाकिर, ऊ 'ऐंटी गजल' आ 'हजल' से परिचित नइखन । जवना का चलते बहर में लिखल गइल रह रचना के गजल मान लिहल जाला । दरअसल, गैर-संजीदा अंदाज में लिखल गजल, फॉर्म में रहला का बादो 'ऐंटी गजल' कहाला आ हास्य-व्यंग भा केहू के मखौल उड़ावे खातिर लिखल गइल गजल फॉर्म में रहला का बादो 'हजल' कहाला ।

खैर, मनोज 'भावुक' गजल के परम्परा आ विरासत के, दावेदारन के क्षत्रछाया में बाड़ें, एही से उनुकर अधिकांश गजल सपाट ना हो के, गजल के मुहावरा आ तेवर के अनुरूप सांकेतिक आ व्यंजक बा-

ना परे मन घर कबो बबुआ के भलहीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोज बुढ़िया भोर में कउवा उचारे (गजल-2)
जे भी बा, बाटे बनल बरगद इहाँ
पास के सब पेंड़ के रस चूस के (गजल-3)
लोर पोंछत बा केहू कहां
गाँव अपनो शहर हो गइल (गजल-30)
अब गिलहरी ना रही एह गांछ पर
वक्त पतइन के झरे के हो गइल (गजल-58)

उक्त कुल्हि शेर गजलगो के महज 'अश' आर नइखे, बलुक अलग-अलग से खींचल गइल जिनिगी के तस्वीर बा । संग्रह के नाम 'तस्वीर जिन्दगी के' नइखे रखाइल, बलुक ओकर सार्थकतो बा । जिनिगी के तस्वीर खीचे वाला सचमुच उक्त शेरन में रंगन के सही मात्रा में इस्तेमाल कइले बा ।

दरअसल, अच्छा शेर कागज पर ना, बलुक शायर के जेहन में मुकम्मल आ पाठक ओह शेरन के शब्दन से खाली संकेत ले लीं आ फिर ओह संकेत से रहस्यमय दुनिया के भेद खोलेला-

फूल में तक्षक के संशय हर घरी
अब त खुशबू से डरे के बा इहां (गजल-57)
प्राण जाई मगर ना बचन जाइ
कवनो जुग के चलन ई रहल होई (गजल-21)

उक्त शेरन में सुपरिचित विम्बन का सहारे जे रूपक खाड़ होखत बा, ओकरा में आज के समय-समाज के तस्वीर कतना साफ आ सहजे दिखाई दे रहल बा ? 'भावुक' के नीचे दिहल कुछ शेरन पर तनी गौर करीं-

कबो-कबों होला अइसन जे छोटके कामे आवेला
देखी ना, सागर, इनारा में, इनारे प्यास बुझावेला (ग-39)
आदमी जे सहज सरल बाटे
खूब हमरा पसन परल बाटे (ग-22)
छोड़ दिहले हंसल ऊ अपना पर
जब से खुद पर नजर परल बाटे (ग-22)
बन्हाइल कहां ऊ कबो छन्द में
जे हमरा के हरदम लुभावत रहल (ग-27)

उक्त शेरन में ई देखि के सुखद सिहरन हो रहल बा कि पहिला शेर में रहिम, दूसरा शेर में तुलसी, तीसरा शेर में कबीर आ चौथा शेर में बिहारी अजबे सूक्ष्म रूप में रहल बाड़ें ।

मनोज 'भावुक' तरूण बाड़ें । देखे-सुने में अरूण भी बाड़ें । उनुकर गजलन में तरूणाई शायद खुद उनके तरूणाई बा । देखीं-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

लाख रोकीं निगाह चल जाला
का कहीं, मन मचल-मचल जाला (ग-55)
संभल के तू तनी केहू से करिहऽ प्यार ए 'भावुक'
जरतुआ लोग इहवों हाथ में पत्थर उठवले बा (ग-46)

बाकिर, पता ना काहें, गजलगो के उक्त प्रेमानुभूतियन में कउनों नवीन नइखे। एह लाइन में त शुरूए से अइसने होत आइल बा ?

खैर, इन्हनी के विपरीत मनोज 'भावुक' के गजल संग्रह में कुछ अइसन गजल बाड़ी स, जे जे गजल के परिधि से बाहर बाड़ी स। उन्हनी के 'ऐटी गजल' आ 'हजल' कहल ज्यादा ठीक होई काहे कि, उन्हनी से अहसास जइसन जुड़ाव नइ झलकत आ पाठक के दिल-दिमाग पर गलत प्रभाव पड़े के सम्भावना झलकत बा।

गाय कसाई के घर में
कुतिया ए.एसी कमरा में (ग-41)
सूप, चलनी के पटकला से भला का होई
श्रम के लाठी से दलिद्दर के भगावल जाये (ग-6)
सूप, पटकला से ना भागी
रोग, दलिद्दर पाप, गरीबी (ग-60)

पहिला शेर के सम्बन्ध में कहल जा सकेला कि ना त सब गाय कसाई कि बा, ना सब कुतिया ए.सी. में एकरा अलावे कसाई कहीं गाली, त कहीं वैद्य कर्म बा। ए.सी. वाली कुतियो में ऊ बात नइखे जउन 'श्वानों को मिलता दूध, भूखे बच्चे चिल्लाते हैं', के श्वान में बा। दूसरा शेर में सूप आ चलनी के स्थिति बड़ा दर्दनाक हो गइल बा। दरअसल, सूप आ चलनी श्रम आ श्रमिके के प्रतीक ह। तीसरा शेर मे सूप के बहाने एगो लोक आस्था के उपहास उड़ावल गइल बा।

ताश के एगो खेल होला। एह खेल में 'जोकर' के कतहूं फिट क देवे द छूट रहेला। जहवां मनोनुकूल कार्ड ना मिलल, उहवां जोकर के फिट क दीं। हालांकि गजल कहल ताश के खेल ना ह, तइयो कुछ गजलगो अपना गजलन में जोकर के का 'यारे' शब्द से ले रहल बाड़े। सांच कहीं त, भोजपुरी गजल में 'यारे' शब्द अब खाली रूढ़, बलुक एगो ट्रेड-मार्क लेखा हो गइल बा। दरअसल, जगन्नाथ अपन गजलन में एह शब्द के प्रयोग छूटि के कइले बानी। उहें से प्रभावित, उहां के अनुज रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूस' के गजलनों में एह शब्द के भरमार बा। एकरा अलावे खाली ऊ गजल संग्रह में ई शब्द पावल जाला जे जगन्नाथ के संस्थान से प्रकाशित बा। एही से मनोज 'भावुक' भी शिष्य-धर्म के निर्वाह करे में कउनों कोताही नइखे कइले-

देखलीं जे बइठि के नदिया किनारे
डूब के देखला अ लागल भिन्न, यारे (ग-2)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे राग मन में बाटे, सुर पर सधात नइखे
काहें दो बात मन के, यारे, कहात नइखे (ग-12)
भूखे टटात आदमी का आँख के जबान
केहू से आज कहवां, ए यारे, पढ़ात बा (ग-14)
रोशनी के राह देखत, रात पागल हो गइल
लफलफाते रह गइल, यारे, दिया उम्मीद के (ग-18)

हमरा विचार से 'यारे' शब्द के प्रकृति भोजपुरी के अनुकूल नइखे। एह से गजलगो के एह शब्द से बचे के चाहीं।

शब्दन के फिजुलखर्ची गजल खातिर धातक होला। इहे कारण बा, कि थोक में गजल कहे वालन में से चन्द शायर आपन अलग पहचान बनावे में कामयाब भावुको के गजलन में शब्दन के फिजुलखर्ची कई जगह देखे में आवत बा उदाहरण-

आज ले दे ना सकल पेट के रोटी कविता
तबहूँ हम गीत-गजल रोज बनावत बानी (ग-10)

इहवां 'पेट के' शब्दन के फिजुलखर्ची मानल जाई। बहर सुधारे के फेर में, मिसरा बिगड़ जाला।

मनोज 'भावुक' साहित्यकार का संगे कलाकार भी बाड़े। रंगकर्म उनुकर विधा ह। एह से कला के सौंदर्य बोध त उनुका पाले बड़ले बा, उनुकर दृष्टियो बा। सोना में सुगंध लेखा, उनुकर अभिव्यक्ति के भाषा पोढ़ बा। उनुकर पढ़ल-लिखल भोजपुरिहा वाला, बा। जउना में, तत्सम, तद्भव, देशज, के संतुलित समिश्रण बा। एह से हम उनुका से उम्मीद करत बानी कि ऊ के फिजुलखर्ची से परहेज करत, गीत-गजल के अन्तर के समझे खातिर अउरी करत, आ बहर बजनादि के समझे खातिर अउरी प्रयास करत, अपना रचना कर्म प्रयत्नशील रहि के एगो नया किर्तिमान स्थापित करिहें।

-ग्राम+पोस्ट- धनडीहा, जिला भोजपुर (बिहार) 802 160

केहू बूझत नइखे : सामाजिक संदर्भ के कविता-संग्रह

-डॉ. विद्याभूषण श्रीवास्तव

[पुस्तक- 'केहू बुझत नइखे' (कविता-संग्रह)। लेखक- डॉ. राजनारायण। प्रकाशक- भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना-800 024। पृष्ठ- 48।]

'केहू बुझत नइखे' डॉ. राजनारायण दीक्षित के लिखल सताइस कवितन के है। नैतिक मूल्यन के ह्रास, मजहबी उन्माद, भ्रष्टाचार व्यमिचार, अपहरण, स्वेच्छाचारिता, लूट-खसोट, भौतिक चकाचौंध, बाजारवाद, गरीबी आ सामाजिक के नितांत अभाव के त्रासदी झेलत आम आदमी जवना माहौल में जीये-मरे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

के बेवस हो रहल बा, उहे बेवसी सीधा सपाट, दो टूक आ कबो-कबो व्यंग्य के तीख तेवर लेके एह कवितन में मुखर भइल बा ।

कवि के ई दोसरका कविता-संग्रह ह । एकरा पहिले, उनकर 'ओरहन' ना के कविता-संग्रह 1992 में भोजपुरी समाज, बिलासपुर से प्रकाशित भइल रहे सामाजिक संदर्भ के एह कविता संग्रह के 'ओरहन नाम शायद इहे सोच के दिहल गइ होई कि ओरहन दिहला से स्थिति में बदलाव आई । बाकिर आज के जिनिगी लगात बदसे बदतर होत जा रहल बा । अब ना त ओरहन के कवनो असर बा, ना केहू व बूझे वाला बा । एह कविता-संग्रह के नामकरण 'केहू बूझत नइखे' ओ किंकर्त्तव्य-विमूढ़ता के परिचायक बा, जवना मन:स्थिति में आज के जिनिगी पड़ ग बा । उमेद बा कि कविवर दीक्षित जी के 'आह से उपजल मान' के मरम पढ़नि लोग बूझी । तबे ई शिकायत दूर होई कि 'केहू बूझत नइखें ।'

भोजपुरी खातिर एगो समर्पित जिनगी

-ब्रकिश

(पुस्तक : एगो समर्पित जिनगी, लेखक- डी. एन. राय, (जीवन प्रकाशक : भोजपुरी भारतीं, भोजपुरी सेवा सदन, ढोंढ़स्थान, पत्रालय- पंडितपु जिला- सारण, फोन : 06155-261377, मूल्य : एकावन रुपया).

भोजपुरी के साहित्यकार आ समाजसेवी रघुनाथ सिंह 'विशारद' के नाम भोजपु प्रेमी लोगन खातिर अनजान नइखे । शुरूआती दौर में अखिल भारतीय भोजपुरी साहि सम्मेलन के गतिविधि से विशारद जी सक्रिय रूप से जुड़ल रहीं आ प्रवर समिति कार्यसमिति के सदस्य रूप में आपन योगदान कइले बानी । भोजपुरी भारती के संस्थाप हईं । सारन जिला भोजपुरी सम्मेलन के इहाँ का अध्यक्ष रह चुकल बानी । इहाँ 'मतीसरी जिन्दाबाद' कहानी संग्रह काफी चर्चित बा । इहाँ के कविता संग्रह 'सनसनाह आ 'गुदगदी' यश अर्जित कइलस । एगो गाँधीवादी चिन्तक, कुशल श्रमिक नेता, उद समाजसेवी, कविता-कहानी के सफल सिरजन हार आ संगठन में माहिर 'विशारद' जी जीवनी से भोजपुरी साहित्य समृद्ध भइल बा । एह पुस्तक में विशारद जी के जिनगी विविध रूपन के डी.एन. राय छवगो लेख में समेटले बाड़न । विशारद जी का व्यक्ति के चर्चा करत वीरेन्द्र कमार मिश्र 'अभय', प्रो. वैद्यनाथ विभाकर, वैदेहीशरण बनियापु रवीन्द्र त्रिपाठी, सीताराम पाण्डेय प्रशान्त, राम अयोध्या प्रसाद, शशिभूषण प्रसाद, व्या मिश्र, अविनाश नागदंश, संजीवन कुमार राय, सुमन कुमार आदि के अन्तरंग संस्मरण स नीक लागत बा । पाण्डेय कपिल, जगदीश प्रसाद सिंह, प्रो. राजेन्द्र ओझा, बृजकिशोर सिं गुरूचरण गुरू, प्रो. राजेन्द्र तिवारी आदि कविता में विशारद जी के व्यक्तित्व आ विचार उजागर कइले बा । अन्त में कुछ चित्र भी दिहल बा । गाँव पिंडरा (भगवानपुर हा सारन) में 1921 में जनमल विशारद जी के जिनगी के विविध रंगन के सोझा रखत 'एगो समर्पित जिनगी' के भोजपुरी जगत में बहुते स्वागत बा । जीवनी साहित्य के ई भंडा भर रहल बा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी आलोचना के बढ़त डेग

-कुमार धीरज

[पुस्तक : भोजपुरी : प्रगति की पहचान (आलोचना) लेखक : डॉ. राय, प्रकाशक : भोजपुरी साहित्य संस्थान, श्री भवन, मोहम्मदपुर लेन, पटना-800 006 कुल पृष्ठ : 204 मूल्य : 150 रुपये मात्र ।]

डॉ. विवेकी राय के लिखल पुस्तक 'भोजपुरी साहित्य : प्रगति की पहचान' देखा आ अद्भुत आलोचनात्मक दस्तावेज बा । डॉ. राय आपन तीक्ष्ण आ सूक्ष्म नात्मक अन्तर्दृष्टि के प्रयोग करत पूरा भोजपुरी साहित्य के उदात्त आ अब्बल रे में सफल भइल बानी । अइसन लगता कि लेखक के रचनाधर्मिता समानरूप चनात्मक आ रचनात्मक स्तर पर ऊर्जावान बा । लेखक आपन रचना संसार गंवई जीवन आ संस्कृति के अवलम्बं मनले बा । लेखक स्वीकार भी कइले बा वलिक भाषा आ संस्कृति के उनका ऊपर गहिरा असर बा । ई पुस्तक मुख्य 25 बिन्दु के छूअते ढेर सारा रचनन के विवेचन करता ।

आलोचना के लिहाज से एह पुस्तक के रूपरेखा एगो सैद्धांतिक विमर्श के कि लेखक हिन्दी आलोचना आ साहित्य के मर्मज्ञ बानी, एहसे भोजपुरी भाषा त्य के पेचीदगी भी साफगोई से सामने रख देले बानी । एतने ना, पश्चिमी क सब अइसन डॉ. राय भाषा के विज्ञान आ दर्शन समझे के भी भरपूर चेष्टा नी । आपन पहिलका आलेख 'भोजपुरी साहित्य की प्रगति' में लेखक पश्चिम ख आ भारत बनाम शेष विश्व के साहित्यिक बहस के एगो सारगर्भित मिसाल कइले बानी । लेखक के मान्यता बा कि "सांस्कृतिक चेतना संपन्न स्वतंत्र वाली इस भाषा के साहित्य का इतिहास भारतीय स्वाधीनता प्राप्ति की धि से शुरू होता है और कुल आधीशताब्दी के अन्तर्गत इसनें विकास नहीं के उन चरणों को पूर्ण किया है जिनके आधार पर किसी भाषा को विकसित का दर्जा दिया जा सकता है ।"

अइसे त डॉ. राय सकारात्मक आ आशावादी सिद्धांतन के पैरोकार नजर बानी, फिर भी कहीं-कहीं निराशाजनक झलक भी मिलता । मतलब ई कि का उम्मीद के मुताबिक भोजपुरी के विकास नइखे भइल । एह मायने में लेखक ा महान रोमांटिक कवि वडर्सवर्थ के समान नजर आवता । वडर्सवर्थ के ही डॉ. राय के मान्यता बा कि 'गद्य हो या पद्य- इसकी शिल्पशैली और मनोविज्ञान नता की भावनाओं के करीब होना चाहिए । वही भाषा और साहित्य सर्वस्वीकृत कालिक हो सकती है जो जनता की भावनाओं के अनुकूल हो ।"

लेखक दूसरका आलेख 'कारवां चलता गया' में दार्शनिक शैली में आपन प्रकट करत बानी । पश्चिमी कवि मिल्टन लेखा डॉ. राय के कथन बा, "वास्तव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

में कोई भाषा महान अथवा हीन नहीं होती । समर्थ साहित्यकार की आत्मा का रस ही भाषा को सशक्त और प्रभावशाली बनाने में कारणभूत होता है ।'' आपन आलोचनात्म व्याख्या से डॉ. राय भोजपुरी कविता के रोमांटिक कविता के करीब ला देले बानी उहाँ ई कहल जायज बा कि भोजपुरी भाषा के प्रकृति गीतप्रकृति ह । भोजपुरी व शक्ति असीम बा, ''ग्राम सुषमा का वर्णन जिस शैली में कवि लोग भोजपुरी में कर हैं वह हिन्दी में विरले ही संभव है । चूँकि खड़ी बोली नगर वैभव शैली लेकर आ है, वहीं भोजपुरी धरातल से ऊपर उठी है, इसलिए उसमें जनभावना और लोकचेत की पकड़ ज्यादा है ।'' डॉ. राय आपन यह दृष्टिकोण से बरबस दक्षिण भारती आलोचक रामामिल्थन के याद दिलावत बाड़न जे मानत रहस कि रचना ओही भा में उत्कृष्ट हो सकता जेह में स्वप्न देखल जा सकेला । भाषा के मनोविज्ञान एकरा चिह्नित करेला कि राजनीतिक आ आर्थिक कारण भाषायी परिवेश के अंतरंग रूप प्रभावित करेला । इहे कारण बा कि मात्र छः सौ बरिस पहिले जवन अंग्रेजी एक बो का शक्ल में विराजमान रहली, आज जगत भाषा बन गइल बिया । अफ्रीकी आलोच नूगूगी वा थ्यूंगो के मान्यता बा कि राजनीतिक आ आर्थिक उपनिवेश वास्तव में भाषा उपनिवेश ह जे आदमी के मनोविज्ञान के औपनिवेशीकरण कर देला ।

डॉ. राय बेशक अपना तथ्यपरक विश्लेषण से पाठक के दिल छुअले बानी लेकिन आज के बदलत दौर में, जहाँ भाषायी सोच आ आलोचनात्मक रूभा गुणात्मक रूप से बदल रहल बा, उनका से अउर के अपेक्षा कइल जा सकेला । महान फ्रेंच साहित्यकार एम. टेन के मान्यता बा कि साहित्य के तीन गो अवलंब होला- समय, सामाजिक परिवेश आ भौगोलिक स्थिति । एह आलोचनात्मक आधार पर लेखक भोजपुरी के रचना-संसार के देखे के कोशिश कइले बाड़न । कईगो विद्वानन के चर्च करत लेखक दर्शन, धर्म, तत्वज्ञान, राष्ट्रीय आन्दोलन, धर्म सुधार आदि के परिवेश भोजपुरी रचना के देखले बाड़न ।

डॉ. राय के ई प्रयास भोजपुरी साहित्यिक आलोचना खातिर मील के पत्थ साबित होई । सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य में ई सुस्थापित सत्य बा कि कवनो साहित्य बिन समालोचना के आपन शिखर के प्राप्त नइखे कर सकत । लेखक भी एह सत्य के स्वीकार कइले बाड़न । लेखक भोजपुरी के न केवल हिन्दी साहित्य के विधान अ विज्ञान के अनुसार देखले बाड़न अपितु आपन अंग्रेजी सोच आ समझ के भी प्रयोग कइले बाड़न । अन्त में ऊ एह बात के स्थापित करे के चेष्टा कइले बाड़न कि भोजपुरी वैज्ञानिक दृष्टि से ज्यादा समीचीन आ सार्थक बा, खासकर हिन्दी के तुलना में ।

-'हिन्दुस्तान' दैनिक, छपरा कार्यालय, छपरा-841 301

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत पर विचार-विमर्श

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना आ भास्कर साहित्य भारती के संयुक्त तत्वावधान में सीवान में एगो विचार गोष्ठी के आयोजन कइल गोष्ठी में सूर्यदेव पाठक 'पराग' आ भगवान सिंह 'भास्कर' के संयुक्त सम्पादन शित **'भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत'** नामक पुस्तक पर विचार विमर्श भइल। के अध्यक्षता प्राचार्य सुभाषचन्द्र यादव आ संचालन डॉ. जीतेन्द्र वर्मा कइलीं। एह अवसर पर युवा साहित्यकार राजीव रंजन सिंह 'हिमांशु' आ सुभाष चन्द्र पुस्तक से संदर्भित समीक्षात्मक आलेख पाठ कइल। सुभाष चन्द्र यादव अखिल भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के रचनात्मक कार्यन के सराहना करत भोजपुरी के त के ऐतिहासिक कृति बतवली। राजीव रंजन सिंह 'हिमांशु' अपना आलेख जपुरी के राष्ट्रीयगीत' में संकलित मनोरंजन प्रसाद सिंह, रघुवीर नारायण सिंह, सिंह 'भास्कर' आ पाण्डेय कपिल आदि के रचनन में विविध योगदानन के महत्वपूर्ण बतवलीं।

सीवान जिला जनवादी लेखक संघ के सचिव मार्कण्डेय दीक्षित कहली कि पूंजीवादी युग में 'भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत' के सम्पादन काफी महत्वपूर्ण बा। न्द्र वर्मा 'भोजपुरी के राष्ट्रीयगीत' के समीक्षा करत कहलीं कि पराग आ के बहुआयामी व्यक्तित्व आ विविध विधा में रचित प्रचुर साहित्य समय के श आपन गहरा छाप छोड़ चुकल बा। गोष्ठी में कमर सिवानी आ रेयाज नपुरी भी आपन-आपन विचार व्यक्त कइल एह अवसर पर एगो कवि सम्मेलन यरा के भी आयोजन भइल।

●

चिट्टी-पत्री

ाम निहाल गुंजन : नया शीतल टोला, आरा,

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के कबीर विशेषांक। आ 2 समय में भेंट भइल। दुनो कन के सामग्री ठीक लागल। राउर संपादकीय पढ़ के लागल कि कबीर भोजपुरी यी आ भोजपुरी के कवि भइला का बावजूदो बहुते भोजपुरिहा लोगन खातिर अबो हृय नइखन। ई साँचो दुख के बात बा। कबीर का बारे में ठीक से आ सप्रमाण लकही करे के जरूरत बा। एकरा पर हमरो लेख मिली।

ॉ. राजेश्वरी शाण्डिल, माल एवेन्यू कालोनी, लखनऊ

त्रिका के कबीर विशेषांक मिलल। धन्यवाद। रउवाँ हमरो के स्थान देले बानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

कबीर पर बड़ी प्रासंगिक रचनन के संकलन भइल बा । कुल्हि रचना पढ़े लायक बाड़ीसन । राउर संपादकीय एगो विवाद के उठवले बा काहे कि कबीर के भाषा भोजपुरी केहू ना माने । उनकर मातृभाषा जरूर भोजपुरी ह । कबीर के भाषा आद बा । हमनी का भोजपुरी के प्रयोग में कबीर के आदर्श माने के चाहीं । तब्बे भोजपु बढ़ी आ राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनी ।

- **उमेश कुमार पाठक 'रवि'**, चरित्रवन, बक्सर

जुन-जुलाई अंक एके साथे मिलल । आद्यन्त पढ़ली । नया जानकारी मिलल पत्रिका के 'कबीर विशेषांक' आपन एगो विशिष्ट स्थान बनाई । अपना छोट का में बड़ बात सोभा राखे में दूनो विशेषांक समर्थ बा ।

- **जितेन्द्र कुमार**, मदन जी का हाता, आरा

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के कबीर विशेषांक के दूनो अंक मिल गइल बा । मैनेजर पाण्डेय कबीरदास के भोजपुरी के आदि कवि बतवले बानी एह से कबीर कविता भोजपुरी के कविता ह । डॉ. जीतेन्द्र वर्मा कबीर दास के समाज सुधार कवि स्थापित कइले बाड़न । इ एगो आधुनिक दृष्टि बा । नीक लागल । कबीर के भाषा प राउर संपादकीय टिप्पणी सारगर्भित बा । लोग के एह दिस विचार करे के चाहीं । दोसरा अंक में संत कबीर के भाषा आ जन्मभूमि अविनाश नागदंश जी के स्तरीय आलेख बा जब काफी खोजपूर्ण बा । डॉ राजेश्वरी शांडिल्य कबीरदास के धर्मनिपेक्षता के चर्चा कइके आधुनिक संदर्भ उनकर प्रासंगिकता स्थापित कइले बानीं । कवनो लेख कवनो दिसाई कमजो नइखे । दूनो अंक संग्रहणीय बा ।

- **डॉ. पी. एस. सिन्हा**, जोन-1, एम. पी. नगर, भोपाल

राउर भेजल भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के कबीर विशेषांक 1 आ 2 दूनो एके सा मिलल । कबीर साहिब के बारे में ज्ञान के बढ़ावेवाला आ मन के लगावे वाल आलेखन के पढ़ के हिया जुड़ा गइल बाकिर एगो कमी लउकल इ कि लिखेवाल लोगन के पता कहीं नइखे । सम्पादकीय सम्पादकीय ना होके उहो एगो रोचक ज्ञानवर्धक आलेखे हो गइल बा ।

- **चन्द्रदीप पाण्डेय**, पिपरहियां, पोस्ट- अरुयाँ, जिला सीवान

भोजपुरी साहित्य पत्रिका के फरवरी, 2004 के श्री सिपाही सिंह श्रीमंत का बारे निकलल विशेषांक हम मान एकसुरिये आदि से अंक तक पढ़ गइनी । ऊ हमार व साथी रहले राजेन्द्र कॉलेज में 45-47 में आ पटना ट्रेनिंग कॉलेज में 1950-51 पृष्ट 2 पर नागेन्द्र जी लिखतानी कि ऊ वी.ए. पास कके मुजफ्फरपुर पढ़े चल गइले । ई बात ना ह । ऊ 40-49 में पटना ट्रेनिंग कॉलेज से डिप.एड. कइले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राइमरी सेक्शन से, डिपटी साहेब होखे खातिर । हम सेकेन्डरी से कइनीं । हेडमास्टर होखे खातिर । ट्रेनिंग कॉलेज में उनकर चुनाव 'आंधी' कविता सुनावला से भइल, उनका में कारयित्री प्रतिभा देख के । एह बीच ऊ जलालपुर हाईस्कूल में शिक्षक रहले, जहां हमहूं उनका साथे करीब छः महीना रहनीं । फेर पटना ट्रेनिंग कॉलेज में साल भर । ऊ एम. ए. 60-62 का लगभग कइले । हम 60-62 में एल.एस. कॉलेज एम.ए. आंग्रेजी में करे गइल रहीं । ओहघरी ऊ एम.ए. हिन्दी में करे खातिर प्रो. देवेन्द्रनाथ शर्मा से भेंट करे गइल रहले । पृष्ठ 22 पर श्री कृष्णानन्द 'कृष्ण' जी लिखतानी प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा के बाद सन् 1944 ई. में राजेन्द्र कॉलेज छपरा से बी.ए.....पास कइनीं । ई बात ना ह । ऊहाँ का 1945-46 में बी.ए. पास कइनीं । नाम का बारे में भी कुछ स्पष्टीकरण जरूरी बा माता-पिता नाम शिवजी रखले । बाकिर ई उनका पसन्द ना परल । एसे ऊ आपन नाम सिपाही सिंह रखले वीरता के प्रतीक । आ 'पागल' उपनाम जे उदग्रता के परिचायक बा । एगो बात केहू नइखे लिखले । उनका कुछ शकुंतकिया रहे जे ऊ बार-बार दोहरावस जइसे गुड-बेटर-वेस्ट-गुडापेस्ट । उनका सीट ट्रेनिंग कॉलेज जे ऊपर 20 नम्वर कमरा का नजदीके रहे । आ आध एक घंटा पर ऊ बोलस 'गुड-बेटर-वेस्ट-गुजपेस्ट' ।

डॉ. शोभनाथ 'लाल', बी-32/120ए-एस, नरिया, पो.बी.एच0यू., वाराणसी-5

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका का साथे आंज़नेय जी के अध्यक्षीय लिखित भाषण मिलल । ओही साथे एगो राउरो पुरजा भेंटाइल । आंजनेयजी के जोरदार भाषण पढ़ि के जहवां एक ओर मन गहगहा गइल, बलिया के भोजपुरी- विकास में कुछ लोगन के जिला- खारिज देखि के ठेस भी पहुंचल । अइसन लोगन में लमहर सेवा करे वालन के महत्वपूर्ण योगदान बा ।

पइया । हमरा चार साल बलिया छोड़ला हो गइल सैंतिस बरिस उहां रहिं के केतना लिखलीं-छपलीं आ आकाशवाणी गोरखपुर पर प्रसारित भइलीं ओकर उल्लेख इहां कइल उचित नइखीं । खराब स्वास्थ्य का चलते सिरजन-लिखनी के दुकान बढ़ा चुकल बाड़ी । एगो कविता भेजतानी, नीक लागे त छापब । फिरों कबो कहनियो भेजब । बइठि के लिखल दुश्वार हो गइल बा ।

जगह बदल देहला से ओकर करनी आ नाम भुला देहल का उचित बा ? हीरालाल 'अमृतपुत्र' के 'हरि अर्जुन के बात' गीता का पद्यानुवाद देखे-पढ़े योग किताब हवे । अनन्त प्रसाद 'राम भरोसे' क 'अमर शहीद भगत सिंह' खण्ड काव्य पढ़े लायक पुस्तक ह । अपना बारे में कुछ कहल त मुंह-मिठ्ठू बने के बात हो जाई न ? आपन प्रतिक्रिया लिखबि । मन करे त ई चिठियों छाप सकी ले ।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gran

R.N.I. Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. Pt-428/90

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका : अक्टूबर, 2004

सम्मेलन के नया प्रकाशन

भोजपुरी के आदि कवि कबीर

संपादक

प्रो० ब्रजकिशोर

डॉ० जीतेन्द्र वर्मा

एह में प्रसिद्ध आलोचक डॉ० मैनेजर पाण्डेय के निबंध संकलित बा

मूल्य : 100 रुपया, सम्मेलन के सदस्य खातिर बीस रुपया मात्र

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से प्रो० ब्रजकिशोर द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, महेन्द्रपुर लेन, पटना-800 006 से प्रकाशित, आउर प्रो० ब्रजकिशोर द्वारा के० एम० कम्प्यूटर्स, पश्चिमी लोहानीपुर, पटना-800 003 में अक्षर-संयोजित एवं मुद्रित ।

सम्पादक: प्रो० ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी

स्वा भी

सम्मेलन

पत्रिका

सम्पादक :

प्रो. ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

दाम : 15 रुपया

परामर्श मंडल

(डॉ॰) विवेकी राय, (आचार्य) विश्वनाथ सिंह, (डॉ॰) विद्यानिवास मिश्र, (श्री) मोती बी॰ ए॰, (दण्डिस्वामी) विमलानंद सरस्वती, (श्री) पाण्डेय कपिल, (डॉ॰) विजय बलियाटिक, (डॉ॰) अर्जुन दास केसरी, (डॉ॰) प्रभुनाथ सिंह, (डॉ॰) अनिल कुमार 'आंजनेय'

संपादक

प्रो॰ ब्रजकिशोर

सह संपादक

डॉ॰ जीतेन्द्र वर्मा

संपादक मंडल

डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', राजनारायण दीक्षित, डॉ॰ लारी आजाद, कृष्णानंद कृष्ण, सूर्यदेव पाठक 'पराग', डॉ॰ रामकिशोर श्रीवास्तव, डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, भगवान सिंह 'भास्कर', व्यास मिश्र, भगवती प्रसाद द्विवेदी, रवीन्द्र शाहाबादी ।

संपादकीय संपर्क

प्रो॰ ब्रजकिशोर, श्रीभवन, प्रोफेसर कॉलोनी, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू पटना-6

फोन: 0612-2671180, 2669592 एक्सटेशन-8

रचना में दिहल तथ्य, विचार रचनाकार के बा, ओसे संपादक मंडल के सहमति जरूरी नइखे ।

अ॰भा॰ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के

वार्षिक सदस्यता शुल्क 25 रुपया सालाना

आजीवन सदस्यता शुल्क 251 रुपया

विशिष्ट आज़ीवन सदस्यता शुल्क 1101 रुपया

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के

वार्षिक ग्राहक शुल्क 100 रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर

वार्षिक ग्राहक शुल्क... 80 रुपया

प्रायोजक (आजीवन ग्राहक) 1000 रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका
(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)
श्रीभवन, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-800 006
15 अंक-8 पूर्णांक-176 अगस्त, 2004

सम्पादकीय

आजादी के वर्षगाँठ पर सोचीं त तनी

हर साल देश भर में 'स्वतंत्रता दिवस' मनावल जाला, लालकिला से लेके के राजधानी आ छोट-बड़ महकमा के मुख्यालय तक में तिरंगा झंडा फहरावल शुरू में एह पर्व के मनावे खातिर जवन उत्साह आ उमंग आम जनता में लउकत ऊ नइखे रह गइल। एकर कारण इहे बा कि जवन सपना आजादी का बाद गइल रहे, ओह में से ढेर सपने रह गइल आ आम आदमी के जिनगी ओइसहीं आस आ अभाव का बीच गुजर रहल बा। देश के खुशहाल बनावे खातिर जे कुछ सरकार किओर से कइल गइल, ओकर कवनो फल आम जन तक पहुँचबे ना। सरकारी काम-काज में लालफीतासाही आ लापरवाही बढ़त गइल बा। समाज लोग आगे बा, अगुआ बा, नेता बा ओह लोग में चरित्र, ईमानदारी आ दायित्वबोध अभाव हो गइल बा। नेता-अधिकारी-अपराधी के गँठजोड़ अतना मजबूत बन कि एकरा के तूड़ल महाकठिन बुझात बा। नेता का करनी-कथनी में कवनो खे। हर ओर लूट-खसोट मचल बा। जनता के पइसा, जाता जनता खातिर करजा के धन कुल्ही मुट्ठी भर लोग का जेबी में ढुकल जाता। आम जनता जतने सूखल जाता, नेता-अधिकारी के गाल ओतने चिकनाइल जाता। आखिर ई अनेत चलत रही ? कबले जनता के बुखक बनावत रहल जाई ?

बुद्धिजीवी लोग खाली बहस करके अपने में रमल बा, ऊ लोग अपने चतुराई बा। हल्ला-गुल्ला आ शोरगुल करके ऊहो सभे अपने दाव खेलत बा। में सही-सही सोच बिलाइल जाता। जे भी कुछ सोचता अपना हित में सोचता अपने माल चाभे खातिर दाव खेलत बा। जे जहाँ बा अपना के जनता के सेवक समुझ के व्यवहार करत बा। जनता भकुआइल बिआ। टुकुर-टुकुर ताकत बिआ। मुखिया-से लगायत मंतरी-संतरी ले सभे एके रंगे रंगाइल बा। साँच कहे आ कहे के हियाव नइखे रह गइल। के कहो, आ केकरा से कहो। जब में भाँगे घोराइल बा, सभे कमरिए ओढ़ के घीव पी रहल बा त आम जन केकरा आगे दुखड़ा रोवो ?

बोले के आजादी ना। सभे बोल रहल बा। सबसे ढेर नेता लोग बोल रहल अनाप-सनाप बुझाता नेता अपना भाषण में बोल जाता। मीडिया का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gra

मसाला चाहीं, ऊ ऊहे कुल्हि छाप के, टीवी पर दिखा के आपन दाव खेल रहल बा
खबर में बनल रहे खातिर कवन-कवन नौटंकी नइखे होत । जात-पाँत हटावे-मिटावे
जगहा नेता लोग एकर बन्हन आउर मजबूत कइले जाता । सत्ता आ ओकरा पीछे छिप
लूट के माल पर नजर राख के माल उड़ावे खातिर कुल्ह खिलकत हो रहल बा ।
लोग खानी आम लोगन में अपना के जागरूक बूझे वाला लोगो बकल शुरू कर दे
बा । होड़ बा कि परम्परा तूड़ल जाय, मरजादा भंग कइल जाय, डेगे-डेग सामाजि
अनुशासन के धज्जी उड़ावल जाय आ सगरे मय-आतंक के दहशत पसरा दिहल जाय
सबकुछ निहित स्वार्थ आ लोभ वश हो रहल बा । आजो लोग भूख से विलविला
मर रहल बा, लँगटे जिनगी काट रहल बा । करोड़न लोग खातिर करिया अच्छा भ
बरोबर बा । जवने सरकार आवत बिआ शिक्षा के आपन जागीर बूझ के, आपन
समुझ के अपना मत-विचार के बीआ डाल देत बिआ । पचास साल बीत गइल
शिक्षा के धरती बंजरे रह गइल । जेकरे जिम्मे कइल जात बा, ऊ अपने के अकिल
बूझ के आउर लोग के गदहा समुझ के काम करत बा । नेता माने हर बात के पंडि
लीं, ई लोग अपना करनी से देश के खंडित कइले बिना ना मानी । जब देश का भ
आवाजाही पर रोक हो जाई, अपने-अपने क्षेत्र में नोकरी के चाव रह जाई त कइसे
पाई देश अखंड ? कबले अपना-अपना गुण्डई से जनता के मुँह पर जाब लगावत र
जाई । अनबोलता पशुओ विद्रोह कर देला । आदमी त आदमी ह । सुगबुगाहट
बा । अगड़ा पिछड़ा, दलित, शोषित, शोषित कतना खण्ड में समाज के बाँटब
चोर-चोर के शोर मचावत रहब ?

आजादी के वर्षगाँठ आत्मालोचन के अवसर बेला । सब केहू खातिर । अ
जनतो का बिचारे के चाहीं कि ऊ सबकुछ करे के जिम्मा सरकारे पर छोड़ दी
अइसहीं अनेत चलत रही । ओकरा मे खुदे अपना विकास के इच्छा-शक्ति जगावे
पड़ी । एह इच्छा शक्ति आ संकल्प का अभाव में सभे ओकरा के ठगत रही, क
जाति का नाँव पर, त कबहूँ मजहब का नाँव पर । अतना दिन का बादो ई चेत न
होत कि ई कुल्ही रँगल सियार बाड़ेसन, अपने स्वार्थ खातिर भेस बदलले 'हुआँ-हु
करत बाड़ेसन ? हमनी के सोच रचनात्मक आ विकासपरक कब होई, कइसे होई ?
सचहूँ धरती बाँझ हो गइल, समाज बाँझ हो गइल कि निष्ठावान् नागरिक पैदा ना
पाई ? आगे जनता का बढ़े के पड़ी आ अपने भीतर से सच्चा ईमानदार नेता पैदा
के पड़ी । कृष्ण के अपने बीच से बचावे-निकाले के पड़ी कि स्वार्थी मामा कंस
मारल जा सके । विकास एगो मानसिक प्रक्रिया हवे । राष्ट्रपति जी के सपना कि '20
ले भारत महाशक्ति बन जाई' तबले पूरा ना होई जबले ई शक्ति सचहूँ जनता का बी
से ना उभरी ! जनता के आत्मशक्ति ही देश के महान बनाई ।

–ब्रजकिशोर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोगीरा

❑ प्रो॰ ब्रजकिशोर

जोगी जी सा रा रा, जोगीरा सा रा रा रा !
केहू ना अनमख माने आइल फाग दुआर
जोगीरा सा रा रा रा !

साँच आँच में धनकल, नेता के सौ झूठ
खाली रहल हाथ कि खाली लउके बान्हल मूठ
नेता फेंटा बान्ह धधाइल लूट सके सो लूट
पटना-दिल्ली धूम मचल ना रोजे कचरमकूट
गोली-डंडा का ऊपर से ई महँगाई के मार !
जोगीरा सा रा रा रा !

गरीबी रह जाई कहवाँ, मरिहें दलित-गरीब
मजहब जाति-पाँति में बाँटल जनता रही करीब
फूट डाल के राज करे के ऊहे बा तहजीब
सभी लमेरा, सभी लुटेरा, नेता हाथ जरीब
बूझ सके त बूझ कबीरा, नाहक बा तकरार !
जोगीरा सा रा रा रा !

सड़क, बिजली, पानी, रासन-जनता खातिर टोटा
माल चाभ के गाल लाल बा, नेता भइले मोटा
बखरा में जनता का भेंटल नोंचे के बस झोंटा
लोटा-थरिया बेंच बेसाहीं बिहटी अउर लँगोटा
खुलल बाटे हाट विश्व के, नीति अर्थ उधार !
जोगीरा सा रा रा रा !

नौटंकी बा राजनीति अब, होत रहल धूरखेल
चोर-चोर मउसेरा भाई, बहुत भीतरिया मेल
नेता खातिर एके जइसन घर होखे भा जेल
बलात्कार, अपहरण, डकैती, राजनीति के रेल
पोखरन के लीं सुनि धमाका, ना मांगीं रोजगार !
जोगीरा सा रा रा रा !

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

हमार जिनिगी

❑ स्वामी फन्दोत्तीर्णानन्द

हमार जिनिगी
पेड़ के पीयर पतई बा-
जवन हवा का एगो झोंका से-
छितरा जाई ।
हमार जिनिगी
पहाड़ के ढ़लान बा
जवन तनी आगे जाके-
सपाट मैदान हो जाई ।
हमार जिनिगी
नदी किनारा के पेड़ बा
जवन कबो- ढहि के
सत्यानाश हो जाई ।
हमार जिनिगी
खाली बाती पऽ ब्रत दीया बा
जवन कबो बुता जाई ।
बाबू हो-
तूं हमरा जिनिगी के मूंदल-
किताब के पन्ना मति उलाटऽ,
एके उटकेरला से
कवनो फैदा ना होई-
ठीक से देखऽ त
करेजा झंझार बा, आउर हम का क

●अद्वैत आश्रम, रामडिहरा, पो.-रामडिहरा, भाया-तिलैया जिला-रोहतास, (बि

माई

❑ सुरेश का

निठाह घात कइलस,
फेनु विश्वासघाती बरसात
अगरम जनावते एकरा
जागल हुलसल ठठरी के सपना
टर्र टों टर्र टों करत
अचके उपराइल
पियरोइया बेंगन के साथे बिला गइल
हरियरी ऑखिन के
झुका लेलस मूड़ी
असहाय झुरियन अस
गाहे बेगाहे
फूह-फाह बान्हत बदरी करियवा
ललचवलस खूब
भुकभुकात परान के
गरजन-तड़पन धुकधुकवलस
तोख, मीन-मेख
बाकिर माई धरती के हिया
फाटि गइल भीतर ले
देखि देखि बेटा के
बेवायन के असह पीर
बुढ़ा गइली माई
पियराइल मुआर भइल केश
थउसि गइली अचके
राज भोगत इन्नर के
धनि बा करेज
पसीजल ना इचिको
सरग के सुखासन प बइठल
देखत रहले
रंभा मेनका के छन छनन् छ
सॅगोरले ऑखिन में
पियासल काम
का करो माई धरती
फेनु कइलस पोढ़
छाती आपन, लोर रोकि के
कइलस प्रन, उलटन-पलटन
जगा के
शेषनाग के ।

● काटं, (ब्रह्मपुर), बक्सर-802112, (बिह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

❑ तंग इनायतपुरी

चुपके से जेकरा दिल में समाइल हमार नाम ।
कबहूँ ना ओकरा मुँह से सुनाइल हमार नाम ।।
उनका जबान से जे सुनाइल हमार नाम ।
सुनके हठात आज चिहाइल हमार नाम ।।
जहवां तहार तहवां लियाइल हमार नाम ।
जौ का संगे अनेर पिसाइल हमार नाम ।।
आलोचना के धुन में तुराइल हमार नाम ।
दू चार जन के साथ छपाइल हमार नाम ।।
जेकरा शहर के नाम पड़ल हमरा नाम पर ।
ओकरे गली में जा के भुलाइल हमार नाम ।।
बक्सऽ बिलार मुर्गा रही बांड़ आज से ।
कुछुओ भइल त चट से लियाइल हमार नाम ।।
कहलस मुनीब आज से सब माफ हो गइल ।
रउरा बही से हाय कटाइल हमार नाम ।।
हर आदमी के बीच में पहचान बन गइल ।
जहियां से उनका मन से भुलाइल हमार नाम ।।
जेकरा से हमरा आंकड़ा छत्तीस के रहे ।
ओकरा पता ना कइसे घोंटाइल हमार नाम ।।
राउर ना लेहनी नाम कबो हम इ सोच के ।
रउरे से आज ले बा तोपाइल हमार नाम ।।
छापीं भले हकीम के परचार के तरे ।
नामे बदे बा आज भुखाइल हमार नाम ।।
शामिल भइल उ खून लगा के शहीद में ।
जइसे गज़ल के लेख में आइल हमार नाम ।।
निस्बत, उरूज, रंग, रवानी, अदा, मिजाज ।
कुछ सोच के गजल बा धराइल हमार नाम ।।
बालू प लिख के नाम गइल लोग-बाग सब ।
गंगा नदी में आज समाइल हमार नाम ।।
निमने के हाथ में बा तराजू बजार के ।
कोदो के भाव 'तंग' बिकाइल हमार नाम ।।

● *कागजी मुहल्ला, सीवान-841226, (बिहार)*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant

आज के समाचार

❑ सीता राम पाण्डेय 'प्रश

खेत से आके, तनी सुस्ता के
गाइ के चरन पर चढ़ा के
हमरा से पूछलन काका
(बबुआ) आजु अखबार में देले बा का का
सुनावऽ सब सिलसिलेवार
काथी से भरल आजु के अखबार ।

हम कहनी सुनऽ कका
मन्दिल में खून खराबा
मस्जिद में पुलिस के पड़ावा
रामपुर में खून के होली
लम्पट ले भागल कनिया के डोली
द्रोपदी के साथे बलात्कार
ई बा पहिला पन्ना के समाचार ।

पूर्वोत्तर में भयंकर बाढ़
बैंक के लुटलस चुहाड़
नइखन राखत बाबू घुरहू
जियते फुंकइली, बढ़ल तकरार
इहो बा पहिले पन्ना के समाचार ।

कहीं घोटाला, कहीं अपहरन
तबहूँ चुप बाड़न दुखहरन
अपराधी चला रहल सरकार
सुरसा अस फइलल भस्ट्राचार
ई आजु के राजनीतिक चमत्कार
ई बा भीतरी पन्ना के समाचार ।

नयना के छकावल गइल
तन्दूर में पकावल गइल
सीता पुकारसु राम के
द्रोपदी गोहरावसु श्याम के
ई कहाँ दो लुकाइल, बाड़े लाचार
इहो बा भीतरी पन्ना के समाचार ।

अन्नपूरना के जवान बेटा
बान्हि के मइल मुरेठा
चउकी पर बइठल बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूख से अंइठल बा
सूखा से मचल बा हाहाकार
इहो बा आजु के समाचार ।

काश्मीर में आतंकवादी
सरकार में समझौतावादी
दूनों में हो रहल खेल बा
कहीं ना कहीं आपुस में मेल बा
ई बन गइल बढ़ियाँ रोजगार
इहो बा आजु के समाचार ।

(काका) अखबार पढ़ला के का जरूरत
सीसा मूं देखलीं अपन सूरत
सब कुछ बता दी राउर चेहरा
तब केकरा माथे बन्हाई सेहरा
अब के होई सजा के हकदार
बन कइनी हम पढ़ल अखबार ।

● *रामपुर, दिघार, बलिया, (उ.प्र.)*

गीत

❑ **सुभाषचन्द्र यादव**

नया साल आइल, नया साल आइल ।
पुरनकी रजाई में पेवना सटाइल ।।

केहू कहे नीमन, केहू कहे बाउर ।
गइल ओकरा माथे बहुत कुछ कहाइल ।।

केहू हस के काटल, केहू रो के काटल ।
जिनगिया के एक साल आउरी ओराइल ।।

महाजन के अबहीं पुरनके बा बाकी ।
उमिरिया के एक साल बान्हे धराइल ।।

कलैण्डर नीयर जिन्दगी आदमी के ।
पुरनका उतरनी त नवका टंगाइल ।।

कहाँ ले कहीं हाल हम जिन्दगी के ।
पाछे उधारे बा आगे ढ़पाइल ।।

कहाँ से शुरू बा कहाँ ले ई जाई ।
ना हम कुछ समझनी ना उनका बुझाइल ।।

● *प्राचार्य, दरोगा प्रसाद राय महाविद्यालय, सीवान*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

आज के समाचार

❑ सीता राम पाण्डेय 'प्रश

खेत से आके, तनी सुस्ता के
गाइ के चरन पर चढ़ा के
हमरा से पूछलन काका
(बबुआ) आजु अखबार में देले बा का का
सुनावऽ सब सिलसिलेवार
काथी से भरल आजु के अखबार ।

हम कहनी सुनऽ कका
मन्दिल में खून खराबा
मस्जिद में पुलिस के पड़ावा
रामपुर में खून के होली
लम्पट ले भागल कनिया के डोली
द्रोपदी के साथे बलात्कार
ई बा पहिला पन्ना के समाचार ।

पूर्वोत्तर में भयंकर बाढ़
बैंक के लुटलस चुहाड़
नइखन राखत बाबू घुरहू
जियते फुंकइली, बढ़ल तकरार
इहो बा पहिले पन्ना के समाचार ।

कहीं घोटाला, कहीं अपहरन
तबहूँ चुप बाड़न दुखहरन
अपराधी चला रहल सरकार
सुरसा अस फइलल भस्ट्राचार
ई आजु के राजनीतिक चमत्कार
ई बा भीतरी पन्ना के समाचार ।

नयना के छकावल गइल
तन्दूर में पकावल गइल
सीता पुकारसु राम के
द्रोपदी गोहरावसु श्याम के
ई कहाँ दो लुकाइल, बाड़े लाचार
इहो बा भीतरी पन्ना के समाचार ।

अन्नपूरना के जवान बेटा
बान्हि के मइल मुरेठा
चउकी पर बइठल बा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूख से अंइठल बा
सूखा से मचल बा हाहाकार
इहो बा आजु के समाचार ।

काश्मीर में आतंकवादी
सरकार में समझौतावादी
दूनों में हो रहल खेल बा
कहीं ना कहीं आपुस में मेल बा
ई बन गइल बढ़ियाँ रोजगार
इहो बा आजु के समाचार ।

(काका) अखबार पढ़ला के का जरूरत
सीसा मूं देखलीं अपन सूरत
सब कुछ बता दी राउर चेहरा
तब केकरा माथे बन्हाई सेहरा
अब के होई सजा के हकदार
बन कइनी हम पढ़ल अखबार ।

● *रामपुर, दिघार, बलिया, (उ.प्र.)*

गीत

❑ **सुभाषचन्द्र यादव**

नया साल आइल, नया साल आइल ।
पुरनकी रजाई में पेवना सटाइल ।।

केहू कहे नीमन, केहू कहे बाउर ।
गइल ओकरा माथे बहुत कुछ कहाइल ।।

केहू हस के काटल, केहू रो के काटल ।
जिनगिया के एक साल आउरी ओराइल ।।

महाजन के अबहीं पुरनके बा बाकी ।
उमिरिया के एक साल बान्हे धराइल ।।

कलैण्डर नीयर जिन्दगी आदमी के ।
पुरनका उतरनी त नवका टंगाइल ।।

कहाँ ले कहीं हाल हम जिन्दगी के ।
पाछे उधारे बा आगे ढ़पाइल ।।

कहाँ से शुरू बा कहाँ ले ई जाई ।
ना हम कुछ समझनी ना उनका बुझाइल ।।

● *प्राचार्य, दरोगा प्रसाद राय महाविद्यालय, सीवान*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहिया ले आई विहान

❑ उमेश कुमार पाठक 'रवि

काँपि गइल कवि के मन काँपल जहान ।
ए भइया, कहिया ले आई बिहान ।

कहिया ले छँउड़िन के पियर होई बँहिय
कहिया ले नन्हकन के खाइ भरी देंहि

कहिया ले एकरा पर मूंदी हम कान ।
ए भइया, कहिया ले आई बिहान ।

कहिए आजादी के झंडा फहराइल,
होखल कि अँगरेजवा कहिये बिलाइल

गोरन का चच्चन के पस्ल गोड़े छान ।
ए भइया, कहिया ले आई बिहान ।

बेकारी, भुखमरी कतना गवाई,
कतना रोज भइला के कतना लिखाई,

कतना कतल होता के देता कान ।
ए भइया कहिया ले आई बिहान ।

भिखारी-कुकुर जुधि देखि रोवले निराल
अदिमी चूसि अदिमी के कइले बेहाल

खून अब खेलवना बा, इहवाँ के शान ।
ए भइया कहया ले आई बिहान ।

रामराज ऊपर बा रावनराज भीतर,
अदिमी फुटपाथे पर महल में कबूतर,

कुकुर दूध पी के करे 'खस' ले असनान ।
ए भइया, कहिया ले आई विहान ।

-द्वारा श्री कमल बिहारी पाण्डेय, विश्वामित्र कॉलोनी, चरित्रवन, बक्सर-802101

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गीत

❑ रेयाज मोहीयुद्दीनपुरी

आसमान से तूड़ के तारा, धरती पर ले आयब
तू पहिले मुमताज त बनजा, ताजमहल बनवायब
काश्मीर के बनल दुपट्टा के सरिया मूड़ी पर
अंगिया बंगाली सफेद लहंगा, जैपुरी हरियर
पहिरऽन तोहरे खातिर, सीना पर गोली खायब
तू पहिले मुमताज त बनजा, ताज महल बनवायब
साखियन के साथे पनघट पर, माथे लेके गगरी
राह चलऽ गोरी छलकावन, प्रेम के पानी सगरी
राधा त बनके देखऽ हम आजो, रास रचायब
पश्चिम के निरलज्ज हवा में, अंचरा जनि फहराव
अपना घर के मरियादा हऽ, घूंघट काढ़िके आवऽ
फागुन में अंचरा लहरइहऽ, हम हूँ फगुवा गायब
तू पहिले मुमताज त बनजा, ताजमहल बनवायब

-ग्राम+पोस्ट- मोहीयुद्दीनपुरी, सीवान, (बिहार)

●

बरसात

❑ मनोकामना 'अजय'

बरसेला पानी
ई तीन महिना
त भर जाला
नदी-नहर-पोखर
गाछ बिरीछ हो जाला
हरीअर कचनार,
मोर अस नाचे लागेला
किसानन के तन-मन,
बाकिर थाना-जेल-कचहरी में
सालो भर होत रहेला

रोपया के बरसात
तबो ई लोगन के मन
कबो न अघाय
सोचेला ई लोग
अच्छा बा दूधारू गाय
जतना जादा से जादा
दुहा जाय
भले ओकर बछरू
पिअला बिना छटपटा-छटपटा
के मर जाय ।

कृष्णा भवन, विवेक-अशोक नगर, छोटा गोविन्दपुर, जमशेदपुर

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

मनपाखी

❑ रामसेवक 'विकल

कवना नगरिया से अइलू ए
मन-पाखी
काहें बा जियरा उदास ?
केकरा सनेहिया में बनलू जोगिनियाँ हो,
कइसनि लगली पियास ?

पीरीति की नगरी से उड़ी चलि अइलीं हो,
दूर बानीं एहि से उदास !
खोजतानीं अपना बटोहिया के दुनियाँ में,
बिरह के लगली पियास !

कइसन देशवा से चललू ए मन-पाखी
कहवाँ के करेलू पयान ?
काहें इहाँ फँसी गइलू मोह की नगरिया में,
खुली करी कही द बयान ।

अपना सनेहिया के देवता के खातिर
चललीं मों शून्य की ओर ।
फँसी गइलीं उलझन में इंहवाँ बटोही मोरे,
मिले नाहिं अब कौनो छोर ।

माया की बजरिया में जानि सुनि काहें अइलू
अपना के दिहलू गँवाइ ।
पिंजरा में छट-पट जिनगी मोहाल बाटे ।
उड़ि चलऽ जग के भुलाइ ।

का हम कहीं राही, अपना बटोहिया के,
नाहीं राखे खबर हमार ।
केतना दिनन से मोर आकुल जिनगी हो,
पिंजरा में भइलीं बेजार ।
जब अइहें बनि के बहेलिया बटोहिया हो,
नेहिया के डोलिया सजाइ ।
तब एही पिंजरा से छुटी करी पाखी हम
उड़ि जइबो जग के भुलाइ ।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गजल

❑ ए॰ कुमार 'आँसू'

चोट कतनो भी मनवा प गहरा लगे,
मन के पंछी प तबहूँ ना पहरा लगे
जाने कइसन ई हउवे दुरंगा जगत,
कतहूँ अरथी उठे कतहूँ सेहरा लगे
दर्द दिल में छुपल केकरा से कहीं,
केहू गूंगा मिलल केहू बहरा लगे
आजु मुश्किल बहुत बाटे चिन्हल इहाँ,
एक चेहरा प सइ-सइ गो चेहरा लगे
ख्वाब अइसन सजाईं रवा आँख में,
जिन्दगी मौत दूनो सुनहरा लगे
आदमी बा उहे बाटे इन्सां उहे,
धूप में भी कड़ा जेके छँहरा लगे
हक उजाला प हमरो त बडुए तनी,
फेरू काहे रही चाँद तोहरा लगे
फर्क 'आँसू' हवे जिन्दगी-जिन्दगी,
कतहूँ गुलशन लगे कतहूँ सहरा लगे

द्वारा स्व. अकलू राम, प्रभा निकेतन, मौलाबाग, आरा-802301 भोजपुर (बिहार)

गजल

❑ मिथिलेश 'गहमरी'

कइल-धइल कुल अन्हेर जाई
नदी में, सागर कहाँ समाई ?
बा दूध में जब परल खटाई
कहाँ से केहू दिही मलाई ।
ना आई काम अब दुआ-दवाई
असर जहर के, जहर से जाई
छने जराई, छने धुआँई
हवे ई जिनगी दियासलाई
हजार दुख बा, हजार सुख बा
सब आपन आपन नसीब भाई
परलि बा सांसत में झूठे दुनिया
दिया से, कतहूँ दिया बुताई ?

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

GC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

कहानी

पहाड़ नीयर जिनगी में अंजुरी भर सुख

❑ गिरिजाशंकर राय 'गिरजेश'

गाँव में सवेरे से हलचल बा । धुन्नी बैंकाक से बेमार होके घरे लवट बाड़न । उनका के अइसन बेमारी पकड़ ले बा जवना के सुनिके बैकाक के सरका उनका के भारत भेजवा दिहलस ह । रघुवा सवेरे ही से हल्ला कइले बा धुन्नी 'एड्स के रोगी हो गइल बाड़न । उनका के छुवला से, बतियवला से, उनका साथे बइठला एह बेमारी हो गन्हना लाग जाई । हालांकि मास्टर साहब रघुवा के बात के काटत कहव कि अइसन कवनों बात नइखे । जबले खून से खून ना मिली एड्स ना होई । ले मास्टर साहेब के बात कम आ रघुवां के बात ढेर पतियउवे । नतीजा बा गांव में सनस फइलल बा । धुन्नी खातिर दुआर पर एगो कोठरी पहिले से साफ-सुथरा क दिहल बा ओही में उन्हें खाना पानी दियात रही । घर का हर सदस्य के ओहिजा ले जाये के म कइल गइल बा । थोड़ी देर भइल रजुआ खबर लेके आइल रहल ह धुन्नी दुआरे आ गइल बाड़न । हालत बड़ा खराब बा । सायदे बच पावस । पारबती एके सुनत बाड़ी पहाड़ नीयर जिनगी में ई अंजुरी भर सुख कहां धरस ।

बाहर ई कुल्हि बात चलत बा आ पारबती का मनमें एगो अलगे महाभार चलत बा । पारबती का आँख का सोझा उनकर पिछलकी जिनगी कवनो सिनेमा क ट्रेलर नीयर गुजर रहल बा । उनका आजो इयाद बा जब उनकर बियाह भइल । सब उनकर भाग्य सराहे कि पारबती के बड़ा सुन्नर पति मिलल बा । नौरंगी चाची कहत रहली परबतिया ! तूं ओह जनम के तपस्या कइले रहले ह कि अइसन सुन्नर मरद पवले ह । पारबती सुनके हस देस । ऊ का बतावस कि गोड़े-मुड़े तक ढकाइल रहली । गोड़ का अलावा ऊ धुन्नी के कवनो अंग ना देख सकली । पंच जवन कहत बा तवन ठीक बा । बियाह का छः महीना बितले पर पता चलल कि धुन्नी कमाये बैंकाक चल गइलन । गांव घर के ढेर लोग थाईलैंड में कमाता । पहिले जवन लाभ मिलल ऊ बड़ नीक रहे । सब कहे धुन्नी खूब मेहनत का के रुपया कमात बाड़न । कई बेर महतारी जोह भेजवलसि कि चल आवस बाकिर धुन्नी कहवा दिहलन कि मोका नइखे । ऊ अइसन नोकरी में रचबस गइल रहलन कि गवनों में आवे के मोका ना लगाल । पारबती नइहर से ससुरार आ गइली । दिन बीते लागल ।

'भउजी ! भइया आ गइलन ! रघुवा आके कहलस । पारबती चिहुकली आ कहली- ठीक बा । आवत बानी आ फेर पिछली जिनगी में खो गइली । महतारी बाप मर गइलन बाकिर उनके किरिया कर्मो में धुन्नी के आवे के मोका ना मिलल । पेट चलावल मोसकिल होखे लागल । रघुवा छोट रहे । माई मुवत का बेर उनकरा के संउपत कहली-दुलहिन ! एके अब तू सम्हारऽ । एकर भाई-बाप अब तू ही बाड़ू । पारबती घुंघट उतार दिहली । पशु-चौका सम्हार लिहली । थोड़की खेत रहे । ओइ के देखे लगली आ दूसर का कहीं के भाव कम होखे लागल । मेहनत मजूरी क के खइला में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लाज । दू बरिस पहिले रघु के बियाहो क दिहली । बुझाइल जइसे पतोह उतरले

रघुवा के मेहरारू पारबती के जेठान कम सास अधिक मानेले । उनकरा सेवा कमी ना राखे । बुढ़ापा अनाइल जीवन के मोमबत्ती जवन ताजा ।

पारबती क इयाद बा कि बनवारी बैंकाक से अइले त उनकरा घरे खुद गइली बबुआ उनकर का हाल बा । बनवारी कहलन भउजी अब उनका हाल का त ओहिजे के निवासी हो गइल बाड़न । अइय्याशी में दिन-रात डूबल रहेले । त नशे में रहेले । अब हमनी से बातोचीत कइल कम क देले बाड़न । अब आवे के उम्मेद छोड़ द । कहिके बनवारी रोवे लगलन ।

बबुआ ! रोवे के चाही हमरा रोवत बाड़ तू । पारबती कड़ेर पड़ली । रोवला ना ओराई । हमार एगो मदद कर द ह तोहार हम एहसान मानब ।

'एगो का सइगो कराल भउजी'- बनवारी कहलन

'त हमरो के बैंकाक अपना साथे लेले चलऽ ।' पारबती कहली ।

का ? 'बनवारी उनकरा ओर अचरज से देखलन ।

पारबती का चैहरा पर अनुरोध रहे । 'ठीक बा । तोहार पासपोर्ट बनवादेत ई काम हम करेब बाकिर लौटानी के टिकटो खरीद देब कि कवनो बात होई अइह ।' बनवारी कहलन । पारबती हुंकारी भर दिहली ।

बनवारी दउर धूप क के पासपोर्ट बनवा दिहलन आ उनकरा साथ पारबती रवानां हो गइली । कलकत्ता हवाई अड्डा से जब जहाज उड़ल त पारबती के अनुभव भइल आ बुझाइल कि हम अपना देश से दूर हो गइल बानी । दुई तीन बैंकाक आ गइल । कुल्हि काम चमत्कार मतिन लागे । आज आदमी चिरई न बा । कहां सांझ आ कहां सवेर । बनवारी के हाथ धइले पारबती हवाई जहाज ली । बाहर अइली । ऊंच-ऊंच बिल्डंग देख के उनका लागे कि कहाँ आ गइली अधिकतर मरद मेहरारू नकचपटा लउकल से उनका बुझाइल कि नेपाल में होखस । नेपाली लोग अइसने त होखेला । टेक्सी एगो विल्डिंग का सामने । बनवारी का साथे ऊ उतरली सीढ़ी चढ़त दूसरी मंजिल पर एगो कोठरी का खाड़ होके बनवारी दरवाजा खटखटवलन । एगो आदमी दरवाजा खोललस । री भाई तूं.....ई भउजी हईं का ?' ऊ सवाल पूछलस । 'ना.....ई धुन्नी भाई के हईं पद में हमरो भउजिये लागेली ।' बनवारी कहलन आ कमरा में ढूक गइल । पाछे पारबती चल गइली । तीन चार आदमी खाना खात रहले । बनवारी बतवलन कोठरी में दस आदमी रहेलन । पांच गो डियूटी पर चल जालन त पांच गो इहां करेलन । जबले ऊ लोग आवेला तबले ई लोग डयूटी पर चल जाला । तब न इसा भेंटाला ।

सब खाना खाके चल गइल । बनवारी पारबती से कहलन । भउजी ! तू हूं नहा धो ल तबले हम धुन्नी भइया के लेके आवत बानी । बनवारी चल गइलन नहा धो के बाल झार के आइना का सोझा खाड़ भइली त मन कहलस एतना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

उनकरा खातिर काफी बा । ना जानी ऊ का कहिहन । हो सकेला देखते बांहि में
लेस । हम त उनकरा गोड़ पर मूड़ी पटक देब आ कवनो भूल चूक होई त माफी मां
लेब । उनकरा के लेके चलब त गांव में नाम हो जाई । पारबती आपन सेनुर बहोर
आइलीं । पारबती नाम हमार सार्थक हो जाई । दू घंटा बीत गइल पारबती के एक
मिनट एक युग नियर लागे । आखिर नीचे बनवारी आवत लउकल । उनकरा साथे
सुन्नर नवजवान रहे । पारबती समझ गइली कि धुन्नी आवत बाड़न । माथ पर आंच
डाल लिहलीं । बनवारी आ गइल । केवाड़ी धड़कल साथे साथे पारबती के दिल धड़
लागल । धुन्नी उनका सोझा ठाड़ रहलन । ऊ लपक के गोड़ छुवल चहली बांवि
धुन्नी उनकरा के जोर के धक्का देके तड़कलन- एहिजा का अइले रे हरामीजादी !
बन्सगाँव आ बड़हलगंज समझ ले बाड़े । ई बैंकाक ह । एहिजा आके हमरा के सम
में बेइज्जत करल चाहत बाड़ी कि हम घरे ना जाइब । तोरा नियर आवारा मेहरारू
हम खूब समझी ले जो एहिजे केहू के राख के बइठ जो । हम त एहिजा मेहरारू लइ
क लेले बानी । तोर हमरा अब कवनो जरूरत नइखे । हमरा गोर बान्ह दिहला से
ना हमार मेहरारू होखबू । जेके दिल चाही ऊ जीवन साथी होला । अबो भला चा
होख त एहिजे ले देश लौटिजो । नाही त तोर जवन गति होई ऊ दुनिया देखी ।

पारबती के जइसे काठ मार देलस । बुझात रहे उनकर सपना एगो कांच
खिलौना रहल ह जवन केहू का एक मुक्का का प्रहार से चकनाचूर हो गइल । थोरक
देर का बाद ऊ अपना के संयत कइली आ बोललीं रउवा नाराज मत होखीं । हम एहिज
रहे ना अइली ह । हम एह खातिर अइली ह कि अचानक हम मर जाइब त भगवा
जी पूछिहन कि तोहार मरद कइसन रहलन ह त का जवाब देब । रउवा के एक बे
देख लेई त बस एकरा आगे कवनो हमार साथ नइखे ।' पारबती ई कह के कपार प
आचर कके मुंह उघार दिहली आ धुन्नी के भर नजर देखली । फिर कहली रउरा अ
जहां चाहीं जा सकीला । बनवारी बबुआ हमके काल गोरहतपुर भेज द । हमार आइल
सार्थक हो गइल । ऊ एक ओ अलगा हट के बइठ गइली । धुन्नी थोरकी देर खा
रहलन फेर लवटि गइलन । उनका जाते पारबती भोकरि पारि के रोवे लागली । अगिल
दिन ऊ लवटि अइली । तब से ऊ कबो हालचाल ना पूछली ।

भउजी सोचते रहबू कि चलबू' रघुवा फेनु आ के कहलस । पारबती आस्ति
में सवाल लिहले कि 'का करी' ओकरा ओर तकली फेर उहो दुआर पर चल देली
कोठरी में धुन्नी कहरत रहलन । बोरकर यस्मा यह चढ़ रहे । पारबती के आंख भ
आइल । धुन्नी के देह सूख के कांट हो गइल रहे । उनकर चेहरा बड़ा खराब हो गइल
रहे । कुल्हि सुन्दरता ई बेमारी पी गइल रहे । पारबती कुछ देर देखली । धुन्नी सुखाइल
होठन पर जीभ फेरत कहरत रहलन । उनकर दोनो आंख बन्द रहे । पारबती के दिल
करुणा से पिघल गइल । जवना में कुल्हि खिस आ मान बह गइल । ऊ जाके धुन्नी
का गोड़ 'पर मूड़ी पटक देली आ दूनो हाथ से गोड़ पकड़ फफक-फफक के रोवे
लगली । धुन्नी आंख खोललन आ केहू तरे उठ के बइठ गइलन । के ह ? ऊ पूछलन
उनकर आवाजे कांपत रहे । 'राउर चरण के दासी' कहत पारबती उनकरा ओर देखली ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोहरा आंसु से भीज गइल रहे ।

पारबती ! हमें माफ क द । हम तोहके गलत समझली । घर का देवी के बाजार का कठपुतली से प्रेम कइली ओकर नतीजा पावत बानी । एहिजा तोसे दूरी अइली ह । माफी ना देबू त हमरा के मरलो पर चैन ना मिली । धुन्नी के सिर पर हाथ रख देलन । पारबती के ई अंजुरी भर सुख डुबा देलस । पार्वती के बुझाइल उनकर तपस्या आज पूरा हो गइल । थोरकी देर का बाद चल । भउजी ! तोहरा अइला घर अब सब केहू आ रहल बा । मास्टर जी ठीक चले ह एड्स छुअला से आ सटला से ना फइले । खून से सम्पर्क भइला पर ना । ●

-बी-10, पत्रकारपुरम् राप्तीनगर, पोस्ट- अरोग्यमंदिर गोरखपुर

कथा

तहजीब

❑ पी॰ चन्द्रविनोद

तहजीब आ ओहू में लखनऊ के तहजीब के बाते कुछ आउर ह ! हमार ई सुनले कबो के देखल ना रहे । केतना बेर लखनऊ गइली अइलीं बाकिर कबो देखे के मौका ना लगाल रहे ।

अबकी कुछ काम से फेरू लखनऊ जाए के परल । काम ओरिआवत गाड़ी के समय गइल, से टेम्पो धके स्टेशन पहुँचे खातिर गली से निकल के सड़क पर आवे लगीं । बाकिर उहाँ त रस्ते जाम रहे ।

हमरा चिन्ता होखे लागल कि जो ई गाड़ी छूट गइल त दोसरकी गाड़ी से बनारस जाके रातभर स्टेशने पर गुजारे के पड़ी ।

कुछ देर ले जब लोग एको इंच ना सरकल त हम बनारसी अन्दाज में कहत केहू तरी थोरे आगे बढ़लीं । बाकिर सामने त लोगन के भीड़ चुपचाप खड़ा रहे आगे दूगो पुरनका रईस अपना अपना हाली मोहाली का संगे खड़ा-खड़ा एक दोसरा से तहजीब से हाथ बढ़ा के कहत रहे लोग- 'पहले आप-पहले आप' । अइसन देख के त बड़ा नीक लागल आ संतोष भइल कि चलते चलाते कुछुओ त देखे मिल !

खैर, कुछ देर का बाद एगो रईस अदब का साथ झुक के आगे बढ़ले आ तब हम तब जाके भीड़ सँसरल । हम दउरत एगो टेम्पो धके स्टेशन पहुँचलीं । हमार गाड़ी आ गइल तब, जब ओही लखनऊ से खुलेवाली रेल गाड़ी, हमरा प्लेटफारम पर आइल का बादो आपन तहजीब तेयाग के तेजी से सँसर गइल । हम सोचे लगलीं कि ओह दिन के अब का हो गइल !

-न्यू एफ/11, हेदराबाद कॉलोनी, बी.एच.यू. परिसर, वाराणसी-221005

❖

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-

कहानी

कन्यादान

❑ डॉ॰ कुमार राजेन्द्र

गाँव-गँबइ में दनहा गाछी आजुओ मिल जाइ । पंडित जी दनहा गाछी आम खालन । पंडित जी के बालो-बच्चा पुश्त दर पुश्त आम खाई । बाबू साहेब पुरखा दान देले रहे गाछी, काहे कि पंडित जी पुरखा के बाबू के स्वर्ग भेजे के पढ़वले रहस मरनोपरान्त श्राद्धकर्म के दिन । बाबू साहेब अब जमीन्दार ना रह गइ । अब उनकर लड़िका बबुआ जी नइखन मगर दनहा गाछी आजुओ बा जमीन्दार के बाबू साहेबीयत के याद दिलावे ला । दनहा गाछी के सब आम के गाछ बीजू किसिम-किसिम के बीजू आम जेठ के दुपहरिआ में झुलत बा आ पाक-पाक के टपकत बा । केरवा, मिठुआ, लिटिया, मधुआ आ मिसिरिया आम के रंग, खुशबु आ अपने आप में महत्त्वपूर्ण ह । कलमी आम देर से पाकेला आ बीजू आम पहिले मिसिरिया आम बड़ा मीठ होखेला मिसरी जइसन । बाबू साहेब के बेटा, राजू दुपहरिया में चुपके-चुपके अपना के छिपावत दनहा गाछी पहुँचलन इ सोच के कि घड़ी टोला-महल्ला के कोई ना देखी । पंडित जी दनहा गाछी के बीचो बीच मचान बइठल तार के पंखा झूलत रहस, आम के गाछी के रखवाली करत रहस कबहुँ-कबहूँ टपकल आम के बटोर लेत रहस । मचान के नीचे सुथर आ पाकल आम के एगो कुरी बनवले रहस आ रूखी खाएल आम के एगो अलग कुरी । पंडितजी के रूखी के भगावत रहस-धा ! धा!! आ कबो मचान के नीचे आम के कुरी देख रहस निगाह लगा के । दनहा गाछी में राजू के पग रखते पंडित जी कान खड़ा कइ आ गरजलन "कवन ह रे ?" "हम बानी बाबा" राजू कहते-कहते मचान के नजदीक आ गइलन इ सोच के कि बाबा अच्छा आदमी हवन । नेम धरम करेलन । बचवन मानेलन । कबो-कबो परसादिओ देवेलन मकुरदाना के । बाबा के आपन कोई सन नइखे । जरूर एगो आम दिहन मिसिरिया में से । खूब मीठ लागी । सोचिए के के मुँह में पानी भर गइल । तपाक से बाबा राजू से पूछलन "कहाँ अइलह बबुआ तोहर बाबू ठीक-ठाक बाड़न नू ? उनका से भेंट भइला कई माह हो गइल । अबहीं बइसाखा फसल के अगउओं ना पहुँचवलन । बाबू से कह दिह । कहीं भूला गा होखस । उनके ला कह तानी । अगऊ के अनाज गलती से दोसर अनाज में छुआ ज त सब भठभेड़ हो जाई ।" बाबा लगातार उपदेश उरेलत रहस आ राजू उनका टुकुड़-टुकुड़ देखत रहस । बाबा के खाँसी आइल । खाँसी से बाबा के बात के ल टूटल आ राजू जल्दी से अपना आवे के मकसद कह देलन "बाबा, हमरा के ए पाकल आम दी मिसिरिया में सै । रउरा आम के बहुते नाम बा ।" इ बात सुनते बा के सिर पर सौ धइला पानी पर गइल । बाबा अंदर से चलाक आ कंजूस दूनो रहस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवे लगलन-'बबुआ राजू, ई दनहा गाछी के आम खइला से लमहर पाप तोहर पुरखा दान कइले बा तोहरा पर-पुरखा के मरला पर श्राद्धकर्म में । तू आम उहाँ पर-पुरखा के स्वर्ग से निकाल देल जाई । भूलिओ के दनहा गाछी के मँगीह । तोहर बाबू सुनिहन त ठेठावे लगीहन । चुप-चाप उलटे पाँव लौट जा कोई से कहिह मत कि दनहा गाछी गइल रल ह । हम तोहरा बाबू से ना ।" बाबा के बात से राजू के देह में सिहरन होखे लागल । राजू घर लौटलन बाबा ध्यान लेके । मन में ई बात धर क गइल कि दान कइल वस्तु के उपयोग ना करे कइल गाछी में पैर ना रखे के लमहर पाप लागेला ।

राजू समय से पढ़ लिख के सेआन भइलन । दान वृत्ति परेशान करे लागल, त्याग में फरक ह । मूलधन से मिलल ब्याज निष्काम भाव से बाँटल दान ह धन के बाँटल त्याग । राजू के घर में एगो कन्या जनम लेली । बड़ा लाड़-प्यार या के पालन भइल । नाम रखाइल रानी । रानी सेआन भइली । रानी के बिआह खोजाइल स्वस्थ, सुन्दर, पढ़ल-लिखल मैट्रिक पास । राजू आ राजू के मेहरारू समाइल लोग वर के बारे में बात करके । बिआह के दिन उतरल बेसाख सूदी रोज मंगलवार । बात चलल-कन्यादान के करी ! पिता धरम ह-कन्या दान । पून होला कन्यादान से, शास्त्र कहता । राजू के मन में दनहा गाछी के बात खले रहे । सोचे लगलन "बेटी प्यारी, दान करम त ओकरा दुअरी कइसे जाइब, घर के पानी कइसे पिअम, दान कइल बेटी बाप से अलग हो जाई, माई से हो जाई, हमरा समाज से अलग हो जाई, हमरा घर से अलग हो जाई-अगऊ के तरह । हाथ से कन्यादान होखी आ आपन अरमान के विदाई होखी । दनहा के पुरान बात इआद आवे लागल । दान कइल गाछी में पैर रखल पाप ह, दान बेटी के घर कइसे जाएम ?".

रानी के बियाह भइल । बियाह के रात में कन्यादान के रस्म अदायगी भइल । के मंत्रोच्चारण के साथ-साथ अग्नि के साक्षी रख के रानी बेटी दान, सोना दान दान भइल ! राजू फफक-फफक के भरल मन से कन्यादान कइलन । रानी सम्भलली राजू के इ कहके "दुनिया के इहे रित ह । विधना के विधान ह । जनम देनी त दान करही के होंखी । रानी जइहन अपना घरे । उहाँ रानी बनके । हमरा इहाँ त बेटी रहली, दान भइली । बेटी के दोसर विकल्प ना ह । बेटी । अब सबुर धरी । विदाई के इन्तजार करी ।" राजू के सबुर कहाँ ? बचपन गाछी, पंडित जी के उपदेश, बियाह के रस्म अदायगी आ लोकाचार सब आवे लागल । सँस्कार के स्तर पर दान के बात अलग ह आ व्यवहार स्तर पर के बात अलग । लोग दान, त्याग के रूप में लेवेला । कहलो जाला कन्यादान के ई-बाप के कवनो हक ना बने बिआहल बेटी पर । एक तरफ दान देवे वाला कोई इच्छा जतावे, त ओकरा अरमान पर सामाजिक कुरीतियन के चाभुक लागेला ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gov

शास्त्र रास्ता में खड़ा होके, दान के परिणाम के व्याख्या करे लागेला । लोक रीति रख हो जाला बाप-बेटी के बीच में आ बेरहमी से बेटी के सन्तान के श्रेणी से निकाल माँ-बाप के वृत्ति से वंचित करके सास-ससुर पर पटक देवेला । बेटी जिन्दा लाश रूप में ससुराल में जीवन बसर करे लागेली, जइसे कमजोर बाधँल गाय खुटा पर । ससुराल के एगो वस्तु बन के रह जाली । तनी अंदाज करी ओह बाप के, जेकरा सं के नाम पर महज एगो बेटी बा । ओकर का होखी ? एही विचार में उब-डुब होत के झपकी आ गइल । रानी के रोअला के अवाज से झपकी टूटल । रानी के वि भइल । रानी ससुराल गइली आपन घर बसावे । तीन दिन बाद पुछारी के साथ पहुँचलन रानी के ससुरार । लड़का के ससुरार एगो पराव ह आ लड़की के स ओकर आपन बसेरा । ससुराल चाहे जइसन होखे, बेटी के असली घर उहे ह । आ कानून इहे कहत बा । बाबू के दरवाजा पर पहुँचते बेटी फुफकार के रोअे लगल टोला पड़ोस के औरत लोग इकठ्ठा हो गइल । काना फुसी होखे लागल कनिया के अइलन । जरूर बाँकी दहेज लेके आइल होखीहन, ना त कनिया के मान घटे लाग सास अउरो डटीहन । बेचारी अइसही दुबर-पातर बीआ आ ओपर से रोज डाँट मि "बाबू तोहर दहेज कम देलन । बबुआ के ठगलन । बबुआ के हम दोसर बि करम । तोहरा के हमनी ना राखबा ।"

बहुत आरजु विनत के बाद बेटी से भेंट करे के इजाजत मिलल दस मि ला । राजू आँख पोछत बेटी के घर में गइलन । अन्हार कुप घर रहे । दिनओं किरासन तेल के डिबिया जलावल गइल रहे बाबू से भेंट करेला । रानी बाबू के प छानके रोए लगली । रानी के साँस ना धरात रहे रोअला से । बाबू कहलन -"चुप रह चुप !! इहे तोहर घर ह ।" मन में सोचे लगलन बेटी दान हो गइली । ए घर के रा हो गइली । बाबू कहलन "हम तुरत जाएम । मांई ला कवनो समाद कह । उ तो चिन्ता में डुबल रह तारी ।" बेटी दाह से दउरली चुल्हानी बाबू के कुछ पा पिआवेला । सास कड़क के बोलली -"बेटी दान कइले बारन । एह दुअरी अन्न-जल कइसे लीहन ? अनर्थ हो जाई । सभे के पाप लागी । तू त हमरो के नर भेज देबु ।" राजू समधिन के गरजलं सुन के काँप गइलन । पुरान बात याद आ गइल-दनहा गाछी के मिसिरिया आम, सोना दान, गाय दान आ बेटी दान । लागल बे कमजोर गाय ह । जेकरा खुटा बाँध दी ओकरे हो गइल । बेटी बेचवा लोग पइसा के बाधेला आ संस्कारी लोग दहेज के बाँधेला । बेटी के भाग से जवन खुटा मिले-भा प्रबल ह ।

अब लोकाचार आ शास्त्र अंधकार में नइखे । परदा हटल बा । राजू कइसे अपरिचित रहिहन लोकाचार आ शास्त्र से ? राजू हवन पढ़ल लिखल बी. ए. पास उहो आज ना पहिले के बी.ए. । बरिसन के अध्ययन गूढ़ता तक पहुँचवले बा । राज सीमा रेखा से परिचित बाड़न । विवशता के समझल बाड़न कि ई समाज पुरुष प्रधान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहन में सम्पति के अधिकार ले के विवाद ना होखे, पुरुषावादी समाज बेटी के वस्तु बना देलक । मानी जे बेटी में जीवात्मा नइखे । बेटी ना ह, लाता के ह । शास्त्र, मंत्र रच देलक पुरुषवादी समाज के लाएक । बेटी के विवाह में के समय बाप से कहलवा देवेला -"ऊँ दाता वरूणों राजा द्रव्य मादित्य श्रोऽविष्णु रूपेण प्रति ग्रहणात्वं विधिः ।" कन्या के पिता के दाता वरूण कहल श्लोक में । दान लेवे वाला वर के विष्णु कहल बा शास्त्र में, दान स्वरूप महज द्रव्य मानल गइल बा । लोक परम्परा शास्त्र के गवाही रखलक । निर्दोष, आ आर्थिक दृष्टि से कमजोर बालिका समाज में उपभोग के वस्तु बन के रह । द्रोपदी, रूकिमणी, सीता आ दमयंती के घर उजरत देर ना लागल । उनका के गला घोटा गइल । सीता के मान के रक्षा ना हो सकल । द्रोपदी के लाज, विराजमान भीष्म भी ना बचवलन । राधा कहाँ रसली कहाँ बसली ? मीरा विष ता पिअली । इतिहास भरल बा विसंगति के गठरी से । इ सभे जानत बा । सभे सभे के अतीत के पुरान संस्कार ग्रसित कइले बा एह कदर से कि ओकरा त कठिन बा । दुर्भाग्य बा असली नाता दफना के, सटल नाता सार्थक मानल । राजू आँख पोछत बेटी के घर से बाहर निकललन आ सीधे अपना घर के हलन जहाँ रानी के माई इन्तजार रहली बेटी के हाल जानेला । ●

-लंगट सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर-842001

म्मेलन के नया प्रकाशन

ोजपुरी के आदि कवि कबीर

संपादक

प्रो॰ ब्रजकिशोर

डॉ॰ जीतेन्द्र वर्मा

ुरी के आदिकवि कबीरदास पर एगो प्रामाणिक पुस्तक ।
ें प्रसिद्ध आलोचक डॉ॰ मैनेजर पाण्डेय के निबंध संकलित बा ।

मूल्यः 100 रुपया मात्र

सम्मेलन के सदस्य खातिर तीस रुपया मात्र ।
पुस्तक सीमित मात्रा में छप रहल ।
आपन प्रति जल्दी बुक कराई ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-GOI

लघुकथा

ठग

❑ जनार्दन पाण्डेय

कुआर के महीना रहे; करीब आठ बजे दिन के बेरा गांव के धनी आदम दुआर पर एगो साधु अपना चेला के साथे अइले । साधु के भेश भूसा बतावत रहे ऊ बड़का साधु बाड़न । ऊ आके उसका दुआर पर एगो चौकी पर बैठ गइले, व हम आयोध्या के साधु हई । ऊहां एगो यज्ञ होखे वाला बा ओकरे चन्दा लेवे अ बानी । घर के मालिक उनकर काफी आव भगत कइले । जब साधु भोजन करत तबे गांव के नजदीक के गांव से एगो आदमी अइल त ऊ ओ साधु के चिन्ह के के प्रनाम कइले अउर उनकर समाचार पूछे लगले । ई देख के घर के मालिक अ भइले तब ऊ कहे लगलन इहां का हमार सम्बन्धी बानी । ऊ साधु से कहले रउरा गांव के नजदीक वाला गांव में ना आवे के चाही । ई सुनके साधु तुरंते उहां से गइले । तब ऊ आदमी घर के मालिक से कहल कि ई लोग के इहे काम व साधु के वेश बना के लोग के ठगेला एह साधु का बाल-बच्चा, घर-दुआर सब ई लोग ऐही तरह घूम-घूम के लोग के ठग के पइसा कमाला । ●

-बैठनिया, पोस्ट- मठियावृत, जिला-पं. चम्पारण (बि

सम्मेलन के सदस्य बनीं

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन अपना स्थापना काल से आज भोजपुरी के लड़ाई लड़ रहल बा । एकरा अपना प्रयास में काफी हद ले सफलता मिलल बा । सम्मेलन के प्रयास से ही बिहार सरकार भोजपुरी अकादमी के स्थाप कइलस, बिहार आ उत्तरप्रदेश के कई गो विश्वविद्यालयन में भोजपुरी के पढ़ाई हो रह बा, आकाशवाणी आ दूरदर्शन पर भोजपुरी के कार्यक्रम प्रसारित हो रहल बा आ सब बढ़ के भोजपुरी लिखल-बोलल अब हीन नइखे समझल जात ।

बाकिर अबही भोजपुरी के ढेर काम बाकी बा । सबसे जरूरी भोजपुरी अष्टम अनुसूची में शामिल करावल बा । सम्मेलन एह दिशा में सक्रिय बा । ई का आसान नइखे । एह में रउरा सहयोग के जरूरत बा ।

सभे भोजपुरी प्रेमी से निहोरा बा कि रउवा सम्मेलन आ पत्रिका के सदस्य बन जाईं । आ भोजपुरी आन्दोलन के आगे बढ़ावे के मदद करीं ।

निवेदक

डॉ अनिल कुमार 'आंजनेय'
अध्यक्ष

भगवान सिंह 'भास्कर'
महामंत्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निबन्ध

एगो सपना

❑ डॉ॰ आशा रानी लाल

मोरही नउनियाँ त ना बोलावा देलस बाकी उनकर छोटका बेटउआ आइल रहे गइल कि 'हमरा घरे कथा बा । बोलावा ह ।' आजकल नाउन बारिन गाँव में नइखी सन् त शहर के बतिये कुछु अउर बा । पहिलका जमाना में पउनी लोग खाये, आ रहे क ईहे सहारा रहे, बाकी अब कुल रिवाजे बदल गइल बा । के आ के जजमान-सब एके हो गइल बा । जबसे बुलावा आइल तबे से अपना कुल काम धन्धा सम्हरावे में लाग गइलीं । घरवा के काम के साथे साथे देहियो कम ना होला । एह ज़माना में त आग लागल बा कि केहू केहू के पूछत घर में भले बीमार होखो चाहे बूढ़े होखो, तब्बो ऊहे अपन घर सम्हारी दूसर ही दू दिन पहिले बहरा से अइला के चलते घर के कुल काम समिटाइल ना दस बजे ले सब हो गइल । खयका पानी टेबुल पर ध के, केबाड़ी ओठंगा हरी एगो ताला लगा के, हाली हाली मिनुआ घरे चहुँपलीं त का देखतानी कि ले पंडी जी नइखे आइल, आ पंडीजी बिना कथा के कही ? ओइजा कुल लोग बिटुरा गइल रहे आ अपने अपने कथा शुरू कइले रहे । करीब करीब के सभे मेहरारू आइये गइल रहे लोग । एक देने तिउराइन केसरियाइन, पाइन, रघू के माई, पटेरिनी लोग आ बदरियाइन आ सभे जानी बइठल रही त दू चार गो लइकी लोग आ बचा बुची लोग बइठल रहे । पहुँचते लोग पूछल एतना दिन से कहवाँ चल गइल रहली ह ? बड़ा सुन लागत रहल ह । बताईं चाल बा रउआ लइका लोगिन के ? बड़कू किहाँ गइल रहीं कि छोटकू एजी, उहाँ रउआ कइसे नीक लागेला जब मरद मेंहरारू दूनो नोंकरिये पर रहेला लइका लोग स्कूल रहेलन त रउआ का अकेले करीला ? ना रहि गइल त ठीके रउआ लोगिन कहतानी- एगो दूबरिस के बाबू बाड़न त ऊहो स्कूल आय ? इ का कहलीं ए दीदीजी ? का- कवनो हम झूठ कहतानी ? उनका नाँव ह प्लेहाउस ।' का ? प्लेग हाउस ? ना हो 'प्लेहाउस' जेमे लइकन के जाला । त का ? उहाँ बचवा रूक जालन स ? एक जनी कहली- जब सभका जायेके बा त काहें न रूकिहें सऽ ? दुसरकी जानी बोलली अब आज के हतारी होले । तिसरकी कहली हँऽ हो लायक बनावे खातिर त इ करही के जगत नइखी कम्पटीसन के जमाना न बा, साथे-साथे कम्पूटरों चलावत जाला । जानी से ना रहि गइल त चिहा के कहली- आ छोड़ीं अइसन् पढ़ाई से करेजा टूट जाई । ऊ कुल का, स्कूले में खेलिहन स ? हमनी के घरे में न स ? बड़ जगहा क बड़ बात होला । अपन बात बताईं ए दीदी कइसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gov.

का कहीं ईहे बतावतानी कि आजले जवन ना भइल रहे उहो हो गइल का जी, सभे लोग चिहाइल, त कहलीं कि जानतानी सभे- हम हवाई जहाज पर ना चढ़ल रहीं, तवन अबकी बेरी हमार बाबू हमके लेके हवाई जहाज से द्वारिका के दर्शन करवलन ह ।, अरे बाप ! एतना धीरे-धीरे ई बात रउवा खोलतानी- बिना मीठ करवले ? ना भाई हईं परसाद त लेइये आइल बानी, सभे लोग बाटीं आ मुँह करीं । अबहीं त जबले हम हवाई जहाज के कुल बात बता ना देब तबले बुझाता ओही में डूबत उतरात बानी । कुल याद कइले बानी कि बतावे में कुछ भुला त जाइब । लीं अब त पंडीजी आइये गइलीं त कथा सुन लीहल जाव ।

ना जी कथा चले दीं । रउआ अपने जहाजिये क कथवा सभे के बताई

जब हम सबकरा मुँह ओरी तकलीं त बुझाइल कि ओह में केहू केहू मुँह बिचकावता, त केहू केहू सुने खातिर गौर से हमार मुँह ताकता, आ केहू ईहो पूछ कि के के गइल रहे जी ?

देखीं लोग, हमनी के चार जना रहीं जा । दूगो हमनी के आ दूगो पतोहू । ओही मे एगो ढुनुन-मुनुन दू बरसि के हमर पोतो रहन । हाँ त सबेरही छः बम्बई के सान्ताक्रुज हवाई अड्डा पर हमनी के पहुँचली जा । एक-डेढ़ घन्टे पहिले उहाँ ई बतावे के परेला कि जेकरा जेकरा जाये के बा, उ सभे लोग आ गइल वा ना ? हम त मन में ढेरे बात चोरेवले रही जवन बाहर आवे खातिर फुदुकत रहे, पूछे के मन करत रहे, बाकी बढ़िया से सज धज के खाली ठाढ़ रहीं । अपन आँखि घुमा घुमा के चारो ओरी बउक नाहीं ताकीं आ मने मने कुल लिखलका पढ़-पढ़ कुछ कुछ जान लेत रहीं । केहू से एह से ना पूछीं कि लोग हमके गँवार आ बुड़वा बूझी । जेने जेने बेटा पतोह लोग चले, ओने ओने चलीं, ऊ लोग एक डेग आगे बढ़ा त हम दू डेग एह से बढ़ा दीं कि कहीं पीछे छूट ना जाईं त केकरा से बोलब, पूछब ? अंग्रेजी बोले त आवे ना, आ हवाई जहाज से चलेवाला हिन्दी में बोले ना उहाँ सभे लाइने में चलेला, कहीं केहू भेड़िया धसान नीयर धउरेला ना । पुलिसवाले लोग सभकर देह छूछू के चेक करत रहे । सब के अपना हाथे में टिकट लेके आ देह के चले क पड़े । उहाँ बिना टिकट के केहू के चोरी क के जाये के गुजारा नाहिये रा इहाँ तक कि हमार दू बरिस के लइकवो के हाथ में टिकट रहे ! कुल सामान अलग से मशीन पर रख के भेजा गइल । बाकी हमनी के चलके हवाई जहाज ले पहुँचलीं फिर एक-एक क के सभे सीढ़ी चढ़े लागल । ओह जहाज के दुआरी पर एक जा बनठन के ठाढ़ रही, आ सभे के हलो, हाय कहँस, बाकी हमरा बुझाइल कि ऊ हमर देहाती बुझली का? कि हँस के नमस्कार कहली, तबो हम अपन मुड़िये जवाब में हिल दिहलीं । जइसे बुझाइल कि केतना दिन क चिन्हार बाड़ी कि देखते मुसकियातारी, खै हमरा सोचे क मौका नां रहें । हम अपन टिकट उनकरा सोझा क के भितरी घुस गइलीं आ हमार पतोह हमके जहाँ बइठे के कहली बइठ गइलीं । भितरा गइला पर ना बुझाइल कि हवाई जहाज में बइठल बानी, काहे कि बड़ा नीक आरामदेह कुर्सी बइठे के मिलल

RajGuru Math,.Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहू अपन-अपन जगहा पर बइठ गइल, त हमार पतोह हमरा के बेल्ट लगा
ओह कुर्सिया में लागल रहे । जइसे जइसे सब लोग ऊहाँ करत रहे, ऊहे
के हमहूँ करे लगलीं । लागल कि हम केतना पुरान जानकार यात्री होखीं ।
में जहाज चलल त लगलीं जँगला से झाँके । जहाज के भितरी चारो ओरी बड़ा
अच्छा लागल । थोड़ही देर में ऊहे सुन्दरी (गेट प वाली) लेमन चूस, टॉफी
सबके सोभ्फा घुमावे लगली । देखलीं कि सभे उठावता त हमहूँ ले लिहलीं ।
ताक के जान गइलीं कि एह रूई के कान में ठूसे के बा आ लेमनचूस मुँहे
के बा । एक्के बेर सोंसों क के जहाज अइसन पेंग मरलस कि हमनी के
सैर करे लगलीं जा । अब ऊपर से का लउकल ऊहे बात बतावतानी ।

अबे ईहे कहत रहीं कि एह घरी न हमनी के जमीन पर रहीं जा न आसमान
तिसरका शंख बाज गइल आ सभे के साथे हमहूँ हाथ जोड़ के मूड़ी निहुरा
। एही घड़ी याद आइल कि ओह हवा में त एह सत्यनारायणने बाबा क सहारा
कान में रूई ठुसले बइठल रहीं, आ जँगला से नीचे क ओरी टकटकी लगवले
एही बीचे कुल नीक नीक नाश्ता डब्बा में बन्द क के ऊहे पकड़ावत गइली ।
डब्बा में केक, बिस्कुट, उपमा, पाव रोटी, चटनी, जैम, जेली आ साथे-साथे
हाथ मुँह पोंछे के अउरी चम्मच आ काटे ना दाँतो खोदे वाला रहे । एक ओरी
नाश्ता के पैकेट लउके त दुसरा ओरी झाँके में कुछू छूट ना जाय एकर सरघा
रहे । एह दूनो में हम से कुछू छूटल ना । छक के खाइलो गइल आ पानी के
साथ फ्रूटी आ मीठ मीठ दहियो खाइल गइल । खातो रहीं आ नीचे के रूई के
जहा अइसन बादरो निहारत रहीं, जवन जहाज में से अइसे लउके जइसे धुनिया
रूई जगहा जगहा छितरा के थोक में धइल होखे । जहजिया बादर के ऊपर
जब समुन्दर लउक लागे त निचवो नीला रंग के पानी आ ऊपरो नीला रंग के
रहे । थोरही देरी ले ई कुल लउकल, आगे जाके बुझाय कि छोटे-छोटे ईंटा
घर धइल बा, बाकी ऊ कुल ईंट पाथर ना रहे, ऊपर से शहरिया के बिल्डिंग आ
घर रहे, जवन ईंट आ पाथर नीयर छोट-छोट लउकत रहे । हमनी के जाम
के रहे त, ऊ त जल्दिये आ गइल बाकी, ऊपरा से अगर सड़क पर चलत
कार के लाइन लउके त बुझाय कि ऊ लइकन के खेलवना ह, जवन बैटरी
। ईहे कुल निहारते निहारते डेढ़ घंटा कब बीत गइल ना बुझाइल, तबले
तनी टेढ़ होखे लागल त सभे जानल कि अब उतड़ता । कान त एक दम्मे सुन्न
रहे, बाकी हवाई जहाज में चढ़के दुइये घंटा में जामनगर पहुँचला के खुशी कान
भइल भुला दिहलस कि, सतनारायण बाबा के सातवाँ शंख बाज गइल, आ
किरपा से हमरा बुझा गइल कि हमार कान एक दम्मे ठीक बा आ सुनाता ।

जामनगर चहुँप क सीधे कार से गेस्ट हाऊस में उतरल गइल, जहाँ हमरा पता
कि दुपहरिया में द्वारकाधीश जी दू घंटा आराम करीला आ उनकर घर के किवाड़
खुलेला । हमनी के इहाँ से दू बजे चलल जाई त चार बजे द्वारका भगवान जी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

घरे चहुँप जाइल जाई । ओह घड़ी भगवान जी जागल रहब । अइसने भइवो कइल उहाँ लोग बतावल कि जवना द्वारका के कृष्णा भगवान जी बनवले रहीं ऊ पूरा सोन के रहे आ समुन्दर में द्वीप पर रहे । बाकी कुछ समय बितला पर ऊ ओही समुन्दर डूब गइल । आजो ओही द्वीप पर ऊहे उनकर घर बा, जवन सोना के त ना, बाकी वह पुरान बा । ओही घर में, कृष्ण, राधा, बलराम, रूक्मिणी, प्रद्युम्न, नन्द-यशोदा, देवक बसुदेव सभे आजो रहेला । हमनी के उहाँ समुन्दर में बोट पर चढ़ि के उनका घरे गइल जा जहाँ सही में अपना घरे में सभे भगवान जी लोग खाड़ रहें लोग । अइसन बुझाइल कि हमनी के ऊ लोग बोलवले, एही से हमनिए ओरी घूरघूर के लोग ताकतो बा "बड़ा नीक लागल"- ई कइसे कहाव, काहे कि सभे भगवान घरे गइल रहे त मन उछाह त नहिये बता सकी, बाकी भगवानो जी के हमनी के देख के नीक लागल- कहल जा सकेला । एह से कि भगवान जी लोग हसत रहे । ओह जगह के 'बेट द्वारक कहल जात रहे । बुझाता कि ई ऊहे द्वारका ह जवन वेद में बा आ आज 'बेट द्वारक बन गइल बा ।

पहिले जब सुदामाजी उहाँ चहुँपल रहन, त भगवान जी उनकर हाथ पक के ऊहाँ सिंघासन पर बइठवलन आ पानी से ना आँख से आँसू के धार बहा के उनक गोड़ धोवे लगलन । बाकी हमनी के त खुशी एही में रहे कि भगवान घरे के धूर अप गोड़े में लपेट के घरे ले ले चलल जाव । गोड़ धोवे से कुल खतमे ना हो जाइत । ऊह जवन परसादी मिलल ओके द्वारकाधीस जी के दीहल मिठाई बूझि के हमनी के घरे त अइलीं जा । रास्ता में ईहे सोच चलत रहे कि सुदामा जी एह समुन्दर के कइसे पा कइले होइहन ? त ना बुझाइल आ लोग बतावल कि द्वारकाधीशजी के महल त समुन्दर के एही पार बा । एह घड़ी लाल बुझक्कड़ नीयर सोचे के पड़ल कि हो न हो सुदामा जी ओही महलवाले दरबार में चहुँपल रहल होइहन, तबे न दरबार के बहरा द्वारपाल खड़ा रहल होई आ उनके रोकले होई । फिर सोचे के पड़ल कि भगवान जी ओह 'बेट द्वारका' से रोज अपना दरबार ले कइसे आवत जात रहन ? तबो लोगवे बतवलस कि ऊ गरूड़जी के ऊपर बइठ के जात आवत रहन, आ गरूड़जी उड़ के दरबार ले पहुँचावत रहन । उहाँ के लोग ईहो बतावल कि ई दरबारे भगवानजी के पुरान महल ह 'बेट द्वारका' त ओकरा बाद भगवान बनवलन । एतना सुनते फिर लाल बुझक्कड़ दिमाग में घुसलन आ बुझाइल कि हो न हो ऊहे गरूड़जी त ना आज हवाई जहाज बन गइल बाड़न ? तब्बे न हमनियो के ओहपर बइठ के दुइये घंटा में बम्बई से जामनगर आ गइलीं ह जा ।

अब छोड़ीं बात के, हमरा कहे के ई बा, कि भगवानो जी लोग अपन जगहिया से भागते फिरेला का ? अब बताईं एह समुन्दर में जाके रहला के कवन काम रहे ? अबे एतना बतियवते रहीं जा कि सतनारायण बाबा क आरती होखे लागल, त हमरा बुझाइल कि द्वारका जी के दरबार वाला मन्दिर में सात बजे साँझी के हमनी के सब लोग एके साथे हाथ जोड़ के ऊहें ठाढ़ बानी जा, जहाँ भगवान जी के सिंगार आ आरती होत रहे । ओह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कतना अच्छा लागल ऊ ना कहल जा सकेला, न समझावल बुझावल जा सकेला । सजधज के भगवान जी अपना सिंघासन पर विराजमान रहँस, उनका साँवर देंह पीताम्बर खूबे न शोभत रहे । ओह पीताम्बरो में जगह जगह हीरा-मोती जड़ल एह आरती के देखे में मगन रहे । आरती खतम होते एगो पंडीजी जे हमनी के रहलीं, ऊहाँ के बहरा आके बतवलीं कि एह मंदिर के ऊपर जे चार गो मंजिल जाइल जा सकेला । ई चारो मंजिल चारो धाम ह । ओकरा ऊपर सात गो गुम्बद कहू ना जा सके । ऊहाँ सप्तऋषि लोग के बास बा । आ ओहू के ऊपर भगवान कड़ा पताका फहरा रहल बा, जवन सात मीटर लमहर बा ।

एगो अउरी बड़ी अजूबा बात उहाँ देखे के मिलल, जवन कहीं हइये नइखे ऊ दरबार के पीछे ओरी, राधा-कृष्ण के मूर्ति के रूप । आजले सभे ईहे देखले बा के हरदी नाहीं भकभक पीयर गोराई बा, आ कृष्ण जी साँवर बानी । बाकी ऊहाँ उल्टे रहे । राधा रही करिया आ कृष्ण रहन पीयर गोर । एहूजा लाल बुझक्कड़ मग आ मन में घुसलन त याद पड़ल कि विद्यापतिजी एही से न लिखले बानी- माधव रटइत राधा भेल मधाई ।" त जब राधा एतना ओह साँवर रंग में डुबकी कि खुदे साँवर हो गइली, त का सूर कवनो झूठ कहलन कि, - "ऊधव मोहिं बात नाहीं ।" ऊहो एतना ओह पीयर राधा के प्रेम में डुबलन कि पीयर गोर हो एह रहस्य के साक्षाते एह द्वारकाजी के महल में देखे के मिलल । साँचो एह रूप त कवनो भक्त का होला हर प्रेमी मजनुवो के आँख पलक ना गिरी आ ऊ तकते । प्रेम के ई गूढ़ रहस्य के हुवे केहुवे बूझेला, सब केहू ना । उहाँ इहो देखल गइल आस पास के रहेवाला लोग अपन पहिरावा ओह कृष्ण के पीयर झिंगुलिया नत रहे । ईहे कुल प्रेम आ ओह दरबार के रूप एह आँखिया में समा गइल, जवन खावल त ना जा सके, सुनावलो ना जा सकेला । उहाँ जवन परसादी हमनी के हे, उहो हम सबका खातिर लाइल बानी ।

लीं ! परसाद के नाँव अवंते, देखीं न एहूजा परसाद मिले लागल, चलीं परसादी चलल जाव, बाकी एह भगवानजी के महिमा केतना अपरम्पार बा ? ईहाँ के अपन सहीं दिहलीं, जइसे हमरा एगो सपना लउकत होखे । केहुवे से कहब कि एके म्बई से जामनगर जाके, द्वारका जी दर्शन क के फेरू दुसरा दिने सबेरे बम्बई आ लोग के त ना बाकी हम के जरूरे लागल कि हम एगो सपना राते देखले रहीं । चाहे द्वारकाजी के महिमा होखे, चाहे हवाई जहाज के होखे- बाकी एगो सपना हिया भगवान जी हमरा के अपना घरे बोलावे के सोचलीं, तहिया हमरा बाबू से हमरा के उहाँ के हवाई जहाज से बोलवा लिहलीं । ईहे उहाँ के महिमा रहे । हमनी वान जी के गोड़ लगबे कइलीं जा, एगो हमार दू बरिस के पोता त खूबे न ओह अपन मूड़ी पटकलन । जइसे बहुत दिन के जान पहिचान द्वारकाधीश जी से खे । एह दुनिया में अउरी हइये का बा ? ई कुल देख के त हमार हियरा जुड़ा एगो अनबूझ बचवा के ऊहाँ से केतना लगाव बा- ईहे हमार सपनो रहे-भगवाने कइलीं । ●

-'शिवम्', प्रोफसर्स कॉलोनी, आनन्द नगर, सीवान-841226

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक-समीक्षा

भोजपुरी आलोचना में सार्थक प्रयास

❑ राकेश प्रवी

भोजपुरी साहित्य संस्थान का ओर से प्रकाशित 'पराग के रचना संसार' भोजपु के ख्यातनाम साहित्यकार सूर्यदेव पाठक पराग के कृतित्व के अपना-अपना नजर से आं के एगों सराहनीय प्रयास बा । पराग भोजपुरी के अइसन विद्वान साहित्य साधक बानी गुणवत्ता आ मात्रा दूनो दृष्टि से काफी लिखले बा । इहाँ के लेखन के आयाम बहुआयामी बा । एह पुस्तक के संपादक भोजपुरी के जानल-मानल साहित्यकार आ वि प्रो. ब्रजकिशोर आउर युवा साहित्यकार जीतेन्द्र वर्मा बानी । अपना सम्पादकीय में लिखले बानी कि एह पुस्तक में शामिल लेखन में पराग के केवल कृतित्व के आधार बनावल गइल बा आ सुनियोजित ढंग से व्यक्तित्व के नजरअंदाज कइल गइल ब ऊ भोजपुरी में प्रकाशित अइसन प्रयास के नया बतवले बाड़न । सहज तौर पर अइसन होला । अगर संपादक के अइसन दावा बा त उनका एकर निर्णय पाठक पर छोड़े के चा रहे । पाठक ई तय करतन कि पुस्तक में शामिल आलेखन में खाली रचनाकार के यशो कइल गइल बा कि उनकर रचनन के आधार बना के उनका रचनाकर्म के पोस्टमार्टम गइल गइल बा ।

पुस्तक के पहिलके रचना रचनाकार प्रो. ब्रजकिशोर बानी । इहां का अपना रच में पराग के कहानियन पर रोशनी डाले के सफल कोशिश कइले बानी । एह आलेख उनकी खुबी के साथ-साथ कमियों पर भी उंगली रखल गइल बा । उनका कहानियन बारे में लिखले बानी कि कुल्ही कहानियन के आकार काफी छोट बा । कवनो आठ-द पेज के विस्तार वाली कहानी नइखे । दू-तीन पेज में कहानी खतम । एकर कारण घटनन के चुनाव । अनेक घटनन के मिलाके कथानक के क्रमिक विकास होला तब कहा फइलेले आ ओह में विश्लेषणात्मक उपचार के गुंजाइश ज्यादा होला । अइसन विस्तार कथानक का उपचार से पराग बचे के कोशिश कइले बाड़न । ऊ कवनो एगो मुख्य घट के चुनके ओकरे बल पर कहानी के ताना-बाना बुन देले बाड़न.....एह से घाटा ई भइल कि चरित्रन के जटिलता अत्यन्त सरलीकृत हो गइल बा आ ओकर एगो मुकम्मल चि सोझा नइखे आवत । विश्लेषणात्मक उपचार का छूट गइला से कथ्य के बेबाक प्रगटीकर हो जात बा ।

एही लेखा नागेन्द्र प्रसाद सिंह के आलेख 'प्रतिबद्धता आ पराग जी के कहान में भी पराग के कहानियन के दशा-दिशा दरसावे के सफल कोशिश कइल गइल बा लेखक प्रतिबद्धता के विश्लेषण करत कहत बानी कि प्रतिबद्धता पर पारिस्थिक के प्रभाव पड़ेला । ठण्ढा आ गर्म देश, गांव आ नगर, सागर भा नदी का तीर आ पहाड़ी रहेवालन के प्रतिबद्धता में स्पष्ट अन्तर मिली । ई अन्तर आदमी के उच्चारण, पसंदगी-नापसंद भा दोसरो-दोसरो विषयन के आकलन कइला पर स्पष्ट झलक जाई । सामाजिक संरच भी आदमी के प्रतिबद्धता के बहुत बड़ कारण बन के आवेला । एह में परिवा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ोस, विद्यालय, खेल के मैदान, साथी-संघाती, जाति-धर्म, संघ-संस्था, राजनैतिक धार्मिक संस्थान, मंदिर-मस्जिद-गिरिजा आदि के बड़हन हाथ होला। समाज विभिन्न में बंटल बा। हर वर्ग के आपन खास विचारधारा, दृष्टिकोण, समस्या आ मूल्य- होला। ओकरा संघर्ष के एगो लमहर परंपरा एकरा के ओह मोकाम तक पहुंचाते। समाज के हर वर्ग के हित दोसरा से भिन्न होला। सामाजिक उत्पादन का प्रक्रिया वर्ग के भूमिका एगो युग विशेष में निश्चित रहेला। एह आधार पर सिंह बेबाकी बात के कहत बानी कि पराग के कहानियन में आम आदमी बाड़न, चरित्र-निर्माण पारस्परिक संबंधन आ संघर्षन के जवन विकास एह कहानियन में मिलता, ऊ नीकार के प्रतिबद्धता के द्योतक बा। सभ कहानियन के संवाद आ पत्राचार स्वाभाविक बा। तेवर लहजा आ शब्द योजना से भोजपुरी समाज के अनायास परिचय होत बा, गांव में होखी। अन्त में निष्कर्षतः ऊहां का कहले बानी कि सब मिला के सूर्यदेव पराग प्रगतिशील चेतना के प्रतिबद्ध कथाकार लागत बाड़न।

भोजपुरी के स्थापित कहानीकार आ लघुकथाकार कृष्णानंद 'कृष्ण' के प्रयास हद तक सफल बा। कहानी में जीवतंता के सूत्र टटोले में उनका कामयाबी मिलल कृष्णानंद कृष्ण उनकरा कहानियन के बारे में कहतानी कि सूर्यदेव पाठक पराग के नियन के बीच से गुजरला प अनुभव होला कि आदमी अपना अँतरा-पँतरा में पसरल, इल जीवन के छोट-छोट विसंगतियन के बीच घुम रहल बा। जवना में ओकरा गी के हर्ष-विषाद, ऊँच-नीच, व्यवस्था-कुव्यवस्था, संस्कृति-अपसंस्कृति के परखल छनन के तस्वीर एगो कुशल कैमरा मैन अइसन उरेहे के सफल कोशिश गइल बा। मध्यवर्गीय परिवार से आवेवाला पराग के कहानियन के मूल चेतना के मध्यवर्गीय समाज बा। जहवां आर्थिक दबाव में जीयत-मरत लोग बा, ओकर पंच बा, धार्मिक अंधविश्वास बा, ओकर आपन रूढ़ि बा। ई शायद लेखक के बा। एह संकलन के कहानियन के भीतरे-भीतरे एगो अइसन तार जुड़ल बा जवन यन के पात्रन के मनोबल टूटे नइखे देत। कृष्ण बड़ा सटिक कहले बानी कि एह न के कहानियन में जिनगी के कई गो धूप-छाँही के रंग उभर के सामने आइल बा।

केदारनाथ पाण्डेय 'अछूत' उपन्यास के प्रगतिशील विचार से मूल्यांकन कइले। उहां के एकरा के आदर्शवादी उपन्यास बतवले बानी।

एकरा अलावे एह में भगवती प्रसाद द्विवेदी, जीतेन्द्र वर्मा, सतीशराज पुष्करणा, स्वर्णकिरण, सुनील कुमार पाठक, राकेश रंजन रणधीर, जगन्नाथ, रसिक बिहारी निर्भीक, गुलाबचन्द प्रसाद अभय, बच्चन पाठक सलिल, किशोरी शरण शर्मा, उमा प्रियम्वदा, बरमेश्वर सिंह, मनोज भावुक, पाण्डेय कपिल, अक्षयवर दीक्षित पराग के के विभिन्न पक्ष पर विचार डलले बा।

उमेद बा कि एह पुस्तक के प्रकाशन से भोजपुरी आलोचना के नया दिशा।

पुस्तक- पराग के रचना संसार, (आलोचना) संपादकः प्रो. ब्रजकिशोर, वर्मा, प्रकाशकः भोजपुरी साहित्य संस्थान, पटना, मूल्यः 100=00 पृष्ठ- 104, संस्करणः पहिला, 1999

-दैनिक हिन्दुस्तान, पटना-1

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक-समीक्षा

नया पाठक बनावे में मददगार

❑ डॉ॰ विद्याभूषण श्रीवास्तव

भोजपुरी सभे बोलेला बाकिर लिखे-पढ़े में आदत ना भइला का वजह से दिकत होला। लिखे-पढ़े के आदत खड़ी बोलिए में बावे। अइसन में जरूरी बा कि भोजपुरी में अइसन पुस्तक लिखल जाव जवना के लोग उत्सुकता बस पढ़ो। अइस भोजपुरी पढ़े के लकंम लाग जाई। हिन्दी में ई काम देवकीनन्द खत्री के 'चन्द्रकांता आ 'चन्द्रकांता संतति' कइले रहे। एकरा के पढ़े खातिर बहुते लोग हिन्दी सीखल भोजपुरी पढ़े के आदत डाले खातिर अइसन साहित्य-सृजन के जरूरत बा। कुमार रंजन के किताब 'बतरस बीरबल के' अइसन जरूरत के पूरा करता। एह में अकबर बीरबल के प्रचलित कथा रोचक अंदाज में कहल गइल बा।

कुमार रंजन पेशा से इंजीनियर बानी। उहाँ के अकबर-बीरबल के बत्तीस ग कथा के एह पुस्तक में समेटले बानी। बीरबल के चतुराई जग प्रसिद्ध बा। एह कथन में मनोरंजन के संगे-संगे अच्छा काम करे खातिर प्रेरणा आ प्रतिउत्पन्नमतित्व के जानकारी मिलता।

अइसन कथा के केहू एक आदमी लेखक ना होला। ई जन मानस में उपजेला आ देश, काल के हिसाब से बदलत चल जाला। मैथिली में अइसन पात्र गोनू झा बाड़े त दक्षिण में तेनाली राम। भोजपुरी में अइसन केहू पात्र ना रहल हवे।

अइसन कथा के महत्त्व आ जरूरत बूझ के डॉ॰ विवेकी राय जी जइसन प्रसिद्ध साहित्यकार अइसन कथा के सृजन कइले बानी जवन 'कथुली गाँव' के नाम से छपल बा। भोजपुरी के प्रचार खातिर अइसन किताबन के बड़ी जरूरत बा। ई किताब लड़िका, बूढ़, सेयान सबका खातिर उपयोगी बावे।

पुस्तक के छपाई आ गेटअप आकर्षक बन पड़ल बा। बड़-बड़ अक्षर में छपाई भइला से पढ़े में आसानी होता।

पुस्तक- **बतरस बीरबल के** लेखक- **कुमार रंजन**

प्रकाशक- भोजपुरी साहित्य संस्थान, महेन्द्रू, पटना-6

मूल्य- चालीस रुपया मात्र संस्करण-पहिला, नवम्बर, 2002 पृष्ठ संख्या-80

-पत्रकार, माधो बिहारी लेन (स्व॰ विपिन बाबू का हाता),
सलेमपुर, छपरा-841301

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कबीर : किंवदन्ती आ लोकगीत

❑ भगवान सिंह 'भास्कर'

कवनो महापुरूष के सन्दर्भ में समाज में अनेक प्रकार के अवधारणा रहेलीसन । एहसे महापुरुष के अनुसार इतिहास में, कवि के अनुसार कविता में, निबंधकार के अनुसार निबंध में, के अनुसार उपन्यास में आदि अनेक रूपन में महापुरूष के व्यक्तित्व के दर्शन होत रहेला । भोजपुरी के आदिकवि कबीरदास असाधारण प्रतिभा के धनी रहलीं । जे आदमी कवो स्याही कागज तक ना छुवल, हाथ में कलम ना पकड़ल-

"मसिकागद छुयो नहि
कलम गह्यो नहिं हाथे ।"

ओह आदमी के कवित्व के कमाल देख के सभे दंग रह जाला । भक्त, कवि, ज्ञानी, समाजसुधारक आदि न रूपन में कबीर के सानी केहू नइखे ।

कबीर के जन्म से लेके मृत्यु तक किंवदन्ती से भरल बा । उनका मृत्यु के बारे में प्रचलित ध के विपरीत एगो किंवदन्ती के अनुसार अपना मृत्यु से कुछ दिन पहिले हाथ गोड़ तुरिके ऊ काशी में गइले । काशी बाबा विश्वनाथ के नगरी ह । कहल बा कि एइजा मरे वाला के भगवान विश्वनाथ धाम लेके चल जाइले । एही से कबीरदास काशी में जमि गइले । इहे ना जब ऊ निश्चिन्त हो गइले अब हम काशीए में मरब त कह दीहले-

"जो कबीर काशी में मरिहे
रामहि कहा निहोरा ?"

जब रामजी के कबीरदास के एह दर्प भरल बोली के जानकारी भइल त उनकर उपाय कर । किंवदन्ती के अनुसार-रामजी एगो घोड़ा लेके काशी में कबीरदास के सामने पहुंच गइलीं आ घोड़ा पोंछ में लगाम लगावे लगलीं । बार -बार पोंछ में लगाम लगावत देखिके कबीरदास डँटले आ कहले ओने पोंछ में लगाम लागेला कि मुँह में । रामजी कहनीं के तनी आके बता दीं । एह पर कबीरदास असमर्थता व्यक्त करत कहले कि हम चले फिरे में लाचार बानीं । एह पर रामजी कहनी कि हम के उठाके घोड़ा पर बइठा देत बानीं, तब रउरा बताईं । एह पर कबीरदास राजी हो गइले । जइसही कबीरदास के उठा के घोड़ा के पीठ पर बइठवलीं, घोड़ा कबीरदास के लेके वायुवेग से भागल आ के मगहर में पटक दीहलस । एगो भोजपुरी लोकगीत में एकर नीमन वर्णन बा-

जागल रहिह हो भाई !
बिलरिया झपटी ।
पहिली बिलरिया झपटि काशी में
काशी से मगहर में पटकी ॥

मगहर में पटका गइला के बाद कबीरदास के आँख खुलल । अब उनका बुझा गइल कि काशी वल उनका वश के बात नइखे । अब उनका मगहरे में मरे के पड़ी । ऊ मने-मने संतोष कर लीहले । दास कहे लगले कि कतहीं मरल जाव, मन के पवित्रता मुख्य चीज बा । यदि मन पवित्र बा, ईश्वर ति आस्था, केहू के जीना दुखावल जाव ते कतहीं मुवल जाव- कवनो बात नइखे-

"क्या मगहर, क्या काशी ?

फेर जब समय आइल, कबीरदास मगहरे में मुवलीं । उनका मृत्यु के बाद हिन्दू-मुस्लिम में द हो गइले । हिन्दूलो अपना रीति-रिवाज से उनकर दाह-संस्कार करे के चाहे, त मुसलमान हो अपना -रिवाज से दफनावे के चाहे । सबेरे जब लाश पर से कफन हटावल गइल त लाश गायब रहे आ ओह पर फूल रखल रहे । हिन्दू-मुस्लिम फूल बाँटि के अपना-अपना रीति-रिवाज से संस्कार कइल । एगो पुरी लोकगीत में एह घटना के वर्णन ए प्रकार से बा-

लाशवा उहंवा से गायब हो गइल
फूलवा राखल उहां रहे हो रामा ।
हिन्दू-मुस्लिम मिल-जुल बंटले
आपन-आपन रीति कइले हो राम ॥

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चिट्ठी-पत्री

- **जनार्दन पाण्डेय विप्र, (पं. चम्पारण)** राउर भेजल भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के अंक मिलल । कोटि-कोटि धन्यवाद बा । राउर सम्पादकीय बेजोड़ बा । उचित समय पर उचि बात कहले बानी । हमनी के श्री रघुनाथ झा जी के बधाई देवे के चाही जे बेतिया सांस के रूप में जोरदार बात उठावेले बा । कहानी 'केकरा खातिर छठ' अच्छा लागल आर काव्य रचना पढ़े लायक बा । आलेख सब स्तरीय बाड़ीसन आउर समीक्षा बहुत वढ़ि बन पड़ल बा । इ सराहे योग्य बाटे ।

- **गिरिजाशंकर राय 'गिरजेश', (गोरखपुर)** भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के अंक ए निरन्तर मिलत बा । जवन परिश्रम कके आप लोग निकालत बानी ओकरा खातिर बधाई पत्रिका खातिर रचना के मांग आइल रहे । एह में तनी देर हो गइल एकरा खातिर मा चाहत बानी । ज़वन कहानी कहीं छप जाले ओके ना भेजी । नया कहानी जब तैयार हो उहे भेजिला । एह बेर कुछ अइसन पारिवारिक परिस्थिति रहल ह कि संजोग ना बइ रहल हवे । काल्हु एह कहानी के लिखली । मूल रूप से आपके पास भेव देत बानी टा करावे में फेनु देरी होइत । हमार राइटिंग बढ़िया ना ह एह से आप के पढ़े में कष्ट होर ओहू खातिर माफी ।

ठमिर अब अंतिम चरण में पहुचल । भोजपुरी के मशाल उठावे वाला नया हाथ आ आवे के चाहीं । नया लोग में बहुत कम लोग लउकत बा जे अपना संस्कृति भाषा प्रेम राखत बा । अब त भोजपुरी गायक विध्यवासिनी देवी, शारदा सिन्हा के छोड़, 'गणे के पापा' 'रतीहस देले रिंकी के पापा' जइसन गीत गावत बा । भोजपुरी सिनेमा अ गायकी फूहड़पन का दौर से गुजरत बा । एकर निन्दा होखे के चाही । ई भोजपुरी संस्कृ का विरूय हवे काहे कि-

पीठि न देखावे रन, दीठि न उठावेदेख ।
आन के बहुरिया, मर्द भोजपुरिया ।

बाकिर का होत बा.... रामे मालिक बाड़न । सबके प्रणाम कहब । रउवा साथे बानी

- **रामेश्वर सिंह उर्फ कवि जी, (ग्राम- सुन्दरपुर, पोस्ट- कोरी, वाया- संदेश, भोजपु आरा)** हमार समाचार ठीक बा, आशा करत बानी कि रउओ अपना सभ परिवार के सं ठीक से होखब । राउर भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका मई 2004 का एक कापी भेटल । प के मन खुश भइल । रउवा अपना सम्पादकीय में ठीके लिखले बानी कि बिना गांव विकास के देश के विकास ना होई । चौधरी चरण सिंह (पूर्व प्रधानमंत्री) इहे कहले र कि देश की खुशहाली का रास्ता गांवो और खेत खलिहानो से होकर गुजरता है । रउ भी विचार सही बा कि पछिला सरकार के एक झटका लगा देनी आउर वर्तमान सरका के भी चेतावनी देनीं । हमार विचार बा कि रउआ जवन पत्रिका निकालत बानी ऐका में अन्धविश्वास के खिलाफ एगो गीत-कविता या लेख दिहल जाव । काहे कि अं -विश्वास भी देश के कम दुश्मन नइखें । अइसे तऽ 'केकरा खातिर छठ' में आच्छा बा थोड़ा आइल बा । राउर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन मूंजा अधिवेशन वि गतिविधि हू-ब-हू छपले बानी ऊ पत्रिका हमरा बिहार बुद्धिवादी समाज के कवलजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के माध्यम भेटल रहे । ऊ पत्रिका पढ़ली आ हम देख ले रही कि मूंजा वाला सम्मेलन में डॉ॰ प्रभुनाथ सिंह के सेनापति के पद मंत्रोचार के संगे बइठावल गइल हमरा इ बुझाइल कि भोजपुरी सम्मेलन में पूरा ब्राह्मणवाद हावी रहल । इहे मंत्रोचार के कारण देश के हजार वर्ष गुलामी के दिन देखे परल । इ रउओ जानकारी होई । सम्मेलन में कवनो किस्म के दिक्कत ना भइल । जाड़ा के मौसम में ओढ़ना बिछौना, खाना कवनो चीज के कमी ना रहे । व्यस्थापक के बार-बार धन्यवाद बा । पोस्टकार्ड में केतना बात लिखाई । विशेष फिर कभी भेंट भइला पर । रउआ से सदेह भेट काल चाहत बानी ।

डॉ॰ स्वर्ण किरण (नालंदा) भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के मांस्लता, पठनीयता आ उपयोगिता बढ़ चलत जाता । ई गर्व आ गौरव के विषय कहल जाई । संपादकीय सूझ-बूझ के द्योतक बा । पदमश्री डॉ॰ शैलेन्द्रनाथ श्रीवास्तव के कहानी 'केकरा खातिर छठ' बहुत मर्मस्पर्शी बा । आज के बहू पर व्यंग्य भी एकरा में दिखलाई पड़त बा । बेटा माई के पास छठ के निमंत्रण पाके जाये के तइयार बा । बाकिर परिस्थि बस माई के आवे के पड़त बा । छठ त उठाये देल जात बा । आदित्य कुमार अंशु के संस्मरण लेख डॉ॰ रामसेवक विकल के संबंध में अधिका जानकारी देत बा । डॉ॰ सलिल के लेख 'स्मृति शेष डॉ॰ विकल' के बढ़िया श्रद्धांजलि कहल जाई । ललन प्रसाद पाण्डेय के ललित निबंध 'मंगरू ठाकुर के धरोहर' साइकिल आ अंग्रेज लोगन के ढ़ाड़ी बनावे वाला रेजर आदि के डिब्बा कहानी के आनन्द देत बा । डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र के लिखल, डॉ॰ रिपुसूदन श्रीवास्तव के 'आज के भोजपुरी साहित्य' (निबंध-संग्रह) के समीक्षा जानकारी बढ़ात बा । कविता, गीत/गजल स्तम्भ रूचिकर बा ।

रामवचन शास्त्री 'अँजोर', ग्राम+पोस्ट- नवली (पानी टंकी के पास), गाजीपुर-232338

मार्च, 2004 (अधिवेशन) पत्रिका का संगहीं अप्रैल, 2004 के अंक प्राप्त भइल । पत्रिका पाके आपार खुसी भइल ओसही अचरजो कम ना भइल । हम इयाद कइल गइलीं आखिर बात का बा । पत्रिका का अलावे कवनो संदेश सेवा आदेस खातिर अलग से कवनो कागज पर चार अक्षर लिखल रहित त हम लहालोट हो जइतीं । छपरा सम्मेलन का बाद से हम सम्मेलन के कवनो कार्यक्रम में आपन उपस्थिति दर्ज ना करा पवलीं । ओहिजा हमके कवि सम्मेलन के अध्यक्ष पद पर बइठा के सम्मानित ना अपमानित कइल गइल । ओकर टीस तनी-मनी आजो रहि गइल बा । काहें ना, घाव नीकी भइला प ओकर दागी इयादि देत जाले । हम नरक में सम्मान क जिनिगी जीयल ढेर नीमन जानीले बाकी सरग में अपमानित होके छनो भर ठाढ़ रहल हमरा अस मनई के दुसवार हो जाला । हमरा अपना साधना के बल प निरंतर कुछ करत जात रहे के घसनटि परि गइल । अब त हम कविते में जी रहल बानीं । जिनिगी के आधार कविते बा । भले हम कवनों पत्रिका में छपीं भा ना, केहू आदर दे भा सरापे कवनो अमनख नाहीं बा । एहर कतने किताब छपली अपने का सेवा में हम पहुंचा ना सकलीं । 24 अगस्त के हम आइल चाहब । 3-4 दिन क पटना प्रवास रही, ओही बीच में अपने से भेंट करब । जिनिगी के कवनो भरोसा नइखे । कब का हो जाई, के जानत बा । भाई अविनासचन्द्र विद्यार्थी के कवनो खबर-खबरात नइखे मिलत । उहाँ का कइसे बानीं आजहूँ से मिले के जीव छटपटाता । वरियर भइला प हमहूँ ढेर दूर हो गइल बानीं । क्षमा कहल जाई ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी प्रकाशन के बढ़त डेग

1. **दिठौना** (निबंध संग्रह), **डॉ आशारानी 'लाल'**
प्रकाशक : सेक्टर 14, रोहिणी दिल्ली-110085, मूल्य: 60-00 प्रथम संस्करण- 200

2. **तस्वीर जिन्दगी के** (गजल-संग्रह) : **मनोज भावुक**
प्रकाशक: भोजपुरी संस्थान, मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-24
मूल्य: 60-00 पृष्ठ संख्या-108 प्रथम संस्करण- 2004

3. **कदाम्बरी** (उपन्यास) : **शैलजा कुमारी श्रीवास्तव**
प्रकाशक : वही, मूल्य : 50 रुपया

4. **मन-पाखी** (कविता-संग्रह) : **डॉ रामसेवक विकल**
प्रकाशक : वही
मूल्य : 50-00 रुपया मात्र, पृष्ठ संख्या-56, प्रथम संस्करण - 2004

5. **भँवर में नाव** (गजल-संग्रह) : **सूर्यदेव पाठक 'पराग'**
प्रकाशक : भारतीय साहित्य संस्थान, 181, आवास विकास कॉलोनी-1, शाहपुर, गीत वाटिका गोरखपुर-273006 (उत्तर प्रदेश)
मूल्य : 50-00 रुपया मात्र, पृष्ठ संख्या-64, प्रथम संस्करण : 2003

6. **कह किसलय हरिद्वार** (कुण्डली आ दोहा-संग्रह) : **हरिद्वार प्रसाद किसलय**
प्रकाशक : जनहित परिवार, मवेशी अस्पताल के दक्षिण गली, मानसपुरी, शीतल टोला आरा, भोजपुर, मूल्य 50-00 पृष्ठ संख्या-112, प्रथम संस्करण-2004

7. **तहस नहस** (नाटक) : **हरिद्वार प्रसाद किसलय**
प्रकाशक : मंडल प्रकाशन, किसलय निलय भोजपुरी पुस्तकालय, ग्राम+पोस्ट- राजापुर भाया- दलीपपुर, जिला-भोजपुर मूल्य-15-00, पृष्ठ संख्या-28, प्रथम संस्करण-2000

8. **शिवनारायण चालिसा : हरिद्वार प्रसाद किसलय**
प्रकाशक, मूल्य, संस्करण- अमुद्रित, पृष्ठ संख्या-16

9. **नये पुराने लोक रंग** : (नये-पुराने भोजपुरी आ अन्य गीतों भजनों का संग्रह)
संपादक : **राजेश्वरी शांडिल्य**
प्रकाशक : राजश्री प्रकाशन, मालएवेन्यू कॉलोनी, लखनऊ
मूल्य- 15-00, पृष्ठ संख्या- 132, प्रथम संस्करण : नवम्बर, 2003

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मेलन के अनमोल प्रकाशन

1. मेहरारून के दुरदसा (नाटक)		राहुल सांकृत्यायन	5 रुपया
2. नइकी दुनिया (नाटक)		राहुल सांकृत्यायन	5 रुपया
3. जोंक (नाटक)		राहुल सांकृत्यायन	5 रुपया
4. भोजपुरी के प्रकाशित ग्रंथ		गणेश चौबे	5 रुपया
5. भोजपुरी के अस्मिता चिन्तन (सम्मेलन के पहिलका पन्द्रह अधिवेशनन के अध्यक्षीय भाषण)	सं.	आनन्द संधिदूत भगवान सिंह 'भास्कर' कृष्णानन्द 'कृष्ण'	200 रुपया
6. भोज, भोजपुर आ भोजपुरी (निबंध)		डॉ॰ मुरलीधर श्रीवास्तव	5 रुपया
7. निरगुन बानी (संत कवियन के बानी के संग्रह)	सं.	कुलदीप नारायण झड़प डॉ॰ शंभुशरण	20 रुपया
8. भोजपुरी निबंध निकुंज (निबंध-संग्रह)	सं.	डॉ॰ विवेकी राय सिपाही सिंह 'श्रीमंत'	50 रुपया
9. मानक भोजपुरी वर्तनी (व्याकरण)		आचार्य विश्वनाथ सिंह	40 रुपया
10. भोजपुरी के चुनिन्दा हाइकु (हाइकु-संग्रह)	सं.	पाण्डेय कपिल	25 रुपया
11. एक मुट्ठी लाई (लघुकथा-संग्रह)	सं.	पाण्डेय कपिल कृष्णानंद 'कृष्ण'	50 रुपया
12. भोजपुरी कहानी हाल-साल के (कहानी-संग्रह)	सं.	पाण्डेय कपिल	100 रुपया
13. धार के खिलाफ (गीत-संग्रह)	सं.	पाण्डेय कपिल भगवती प्रसाद द्विवेदी	51 रुपया
14. भोजपुरी सतसई (दोहा-संग्रह)	सं.	पाण्डेय कपिल भगवती प्रसाद द्विवेदी	75 रुपया
15. भोजपुरी के राष्ट्रीय गीत (गीत-संग्रह)	सं.	सूर्यदेव पाठक 'पराग' भगवान सिंह 'भास्कर'	60 रुपया
16. त्रिपार्श्व से (आलोचना)	सं.	प्रो॰ ब्रजकिशोर जीतेन्द्र वर्मा	50 रुपया
17. श्रीमंत (जीवनी)	सं.	नागेन्द्र प्रसाद सिंह प्रो॰ ब्रजकिशोर	50 रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

R.N.I. Regd. No. 58956/90 Postal Regd. No. Pt-428/9

भोजपुरी पत्रिका

1. **भोजपुरी माटी, मासिक**
   संपादक: **श्री वीरेन्द्र पाण्डेय**, पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद्, 24 सी, रवीन्द्र सरणी कोलकत्ता-700 073

2. **पाती, त्रैमासिक**
   संपादक: **डॉ॰ अशोक द्विवेदी**, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001

3. **निर्भीक संदेश, त्रैमासिक**
   संपादक: **अजय कुमार ओझा**, ओझा प्रकाशन हो॰ नं॰-102, जोनन॰-11, भोजपुरी पथ, बिरसा नगा, टेल्को, जमशेदपुर

4. **भोजपुरी विश्व, त्रैमासिक**
   प्रधान संपादक: **डॉ॰ अनिल कुमार पाण्डेय**
   संपादक: **डॉ॰ लालबाबू तिवारी**, गर्दनीबाग हाई स्कूल कैम्पस, पटना

5. **कविता, त्रैमासिक**
   संपादक: **जगन्नाथ**, श्याम भवन, एस. पी. सिन्हा रोड, बोरिंग कैनाल रोड, पटना

6. **भोजपुरी विकास चेतना, मासिक**
   संपादक: **डॉ॰ राजेन्द्र भारती**, ज्ञान प्रिंटिंग प्रेस, जगदीशपुर, बलिया-277001

7. **खोंइछा, त्रैमासिक**
   संपादक: **डॉ॰ दिनेश प्रसाद शर्मा**, मुहल्ला+डाकघर- अनाईठ (आरा)

8. **भोजपुरी भारती, पत्रिका**
   संपादक: **प्रो॰ वैद्यनाथ विभाकर**, भोजपुरी भारती ढ़ोढ़स्थान, सारण

9. **उड़ान, छमाही**
   संपादक: **भगवान सिंह 'भास्कर'**, प्रखंड कार्यालय के सामने, (सीवान)

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से प्रो॰ ब्रजकिशो द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, महम्मदपुर लेन, पटना-800 00 से प्रकाशित, आउर प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा जे॰ एम॰ कम्प्यूटर्स, पश्चिमी लोहानीपुर पटना-800 003 में अक्षर-संयोजित एवं मुद्रित ।

सम्पादक: प्रो॰ ब्रजकिशो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

सम्पादक :
प्रो० ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)

वर्ष-16 अंक-3 पूर्णांक-183 मार्च, 2005 दाम- दस रुपया

एह अंक के प्रायोजक

1. श्रीमती उषा दीक्षित, द्वारा- डॉ. अशोक कुमार दीक्षित, अरविन्द मार्ग, सीपत रोड, सरकंडा, बिलासपुर, (छत्तीसगढ़)

परामर्श मंडल

(डॉ॰) विवेकी राय, (आचार्य) विश्वनाथ सिंह, (श्री) मोती बी॰ ए॰, (दण्डिस्वामी) विमलानंद सरस्वती, (श्री) पाण्डेय कपिल, (डॉ॰) विजय बलियाटिक, (डॉ॰) अर्जुन दास केसरी, (डॉ॰) प्रभुनाथ सिंह, (डॉ॰) अनिल कुमार 'आंजनेय'

संपादक
प्रो॰ ब्रजकिशोर

सह संपादक
डॉ॰ जीतेन्द्र वर्मा

पत्रिका परिवार

संरक्षक सदस्य : श्री माधव सिंह

सदस्य : श्री कृष्णानंद 'कृष्ण', डॉ॰ जयकांत सिंह 'जय', डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, श्री भगवान सिंह 'भास्कर', श्री व्यास मिश्र

संपादक मंडल

डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक', राजनारायण दीक्षित, डॉ॰ लारी आजाद, कृष्णानंद कृष्ण, सूर्यदेव पाठक 'पराग', डॉ॰ रामकिशोर श्रीवास्तव, डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र, भगवान सिंह 'भास्कर', व्यास मिश्र, भगवती प्रसाद द्विवेदी, रवीन्द्र शाहाबादी ।

संपादकीय संपर्क

प्रो॰ ब्रजकिशोर, श्रीभवन, प्रोफेसर कॉलोनी, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू पटना-6

फोन: 0612-2671180, 2669592 एक्सटेशन-8

शाखा कार्यालय : 206, प्लौट 58/6, गौरव अधिकारी एमार्टमेंट, सेक्टर-62 नोएडा-201 301, फोन : 0120-3956695

रचना में दिहल तथ्य, विचार रचनाकार के बा, ओसे संपादक मंडल के सहमति जरूरी नइखे ।

अ॰भा॰ भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के

वार्षिक सदस्यता शुल्क 25 रुपया सालाना

आजीवन सदस्यता शुल्क 251 रुपया

विशिष्ट आजीवन सदस्यता शुल्क 1101 रुपया

'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' के

वार्षिक ग्राहक शुल्क 100 रुपया

सम्मेलन के सदस्य खातिर

वार्षिक ग्राहक शुल्क 80 रुपया

प्रायोजक (आजीवन ग्राहक) 1000 रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका

(अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के मासिक पत्रिका)

श्रीभवन, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-800 006

र्ष-16 अंक-3 पूर्णांक-183 मार्च, 2005

सम्पादकीय

विद्यानिवास मिश्र : जे भोजपुरी के रहे

भारतीय मनीषा के प्रखर चिन्तक आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य मेलन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विद्यानिवास मिश्र के पिछला 14 फरवरी के एगो सड़क टना में निधन हो गइल । उहाँ का देवरिया में एगो कन्या महाविद्यालय के शिलान्यास के आजमगढ़ होत बनारस लवटत रहीं कि चिउटीडाड़ गाँव का लगे एगो बच्ची के बावे में गाड़ी गाछ से टकरा गइल आ उहाँ के निधन हो गइल । उहाँ के निधन से पूरनीय क्षति भइल बा । अबही उहाँ से बहुत उमेद रहे ।

डॉ. मिश्र के मातृभाषा भोजपुरी रहे बाकिर पहिले उहाँ के भोजपुरी में कुछ ना खत रहीं । अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन 26-27 मई 1990 में रेणूकूट ज्जर प्रदेश) के अधिवेशन में उहाँ के अध्यक्ष बनवलस । तब से उहाँ के भोजपुरी में खे लगलीं । उहाँ के भोजपुरी रचना **भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पुरवैया डाइजेस्ट** संपादक : पाण्डेय आशुतोष) आ **समकालीन भोजपुरी साहित्य** में छपल । उहाँ के जपुरी के प्रतिनिधि कविता संग्रह, प्रतिनिधि कहानी संग्रह आ प्रतिनिधि निबंध संग्रह बावे के अश्वासन सम्मेलन के कार्यसमिति में देले रहीं बाकिर उहाँ के आकस्मिक यु से ई पूरा ना हो सकल । हालांकि सम्मेलन एह तीनों संग्रह के तैयारी के दिशा में ते काम कइले बा । उहाँ के संपादन में प्रकाशित, **'वाचिक कविता : भोजपुरी'** एगो त्वपूर्ण पुस्तक बा ।

उहाँ के जन्म मकर संक्राति, विक्रम संवंत 1982 के गोरखपुर जिला के ड़डीहा गाँव में भइल रहे । उहाँ के प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में, माध्यमिक शिक्षा खपुर आ संस्कृत के पारम्परिक शिक्षा घरे आ बनारस में भइल । 1945 में उहाँ के ाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. कइलीं । 1960-61 आ 1967-68 में लीफोर्निया आ वाशिंगटन विश्वविद्यालयन में अतिथि अध्यापक बनलीं । उहाँ के द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के निदेशक, काशी विश्वविद्यालय के कुलपति, 'नवभारत प्स' के प्रधान संपादक आ राज्यसभा के मनोनीत सदस्य भी बनलीं ।

उहाँ के सौ से अधिक मौलिक आ संपादित पुस्तक प्रकाशित बा, जवना में ुख बा- **शेफाली झर रही, गाँव का मन, संचारिणी, लागौ रंग हरी, भ्रमरानन्द**

RajGuru Math... Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 ...age Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के पत्र, अंगद की नियति, छितवन की छाँह, कदम की फूल डाल, तुम चन्दन पानी, आँगन का पंछी और बनजारा मन, मैंने सिल पहुँचाई, साहित्य की चेतना बसन्त आ गया पर कोई उत्कंठा नहीं, मेरे राम का मुकुट भींग रहा है, परम्परा न नहीं, कँटीले तारों के आर-पार, कौन तू फुलवा बीननिहारी, अस्मिता के लि देश, धर्म और साहित्य, तमाल के झरोखे से, राधा माधव रंग रँगी, व्यंजना, स्वरूप विमर्श (सब निबंध संग्रह) पानी की पुकार (कविता-संग्रह) डिस्क्रिप्टिव टेकनीक ऑफ पाणिनि, रीति विज्ञान, भारतीय भाषा दर्शन पीठिका, हिन्दी की शब्द संपदा, हिन्दू धर्म : जीवन में सनातन की खोज (शोध), रसखान रचनावली, रहीम ग्रंथावली, देव की दीपशिखा, आलम ग्रन्थाव नई कविता की मुक्तधारा, राहुल चयनिका, भारतीय भाषाशास्त्रीय चिन साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, वाचिक कविता : अवधी, वाचिक कविता : भोज (सब संपादित)।

डॉ. मिश्र के पहचान ललित निबंधकार के रूप में बनल। अइसे भाषा वि के क्षेत्र में भी उहाँ के योगदान काफी महत्त्वपूर्ण बा। उहाँ के अपना ललित निबं में भोजपुरी लोकगीत आ टोन के प्रयोग खूबे कइले बानी। कई गो निबंधन के भोजपुरिए टोन बा। पिछला बेर जब सरकार तीन गो दोसरा-दोसरा भाषा के संवि के अष्टम अनुसूची में शामिल कइलस तब उहाँ के भोजपुरी के भी शामिल करे के मु उठवलीं बाकिर सरकार एकरा के पूरा ना कइलस।

उहाँ के बौद्धिक यात्रा के शुरूआत पत्रकारिता आ निबन्ध लेखने से भइल। उहाँ के सब रचना भोजपुरी लोक जीवन आ संस्कृति से ओतप्रोत बा। साहि में उल्लेखनीय योगदान खातिर उहाँ के 'पद्मभूषण' सम्मानो मिलल। डॉ॰ मिश्र भारत ज्ञानपीठ के न्यासी बोर्ड के सदस्य रहीं आ मूर्ति देवी पुरस्कार समिति के अध्यक्षो रहीं, उपराष्ट्रपति श्री भैरो सिंह शेखावत जी डॉ. मिश्र के बेटी श्रीमती मंजुला शुक्ला के भे शोक सन्देश में ठीके कहले बानीं कि पंडित जी महान विद्वान आ मौलिक चिन्तक आ अपना रचनन में भारतीय संस्कृति आ साहित्य के अभिवृद्धि में उल्लेखनीय योग देले बानीं।

साँचो डॉ॰ विद्यानिवास मिश्र जी में विद्या के निवास रहे। भारतीय संस्कृति परम्परा के उहाँ का पोषक रहीं। बात-बेवहार में अन्तरंगता आ सहजता रहे बाकिर स्वाभिमानी आ निष्ठावान रहीं। ललित निबन्ध के प्रकृति उहाँ का सुभाव में समा रहे। भोजपुरी क्षेत्र के ग्रामीण संस्कृति के सरसता-सरलता, उहाँ का व्यक्तित्व आकर्षण रहे।

सम्मेलन के काम में उहाँ का बहुत रूचि लेत रहीं। पंडित जी के कृति ब रही। सम्मेलन उहाँ के आत्मा के शांति के खातिर ईश्वर से प्रार्थना करता।

-ब्रजकिश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दस्तावेज

स्लो (पोलैण्ड) के विश्व बुद्धिजीवी सम्मेलन

-डॉ. भगवत शरण उपाध्याय

19 सितम्बर 1978 के, वर्ल्ड पीस कौंसिल क अध्यक्ष श्री रोमेश चन्दर के आ भारतीय पीस कौंसिल के महामंत्री पेरिन के चिट्ठी आइल कि पोलैण्ड में ाला विश्व बुद्धिजीवी सम्मेलन (वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ इंटेलेक्चुअल्स) में भाग ला भारतीय प्रतिनिधि मंडल का साथे जाए खातिर तैयार होके रउआ तुरंत दिल्ली ाई आ आवते हमरा से फोन पर बात करीं ।

चिट्ठी देहरादून का पता पर भेजल गइल रहे, जवना वजह से उज्जैन में दू दिन आउर देर से मिलल । हम पेरिन के तुरंत फोन कइलीं त मालूम भइल ारती प्रतिनिधिमंडल के हमके केवल सदस्ये नइखे चुनल गइल बल्कि ओकर हमरे करे के बा । हम पासपोर्ट का बारे में चिन्ता प्रकट कइलीं कि ऊ समाप्त ल बा, त ऊ कहलीं कि ओकर चिन्ता स्वयं सरकार करी आउर हम सब करब; जल्दी-से-जल्दी नई दिल्ली चल आईं । ऊ इहो कहलीं कि 28 सितम्बर के एशियन कांग्रेस हो रहल बा, रउआ ओह में शामिल होखे के पड़ी आ 4 अक्टूबर ष्ट्रपति, तोल्सतोइ सम्बन्धी सभा के उद्घाटन करिहें; रउआ ओहू में बोले के

सब काम छोड़, हम नई दिल्ली के राह लेलीं । एफ्रो एशियन कान्फरेन्स में लिहलीं । बाकिर चार तारीख के तोल्सतोइ दिवस के समारोह में शामिल ना हो हीं, कारण कि ओही रात हमरा अपना प्रतिनिधिमंडल के लेके वारसा उड़ जाए के

रोमेशचन्दर जी हवाई अड्डा पर मिलले आ कुछ देर बाद श्री चंद्रजीत यादव अंतरराष्ट्रीय रंगमंच के श्री हबीब तनवीर अइले । रूसी एयरोफ्लोट पाँच बजे का ओर उड़ल । हमरा प्रतिनिधि मंडल का साथे विशेष मर्यादा बरतल गइल ।

मास्को में सर्दी त बेहिसाब रहबे कइल-करीब तीन डिग्री । कुहरा का मारे अड्डा दिखायी ना देत रहे जेसे करीब छः सौ किलोमीटर दक्खिन कीव हमनी ड़ जाए के पड़ल । चार घन्टा बाद जहाज मास्को लवटल आ सात बजे शाम के ड से आइल जहाज हमनी के वारसा पहुँचवलस । ओही घड़ी ब्रास्लो जाए खातिर आ गइली स, मगर हम रेल से गइल ज्यादा पसन्द कइलीं, काहे कि सारा दिन बीतल रहे आ अब रात के दस बजत रहे । कार से ब्रास्लो चार बजे पहुँचे के आ उहो बइठ के । एह से हम छः बजे सुबह ट्रेने से ब्रास्लो पहुँचलीं । उहाँ के सुन्दर होटल में ठहरावल गइल ।

दस बजे से कांग्रेस के अधिवेशन शुरू भइल । ओसे पहिले हम से कहल

RajGuru Mahadev Jalgaon Institute of Education Equipment Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गइल कि हमरा 'प्रिसीडियम' यानी अध्यक्ष मंडल का साथे चाय पीए के पड़ी अ
नक्शा सामने रख दिहल गइल कि हम आपन स्थान मंच पर ढूँढ़ लीं काहे कि
तीन अरब जनता के नब्बे राष्ट्रन के बीस अध्यक्षन में से एगो चुन लिहल गइल
मंच पर बइठला पर एकाएक सामने जब नजर गइल तब श्री चन्द्रजीत यादव आ
हबीब तनवीर के देख के पहिला-बार ख्याल भइल कि इहो संयोगे के बात बा कि
समूचा बुद्धिजीवी भारतीय प्रतिनिधि-मंडल भोजपुरी भाषा-भाषी ह । श्री च
यादव त खैर आजमेगढ़ के रहेवाला हवे आ तनवीर बस्तर का लोक-संस्कृति आ
से सम्बन्धित भइला के कारण भोजपुरिए से सरोकार रखेलन ।

सामने संसार भर के प्रतिनिधि बइठल रहलन जवना में एक से एक
वैज्ञानिक, साहित्यकार, पार्लियामेण्टन के सदस्य, कवि लेखक आदि सम्मिलित
इहो गौरव के बात रहे कि भारत ना केवल अध्यक्ष-मंडल में रहे, बल्कि समूचा
के अध्यक्ष भी वर्ल्ड पीस काउन्सिल के अध्यक्ष होखे के कारण भारतीय रोमेश
ही रहले । यूनेस्को के भी ना केवल सद्भावना बल्कि एह कांग्रेस के साथ
रहे आ ओकरा पेरिस कार्यालय से प्रतिनिधियो आ गइल रहलन ।

बहुत धूमधाम से कांग्रेस के कार्यवाही आरंभ भइल । हमरा बोले के
दुसरका दिन मिलल । अभी हम दू-चारे वाक्य बोललें रहीं तबतक कनाडा
प्रतिनिधि कहलन कि पहिले बुद्धिजीवी (इंटेलेक्चुअल) के हम परिभाषा बताई
हम परिभाषा बतवलीं- **बुद्धिजीवी ऊ ह जे अपना बुद्धि से काम करे । बुद्धि से काम करेवाला खरीदल ना जा सके । खरीदल जायेवाला आदमी कतनो महान काहे ना होखो, ऊ खरीदारे के बुद्धि के इस्तेमाल करी, बुद्धि के इस्तेमाल ना करी ।**

व्याख्यान चलत गइल । हम कहत रहलीं कि शांति संसार में त
स्थापित ना हो सकी जबतक कि युद्ध रही, आ युद्ध तबतक रही जबतक वि
सम्बन्धी शस्त्रास्त्र के व्यापारी आपन शस्त्रास्त्र बनावे वाला कारखाना सब ब
करिहें । कारखानन में बनेवाला शस्त्रास्त्रन के खरीदार-बाजार खोजे के होई आ
बाजार तबे आ उहें मिली जब आ जहाँ युद्ध छिड़िहें स । एह से साफ शब्दन
देशन के ना खाली धिक्कारे के जरूरत बा बल्कि उनका विरूद्ध 'सैंक्शन'
उपयोग करे के जरूरत बा ।

ओही घड़ी एगो मजेदार घटना घटल । घटना प्रश्न का रूप में आ
मेक्सिको के प्रतिनिधिमंडल के एगो स्त्री सदस्य पूछली कि का बुद्धिजीवी लोग
कर्तव्य ईमानदारी से निभा रहल बा ? हम जवाब दिहलीं कि 'ना' । अगर ऊ वै
हवे त अपना प्रयोगशाला के बाहर के कवनो तथ्य से प्रेम नइखे, आ लेखक
चुपचाप अपना मेज पर कलम घिस रहल बाड़े । ई स्थिति हम एगो दृष्टान्त से
करे के चाहतानी-ऊ ए तरे कि आज के बुद्धिजीवी ओह क्लीव (हिजड़ा) के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ईकर बहाली हरम में होला, जहाँ, जे कुछ होला, ओह सब के त ऊ देखेला आकिर खुद ऊ कुछ कर ना सके !

ई दृष्टांत अतना जोर पकड़लस कि जइसे-जइसे अनुवाद के क्रम अंग्रेजी से फ्रेंच से जर्मन से रूसी, रूसी से पोलिश, पोलिश से स्पेनी में सुनल जात रहे इसे अट्टाहास से लहर उठत जात रहे ।

शांत हो चुकला पर हम कहलीं कि आखिर जुलियो क्यूरी, आइंस्टीन, ओपेन आ बर्ट्रेंड रसेल नियर प्रतिक्रिया आज के बुद्धिजीवियन में काहे नइखे होत ? वलीं कि आइंस्टीन 'इटरव्यू' में हमरा एगो सवाल पर अपना हाथ से जवाब - ना (No) । हमार सवाल रहे "अगर देश आक्रमणकारी होखे आ अपना वैज्ञानिक से ऐटम बनावे के कहे आ ऊ वैज्ञानिक अगर अइसन काम करे से कर देवे त ओह वैज्ञानिक के काम का राष्ट्र-विरोधी कहल जाई ?" तब न लिखले (No) अर्थात 'ना' ।

हम कहलीं कि आइंस्टीन के ई क्षमता हमनी बुद्धिजीवियन में काहे नइखे ? हमरा मजबूर होके कहे के पड़त बा कि संसार के बुद्धिजीवी लोग आपन कर्तव्य खे कर रहल, आ हम एह प्रसंग में ओह अकर्मण्य लोगन से अपना के जुदा इखीं कह रहल जेके हमरा अभाग्यवश 'हिजड़ा' कहे के पड़ल ह ।

ब्रास्लो में तीन दिन तक अधिवेशन चलत रहल । फिर हम अपना प्रतिनिधि का साथे पोलैंड के राजधानी वारसा लवटलीं आ तीन दिन उहाँ रह के, वारसा विद्यालय में भारतीय कला पर स्लाइड द्वारा दूगो लेक्चर देके मास्को पहुँचलीं ।

मास्को में बाहर ना जाके तीन दिन अपना होटले में रहलीं । कुछ थाकियो हलीं आ कुछ इहो बात रहे कि साँस के तकलीफ थोड़े-बहुत उखड़ गइल रहे । मास्कोवाला कब चूकेवाला रहले ? इण्डो-सोवियत फ्रेंडशिप एसोसएशन के डॉ. चेखिलोव होटले में पहुँच गइले आ दूरदर्शन (टेलिविजन) का सगरी का साथे टेलीविजन वाला लोग आ गइल, आ ब्रास्लो का अधिवेशन का सम्बन्ध हुत कुछ रेकार्डिंग कइबे कइल, भारत आ रूस का बीच सांस्कृतिक सम्बन्ध तरह से संचालित कइल जाय कि दूनो के जादे से जादे लाभ होखे, एहू विषय ाव माँगल गइल, जवन हम दिहलीं ।

आपन बात समाप्त करत, एक बात हम कहे से भुला नइखीं सकत । अब चीन भारत पर हमला करे के हिम्मत ना कर सके, काहे कि जतना भी रूसी मेललन ऊ एह एहसास के जाहिर कइलन कि 15 अगस्त सन् 1971 के भइल सोवियत फ्रेंडशिप ऐंड कोआपरेशन' के सन्धि के अनुसार अगर कवनो देश र आक्रमण कइलस त भारत का साथ ही रूसो लड़ाई का मैदान में उतर जाई ।

(साभार, उरेह, जनवरी 1979)

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहानी

रहले एगो राजकुँअर, रहली एगो राजकुँआरी

-अवधेश

एगो रहले राजकुँअर । एगो रहली राजकुँआरी । ना राजकुँअर के लगे राजपाट रहे ना राजकुँआरी के लगे कौनो रंगमहल । दूनो जना के लगे रहे त बस सपना । सपने में रहे राजपाट । सपने में रहे रंगमहल ।

सपनन में सरसरात दूनो जना जब मिलस, जीव भर के बोलस-बतिआव हिया खोल के अपना अपना सपना के बात करत ना आघास, राजकुँअर आपन रा संभालस । राजकुँआरी आपन रंगमहल सँवारस ।

राजकुँअर, राजकुँआरी के झील जइसन अँखियन में डूबत-उतरात अपना के एक-एक बात राजकुँआरी के बतावस '...सुनऽ सुनऽ राजकुँआरी, आज के हमार सुनऽ....।'

राजकुँअर के आँखिन में कवनो सावनी घटा अइसन उमड़त घुमड़त सपन देख राजकुँआरी लरज-लरज जास । सात घोड़न पर सवार राजकुँअर उनका सामने र मन के उद्बेग ना सँभार पावस राजकुँआरी-पूछस, 'कहऽ राजकुँअर, कहऽ अपना के बात कहऽ । तहार एक-एक बात ध्यान से हम सुन रहल बानी-हमरा शरीर के इन्द्री जइसे कान हो गइल होखे, कहऽ'....।

राजकुँआरी के अइसन प्यार पर राजकुँअर निसार हो जास । घोड़न के च लगावस आ राजकुँआरी के ले के बादलन के पार उड़ जास । रास्ता भर राजकुँआरी आपन सपना सुनावस कि हम बहुते बड़हन अफसर बन गइल बानी, हमरा लगे बहुते बंगला आ गइल बा जेमे बहुते बड़ फुलवारी बा । ढ़ेरे गाड़ी बाड़ी सन । नौकर बा । बा । दुआरी पर दरवान बा । रुपया बा, पइसा बा, इज्जत बा, रुतबा बा । सभे नव के बन्दगी कर रहल बा । हमरा एक नजर खातिर लोग तरसत बा । हमरा हुकुम पर दउड़ दउड़ जाता । हमरा आँख के इशारा पावते लोग हाथ बाँध के खाड़ हो जाता योजना बनाइले । परियोजना चलाइले । राज में खुशहाली आवे । जनता आबाद रहे । चैन कायम होखे । धरती स्वर्ग बने-अइसने काम कर रहल बानी । अपना कल्पना साकार करके देखावत बानी ।

राजकुँअर के एह सपना में अपना के कतहीं ना पा के राजकुँआरी तुनक ज बीचही में आपनो इयाद दियवा देस । राजकुँअर, उनका मन के बात समझ जास । से ठहाका लगावस । फेनु राजकुँआरी के अपना करीब खींचत अपना सपनो के बढ़ावत बाड़े । धीरज धर राजकुँआरी, धीरज धर । बड़ा धुम-धाम से हमनी के बि होता । बिआह में पहुँचल बा, लोग-बाग हाकिम हुक्काम राजा-महाराजा, अमीर-उम नामी गिरामी बुद्धिजीवी.....लेखक, कलाकार, पत्रकार ।

खुशी से भर-भर जास राजकुँआरी । राजकुँअर के बेहिसाब चुमत घोड़न के अपना हाथ में थाम लेस । राजकुँअर के निहारत.... बलैया उतारत । फेर अपना मन बात बतावस । एकरा आगे के सपना हमरा से सुन, राजकुँअर । शादी बिआह के बाद ह गइल बानी हनीमून पर । दूर बहुत दूर पहाड़ियन के गोद में, कल-कल, छल-छल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के संगीत सुनत हमनी अघात नइखीं । ओजा ऊँच-ऊँच गाछ बा, पाल वाली नाव नरम नरम बादलन के छाँह बा । दूर-दूर तक कुहासा घेरले बा बाकिर अइसन प्यार के गरमी पिघला देता आ रेशमी उजाला छितरा जाता । मखमली अँधियारा जाता ।

अँधियारा भगावत जइसे ठहर गइल होखस राजकुँआरी । राजकुँअर के बेचैनी । राजकुँआरी के फेर दुलार से उकसावत बाड़े- 'कह.....राजकुँआरी कहऽ फेर ?'

राजकुँआरी लजा जात बाड़ी । कनपटी तक खून चढ़ जाता । अँखियन में डोरा लहराये लागता आउर ऊ राजकुँअर के कान में फुसफुसाये लाग ताड़ी । के बात समझावे के पड़ी.....!

राजकुँअर निहाल हो गइले । कान में किलकारी गूँजे लागल । बगीचा में लाल सुर्ख सेव अइसन बचवन के खेलत देख राजकुँआरी पर आउर सनेह उमड़ । रंगमहल रंग से भर गइल । राजकुँअर क सब थकान काफुर हो गइल ।

बाकिर सपना त सपना ह । सपनन के उमिर का ? राजकुँअर कबतक एके सपना । कब तक राजकुँआरी एके सपना से अपना मन के बहलइती ।

ऐसे पहिले कि अब कौनो उमेद बाकी ना बाँचे ओकरे पहिले राजकुँअर उनका खवले -सुनऽ राजकुँआरी, हमनी के अब बड़हन-बड़हन सपना देखल छोड़ देवे के । आपन आदत बदल लेवे के चाहीं ।

राजकुँआरी के समझत देर ना लागल कि राजकुँअर के मन उदास बा । ऐसे कम दुख ना भइल । आदत भला एतना आसानी से बदलेला- मने मन ऊ सोचली उनकर मन राजकुँअर से लागल रहल । उनका सपना में एगो उहे राजकुँअर रहलन रहली ऊ कि राजकुँअर मेहनती हऊँए । प्रतिभा त उनका में कुट-कुट के भरल किस्मत के का करस राजकुँआरी । मन मार के मन के समझवली-राजकुँअर दिउवली कि दुःखो में सुख के अंश रहेला । हम त तहरा साथे बड़ले बानी ।

राजकुँअर के आँख में करिया बादल अइसन घनघोर अन्हरिया लउकल । जइसे जाव त बरस पड़ी । राजकुँअर घोड़ा पर सवार रहले । राजकुँआरी छउक के घोड़ा बइठली । एड़ मारते उड़ चलल घोड़ा । रास्ता में राजकुँअर आपन सपना -सुनऽ-सुनऽ राजकुँआरी आज हम सचिवालय गइल रहली हँऽ । ओजा हम किरानी बानी । ओजा फाइल बनाइले । फाइल निपटाइले । फाइल दबाइले । फाइले में खेल खेलाइले । दरमाहा बँचाइले.... उपरी कमाई से घर चलाइले ।

रूक...रूक राजकुँअर । ई घर कईसन । एह घर में के के रहेला । तड़प के राजकुँआरी ।

समझ गइले राजकुँअर । हँस के बतवले....प्यार से समझवले । घर चाहे जइसन घर-घर होखेला । घर के कीमत घर में रहेवाला आदमियन से होला । तू जौना घर ऊ का कौनो महल से कम बा का ?

अपना सवाल के जबाब पा गइल रहली राजकुँआरी । मन उनकर गद्-गद् हो । राजकुँअर खातिर उनकर स्नेह छलछला आइल । हुलस के देखली ऊ राजकुँअर उनका सपना में आपनो सपना जोड़ दिहली सुनऽ....सुनऽ राजकुँअर ! छोट चाहे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़ काम, काम हऽ । धन दउलत रहे त सब कुछ मिल जाला । बहुते रास्ता बा धन कमाए के । आदमी के हिकमती होखे के चाहीं । तू जे कमा के ले अइब हम ओही में बहुत खुश रहब । का भइल जे हमनी पहाड़ पर घुमे ना जा पाएब । पहाड़ अइसन जिनगी काटल कौनो बड़ काम ना हऽ का ?'

घोड़ा थथम गइल रहे । सपना थम गइल रहे । राजकुँअर राजकुँआरी के पीड़ा समझ गइल रहले । साँचे तऽ कहली राजकुँआरी । मन के मनवले । एड़ लगवले बाकिर घोड़ा त घोड़ा होला । अड़ गइल त बस अड़ गइल । सपना त कपूर अइसन उड़िए गइल ।

दोसरा दिने जब राजकुँअर राजकुँअरी से भेंट करे गइले त देखले कि राजकुँआरी चहकत रहली, कौनो बुलबुल खानी फुदकत रहली । राजकुँअर सोचले-जरूर आज कौनो निमन सपना देखले बाड़ी राजकुँआरी । एको पल खातिर उनका धीरज ना रहल, पूछ बइठले -'कहऽ-कहऽ राजकुँआरी, आज के सपना कहऽ कि आज के सपना में अइसन कवन बात रहल कि तू चहकत बाड़ू !'

खिलखिला उठली राजकुँआरी । झर-झर उनका आँख से महुआ के फूल अइसन खुशी के चमक झरे लागल -'सुनऽ, राजकुँअर सुनऽ । आज के खुशी अइसन बा कि हम खुशी से मर काहे नइखी जात ।'

'तू जरूरे कौनो सुन्दर सपना देखले होखबू ।' राजकुँअर अपना मन के बेताबी के रोक ना पवले ।

मने मन राजोकुँआरी गिल तऽ रहले रहली, कुछ वइसने नजर राजकुँअर पर डालत आपन छितराइल केश सम्हारे लगली ।

पल भर के ई चुप्पी कौनो काँट अइसन चुभे लागल राजकुँअर के । राजकुँआरी के हौसला बढावत आगे कहले 'सुनऽ सुन राजकुँआरी-हमरो लगे एगो सुन्दर सपना बा ।'

एह पर राजकुँआरी अइसन हँसी हँसली कि राजकुँअर दंग रह गइले । खून जहाँ के तहाँ थक्का हो गइल लागल । कौनो मूरत खानी ठाढ़ खड़ा सुनत रहले । राजकुँआरी कहत रहली -'सुनऽ-सुनऽ राजकुँअर ई सपना नइखे, साँच बा कि हमार बिआह तय हो गइल बा.... कौनो दूर देश के सौदागर से ।'

धरती घुम गइल । आसम्मान टूट पड़ल । बिजली तड़कल । बादल गरजल । कह ना पवले राजकुँअर कि ओह घड़ी उनका पर का बीतल । आपन आखिरी सपना राजकुँआरी के कह ना पवले ।

जाते जात राजकुँआरी सीख देत गइली कि 'सपना से कुछो ना होखे, सपना के भरोसे जिनगी ना काटल जा सके ।'

O O O

बहुत दिन बीतल । ना जाने केतना समय के समुन्दर में ज्वार भाठा उठल । दूर देश गइली राजकुँआरी.....दूर हो गइले राजकुँअर ।

समय के चक्र चलते रहे । केहू मिलल । केहू बिछुड़ल । उम्र के आखिरी पड़ाव पर संयोग से फेर दूनो जना मिलले ।

बहुत देर चुप्पी रहल । ना राजकुँअर कुछ बोलले । ना राजकुँआरी कुछ बोलली बाकिर धीरे-धीरे टुटत रहे तऽ । राजकुँआरी के बोल फूटल 'कहऽ-कहऽ राजकुँअर आज के सपना के हाल कहऽ ।'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कौनो उदास साँझ भा चिहुटाइल फूल नियर मुस्कुराहट राजकुँअर के चेहरा पर । कहले -'सुनऽ सुन राजकुँआरी-सपना के सम्बन्ध त नींद से होला आ ऊ कहिए घट गंइल ।'

समुन्दर के गहराई नियर उदासी राजकुँआरी पर छितरा गइल । ओही मन से -'ठीक कहऽ तांड़ऽ । हमहूँ त बरिसन से कवनो सपना ना देखनी । सौदागर के अच्छा ना लागे ।'

फेर एगो चुप्पी पसर गइल । खामोशी-सन्नाटा छितरा गइल दूनो के बीचे । र राजकुँआरी से ना रहल गइल तऽ पुछ बइठली

-'ऊ आखिरी सपना का रहे राजकुँअर जे ना तू कह सकलऽ ना हम सुन ।'

ऊ सपना ना रहे, हकीकत रहे । भुलाइल दिन जइसे इयाद आवत होखे, अर कहले -'ओह दिन हम समय से सउदा करके आइल रहनी, साथे मर जाये जहर ले आइल रहनी ।'

एह बेरी तनिको ना कपंली राजकुँआरी.....ना डरली.....ना घबड़इली बस एगो मय अंदाज में मुस्कुरा के धीरे से कान में फुसफुसइली ।

'रोज-रोज मुअला से निमन रहल कि हमनी ओही दिनें मर गइल रहतीं ।'

'मर तऽ हमनी ओही दिन गइनी । राजकुँअर के स्वर भींज गइल रहे, बेसपनन नो जिनगी होला । जहिया सपना मर जाए समझऽ ओही दिन आदिमीयो मर गइल ।

'साँचे कह ताड़ राजकुँअर ।' ठंडा आह भर उठली राजकुँआरी । जाते जात -'फेर कौनो सपना ना देखबऽ राजकुँवर ।'

चलते चलत राजोकुँअर जवाब दिहले -'जौना सपना में ना कौनो राजकुँआरी रहे, पाट रहे ना कौनो रंगमहल रहे तऽ काहे खातिर सपना देखिहें राजकुँअर ।'

सपना के राजपाट, सपना के रंगमहल, सपना के राजकुँअर । सपने के आरी । सपनाऽ सपना हऽ । सपना के उमिरे केतना ?

-सुमति पथ, रानीघाट, महेन्द्रू, पटना

वा कवयित्री दीप्ति के कविता-संग्रह 'मन' के समीक्षा ग्रंथ

मन के दरपन बोले

संपादक

राजवल्लभ सिंह

काशक- भोजपुरी साहित्य संस्थान, पटना

मूल्य- तीस रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फगुनहट

-मिथिलेश शर्मा 'मधुकर

चढ़ते फागून'मन में उठेला हिलोर हो,
पिया परदेश गइलन हमरा के छोड़ हो ।
कव मास बीति गइलें चिट्ठियो ना भेजलें,
राम बनि सीता अस हमरा के तेजलें ।
सोचि-सोचि मन मोरा हो जाला थोर हो ।
का कही हे सखी दिलवा के बतिया,
दिनवा फटावन भयावन लागे रतिया,
रोते-रोते सेजिया पर हो जाला भोर हो ।
मन कहे फागून में पिया मोर अइतन,
रंगवा-अबिरवा, चुनरिया ले अइतन,
सोचत बाड़ी धनिया आँखिन भरि लोर हो ।
जा प्यारे सुगना पिया के समुझाई द,
बलमा बेदर्दी से दुखड़ा सुनाई द,
कवने कसुर पिया बनलन कठोर हो ।
पिया परदेश गइलन हमरा के छोड़ हो ।।

-मे. उज्ज्वल इन्ज. वर्क्स, कंकड़बाग रोड, बहादुरपुर गुमटी, पटना-2

●

होली ह ऽ ऽ

-राजकुमार प्रे

देवर-सुनिल ऽ तू बतिया हमार, हमार भउजी,
फगुआ में प्यार दऽ उघार, हमार भउजी ।

भउजी-हमरा पर भईया के अधिकार, हमार देवर,
तोहरा से कइसे करीं प्यार, हमार देवर ।

देवर-बजका बनयबू भउजी, कढ़ी, फुलौड़ी,
पूआ, गुलगुल्ला, ठेकुआ, पूरी, कचौड़ी ।

भइये संग करब जेवनार, हमार भउजी,
प्यार में काहे इनकार, हमार भउजी ।

-रमना रोड, पटना-800 00

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एह बसंत में

-दिनेश

अतने बरीसवा में दस करम कइले
देश के किसान सब बंधकी रखइले
खेत-मजदूर सब घरे से परइले
देशवा के आन-बान फोकटे बिकइले
खेती बाड़ी छोड़ के किसान मरी गइले
तेलहन के जगह सोयाबीन बा रोपाइल
निरबंशिया बीज घुसल खेत में बोआइल
फेरू आइल बा फिरंगिया मन हमार दहकल
अबकी बसंत में शहीदी रंग टहकल
अबकी फगुनवा विप्लवी गंध महकल ।

नेहरू के सपना निजी क्षेत्र में बिकाइल
सामूहिक सामान निजी हाथ में धराइल
सोना उगलत खेत केतनें पंट्टा पर दिआइल
नीम, हल्दी लेखे जड़ी बूटी चली जाई
संसद के पानी निजी हाथ में बिकाइल
दिल्ली के पनीया पर चढ़ल मंहगाइल
अबकी बसंत में शहीदी रंग टहकल
अबकी फगुनवा विप्लवी-गंध महकल ।

काबुल इराक में साम्राज्यवादी बा सहकल
संगे संगे मिली फासीवाद बा बहकल
भरनठ नेता सब बाड़न जमात में
बिकत बाटे न्याय-धर्म सस्ता इफ़रात में
क्रांति के रंग भरऽ लेके पिचकारी
छरऽ-छरऽ उड़े जइसे उड़े चिनगारी
याद अइलन कुँवर सिंह मन हमार लहकल
याद अइले भगत सिंह मन हमार लहकल
अबकी बसंत में शहीदी रंग रहकल
अबकी फगुनवा विप्लवी-गंध महकल ।

-सिन्हा फोनेक्स, नेहरू नगर,
आरा-802 301

●

RajGuru Mahadev Jivaji Vidyapeeth's Shri Shivaji Mahavidyalaya Kipali Village Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ललित निबन्ध

फागुन रस छलके

-प्रो. वैद्यनाथ विभाकर

प्रीत पनके द मनवा के मोजराये द, हर सपन के सुगंधी बिखर जाये द
हँसते-हँसते फगुनवा संगे जिनगी, गीत गावते गंवे से गुजर जाये द ।

-अलमस्त अनिल

फागुन के छोह छहके लागल मन के अंगना में सगुन सोहरे लागल । निरगुन मा आज सगुन होके रसगंधी हो गइल बा । हुलास के छन्द छलके लागल बा । खुशी के खिड़क से फगुनहटा झांक गइल बा- प्रीत के पाहुन बन के-

राखेब नेहिया के थाती सम्हार पहुना, अबकिर फागुन में आयेब हमार पहुना ।

-जमादार भा

पलाश आश बन के मन के मिती मिलावत बा । महुआ के मदन रस टपकत बा आज सपना के ओठ पर मौसम के फूल उसकियात बा । हिया के पोर-पोर रसगंध के पियासत बा । बसन्ती पवन के संगे रात रसवन्ती हो गइल बा । चुरवइया के सिसकी सनेह बांटत बा धरती सोरहो सिंगार करके एहवातिन हो गइल बाड़ी, नेह में नहाइल मन-फागुन के संग मगन बा-

सगरे मादक गंध लिखाइल, हँसि-हँसि नाम बेयार के,
छलकि-छलकि रस भींजल जियरा, मौसम भींजल प्यार के ।

-गहमरी

मौसम के मन एहवात हो गइल बा । प्राण-पंछी के ठनक अब करेजा में कसक उठावत बा । साध सनकत बा, पाँव बहकत बा, पलाश लहकत बा, सपना सहकत बा । कोइल के कूक-हिया में हूक उठावत बा । मौसम के मिजाज अलमस्त बा आ बसंत-प्रिया आवाई के नेह-निमंत्रण बाँट रहल बाड़ी-

बहे पुरवइया रस चुवेले महुइया, कि कवना बने कुहूके रे कोइलरिया ।

-गहमरी

फागुनी गीतन के छन्द में हिया के हिलोरत हुलास के गंध छलकेला । गोरी के होरी बड़ा बटजोरी बा । उनका उलहनो में एगो रसबोध बा । साल भर के सईंतल सनेह के रसधार होरी के हुलास से भर देला । हुलास फागुनी रंग के अंकवारी देवे लागेला । तब नायिका रंग के संगे अनंग के जोड़ के कहे लागेली-

भरि-भरि देवर मारे पिचकारी,
भींज के लथ-पथ हो गइल साड़ी ।
मसक गइल चोली हों- कइसे के खेलीं हम होली ।

बाकिर गोरी भाव-विभोर होके होरी खेलिहन । काहे कि 'भर फागुन बुढ़वा देवर लागे' के मदमस्त महिना में मन केतना बन्हाई ? मौसम के मधुर आमंत्रण भला गोरिया कइसे ठुकरा दिहें-

केसिया संवारी जुड़वा बान्ह हो ननदिया,
होरी खेले अइहें देवर ननदिइया ।

होरी नाजुक रिश्ता के सुकोमल मिलन के पर्व ह । एही से ननदो के हुलास पाहुन के अइला पर आउरो बढ़ जात बा-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ननदो पाहुन अइले अंगना, झनर-झनर बाजे गहना ।

होरी के होहकारी उमीर के बन्हन तुर देला । फागुनी रंग में रंगा के तन-मन जवान जाला । फरकत आँख कं सबर मिलेला । बाकिर रंगाइल तन मोजराइल मन के संगे जुड़ बउराये लागेला । मर्यादा के डोर कसमसाये लागेला । बहकल बेयार चोली बन्द खोलेला अंचरा उड़िआये लागेला । पायल जीव के घायल कर जाला । रस-रंग छलके लागेला-

नया भइले सरिसो, पुरान भइले तोरी, अब कइसे माथवा बन्हइबु हो गोरी ।

बाकिर नायिक विरह-विग्धा होइओ के एतना कमजोर नइखे । ओकर प्रीत के रीत एगो बल बा, एही से उलिट के उ जबाब दे देत बाड़ी-

चसकल छोड़ाएब छंवड़ा तोर, माथवा बन्हा के तनि आवे दे ।

फागुन अलमस्त महिना ह । एह में ठुंठो गाछ में रस हो जाला । फेरू फागुनी गीतन रस काहे ना छलको फागुनी गीतन में बड़ा भाव बा, मनमौजीयन बा, दुलार बा, मनुहार बा, लाहना के सत्कार बा । कुछेक गीतन में प्रतीकात्मक रूप से रस-रंग के रूपात्मक चित्र खड़ा इल बा एह में विश्व बा, प्रतीक बा, आ सांकेतिक इशारा बा, कुछ बानगी देखल जाव, जवना सांकेतिक सन्दर्भ सम्पूर्ण रूप के सामने खड़ा कर देत बा-

1. पति के घरे ना रहला पर-

बिन बनिया के दोकनिया हो, मोरा नीको ना लागे ।

2. उरोज-स्पर्श से बचाव खातिर सन्दर्भित रस-छन्द-

मत तुरिह हो बालम बैंगनवा, गड़ि जइहें अंगुरी में कांट ।

'उमरिया अबहीं बारी' के भाव दृश्य एह गीत-बोध में छलकत बा ।

3. आत्म-समर्पण के आतुर नायिका एगो रूपात्मक अनेसा के घेरा में घेराइल बिया-

सईंया नदान, देवर भकुआह, केकरा आगे खोलीं सुनर बटुआ ।

युग-युग के सईतल पिआस जब मधुरस के पुरवाई आ सुधियन के अंगड़ाई के संगे नहिया के आश बन के पुकारेला- 'फागुन के आइल बहार हो बलमुआ, छोड़ द नोकरिया आव ।' नायिका के भाग्य से फागुनी होरी के रंग में रंगाये परदेशी पिया आ जात बा । फेरू खुशी के का कहे के बा- 'परदेशी बलमुआ अइले हो, आज धूम मचे पलंग पर ।' अइसन एक बेला में सोनहुला सपना जवान हो जात बा- 'मैं पतरी पिया मोरे, सईंया चली ना पलंग लोटे ।' इ नायिका मिलन के क्लाइमेक्स ह । फागुन मन के बिछलहरी ह । फागुन के रस एक ओरी रसधार बहेला -'मोरा डर लागेला अन्हरिया हो लाला, सईंया बोलवेला कदली के में' दोसरा ओरी अल्हड़ नायिका मने मन गाजेले 'सईंया मारेला फुलगेनवा के मार, लवरिया में हम ना जायेब ।' बाकिर नायिका फागुन के रंग में रंगा के एतना कमजोर नइखे । ोकरा संग रंग आ अनंग के सोहाग संगम बा, एही से ऊ कहत बिया-

छोटी मत जान मोहि पिया
जइसे नवेला बांस के कोइनिया
ओइसे नवाई देबि तोहि के पिया ।

एह तरे फागुनी गीतन से रस छलकत बा। मन के मिलन महकत बा । चित चहकत बा । हीं मिलन के उमंग बा । सेज पर अनंग बा । चेहरा पर रंग बा । नेह बिछलात बा । सपना सनसनात । कंगना कसमसात बा । फागुन के रंग में सर्वसुखी समभाव समाहित होके गावत बा-

सदा आनन्द रहे एही द्वारे, मोहन खेले होरी हो ।

-भोजपुरी सेवा सदन, जनता बाजार, पोस्ट-पंडितपुर, जिला- सारण (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होलिका-दहन आ होली-पर्व : एगो समीक्षा

-अनिरुद्ध त्रिपाठी 'अशेष'

बहुते अद्भुत आ सारगर्भित बा, होली-पर्व के पृष्ठभूमि । बैकुण्ठाधिपति भगवान विष्णु के द्वारपाल जय आ विजय, सनत्कुमारन के अन्दर जाए से रोक देले रहें त ऊ महात्मा लोग खिसिया के ओह दूनों पहरेदारन के तीन जन्म तक ले असुर हो जाए के सराप दे देले रहें । संत-श्राप के चलते बेचारा दूनों सतयुग में हिरण्याक्ष आ हिरण्यकशिपु, त्रेता में रावण आ कुम्भकर्ण, अउर द्वापर में दंत-वक्र आ शिशुपाल के रूप में पैदा भइल रहें । भगवान विष्णुओ के अपने सेवकन के उद्धार खातिर क्रमशः वराह, नृसिंह, राम आ कृष्ण के रूप में अवतार लेवे के पड़ल रहे । ई कथा अधिकार आ सत्ता के दुरूपयोग के वृत्ति-चित्र बा । एह में जय-विजय द्वारा खाली ज्ञान के प्रतीक संत के अवहेलने नइखे, अपितु अपने अहं के संतुष्टि खातिर स्वामी के स्वभाव आ आचरण के हत्यो चित्रित बा । एह कथा से ईहो साफ बा जे अच्छाई आ बुराई के अस्तित्व सार्वकालिक आ अभिन्न बा बाकिर जीव मौलिक रूप से बाउर ना होखे । आधुनिक मनोवैज्ञानिको लोग एह सत्य के स्वीकार कइले बाड़न जे मनुष्य स्वभावतः बुरा ना होला । ई कथा मनुष्य के निरन्तर सजग रहला के संदेश देले कि अगर मनुष्य अपने सत्कर्म से ईश्वरत्व के सबसे ऊँच पुलुई पर पहुँच सकेला, त ओकरे अहंकार के नन्ही चुकी धक्का, कवनो क्षण ओकरा के असुरत्व के गंदा कनई में गिराइयो सकेला ।

जय आ विजय के तीनों जन्म के इतिहास एह सत्य की ओर संकेत करेला, जे अहंकार के विनाश अत्यन्त कठिन बा । ऊ मरेला आ पुनर्जन्मो ले लेला । एह अहं पर विजय पावे खातिर ईश्वरीय-कृपा के जरूरत बा । अइसे, जीवन में अहं के जरूरत आ महत्व कम नइखे । अहंकारे सत्कर्म आ पुरूषार्थो के प्रेरक तत्त्व बाटे । हिरण्यकशिपु के सफलता, अहंकारे के उपलब्धि बा । हमेशा उन्नति प्राप्त कइला के अदम्य चेष्टा के पीछे अहंकारे के शक्ति कार्य करेले । हिरण्याक्ष सगरो धरती के चोरा लिहले रहे । एकर तात्पर्य ई बा, जे शारीरिक दृष्टि से मनुष्य खातिर भूमि के जरूरत बहुते कम बा बाकिर अहं त सगरो धरती से कम पर संतुष्ट ना होखे । हिरण्याक्ष के अर्थे होला, सोना के आँख वाला । तुलसियो दास जी एकर अर्थ अइसने लगवले बाड़न -'सोक कनक लोचन मति छोनी ।' जेकर आँख सोना के सूरमा से निहारे के आदी हो जाले, ऊ सगरो धरती के खाली भर आपन बना के रखला से संतुष्ट होला । सोना के, इहे मृगतृष्णा हिरण्याक्ष आ हिरण्यकशिपु के स्वर्णपुरी लंकेश रावण आ कुम्भकर्ण भइला तक के यात्रा करवले रहे अउर सगरी सृष्टि के आपन बना के राज करे के प्रेरित कइले रहे । लोक-मंगल खातिर ईश्वर द्वारा वराह रूप धारण कइल, ओकरे निरहंकारिता आ सर्वरूपता के परिचायक बा । अमरत्व के दर्प में चूर खुद के अधिक बुद्धिमान समझेवाला हिरण्यकशिपु स्वयं के ईश्वर मानत रहे । एह तरे ऊ नस्तिकतो के प्रतीक बा । बाकिर एही नास्तिकता से प्रहलाद नियर आस्तिकता के प्रादुर्भाव भइल, जे निर्गुण ब्रह्म के सगुण बनला खातिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मजबूर कइले रहे । वस्तुतः नास्तिकता आ आस्तिकता अलग-अलग नइखे । स्वयं के सामर्थ्य के अनुभूति व्यक्ति के नास्तिक बनावेले । हिरण्यकशिपु अप्रतिम सामर्थ्यवान रहे । इहे वजह रहे, जे प्रहलाद के समुद्र, पहाड़ भा आग द्वारा मार दिहला के अनेक प्रयास कइला के बादो, उनका बेर-बेर बच गइला के देख के हिरण्यकशिपु के कवनो अचरज ना भइल रहे, काहें कि ऊ खुदे एह सगरी अलौकिक क्षमता के कुबेर रहे । एह से प्रहलाद में एह खूबियन के ऊ, आपन पुत्र भइला के परिणाम मानत रहे ।

प्रहलाद बेर-बेर मृत्यु से बच गइला के ईश्वरीय-कृपा मानत रहें, जबकि हिरण्यकशिपु खुद के ईश्वर आ समस्त पंचभूतन के स्वामी मानत रहे । भौतिको विज्ञान पदार्थ में शक्ति के सत्ता त मंजूर करेला, बाकिर ओकरे स्वामी ब्रह्म के ना माने । अध्यात्म विज्ञान पदार्थ में निहित शक्ति के साथ-साथ शक्ति के स्वामियो के स्वीकार कइला के प्रबल आग्रही बा । एहतरे भौतिक विज्ञान के अनुसार, पदार्थ से शक्ति के खोज कर के, प्रगट करेवाला ओकर स्वामी बा, आ ओह पदार्थगत शक्ति के स्वेच्छानुकूल उपयोगो खातिर ऊ स्वतंत्र बा । आध्यात्मिक मान्यता के अनुसार पदार्थ आ पदार्थगत शक्ति, दूनों ईश्वर के हवे । एह से ओकरे इच्छानुसारे ओकर सदुपयोग सम्भव बा । आस्तिकता के चिन्तन व्यक्ति के निरहंकारी बनावेला । एही से विज्ञान के चाहीं जे पदार्थगत शक्ति पर विजय हासिल कइला के साथ-साथ ऊ खुद पे विजय हासिल कइला के कला सीखे, ना त ओकर निर्माण ओकरा विनाश के कारण साबित होई ।

अब जे हिण्यकशिपु ईश्वरीय सत्ता के ना मानत रहे, एह से सर्वव्यापी चैतन्य 'राम' आ 'कृष्ण' का तरे लौकिक पद्धति के सर्वथा विपरीत एक अद्भुत रूप में अभिव्यक्त भइल रहे । ऊ बिना माते-पिता के आधा नर आ आधा सिंह के मिश्रित रूप में स्तम्भ से प्रकट भइल । स्तम्भ जड़ तत्त्व बा । पशु चेतन भइला के बादो अर्द्धचेतन कहाई । खालीकर मनुष्ये पूर्ण चेतन बा । एह तरे प्रहलाद के आस्तिकता से पसीज के, ईश्वर नर आ पशु के सम्मिलित स्वरूप में खम्भा से प्रकट होके, अपने सर्वव्यापकता आ जड़, चेतन अउर पूर्ण चेतन में अपने सत्ता के प्रमाणित करके, हिरण्यकशिपु के अमरता आ मिथ्याभिमान के लोहूलुहान कर देले रहे ।

होलिका हिरण्यकशिपु के बहन रहे । अहंकार के बहन भइला के नाते ई ईर्ष्या के प्रतीक बा । एकरा के आग से ना जरला के वरदान प्राप्त रहे । ई प्रहलाद के जराके मार डारल चाहत रहे । ईहे ईर्ष्या के विशेषता हऽ । दूसरा के आनंद-सुख देख के, ओकर हृदय सुनुगे लागेला अउर ओह आग में ऊ ओह व्यक्ति के जराके भस्म क दीहल चाहेले । बाकिर होलिका इहाँ सफल ना हो सकलि । प्रहलाद के आस्तिकता होलिका के अपने अग्नि-शक्ति में जर गइला के मजबूर करि देले रहे । निर्माण के अभिमान के परिणति एही तरे के होले । होलिका-दहन आजो परम्परागत रूप से जारी बा । रात में होलिका दहन के रिवाजो बड़ा प्रतीकात्मक बा । रात्रि अज्ञान के प्रतीक बा । एही से हमरी इहाँ निशा में विचरण करेवाला अर्थात् अज्ञान में विचरण करेवाला के निशाचर कहल गइल बा । एह तरे होलिका-दहन माने, अज्ञान के दहन । होलिका दहन के रात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहीं-कहीं लोग अपना देह के मैल बुकवा लगवा के छोड़ावेलन आ होलिका में डार देलन । युवा वर्ग तमाम लोग के घर-द्वार से खर-पतवार आदि चुराके ले आवेलन आ होलिका में झोंक देलन । काहें ? शरीर के मैल व्यक्तिगत दुर्गुण के, आ खर-पतवार सामाजिक दुर्गुण के प्रतीक बाड़न । एह दुर्गुणन के दहन के बादे व्यक्ति आ समाज के बीच समरसता आ सकेले । एकरा खातिर वैयक्तिक प्रयास के साथ-साथ सामाजिको प्रयास जरूरी बा । सामूहिक रूप से होलिका-दहन के कथा एही सत्य के उजागर करति बा । जब जीवन से होलिका रूपी ईर्ष्या-वृत्ति के दहन हो जाला अउर 'मैं' आ 'मोर' के प्रतीक हिरण्याक्ष आ हिरण्यकशिपु के पूर्ण विनाश हो जाला तबे व्यक्ति अपने आन्तरिक स्वरूप के बोध कर पावेला, आ तबहियें ओके पूर्ण आनंद के प्राप्ति होला । होली एही अखण्ड आनंद के प्रतीक-पर्व बा । होली के गीत आ नृत्य, उड़त अबीर-गुलाल अउर बहुरंगी रंगन के मदमातल वृष्टि ओही परमानंद के प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति बा । इहे जीवन के चरम लक्ष्यो बा ।

-के-2/36, रोड नं.-18, टेल्को कॉलोनी, जमशेदपुर-4

●

भोजपुरी के पहिला एकल भाषण संग्रह

भास्कर वाणी

भगवान सिंह 'भास्कर'

प्रकाशक- भास्कर साहित्य भारती, सीवान

मूल्य- 101 रुपया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ससुरारी के फागुन

-रवीन्द्र त्रिपाठी

गाँव के लइका-सेयान, मरद-मेहरारू सभे का मुँह से एके आवाज निकले कि त पंचमी नजदीक आ गइल गली-गली के सफाई, लइकन के बीच होरहा, सरसों झुमत फूल, गाछ-बिरीछन पर के नयका पतई आ कोईल के पीहिके से वसंत के ाई के सनेस मिल गइल । भउजी रोज-रोज सबेरही कहस कि हमार भाई बसन्त मी के एक रोज पहिले हमरा के बोलावे अइहें-पंचमी के दिन त दस बजे ले हम ना माई के पास रहेम । साँचों, देखते-देखते में पंचमी आ गइल । सगरे सभे सुरसती के पूजा कइल आ अबीर-गुलाल के खुल के शुरूआत भइल । पंचमी के रात में के मंदिल पर बूढ़ऊ लोग के दल जुटल आ ढोल-झाल पर शुरू कइल-.

'ए शिव रउरे मंदिलवा,
लाल धजा फहराए''

भउजी जइसन कहली तइसही भइल । पंचमी के दिन भोरे उठ के जल्दीबाजी नहान-धोआन क के पूजा-पाठ कइली आ माई-बाबूजी के गोड़ पर अबीर राख के लगली । माई उनुका के आशीर्वाद देत समझावत कहली- ''होली के दिन बेसी -फान मत करीह'' । फेन भउजी अपना देयादिन यानि हमरा मेहरारू के गाल पर ीर लगावत कहली-''दुलहिन, एह साल के त होली तोहरा खातिर ससुरार के लके ह आ हम तोहरा संगे नइखीं रहत । तूँ नीक से रहिअ''- इहे कहत भउजी के हमरा काउर पड़ल । ऊ कहली कि हेने सुनी । हम उनुका लगे गइनीं । भोरही के ऊ रंग-अबीर से हमरा के सराबोर क दिहली आ मुसकात कहली -'फगुआ के दिन नो रउरा भेंटाएम ।'

भउजी अपना भाई का संगे चल गइली । समय धीरे-धीरे बीते लागल । फगुआ दीक आ गइल । कपड़ा, अबीर, किसमिस, छोहाड़ा कीनाइल । फगुआ के दू रोज ले भउजी खातिर कपड़ा, अबीर वगैरह लेके भइया गइलन । फगुआ बितला के तीन बाद भइया घरे लवट के अइलन । जेही सेही भइया से पूछे कि 'का जी, का हाल ? एह साल के फागुन के लहार ससुरार में नूँ बीतल ह !' जबाव में भइया खाली हाँ, कहस भा मुसका के रह जास ।

दिन-पर-दिन समय बीते लागल । सभे अपना रोजी-रोटी में लाग-भीड़ ल । फागुन बीतल माह हो गइल । बूढ़ऊ काका के गावल फगुआ हमरा आँख के झा हरदम झलके आ हमरो ओठ से आवाज निकले-

''अँखिया लाले लाल, अँखिया लाले लाल,
एक नींद सुते द बलमुआ ।''

हमे जहाँ रहीं तहवाँ पता ना काहे दू इहे फाग के कड़ी हमरा मुँह से बरबस निकल जाव ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अगिला बसन्त पंचमी फेन नजदीक आ गइल । संयोग अइसन कि हमरो मेहरारू के अपना नइहर जाए के रहे । भउजी कहली कि अबकीर तोहार बारी बा । हमरो मेहरारू के बाबूजी नियत तारीख पर आके बुला ले गइलन ।

अपना नइहर जाए का बेरा ऊ बेचारी रूम में बोला के हमरा से कहली-

"कवनो बात के चिन्ता मत करेम । अपना शरीर पर धेयान देहम । हमरा चिट्ठी के जबाब जरूर भेजम । हमरा करते त ना, बाकिर नन्हकी का करते चिट्ठी-पत्री भेजेम आ ओकर सर-समचार लेत रहेम ।" इहे बात कहत आ दूनू हाथे हमार गोड़ छुवली । आशीर्वाद के रूप में हम कुछ कहनी ना, बलुक एगो किस ले लिहनी । देखनी कि उनुका आँखि से लोर छलके लागल । हम रूम से बाहर चल अइनी । भतिजीया आके कहतख -"चाची, जल्दी चलीं ना, ई गड़िया छूट जाई त रउरा आ नानाजी का राहता में बड़ी दिक्कत होई । काहे कि नजदीक के त बात बा ना ।" अतने बात सुनते ऊ रूम से बाहर निकल के माई आ भउजी के संगे-संगे सब बड़ लोग के गोड़ लगली । भाई आ भउजी कहली-काहे हो, ई कवन गुण सिखलू ह ? नइहर जाए में लोग खुश होला आ तूँ.... माई दुलार से डाँटत समझावत रिक्सा पर चढ़ावे लिआ गइली । रिक्सा तर जात-जात भतिजीया के गर्दन ध के पुकाफार के रोवे लगली । भतिजीयो से रहल ना गइल । उहो आपन गला खोल दिहलख । माई सुसुकत नन्हकी के चुम्मा लेत चाची-भतीजी के गर्दन-से-गर्दन छोड़ावत रिक्सा चालू करे के कहली । रिक्सा चल गइल । कुछ दूर ले चल गइल, बाकिर सउँसे परिवार के लोग ओन्हीं एकटक से ताकते रह गइल ।

बिहान भइला हम बाजार से घरे अइनी । भाई के आगा खाएक धइल रहे । उनुका आँखि से लोर गिरत रहे । भउजी के ओरि भी देखनी त उनुकर आँख लाल-लाल भइल रहे । अन्त में, हम अपना भतीजी के पास जा के कहली-बेटी ! खाना द ना ? काहे सभे गूँग भइल बा आ केहू के चेहरा पर रौनक नइखे ?" "बबुनी आ चाची खातिर" -इहे बात कहत ऊहो रोवे लागल ।

हमहूँ रात के सुतीं त बिछावन पर खाली इहे सोचीं कि सभे अपना बाप-भाई कीहें जाए का बेरा हँसेला बाकिर उनुका मुँह पर काहे इचिको हँसी ना रहे ? दिन बीते लागल । भउजी त मर-मजाक में कहिए देस -'का बबुआजी, काहे रोवत बानी । रोईं मत ससुरार के फागुन बहुते नीक ढंग से रउरा मनाएम ।' साथी-संगी भी इहे बात दोहरावे ।

मन में त खुशी के हिलकोरा ओतना रहे जतना हम शब्दो से कह नइखी पावत-खाली ससुरार के फागुन के रस-गंध लेवे के जोर पर जवना में हमार इमीडिएटली कॉल रहे । बगल में फोन रहे । उनुका लगे भी फोन आइल । फोन पर केहू बात ना बतावल । बाबूजी कहनीं कि अबहिए चल जा । भइया गाड़ी से बस स्टैंड ले पहुँचा दिहलन । गाड़ी पर हम बइठ गइनीं, गाड़ी खुल गइल, गाड़ी खुलते हमरा मुँह से निकलल-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"केकरा से कहब दिल के बतिया हो रामा"

हम मने मन कहनी कि फगुआ के अलावे चइता इआद आ जात बा । मन में तरह-तरह के भाव के उतार-चढ़ाव आवे जाए । एही सपना में अभुराइल हम भोरे के चार बजे अपना ससुरार पहुँचनीं । हमरा पहुँचते हल्ला ना भइल, बलुक रोवा-रोहट भइल । हमार ससुर हमार हाथ ध के रिक्सा से उतार के ले गइलन । देखनीं कि नन्हकी के हमार सास लेके रोवत बाड़ी । हमरा कुछ समुझ में ना आवे । ऊपरी मंजिल पर गइलीं त देखनीं कि एगो आदमी के उपर चादर ओढ़ावल बा । हमार ससुर चेहरा से चादर हटावत पुका फार के रोवे लगलन । हम गौर क के देखनीं- ऊ चेहरा दोसर केहू के ना, हमरा नयनभरी के रहे । हम खाली आँख से लोर चुआवत मने-मन कहीं कि "केकरा से कहीं दिल के बतिया हो रामा", एही से नू इयाद आवत रहल ह । काका के गावल फगुआ, "एक नींद सुते द बलमुआ" एही खातिर सालोभर हमरा ओठ पर रलऽ ।

अकेला में कहीं कि का खुदा ससुरार के फागुन इहे ह आ कि ओकर अपरूप हमरा सामने प्रस्तुत भइल बा । फागुन के अपरूप हमरा जिन्दगी के हर मोड़ पर ईआद आवेला आ सोचेनीं कि डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लिखले बानी कि- बसन्त आता नहीं, ले आया जाता है- भला अइसनका हालत में बसन्त कइसे ले आवल जा सकेला । जेकरा मन बगिया के उजाड़ हो जाई-ओकरा का सूझी वसन्त आ ससुरार के फागुन ।

-सरमी, वाया- सहाजितपुर, सारण

●

भोजपुरी साहित्य के नया इतिहास

एकइसवीं सदी में भोजपुरी

संपादक

नागेन्द्र प्रसाद सिंह

प्रो० ब्रजकिशोर

कृष्णानंद 'कृष्ण'

मूल्य- 51 रुपया मात्र

प्रकाशक- **भोजपुरी साहित्य संस्थान**

महेन्द्रू, पटना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुस्तक-समीक्षा

भास्कर लोक रामायण के बहाने

-सुरेश कांटक

भारत के समूचा साहित्य भंडार में दू गो प्रमुख महाकाव्य बा -'रामायण' आ 'महाभारत'। इहे दू गो महाकाव्य समूचा भारतीय संस्कृति के जान-परान आ ओढ़न-डासन बा। गाँव-गवई के हरजोता बनिहार से लेके विश्वविद्यालय के बड़का-बड़का महान पंडित तक के मन, वचन आ कर्म के प्रभावित, अनुशासित करत कुछ करे सोचे, जीये-मरे आ आगे बढ़े के ताकत, ई दूनो महाकाव्य देत रहल बा। एही महाकव्यन के उपजीव्य बना के लाखन ग्रंथन के रचना भइल बाड़ी स।

रामकथा के उत्पति आ विकास पर शोध क के, फादर कामिल बुल्के जइसन विद्वान, रामकथा के आधार बना के लिखल गइल अपना बहुचर्चित ग्रंथ में एक सौ चौरासी गो रामायण के जिकिर कइले बाड़न। उनका शोध ग्रंथ के मोताबिक 600 ईसा पूर्व में राम कथा विषयक आख्यान काव्य संस्कृत ललित साहित्य से शुरू भइल। फेरू 400 से 300 ईसा पूर्व में, बौद्ध जैन साहित्य में, दशरथ जातक गाथा आइल। बाकिर ईसा पूर्व 300 में, संस्कृत ललित साहित्य में, वाल्मीकि रामायण अइला का बाद, ई एगो महत्वपूर्ण स्तंभ हो गइल आ एकरा के उपजीव्य बना के 100 ईसा पूर्व से 100 ई. तक में, प्रचलित बालकाण्ड, रामोपाख्यान, संस्कृत ललित साहित्य में आ अनामकम् जातकम् बौद्ध जैन साहित्य में आइल। फेनु 200 से 300 ई. में संस्कृत ललित साहित्य में प्रचलित उत्तर काण्ड, 300 से 400 ई. में, प्रतिमा नाटक; अभिषेक नाटक (सं.ल.सा.) विष्णु पुराण, ब्रह्म पुराण, (सं. धार्मिक सा.) पउमचरिउ, दशरथ जातकम् (बौद्ध जैन साहित्य) में, 400 से 500 ई. में, संस्कृत ललित साहित्य में, रघुवंश, कुन्दमाला, सं. धा.सा. में हरिवंश पुराण, वायु पुराण, नृसिंह पुराण, बौद्ध-जैन साहित्य में दशरथ जातकम् गद्य, बसुदेवहिण्डि 500 से 700 ई. में, संस्कृत ल. सा. में, रावणवध, महाकाव्य, संस्कृत धार्मिक साहित्य में मत्यपुराण, कूर्मपुराण, भागवत पुराण, विष्णुधर्मोतर पुराण, आ बौद्ध जैन साहित्य में पद्म चरित आइल।

बुल्के साहेब के अनुसार 700 से 800 ई. में सं.ल.सा. में, महावीर चरित, उत्तर रामचरित, उदात्त राघव आ बौ.जैन.सा. में पउमचरिउ, 300 से 800 ई0 में, सं.ल.सा. में, जानकी हरण, राम चरित्र (अभिनन्द) कुंदमाला, सं.धा.सा. में अग्नि पुराण, स्कंदपुराण, वाराह पुराण आ बौ.जै.सा. में उत्तर पुराण (गुणभद्र), राम लक्खण चरियं, विदेशी साहित्य में तिब्बती रामायण, खोतानी रामायण, 900 से 1000 ई. में, अनर्ध राघवम् बाल रामायण, आश्चर्य चुरामणि, सं.ल.सा. में नारदीय महापुराण, गरूण पुराण ब्रह्मपुराण, लिंग पुराण सं.धा.सा. में, महापुराण (पुष्पदंत); त्रिषष्टि-शलाका, महापुरूष पुराण (चामुण्ड राय) बौ.जै.सा. में आ रामायण कर्कविन जावा साहित्य में आइल।

एही तरह से 1000 से 1100 ई. में सं.ल.सा. में महानाटक, रामायण मंजरी,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दशावतार चरित्र, कथा सरितसागर, चम्पू रामायण, सं.धा.सा. में महाभागवत पुराण, देवी भागवत पुराण, सौर पुराण, कालिका पुराण आ बौ.जै. सा. में कहावती (भद्रेश्वर) आ कन्नड़ साहित्य में पंप रामायण आइल । 1100 से 1200 ई. में प्रसन्न राघव, राम चरित (संध्याकर नंदि), राघव पाण्वीय, सं.धा.सा. में पद्मपुराण पातालखंड, वृहद्धर्म पुराण, जैमिनीम अश्वमेघ, योगावासिष्ठ रामायण, बौ.जै.सा. में जैन रामायण (हेमचन्द्र) योगशास्त्र (हेमचंद्र), आ तमिल साहित्य में कंब रामायण के रचना भइल ।

राम कथा के विकास के क्रम में 1200 से 1300 ई. में उल्लाघ राघव, मैथिली कल्याण, दूतांगढ़, हंस संदेश सं.ल.सा. में, मैरावण चरित, अगस्त्य संहिता, राम तापनीय उपनिषद् सं. धा.सा. में निर्वचनोतर रामायण तेलगू साहित्य में, रंग नाथ रामायण, उतर रामायण आधुनिक भारतीय भाषा साहित्य में, अंजना पवनांजय बौद्ध जै. सा. में आ जीवन संवोधन कन्नड़ साहित्य में आइल ।

1300 से 1400 ई. में उदार राघव उन्मत राघव (भास्कर भट्ट) सं.ल.सा. में अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, शिवमहापुराण, सहस्त्रमुख रावण चरित सं.धा.सा. में तेलगू में भास्कर रामायण, मलयालम में राम चरितम्, राम कथापाहट, आसामी साहित्य में माधव कंदली । लवकुशर युद्ध, गुजराती में रामलीलानापदो, कन्नड़ में पुण्याश्रवकथासागर आ बौ.जै.सा. में पुण्याश्रव कथा कोष रचाइल । 1400 से 1500 ई. में रामाभ्युदय, उन्मत्त राघव, रघुनाथ चरित सं.ल.सा. में, आनंद रामायण, पद्मपुराण उत्तरकांड, धर्मखंड, वाह्मपुराण, सं.धा.सा. में कृतिवास रामायण बंगाली साहित्य में, महाभारत 'उड़िया साहित्य में, कण्ण्शश रामायण मलयालम में राम विवाह, रामबाल चरित, सीताहरण, गुजराती में, रामदेव पुराण, बलभद्र पुराण जै.सा. में, सिंहलीराम कथा आ सेरीराम मलयालम में रचाइल ।

ई सब अइला के बाद आइल 1500 से 1600 ई. जवना में राघव नैवधीय, रामकृष्ण बिलोन काव्य, सं.ल.सा. में, ब्रह्म वैवर्त पुराण, तत्वसंग्रह रामायण, अग्निवेश रामायण, सत्योपाख्यान, भुशण्डी रामायण, महारामायण, हनुमत्संहिता, वृहत्कोशल खंड सं.धा.सा. में मोल्ल रामायण तेलगू में, तोखे रामायण आ मैरावण कालग कन्नड़ में अध्यात्म रामायण मलयालम में भावार्थ रामायण, सीतास्वयंवर, मराठी में, गीति रामायण, राम विजय नाटक, श्री राम कीर्तन उत्तरकांड, बालकांड असमिया में बलराम दास रामायण, रामखिमाठिका रामायण, उड़िया में सूरसागर, भरत मिलाप, राम जन्म, अंगज पैज हिन्दी में आइल ।

एही काल में तुलसीदास के महाकाव्य रामचरितमानस आ अवरू राम संबंधी रचना अइली स, जवन पूरा भारत के जन मन में बहुविधि संमा गइल । रामचरितमानस के जवन प्रसिद्धि आ लोकप्रियता मिलल ऊ अब तक के कवनो राम संबंधी रचना के ना मिलल । एकरा कारन पर आगे विस्तार से बात होई रामचरितमानस के बादो गुजराती में रावण मंदोदरी संवाद, सीता हनुमान संवाद, लव कुशाख्यान, बौ.जै.सा. में राम चरित (पद्मदेव) रामचरित (सोमसेन), पुण्य चन्द्रोदय पुराण, राम विजय चरित, रामायण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(कुमुन्देन्दु) जावा साहित्य में राम केलिंग, सेरत कांड, कंबोडिया में राम केर्ति । स्याम में रामकियेन, राम जातक विष आइल ।

फेनु 1600 से 1700 ई. में रामलिंगामृत, राघवोल्लास राम रहस्य, जानकी परिणय (चक्रकवि) राम भद्र दीप्ति, अद्भुत दर्पण, रामकथा (वासुदेव), राघव पाण्डवीय यादवीय, यादव राघवीय, सं.ल.सा. में द्विपदरामायण (कहवरद) तेलगू में, सीता सवयंवर लघु रामायण, संक्षेप रामायण मराठी में; राम चंद्रिका, अवध खिलास, गोविंद रामायण (हिन्दी) गण्क चरित, कथा रामायण (असमिया) अद्भुत आश्चर्य रामायण, रामायण गाथा, अध्यात्म रामायण (बंगाली) रघुनाथ विलास, टीका रामायण, अध्यात्म रामायण (उड़िया) रामभज्ञ, सीताविरह (गुजराती) पाश्चात्य वृतांत आा फारसी रामायण के रचना भइल ।

एही क्रम में 1700 से 2000 तक के काल में राम कथा पर आधारित अवरू कई गो ग्रंथ काव्य आइल एकर गिनती नइखे बाकिर एह में मैथिलीशरण गुप्त के साकेत, नागार्जुन के मर्यादा पुरूषोत्तम, निराला के राम की शक्ति पूजा के भरपूर मान्यता मिलल । एह घड़ी हिन्दी में लिखाइल भगवान सिंह (नई दिल्ली) के उपन्यास **'अपने अपने राम'** खूब लोकप्रिय भइल बा । बुझाता कि इहे असली रामकथा हवे । कश्मीरी रामायण आ नेपालियो रामायण के रचना भइल ।

भोजपुरी भाषा में नाथ जी के **साहित्य रामायण** के चर्चा बा । आमदास बाबा के **रामार्णव** आ गणेशदत्त किरण के **भोजपुरी रामायण** के चर्चा बा । भरत चरित पर अनिरूद्ध त्रिपाठी अशेष के **प्रेमायन** महाकाव्य, अमर सिह के **मर्यादा पुरूषोत्तम** आ रामनाथ पाण्डेय संपादित **अपूर्व रामायण** चर्चित बाटे ।

एह तरह से ईसा पूर्व 600 से आज तक के जवन भी साहित्य रामकथा से संबंधित आइल बा, ऊ शिष्ट साहित्य के रूप में आइल बा । लोक साहित्य में रामकथा कवना रूप में रचल बसल बा, एह बारे में ऊ सब मौन बा । जबकि 2600 वर्ष मे राम के कथा आम अनपढ़, अशिष्ट, मजूर, किसान, कारीगर के जिनगी आ ओकरा रीतिरिवाज मरनी-जियनी, बिआह-शादी, हँसी-खुशी, परब तेवहार में कवना रूप में बा एकर चरचा ओह सब रामायण में नइखे ।

2600 वर्ष के पहिलहुं राम कथा के चरचा जरूर होई, काहे कि आज के कम्प्युटर युग में, राम के जनम के, वाल्मीकि रामायण में बालकांड के सर्ग अठारह श्लोक नंबर आठ आ नौ, में लिखल तिथि चइत महीना के नवमी के दिन, ग्रह नहत्तर सूर्य रोष, शनि तुला में, वृहस्पति कर्क में शुक्र मीन में, मंगल मकर में, चइत शुक्ल पक्ष, चन्द्रमा पुनर्वास के निकट, राशि कर्क, नवमी के दोपहरिया, समय 12 बजे के आधार पर 10 जनवरी 5114 ईसा पूर्व में बतावल जाता । माने कि आज से 7117 बरिस पहिले राम के जनम भइल रहे । मतलब ई कि 7117 आ 2000 बरिस के बीचो में राम के कथा लोगन के मुहाँमुही फइलल होई, जवन आज ले कवनो साहित्य में ना आइल ।

भोजपुरी के **भास्कर लोक रामायण** एह दिशा में पहिलका कदम बा । एकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रचनाकार भगवान सिंह 'भास्कर' बाड़न । एह लोक रामायण में बालखंड, स्वयंवर खंड, साकेत खंड, कानन खंड, पंचवटी खंड, लंका खंड, उत्तर खंड आ उत्सर्ग खंड नाम से आठ गो खंड बा आ एह में तीन सौ अस्सी गो अइसन लोकगीत बाड़न स, जवन राम के कथा से संबंधित आ लोक जीवन के हर रीतिरिवाज से जुड़ल बाड़न स आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी जोगावल संजोवल बाड़न स । एह में जनम से लेके मरन तक के गीतन के राम कथा के उपस्थिति दर्शावल बा । संउसे रामायण के कथा हिन्दी भोजपुरी आदिवासी, अंगिका लोक जीवन मे समाइल बा । एह में मार्मिक प्रसंग भरपूर बा। आदर्श के स्थापना बा । नवो रस के उपस्थिति बा । लोक जीवन कवना रूप मे राम कथा के अपनवले बा, ओकर दर्शन एह 'भास्कर लोक रामायण' में आसानी से कइल जा सकत बा । भारतीय जीवन के सोलहो संस्कार से जुड़ल रामकथा के छोट छोट टुकड़ा एह में शामिल बा, जवन सब मिल के पूरा रामायण लोककंठ में उतार देता । बलुक लोक मानस आ लोककंठ में बसल रामायण के सभके सोभा ले आवत बा । एह तरह के काम एकरा पहिले नइखे भइल । भगवान सिंह 'भास्कर' पहिलका रचनाकार बाड़न, जे लोक संस्कृति आ संस्कार में बसल राम के कथा के खोजबीन कइले बाड़न । अलग अलग सुर,ताल, राग, लय आ छंदन में बँधल, अनजान अनेक लोकगीतन के रचना के कथा सूत्र में समेट के ले आवे के, गुढ़ आ मेहनत भरल काम भास्कर जी के एह क्षेत्र में पहिलका स्थान दियावत बा । चइता, होरी, सोहर, झूमर, कजरी, विरहा, भजन आदि सरल, सरस छंदन में सउँसे रामायण के प्रस्तुति, अयोध्या से लेके जनकपुर, पंचवटी से लेके लंका तक के यात्रा, पिता, माता, पत्नी, भाई, भउजाई, गुरू, सास, ससुर, पतोहि, बेटा सभ नाता-रिश्ता के आदर्श प्रस्तुत कइल बा लोकगीतन के माध्यम से । सभके उदाहरन आलेख के लमहर करी । एह से एह संबंध में इहे कहल जा सकत बा कि पढ़ला का बादे एकर असली रसास्वादन कइल जा सकत बा । एकरा उपादेयता के समझल जा सकत बा ।

एही बीचे एगो सवाल उठत बा कि आखिर राम कथा लोक जीवन में अतना गहराई तक पहुंचल काहें ? कालजयी कथा भइल काहें ? राम मर्यादा पुरूषोत्तम बनलन काहे ? कंठ कंठ तक पहुंचले कइसे कि संउसे भारतीय संस्कृति आ साहित्य एह से प्रभावित बा ?

एकरा उत्तर में जवन बात मन मे उभरत बा, ऊ ई कि रामकथा में अन्याय पर न्याय के विजय भइल बा, अत्याचार आ अन्याय से लड़े के संदेश मिलत बा । लोक हित खातिर राजा के त्याग आ तपस्या सबसे ऊपर बा । संबंधन के आदर्श प्रस्तुत भइला बा । ऊँच नीच के भेद भुला के समाज के एक सूत्र में बान्हे के उदाहरण बा । नीति, अनीति, कर्तव्य, त्याग, सद्भाव सभके परिभाषित कइल बा । एह दिशा में गोस्वामी तुलसी दास के रामचरित मानस महाकाव्य के जनभाषा में अवधी, मगही, भोजपुरी, ब्रजभाषा, अंगिका, बज्जिका आ ठेठ हिन्दी हिन्दुस्तानी के साथे तत्सम, तद्भव आ देशज शब्दन के समावेश एह कथा के लोकप्रियता के ऊँचा से ऊँचा स्थान प पहुँचा देले बा । दोहा, चौपाई, सोरठा छंद, कवित्त, छप्पय, रोला आदि छंदन में गेय हो गइला से ई कथा हर

RajGuru Math, Jalgaon. Digitized by eGangotri Trust. Funding by IKS-MoE-Grant-2 Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुबान, हर कंठ पर बस गइल आ लोक मानस में स्थली जगह बना लिहलस । जवना के परिणाम भइल कि लोक जीवन के हर खुशी, उत्सव, पर्व-त्यौहार में रच-बस के आपन नया रूप गढ़ि लिहलस । सीता वन गमन आ शंबूक प्रसंग के घटना के छोड़ के राम के चरित्र में एगो सफल लोकनायक के सभ गुण समाइल बा । आज के राजनेता सत्ता के लोलुपता में जघन्य से जघन्य अपराध, अपहरण, घोटाला करे से बाज नइखे आवत, उहँवा राम के गद्दी त्यागल, भाई के राजपाट दिहल, निषाद के हृदय लगावल शबरी के जूठ बइर खाइल, साधु-संतन के दुख दूर कइल, वनवासिन, भालू बानर से नेह लगावल कतना बड़ बात बा । भला ई नायक पूज्य पुरूषोत्तम ना होई त के होई ? जग खातिर जीयल, ऊ ना होई त के होई ?

भास्कर जी के लोक रामायण एह माने में अद्वितीय बा । उहाँ का लोक जीवन में समाइल रामकथा के हू-ब-हू पकड़े में लोक मनोविज्ञान, समाजशास्त्र आ मार्मिक प्रसंगन के बहुत बारीकी से धइले बानी । एगो मार्मिक प्रसंग के देखीं-

"राम लछुमन दूनू भइया त, बन के अहेरिया नू हो ।
ए ललना ! चलब त चल बृंदावनवा
हरिन मारि लावहु हो ॥
एक बने गइले दोसर बने, अवरू तिसर बने हो ।
ए ललना ! हिरना सोवेला हिरनी जागे त
बेनिया डोलावे नू हो ॥
पहिला बान राम मारेलन, हिरना भुइंया गिरेला हो ।
ए ललना ! ठाढ़े हिरन रोवे अच्छो धार त
हिरना भुंइया गिरेलन हो ।
दोसर बान रामजी मारेलन, ठाढ़े हिरनी रोवेली हो ।
ए राम जी ! बकसी ना मोर एहबात
हिरना मत मारहु हो ॥
चुप होख ए हिरनी ! चुप होख, अब मति लोर ढार हो ।
ए ललना ! राम रसोइया में रिन्हबो
हिरन तरि जइहे नू हो ॥
तीसर बान राम जी मारेलन, हिरना तन त्यागेले हो ।
ए ललना ठाढ़े हिरनी रोवे अच्छोधार त
हिरना मोरे मरि गइले हो ॥
मचिया बइठल बाड़ी कोशिला रानी, हरिनी अरज करे हो ।
ए ललना ! मॉसवा राखहु ना रसोइया
खलरिया मोही देहु नू हो ॥
जाहु तु ए हिरनी ! जाहु त, हम नाही जानेनी हो ।
राम रसोइया सीता रानी, त उनसे अरज कर हो ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम रसोइया सीता रानी,
त हरिनी अरज करे हो ।
ए ललना ! माँसवा रीन्ह ना रसोइया
खलरिया हम बकसु नू हो ॥
जाहु तू ए हिरनी ! बन में त, हम नाही देबो नू हो ।
ए ललना खलरी के हमहूँ बजाइब
आनन्द मन ही होइबो हो ।

भास्कर लोक रामायण के ई मार्मिक प्रसंग लोक मन के उद्गार ह । एकरा पीछे छिपल लोकभावना के व्याख्या खातिर बहुत बड़ जगह माँगत बा । अइसन अइसन कईगो मार्मिक प्रसंगन से भरल, नीति धर्म आ लोक करतब के चिन्हावत-देखावत लोक गीत एह लोग रामायण में भरल परल बा आ भारतीय जन संस्कृति के सोभा ले आवत मिला ।

समीक्षित कृति : *भास्कर लोक रामायण रचयिता- भगवान सिंह 'भास्कर,' प्रकाशक- अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, बिहार शाखा शेखपुरा, पटना-14, मूल्य- 251/- दू सइ एकावन रुपया*

-काटं, (ब्रह्मपुर), बक्सर-802 112 (बिहार)

भोजपुरी प्रकाशन के बढ़त डेग

1. **भोजपुरी जिला भोजपुरी साहित्यकार कोश**
खंड-1 : कवि खंड (सन् 1917-1984)
जगन्नाथ मिश्र

प्रकाशक- **विश्व भोजपुरी सम्मेलन**
बिहार इकाई, मलयानिल, बुद्ध कॉलोनी, पटना
सहयोग राशि- 50 रुपया, पृष्ठ संख्या-93

2. **मानव चालीसा** (बाल साहित्य) कवि- हीरा प्रसाद ठाकुर
मूल्य- 5 रुपया, पृष्ठ संख्या 10

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बना लिहलस । जवन
-त्यौहार में रच-बस क
के घटना के छोड़ क
गज के राजनेत
गज नइखे

फार्म-4

(नियम 8 देखिये)

1. प्रकाशन स्थान	पटना
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	प्रो॰ ब्रजकिशोर
क्या भारतीय नागरिक हैं ?	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	नहीं
मुद्रक प्रेस का नाम	जे॰ एम॰ कम्प्यूटर्स
पता	पश्चिमी लोहानीपुर, पटना-3
4. प्रकाशक का नाम	प्रो॰ ब्रजकिशोर
क्या भारतीय नागरिक हैं ?	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	नहीं
पता	अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन महेन्द्रू, पटना-800 006
5. सम्पादक का नाम	प्रो॰ ब्रजकिशोर
क्या भारतीय नागरिक हैं ?	हाँ
(यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	नहीं
पता	अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन श्रीभवन, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-6
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों ।	अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन श्रीभवन, महम्मदपुर लेन, महेन्द्रू, पटना-6

मैं प्रो॰ ब्रजकिशोर, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सही हैं ।

दिनांक 1 मार्च 2005 ह॰/ प्रो॰ ब्रजकिशोर

स्वत्वाधिकारी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का ओर से प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, महम्मदपुर लेन, पटना-800 006 से प्रकाशित, आउर प्रो॰ ब्रजकिशोर द्वारा जे॰ एम॰ कम्प्यूटर्स, पश्चिमी लोहानीपुर, पटना-800 003 में अक्षर-संयोजित एवं मुद्रित । सम्पादक: प्रो॰ ब्रजकिशोर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ए ललना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: KS-MoE-Grant 2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jaigaon